इस अंक में पढ़िये:—

समाज की नयी संतति

आज का भारतीय छात्र

लखनऊ हाई स्कूल में और इंटर श्रेणी के सात हजार से अधिक छात्रों से प्रश्नावली द्वारा पता लगा कर शिक्षा विभाग की ओर से एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी है। इसके अनुसार प्रतिशत ४१ छात्र ऐसे परिवारों से आते हैं, जिनकी आय १२०) माहवार से कम है। अच्छा स्वास्थ्य प्रतिशत ७० छात्रों का है। १० प्रतिशत छात्र बायें हाथ से अधिक काम लेने और हकलाने जैसे शारीरिक दोषों के शिकार हैं। नौवीं श्रेणी में कम से कम आयु का छात्र १० वर्ष का है और १२ वीं श्रेणी में अधिक से अधिक आयु का छात्र २८ वर्ष का है।

१६ प्रतिशत छात्रों ने अपनी रुचि नौकरी के लिए प्रकट की और केवल १९ प्रतिशत ने कारबार के लिए। डाक्टरी और कानूनी के पेशे को पसन्द करने वाले छात्रों की संख्या प्रतिशत क्रमशः १३ और १.३ है। इंजीनियरिंग और कैमीकल इंजीनियरिंग में रुचि बतलाने वाले छात्रों की संख्या प्रतिशत क्रमशः १४ और १ है। ७७ प्रतिशत छात्र समय स्कूल आते हैं और केवल दो प्रतिशत देर से पहुँचते हैं। अनियमित रूप से उपस्थित होने वाले छात्रों की संख्या प्रतिशत २३॥ है।

सिनेमा प्रेम

२८ प्रतिशत, छात्र नियमित रूप से सिनेमा जाते हैं और दिलीपकुमार एवं कामिनी कौशल को पसन्द करते हैं। कांग्रेस को पसन्द करने वाले छात्रों की संख्या ४१ प्रतिशत है और समाजवादियों एवं कम्यूनिस्टों को पसन्द करने वाले छात्र हैं प्रतिशत लगभग २ और १.३। बढ़ती हुई अनुशासनहीनता का मुकाबला करने के लिये प्राक्टर बोर्ड और युवक केन्द्र खोलने की सलाह दी गयी है जहां अच्छे मनोरंजक, शिक्षा और सामाजिक समारोहों की व्यवस्था है। जिससे छात्रों को अच्छे सामूहिक वातावरण में रहने का अवसर मिले।

प्रेमचन्द और टागोर

अधिकांश छात्र प्रेमचन्द के कहानी साहित्य को पढ़ते हैं। उसके बाद टैगोर का स्थान आता है। २० प्रतिशत छात्र ऐसे हैं जो क्लास की किताबों के सिवाय बाहर की कोई किताब नहीं पढ़ते। छात्रों में दूध का औसत १ पाव और घी का १ तोला है। अधिकांश छात्र गरीब परिवार से आते हैं।

रिपोर्ट में सिफारिश की गई है कि प्रत्येक स्कूल और कालेज के साथ छात्रावास होना चाहिये। इससे वे अवांछनीय वातावरण से बच जायेंगे। घर और स्कूल का घनिष्ठ सम्पर्क होने की भी सिफारिश की गयी है और यह चाहा गया है कि हायर सेकेंडरी स्कूलों को शहरों से हटा कर देहात में पहुँचाया जाय।

अधिकांश शिक्षार्थी अध्यापक २०) प्रतिशत व्यक्ति की औसत आमदनी रखने वाले गरीब परिवारों से आते हैं। उनमें से ७० प्रतिशत विवाहित होते हैं और उनमें से बहुत अधिक अध्यापकों को कोई शौक नहीं होता। वे न पढ़ते हैं और न खेलते हैं। इस बात की ओर ध्यान दिया जाना चाहिये कि अध्यापकों का जैसा चरित्र और स्वभाव होता है, उसकी छाया छात्र पर पड़ती है।

इस वर्ष छठी, सातवीं और आठवीं श्रेणी के छात्रों की जांच की जायेगी, जिसके लिये नयी प्रश्नावली तैयार की जा रही है।

गो संवर्धन विधेयक अपूर्ण है

★ श्री हरदेव सहाय

अखिल भारतीय गोसेवक समाज के मंत्रीजी हरदेव सहायने पिछले दिनों संसद में उपस्थित किये गये गोरक्षा तथा गोसंवर्द्धन विधेयक के बारे में निम्नलिखित वक्तव्य दिया है—

भारत सरकार ने गोवध-निषेध आन्दोलन को ठंडा करने के लिये संसद में गोरक्षा तथा संवर्धन नाम से एक विधेयक उपस्थित किया है। इससे न गोवध बन्द होगा और न गोवंश की उन्नति ही हो सकेगी। गोशालाओं द्वारा गो रक्षा का जो कार्य हो रहा है, उसमें भी अड़चन पड़ेगी। गोरक्षा तथा उन्नति कमेटी की सिफारिशों को बढ़ाई साल हो चुके। इस विधेयक के तीन भाग हैं।

१—उपयोगी पशुओं का वध बन्द करना

२—गोशालाओं पर कंट्रोल करना।

३—नसल-सुधार। यह विधेयक हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, अजमेर, मेरवाड़ा, सौराष्ट्र, कुर्ग इत्यादि 'ग' भाग के छोटे-छोटे राज्यों के लिए हैं। इन राज्यों में से कई ऐसे हैं जहां आज गोवध पूर्णतया बन्द है। इसके पास होने पर वहां अनुपयोगी के नाम से गोवंश का वध जारी होगा वहां उपयोगी पशुओं की भी रक्षा नहीं होगी। पिछली लड़ाई के दिनों में बढ़े हुए गोवध को दृष्टि में रखते हुए ११ जुलाई १९४४ को भारत रक्षा कानून के अनुसार उपयोगी पशुओं के वध को रोकने का नियम बनाया था। उस नियम में पशु की आयु १० साल तक की थी, अब १४ साल तक की है और अन्य कोई फर्क नहीं है। पर इस नियम से एक भी पशु कत्ल होने से नहीं बचा। बर्मा की सरकार ने इस नियम की व्यर्थता को देख कर १० दिसम्बर १९४७ को पशुवध रोकने का विशेष कानून बनाया। भारत सरकार ने अब जो संसद में विधेयक उपस्थित किया है, बम्बई और बंगाल में भी एक साल से अधिक हुआ इसी तरह के विधेयक को कानूनी रूप दिया गया था। पिछले अगस्त में ही मैंने बम्बई और कलकत्ता के कसाईखाने देखे। बम्बई में वहां के वेटनरी कालेज के प्रिंसिपल तथा कलकत्ता में डायरेक्टर-पशु विभाग भी साथ थे। कानून बन जाने पर भी इन दोनों स्थानों पर उपयोगी दुधारू गायें तथा भैंसे मारी जा रही हैं और आज भी वही अवस्था है। जब तक सम्पूर्ण गोवध बन्दी का कानून नहीं होगा, तब तक उपयोगी पशु भी नहीं बचेंगे। कसाई पशु निरीक्षक को रिश्वत देकर उपयोगी पशु का ही वध करेंगे या उपयोगी पशु को भूखा रख कर या अंग तोड़ कर निरुपयोगी बना देंगे। यदि सरकार वास्तव में गोवध बन्द कराना चाहती है तो उसे गोरक्षा कमेटी की सम्पूर्ण गोवध बन्दी की सिफारिशों को स्वीकार करते हुए विधेयक उपस्थित करना चाहिए जो विधेयक उपस्थित किया गया है वह निकम्मा तथा निरर्थक है। यह विधेयक केवल मात्र गोवध-निषेध आन्दोलन को ठंडा करने और आने वाले चुनाव में मत प्राप्त करने का साधन है। जैसा सन् १९३७ में, जिन दिनों देश में गोवध-निषेध के लिए भारी आन्दोलन था, सरकार ने एक कमेटी बना कर उसे खत्म कर दिया था, उसी तरह इस विधेयक के द्वारा गोवध-निषेध आन्दोलन को दबाने के लिए अनुचित कोशिश की गयी है। जनता तथा संसद के सदस्यों को चाहिये कि वे इस जाल में न फंसें।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार १७ आषाढ़ सम्वत् २००८ [अङ्क १०

देश में अनैतिकता का प्रवाह

"कुछ सप्ताह पूर्व नागपुर की जीवन विकास प्रदर्शनी में मनोरंजन के लिए एक संगीतोत्सव का कार्यक्रम रखा गया था। उसमें एक प्रसिद्ध गायिका का संगान होना था। शहर के कई लोग अधिकतर स्कूल और कालेज के युवक युवती तथा अच्छे घर की स्त्रियां उसे सुनने के लिए एकत्र हुई थीं। कुछ कारण से वह गायिका हाजिर न हो सकी, और देर तक राह देखने के बाद आयोजकों को प्रोग्राम रद्द करने की सूचना देनी पड़ी। इससे श्रोता बड़े आवेश में आ गये और स्कूल तथा कालेज के और वैसे ही दूसरे भी गुंडे जोर से शोर-गुल करते हुए तोड़-फोड़ करने लगे। उन्होंने कांच तोड़े, बल्ब फोड़े और अंधेरा कर दिया। फिर वे स्त्रियों पर टूट पड़े। कई को पकड़ा, कपड़े खींचे और हैवान भी न करे, ऐसा बर्ताव उनके साथ किया। पुलिस ने बड़ी मुश्किल से शांति स्थापित की।" यह उद्धरण, जो हरिजनसेवक से लिया गया है, हमारे सामाजिक और नैतिक जीवन पर प्रकाश डालने के लिए पर्याप्त है। वस्तुतः आज हमारे राष्ट्र का नैतिक धरातल लगातार गिरता जा रहा है। आज हम अपने आस पास नित्यप्रति युवकों में बढ़ती हुई उच्छृङ्खलता के उदाहरण देख सकते हैं। इस प्रकार की बुराइयां हमारे रोजाना जीवन की एक साधारण घटना होती जा रही हैं। ऐसी घटनाओं की ओर निर्देश करते हुए श्री मशरूवाला लिखते हैं—"हमारे स्कूल और कालेज चरित्र गिराने और कुसंस्कार को पोषण करने के अखाड़े बनते जा रहे हैं। सभाओं में शोरगुल करके कार्रवाई रोक देने, अपने अध्यापकों पर प्राणघातक हमला करने, प्रतियोगियों का खून करने, विद्यार्थिनियों को छेड़ने और उनके वश न होने पर उन्हें सताने और गुण्डागिरी करने तक की सीमा को वे पहुँच गये हैं। विद्यालयों से वे ज्ञान बहुत कम लेते हैं और वहां के वातावरण में सभ्यता तो उससे भी कम रह गयी है। विद्यार्थिनियां जहां जाती हैं, वहां अपने पीछे लड़कों को भटकते हुए देखती हैं। बहुत-सी घबड़ाकर किसी तरह उन्हें टालने के मार्ग खोजती हैं। लड़कों का यह बर्ताव हैवानों से भी बदतर है, क्योंकि हैवान भी एक मर्यादा से बाहर नहीं जाते, यह तो निरी शैतानियत ही है।"

आज सारा देश चुनावों के दलदल में पड़ा हुआ है। रोज नये राजनैतिक दल बन रहे हैं और बड़े बड़े सिद्धान्तों की घोषणाएं हो रही हैं, आकर्षक शब्दजाल से किसी राजनैतिक दल की ठीकेदारी की जा रही है, हर एक दल यह स्वप्न ले रहा है कि वह आगामी चुनाव में विजय प्राप्त करके सरकारी कुर्सियां हथिया लेगा, किन्तु इस समस्त संघर्ष में देश के नैतिक धरातल की किसी को चिन्ता नहीं है। हमारे शिक्षालय, जो अनुशासन व नैतिकता के प्रसार केन्द्र होने चाहिए थे, आज अनुशासन हीनता व अनैतिकता के प्रसार केन्द्र हो रहे हैं। पं० जवाहरलाल नेहरु ने देश के युवकों में बढ़ती हुई उच्छृंखलता और अनुशासनहीनता पर खेद प्रकट करते हुए कहा था कि यदि यह प्रवृत्ति अधिक समय तक चली, तो यह गम्भीरता पूर्वक सोचना पड़ेगा कि क्या शिक्षण संस्थाओं को बन्द कर देना अधिक अच्छा नहीं है?

पिछले दिनों देश में अनेक संस्कृति सम्मेलन हुए, अनेक संस्कृति-संस्थाएं नई बनी और बहुत-सी धार्मिक व सामाजिक संस्थाएं बहुत समय से काम कर रही हैं। किन्तु देश में बढ़ती हुई इस उच्छृंखलता और अनैतिकता की ओर बहुत कम लोगों का ध्यान गया है। चरित्र और संयम किसी देश की सबसे बड़ी सम्पत्ति है, उसे ही हम नष्ट कर रहे हैं। क्या देश के विचारक इस दिशा में कुछ विचार करेंगे?

डी वेलरा तथा नेहरू

पिछले दिनों आयर के नव निर्वाचित प्रधान मन्त्री श्री डी वेलरा ने एक वक्तव्य में कहा था कि जब तक आयर उत्तरी और दक्षिणी दो खण्डों में विभक्त है, उसके अटलांटिक संधि में सम्मिलित होने का प्रश्न ही नहीं उठता। अंग्रेज ने आयर को आज से करीब २५ वर्ष पूर्व दो खण्डों में इसी तरह विभक्त कर दिया था, जैसे भारत को १९४७ ई० में विभक्त किया। आयर के राजनीतिज्ञ देश के इस विभाजन को आज तक नहीं भूले और वे तब तक इंगलैण्ड को किसी प्रकार का अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग देने के पक्ष में नहीं है। एक ओर हम हैं कि भारत के कृत्रिम विभाजन का विरोध करने को साम्प्रदायिकता समझते हैं और पाकिस्तान से समझौता करते हैं कि दोनों खण्डों को एक करने का आन्दोलन नहीं चलने देंगे। आयर व भारत के राजनीतिज्ञों का यह अन्तर सचमुच आश्चर्यप्रद है।

———

आत्मनिर्भरता

भारत सरकार ने दो वर्ष पूर्व घोषणा की थी कि १९५१ में भारत अन्न की दृष्टि से पूर्ण स्वावलम्बी हो जायगा, किन्तु स्थितियां लगातार प्रतिकूल होती गईं और उसका परिणाम यह हुआ कि हमें अनाज विदेशों से बहुत अधिक मंगाने को विवश होना पड़ा है। देश में भी जितना अन्न संग्रह सरकारों को करना था, उससे बहुत कम अन्न का संग्रह वे कर सकी हैं। ४१ लाख ६० हजार टन के स्थान पर उन्हें अब तक २३ लाख टन ही प्राप्त हुआ है। बाढ़ें अतिवर्षा या अनावृष्टि आदि के कारण ६९ लाख टन अन्न की उत्पत्ति कम हुई है। परन्तु सरकार के अन्नसंग्रह में कमी का एक और भी कारण है और वह यह है कि बिहार आदि प्रान्तों में अन्न संकट के समाचारों से किसानों ने यह समझा कि जितना अन्न छिपा रखेंगे, उतना ही अधिक मूल्य वे पीछे प्राप्त कर सकेंगे। देशवासियों के हित की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वार्थ ही इस प्रवृत्ति का मूल कारण है और जब तक राष्ट्रीयता की भावना हमारे देश में नहीं पनपेगी, तब तक हम अपने देश की समस्याओं को नहीं सुलझा सकेंगे।

———

स्वार्थ का जोर

देशव्यापी चुनावों के समीप आने पर विभिन्न राजनीतिक दलों का बनना स्वाभाविक है। किन्तु यह भी सच है कि छोटे छोटे दल चुनाव में बहुत बड़ी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते और यही कारण है कि विविध दलों को परस्पर मिला कर कांग्रेस के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाने का प्रस्ताव जगह-जगह पेश किया जा रहा है। कभी समस्त हिन्दुत्ववादी संस्थाओं को एक करने का प्रस्ताव होता है तो दूसरी जगह प्रजा-पार्टी समाजवादी दल और जनकांग्रेस को मिलाने का प्रस्ताव किया जाता है। किन्तु इन विविध दलों में एकता तभी हो सकती है जब कि दलों के संयोजक नेता स्वयं आदर्शवादी हों, कुर्सियां हथियाने की इच्छामात्र उनमें न हो। सवाल यही है कि आज एक ही विचारधारा के जो विविध दल बन रहे हैं, वे क्या सभी आदर्शवादी हैं? क्या यह सच नहीं है कि आचार्य कृपलानी के साथ प्रायः वही लोग मिले हैं जो कुर्सियों के भूखे थे पर कुछ भी पा नहीं सके हैं। क्या समाजवादी, फारवर्ड ब्लाक, कम्यूनिस्ट आदि दल कभी मिल सकते हैं?

———

आकाशवाणी

अ० भा० रेडियो विभाग ने रेडियो का हिन्दी नाम आकाशवाणी घोषित करके अच्छा कार्य किया है। हमें अपने पारिभाषिक शब्द अधिकाधिक सरल हिन्दी भाषा में प्रचलित करने चाहिए। राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार का यह सर्वोत्तम साधन है। यह सचमुच दुःख की बात है कि रेडियो जैसे प्रचलित शब्द का हमारी अपनी भाषा में कोई एक नाम न हो। सरकार का कर्तव्य है कि वह अन्य भी प्रचलित अंग्रेजी शब्दों की जगह हिन्दी शब्द घोषित करने का प्रयत्न करे।

———

ईरान का तेल

तेल के प्रश्न पर ब्रिटेन तथा ईरान में इतना अधिक खिंचाव उत्पन्न हो गया है कि सम्बन्ध किसी भी क्षण टूटने की स्थिति आ सकती है। यही नहीं विश्व-युद्ध की चिन्गारी ईरानी तेल ही बनता प्रतीत होता है। ईरान में ब्रिटेन के विरुद्ध जनक्षोभ को उभारने की नीति पर आचरण किया जा रहा है। क्षुब्ध जनता पर नियंत्रण रख पाना सभी स्थानों पर अत्यन्त कठिन है। ऐसी स्थिति में ब्रिटिश नागरिकों का जीवन किसी भी क्षण संकट में पड़ सकता है, जो ब्रिटेन को अपनी सेनायें ईरानी भूमि पर उतारने का अवसर दे देगा, और इसका अर्थ होगा भीषण विस्फोट।

———

देश-वार्ता

प० जवाहरलाल नेहरू

डा० अली हट्टा

अमेरिकी ऋण

अमेरिका से २० लाख टन अनाज के ऋण के चुकाने के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त हुई है। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार यह ऋण ३५ वर्ष में चुकाया जाना चाहिये। इस विषय में पहिली किश्त १९५७ से आरम्भ होगी। अमेरिका से २० लाख टन अनाज खरीदने के लिए भारत को १९ करोड़ डालर का ऋण दिया गया है। इस ऋण पर २½ प्रति शत प्रति वर्ष की दर से ब्याज लगेगा। इस ब्याज की पहिली किश्त ३१ दिसम्बर १९५२ से प्रारम्भ होगी। १९५७ से मूल तथा ब्याज की सम्मिलित किश्तें चलेंगी। ये किश्त वर्ष में दो बार दी जाया करेंगी। १९५७ से १९६६ तक ७० लाख डालर प्रतिवर्ष चुकाए जायेंगे। १९६७ से १९७६ तक यह धनराशि बढ़कर एक करोड़ डालर प्रति वर्ष हो जावेगी। और १९७७ से १९८६ के अन्तिम दस वर्षों मे भारत को एक करोड़ बीस लाख डालर प्रतिवर्ष चुकाना होगा। इस प्रकार १९८६ में यह ऋण समाप्त होगा। और भारत १९ करोड़ डालर का ऋण इस प्रकार लगभग २९ करोड़ डालर देकर चुकावेगा।

निकट भविष्य में भारत और अमेरिका के मध्य उस कच्चे माल और अन्य सामग्री के विषय में बातचीत शुरु होने वाली है जिसमें उन पदार्थों के विषय में तय किया जायगा जो इस धनराशि को आंशिक रूप से चुकाने में अमेरिका भारत से चाहता है।

श्री सुकर्ण का पत्र

इन्डोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण तथा भूतपूर्व प्रधान मन्त्री डा० हट्टा द्वारा भेजे काश्मीर विषयक एक पत्र का उत्तर प्रधान मन्त्री प जवाहरलाल नेहरू द्वारा दे दिया गया है। अपने पत्र में दोनों सज्जनों ने यह आशा प्रकट की थी कि राष्ट्र संघीय मध्यस्थ डा० ग्राहम की सहायता से प० नेहरू काश्मीर के प्रश्न का सन्तोषजनक हल निकाल लेंगे। पत्र के उत्तर में प्रधान मन्त्री ने लिखा है कि यद्यपि भारत इस प्रश्न को हल करना चाहता है और इस विषय में डा० ग्राहम की सहायता से वह प्रसन्न ही होगा तो भी पाकिस्तान द्वारा लगातार युद्ध की धमकियां और भारत की निन्दा करने वाले आचरण के कारण यह सम्भव दिखाई नहीं देता।

प० नेहरू ने लिखा है 'जहां तक हमारा प्रश्न है हमने एक शान्तिपूर्ण हल निकालने की भरसक चेष्टा की है यद्यपि वास्तविकता यह है कि पाकिस्तान ने जानबूझ कर वहां आक्रमण किया और अभी भी काश्मीर राज्य के एक भाग पर अन्यायपूर्वक अधिकार जमाये हुए है।' प्रधान मन्त्री ने आगे लिखा है कि इस विषय में काश्मीर राज्य और वहां की जनता ही निर्णय करेगी। इन्डोनेशिया के नेताओं द्वारा इसी प्रकार का एक पत्र श्री लियाकत अली खां को भी भेजा गया है। श्री लियाकत अली खां सम्भवतः १८ जुलाई को जाकार्ता जा रहे'।

राजधानी में सेक्रेटेरियट के सम्मुख महिलाओं का प्रदर्शन

रद्दी पाक चावल

पाकिस्तान द्वारा भारत को भेजे जाने वाले चावल को लेकर पाक तथा भारत के मध्य एक विवाद खड़ा हो गया है। पाकिस्तान सरकार ने यह आरोप लगाया है कि भारत भेजे गये चावल का मूल्य नहीं दे रहा। भारत सरकार की ओर से यह स्पष्ट कर दिया गया है कि पाकिस्तान द्वारा भेजा गया चावल बहुत रद्दी है और खाने के योग्य नही है। हाल ही में इसी प्रकार के बलूचिस्तान के रद्दी चावल को अस्वीकार करने के लिए भारत को बाध्य होना पड़ा, क्योंकि ऐसा चावल भारत में कहीं नहीं खाया जाता।

यह ज्ञात हुआ है यह विवाद हाल ही में पाक द्वारा भेजे गए माल को लेकर उठा है, विशेष कर उस ८०० टन चावल को लेकर जो साबरमती जहाज द्वारा गत मास पाकिस्तान से भेजा गया है। यह कहा जाता है कि यह चावल इतना खराब है कि बिक नहीं सकता। यह विश्वास किया जाता है कि भारत सरकार ने इसका मूल्य रोक लिया है। इस सम्बन्ध में पाक अधिकारियों से बातचीत करने के लिए भारत के खाद्य विभाग के डिप्टी डाइरेक्टर श्री बी पी भार्गव कराची पहुंच गए हैं।

उड़ीसा कांग्रेस मे फूट

उड़ीसा प्रान्तीय कांग्रेस समिति में भी भारी फूट है और शीघ्र ही वहां भी दो दल बनने की सम्भावना उपस्थित हो गई है यह बात हाल ही में हुई प्रांतीय कांग्रेस कमटी की बैठक में स्पष्ट हो गई है। इस बैठक में चुनाव समिति के नामों का निश्चय हुआ और उस निश्चय ने फूट पर अपनी मोहर लगादी।

समिति में मन्त्रिमंडल के सात सदस्यों का नाम चुनाव समिति में रखने के लिए प्रस्तावित किया गया था परन्तु उन लोगों ने अपने नाम वापिस ले लिए। फलतः उड़ीसा प्रान्तीय कांग्रेस समिति द्वारा के नौ व्यक्ति चुनाव समिति में चुन लिए गए। अपना नाम वापिस लेने वालों में श्री हरेकृष्ण मेहताब तथा नवकृष्ण चौधरी आदि थे।

संविधान संशोधन का विरोध
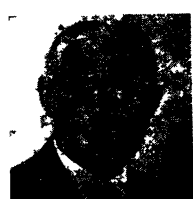
भारतीय संसद द्वारा हाल ही में अस्वीकृत संविधान (संशोधन) नियम के विरोध में अखिल भारतीय पत्र सम्पादक सम्मेलन का बम्बई में विशेषाधिवेशन बुलाया गया था। दो दिन के पश्चात उक्त सम्मेलन समाप्त हो गया।

सम्मेलन के एक प्रमुख प्रस्ताव में निश्चय किया गया है कि केन्द्र तथा प्रांतों में प्रेस सलाहकार समितियां जो सम्बन्धित सरकारों को परामर्श देती है, अपना कार्य स्थगित करदें। अधिवेशन ने विचार स्वातन्त्र्य पर लगाये गए प्रतिबन्धों के विरोध में सभी समाचार पत्रों से अपील की है कि वे १२ जुलाई को अपना प्रकाशन बन्द रखें।

विशेषाधिवेशन ने, जो भारतीय संविधान की धारा १९ (२) में किए गए संशोधनों से उत्पन्न परिस्थिति पर विचार करने के लिए बुलाया गया था, उपरोक्त संशोधन की तीव्र निन्दा की है और उसे भारतीय प्रेस स्वातन्त्र्य के लिए खतरा तथा विचार स्वातन्त्र्य पर प्रतिबन्ध बताया है। इसके विरोधी प्रस्ताव में आगे कहा गया है कि जबतक उपरोक्त संशोधन रद्द नहीं कर दिए जाते और बिना शर्त पूर्ण विचार स्वातन्त्र्य स्थापित नहीं हो जाता तब तक समाचार पत्र चैन नहीं लेंगे "और विचार स्वातन्त्र्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और जबतक विधान द्वारा उसकी पूर्ण गारंटी नहीं की जाती हम चैन से नहीं बैठेंगे" वाक्य अपने प्रत्येक अंक में प्रकाशित करेंगे।

अधिवेशन ने एक प्रस्ताव द्वारा मतदाताओं से अनुरोध किया है कि वे मत देते समय प्रत्येक उम्मीदवार से यह प्रतिज्ञा करायें कि वे उपरोक्त संशोधन रद्द करने का प्रयत्न करेंगे।

डा० ग्राहम

अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच

जनरल रिजवे

कोरिया

कोरिया में युद्ध चलते हुए एक वर्ष हो गया। इस एक वर्ष में दोनों ही पक्ष कई बार आगे बढ़े और कई बार पीछे। ऐसे भी क्षण आये जब यह प्रतीत होता था कि उत्तरी कोरियन राष्ट्रसंघ के जवानों को समुद्र में धकेल देंगे। और ऐसा भी अवसर आया जब यह प्रतीत हुआ कि अब उत्तरी कोरिया के आगे आत्मसमर्पण के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं बचा है। तो भी दोनों ही पक्ष परिस्थितियों के बदल पाने में सफल हुए और आज दोनों पक्ष प्राय बराबर से हैं।

इस युद्ध की सबसे अधिक मार दक्षिणी कोरिया की भूतपूर्व राजधानी सियोल पर पड़ी है। सर्व प्रथम उत्तरी कोरियनों ने इस पर अधिकार किया। तत्पश्चात जनरल मेकार्थर द्वारा ऐतिहासिक इञ्चोन की चढ़ाई में यह राष्ट्रसंघ के हाथ आया। पुनः यालू नदी से बढ़ते हुए चीनियों ने इस पर अधिकार किया। और फिर ऊपर चढ़ती हुई राष्ट्रसंघीय सेनायें इसमें प्रविष्ट हुईं। उत्तर से लेकर दक्षिण तक समस्त कोरिया प्रायद्वीप का नागरिक जीवन इस युद्ध की ज्वाला में नष्ट सा होगया है, किन्तु सर्वाधिक विनाश कोरिया के कटिप्रदेश में हुआ है।

इस युद्ध की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना विख्यात जनरल मेकार्थर को अपदस्थ किया जाना है, जिससे अमेरिका में ही एक राजनैतिक तूफान सा आ गया था।

ईरान

ईरान और ब्रिटेन के मध्य तनाव टूटने की स्थिति तक आ पहुँचा है। ईरान में भड़कते हुए जन क्षोभ से ब्रिटिश नागरिकों के जीवन को भय उपस्थित होने की सम्भावना के कारण ऐंग्लो ईरानी तेल कम्पनी के ब्रिटिश कर्मचारियों की स्त्रियों और बच्चों को वायु मार्ग द्वारा इंग्लैंड पहुँचा दिया गया है। दूसरी ओर ईरानी असेम्बली में एक ऐसा कानून का विधेयक लाया जा रहा है जिसके अनुसार ईरानी तेल कम्पनी के कर्मचारियों द्वारा ठीक प्रकार से काम न किए जाने पर उनके विरुद्ध "विध्वंसक कार्यवाहियां" करने के लिये अभियोग चलाया जा सकेगा और उन्हें कठोर श्रम सहित कारावास का दण्ड दिया जा सकेगा। ब्रिटेन का कथन है कि यह बिल कंपनी के ब्रिटिश कर्मचारियों के विरुद्ध बनाया जा रहा है।

तनाव की स्थिति विस्फोट की सीमा तक आ पहुची है। ब्रिटेन का युद्धपोत "मोरिशस" आदेश पाकर अबा-

श्री० मुसद्दिक

दन के निकट आ पहुँचा है एक अन्य टैंक लादने वाला जहाज "मैसोना" बसरा में पहुँच गया है। कुछ सूत्रों का कथन है कि उक्त जहाज पर टैंक तथा ब्रिटिश सेनाएं हैं किन्तु ब्रिटिश राजदूतावास ने इसका खण्डन किया है। यदि कम्पनी के सभी कर्मचारियों को निकालने का अवसर आगया तो यह जहाज कार्य करेगा। मध्यपूर्व के अन्य सभी हवाई अड्डों पर ब्रिटिश वायुसेना तैयार खड़ी है। स्वेज नहर पर पहुँची हुई ब्रिटिश सेनाओं के और आगे चल पड़ने का समाचार मिला है। क्रीट में ब्रिटिश छतरीधारी सैनिक तैयार हैं। इस तनाव को कम करने के लिए भारत सरकार ने भी ईरान सरकार को सलाह दी है कि वह बुद्धिमानी और चतुराई से कार्य ले।

ईरान को चेतावनी

ब्रिटिश सरकार ईरान को इस सम्बन्ध में अंतिम चेतावनी देने पर विचार कर रही है कि यदि उसने अपना वर्तमान ढंग न बदला तो तेल क्षेत्रों से सभी ब्रिटिश नागरिक निकाल लिये जायेंगे। सम्भवत. तेहरान का ब्रिटिश राजदूत ईरानी प्रधान-मन्त्री से ये अन्तिम अनुरोध करेगा कि वे अपनी नीति में कुछ परिवर्तन करें, किन्तु यदि यत्न सफल नहीं रहा, तो पूर्ण निष्कासन अनिवार्य हो जायेगा। इसके परिणामस्वरूप स्पष्ट है कि ईरानी तेल का उत्पादन ही बन्द हो जायेगा।

एक ब्रिटिश प्रवक्ता के अनुसार निष्कासन की स्थिति में ईराकी बन्दरगाहों को काम में लाने की सम्भावना पर ब्रिटेन ईराक से चर्चा कर रहा है। उपरोक्त प्रवक्ता ने कहा है कि यह देखना आवश्यक होगा कि विध्वंसक कार्यवाहियों संबन्धी बिल पर ईरान सरकार का आचरण कैसा होता है और ब्रिटिश कर्मचारियों का वहां रहना असम्भव हो जाता है या नहीं। ईरान की स्थिति पर अनुदार दल के नेता श्री चर्चिल तथा ईडन तथा ब्रिटिश प्रधान मन्त्री श्री एटली के मध्य चर्चा हो चुकी है।

मलिक का शांति प्रस्ताव

संयुक्त राष्ट्र संघ में रूस के स्थायी प्रतिनिधि श्री जेकब मलिक ने हाल ही में रेडियो पर भाषण देते हुए कोरिया में शान्ति स्थापित करने की एक नयी अपील की है। इस अपील ने यद्यपि संसार के सभी प्रमुख राजनीतिज्ञों का ध्यान आकृष्ट किया है, तो भी अमेरिका तथा ब्रिटेन के क्षेत्रों मे अनावश्यक उतावलापन प्रकट न करने का यत्न किया जा रहा है। श्री मलिक के शांति प्रस्ताव में कम्यूनिस्ट चीन को मान्यता और फारमोसा दोनों ही विवादास्पद प्रश्नों का उल्लेख नहीं किया गया है। इन्हीं

श्री० जैकब मलिक

दो प्रश्नों को न मानने के कारण कम्यूनिस्ट चीन का सुरक्षा परिषद में गया हुआ प्रतिनिधिमण्डल लौट आया था। मलिक के प्रस्ताव का समर्थन माओत्से तुंग ने भी किया है। ऐसी स्थिति में कुछ क्षेत्र यह विचार करते हैं कि यदि ठीक प्रकार से प्रयत्न किये गए तो कोरिया में शान्ति स्थापित हो सकेगी।

डा० ग्राहम चल पड़े

भारत तथा पाकिस्तान के मध्य काश्मीर प्रश्न को सुलझाने के लिए भारत के विरोध पर भी सुरक्षा परिषद द्वारा नियुक्त मध्यस्थ डा० ग्राहम न्यूयार्क से पेरिस के लिए रवाना हो गये। डा० ग्राहम के साथ उनके चार सहकारी भी हैं। पेरिस में उनके दल के अन्य व्यक्तियों के मिलने की आशा है। वहां से यह दल गुरुवार को कराची के लिए रवाना हो जायगा और यह पत्र पाठकों के हाथ पहुंचने तक कराची पहुँच चुकेगा। डा० ग्राहम का विचार नई दिल्ली बाद में आने का है।

जहां पाकिस्तान ने सुरक्षा परिषद के इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार किया है वहां भारत ने इसे पूर्णत अस्वीकार किया हुआ है। भारत सरकार के अनुसार डा० ग्राहम के नई दिल्ली आगमन पर उनका साधारण स्वागत किया जायगा, किन्तु उनके किसी निर्णय को मानने के लिए भारत सरकार बाध्य नहीं है।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में न्यायाधीश पद पर श्री बी एन राव का चुनाव करवाने के लिए भारत सरकार ने अरब देशों से चर्चा प्रारम्भ की है यह समाचार प्राप्त हुआ है। सुविज्ञ क्षेत्रों में चर्चा है कि अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के ९ न्यायाधीशों में एक स्थान भारत को सरलता से प्राप्त हो सकता है। किन्तु इससे स्वयं भारत को किसी प्रकार का लाभ होने की सम्भावना नहीं है। श्री बी एन राव सुरक्षा परिषद में भारत के एक अच्छे वक्ता माने जाते हैं। उनकी न्यायाधीश के पद पर नियुक्ति के कारण भारत अपने एक सुयोग्य वक्ता की सेवाओं से वंचित रह जायेगा। जब तक स्वयं भारत काश्मीर के प्रश्न को लेकर सुरक्षा परिषद में बना है, तब तक उसके ही प्रतिनिधि की न्यायाधीश के पद पर नियुक्ति देश के लिये विशेष लाभप्रद नहीं होगी। ऐसा कुछ क्षेत्रों का मत है।

★

श्री० एन० राव

पत्रकार जीवन के ३२ वर्ष

★ श्री प० इन्द्र विद्यावाचस्पति

यों तो मुझे बचपन से ही पत्रकारिता का शौक था, परन्तु विधिपूर्वक पत्रकार मैं तब बना, जब १९१८ के अन्त में रौलट ऐक्ट विरोधी आन्दोलन खड़ा होने पर मैंने विजय' पत्र निकालना आरम्भ किया। आज लगभग ३२ वर्षों के पश्चात् पत्रकारिता के पेशे से सीधा सम्बन्ध तोड़ते हुए मैं जब गत वर्षों का सिंहावलोकन करता हूं, तब मुझे वे परिवर्तन आश्चर्यकारी प्रतीत होते हैं, जिनमें से होकर पत्रकार जगत् गुजरा है। भारत के उस समय के पत्रकारों में और वर्तमान पत्रकारों में वही भेद है, जो रणार्थ बनी हुई स्वयं सेवक सेना के सिपाहियों और उन सिपाहियों में होता है जो स्थिर सेना के वेतन भोगी सिपाही हों।

हमारे देश में प्रभावशाली समाचार-पत्रों का जन्म देश-भक्ति की भावना को लेकर हुआ। जो समाचारपत्र या गजट केवल सरकारी समाचारों या कथा कहानियों के प्रकाशित करने के लिए निकाले जाते थे, उनका देश के पत्र सम्बन्धी इतिहास में कोई विशिष्ट स्थान नहीं है। उस समय के जिन समाचारपत्रों ने प्रजा और सरकार की दृष्टि में प्रतिष्ठा प्राप्त की, देश भक्ति के जनून का परिणाम थे। 'केसरी' तथा 'अमृत बाजार पत्रिका' जैसे सामयिक पत्रों का जन्म किसी व्यापारिक प्रेरणा से नहीं हुआ था, उनका प्रेरक कारण उग्र देशप्रेम था।

हिन्दी भाषा के समाचारपत्रों का जन्म भी देश सेवा की भावना से हुआ। मैं अपनी बात करता हूं कि जब मैं छात्रावस्था में 'केसरी' और 'युगांतर' जैसे पत्रों को पढ़ता और उनके इति वृत सुनता था, तब मन में यह लालसा उठती कि एक दिन मैं भी पत्रकार बनूंगा और ऐसे लेख लिखूंगा कि लोग वाह-वाह करें और सरकार दमन करने के लिए मजबूर हो। शिक्षा समाप्त करते करते मेरा यह लालसा एक संकल्प के रूप में परिवर्तित हो गया, फलतः मैं १९१४ ई० में साप्ताहिक सद्धर्म प्रकाशन का सम्पादक और संचालक बन कर दिल्ली आ गया। वह मेरे पत्रकारिता के जीवन की प्रस्तावना थी।

उसके पश्चात् मेरे कार्यक्रम में छोटे बड़े कई परिवर्तन आये, परन्तु ऐसा पत्रकार बनने की भावना कि जिसका दमन करना विदेशी सरकार आवश्यक समझे, निर्बल न हुई। अन्त में १९१८ के अन्त में रौलट ऐक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह का झण्डा खड़ा करके महात्मा गांधी ने मुझे वह अवसर दिया और मैंने अपने मित्र श्री टी० पी० सिन्हा के सहयोग से विजय नाम का पत्र निकाला।

जब विजय का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, तब भारत के नवयुवक पत्रकारिता का क्या आदर्श समझते थे, इसका अनुमान मेरी पहले एक वर्ष की दिनचर्या से लगाया जा सकता है। विजय पत्र केवल ५ हजार रुपयों की पूंजी से चलाया गया था। इस पूंजी में से एक हैण्ड प्रेस और टाइप खरीदा गया था, इसी में से चटाई और डैस्क से परिष्कृत कार्यालय सजाया गया था और इसी में कर्मचारियों के निर्वाह की आशा बांधी गई थी। विजय का आरम्भ करने से पूर्व मैं एसोशिएटेड प्रेस के तत्कालीन डाइरेक्टर मि० राय से मिला था। उन्होंने जब सुना कि मैं दिल्ली से हिन्दी में एक दैनिक पत्र निकाल रहा हूं, तो मेरी पीठ पर थपकी देकर कहा—"मेरे नौजवान भाई, मैं तुम्हे दिल्ली से दैनिक पत्र निकालने की सलाह नहीं देता, क्योंकि यह भूमि समाचारपत्रों के लिए ऊसर है।" मैंने नेक सलाह के लिये राय महोदय धन्यवाद दिया, परन्तु पत्र निकालने के निश्चय में परिवर्तन न किया। फलतः एक हैंड प्रेस और कुछ टाइप के आधार पर दिल्ली की ऊसर भूमि में दैनिक पत्र का बीज बो दिया गया। उन दिनों मेरी दिनचर्या यह थी कि प्रातःकाल ५ बजे उठ कर सबसे पहले उस दिन के लिए अग्रलेख और सम्पादकीय टिप्पणियां लिख डालना। फिर कार्यालय का समय आने पर समाचार लिखना, प्रबन्ध की देख-भाल करना, और डाक को निपटाना। विजय सायंकाल समय निकलता था। निकलने के समय उसके वितरण की व्यवस्था करने के पश्चात् सांझ के समय होने वाली सभाओं में सम्मिलित होना तथा अन्य सार्वजनिक कार्य करना; उन दिनों नौजवान पत्रकारों के सार्वजनिक कार्य और पत्र सम्पादन में, तथा पत्र के सम्पादन तथा प्रबन्ध कार्य से कोई भेद करने वाली रेखा खिंची हुई नहीं थी। प्रायः वही व्यक्ति शहर के सार्वजनिक कर्ता होने के साथ-साथ पत्र के सम्पादक और प्रबन्धक भी होते थे और इन सब कामों के बोझ को वे हंसते हंसते और चौक से कन्धों पर उठाते थे। उस समय पत्रकारिता का कार्य एक धन्धा या पेशा नहीं समझा जाता था, उसे देशसेवा का एक विभाग माना जाता था और जब पत्र संचालन के निमित्त से देशसेवा करते कभी सरकार की ओर से जेल या जुर्माने का पुरस्कार मिलता था, तब वे उसे भगवान् की ओर से दिया गया देशसेवा का कल्याणकारी पुरस्कार समझते थे।

उन दिनों देश के नवयुवक पत्रकारों की यह दशा थी कि न किसी को उन्हें मिलने वाले वेतनों की मात्रा का पता था और न आगे होने वाली वद् वृद्धि का। उनकी दृष्टियों के सामने तो लोकमान्य तिलक, श्री अरविन्द घोष और श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की मूर्तियां विद्यमान् रहती थीं, जिनसे वे उत्साहित और अनुप्राणित होते थे। यही कारण था कि उस समय समाचार पत्रों के कार्यालयों में यह लेखा तो रखा जाता था कि किस पत्र से कितनी बार जमानत मांगी गई और उसके सम्पादक को कितनी बार जेल जाना पड़ा, परन्तु यह विवरण नहीं रखना पड़ता था कि नौकरी के ग्रेड क्या हैं, और भत्ते का स्केल क्या होगा? सम्भवतः यह मनोवृत्ति दुनियादारी की दृष्टि से घटिया थी, परन्तु देश की पराधीनता से मुक्त कराने में यह बहुत सहायक हुई।

मैंने ऐसे वातावरण में पत्रकारिता का कार्य आरम्भ किया था। कुछ समय पीछे ऐसे व्यक्ति भी मैदान में आये, जो समाज सेवी भी थे, और व्यापारी भी। उन्होंने जहां एक ओर अपने समाचार पत्र को देशसेवा का साधन बनाये रखा, वहां साथ ही धनी और शक्तिसम्पन्न व्यक्तियों को प्रसन्न करके या डरा धमका कर पत्रों को आर्थिक लाभ का साधन भी बना लिया। रियासतों के शासकों और बड़े कारखानेदारों को प्रायः ऐसे पत्रों की आवश्यकता रहती थी, जो उनकी प्रशंसा करें, और उन पर होने वाले आक्षेपों के उत्तर दें। जो पत्रकार उन शक्तिशाली व्यक्तियों के औजार बनने को उद्यत हो गये, उन्हें धन की प्राप्ति होने लगी, और संसार की दृष्टि में वे 'कामयाब पत्रकार' समझे जाने लगे। वह पत्रकारिता के इतिहास में दूसरा युग था। उसमें गङ्गोत्तरी का विशुद्ध जल गन्दले नदी-नालों के मिलने से गन्दा होने लगा। कई पत्रकारों ने उस युग में खूब हाथ रंगे, परन्तु सामान्य रूप में भारतीय समाचार पत्रों का सदाचार कायम रहा। वे देशभक्ति और स्वाधीनता प्रेम से अनुप्राणित होते रहे।

कुछ पत्रकारों द्वारा रियासतों के शासकों और धनी व्यक्तियों का काम करके या उन्हें डरा धमका कर लाभ उठाने का परिणाम यह हुआ धनी लोगों की दृष्टि में समाचार पत्रों और पत्रकारों का आदर कम होता गया। वे लोग समझने लग गये, कि जिन्हें दुनिया-बहादुर शेर समझती है, उनमें रंगे स्यार भी हैं। इस सम्मति-परिवर्तन का परिणाम समाचार-पत्रोंके लिये बहुत बुरा हुआ। धन-सम्पन्न लोगों के मन में यह बात आ गई कि यदि समाचार पत्रों की सहायता से काम

(शेष पृष्ठ १६ पर)

जनतन्त्र में व्यक्ति का महत्व

क्योंकि जनतन्त्र शासन विधि का स्थायी रूप न होकर एक जीवित और विकासशील सिद्धान्त है। उदाहरणार्थ ब्रिटेन, संयुक्तराज्य अमेरिका और फ्रांस की शासन विधियों में बहुत अन्तर है किन्तु हैं वे सब जनतन्त्रात्मक ही इस लिए यह आवश्यक है कि जनतन्त्र के सिद्धान्तों की परीक्षा हम समय समय पर करते रहें।

यह सोचना गलत है कि किसी देश की शासन विधि का अक्षरशः अनुकरण किसी अन्य देश मे किया जा सकता है। शासन विधि तो हमारे कपड़ों के समान है और जो पहनने वाले के अनुरूप होनी चाहिये।

यद्यपि किसी देश की शासन विधि किसी दूसरे देश द्वारा हूबहू नहीं अपनाई जा सकती, किन्तु जनतन्त्रात्मक शासन के सिद्धान्तों के विषय में ऐसा नहीं कहा जा सकता। कारण, जनतन्त्रात्मक सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय सत्य पर आधारित है, राष्ट्रीय सत्य पर नहीं, उनकी सार्थकता स्थायी है, क्षणभंगुर नहीं। यह आवश्यक है कि वर्तमान समय की पृष्ठभूमि से जनतन्त्रात्मक सिद्धान्तों पर वादविवाद होता रहे। इस लिए ब्रिटेन के विविध लेखक विस्तार में मतभेद रखते हुए भी सिद्धान्तो पर एकमत हैं।

"कम्यूनिस्ट डिमाक्रेसी" के समर्थकों को उपयुक्त बात से बड़ा आश्चर्य हो सकता है और वे घृणा की दृष्टि से भी इस बात को देखें तो कोई आश्चर्य नहीं। किन्तु सच्चे जनतन्त्र के सिद्धान्तों का आदर करने वाले लोग मेरे कथन से आश्चर्यचकित नहीं हो सकते।

व्यक्ति के महत्व में विश्वास यह है जनतन्त्रात्मक विचार का प्रेरणा स्रोत और रहेगा भी। इस बात पर प्रोफेसर जोड और आइवर ब्राउन दोनों महान लेखक सहमत हैं। जनतन्त्र के सिद्धान्तों की सूची

प्रोफेसर जोड ने सर्वाधिक महत्व पूर्ण सिद्धान्त के विषय में लिखा है: "व्यक्ति स्वयं एक लक्ष्य है, और राज्य है साधना, किन्तु यह कैसे सम्भव है? केवल ऐसी शासन प्रणाली द्वारा जिसमें शासितों को, अर्थात् जनसाधारण को, सक्रिय और निरन्तर भाग प्राप्त हो। जैसा कि जोड ने कहा है, जूता पहनने वाला ही यह बता सकता है कि वह कहां काटता है। व्यक्तिगत नागरिकों को चाहिए कि अपने चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा यह निश्चय करें कि किस प्रकार के कानून बनाए जाएं और किस प्रकार का शासन होना चाहिए। इस विषय पर (जो जनतन्त्रात्मक विचारधारा के लिए विशेष महत्व रखने के अतिरिक्त आज के लिए एक बहुत सामयिक चीज है) आइवर ब्राउन ने गवर्नमेन्ट एकार्डिंग टु पब्लिक ओपीनियन" (जनमत के अनुसार शासन) और "गवर्नमेन्ट बाइ दि पीपुल्स" (लोक द्वारा शासन) के मध्य में अन्तर दिखाने का सराहनीय प्रयत्न किया है।

सच्चा जनतन्त्र

जैसा कि आइवर ब्राउन ने कहा है, सब सरकारों को, यहां तक निरकुंश तानाशाहियों को भी, जनमत का ख्याल रखना पड़ता है। सच बात तो यह है कि कोई सरकार जितनी अधिक तानाशाही होगी उतनी ही परवाह वह जनमत की करेगी, संसार को यह दिखाने के लिए कि लोग उसकी नीति से सन्तुष्ट हैं और उसका समर्थन करते हैं। लेकिन जनमतका ध्यान तो सब प्रकार के शासनों को रखना पड़ता है और कोई शासन यह नहीं कह सकता कि क्योंकि वह जनमत का ध्यान रखता है इसलिए वह जनतन्त्रात्मक है। सच्चे जनतन्त्र की पहचान यह है कि वहां लोग अपनी सरकार का समर्थन ही नहीं करते किन्तु ऐसी बातों का निर्णय स्वयं लेते हैं जो अजनतन्त्रात्मक देशों में दूसरों द्वारा निर्णीत आज्ञाओं और आदेशों के रूप में उनके सामने आती हैं। सच्चे जनतन्त्र में शासन के साधनों पर स्वयं शासित लोगों का नियन्त्रण होता है।

किन्तु, जैसा कि दोनों लेखकों ने विशेष जोर देकर कहा है, यह आदर्श तभी सच्चा हो सकता है जब शासित लोगों को सोचने, कहने, लिखने और पढ़ने की पूरी स्वतन्त्रता हो, अपनी सरकार की आलोचना करने की आजादी और राजनैतिक दल बनाने की अनुमति हो। लोगों को राजनैतिक अधिकार देने का अर्थ है लोगों के मध्य में अधिकार बांटना इसके लिए यह आवश्यक है कि जनतन्त्र तभी सच्चा हो सकता है जब वह एकता के सिद्धान्त पर आधारित हो। किन्तु राजनैतिक शब्दावली में यह एकता का सिद्धान्त है क्या? आइवर ब्राउन ने कहा है कि एकता के सिद्धान्त का अर्थ यह नहीं है कि सब लोग बराबर हैं या सब लोगों के पास कुछ प्राकृतिक और छीने न जा सकने योग्य अधिकार हैं। व्यावहारिक राजनैतिक भाषा में इस राजनैतिक एकता का अर्थ यह है कि अधिकार और सुख के बटवारे मे हरेक व्यक्ति गिना जाएगा, एक से अधिक नहीं।

कुछ विशेषताएं

अन्त में दोनों लेखकों ने इस बात पर उचित ही जोर दिया है कि आधारभूत जनतन्त्रात्मक सिद्धान्त के अनुसार कानून बनाने वाली संस्था कानून का प्रशासन करने वाली संस्था से अलग रहे। दूसरे शब्दों में न्यायाधीश और मजिस्ट्रेट राजनीति से अलग रहें, कोई भी व्यक्ति कानून में निर्दिष्ट अपराध के सिवा और किसी बात के लिए गिरफ्तार न किया जा सके, गिरफ्तार किया हुआ कोई व्यक्ति बिना मुकदमे के यों ही जेल में न बन्द किया जाए और उसका मुकदमा स्वतन्त्र लोग करें, पक्षपात से पूर्ण पार्टी या राजनैतिक अदालत नहीं

वर्तमान संसार ने गुप्त पुलिस और राजनैतिक मुकदमों के अनर्थ की पराकाष्ठा देख ली है। फलतः जनतन्त्र का कोई भी सिद्धान्त इतनी जोर और महत्व के साथ कहे और दुहराए जाने का अधिकारी नहीं है जितना कि प्रस्तुत सिद्धान्त।

'जनतन्त्र' का अर्थ यह है कि अधिकार लोगों के हाथ में होना चाहिए। यह तभी सम्भव है जब लोगों में इतनी राजनैतिक शक्ति हो कि वे अपनी सरकार पर नियन्त्रण रखें और उस सरकार को यदि वह बहुमत के सामने सर नहीं झुकाती है, पदच्युत कर सकें। यह तभी सम्भव है जब लोगों के हृदय में विश्वास हो कि कानून अन्याय से इन्हें बचाएगा, चाहे अन्याय के साधन कितने ही शक्तिशाली क्यों न हों।

मैं क्या चाहता हूं—(५)

★ एक भिक्षुक

मैं जब देखता हूं कि भारत सरकार आज भी विविध कार्यों के लिए विदेशों से विशेषज्ञ बुलाती है, तो मुझे खेद होता है। यह परिपाटी तो विदेशी परिपाटी है। ब्रिटिश सरकार ने प्रायः प्रत्येक विभाग के लिए विदेशी विशेषज्ञ मंगाने की प्रथा अपनाई थी इस से विदेशी विशेषज्ञों को भारी वेतन मिलते थे इससे भी बड़ी बात थी कि भारतीय प्रतिभा का अपमान होता था। ब्रिटिश सरकार अर्थ कृषि, चिकित्सा, सड़क-निर्माण, भवन रचना, टिड्डी विनाश, कलकारखाने आदि प्रत्येक विभाग के लिए अपने देश भाइयों पर ही विश्वास करती थी। उसके लिए यह स्वाभाविक भी था।

किन्तु आज? आज भी क्या हम अपनी प्रतिभा पर विश्वास नहीं करते? विदेशी विशेषज्ञों को हम बार-बार बुला कर, उन पर निर्भर रह कर हम प्रकट तो यही कर रहे हैं।

और विशेषज्ञ कैसे? जो न भारत के जलवायु से परिचित हैं और न भारत की परम्पराओं, दृष्टिकोण तथा परिस्थितियों और आवश्यकताओं से। वे आते हैं, करोड़ों रु० के विदेशी माल का बोझ भारत पर लाद जाते हैं। क्या सचमुच भारत मे मौलिकता का अभाव है? प्रतिभा की कमी है? मैं तो नहीं मानता और मेरा ख्याल है कि सरकार भी नहीं मानेगी, तब क्या विशेषज्ञों को कम से कम बुलाने का निश्चय सरकार करेगी?

★

भारतीय जन-संघ

★ श्री गुरुदत्त

भारत में कई राजनीतिक दल विद्यमान हैं। उनमें से सबसे पुराना दल कांग्रेस का है। यह ठीक है कि कांग्रेस के भीतर भी कई दल हैं, परन्तु ये भीतरी दल किसी सिद्धान्त की भिन्नता के कारण नहीं बने प्रत्युत उपायों में मतभेद होने से बने हैं। कांग्रेस के भीतरी दल लिबरल फैडरेशन, पृ॰ स्वस पार्टी, सोशलिस्ट पार्टी, फार्वर्ड ब्लाक और अब कृपलानी की प्रजापार्टी इत्यादि हैं। इन सबका सिद्धांत और उद्देश्य एक ही है। सब इस उद्देश्य की प्राप्ति के उपायों में अपना अपना मत रखते हैं।

कांग्रेस का उद्देश्य और सिद्धांत यह है कि भारत में जातीयता का पैमाना केवल मात्र इस देश का निवासी होना है। इसी कारण कांग्रेस के मुख्य नेता देश का नाम भारत नहीं चाहते। आज भी जब, भारत का नाम हिन्दुस्तान नहीं रह गया, भारत की जय बुलाने के स्थान पर जै हिन्द कहते हैं और लोगों को कहने और सुनने पर विवश करते हैं। भारत में जातीयता का आधार केवल निवास मानने के कारण ही कांग्रेस के लोग देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी होने में बाधा डालते रहे हैं और आज भी डाल रहे हैं। इसका प्रमाण भी राजगोपालाचार्य, भारत के गृहमन्त्री का वह वक्तव्य है, जो उन्होंने सरकारी परीक्षाओं में हिन्दी न रखने के विषय में दिया है। यही सिद्धान्तात्मक अशुद्धि है, जिसके कारण कांग्रेस ने आज तक पाकिस्तान के साथ अपने झगड़े का एक भी विषय में निपटारा नहीं किया।

कांग्रेस के भीतरी दल भी कांग्रेस की इस सिद्धान्तात्मक भूल को नहीं समझते। वे सब यह मानते हैं कि कोई भी आदमी जो, इस देश में आकर पैदा हो गया है, वह यहां का नागरिक होने का अधिकारी है। यह भूल कांग्रेस अपने आरम्भ काल से ही करती आई है। कांग्रेस समझती है कि हिन्दु एक मजहब है। इसी प्रकार मुसलमान एक है मजहब। दोनों एक जाति का अंग है और वह जाति हिन्दुस्तानी कौम है। यह कारण है कि कांग्रेस के एकमात्र नेता पं॰ जवाहरलाल नेहरू के मुख से न तो कभी जै भारत निकलता है और देश का नाम भारत हो, ऐसा वह आज तक न समझ सके हैं।

कांग्रेस के भीतरी दल, सोशलिस्ट, कृपलानी का दल इत्यादि इस विषय में कांग्रेस के साथ हैं। उनका मतभेद कुछ तो आर्थिक विषयों में है और कुछ मन्त्री पदों तथा नौकरियों के विषय में। यदि इस वर्ष कृपलानी साहब कांग्रेस के प्रधान हो जाते, तो उनको पृथक दल बनाने की आवश्यकता न पड़ती, यही बात शायद जयप्रकाश के लिए तथा अशोक मेहता आदि लोगों के लिए कही जा सकती है। महात्मा गांधी की हत्या के पश्चात् श्री जयप्रकाशजी ने भारत सरकार के मन्त्रिमंडल के अन्दर घुसने का जो यत्न किया, वह विस्मरण नहीं किया जा सकता। उस समय सरदार पटेल के विरुद्ध जो तूफान इन लोगों ने खड़ा किया था, वह भी भूला नहीं जा सकता। इस सबका अर्थ यह है कि देश में कांग्रेस एक राजनैतिक दल है और अन्य सब वामपक्ष के दल कांग्रेस की उपज ही हैं। उनका मौलिक बातों में कांग्रेस से कोई विरोध नहीं है। जो कुछ विरोध और गर्मागर्मी इस समय दिखाई देती है, वह सब पदों के लिए है।

कांग्रेस के सिद्धान्त के विरुद्ध भी देश में एक मत था। स्वराज्य प्राप्ति से पूर्व यह सिद्धान्त का झगड़ा करने की आवश्यकता नहीं थी। उस समय ध्येय स्वराज्य प्राप्ति था और देश में प्रत्येक राजनीतिक विचार रखने वाला व्यक्ति इस ध्येय से सहमत था। हां उस ध्येय की प्राप्ति के समय जब जब भी कांग्रेस अथवा वाम पक्ष के लोग नागरिकता के हक तय करते थे, लोग इन को सन्देह की दृष्टि से देखते थे। महात्मा जी का यह कहना कि वे अपने को मौलाना मुहम्मद अली की जेब में रखे हुए हैं सदैव असन्तोष की दृष्टि से देखा जाता था। जब जब भी कांग्रेस ने कहा कि उसको मुसलमानों पर भरोसा है तब तब ही लोगों ने उनको चेतावनी दी कि उन का विश्वास मिथ्या है। इस पर भी कांग्रेस के तत्कालीन ध्येय से कोई असहमत नहीं था।

स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् देश प्रबन्ध के प्रश्न में भिन्न मतों का प्रकट हो जाना स्वाभाविक ही है। यदि इस समय म॰ गांधी जीवित होते तो वे भी शायद कांग्रेस के राज्य चलाने में नीति का समर्थन न करते। इससे हमारा यह अभिप्राय नहीं कि महात्मा जी जिस नीति का पोषण करते वह हम को मान्य ही होती। इस का केवल यह अर्थ है कि स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात राज्य संचालन के विषय में मतभेद हो जाना स्वाभाविक ही था।

कांग्रेस की नागरिकता सम्बन्धी नीति, उसकी देश संस्कृति और देश में रहने वाले लोगों की मर्यादा की विरोधी नीति, उसकी देश में लोकप्रियता उत्पन्न करने में असफलता की नीति, उस का लोगों के चरित्र निर्माण करने में अयोग्य सिद्ध होना, इत्यादि बातें हैं, जिनसे यह कहा जा सकता है कि कांग्रेस के अतिरिक्त किसी अन्य दल की अत्यंत आवश्यकता थी। इन सब बातों मे कांग्रेस अथवा इसके भीतरी सब दल, एक समान विचारधारा रखते हैं।

उदाहरण के रूप में देश विभाजन की बात लें। यह ठीक है कि इस समय विभक्त देश को एक करना कठिन और शायद वांछनीय भी नहीं। परन्तु इसमें दो मत नहीं हो सकते कि देश का विभाजन देश के लिए अत्यन्त हानिकर बात हुई है। यह देश विभाजन इस कारण हुआ है कि मुस्लिम लीग इसी बात पर सन् १९४५ का चुनाव लड़ी थी और ९४ प्रतिशत मुसलमानों ने मुस्लिम लीग को वोट दिया था। उसी वोट के बल पर देश का विभाजन रोकना असम्भव हो गया था।

जब विभाजन हो गया तो यह स्वाभाविक नहीं था क्यों कि जिन मुसलमानों ने विभाजन में राय दी थी उनको अपने मनोनीत देश में भेज दिया जाता? परन्तु यहां तो बात उल्टी हुई कि पाकिस्तान से इधर आने वाले मुसलमानों का फूलों की मालाओं से स्वागत किया गया। इसके आधार में कांग्रेसियों की वह मानसिक प्रवृत्ति है जिससे वह मुसलमानों का हिन्दुओं से भी अधिक विश्वास करते हैं।

जिन लोगों ने पाकिस्तान बनने में सहायता दी उनको हिन्दुस्तान में नागरिक स... का आना कहां तक युक्ति-संगत और उचित है, यह कांग्रेस के लोग ही बता सकते हैं। दूसरे विचार के लोग तो यह समझते हैं कि जो देशकी स्वतंत्रता से भी अधिक आवश्यक पाकिस्तान का बनना मानते थे, उनको भारत के नागरिकों के अधिकार देना किसी प्रकार भी युक्तिसंगत नहीं। इसमें मुसलमानी मजहब और किसी अन्य मजहब का प्रश्न नहीं। यह शुद्ध राजनीतिक विषय है। जिस देश की स्वतन्त्रता के मार्ग में कोई रोड़ा अटकाता हो वह उसी देश में नागरिकता कैसे प्राप्त कर सकता है।

यह स्मरण रखना चाहिये कि उस चुनाव में ९० प्रतिशत के लगभग हिन्दू वोट कांग्रेस को मिले थे और कांग्रेस विरोधी दल मुस्लिम लीग को ९४ प्रतिशत मुसलिम वोट। दोनों में विवाद यह था कि एक भारत में स्वराज्य चाहती थी, दूसरी पाकिस्तान बनाना। इसके पश्चात् देश की नागरिकता दोनों जातियों में बराबर कैसे हो सकती है? भारत में पाकिस्तान बनाना यह देश के भीतर की बात नहीं। यह देश के साथ द्वेष और द्रोह की बात हुई है। प्रायः मुसलमानों ने देश के स्वतन्त्रता के आन्दोलन में भाग नहीं लिया और प्रायः मुसलमानों ने पाकिस्तान बनने में सहायता दी है।

इस प्रकार की अयुक्ति संगत बातों को कांग्रेस और वामपक्षी पार्टियों में देख एक शुद्ध राष्ट्रीय विचारों की पार्टी की आवश्यकता थी। यह एक बात है जिसके लिए भारतीय जन-संघ की स्थापना की आवश्यकता है।

[illegible] के भारतीय प्रदेश में

पाक-अफगान सीमा पर सेना का जमाव: बादशाह खान की कैद का रहस्य : जफरुल्ला की धमकियां : काश्मीर को हड़पने की अनेक चालें: आकिनलेक तथा ग्रेसी की रहस्यमय गतिविधि

नयी दिल्ली स्थित अफगान राजदूत ने यह बतलाया है कि पाकिस्तान पाक अफगान सीमा पर भारी संख्या में सेना एकत्रित कर रहा है। अफगानिस्तान पाक की इस कार्यवाही को भारी शंका की दृष्टि से देखता है। इस का अर्थ यही है कि पाकिस्तान उस क्षेत्र में सैन्यबल का प्रयोग करना चाहता है। यदि कबाइली क्षेत्र में स्वतन्त्र पख्तूनिस्तान का आन्दोलन दबाने के लिए पाकिस्तान ने पख्तूनों के विरुद्ध सेना का प्रयोग किया तो अफगानिस्तान पठानों पर होने वाले इस अत्याचार को चुपचाप बैठा हुआ नहीं देख सकेगा। यह बात अफगानिस्तान की ओर से कई बार स्पष्ट की जा चुकी है।

पाकिस्तान में भी एक वर्ग इस प्रकार का है, जो अफगानिस्तान से निपट लेना चाहता है। अफगानिस्तान और ईरान का झगड़ा शताब्दियों पूर्व से चला आता है। अफगानों पर दबाव डालने के लिए ही पाकिस्तान ने ईरान से सम्बन्ध बढ़ाने आरम्भ किये हुए हैं। इसी दृष्टि से गत वर्ष ईरान के शाह का शाही स्वागत पाकिस्तान की सरकार ने किया था। इसके अतिरिक्त ईरान स्थित पाक राजदूतावास विशेष रूप से सक्रिय है। भारत के विरुद्ध प्रचार में भी ईरानी पाक राजदूतावास का विशेष हाथ रहा है। ईरानी तेल के प्रश्न पर भी इस दृष्टि से पाकिस्तान ने ईरानी सरकार का समर्थन किया है, जिससे ईरान उसके पक्ष में आ सके। अफगानिस्तान के विरुद्ध यह पाक मोर्चा है।

× × ×

यथार्थ में यदि देखा जाय तो ये कबाइली क्षेत्र सदा स्वतन्त्र ही रहे हैं। अंग्रेजों का भी कभी इस प्रदेश पर अधिकार नहीं रहा। अनेक दृष्टि से ये अफगानिस्तान के अधिक निकट हैं। अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध आन्दोलन करने वालों में भी अधिक संख्या इस ओर के पठानों की थी। खान अब्दुल गफ्फार खान उनके नेता थे।

हिन्दू विभाजन के साथ ही इस ओर मियां लियाकत और मुस्लिम लीग की हुकूमत आई। स्व० मि० जिन्ना का खान बन्धुओं पर पुराना रोष था, क्योंकि मुस्लिम लीग के आन्दोलन का उन्होंने कभी साथ नहीं दिया था। सत्ता का लाभ उठा कर पठानों की इस संगठन को नष्ट करने का प्रयत्न किया गया। आज कई वर्ष से खान बन्धु पाकिस्तान की जेल में सड़ रहे हैं। उनके साथ ही इस प्रदेश के अनेकों कार्यकर्ता बन्दी हैं। स्वतन्त्र पख्तूनिस्तान के आन्दोलन को कुचलने के लिए प्रत्येक सम्भव उपाय काम में लाया जा रहा है। तो भी यह आन्दोलन फैलता ही जा रहा है।

× × ×

खान अब्दुल गफ्फार खान का नाम इस प्रदेश में एक भारी शक्ति बन गया है। उनके नाम को लेकर वहां पाकिस्तान के विरुद्ध क्रान्ति का आयोजन किया जा रहा है। पठान आन्दोलन होने के कारण अफगानिस्तान को इसमें स्वाभाविक रुचि है। यद्यपि वह अपनी सहानुभूति प्रकट करने के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं कर रहा, तो भी उसके इस समर्थन से ही इस आन्दोलन को भारी बल मिलता है। पाक अधिकारियों को भय है कि यदि आगामी चुनाव से पूर्व ही वे इस आन्दोलन को कुचल न सके तो सीमाप्रांत में लीगी शासन बनाये रखना अत्यन्त कठिन हो जावेगा।

इसी भय के कारण पाक सरकार सीमान्त गांधी को मुक्त नहीं कर रही है। वह समझती है कि बादशाह खां की उपस्थिति से तो यह आन्दोलन आग की भांति फैल जावेगा। अतः आगामी चुनावों तक खान बन्धुओं की मुक्ति की कोई सम्भावना नहीं दीखती।

× × ×

सुरक्षा परिषद् में पाकिस्तानी प्रतिनिधिमंडल के नेता और पाकिस्तान के विदेश मन्त्री सर मोहम्मद जफरुल्ला ने यह मांग की है कि काश्मीर में अब्दुल्ला सरकार द्वारा संविधान परिषद् बुलाये जाने के कदम को रोकने के लिए सुरक्षा परिषद् को अविलम्ब कार्यवाही करनी चाहिये। काश्मीर में संविधान परिषद् बुला कर भारत सुरक्षा परिषद् के निर्णय के विरुद्ध कार्य कर रहा है। यदि भारत को इस प्रकार बलपूर्वक काश्मीर पर अधिकार जमाने से न रोका गया, तो इसके परिणाम भयंकर होंगे।

जहां तक एक ओर पाकिस्तान काश्मीर में संविधान सभा बुलाने का भरसक विरोध कर रहा है, वहां अब्दुल्ला सरकार संविधान सभा की तैयारियों पर आगे जा रही है। इस सम्बन्ध में सभी प्राथमिक तैयारियां हो चुकी हैं। केवल चुनाव होना शेष है। यदि पाकिस्तान जनता के मत को ही मान्यता देता है, तो उसे संविधान सभा-सम्बन्धी इन चुनावों पर कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये। किन्तु पाकिस्तान तो किसी न किसी प्रकार काश्मीर को हड़पना चाहता है। इसलिए वह सभी प्रकार के कूटनीतिक मार्गों का अनुकरण कर रहा है।

× × ×

आजकल सीमाप्रान्त में पुनः कबाइलियों को काश्मीर पर आक्रमण करने के लिए भड़काया जा रहा है। जेहाद के नाम पर उनमें प्रचार किया जा रहा है और भारत के विरुद्ध उन्हें उभारा जा रहा है। पाकिस्तान की तैयारी इस ढंग से हो रही है कि यदि वैसे काश्मीर पर उसका अधिकार स्थापित न हो सके, तो वह युद्ध द्वारा उस पर अपना अधिकार जमा ले। कबाइली पठानों को इस प्रकार भड़काने में उसके दो उद्देश्य सिद्ध होते हैं। एक ओर तो पुनः काश्मीर की भूमि पर लुटेरों के नाम से आक्रमण करवाने की सुविधा प्राप्त हो जाती है। दूसरी ओर सीमाप्रान्त और कबाइली क्षेत्र में पख्तूनिस्तान का आन्दोलन दुर्बल पड़ जाता है। जेहाद के जोश में ही यदि सीमाप्रान्त में चुनाव कर डाले गये तो मुस्लिम लीग का शासन निश्चित हो जाता है। और एक बार यदि लीग पुनः पदारूढ़ हो गई, तो फिर पठानों को कुचलने के लिए कई वर्ष का समय मिल जाता है।

× × ×

दूसरी ओर शरणार्थियों के रूप में निरन्तर पाकिस्तानी गुप्तचर और पाकिस्तान से सक्रिय सहानुभूति रखने वाले काश्मीर में प्रवेश करते जा रहे हैं। इस प्रकार धीरे-धीरे काश्मीर के अन्तरंग में पाकिस्तान अपने लोगों को प्रविष्ट करा रहा है। युद्ध की स्थिति आने पर इस प्रकार के लोगों का कार्य पाकिस्तान को सूचनायें भेजने के साथ ही साथ भारतीय सेना के रसद मार्गों को छिन्न-भिन्न करना, राज्य के अन्यान्य मुसलमानों को जेहाद के नाम पर भड़काना और भारतीय सैन्य पंक्ति के पीछे गुरिल्ला कार्यवाही करना होगा।

इसके अतिरिक्त पाकिस्तान की ओर से जम्मू व काश्मीर के प्रदेश पर आक्रमण तथा लूट जारी है। ये लुटेरे प्रायः रात्रि में आते हैं और लूटमार अथवा अग्निकांड कर चलते बनते हैं। इनमें पाकिस्तान के नियमित सैनिकों के भाग लेने के भी प्रमाण मिले हैं। इस प्रकार की लूटमार का एक ही उद्देश्य है जनता को विशेष कर राज्य की हिन्दू जनता को भयभीत और आतंकित करना जिससे वह राज्य छोड़ कर भाग जावे। दूसरे पाकिस्तानी लुटेरों का साहस बढ़ाना। इस प्रकार के सभी मार्गों पर पाकिस्तान चल रहा है, जिससे काश्मीर किसी प्रकार उसके पंजे के बाहर न जा सके।

× × ×

बम्बई के अंग्रेजी साप्ताहिक 'ब्लिट्ज' में प्रकाशित एक समाचार में बतलाया है कि नई दिल्ली में उन दो कुख्यात भारत विरोधी अंग्रेज जेनरलों के रहस्यमय ढंग से कराची में उपस्थित रहने की बात को लेकर, मुख्यतः हाल की इस चर्चा के साथ कि काश्मीर के सवाल को लेकर वहां युद्ध की अफवाहें भी उड़ने लगी हैं, बड़ी तीव्र आलोचना चल रही है। अविभाजित भारत के भूतपूर्व सेनापति सर क्लाड आकिनलेक और इसी वर्ष के आरम्भ में पाकिस्तानी सेनापति पद से हटे जेनरल सर डगलस ग्रेसी व्यापारी बन कर कराची में बसने जा रहे हैं।

चोरी से हैदराबाद में शस्त्रास्त्र पहुंचाने वाले सिडनी काटन का कहना था कि वह हैदराबादी मूंगफली के व्यापार के सिलसिले में वहां आता जाता रहा है। कहा जा रहा है कि सेनाधिपति सर क्लाड आकिनलेक पाकिस्तान में कालीनों का अपना एक कारखाना स्थापित करना चाहते हैं। जेनरल ग्रेसी के बारे में भी कहा जाता है कि वे भी अपने लिए यहां किसी व्यापार का मार्ग खोज रहे हैं।

[शेष पृष्ठ १६ पर]

कहानी

रामचन्द्र

★ श्री रमेश मटियानी 'शैलेश'

जी हां, विश्वास कीजिये, मेरा नाम रामचन्द्र ही है! संभव है कि मेरी बातों का आप लोगों के लिए जो अपने को भद्र-समाज के अन्दर अनुभव करते हैं, कोई महत्व न हो!....

पर मुझे आशा है, बल्कि कुछ कुछ विश्वास भी कि आप लोगों की आत्मा— मुझ जैसा ही मानव होने के नाते— इतनी अस्पर्श्य, अदृश्य नहीं होगी कि आप मेरे प्रति अधिक निर्मम बन सकें! इसी लिए, अपने इस आत्म-विश्वास के बल पर ही, मैं अपनी आपबीती कहने जा रहा हूं।

मैं यह समझता भी हूं कि आप लोगों के अमूल्य समय का—जिस का आप रेडियो से गीत सुनने, सिनेमा देखने आदि अत्यधिक मनोरंजक साधनों में उपयोग कर सकते हैं, मेरे इस नीरस, निरर्थक प्रलाप को सुनने में अपव्यय अवश्य होगा! पर, अपने आत्म-रोदन को सुना कर, मुझे भी तो संतोष होगा, शांति मिलेगी!...

बांये हाथ में कुछ फटे-चीथड़े से कागज-पत्र लिए, बालों को रंग-बिरंगे कागजों से अलंकृत कर, अज्ञात के रहस्योद्घाटन में विस्मृत-सा, क्षितिज की ओर निरुद्देश्य विस्फारित नेत्रों से ताकते रहने वाला, हिंस्र पशु की सी फूत्कार लिए, रह रह कर विचित्र स्वर में गाने वाला रामचन्द्र आपके लिए (भगवान् जैसा पूज्य, स्तुत्य भले ही न हो;) मनोरंजन का साधन अवश्य है!

आप लोगों को, मेरे व्यक्तित्व या मानवता से नहीं, मेरे विचित्र-विलक्षण संगीत से प्रेम है। और इसे यदि आप लोगों की तृष्णा भी कहा जाय, तो अनुचित न होगा!....

जब मैं अपने टूटे-फूटे गीतों को, पुट्ठों पर हाथ से ताली दे देकर, विचित्र स्वर से गाने लगता हूं? और बीच-बीच में जब आवश्यकतानुसार लम्बी-चौड़ी तानें लेने लगता हूं? आप लोग चारों ओर से मुझे घेर लेते हैं। क्यों?

क्योंकि मेरी इस आत्मविभोरता से, जिसे आप लोग मेरा पागलपन कहते हैं, आप लोगों का मनोरंजन होता है। मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूं, कि मेरे इस आलाप प्रलाप से एक प्रकार के आनन्द का अनुभव आप लोगों को होता है। मेरी इस धारणा का, मेरी इस आत्म-विरक्ति का आधार?

मेरी इस धारणा का आधार है, आप भद्र लोगों की सभ्यता! बच्चे तो बच्चे, बूढ़े भी एक ही थैली के चट्टे बट्टे। मैंने कई भद्र पुरुषों को, जो मेरे गन्दे शरीर को देख कर घृणा से नाक मुंह सिकोड़ लेते हैं, बच्चों के बीच से अपनी ओर झांकते हुए देखा है— एक कौतूहल सा लिए! सामने आ कर मेरी ओर देखने में उन्हें लज्जा का, या कहना चाहिए घृणा का अनुभव होता है शायद!...

संगीत के क्षेत्र में, इधर कुछ दिनों से प्रगति कर ली है मैंने। संगीत विद्यालय से लौट कर, जब कृपाशंकर जी गुनगुनाते हुए अपने डेरे की ओर जाते हैं।

मैं उनकी तानों को कण्ठस्थ करने का प्रयत्न करता रहूं। समस्त रात्रि भर मुझे अवकाश रहता है, और मैं रियाज करता हूं।

सिनेमा के कुछ लोकप्रिय गीत भी इधर मैंने सीखे हैं, जिन्हें गाने में मैं अभ्यस्त हो चुका हूं। 'हवा में उड़ता जाये मेरा लाल दुपट्टा मलमल का', या जिया बेकरार है, छाई बहार है', कुछ ऐसे ही गीत मैंने सीखे हैं, जिन्हें मैं गाता रहता हूं, किसी के मनोरंजन के लिए नहीं, अपनी शांति के लिए।

क्योंकि गाना रुकते ही मेरे मस्तिष्क में एक उद्वेलन सा होने लगता है। और, उस विक्षिप्तावस्था में, अतीत की धुंधली स्मृति, जिसे मैं भुलाना चाह कर भी भुला नहीं सकता हूं, मेरे मानस पट पर उभर आती है। इसी विस्मृति-गर्भ से उभरे हुए अतीत के पृष्ठ..

दशरथ की भांति पुत्रेष्टि-यज्ञ तो मेरे पिता—संयोग से जिनका नाम दशरथ ही है, ने किया नहीं, पर जादू टोना मंत्र तंत्र और देवी देवताओं का आश्रय अवश्य लिया।

'अपने रामचन्द्र के लिए मैंने, देवता के नाम पर, पत्थर-पत्थर पूजा है।' मेरे पिता कहा करते थे, 'और गंगा के नाम पर, नाले नहीं छोड़े।'

सारांश यह, कि काफी श्रम उन्होंने पुत्र-प्राप्ति के लिए किया था। पर, भाग की मार, पुत्र जन्मा तो मुझ जैसा... ?

मेरे पिता जी की नगर-भर में गहरी साख थी। वकीलों के बीच बैरिस्टर समझे जाते थे। सच कहता हूं, वकीलों का पेशा भी एक अजीब सा पेशा है। बिलकुल कल्पवृक्ष या कामधेनु समझिये! दूध दही, आटा चावल। घी आदि सब मुवक्किलों से मिल जाता था; रुपए जो आते सो चोखी पूंजी! मेरे पिता जी ने भी ढेर-सा धन उपर्जित किया था।

सो रुपए पैसे की कमी नहीं थी, बी. ए. तक सुगमता से पहुंच गया। नगर-भर में सबसे अच्छा विद्यार्थी समझा जाता था। पर जीवन भी कितना परिवर्तनशील है...!

मैं अपने विद्यार्थी जीवन में ही अधिक व्यस्त रहता था; पर गृहस्थी की ओर से मैं उदासीन था। किसी भी प्रकार के बाह्य या पारिवारिक कलह से आकर्षित नहीं होता था। पर उस दिन? उस बुढ़िया का मर्मस्पर्शी रुदन, शोकाकुल स्वर?

मुझे लगा जैसे मेरा अणु-अणु चीत्कार कर उठा हो। मैंने अपने अंग प्रत्यंगों में एक प्रकार के ज्वर, कम्पन का-सा अनुभव किया। उस बुढ़िया के क्षोभित स्वर की दुर्निवार्य-ध्वनि, मेरे मस्तिष्क में प्रविष्ट होकर, मुझको क्षत-विक्षत किए दे रही थी।

"तूने मेरे बेकसूर बेटे को, मेरे लाल को, अपनी चाल से फंसाया है, वकील।" बुढ़िया चिल्ला रही थी, "तेरे बेटे को भगवान् फंसाएगा। देख लेना, वकील, मेरा श्राप तेरी जड़ को उखाड़ फेंकेगा!"

क्रोधावेश से उसके नथुने फूल रहे हैं।, शुष्क नेत्रों से, आंसुओं के अभाव में, अग्नि-स्फुलिंग-से झड़ रहे थे। रह रह कर वह जोर-जोर से, अपने दोनों हाथों से, अपनी छाती पीट लेती थी। उसे पीड़ा का बोध ही नहीं हो जैसे! पुत्र के अनिष्ट से उसका ममत्व पाषाण बन गया था।

मुझे उसने बहुत सी गालियां दीं। कहती थी, 'वकील, तूने मेरे निर्दोष पुत्र को सजा दिलवाई है, तुझे भगवान पुत्र से खाली करेगा!' उसकी गालियों से मैं सिहर उठा था,— उसके स्वर में एक प्रकार की विश्वस्ति सी थी। "तो क्या सचमुच मुझे यह अभिशाप अनिष्ट की ओर ले जायगा!'

अपने आत्म दौर्बल्य पर विजय पाने की चेष्टा करने पर भी, शांति नहीं मिली मुझे। अप्रत्याशित आशंका से, अकारण ही, मेरा अंग-अंग सिहर उठा।....

न जाने वह बुढ़िया का अभिशाप था या दैवी कोप— कुछ ही दिनों में रुग्ण होकर, मैं शोचनीय अवस्था को पहुंच गया। अच्छा हुआ तो एक अद्भुत परिवर्तन, जो मेरे लिए अब तक अज्ञेय है, मुझ में आगया था। लोग मुझे पागल कहने लगे थे।

"वकील और पुलिस की कमाई में सत्य (सत्व) कहां होता है?" लोगों ने, मेरे आकस्मिक परिवर्तन पर, टीका-टिप्पणी की, "[illegible] की दृष्टि में चोर ही ठीक सकता है! किन्तु का पता मिलता है।" वास्तविक यह है कि मैं पागल होगया था। अभी तक इस बात पर विश्वास नहीं कर सका हूं।

अब मैं सामाजिक जीवन के झंझटों-विमर्शों से दूर सत्यम-सुन्दरम हर्ष-अमर्ष से परे, शान्त-सा, अपने ही मार्तण्ड [illegible] में खोया-सा, अपने को एक नई दुनिया में अनुभव करता हुआ, मन्थर गति से बढ़ता जा रहा हूं, अबाध, अनवरत गति से!

जीवन की अस्थिरता के प्रति न मुझे असंतोष है, न किसी प्रकार का आक्रोश। जीवन की यह अस्थिरता ही सम्भवतः मेरे लिए हर्ष की वस्तु हो! जीवन के पैंतीस वर्ष बीत जाने पर भी मुझे निराशा नहीं है।

मेरे लिए, मेरी आंखों के लिए, नगर का अस्तित्व कौतुक मात्र है। प्रत्येक पथ पर, विजन पथ हो या नगर पथ, मैं निर्विघ्न भाव से, निस्पेष गति से चलता ही रहता हूं। पथ-शूलों से क्षतविक्षत पैरों से बहते रुधिर की ओर देख कर मैं मुस्करा देता हूं। पीड़ा होने पर मेरा मन अट्टहास कर उठता है। मुझे अपने भौतिक अस्तित्व के प्रति न ममत्व है, न चिन्ता। संक्षेप में, दुःख सहने का मैं अभ्यस्त हो गया हूं.........।

वस्त्र, भोजन और निवासस्थान सब की ओर से मैं उदासीन हूं। इनकी प्राप्ति के लिए श्रम करना, न मेरे लिए संभव है और न ही वांछित।

उदार गृहस्थों से भोजन, जीवन-रक्षा को पर्याप्त मिल ही मिल ही जाता है। यह दूसरी बात है कि मुझे अधिकांश अवशेष-जूठन ही मिलती है, पर मुझे असंतोष नहीं। पहनने को भी, सद्गृहस्थों की कृपा से कभी एक-आध फटा पुराना वस्त्र मिल ही जाता है, पर बहुधा मुझे उन चीथड़ों पर ही निर्भर रहना पड़ता है, जिन्हें पुत्रवती गृहणियां, अपने शिशुओं का मल मूत्र पोंछने के पश्चात् सड़क या गली पर फेंक देती हैं............।

मैं किसी दाता को, भिक्षावृत्ति जीवियों की भांति कभी भी आशीर्वाद नहीं देता। पूर्व जीवन का कौशिक अहम् अब भी अवशिष्ट है शायद!

मुझे अपने इस जीवन पर, जिसका कुछ भी महत्व मेरे लिए नहीं है, मुझे संतोष है। अपने दारिद्र्य, दैन्य या हीनावस्था से मुझे कभी दुःख नहीं हुआ। जीवन की ओर कभी भी मेरी दृष्टि आगरूक नहीं रही, सुख का मोह मुझे कभी नहीं हुआ।

और शायद इसलिए लोग मुझे पागल भी कहते हैं। कभी-कभी मैं सोचता हूं, क्या मैं पागल हूं? मेरे अस्थिर-मस्तिष्क के ज्ञान-तन्तु झुलस से

(शेष पृष्ठ १६ पर)

सौन्दर्य वृद्धि के कुछ सहज उपाय

★ प्रो० रामचरण महेन्द्र

स्त्री श्रृंगारप्रिय है। आदिकाल से मनुष्य ने स्त्री को सुन्दर बनाने के लिए नाना प्रकार की वस्तुओं, आभूषणों तथा सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग किया है। महावर, उबटन, मेहन्दी, रोली, कुंकुम, बिन्दी, सिन्दूर आदि का उपयोग इसी की पूर्ति के निमित्त है।

सर्व प्रथम त्वचा के सौंदर्य को ही लीजिए। त्वचा को मुलायम रखने के लिए क्रीम, स्नो, लोशन, सुगन्धित तेल, लाइमजूस ग्लसरीन, पोमेडलोशन, रौज, ब्रिलियन्टाइन, हेयरलोशन इत्यादि काम में लाये जाते हैं। इन वस्तुओं से त्वचा पर कुछ चिकनाई अवश्य आ जाती है, उसकी सफेदी में अन्दर की बदसूरती ढक जाती है किन्तु स्थायी तौर पर कुछ भी लाभ नहीं होता। त्वचा के आन्तरिक पर्त का सम्बन्ध मनुष्य के रक्त से है। जैसा शुद्ध या अशुद्ध रक्त, वैसा ही खाल का रंग। वीर्ययुक्त व्यक्ति सांवला हो कर भी चमकता दमकता है। फलों शाक तरकारियों तथा दूध का प्रभाव त्वचा पर पड़ता है। दूध के प्रयोग से रंग सफेद होता है। जलवायु का प्रभाव भी त्वचा पर निरन्तर रहा करता है। गर्म मुल्कों के व्यक्ति काले तथा सर्द मुल्क वाले श्वेत रंग के होते हैं। अत सौन्दर्य के इच्छुकों को सर्द स्थानों में रहना चाहिए। ठण्डे जल से स्नान करना चाहिए। त्वचा की बाहरी स्वच्छता भी अति आवश्यक है। दिन में प्रात सायं स्वच्छता से त्वचा को धो कर वैसलीन या मलाई मलनी चाहिये। भारत में उबटन लगाने की रीति बड़ी लाभदायक रही है। यदि उनका प्रयोग न हो तो आटे में तेल और हल्दी मिला कर चेहरे पर मलने और फिर धोने से ऊपरी त्वचा का मल दूर हो जाता है। हाथों को धोने का एक अच्छा रूप यह है कि एक चम्मच भर सहजने की जड़ के बुरादे पर थोड़ा गर्म दूध डाल कर उसे हाथों पर मल कर सूख जाने दें, और फिर धो डालें। उंगलियों या हथेली के धब्बे दूर करने के लिए कच्चे आलू के टुकड़े मलें।

उबटन का प्रयोग कीजिये

यदि हाथ कड़े और खुरदरे हों तो एक काम करें। भोजन में चिकनाई वाले पदार्थों का प्रयोग बढ़ा दें। मक्खन, घृत, दूध, तेल के प्रयोग से स्वाभाविक रूप से चिकनाई आ जावेगी। होठ भी न सूखेंगे। जब त्वचा में अन्दरूनी चिकनाई नहीं होती तो सभी खाल कड़ी हो जाती है। जिन व्यक्तियों के हाथ मोटे काम करने से खुरदरे हो गए हों, उन्हें सायंकाल गर्म जल से हाथ धो कर उबटन लगानी चाहिए। यदि उबटन न हो तो वैसलीन या गिलसरीन का प्रयोग भी किया जा सकता है। प्रायः लोग नींबू का अर्क भी हाथों को मुलायम बनाने के कार्य में लाते हैं। यदि शुद्ध बादाम रोगन मिल सके तो उसे गिलसरीन में मिला कर रात्रि में मुंह तथा हाथों पर मालिश करनी चाहिए। शहद भी स्निग्धता लाने वाले पदार्थों में गुणकारी है। थोड़ा सा जौ का आटा तेल में मिला कर हाथ मुंह स्वच्छ करना चाहिए।

खेद का विषय है कि हमारे यहां के स्त्री पुरुष सौंदर्य प्रसाधनों में तो रुपया व्यय करते हैं किन्तु स्नानागार की वस्तुओं, साबुन, तौलिया पर रुपया खर्च नहीं करना चाहते। ९० प्रतिशत स्त्रियां बिना तौलिये से स्नान करती हैं। उनके चेहरे का मैल भी ठीक तरह नहीं स्वच्छ हो पाता। स्नान के उपरान्त यदि शरीर को खुरदरे तौलिये से दृढ़ता से रगड़ रगड़ कर स्वच्छ किया जाय, तो त्वचा के रंग में आश्चर्यजनक परिवर्तन हो जाता है। रगड़ने की क्रिया स्नान में सबसे महत्वपूर्ण है। जितना रगड़ेंगे, उतने ही रोमकूप खुल जायेंगे, और त्वचा का रंग निखर जावेगा। गर्म जल से शरीर का मैल जल्दी छूटता है। जल में नींबू उबालने और फिर उन्हें गर्म जल में ही निचोड़ कर नींबू मिश्रित जल से स्नान करने से रोमकूप स्वत ही खुल जाते हैं और रंग गोरा हो जाता है।

> अर्जुन की पाठिकायें सुन्दर होना चाहती हैं, पर चेहरे का सौन्दर्य क्रीम, स्नो तथा दूसरी श्रृंगार सामग्री से नहीं बढ़ता। वह कैसे बढ़ सकता है, इसी के लिए कुछ आवश्यक सूचनाएं इस लेख में देखिये।

नींबू के रस को मुंह पर मलने से भी सही सफाई होती है।

आजकल साबुन का प्रयोग त्वचा के निखार के लिए बहुत किया जाता है। यथा संभव उत्तम साबुन का ही प्रयोग श्रेयस्कर है। घटिया साबुन तेल कास्टिक और चूने सज्जी इत्यादि से तैयार होता है। ये त्वचा का ऊपरी पर्त बेकार कर देते हैं। साधारणतः अच्छे साबुन की पहिचान नामों से करनी चाहिये। लक्स, रेक्सोना, पीयर्स, प्रोफेसर अच्छे साबुन हैं। यह स्मरण रखिये कि साबुन का झाग त्वचा पर लगा रह कर सूख न जाय, अन्यथा रोम कूप बन्द हो जायेंगे। इसी प्रकार हजामत के समय उत्तम साबुन काम में लेंगे और हजामत के पश्चात् साफ तौलिया भिगो कर रोमकूपों को स्वच्छ रक्खें।

किन्हीं २ स्त्री पुरुषों के पास से बहुत दुर्गन्ध आती है। इसका कारण शरीर से बदबूदार पसीने का निकलना है। कम पानी पीने से त्वचा साफ नहीं हो पाती। पसीना कम निकलता है, पर जो निकलता है, वह बदबूदार होता है। इसके लिए यथेष्ट मात्रा में प्रतिदिन

(शेष पृष्ठ १४ पर)

एक वर्षीय शिशु मां

सिंगापुर का समाचार है कि वहां मंगवर्ग स्मारक अस्पताल में एक एकवर्षीय बच्चे का जब पेट चीरा गया, तब उसके पेट से आधा सेर भारी एक मरा बच्चा पाया गया। उक्त अस्पताल के डाक्टर जार्ज इवोर्ड का कहना है कि इससे पूर्व कभी इस प्रकार की घटना नहीं हुई थी। उक्त एक वर्षीय शिशु को पेट में भयानक पीड़ा हुई। डाक्टरों को शिशु का पेट बड़ा मालूम हुआ, इसलिए उन लोगों ने कोई दूसरा उपाय न देख कर बच्चे का पेट चीरा और तब वह मृत शिशु पेट से बाहर निकला, किन्तु पेट चीरे जाने के बाद एक वर्षीय शिशु की भी तत्काल मृत्यु हो गयी। डाक्टरों का अनुमान है कि जिस स्थिति में जुड़वां बच्चा पैदा होता है, यह घटना उसी प्रकार की है। अन्तर इतना ही है कि दूसरा बच्चा अलग न बनकर पहले बच्चे के पेट के भीतर बन गया। वह अन्दर बच्चा एक वर्ष तक किस प्रकार पेट के भीतर रहा, यह आश्चर्य की बात है।

५०० से २,००० रु. पर स्त्रियों का सौदा

जवान लड़कियों का अन्तरप्रान्तीय व्यवसाय करने वाले गिरोह के एक प्रमुख व्यक्ति को नागपुर पुलिस ने गिरफ्तार किया है।

इस सम्बन्ध में पंजाब प्रांत निवासी ईश्वरसिंह नामक एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। ज्ञात हुआ है कि दो अन्य पुरुष और स्त्रियों के सहयोग से निराश्रित विधवाओं और परित्यक्ताओं को भगा कर ईश्वरसिंह उन्हें ५०० से २,००० रु. के सौदे पर उनकी बिक्री करता था।

कुछ दिनों पूर्व वह एक १० वर्षीय कुमारी को पंजाब भगा ले गया था। अवसर पाते ही कुमारी भाग कर वापस आई और ईश्वरसिंह और उसकी करतूतों के सम्बन्ध में उसने अपने रिश्तेदारों को

स्वतन्त्र विवाह की प्रवृत्ति

लखनऊ के स्थानीय मजिस्ट्रेटों की अदालतों में पिछले कई महीनों से ऐसी अर्जियों की भर-मार है, जिन में युवतियों ने कहा है कि वे अपने इच्छानुसार शादी करना चाहती हैं, उन्होंने अपना वर भी चुन लिया है, लेकिन घर वाले उन्हें इजाजत ही नहीं देते और कहते हैं कि हम जहां चाहें और जिससे चाहें, तुम्हारी शादी करेंगे। एक युवती का कहना है कि उसका दामन एक काले व बदसूरत आदमी से बांधा जा रहा है जो वह कभी गंवारा नहीं कर सकती।

कुछ विवाहिता स्त्रियों ने भी अर्जियां दी हैं कि उनके पति उन्हें मारते-पीटते हैं और ससुराल वाले भी उनको सताते हैं और अब वे अपने पतियों से सम्बन्ध-विच्छेद करना चाहती हैं।

चंचला का चकमा

कानपुर के कई रोजगारी पिछले मास एक चंचला के चकमे में फंस गये। बताया जाता है कि एक फैंसी दुकान पर एक भड़कीली मोटर में सजी सजाई आधुनिक युवती पहुंची और साड़ियां उलट-पुलट कर एक अच्छी साड़ी खरीद कर तथा एक बेशकीमती साड़ी अपने कपड़ों में दबा कर चल दी। इसके बाद वह एक मशहूर सर्राफ की दूकान पर पहुंची, जहां कुछ जेवरात खरीद कर तथा कुछ अपने बटुवे में खिसका वहां से भी चल दी। इसी प्रकार उसने कई सर्राफों और दूकानदारों को ठगा और अपनी मोटर पर चलती हुई। बाद में वह मैले कुचैले कपड़ों में रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार की गयी। वह अपना नाम चांदिका और अपनी रिहाइश ईरानी बताती है।

ब्रिटेन का ऊनी व्यवसाय

ऊन को इस क्रम में साफ करके तह बिछाई जा रही है।

विंडरश नदी की घाटी के काट्स वल्ड (आक्सफर्ड शायर) नामक सुन्दर स्थान में विटने नाम का पुराना नगर बसा हुआ है जहां पर ऊन उत्पादन, भेड़ बकरी के कम्बल का व्यवसाय और कम्बल बुनाई आदि जैसे कार्य सदियों से किये जाते हैं।

ब्रिटेन में कम्बल बुनाई के लिए ऊन संसार के बहुत से भागों से आती है। हाथ से चलने वाले पुराने करघों और कताई साधनों की जगह बिल्कुल आधुनिक मशीनें लगा दी गई हैं। विटने का निर्यात व्यापार (जो सत्रहवीं शताब्दि से चला आ रहा है) आजकल विश्वव्यापक है और विटने का नाम लगभग सब जगह परिचित है।

कच्ची ऊन को, जो बड़ी बड़ी गांठों के रूप में विटने के माल गोदामों में आती है पहले अच्छी तरह से छांटा जाता है। तब इसे तोड़ा, फैलाया तथा तेल आदि से तैयार किया और वायु यन्त्रों द्वारा साफ करने वाले साधनों में पहुंचा दिया जाता है। यहां पर इसका तागा तैयार होने लगता है जिसे करघों में लगे बड़े बड़े रीलों में लपेटा जाता है। ताने बाने के धागों को कपड़ा बुनाई के लिए करघों की ढरकियों (शटलों) तक भेज दिया जाता है।

बुनाई के बाद यह कपड़ा (जो एक बहुत खुरदुरा गरम कम्बल दिखाई देता है) धोया, सिकोड़ा और सुखाया जाता है। इसे हल्की सी ऐसिड में गोता दे कर गरम किया और खुरदुरे किनरों तथा इस अवस्था तक बचने वाले व्यर्थ फुजलों को दूर करने के लिये दबाया जाता है। रंगीन बनने वाले कम्बलों को रंगा और सफेद रहने वाले कम्बलों को गंधक आदि से धोया तथा सफेद किया जाता है। तब ऊन में आवश्यक तरी पैदा की जाती है। अन्त में कपड़े को नरम तथा रोएंदार बनाया जाता है जिससे यह एक बढ़िया कम्बल जैसा दीखने लगता है। फिर इसे कम्बलों की लम्बाई के बराबर काट दिया जाता है और टुकड़ों के किनारों पर डोरी अथवा चमकदार साटन की गोट टांक दी जाती है। जब कम्बल विदेशों को भेजे जाते हैं तो उन पर ब्रिटेन का लेबल लगा दिया जाता है।

गरम कपड़ों को धोने रंगने सुखाने के बाद नोकीले तारों वाले रोलर के द्वारा कैलेंडर खाते में कोमल चमकदार व रोएंदार बनाया जाता है।

ऊन से लिपटे बीम तथा कारीगरों के पास पहुँचाये गये हैं।

बुनने से पहले ऊन को बाबिनों पर लपेटा जाता है।

(पृष्ठ ११ का शेष)

रास्ता अहरक में है · ····

तुलसी साहब हाथरस निवासी और कबीर पंथी थे। इन्होंने घटरामायण नामक पुस्तक लिखी है। यह 'अहरक' का मार्ग इन संतों का मार्ग था। गुरु नानक ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ प्राण सांगली में अन्दर का मंजिलों का रास्ता बता कर स्पष्ट रूप से ही युक्ति बताई है। भक्त रैदास भी इसी प्रकार के संतों में से एक थे। इन संतों ने दुनिया के रस्मो रिवाज से नफरत करने की सलाह दी है। इन्द्रियों के भोग विलास के प्रति वैराग्य उत्पन्न करना ही इनका कार्य था। इनका उपदेश गीता के इस श्लोक से विशेष मेल खाता है—

येहि संस्पर्शजा भोगा :
दुःखयोनय एव ते।

जिह्वा काम आदि इन्द्रियों की रगड़ से उत्पन्न होने वाले भोग दुःख के कारण हैं और उसमें चतुर मनुष्य नहीं फंसता। यह अभ्यास और वैराग्य से हो सकता है।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।

इन इन्द्रियों के व्यवहार अपने अपने स्थान पर रहें। पर मनुष्य उनमें फंसे नहीं। यह मार्ग कठिन और अत्यन्त कष्ट साध्य है। उसकी तैयारी करके ही इस रास्ते पर चलना चाहिए। इसी बात को कबीर ने अपने शब्दों में कहा है—

कबिरा खड़ा बाजार में लिये लुकाठी हाथ।
जो घर जारे आपना, चले हमारे साथ॥

जिन्हें महल, मोटर, नारी आदि प्यारी हैं वे तब तक घर बैठे रहें जब तक वैराग्य निर्माण न हो। यही प्रेम का रास्ता है। पर इसके लिए मन में लगन और तड़प होनी चाहिये। जहां तड़प होगी वहीं वैराग्य आता है।

फारसी के कवि सरमद की इसी आशय की बात का अनुवाद किसी ने ठीक ही किया है—

कुछ हवस को दर्दे इश्क होता नहीं।
खौफ परवाने को मरने का नहीं।

कबीर का मार्ग इसी तड़प का था। उन्होंने अनोखे जीवन से गहरा सम्बन्ध रखने वाली बातें कही हैं। सुनी सुनाई बातों को उन्होंने नहीं दुहराया। उन्होंने इस कार्य में सफल होने वाले को 'सूर' कहा है—

तीर तुपक से जो लड़े वह तो सूर न होय।
माया तज भक्ति करे सूर कहावे सोय॥

हमारी रूह हमारी आत्मा अन्दर की ओर चले यही उनका मार्ग था। यही ऊंचे महात्माओं का मार्ग रहा है।

यह घर है प्रेम का खाला का घर नाहिं
सीस उतारे भुईं धरे · · ···

प्रेम का कठिन मार्ग, इन्द्रियों के दमन का मार्ग, अन्दर में घुसने का मार्ग दिखाने में अगुवा यही कबीर की विशेषता और महत्ता थी।

———

अमेरिकन राष्ट्रपति श्री रूजवेल्ट द्वारा घोषित स्वतन्त्रता की चतुःसूत्री के कार्यक्रम को पूर्ण करने के प्रयत्न में डा० राल्फ बुंचे को यह पुरस्कार दिया गया है। डा० बुंचे को इजराइल में शान्ति प्रयत्नों के लिए नोबल पुरस्कार भी दिया जा चुका है। प्रे० रूजवेल्ट की चतुःसूत्री के चार अंग हैं—भाषण व धर्म की स्वतन्त्रता तथा अभाव और भय से मुक्ति।

सौन्दर्य वृद्धि के कुछ सहज उपाय

(पृष्ठ १२ का शेष)

तीन सेर के परिमाण में जल का प्रयोग करें। प्रातः साय स्नान करें, शरीर को खूब पोंछें, पसीना रुमाल से पोंछते चलें तो दुर्गन्ध दूर हो जाती है। ६ माशे नागदमन के सेवन से यह दुर्गन्ध दूर हो जाती है। शरीर की दुर्गन्ध दूर करने में सुई छोड़ने का बाष्प स्नान या भाफ स्नान अद्भुत चमत्कार प्रकट करता है।

त्वचा को स्वस्थ रखिये

त्वचा के रोगों से सावधान रहिये। इन रोगों का मूल कारण आन्तरिक रक्त विकार है। प्रायः बाहर से जो उपचार किये जाते हैं, उनसे कुछ भी लाभ नहीं होता। अन्दर से खराब खून के कारण बाहर सफेद या काले २ दाग उभर आते हैं। मुंह पर काले दागों का अर्थ लिवर या जिगर की खराबी का प्रभाव है। सफेद दाग अर्थात् ल्यूकोडर्मा भी रक्त विकार के कारण ही उत्पन्न होता है। फोड़ा, फुन्सी, खाज, ये सब रूप से रक्त विकार के ही भाई बेटे हैं। इन के लिए सार्साफरला, गर्मी के दिनों में धोकर चिरायता पीने से लाभ होता है। ऐसे लोगों को जीर्ण कब्ज की शिकायत रहती है। मल एकत्रित होने से सम्पूर्ण संस्थान दूषित रक्त से भर जाता है। यही बीमारी कभी फुन्सी, तो कभी मुहासों के रूप में प्रस्फुटित होती है।

मुहांसे

मुंहासा क्या है? शरीर के संचित विकारों को निकालने का एक साधन। खून में जो विकार है, जो अधिक गर्मी का अंश है, वह कपोल की कोमल त्वचा को फोड़कर बाहर निकल पड़ता है। यही मुहासा बन जाता है। रक्त शोधन, कब्ज निवारण, हरे फल सब्जी तरकारियों विशेषतः टमाटर और पपीते के प्रयोग से मुहासा दूर होता है। प्राणायाम तथा पेट के अन्य व्यायामों, अधिक जल के प्रयोग से मुंहासे दूर हो जाते हैं।

चेचक के बिगड़े हुए चेहरों के लिए जैतून का तेल काम में लें। चेचक मिट जाने पर रोगी के शरीर पर जैतून के तेल की मालिश करें और गर्म जल में स्नान करायें। धीरे धीरे चेचक के दाग धीरे पड़ जायेंगे। एक मास पश्चात् वे दूर हो जायेंगे। ये दाग त्वचा के ऊपरी भाग में से नष्ट होते ही, दाग को स्वच्छ छोड़ देते हैं। प्रायः देखा गया है कि नारंगी तथा अनार का छिलका महीन पीसकर मालिश करने से भी ये दाग विलुप्त हो जाते हैं।

त्वचा की सफाई के लिए भीगी चादर के बन्धन का बड़ा महत्व माना गया है। महात्मा गान्धी जैसे प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेमियों ने इसे त्वचा की बीमारियों को दूर करने के काम में लिया है। श्री दुहिसागर वर्मा ने उसका प्रयोग इस प्रकार बताया है—

"खुली हवा में एक लम्बी मेज अथवा तख्त पर चादर या हवा के अनुसार न्यूनाधिक कम्बल लटकते हुए बिछा दें। इसपर दो मोटी मोटी साफ चादरें ठण्डे पानी में पूरी तरह भिगो कर लटकती हुई बिछायें। नंगे होकर चादरों पर लेट जांय, फिर चादरों और कम्बलों को एक एक करके दोनों ओर से शरीर पर लिपटवा लें। धूप हो तो मुंह और मस्तक पर भीगा कपड़ा लपेट लें। पहले थोड़ी देर कपकपी लगेगी, फिर गर्मी प्रतीत होगी। इस स्थिति में २ मिनट से एक घंटा तक रहा जा सकता है। अन्त में पसीना बह निकलता है। चादर से बाहर निकलने पर पानी से नहाना चाहिए।"

ऊपर लिखा हुआ उपचार खुजली, दाद, लेहुंआ, चेचक इत्यादि सभी त्वचा के रोगों के लिए अतीव गुणकारी है।

— × —

औद्योगिक संघर्ष—

अदालत का महत्वपूर्ण निर्णय

दिल्ली वस्त्र उद्योग की दृष्टि से बिड़ला मिल और उसके मजदूरों के मध्य चल रहे विवाद पर न्यायाधीश श्री दुग्गल का निर्णय महत्वपूर्ण है। यह निर्णय गत १९ मई को दिया गया है। इसके महत्व की दृष्टि से ही इसे यहां दिया जा रहा है।

बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल और उसके मजदूरों में एक औद्योगिक झगड़ा है। इस झगड़े के अन्य विषय तो एक अन्तःकालीन निर्णय द्वारा निर्णीत हो गये थे। अब निम्नलिखित विषयों पर फैसला शेष है:—

१. क्या महंगाई के भत्ते के वर्तमान स्केल पर पुनर्विचार किए जाने की आवश्यकता है, और यदि ऐसा है तो किस आधार पर।

२. क्या सभी कोटि के मजदूरों के वेतन की दर पर बाम्बे स्टेण्डरडाइजेशन स्कीम के अनुसार यदि आवश्यक हो तो कुछ सुधार करके, पुनर्विचार किया जाना चाहिए?

३. क्या मजदूरों को १ अप्रैल १९५१ से १७ अप्रैल १९५१ तक के काम बन्द रहने के समय का वेतन दिया जाय?

६. क्या मिलों में ठेके पर काम करने की पद्धति को छोड़ दिया जाय?

७. क्या व्यवस्थापकों द्वारा दी गई वर्तमान सुविधाएं अलप हैं? यदि ऐसा है, तो क्या सुधार होने चाहिए?

८. क्या व्यवस्थापकों को अपने प्रोविडेण्ट फण्ड और ग्रेच्युटी के नियमों पर पुनर्विचार करना चाहिए, यदि हां, तो किस आधार पर?

९. दुर्घटना होने की दशा में क्या मजदूरों को प्रथम सात दिन की क्षतिपूर्ति दी जानी चाहिए?

तीसरे प्रश्न के विषय में दोनों पक्षों के वकीलों द्वारा उपस्थित किए गए तर्कों का जिक्र करते हुए श्री न्यायाधीश महोदय ने कहा है कि इस विषय में उपस्थित किया गया मुख्य सुझाव यह है कि सुधार इस प्रकार से किया जाना चाहिए कि सबसे कम वेतन पाने वाले मजदूर के लिए बढ़ी हुई मंहगाई को शतप्रतिशत दूर कर दे। मेरे विचार में सिद्धान्त रूप से यह बात उचित है।

श्री दुग्गल ने यह माना है कि दिल्ली के बजाय बम्बई में प्रत्येक दृष्टि से मंहगाई अधिक है। युद्ध से पहिले भी बंबई में दिल्ली से मंहगाई अधिक थी। युद्ध से पूर्व दिल्ली में एक कपड़ा मजदूर को १६ रुपये के लगभग वेतन मिलता था आज वह ८० रुपये प्रति मास हो गया है जब कि चीजों के दाम साढ़े तीन गुणा से अधिक निश्चित रूप से नहीं बढ़े। बाम्बे एवार्ड के अनुसार सबसे कम वेतन पाने वाला मजदूर २६ दिन के मास के लिए ८० रुपये लगभग पा रहा है, जब कि दिल्ली में २६ से कुछ कम दिनों के लिए उसे ८० रुपये मिल रहे हैं। दिल्ली का कपड़ा-उद्योग उतनी सुविधाजनक स्थिति में नहीं है, जितना बम्बई का। बम्बई के मिल दिल्ली के मिलों से बहुत पहिले के स्थापित हैं। वे दिल्ली की अपेक्षा कच्चे माल के प्राप्ति स्थानों के अधिक निकट हैं और उन्हें आयात तथा निर्यात व्यापार सम्बन्धी सुविधाएं भी अधिक प्राप्त हैं। देश में वस्त्र उद्योग का कोई भी अन्य केन्द्र दिल्ली से अधिक वेतन नहीं दे रहा है। ऐसी दशा में दिल्ली के मजदूर को प्राप्त होने वाले कुल वेतन को बम्बई में प्राप्त होने वाले वेतन से भी अधिक बढ़ाने का कोई उचित कारण मुझे दिखाई नहीं देता। अतः मेरा निर्णय है कि मजदूरों को मिल रहा मंहगाई भत्ता उचित है और उस में परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं।

चौथे प्रश्न के विषय में श्री न्यायाधीश महोदय का कथन है कि मेरे विचार में वेतन के स्तरीकरण करने की मांग उचित है और व्यवस्थापकों ने भी इसको सिद्धान्ततः स्वीकार कर लिया है। बिड़ला मिल की स्थिति से पूर्णतः परिचित न होने के कारण मेरे लिए इस प्रकार की कोई योजना उपस्थित करना असम्भव है। यह सिद्धान्त स्वीकार कर लिया गया है कि स्तरीकरण की योजना ३० रुपये प्रति मास के न्यूनतम आधार पर बननी चाहिये। यह वस्तुस्थिति होने से मैं यह आदेश देता हूं कि बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स, दिल्ली को बम्बई योजना के नमूने पर सभी श्रेणी के मजदूरों के लिए वेतन के स्तरीकरण की एक योजना स्वीकार करनी चाहिए। व्यवस्थापकों को इस प्रकार की योजना मजदूरों के प्रतिनिधियों से सलाह कर बनानी चाहिए और यदि कोई झगड़ा पारस्परिक विचार से तय न हो सके, तो उसे ट्रिब्यूनल के संमुख उपस्थित करना चाहिए।

अगले प्रश्न के विषय में श्री दुग्गल का निर्णय है कि व्यवस्थापकों का कथन है कि यह एक गैरकानूनी हड़ताल थी, जिसके लिए कोई नोटिस नहीं दिया गया था। मजदूरों ने यह स्वीकार किया है कि कामबन्दी अवश्य थी। अन्य सब बातों को छोड़ते हुए, यह स्पष्ट है कि मजदूर व्यवस्थापकों द्वारा निश्चित समय निर्धारित तालिका के अनुसार काम करने को तैयार नहीं थे। यह दो दिनों में किस चलाने का प्रश्न भी इसी केस के विचाराधीन एक प्रश्न था। अतः यह देखा गया कि मजदूरों की मांग पूर्णतः न्यायसंगत नहीं थी। यह स्पष्ट है कि उल्लिखित दिनों में मजदूरों ने कोई काम नहीं किया, और चूंकि इस कामबन्दी के लिए व्यवस्थापक उत्तरदायी नहीं हैं, इस अवधि के वेतन देने में कोई औचित्य नहीं है। अतः यह मांग अस्वीकार की जाती है।

छठे विषय के सम्बन्ध में न्यायाधीश महोदय का निर्णय है कि यह मांग वास्तविकता के विषय में भ्रम पर आधारित है। कपड़ा उद्योग से सम्बन्धित कोई भी कार्य ठेके पर नहीं होता। कोयले आदि के विषय में ठेका अवश्य चलता है। किन्तु ठेकेदारों द्वारा लगाए गए मजदूर मेरे सामने नहीं हैं और स्पष्टतः ही उनमें और व्यवस्थापकों में कोई झगड़ा नहीं है। अतः यह समझ में नहीं आता कि इस मांग का क्या अर्थ है। मजदूरों के वकील श्री जोशी ने यह सुझाव दिया है कि व्यवस्थापकों को इस प्रकार के कामों के लिए नियमित मजदूर रखने का आदेश दिया जाय। मैं यह नहीं समझ पाता कि जहां तक वर्तमान झगड़े का प्रश्न है, कपड़ा मजदूरों को किस प्रकार इसमें रुचि हो सकती है। अतः मैं समझता हूं कि इस विषय में कोई प्रतिबन्ध उचित न होगा। श्री जोशी ने भी इस विषय पर अधिक जोर नहीं दिया, अतः मैं समझता हूं कि मांग ठीक नहीं है।

सातवें प्रश्न के विषय में श्री दुग्गल का कथन है कि इस विषय में प्राप्त होने वाले समाचार बहुत थोड़े हैं और किसी निश्चय माप के अभाव में यह कहना कठिन है कि वर्तमान सुविधाएं अपर्याप्त हैं। किसी विशेष सुविधा के विषय में कोई निश्चित सुझाव भी नहीं रखा जा रहा है। इस स्थिति में मैं कोई निश्चित आदेश देने की स्थिति में नहीं हूं, तो भी मैं इस बात की ओर से सिफारिश करूंगा कि व्यवस्थापकों को इस विषय में मजदूरों के प्रतिनिधियों से परामर्श करना चाहिए और इस प्रकार की सुविधायें और देनी चाहिएं, जो उचित हों और उनके साधनों के अन्तर्गत हों।

प्राविडेण्ट फण्ड व ग्रेच्युटी के विषय में न्यायाधीश महोदय का मत है कि मजदूरों की यह मांग है कि प्राविडेण्ट फण्ड के अतिरिक्त कार्यकाल की अवधि की दृष्टि से व्यवस्थापकों द्वारा मजदूरों को ग्रेच्युटी और दी जानी चाहिये। जहां तक दिल्ली का प्रश्न है यह स्वीकार किया गया है कि प्राविडेण्ट फण्ड से अतिरिक्त यह योजना अन्य कहीं नहीं है। श्री जोशी ने बम्बई के इंडस्ट्रियल ट्रिब्यूनल का उदाहरण दिया है। यह स्पष्ट है कि इस प्रकार के प्रश्नों पर "उद्योग तथा प्रदेश" के आधार पर विचार होता है। चूंकि ये दोनों बातें अलग दिल्ली में कहीं भी नहीं हैं, ऐसी स्थिति में बिड़ला मिल पर ही इनका भार डालना उचित नहीं प्रतीत होता। मैं यहां इस बात का उल्लेख कर दूं, कि कुछ योग्य व्यक्तियों के मामले में व्यवस्थापक कुछ सहायता अवश्य स्वीकार करते हैं और इससे असन्दिग्ध रूप से कुछ मजदूरों को लाभ हुआ है। अतः मेरे विचार में इस स्थिति में किसी पुनर्विचार की आवश्यकता नहीं है।

अन्तिम प्रश्न के विषय में श्री दुग्गल ने श्रमिक क्षतिपूर्ति विधान की तीसरी धारा का उल्लेख किया है। उक्त विधान के अनुसार ऐसी किसी साधारण चोट की दशा में, जिसमें मजदूर कम से कम सात दिन के लिए बेकार नहीं हो जाता, किसी प्रकार की क्षतिपूर्ति देने की आवश्यकता नहीं है। कारण स्पष्टतः ही यह है कि प्रत्येक छोटी मोटी चोट की क्षतिपूर्ति की मांग की जायगी और व्यवस्थापक कोई नियन्त्रण न रख सकेंगे। मैं नहीं समझता कि इस विषय में विधान सभा की बुद्धिमत्ता में सन्देह किया जाना उचित है। इसके अतिरिक्त भी मैं नहीं समझता कि विधान की व्यवस्था से ऊपर जो कि इतने अधिक समय तक किसी प्रकार का दोष दिखाये बिना चलती रही है अन्य किसी प्रकार के प्रबन्ध की मांग का आग्रह करने से मजदूरों को कोई लाभ होगा। अतः मेरा निर्णय है कि इस विषय को वर्तमान कानून के अनुसार ही चलने देना चाहिए जिसके अनुसार दुर्घटना होने पर प्रथम सात दिनों के विषय में कोई क्षतिपूर्ति नहीं की जायगी।

सम्पादक के नाम पत्र

हमारे पाठक क्या कहते हैं ?

पेप्सु में अन्याय

श्री सम्पादक महोदय

मैं आपके पत्र द्वारा, पटियाला यूनियन में मन्त्री मंडल के निर्माण के बाद जो धांधलेबाजी मची हुई है, उस की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

केन्द्रीय पार्लमेंटरी बोर्ड के प्रयत्नों के कारण पेप्सु यूनियन में कांग्रेस के विभिन्न दलों का सम्मिलित मन्त्रीमंडल का निर्माण हुआ। इससे हमारे जिले की दुःखित जनता में थोड़ा बहुत जो आशा का संचार हुआ। वह शीघ्र ही विक्षोभ के रूप में परिवर्तित हो गया, क्यों कि सर्वसाधारण की अन्न और कपड़े की दूषित व्यवस्था को सुलझाने की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। अपितु पार्टीबाजी से प्रभावित होकर शिक्षा मन्त्री ने लोकप्रिय इंस्पेक्टर सरदार इन्द्र सिंहजी को साधारण सी शिकायतों के आधार पर मुअत्तिल कर दिया। इनकी लोकप्रियता का स्पष्ट प्रमाण यही है कि सरदार जी के पृथक्करण के समाचार को सुन कर गांव गांव में तार भेजे गये, रजिस्टर्ड पत्र रवाना किये गये। कई प्रतिनिधि मंडल भी मन्त्री महोदय से मिलें। परन्तु अभी न्याय नहीं मिल सका। मानों जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

मैं भारत सरकार से अनुरोध करता हूं कि इस विषय में पूरी जांच करके अब शाखियों को उचित दण्ड दिया जाए। केवल यह कह कर टाल देना कि कुछ एक व्यक्तों की मूढ़ता से ऐसा हुआ है—जनता की आंखों में धूल डालने की बात है।

— जयकृष्ण

—●—

राजस्थान प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन

दिसम्बर १९५० के अन्तिम सप्ताह में कोटा (राजस्थान) में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन धाम धाम, लोगों के भावों भावों के साथ समाप्त हुआ। उस समय कई योजनायें बनाई गईं, कई प्रस्ताव पास किए गये उनमें से कितनी योजनायें सफल हुईं और कितने प्रस्तावों को कार्य रूप दिया गया। इस संबंध में सम्मेलन के अधिकारियों का कर्त्तव्य है कि हिन्दी संसार को समय समय पर स्थिति से अव गत करे।

अधिवेशन के अवसर पर राजस्थान प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की एक योजना रखी गई थी। राजस्थान में इस नाम से उस समय चार संस्थायें बीकानेर, चरु, पिलानी और जोधपुर (जो प्रायः समस्त सी ही थी) में कार्य करती थीं, अतः मैंने उस समय इस नये संगठन का विरोध किया कि इन संगठनों को ही मिला कर सम्मेलन मान्यता क्यों न दे अथवा उन्हें साथ लेकर ही काम किया जाय। मुझे यह आश्वासन दिया गया और एक समिति के अध्यक्ष से आश्वासन प्राप्त करने का अवसर मिला लेकिन अध्यक्ष ने कोई उत्तर नहीं दिया—समिति के कुछ सदस्यों से पूछने पर ज्ञात हुआ कि 'कोई प्रगति नहीं हुई।' इसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ न स्वयं कार्य करे न दूसरों को करने दे। जो संस्थायें इस नाम से कुछ कार्य करती थीं वह भी प्रगति नहीं कर सकीं।

सम्मेलन के अधिकारियों से अनुरोध है इससे तो यह कहीं अच्छा हो यदि राजस्थान की मान्य साहित्यिक संस्थाएं जिनमें अजमेर के सरस वियोगी की राजस्थान साहित्यकार संसद जोधपुर, में श्री 'भावुक' की मारवाड़ शिक्षा कुमार साहित्य परिषद अथवा अन्य कोई प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन जिसकी राजस्थान में अच्छी प्रतिष्ठा हो, उसे सम्मेलन मान्यता प्रदान करे और इस समिति को भंग करदे। ऐसा करने से ही सम्मेलन राजस्थान के प्रति अपना कुछ कर्त्तव्य निभा सकेगा और राजस्थान के साहित्यकारों का एक संगठन हो सकेगा अन्यथा नहीं।

— चिरंजीलाल माथुर

——

— रामसिंह नागर

भारत सरकार तथा हिन्दू सावधान रहें !

पिछले दिनों से राजधानी में मुसलमानों की पाकिस्तानी प्रवृत्तियों तथा दुष्कर्मों के समाचारों से मन में अनेक प्रकार के विचार उठते हैं। हिन्दुओं की बरातों पर हमले तथा १३ वर्षीय हिन्दू लड़की को भगाने के प्रयत्न इनका क्या अर्थ हो सकता है ? और सब से महत्व पूर्ण बात तो इनका राजधानी में होना है। ऐसी घटनाएं तो कोइटा जैसे नगर में, जो कि पठानों का गढ़ है, मैंने अपने ५ वर्ष निवास के बीच भी नहीं सुनीं। आखिर हिन्दुओं को इन लोगों ने क्या समझ रखा है ? गाजर मूली समझ कर सभी इन्हें काटने को फिरते हैं।

मैं तो इसका उत्तरदायित्व कांग्रेस सरकार की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति पर डालता हूं। और उससे बढ़कर अपने ३१ करोड़ भोले भाले हिन्दुओं पर जो ये बातें होते हुए भी देख नहीं सकते और अपनी २० हजार माताओं तथा बहनों को शत्रु के चंगुल में फंसा हुआ देखकर भी ऐसे चुप कर के बैठ गए हैं,

(पृष्ठ ६ का शेष)

यद्यपि इन दोनों अंग्रेजों को यहां कोई सरकारी पद प्राप्त नहीं है, तथापि यह सर्वविदित है कि सिर्फ लियाकत अली और पाकिस्तान सरकार के अन्य नेता उनसे बराबर सम्पर्क रखते हैं एवं सैनिक मामलों में, मुख्यतः काश्मीर के बारे में, उनकी सलाह लेते रहते हैं।

काश्मीर के बारे में आकिनलेक और मेसी के मत क्या थे—इसे इन लोगों ने कभी छिपाया नहीं। वे निजी तौर पर और सार्वजनिक रूप में भी यह कहते ही रहे हैं कि काश्मीर तो पाकिस्तान को ही मिलना चाहिए।

× × ×

इसके सिवा, भारत विभाजन से पूर्व उनके साथ के कार्यकर्तागण जानते ही हैं कि उनके रुख पाकिस्तानी और मुसलिम पक्षपातपूर्ण रहे हैं। कहा जाता है कि भारत विभाजन के संकट पूर्ण काल में भारत पाकिस्तान सेना के सर्वोच्च सेनापति के रूप में आकिनलेक ने भारत के पक्ष को हानि में डाल कर भी पाकिस्तान की सहायता के कार्य किये। यह बात खुल जाने पर ही वे सर्वोच्च सेनापति के पद से वस्तुतः हटाये गये थे और मेसी महोदय ने ही तो पाकिस्तानी सेना का पुनर्संगठन किया था। वे पहले वहां के सेना विभाग के प्रधान और बाद में वहां की सेना के सेनापति रह चुके हैं। काश्मीर आक्रमण के विविध कुचक्रों की रचना में उनका भी हाथ रहा है संयुक्त राष्ट्रसंघीय काश्मीर कमीशन के समक्ष वे और लेफ्टिनेंट जनरल मेसेरवी बयान दे ही चुके हैं कि पाकिस्तान ने काश्मीर में अपनी सेना महज आत्मरक्षा की दृष्टि से भेजी।

× × ×

यद्यपि इस समय पाकिस्तानी सेना के सभी उच्च पदों पर पाकिस्तानी लेफ्टिनेंट ही अधिष्ठित हैं, तथापि उन लोगों को इनसे प्रेरणाएं तो अवश्य ही मिलती रहती हैं, कारण इनका प्रायः आना जाना सैनिक अड्डों पर होता ही रहता है।

इधर मेसी महोदय अफगान पाकिस्तान को उखाड़ने वाले तथोक्त सैनिक षड्यन्त्र की खोज में सहायता दे रहे हैं और आकिनलेक महोदय गत सप्ताह निजी तौर पर विमान से पूर्वी बंगाल गये थे। वहां स्थित सैनिक कमाण्डरों से भी उनकी भेंट होने की खबर रही है।

× × ×

रामचन्द्र

(पृष्ठ १० का शेष)

गये हैं, औचित्य-अनौचित्य के परीक्षण की क्षमता मुझ में है नहीं। तो क्या मैं सचमुच पागल हूं……?

और मैं अपने विचित्र-स्वर में फिर से गीत गाने लग जाता हूं; कष्टानुभूति के विभ्रम से उन्मुक्त-सा !

पर मुझे अपने जीवन में प्रथम बार कष्ट हुआ भी हुआ। मैं उन्माद, विस्मृत सा भागा जा रहा था। यही रात्रि के दो बजे का समय होगा। सारा नगर नीरव था; जैसे उसका सारा अस्तित्व निस्पंद हो गया हो।

अचानक ही, एक गन्दी गली में आते हुए, किसी के कण्ठ स्वर-माधुर्य से आकृष्ट हो कर, मैं ठिठक कर खड़ा हो गया। गीत क्या था, याद नहीं है ठीक से। पर वह कण्ठ स्वर ? मैंने रेडियो भी सुना है, सिनेमा के गीत सुने हैं। पर मैंने इतनी सरसता, मिठास, किसी में नहीं पाई। वह गीत, अंतरिक्ष में एक गुंजार-ध्वनि उत्पन्न करता हुआ, मुझे मदहोश किये दे रहा था।

'लाल दुपट्टा मलमल का', मैंने भी आनन्दित होकर गाना आरम्भ किया। ऊपर से वह, गाने जो गा रही थी, धीमे स्वर में बोली। मैंने भी कौतूहल-वश, वरिक स्वभावानुसार चिढ़ाने के लिए, नीचे से बोल दिया।

किसी की पदचाप सुनाई दी। मैं भी निर्विकार भाव से खड़ा होगया, उत्सुकता के लिए।

"कौन ?" वीणा की-सी झनकार थी। मैं अवाक् खड़ा था। उसके हाथ के लैंप से मंद-मंद प्रकाश निकल रहा था। देखा, अतीव सुन्दर, अतीव आकर्षक !

"जिया बेकरार है,, आत्मविभोर हो उठा मैं। उसने पहले मुझे, लैम्प प्रकाश में घूर घूर कर देखा। फिर घृणापूर्वक यह कहती हुई ऊपर चली गई, "अब यहां भी सब पागल ही मिलते हैं," और जाते जाते थूक दिया मेरे मुंह पर।

मैंने, थूक पोंछने की चेष्टा न कर, एक बड़ा सा पत्थर उसके ऊपर दे मारा और चुपचाप एक ओर खिसक गया। मैंने सुना, रो रही थी वह। ····

तब से, अपने हाथों में, एक प्रकार की खुजली सी अनुभव कर रहा हूं। किसी के कुछ न कहने पर भी सिर फोड़ देने को मन करता है। मेरी हरकतों से घबरा कर, एक भद्र पुरुष मुझे जेल में डालने, जी हां, पागलखाने में डालने की नहीं, को धमकी दे गये हैं।

जी हां, विश्वास कीजिये, मेरा नाम रामचन्द्र ही है।

———

कम्यूनिज्म में बुद्धिजीवियों का स्थान

साम्यवादी आन्दोलन में, उसके आरम्भिक समय से बुद्धिजीवियों ने एक विशेष भाग लिया है। स्वयं कार्ल मार्क्स एक बुद्धिजीवी था और लेनिन भी। लेनिन अपने दल को 'पेशेवर क्रान्तिकारियों' की एक अनुशासित षड्यन्त्रकारी संस्था बनाना चाहता था और उसने इस बात का अनुभव किया कि ऐसे लोगों को कामकाजियों और किसानों के मध्य में से प्राप्त करने की अपेक्षा बुद्धिजीवियों के समूह में ढूंढना अधिक आसान होगा।

किन्तु लेनिन के विरोधी चाहते थे, पश्चिम के श्रम आन्दोलनों से मिलता-जुलता जनसाधारणों का दल, कम अनुशासित, कम तानाशाही, पेशेवर क्रांतिकारियों के राजनैतिक आदेशों की ओर उतना ध्यान देने वाला नहीं, जितना कि कामकाजियों की नित्यप्रति की जरूरतों की ओर। अन्त में क्रान्ति और गृहयुद्ध में लेनिन का दल ही विजयी हुआ और सारे रूस का शासक बना।

जब एक बार बोल्शेविक लोगों को रूस में अधिकार मिल गया, जब रूस के विद्रोही अब शासक बन गये, तब उनके दल ने भी नया रूप ग्रहण कर लिया। अब विद्रोहप्रिय बुद्धिजीवियों की आवश्यकता उतनी नहीं थी, जितनी कि आज्ञाकारी कामकाजियों की। प्रारम्भिक काल के कुछ बुद्धिजीवी नेता अभी भी पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ, स्तालिन और मोलोटोव एक अर्थ में बुद्धिजीवी कहे जा सकते हैं। जैसे ट्राट्स्की, जिनोविएव तथा बुखारिन उपेक्षित हो गये हैं। यद्यपि आज भी साम्यवादी दल में कुछ ऐसे कामकाजी हैं, जो कारखाने में कामकाज करते हैं, कुछ ऐसे किसान हैं जो जोतते बोते हैं और कुछ ऐसे बुद्धिजीवी हैं जो अभी भी अपने-अपने पेशों में लगे हैं, पर साम्यवादी दल में महत्वपूर्ण पद न सच्चे कामकाजी को प्राप्त है, न सच्चे किसान को और न सच्चे बुद्धिजीवी को, किन्तु उस 'ब्यूरोक्रैट' को साम्यवादी दल के उस पक्के अधिकारी को, जिसका पूरा समय दल के प्रशासन में व्यतीत होता है। पूर्व योरोपीय देशों में भी, जहां साम्यवादियों ने सत्ता हड़प ली है, कुछ परिवर्तन हो रहे हैं। विद्रोहप्रिय बुद्धिजीवियों के स्थान दल के पूरे समय के अधिकारीगण ले रहे हैं।

जहां साम्यवादी सरकारें नह

किन्तु उन देशों की परिस्थिति, जहां साम्यवादियों की सरकारें नहीं हैं, उनके बोल्शेविक दल की हालत से मिलती जुलती है। वहां क्रान्तिकारी बुद्धिजीवी अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। वहां साम्यवादी दल में बुद्धिजीवियों को सम्मिलित करने तथा उन बुद्धिजीवियों का, जिनकी संख्या और भी अधिक है, समर्थन प्राप्त करने के प्रयत्न किये जाते हैं, जो साम्यवादी दल से सहानुभूति रखते हैं और उसकी सहायता के लिए तैयार हैं, किन्तु उसमें सम्मिलित होना नहीं चाहते।

ऐसे देश, जहां साम्यवादियों ने अधिकार नहीं प्राप्त किया है, दो भागों में बांटे जा सकते हैं: उन्नत और पिछड़े हुए। जहां तक पिछड़े हुए देशों की बात है, बुद्धिजीवियों को विशेष महत्व दिया जाता है। ऐसे लोगों की संख्या बहुत नहीं है, पर वह अवश्य रही है। वे बीसवीं शताब्दी के लोग हैं और अपने देशवासियों को दया की दृष्टि से देखते हैं। वह सोच कर कि वे बेचारे पन्द्रहवीं शताब्दी अथवा प्रागैतिहासिक युग में रह रहे हैं। दुःख और सामाजिक अन्याय के प्रति विद्रोह करने वाले ये बुद्धिजीवी सारा दोष शासकवर्ग के सर पर मढ़ते हैं और औपनिवेशिक देशों में, विदेशी शासकों पर। इन स्त्रियों और पुरुषों को साम्यवादियों से उनके प्रिय, उन्हें आकर्षित करने वाले नारे मिलते हैं। साम्यवाद इन्हें यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न करता है कि सोवियट नीति का समर्थन कर वे अपने देशवासियों के लिए सामाजिक न्याय प्राप्त कर सकते हैं।

विदेशी बुद्धिजीवी समर्थक

पश्चिमी देशों में बुद्धिजीवी इतने महत्वपूर्ण नहीं हैं। वे अपने देशवासियों की तुलना में उतने अधिक उन्नत नहीं हैं जितने कि पिछड़े हुए देशों के बुद्धिजीवी। उदाहरणार्थ, इंग्लैंड में हम सब बीसवीं शताब्दि के बाशिन्दे हैं। यहां कामकाजी लोग बुद्धिजीवी संरक्षकों के नेतृत्व के बिना ही अपनी देखभाल कर सकते हैं। पर महान वैज्ञानिकों और लेखकों की अपनी प्रतिष्ठा है। यदि वे सोवियट यूनियन की प्रशंसा में कुछ कहने के लिए राजी किए जा सकें तो बहुत अच्छा हो क्योंकि उनके शब्द बड़े महत्वपूर्ण माने जाएंगे। वे लोग अपने नेताओं के मन में सन्देह उत्पन्न कर सकते हैं। इस प्रकार आप देखते हैं कि सोवियट यूनियन की स्कीमों में इन्हें भी एक स्थान प्राप्त है, यद्यपि यह स्थान उससे बहुत भिन्न है जो सोवियट तथा लोकप्रिय जनतन्त्रवादी जगत में बुद्धिजीवियों को प्राप्त होता है।

साम्यवाद के विदेशी बुद्धिजीवी समर्थकों का काम होता है पूंजीवादी समाज के खिलाफ विद्रोह करना। जब तक ऐसे बुद्धिजीवी यह समझते हैं कि साम्यवाद अन्य सब वादों से अच्छा है तब तक इस बात की चिन्ता नहीं कि उनके विश्वास क्या हैं। वे मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्तों में से कुछेक अपना सकते हैं और शेष अस्वीकार कर सकते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि वे लकीर के फकीर बने रहें और निर्धारित मार्ग पर चलें। उदाहरणार्थ, प्रसिद्ध फ्रेंच कलाकार पिकासो को लीजिए। उसकी शैली ऐसी है जो कोई भी सोवियट कलाकार सरकार का कोपभाजन बने बिना नहीं अपना सकता। फिर भी फ्रांस के साम्यवादी समर्थक बुद्धिजीवियों के लिए पिकासो का नाम प्रेरणा का महामन्त्र माना जाता है। आप पूछेंगे, क्या यह एक परस्पर विरोधी बात नहीं है? साम्यवादी सिद्धान्त का पंडित जवाब देगा: नहीं, पिकासो एक मरते हुए पूंजीवादी जगत की निराशा और अशांति चित्रित कर रहा है और उस अवसर के लिए यह शैली ठीक है। यदि आप साम्यवादी पंडित पर अर्थ स्पष्ट करने का जोर डालें तो वह कहेगा—कि यदि पिकासो काफी समय तक सोवियट यूनियन में रहता तो उसकी कला का रूपरंग बदल जाता। कारण, साम्यवादी सिद्धान्त के अनुसार उस पर वातावरण का प्रभाव पड़ता। तब हो जाएगा वह सोवियट सचाई को चित्रित करने वाला सच्चा कलाकार, और उसका विषय हो जाएगा सोवियट नागरिक, जो स्वयं नये सोवियट वातावरण की उत्पत्ति है और साम्यवादी समाज के निर्माण में संलग्न है।

और इस पुल के आगे बंधे-बंधाए सिद्धान्तों का साम्यवादी संसार है। वही संसार जहां क्रांति समाप्त हो चुकी है और इसलिए विद्रोहप्रिय बुद्धिजीवियों के लिये कोई स्थान नहीं है। स्थान है केवल उसके लिए, प्रभाव है केवल उसके हाथों में, जो साम्यवादी दल का सदस्य है और निर्धारित मार्ग पर चलता है। स्पष्ट है कि इस बुद्धिजीवी वातावरण में उस बुद्धिजीवी के लिए कोई स्थान नहीं है जो असहमत होना चाहता है।

शांति का भ्रांतिपूर्ण आन्दोलन

इस समय सारे संसार के साम्यवादी रूस की विदेशी नीति का समर्थन करने के लिए एक 'शांति आंदोलन' चला रहे हैं। इस आन्दोलन के लक्ष्य पश्चिमी देशों के वे बुद्धिजीवी हैं जो नए युद्ध के विचार से चिन्तित हैं, जिनके अन्तःकरणों में अमेरिका के पास अणुबम जैसे भयंकर अस्त्र होने के कारण, अशांति और उद्विग्नता है। क्योंकि इस नए अस्त्र की उत्पत्ति में सोवियट यूनियन उतनी दूर नहीं जा सका है जितनी दूर कि अमेरिका इसलिए साम्यवादी शान्ति आन्दोलन ने अपना आक्रमण (उस तथाकथित स्टाकहोम अपील में) इस नए अस्त्र पर केन्द्रित किया है।

न हो हम प्रोफेसर जाइलेंको को, जो वैज्ञानिक अनुसन्धान और वैज्ञानिक तथा बुद्धिजीवी की आजादी के महान अगुआ समझे जाते हैं, भुला सकते हैं। यह कोई नहीं कह सकता कि प्रोफेसर साहब स्पष्टवक्ता नहीं हैं। प्रोफेसर जाइलेंको कहते हैं, 'प्रत्येक देश के सब वैज्ञानिकों और बुद्धिजीवियों का यह एक पवित्र कर्त्तव्य है कि लोगों को समझाएं कि सोवियट यूनियन न लोगों पर अत्याचार करता है और न कर सकता है न आक्रमणकारी है और न आक्रमणकारी हो सकता है। सोवियट यूनियन का समाजवादी सिद्धान्त ही ऐसा है।' साम्यवादी शांतिवादी आपको दिलाएंगे कि यूगोस्लाविया शांति के लिए एक खतरा है। पर आप अपने मन में सोचेंगे कि जब यूगोस्लाविया अपने पड़ोसियों पर आक्रमण की तैयारी नहीं कर रहा है तब उसे शान्ति के लिये खतरा क्यों कहा गया। यूगोस्लाविया का असल अपराध यह है कि उसने मास्को के महाप्रभुओं को अपने देश का मालिक नहीं बनने दिया। इस कारण यूगोस्लाविया सोवियट विस्तार के मार्ग में एक बाधा बन गया है। कारण, सोवियट विस्तार का ही भाव शान्ति है। साम्यवादी शब्दावली में 'शान्ति' का यही अर्थ है:

असाम्यवादी संसार के बुद्धिजीवियों को अपनी ओर आकर्षित करना साम्यवादी टेक्नीक है। कैसे? महान विश्वव्यापी सिद्धान्तों की दुहाई देकर, 'शांति' और 'न्याय' जैसे बड़े बड़े शब्दों को प्रयुक्त कर, इन बुद्धिजीवियों के आदर्शवाद का अनुचित लाभ उठा कर, उनकी अन्तरात्माओं को परेशान कर।

किन्तु साम्यवादी शासन का सुख उठाने वाले देशों में बुद्धिजीवियों की अवस्था कैसी होती है? पूर्वी योरोप के उन बुद्धिजीवियों का क्या हाल है, जिन्होंने १९४१ में सोवियट सेना का स्वागत किया था और स्वतन्त्रता तथा न्याय की आशा में साम्यवादियों का समर्थन किया था? इन लोगों को अब क्या हो गया। और स्वयं सोवियट यूनियन के बुद्धिजीवियों की दशा? श्री० एहेरनबुर्ग, पैव्लोविन और जाइलेंको ने वर्तमान उच्च पदों को कैसे प्राप्त किया उनके पेशे के अन्य साथियों का क्या हुआ? सोवियट लेखकों, वैज्ञानिकों और कलाकारों को कितनी स्वतन्त्रता उपलब्ध है जरा हम यह भी तो सुनें।

गुरुकुल वृन्दावन

★ श्री पं० द्विजेन्द्रनाथ

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन भारत की प्रमुख शिक्षा संस्था है, जो व्रज धाम वृन्दावन से ३-४ फर्लांग के लगभग यमुना के सुरम्य तट पर स्थित है। इसका संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में हो रहा है। लगभग अर्ध शताब्दी पूर्व भारत का वायु मंडल विदेशीय शिक्षा व संस्कृति के प्रभाव से उत्तरोत्तर प्रभावित होता जा रहा था, जिसके परिणामस्वरूप देश भारतीय संस्कृति, भारतीय परम्पराओं को न केवल भूलता जा रहा था किन्तु उनसे विमुख भी होता जा रहा था। उसके विरुद्ध वैदिक संस्कृति एवं वेद वाणी का व्यापक प्रसार करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिस गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को प्रचलित करने के लिए संकेत किया है, उसके आधार पर उत्तर प्रदेश के आर्यसमाज के नेताओं ने उक्त गुरुकुल की स्थापना की। स्थापना तो उत्तर प्रदेश में हुई परन्तु गुरुकुल का क्षेत्र उत्तर प्रदेश तक ही सीमित न हो कर देशव्यापी बन गया है। इसमें न केवल उत्तर प्रदेश के ही विद्यार्थी अध्ययन करते हैं अपितु उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त मध्यप्रान्त, बिहार, आसाम, बंगाल, उड़ीसा बम्बई, मद्रास, मैसूर, बड़ौदा, इन्दौर, ग्वालियर आदि सभी प्रदेशों के विद्यार्थी आते हैं। फीजी, अफ्रीका, उगाण्डा आदि सुदूरदेशों के भी विद्यार्थी पढ़ते रहे हैं और पढ़ रहे हैं।

विपरीत परिस्थिति एवं विरुद्ध वायुमंडल का सामुख्य करते हुए यह आदर्श संस्था जनता के सहयोग एवं अपनी शक्ति के बल पर बिना किसी गवर्नमेंट की सहायता लिए हुए आज तक चल रही है। जिन स्थितियों को पार करके दृढ़तापूर्वक अपने आदर्श पथ पर उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर हो रही है यदि उन पर सिंहावलोकन से विचार किया जाय तो कोई भी विज्ञ व्यक्ति इस संस्था की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। अब तो समय ही बदल गया, देश स्वतन्त्र है, अपना ही राज्य है, शासन यन्त्र अपना है। उससे हमें सहायता एवं सहयोग मिलने की भी पूर्ण आशा है और मिल भी रहा है। अनावर्तक सहायता के रूप में पुष्कल धन राशि के भी मिलने की पूर्ण आशा है।

प्रसन्नता की बात है कि शिरोमणि उपाधि को आगरा विश्वविद्यालय ने अपनी बी० ए० उपाधि के समकक्ष स्वीकार कर लिया है, और हमारे यहां के स्नातक आगरा यूनिवर्सिटी की एम० ए० की परीक्षा में सफलता प्राप्त करते चले जा रहे हैं। शिक्षानुरागी जनता का ध्यान भी अब विशेष रूप से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की ओर आकृष्ट होता जा रहा है। हमारा पूर्ण विश्वास है कि गुरुकुल निकट भविष्य में ही अपनी उज्ज्वल आभा से आभासमान होगा।

गुरुकुल शिक्षा की विशेषता पर यहां प्रकाश डालना आवश्यक है जिससे यह ज्ञात हो जावे कि देश में प्रचलित अन्य शिक्षा प्रणालियों से गुरुकुल शिक्षापद्धति कितनी उत्कृष्ट है।

१. ब्रह्मचारियों को तपस्या पूर्ण ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करना होता है।

२. गुरुकुल में विद्यार्थीगण समान भाव से सहोदर भाई के समान विद्याध्ययन करते हैं।

३. ब्रह्मचारियों के मानसिक विकास के साथ चरित्र निर्माण और धार्मिक भावनाओं का गम्भीर पुट भी रहता है। गुरुकुल की शिक्षा आचार प्रधान शिक्षा है जिससे विद्यार्थी भारत के सदाचार सम्पन्न आदर्श नागरिक बन सकते हैं जो राष्ट्र के जीवन व निर्माण की आधार शिला है।

४. शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा है। संपूर्ण संस्कृत साहित्य, वैदिक, लौकिक व दार्शनिक धर्म शास्त्र आदि की शिक्षा के साथ व्यवहारिक ज्ञान, गणित, विज्ञान, इंगलिश, हिन्दी, नागरिक शास्त्र, आयुर्वेद, समाज शास्त्र राजनीति आदि की भी शिक्षा दी जाती है।

संक्षेपतः देश के स्वतन्त्र हो जाने पर संप्रति बलिष्ट राष्ट्र निर्माण करने के लिये जिस शिक्षा की अपरिहार्यता आवश्यक है वह है गुरुकुल शिक्षा प्रणाली। यदि राष्ट्र के शासक गण गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को नहीं अपनायेंगे तो कदाचित राष्ट्र समुज्ज्वल शक्तिशाली न बन सकेगा। आज देश में जो चोरबाजारी, विद्यार्थियों में चरित्रहीनता अनुशासन का अभाव, भ्रष्टाचार, दुराचार, एवं अत्याचार की प्रबल प्रभाव शाली प्रवृत्तियां हैं। वे सब मुख्यतः आदर्शहीन एवं धर्म विकल शिक्षा प्रणाली के ही अवश्यम्भावी परिणाम हैं। उनकी अमोघ एवं अमृतमय औषधि यदि कोई है तो वह गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही है। गुरुकुल वृन्दावन ने विपरीत परिस्थितियों को सामुख्य करते हुए भी जिन फलों को राष्ट्र के लिए प्रदान किया है वे निःसंदेह गर्व एवं गौरव के हेतु हैं। आज हमारे स्नातक सुलेखक, सुकवि, सुवक्ता, साहित्यक, उपाध्याय तथा आचार्य आदि उच्च पदों पर विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करते हुए राष्ट्र की विशेष कर आर्य समाज की जो सेवा कर रहे हैं उससे कौन भारतीय गर्वान्वित नहीं होता है।

ग्रीष्मावकाश के उपरान्त गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का नया सत्र पहिली जुलाई सन् १९५१ से प्रारम्भ हो रहा है। यहां सब प्रकार की शिक्षा और निवास सुविधा का प्रबन्ध सर्वथा निःशुल्क है। भोजन व्यय मात्र के लिए भी वर्तमान अनेक प्रतिबन्धों के युग में भी भोजन व्यय मात्र में कक्षा १ से ५ तक २०) रु० कक्षा ६ से १० तक २२) रु० और कक्षा ११ से १४ तक २५) रु० मासिक लिये जाते हैं। होनहार छात्रों को छात्रवृत्तियां भी देने की व्यवस्था है। प्रवेश चाहने वाले छात्रों के संरक्षकों की ओर से नियत वेश पत्र नव वर्षारम्भ के पूर्व आ जाने चाहिएं। प्रवेश पत्र गुरुकुल कार्यालय से पत्र आने पर प्राप्त हो सकते हैं।

हमारे देश का एक गांव

भारत सरकार का श्रम मंत्रालय अब, छुटपुट तौर पर नमूने के लिए चुने गये १८३ गांवों में, खेती के मजूरों की दशा की जांच करा रहा है, जो अखिल भारतीय स्तर पर की जा रही है। इस जांच से पहले, अर्थ व अंक विशेषज्ञ-समिति की सिफारिश पर, विभिन्न राज्यों में से चुने गये २७ गांवों में आरम्भिक जांच पड़ताल भी करायी गयी, जो जून से नवम्बर, १९५१ तक हुई थी। श्रम मंत्रालय इस आरम्भिक जांच पड़ताल के सम्बन्ध में विशेष पुस्तिकाओं की एक माला निकाल रहा है, जिसकी द्वितीय पुस्तिका (बिहार के खोरवा गांव के सम्बन्ध में) हाल में ही प्रकाशित की गई है।

इसके पहले भाग में गांव के संबन्ध में कुछ मूल बातें बताई गई हैं, उदाहरणार्थ, कुल जन संख्या, भूमि का उपयोग, सिंचाई की व्यवस्था, खेती के तरीके, खेतों का क्षेत्रफल, बोयी जाने वाली फसलें, खेती का काम करने वाले मजूरों की मजूरी और उनका काम का समय, निवास स्थान, सहायक उद्यम, गांव का प्रशासन, सहकारी समितियों का कार्य आदि।

दूसरे भाग में वास्तविक जांच पड़ताल के परिणाम दिये हैं, जिनका सारांश नीचे लिखे अनुसार हैः—

(१) गांव की कुल जन संख्या ४९९ थी, जिनमें वयस्क पुरुष १६८, १९८ स्त्रियां १५१ और बच्चे १७७ थे।

२. कुल परिवार ८९ थे, जिनमें ८२ खेतिहर परिवार थे, और ७ बिना खेती वाले। हर परिवार में औसतन ५.३ व्यक्ति थे, जिनमें १.५ कमाने वाले थे, .५ सहायक थे और ३.६ आश्रित व्यक्ति थे।

३. गांव के खेत छोटे थे, ४४ प्रतिशत २ एकड़ से भी कम और २५ प्रतिशत २ और ५ एकड़ों के बीच के।

४. दैनिक मजूरी की दर, दिहाड़ी के हिसाब से १ रु० साढ़े ११ आना रोजाना और नियमित रूप से लगे हुए मजूरों की १ रु० ३ पाई रोजाना थी।

५. खेती के मजूरों के परिवार की सालाना आमदनी औसतन ४४४.४ रु० थी और औसतन मजूर साल में १२७.७ दिन काम से लगा रहता था।

६. मजूर की खुराक मात्रा और किस्म दोनों ही दृष्टियों से बुरी थी और मौसम मौसम में बदलती रहती थी।

७. नियमित रूप से लगे मजूरों में नाज व दालों की वार्षिक खपत प्रति परिवार २७.९ मन थी, जिस में २७ मन चावल था ४.२ मन सूत थे और शेष में अन्य चीजें थीं।

८. खेतिहर मजूरों के १९ में से १३ परिवार ऋणी थे, और औसतन हर परिवार पर २५० रु० का ऋण था।

गांव में एक 'लोअर प्राइमरी स्कूल' है और अस्पताल १० मील की दूरी पर है। सड़कें कच्ची हैं और वर्षा में खेतों में पानी भरे रहने से गमनागमन में बाधा पड़ती है। मुख्य बाजार केन्द्र १६ मील दूर है।

(पृष्ठ ६ का शेष)

चलाये जा सकते हैं तो अपने समाचार पत्र ही क्यों न निकाले जांय ? इधर स्वाधीनता आन्दोलन की गर्मी के कारण समाचार पत्रों के प्रचार और आय में भी वृद्धि हो रही थी। फलतः व्यापारी वर्ग स्वयं समाचार-पत्रों के इस क्षेत्र में उतर पड़ा। धनी लोग पुराने पत्रों को खरीदने या अपने नये पत्र निकालने लगे, इस प्रकार तीसरा युग प्रारम्भ हुआ।

इस तीसरे युग में पत्रकार कला, और पत्रों की परिस्थिति में इतना भारी परिवर्तन आ गया कि उसे हम क्रान्ति कह सकते हैं। जो लोग लम्बी थैली लेकर मैदान में आये, उन्होंने पुराने पत्रों को दबाने के लिये पत्रकारों के वेतन बढ़ा दिये, और पत्र सम्बन्धी प्रत्येक व्यवस्था महगी कर दी। इससे यह तो लाभ हुआ कि पत्रकारों की आर्थिक आय बढ़ गई, परन्तु उसके बदले में जो वस्तु खोई गई, वह थी उनकी स्वाधीनता। पत्रकार स्वाधीन योद्धा न रह कर रोजगारी व्यक्ति बन गया। समाचार पत्रों का कलेवर बढ़ गया, परन्तु आत्मा क्षीण हो गई।

ये दोनों युग परिवर्तन मैंने अपने २२ वर्षों के पत्रकार जीवन में देखे और अनुभव किये हैं। मैं समाचार पत्र को एक युद्ध भूमि समझ कर पत्रकार बना था, कुछ तो आर्थिक स्थिति में परिवर्तन के कारण, और कुछ विदेशी राज्य हट जाने के कारण, वह अब युद्ध भूमि नहीं रहा, व्यापार की मण्डी बन गई है। इधर मैंने अपने जीवन का अधिकतर सक्रिय भाग समाचार पत्रों के सम्पादन या संचालन में व्यतीत कर दिया है। सुनते हैं, चिर काल तक निवास करके मनुष्य स्वर्ग से भी ऊब जाता है। आश्रम व्यवस्था का यही मूल कारण है। समाचार पत्रों के नये वातावरण में केवल दो प्रकार के व्यक्तियों के लिये स्थान है। या तो लम्बी थैली वाले मालिक के लिये अथवा ऐसे पत्रकार के लिये जो वकील की मनोवृत्तिसे कार्य कर सकें। भावनाओं के भूखे पत्रकार की सत्ता अब कठिन होती जाती है। पूंजीपती बनना मेरे रुधिर में नहीं और पत्र कारिता को पेशा समझना मेरे लिय सम्भव नहीं। देश स्वाधीन हो गया। किसी ध्येय के लिये युद्ध करने की नैसर्गिक प्रवृत्ति को अब खुराक नहीं मिलती। इन कारणों से मैंने यही निश्चय कर लिया है कि अब विधिपूर्वक पत्रकार बने रहना ठीक नहीं। लिखने का व्यसन है, उसे तो पूरा करता ही रहूंगा, किन्तु बंध कर नहीं, स्वतन्त्र होकर।

इसका यह अभिप्राय न समझना चाहिये कि मैं वीर अर्जुन को छोड़ रहा हूं। वह मेरी रचना है मैं छोड़ना भी चाहूं तो वह मुझ से नहीं छूटेगा। मेरी आत्मा अब भी वीर अर्जुन में वैसी ही अटकी रहेगी जैसी अब तक रही है—मैं उस पर दृष्टि रखूंगा, और उसकी हित कामना करता रहूंगा, साथ ही मैं परमात्मा से यह प्रार्थना करता रहूंगा कि वे वीर अर्जुन के सचालकों को सदा निर्भय होकर न्याय पथ पर चलने की सुमति प्रदान करें। वे 'अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्य पलायनम्' इस मूलमन्त्र को सर्वदा सामने रखकर पत्र के संस्थापक अमर शहीद श्री स्वामी जी महाराज की भावनाओं को पूर्ण करते रहें।

———

वीर अर्जुन साप्ताहिक का मूल्य

वार्षिक	१२)
अर्धवार्षिक	६॥)
एक प्रति	चार आना

चित्र लोक

अनोखी दास्तान

नवीन पिक्चर्स की 'अनोखी दास्तान' इस सप्ताह राजधानी के कई प्रमुख सिनेमाओं में प्रदर्शित की गयी है। जनप्रिय 'नज़ीर' और स्वर्णलता प्रधान भूमिका में है। नज़ीर के निर्देशन और चिश्ती के संगीत से चित्र सफल रहा। चित्र का वितरण श्याम फिल्मस डिस्ट्रीब्यूटर्स के पास है।

बेताब

अपर इंडिया पिक्चर्स लि० ने सुशील पिक्चर्स की 'बेताब' के वितरण अधिकार प्राप्त किये हैं। चित्र की प्रधान भूमिका में अशोक कुमार नसीम, कुमार और निरुपा राय हैं। निर्देशन श्री हरबंस तथा संगीत निर्देशन श्री एस डी. बातिश कर रहे हैं।

पोस्ती

रवानी आर्ट का पंजाबी चित्र 'पोस्ती' चित्रा अमृतसर में गत सप्ताह प्रदर्शित किया गया। हास्य रस व संगीत भरे इस चित्र की प्रधान भूमिका में श्याम मनोरमा, अमरनाथ, रणधीर, रजनी व मजनू ने अभिनय किया है। निर्देशन के. डी. मेहरा ने किया है। गत २२ वर्षों के रिकार्ड को तोड़ कर इस चित्र ने अपनी सफलता का परिचय दिया है। वितरण अधिकार जीत पिक्चर्स के पास हैं।

सनम

गुलशन पिक्चर्स द्वारा युनाइटेड टैक्नीशियन का 'सनम' इसी सप्ताह राजधानी के ३ प्रमुख सिनेमाओं में प्रदर्शित किया गया है। चिरकाल के बाद जनता सुरैया और देवानन्द को इस चित्र में एकत्र देख सकी। गोपे, मीना कुमारी और के. एन. सिंह का अभिनय प्रशंसनीय है। संगीत हुसनलाल भगतराम द्वारा आयोजित हैं और 'निर्देशन' नन्दलाल जसवन्त लाल द्वारा सम्पन्न है। इस चित्र के अतिरिक्त 'गुलशन पिक्चर्स' ने चार अन्य चित्रों के वितरण अधिकार प्राप्त किए हैं जिनमें एस. के. फिल्मज का 'बाज़' मंतोषी का 'सटे के डंडे' गोयल साईन कार्पोरेशन की 'अदा' और अमिय चक्रवर्ती की स्वतन्त्ररूप से प्रस्तुत एक नवीन चित्र है।

बहार

A.V.M.की Life जो अति सफल रही थी अब हिन्दुस्तानी में 'बहार' नाम से रहमान के निर्देशन में प्रस्तुत हो रही है। प्रधान भूमिका में वैजयन्ती माला व करण दिवान हैं। अन्य ओमप्रकाश वेबी तबस्सुम गोपे इत्यादि हैं। संगीत सचिन देव वर्मन द्वारा निर्देशित है।

ईस्टर्न पंजाब रेलवे

सूचना

१ जुलाई १९५१ को तथा इस तारीख से समय विभाग में निम्नांकित परिवर्तन होंगे:—

(१) चलाई गईं अतिरिक्त ट्रेनें

ट्रेन नं०	नाम	स्टेशन से	छूट	स्टेशन तक	पहुंच
एल १ अप	शटल पैसेंजर	दिल्ली	१५-१०	गाजियाबाद	१५-५०
एम १ डाउन	,,	गाजियाबाद	१६-४०	दिल्ली	१७-२०
७ ए ए	शटल पैसेंजर इन्टर, ३	अमृतसर	१३-२०	अटारी	१४-१०
८ ए ए	,, ,,	अटारी	१७-४०	अमृतसर	१५-३५

मुसाफिरों की सुविधार्थ दो तीसरे दर्जे की बोगियां ७४ डप पासंजर के साथ लुधियाना से अमृतसर तक जोड़ दी जायंगी। यह ट्रेन लुधियाना से १९-१६ पर चलेगी और अमृतसर ०-४० पर पहुंचेगी और फिल्लौर, फगवाड़ा, जलंधर कैंट जलंधर शहर और करतारपुर पर रुकेगी।

(२) बन्द करदी गईं ट्रेनें

११ अप फिरोजपुर कैंट और फिरोजपुर शहर के मध्य।
१२ डाउन फिरोजपुर शहर और फिरोजपुर कैंट के मध्य।
एल अप फिरोजपुर कैंट और फिरोजपुर शहर के मध्य।
एम डाउन फिरोजपुर शहर और फिरोजपुर कैंट के मध्य।

(३) जिन ट्रेनों की रफ्तार बढ़ा दी गई

ट्रेन नं०	स्टेशनों के मध्य
२ यू आर एन	नांगल डैम - रोपड़
३ यू आर एन	रोपड़ - नांगल डैम
४ यू आर एन	नांगल डैम - रोपड़
१ यू आर एन	रोपड़ - नांगल डैम
३ जे एम	मुकेरियां - जलंधर शहर

(४) जहां गाड़ियां रुकने लगेंगी

२० डाउन	साहिबाबाद पर
३२ अप	घरौंदा पर
५ अप	फिल्लौर पर

नोटः— १३ अप और ६ डी यू के ट्रेनें क्रमशः ३-७-५१ और ४-५-५१ से डिवीजनल सुपरिन्टेन्डेन्ट दिल्ली की स्थानीय व्यवस्थानुसार निम्नांकित स्टेशनों पर रुकने लग गई थीं और यह ट्रेनें उन स्टेशनों पर पूर्ववत रुकती रहेंगी।

(i) १३ अप दिल्ली कैन्टोनमेंट साइडिंग पर
(ii) ६ डी यू के घरौंदा और तरावड़ी पर।

(५) जहां गाड़ियां रुकनी बन्द हो जायंगी

६ यू आर	चतौली पर
३ जे पी	पांडू पिन्डारा पर
३ ए डी	कोटला गुजरां पर

(६) ट्रेनों के मिलान

कादियां से चलने वाली २ ए बी क्यू का बटाला पर पठानकोट के लिए ६ ए बी पी से।

(७) गाड़ियों का नया समय-पालन शुरू करना

(i) लुधियाना से १-७-५१ को ०-२२ पर चलने वाली ७६ डाउन ट्रेन अपने नये समय के अनुसार चलेगी और एक विलम्बित गाड़ी के रूप में चलेगी।

(ii) ६२ अप को १-७-५१ को फगवाड़ा पर ०-१ पर पहुंचेगी वहां से ०-७ पर चलेगी और आगे की ओर अपने संशोधित नियत समयों के अनुसार चलेगी।

(८) मेल एक्सप्रेस और पैसेंजर ट्रेनों के समयों में हेरफेर

ट्रेन नं०	स्टेशन से	स्टेशन तक	छूट	पहुंच
१२ अप (ई आई आर)	दिल्ली	गाजियाबाद	२१-५	२१-३८
३४ डाउन	सहारनपुर	गाजियाबाद	१-३५	५-७
३ अप	मुजफ्फरनगर	सहारनपुर	१-२४	२-४०
२७ अप। २७ डाउन	गुरुदासपुर	पठानकोट	९-२१	१०-२५
५ अप	लुधियाना	अमृतसर	६-१४	९-५
३ जे ए	जलंधर शहर	अमृतसर	६-४५	९-४५
१० डाउन	मेरठ शहर	मोदी नगर	६-७	६-३६
३ एस यू	सहारनपुर	अम्बाला कैंट	६-३५	९-१०
५ अप	अम्बाला कैंट	राजपुरा	३-३०	४-१५
२० डाउन	गाजियाबाद	दिल्ली शाहदरा	१८-५४	१९-१०
६१ अप	सहारनपुर	लुधियाना	१२-११	१७-४६
७६ डाउन	मोराया	जालन्धर	२२-३२	५-३०

अपनी देववाणी सीखिये

भगवान महावीरः

(पं० चैनसुखदास)

भगवान् महावीरः जैनानां चतुर्विंशतितमः तीर्थंङ्करः आसीत्। सहस्रद्वयाधिकपंचशतपंचाशत् (२५५०) वर्षपूर्वं चैत्रमासस्य शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ भारतवर्षस्य विहारप्रान्तस्य कुण्डलपुर नगरे तस्य जन्म अभूत्। तस्य मातुः नाम त्रिशला, पितुः नाम च सिद्धार्थः आसीत्। त्रिशला प्रियकारिणीति अपरनामधेया वैशालीनरेशस्य चेटकस्य पुत्री, सिद्धार्थः च तदानींतनगणतंत्रस्य अध्यक्षः क्षत्रियराजा आसीत्। महावीरः जन्मतः एव करुणावान् संयमी विवेकशाली च बभूव। तस्मिन् समये यज्ञार्थं, देवार्थं, भोजनार्थं च हिंसायाः अत्यधिकं प्रचारं शूद्राणां नारीणां च शोचनीयां दशां विलोक्य तस्य हृदयं व्याकुलं बभूव। अतः हिंसाया उच्छेदार्थं तेषाम् उद्धारार्थं च तेन प्रतिज्ञा कृता। ततः स त्रिंशत्तमे वर्षे दीक्षां धारयित्वा द्वादश वर्षपर्यन्तं घोरं तपः चकार। तेन द्विचत्वारिंशत्तमे वर्षे तस्य लोकालोक प्रकाशकं केवलज्ञानं प्रादुर्भवति स्म। ततः त्रिंशत् वर्षपर्यन्तं भारतवर्षस्य नानादेशेषु तेन अहिंसायाः प्रचारः कृतः। शूद्राणां नारीणां च उद्धारः विहितः। हिंसाऽसत्य चौर्यब्रह्मचर्यं परिग्रहनामकानां पंचानां पापानां आंशिकत्यागेन पूर्णतः त्यागेन च अणुव्रतस्य महाव्रतस्य च विधानं कृतम्। अहिंसकत्वात् दयावान् तस्य महिमा आसीत् यत् जन्मविरोधिनः गोमृगेन्द्रादयः अपि जीवाः स्वहिंसावृत्तिं परित्यज्य अहिंसकाः संजाताः। स द्विसप्ततितमे वर्षे विहारप्रान्तस्य पावानगरे कार्तिकमासस्य अमावस्यायां निर्वाणं प्राप्तवान्। भगवान् बुद्धः अस्य समकालिकः आसीत्। सर्वजीवसमभावः सर्वधर्म समभावः, सर्वजातिसमभावः च भगवतः महावीरस्य उपदेशानां सारः। अहिंसा (सर्वजीवसमभाव) विषये जैनशास्त्रेषु लिखितम्:—

अहिंसैव जगन्माताऽहिंसैवानन्दपद्धतिः
अहिंसैव गतिः साध्वी, श्रीरहिंसैव शाश्वती
अहिंसैव शिवं सूते, दत्ते च त्रिदिवश्रियं
अहिंसैव हितं कुर्यात् व्यसनानि निरस्यति

सर्वजातिसमभावविषये :—

मनुष्यजातिरेकैव — जातिनामोदयोद्भवा
वृत्तिभेदाहिताद् भेदात्-चातुर्विध्यमिहाश्नुते
न जातिमात्रतो धर्मो लभ्यते देहधारिभिः
सत्यशौचतपः शील ध्यानस्वाध्यायवर्जितैः
गुणैः सम्पद्यते जातिः गुणध्वंसैर्विपद्यते,
यतः ततो बुधैः कार्यः गुणेष्वेवादरः परः।

सर्वधर्मसमभा विषये च :—

भवबीजांकुर जनका रागाद्याः क्षयमुपागता;
यस्य,
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा हरो जिनो वा नमस्तस्मै।

●

गीतानाटकम्

अर्जुन—

त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम।
द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम॥

श्रीकृष्ण—

पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः।
नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च।
इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम्।
मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि॥
न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्॥

सञ्जय—

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः
तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा।
अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा॥

श्रीकृष्ण—

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो
लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः॥
तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व
जित्वा शत्रून् भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्॥

अर्जुन—

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा
भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।
तदेव मे दर्शय देव रूपं
प्रसीद देवेश जगन्निवास॥

श्रीकृष्ण—

मा ते व्यथा मा च विमूढभावो
दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ् ममेदम्।
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं
तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य॥

अर्जुन—

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन।
इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः॥

श्रीकृष्ण—

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम।
देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः
भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप

६१ अप	साम्भू	अमृतसर	२०-१५	२-४५
६२ डाउन	जुलाना	समर गोपालपुर	५-३३	६-११
६६ डाउन	दिल्ली किसनगंज	दिल्ली	१०-३५	१०-५५
६५ अप	शकूरबस्ती	सराय	११-१८	१२-३८
३ डी आर	दिल्ली	रोहतक	८-५०	११-२५
२ डी जे	रोहतक	दिल्ली	६-४८	१२-२५
४ डी आर शनिवार को	रोहतक	दिल्ली	१२-१०	१५-०
४ डी आर शनिवार छोड़कर	रोहतक	दिल्ली	१४-१५	१७-१५
६ यू आर	मिर्यांपुर	फतेहगढ़ साहिब	४-४१	४-५०
२ यू आर एन	नांगल डैम	रोपड़	१४-१५	१६-४८
३ यू आर एन	रोपड़	नांगल डैम	१७-३	१६-१५
४ यू आर एन	नांगल डैम	रोपड़	७-२०	६-२०
१ यू आर एन	रोपड़	नांगल डैम	६-४५	११-५५
१० डी यू के	बादली	दिल्ली	१७-२६	१८-१०
८ डी यू के	तरावड़ी	पानीपत	२१-२७	२३-०
६५ अप	पानीपत	अम्बाला कैंट	२०-३३	२३-०
३ जे पी	सेवाहा	जिंद जंक्शन	२०-५७	२२-०
७ एल एफ	फिरोजशाह	फिरोजपुर कैंट	२२-५५	२३-२५
६ एल जे	धुरी	जाखल	७-५५	१०-०
३ एल जे एच	धुरी	अहमदगढ़	५-२२	६-२६
२ जे आर जे	जलन्धर शहर	जेजों दोआबा	१७-४०	२२-२५
५ जे आर जे	बंगा	फगवाड़ा	[१८-२६	१६-३२
५ जे एफ	फोजीवाला	जलन्धर शहर	८-४६	६-१५
३ ए बी पी	बटाला	काथू नागल	६-४२	७-११
३ जे एम	मुकेरियां	जलन्धरशहर	५-५५	६-०
१ ए ए	अमृतसर	अटारी	५-१०	६-०
२ ए ए	अटारी	अमृतसर	६-२५	७-१५
१ ए बी क्यू	कादियां	बटाला	६-४०	१०-२०
२ ए बी क्यू	अमृतसर	कादियां	५-३३	७-२६
८ बी क्यू	बटाला	कादियां	८-४२	६-१५
६ ए बी क्यू	बटाला	कादियां	१६-४०	२०-१४
३ ए डी	डेरा बाबानानक	अमृतसर	२०-२५	२२-४८

(६) मध्यवर्ती स्टेशनों पर गाड़ियों के समय जानने के लिए सम्बन्धित स्टेशन मास्टरों से पूछताछ करनी चाहिए।

(१०) १ जुलाई, १९५१ से लागू होने वाले गाड़ियों के समय बतलाने वाला समय-विभाग सब रेलवे बुक स्टालों पर ३ आने प्रति कापी के हिसाब से खरीदा जा सकेगा। चीफ एडमिनिस्ट्रेटिव आफीसर, दिल्ली।

अमर शहीद करतारसिंह

सन् १८६६ में लुधियाना जिले के छोटे से सराबा गांव में करतारसिंह का जन्म हुआ। छोटी अवस्था में ही पिता का देहान्त हो जाने से करतारसिंह का पालन इनके दादा ने किया। गांव की प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई खतम कर लेने पर इन्हें लुधियाना के खालसा हाई स्कूल में भेज दिया।

बचपन का आपका नाम 'अफलातून' प्रसिद्ध था।

विद्यार्थी अवस्था में ही करतारसिंह दलबन्दी पैदा करने लगे थे। वे स्कूल के कुछ विद्यार्थियों का संगठन बनाने में सफल हुए और उस दल के नेता आप स्वयं बन गये। नेता में जो गुण होने चाहिये वे सभी गुण हमारे प्यारे करतारसिंह में जन्म से ही थे।

खालसा हाई स्कूल की नवमी क्लास की परीक्षा देकर आप उड़ीसा अपने चाचा के पास चले गये इनके चाचा वन विभाग में एक ऊंचे अफसर थे। आपने अपने चाचा से अमेरिका जाने के लिए कहा। चाचा ने एक बार तो बिलकुल अस्वीकार कर दिया। किंतु अनेक बार प्रार्थना करते रहने के परिणामस्वरूप आप सानफ्रांसिस्को (अमेरिका) पहुंच गये। वहां पर अमरीकन लोग भारतीयों को 'काला हिन्दू' 'काला कुली' कहते थे, जिसे सुन कर आपका दिल रोने लगता। इसलिए इन्होंने अमरीका में भारतीय मजदूरों के संगठन का आयोजन करना प्रारम्भ किया।

मई सन् १९१२ में इस संगठन में शामिल होने वाले सभी भारतीयों के साथ-साथ आपने भारत माता पर बलिदान होने की प्रतिज्ञा ली।

जिन दिनों की यह बात है, उन्हीं दिनों पञ्जाब से देश-निकाला पाये हुए श्री भगवानसिंहजी भी वहां आ पहुंचे। उन्होंने १६ वर्ष के करतारसिंह का सच्चा साथ देना प्रारम्भ कर दिया। दोनों मित्रों ने खूब काम किया। घूम फिर कर प्रचार करना आसान न रहा। इसलिए गदर पार्टी बनाई गई और 'गदर' नाम का पत्र प्रकाशित किया जाने लगा।

यूरोप में सन् १९१४ ई० का महायुद्ध छिड़ गया। आप अमरीका से चुप चाप भारत आए और रासबिहारी बोस से मिले। आप प्रतिदिन ४०-५० मील साइकिल पर दौड़ते थे और अंग्रेजों के पैर उखाड़ने के लिए अपना दल बढ़ाने में लगे रहते थे। दल बन गया। दल के लिए रुपये और शस्त्रों की आवश्यकता हुई तब आपने डकैती से रुपया प्राप्त करना प्रारम्भ किया।

करतारसिंह के कठिन प्रयत्न करने से कुछ सेनाओं के सिपाहियों ने भी साथ देना स्वीकार कर लिया किन्तु कृपालसिंह फौजी के विश्वासघात से सफलता नहीं मिली और भंडा फूट गया। दल के अनेक साथी पकड़े गये। तब आपने पैदल चलकर काबुल के मार्ग से विदेश जाने की सोची और काबुल पहुँच गये। किन्तु अपने साथियों को जेलों में फंसा देखकर आप काबुल से वापस लौट आये और गिरफ्तार होगये।

जेल में भी करतारसिंह अपने साथियों को साथ लेकर भाग निकलने का उपाय करने लगे। किन्तु वहां भी एक कैदी ने धोखा दिया। सारा भेद खोल दिया। आप पकड़े जाकर जेल भेज दिये गये।

आप पर अभियोग चलाया गया। आपने सब स्वीकार करते हुए न्यायाधीश से कहा— "आप मेरे अपराध के लिए फांसी का ही दण्ड दें। जिससे मैं शीघ्र ही जन्म लेकर फिर स्वतन्त्रता के युद्ध में भाग ले सकूं और जब तक भारत स्वतन्त्र न हो, इसी प्रकार जन्म लेकर फांसियों पर चढ़ता रहूं। यही मेरी कामना है।"

फांसी होने तक आपका वजन दस पौंड बढ़ गया था। इससे पता लगता है कि फांसी की सजा पाकर भी आप कितने खुश हो रहे थे। अन्त में नवम्बर सन् १९१६ में भारत के इस सपूत को फांसी हो गई।

—●—

फुलझड़ियां

[श्री नन्दकिशोर सिंह]

"कोई भी मनुष्य जब तक किसी वस्तु के लिए मेहनत नहीं करेगा तब तक वह वस्तु उसे प्राप्त नहीं हो सकती।"

●

क्या तुम सच्चे हृदय से उद्योगी हो? तो इस मेहनत को व्यर्थ मत जाने दो, जिस बात को तुम कर सकते हो अथवा जिस बात का तुम स्वप्न देख सकते हो, उसे शुरू कर दो।"

●

'मैं रास्ता ढूंढ लूंगा या अपना रास्ता स्वयं बना लूंगा।"

●

"अपराध करना बुरा है, उसको स्वीकार करना नहीं, स्वीकार करना तो अपराध को धोना है :—

●

खोया हुआ धन परिश्रम से, खोई हुई विद्या अध्ययन से और खोया हुआ स्वास्थ्य संयम अथवा औषधि से प्राप्त हो सकता है, परन्तु खोया हुआ समय सदा के लिए चला जाता है।

●

"प्रत्येक आपत्ति शाप के समान नहीं होती, जीवन की प्राथमिक आपत्तियां बहुधा आशीर्वाद होती हैं, बीती हुई कठिनाई न केवल हमें शिक्षा ही देती है, बल्कि वे प्रयत्नों में हमें साहसी बनाती है।"

●

बचपन

कौशिलाल सोढ़ा

सुन्दर सुखमय सुस्थिर जीवन,
नील व्योम सा स्वच्छ सुमन!
सरस सुघर यह सुन्दर तन,
मधुकर सा करता गुंजन!
जीवन का यह पागलपन!
बाल रवि सा मेरा बचपन!!

है मराल सा शुभ्र हृदय,
नीरव मुकुल युगल नयन!
सुख की प्रतिमा साकार,
कैसा सुन्दर यह नव जीवन!
यह मधु का मतवालापन!
बाल रवि सा मेरा बचपन!!

स्नेह का है अनुपम आगार,
जीवन बचपन का है महान!
विकसित मुख पर मधु मुस्कान,
शैशव प्रभात का मधुर गान!
यही सच्चा है मानवपन!
बाल रवि सा मेरा बचपन!!

चंदा सा लावण्य मनोहर,
रोदन भी है हास समान!
जीवन का यह नव मधुमास,
नव जीवन का नवल विहान!
सौम्य मूर्ति पर भोलापन!
बाल रवि सा मेरा बचपन!!

जरा हंसिये

एक नगर में भूकम्प आया और नगरवासी बहुत भयभीत हो गये। एक दम्पती ने अपने एक छोटे बच्चे को किसी अन्य जिले में उसके चाचा के पास भेज दिया और भतीजे के अकस्मात् भेजने का कारण भी लिख दिया।

एक दो दिन के बाद माता-पिता के पास यह तार पहुंचा।

क्या वापिस भेज रहे हैं, भूकम्प भेज दीजिये।"

× × ×

एक प्रसिद्ध अभिनेता किसी छोटे नगर में दुबारा आया।

थियेटर का मैनेजर—"हमारा मान्य अतिथि कैसा आश्चर्यकारक है, क्यों है न—कैसा सुन्दर अभिनय, कैसी अभिव्यक्ति, कलाकौशल और कैसे हाव भाव!"

एक व्यक्ति—"हां, और कैसी आश्चर्यजनक स्मरण शक्ति। उसने ठीक वही भूलें इस बार भी की हैं, जो उसने पांच साल पहले की थीं।

× × ×

एक व्यक्ति का पांव केले के छिलके पर फिसल गया। वह अपने को किसी प्रकार सम्हाल ही पाया था कि पुनः फिसल गया और चारों खाने चित्त गिरा। कुछ पलों के बाद जब उसे होश आया तो उसने देखा उसके चारों ओर काफी भीड़ इकट्ठी हो गई है।

"ये निठल्ले क्या लेने के लिए यहां खड़े हैं?" उसने गुस्से में अपने मित्र से पूछा।

"ये लोग निठल्ले नहीं हैं, एक तो डाक्टर है, जो आपकी देखभाल करना चाहते हैं, दूसरे वकील हैं, जो आपका मामला अदालत में पेश करना चाहते हैं, तीसरे व्यक्ति हास्यरस के फिल्म निर्माता हैं, जो आपकी तस्वीर लेना चाहते हैं।" मित्र ने उत्तर दिया।

× × ×

एक वृद्ध सज्जन एक होटल में ठहरने की मंशा से गये और होटल में ठहरने वालों का रजिस्टर लेकर पढ़ने लगे। इस कार्य में उन्हें काफी समय लगा। इस पर क्लर्क ने कहा—"महाशय हस्ताक्षर तो कर दीजिये!"

बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया—"तुम मुझे सिखाते हो? इतना तो मैं जानता ही हूं कि बिना पूर्ण रूप से पढ़े किसी कागज पर हस्ताक्षर नहीं करना चाहिये"

× × ×

"आपके कपड़े सदैव बड़े अच्छे कैसे रहते हैं?" एक मित्र ने दूसरे से प्रश्न किया।

"क्या आपकी पत्नी आपके कपड़ों की सम्हाल करती है?" दूसरे मित्र ने पूछा।

"नहीं, वह केवल जेबों को ही सम्हालना जानती है।"

आम की गुठलियों के उपयोग

श्री कि० ध० मशरूवाला

आम की गुठली की गरी का आहार तथा दूसरे कामों के लिए क्या उपयोग हो सकता है और कैसे, ऐसी पूछताछ कुछ लोगों ने की है। श्रीमती लीलावती मुंशी ने मेरे पास इस विषय पर 'भारतीय खेती संशोधन संस्था', नयी दिल्ली के रसायन विभाग द्वारा तैयार की गई एक रिपोर्ट भेजी है, जिस में इस विषय की लगभग पूरी जानकारी दी है। इस सिलसिले में मैसूर की 'टेक्नालाजिकल रिसर्च इन्स्टिट्यूट' और भी खोज कर रही है। मुझे खेद है कि स्थान के अभाव में श्रीमती मुंशी का नोट अक्षरी प्रकाशित करना सम्भव नहीं है, और प्रकाशन में देर होने से इस मौसम के लिए उसका कोई उपयोग नहीं रह जायगा। मैं आशा करता हूं कि श्रीमती मुंशी उसे जनता के सामने रखने के लिए दूसरे उपाय काम में लायेंगी। तब तक साधारण पाठकों के काम के लिए यह सारांश काफी होगा—

१ आम की गुठली की गरी का उपयोग खाने में हो सकता है, लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि लोग दूसरे धान्य छोड़ कर सिर्फ उसकी गरी खा कर ही रह सकते हैं। वह धान्य की जगह नहीं ले सकता। लेकिन धान्यों की कमी होने पर इस गरी से उसको कुछ भरपाई हो सकती है।

२. गरी को खाने लायक बनाने का आसान तरीका यह है कि उसे कूट कर उसका चूरा बना लिया जाय और फिर उसे या तो चावल के साथ पकाया जाय या पीस कर दूसरे आटे में मिला कर रोटी या चपातियां बना ली जाय। कच्ची गरी का स्वाद कुछ कसैला होता है और स्वाद का सूक्ष्म ख्याल रखने वालों तथा नाजुक पेट वालों को वह कदाचित अनुकूल नहीं आवेगी। लेकिन यदि उसका चूरा बना लिया जाय और पानी से २ ३ बार धो कर थोड़ा उबालने के बाद पानी का कुछ हिस्सा निकाल दिया जाय, तो स्वाद का कसैलापन तथा उसके टैनिन की अम्लता दूर हो जायगी और फिर उसे खाने में कोई कठिनाई नहीं रहेगी।

एक दूसरा और ज्यादा सम्पूर्ण तरीका यह है कि "गरी को रात भर पानी में भिगो कर रखा जाय और फिर पीस कर उसकी 'पीठी' बना ली जाय। इस पीठी को पानी में तब तक धोया जाय, जब तक कि उसका कसैलापन पूरा चला न जाय। धोने के बाद जो चीज बच रहती है, उसे सुखा कर आटे की तरह काम में लाया जा सकता है।"—(श्रीमती मुंशी के नोट प)। इस तरह वह सफेद मैदे जैसी चीज बन जाती है और किसी भी दूसरे मैदे की तरह काम में आ सकती है।

३ आम की गरी में दूसरे धान्यों के बनिस्बत स्नेह, चूना, फास्फेट तथा दूसरे खनिज ज्यादा मात्रा में होते हैं, इसके सिवा शरीर को गरमी—काम करने की शक्ति पहुंचाने का गुण भी उसमें ज्यादा होता है। धोने में उसके ये गुण कुछ तो कम हो जायेंगे। लेकिन उसे किसी हालत में खाया जाय, तो हमारे साधारण भोजन में जो कमियां रह जाती हैं, वे पूरी हो जायंगी। लोग तो ऐसा भी विश्वास करते हैं कि गरी से आम के रस के हजम से पैदा होने वाले दोष दूर हो जाते हैं।

मैं इस नतीजे पर आया हूं कि उस का उपयोग दूसरे धान्यों के साथ उनकी कमी पूरी करने के लिए निर्भय हो कर किया जा सकता है। अकेली गरी का उपयोग धान्य की तरह करना सम्भव भी नहीं है क्योंकि वह इतनी मात्रा में नहीं होती — मौसम में गुठलियों के बड़े बड़े ढेर दीखने वाले ढेरों के बावजूद — कि धान्य की तरह उसे ज्यादा दिन तक काम में लाया जा सके।

४ जानवरों के आहार के लिए भी उसका उपयोग हो सकता है। जानवर उसे स्वाद से खाने लगें, इसमें दो तीन हफ्ते लग जाते हैं। लेकिन जानवरों के स्वास्थ्य पर उसका परिणाम बहुत अच्छा आता है। "तीन माह के निरीक्षण में देखा गया कि जानवरों का वजन औसतन ३१ पौंड बढ़ा और वे अधिक स्वस्थ और सुन्दर भी दीखने लगे।"

(श्रीमती मुंशी)

यदि हमारे सामान्य धान्य पर्याप्त मात्रा में मिलें, तो आम की गुठलियों की गरी का अधिक अच्छा उपयोग स्टार्च तथा दूसरी व्यावहारिक औद्योगिक चीजें बनाने में हो सकता है। जो भी हो, वह एक कीमती चीज है और उसे फेंकना उचित नहीं है। वह गांवों में और शहरों में एक मौसमी गृह-उद्योग के कच्चे माल की तरह काम में आने लायक है।

फ्रेंच राष्ट्रपति विन्सेन्ट ऑरियल का भीड़ द्वारा विराट स्वागत।

पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिए अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार देहली में छपवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक — कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

४ आना

व्यावसायिक पुनर्वास की समस्या

★ बृजबहादुर माथुर

भारत को इस समय व्यावसायिक पुनर्वास की समस्या का विकटरूप से सामना करना पड़ रहा है। अमेरिका ने अपनी इस राष्ट्रीय समस्या को किस भांति सुलझाया है, इसी पर प्रस्तुत लेख मे विचार किया गया है।

शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से असमर्थ व्यक्ति राष्ट्र के ऊपर प्राय भारस्वरूप होते हैं। ऐसी स्थिति मे वे या तो शाश्वत भिक्षावृति की ओर प्रवृत्त होते हैं अथवा नरक न जीवन व्यतीत कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर देते हैं। अमेरिका में प्रति वर्ष ऐसे व्यक्तियों की संख्या २२०००० हो जाती है जो किसी बीमारी अथवा दुर्घटनावश सामान्य नागरिकों की भ ति कार्य नहीं कर पाते।

तो फिर शारीरिक असमर्थता क्या है? यह प्रश्न सर्वमान्य परिभाषा को अस्वीकार करता है। एक व्यक्ति द्वारा की गई परिभाषा के अनुसार असमर्थ व्यक्ति वे हैं—

'जिन्हें शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, तथा सामाजिक कारणों से सामान्य व्यवसायों में नियुक्त नहीं किया जाता।'

एक अन्य व्यक्ति ने इस की परिभाषा इस तरह की है, 'शारीरिक या मानसिक विकार के कारण जिन्हें असामान्य कामो म लगाने की आवश्यकता पड़े।' औद्योगिक तथा सामाजिक अर्थ व्यवस्था को दृष्टि में रखते हुए एक तीसरी परिभाषा उचित ही प्रतीत होती है। वह इस प्रकार है—

शारीरिक असमर्थता एक प्रकार का ऐसा अन्तर है जो सर्व साधारण और कुछ लोगों के बीच पाया जाता है। वह चाहे शारीरिक शक्ति को सीमित कर दे, परन्तु उसका यह अभिप्राय नहीं कि काम करने की क्षमता भी सीमित हो जाय। इन परिभाषाओं से ही पुनर्वास 'शब्द की व्युत्पत्ति हुई। शब्द कोष में पुनर्वास का अर्थ है— उचित [illegible] पर स्थापित करना, पहले जैसी [illegible] स्थिति में पहुंचा देना या व्यक्ति में सुधार [illegible] और विशेष शिक्षा देकर आत्म-निर्भर बना देना। पुनर्वास सम्बंधी राष्ट्रीय परिषद ने अगस्त १९४३ में [illegible]र्वास 'की विशद रूप से यह परिभाषा [illegible] "असमर्थ व्यक्ति की शारीरिक [illegible] सामाजिक, व्यावसायिक तथा [illegible] उपयोगिता और क्षमता की पुनः स्थापना।

'पुनर्वास' एक लचकीला शब्द है। जिसके कई अर्थ लगाये जा सकते हैं। उस का अर्थ यह भी हो सकता है कि किसी असमर्थ व्यक्ति को काम में लगा दिया जाय और यह भी कि उसे इस योग्य बनाया जाय कि वह कुछ काम कर सके।

पुनर्वास की समस्या एक बहुत बड़ी समस्या है। इसकी अवहेलना के अथवा इसको हल करने में विलम्ब के खतरों को सरकार और समाज पूरी तरह स्वीकार करता है। फिर भी पुनर्वास की बढ़ती हुई मांग, आंकड़ों से स्पष्ट है—प्रतिवर्ष २,२०,००० असमर्थ व्यक्तियों में से केवल ६०,००० के पुनर्वास की ही व्यवस्था हो पाती है। यह ठीक ही है कि २० लाख असमर्थ व्यक्ति राष्ट्र की प्रगति एवं उन्नति के मार्ग में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

अमेरिका में व्यावसायिक पुनर्वास का सहायता कार्य बहुत ही विस्तृत है। असैनिक व्यक्तियों और अनुभवी सैनिकों दोनों की पुनर्वास की व्यवस्था, संघीय विधान द्वारा की जाती है। अनुभवी सैनिक प्रशासन, तथा संघीय सुरक्षा एजेन्सी का व्यावसायिक पुनर्वास कार्यालय ये दो संघीय एजेन्सियां ऐसी है जो पुनर्वास को चला रही हैं। इसके अतिरिक्त और बहुत संघीय एवं राज्यीय एजेन्सियां हैं जो इन एजेन्सियों को सहायता और सहयोग प्रदान करती हैं।

व्यावसायिक पुनर्वास की सर्वप्रथम आवश्यकतायें है। प्रत्येक व्यक्ति के स्तर के बारे में अध्ययन करना। पुनर्वास समस्या इसलिए अधिक जटिल बन गई है, क्यों कि पुनर्वास का काम सामूहिक रूप से नहीं किया जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति के मामले में व्यक्तिगत रूप से विचार करना पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक स्थिति' शिक्षा, अभिरुचि, व्यावसयिक अनुभव सामाजिक परिस्थितियों में कमी या दोषों का अध्ययन करना पड़ता है।

अमेरिका के समस्त राज्यों, हवाई द्वीप तथा प्योरिटोरिको ने उस पुनर्संस्थापन कानून की सभी शर्तों को स्वीकार कर लिया है जो व्यावसायिक पुनर्वास कार्यालय को सहयोग एवं सभी प्रकार की सुविधाएं और सेवाएं प्रदान करने से सम्बन्ध रखता है।

हर असमर्थ व्यक्ति को निम्न पांच प्रकार की सेवाएं मुफ्त उपलब्ध की जाती हैं। १. असमर्थता की डाक्टरी परीक्षा २. असमर्थ व्यक्ति के लिए उचित काम चुनने के लिए व्यक्तिगत सलाह एवं पथ-प्रदर्शन तथा मनोवैज्ञानिक जांच ३. पत्र व्यवहार द्वारा स्कूलों में ट्रेनिंग ४. उपयुक्त काम में व्यक्ति की शारीरिक एवं मानसिक योग्यतानुसार नियुक्ति ५. नियुक्ति के बाद देख-रेख की व्यवस्था ताकि यह पता लगता रहे कि वह व्यक्ति और उसका मालिक दोनों सन्तुष्ट हैं या नहीं। कुछ अन्य सेवाओं के लिये कोष से असमर्थ व्यक्ति को सहायता दी जाती है। इसमें चिकित्सा, ओपरेशन आदि शामिल हैं।

संघीय सुरक्षा एजेन्सी ने ऐसे केन्द्र स्थापित किये हैं, जहां हर प्रकार की सेवाएं उपलब्ध की जाती हैं। अनुमान है कि १९५० तक १८ नये और अधिक बड़े केन्द्र स्थापित हो जाएंगे।

अन्वेषण की ओर विशेष ध्यान दिया गया है तथा देहातों में इस समस्या पर विशेष रूप से विचार किया गया है। विशेषज्ञों ने उद्योगों एवं देहाती कार्यों का सफलता पूर्वक विश्लेषण किया है और एक सूची तैयार की है जिसमें ८२ ऐसे कामों का उल्लेख किया गया है जिन में अन्धे उतनी ही अच्छी तरह काम कर सकते हैं जितनी आंखों वाले साधारण व्यक्ति। व्यावसायिक पुनर्वास के कार्य में यह एक और महत्वपूर्ण विषय है।

— —

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार २७ आषाढ़ सम्वत् २००८ [अङ्क ११

विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और जब तक हमारे संविधान में इसकी गारण्टी नहीं कर दी जायगी हम तब तक चैन नहीं लेंगे।

तब और अब

कांग्रेस को देशवासियों के हृदय में स्वतन्त्रता प्राप्ति की एक उत्कट भावना जगाने का श्रेय प्राप्त है। अनेकों व्यक्तियों ने अपने प्राणों की आहुति कांग्रेस के आन्दोलनों को सफल बनाने के लिए दे दी। अन्य अनेकों ने आजीवन देश सेवा का व्रत ले लिया। किन्तु मुक्तिका अभिलाषी विश्वामित्र मेनका पर लुब्ध होकर भोगविलास में पड़ गया। आज उसी तपस्या की बातों का उल्लेख उसे कष्टदायी प्रतीत होता है।

कांग्रेस ने अंग्रेजों के विरुद्ध आन्दोलन किया। आज अंग्रेजों से सलाह लिए बिना हम आगे नहीं बढ़ पाते। कांग्रेस ने विदेशी वस्त्र का बहिष्कार किया, होलियां जलाईं, आज विदेशी वस्त्र से सारे भारत का बाजार पटा पड़ा है। कांग्रेस ने स्वदेशी वेषभूषा पर बल दिया था, आज भारत की राजधानी अधिक से अधिक विदेशी बननेमें गौरव मानती है। इसके लिए सबसे अधिक प्रोत्साहन देने वाले हमारे नेतागण हैं। कांग्रेस ने जीवन की सादगी का आग्रह किया, आज जीवन को अधिक से अधिक आडम्बरपूर्ण करने का प्रयास किया जा रहा है।

स्वार्थ, त्याग और देश-सेवा का महान् व्रत बदल कर स्वार्थ साधन और स्वसेवा में परिवर्तित हो गया है। पहिले कार्य तथा कार्यकर्त्ता को महत्व दिया जाता था, अब भाषण देना और उसमें बड़ी बड़ी बातें बनाना ही कार्य रह गया। पहिले देशसेवा की होड़ होती थी, अंग्रेजों के विरुद्ध सभी एक दूसरे से सहयोग करते थे, आज पदों की होड़ लगी हुई है, सभी एक दूसरे की टांगें पकड़ कर घसीटने के उद्योग में लगे हुए हैं।

घूस के विरुद्ध सभी नेतागण रोज भाषण दे रहे हैं, तो भी ब्रिटिशकाल से आज घूस के बढ़े हुए अनुपात का कोई ठिकाना नहीं। चोरबाजारी और भ्रष्टाचार के विरुद्ध प्रचार किया जाता है, किन्तु प्रचारकर्त्ता ही इन रोगों से पीड़ित हैं। लगभग ४ वर्ष के शासनकाल में देश की जो दशा कांग्रेसी शासन के अन्तर्गत हुई है, वह इतनी स्पष्ट रीति से कष्टदायक है कि प्रत्येक नागरिक को उसका अनुभव होता है।

साधारणतः लोग यह कहा करते हैं कि नेताओंको क्या दोष दें सारी जनता ही इसी प्रकार की है। जिस किसी भी व्यक्ति की नियुक्ति की जाती है, वह कुछ ही समय में बिगड़ जाता है। दूसरा तर्क दिया जाता है कि यदि जनता ही ठीक नहीं होगी तो नेता कहां से ठीक होंगे। कितना सुन्दर तर्क है! भला बेटा यदि ठीक नहीं होगा तो पिता कैसे ठीक हो सकता है! शिष्य यदि ठीक न हो तो गुरु कैसे ठीक हो सकता है! सेना का सैनिक यदि ठीक न हो तो सेनापति कैसे ठीक हो सकता है?

नेता होने का अर्थ ही यही है कि उस व्यक्ति में जनसाधारण से कुछ गुण-विशेष अधिक हैं, इसलिए वह सफलतापूर्वक उनका मार्गदर्शन करने में समर्थ है। भारत की जनता किसी सेना की छावनी नहीं कि नेता ने आदेश दिया और आंख मींच कर सैनिक की भांति प्रत्येक नागरिक ने उसे पूरा कर दिया। जनता के चरित्र का निर्माण और विकास का सर्वाधिक दायित्व जन-नेता पर है और यह जिम्मेदारी भारत में ही नहीं, संसार भर में ढोल बजा कर कांग्रेसी नेताओं ने लेने का यत्न किया है।

यदि पदलिप्सा तथा सत्ता के लुब्ध ने यह दायित्व संभालने की उनकी क्षमता नष्ट कर दी है, तो जितना शीघ्र वे हटा दिये जायें, उतना ही अच्छा। योग्य नेता होने के लिए योग्य जनता होना आवश्यक नहीं, नेता का तो कार्य ही जनता को योग्य बनाना है। बालक के ही समान जनता भी नेताओं के वचनों से नहीं उनके कर्म तथा व्यवहार से शिक्षा ग्रहण करती है। उसके अनुसार ही जनजीवन में प्रवृत्तियां जागृत होती हैं। देश के इस भारी चारित्रिक पतन का बहुतसा उत्तरदायित्व कांग्रेसी शासन तथा नेताओं पर है जिन्होंने प्रजातन्त्र प्रणाली के नाम पर राष्ट्र में स्वार्थ-परता का भीषण दृश्य उपस्थित किया है।

यदि यह बात नहीं है तो फिर क्यों स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात इतने शीघ्र ही ऐसी दुरवस्था हो गई? क्या अंग्रेजों के समय जनता बहुत अच्छी थी जो स्वतन्त्रता के दीवाने उत्पन्न हो सके और आज चार वर्ष ही में वही जनता इतनी गिर गई? यह चित्र को उलटी ओर से देखना है। वास्तविकता यह है कि उस समय नेताओं में त्याग, सेवा, बलिदान का भाव था, अतः वैसे ही भाव जनजीवन में जाग्रत हुए थे। आज नेता भोगमय जीवन में संलग्न हैं, फल हमारे सामने है।

ऐसी स्थिति में यदि देश का उद्धार करना हो तो यह गन्दगी समाप्त करनी होगी। इसमें किसी भी व्यक्ति विशेष या संस्था विशेष के मोह की गुंजाइश नहीं। देश का हित सर्वोपरि है। कोई भी देश से ऊंचा नहीं। यह गन्दगी कांग्रेस स्वयं नष्ट कर सकेगी इस में सन्देह है। किन्तु जनता को तो मार्ग ढूंढना ही होगा। आज स्वार्थ और चरित्रभ्रष्टता की इस सड़न में स्वस्थ नागरिक जीवन का दम घुटा जा रहा है। आगामी चुनावों में जनता उचित व्यक्तियों को अपना प्रतिनिधित्व देगी तभी यह दशा सुधर सकेगी।

★

राजस्थान की राजनीति

कुछ मास पूर्व राजस्थान में शास्त्री शासन के विरुद्ध वहां की प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी ने श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में जो आन्दोलन किया था, उसका मूल भले ही प्रजातान्त्रिक रहा हो, उसका स्वरूप विशुद्ध नहीं था। विरोध के लिये विरोध यह अधिकांश कार्यकर्त्ताओं का सिद्धान्त बन गया था। आश्चर्य यह है कि मत्स्य, जोधपुर, उदयपुर, कोटा और बीकानेर आदि राज्यों में शासन कार्य का थोड़ा बहुत अनुभव होने के बाद भी विरोधी दल के प्रमुख कार्यकर्ता यह नहीं समझे कि वे जनता के अनुत्तरदायी तत्वों को भड़का कर राजस्थान में एक ऐसी आग से खेल रहे हैं, जो भविष्य में किसी भी कानून सम्मत सरकार के लिए हानिकर होगी। राजस्थान की राजनीति से परिचित जानते हैं कि वहां कांग्रेस में एक ऐसा अनुत्तरदायी तत्व है, जो केवल गाली-गलौज व आलोचना में विश्वास करता है, न उसका रचनात्मक कार्य से सम्बन्ध और न समस्याओं के व्यावहारिक समाधान से। जो पत्र राजस्थान के विविध राज्यों के सर्वश्री व्यास, माणिक्यलाल वर्मा, शोभाराम शासकों को गाली देते थे, वहीं कुछ दिन बाद उन्हीं शब्दों में शास्त्री सरकार को गाली देने लगे। उन की भाषा वही थी, केवल लक्ष्य बदल गया था। आज जब शास्त्री सरकार नहीं है, तब पत्रों की आलोचना का लक्ष्य व्यास सरकार हो रहा है। व्यास दल ने इन अनुत्तरदायी तत्वों का अपने आंदोलन के लिए सहयोग लिया और व्यवहार को भूल कर अनभिज्ञ नारों के प्रवाह में बह गया। वेही आन्दोलन आज उन्हीं की जान पर आ रहा है। किसान कांग्रेस का विरोध करने लगे हैं। वास्तविक स्थिति देख कर जननेताओं को जिस संयम का आश्रय लेना चाहिए था, वह उन्होंने नहीं लिया और जनता को आकृष्ट करने के लिए उसने सस्ते नारे लगाने शुरू किये। आज उसका परिणाम स्पष्ट है। आज व्यास सरकार के मन्त्री कहने लगे हैं अभी तो मन्त्री बदले हैं, सरकार तो वही ही है।

महंगाई कम होगी?

जब कपड़े के भाव लगातार बढ़ रहे थे, बम्बई में एक दम १५ से २० प्रतिशत भाव वृद्धि कम हो जाने के समाचार आश्चर्यकर हैं। बम्बई के समाचारों से ज्ञात होता है कि कपड़े की मांग एक दम कम हो गई है। दिल्ली में, और हम समझते हैं कि अन्यत्र भी राशन में गेहूं के बढ़ जाने से गेहूं का ब्लैक मार्केट भी समाप्तप्राय हो गया है। ज्यों ज्यों सरकार नियन्त्रण लगाती है, वस्तु दुर्लभ होती जाती है। वस्तु की उपज अधिकाधिक बढ़ाने, निर्यात पर प्रतिबन्ध न लगाने तथा व्यापार की गतिविधि पर कड़ी देखरेख न करनेसे व्यापार स्वयं स्वतंत्र दिशामें बहने लगता है और मूल्य का संतुलन कुछ समय लेकर स्वयं हो जाता है। विदेशों से अन्न के आयात का स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि किसान या अनाज छिपाने वाला चोर भी उसे बाजार में ले आयगा। अनाज की कीमतों का असर अन्य पदार्थों पर भी पड़ेगा। यदि कोरिया की स्थिति का कोई ऐसा हल निकल आया, जिससे विश्व युद्ध दीर्घ काल के लिए टल गया तथा ईरान के प्रश्न को लेकर कोई युद्ध न छिड़ा, तो कच्चे माल की विश्व व्यापी महगाई में भी कुछ कमी आयगी और उसका प्रभाव भारत पर भी पड़ेगा।

—x—

तरंगित रंगमंच

ईरान की दृढ़ता ने अंग्रेजों के पैर हिला दिये

कोरिया में युद्धबन्दी की तैयारियां

पं० नेहरू की गलत विदेश नीति : स्याम में उपद्रव

उत्तरी कोरियन प्रधान सेनापति

श्री किमइल सेन

कोरिया

गत २५ जून को कोरिया युद्ध को प्रारम्भ हुए एक वर्ष हो गया। किन्तु यह वर्ष पूरा होने से दो दिन पूर्व ही सोवियत रूस के संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रतिनिधि श्री जेकब मलिक ने २३ जून को एक रेडियो भाषण द्वारा कहा - कोरिया में युद्ध बन्दी हो सकती है यदि दोनों पक्ष इसका प्रयत्न करें। उन्होंने युद्ध बन्दी के लिये दोनों दलों का एक सम्मेलन बुलाये जाने का सुझाव रखा। उन्होंने यह भी कहा कि सोवियत की जनता का विश्वास है कि इस सम्बन्ध में प्रथम पग जो उठाया जा सकता है वह यह है कि दोनों दलों के लोग युद्ध बन्दी के लिये वार्ता करें और ३८ वें अक्षांश से हट जाने का निश्चय कर लें किन्तु उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि यह मन्त्रि वार्ता केवल सैनिक स्थिति के सम्बन्ध में हो सकती है।

इस सुझाव से समस्त संसार में एक नई जान सी आ गई और चारों ओर इसका स्वागत हुआ। अमरीका ने तो तुरन्त ही कोरिया में अपने सेनानायक जनरल रिजवे को आदेश भेज दिये कि वह कम्यूनिस्ट सेनानायक से युद्ध संघि की वार्ता करने का प्रयत्न करें। इसी आदेश के अनुसार जनरल रिजवे ने उत्तरी कोरिया के प्रधान मंत्री तथा कम्यूनिस्ट सेनानायक मार्शल किम इल सेन को यह सुझाव भेजा कि वह ३८ वें अक्षांश के उत्तर वोनसान बन्दरगाह में डेनमार्क के एक समुद्री जहाज जटलैंडिया में आ कर उनकी सेना के एक प्रतिनिधि से युद्ध-बन्दी सम्बन्धी वार्ता करें। इसके उत्तर में किम इल सेन ने जनरल रिजवे को अपनी स्वीकृति रेडियो द्वारा दे दी कि युद्ध बन्दी सम्मेलन १० तथा १५ जुलाई के बीच किया जाय किन्तु उन्होंने ३८ वें अक्षांश के उत्तर वोनसान में सम्मेलन न करके ३८ वें अक्षांश के दक्षिण में कायसांग नगर में करने के लिए कहा। अमरीका ने उनका यह सुझाव स्वीकार कर लिया है और अब समझौता वार्ता कायसांग में होगी। यह वार्ता ८ जुलाई को प्रारम्भ होगी। इसमें दोनों पक्षों के तीन तीन प्रतिनिधि होंगे। आशा की जा रही है कि यह सम्मेलन सफल हो जायेगा और शीघ्र ही कोरिया में शांति पुनः स्थापित हो जायगी।

ईरान की तेल समस्या

ईरान की तेल समस्या दिनप्रतिदिन अधिक उलझती जा रही है। ब्रिटिश सरकार अब भी यह स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं है कि ईरान के जैसे स्वतन्त्र देश को यह अधिकार है कि वह अपने देश में स्थित समस्त तेल के कारखानों का राष्ट्रीयकरण कर ..ता है। उधर ईरान की सरकार इस पर तुली हुई है कि चाहे उसकी तेल की खानें और तेल के कारखाने बेकार ही क्यों न हो जायें वह अपने इस जन्म सिद्ध अधिकार को त्यागेंगे नहीं। ऐसी स्थिति में किसी प्रकार के समझौते की कोई सम्भावना नहीं दीखती, और ऐसा प्रतीत होता है कि शीघ्र ही अबादान के तेल के सब कारखाने बन्द हो जाएंगे और ऐंग्लो ईरानियन आयल कम्पनी के सब अंग्रेज अधिकारी तथा कर्मचारी ईरान छोड़कर इंगलैंड चले जायेंगे।

यदि ऐसा हुआ तो सम्भावना यही है कि ईरान को सोवियत रूस धन तथा

श्री ऐरिक ड्रेक

आंग्ल ईरानी तेल कम्पनी के प्रमुख

विशेषज्ञों आदि से पूर्ण रूप से सहायता करेगा और अबादान के तेल के कारखाने रूसी कर्मचारियों की देखरेख में चालू हो जायेंगे। इस झगड़े के प्रारम्भ में तो ऐसा प्रतीत होता था कि अंग्रेज इतनी सरलता से ईरान के तेल को अपने हाथों से नहीं जाने देंगे और एक अंग्रेज अधिकारी ने तो यहां तक कह डाला था कि यदि अबादान के कारखाने उनके अधिकार में न रहे तो वह उन्हें ईरान के मतलब का भी न रहने देंगे और उन्हें भस्म कर देंगे। किन्तु यह केवल बन्दर भभकी सी ही दीखती है। ईरान की राष्ट्रीयता इस प्रश्न पर जैसे उग्र रूप से जागृत हो गई है उसे देखते हुए आशा यही है कि अंग्रेज इस समय अपने को इस योग्य नहीं पाता कि वह ईरान से झगड़ा मोल ले जो आगे चलकर तीसरे महायुद्ध में परिणत हो सकता है। ईरान के प्रधान मंत्री डा० मुसद्दिक अपने स्थान पर अडिग डटे हुए हैं। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय अदालत तक को लिख दिया है कि उसे ईरान के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है चाहे उसका निर्णय ब्रिटिश सरकार के प्रार्थना पत्र पर कुछ भी क्यों न हो। इसलिए अन्त में ईरान की राष्ट्रीयता की विजय ही निश्चित प्रतीत होती है।

पाकिस्तान और काश्मीर

प० जवाहरलाल नेहरू की काश्मीर सम्बन्धी नीति ने इस देश के मान को इतनी ठेस लगाई है कि आज पाकिस्तान का यह साहस हो गया है कि वह संयुक्त राष्ट्र संघ काश्मीर कमीशन द्वारा निर्धारित युद्ध बन्दी

पाकिस्तान की गुण्डागिरी पर यू. एन. ओ. में पर्दा

श्री [illegible] खां

रेखा को तोड़ कर दूसरे तीसरे दिन भारतीय सीमा के भीतर घुस आता है और लूट मार कर जाता है। आज समस्त संसार को यह ज्ञात हो गया है कि भारत की सीमा में चाहे जो कुछ भी करो भारत सरकार में यह साहस नहीं है कि वह अपनी मान रक्षा के लिए किसी विदेशी के विरुद्ध कोई कार्यवाई कर सके। इसीलिए इस सप्ताह पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने पाकिस्तानी आक्रमणों के विरुद्ध कोई कड़ी कार्यवाई न करके केवल संयुक्त राष्ट्र संघ के पास अपनी शिकायत लिख कर भेजी है। इस पर कुछ भी नहीं होगा यह सब भली प्रकार जानते हैं और हमारी सीमा के भीतर हमले होते ही रहेंगे। यदि पण्डित नेहरू ने डा० मुसद्दिक के समान दृढ़ता से काम लिया होता तो स्थिति भिन्न होती।

स्याम के प्रधान मन्त्री श्री सम्राम विपुल

स्याम में उपद्रव

गत २९ जून को थाईलैंड (स्याम) के प्रधान मन्त्री फील्ड मार्शल विपुल संग्राम को समुद्री सेना के कुछ सैनिकों ने पिस्तौल दिखाकर गिरफ्तार कर लिया था। बाद में एक और मन्त्री के भी गिरफ्तार किए जाने का समाचार प्राप्त हुआ था। किन्तु यह उपद्रव दो तीन दिन से अधिक न चल सका और इसी बीच में स्थिति पर पूर्ण रूप से अधिकार कर लिया गया और प्रधान मन्त्री मुक्त हो गये। उपद्रवकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया है और उन पर शीघ्र ही मुकदमा चलाया जायगा। एक समाचार में कहा गया है कि स्याम (थाईलैंड) के अमेरिकनों से सम्बन्धों में इस उपद्रव के फलस्वरूप कोई भेद नहीं पड़ेगा जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि इसके पीछे कम्यूनिस्टों का हाथ था।

देश-वार्ता

पूर्व बंग का हत्याकाण्ड कम्यूनिस्टों के सिर

श्री किदवई नेहरूजी को ले बैठने की फिराक में

श्री ग्राहम

सुरक्षा परिषद् के पत्र

भारत के प्रधान मन्त्री पं० नेहरू ने सुरक्षा परिषद् के अध्यक्ष को एक पत्र लिखकर पाकिस्तान द्वारा काश्मीर तथा जम्मू में युद्धविराम रेखा के बार-बार उल्लंघन तथा भारतीय प्रदेश में लूट मार के विरुद्ध कड़ी शिकायत की है। पत्र में हाल ही में जम्मू प्रदेश में हुए सशस्त्र आक्रमणों का उल्लेख किया गया है।

पं० नेहरू ने बताया है कि गश्त करते हुए दो भारतीय सैनिकों पर आक्रमण किया गया और उन्हें मार दिया गया। उनकी लाश घसीटकर पाकिस्तानी क्षेत्र में ले जाई गई जिन्हें राष्ट्रसंघ के परीक्षक ने भारतीय सेना को वापस सौंपा। एक अन्य अवसर पर एक गश्ती दस्ते पर आक्रमण किया गया जिसमें एक भारतीय सैनिक मारा गया और तीन घायल हुए। तीसरी बार पुनः एक गश्ती दस्ते पर आक्रमण में तीन भारतीय सैनिक घायल हुए। एक को घसीटकर पाकिस्तानी क्षेत्र में ले जाया गया, जिसको राष्ट्रसंघीय निरीक्षक के हस्तक्षेप करने पर चार दिन बाद हमारी सेना को सौंपा गया।

'ये घटनायें बड़ी तेजी से ही एक के बाद एक घटित हुई हैं और इनके पीछे युद्ध उत्तेजक लोगों का उन्माद एवं प्रचार है जो पाकिस्तान में निरन्तर किया जा रहा है। इनसे यह सन्देह प्रकट होता है कि ये घटनायें एक आयोजित कार्यक्रम की अंगभूत हैं। यदि इनको न रोका गया तो इनके फलस्वरूप दोनों देशों में लड़ाई छिड़ सकती है' पत्र में लिखा है।

डा० ग्राहम नई दिल्ली में

काश्मीर विवाद पर पाकिस्तान द्वारा स्वीकृत तथा भारत द्वारा अस्वीकृत पत्र डा० ग्राहम गत सोमवार को कराची से वायुयान द्वारा नई दिल्ली आ पहुँचे। डा० ग्राहम का ठंडा स्वागत ही इस बात का प्रथम परिचय था कि भारत सरकार ने उन्हें पत्र स्वीकार नहीं किया है। केन्द्रीय सरकार का एक भी मन्त्री हवाई अड्डे पर उपस्थित न था। डा० ग्राहम राज्य के अतिथि रहेंगे इसी दृष्टि से राष्ट्रपति का एक ए डी सी वहां उपस्थित था। हवाई अड्डे पर उतरते ही डा० ग्राहम ने पत्रकारों को एक छोटा सा वक्तव्य बांटा जिसे वे कराची से ही तैयार कर अपने साथ लाये थे। तत्पश्चात वे रवाना हो गए।

मंगलवार को डा० ग्राहम ने राष्ट्रपति के साथ चाय पान किया। वे श्री गिरिजाशंकर बाजपेयी से भी मिले। तत्पश्चात उन्होंने राज्यमंत्री श्री गोपालस्वामी से भेंट की और फिर बुधवार की शाम को प्रधान मंत्री से मिले।

मुंशी जी पुनः असंख्य पुत्रों के पिता बन रहे हैं

बंगलोर अधिवेशन

बंगलोर में होने वाला कांग्रेस का आगामी विशेषाधिवेशन कांग्रेस के इतिहास में स्मरणीय होगा ऐसा प्रतीत होता है। उक्त अधिवेशन में पं० नेहरू पुनः दोनों दलों के बीच खाई पाटने का उद्योग करेंगे। साथ ही यह भी प्रयत्न करेंगे कि श्री किदवई को कांग्रेस कार्यकारिणी में ले लिया जाय।

किन्तु इधर श्री किदवई के मनमाने व्यवहार के कारण कांग्रेस में उनके प्रति रोष बढ़ रहा है। बरेली में प्रकाशित एक वक्तव्य में कांग्रेस अध्यक्ष ने इस बात की ओर संकेत भी किया है। यह भी ज्ञात हुआ है कि टंडनजी ने श्री रफी अहमद किदवई को एक पत्र लिख कर यह बात स्पष्ट करने का अनुरोध किया है कि वे दो—किसान मजदूर प्रजा दल और कांग्रेस—के प्रमुख सदस्य किस तरह बने रह सकते हैं यह भी विशेषकर उस स्थिति में जब कि किसान मजदूर प्रजा दल ने आगामी चुनाव में कांग्रेस का विरोध करने का निश्चय कर लिया है।

स्मरण रहे कि श्री किदवई किसान मजदूर प्रजा दल की कार्यकारिणी के सदस्य हैं और इनके कहने पर ही कितने ही कांग्रेसी कांग्रेस से इस्तीफा देकर नये दल में सम्मिलित हुए हैं।

ऐसी स्थिति जहां पं० नेहरू श्री किदवई को कार्यकारिणी में लाना चाहते हैं वहां दूसरा पक्ष उन्हें कांग्रेस की सदस्यता से भी वंचित करने की तैयारी कर रहा है और स्वयं किदवई साहब इस ताक में हैं कि यदि इस प्रसंग पर पं० नेहरू ही भड़क कर कांग्रेस से पृथक हो जावें तो बस मैदान मार लिया।

श्री किदवई

पश्चिमी व पूर्वी बंगाल के दंगों की जांच के लिए नेहरू लियाकत समझौते के अन्तर्गत जो आयोग नियुक्त किये गये थे उनकी रिपोर्टों पर अप्रत्याशित रूप से भारत और पाकिस्तान की सरकारों के सम्बन्धों में नया बिगाड़ पैदा हो गया है।

आयोगों की नियुक्ति १९५० के साम्प्रदायिक दंगों के कारणों और विस्तार की जांच करने के लिए की गई थी। आयोगों ने दंगाग्रस्त क्षेत्रों के दौरे किए लोगों के खुले तौर से तथा गुप्त रूप से बयान लिए और स्मृतिपत्र प्राप्त किये। दोनों आयोगों की रिपोर्टें गत मार्च में प्रकाशित होने वाली थीं

किन्तु पता चला है कि पूर्वी बंगाल के आयोग ने अपनी रिपोर्ट से भारतीय अधिकारियों को चकित कर दिया जिसमें कि उसने पूर्वी बंगाल के दंगों का मुख्य दोष साम्यवादियों के सिर मढ़ दिया। रिपोर्ट में यह सिद्ध करने की कोशिश की गई कि यदि साम्यवादियों के विरुद्ध उपयुक्त कदम उठाए गए तो इस तरह के दंगों की पुनरावृत्ति को रोका जा सकता है।

भारत सरकार की यह राय बताई जाती है कि इस रिपोर्ट से आयोगों की नियुक्ति का उद्देश्य ही निष्फल हो जायगा इसलिए फिलहाल दोनों रिपोर्टों का प्रकाशन रोक दिया गया है।

लंका निवासी एक भारतीय श्री कोदाकनपिल्लई के प्रार्थनापत्र पर निर्णय देते हुए कम्बोके जिला जज श्री शिवसुन्दरम ने नागरिकता एक्ट को अविधानिक

[शेष पृष्ठ २१ पर]

भारत के खाद्य मन्त्री श्री क० मा० मुंशी ने पूसा इन्स्टीट्यूट कृषि क्षेत्र में अपने हाथों एक पौधा लगा कर वन महोत्सव का श्रीगणेश किया

कांग्रेस में नेहरू-युग के अन्त का समय आगया

बंगलौर में टंडनजी कड़ा रुख रखेंगे?

पं० जवाहरलाल नेहरू त्यागपत्र की धमकी देंगे?

[श्री होतीलाल सक्सेना]

प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू

आज समस्त भारत की आंखें बंगलौर की ओर लगी हुई हैं, जहां आगामी १३ जौलाई को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का एक विशेष अधिवेशन होने जा रहा है। बंगलौर में जो कुछ भी होगा उसका प्रभाव सभी राजनैतिक क्षेत्रों पर पड़ेगा, चाहे वह कांग्रेस के समर्थक हों चाहे कांग्रेस-विरोधी।

यद्यपि पं० जवाहर लाल नेहरू के मतानुसार यह विशेष अधिवेशन इस विचार से किया जा रहा है कि उसमें इस बात का प्रयत्न किया जायगा कि कांग्रेस की बढ़ती हुई फूट को बचाया जाय, इस अधिवेशन में क्या होगा इसका पता तो कांग्रेस के अध्यक्ष श्री० पुरुषोत्तम दास टण्डनके उस छोटे से वक्तव्य से स्पष्ट हो जाता है जो उन्होंने गत २ जुलाई को बरेली में होने वाले बरेली क्षेत्रीय राजनैतिक सम्मेलन में दिया है और जिसमें उन्होंने कहा है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के बंगलौर के अधिवेशन में उन कांग्रेस जनोंके प्रश्न पर विचार किया जायगा जो कांग्रेस में रहते हुए भी किसान मजदूर प्रजा पार्टी की कार्य कारिणी समितिके सदस्य बन गए हैं। यह तो स्पष्ट ही है कि उन का आशय श्री० रफीअहमद किदवई से था।

आचार्य कृपलानी का त्यागपत्र

कांग्रेस के अध्यक्ष के उन शब्दों से स्पष्ट हो जाता है कि उनका विचार पं० नेहरु की समझौता वार्ता के सम्बन्ध में क्या है। इसी सम्बन्ध में यह भी स्मरण रखना आवश्यक है कि यद्यपि कांग्रेस से बहुत से प्रमुख कार्यकर्ताओंने अपने त्यागपत्र दिये हैं और श्री टण्डन जी ने अभी तक उनमें से किसी पर अपनी स्वीकृति नहीं दी है, तब भी उन्हों ने आचार्य कृपलानी, श्रीमती सुचेता कृपलानी तथा श्री० सादिकअली के त्याग पत्र तुरन्त ही स्वीकार कर लिए हैं। इससे भी यह तो स्पष्ट ही हो जाता है कि श्री० टण्डन जी किसी प्रकार का समझौता आचार्य कृपलानी से नहीं चाहते हैं।

श्री गौतम का वक्तव्य

कुछ समय पूर्व कलकत्ते में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं के सम्मुख बोलते हुए कांग्रेस के प्रधान मन्त्री श्री मोहनलाल गौतम ने भी स्पष्टतया यह कहा था कि जो लोग कांग्रेस से पृथक होना चाहते हैं वह उसमें शीघ्रातिशीघ्र अलग हो जायें, जिससे कि उनका स्थान अन्य लोग ले सकें। इससे भी यही सिद्ध होता है कि कांग्रेस का वर्तमान पदारूढ़ दल अपने विरोधी मत वालों को कांग्रेस में नहीं रहने देना चाहता।

ऐक्य वार्ता का ढोंग

ऐसी स्थिति में क्या यह ऐक्य वार्ता पूर्णतया ढोंग नहीं? आचार्य कृपलानी का तो कहना है कि इस ऐक्य वार्ता का कोई अर्थ नहीं। उन्होंने कई बार यह स्पष्ट घोषणा कर दी है कि अब वह कांग्रेस में नहीं हैं और उनके कांग्रेस में लौटने का कोई प्रश्न उठता ही नहीं। इस स्पष्ट घोषणा के बाद भी पं० नेहरू क्यों इस बात पर इतना बल देते हैं कि कांग्रेस में ऐक्य स्थापित किया जाय? इस के पीछे आज की कांग्रेस की सारी राजनीति अन्तर्हित है।

नेहरू-टण्डन विरोध

पं० जवाहरलाल नेहरू भली प्रकार जानते हैं कि कांग्रेस के अध्यक्ष के गत चुनावों में श्री टण्डन जी की विजय और आचार्य कृपलानी की पराजय वास्तव में पं० नेहरू की ही हार थी। यह तो स्पष्ट हो जाता है उस वार्ता से जो पं० नेहरू तथा अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ के मंत्री श्री रामचन्द्रन के बीच कांग्रेस अध्यक्ष के निर्वाचन से पूर्व हुई थी और जिस की रिपोर्ट अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्यों में गुप्त रूप से बांटी गई थी और बाद में अनेक पत्रों में प्रकाशित भी हो गई थी। इस वार्ता में पं० नेहरू ने श्री टंडन जी के सम्बन्ध में कहा था कि 'यदि श्री टंडन कांग्रेस के अध्यक्ष हो गये तो कांग्रेस के जो आधारभूत सिद्धान्त हैं वही नष्ट हो सकते हैं। मेरे लिये उनके साथ कार्य करना असम्भव होगा और मैं उस कांग्रेस कार्य समिति का सदस्य नहीं बनूंगा जिसके वह अध्यक्ष होंगे।' इन वाक्यों से स्पष्ट है कि श्री टंडन जी की जीत पं० नेहरू की ही हार थी, आचार्य कृपलानी की उतनी नहीं।

पाकिस्तान-पोषक इस्लाम-परस्त नीति

इतने स्पष्ट शब्दों में अपना मत श्री टंडन जी के विरुद्ध प्रकट करने के पश्चात् भी पं० नेहरू कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य बन हो गये यह सब को विदित है। उस समय सब को स्वाभाविक रूप से ही इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ था, किन्तु कारण भी स्पष्ट विदित था। यदि पं० नेहरू उस समय कांग्रेस कार्य समिति में न आ गये होते तो सम्भवतया उन्हें अब तक कांग्रेस से पृथक हो जाना पड़ा होता और आज इस देश का प्रधान मंत्री भी कोई अन्य व्यक्ति ही होता। पं० नेहरू की पाकिस्तान पोषक तथा इस्लाम-परस्त नीति का भी साथ ही अन्त हो गया होता। यही कारण था कि मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद के समझाने पर ही पं० नेहरू कांग्रेस कार्य समिति में सम्मिलित हुए थे।

किसान मजदूर प्रजा पार्टी क्यों?

अब आज स्थिति क्या है? अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की गत दिल्ली वाली बैठक में श्री टण्डनजी ने कृपलानी-किदवई के जनतन्त्री मोर्चे (डेमोक्रेटिक फ्रंट) के सम्बन्ध में बड़ा ही कड़ा व्यवहार किया और पं० नेहरू से यह मांग की कि इससे पूर्व कि कांग्रेस में ऐक्य की कोई भी बात चले यह आवश्यक है कि इस मोर्चे को विघटित कर दिया दिया जाय। पं० नेहरू तथा मौलाना आज़ाद को श्री टण्डनजी की इस मांग को पूरा कराना पड़ा, और मोर्चे के विघटन की घोषणा करानी पड़ी। इसके पश्चात् प्रश्न उठा निर्वाचन समिति में इस विघटित मोर्चे के सदस्यों के सम्मिलित किये जाने का। श्री टण्डनजी इसके लिए उद्यत हो गये कि आचार्य कृपलानी तथा श्री रफी अहमद किदवई इस समिति में आ जायें, किन्तु विघटित मोर्चे के इन नेताओं को यह स्वीकार नहीं था। वह यह अधिकार चाहते थे कि वह चाहे अपने किन्हीं दो सदस्यों को निर्वाचन समिति में रखवा सकें, क्योंकि यदि वह दोनों नेता स्वयं सम्मिलित हो जाते तो उससे वह दोनों नेता स्वार्थी होने के दोषी ठहराये जाते और उनका नेतृत्व ही नष्ट हो जाता। इसलिए अन्त में किसी प्रकार का कोई समझौता न हो सका और केन्द्रीय निर्वाचन समिति में नये पांच सदस्यों में से एक भी कृपलानी-किदवई दल का सदस्य नहीं लिया जा सका। इस प्रकार से कांग्रेस की केन्द्रीय निर्वाचन समिति में ११ सदस्यों में से

कांग्रेस अध्यक्ष श्री टंडन

केवल दो—पं० जवाहरलाल नेहरू तथा मौलाना अबुल कलाम आज़ाद—ही ऐसे हैं, जो पदारूढ़ दल के विरोधी हैं, अन्य सब उसके समर्थक। और यही निर्वाचन समिति है, जो कांग्रेस की ओर से केन्द्रीय संसद् तथा प्रादेशिक धारासभाओं के लिए उम्मेदवारों के नाम अन्तिम रूप से निश्चित करेगी। समस्त देश की लगभग ३० प्रादेशिक कांग्रेस कमेटियों में पन्जाब को छोड़ शेष सभी आज श्री टण्डनजी की समर्थक हैं। यही कारण है, जिसके फलस्वरूप आचार्य कृपलानी तथा उनके जनतन्त्री मोर्चे वाले सहयोगियों को कांग्रेस से पृथक होकर पटना में अपनी अलग किसान मजदूर प्रजा पार्टी बनाना अनिवार्य हो गया।

ऐक्य सम्भव नहीं

इस परिस्थिति में जब पं० नेहरू कांग्रेस में पुनः ऐक्य स्थापित करने की बात करते हैं तब वह हास्यास्पद प्रतीत होती है, क्योंकि ऐक्य तो उस समय तक स्थापित नहीं हो सकता जब तक कि प्रादेशिक तथा स्थानीय कांग्रेस कमेटियों में कृपलानी-किदवई दल के सदस्यों को विशेष स्थान नहीं मिल जाते और कांग्रेस के संविधान के अनुसार यह सम्भव नहीं है।

कांग्रेस की बागडोर

पं० नेहरू के कुछ समर्थकों को आशा है कि पं० नेहरू बंगलौर में श्री० टण्डन जी से यह मांग करेंगे कि वह कांग्रेस की सारी बागडोर छोड़ कर इसे पं० नेहरू को सौंप दें, और श्री टंडन जी इस मांग से इतने भयभीत हो जायेंगे कि वह कांग्रेस के अध्यक्षपद से पृथक हो जायेंगे और पं० नेहरू को स्वामापन्न अध्यक्ष बन जाने देंगे। यह उनकी निरी कल्पना मात्र है। श्री टंडन जी इतने दृढ़ प्रतिज्ञ व्यक्ति हैं कि यदि पं० नेहरू ने कांग्रेस से अथवा प्रधान

(शेष पृष्ठ १२ पर)

भारतीय जन संघ के प्रधान

श्री बलराज मल्ला

भारतीय जन-संघ क्यों?

[२]

★ श्री गुरुदत्त

लेखक

पूर्व लेख में हम ने यह स्पष्ट कर दिया है कि कांग्रेस पार्टी और इसके भीतरी दल, सब केवल देश में निवास को, नागरिकता का माप दण्ड मानते हैं। देश के साथ प्रेम का इसमें कोई भाग नहीं मानते।

देश तो भूमि, नदी नालों, पहाड़ों जंगलों इत्यादि के समूह को माना जाता है। इसके साथ प्रेम तो एक बहुत ही निकृष्ट वस्तु है। जैसे किसी मनुष्य को मकान की दीवारों और छत्तों के साथ अथवा उसमें बिछे कालीन और दरियों साथ मोह हो जावे परन्तु उस घर में रहने वाले लोगों से द्वेष हो तो उस पुरुष का मोह एक घृणित बात मानी जाती है। इसी प्रकार केवल गंगा जमुना से अथवा हिमालय विन्ध्य से, व गोदावरी कृष्णा से मोह हो जावे तो वह कुछ अर्थ नहीं रखता। इनके साथ इन देशों में रहने वाले लोगों तथा इन स्थानों से सम्बन्धित ऐतिहासिक घटनाओं और किंवदंतियों के महत्व और महिमा का मानना भी आवश्यक है। देश प्रेम का अर्थ देश में रहने वाले लोगों से प्रेम होता है।

लोगों से प्रेम के भी एक अर्थ हैं। लोग मनुष्य हैं पशु नहीं। मनुष्य और पशु में कुछ बातें सांझी हैं। पेट भरना, ऋतु परिवर्तन में शरीर रक्षा और विषय वासना। इन बातों को पशुओं के लिए सम्पन्न करना पशुओं का हित कहा जा सकता है। परन्तु जब हम मनुष्यों का उल्लेख करते हैं तो केवल इनको प्राप्त करना अथवा कराना पर्याप्त नहीं है। मनुष्य पशु से कुछ अधिक हैं। उसकी आवश्यकताएं केवल अन्न वस्त्र मकान और वासना तृप्ति पर समाप्त नहीं हो जाती। उसमें मन बुद्धि और आत्मा के होने से उसकी आवश्यकता पशुओं से कहीं अधिक होती है। मनुष्य के विचार उद्गार और भावनाएं होती हैं। उसमें स्मरण शक्ति होने के कारण पुरातन बातों से मोह और प्रेम होता है। इसमें विचार शीलता होने से भविष्य के विषय में योजना बनाने की इच्छा होती है। अभिप्राय यह कि जिस देश में मनुष्य रहते हैं उस देश के रहने वालों से प्रेम के अर्थ उनके लिए भोजन वस्त्र मकान के प्रबन्ध के अतिरिक्त उनके आचार, विचार और भावनाओं का आदर करना भी है।

कांग्रेस सरकार ने अपने को 'सैकूलर' बना कर भारत में रहने वाले मनुष्यों की केवल उन आवश्यकताओं की पूर्ति का वचन दिया है जो मनुष्यों के साथ पशुओं की होती है। मनुष्य अपने आचार विचार और भावनाओं के विषय में भी संरक्षण चाहते हैं। भारतीय जन संघ ने देश के रहने वाले लोगों के आचार विचार और भावनाओं का देश की संस्कृति मान इसकी रक्षा, इसमें स्वाभाविक विकास और इसके परिमार्जन की आवश्यकता को अपना ध्येय माना है। कांग्रेस पार्टी और इसके भीतरी दल इनको आवश्यक नहीं समझते और न ही इस के लिए उन का कोई यत्न है। देश के भौतिक विकास के साथ मानसिक और आत्मिक विकास की आवश्यकता अनुभव कर ही भारतीय जनसंघ की स्थापना की गई!

जहां तक देश का भौतिक उन्नति का प्रश्न है उसमें भी वर्तमान सरकार तद्‌वत् कांग्रेस दल सर्वथा असफल रहा है। भौतिक उन्नति के लिए देश में पर्याप्त धन होना चाहिए। जब भारत का राज्य कांग्रेसी दल के हाथ में दिया गया तब लग भग तीन अरब रुपया नकद बैंक में था और अपने भाग का छः अरब रुपया इंगलैंड से पाना था। तीन वर्ष में इस रकम में से बहुत ही कम रह गई है। शेष सब खतम हो चुकी है। यह कैसे हुआ है? इस की व्याख्या इस स्थान पर नहीं लिखी जा सकती। यह एक लम्बी कहानी है। हां इतना तो कहा जा सकता है कि कांग्रेसी सरकार ने देश का धन बहुत बेदर्दी से व्यय किया है। व्यर्थ में दूतावास खोल रखे हैं। बृटिश राज्य काल से भी अधिक विदेशी माल मंगवाया गया है। साथ ही रुपये की दर कम कर देने से हमारे देश के माल का मूल्य भी कम हो गया है। कांग्रेस जिस बल से स्वदेशी और खद्दर का प्रचार करती थी उस के सर्वथा उलटा आज राज्य प्राप्त करने पर विदेशी वस्तुओं और लोगों की मांग होने लगी है। परिणाम यह हुआ है कि तीन वर्ष में देश इतना निर्धन हो गया है कि अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए इसको इन्टरनैशनल बैंक से और अमेरिका से उधार लेना पड़ रहा है। जो लोग यह कहते हैं कि भारत सरकार का कार्य देश की भौतिक उन्नति करना मात्र है। उनसे हम पूछते हैं कि देश के कोष की जो अवस्था कांग्रेसी सरकार ने कर रखी है उससे क्या वह भौतिक उन्नति में सहायक हो सकती है। हमारा कहना है कि जब तक देश में रहने वालों के चरित्र उन्नत नहीं होते तब तक भौतिक उन्नति का हो सकना असम्भव है। आज देश की ऐसी अवस्था हो गई है कि ईमानदारी ढूंढने पर भी नहीं मिलती। खुले बाजार रिश्वत, चोर बाजारी और सब प्रकार के दुर्व्यवहार होते दिखाई दे रहे हैं। चरित्र निर्माण के लिए धार्मिक शिक्षा और वातावरण बनाने की आवश्यकता है। यह 'सैकुलर' विचारों के लोग नहीं बना सकते।

यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि धर्म किसी सम्प्रदाय का नाम नहीं है। धर्म मनुष्य के उन कर्त्तव्यों को कहते हैं जो समाज की भलाई के विचार से किए जाते हैं। धर्म का आधार संस्कार होते हैं और संस्कार संस्कृति की देन है। यही कारण है कि भारतीय जन संघ की स्थापना करने वालों ने सांस्कृतिक आधार प्रथम अंग माना है। संस्कृति और परम्परागत भारतीय चरित्र निर्माण में मुख्य बातें हैं। चरित्र ठीक होने से भौतिक उन्नति स्वभाविक और अनिवार्य है।

यह हमारा दावा है कि जिन लोगों के मन में न तो भारत के प्राचीन गौरव का लेश मात्र मान है न ही वह किसी धर्म कर्म के अनुयायी हैं जिनके मन में न परमात्मा का भय है, न ही राज्य हाथ से जाने में देश के किसी अन्य व्यक्ति का भय है वे लोग देश को उन्नति के मार्ग पर ले जाने में सर्वथा अयोग्य हैं वे कुछ काल तक पुलिस और फौज के भय से लोगों को भयभीत रख कर राज्य चला लें। परन्तु देश वासियों का कोई भला ऐसे लोगों से होना असम्भव है।

कांग्रेस, सोशलिस्ट, कम्यूनिस्ट और वर्तमान कृषक लोक दल सबके सब एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं। सब देश की परम्पराओं से पृथक हो कर, धर्म कर्म को तिलांजलि देकर और ठठ नास्तिकवाद के समर्थक होकर राजनीतिक क्षेत्रों में आ रहे हैं। उनके द्वारा देश की सामूहिक भलाई कभी नहीं हो सकता। इनके अपने नेताओं के अथवा अधिक से अधिक अपने वर्ग के स्वार्थ के हेतु ही होगा।

वर्षा

★ श्री रामनिवास जाजू

तेरी प्रथम बूंद ने वर्षा, कण-कण को विश्राम दिया है।

तप्त तवे सी इस धरती के,
मुरझाये जब सर सरितायें।
मौन मधुप मूर्छित वनमाला,
शत प्रतिशत बढ़ती विपदायें।
टूट पड़ा तेरा मधु प्याला,
विह्वल को विश्वास बंधाने।
बिखर गईं तेरी मधु किरणें,
अमा रात्रि में चांद दिखाने।

कूक उठी मदभरी पिकी भी, 'पा जग ने घनश्याम लिया है'।
तेरी प्रथम बूंद ने वर्षा, कण-कण को विश्राम दिया है॥

× × ×

रंग प्यारे खग, हरित वर्ण पर,
स्वयं हरे हो जाते हैं।
उद्यानों में खिले कुसुम,
इस प्रेमी को शरमाते हैं।
कहीं चौकड़ी भर मृग टोली,
हंसों की मचली डग-डग पर।
छटा नियति की छिटकाते हैं,
गांव गली हर डग मग पग पर।

अम्बर से बरसे अमृत ने, कैसा यह शुभ काम किया है?
तेरी प्रथम बूंद ने वर्षा, कण-कण को विश्राम दिया है॥

× × ×

तानसेन के सौम्य स्वरों में,
कहीं कृषक बालायें गाकर।
अपने ढोरों को सन्देशा,
दे देती हैं राग सुनाकर।
मेंड़ बनाते कहीं खेत में,
कृषक प्रकृति की महिमा गायें।
स्वर्ण बूंद गिरती नभ से जब,
मथुरा काशी वहीं मनायें।

वन में तज निज नगर गली को, जंगल में ही ग्राम किया है।
तेरी प्रथम बूंद ने वर्षा, कण कण को विश्राम दिया है॥

+ × ×

प्रात-किरण पर्वत के ऊपर,
अतुलित स्वर्ण लुटाती जाती।
इधर क्षितिज की क्षणिक लालिमा,
इन्द्र धनुष को भी शरमाती।
कहीं सुनाई देता कलकल—
स्वर नदियों नालों के मग में।
स्वाभाविक ही स्नेह टपकता,
जन्य जनों की मृदु रग रग में।

यहीं स्वर्ग है, यहीं मनुज रे, बना इन्द्र ने धाम लिया है।
तेरी प्रथम बूंद ने वर्षा, कण कण को विश्राम दिया है॥

★

गीत

श्री शिवकुमार

तूफानों में नाव छोड़ दे!
कब तक खड़ा रहेगा तट पर
माझी! यह अवसाद छोड़ दे!
यह सागर की छाती इस पर,
हैं तूफान उठा ही करते,
हर क्षण लहरों के अधरों पर
भैरव गान उठा ही करते!
माझी फिर भी आने वाले
तट पर कब रहते हैं डर कर?
विजय पराजय की क्या चिन्ता?
आज लगा कर दांव छोड़ दे!
यहीं जवानी झुकती साथी,
तूफानों झंझावातों में;
मैं उसको यौवन न मानता
झुक जाता जो आघातों में!
अरे! जवानी तूफानों पर,
प्रलय उठाती गाती चलती।
जो विचलित करता है तुझको
माझी का यह भाव छोड़ दे!
बैठा यहीं बिता देगा क्या
ये अभिसार प्रहर मदमाते;
लहरों के उठने गिरने में
बनने मिटने में भरमाते।
निज अस्तित्व मिटा देने का
नाम मिलन है खूब समझ ले।
मधुर मिलन के लिये मोह का
मादक मदिर प्रभाव छोड़ दे।

★

गीत

[श्री शलभ]

पूजा की यह मधुमय बेला,
लो, मैंने भी दीप जलाया।

नाच उठा हो मुखरित कण-कण,
नाच उठा मेरा मयूर-मन
पर न कहीं घन और न सावन,
"कंकण किंकणी नूपुर ध्वनि सुन"—
फूंक उठी गोधूली नभ, मेरे मनसा को विहग सुलाया।
लो, मैंने भी दीप जलाया।

मन्दिर में जो—लगे गूंजने,
चहके—कलरव; और पूजने—
चले जा रहे दीप—संजोये,
उनको मारग लगे सूझने।
दूर—खड़ा अपनी झोली में कुछ ठोस सुधि-फूल चढ़ाया!
लो, मैंने भी दीप जलाया।

जीवन की साकार कल्पना,
आई रेखा-चित्र उर बना।
मन की प्याली, भाव-तूलि से
सतरंगों का लेकर सपना।
हल्की-हल्की इन रेखा में अपने मन का रंग सजाया!
लो, मैंने भी दीप जलाया!

"अमा अंधेरी आज सुहानी"—
जल-जल कहती दीपक-बाती!
सुन्दर सपनों की यह मधु-छवि,
मुस्काती, हंसती औ' गाती।
स्निग्ध,मधुर,पावन प्रकाश को रिक्त हृदय मेरा भर पाया!
लो, मैंने भी दीप जलाया!

★

कश्मीर के भारतीय प्रदेश में ★ ★ ★

'जिहाद' का प्रचार : विराम रेखा पर आक्रमणों की योजना :

यदि ग्राहम असफल हुआ तो : विदेशों को अनुकूल करने के हथकण्डे

डा० ग्राहम के आगमन से पूर्व पृष्ठभूमि के रूप में पाकिस्तान में तथा पाकिस्तान अधिकृत काश्मीर प्रदेश में काश्मीर को पाकिस्तान में मिलाने का आन्दोलन जोर से आरम्भ हो गया है। जिहाद की धमकियां और युद्ध द्वारा विजय के नारे लगाये जा रहे हैं। हाल ही में तथाकथित 'आजाद काश्मीर' सरकार के भूतपूर्व अध्यक्ष सरदार मुहम्मद इब्राहीम खां ने पुंछ में तारखेल नामक एक स्थान पर भाषण देते हुए एक सार्वजनिक सभा में कहा कि यदि भारत का रवैया यही रहा तो 'आजाद काश्मीर' की जनता को पुनः जिहाद करना पड़ेगा। सीमाप्रान्त के मुख्य मन्त्री श्री अब्दुल कय्यूम खां ने एक अन्य स्थान पर भाषण देते हुए कहा कि हम जम्मू व काश्मीर की जनता को चुनाव की स्वतन्त्रता का अधिकार प्राप्त कराने के लिए किसी भी सीमा तक—शस्त्रों का अवलम्बन करने के लिए भी तैयार हैं। इसके अतिरिक्त भी अन्य प्रमुख व्यक्तियों ने इसी प्रकार के उद्गार व्यक्त किये हैं।

पाकिस्तान का जिहाद का नारा कोई नया नारा नहीं है। भारत की कांग्रेस सरकार तथा कांग्रेसी नेताओं का जो अनुभव उन्हें प्राप्त हुआ है उसी के बल पर यह नारा लगाया जा रहा है। पाकिस्तान के नेता समझते हैं कि यदि जिहाद के नारे से घबरा कर कांग्रेस देश का विभाजन तथा पाकिस्तान का अस्तित्व स्वीकार कर सकती है तो फिर काश्मीर को लेना क्या बड़ी बात है। काश्मीर की भूमि पर भारतीय जवानों ने उन्हें बता दिया है कि शस्त्र बल से काश्मीर पर अधिकार करना आसान नहीं अतः कांग्रेस के नेताओं की दुर्बल मनःस्थिति का लाभ उठाने की दृष्टि से यह व्यापक आन्दोलन है। किन्तु पाकिस्तान यह भूलता है कि कांग्रेस की दुर्बल मनोवृत्ति से परिचित हो जाने के कारण आज उसका मुकाबला स्वयं सारा देश करेगा, केवल कांग्रेस नहीं।

× × ×

'आजाद काश्मीर' प्रदेश से प्राप्त होने वाले समाचारों से ज्ञात हुआ है कि जम्मू व काश्मीर प्रदेश में पूरे ७०० मील लम्बी युद्ध विराम रेखा पर नियन्त्रित रीति से आक्रमणात्मक तथा लूटमार करने वाली कार्यवाहियां करने की पाकिस्तान पूरी तैयारी कर रहा है। कुछ समय से इस प्रकार की कार्यवाहियों का जोर जम्मू प्रदेश में काफी बढ़ गया है और सशस्त्र पाकिस्तानियों ने रात्रि में भारतीय सीमा में प्रविष्ट होकर गांवों की लूटमार की है। इस प्रकार के भी चिन्ह मिले हैं जिनसे यह पता चलता है कि पाकिस्तानी सेना के नियमित सिपाही भी इनमें भाग ले रहे हैं।

ज्ञात हुआ है कि पाकिस्तानी नेता इस प्रकार एक ही तीर में कई शिकार करना चाहते हैं। एक ओर तो वे दिल्ली में कांग्रेसी नेताओं को यह दिखाना चाहते हैं कि यदि उन्होंने पाकिस्तानी शर्तों के अनुकूल समझौता नहीं किया तो काश्मीर में युद्ध की ज्वाला भड़क उठेगी। दूसरी ओर वे संयुक्तराष्ट्र संघ पर यह प्रभाव डालना चाहते हैं कि काश्मीर के प्रश्न का उचित हल न हो पाने के कारण ही 'आजाद काश्मीर' की मुस्लिम जनता में रोष बढ़ रहा है। वे यह सहन नहीं कर पा रहे कि उनके भाई भारत के गुलाम रहें। इस प्रकार के प्रबल जोश को रोक पाना बड़ा कठिन है, और इसका सीधा इलाज यही है कि काश्मीर का निपटारा कर दिया जाय।

इसके अतिरिक्त वे समझते हैं कि काश्मीर प्रदेश में होने वाले आक्रमण काश्मीरियों में इतना आतंक फैला देंगे कि काश्मीर की संविधान सभा के आगामी चुनाव अच्छी भांति न हो सकें। जम्मू के प्रदेश में वे इतना आतंक फैलाना चाहते हैं जिससे वहां के अधिकांश निवासी हम्प भयभीत होकर अपनी सुरक्षा के लिए भारत चले जायें। इस प्रकार एक ही ढेले से कई चिड़ियां मारने का विचार है।

× × ×

जम्मू की सीमा में हो रहे आक्रमणों की रोकथाम करने की दृष्टि से भारतीय सेनापति जनरल करियप्पा ने काश्मीर में राष्ट्रसंघ के प्रेक्षकों के प्रमुख मेजर जनरल निम्मो का ध्यान खींचा है। राष्ट्र संघ के प्रेक्षकों की उपस्थिति इसी उद्देश्य से है कि वे दोनों पक्षों को विराम संधि का पूर्ण पालन करने पर बाध्य करें। पाकिस्तान की ओर से हो रही ये कार्यवाहियां स्पष्टतः ही विराम संधि का भंग है। अपने हाल ही के जम्मू और काश्मीर के दौरे में जनरल करियप्पा ने मे० ज० निम्मो से भेंट की। ज० निम्मो ने घटनाओं की वृद्धि को गम्भीर स्वीकार किया है और पाकिस्तानी अधिकारियों का ध्यान इस ओर खींचने के लिए उन्होंने पाकिस्तानी सेना में आना तय कर लिया है। वे शीघ्र ही रावलपिंडी आकर इस विषय में बातचीत करेंगे।

हाल के आक्रमण कठुआ—सच पुंछ विभवाल के पश्चिम की ओर नदमुनावर की युद्ध विराम रेखा के साथ हुए हैं। मुख्य आक्रमण कठुआ मुनावर क्षेत्र में हुए हैं और वे सशस्त्र पाकिस्तानी नागरिकों द्वारा किए गये हैं। एक आक्रमण में एक भारतीय दस्ता छिपा लिया गया और दो भारतीय सैनिक मारे गए तथा तीन घायल हो गए। जनरल निम्मो का ध्यान इस बात की ओर भी खींचा गया कि हाल ही में एक पाकिस्तानी विमान ने भारतीय प्रदेश के ऊपर उड़ान की थी।

× × ×

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा नियुक्त मध्यस्थ डा० ग्राहम कराची [illegible] चार दिन बिता कर नई दिल्ली पहुंच गये हैं। डा० ग्राहम के कार्य पर टिप्पणी करते हुए पाकिस्तान के अधिकांश पत्रों ने युद्ध की अनिवार्यता की चर्चा जोरों से की है। लाहौर के अधिकांश समाचार पत्रों ने कहा कि यदि नया संयुक्त राष्ट्रीय प्रतिनिधि अपने उद्देश्य में असफल हुआ तो पाकिस्तान का भावी पाय सगत कदम काश्मीर में युद्ध होगा। "सिविल एण्ड मिलिटरी गजट," उर्दू का "जमींदार", लीगी पत्र "आफाक" "नवाये पाकिस्तान" आदि ने इसी प्रकार के विचार प्रकट किए हैं।

ऐसी स्थिति में यह स्पष्ट ही है कि पाकिस्तान में युद्ध का वातावरण जोरों से गरम है और जनता की मनोवृत्ति को उस दृष्टि से भड़काने के लिए प्रत्येक अवसर का प्रयोग किया जा रहा है। स्पष्ट ही पाकिस्तान जैसे भी बने काश्मीर को हड़पना चाहता है और इसी लिए युद्ध की भारी तैयारी कर रहा है। उसका ख्याल है कि भारत तथा पाकिस्तान में युद्ध की सम्भावना उपस्थित होने पर ऐंग्लो अमरीकन दल युद्ध नहीं चाहेगा और ऐसी स्थिति में वह भारत पर दबाव देगा कि वह पाकिस्तानी शर्तें स्वीकार कर ले। जहां तक भारत का प्रश्न है उसने किसी प्रकार दबाव के आगे काश्मीर के न्याय पक्ष को छोड़ना अस्वीकार कर दिया है।

× × ×

काश्मीर के प्रश्न पर पाकिस्तान ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्मति को अपने पक्ष में बनाने के लिए किसी भी उपाय को उठा नहीं रखा। यूनाइटेड प्रेस आफ अमेरिका द्वारा प्रसारित एक समाचार से इस तथ्य पर अच्छा प्रकाश

बेगम लियाकतअली खां

पड़ता है। उक्त समाचार के अनुसार सुरक्षा परिषद् में स्थायी अमेरिकन प्रतिनिधि श्री वारेन आस्टिन की पत्नी श्रीमती वारेन आस्टिन अपनी विवाह सम्बन्धी वर्षगांठ मनाने के अवसर पर सिर पर पहिना गया स्वर्ण मुकुट पाक प्रधान मन्त्री की पत्नी बेगम लियाकत अली खां द्वारा उन्हें भेंट किया गया था। श्री वारेन आस्टिन सुरक्षा परिषद् में काश्मीर का विवाद आने से भी पूर्व से परिषद् के सदस्य हैं। यह सभी जानते हैं कि यद्यपि भारत ने सुरक्षा परिषद् से पाकिस्तान की शिकायत की थी, एंग्लो-अमरीकन गुट ने विवाद को तोड़-मरोड़ कर उल्टा भारत के ही विरुद्ध कर दिया।

जहां एक ओर व्यावहारिक बुद्धिमत्ता का मार्ग अपनाने के बजाय भारत केवल अपने प्रश्न की सचाई और सार्वजनिक ईमानदारी पर ही भरोसा कर के बैठा रहा वहां विदेशों में स्थित सभी पाकिस्तानी राजदूत उन देशों को पाकिस्तान की ओर खींचने और भारत के विरुद्ध करने में लगे रहे। पाकिस्तानी प्रचार का उत्तर देने में भी भारत सरकार तथा भारतीय राजदूतावासों ने व्यावहारिक के स्थान पर यह ढंग अपनाया। इसके विपरीत इस्पाहानी, हारू व रहीमतुल्ला जैसे पाकिस्तानी राजदूतों ने, जो व्यक्तिगत रूप से भी पर्याप्त धनवान् हैं, स्वयं अपनी जेब से भारी मात्रा में धन व्यय कर विदेशी कूटनीतिज्ञों का स्वागत कर उन्हें अपने पक्ष में किया है। बेगम लियाकत अली बेगम इकरामुल्ला व अन्य भी प्रमुख पाकिस्तानी स्त्रियों ने इस दिशा में भारी सफलता से अपना काम पूरा किया है, यह बात विदेशों से प्राप्त होने वाले समाचारों से स्पष्ट है।

———

कहानी ★ ★ ★

मेरा मुन्नू !

शरद ऋतु के अत्यन्त सुहावने दिन, सुबह का, प्रातःकाल का हल्का सुनहला प्रकाश फटा और आकाश के मस्तक पर तिलक लगा गया।

मैं अपने छोटे बच्चे 'मुन्नू' के साथ अपनी कोठी के सामने के उपवन में टहल रहा था। सर्दी उस दिन काफी थी, छोटे छोटे पौधों की आंखें आंसुओं से भीगी थीं, रजनी की बिदाई के कारण या दिवस के स्वागत के कह नहीं सकता। ओस खूब पड़ी थी।

शहर से बाहर, नदी के किनारे, एक सुन्दर बंगले में रहता हूं। मेरा काम मक्खियां मारना या साहित्य सेवा है। वह बाहर खेलता रहता है और मैं अंदर अपने काम में व्यस्त रहता हूं।

मुन्नू की शकल गोल मटोल, रंग गोरा, शरीर सुन्दर सुडौल। उमर ६-७ बरस की होगी। उसकी जिह्वा पर जिज्ञासाओं का कोलाहल निरन्तर मचा रहता था। कई बार वह ऐसे उल्टे सीधे प्रश्न कर देता था कि जिनका समाधान मेरे से भी ठीक न बन पाता था।

चाहे मैं कितने भी गम्भीर कार्य में क्यों न लगा होऊं, उसकी मीठी मीठी बातें सुनाई देती ही रहती थीं। उस का भोला सा मुखड़ा सोते समय भी मेरी आंखों से ओझल न होता था।

उस समय मैं उसके लिए मां का कार्य कर रहा था, जिसे मरे थोड़ा अर्सा ही हुआ था। मेरे वह एक ही बच्चा था।

सामने हरी हरी घास पर नीले काले रंग के कुछ पक्षी किलोल कर रहे थे। उनको देख मुन्नू का बाल हृदय नाच उठा। सरदी से कांपते हुए ओठों से तुतला कर मुझसे कहा—'बाबू जी देखो! ये अभी से बाहर निकल आये हैं। बहुत सारे तो अभी उठे भी न होंगे। हमने अभी स्नान भी नहीं किया।'

बात ठीक थी, हम में से अधिकांश ने तो अभी तक रजाई की बन्द कोठरी का दरवाजा भी नहीं खोला था। वे अन्दर पड़े स्वर्ग सुख को भी लजाने वाली गरमी में करवटें बदल रहे थे। दुनिया वैसे भी आधी सोई ही रहती है।

मैंने कहाः— "हां! देखो मेरे बच्चे यदि तुम भी ऐसे ही खेलना चाहते हो तो सुबह सुबह ही उठ आया करो।" मैं इसी बहाने से प्रातः उठने की आदत उसमें डालना चाहता था। वैसे अब तो वह उठ भी सकता था, क्योंकि उसकी सिफारिश करने वाला कोई नहीं रहा था।

अचानक ठंडी हवा के झोंके से उसकी देह में एक कपकपी सी दौड़ गयी। उसे ख्याल हुआ शायद इन्हें भी सर्दी लगती हो। मेरा हाथ हिलाकर पूछा— "मेरे हाथ पैर तो अब भी कांप रहे हैं। क्या इन्हें भी ठंड नहीं लगती?"

मैं प्रत्युत्तर दिया ही चाहता था कि उसने उसकी परवाह न कर कथन जारी रखा— "इन्होंने तो कपड़े भी नहीं पहिन रक्खे। अच्छा बाबूजी! यह तो बताइए ये कपड़े क्यों नहीं पहिनते?"

मैंने मुंह खोला ही था कि वह फिर पूछ बैठाः- "बाबूजी इन्होंने तो बूट भी नहीं पहिने। क्या इनके नंगे पैर सूज नहीं जावेंगे?... देखो! ये नन्हें २ पंजे कितने भले प्रतीत होते । कहीं इन्हें बुखार न चढ़ जाए? आपने उस दिन कहा था न, सर्दी में नंगे नहीं घूमना चाहिए। हवा लग जाने से बीमार हो जाते हैं। मुझे तो ठंड के डर से सुबह अम्मा नहलाती भी नहीं थी।'

उसकी आंखें—हठात उठ गईं, मानो वह कहता हो, मुझे सवेरे नहाना अच्छा नहीं लगता, ऐसा न किया करो। आजकल मैं उसे प्रातः अपने साथ ही नहला देता था।.... अब मैं उसको कुछ जवाब नहीं दे सकता था।

और वह! यद्यपि उस समय अपने बचपन को सूखे मातृ प्रेम का मूर्त रूप बन उन पक्षियों पर, जिनके माता-पिता बन्धु-बान्धव सभी उस झुंड में ही विद्यमान होंगे—अपना वात्सल्य दिखाता हुआ तरस खा रहा था; तथापि यह स्पष्ट था कि उसने अपनी भोली बातों से बचपन का सुन्दर खजाना खोल दिया था। बातचीत में बार-बार मां का इशारा मेरा दिल टुकड़े-टुकड़े किये देता था। मैंने सोचा—'यदि संसार ही न बना होता, न वह होती और न यह.......।' मेरा दिल भर आया।

हरी-हरी कोमल घास, ओस से स्नात और पावन सतीत, जो सुखद स्पर्श से अपने को भूले थी, अपनी गोदी में उस नन्ही टोली को खिला रही थी, हाथ उठाये, मुख ऊपर किये मानो कहती हो—'ऐ विस्तृत आकाश! तू इन पर अनन्तकाल तक छाया रखना।'

सामने के छोटे बड़े आम के वृक्ष पर उनका एक घोंसला था। उनमें से एक पक्षी उड़ कर उस मस्त टोली में जा मिला। मुन्नू का ध्यान एक बार फिर खिंच गया। इतने में घोंसले में से चीं-चीं की आवाज आई।

उसने मेरी तरफ मुख करके कहा— 'ये भूखे होंगे, तो रोते हैं। इन्हें खाना कौन देगा? इनकी अम्मा कहां है? क्या वह भी मर गई? मैं तो जब रोता था, अम्मा गोदी में उठा चूमती, पुचकारती और लड्डू बरफी खिलाती।...... अम्मा तो बड़ी खराब है। प्यार तो बहुत करती, पर मुझे अकेला छोड़ न जाने कहां चली गई।'

मैंने अनुभव किया, वह मेरी छाती के पास होता जा रहा है।

'अबके आयगी तो बोलूंगा भी नहीं, अच्छा! वह कहां गई है? कब लौटेगी? उसे कह देना मेरी रेलगाड़ी लाना न भूले?'

अब उसको जवाब देने की आवश्यकता नहीं रही थी। क्योंकि नई समस्या सामने आ जाने से मामला बस के बाहर जाता ज्ञात होता था। उसे माता की याद आ रही थी।

उसका रिकार्ड फिर बजने लगा। ......"बीमारी में इनकी मां इन्हें क्या खिलाती होगी? इनका सिर कौन दबाती होगा? क्या इन्हें भी कड़वी दवा पीनी पड़ती है......?'

मुझे स्मरण हो आया कि एक दिन इसने कड़वी दवा न पीने की जिद की थी।

गाड़ी फिर चलने लगी.......। इन्हें गोद में कौन उठाती है? इनकी अम्मा कहां ठहरती है? क्या ये भी स्कूल जाते हैं? क्या इन्हें भी मां खिला कर भेजती है? इनमें से किसी को मार भी पड़ती होगी? (एक की तरफ इशारा करके).......वह बहुत उछल कूद मचा रहा है न—जो अधिक शरारती होते हैं, उन्हें मास्टर मारता है। मुझे भी एक दिन मास्टर ने पीटा था, उस दिन अम्मा ने लड्डू खाने को दिये थे।'....

मैं चुपचाप सब सुनता रहा। जब उसने मेरी तरफ से जरा भी प्रोत्साहन न पाया तो चुप हो गया। मैं अपने ही दार्शनिक विचारों में उतर गया था...। पाव भूख... सबका शरीर...सर्दी.. क्यों ? नगा .. और न जाने क्या-क्या.........?

मैंने हंसने के बहाने मुस्कराते हुए कहा—'चलो मुन्नू राजा अब घर लौटेंगे।'

एक क्षण के लिए उसके चेहरे पर मुस्कराहट की आभा छा गई, जो सौन्दर्य-कालीन लालिमा से कहीं अधिक अच्छी प्रतीत होती थी.......।

पर उसकी आंखों में प्रेम न समा सका। 'वह देखो! इनका घर!'

पक्षियों का वह घर—घोंसला—छोटे छोटे कठोर तिनकों का बना हुआ, सुव्यवस्थित, आराम पहुंचाने वाला, अन्दर नरम मुलायम रूई का गद्दी देने वाला बिछौना। न रसोई, न गुसलखाना, न बैठक। मैंने सोचा—न आंगन, न उपवन, न फूलों की बहार। यही दोनों भावी पक्षियों के प्यार करने का कुंज और यही प्रकृति गृह, यही......।

'इसे इन्होंने कैसे बनाया? जो हो! इसे तो परमेश्वर ने बनाया होगा। ठीक है न! वही तो सब कुछ बनाता है।'.......इनका परमेश्वर कहां रहता है? आपने उस दिन बताया था, वह सब में छिपा रहता है।'.......इनके राजा का महल कहां है? उसकी कितनी रानियां हैं? हमारे राजा दशरथ की तो तीन रानियां थी, मां ने उस दिन बताया था। इसके सिपाही कितने हैं? क्या राजा की अम्मा भी उसे प्यार करती है

मैंने तो उसकी भोली-सी सुन्दर सूरत पर निगाह फेंकी। अहो उस दो आंखों में जिज्ञासा और विषाद के भावों का द्वन्द्व था। माता की स्मृति उसके चेहरे पर विषाद का आवरण फैलाती तो कभी इन पक्षियों की जिज्ञासा अन्दर से अपना सिर निकाल झांकने लगती।'

मैंने उसे गोदी में उठा लिया और अपने साथ विचार सागर में गोता खा गया।

पक्षियों का यह स्वर्ग, जिनका एक बोल, प्यार एक, एक से महल, एक-सी ही कोठरियां, एक संगीत, एक कला... मुझे ऐसा ज्ञात हुआ, मानो कोमलाङ्ग ऋषि इनका रूप धरे प्रभु कीर्तन कर रहे हैं। एक सा ही खाते हैं और एक सा ही दिगम्बर पहिनते हैं। न धनी न गरीब। न बड़ा, न छोटा, न शासक, न शासित, न चोर, न पुलिस, किसी प्रकार का तो भेद नहीं।

मैंने मन ही मन कहा—'यदि इन का विकास न हो तो ही अच्छा है। पक्षी से मानव रूप में विकसित होने पर इनका भी एक समाज बनेगा। समाज का रूप पाते ही ईर्ष्या घृणा ऊंच नीच के भाव इन पर भी अपनी छाया डाले बिना नहीं रहेंगे।'

मैंने उसे जोर से छाती से लगाया और जोरे से चूम लिया। मेरे इस अचा-

[श्री मदनमोहन विद्यासागर]

(शेष पृष्ठ १९ पर)

मौलाना के विभाग द्वारा घोषित 'हिंदी शिक्षा समिति' क्या है?

क्या राष्ट्रपति इस ओर ध्यान देंगे?

श्री गगाधर इन्दूरकर

राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू

शिक्षा मन्त्री मौलाना आजाद

हिन्दी के नाम पर हिन्दुस्तानी का गढ़ा मुर्दा उखाड़ा जा रहा है?

भारतीय संविधान द्वारा हिन्दी राजभाषा स्वीकार की जाने के पश्चात् भी केन्द्रीय सरकार उसे कार्यान्वित करने के मार्ग की ओर उस गति से अग्रसर नहीं हो रही है जो गति संविधान के आदेशानुसार १५ वर्ष के भीतर ही भीतर उसे राजभाषा का पूरा-पूरा स्थान ग्रहण कराने के लिये आवश्यक थी, इस बात की चर्चा इधर वर्षों में तथा हिन्दी सम्बन्धी विविध सभाओं में होती रही है। अभी कुछ मास पूर्व हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में और संसद के अध्यक्ष श्री मावलंकर जी की अध्यक्षता में नई दिल्ली में राजभाषा परिषद् हुई और उसमें एक प्रस्ताव द्वारा केन्द्रीय सरकार से मांग की गयी कि संविधान द्वारा स्वीकृत स्थान हिन्दी को समय रहते ही प्राप्त हो सके इस उद्देश्य से एक "हिन्दी कमीशन" की नियुक्ति अति शीघ्र की जाय। उस प्रस्ताव में यह भी कहा गया था कि जिस गति से केन्द्रीय सरकार चल रही है उस गति से १५ क्या १५० वर्षों में भी हिन्दी को राजभाषा का स्थान प्राप्त नहीं हो सकता।

इस परिषद् के बाद ही एक शिष्टमण्डल राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसाद से मिला और उसने उनसे निवेदन किया कि राष्ट्रपति होने के नाते हिन्दी को राजभाषा का स्थान अतिशीघ्र प्राप्त करा देने का बहुत कुछ दायित्व उन पर ही है। राष्ट्रपति ने शिष्टमण्डल की बातें शान्ति से सुन लीं और अनधिकृत रूप से पता चला है कि उन्होंने विभिन्न मन्त्रालयों को इस ओर विशेष ध्यान देने के लिये लिखा भी था।

अभी गत मास में संसद के पांच सदस्यों का एक शिष्टमंडल, जिसमें श्री निजलिंगप्पा तथा श्री देवगिरीकर जैसे हिन्दीतर भाषी लोग भी थे, प्रधान मंत्री पंडित नेहरू से मिला था और उसने हिन्दी कमीशन नियुक्त करने के अतिरिक्त इस कार्य की महत्ता को देखते हुए और उसे शीघ्र संपन्न करा देने की दृष्टि से एक हिन्दी मन्त्री की नियुक्ति का सुझाव भी सामने रखा। पं० नेहरू के आग्रह पर ही इसी आशय का एक स्मरणपत्र भी प्रधान मन्त्री की सेवा में बाद में भेज दिया गया।

एक ओर हिन्दी के लिये पूर्ण स्वतंत्र आयोजन हो इस प्रकार का प्रयत्न हो रहा था और दूसरी ओर इसी समय भारत सरकार के शिक्षा-विभाग द्वारा, जो अब तक इस विषय में सोता ही रहा है, एक हिन्दी शिक्षा समिति की स्थापना का समाचार प्राप्त होता है। वैसे कोई भी हिन्दी का काम करे, प्रत्येक हिन्दी प्रेमी उसका स्वागत ही करेगा। अतः आज मुझे इस नवस्थापित हिन्दी शिक्षा समिति के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना है, क्योंकि उसका अभी-अभी जन्म हुआ है और अभी उसने कुछ कार्य भी नहीं किया है। पर जिस ढंग से उसकी स्थापना हुई और उक्त समिति के निर्माण की घोषणा करने वाले प्रेस नोट की भाषा जैसी गोलमोल है उससे प्रत्येक हिन्दी प्रेमी के मन में सन्देह उत्पन्न होने की बहुत कुछ गुंजाइश दिखाई देती है।

प्रेस नोट में सर्व प्रथम एक वाक्य है—१२, १३, और १४ को गवर्नमेंट हाउस में हिन्दीतर क्षेत्रों में हिन्दी का प्रचार करने वाली प्रमुख संस्थाओं का एक सम्मेलन नई दिल्ली में हुआ। पर प्रेस नोट में स्पष्ट यह नहीं बताया गया कि वे प्रमुख संस्थायें हैं कौन-सी? वस्तु स्थिति यह है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को छोड़ कर हिन्दीतर प्रांतों में हिन्दी के ही नाम पर हिन्दी का —राष्ट्रभाषा का— प्रचार करने वाली संस्थायें नगण्य सी ही हैं। दक्षिण भारत का हिन्दुस्तानी प्रचार सभा का कार्य काफी विशाल और विस्तृत होने पर भी वह हिन्दी के नाम पर काम न करने वाली होने के कारण उसे हिन्दी का प्रचार करने वाली नहीं कहा जा सकता। पर इस सम्मेलन में उनके भी प्रतिनिधियों को नहीं बुलाया गया था। जहां तक मुझे पता है, इस सम्मेलन में अखिल भारतीय हिन्दी परिषद्, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा, हिंदी साहित्य सम्मेलन तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, के ही प्रतिनिधियों को आमन्त्रण था।

अखिल भारतीय हिन्दी परिषद् का नाम चाहे अखिल भारतीय हो और उसकी संचालन समिति में राजेन्द्र बाबू जैसे महापुरुष भी हों, पर प्रत्यक्ष प्रचार के क्षेत्र में उसका कार्य नगण्य सा होने के कारण उसे सम्मेलन तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की तुलना में रखना कहां तक उचित था, समझ में नहीं आता। हिन्दी परिषद् के वे ही प्रमुख कार्यकर्ता हैं, जो संविधान द्वारा हिन्दी स्वीकार होने से पूर्व हिन्दुस्तानी की ही रट लगाते थे। पर आज कम से कम उनके नाम में तो हिन्दी शब्द है और उनका दावा है कि उनका कार्य हिन्दी का ही कार्य है। इससे यह माना जा सकता है कि उनके विचारों में वास्तव में परिवर्तन हो गया है और हिन्दी के इस कार्य में उन्हें प्रतिनिधित्व देना किसी प्रकार उचित है। पर आज भी हिन्दुस्तानी नाम का ही डंका पीटने वाली हिन्दुस्तानी प्रचार सभा को उक्त सम्मेलन में प्रतिनिधित्व क्यों दिया गया? क्या यह इस बात का प्रतीक नहीं है कि केन्द्रीय सरकार के शिक्षा विभाग में बैठे डा० ताराचन्द जैसे हिन्दुस्तानी के समर्थक आज भी हिन्दुस्तानी को ही हिन्दी के नाम पर राजभाषा बनाने का स्वप्न देख रहे हैं।

प्रेस नोट में यह भी नहीं बताया गया कि सम्मेलन में किन संस्थाओं के कितने-कितने प्रतिनिधियों को बुलाया गया था। यह मौन भी कुछ विशेष अर्थ रखता है। पता चला है कि जहां सम्मेलन और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को केवल दो-दो प्रतिनिधि भेजने के लिए कहा था, वहां हिन्दी परिषद् और हिन्दुस्तानी प्रचार सभा से तीन-तीन प्रतिनिधि मांगे गये थे। इस प्रकार डा० ताराचन्द जैसे हिन्दुस्तानी के प्रबल समर्थक को सरकारी प्रतिनिधि होने के कारण यदि तटस्थ भी मान लिया जाय तो भी वहां हिन्दी विचारधारा के समर्थक सम्मेलन और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मिला कर केवल चार और किसी न किसी रूप में हिन्दुस्तानी को ही कायम रखने की इच्छा रखने वाले हिन्दी परिषद् और हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के मिला कर ६ प्रतिनिधि हो गये थे। यह जानबूझ कर किया गया अथवा अनजान में हुआ कहा नहीं जा सकता, पर इससे हिन्दी जगत् के मन में संदेह अवश्य उत्पन्न हुआ है।

यह ठीक है कि सम्मेलन सर्वसम्मति से कुछ निश्चयों पर पहुंचा है और उनमें सर्वप्रमुख हिन्दी शिक्षा समिति नामक एक केन्द्रीय बोर्ड की स्थापना यह है। समिति अथवा बोर्ड के उद्देश्यों के संबंध में केवल एक बात छोड़ कर न किसी को कोई शिकायत हो सकती है और न मेरी समझ में है ही। संविधान द्वारा हिन्दी राज भाषा के रूप में स्वीकार होने के पश्चात् उद्देश्य का प्रश्न हल हो चुका है। अब प्रश्न केवल उस उद्देश्य को कार्यान्वित करने वाले लोग कौन से हैं, यह है। क्योंकि घोषित उद्देश्य कुछ भी हो, उसे कार्यान्वित करने वालों की आतरिक विचारधारा का प्रभाव कार्य पर पड़ता ही है और पहले हिन्दुस्तानी का समर्थन करने वाले पर आज हिन्दी का नाम लेने वाले लोगों के आज के भाषण आदि सुन कर संदेह कम नहीं होता, बढ़ता ही जाता है। बम्बई के मुख्य मन्त्री श्री बा० गं० खेर ने हाल ही में अपने एक भाषण में कहा—संविधान द्वारा स्वीकृत हिन्दी वही है जिसे हम पहले हिन्दुस्तानी कहते थे।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

विशालकाय जलपोतों को और भारतीय बेड़े के सु

परस्पर ४०० गज के अन्तर से चलते हुए सुरंगनाशक जलपोतों का काफिला सागर के हृदय में छिपी सुरंगों को ढूंढ रहा है।

भारत सरकार ने हाल में जल सेना में सुरंग नष्ट करने वाले जहाजों का एक समूह निर्माण किया है। इसका यह अर्थ नहीं कि भारत ने कोई नये ढंग के जहाज प्राप्त किये जो कुछ हुआ वह इतना ही है कि भारत के वर्तमान सुरंग नष्ट करने वाले जहाजों को एक पृथक समूह में संगठित कर दिया गया जिससे उनकी संगठन विषयक तथा कार्यवाही सम्बन्धी निपुणता बढ़ाई जा सके।

जल सेना के विभाग

इस प्रकार के जल सेना के विभाग में एक मुख्य जलपोत तथा एक प्रमुख सैन्य अधिकारी होता है, जिसके अधिकार में उस समूह के सभी पोत तथा व्यक्ति होते उसके अधिकार में रहने वाले जल पोतों की सब प्रकार से देख भाल तथा उन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की योग्यता और कुशलता का दायित्व उसके ऊपर रहता है।

भारतीय जल सेना में पहिले से ही विध्वंसक जहाजों का एक समूह है जिस का मुख्य पोत 'राजपूत' और प्रमुख अधिकारी कैप्टेन चक्रवर्ती हैं, एक क्रूजर जहाजों का समूह है, जिसका मुख्य पोत 'जमना' तथा मुख्य अधिकारी कैप्टन बी० एस० सोमन हैं। यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार सभी पोत समूह संगठन तथा कार्यवाही की दृष्टि से नई दिल्ली स्थित जल-सेना के केन्द्रीय कार्यालय के नीचे आते हैं।

पोत-समूह

जलपोतों के एक समूह में विभिन्न प्रकार के पोत होते हैं जिनका कार्य भिन्न भिन्न ढंग का होता है, किन्तु कार्यवाही के समय वे एक दूसरे से सहयोग करते हुए एक संगठित दल के रूप में कार्य करते हैं। इस प्रकार क्रूजर होते हैं, जैसे 'दिल्ली', विध्वंसक होते हैं, जैसे 'राजपूत' और सुरंग नष्ट करने वाले पोत होते हैं, जैसे 'कोंकण'। भारत के पास इस समय कोई युद्धपोत अथवा वायुयानवाहक पोत या पनडुब्बी नहीं है। वर्तमान प्रबन्ध के अनुसार यह आशा है कि अब से पांच छः वर्ष में भारत के पास जल सेना के वायुयान, वायुयानवाहक पोत और इन्हें चलाने वाले शिक्षित व्यक्ति सब कुछ हो सकेगा। क्रमशः हम इन विभिन्न प्रकार के जल पोतों के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे किन्तु यहां पर सुरंग नष्ट करने वाले जहाजों को कुछ विस्तृत रूप से देखें।

सुरंग नाशक पोत

सुरंग नष्ट करने वाले पोत का पता उसके नाम से ही चल जाता है। वे शत्रु के द्वारा समुद्र में बिछाई हुई सुरंगों को नष्ट करते हैं। सुरंग बिछाने का कार्य सुरक्षा और आक्रमण दोनों में होता है। अपने ही समीप क्षेत्र और बन्दरों पर सुरंगें बिछाई जा सकती है जिससे बढ़ते हुए शत्रु के लिए संकट उपस्थित किया जा सके। इसी प्रकार हमारे द्वारा शत्रु के बन्दरगाहों में सुरंगें बिछाई जा सकती है जिससे उसके व्यापारी अथवा युद्ध पोत नष्ट हो सकें। सुरंग खुले समुद्र पर प्रमुख जलमार्गों पर भी बिछाई जाती हैं जिससे शत्रु का जलयान पोत उनसे टकरा कर नष्ट हो जाये।

सुरंगों के प्रकार

सुरंग विभिन्न प्रकार की होती हैं। जर्मनी ने चुम्बकीय सुरंग का आविष्कार किया था। जब कि लोहे के पेंदे वाला कोई पोत समुद्र में चलते हुए ऊपर से गुजरता है, नीचे की सुरंग उसकी ओर खिंची चली आयेगी। स्वाभाविक रूप में टक्कर होते ही विस्फोट होगा, और पोत डूब जायगा। जर्मनी ने इस प्रकार की सुरंगों का भी आविष्कार किया था जो ऊपर चलते हुए पोत की ध्वनि से ही आकर्षित हो जाती थीं। वे तुरन्त ही पोत से टकरा कर उसे समुद्र तल में भेज देती हैं।

साधारण सुरंग की बनावट

इन दोनों ही प्रकार की सुरंगों से बचाव के साधन निकाल लिए गये हैं। किन्तु प्राय जिस प्रकार की सुरंग से सुरंगनाशक का काम पड़ता है वह निम्न प्रकार की होती है। वह एक गोला होता है जिसका व्यास लगभग एक गज होता है। उसके अन्दर २०० से ३०० पौण्ड तक विस्फोटक पदार्थ भरे होते हैं। उसमें से पांच या इससे भी अधिक सींग से निकले रहते है जिनमें से प्रत्येक के साथ रासायनिक द्रव्य से भरी हुई एक कांच की नली होती है। जैसे ही किसी पोत से सम्पर्क स्थापित होता है कांच की नली टूट जाती है और रासायनिक द्रव्य बिखर जाता है। बिखरा हुआ द्रव्य बैटरी को चालू कर देता है जिससे विस्फोट होता है।

समुद्र में बिछाना

जब कोई सुरंग समुद्र में बिछाई जाती है। उसके साथ एक भार भी होता है जो उसे डुबोये रखने का काम करता है। इस प्रकार दोनों ही साथ-साथ समुद्रतल की ओर जाते हैं, किन्तु थोड़ी ही देर में सुरंग में तैरने का गुण होने के कारण वह ऊपर उठ कर समुद्र की सतह के नीचे एक निश्चित स्तर पर आ जाती है और वहीं ठहरी रहती है। सुरंग को उस स्थिति में पकड़े रखने का काम वह भार करता है जो एक तार के द्वारा सुरंग से बंधा नीचे लटका रहता है।

यह जलपोत शत्रु के मार्ग में सुरंग बिछा रहा है ... हुए सींग स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। ... नीचे ही पकड़े रखने ...

नष्ट करने का ढंग

जब सुरंगों को नष्ट करना होता है तो सुरंग वाले क्षेत्र में दो पोत एक-दूसरे से लगभग ४०० गज के अन्तर पर रह कर बीच में एक लटकते हुए तार को खींचते हुए चलते हैं। वह तार एक 'पतंग' के द्वारा जल के नीचे रखा जाता है, जो कि कार्यवाही के समय नीचे डूब जाती है। जब यह सफाई

लेखक— श्री

अमेरिकन जल सेना का वायुयानवाहक पोत

उड़ा देने वाली सुरंग
[सुरं]गनाशकों का परिचय

[कर]ने वाला तार सुरंग से नीचे लटकते हुए तार से टकराता है, वह उसे काट देता है और इस प्रकार सुरंग को बाध्य करता है कि वह या तो वहीं पर फट जाय अथवा समुद्र की सतह पर आ जाय। दूसरी स्थिति में उसे या तो [डु]बो दिया जाता है अथवा राइफल द्वारा उड़ा दिया जाता है।

शान्तिकाल में भी

युद्धकाल में सुरंग नष्ट करने वाले [जल]पोतों द्वारा समुद्र मार्गों की सतत सफाई होती रहती है, किन्तु शान्तिकाल [में] भी यह संभावना रहती है कि इधर [उध]र बची हुई कोई अभी तक जीवित रहते। इसके साथ ही पनडुब्बियों से भी इसे भय रहता है। पनडुब्बियां बहुत बड़ी संख्या में सुरंग नष्ट करने वाले जलपोतों को नष्ट किया करती हैं। इनके विरुद्ध भी चौकसा रहना पड़ता है।

शीत हो या दाह

इसके अतिरिक्त भी सुरंगनाशक का कार्य कठिन होता है। दिन हो या रात्रि इसकी सेवाओं की आवश्यकता किसी भी समय पड़ सकती है। हड्डियों को कंपाने वाली ठंड हो या रोम रोम को रुलाने वाली भीषण गर्मी, दोनों की ही एक सी उपेक्षा करनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त काम भी उतना ही थका देने वाला होता है जितना कि वह शान्त और लगभग अनजान पथ से किया जाता है।

विस्फोट पदार्थों से भरे हुए गोले में से निकले [हु]ए और सुरंग को जाल की तरह के [आ]कार 'जार' है।

ब्रिटेन की जल सेना

ब्रिटेन में सुरंग बिछाना और साफ करना यह शाही जल सेना के कार्य का एक भाग है, किन्तु आवश्यकता पड़ने पर मछली पकड़ने वाले जहाजों और मछियारों के द्वारा, जो विशिष्ट रूप से कुशल और समुद्र से परिचित होते हैं, इसका विस्तार किया जा सकता है। भारतीय सुरंगनाशक जलपोतों ने द्वितीय विश्व युद्ध में प्रशंसनीय कार्य किया है, विशेष कर लाल सागर, बंगाल की खाड़ी और मलाया के निकट के समुद्र में।

[सु]रंग किसी समय विनाश न कर दे। [सन्] १९४८ में इसी प्रकार भारतीय पोतों [क]ो अन्डमान द्वीप समूह के निकट बिछी [हु]ई कुछ जापानी सुरंगों को नष्ट करना [प]ड़ा था।

भारत में सम्भावनायें

भारत का समुद्रतट बहुत विशाल है और उसके तटवर्ती मछली पकड़ने वाले मल्लाह लाखों हैं जिनका समुद्र सम्बन्धी अनुभव संसार के किसी भी भाग में रहने वाले अपने ही पेशेवरों से प्रकार से भी कम नहीं है। यदि आवश्यकता पड़े तो उनका सदा ही उपयोग हो सकता है। किन्तु भारतीय जल सेना के अन्तर्गत संगठित किया गया यह सुरंगनाशक जलपोतों का समूह जल-सेना के कर्मचारियों को आरम्भिक शिक्षा देने का कार्य करेगा। इस प्रकार की शिक्षा से ही भारतीय जलसेना में सुरंग नष्ट की वर्तमान कला और

संकटग्रस्त कार्य

सुरंग नष्ट करना बड़ा संकटग्रस्त कार्य है। यह संभव है कि नष्ट करने वाले पोत से ही टकरा कर सुरंग उसे सब समाप्ति दे दे। अथवा उस पर शत्रु की वायु सेना द्वारा आक्रमण कर दिया जाय। यदि उस पर विनाशध्वंसिनी तोपें हों तो वह ऊपर मंडराते हुए संकट पर चोट कर सकता है किन्तु ऐसी स्थिति में भी जय-पराजय के दोनों पलड़े बराबर

[ए]. पी. शर्मा

कार्य समाप्ति के पश्चात विश्राम करते हुए सुरंगनाशकों का समूह

हिंदी शिक्षा समिति?

[पृष्ठ ११ का शेष]

समिति अथवा बोर्ड के उद्देश्यों के सम्बन्ध में केवल एक शिकायत यह हो सकती है कि इस बोर्ड का निर्माण केवल हिन्दीतर प्रान्तों के लिए क्यों किया जा रहा है? यह ठीक है कि हिन्दीतर प्रांतों में हिन्दी प्रचार की कुछ अधिक आवश्यकता है, पर साथ ही हिन्दी भाषी प्रान्तों को उनसे अलग करके काम नहीं चल सकता। इसका परिणाम हिन्दी भाषी प्रांत तथा हिन्दीतरभाषी प्रांतों में राजभाषा के स्वरूप के सम्बन्ध में मत भेद बढ़ने में होने की अधिक सम्भावना है। आज सभी प्रांतों को एक ही सूत्र में बांध कर ले चलने की आवश्यकता है।

पर मेरी दृष्टि में आपत्तिजनक मुख्य बात यह नहीं है। इस समिति अथवा बोर्ड का निर्माण कैसे होगा यह प्रश्न प्रमुख है। सरकारी प्रेस नोट की भाषा इस विषय में बहुत ही अस्पष्ट है। सरकारी प्रेस नोट के अनुसार इस समिति में ११ सदस्य होंगे, और वे हिन्दीतर क्षेत्रों में काम करने वाली संस्थाओं के तथा भारत सरकार के (अर्थात् शिक्षा विभाग द्वारा) नामजद प्रतिनिधि होंगे। कितने हिन्दीतर प्रान्तों में काम करने वाली संस्थाओं के प्रतिनिधि होंगे और कितने सरकार द्वारा नामजद होंगे यह बात प्रेस नोट में स्पष्ट नहीं है। साथ ही हिन्दीतर प्रान्तों में काम करने वाली संस्थाओं के प्रतिनिधि चुनने का मार्ग क्या होगा, हिन्दीतर प्रान्तों में काम करने वाली संस्थायें किन्हें समझा जायगा, यह भी स्पष्ट होना आवश्यक था। यदि इसका अर्थ यही है कि भारत सरकार का शिक्षा विभाग समझे वही हिन्दीतर प्रान्तों में काम करने वाली संस्थायें होंगी और उनमें से जिससे जितने विभाग का जी चाहे उतने प्रतिनिधि मांग लेगा यही नियम होगा तो इस बोर्ड से हिन्दी का हित होने के बजाय उसका अहित ही अधिक होने की सम्भावना है, क्योंकि जिस प्रकार इस सम्मेलन में ही हिन्दी के नाम पर हिन्दी का विरोध करने वाले लोगों को बुला लिया गया उसी की पुनरावृत्ति समिति के निर्माण में भी होगी। यह आशंका अनुचित और निराधार नहीं समझी जायगी।

इस सम्मेलन में समिति की सहायतार्थ चार विभागीय बोर्ड बनाने की बात भी तय हुई है। इन बोर्डों में भी विभागीय क्षेत्र छोटे बड़े होने के अनुसार उस विभाग में काम करने वाली संस्थाओं के ६ से लेकर १५ तक प्रतिनिधि होंगे। योग्यता में निपुण व्यक्ति उत्पन्न होंगे जिनके आधार पर ही आवश्यकता के समय में इस प्रकार के विस्तार की कोई योजना कार्यान्वित की जा सकती है।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

न्यूयार्क बन्दर पर लंगर डाले एक विशाल जलपोत

लक्ष्य की पहिचान

कु० शकुन्तला मिश्र

> विद्रोह से जो अधिकार नारी चाहती है वह मिल जायेगा पर उससे क्या स्नेह, श्रद्धा और ममता पर भी अधिकार किया जा सकता है? नारी का सब से महान आकर्षण, माता का गौरव, भगिनी का मृदुल स्नेह और गृहलक्ष्मी का अमिट अधिकार उसे विद्रोह से कैसे मिल सकता है?

शीर्षक बहुत लोगों को अजीब-सा लगेगा। इस समय जब कि नारी-समाज को समानता दिलाने वाले वर्ग में विद्रोह की भावना ने एक स्थायी असन्तोष और उससे उत्पन्न कठिन 'अहं भाव' भर दिया है—यह कहना कि हमें लक्ष्य की पहचान नहीं है सम्भवतः उन्हें रुचिकर नहीं होगा। किन्तु दृष्टिकोण में जो विभिन्नतायें होती हैं, उन्हीं ने कुछ ये पंक्तियां लिखने की प्रेरणा की। विचार पृथक पृथक होते हैं, और आवश्यक हो जाता है कि हम प्रत्येक विषय पर अपने कुछ विचार रखें, तथा उनकी उपयोगिता का ध्यान रखते हुए उन्हें व्यक्त करें। आज का नारी-जीवन समस्याओं से बोझिल है, उन्हें सुलझाने के लिए इस बात की बड़ी आवश्यकता है।

आज नारी समाज में एक व्यापक विद्रोह भाव फैला दिखाई पड़ता है। शिक्षित ही नहीं, अशिक्षित स्त्रियों ने भी बाहर की हवा के साथ इस नये आंदोलन को पहिचाना है। अशिक्षित और अर्धशिक्षित लड़कियों के मुंह से भी 'समाज' के विरुद्ध तर्क सुनने को मिलने लगे हैं। कारण स्पष्ट है। अज्ञान के अंधेरे और अभावों में वह तभी तक प्रसन्न रह सकती थी जब तक उन्हें ज्ञान के प्रकाश का अनुभव न हो। किन्तु राष्ट्र के जागरण के साथ स्त्री-समाज में भी पहले से बहुत अधिक जागृति आ गई है। अपनी दशा पर उसे असंतोष हुआ और वह धीरे धीरे गम्भीरतम होता गया। उसे उस युग की याद भी न थी जब वह देवी थी, जब शक्ति के क्षेत्र में दुर्गा और लक्ष्मी तथा ज्ञान के क्षेत्र में मैत्रेयी और गार्गी थी। उसके तपो-बल ने भारतीय संस्कृति को अमर बना दिया है। यह सब उसे भूल गया था। सामन्त युग में अपने पशु बल द्वारा शासित हो जाने पर, जब वह सुखमय जीवन बिताने का एक साधन मात्र रह गयी थी, साध्य नहीं, सौंदर्य से ही जिसका मूल्यांकन किया जाता था। पर्दे में रख कर जिसकी शारीरिक और मानसिक शक्तियों के विकास का मार्ग रुद्ध कर दिया गया। उसका फल हमें मध्य-युग में देखने को मिलता है। जब कि नारी वीरांगना-वेश में कृपाण चमका सकती थी, वहां दुर्ग की प्राचीरों में बन्द 'जौहर' ही उसका अवलम्ब रह जाता था।

इसका कारण देश की परतन्त्रता थी। पराधीन जाति अपने शौर्य को कब पहचान सकी है? पराधीन अपने से दुर्बल पर ही अपनी शक्ति प्रदर्शित कर सकता है। नारी वर्ग पर शासन की कड़ाई बढ़ती गई। उसका क्षेत्र बस दीवारों के भीतर ही रह गया। निर्बल अपनी स्थिति पर सन्तोष कर लेता है। उसके अपनी अवस्था पर सन्तोष कर लेने का फल यह हुआ कि नारी के पहियों में एक के निष्क्रिय हो जाने से देश का उत्तरोत्तर पतन होता गया।

पर युग बदला और काल की प्रगति के साथ स्त्री समाज में भी चेतना के लक्षण दिखाई दिये। इसका कारण पश्चिमी प्रभाव तथा राष्ट्रीय आंदोलन थे। और आज इस जागरण का सिंहावलोकन करते समय नारी समाज बहुत आगे बढ़ गया है। अब उसका क्षेत्र विस्तृत है और उसकी आवश्यकतायें पहले से बहुत अधिक हो गई हैं समय और शिक्षा दोनों ने उसे अधिक से अधिक परिश्रम की ओर प्रभावित किया है। वह सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक सभी क्षेत्रों में समानता चाहती है और उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील है। बहुत कुछ अधिकार उसे मिल गये हैं। अन्य देशों के उदाहरण उसके सामने हैं। अब वह पुरानी गुड़िया सी निर्जीव नारी नहीं, अधिकाधिक सजीव बनी अग्रसर हो रही है।

पर यहां एक मौलिक भ्रम छाया मिलता है। नारी घर की चहार दीवारी से बाहर आई अवश्य है पर बाहर से उद्बोधन वाणी सुन कर। संसार से उस का परिचय और अनुभव इसी कारण से स्वभावतः ही कम है। आंदोलन की रूप रेखा उसके आगे उसी के द्वारा रखी गई जिसके विरुद्ध वह खड़ी हुई है। उसी का विरोध और उसी के आदर्शों की मांग—यही तो भ्रान्ति है। पर जब एक प्रवाह चल पड़ा तब उसी में बहना 'फैशन' बन गया। जिसके विरुद्ध उसका आन्दोलन चला वह पुरुष वर्ग अस्थिर और वेगवान गति से कर्म-पथ पर बढ़ता है। आधुनिक नारी भी समानता की दृष्टि से वैसे ही अस्त-व्यस्त जीवन को अपनाना चाहती है। सबल निर्बल का समर्थन तभी करता है जब उसका कोई अभीष्ट सिद्ध हो। रूढ़ियों से आक्रान्त नारी ने शृंखलायें तोड़ी अवश्य, पर उसे अभी बहुत सतर्क रहना पड़ेगा क्योंकि प्रायः ऐसा देखा गया है कि नारी विद्रोह की बड़ी-बड़ी बातें करने वाले आदमियों का उसमें कुछ न कुछ विशिष्ट स्वार्थ निहित रहता है। और वहीं सबसे कठिन अवस्था उत्पन्न हो जाती है। यहां पर तो मैं उस नारी को अधिक सुखी और सन्तुष्ट पाती हूँ जो प्राचीनताओं के मार्ग पर अपनी गृहस्थी, सन्तान और उसके कल्याण में संलग्न है। उसे बुद्धि की किसी भ्रांति का क्लेश तो नहीं है। वह अपनी अज्ञानता में सुखी तो है।

और इधर! बंधे दायरे में घूम घूम कर अपने को अग्रगामी समझा जारहा है। इस प्रकार बढ़-चढ़कर बातें करने से कुछ नहीं हो सकता जब तक सम्पूर्ण भारतीय नारी समाज अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए स्वयं कटिबद्ध न हो जायेगी।

समानता का अधिकार जिस अर्थ में आजकल समझा जा रहा है उसे लेकर नारी आखिर उसी वर्ग का अनुकरण तो करना चाहती है, जिससे उसे विरोध है। समानता का विरोध कोई नहीं कर सकता, किन्तु इस आन्दोलन में अधिकार का स्वर ही भावनाओं को अस्त-व्यस्त कर देता है। सफल जीवन शर्तों के आधार पर नहीं चल सकता। विद्रोह से जो अधिकार नारी चाहती है वह मिल जायगा पर उससे क्या स्नेह, श्रद्धा और ममता पर भी आधिपत्य किया जा सकता है? नारी का सबसे महान आकर्षण माता का गौरव, भगिनी का मृदुल स्नेह और गृहलक्ष्मी का अमिट अधिकार कैसे मिल सकता है? 'हिन्दू कोड' जैसे बिल भी हमें कुछ विशेष नहीं दे सकते वरन् हमारे कुछ अमर अधिकार ही छिन जायंगे, जिनसे नारी की जीवनव्यापी शाश्वत भावुकता का सम्बन्ध है।

इस भ्रान्ति का कारण यही प्रतीत होता है कि अभी नारी ने अपना मार्ग स्वयं निर्मित ही नहीं किया। अंधेरे में औरों की आवाज सुनकर वह आगे बढ़ चली है, पर वहां क्या है यह नहीं सोचा। क्योंकि समाज में व्याप्त असन्तोषजन्य उच्छृंखलता इसका समय ही नहीं देती। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली भी जीवनयापन का कोई विशिष्ट दृष्टिकोण उसके सामने नहीं रखती। जीवन क्रम में बढ़ते हुए भौतिकवाद ने वातावरण में ही कुछ ऐसी स्वार्थमूलक स्थूलता भर दी है कि प्रतिक्रिया से उत्पन्न [illegible] लिए विरोध के मार्ग पर बढ़ने के सिवाय नारी भी और कुछ नहीं [illegible]। [illegible] के अभाव- प्रभाव युग में जब प्रत्येक दिशा [illegible] उस विरोध प्रणाली का स्वर कैसे ऊंचा हो सकता था?

परिणाम स्पष्ट है। आधुनिक नारी के प्रति कुछ विशेष प्रकार के विचार लोग रखने लगे हैं, मानो वह मोह ममता हीन कोई वस्तु हो। यद्यपि है वह उसी प्रतिक्रिया से उत्पन्न मानसिक अस्थिरता, जिसमें मिलने की अपेक्षा विरोध ही प्रबल हो गया था।

पर अब नारी को याद रखना पड़ेगा कि भारतीय जीवन की एक अपनी परम्परा है। उसका त्याग करके कोरे रूखी नारी के आदेश से काम नहीं चलने का। परम्परा के अविश्वास से उत्पन्न कटुता के वातावरण में नारी का व्यक्तित्व समन्वय का एक आदर्श प्रस्तुत करे। आज केवल सीता या केवल विद्रोहिणियों की आवश्यकता नहीं है। समाज की गंगा अलग अलग धाराओं में विभक्त होकर उच्छृंखल हुई जा रही है। उसे एक में समन्वित करके युग की शुष्क मरुभूमि को सरस करना होगा। यही होगा भारतीय नारी का परम्परागत [illegible]। यहीं वह महिमामयी कल्याणी नारी बन जायगी, जहां वाद-विवादों के झंझावात उसके सुलझे मन को विचलित न कर सकेंगे।

अकारण विद्रोह भावना हटाने के यह अर्थ नहीं है कि सकारण विरोध भी न किया जाय। देश आज भी अज्ञान की शृंखलाओं में जकड़ा है, रूढ़ियों के घुन उसे खोखला कर रहे हैं, आज भी नारी की अवस्था कवि के शब्दों में —

वह समाज की नहीं इकाई
शून्य समान अनिश्चित।
उसका जीवन भार भारपर
नर के है अवलम्बित।"

युग की सबसे बड़ी मांग यही है कि आधुनिक नारी स्थिरचित्त और सन्तुलित मस्तिष्क से अपना मार्ग निश्चित करे, अपना लक्ष्य निर्णय करे।

—पाञ्चजन्य से

★

मेरा मुन्नू !

(पृष्ठ १० का शेष)

एक व्यवहार ने उसे कुछ भयभीत कर आश्चर्य में डाल दिया उस के चेहरे की चमक, कहीं दूर अन्तस्तल के कोने में जा छिपी।

वह चुप था। कुछ सोच सा रहा था। उसकी आंखों में भावों की एक लहर्मिनी थी। चेहरे पर नाना विचारों का उतार चढ़ाव था, मानों मेला लगा हो।

इस मातृविहीन अनाथ बालक का मुखड़ा देख मेरे दिल में तूफान सा आ गया। किसी ने सच कहा है—'संसार में सबसे अधिक करुणाजनक स्थिति मातृ-विहीन बालक की ही है। उसकी दशा निखट्टू-सी हो जाती है। उसको प्रायः आधार तो मिल जाता है, पर वह जिस पर वह अच्छी तरह से पनप नहीं सकता। वह जी भी नहीं रहा होता है और मरता भी नहीं। उसकी दुनियां ही बदल जाती है। वह जबरदस्ती वैरागी बना दिया जाता है, जिसे उसका अर्थ भी नहीं मालूम। फिर उसे रिझाने का सहज तरह से प्रयत्न किया जाता है।'

मैंने उसका ध्यान बंटाने के लिए पूछा—'क्या तुम इन के साथ खेलना चाहते हो?'

प्रसन्नता मिश्रित भाव फिर उसकी आकृति पर आ गए। वह मुस्कुरा उठा। चोटी से उतर कर उनकी ओर ऐसे चला मानों उन्हीं में से एक हो, पिछले जन्म में उनके साथ रहा हो।

वे सब उड़ गये। वह जिस भाव से गया था विपरीत भाव से लौटा। मालूम होता था कि वह भी पक्षी बन कर ही उनका पीछा करना चाहता है।

बोला—'बाबू जी मैं भी पक्षी बनना चाहता हूं। पक्षी बन कर इस वृक्ष पर अपना घोंसला बनाऊंगा। लोग छेड़ेंगे तो चोंच मारूंगा। बड़ा मजा आवेगा। कुछ बच्चे भी होंगे। पर मैं इनकी तरह बच्चों को रोने नहीं दूंगा। उन्हें खूब प्यार करूंगा। इनकी मां को कहीं न जाने दूंगा। रोज उसे अपने साथ घूमने ले जाया करूंगा। बाबू जी! तुम भी आया करोगे न? देखो यहीं रहना। मेरे से बातें कर लिया करोगे न?'

वह भूलता था कि अगले जन्म में मुझे कोई पहचानेगा नहीं! पर उसके सामने तो 'अगले पिछले' की समस्या अभी आई ही नहीं थी।

'ये बोलते तो हैं, आपस में क्या कहते हैं? हमें तो कुछ समझ नहीं आता। राजा जनक ने एक बार शिकार के लिये जाते समय घोड़े पर से दो पंछियों की बातें सुनी थीं। याद है, उस दिन आप ही ने बताया था।'

सामने एक पक्षी छोटे बच्चे को दाना खिला रहा था।........'अम्मा मेरे मुख में भी ऐसे ही खाना डाला करती थी, बाबू जी! ..कहीं मेरी अम्मा ही तो इन में नहीं? मैं भी पक्षी बन कर अपनी अम्मा से मिलूंगा।'

मैं चुपचाप उसे अन्दर ले गया।

भोजन करने के बाद मैं और वह दुपहरी में बाहर घास पर आ बैठे। ऊपर नील आकाश में बहुत-सी चीलें इधर उधर उड़ रही थीं। मेरे मन में नाना भाव चक्कर काट रहे थे। अचानक मुन्नू चिल्ला उठा। बाबू जी ये चीलें कहां जा रही हैं? मुझे इनके ऊपर बिठा दीजिये। मैं अम्मा के पास जाना चाहता हूं। वे अभी तक भी क्यों नहीं लौटीं? मरना क्या है? आदमी मरने के बाद क्या कभी बात चीत नहीं करता?'...

मैंने कहा—'बेटा, आज तुम्हारे लिये बहुत सारे नये कपड़े लाऊंगा।'

खुशी के मारे वह नाचने लगा। 'तो नये कपड़े पहिन अम्मा के पास जाऊंगा।'

× × ×

मेरा दीया उलटा पड़ा था। मैंने कहा—'आओ बेटा! रामायण की बड़ी-बड़ी तस्वीरें देखेंगे।'

मेरा समय यों ही धीरे धीरे चला जा रहा था। कुछ दिन ही बीते थे कि वह सचमुच पक्षी बनने के लिये विश्व-कर्मा के घर चला गया। मेरा क्या बस था? दिल थाम कर रह गया। मेरा काफिला तो पहिले ही चला गया था उसकी धूल भी समाप्त हो गई। भाग्य पत्थर की लकीर है, हमारे प्रयत्न रेत की बालियां।

संसार से मेरा सम्बन्ध बहुत थोड़ा रह गया है। प्रायः एकान्त में रहता हूं। कभी कभी कोई पुराने मित्र आ जाते हैं। समय इसी प्रकार बीतता गया।

गर्मियों के दिनों में मैं पहाड़ पर चला गया था। दो चार दिन हुए हैं अभी वापिस लौटा हूं।

मैं दो पक्षियों को उसी आम के पेड़ पर बैठते देखता हूं। उन्होंने अब कुछ परिश्रम के बाद एक और नया सुन्दर घोंसला तैयार भी कर लिया था।

उस घटना ने मेरे ऊपर इतना अधिक प्रभाव छोड़ा था कि उन पक्षियों के जाने के बाद भी मैंने उनके घोंसले को उसी तरह सुरक्षित रहने दिया था। मैं अपने बच्चे की प्रतीक्षा में पागल हुआ उसी तरह से था जिस तरह प्रथम के समय किसी अवतार की प्रतीक्षा होती है। मुझे पूर्ण विश्वास था कि वह मेरा बच्चा एक दिन यहीं आवेगा और इसी पर ठहरेगा! मेरे से बात करेगा। मैंने इसी आशा में पक्षियों संबन्धी बहुत सा

[शेष पृष्ठ १८ पर]

(पृष्ठ १२ का शेष)

इन बोर्डों का काम मुख्य रूप से हिन्दी पढ़ाना और हिन्दी की परीक्षायें लेना कहा गया है। पर यहां भी बोर्डों का का निर्माण कैसे होगा यह मुख्य बात स्पष्ट रखी गयी है। उदाहरण के लिए पश्चिमी विभाग ले लीजिये। इसमें मराठी तथा गुजराती भाषा भाषी क्षेत्र आते हैं। इन दोनों ही क्षेत्रों में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की राष्ट्र भाषा प्रचार समिति का ही कार्य मुख्य रूप से है। महाराष्ट्र में महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार सभा और गुजरात में हिन्दुस्तानी प्रचार सभा का भी कुछ थोड़ा बहुत कार्य है। शिक्षा विभाग का रुख देख कर कुछ और संस्थाएं भी खड़ी हो जाना असम्भव नहीं है। शिक्षा विभाग के वर्तमान अधिकारियों का रुख प्राचीन हिन्दुस्तानी वादियों की ओर कुछ अधिक होने के फलस्वरूप हिन्दी के नाम पर अथवा स्पष्ट रूप से हिन्दुस्तानी का ही कार्य करने वालों की हो अधिक संख्या इन बोर्डों में हो जाय तो इसमें आश्चर्य नहीं इसी बात की अधिक संभावना है।

हिन्दी जगत के कुछ पत्रों में प्रकट हुआ यह सन्देह भी निराधार नहीं प्रतीत होता कि शिक्षा विभाग द्वारा, जो अब तक हिन्दी के प्रति केवल उपेक्षा की हो नहीं तो कुछ विरोध की नीति बरतता रहा है इस समय अचानक यह आयोजन मुख्यतः दो बातों को लक्ष्य कर किया गया है। एक तो दिन प्रति दिन जोर पकड़ने वाली हिन्दी जगत की हिन्दी कमीशन और केन्द्रीय सरकार में अलग हिन्दी मन्त्री नियुक्त करने की मांग को दुर्बल बनाना—क्योंकि इस समिति की स्थापना के पश्चात आसानी से यह कहा जा सकेगा कि शिक्षा विभाग कुछ कार्य कर ही रहा है अतः अलग कमीशन अथवा मन्त्री नियुक्त करने की आवश्यकता नहीं है, और दूसरी बात यह कि हिन्दीतर प्रान्तों में राष्ट्र भाषा प्रचार समिति के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकना क्योंकि इस प्रकार निर्मित प्रांतीय बोर्ड परीक्षायें लेने और शिक्षा देने का कार्य करेंगे और इन परीक्षाओं को सरकारी मान्यता भी अधिक होगी तो स्वभावतः राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की परीक्षाओं का आकर्षण और महत्व कम होता जायगा।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति के जो प्रतिनिधि इसमें सम्मिलित थे उन्होंने इसे अपनी सहमति क्यों दी यह अभी स्पष्ट नहीं हुआ है। पर मुझे लगता है कि शिक्षा विभाग द्वारा स्थापित यह हिन्दी शिक्षा समिति हिन्दी के कार्य में तथा विशेषकर हिन्दी के सम्बन्ध में संविधान के निर्णय को कार्यान्वित करने के मार्ग में एक बहुत बड़ी बाधा होगी। हिन्दी जगत को इस सम्भावित संकट पर गम्भीरता के साथ विचार करना चाहिए।

———

आधुनिक हिंदी काव्य में नये प्रयोग

★ श्री सुरेशचन्द्र मिश्र

वर्तमान शताब्दी मे हिन्दी साहित्य की काव्य-धारा विभिन्न दिशाओं की ओर प्रवाहित होती रही है। आज भी उसकी गति सर्वथा अवरुद्ध नहीं है। यह साहित्य के गौरवमय भविष्य का द्योतक है। 'प्रगतिवाद' आधुनिक हिन्दी-साहित्य की नवीनतम काव्य धारा मानी जाती है। किन्तु आज हमारे कुछ प्रतिभाशील साहित्यकार हिन्दी काव्य में नवीन प्रयोग कर रहे हैं। प्रयोगावस्था में होने के कारण इस नवीन काव्य धारा के भविष्य के सम्बन्ध में निर्णायक मत नहीं दिया जा सकता। प्रस्तुत लेख में इसी नवीन प्रयोगवादी काव्य धारा पर कुछ विचार प्रस्तुत किये गये हैं।

प्रयोग प्रयोगवादी काव्य के नामसे इधर कुछ दिनों से हिन्दी साहित्य में ऐसी रचनायें हो रही हैं, जिसकी ओर नई पीढ़ी के साहित्यकार काफी आकृष्ट हुये हैं, और जिन्हें इसमें कुछ भी आकर्षण प्रतीत नहीं हुआ, वे भी इसकी ओर जिज्ञासापूर्ण दृष्टि से अवश्य देखने लगे हैं। इन नवीन प्रयोगवादी कविताओं के काव्यगत आधार, इनके निर्माण के पीछे सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण के सम्बन्ध में स्वयं इनके रचयिताओं में ही भरपूर मतभेद है। समाज की आचार-विचार सम्बन्धी परम्परागत मान्यताओं का परित्याग किस सीमा तक किया जाय, इस सम्बन्ध में भी सभी साहित्यकार एकमत नहीं है। वास्तव में प्रयोगवादी काव्य—जैसा कि इसके नाम से ही विदित है, काव्य क्षेत्र में कोई नवीन जीवन दर्शन लेकर नहीं आया। काव्य शैली अवश्य इसने नयी अपनाई है, किन्तु उसमें नवीनता के स्थान पर वैचित्र्य की मात्रा ही अधिक है। प्रयोगवादी काव्य के अन्तर्गत लिखी जाने वाली दो चार रचनाओं को पढ़कर ही पाठक अवाक होकर सोचने लगता है कि वह इस नये प्रयोग का किस भांति रसास्वादन करे।

परिवर्तन की नई दिशा

प्रत्येक युग के कुछ कलाकार अपने आपको विगत युगों से भिन्न प्रमाणित कर अपने अस्तित्व की स्वतन्त्र घोषणा करते हैं। नवीन परिवर्तन का यह दृष्टिकोण कला और चिन्तन के क्षेत्र में नई शैलियों और नये विचारों को जन्म देता है। यों भी लेखकों के सचेत और सक्रिय प्रयत्नों के अभाव में भी दो विभिन्न युगों के साहित्यिक एक दूसरे से भिन्न होते हैं। विभिन्न देशों और युगों के साहित्य में विभिन्नता उत्पन्न करने वाली सबसे प्रधान शक्ति है—वातावरण की विभिन्नता तथा परिस्थिति की परिवर्तनशीलता। वातावरण तथा परिस्थितियों का यह नैसर्गिक परिवर्तन व्यक्ति के बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक तथा नैतिक दृष्टिकोण में भी किंचित अन्तर ला देता है। यद्यपि साहित्य हमारे आवेगों तथा विचारों की अभिव्यक्ति है, किन्तु जीवन और साहित्य में मुख्य चीजें वे तत्व हैं, जिनके सम्बन्ध में हम आवेगों का अनुभव करते हैं। इन सब तथ्यों से हम जिस अन्तिम परिणाम पर पहुंचते हैं, वह यह है कि काव्य की शैली की दिशा में परिवर्तन का जहां तक प्रश्न है, वहां तक तो प्रयोगवादी कविताओं को किसी भी दृष्टि से उपेक्षित नहीं किया जा सकता। किंतु प्रश्न यह है कि यह परिवर्तन सूक्ष्म काव्यगत अन्तर्दृष्टि में है अथवा आंधी के समान केवल परिवर्तन के लिए ही है। प्रयोगवादी कवियों की रचनाओं के कुछ उदाहरण तथा उसके पक्षपाती आलोचकों के इसके पक्ष में दिये गये तर्कों के आधार पर हम अपने विचारों की परिपुष्टि भलीभांति कर सकते हैं।

आलोचकों का मत

प्रयोगवादी रचनाओं के सम्बन्ध में हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक श्री नन्ददुलारे वाजपेयी ने अपने एक लेख में लिखा है—"प्रयोग शब्द से प्रायः नये अभ्यास, नये प्रयास या नई निर्माण चेष्टा का अर्थ लिया जाता। प्रयोगवादी साहित्य से साधारणतः उस व्यक्ति का बोध होता है, जिसकी रचना में कोई तात्विक अनुभूति, कोई स्वाभाविक क्रम विकास या कोई सुनिश्चित व्यक्तित्व न हो। वास्तविक सृजन और क्रांतिदर्शिता के बदले सामान्य मनोरंजन और शैली प्रसाधन ही उसकी विशेषता है। अधिकार और उत्तरदायित्व की अपेक्षा अस्थिरता और उद्देश्यहीनता की भावना ही वह उत्पन्न करता है। सृष्टा और सन्देशवाहक न होकर वह अकेला और प्रवाही मात्र होता है।" वाजपेयीजी के उक्त कथन से किसी का मतभेद भले ही हो, किंतु उनके इस उद्धरण से प्रयोगवादी रचनाओं,पर पर्याप्त मात्रा में ठीक २ प्रकाश पड़ता है। अज्ञेयजी ने 'तारसप्तक' नाम से कुछ प्रयोगवादी रचनाओं को संगृहीत रूप से प्रस्तुत किया है। उसकी भूमिका में उन्होंने स्वयं ही स्वीकार किया है कि प्रयोगवादी कवि किसी एक स्कूल के नहीं हैं और न ही किसी एक मंजिल पर पहुंचे हुए हैं। उनका कथन है कि काव्य के प्रति एक अन्वेषी का दृष्टिकोण ही उन्हें समानता के सूत्र में बांधता है और इसी नाते वे एकत्रित हुए हैं।

यह ठीक है कि कुछ व्यक्ति जिस युग में रहते हैं, उससे सर्वथा भिन्न और स्वतन्त्र परम्परा स्थापित करते हैं। ऐसे व्यक्ति अपनी अलौकिक प्रतिभा के बल पर नये चिन्तन का मार्ग सुझाते हैं। परन्तु जन-चेतना उसका अनुसरण नहीं कर पाती। लेकिन कवि की भावना इन विचारकों की भावना से काफी कुछ भिन्न होती है। कवि की भावना और कल्पना उसे मानव मन की सामान्य अनुभूति के समीप ही बने रहने देती है। यदि युग चेतना के नियामक और कवि विचारकों की भांति ही जन-समाज के लिए दुरूह हो जावें तो कवि यथार्थ रूप से लोक प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते। किन्तु प्रयोगवादी साहित्यिकों के सभी महत्वपूर्ण विषयों में अपने मतभेद तो हैं ही, साथ ही वे हमारे जगत् और कहीं-कहीं काव्य के स्वयं सिद्ध मौलिक तत्वों को भी स्वीकार नहीं करते। विचारों के क्षेत्र में इतना मतभेद, इतना वादविवाद साहित्य के उज्वल भविष्य का द्योतक तो कदापि नहीं कहा जा सकता।

वैचित्र्यवाद की प्रवृत्ति

प्रयोगवादी प्रवृत्ति ने काव्य के विषयों और वर्णनों में नवीनता का सचार किया है। आज के प्रयोगवादी कवि मनोविज्ञान, जीव विज्ञान, समाज विज्ञान तथा अन्य विषयों की पुस्तकों को पढ़ कर नवीन तथ्यों का उपयोग अपनी रचनाओं में करते पाये जाते हैं। कभी कभी यह प्रयोग अत्यन्त आकर्षक और सजीव बन जाते हैं, किन्तु प्रयोग और काव्यात्मक सृजन में मौलिक अन्तर होने के कारण प्रयोगों का बाहुल्य वैचित्र्य का निर्माण अवश्य करे, वास्तविक साहित्य सृजन नहीं कर सकता। श्री प्रभाकर माचवे की टेलीफोन कविता की कुछ पंक्तियां देखिये।

> ओ कोन !
> तुम हो कौन ?
> बैठे हो यहां चुपचाप
> अपने आपसे सन्ताप।
> आंसू आह सिसकी भाप
> खटका शीश
> झनका तार
> दिल का है कहां। बालीश ?
> क्यों हो मौन ?
> टेलीफोन।

इसमें कवि ने टेलीफोन द्वारा मानवीय जीवन की सहज स्वाभाविक भावनाओं का चित्रण किया है। विश्व की छोटी छोटी वस्तुओं की ओर कवि की दृष्टि जाये इसमें किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। किन्तु प्रयोगवादी काव्य के नाम पर कुछ छिछली और बाजारू रचनाओं के भी लिखा जाने की आशंका है, जिनका हमारे कुछ आलोचक-नवीन प्रयोगों के कारण पक्ष पोषण तो अवश्य करेंगे, किन्तु उससे साहित्य की श्री वृद्धि होने में सन्देह है। सर्व श्री प्रभाकर माचवे, अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, जनार्दन मुक्तिदूत, केदारनाथ आदि चिन्तनशील विचारक इस नवीन साहित्यिक प्रयोग को प्रोत्साहित कर रहे हैं। उनकी साहित्यक साधना के फलस्वरूप सृजित काव्य भले ही लोक रुचि का परिचायक हो, किन्तु बिना सूक्ष्म जीवन दर्शन तथा साहित्यक अन्तर्दृष्टि के बिना यह नवीन स्वस्थ साहित्य का सृजन कर सकेगा, इसमें सन्देह है। पिछले दिनों एक कविता 'गीत फरोश' एक मासिक पत्रिका में पढ़ने को मिली। उसका कुछ अंश उद्धृत है।

> जी हां हुजूर, मैं गीत बेचता हूं।
> मैं तरह तरह के
> गीत बेचता हूं।
> मैं सभी किसम के
> गीत बेचता हूं
> जो गीत जनम का लिखूं।
> मरन का लिखूं।
> जो गीत जीत का लिखूं
> शरन का लिखूं
> यह गीत रेशमी है
> यह खादी का
> यह गीत पित्त का है
> यह बादी का।

इन कुछ पंक्तियों में कवि ने आज के साहित्यकार की विषम स्थिति का चित्रण व्यंगात्मक ढंग से करने का प्रयत्न और उसी का प्रत्येक सामान्य ढंग से कर दिया है। इस में काव्यगत सौन्दर्य कहां तक आ सका है। इसका निर्णय पाठक स्वय ही करेंगे।

प्रयोग की रचनाओं की उपयोगिता

अब यह प्रश्न उठता है, कि हिन्दी काव्य में प्रयोगवादी रचनाओं की आवश्यकता और उपयोगिता ही क्या है। श्री प्रभाकर माचवे के मतानुसार इसकी उपयोगिता छायावाद और प्रगतिवाद के दोनों छोरों को मिलाने का काम है। छायावाद को हिस्टीरिया की भांति वे हिन्दी कविता का मानसिक उन्माद

मानते हैं। प्रगतिवाद के सम्बन्ध में उनका कथन है 'पेंडुलम प्रतिक्रिया से जिस भांति दूसरा छोर पकड़ लेता है, उसी प्रकार, ऐतिहासिक जड़वाद के अध्ययन से और भारतीय, राजनीतिक क्षितिज के धूम संकुल हो जाने से नये कवियों ने छाया-वाद एवं प्रगतिवाद को अपनाया।' इसी कारण माचवे जी का मत है कि हिन्दी कविता में विषयों की विविधता, प्रकृति के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण, व्यंग के तीक्ष्ण और सुरुचिपूर्ण प्रयोग की आवश्यकता है। किन्तु यह नवीन प्रयोग समन्वयात्मक प्रयास न होकर परिवर्तन की एक चेष्टा मात्र है। इसको व्यंगविनोदपूर्ण हल्का काव्य प्रयोग कहा जाय तो भी अत्युक्ति न होगी।

हिन्दी काव्य की परम्परा से टूट कर अलग होने का प्रयोगवादियों का जो प्रयत्न है उससे प्रयोगवादी कविता सुदृढ़ आधार के अभाव में अपने पैरों पर खड़ी रह सकेगी, इसके सम्बन्ध में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता, क्यों कि अभी तक तो वह प्रयोगावस्था ही तो है।

———

मेरा मुन्नू !

[पृष्ठ १६ का शेष]

साहित्य भी अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया था।

मैंने अब इस नए घोंसले को और इस नए जोड़े को देखा, प्रसन्नता और विषाद दोनों के भाव एक साथ मेरे हृदय में जोर से उठने लगे।

मुझे ऐसा लगा कि मानों मेरा बच्चा ही अपने वचन सत्य करने आगया है। और सच में मुझे उस जोड़े से अपने पुत्र का सा स्नेह होगया। घंटों आंगन में बैठा बैठा उनकी किलोल देखा करता था।

कुछ समय बीता और उस जोड़े ने अंडे दिए।

उस दिन मेरे एक पुराने मित्र कहीं दूर से मेरे घर आये थे। उनके साथ उनके दो बच्चे भी थे।

सांझ के समय कोई छः बजे मैं और मेरे मेहमान दोस्त आगे के आंगन में कुर्सियां बिछाए बातचीत कर रहे थे। बहुत दिनों बाद मुलाकात हुई थी। स्कूल में इकट्ठे गए कालेज से एक साथ ही पास किया।... हम बातें करते २ बचपन के दिव्यलोक में उड़े जा रहे थे और उनके वे दोनों लाडले सुरेश रमेश बचपन वश सामने आंगन में गुब्बारा उड़ाने में मस्त थे।

मैं उन्हें वृक्ष पर स्थित घोंसला तथा पक्षियों के जोड़े की कथा सुना रहा था। मुन्नू के स्मरण से मेरा कंठ भरा हुआ था मैंने उन्हें बताया कि किस प्रकार मेरे बच्चे ने जाने के कुछ समय पूर्व पक्षी बनकर उसी पेड़ पर रहने की इच्छा प्रकट की थी, और इसलिए मैं यह समझता हूं कि मुन्नू ही वहां रह रहा है। इन पक्षियों को देखकर मैं यही समझता हूं कि मेरा बच्चा ही आंगन में खेल रहा है।

ठीक हमारी कुर्सियों के सामने ही उन पक्षियों के स्वर्ग को चुपचाप सिर झुकाये कलमी आम का पेड़ खड़ा था। सूरज का गुब्बार धीरे २ उतरना प्रारम्भ होगया था। उसकी लाली पत्तों से आंख मिचौनी कर रही थी। पत्ते धीरे २ उस घोंसले पर हवा कर रहे थे। ऊपर नीली आकाश की दरी जिस पर नक्षत्रों की एक बड़ी मजलिस जुटने वाली थी— बिछी हुई थी। नीचे हरी हरी घास अपना हृदय खोले सन्ध्या में बैठने तैय्यारी में थी।

सहसा पक्षियों ने भयानक रूप से चीखना प्रारम्भ कर दिया। हमारा ध्यान खिंच गया और हमारी बातचीत का सिलसिला टूट गया। मैंने देखा कि सुरेश और रमेश पेड़पर चढ़े हुए घोंसले के हाथ लगा रहे हैं। यह सब देखते ही मैं आशंका से कांप उठा। मैंने जोर से चिल्लाकर कहा — 'बच्चो! यह क्या कर रहे हो?"

पर वह क्या? मेरी आवाज से दोनों एकदम ऐसे चौंके कि सुरेश का हाथ हिलने से सब अंडे जमीन पर आ गिरे।

दोनों पक्षियों के करुण आर्तनाद से उपवन रह रहकर सिसकता मालूम होता था। सिर झुकाए सुरेश और रमेश दोनों आंगन में आ खड़े हुए। यदि मैं रोक न देता तो मेरे मित्र की पत्नी अच्छी तरह उनकी मरम्मत कर देती। वह आंखों में आंसू भर लाई। वह मेरी पत्नी की सहेली थी।... मैंने कहा जो होना था सो हो चुका है।

सारी रात करवटें बदलते बीती। बीच में पक्षियों का करुण रुदन हृदय को व्याकुल किए डालता था। कितने ही प्रकार के स्वप्न आये। कभी मेरी पत्नी दिखाई देती। दूसरी बार ऐसा प्रतीत होता कि मुन्नू मेरी उंगली खींच रहा है। मैं चौंक उठता और तभी रात्रि के अंधकार को भेदता हुआ पक्षियों का चीत्कार कानों में पड़ता।

प्रातःकाल उठ कर मैं जब आंगन में आया तो देखा कि मेरे मित्र मुझ से भी पहिले के उठे हुए हैं। उसी आम के वृक्ष के नीचे वे उदास से खड़े हुए। मैं धीरे से उनके निकट पहुंचा। मेरी पग-ध्वनि सुन कर उन्होंने अपने नेत्र मेरी ओर उठाये। मैंने देखा कि उनमें आंसू चमक रहे थे। दूसरे ही क्षण उन्होंने नेत्र भूमि पर झुका लिए। उनकी दृष्टि का अनुसरण कर जब मैंने नीचे की ओर देखा तो कल के फूटे हुए अण्डों के निकट ही दोनों पक्षियों के शरीर पड़े हुए थे। रात ही रात में न जाने कौन चुपचाप आ कर उनकी आत्माओं को ले गया था।

अब मैं बिलकुल अकेला रह गया हूं।

———

डा. राजेन्द्रप्रसाद 'हिंदू नेता' हैं

मौलाना के शिक्षाविभाग की विलक्षण खोज

'राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद हिन्दू नेता हैं, जिस प्रकार महाराणा प्रताप छत्रपति शिवाजी आदि थे'—यह अभिमत मौलाना अबुल कलाम आजाद के केन्द्रीय शिक्षा-विभाग का है, जो शिक्षा के कण्ठ की प्रतिध्वनि करता हुआ स्वयं महात्मा गांधी तक को केवल एक 'हिन्दू नेता' कहने का साहस करता है। उसका कहना है कि महात्मा गांधी एक सम्प्रदाय विशेष के उसी प्रकार नेता हैं, जैसे राम कृष्ण, अर्जुन, कर्ण- भीष्म, द्रोण, युधिष्ठिर आदि थे।

केन्द्रीय शिक्षा विभाग ने अपनी इस अद्भुत 'धर्मनिरपेक्षिता' का परिचय एक विशेष पत्र में दिया है, जो उसने उत्तर-प्रदेश सरकार को उसके शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तकों के सम्बन्ध में लिखा है और जिसमें केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्रालय ने इस राज्य के शिक्षा विभाग पर आरोप लगाया है कि वह केवल हिन्दू महापुरुषों के जीवन वृत्तांत ही पाठ्यक्रम में रख कर अन्य सम्प्रदायों के बालकों के स्वाभाविक सांस्कृतिक विकास में बाधा डाल रहा है अथवा उन्हें उन की निजी संस्कृति से पृथक संस्कृति की शिक्षा के लिये प्रेरित और प्रभावित करता है, जो संविधान की भावना के विपरीत तथा 'धर्मनिरपेक्ष' व्यवस्था के प्रतिकूल है। केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने प्रादेशिक शिक्षा-विभाग से कैफियत तलब की है कि उसकी बेसिक रीडर-भाग २ के 'हमारा देश' शीर्षक पाठ में किसी गैर हिन्दू महापुरुष का नाम क्यों नहीं दिया गया है। यह उल्लेखनीय है कि दादाभाई नौरोजी का जीवनवृत्तांत उस में है, किन्तु या तो केन्द्रीय मन्त्रालय दादाभाई को हिन्दू समझता है अथवा उसका स्पष्ट संकेत है कि किसी मुस्लिम महा पुरुष का नाम क्यों नहीं जोड़ा गया एक प्रमुख शिक्षा विशेषज्ञ ने इस आपत्ति पर हंसते हुए कहा कि अर्वाचीन मुस्लिम महापुरुषों में से तो सब पाकिस्तान चले गये, केवल एक मौलाना आजाद भारत में हैं, सो उन पर एक पूरी कविता ही इस पुस्तक में छपी है। साथ ही केन्द्रीय मन्त्रालय ने बेसिक रीडर भाग—४ में वर्णित डा० राजेन्द्रप्रसाद आदि राष्ट्रीय नेताओं को हिन्दू सम्प्रदाय का नेता बताया है। इसके अतिरिक्त कुछ पाठ्य-पुस्तकों में ईश्वर तथा उसके अवतारों की महिमा गायी गयी है। केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्रालय ने इस पर घोर आपत्ति करते हुए उसे संविधान की 'धर्मनिरपेक्ष' भावना के प्रतिकूल बताया है।

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय के इस पत्र ने इस राज्य के शिक्षा क्षेत्रों में खलबली मचा दी है और न इन क्षेत्रों में कहा जाता है कि हिन्दी के सम्बन्ध में उत्तर प्रदेश के शिक्षा मन्त्री श्री सम्पूर्णानन्द से अनेक बार मुंह तोड़ जवाब पाकर मौलाना और उनका शिक्षा मन्त्रालय इन हथकण्डों से उन्हें नीचा दिखाने का प्रयत्न कर रहा है, जो कभी सफल नहीं हो सकते। यहां यह मत व्यक्त किया जाता है कि 'सेक्यूलरिज्म' का अर्थ ईश्वर द्रोह कदापि नहीं है और न संविधान में ही कहीं यह व्यवस्था है कि धर्म की जड़ ही काट दी जाय अथवा बालकों को उनके पूर्वजों का धर्म न बताया जाय। शिक्षाविदों का मत है कि भारत के सभी सम्प्रदायों को एक करने तथा साम्प्रदायिक एकता के लिये आवश्यक है कि लोगों को धर्म के दिव्य से दिव्य न्यारी परम्पराओं से, जो प्रायः सभी सम्प्रदायों में प्रचलित हैं, अवगत कराया जाय। राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद को केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय द्वारा एक सम्प्रदाय विशेष (हिन्दू) का नेता बताये जाने पर यहां बड़ा क्षोभ व्यक्त किया जाता रहा है, क्योंकि राष्ट्रपति किसी एक सम्प्रदाय नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र के प्रतीक हैं। अगर ऐसा ही दृष्टिकोण रखा गया, तब तो मौलाना आजाद भी केवल एक 'मुस्लिम' नेता, ही माने जायेंगे, यद्यपि पाठ्य पुस्तकों में उन्हें एक भारतीय और राष्ट्रीय नेता के रूप में प्रदर्शित किया गया है। महात्मा गांधी को हिन्दू नेता कहने की प्रेरणा जिस अधिकारी ने भी दी हो, लोग उसकी बुद्धि को केवल धिक्कारते ही हैं।

डा.ग्राहम! पाकिस्तानको ठीक करो!

सहयोगियों के विचार

डा० ग्राहम ने आते ही पत्र प्रतिनिधियों से कहा कि—"विनम्रता और उच्च निष्ठा की भावना के साथ हमारा विश्वास है कि हम दोनों महान् राष्ट्रों की उनकी अपनी जिम्मेदारी के काम में सहायता कर सकेंगे ताकि जम्मू और काश्मीर की जटिल गांठ को सुलझाया जा सके।" डा० ग्राहम! जम्मू और काश्मीर की सुरम्य घाटियों में वे कौन से दो राष्ट्र हैं, जिनको मदद करने के लिए आप इतनी बेचैनी महसूस कर रहे हैं? जहां तक हमारी जानकारी है, काश्मीर में एक राष्ट्र, एक शासन व्यवस्था और एक जनता है और वहां शेख अब्दुल्ला नाम के एक काश्मीरी का मन्त्रिमण्डल है, जो न यू० पी० के किसी जिले का रहने वाला है और न पञ्जाब के। तब आप कौन से दो राष्ट्रों की मदद करने का पुण्य कार्य और मदद करने आये हैं? क्या आपके दूसरे राष्ट्र का मतलब तथाकथित 'आज़ाद काश्मीर' नाम के उस हिस्से हैं, जिस पर साढ़े तीन वर्ष पहले एक आक्रान्ता ने गैर कानूनी कब्जा कर लिया था और भारतीय फौजों ने सुरक्षा परिषद् के हुक्म की इज्जत करते हुए बीच में ही युद्ध-बन्दी घोषित करने की गलती कर डाली? भारत ने सुरक्षा परिषद् का आदेश माना और अपने एक भूखण्ड पर हमलावार लुटेरे का डेरा लगा रहने दिया, उसका यह अर्थ नहीं हो सकता कि उस अवैधानिक शिविर को एक नये राष्ट्र का सम्मान मिल गया। डा० ग्राहम जिस पश्चिमी संसार से मध्यस्थ तशरीफ लाये हैं, उसी क्षेत्र की विघातक नीति ने हिन्दुस्तान के दो टुकड़े किये। भारत और पाकिस्तान आज के दिन दो देश हैं, किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि काश्मीर में दो राष्ट्र नाम की कोई गम्भीर उलझन है।

—नवभारत टाइम्स

●

यदि हमारे प्रधान मन्त्री ने अपने देश की परम्परा का, जिसमें अतिथि को पूजनीय माना गया है, ध्यान रखते हुए उन्हें भारत का अतिथि न मान लिया होता, तो दिल्ली विमान केन्द्र पर उनका स्वागत काले झंडों तथा ऐसे पोस्टरों से किया गया होता जिन पर लिखा रहता 'आंग्ल अमरीकी षड्यन्त्र का नाश हो' 'डा० ग्राहम! लौट जाओ!'—'सुरक्षा-परिषद मुर्दाबाद।' यदि इस तरह के पोस्टर और काले झंडे ग्राहम महोदय को देखने को न मिले एवं आंग्ल अमरीकी गुट के मार विरोधी षड्यन्त्र का भंडाफोड़ करने वाले नारों ने उनके कानों में कहीं नहीं गूंज कर दिया, तो इसके लिए प्रधान मन्त्री नेहरू से अपनी कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए, जिन्होंने ऐसे अप्रिय प्रशंसा से उन्हें सुरक्षित रखने के लिए अपने आतिथ्य का कवच पहना दिया है। ... लेकिन भय है कि वे हमारे आतिथ्य प्रेम का कोई गलत अर्थ न लगा बैठें। कहीं वे यह न सोच बैठें कि वे जो कुछ करेंगे चुपचाप देखता रहेगा। भारत काश्मीर समस्या का शांतिपूर्ण समाधान चाहता है और ... उसने एक बार उस संयुक्त राष्ट्र संघ को भी यह झगड़ा मिटाने का अवसर दिया है, जो दुनिया में शान्ति का ठेकेदार बना हुआ है। यदि संघ पाकिस्तान को भारत की भूमि से हट जाने के लिए राजी नहीं कर पाता तो यही समझा जायगा कि वह झगड़ा मिटाने में असमर्थ रहा। ऐसी दशा में भारत सरकार के सामने एक-मात्र मार्ग यह होगा कि वह अपने खोये हुए क्षेत्र को तलवार के बल पर वापस ले ले। जो सरकार यह कार्य नहीं कर सकती उसे भारतवासी टिकने न देंगे।

—विश्वमित्र

●

पाकिस्तान की स्थापना से भारतीय नेता उसे चेतावनियां देते चले आ रहे हैं। प० पाकिस्तान में हिन्दुओं के हत्या-काण्ड के लिए उसे चेतावनी दी गयी, सिन्ध से हिन्दुओं के निर्वासन पर उसे सावधान किया गया, निष्क्रान्त-सम्पत्ति की जब्ती पर उसकी आलोचना की गयी, पूर्वी बंगाल में हिन्दुओं के कत्ले आम पर चेतावनी दी गयी—पं० नेहरू ने यहां तक कहा कि यदि स्थिति नहीं बदलती तो हमें अन्य उपाय अपनाने के लिए विवश होना पड़ेगा, किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। हिन्दुओं को नेस्तनाबूद करने और भारत को क्षति पहुंचाने का पाकिस्तानी प्रयत्न जारी रहा। प्रत्येक अवसर पर और हर सम्भव उपाय द्वारा उसने भारत को बदनाम करने का उपक्रम किया। भारत सरकार की दब्बू नीति का लाभ उठाकर वह अपने घातक इरादों को पूरा करने में लगा रहा। दिल्ली समझौते द्वारा उसने अपने पापों पर पर्दा डालने में सफलता पायी। हर बार वह भारतीय नेताओं को भ्रम में डालने में कामयाब हुआ। क्या इस बार भी वैसा ही न होगा? काश्मीर पर पाकिस्तान के हमले, पूर्वी बंगाल से हजारों हिन्दुओं का निष्क्रमण और भारत में मुसलमानों का जगह-जगह उपद्रव क्या सब एक ही सूत्र से परिचालित नहीं हैं!

—स्वदेश

ऐसा दूध पिलाया कि····

कुमारी सन्तोष

किसी नगर में एक सेठजी रहते थे। व्यापार तो लाखों का करते थे, किन्तु कन्जूस और वहमी थे एक नम्बर। किसी पर भी विश्वास न करते। उनकी पत्नी और बच्चे भी यदि कोई बात कहते थे तो उसपर उन्हें विश्वास न होता था। वे सदा यह सोचते रहते थे कि कहीं यह लोग भी मुझे हानि न पहुंचावें। भोजन के बारे में उनको सदा यही सन्देह रहता था कि न मालूम मुझको कोई ढंग से खिलावेगा भी या नहीं।

सेठजी रात को सोते समय दूध पीते थे। किन्तु जब तक उनकी पत्नी उन्हें दूध पिलाती रही, उन्हें विश्वास ही न हुआ कि मुझको पूरा दूध मिलता है। उन्हें अक्सर सन्देह रहता था कि मुझे दूध भी कम दिया जाता है और उसमें से मलाई भी निकाल ली जाती है।

अन्त में इस काम के लिये उन्होंने एक नौकर रखा और उस नौकर के कार्य की देखभाल के लिये एक नौकर और रखा। वैसे तो सेठजी एक नंबर कंजूस थे। लेकिन अपने वहम के कारण उन्होंने दो नौकर रखने में संकोच नहीं किया।

दो नौकर रखलिये गये। सेठजी उनको चार आने दूध के लिए देते थे। वे दोनों दो आने का दूध सेठजी को पिला कर शेष दो आने आपस में बांट लेते थे। सेठजी इस पर बड़े घबराये। नौकर दूध में पानी मिला देते थे, जिससे सेठ जी जैसा दूध चाहते थे, वैसा नहीं मिल पाता था। अन्त में उन्होंने इन दोनों नौकरों के ऊपर एक नौकर और रखा। अब इन तीनों ने भी एक एक आना बांटना शुरू कर दिया और सेठजी के हिस्से में सफेद पानी ही पड़ा।

अन्त में हारकर सेठजी ने खूब ठोक बजाकर एक नौकर और रखा अब सेठजी को पूरा विश्वास होगया कि मुझे मलाई दार अच्छा दूध मिलता रहेगा। जब चौथा नौकर आ गया तो तीनों नौकर घबड़ाए। समझा कि अब हमारी दाल नहीं गलेगी। लेकिन वह भी पूरा चालाक था। उसने कहा— "आओ अब हम चारों ही एक एक आना बांट लिया करें।" उनमें से एक नौकर ने कहा— "अब चार आनों में से हम एक एक आना खुद ही बांट लेंगे तो सेठ जी को क्या पिलायेंगे।

नए नौकरने कहा— "इसका उपाय मैंने पहले ही सोच लिया है। आप लोग निश्चिन्त रहें,,

सेठ जी को एक आदत और थी। वह थी कि वे रात को सोते समय अफीम का सेवन करते थे। फिर बैठे बैठे आधी रात तक पीनक में झूमते थे। एक दिन दिन रात को जब सेठ जी पीनक में थे तो नए नौकर ने कहीं से मलाई लाकर सेठजी की मूछों में लगादी। सवेरे जब सेठजी उठे तो मूछों पर जीभ फिराकर कहने लगे— "यह नौकर बड़ा ही ईमानदार है, ऐसा अच्छा दूध पिलाया कि मलाई अब तक मूछों पर लगी है"

❀ द्वितीयो दधीचिः संयमरायः ❀

अनुवादक—दामोदरसिंहः शास्त्री

नास्ति कश्चिदेतादृशो हिन्दुः, अस्मिन् भारतभुवि यः पृथ्वीराजचौहानस्य नाम्ना परिचितो न स्यात्। पृथ्वीराजो-ऽन्तिमो हिन्दुषु दिल्लीश्वर आसीत् यस्मात्परं यवनानां शासनं दिल्लीसिंहासने जातम्। अस्य राज्ञः समीपे छायावदनुवर्ती एकः शूरः संयमरायो नाम आसीत्।

एकदा युध्यमानः पृथ्वीराजो मूर्च्छितो भूत्वा युद्धस्थले निपतितवान्। तस्य समीपे क्षतविक्षतः संयमरायोऽपि पतित आसीत्, परं स किञ्चित् सचेत आसीत्। पतितं पृथ्वीराजं मृतं ज्ञात्वा बुभुक्षिता मांसलोलुपा गृध्रा आकाशे पर्यभ्रमन्। किञ्चित्कालानन्तरं यदा गृध्रैः सुनिश्चितम् यन्महाराजो मृतः तदा द्विजैस्तु स्वचञ्चुप्रहारोऽपि प्रारब्धः। एतत्सर्वं दृष्ट्वा किंकर्तव्यविमूढः असमर्थः संयमरायो मनसि नितान्त दुःखितोऽभवत्।

तेनोत्थातुं चेष्टा कृता। परमपरिमितरुधिर निःस्रावेण निश्चेष्टीकृतोऽयन्जनः स्वकर्तव्यपालनेऽसमर्थोऽभवत्।

परं अस्य क्षणमात्रविलंबेन महाराजपृथ्वीराजस्य जीवनं संकटापन्नं अभवत्। यतोहि गृध्राः प्रतिक्षणं स्वतीक्ष्णचञ्चुप्रहारेण महाराजस्य मांसखण्डान् खादन्ति स्म।

कतव्यपरायणसामन्तेनाचिरादेव स्वशरीरात् मांसं खण्डीकृत्य गृध्राणां संमुखं पातयितुमारब्धम्।

गृध्रैर्मांसलवान्वेषणरताः, स्वामिनं यस्तु कश्च्या महाराजस्य त्वक्त्वा तदुपरि पतितवन्तः।

एवं तेन सामन्तेन स्वशरीरस्य महान् मांसस्तोमो सम्मुखे पातितः।

किञ्चित्कालानन्तरं सम्राट् चैतन्यं प्राप। नेत्रे उन्मील्य तेन सामन्तस्य बालक्रीडा दृष्टा। परमनेन सामन्तो मृतप्रायो-ऽभवत्।

आर्द्र कण्ठेन महाराजेन तस्य स्वामिभक्ति प्रशंसा कृता, उत्थाय च गृध्रान् उत्थापयितुं चेष्टा कृता परं तावत्तस्य प्राणाः भौतिकमिदं नश्वरं कलेवरं अजहुः। एवं तेन स्वामिभक्तेन स्वकर्तव्यपूर्तिर्विहिता।

चुटकुले

मोहन—(छोटे भाई से) 'तुमने मेरी पूरी क्यों खाई?'

सोहन—'तुम्हारी कहां! मैंने तो आटे की खाई है।

× × ×

एक बार एक सेठजी के यहां कुछ चोर आये और वे रुपयों का सन्दूक लेकर भाग गये। अब सेठानी ने यह सुना तो रोने लगी। इस पर सेठजी बोला—'सन्दूक ले गये तो क्या हुआ ताली तो मेरे ही पास है।'

× × ×

मास्टर—'भाई! यह तो छोटी-सी बात है—कोई गधा भी समझ सकता है।

नरेन्द्र—'ठीक है, मास्टर साहब गधा तो समझेगा, मैं थोड़े ही।

× × ×

मास्टर—'रामू, तुम आज कसूर का लेख क्यों नहीं लिखकर लाये?'

रामू—'गुरुजी, मैं ज्यों ही कलम और दवात लेकर नदी किनारे पहुंचा उसी समय दैवात् बस्ता पानी में सरक गया।'

× × ×

पुत्र—माँ नारियलमें दूध होता है।

माँ—हाँ बेटा।

पुत्र—तो माँ उसे दोहते कैसे हैं।

× × ×

एक सैनिक छावनी में दो सैनिक अपने दिल की बातें कर रहे थे—एक ने पूछा—'भाई किन कारणों से तुम सेना में भर्ती हुए?'

'मेरे पत्नी नहीं है और मैं युद्ध पसन्द करता हूं।' और तुम क्यों सेना में भरती हुए?

'मेरे तो पत्नी है, किन्तु मैं शान्ति पसन्द करता हूं, इसलिए सेना में आया।'

× × ×

मालिक—[नौकर से] 'जा, जल्दी से मेहमानों के लिये पान ले आ।'

नौकर—'जो आज्ञा!'

मालिक—[उसे हाथ में पान लाता देखकर]

'क्योंरे! मैंने तुझे कितना समझाया कि जब कोई बैठा रहे तो हमेशा जो चीज मांगी जाये तश्तरी में रख कर बाहर लाया कर।'

नौकर—[हाथ जोड़कर] 'भूल हुई हुजूर।'

मालिक—[कुछ देर के बाद] 'अन्दर से मेरे जूते तो ले आ।'

नौकर तश्तरी में जूते रख कर के लाया।

मालिक—'यह क्या?'

नौकर—'हुजूर ही का तो हुक्म है।'

सफल चित्र "सिपाहिया" के निर्देशक आसपी द्वारा इसी चित्र का निर्देशन किया गया है।

सागर

पी० के० फिल्म्स यूनिट लिमिटेड कृत 'सागर' जगत टाकीज डिस्ट्रीब्यूटर्स द्वारा इस सप्ताह राजधानी में तथा उत्तर भारत के अन्य प्रमुख नगरों में प्रदर्शित किया गया। सिनेमा जगत के प्रसिद्ध कलाकार नरगिस, जय राज, दुर्गाखोटे, के एम सिंह, डेविड,

यू बी मजाम्बर

एम बी रमन

यू. बी. एम. लि के आधारस्तम्भ

रजनी इत्यादि के कलापूर्ण अभिनय से चित्र अति सफल रहा।

बादल

राजधानी के सिनेमा क्षेत्र में वर्मा फिल्मज कृत 'बादल' की चर्चा खूब जोरों पर है। कथानक में प्रेम और वीरता का सम्मिश्रित और एक देश भक्त के मन की नारी के प्रति कोमलता और विदेशी पुरुषों के प्रति कठोर हृदय का भली प्रकार प्रदर्शन किया गया है। प्रधान भूमिका में प्रेमनाथ व मधुबाला है और निर्देशन 'अमिय' चक्रवर्ती द्वारा किया गया है। चित्र के वितरक नेशनल फाई नैंस आफ इण्डिया लि० है जो निकट भविष्य में फेमस पिक्चर्स कृत दो 'सितारे' भी शीघ्र प्रदर्शित कर रहे हैं। इस सामाजिक चित्र की प्रधान भूमिका में सुरैया और देवानन्द हैं और निर्देशन को डी डी कश्यप द्वारा आयोजित किया गया है।

आन्दोलन

मोर वाले लि० बम्बई का 'आंदोलन' [हमारा संघर्ष] उत्तर भारत में शीघ्र ही जगत टाकीज लि द्वारा प्रदर्शित किया जायेगा। देश भक्तों द्वारा स्वतन्त्रता के युद्ध का प्रदर्शन इस चित्र में १२ नवीन कलाकारों द्वारा किया है। सम्भावना है कि अगस्त में स्वतन्त्रता दिवस पर यह चित्र राजधानी में प्रस्तुत किया जायेगा।

कालीघटा

हिन्दुस्तान चित्र का नवीन चित्र "कालीघटा" शीघ्र ही राजधानी तथा उत्तर भारत के अन्य प्रमुख सिनेमाओं में प्रदर्शित किया जायेगा। निर्माता व निर्देशक 'किशोर साहू' के गत चित्रों की सफलता को देखते हुए विश्वास होता है कि यह चित्र भी सफल रहेगा। प्रधान भूमिका में निर्देशक किशोर साहू ने स्वयं बीना राय व आशा माथुर के साथ अभिनय किया है। संगीत शंकर व जयकिशन द्वारा आयोजित है। वितरण अधिकार गुडविल पिक्चर्स के के पास हैं।

बड़े भैया

वाडिया मैरामाउन्ट का चिर प्रतिक्षित सामाजिक चित्र "बड़े भैया" देहली के तीन प्रमुख सिनेमाओं में इस सप्ताह प्रदर्शित किया गया। चित्र में हास्य नृत्य के अतिरिक्त कार्निवाल के अद्भुत करतब विशेष रूप से प्रस्तुत किये गये हैं। चित्र का संगीत प्रशंसनीय है। कलाकार–निरुपाराय, याकूब, आगा और सुरेश का अभिनय स्वाभाविक है। राजधानी में प्राप्त सफलता से यह विश्वास होता है कि यह चित्र अन्य स्थानों पर भी सफल रहेगा।

'दुपट्टा' में निगार
[illegible] डिस्ट्रीब्यूटर्स द्वारा वितरित

[पृष्ठ २ का शेष]

प्रतिकूल और अवैध घोषित किया। स्मरण रहे हाल ही में लंका में एक कानून द्वारा भारतीयों को मताधिकार से वंचित कर दिया गया है।

इस एक्ट के अनुसार मतदाता बनने की कम से कम योग्यता दी गई है भारतीय जज ने अपने निर्णय में कहा कि संसद को यह अधिकार नहीं है कि वह कोई भी ऐसा कार्य कर सके, जो संविधान के (२) अनुच्छेद के विपरीत हो। यह साधारण सिद्धान्त है कि जो कुछ तुम प्रत्यक्ष रूप से नहीं कर सकते, वह अप्रत्यक्ष रूप से भी नहीं कर सकते। नागरिकता एक्ट में ऐसी योग्यताएं निश्चित की गई हैं, जो भारतीय में नहीं और इस प्रकार वह नागरिकता तथा परिणाम स्वरूप मतदाता नहीं हो सकते। संसद को अधिकार है कि वह चुनाव के कानून बना सकती है, किन्तु वह कानून किसी समुदाय के हितों के विपरीत नहीं होने चाहिए यह कानून भारतीयों के हितों के विपरीत है। जिनके हितों की भी (२) अनुच्छेद द्वारा पूर्ण रक्षा की गई है। इसलिए इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह कानून मताधिकार कुछ विशेष समुदायों के अधिकार रहने देने और अन्य लोगों को इससे वंचित करने के लिए बनाया गया है।

(पृष्ठ १ का शेष)

नन्दी पद तक से त्याग पत्र देने की धमकी दी तो वह इसे भी स्वीकार करने में विशेष आनाकानी न करेंगे। ऐसी स्थिति में यह तो सम्भव है कि बंगलौर में पं० नेहरू कांग्रेस से अलग हो जावें और श्री किदवई के साथ ही आचार्य कृपलानी की किसान मजदूर प्रजा पार्टी में सम्मिलित हो जावें, किन्तु यह सम्भव नहीं है कि श्री टंडन जी कांग्रेस की बागडोर छोड़ दें। वास्तविकता तो यह है कि कोई भी व्यक्ति जीवन से बड़ा नहीं होता। यदि पं० नेहरू ने कांग्रेस छोड़ दी और अपना प्रधान मन्त्री पद त्याग दिया, तो उन की शक्ति तुरन्त ही बहुत क्षीण हो जायगी, जैसी कि नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस की कांग्रेस से पृथक होने के पश्चात् हो गई थी और वह देश से बाहर जाकर ही पुनः उठ सके थे।

नेहरू युग का अन्त

इन सब बातों का ध्यान देते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेस का नेहरू युग बंगलौर से समाप्त हो जायगा और टंडन युग का श्रीगणेश होगा। आज की देश की हीन दशा के लिये पं० नेहरू को मुस्लिम परस्त तथा झूंठी अहिंसा की नीति ही उत्तरदायी है। उन के हटने से देश की बहुत सी समस्याएं स्वतः ही सुलझ जायेंगी।

इण्डियन नेशनल फिल्मूज कारपोरेशन लिमिटेड दिल्ली की स्थापना का वास्तविक उद्देश्य क्या है?

क्या वर्तमान स्थितियों में कम्पनी अपनी शुभकामनाओं में सफल हो सकेगी?

क्या यह वर्त्तमान सिनेमा जगत में क्रान्ति लाने में सफल हो सकेगी?

बहुत से प्रश्न हैं जो प्रत्येक व्यक्ति मुझसे पूछ रहा है और जो व्यक्ति इस लाइन में जरा भी दिलचस्पी रखता है वह कठिनाइयों को अच्छी तरह जानता है। आजकल प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह फिल्म प्रोड्यूसर बन जाए चाहें उसे यह भी मालूम न हो कि फिल्म चीज क्या होती है जिसका परिणाम यह हो रहा है कि ना मालूम कितनी कम्पनियां बनती हैं और कुछ महीने बाद अपनी मौत स्वयं समाप्त हो जाती हैं। इस प्रकार यह लाइन इस बुरी तरह बदनाम हो चुकी है कि यदि नेक नियती से भी काम किया जाए तो भी लोग विश्वास तक करने को तय्यार नहीं होते। फिल्म कम्पनियों के बारे में एक शब्द चक्कर लगाता रहता है वह है "बोगस"। मैंने इस तीन माह की अवधि में लगभग छः हजार आदमियों से इस विषय पर बातचीत करने की कोशिश की है लेकिन इनमें से मेरा विचार है कि लगभग ८० प्रतिशत आदमियों ने बगैर झिझक मुझे ही वही रटा हुआ वाक्य दोहरा दिया—कोई बार, यह सब बोगस कम्पनियां होती हैं लेकिन जब उन्हें मैं यह कहता हूं कि यह कम्पनी मैंने खोली है, मेरा यह प्रोग्राम है तो वे कुछ दिलचस्पी लेते हैं। लेकिन दूध का जला छाछ को भी फूंक २ कर पीता है। कोई शीघ्र विश्वास करने के लिए तय्यार नहीं होता और प्रारम्भ में मुझे वह समय भी देखना नसीब हुआ जब कि मेरे हृदय में विचार आया कि मैं इस कम्पनी को बन्द कर दूं लेकिन मैंने हिम्मत न हारी। अपने हाथों दफ्तर में झाड़ लगाया और कोशिश की कि किसी तरह इस कम्पनी को सफल बना सकूं और मैं अपने मित्रों का अत्यन्त आभारी हूं जिन्होंने मुझे इस आड़े समय में सहायता दी और आज कम्पनी को इस योग्य बनाया कि मैं आज गर्व से यह घोषित कर सकता हूं कि कम्पनी नियत समय पर शूटिंग शुरू कर सकेगी।

यह ठीक है कि आजकल ९०% लोगों ने नए पात्रों की आवश्यकता का विज्ञापन देकर लड़के लड़कियों के लूटने का कारोबार चला रखा है लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि एक आदमी जो ईमानदारी से कार्य करना चाहता है, बड़ा से बड़ा बलिदान देने को तय्यार है, लोगों को किस तरह से विश्वास दिलाए कि वह वास्तव में काम करना चाहता है। मेरे पास न तो वह शानदार दफ्तर है जिसमें आकर लोग जो कि फिल्म कम्पनी वालों को स्वर्ग समझते हैं, उसकी शान देखकर चकित हो जाएं।

और न मैं वे चालाकी तरीके जानता हूं जिससे बिजनैस प्राप्त कर सकूं। मैं तो केवल एक चीज जानता हूं। अपना प्रोग्राम साफ शब्दों में जनता के सामने रख देता हूं चाहे वह इसे बोगस समझे या काम की चीज। लेकिन मुझे दुःख इस बात का होता है जब मेरे कानों में बगैर कुछ सुने 'बोगस' के शब्द पड़ते हैं। मैंने खुद आज तक किसी ऐसे आदमी से बिजनैस लेना ठीक नहीं समझा जो कि कम्पनी को अच्छी तरह न समझ गया हो क्योंकि मुझे रुपयों से ज्यादा कम्पनी की इज्जत की जरूरत है। मुझे अगर फिल्मी लाइन से दिलचस्पी है तो केवल इस किस्म की फिल्मों से जिससे मैं अपने देशवासियों की कुछ सेवा कर सकूं। और अगर आज मैं यह न कर सका तो यकीन जाने मैं स्वयं आपसे कह दूंगा कि यह मेरे बस का रोग नहीं। मुझे इतना लम्बा चौड़ा मजमून लिखने की जरूरत इसलिए हुई है कि मुझे इस सफलता को प्राप्त करने के लिए आपकी सहायता की जरूरत है और आपकी सहायता केवल उस समय ले सकता हूं जब कि आपके दिल से वे तमाम सन्देह दूर कर सकूं जो विभिन्न कम्पनियों ने आपके दिमाग में बैठा रखे हैं।

मैंने इस कम्पनी को २ लाख के लिए लिमिटेड बनवाया है और इस पूंजी को १० १० रु० के हिस्सों में बांटा है ताकि गरीब से गरीब आदमी भी हिस्से खरीद कर अपना कर्तव्य पूरा कर सके। कम्पनी की पहली क्रान्तिकारी फिल्म "जनता इन्साफ मांगती है" में मैंने तमाम नए पात्र उपस्थित करने का निश्चय किया है। इस तरह से हम जहां बहुत से नए पात्र आपके सामने ला सकेंगे वहां बहुत सा रुपया बरबाद होने से भी बचा सकेंगे। हिस्से खरीदने की प्रशंसा करने से पहले मुझे एक बार फिर अपने भाइयों से अपील करना है कि वह केवल 'बोगस' का शब्द छोड़कर इस कम्पनी को समझने की कोशिश करें और अगर उन्हें कोई वास्तविकता नजर आए तो वे अपनी हिम्मत से बढ़कर सहायता देने की कृपा करें ताकि मैं आपको बता सकूं कि फिल्मों से क्या काम लिया जा सकता है। इस समय तक मैं लगभग एक लाख रुपये के हिस्से बेच चुका हूं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इसमें आपको काफी आर्थिक लाभ हो सकेगा लेकिन किसी भी हालत में मैं आपका रुपया बरबाद नहीं होने दूंगा। लाभ का रुपया जिसने जिस अनुपात से रुपया जमा रखा होगा उस अनुपात से बांट दिया जायगा। किसी को भी २ हजार से ज्यादा के हिस्से नहीं दिए जाते ताकि प्रत्येक व्यक्ति फायदा उठा सके। मुझे आशा है कि वर्तमान आवश्यकता को समझते हुए आप लोग मुझे ज्यादा से ज्यादा हिस्से खरीदकर अपना सहयोग दे सकेंगे जिससे प्रथम क्रान्तिकारी फिल्म "जनता इन्साफ मांगती है" में काम करने के लिए हीरो हीरोइन और दूसरे महत्वपूर्ण रोल अदा करने के लिए लड़के लड़कियों की जरूरत है।

मिलें या लिखें—

एस० के आनन्द

संचालकः इंडियन नेशनल फिल्मस कारपोरेशन लिमिटेड,

लाजपतराय मार्केट, चाँदनी चौक, दिल्ली।

रूसी प्रतिनिधि मैलिक मलिक के शांति-प्रस्ताव पर राष्ट्र संघ विचार कर रहा है।

बाद में विचार का प्रचार करेगा और उसके बाद तिरस्कार करेगा। इस विचार प्रसार और तिरस्कार के बाद भी परमात्मा भी नहीं बचेगा।

× × +

यू० एन० ओ० के मध्यस्थ के विरोध का हमारा कोई विचार नहीं।

—भारत सरकार

क्योंकि इस काम के लिए तो घर से ही फुर्सत नहीं।

× × ×

कानपुर में भी साम्प्रदायिक दंगा हो गया और उसमें एक इन्सपेक्टर भी घायल हुआ।

अब तक अपनी सरकार असाम्प्रदायिक है, साम्प्रदायिक दंगे तो कहीं जाते नहीं, हां, मार पीट से दूर रहने वाली पुलिस साम्प्रदायिक दंगों में पिटने लगी, यह है आश्चर्य की बात।

× × ×

हिन्दुस्तान समाचार समिति का कहना है कि दिल्ली के १२०० रिक्शेवालों के ३००० हजार रुपये डकार कर नेता लोग १-२-३ हो गये।

निश्चय ही नेता लोग किसी होटल में पड़े हुए नये चुनावों में एम० एल०-सी० बनने की सोच रहे होंगे।

× × ×

डा० राधाकृष्णन का कहना है कि स्तालिन शांति के इच्छुक हैं।

लेकिन बेचारे करें क्या, शांति ही उन्हें शान्त बैठने नहीं देती। कभी कोरिया ले जाती है और कभी ईरान।

× × ×

जर्मनी की रूसी सरकार ने पुराने जर्मन लुफ्टवाफे (वायु विभाग) का पुनर्गठन कर लिया है।

रास्ते रूस के उसके देखे भाले हैं ही गुड इवनिंग मास्को में देंगे।

× × ×

जिला कांग्रेस कमेटी का प्रतिनिधि चुनने के प्रश्न पर हुई मारपीट में अम्बाला के कई कांग्रेसी अस्पताल में दाखिल हुए।

कांग्रेस को चाहिए कि कांग्रेस कार्यालयमें फर्स्टएड (प्राथमिक चिकित्सा) की पेटियाँ रक्खा करें? चुनावों के दिनों में यदि आपस में सिरफुटाई का लोग मूर्छित और अस्पतालमें जगह न मिली तो दो चार नेता कम हो जाने का भय है।

× × ×

उत्तर प्रदेश की प्रजापार्टी (जमींदार-दल) अपने चुनाव घोषणा पत्र पर नैनीताल में विचार कर रही है।

विचार के लिए जगह तो जमींदारों ने अच्छी चुनी है, ठंडी। लेकिन यदि सारी बरसात विचार में ही गुजर गई तो बाद में ओले ही पड़ेंगे।

× × ×

पटने के सदाकत आश्रम में नेहरू जी ने बताया कि कांग्रेस की पवित्र शक्ति नष्ट हो चुकी।

अपने राम को तो अभी तक विरोधियों के यह कहने का विश्वास नहीं हुआ था कि भ्रष्टाचारियों और चोर बाजारियों ने कांग्रेस की जान निकाल दी।

× × ×

६० हजार बुनकरों की दशा सुधारने के लिए उत्तर प्रदेश द्वारा १॥ लाख रुपये की एक वर्ष से खरीदी गई मशीन आज़मगढ़ स्टेशन पर पड़ी है।

अब उसे किसी दूसरे स्टेशन पर डाल कर सरकार को कबाड़ियों को १००-२० रुपये में नीलाम करा देना चाहिये। बुनकरों की दशा न सुधरी तो २-४ कबाड़ियों की ही सुधर जाय।

× × ×

डा० गोपीचन्द भार्गव का कहना है कि पंजाब में गवर्नरी शासन प्रजातन्त्र का अपमान है।

आप गलत समझे, सरकार कभी किसी का अपमान नहीं करना चाहती। वह तो आप लोगों को अपना बोलने के लिए और समय देना चाहती है।

× × ×

बनारस में थाने के सामने ही शराब बिकती है।

—एक सम्वाद

अन्दर नहीं बिकती यही बहुत है।

× × ×

उड़ीसा की सरकार का दिवाला निकल गया।

—एक समाचार

शासन से विदा होने से पहिले सभी सरकारों का यही हाल होता है। उदाह-के लिए देशी अनेक हाकिम हैं।

—पाराशर

मध्यभारत के आदिवासी

मध्यभारत प्रान्त का निर्माण २५ देशी राज्यों के विलीनीकरण से हुआ है। इस महान प्रान्त का कुछ भाग पहाड़ी प्रदेश है और मुख्यत विन्ध्याचल व सतपुड़ा पर्वतों की श्रेणियां इस पर्वतीय भाग में फैली हुई हैं। दोनों पर्वतों की श्रेणियां व उनके ढाल व पठारी भाग घने जंगलों से ढके हुए हैं, जिनका क्षेत्रफल प्रान्त के क्षेत्रफल के एक-चौथाई से कुछ ही कम है। मध्यभारत के पर्वतों की कन्दराओं में, घने जंगलों से घिरी हुई घाटियों में नगरों से दूर लकड़ी व फूस के झोपड़ों में हमारे दस लाख से कुछ अधिक आदिवासी निवास करते हैं। प्रान्त के दक्षिण-पश्चिम भाग में अधिकांश आबादी आदिवासियों की है जो लगभग ८९ प्रतिशत हैं। भूतपूर्व झाबुआ, अलीपुर, जोबट, काठीवाड़ा मथवाड़ राज्य तथा होल्कर राज्य का पेटलावद परगना मिलाकर झाबुआ जिले का निर्माण किया गया है, जिसमें ८९ प्रतिशत आबादी आदिवासी भील भिलाला व पटलियों की है। भूतपूर्व धार राज्य का अधिकांश क्षेत्र, भूतपूर्व ग्वालियर राज्य का सरदारपुर जिला मिलाकर धार जिला बनाया गया है, जिसमें (बदनावर तहसील को छोड़कर) अधिकांश आबादी भील भिलाला व बारेलों की है। भूतपूर्व बड़वानी राज्य व भूतपूर्व होल्कर राज्य के खरगोन व सेंधवा जिलों को मिलाकर निमाड़ जिले का निर्माण किया गया है जहां पर अधिकांश आबादी भील-भिलालों की है और कुछ बारेल जाति के आदिवासी भी रहते हैं। भूतपूर्व सैलाना राज्य भूतपूर्व रतलाम राज्य की बाजना तहसील में, जो रतलाम जिले में विलीन हो चुकी है, मुख्यत भील रहते हैं। भूतपूर्व होल्कर राज्य के नेमावर तहसील में, जो अब देवास जिले में मिला दी गई है, कोरकू व गोंड रहते हैं। भूतपूर्व होल्कर राज्य के इन्दौर जिले में जो मध्यभारत बनने के पश्चात् भी इन्दौर जिला ही कायम रखा गया है, बारेला जाति के आदिवासी रहते हैं, परन्तु उनकी संख्या अधिक नहीं है। भूतपूर्व ग्वालियर राज्य के मन्दसौर जिले के पहाड़ी क्षेत्र में जो मध्यभारत प्रान्त का भी जिला है तथा भूतपूर्व राजगढ़ व नरसिंहगढ़ राज्यों में जो अब राजगढ़ जिला है भील जाति के आदिवासी रहते हैं, परन्तु उनकी संख्या बहुत ही कम है। भूतपूर्व ग्वालियर राज्य के गुना, शिवपुरी व मुरैना जिलों में, जो प्रान्त के उत्तर पूर्वीय भाग में हैं और मध्यभारत के भी जिले बनाये गये हैं, सेहरिया जाति के आदिवासी हैं जिनकी संख्या लगभग एक लाख है। मध्यभारत प्रान्त बनने के पश्चात् समस्त झाबुआ जिला, धार जिला-बदनावर तहसील को छोड़कर-तथा खरगोन जिला व रतलाम जिले की सैलाना तहसील, जहां अधिकांश आबादी आदिवासियों की है, परिगणित क्षेत्र घोषित कर दिया गया। भारत के संविधान की पंचम अनुसूची के भाग (ग) की कलम ६ के अन्तर्गत राष्ट्रपति ने भी आदेश द्वारा उपरोक्त क्षेत्र को अनुसूचित क्षेत्र घोषित कर दिया है।

आदि जातियां

मध्यभारत की आदिम जातियों में भील, भिलाला व पटलिये हैं, जिनकी संख्या लगभग ८ लाख है। ये तीनों जातियां एक दूसरे से मिलती-जुलती हैं, केवल उनके जाति-रिवाजों में कुछ अंशों में भेद है। इन जातियों में भील अधिक हैं व पटलियों की संख्या बहुत ही कम है। बारेलों की संख्या भी कम है और यह जाति भील-भिलालों से भी पिछड़ी हुई है। कोरकू व गोंड की आबादी बहुत कम है और इनके रीति-रिवाज निकटवर्ती मध्यप्रान्त में बसनेवाले कोरकू व गोंडों से मिलती-जुलती है। सेहरियों की संख्या लगभग १ लाख के है, जिनके रीति-रिवाज की समानता अन्य जातियों के आदिवासियों से नहीं है, बल्कि यह जाति बहुत ही पिछड़ी हुई है और उनकी आर्थिक स्थिति भील-भिलालों की अपेक्षा अत्यन्त दयनीय है।

रीति रिवाज और सामाजिक स्थिति

भारत के अन्य प्रान्तों के आदिवासियों के समान मध्यभारत की आदिम जातियां पिछड़ी एवं उपेक्षित रही हैं। उनका रहन-सहन एवं संस्कृति प्राचीन युग के वनवासियों जैसी जंगली व असभ्य चली आ रही है। युग-युगान्तर में हुए परिवर्तनों का प्रभाव इन आदिम जातियों पर लेशमात्र भी नहीं हुआ, और वे पिछड़ी हुई जातियां ही बनी रहीं। शासन व समाज द्वारा सदा उनकी उपेक्षा ही नहीं की गई वरन् उनका निरंतर भयंकर रूप से शोषण भी किया जाता रहा है। फलस्वरूप सदा आदिवासियों की आर्थिक स्थिति शोचनीय रही, जिससे उनके विकास का द्वार सदैव बन्द ही रहा। उनकी आर्थिक, सामाजिक एवं औद्योगिक उन्नति न हो सकने का उत्तरदायित्व आदिवासी क्षेत्र में प्रचलित शासन व शोषण करने वाले समाज का रहा है। कुछ अंशों में उनकी शोचनीय दशा व अवनति के लिए स्वयं आदिवासी भी दोषी रहे हैं। कारण उनके

कुछ विशेष अवसरों पर मध्यभारत के आदिवासी हर्षोत्फुल्लित हो इसी प्रकार गाते बजाते देखे जाते हैं।

रीति-रिवाज, आचार-विचार एवं कुरीतियां उनकी उन्नति के मार्ग में बाधक रहीं हैं।

सामाजिक दृष्टि से देखा जाय तो दुर्भाग्यवश आदिवासियों की स्थिति बहुत ही पतित व दूषित है अथवा उनमें चरित्र का अभाव है। उनकी जाति में जो प्रथाएं व रिवाज अनादि काल से चले आ रहे हैं वे दुराचार व भ्रष्टता के मूलकारण हैं। उच्च जातियों में जिस प्रकार शादी-विवाह करके नियमित रूप से गृहस्थ जीवन का पालन किया जाता रहा है, साधारणतया आदिवासियों में— विशेषकर भील - भीलालों में — ऐसा नहीं पाया जाता है। विवाह की रस्म बहुत कम आदिवासियों में की जाती है। विवाहित स्त्री किसी भी समय अपने पति को छोड़ कर किसी अन्य आदिवासी के घर स्त्री बन कर रहने लग जाती है। इस प्रकार पति पत्नी का नाता किसी समय भी तोड़ा जा सकता है, जैसे तलाक द्वारा सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है। विवाहित पति को ऐसी पत्नी पर कोई अधिकार नहीं रहता है। वह सिर्फ दहेज में दिये हुए रुपये ही वापिस पाने का अधिकारी माना गया है। बहुधा कुंवारे लड़के लड़कियों में 'कोर्टशिप' द्वारा प्रेम भाव बढ़ जाता है, यहां तक कि लड़के अपने साथियों को लेकर पूर्व योजनानुसार हाट बाजार व मेलों से वापिस घर जाती हुई या जंगलों में से लड़कियों को पकड़ ले जाते हैं। इस प्रथा को भील भिलालों की भाषा में 'घसीना' कहते हैं। इस प्रकार भगाई हुई लड़कियों को वही अधिकार प्राप्त होते हैं जो एक विवाहिता स्त्री को उनके जाति रिवाज के अनुसार होते हैं। लड़की का पिता या भाई सिर्फ दहेज के रुपये ही लड़के पिता से पाने का अधिकार रखता है। प्रौढ़ स्त्रियां, जिनके काफी सन्तानें हो जाती हैं, प्रेमवश या पति से असंतुष्ट हो जाने के कारण अपने पति को छोड़ कर अन्यवासियों के घर में पत्नी बनकर रहने लग जाती हैं। पहिला पति केवल दहेज की रकम, जो उसने लड़की के पिता या भाई को दी थी, नये पति से पाने का अधिकारी होता है। इस प्रकार की प्रथा को भील-भिलाले व पटलियों की जाति में 'घर में भरा जाना' कहते हैं।

"घर-जमाई" याने गृह-जामाता रखने की प्रथा भी आदिवासियों में विशेषकर भील भिलाला व पटलियों में प्रचलित है। घर-जमाई से वर्षों खेती-बाड़ी का काम लिया जाता है, और जब वह स्वतन्त्र रूप से निर्वाह करने योग्य हो जाता है तो लड़की व जमाई को कास्त की जमीन व बैल आदि देकर पृथक कर दिया जाता है। पृथक होने के समय जमाई को लड़की पर पति के अधिकार प्राप्त हो जाते हैं। घर-जमाई रखने की कोई रस्म किसी प्रकार की नहीं मनाई जाती है। यदि जमाई को अलग करने के पहिले ससुर व घर जमाई में झगड़ा हो जाय तो घर-जमाई को घर से निकाल दिया जाता है और उसको किसी प्रकार का अधिकार लड़की पर प्राप्त नहीं होता।

आदिवासियों में, विशेषकर भील भिलाला व पटलियों में, दहेज की प्रथा उच्चकोटि की जातियों में प्रचलित प्रथा के विपरीत है। लड़की का पिता कोई रुपया या सामान दहेज में लड़के को नहीं देता है। बल्कि वह लड़के के पिता से रुपये, सामान बैल, आदि दहेज में लेता है। इस दहेज को आदिवासियों की भाषा में "दहेज धापा" कहते हैं। "दहेज धापा" यदि आपस में लिया दिया न जाय तो न्यायालयों द्वारा वसूल किया जाता है। कुछ अनुबन्धकर्ता राज्यों में "दहेज धापा" के मुकदमों का

[शेष पृष्ठ २३ पर]

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार ७ श्रावण सम्वत् २००८ [अङ्क १२

विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
और जब तक हमारे संविधान में इसकी गारण्टी नहीं कर दी जायगी,
हम तब तक चैन नहीं लेंगे।

नैतिक उत्थान की नई प्रवृतियां

आज जब सारा देश भावी चुनाव की चहल-पहल में लगा हुआ है, हम पाठकों का ध्यान एक नई प्रवृत्ति की ओर खींचना चाहते हैं, जो अभी बहुत शैशव अवस्था में है और जिस की ओर किसी का ध्यान नहीं गया। राष्ट्र में निरन्तर बढ़ता हुआ नैतिक पतन आज राजनीतिक नेताओं की ओर उपेक्षा का विषय बना हुआ है, फिर भी यह प्रसन्नता की बात है कि विविध क्षेत्रों में अनेक विचारकों ने इस ओर ध्यान देने का प्रयत्न प्रारम्भ किया है। सर्व सेवा समिति के प्रमुख नेता श्री मश्रूवाला ने सदाचार सम्बन्धी प्रतिज्ञा का पालन करने वाले सदस्यों को निमंत्रण दिया है। इसके सदस्यों को प्रतिदिन व्यक्तिगत श्रम करने, ब्लैक मार्केट न करने, रिश्वत न देने, किसी चीज में मिलावट न करने, अनुचित संग्रह व अपने स्वार्थ के लिए सिफारिश न लेने आदि की प्रतिज्ञाएं करनी पड़ती हैं। 'हरिजन सेवक' से ज्ञात होता है कि यह प्रवृत्ति धीरे-धीरे अपनी जड़ें गहरी जमाती जा रही है।

इस दिशा में सर्वप्रथम श्वेताम्बर जैन आचार्य तुलसी ने किया है। १९४९ में स्थापित अणुव्रती संघ का एक मात्र उद्देश्य जीवन में सदाचार की स्थापना है। इस संघ में प्रविष्ट होने वालों को अहिंसा, विदेशी वस्त्र त्याग, अस्पृश्यता निवारण, जीवन सम्बन्धी कानूनों का पूर्ण पालन, बृहद् भोजों का बहिष्कार, मांस मद्य का त्याग, गन्दी गालियां व गीत न गाना, व्यापार में सत्याचरण, झूठे राशन कार्ड न बनवाना, पदार्थों में मिलावट न करना, बिना टिकट रेल यात्रा न करना, सदाचार-मय जीवन, चोर बाजारी घूस व कन्या विक्रय का बहिष्कार आदि व्रत लेने पड़ते हैं। हम नहीं जानते कि अणुव्रती संघ को आज तक इस प्रतीक कार्य में कितनी सफलता प्राप्त हुई है और उसके कितने सदस्य वस्तुतः इन पर आचरण करते हैं।

किन्तु इससे जैन आचार्य तुलसी के देश के नैतिक स्तर को उठाने के इस अनुष्ठान का महत्व किसी तरह कम नहीं होता। ऐसे गम्भीर कार्यों में संख्या की अपेक्षा स्थिरता और गम्भीरता का महत्व ही अधिक होता है।

आर्य समाज से यह आशा की जाती थी कि वह राष्ट्र के इस नैतिक पतन को देख कर उदासीन नहीं रहेगा। देर से सही, वह भी अब इस दिशा में उठ खड़ा हुआ है। पिछले दिनों सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक वक्तव्य में नैतिक पतन की ओर राष्ट्र का ध्यान खींचते हुए सदाचार सैनिकों के संगठन का परामर्श दिया है। भ्रष्टाचार, घूस, अश्लील कामुकतापूर्ण चित्र,साहित्य और सिनेमा व रेडियो पर गन्दे गीतों के विरुद्ध तीव्र आन्दोलन का कार्यक्रम बनाने का परामर्श देश के आर्य समाजों को दिया गया है।

हम जब यह पंक्तियां लिख रहे हैं, इस बात से अपरिचित नहीं हैं कि नैतिक पतन जिस तीव्र गति से हो रहा है। उसे रोकने के लिये ये तीनों प्रयत्न नगण्य हैं किन्तु राष्ट्र के कुछ नेताओं का ध्यान इस गम्भीर समस्या की ओर गया है, यह कम महत्व की बात नहीं है। हम अपने समस्त पाठकों से बलपूर्वक यह अनुरोध करना चाहते हैं कि वे राजनीतिक और आर्थिक दलबन्दी के कामों में मग्न होते हुए भी राष्ट्र के नैतिक स्तर को उठाने की इन तीनों प्रवृत्तियों में अधिकाधिक सहयोग दें। चरित्र व संयम ही वस्तुतः किसी राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति है, इसे कभी न भूलना चाहिए।

★

भारत में पंचमांगी

भारत के प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने काश्मीर सम्बन्धी प्रश्न पर जो भाषण दिया है, यों तो वह समस्त ही महत्वपूर्ण है, किन्तु हम उस में से दो बातों की ओर पाठकों का ध्यान खींचना चाहते हैं। पं० नेहरू ने भारत पर आक्रमण की तैयारियों के साथ साथ पाकिस्तान पर यह भी गंभीर आरोप किया है कि वह भारतीय क्षेत्र में तोड़ फोड़ और षड्यन्त्रों की भी तैयारी कर रहा है।

पाकिस्तान के विरुद्ध ऐसा गम्भीर आरोप लगाने से पूर्व कुछ निश्चित प्रमाण पं० नेहरू ने अवश्य प्राप्त कर लिये होंगे। वे प्रमाण उन्होंने स्पष्ट नहीं किये, किन्तु हाल ही में कानपुर की मस्जिद में विस्फोट करने वाले भारी बम और आगरा में मुसलमानों के पास से बमों की बरामदगी आदि समाचार पं० नेहरू के उक्त आरोप का समर्थन ही करते हैं। हम यह नहीं भूल सकते कि भारतवासी मुसलमानों का एक प्रबल बहुमत कुछ वर्ष पूर्व तक दो राष्ट्रों के सिद्धान्त में विश्वास रखता था और पाकिस्तान के आन्दोलन से सहानुभूति रखता था। मुस्लिम लीग के साम्प्रदायिक उन्माद ने उन सब के दिल व दिमाग को जहरीला बना दिया था।

आज वह स्थिति भले ही न हो, किन्तु यह विश्वास कर लेना भी सरासर मूर्खता होगी कि सभी मुसलमानों के दिल बदल गये हैं। अपना रुपया पाकिस्तान भेजने तथा भारत सरकार को धोखा दे कर चुपचुप पाकिस्तान भागने के समाचार आज भी मिलते रहते हैं।

भारतीय संविधान धर्म निरपेक्ष राज्य है और मुसलमानमात्र को हम भारत विरोधी नहीं मानते, किन्तु जब दो देशों में परस्पर सम्बन्ध बहुत बिगड़ गये हों जैसा कि अब हो रहा है, तब इस ओर थोड़ी भी उदासीनता क्षन्तव्य नहीं है। किसी देश में पंचमांगी प्रवृत्तियों को सहन नहीं किया जा सकता। वे बहुत खतरनाक साबित हो सकती हैं। इसीलिए आज हम भारत सरकार से कहना चाहते हैं कि कि वह इन पंचमांगी प्रवृत्तियों को शुरु में ही कुचल दे।

जिस जिस पर पाकिस्तान से सहानुभूति का रत्तीभर भी संदेह हो, उसकी गति-विधि पर कठोर निरीक्षण किया जाय और जरा भी अपराध पाते ही उसे कठोर दण्ड दिया जाय, इस सम्बन्ध में किसी तरह की उपेक्षा कल भारी दुष्परिणाम ला सकती है।

ब्रिटिश अधिकारियों का रुख

दूसरी बात जिस की ओर हम पाठकों का ध्यान खींचना चाहते हैं, वह यह है कि ब्रिटिश अधिकारी, सेनापति व परामर्शदाता भी वर्तमान संबंधों को खराब करने में लगे हुए हैं। अभी पिछले दिनों ब्रिटिश पार्लमैंट में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा गया था कि ब्रिटेन पाकिस्तान से सैनिक सम्बन्ध स्थापित करने में भारत के रुख की उपेक्षा भी कर सकता है। पाकिस्तान के भूत पूर्व प्रधान सेनापति ग्रेसी की वहां उपस्थिति भी कम संदेहास्पद नहीं है।

पाकिस्तान ब्रिटेन की रचना है। काश्मीर के सम्बन्ध में उसका रुख सदा से आपत्तिजनक रहा है। हमें अपनी विदेशी नीति का निर्धारण करते हुए इस तथ्य को नहीं भूलना चाहिए।

बंगलौर अधिवेशन

अ० भा० कांग्रेस समिति का बंगलौर अधिवेशन समाप्त हो गया। कांग्रेस में एकता स्थापित करना इसका उद्देश्य था। श्री किदवई आदि ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे कर यह सिद्ध कर दिया है कि यह उद्देश्य पूर्ण नहीं हुआ। इस अधिवेशन ने यह स्पष्ट कर दिया है कि कांग्रेस में बहुमत श्री टण्डन जी का है।

यों पं० नेहरू के लम्बे लम्बे भाषणों और उनके जयकारों से प्रतीत यही होता है कि उनकी विजय हुई है। किन्तु कांग्रेस कार्य समिति व चुनावबोर्ड के पुनः संगठन का सुझाव बाकायदा पेश ही नहीं किया जा सका। पं० नेहरू भारत के महान् लोकतंत्र के प्रमुख शासक हैं।

वे लोकमत के महत्व को जानते हैं इसलिए उनसे यह आशा करना असंगत न होगा कि वे कांग्रेस के प्रतिनिधियों के बहुमत का आदर करते हुए श्री किदवई व श्री कृपलानी आदि सब को स्पष्ट उचित उत्तर दे दें, जिससे असन्तुष्ट दल अवांछनीय प्रवृत्तियों के लिए उत्साहित न हो।

अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच

कोरिया में युद्धविराम की आशा : ईरान का प्रश्न अभी भी उलझा हुआ

ब्रिटेन फ्रांस के विरोध पर भी अमेरिका का स्पेन से संधि-प्रयास

बंदर व हवाई अड्डों के बदले सैन्य सामग्री

फ्रांस के विदेश मन्त्री श्री शूमां

कोरिया

कोरिया में शांति वार्ता में कुछ प्रगति होती प्रतीत होती है। जनरल रिजवे के प्रधान कार्यालय से प्रकाशित विज्ञप्ति में इस तथ्य का अनुमोदन किया गया है। वैसे कायसोंग क्षेत्र के अतिरिक्त सभी भागों में छुटपुट लड़ाई चल रही है। राष्ट्रसंघीय विमान भी क्रियाशील हैं किन्तु किसी बड़ी लड़ाई के होने का कोई समाचार नहीं है।

शान्ति वार्ता में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों के साथ दोनों ओर के पत्र प्रतिनिधि भी उपस्थित रहते हैं। किन्तु चर्चा के समय उनका प्रवेश निषिद्ध है। यह भी ज्ञात हुआ है कि दोनों ओर के प्रतिनिधि अधिकाधिक ऊपरी शिष्टाचार का ध्यान कर रहे हैं और एक दूसरे के निकट आ रहे हैं। अभी तक कोई ऐसा विषय नहीं उठा जिस पर किसी भी ओर से कोई तीव्र मतभेद प्रकट किया गया हो। वैसे कम्यूनिस्ट पक्ष का कथन है कि शान्ति स्थापना के पश्चात् शीघ्रातिशीघ्र सभी विदेशी सेनाओं को कोरिया से हटा लिया जाय। राष्ट्र-संघ के पक्ष के सैनिक प्रतिनिधियों का कथन है कि यह राजनीतिक विषय है और हमारा इससे कोई सम्बन्ध नहीं। हमारा काम तो सैनिक आधार पर शांति स्थापना का है। तो भी वार्ता सुचारु क्रम से आगे चल रही है।

ईरान

ईरान में प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन के विशेष प्रतिनिधि श्री हैरीमैन की गतिविधि का दूसरा दौर प्रारम्भ हो गया है। पहिले दौर में उन्होंने ईरानी सरकार के प्रधान मन्त्री, विदेशमन्त्री आदि सभी प्रमुख व्यक्तियों से तथा ब्रिटिश राजदूत से चर्चा की और उनकी सुनी। दूसरे दौर में उन्होंने हल निकालने की चेष्टा आरंभ की है।

इस दिशा में भी अमरिका ने अपनी कूट नीति से काम लेने का यत्न किया है। श्री हैरीमेन ने आते ही घोषणा की थी कि यदि ईरान तेल के विषय पर ब्रिटेन से समझौता कर लेगा तो अमेरिका उसे आर्थिक सहायता देगा। उन्होंने एक पत्र-प्रतिनिधि सम्मेलन में यह भी स्वीकार किया कि ईरान सरकार द्वारा राष्ट्रीयकरण कानून में कोई परिवर्तन करने की कोई गुंजाइश नहीं है। कुछ क्षेत्रों में चर्चा है कि हैरीमेन का उद्देश्य विफल हो जायगा। किन्तु कई क्षेत्रों में यह भी सम्भावना है कि सम्भवतः कोई हल निकल सके। वैसे अभी तक ईरान सरकार किसी भी विषय पर झुकने को तैयार नहीं हुई है।

स्पेन अमेरिका संधि

अमेरिका के विदेश विभाग के सचिव श्री डीन अचेसन ने अपने साप्ताहिक पत्र सम्मेलन में बताया कि अमेरिका यह समझता है कि अटलांटिक सुरक्षा सन्धि में स्पेन का भाग लेना आवश्यक है। भौगोलिक दृष्टि से स्पेन की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि इस विषय में ब्रिटिश तथा फ्रेंच विरोध से वे परिचित हैं।

स्मरण रहे कि अमेरिका स्पेन से एक संधि द्वारा स्पेन के कुछ हवाई अड्डों तथा बन्दरगाहों का उपयोग करने की सुविधा लेना चाहता है। अटलांटिक संधि की दृष्टि से वह इन अड्डों को अत्यन्त महत्वपूर्ण समझता है और यह भी दिखाई देता है कि जनरल आइजनहोवर का समर्थन भी इसके पीछे है। इसी उद्देश्य से अमरीकी जलसेना के एडमिरल शरमन स्पेन के सर्वेसर्वा जनरल फ्रांको से वार्तालाप करने के लिए मैड्रिड गए हुए हैं।

यह भी ज्ञात हुआ है कि मांगे हुए अड्डों का प्रयोग करने की सुविधा देकर जनरल फ्रांको बदले में अमेरिका की आर्थिक तथा सैन्य सामग्री सम्बन्धी सहायता चाहते हैं। इसके लिए वे स्पेन के मन्त्रिमण्डल में भी परिवर्तन के लिए तैयार हैं। शायद एडमिरल शरमन के प्रस्थान के पूर्व ही परिवर्तित मन्त्रिमण्डल की घोषणा कर दी जावे।

द्वितीय महायुद्ध में मित्र राष्ट्रों द्वारा नारमण्डी फ्रांस पर उतरने की सातवीं वर्षगांठ गतमास मनाई गई, इस अभियान में मृत सैनिकों के सम्मान में हुए एक समारोह में जनरल आइजनहोवर गम्भीरता पूर्ण खड़े हैं।

जनरल फ्रांको

शरमन-फ्रांको वार्ता

स्पेन में एडमिरल शरमन ने जनरल फ्रांको से दो बार चर्चा की है। इसके अतिरिक्त वह सेना के प्रमुख अधिकारियों से भी मिले हैं। ज्ञात हुआ कि उन्होंने जनरल फ्रांको को यह बता दिया है कि अमेरिका स्पेन के चार बन्दरगाह तथा छ हवाई अड्डे प्रयोग में लेना चाहता है। इन्हें आधुनिक ढंग का बनाने के लिए जिससे वहां युद्धपोत और भारी वायुयान ठहर सकें, सब आवश्यक व्यय अमेरिका कर लेगा।

बदले में जनरल फ्रांको ने स्पेन की सड़कों और रेलवे की दशा सुधारने के लिए आवश्यक सामग्री मांगी है। वह कच्चा माल और नये प्रकार के उद्योगों के लिये आवश्यक मशीनरी खरीदने के लिये डालर भी चाहते हैं। साथ ही वह वायुयान, भारी तोपें तथा टैंक भी चाहते हैं। पूरक समाचारों से विदित होता है कि स्पेन तथा अमेरिका में एक सीधी संधि चर्चा चल रही है।

ब्रिटेन और फ्रांस का स्पेन से की जा रही चर्चा से विरोध है। एक ब्रिटिश पत्रिका के अनुसार ब्रिटेन तथा फ्रांस इस विषय पर पूर्णतया एक मत हैं और उन के विरोध की सूचना वाशिंगटन में भी दे दी गई है। यह भी ज्ञात हुआ है कि एडमिरल शर्मन मैड्रिड से पेरिस आ कर जनरल आइजनहावर से मिलेंगे, और तब सम्भव समझे हुए अमेरिका जायेंगे।

देश वार्ता

पाकिस्तान द्वारा भारत पर आक्रमण की तैयारी का आरोप

उल्टा चोर कोतवाल को डांटे

किदवई व जैन का मंत्रिमंडल से त्यागपत्र

श्री लियाकतअली

लियाकत का तार

पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री श्री लियाकत अली खां ने नई दिल्ली एक तार भेज कर यह आरोप लगाया है कि भारत सरकार ने पाकिस्तान की समस्त सीमा पर सेना का भारी जमाव कर लिया है। इससे पाकिस्तान को भय है। भारत में पाकिस्तान के विरुद्ध जोरों से प्रचार किया जा रहा है और भारत पाकिस्तान पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा है। मिया लियाकत अली ने इसी आशय का एक पत्र सुरक्षा परिषद के प्रधान को भी लिखा है।

पत्र सम्मेलन में आरोप

गत १२ जुलाई के केवल चार घंटे के नोटिस पर बुलाए गए एक प्रेस सम्मेलन में पाक प्रधान मन्त्री ने भारत के विरुद्ध अनेक आरोप लगाए और पं० नेहरू को इस आशय का एक तार भेजने के विषय में बताया। श्री लियाकत अली ने कहा कि भारत ने अपनी ९० प्रतिशत सेना पाकिस्तान की सीमा के निकट ऐसे ढंग से केन्द्रित कर रखी है कि जहां से पाकिस्तान पर आक्रमण करना सरल है। इससे पाकिस्तान की सुरक्षा और अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति को एक भारी भय उपस्थित हो गया है। मैंने भारत के प्रधान मन्त्री को कहा है कि वे इस भय को दूर करें।

श्री लियाकत अली ने कहा कि मैंने भरसक प्रयत्न किए कि भारत के प्रधान मन्त्री युद्ध न करने की घोषणा मान जाते जिसके अन्तर्गत सभी झगड़े बातचीत मध्यस्थता अथवा पंच फैसला जैसे शान्तिपूर्ण मार्गों से तय किए जा सकते। दुर्भाग्यवश मेरे द्वारा प्रस्तुत यह सुझाव उन्होंने स्वीकार नहीं किया।

भारत का उत्तर

इस तार का उत्तर देते हुए अपने तार में प्रधान मन्त्री पं० नेहरू ने कहा है कि यह कहना कि भारत का पाकिस्तान पर आक्रमण करने का कोई विचार है भारी झूठ है। भारत के खिलाफ जिहाद और लड़ाई का जो प्रचार पाकिस्तान में हो रहा उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती और यदि हमने उससे रोकने का यत्न नहीं किया तो हम अपने कर्तव्य से च्युत हो जावेंगे।

जिहाद व युद्ध की तैयारी

पं० नेहरू ने कहा है कि जब कि गत वर्ष भारत ने अपनी सेना में कमी कर दी है पाकिस्तान अपनी सैन्यशक्ति को अधाधुंध बढ़ाता रहा है। पाकिस्तान के उत्तरदायी नेता जिनमें मन्त्री भी सम्मिलित हैं, युद्ध का नारा लगाते रहे हैं। गत मास में जम्मू काश्मीर में भारतीय क्षेत्र पर अनेकों आक्रमण हुए हैं।

अमेरिका द्वारा स्याम को दी जा रही सहायता में इस प्रकार के हल्के वायुयान भी सम्मिलित हैं जो स्यामी सिपाही उतारे जा रहे हैं।

जम्मू व काश्मीर

भारत और पाकिस्तान के मध्य सबसे बड़ा झगड़ा जम्मू व काश्मीर राज्य का है। भारत ने उस पर गैर कानूनी ढंग से सेना द्वारा कब्जा जमा रखा है। इसके सम्बन्ध में भारत ने सुरक्षा परिषद के अन्तिम प्रस्ताव को भी ठुकरा दिया और पाकिस्तान के प्रति शत्रुता पूर्ण वातावरण निर्माण करना आरम्भ कर दिया। इसलिए इस प्रकार का भारी प्रचार किया गया कि पाकिस्तानी प्रेस भारत के विरुद्ध युद्ध का प्रचार कर रहा है। जब कि वास्तविकता यह है कि भारतीय प्रेस तथा नेता कहीं अधिक हिंसात्मक ढंग से युद्ध को भड़का रहे हैं। इसीलिए छोटी सी सीमावर्ती घटनाओं को इतना बढ़ा चढ़ा कर प्रचारित किया गया।

सचाई यह है कि गत ढाई वर्ष में जम्मू तथा काश्मीर में युद्ध विराम रेखा पर सैकड़ों घटनायें होने का दायित्व भारतीय सैनिकों पर है। भारत का यह सारा प्रचार तो पूर्वनियोजित है यह दिखाई देता है।

श्री जवाहरलाल नेहरू

हमें ज्ञात है कि भारत की सीमा में आक्रमण तथा तोड़ फोड़ की कार्यवाही करने का संगठित तैयारियां भी पाकिस्तान में होती रही हैं।

कथनी और करनी

प्रधान मन्त्री ने कहा है मैं यह जानना चाहता हूं कि गत वर्ष पाकिस्तानी सेना बढ़ाई गई थी या घटाई गयी थी? मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या यह वृद्धि पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तान के दोनों भागों में नहीं की गई और क्या उसे भारतीय सीमा के निकट केन्द्रित करके नहीं रखा है।

अपने बचाव के लिए हमने कुछ सैनिक टुकड़ियों का स्थानान्तरिक करने का आदेश दिया है। आक्रमणात्मक कार्यवाई करने का हमारा कोई इरादा नहीं है किन्तु भारत की भूमि पर किसी भी आक्रमण का उचित प्रतिरोध अवश्य किया जायगा।

दोनों देशों के बीच मैत्री पूर्ण सम्बन्धों को बढ़ाने के मार्ग में पाकिस्तान का रुख तथा प्रचार मुख्य रूप से बाधक है।

(शेष पृष्ठ २० पर

श्री अजितप्रसाद जैन

श्री किदवई

क्या पं० नेहरू भी कांग्रेस दल को छोड़ेंगे ?

दल में उनके समर्थकों की कमी

बंगलौर में टण्डन जी की असाधारण विजय

श्री होरीलाल सक्सेना

श्री जवाहरलाल नेहरू

गत सप्ताह बंगलौर में जो कुछ हुआ उससे यह तो सिद्ध हो ही गया कि अब कांग्रेस में प० जवाहरलाल नेहरू का युग समाप्त हो गया और श्री० पुरुषोत्तमदास टण्डन के युग का श्रीगणेश हो गया। कांग्रेस कार्य समिति तथा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठकों में श्री० टण्डन जी ने जिस चतुराई से काम लिया उस की प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जा सकता।

चुनाव घोषणा पत्र

सर्व प्रथम तो उन्होंने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के इस विशेष अधिवेशन के मुख्य कार्य को सकुशल समाप्त करा लिया जो कांग्रेस का चुनाव घोषणा पत्र निर्माण करना था और जो प० नेहरू ही सब से सुन्दरता पूर्वक कर सकते थे। प० नेहरू ने कमेटी की बैठक से कुछ दिन पूर्व ही अपनी रिपोर्ट प्रकाशित कर दी थी जिस में उन्होंने अपने विचार व्यक्त कर दिये थे। कुछ लोगों को यह भय था कि इस रिपोर्ट को स्वीकार करने में ही श्री० टण्डन जी तथा श्री० नेहरू के बीच पारस्परिक मत भेद हो जाय और प० नेहरू को किसी प्रकार की धमकी देने का अवसर मिल जाय, किन्तु श्री टण्डन जी ने ऐसा कुछ भी नहीं होने दिया, यहां तक कि कन्ट्रोलों के पक्ष में उन्होंने श्री० नेहरू के ही मत को स्वीकृत हो जाने दिया, यद्यपि वह स्वयम् इस के कट्टर विरोधी थे। श्री० टण्डन जी के इस व्यवहार का प० नेहरू जैसे भावुक हृदय पर प्रभाव पड़ना आवश्यक ही था, और जब पूरा का पूरा घोषणापत्र प० नेहरू के मतानुसार स्वीकृत हो गया, तो उन के लिये यह बड़ा ही कठिन हो गया कि वह श्री० टण्डन जी को सहयोग देने से इन्कार करें।

एकता प्रस्ताव

इसी का फल यह हुआ कि जब चुनाव घोषणपत्र तैयार हो गया और कांग्रेस में एकता स्थापित कराने वाला प्रस्ताव विचारार्थ उपस्थित हुआ तो प० नेहरू को श्री० टण्डन जी का खुला विरोध करना कठिन हो गया। यह सत्य है कि काफी समय से इस प्रस्ताव का प्रचार किया जा रहा था कि प० जवाहर लाल नेहरू को कांग्रेस की बागडोर सौंप दी जाय और श्री० टण्डन जी कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देकर प० नेहरू को कांग्रेस का स्थानापन्न अध्यक्ष नियुक्त कर दिया जाय उसी तरह से जैसे कि पाकिस्तान में चौ० खलीकुज्जमां के हाथों से पाकिस्तान मुस्लिम लीग का अध्यक्ष पद छीन कर वहां के प्रधान मंत्री नवाबजादा लियाकत अलीखां को मुस्लिम लीग का अध्यक्ष बना दिया गया और वहां आज मुस्लिम लीग तथा सरकार का नेता एक ही व्यक्ति है, और वह वहां का डिक्टेटर बन गया है। यहां भी उसी प्रकार प० जवाहरलाल नेहरू को डिक्टेटरी के अधिकार सौंपने का प्रयत्न चल रहा था।

प० नेहरू की मांग

अखिल भारतीय कांग्रेस के गुप्त अधिवेशन के सम्बन्ध में जो समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए हैं उन से ज्ञात होता है कि प० नेहरू ने इस बात पर अड़ने का प्रयत्न किया कि वर्तमान कांग्रेस कार्य समिति तथा केन्द्रीय निर्वाचन समिति को विघटित करके उन के स्थान पर नई कांग्रेस कार्य समिति तथा केन्द्रीय निर्वाचन समिति का निर्माण हों, जिन में विरोधी दल के सदस्यों को भी स्थान दिया जाय, किन्तु श्री० टण्डन जी ने इस के उत्तर में यह कहा कि इससे अच्छा तो यह हो कि यदि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का इन दोनों समितियों पर विश्वास नहीं है तो वह स्वयम् ही कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दें जिस के फलस्वरूप कांग्रेस कार्य समिति तथा केन्द्रीय निर्वाचन समिति का पुनर्निमाण स्वत ही हो जायगा।

समर्थकों की कमी

यह बात यद्यपि प० नेहरू की इच्छानुकूल अवश्य थी किन्तु वह भली प्रकार जानते थे कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्यों में से उनके समर्थक गिनती के कुछ थोड़े से व्यक्ति ही मिल सकते और इसलिये श्री० टण्डन जी का यह प्रस्ताव कार्यान्वित किया ही नहीं जा सकता। प० नेहरू के समर्थक तो पहले ही कांग्रेस त्यागकर किसान मजदूर प्रजा पार्टी में सम्मिलित हो चुके हैं। इसीलिये प० नेहरू को यह साहस नहीं हुआ कि वह श्री० टण्डन जी से त्यागपत्र लेने की मांग करते। इस प्रकार से जब श्री० टण्डन जी का त्यागपत्र वह नहीं ले सके तो वर्तमान कांग्रेस कार्य समिति तथा केन्द्रीय निर्वाचन समिति के पुनर्निर्माण का प्रश्न स्वतः ही समाप्त हो गया, और प नेहरु को इसी पर सन्तोष करना पड़ा कि एक सुन्दर सा प्रस्ताव पास हो जाय जिसमें कांग्रेस का द्वार बन्द नहीं हुआ है, यदि वह लौट आना चाहें तो आ सकते हैं, यह कह दिया जाय।

किदवई-जैन के त्यागपत्र

इस प्रस्ताव का वही फल हुआ जो होना चाहिए था। कृपलानी किदवई दलवाले तो कांग्रेस का पुनर्निर्माण चाहते थे, उनके लिये कांग्रेस का द्वार कभी भी बन्द नहीं था और उन्होंने कांग्रेस को किसी भूल से नहीं वरन् जान बूझकर त्यागा था। ऐसी स्थिति में इस प्रस्ताव से उन्हें किसी प्रकार का प्रोत्साहन मिलना असम्भव था, और बंगलौर से लौटते ही श्री रफी अहमद किदवई तथा श्री अजित प्रसाद जैन ने केन्द्रीय मंत्रिमंडल से तथा उन के साथ ही प० बालकृष्ण शर्मा ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया।

उत्तर प्रदेश में भी त्यागपत्र होंगे ?

आशा है कि उत्तर प्रदेश में भी दो मन्त्री, प० केशवदेव मालवीय तथा श्री० निसार अहमद शेरवानी, तथा एक सभा सचिव श्री० जगन प्रसाद रावत, भी अपने पदों से त्यागपत्र दे देंगे और कांग्रेस से पृथक होकर किसान मजदूर प्रजा पार्टी में सम्मिलित हो जायेंगे।

प० नेहरु और कांग्रेस

यह सब हो जाने के पश्चात् क्या प० जवाहर लाल नेहरु अब अधिक समय तक कांग्रेस में बने रह सकेंगे ? यह एक बड़ा ही जटिल प्रश्न है। इसमें दो बातें बड़ी ही महत्वपूर्ण हैं जिन पर प० नेहरु काफी समय से गम्भीरता पूर्वक विचार कर रहे बताये जाते हैं।

सर्व प्रथम तो प्रश्न है उनके लिये प्रधान मंत्री के पद को त्यागने का, जो स्वभावत ही साधारण प्रश्न नहीं। कोई

श्री टण्डन

भी व्यक्ति ऐसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली स्थान को सुगमता पूर्वक त्याग नहीं सकता और प० नेहरु ने तो अपने प्रधान मंत्रित्व काल में अपने लिये समस्त संसार में एक विशेष स्थान बना लिया है, जो उनके हटते ही नष्ट हो जायगा। इसलिये उनका प्रधान मंत्रिपद से पृथक होना कोई साधारण बात नहीं है।

मुसलमानों का प्रश्न

दूसरा प्रश्न जिसे वे और भी जटिल तथा महत्वपूर्ण मानते हैं वह है इस देश के मुसलमानों के भविष्य की बात। प० नेहरू ऐसा समझते हैं कि जिस दिन वह भारत के प्रधान मंत्री न रहे उसी दिन से इस देश मे मुसलमानों का रहना कठिन हो जायगा। इसीलिए प० नेहरू सदा ही मुसलमानों के काफी निकट रहे हैं और यदि वह श्री टण्डन जी की कांग्रेस में आज तक बने हुए हैं तो इसका एक ही कारण है कि वह यहां रहने वाले मुसलमानों की हर प्रकार से रक्षा करना अपना धर्म समझते हैं। श्री टण्डन जी की कांग्रेस कार्य समिति में भी वह केवल मौलाना आजाद के कहने पर ही सम्मिलित हुए थे। आज भी वह भारत में बसे रहने वाले मुसलमानों को अधिक से अधिक सुविधायें देने का प्रयत्न करते रहते हैं। इसलिये कांग्रेस त्यागना और प्रधान मंत्रिपद से पृथक होना प० नेहरू के लिये एक बड़ा ही कठिन प्रश्न हो गया है।

श्री. टण्डन जी का मत

किन्तु, जानकार राजनीतिज्ञों का कहना यह है कि क्या प० नेहरू अब अधिक समय तक कांग्रेस में टण्डन जी से निभा सकेंगे ? श्री टण्डन जी ने अपने मतों को कभी भी किसी से छिपाया नहीं है, शायद ही कोई सभा ऐसी होती हो जिसमें वह भारत में बसे रहने वाले

(शेष पृष्ठ २१ पर)

हमारे राष्ट्र जीवन का आधार भूत तथा वर्तमान का संबन्ध

राष्ट्रनिर्माण में संस्कृति को छोड़ कर नहीं बढ़ा जा सकता

भा. जनसंघ इसी आधार पर नवनिर्माण करेगा !

लेखक— श्री बलराज मधोक

भारत के स्वतन्त्र होने के दिन से देश में भारत के नव निर्माण की चर्चा चल रही है। कांग्रेस सरकार भारत के नवनिर्माण की कई योजनाएं बना चुकी है। परन्तु भारत का नव-निर्माण होता दीखता नहीं। निर्माण के स्थान पर विनाश की सम्भावना बढ़ रही है। भारत का शरीर तो भंग हो ही चुका है, आत्मा भी मर रही है और स्वतन्त्र भारत का भव्य चित्र जो भारतीय जनता ने अपनी कल्पना में बनाया था वास्तविक रूप लेने से पहिले ही नष्ट हो गया है। सारे समाज में एक निराशा और निरुत्साह का वातावरण फैला हुआ है।

आधार क्या हो ?

इसका मूल कारण यह है कि देश के नेता अभी तक यह भी निश्चय नहीं कर पाये कि भारत के नव निर्माण का आधार क्या होना चाहिए। किसी भी भव्य प्रासाद की कल्पना करने और उसे बनाने से पहिले उस की नींव का विचार करना आवश्यक रहता है। प्रासाद के ऊपरी भाग की टीप टाप से उसकी मजबूती का अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। किसी भी भवन की शक्ति तो उसकी नींव की गहराई और मजबूती पर आश्रित रहती है। इसी प्रकार किसी भी राष्ट्र का भविष्य बहुत कुछ उसके अतीत पर आश्रित रहता है। जैसा कि एक महा पुरुष ने कहा है "हम भूतकाल से स्फूर्ति लेते हुये वर्तमान में भविष्य के लिए रहते हैं।"

अतीत का त्याग असम्भव

यदि कोई व्यक्ति अथवा समाज यह कहे कि वह अपने अतीत की जड़ को काटकर एक नया स्वांग धारण कर ले तो यह उसकी भूल होगी। एक केले का पेड़ जड़ से उखाड़े जाने के पश्चात एक दो दिन तो किसी विवाह मंडप की शोभा बना सकता है परन्तु उसका वह जीवन चन्द भर ही रहता है। किसी भी व्यक्ति अथवा समाज का जीवन उसका मानसिक गठन और उसकी प्रगति का मार्ग बहुत कुछ उसके अतीत के संस्कारों, स्मृतियों और अनुभवों से प्रेरणा लेकर चलता है। वर्तमान का वातावरण तथा आवश्यकताएं उस पर अपना रंग अवश्य चढ़ाती हैं परन्तु यदि नींव मजबूत हो तो वे उसे पथ भ्रष्ट नहीं कर सकतीं और उस की प्रगति में बाधा नहीं डाल सकतीं।

[illegible]

भारत एक प्राचीन देश है, भारतीय संस्कृति इतनी ही पुरानी है जितना कि ऋग्वेद। अपने सहस्रों वर्षों के जीवन में भारत राष्ट्र ने अनेक महापुरुष सन्त, साहित्यक, योद्धा तथा देशभक्त पैदा किये। इन सबने अपनी कृतियों से भारत का नाम उज्ज्वल किया और भारत की माटी को समुन्नत किया। ये सब राष्ट्र के पुत्र थे, उनमें से किसी को भी राष्ट्रपिता कहना उसकी भी अवहेलना करना है और देश व राष्ट्र की भी।

भूत व वर्तमान का समन्वय

इसी प्रकार वर्तमान काल में नित नए वैज्ञानिक आविष्कार हो रहे हैं। नई कलें और नये प्रयोग संसार के सामने आ रहे हैं। वे मनुष्य के जीवन पर अपने प्रभाव डाल रहे हैं, उनकी ओर आंखें मूंदना तथा उनको त्याज्य समझना भूल होगी, परन्तु उनकी चमक दमक से प्रभावित होकर अपने आपको भूल जाना और उनका दास बन जाना उससे भी बड़ी भूल होगी।

आवश्यकता इस बात की है कि अतीत और वर्तमान, प्राचीन संस्कृति और मर्यादा तथा वर्तमान काल की नवी प्रवृत्ति तथा प्रगति का समन्वय किया जाय।

जनसंघ का लक्ष्य

भारतीय जनसंघ ने अपने सामने भारत को इस प्रकार का नवनिर्माण का लक्ष्य रखा है। जनसंघ चाहता है कि राष्ट्रीय जीवन का आधार तो भारतीय संस्कृति व मर्यादा हो परन्तु उसमें नए तत्वों का जो कि राष्ट्र की उन्नति के लिये आवश्यक जान पड़े इस प्रकार से समावेश हो कि भारत भारत रहता हुआ एक आधुनिक, शक्तिशाली और प्रगतिशील राष्ट्र बन सके। जनसंघ यह नहीं मानता कि भारत को प्रगतिशील और बलवान बनाने के लिये अपनी जड़ें काटना और रूस या अमेरिका की नकल करना आवश्यक है।

कई सज्जन इस सीधे सादे व्यावहारिक तथ्य को समझते नहीं या जान बूझकर न समझने का ढोंग करते हैं। वे जनसंघ या इस प्रकार की दूसरी संस्थाओं को प्राचीनतावादी का नाम देकर उनका उपहास करना चाहते हैं। परन्तु उन से कोई पूछे कि प्राचीनतावादी कौन नहीं है। जो लोग गांधी जी के नाम की रट लगाते हैं उनके बताए हुए मार्ग को [illegible] कर उस पर चलने का जोर देते हैं और अपनी संस्था के पिछले ४० व ६० वर्षों के इतिहास और बलिदान की दुहाई देकर जनता का सहयोग मांगते हैं क्या वह प्राचीनता वादी नहीं हैं? क्या वह अतीत की ओर लोगों का ध्यान नहीं खींचते? अन्तर केवल इतना ही है कि वे अपने अतीत को पिछले ४० वर्षों तक सीमित करना चाहते हैं। उसके पहले का उज्ज्वल अतीत उन्हें अच्छा नहीं लगता क्योंकि उसको मुसलमान पसन्द नहीं करते। उन देशद्रोहियों का जिन्होंने देश का विभाजन कराया प्रसन्न करने के लिये वे अपने उज्ज्वल अतीत, अपने महापुरुषों और अपने इतिहास से आंखें मूंदना चाहते हैं। इस प्रकार आंखें मूंदने से वे न अपना भला कर सकते हैं और न ही राष्ट्र का।

रूस का उदाहरण

ऐसे लोग कई बार कम्युनिस्ट रूस का दृष्टान्त उपस्थित कर के कहते हैं कि रूस ने अपने अतीत से बिल्कुल आंखें मूंद कर अपना आधुनिक ढंग से नव निर्माण किया है। परन्तु वह भूलते हैं कि रूस अपने अतीत को छोड़ने की इच्छा रखते हुये भी छोड़ नहीं सका। जिन जार और जरीना को रूसी कम्युनिस्ट प्रतिक्रिया वादी कह कर उनको रूस की जनता के दिल व दिमाग में से बिल्कुल निकाल देना चाहते थे पिछले महायुद्ध में रूसी जनता में देशभक्ति का भाव पैदा करने के लिये और उन्हें देश हित सर्वस्व बलिदान कर देने की प्रेरणा देने के लिए रूसी सरकार व लेखकों को इन्हीं महापुरुषों को मानों कब्र से निकाल कर रूसी जनता के सामने महापुरुषों के रूप में पेश करना पड़ा।

सोजोनाफ पदक

आज रूस का सबसे ऊंचा सैनिक पदक सोजोनाफ पदक है। प्रिंस सोजोनाफ जार के कुल का था और वह नेपोलियन के विरुद्ध लड़ा था। रूसी सरकार ने चाहा कि नया रूस कम्यूनिस्टों के हाथ में सत्ता आने के पहिले के अतीत को भूल जाय, इसने इसके लिए भरसक प्रयत्न भी किया, लोगों को यातनाएं भी दीं। परन्तु अन्त में इसको मानना पड़ा कि वर्तमान रूसी युवक अतीत का ही तो बच्चा है। उसको इस अतीत से ही स्फूर्ति मिल सकती है। इसलिए कम्यूनिस्टों को अपना दृष्टिकोण बदलना पड़ा। आज कम्यूनिस्ट रूस एक राष्ट्रवादी देश है, जिसको रूस के अतीत पर उतना ही गर्व है, जितना किसी भी जीवित राष्ट्र को होना चाहिये।

भारत का गौरव शाली अतीत

भारत का अतीत महान है। भारतीय वट वृक्ष की जड़े पाताल तक पहुंची हुई हैं। वे सदियों की दासता के दिनों में भी, जब कि उन जड़ों को काटने का विरोधियों ने भरसक प्रयत्न किया, भारतीय राष्ट्र को जीवन व शक्ति देती रहीं और सुन्दर-सुन्दर फूल और फल पैदा करती रहीं। जिस पेड़ में दासता के दिनों में भी सूर और तुलसी, शिवाजी और प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह और बन्दा बहादुर, दयानन्द और लोकमान्य तिलक, गांधी और डाक्टर हेडगेवार जैसे फूल लगे, उसकी जड़ निश्चित ही हरी है, सूखी नहीं। इसलिए उस देश का नव निर्माण करने के लिए उन जड़ों को पानी देने की आवश्यकता है, उनमें खाद डालने की आवश्यकता है, उनको काटने की नहीं।

भ्रममूलक मार्ग

प० जवाहरलाल नेहरू ने इन्हीं दिनों बंगलौर में भाषण देते हुए इस बात को स्वीकार किया है कि भारत की जड़े बहुत गहरी हैं और उन्हें काटने का प्रयत्न करना भूल है। परन्तु उनका यह कहना कि जड़ों की ओर ध्यान न देकर पत्तियों और टहनियों की ओर ध्यान देना चाहिये, भ्रममूलक है। किसी पेड़ के पत्ते और टहनियां तभी तक हरी रह सकती हैं, जब तक उसकी जड़ों को पानी मिलता रहता है।

आवश्यकता किस बात की है

भारत के वट वृक्ष की जड़ों को पानी देने की आवश्यकता है। भारत के अतीत का अध्ययन और उस पर मनन करने की आवश्यकता है। भारत की संस्कृति और मर्यादा का संरक्षण इस देश के लोगों के लिये अनिवार्य है। उन्हीं के आधार पर इसका नव निर्माण हो सकता है और होना चाहिये। हां, एक अच्छे माली की तरह जड़ों को पानी देते समय यह भी देखना आवश्यक होता है कि यदि कोई पत्ता या टहनी बिल्कुल सूख गई हो तो उसे काट दिया जाय और यदि कोई औषधि छिड़कने की आवश्यकता प्रतीत हो तो वह छिड़क दी जाय।

(शेष पृष्ठ १० पर)

विभावरी के अञ्चल में

(श्री परमेश्वर द्विरेफ)

नभ जल भूमण्डल में प्रशान्त
फैला था चारों ओर ध्वान्त,
उस व्योम पार तक वसुधा से कृष्णाञ्चल था तन रहा भीम,
जिसके नीचे था ढका हुआ कण कण जगती तल का असीम,

आतंक की छाया सा दुखान्त
था तिमिरहीन कोई न प्रान्त।
ध्वनि गूंज रही थी साय साय
शोकाकुल को सी हाय हाय,
दुख, कसक आह, पीड़ा, विषाद की प्रलय बाढ़ सी राग मूक
अवनी के कूलों से टकरा मानस के थी कर रही टूक।

कुछ था न कहीं ध्वनि को विहाय
नीरवता गहन विशालकाय।
नभ नीरव, उन्मन अति उदास
था छोड़ रहा अति शून्य श्वास।
धूमिल, दुख व्याकुल तारों में, सस्मृतियां जलती थीं अशेष,
बस आर पार तक तन मन में, तम ही तम का केवल प्रवेश।
ज्यों खोज रहा कुछ आस पास

खो रहा न जाने कहां हास?
सर, सरिता में लहरें अपार
थीं नीरव, चंचलता बिसार।
परिवर्तनरत नर्तन तन चुपचाप, शान्त, गति ज्ञान हीन,
अस्फुट, मनहर, स्वर्णिम सपने, हो चुके शून्य में सभी लीन।

ये ताक रहे अम्बर कगार,
ज्यों जीवन में कोई न सार।
चुपचाप बन्द थे पुण्डरीक
उर में अतीत की बनी लीक।
वृन्तों पर एकाकी सिकुड़े, गुंज रही न थी अलि मधुर तान,
नैराश्यपूर्ण उर में केवल, स्मृतियां थे चित्रित अंशुमान।

थे दीख रहे तम में न ठीक
सर, सरिता के नीरव प्रतीक।
जलजातों में गुंजन विहीन
सो रहे भृंग थे पराधीन।
कारा में उनके हतोत्साह, मकरन्द चयन की थी न बात,
पांखों में उद्वेलित सिसकी ले रहा सतत, था शून्य गात।

निज बासों में ही बने दीन
कल सुखद काल ने लिये छीन।
अभिराम विहगों के निवास
थे गत कलरव, नीरव, हताश।
उन नीड़ों के प्रत्येक तन्तु उन्मन, उदास थे विकल क्लान्त,
लगता था अब जीवन का तम बने न क्यों अभिराम कलान्त?

मानस में कैसे रहे आस
अब सपनों का हो आय नाश?
थी पूर्व सदा गति वद्ध भाव
था मौन हो रहा घात घाव।
जीवन सुरभित उद्यानों में था स्वप्न बना सरिता विहार,
मधुवन की कुंज वीथियां थीं बन गईं सभी छिन्नाधार,

बह रहा विकलता का प्रवाह
पहले वाली कुछ थी न चाह!

★

[illegible] के भारतीय प्रदेश में—

सीमावर्ती प्रदेशों पर पाकिस्तानी सेनाओं का भारी जमाव : भारत के विरुद्ध विषैला प्रचार : बलात् धर्म-परिवर्तन : शरणार्थी शिविरों में अनैतिकता का बोलबाला :

पूर्वी पाकिस्तान से आने वाले हिन्दुओं की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। इस प्रवाह ने भारत सरकार के सम्मुख कई समस्यायें खड़ी कर दी है। आने वाले लोगों में कितने ही ऐसे हैं जिनके संबंधी पहिले ही निकल कर भारत में आ चुके हैं और सरकार द्वारा आयोजित बिहार अथवा उड़ीसा स्थित केन्द्रों में रह रहे हैं। इन केन्द्रों से निकल कर कितने ही लोग पश्चिमी बंगाल में आने वाले लोगों से मिलने के लिए पहुँच रहे हैं। फलस्वरूप पश्चिमी बंगाल सरकार को इस नवीन समस्या का भी सामना करना पड़ रहा है।

दूसरी ओर आने वाले लोगों से यह भी पता चल रहा है कि पूर्वी बंगाल में हिन्दुओं के साथ किस प्रकार दुर्व्यवहार किए जा रहे हैं जिसके फलस्वरूप वहां रह पाना उनके लिए कठिन होता जा रहा है। लूट मार और बलात धर्म परिवर्तन की घटनायें आमतौर पर हो रही हैं और हिन्दुओं की शिकायत पर पुलिस अधिकारी ध्यान तक नहीं देते। इसके विपरीत वे यही सलाह देते हैं कि तुम पाकिस्तान छोड़ कर चले जाओ।

× × ×

पश्चिमी बंगाल के मुख्यमंत्री श्री विधानचन्द्र राय ने एक वक्तव्य में यह घोषित किया है कि पूर्वी बंगाल में नेहरू-लियाकत समझौते पर ठीक प्रकार से आचरण नहीं हो रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि वे केन्द्रीय सरकार के पुनर्वास मंत्री श्री अजीत प्रसाद जैन से पूर्णतया सहमत हैं। श्री जैन ने अपने वक्तव्य में कहा था कि पूर्वी पाकिस्तान में इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो गई है जिससे वहां हिन्दु अपने धन-जन तथा सम्मान को सुरक्षित नहीं समझते। इस सब का दायित्व पाकिस्तान सरकार पर है।

डा० राय ने यह भी कहा कि पूर्वी पाकिस्तान के अल्प मत मन्त्री ने यह कहा है कि यह बात गलत है कि स्यालदह स्टेशन पर पाकिस्तान से निर्वासित लोगों की बहुत अधिक भीड़ हो गई है। उन्होंने बताया कि मैंने उन्हें निमन्त्रण दिया है कि वे स्वयं आकर स्यालदह की स्थिति देख लें।

× × ×

इस स्थिति का निरीक्षण करने के लिए भारत सरकार के अल्पसंख्यक मामलों के राजमन्त्री श्री चारुचन्द्र विश्वास ने हाल ही में पूर्वी बंगाल के कई जिलों का चार दिन तक दौरा किया। पाकिस्तान के अल्पसंख्यक मामलों के मन्त्री श्री अजीजुद्दीन उनके साथ थे।

श्री विश्वास जहां जहां भी गये हिन्दुओं के प्रति होने वाले दुर्व्यवहार के अनेकों उदाहरण उनके सामने रखे गये। सब स्थानों पर हिन्दुओं की संपत्ति पर मुसलमानों ने बलात कब्जा कर रखा है। इनमें से बहुत से लौटाये नहीं जाते। जो एकाध लौटाया भी गया है वह इतनी देर से जिसका ठिकाना नहीं। श्री विश्वास को बताया गया कि हिन्दुओं के बन्द मकानों के दरवाजे तथा खिड़कियां निकाल ले जाई जाती हैं अथवा बेच दी जाती हैं। हिन्दुओं की चल संपत्ति को बहुत ही कम मूल्य पर नीलाम कर दिया जाता है। वे खड़े खड़े देखते हैं, और शिकायत करने पर सुनने वाला कोई नहीं।

× × ×

पूर्वी बंगाल में तबलीग का काम जोरों पर हैं। पर्वतीय प्रदेश के निवासियों को बलपूर्वक मुसलमान बनाया जा रहा है। हाल ही में चटगांव स्थित बुद्धमठ के मुख्य पुजारी भिक्षु श्री दीपंकर ने बताया है कि चटगांव की ओर पर्वतीय निवासी बौद्धों व हिन्दुओं की बहुत बड़ी संख्या मुसलमान हो गई है। इनको बलात मुसलमान बनाया गया है। चटगांव जिले के ही एक दूसरे भाग से श्री द्विजेन्द्रलाल ने शिकायत की है कि मुसलमानों ने उनके मन्दिर में घुस कर भगवान बुद्ध की दो मूर्तियों को गिरा दिया। इनमें से एक टूट गई। मुसलमानों ने भस्करकाला और चकरिया की मूर्तियों को भी खण्डित किया।

× × ×

पाकिस्तान में शरणार्थी शिविरों की क्या दुर्दशा है और पाक अधिकारी इस दूषित स्थिति को सुधारने के बजाय किस प्रकार उसे भी भारत के विरुद्ध प्रचार करने का एक साधन बनाये हुए हैं, इस विषय में भी समाचार प्राप्त हुए हैं। ज्ञात हुआ है कि न केवल इन शिविरों में रोटी कपड़ा देने की कोई व्यवस्था नहीं है, वरन, इससे भी अधिक नीच कृत्य हो रहे हैं। हाल ही में इस प्रकार के तीन शिविरों से ३०३ स्त्रियां गायब हो गईं। गायब स्त्रियों की संख्या इस प्रकार बताई जाती है : वाह (रावलपिण्डी)—२७, मानसर (केम्बेलपुर)— ३६, और चकजमाल (झेलम)—२४०, इन में सब से अधिक संख्या चकजमाल की है जिस में कश्मीरी ही हैं। पता लगाने पर ज्ञात हुआ है कि शिविरों के अधिकारियों ने इन स्त्रियों को उड़ा कर दूसरों के हाथ बेच दिया है।

× × ×

ज्ञात हुआ है कि इन शिविरों में स्वच्छता तथा स्वास्थ्य की दशा बहुत खराब है जिसके परिणामस्वरूप ४०-५० व्यक्ति प्रति सप्ताह क्षय से मर जाते हैं। मरने वालों में बच्चों की संख्या सब से अधिक है। वाह के केम्प ही में केवल मई मास में २७ स्त्रियां, १६ पुरुष तथा ३६ बच्चे मरे बताये जाते हैं।

ऐसी स्थिति में भी व्यभिचार तथा अनैतिकता के इन अड्डों का राजनीतिक उपयोग पाकिस्तानी अधिकारियों द्वारा होता रहता है। विदेशों से पाकिस्तान आने वाले प्रमुख मुस्लिम नागरिकों को ये शिविर दिखाये जाते हैं और इस दुर्दशा का पाप भारत के मत्थे मढ़ कर उनसे भारत विरोधी वक्तव्य दिलाने का प्रयास किया जाता है।

× × ×

पाकिस्तान में सत्तारूढ़ दल के मुखपत्र 'डान' के झूठे प्रचार का एक और उदाहरण मिला है। हाल ही में 'डान' ने "मिश्र में काश्मीर दिवस मनाया" शीर्षक से एक लेख अपने छः कालम में छापा था। इस समाचार का स्थान तथा तिथि 'काहिरा, ९ जुलाई' दी गई थी। इसमें कहा गया है कि मिश्र के सभी प्रमुख नगरों में काश्मीर दिवस मनाया गया और सभायें की गईं। काश्मीर में भारतीय रुख पर बड़ी चिन्ता प्रकट की गई और पाकिस्तान के प्रति सहानुभूति व्यक्त की गई। सभी वर्गों के नेताओं ने वीर काश्मीरियों की सहायता का वचन दिया।

वास्तविकता यह है कि स्वयं काहिरा में 'काश्मीर दिवस' मनाने अथवा उसमें भाग लेने के विषय में कोई नहीं जानता काहिरा स्थित भारतीय राजदूतावास ने इस सम्बन्ध में जांच पड़ताल की तो ज्ञात हुआ है कि मिश्री पत्रों में इसका कहीं उल्लेख भी नहीं है।

× × ×

"डान" के उसी समाचार में कहा गया है कि अरब लीग के सेक्रेटरी जनरल अब्दुर रहमान आजिमपाशा ने भारत को सूचित कर दिया है कि लीग के सात सदस्य-राज्य काश्मीर के सम्बन्ध में भारतीय रुख की निन्दा करते रहे हैं और उनकी सहानुभूति पाकिस्तान के साथ है। सरकारी रूप से नई दिल्ली में यह बताया गया है कि भारत सरकार अथवा काहिरा स्थित भारतीय दूतावास में ऐसा कोई भी पत्र प्राप्त नहीं हुआ है। बल्कि दूसरी ओर ९ जुलाई को आजमपाशा ने यह कहा था कि अरब लीग ने काश्मीर के सम्बन्ध में कोई निर्णय नहीं किया।

× × ×

प्रेस ट्रस्ट आफ इण्डिया को समाचार प्राप्त हुआ है कि पूर्वी पाकिस्तान में उसकी पश्चिमी बंगाल तथा भारत से लगते हुए ८०० मील के समस्त सीमावर्ती प्रदेश में भारी संख्या में सेना का जमाव हो रहा है। ये सेना जेसोर, सतखीरा, रंगपुर, राजशाही और दिनाजपुर जैसे सामरिक महत्व के स्थानों पर जमा है। व्यवस्था इस प्रकार है कि सीमा के निकट पुलिस चौकियां हैं। उनके पीछे पाकिस्तानी सेना, तथा बीच में गश्ती सैनिक दस्ते हैं। यह भी ज्ञात हुआ है कि सूर्यास्त के पश्चात नागरिकों के लिए सीमा से पांच मील के क्षेत्र में आने पर रोक लगा दी गई है।

सीमावर्ती कस्बों में भारत विरोधी प्रचार जोरों से हो रहा है। पाकिस्तान के प्रचार विभाग की ओर से भी कुछ पर्चे प्रचारित किए गए हैं। "हिन्दुस्तान हमारा" नामक दल की ओर से भी कुछ पत्र प्रकाशित हुए हैं जिन में गाय के कटे अंग अंकित हैं। इस कुप्रचार से वहां के हिन्दुओं में भारी खल बली है और भारत की ओर आने वालों की संख्या में प्रतिदिन वृद्धि हो रही है।

———

भारत के महान् इतिहास का प्रतीक—भगवा ध्वज

भारत के सांस्कृतिक जीवन में गुरु का बड़ा महत्व रहा है। माता पिता को तो केवल भौतिक जन्मदाता ही कहा जाता है। किन्तु अन्तःकरण में मानवता को जगाकर बुद्धि, मन तथा इन्द्रियों को संस्कारित कर पशु से मनुष्य बनाने का कार्य गुरु द्वारा ही होता है। वही व्यक्ति को ज्ञान देता है, वही आचार सिखाता है. व्यवहार सिखाता है। वही व्यक्ति के सम्मुख स्फूर्तिदाता बनकर खड़ा होता है. थकावट व गिरावट के समय उसे संभालता है और साहस देकर पुनः आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। संक्षेप में एक सच्चा गुरु मनुष्य के जीवन में जीवित जाग्रत सिद्धान्त बन जाता है।

सर संघचालक श्री गुरुजी ने एक बार अपने भाषण में कहा था कि बौद्ध कालीन युग का मुख्य नारा था 'अहिंसा परमो धर्मः'। पर आज के समाज को उससे भी प्राचीन नारे की आवश्यकता है जब वैदिक ऋषियों ने उच्च स्वर से पुकारा था 'आचारो प्रथमो धर्मः'। आज देश की कोटि कोटि जनता को आचार ज्ञान कराने की आवश्यकता है और यही लक्ष्य सामने रखकर आगे बढ़ना आवश्यक है। आचार की शिक्षा ही गुरुकृपा का विशेष भाग है और यही आज एक महान राष्ट्रीय आवश्यकता है।

राष्ट्रीय आचार के विभिन्न पहलू हैं। उसमें खरा उतरने के लिए व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय जीवन में सुन्दर समन्वय करना आवश्यक होता है। केवल एक ही प्रकार के गुण से राष्ट्र का विकास नहीं होता। सीमा से अधिक बढ़ा हुआ कोई गुण भी राष्ट्र के लिए दुर्गुण बन सकता है। अहिंसा को ही उदाहरणार्थ लीजिए। यदि सभी अहिंसक हो जायें तो संसार के साम्राज्यवादी तथा स्वार्थी देश उस राष्ट्र को कच्चा खा जाने की चेष्टा करेंगे। वैसे व्यक्तिगत जीवन में अहिंसा का बड़ा ऊंचा स्थान है।

साथ ही राष्ट्र को आचार और उन्नति का मार्ग सिखाने के लिए उन स्थलों से उसे परिचित करना आवश्यक है, जहां भूतकाल में उसने ठोकर खाई थी, अथवा वह थक कर निराशा की भंवर में डूब रहा था। उन स्थलों का परिचय भविष्य में वैसे प्रसंग उपस्थित न होने देगा, अथवा कम से कम होने देने का आधार होगा। इसी प्रकार उन्नति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने के लिए यह आवश्यक है कि उसे अपने गत जीवन के गौरवमय प्रसंगों का पुनःस्मरण कराया जाय। ये प्रसंग सामाजिक जीवन में साहस तथा उत्साह जाग्रत करते हैं।

इस दृष्टि से यदि विचार किया जाय; तो किसी भी राष्ट्र का इतिहास ही उसका सर्वश्रेष्ठ गुरु होता है। वे उसको उत्साह तथा स्फूर्ति प्रदान करता है और ऐसे प्रसंगों से भी परिचित कराता है, जिनकी पुनरावृत्ति वैसे ही कष्टकारक परिणामों को जन्म देगी, जैसे कि भूतकाल में उसके देश के पूर्वजों को मिले थे। इतिहास देश के राष्ट्रीय आधार का सर्वश्रेष्ठ शिक्षक होता है और सदा भूलों को सुझाता हुआ प्रगति के मार्ग की ओर संकेत करता है।

यह बात स्पष्ट करना आवश्यक है कि यहां इतिहास से अभिप्राय कोई पुस्तक विशेष नहीं है, वरम् राष्ट्र का समस्त भूत जीवन है, जिसमें उसकी विजय पराजय, उत्थान-पतन, साहस और शौर्य, त्याग व बलिदान के असंख्य सखा सम्मिलित हैं, ऐसे इतिहास का ही प्रतीक उस राष्ट्र का परम्परागत ध्वज होता है और इसीलिए वह राष्ट्र के सर्वाधिक गौरव का विषय बन जाता है। आदर, श्रद्धा व पूजा की भावना ही उसकी ओर प्रवाहित होती रहती है।

संसार के सबसे प्राचीन राष्ट्र इस भारतवर्ष के जिस अत्यन्त गौरवमय इतिहास के प्रतीकरूप में जो ध्वज सहस्त्रों वर्षों की परम्परा से वैदिक काल से लेकर आजतक चला आ रहा है उसी को आज भगवाध्वज कहकर पुकारते हैं। यह ध्वज यद्यपि कई नामों से पुकारा जाता रहा है तो भी इसके स्वरुप तथा ऐतिहासिकता के सम्बन्ध में कभी भी संदेह की गुंजाइश नहीं रही।

वेद का स्पष्ट निर्देश

इस का वर्णन हमें संसार के सर्वप्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद में मिलता है वहीं का एक मन्त्र है—

अरुणं केतुं यजध्यै ऋग्वेद ६।११।२

अर्थात् अरुण ध्वज की पूजा करो। यज्—देव पूजा (पाणिनि) अरुण शब्द के अर्थ में इधर साम्प्रदायिक विवाद उठ खड़ा हुआ है। अपने अपने ध्वज का यह रंग सिद्ध करने के लिए ही कई लोग कह देते हैं कि अरुण लाल रंग को कहते हैं।

उनकी आंखें सत्यता की तह तक चाहे न पहुंच सकी हों पर वेद ने तो स्पष्टीकरण कर ही दिया है। ऋग्वेद का ही एक अन्य मन्त्र देखिए—

अह अमस्य केतवो विरश्मयो जनां अनु। भ्राजन्तो अग्नयोयथा।

अर्थात् उदीयमान सूर्य की किरणें तेजस्विनी अग्निज्वाला तथा ध्वजके समान

यदि अग्नि का रङ्ग भी हठात् लाल ही कहा जाए तो आगे इससे भी स्पष्ट है—

एता उत्याः उषसः केतुमक्रत। पूर्वे अर्धे रदसो भानुं असुते। ऋ. १।९२।६

अहा इन उषाओं ने अपना ध्वज जो कि आकाश के आधे भाग में आलोक फैला रहा है फहरा दिया है। वह ध्वज आकाश में आंधी के समान सूर्य को घेरे है।

जिन लोगों ने कभी आंधी वाले समय के आकाश को देखा है उन्हें पता होगा कि कि वह रंग लाल होता है या भगवा? उसे भी लाल कहने वालों के लिये और भी स्पष्टीकरण कर दिया गया है।

स्तवाः हरीः सूर्यस्य केतु

ऋ. २।११।६

हरिद्वर्ण सूर्य की रश्मियां मानो ध्वज ही ही है उनकी स्तुति करो।

यहां हरिद्वर्ण से अर्थ हरा नहीं अपितु हरिन्द्रा—हल्दी के समान रंग वाला है। और इस बात को तो एक सामान्य गृहस्थ भी जानता है कि हल्दी का रंग लाल से मिलता-जुलता न हो कर भगवे के ही अधिक समीप है।

अब भी यदि अरुण का अर्थ किसी ने लाल ही करना हो तो भर्तृहरि के शब्दों में उसे—

ज्ञान लव विशेष दग्ध ब्रह्मापिनरं न रञ्जयति—

भगवान् शंकराचार्य ने वेद के इसी आदेश को ध्यान में रखते हुए अपने चारों मठों पर भगवा ध्वज फहराने का ही आदेश दिया था जो कि आज भी भारत की सांस्कृतिक एकता का चतुर्दिश घोष करता हुआ शान से फहरा रहा है। सुदूर बद्रीनाथ जी के मन्दिर पर भी चिरकाल से यही ध्वज लगा रहा है यह वहां गये हुये भली भांति जानते हैं।

इस प्रकार अपने वंद्य महात्माओं से वन्दित एवं निर्णीत यह ध्वज ही प्राचीन ध्वज होने के साथ-साथ हमारा वास्तविक ध्वज है। परम्परा से वन्दित होने के कारण यह पूज्य अर्थात् गुरू कहलाता है। वेद ने भी 'अरुणं केतुं यजध्यै' के द्वारा इसे पूजने योग्य देवता मानने का स्पष्ट निर्देश किया है। इसका पूजन प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है। रा० स्व० सेवक संघ तो उसी कर्तव्य का ठीक रूप से बोध हिन्दू जनता को करा रहा है। समय आयगा जब सभी हिन्दू इसी ध्वज के नीचे यह कहते हुए एकत्रित होंगे—

उत्तिष्ठत सनह्यध्वं उदाराः केतुभीः सह। सर्पाः इतर जनाः रक्षांसि, अमित्रान् अनुधावत।

भारतीय विचारकों ने गुरु का महत्त्व एक स्वर से स्वीकार किया है। यह महत्त्व केवल व्यक्तिगत जीवन तक ही सीमित नहीं, अपितु राष्ट्रीय जीवन में भी उतना ही बढ़ा-चढ़ा है। इसी दृष्टि से वैदिककाल से लेकर आज तक की अखण्ड परम्परा में राष्ट्र का स्फूर्तिदाता ही वास्तविक राष्ट्र-गुरु है।

ईषां वो वेद राज्यं त्रिषन्धे। अरुणैः केतुभिः सहा ये अन्तरिक्षे ये दिवि पृथिव्यां ये च मानवाः। अथर्व वेद ११।१०

अर्थात् पर्वतो, वनो, तराइयों तथा समतल पृथ्वी पर रहने वाली हे मनु की सन्तानों, आप यह जान लो कि यह आपका राज्य है। आप सब मिल कर शत्रुओं पर आक्रमण करने के लिये तय्यार हो जाओ! हे उदार वीरो, कंधे से कन्धा मिला कर अपने भगवे ध्वज के साथ सर्प की तरह कुटिल और राक्षसी वृत्ति के शत्रुओ पर एकदम चढ़ दौड़ो, आक्रमण कर दो।

गत १८ जुलाई की पूर्णिमा गुरु-पूर्णिमा के नाम से प्रसिद्ध है और इस दिन भारतवर्ष के जीवन में गुरुपूजन की महान् परम्परा चली आती है आप राष्ट्र जीवन का यह महान् गुरु परम पवित्र भगवा ध्वज जिस तेजस्वी और महान इतिहास का प्रतीक है, वैसे ही राष्ट्र-जीवन को पुनः जाग्रत करने के दृढ़ संकल्प के साथ इसे आदर पूर्वक माथा नवा कर हम आगे बढ़ने के लिए कृत-संकल्प हों इससे बढ़ कर और क्या गुरु पूजा हो सकती है।

—✿—

जलसेना

जल-युद्ध का सबसे बड़ा मल्ल—युद्धपोत

श्री सु० प० शर्मा

अब तक हम सुरंगनाशक और यानवाहक जलपोतों के विषय में पढ़ चुके हैं और अब युद्धपोतों की ओर मुड़ेंगे। किन्तु ऐसा करने के पूर्व ज़रा एक नज़र युद्ध सज्जा में खड़े हुए जल सेना दल की ओर भी डालें। इससे युद्धकाल में जलपोतों के विभिन्न प्रकार तथा उनके विशेष काम का महत्व अच्छी तरह समझ में आ सकेगा।

युद्धपोत की युद्ध सज्जा

युद्ध काल मे एक युद्धपोत साधारणतः जलसेना दल के बीच में रहता है। उसके चारों ओर क्रूज़रों और विध्वंसकों का एक घेरा होता है जो पनडुब्बियों और टारपीडो से उसकी रक्षा करते हैं। बहुत बार अपना बचाव करने वाले जहाजों के दल के साथ एक यानवाहक पोत भी साथ होता है। देख भाल करने और शत्रु की स्थिति पहचानने के लिये युद्धपोत पर भी एक दो वायुयान होते हैं किन्तु वायु आक्रमण से सुरक्षा का भार विशेष रूप से यानवाहक पोत द्वारा ही सभाला जाता है जो कि जैसा कि हमने गत लेख मे देखा था, अपने ऊपर लड़ाकू तथा बमवर्षक वायुयान लेकर चलता है। युद्ध करने वाले क्रूज़रो की गति बहुत तेज रहने के कारण उनका कार्य शीघ्रता से आगे बढ़ कर शत्रु के बीच में प्रवेश कर, एक दो टारपीडो छोड़ना, वहा हड़बड़ाहट पैदा करना और धुएं के पर्दे की आड़ में ही वापिस लौट आना होता है। सुरंगनाशक आगे चलते हैं और सारे दल के लिए मार्ग साफ करते हैं।

आकार तथा विकास

अतः एक युद्धपोत मुख्य युद्ध करने वाला पोत होता है। इसकी तोपें बहुत शक्तिशाली तथा चारों ओर लगी लोहे की चादर बहुत भारी होती है। यह तैरने वाले जहाजों में सबसे अधिक भारी होता है। १९०७ तक इसमें केवल चार बड़ी तोपें दो बुर्जियों में लगी हुई होती थीं, एक आगे की ओर और एक पीछे। जहाज के चौड़े भागों में छोटी तोपों की बैटरी होती थी।

किन्तु उसी वर्ष "ड्रेडनॉट" नामक युद्धपोत प्रकट हुआ। वह सब बड़ी तोप वाली कोटि में सर्वप्रथम था। उसमें पांच बुर्जियों में १२ इंच की दस तोपें इस प्रकार लगी हुई थी कि जहाज के दोनों ही चौड़े भागों की ओर आठ तोपें अग्नि वर्षा कर सकती थीं। उसमें कोई छोटी तोपें नहीं थीं यह बात सन्तोषजनक प्रमाणित नहीं हुई और समयानुसार बाद मे बनने वाले युद्धपोतों में छोटी तोपों की भी व्यवस्था की गई। (ड्रेडनोट" १८००० टन का था और इस की गति २१ नाट थी एक नाट लगभग २००० गज होता है)।

आधुनिक युद्धपोत

यान्त्रिक विकास चलता रहा और १९३७ में एक नये ढंग का युद्धपोत उतारा गया। इस प्रकार के पोत उदाहरण के लिये 'किंग जार्ज फिफ्थ', लगभग ३५००० टन के होते हैं और इनमें १४ इंच वाली १० तोपें होती हैं तथा ३० नाट की गति होती है। इन की चादर बहुत भारी होती है जो स्वाभाविक रीति से ही घातक चोटों से इनकी रक्षा करती है। एक आधुनिक युद्धपोत पर लगभग १५०० व्यक्तियों की व्यवस्था होती है। आज उसकी लागत लगभग १० करोड़ रुपये अथवा और भी अधिक होगी और उसकी प्रति दिन की देख भाल में ही लगभग १३५००) रुपये व्यय होंगे।

गुण तथा अवगुण

युद्धपोत का विशेष गुण उसकी दूर तक भारी मार करने की शक्ति होती है। उसकी बड़ी तोपों के धक्के का सहने के लिए तोपें चढ़ाने के स्थान बहुत भारी और मजबूत होने चाहिए। भारी मार करने की शक्ति के साथ ही साथ उसे उतनी ही भारी मार सहने में भी समर्थ होना चाहिये। अतः उसकी चादर

एक युद्धपोत के अन्दर उस कमरे का दृश्य जहां से तोपें संचालित की जाती हैं।

का बहुत मोटा होना स्वाभाविक ही है। उसके आकार के साथ यदि हम उसकी तोपों की शक्ति तथा भारी चादर का विचार करें, तो यह स्पष्ट है कि उसकी गति काफी घट जाती है। और इसीलिए बचाव करने वाले जहाजों की उसके चारों ओर आवश्यकता पड़ती है।

दोहरा तला

यह हम देख सकते हैं कि जैसे-जैसे पनडुब्बियों की शक्ति बढ़ी, बचाव करने वाले विध्वंसकों का कार्य भी उसी प्रकार बढ़ा किन्तु इसके अतिरिक्त युद्धपोत को बनाते समय ही एक अन्य सुरक्षात्मक साधन और रखा गया। उसे "बल्ज" कहते हैं। इसमें पोत का दोहरा तला होता है। जिससे वह जलके अन्दर से होने वाले आक्रमणों को सह सके। जब वायु शक्ति का विकास हुआ, जैसा कि देख चुके हैं यानवाहक द्वारा दी जाने वाली सुरक्षा के अतिरिक्त यानध्वंसिनी तोपों की भी व्यवस्था कर दी गई।

भविष्य का प्रश्न

अन्त में उस विवाद का यहां उल्लेख कर दिया जाय जो युद्धपोत के भविष्य ऊपर चल रहा है। एक विचारधारा का कथन है कि यह सब अन्धकारमय है, उसकी धीमी गति को देखते हुए वायु शक्ति से एक युद्धपोत को शीघ्र ही छिन्न भिन्न किया जा सकता है, और किसी भी प्रकार जन तथा धन की इस विशाल परिमाण में होने वाली हानि का भय किसी प्रकार भी उचित नहीं दूसरी ओर यह तर्क दिया जाता है कि जब से पनडुब्बी तथा टारपीडो का निर्माण हुआ विनाश के दूत अपना कार्य करते ही रहे है और तो भी युद्धपोत जीवित बना रहा है और ऐसा ही वह वायुयान के विरुद्ध भी करेगा।

भारत की स्थिति

इस प्रश्न पर अभी भी विवाद चल रहा है परन्तु हम यहां पर कुछ और अधिक विचार नहीं करेंगे। इतना ही कहना पर्याप्त है कि धन तथा ट्रेनिंग प्राप्त व्यक्तियों का अभाव तथा अन्य भी बहुत से कारणों के कारण भारत अभी तक अपनी जल सेना में एक युद्धपोत बनाने का विचार नहीं कर रहा है, और हम इस प्रश्न को यहीं छोड़ सकते हैं।

भीमकाय युद्धपोत 'वैनगार्ड' समुद्र के वक्ष को चीरता हुआ आगे बढ़ रहा है। चित्र में बड़ी तथा छोटी तोपें स्पष्ट दिखाई देती हैं। यह चित्र वायुयान से लिया गया है।

कम्यूनिस्टों की युद्ध सामग्री ला ी हुई इन रेलगाड़ियों पर राष्ट्र संघीय विमानों ने सीधा निशाना लगाया है।

★ ★ ★

आक्रमण के लिए ऊपर उठता हुआ एक जेट वायुयान।

★ ★ ★

अन्य कोई आड़ न देख कर सैनिकों ने अपने वाहन की आड़ में बैठ मोर्चा आरम्भ कर दिया है।

★ ★ ★

राष्ट्र संघ की सेनाओं द्वारा

क्या कोरिया में

कोरिया के युद्ध को चलते हुए एक वर्ष से कुछ अधिक समय हो गया। इस काल में दोनों ही पक्षों को कई बार जय पराजय का मुह देखना पड़ा। किन्तु किसी प्रकार का निर्णय नहीं हो सका। यही कारण है कि कायसोंग में शान्ति वार्ता आरम्भ हो सकी।

यह स्मरणीय तथ्य है कि जापान की पराजय के पश्चात् कोरिया में रूस तथा अमेरिका दोनों की सेनायें पहुँच चुकी थीं। दोनों में प्रायद्वीप के विषय में कोई निर्णय न हो पाने के कारण ३८ वीं अक्षांश रेखा पर कोरिया का कृत्रिम विभाजन स्वीकार कर लिया गया और दोनों ही ने अपने अपने क्षेत्र में अपने अपने अनुकूल सरकार स्थापित कर दी।

रूस और अमेरिका में जिस प्रकार एक दूसरे के प्रभाव को कम करने के दावपेच और संभावित विश्व युद्ध की दृष्टि से नाकेबन्दी चल रही है, वही कोरिया युद्ध का मुख्य कारण है। चीन में कम्यूनिस्टों द्वारा च्यागकाई शेक की पराजय से यद्यपि अमेरिका की रूस की नाकेबन्दी करने की नीति को एक भारी धक्का लगा था, तो भी जब तक जापान पर उनका शासन है अमेरिकन सेनाएं एशिया के समस्त प्रशान्त तट को प्रभावित करते रहने में समर्थ हैं। प्रशान्त में प्रमुख रूसी बन्दर ब्लाडीवोस्टक सदा अमरीकीमार के अन्तर्गत रहता है। यही नहीं कम्यूनिस्ट चीन पर भी एक भारी सामरिक नियन्त्रण बना रहता है।

कोरिया की भौगोलिक स्थिति इस प्रकार की है कि उसे समरविशेषज्ञ 'जापान के हृदय की ओर तना हुआ खंजर" कहते हैं। किन्तु कोरिया के जिस दक्षिणी भाग की यह स्थिति है, वहाँ अमेरिका के अनुकूल डा० सिंगमनरी का शासन है। यदि इस पर भी कम्यूनिस्ट प्रभाव फैल सके तो जापानी अड्डों से चोट कर सकने वाली अमरीकी शक्ति कुंठित हो जाती है, क्योंकि युद्ध की स्थिति में कोरिया के दक्षिणी तट से स्वयं जापान पर ही चढ़ाई करना सुगम हो जाता है।

इस दृष्टि से उत्तरी कोरिया के कम्यूनिस्ट शासन ने "कोरिया एक हो" का आकर्षक नारा लगा कर दक्षिण पर आक्रमण कर दिया। वास्तव में यदि दोनो ही पक्षों को अन्तर्राष्ट्रीय समर्थन प्राप्त न होता तो यह केवल एक साधारण सा गृह-युद्ध होता और इसका कोई विशेष महत्त्व न होता। किन्तु अमेरिका और रूस के विश्व व्यापी संघर्ष का हाथ इसके पीछे होने के कारण यह अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति को भी संकट में डालने वाला बन गया।

अमरीकी सेनाएं जिस समय कोरिया पहुँची, उत्तरी कोरियन बराबर

कोरिया में कायसोंग क्षेत्र में, जहां कि युद्ध विराम वार्ता चल रही है

...घिरे गए कम्यूनिस्टों का एक दृश्य ।

...युद्ध बन्द होगा ?

श्री "आनन्द"

आगे बढ़ रहे थे । उनकी सुसगठित और सबद्ध सेनाओं ने दक्षिणी सेनाओं का साहस तोड़ दिया । स्वयं अमेरिकन सेनाओं को पैर जमाना कठिन हो गया। पीछे हटते-हटते पुसान के तीन ओर एक घेरे के रूप में केवल थोड़ी सी भूमि पर ही उनके पैर टिके रह गये । ऐसा भी भय हुआ कि कहीं कम्यूनिस्ट उन्हें समुद्र में न धकेल दें ।

तभी मित्रराष्ट्रों के प्रधान सेनापति जनरल मैकार्थर ने सियोल के निकट इञ्चोन बन्दरगाह पर अपना चमत्कारी आक्रमण किया । शीघ्र ही मित्र सेनाओं ने आगे बढ़ कर सियोल पर अधिकार कर लिया । इससे कम्यूनिस्टों का समस्त व्यूह टूट गया और उनकी समस्त सैन्य व्यवस्था नष्ट भ्रष्ट हो गई । दक्षिण में ... में बन्द सेनाएं आगे बढ़ चलीं । कम्यूनिस्टों की छिन्न भिन्न सैन्य व्यवस्था का लाभ उठा कर मेकार्थर ने उत्तरी कोरिया को भी अधिकांश विजय कर लिया और मित्र सेनाएं मञ्चूरिया की चीनी सीमा के निकट आ पहुँची ।

मेकार्थर की एक चोट ने नक्शा ही पलट-सा दिया । उत्तरी कोरिया की इस पराजय से विश्व कम्यूनिस्ट सगठन के सम्मान को भारी धक्का पहुँचा और उन्हें यह अनुभव हुआ कि यदि कोरिया विजित हो गया तो सारी प्रतिष्ठा धूल में मिल जायगी । अत यालू नदी स्थित विद्युत उत्पादन केन्द्रों को बचाने के बहाने मास्को के सकेत पर चीनी कम्यूनिस्ट मैदान में उतरे । उनके वेग ने मित्रपक्ष का व्यूह तोड दिया और इनकी सेनाओं का दक्षिण कोरिया तक हटना पड़ा । सियोल हाथ से निकल गया और उत्तर में एक विशाल सेना समुद्र के किनारे घिर गई । किन्तु बड़ी चतुराई और वायुशक्ति के सहारे उसे निकाल लिया गया।

चीन के इस प्रवेश ने विश्व युद्ध की घोषणायें बहुत बढ़ा दीं । सयुक्त राष्ट्र सघ में कम्यूनिस्ट चीन के प्रतिनिधि को बुलाया गया किन्तु उनके कठोर रुख ने कोई गुञ्जाइश न छोड़ी । उस समय कोरिया में कम्यूनिस्ट पक्ष प्रबल था । चीनी प्रतिनिधि वापिस लौट गये । तब अमेरिका द्वारा चीन को आक्रांता घोषित करने का प्रस्ताव उपस्थित किया गया जो स्वीकृत हो गया । रूसी प्रतिनिधि ने सयुक्त राष्ट्र सघ की बैठकों का ही बहिष्कार कर दिया ।

उधर कोरिया में युद्ध चलता रहा । राष्ट्र सघ के सैनिकों ने पुन पैर जमाये और अपनी स्थिति सुदृढ़ कर धीरे-धीरे आगे बढ़ना आरम्भ किया । पुन एक बार उन्होंने सियोल पर अपना अधिकार स्थापित किया और ३८ वीं अक्षांश की ओर बढ़े । पुन रेखा पार कर उत्तरी कोरिया की भूमि में प्रवेश किया । उधर सयुक्त राष्ट्र असेम्बली में रूसी प्रतिनिधि

राष्ट्र सघ की ओर से कोरिया में लड़ने वाले लक्ज़मबर्ग के सैनिक ।

★ ★ ★

राष्ट्र सघ असेम्बली द्वारा चीन के विरुद्ध आर्थिक नियन्त्रण का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया । रूसी प्रतिनिधि श्री मलिक हाथ पर गर्दन टेक बैठे हैं ।

★ ★ ★

सैनिकों की तनी हुई बन्दूकें और झुकी हुई कमर सीधी हो गई हैं ।

कम्यूनिस्टों से छीनी हुई एक स्वयचालित तोप । रूस में बने हुए इस अस्त्र का वाशिंगटन में प्रदर्शन किया जा रहा है ।

★ ★ ★

कोरिया में युद्ध-त्रस्त नारी जीवन

★ श्रीमती सुशीलकुमारी

युद्ध के सम्बन्ध में प्रायः सर्व सम्मत धारणा यह है कि केवल सेना में ही युद्ध करती हैं समस्त राष्ट्र नहीं। युद्ध से पूर्व दो प्रतिद्वन्दी शक्तियों में पारस्परिक वैमनस्य की अग्नि धीरे २ सुलगती रहती है और समय पाकर युद्ध के रूप में एक महान धमाका संसार के सम्मुख हो जाता है जिसकी भीषणता की कल्पना भी इससे पूर्व नहीं होती।

प्रत्यक्ष रूप से युद्ध में संलग्न राष्ट्रों की सेनायें ही युद्ध क्षेत्र में लड़ती हुई दिखलाई देती हैं। किंतु यदि हम युद्ध के मूल में गहराई से जायें तो प्रतीत होगा कि युद्ध का विनाशकारी परिणाम केवल सैन्यबल के ह्रास के रूप में ही नहीं भुगतना पड़ता समस्त राष्ट्र का सामाजिक तथा आर्थिक ढांचा और पारिवारिक जीवन भी विश्रृंखलित हो जाता है। सहस्रों निरीह नर नारियां को अपनी मातृभूमि का मोह त्याग स्थान २ पर भटकना पड़ता है परिवार के परिवार उजड़ जाते हैं। राष्ट्र की सुख शान्ति तथा समृद्धि चिरकाल के लिए लुप्त हो जाती है।

कोरिया युद्ध और नारी

द्वितीय महायुद्ध से पूर्व कोरिया जापान की निरंकुश तानाशाही से आक्रान्त था। परावलम्बी होने के नाते कोरियन कभी भी एक राष्ट्र के रूप में खड़े नहीं रह सके। जापानी साम्राज्य के अन्तर्गत भी कोरिया की अधिकांश जन संख्या कृषक थी। कृषि के साधन भी पूर्णतया विकसित नहीं थे। ऐसी स्थिति में कोरिया की डांवाडोल स्थिति में यदि कोरिया को अपनी नारीशक्ति का सहयोग न मिलता तो आज कोरिया का सामाजिक जीवन कभी का नष्ट होगया होता।

परिश्रमी और साहसी कोरियन नारी

कोरियन नारी ने हमेशा से ही केवल परिवार में ही नहीं, परिवार से बाहर भी पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ाकर कार्य किया है। सदा से ही उसका जीवन संघर्षपूर्ण रहा है। द्वितीय महायुद्ध से पूर्व उसने पारिवारिक जीवन को सुख शान्ति पूर्ण बनाने के लिए अपने छोटे छोटे निरीह बालकों को पीठ से बांधकर अनवरत परिश्रम किया। युद्ध के दिनों में भी जब स्थिति भयंकर से भयंकरतम हो गई उसने धैर्य नहीं छोड़ा और कोरिया को बन्धन मुक्त करने के लिए जब कभी भी संघर्ष हुआ उसने पूरा २ सहयोग प्रदान किया।

युद्ध के पश्चात

युद्ध के पश्चात जब कोरिया दो महान शक्तियों में बंट गया उस समय इस अप्राकृतिक विभाजन के कारण स्थिति और भी भयावह हो उठी। एक ओर सारा औद्योगिक क्षेत्र चला गया दूसरी ओर अन्न बहुल प्रदेश किन्तु कोरिया की वीर रमणी ने उस स्थिति का भी सामना किया।

गत वर्ष २५ जून १९५० को उत्तरी कोरिया द्वारा दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण कर दिया गया। समस्त कोरिया को युद्ध की भट्टी में झोंकने का उत्तरदायित्व किस पर है अमेरिका या रूस पर इस विवाद में न पड़कर भी परिणाम निकाला जा सकता है कि दोनों ही ओर से नारी-जाति को पग पग पर असम्मान अवहेलना तथा अत्याचारों का सामना करना पड़ा। एक राष्ट्र के सैनिकों द्वारा दूसरे राष्ट्र की गुप्तचर महिलाओं को उन्हें आम गोली से उड़ा देने के समाचार निरन्तर प्राप्त होते रहे हैं। वह दृश्य वास्तव में कितना कारुणिक और हृदय द्रावक होगा जब दोनों कोरियाओं की राजधानियों तथा प्रमुख नगरों से सहस्रों की संख्या में नारियां अपने बच्चों को लिये आश्रयहीन हो इधर उधर भागती फिरती थीं। अपने जिस पारिवारिक जीवन के निर्माण के लिये उन्होंने रात दिन एक कर दिया। कठोर से कठोर आर्थिक संकटों के समय भी जिन्होंने धैर्य नहीं छोड़ा आज उसी जीवन का मोह छोड़कर व्याकुल हो वे इधर उधर भटक रही हैं।

नैतिक दायित्व

कोरिया की भूमि पर हुए इस युद्ध में कोरिया की नारियों को भारी कष्ट उठाने पड़े हैं। युद्ध की अग्नि से स्वयं बचने तथा अपने बच्चों को बचाने के लिए कितनी ही बार उन्हें अपने घरों को छोड़ कर भागना पड़ा है। युद्ध की गोलाबारी में उनके मकान नष्ट हो गए सैनिक गति विधि के कारण उन्हें मार्गों में भी कष्ट होते थे। कितनी नारियों को तो सियोल से पुसान तक का अधिकांश भाग पैदल ही चल कर आना पड़ा है। उनकी सारी सम्पत्ति या तो नष्ट हो गई या मार्ग में व्यय हो गई। युद्ध के कारण कोरिया में महगाई बहुत बढ़ी हुई है। युद्ध से बच कर आये हुए इस प्रकार के परिवार और नारियों की संख्या पुसान में सर्वाधिक है।

कायसोंग में चल रही सन्धिवार्ता यदि सफल हो गई तो दोनों ही पक्षों पर यह नैतिक भार आ पड़ेगा कि वे अपने अपने क्षेत्र में पुनर्वास कार्य को शीघ्र से शीघ्र सम्पन्न करें। यदि यह कार्य ठीक प्रकार से किया जा सके तो सम्भव है कि कोरिया की युद्ध त्रस्त नारी को कष्ट कुछ कम हो सके? और विश्रृंखलित पारिवारिक जीवन पुनः ठीक प्रकार से चल सके।

युद्ध से त्रस्त हो कर सहस्रों कोरियन परिवारों को भागना पड़ा। चित्र में एक बूढ़ी स्त्री को सहारा दे कर उसकी साथिन लजा रही हैं पीछे एक सैनिक गाड़ी है।

पुसान में शरणार्थियों की भरमार है। अपना घर छोड़ कर आई हुई ये महिलायें वहां राशन में मिलने वाले अन्न से गुजर कर रही हैं।

बंग-भूमि में संस्कृति का विनाश ! [३]

श्री सुरेशचन्द्र मिश्र

भारत सरकार के अल्पसंख्यक मन्त्री
श्री चारुचन्द्र विश्वास

भारत से लगने वाली पूर्वी बंगाल की सीमा पर पाकिस्तानी सेनाओं ने बहुसंख्या में घेरा डाल लिया है और सीमा से पांच मील दूर तक का प्रदेश नागरिकों के आवागमन के लिए वर्जित घोषित किया गया है। पाकिस्तान द्वारा निरन्तर अपने सैन्यबल में वृद्धि करने तथा भारत पर बार-बार अप्रत्यक्ष रूप से आक्रमण करने की धमकी दिये जाने पर भी पाकिस्तान के प्रधानमंत्री श्री लियाकतअली खां ने भारत पर आक्रामक होने का आरोप लगा कर उल्टा चोर कोतवाल को डांटे वाली कहावत को चरितार्थ किया है। परिस्थिति की गम्भीरता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि हमारे शांतिप्रिय प्रधानमंत्री प० नेहरू तक को लियाकतअली के आरोप का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए बाध्य होना पड़ा है। यह सब घटनाएं तथा मिथ्यारोप आकस्मिक तथा अप्रत्याशित नहीं हैं क्योंकि पिछले दो वर्ष की घटनाओं का सिंहावलोकन करने से यह अपने आप स्पष्ट हो जाता है कि प्रारम्भ से ही पाकिस्तान सरकार की योजना बंगाल की संस्कृति को नष्ट भ्रष्ट करने की थी। इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए सरकार ने पूरी शक्ति के साथ हिन्दुओं को पूर्वी बंगाल से निष्कासित किया उनकी धन सम्पत्ति छीन कर उनको भिखारी बना दिया और भारत के एक सभ्य तथा सु[illegible] की जीवनधारा को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

शिक्षा का विनाश

पिछले दो लेखों में यह स्पष्ट कर दिया गया है कि किस प्रकार पाकिस्तान सरकार ने विगत फरवरी मास में व्यापक रूप से दंगे कराके सहस्रों नर-नारियों को घर-बार छोड़ कर भारत में जाने के लिए बाध्य किया और फिर नेहरू लियाकत समझौते के पश्चात् शान्तिपूर्ण वातावरण में ही धीरे धीरे बंगभूमि की संस्कृति के विनाश का कार्य चलता रहा।

पूर्वी बंगाल शिक्षा का एक बहुत बड़ा केन्द्र है। शिक्षा की ओर रुचि भी बंगाल में अधिकतर हिन्दुओं की ही रही है। अतः हिन्दू विद्यार्थियों का वहां के स्कूलों और कालेजों में बहुसंख्या में होना स्वाभाविक ही था। किन्तु आज वहां की प्रायः सभी शिक्षण संस्थायें या तो बन्द पड़ी हैं अथवा अव्यवस्थित अवस्था में चल रही हैं। न तो उनमें शिक्षा प्राप्त करने वाले हिन्दू विद्यार्थी ही हैं और न ही उन संस्थाओं को आर्थिक सहायता देने वाले शिक्षा प्रेमी हिन्दू जन।

किसी प्रकार की भी भीषण परिस्थितियों तथा धार्मिक और राजनैतिक मतभेदों के होते हुये भी दोनों बंगालों की जनता में बंगला भाषा के लिए समानरूप से प्रेम रहा है। संस्कृति के विकास में भाषा का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है और इस सत्य से आज कोई भी इन्कार नहीं कर सकता कि बंगला वाङ्मय में जिस उच्च कोटि के साहित्य का सृजन हुआ है उस पर कोई भी जाति तथा देश गर्व कर सकता है। इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि समय समय पर बंगाल से स्वातन्त्र्य चेतना की जो लहर उठती रही उसने शस्य श्यामला बंग भूमि ही नहीं समस्त भारत की प्रसुप्त आत्मा को झकझोर कर जगा दिया। स्व० बंकिमचन्द्र के आनन्द मठ को पढ़ कर बन्देमातरम् की जो ध्वनि भारत भर में गूंज उठी जिसमें मस्त हो कर भारतमाता के असंख्यों लाल फांसी पर झूल गये उसे आज भी कौन भूल सकता है। बंगाली युवक में स्वातन्त्र्य प्राप्ति की जो उद्दाम्य लालसा समय समय पर क्रान्तिकारी रूप में प्रकट हुई उसका एकमात्र कारण ही यही था कि बंगाल के प्रत्येक नर नारी चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान एक ही भाषा से स्फूर्ति ग्रहण करता था और बंग संस्कृति की अविच्छिन्न धारा दोनों के हृदयों में प्रवाहित थी। उसका कारण ही यही था कि भाषा की एकता ने सोचने की दिशा को ही संकीर्णता से मुक्त कर दिया था। बंगाली में लिखे हुये महर्षि रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा बंकिमचन्द्र के ग्रन्थों से सभी को प्रेरणा मिलती रही।

बंग भाषा का मूलोच्छेदन

किन्तु आज पाकिस्तान सरकार बंग संस्कृति के इस एकमात्र अवशिष्ट उपकरण को भी नष्ट भ्रष्ट करने पर तुली हुई है। बंगाली भाषा और साहित्य दोनों को रोचक के शासकों द्वारा इस दृष्टि से देखे जाते हैं और पाकिस्तान की एकता के शत्रु समझे जाते हैं। पाकिस्तान के शासकों को डर है कि भाषा की एकता तथा भाषा के प्रति अनुराग ही कहीं विभाजित बंगाल को संयुक्त कराने के आन्दोलन में सहायक न हो जाये। चिरकाल में एक ही भाषा होने के कारण दोनों बंगाल के निवासियों में विचारों की जिस एकता का जन्म हुआ था उसके प्रति आज का पाकिस्तानी शासक सशंक है। इसलिये सरकार का यह पूरा पूरा प्रयत्न है कि बंगाल की मुस्लिम जनता हिन्दू प्रभाव से सर्वथा मुक्त होकर इस्लाम की संकीर्ण विचार धारा को पूर्णतया अपनाले। केवल विचारधारा में परिवर्तन ही नहीं स्वयं बंगाली भाषा को ही विनष्ट करने की घातक चेष्टायें की जा रही हैं। बंगाली भाषा को अरबी लिपि में लिखे जाने उर्दू शब्दों का प्रयोग तथा बंगला को उर्दू मय बनाने की निरन्तर सक्रिय चेष्टायें की जा रही हैं।

पाकिस्तान के केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री श्री फजलुलरहमान ने अपने एक भाषण में कहा था कि हमारी शिक्षण पद्धति को इस्लामी विचारधारा से ही स्फूर्ति ग्रहण करनी चाहिये और साथ ही यह भी आशंका प्रकट की थी कि कहीं हमारे शिक्षा शास्त्री इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य दिशा में ही रचना प्रारम्भ न कर दें। स्पष्टतः उनका संकेत बंगाल की संयुक्त संस्कृति से प्रभावित व्याख्या की ओर ही था।

पाकिस्तान की केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार समिति ने जो केन्द्र और प्रान्तों की शिक्षण पद्धति निर्धारित करती है एक प्रस्ताव पास किया है कि शिक्षकों की शिक्षण पद्धति में इस्लाम और मुहम्मद सम्बन्धी शिक्षा को अनिवार्य बना दिया जाय। बंगाल के हिन्दू नागरिकों

पाकिस्तान सरकार के भूतपूर्व कानून-मन्त्री
श्री योगेन्द्रनाथ मण्डल

की उस शिक्षण योजना में बौद्ध त्रिपिटकों तथा वेदों व अन्य धर्म ग्रन्थों में भी कुछ रखने की मांग को सर्वथा ठुकरा दिया।

केवल यही नहीं पूर्वी बंगाल में भूगोल तथा इतिहास की भी शिक्षा सर्वसम्मत तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर दी जा रही है। भारत के संग्राम के इतिहास को हिन्दुओं द्वारा मुसलमानों को कुचलने की योजनामात्र बताया जाता है।

इस प्रकार पूर्वी बंगाल में संस्कृति के विनाश की चेष्टायें निरन्तर चल रही हैं। पाकिस्तान के मन्त्रिमण्डल के सदस्य श्री योगेन्द्र नाथ मण्डल के विरोधस्वरूप देहली आने और बंगाल की भयंकर स्थिति को खोलकर सामने रखने के पश्चात भी नेहरू लियाकत पैक्ट को सफल करने के उत्साह में हमारी सरकार ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। अन्त में इस असावधानी का परिणाम हमारे सामने है। पृथक अल्प संख्यक मन्त्री नियुक्त किये जाने के पश्चात् भी बंगाल की समस्या निरन्तर भयंकर होती चली गई। और आज आज तो पूर्वी बंगाल की समस्या समस्त भारत की समस्या बन गई है। बंगाल की महान संस्कृति के विनाश के पश्चात भी आज पाकिस्तान की आक्रामक नीति के कारण भारत में चारों ओर विक्षोभ का वातावरण छाया हुआ है। भारत सरकार द्वारा बिना कोई गम्भीर और कठोर कदम उठाये यह समस्या हल नहीं हो सकती।

———

अमेरिका द्वारा जापान से स्थायी संधि करने की चेष्टा : प्रशान्त में कम्यूनिज्म के फैलाव को रोकने का कूटनीतिक उद्योग : सशस्त्र जापान रूस व चीन की चिन्ता का विषय : संधि में जापान को अनेकों सुविधा दी जा रही हैं

★ श्री शिवकुमार शर्मा

अमेरिका के राष्ट्रपति श्री ट्रूमैन

आज विश्व के समस्त देश आगामी महायुद्ध की आशंका से शक्ति संचय करने में लगे हुए हैं। यूरोप में रक्षा पंक्ति निर्माण की योजनाएं प्राय: पूर्ण हो चुकी हैं। जर्मनी के साथ युद्ध स्थिति समाप्त होने की घोषणा अभी हाल में ही हुई है। वस्तुतः अन्तिम युद्ध तो अब हुआ है, जब कि पराजित देशों के साथ शान्ति सन्धि की योजनायें बनाई जा रही हैं। एशिया में जापान भी पराजित राष्ट्र है। अमरीकी शासन ने अब तक वहां अपने पैर जमा लिए हैं। रूस की पश्चिमी सीमा के समीप ब्रिटेन व फ्रांस है और पूर्वी सीमा के निकट अमरीकी प्रदेश है। पर्ल हार्बर पर आक्रमण के पश्चात् अमरीका अपनी इस सीमा पर सतर्क हो गया है। इसके अतिरिक्त अनेक कारणों से अमरीका जापानको मित्र बनाये रखना चाहता है। इस मित्रता को दृढ़ स्वरूप देने के लिए ही वह शीघ्र शांति सन्धि सम्पन्न करना चाहता है। अमरीका के विरोधी रूस व चीन के अतिरिक्त उसके साथी ब्रिटेन, न्यूजीलैंड व आस्ट्रेलिया इस सन्धि को आशंका की दृष्टि से देखते हैं। इन आशंकाओं की जड़ मे प्रशान्त क्षेत्र का गत इतिहास है।

सामरिक महत्व

जापान छोटे-छोटे द्वीपों का समूह है। अमरीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, कनाडा, रूस व चीन के मध्य में होने के कारण इसकी सामरिक स्थिति महत्वपूर्ण है जापान सदैव अपनी नाविक शक्ति से पूर्ण है। जापान को केन्द्र बना कर कोई भी शक्ति अपने विरोधी पर सफलतापूर्वक आक्रमण कर सकती है। यहां पूर्व व पश्चिम के स्वार्थ टकराते हैं। रंगभेद की सीमा भी पूर्व मे इसी क्षेत्र मे विद्यमान है।

साम्राज्यवादी मनोवृत्ति

जापान एशियाके पूर्वी क्षेत्रके बन्दरो को आतंकित करता रहा हैं। प्रत्येक शक्ति सञ्चय करने वाला राष्ट्र प्राय युद्ध-पिपासु बन जाता है। जापान भी इसका अपवाद नहीं है। उसकी नीति सदैव से साम्राज्य के विकास की रही। उसके पड़ोसी उसकी बर्बरता व शक्ति-प्रदर्शन के केन्द्र रहे हैं। चीन, मंचूरिया व कोरिया का सदैव से ही जापान द्वारा शोषण किया गया है। १८८८ के बाक्सर विद्रोह के पश्चात् चीन के आर्थिक क्षेत्र में जापान का पदार्पण हुआ। ब्रिटेन, रूस, अमेरिका व जापान ने मुक्त व्यापार की नीति पर चलने की घोषणा की। जापान ने धीरे-धीरे सैन्य व नाविक शक्ति के बल पर अपना अधिकार क्षेत्र विस्तृत कर लिया। पश्चिमी राष्ट्र परिस्थितिवश चुप रहे और जापान के तुष्टीकरण के लिए उसे आगे को सुविधाएं दीं।

रूस पर विजय

रूस ने जापान के बढ़ते हुए प्रभाव का प्रकट रूप में विरोध किया। उसने मंचूरिया की सीमा पर अपनी सेनाएं एकत्रित करनी शुरू कीं। रूस मंचूरिया को उसके खनिज पदार्थों की बहुलता के कारण नहीं छोड़ना चाहता था। १९०४ में समस्त संसार ने आश्चर्य के साथ देखा कि जापान के मुट्ठीभर सैनिकों ने रूस की संगठित सेना को भागने के लिए विवश किया। पोर्ट आर्थर पर जापानियों का अधिकार हो गया। रूस को इस युद्ध में अपने जहाजी बेड़े से भी हाथ धोना पड़ा। जापान ने उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। इस प्रकार कई दशाब्दियों तक रूस की महान् शक्ति के भाग्य पर प्रशान्त क्षेत्र में मुहर लग गई।

चीन व मंचूरिया

कोरिया, मचूरिया व चीन के लिए जापान सदैव खतरा रहा है। १९३१ में जापान ने मचूरिया हड़प लिया। शंघाई पर हमला होने के समय चीनियों ने उसका कड़ा विरोध किया। कोरिया के वक्षस्थल पर जापान सदैव से छुरा ताने खड़ा रहा है। जापान अमरीका के लिए भी खतरा बन सकता है। अब देखना यह है कि कौन-सी ऐसी शक्ति है, जो कि इन कारणों के होते हुए अमरीका को जापान का शस्त्रीकरण करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

युद्ध के पश्चात्

गत महायुद्धों में जापान के पराजित होने के पश्चात् उस पर अमरीका का अधिकार हो गया। आगामी युद्ध के भय के कारण अमरीका अपने साथियों के विरोध के रहते हुए भी जापान का शस्त्रीकरण करना चाहता है। आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड को उसने प्रशान्त सधि के अन्तर्गत आक्रमण की दिशा में सहायता का वचन दिया है।

ब्रिटेन व अमेरिका

ब्रिटेन का अमरिका से चीन के प्रतिनिधित्व व जापान की आगामी व्यापारिक गतिविधि के सम्बन्ध में मतभेद है। अमेरिका फारमोसा में स्थित च्यांग की सरकार का समर्थन करता है तो ब्रिटेन अपने स्वार्थों के कारण जनवादी सरकार को मान्यता प्रदान किए हुए है। अमरीका ने इस सम्बन्ध में कूटनीति से काम लिया है। उसने चीन के प्रतिनिधित्व का विषय जापान पर ही छोड़ दिया है। स्वयं चीन इस शान्ति सन्धि को आशंका की दृष्टि से देखता है क्योंकि वह जापान द्वारा सबसे अधिक सताया गया है। भविष्य में भी वह जानता है कि जापान में अमरीकी फौजों के रहने के कारण उसे दुहरा भय है।

साम्यवाद का भय

साम्यवाद का जापान में प्रभाव बढ़ता ही जा रहा है। स्वयं अमेरिका ने वहां साम्यवादियों पर अनेकों प्रतिबन्ध लगा दिये हैं। रूस के समीप होने के कारण जापान को अनेकों सुविधायें दी गई हैं। उससे युद्ध व्यय भी नहीं लिया जायेगा। अमरीका को भय है कि ऐसा होने पर उसका आर्थिक ढांचा टूट जायेगा। जापान अपनी सैनिक शक्ति भी बढ़ा सकेगा। इसके विपरीत इटली आदि पराजित देशों को बहुत कम सुविधायें दी गई हैं। जापान अपने देश में विदेशी सेनायें भी रख सकेगा। कम से कम अमरीकी सेनायें तो वहां रहेंगी ही। यदि जापान में अन्य देशों की सेनायें रहें तो उसकी स्वतन्त्रता नाममात्र के लिये ही होगी।

रूस के अधिनायक श्री स्टालिन

ब्रिटेन का विरोध

ब्रिटेन प्रभृति देश जापान के आर्थिक पुनरुद्धार के विरुद्ध हैं। वह उसके व्यापारिक विरोध से डरते हैं। फ्रांस इस सम्बन्ध में स्वय चिन्तित है। भारत भी जहां जापान की स्वतन्त्रता का समर्थन करता है वहां वह आर्थिक विषय व चीन के प्रश्न कोसुलझाना चाहताहै।

जापानी साम्राज्य गया

इस सन्धि से जापान को इतनी हानि अवश्य हुई है कि उसे अपने २० वर्ष के साम्राज्य से हाथ धोना पड़ा है। उसका चीन, मंचूरिया व कोरिया में समस्त प्रभाव इस सन्धि से समाप्त हो जाता है। साम्राज्य समाप्त अवश्य होगया है तब भी जापान भाग्यशाली है क्योंकि उसे रूस के भय के कारण अनेकों सुविधायें दी गई हैं।

रूस की चिन्ता

रूस के सर्वेसर्वा स्टालिन १९०४ में जापान द्वारा रूसी फौजों की पराजय को नहीं भूले हैं। वह हार जार निकोलस की नहीं थी अपितु रूस की महान शक्ति की हार थी। रूस फिर उस दुर्घटना की पुनरावृत्ति नहीं होने देना चाहता है। चीन व रूस अपने अपने सुरक्षा के प्रश्न को दृष्टि में रखते हुये चिन्तित हैं।

अमेरिका ने रूस का विरोध होते हुए भी इस दिशा में कदम उठाया है। यदि रूस ने सितम्बर सम्मेलन में जापान की शान्ति सन्धि का समर्थन नहीं किया तो यह निश्चित है कि उसे जापान के भूतपूर्व द्वीपों में से कुछ भी नहीं मिलेगा अब देखना है कि शान्ति सन्धि के पश्चात् जापान का रूस व अमरिका के प्रति क्या भाव रहेगा क्योंकि इसी पर जापान की भावी स्थिति निर्भर है।

कहानी

भैय्या की बात!

श्री वचनेश त्रिपाठी

"नारी के दो रूप हैं प्यारी बिटिया, एक दुखदायी है दूसरा सुख देने वाला। पर दोनों में जो सुखी रहे" ह-ह-ह-ह।'

मैंने देखा भैया जीने की सीढ़ियां उतर रहे हैं और अपनी तीन साल की लड़की से कुछ कहते भी जा रहे हैं। वे सदैव आशा से मन की बातें किया करते हैं। जब आशा अपनी मां के पास होती है तब वे स्वयं से काल्पनिक बातें किया करते हैं और हंसते भी रहते हैं।

मैंने उनका यह वाक्य सुन लिया था, सोचा ठीक ही कहते हैं भैया। नारी के सचमुच दो रूप होते हैं—एक लक्ष्मी का और दूसरा ..... ?

तब तक साढ़े नौ का अलार्म बजा दिया टेबिल पर रखी घड़ी ने और तब जल्दी-जल्दी कपड़े उतार साबुन की डिब्बी और तौलिया ले कमरे से बाहर निकल आया स्नान करने।

आंगन में धुआं ही धुआं भरा था और भाभी जुटी थीं रोटियां सेकने में।

"भाभी, कुछ उदास दिखती हो आज," मैंने ऐसे ही पूछा—कुछ पूछना चाहिए था इसलिए।

मैं कुछ पूछ रहा हूँ—यह जान उन्होंने थोड़ा मुस्कराने की चेष्टा की, फिर मेरे प्रश्न का उत्तर देते हुए बोलीं—

"नहीं तो—तकदीर गीली हैं और क्या बताऊं.. जब भाग्य ही खोटे हैं तो किसे दोष देने बैठूं।"

मैं समझ न सका उनकी बात, बोला—"क्या हुआ.. ..?"

"होगा क्या! तुम्हारे भाई साहब से तो मैं तंग आ गई पर उनका वही ढंग। पूछो जब पैसा रखते हो तो चीज देख भाल कर क्यों न लो। पर उन्हें रोटियां तो बनानी नहीं जो.. ..," बोलते-बोलते उनकी वह उदासी गायब हो गई और सदैव बना रहने वाला खिंचा सा कुछ कठोरता ने उसका स्थान ले लिया।

और तब मैं चुपचाप स्नानगृह की ओर बढ़ गया। सर्दी लग रही थी। क्योंकि केवल तौलिया डाले खड़ा था और आफिस जाने में भी देर हो रही थी।

नहाकर जब वापस लौटा तो देखा भैया कमरे में बैठे हैं अनमने से। देख कर चौंका मैं। भैया और अनमने। उन्हें यह हो ही नहीं सकता। उन्हें यह हो तो नहीं सकता पर सम्भव है कुछ विशेष घटना घटित हो गई हो, आखिर आदमी ही हैं यह भी।

पूरे डेढ़ वर्ष से मैं उन्हें जानता हूँ। केवल डेढ़ वर्ष से इसलिए कि मेरा उनका जो नाता है वह 'सगेपन' की मुहर नहीं रखता।

नौकरी करते बहुतों से परिचय हो जाता है—पर नाता तो नहीं जुड़ जाता इस प्रकार! किन्तु मैं अठारह महीनों से इन्हीं के मकान में रह रहा हूँ—फिर यदि जुड़ हो जाय तो, तो अस्वाभाविक या आश्चर्यजनक भी नहीं लगेगा किसी को।

हां तो भैया का स्वभाव, उनके विचार बहुतों से मेल नहीं खाते—यह मैं कहूँगा। वे तो कभी कुछ कहते सुनते नहीं। किसी विषय पर यदि बात छिड़ ही गई तो मौन धारण कर लेते हैं या हंसने लगते हैं बुरी तरह, जैसे हंसने का कोई रोग हो उन्हें।

लोग कहते हैं कि पहले यह आदमी जहां बैठ जाता था दो मिनट कि फिर देखते आप—हर कोई हंस रहा है। बात बात पर हंसी। भैया हंसते अब भी हैं पर उतना नहीं। वैसे कभी आप उन्हें उदास नहीं पायेंगे, पर सुनता हूँ कि जब से उनका विवाह हुआ और भाभी आई कि दुनिया ही बदल गई उनकी। कुछ दिन ऐसा जान पड़ा कि भीतर ही भीतर उन्हें कोई खुरच रहा हो जैसे किसी तेज छुरे से और धीरे धीरे उनकी हंसी गायब सी हो गयी। स्वस्थ सुन्दर चेहरा जिस पर सदैव आनन्द व उल्लास लहरें मारा करता था, कुम्हला गया कुछ ही दिनों में। लोग समझ न पाये कि बात क्या है? अब भी नहीं समझ पाते क्योंकि इधर वर्षों से फिर वे हंसते रहते हैं। पहले की तरह सुनने वालों को उसमें कुछ अन्तर का आभास अवश्य मिलता है—पहले वाली बात नहीं मिलती।

भाभी से कुछ अनबन रहती है—ऐसा तो कोई सोच भी नहीं सकता, क्योंकि कभी किसी ने भाभी की बुराई करते नहीं सुना उन्हें।

इधर मैं जब से आया हूँ और रहते रहते जो कुछ देख पाया हूँ उससे चकित रह गया हूँ। सहन शीलता! न बाबा, आदमी के बस के बाहर का बात है यह।

"सब्जी और दो न पोदी"—लाते जब वे मांगते हैं तो भाभी फुफकार भरती हुई लाली बटलोई उनके सामने पटक देती हैं जोर से। कहती हैं, "क्या सब इसी इसी समय बन जाती—शाम को क्या मेरा सिर खाओगे?"

मैं भी चुप बैठा हूँ अपने कमरे में बैठे बैठे, क्योंकि उनके रसोईघर से मिला मेरा अपना कमरा है।

सुन कर सोचता हूँ कि एक सौ तीस रुपये पाते हैं भाई साहब और इने गिने तीन प्राणी। भैया भाभी और उनकी लड़की आशा, जो उनकी तीन वर्ष की है। फिर सब्जी की कमी! भाई साहब का ऊपरी खर्च नहीं के बराबर है।

भैया हैं कि पहली या दूसरी को एक सौ तीस लाकर वैसे के वैसे भाभी के हाथ पर रख देते हैं। कभी भी तो हिसाब नहीं मांगते वे। जब आवश्यकता पड़ती है तो मांगते हैं उन्हीं से और तब भाभी झगड़ा झंझट करके दो रुपये मांगते पर एक या डेढ़ कठिनाई से देती हैं। और देखता हूँ भैया के माथे पर एक भी सिकुड़न नहीं पड़ती। मांगते हैं तब भी हंसते हैं, भाभी रुपये देने में आना-कानी करती हैं तब भी हंसते हैं और जब दो मांगने पर एक देती हैं तब भी हंसते ही रहते हैं और जमीन पर फेंका हुआ रुपया उठा कर चले जाते हैं जहां जाना होता है।

"कहो साहबजादे, स्नान कर आये' किया बड़ी हिम्मत का काम.. .." न जाने क्या क्या सोच रहा था और कंधे पर जो बाल टूट कर रह गये थे—उन्हें निकाल निकाल कर खिड़की से नीचे सड़क की ओर फेंक रहा था कि उनका प्रश्न और फिर एक हंसी का ठहाका सुन मैं भी ठीक उनके सामने आ खड़ा हुआ।

"हिम्मत-हुम्मत क्या, न नहाऊं तो शरीर भारी-भारी सा रहता है और भाभी का भय भी कम नहीं......"

"ह...ह...ह...ह...क्या कहती हैं, बताओ तो जरा?"

"कहती हैं, ब्राह्मण के घर जन्म लेने भर से कोई पंडित नहीं बन जाता, कुछ कर्म-धर्म भी......"

"ह...ह...ह...ह..."—वही बेढब हंसी, फिर बोले—"ठीक तो कहती हैं, झूठ क्या है इसमें, तुम्हीं बताओ भाई?"

इतनी देर में कई ठहाके वे लगा चुके थे, पर मुझे एक बार भी हंसी न आई, हंसने की कोई बात हो तब न हंसा जाता है!

मैं चुप रहा और टेबिल पर से एक मासिक पत्र उठा कर उलटने-पुलटने लगा।

"खैर, तुम्हारा धर्म-कर्म तो तुम्हारी भाभी ही जानें भाई, वैसे कुछ-कुछ आलसी मैं भी हूँ, पर यह शायद न तो तुम से मेल खायेगा न तुम्हारी भाभी साहिबा से ही। पर कहीं पढ़ा था कि जिन्हें तुम अधिक प्यार करते हो—अरे क्या नाम था उनका, टैगोर—हां टैगोर की ही बात है कि.. ..."

तब तक आ गई आशा—वह आते ही उनकी टांग से झूल गई और उनकी वह टैगोर वाली बात बीच में ही छूट गई।

'रानी बिटिया, जा अपनी मां को मना ले जरा, कह जाकर उनसे कि संसार में रह कर सभी के नाते निबाहने पड़ते हैं—न निबाहना स्वार्थ को बढ़ावा देना है.. ..ह ..ह .. ..।" उनकी इस हंसी के कारण परिचितों ने उन्हें 'सनकी' की उपाधि दे डाली थी।

मैं चकराया, आशा बिचारी क्या समझेगी यह सब और यह बात मना-मनौती काहे की? किसका नाता नहीं निभाने देना चाहती मेरी नेक भाभी?

"क्या हुआ भैया!" मैंने सीधे उन्हीं से पूछा।

"कल संध्या को एक तार आया है भाई का। उसने बुलाया है जल्दी। कारण कुछ नहीं लिखा। मैंने कहा हो आऊं क्या पता क्या बात हो? तार कोई ऐसे ही नहीं देता। पर तुम्हारी भाभी कहती हैं, क्या करोगे जाकर! वे लोग ऐसे ही बैठे-बिठाये खर्चा करवाते रहते हैं। कहती हैं जमाना देखो—न किसी का भाई न किसी का भतीजा........, मैं रुपया नहीं दूंगी और न जाने की सलाह ही। पर भाई, तुम्हीं सोचो संसार में रह कर संसार के सभी नाते निभाने पड़ेंगे, फिर वह तो भाई ही है। चार-छः रुपये का मुंह देखना उसके सामने उचित है क्या?" उन्होंने बता डाला और फिर लगे आशा से कहने—

"मेरी अच्छी बिटिया, जा अपनी मां को राजी कर ले रो-धोकर, कहना

आई है अपना—न जाना उचित नहीं। कौन बड़ा खर्चा हो जायगा . . ."

वे कहे जा रहे थे और एक भी बल—एक भी सिकुड़न उनके माथे पर नहीं दिखाई दे रही थी। रात की ही टोन में बतला रहे थे—जैसे आशा को कोई कहानी सुना रहे हों।

"उफ हद हो गई—ऐसी भाभी को मन ही मन बड़बड़ाया मैं।

एक दिन की बात। उस दिन भैय्या जब जल्दी आफिस से आ गये तो पता चला कि वे तो दोपहर में ही कहीं गयी हुई हैं।

'गई होगी कहीं रिश्तेदारी में, आती होंगी' कह कर पूरे तीन घंटे गुजर गये प्रतीक्षा करते करते। दिये जल गये, तब कहीं आई। मैं भी टहलता रहा इधर उधर क्या करता? बाहर ताला जो डाल गई थी। पर वाह रे पुरुष! आने पर भैया बिल्कुल मौन रहे। हंसते रहे बीच-बीच में। अपने आप कोई बात कहना—किसी गीत या भजन की कोई लाइन गुनगुनाना और फिर उस पर स्वयं हंसना तो उनकी आदत सी बन गई है। कोई उनकी हंसी में योग दे या न दे उनकी बात का जवाब दे या न दे—इसकी उन्हें चिन्ता या अपेक्षा नहीं रहती।

यहीं तक बस नहीं। आने पर जब घर में दिया जलाया गया, तो भाई साहब बोले—"जरा जल्दी खाना बनाओ—बहुत भूखा गया हूँ।'

'भूखा गये हो तो क्या यहां कोई जादू की मशीन लगी हुई है जो कहते कहते पूड़ी कचौड़ी निकलने लगें' बनाते बनाते घन्टे-दो घन्टे लग ही जायेंगे।" और फिर फर्श पर कटोरदान पटकने की आवाज सुनाई दे गयी मुझे। मैं थकान के कारण बिना बिस्तर बिछाये खाट पर अधलेटा सा पड़ा था। भैय्या भाभी के विचारों ने हृदय में आग सी लगा दी। उठा और निरुद्देश्य बाहर चल दिया—पर जाता कहां थोड़ी देर में ठंडी हवा के थपेड़े जब सीधे इन्द्रियों में घुसने लगे तो दिमाग भी ठंडा हो गया और आकर दिया बुझाकर चुपचाप लेट रहा, बजे अभी आठ ही थे।

दो ही चार मिनट बीतें होंगे कि आ गये भाई साहब।

"वाह अंधेरे में क्या कर रहे हो साहबजादे। दिया—दिया तो जलाओ, हूं, भला यह भी कोई सोने का समय है। पर भाई तुम ठहरे आफिस के बाबू ह-ह-ह-ह।" बोलते-बोलते वे लगे हंसने। मैं उठ बैठा पर हंस नहीं सका।

"हालांकि आज जीवित एक भी नहीं, आशा को छोड़कर, पर छः बच्चों का बाप होकर भी मैं इतना बूढ़ा नहीं हो पाया साहबजादे, जितने तुम इस नयी उमर..."।" वे कहते जा रहे थे—हंसते जा रहे थे और लालटेन जलाते-जलाते मैं सोच रहा था; छः बच्चे मर चुके-फिर भी उनको बात करते समय मुख पर मलिनता नहीं और यह हंसी तो "बेढब है, भयानक है और शायद इन्हें जीवन-दान देने वाली भी। तभी तो अब भी ये इतने स्वस्थ हैं। कौन कहेगा कि इन्हें कोई दुख है—अभाव है—भाभी से इन्हें कोई शिकायत है?

भाभी? "हां भाभी सचमुच विचित्र हैं—भैय्या नहीं, मैं यही कहूँगा देवता सा आदमी पाकर वे यह सब अनपेक्षित व्यवहार बरतती हैं—अन्यथा वे कितना रोतीं कौन जाने?

कभी कभी देखता हूँ कि भाभी भी हंसती हैं—हंसती रहती हैं अपना चिड़चिड़ापन छोड़कर, पर मैं जानता हूँ कौन हंसाता है उन्हें जी भर कर। उन्हें ही क्यों कोई भी जो भैय्या के संपर्क में आता है हंसता है, इसी प्रकार। थोड़ी ही देर सही पर वह अपनी समस्त चिन्ता-व्यथा भूलकर हंसता अवश्य है?

पर भाभी! काश, तुम अपने हृदय को बदल सकतीं जो आवश्यकता से कहीं अधिक कड़ा हो गया है, पत्थर और लोहा भी सुनता हूँ— संस्कारित हो जाते हैं और एक तुम हो कि भैय्या जैसा देवता पाकर"

"क्या सोच रहे हो साहबजादे। आफिस नहीं चलोगे? तैयार हो लो, तब तक देखूं यदि तुम्हारी भाभी खिलावे तो मैं भी खाना खाकर आ जाता हूं अभी।" वही टोन, वही स्वर। कुछ भी बदल नहीं।

"लेकिन जाओगे नहीं भैय्या।'

"जाना तो चाहता हूँ—पर देखो तुम्हारी भाभी कब राजी हों...."

"रुपये मुझसे ले लीजिये और..."

मैंने छूटते ही कहा।

"नहीं भाई, सुखी रहो तुम। बात केवल रुपयों की ही नहीं है, आज तक कोई काम बिना 'एकमत' हुए किया नहीं मैंने। न मानो पूछ देखना उनसे...."

और वे चले गये उसी निर्विकार भाव से।

सुना है, नारी श्रद्धा है—माता है स्नेहमयी बहिन है पर भाभी। तुम जो भैय्या की पत्नी हो, तो तुम्हें—और केवल तुम्हें सम्बोधित कर पूछता हूँ कि तुम कौन हो नारी के रूप में बताओगी?

—

आज का दिन

दुनिया म जो कुछ करना ह वह यदि आज कर सकते हो तो आज ही कर डालो कल के लिए न टालो कौन जानता है कल क्या हो ? जब कि पल भर की खबर नहीं तो कल की कौन कहे ? अब ही समय ह और आज ही कार्य करने का दिन हे यह समझ कर तत्काल कार्य करना चाहिए। जो कुछ करना हो सो कर चलो। अनेक मनुष्य आज के दिन का ठीक उपयोग न कर कल के भरोसे आज को बिगाड डालते हैं। बहुत स मनुष्य भविष्य का चिन्ता और भूतकाल मे की हुई गलतियों से दु खित रह वत्मान का भी सुख नहीं उठा सकते।

अगर आज कुछ न करें तो कल वह काय नहीं हो सकेगा। कल का दिन चला गया। अब वह हमारे लिए फिर न आवेगा। एस ही आज का दिन चला जायगा। हमारा जीवन अनेक आज के दिनो का समूह है इससे कदापि आज को तुच्छ द ष्ट से न देखा। आज के दिन हमें बडे बडे काम करने हैं। जो गलतियां कल कर चुके हैं आज उनसे लाभ उठाना ह। कल की गल तियों पर रोने झाकने स काम नहीं चलता किन्तु आज के दिन सावधानी करने ही से काम ।

हर रोज प्रात काल उठ कर अपनी सारी शक्ति आज के दिन को काम म लाने म लगाओ। आने वाली कल तथा जाने वाली कल की चिन्ता न करो। जाने वाली कल तो सदैव के लिए चली ही गई। यदि आज तुम साव धानी से रहोगे तो आने वाली कल मजे में कटेगी। कल कुछ घटों मे आ कर अपना रूप बदल कर आज हुई जाती है।

एक विद्वान का वचन है कि मनुष्य का आज का दिन उसका एक छोटा सा जीवन ह। ऐसे ही छाटे २ जीवनों से हमारा कुछ वर्षों का जीवन बना हुआ है इस से आज का दिन वृथा खोना पाप है।

भगवान् श्री कृष्ण न कहा है। बुद्धिमान् गत विषय पर सोच नहीं करते भविष्य की वृथा चिन्ता नहीं करत किन्तु वत्मान ही में वे बहुत सभल कर चलते हैं। इस से हम आज के दिन को आव द स काम करके और उसमे लाभ उठा कर समाप्त करना चाहिए। हम आज के दिन कोई न कोई ऐसा काम जरूर करना चाहिए कि जिस से हमारा और हमार देश का उपकार हो। आज के विषय में काम करने के के लिए एक कवि कहता ह—

> काल करे सा आज कर
> आज करा सो अब ।
> पल में परलय हायगी
> फेर करोगे कब

कोरिया के कर्तव्यपरायण बालचर

पूसान की गलियों म खेलत हुए निराश्रित बालक

इस अङ्क क अन्यत्र पृष्ठ पर प्रकाशित लख भारत क महान इतिहास का प्रतीक —भगवाध्वज क लखक श्री चिरञ्जीव शास्त्री ह भूल स उनका नाम लख क साथ प्रकाशित होने से रह गया ह। हम खेद ह

—सम्पादक

चुटकले

छोटी लडकी पुराने मेज क दराज की चीजों को उलट पुलट रही थी कि एकाएक कह उठी— हाय बेचारे बाबा जी !

मा ने पूछा— क्या बात ह मुन्नी

एक पुरानी एनक उठा कर मा को दिखाते हुए मुन्नी बोली— यह देखो मां बाबाजी की एनक तो यहीं रह गइ। बिना इसके वे स्वग म कसे काम चलाते होंगे ?

× + +

गृहस्वामिनी—(नये नौकर स) क्या वेतन लोगे ?

नौकर—अगर मुझे बाजार से सौदा भी लाना होगा तो पन्द्रह रुपये नहीं तो पचास रुपये।

× + +

थर्ड क्लास का डब्बा मुसाफिरों से काफी भरा हुआ था। एक मोटे आदमी ने उसी डब्बे में घुसने की कोशिश की। भीतर स एक मुसाफिर बोला— जगह नहा ह।

मोटे आदमी न कहा— मुझे तो केवल खडे रहन को ही जगह चाहिये।

अन्दर स आवाज आई— तो आप फिर प्लेटफार्म पर ही खडे रहिये !

× × ×

उस दिन गंगा के तट पर मेला था। पति महाशय पानी में तैर रहे थ और पत्नी लडके साथ तट पर बैठी थी। एकाएक लडका बोला— मां मैं भी गंगा म तैरूंगा

मा बोली— नहा बेटा पानी बहुत गहरा ह और धारा भी तेज ह।

लडका— फिर पिताजी क्यों तैर रहे हैं ?

मा— उनकी बात अलग ह। उन्होंने अपना बीमा करवा रखा ह।

[पृष्ठ ११ का शेष]

हुवः प्रवेश किया। प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन की नीति बराबर यह थी कि कोरिया का युद्ध विश्वयुद्ध न बन जाय। अतः सशस्त्र चीनी हस्तक्षेप के पश्चात् भी वे चीन के विरुद्ध युद्ध घोषणा करने अथवा फारमोसा स्थित च्यांग की सेनाओं का प्रयोग करने के विरुद्ध थे। इस ओर जनरल मैकार्थर की नीति चीन के तट पर आक्रमण करने के पक्ष में थी। ऐसी स्थिति में ब्रिटेन तथा अन्य देशों के दबाव में, जो चीन से युद्ध करने के विरुद्ध थे, प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन ने मेकार्थर को अपदस्थ कर, जनरल रिजवे को प्रधान सेनापति नियुक्त कर दिया। इस घटना ने सारे संसार में खलबली मचा दी।

(पृष्ठ ७ का शेष)

परन्तु वह सब करते हुए जड़ों की ओर ध्यान रहना ही चाहिये क्योंकि यदि वे कट गईं तो ऊपर की लगाई हुई टहनियां या काट छांट पेड़ को मुरझाने से बचा न सकेगी।

इस लिये आवश्यकता है कि भारत की जनता भारतीय जन संघ की इस घोषणा को कि भारत का नव निर्माण भारतीय संस्कृति व मर्यादा के आधार पर ही हो सकता है और होना चाहिये भली प्रकार समझे और इसे मान्यता देने के लिये जन संघ को सहयोग दे।

[पृष्ठ ९ का शेष]

बंगलौर अधिवेशन से मुझे पहिले ही कोई आशा नहीं थी' इस एक वाक्य में श्री रफी अहमद किदवई ने अपने त्यागपत्र पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया। श्री किदवई ने कांग्रेस तथा मन्त्रिमण्डल दोनों से त्यागपत्र दे दिया है। उनके साथ ही उनके साथी श्री अजीतप्रसाद जैन ने भी मन्त्रिपद से त्याग पत्र दे दिया है। श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन ने भी कांग्रेस दल तथा भारतीय संसद की सदस्या दोनों से त्यागपत्र दे दिया है। वे किदवई दल के प्रमुख नेताओं में हैं। यह भी ज्ञात हुआ है कि उत्तर प्रदेश सरकार में से श्री केशवदेव मालवीय तथा श्री शेरवानी भी अपने मन्त्रिपदों से त्यागपत्र शीघ्र ही दे देंगे।

श्री किदवई के इस त्यागपत्र से कांग्रेस मे एक अध्याय समाप्त होता दिखाई देता है। किदवई दल के सभी व्यक्ति कांग्रेस से प्रथक ही जावेंगे अभी यह ज्ञात नहीं हुआ है कि वे आचार्य कृपलानी के दल में ही सम्मिलित हों अथवा प्रथक कोई दल बनायेंगे, तो भी यह बात तो स्पष्ट ही है कि पं० नेहरू को सब अधिक समर्थन इसी दल का प्राप्त था और उसके हट जाने से कांग्रेस में उनका बल कुछ कम हो जायगा।

राजधानी में "बादल"

जनता में अतीव उत्साह

अत्याचारों की पराकाष्ठा ही समाज में नव चैतन्य उत्पन्न करती है इसका ज्वलन्त उदाहरण "वर्मा फिल्म्ज" ने अपनी अनुपम कृति "बादल" में प्रस्तुत किया है। नैशनल फाइनैन्स आफ इंडिया लि० द्वारा प्रसारित यह चित्र राजधानी के तीन प्रमुख सिनेमाओं में प्रदर्शित किया गया और अति सफल रहा।

"बादल" का कथानक जागीरदारी की तानाशाही पर आधारित है। सेनापति के अत्याचारों से भयभीत प्रजा निराश्रित-सी है। परन्तु अपने वृद्ध पिता की नृशंस हत्या से 'बादल' (प्रेमनाथ) का नवयुवक हृदय विद्रोही हो जाता है प्रणय व शौर्य की प्रतिमूर्ति यह युवक ईश्वर देश तथा राजा के नाम पर समाज के युवकों को संगठित कर कोरे "न्याय" के विरुद्ध अपनी तलवार उठाता है। धनवानों को लूटना व निर्धनों की सहायता करना ही उसका मुख्य उद्देश्य होना है। जनता का प्रिय यह "बादल" कई रमणियों का प्रेम-भाजन बन जाता है परन्तु वह रसिक वीर सत्य मार्ग पर अटल रहकर अन्त में सफलता प्राप्त करता है।

मैना के रूप मे पूर्णिमा का अभिनय एक नारी के जीवन का सजीव चित्रण है। जिसमें मूक प्रेम, कर्त्तव्य पालन करते हुए निज जीवन का बलिदान करने की उत्कट भावना चित्रित की गयी है।

कला, संगीत, कथानक सभी ने मिलकर चित्र को सर्वांगीण सुन्दर बना दिया है। प्रत्येक दर्शक के हृदय में मैना के मुख से गाया हुआ गीत "दो दिन के लिये मेहमान यहां

मालूम नहीं मंजिल है कहां" गूंजता है और 'मंजिल' को पाने के लिये वह पुनः इस चित्र को देखने को लालायित हो उठता है।

एसोसियेटड पिक्चर्स के श्री मूलचन्द्र मेहरा ने अभी अभी बम्बई में दो प्रमुख चल-चित्रों "मुखुरा" और "सैलानी" के वितरण अधिकार प्राप्त किए हैं।

मुखुरा

शोरी आर्ट द्वारा निर्मित इस चल-चित्र के गीत अजीज़ कश्मीरी द्वारा रचे गये हैं और संगीत "एक थी लड़की" वाले विनोद द्वारा आयोजित है। प्रधान भूमिका में कुलदीप कौर रजतपट पर प्रथम बार नायिका के रूप में आ रही है। सतीश, पद्मा, मजनू, कक्कू और एक नवीन कलाकार नीता का नाम उल्लेखनीय है। आशा है यह हास्य व संगीत भरा चित्र अगस्त के मास में प्रदर्शित किया जावेगा।

सैलानी

गुलशन पिक्चर्स कृत इस चित्र का निर्देशन जे० पी० अडवानी द्वारा आयोजित है जिन्होंने 'वफा' में अत्यन्त सफलता पायी है। प्रधान भूमिका में अशोक कुमार व नलिनी जयवन्त हैं और साथ में पूर्णिमा, मोहना, गुलाम और बेलारानी इत्यादि हैं। स्व० खेमचन्द्र के भाई श्री बसन्तप्रकाश द्वारा इसका संगीत निर्देशन किया गया है। आशा है कि शीघ्र ही यह चित्र बनकर तैयार हो जावेगा।

"राजपूत"

सुभगी पिक्चर्स के सामाजिक चित्र राजपूत जिसकी चर्चा सिनेमा क्षेत्र में खूब हो रही है शीघ्र ही पूर्ण हो रहा है। धन और श्रम की परवाह न करते हुए इसके निर्माता व निर्देशक एल० आर० आफरी अति उत्साह से अपना कार्य सम्पादन कर रहे हैं। चित्र की भूमिका में सुरैया, कुलदीप जयराज और सप्रू हैं और प्रत्येक भाग का निरीक्षण भली प्रकार हो रहा है। देसाई एण्ड क० सितम्बर मास तक उत्तर भारत में इसको वितरण करने में संलग्न है।

ईस्टर्न पंजाब रेलवे

सूचना

पहाड़ी स्टेशनों के लिए रियायती वापसी टिकट रखने वालों को पहाड़ी स्टेशनों को जाते समय यात्रा भंग करने की आज्ञा नहीं है। जाते समय यात्रा भंग करते हुए पाए गए मुसाफिरों को बगैर उचित टिकट के यात्रा किये हुए समझा जायगा और तदनुसार ही उनसे दाम वसूल किये जायेंगे, परन्तु वापसी यात्रा पर यात्रा भंग करने के सामान्य नियमों के अनुसार यात्रा भंग की जा सकती है।

—चीफ एडमिनिस्ट्रेटिव आफीसर,
दिल्ली।

[पृष्ठ ६ का शेष]

मुसलमानों की मुस्लिम लमदुन की बात की टीका टिप्पणी न करते हों, जो मुसलमानों को असह्य है। वर्तमान कांग्रेस के अधिकांश नेता तथा सदस्य प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इस पक्ष के समर्थक हैं कि पाकिस्तान के साथ भारत का व्यवहार जैसे को तैसा ही होना चाहिये और यहां रहने वाले मुसलमानों के साथ हमारी सरकार का वही व्यवहार होना चाहिये जो पाकिस्तान में हिन्दुओं और सिखों के साथ हो रहा है। यह बात दूसरी है कि वह आज पं० नेहरू के भय से यह बात खुल्लम खुल्ला कहने का साहस न कर सकें। अब श्री० टण्डन जी की अध्यक्षता में कांग्रेस की नीति इस सम्बन्ध में अधिकाधिक स्पष्ट होती जायगी। पं० नेहरू इस व्यवहार को कहां तक सहन कर सकेंगे कहना कठिन है।

कांग्रेस दल की स्थिति

वैसे भी पं० नेहरू की स्थिति नई कांग्रेस में बहुत सुदृढ़ नहीं है। वह आज प्रधान मंत्री इस कारण से नहीं हैं क्योंकि देश ने उनको इस पद के लिये निर्वाचित किया है, वरन् केवल इस कारण से कि भारतीय संसद के कांग्रेस दल के ३०० सदस्यों ने उन्हे अपना नेता बना रखा है। और यह सदस्य कितने आदर्शवादी तथा संयम के व्यक्ति हैं यह तो इसी से स्पष्ट है कि संविधान संशोधक विधेयक पर लगभग सभी ने कांग्रेस दल के आदेश को स्वीकार कर लिया यद्यपि इन में से मंत्रियों को छोड़ कर बाकी सभी इस के विरोधी थे। इसलिये यदि श्री० टन्डन जी के दल को आगामी निर्वाचिनों से पूर्व ही इस बात की आवश्यकता पड़ी कि पं० नेहरू को प्रधान मंत्री पद से हटाना है, तो वह बड़ी सरलता से सभी सदस्यों से स्पष्टतया कह सकते हैं कि यदि वह आगामी निर्वाचनों में कांग्रेस की ओर से संसद के लिये निर्वाचन में खड़े होना चाहते हैं तो उन्हें अपने दल के नेता को बदलना होगा, और इस आदेश को पाते ही संसद के कांग्रेस दल में पं० नेहरू के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव स्वीकृत होने में कोई कठिनाई नहीं होगी। ऐसी स्थिति में पं० नेहरू कांग्रेस में कब तक रह सकेंगे यह एक बड़ा ही जटिल प्रश्न है।

—×—

दिल्ली साप्ताहिक वायदा बाजार

१८ जोलाई बुधवार को समाप्त सप्ताह के दैनिक भाव निम्न हैं :—

चांदी टुकडा चेम्बर सावन डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
बृहस्पति	१८६॥।=)	१८८।)	१८६॥।)	१८८=)
शुक्र	१८८।)	१८६॥)	१८८≡)	१८८॥।)
शनि	१८८॥।-)	१८६॥)	१८८॥)	१८६-)
सोम	१८८॥=)	१८८॥।)	१८७॥=)	१८७॥≡)
मगल	१८७।-)	१८७॥≡)	१८७।)	१८७॥=)
बुध	१८७॥)	१८७॥।=)	१८७≡)	१८७।-)

गवार माघ डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
बृहस्पति	११-)।	११≡)।	११)॥	११-)॥।=
शुक्र	११-)॥	११=)।	११)।	११-)=
शनि	११)॥।	११≡)।	११)॥।	११≡)
सोम	११।-)॥	११।≡)।	११।-)॥	११।-)॥
मगल	११।-)।	११॥)॥।	११।-)॥=	११।=)
बुध	११।≡)॥	११।≡)॥।	११=)॥	११=)॥

मटर मादवा डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
बृहस्पति	१४॥।≡)॥।	१५≡)॥।	१४॥।-)॥	१५-)॥
शुक्र	१५-)॥	१५=)॥।	१४॥।=)॥	१५)=
शनि	१४॥।≡)॥।	१५।)॥।	१४॥।≡)॥	१५।)॥।
सोम	१५।≡)।	१५॥-)॥।	१४।≡)॥	१५॥-)॥
मंगल	१५॥-)	१५॥=)॥	१५।=)	१५।≡)॥
बुध	१५॥-)॥	१५॥-)॥।	१५≡)।	१५≡)॥

इण्डियन नेशनल फिल्म्ज कारपोरेशन लिमिटेड दिल्ली की स्थापना का वास्तविक उद्देश्य क्या है ?

क्या वर्त्तमान स्थितियों में कम्पनी अपनी शुभकामनाओं में सफल हो सकेगी ?

क्या यह वर्त्तमान सिनेमा जगत में क्रान्ति लाने में सफल हो सकेगी?

आज ये प्रश्न हैं जो प्रत्येक व्यक्ति मुझसे पूछ रहा है और जो शख्स इस लाइन में जरा भी दिलचस्पी रखता है वह कठिनाइयों को अच्छी तरह जानता है। आजकल प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह फिल्म प्रोड्यूसर बन जाए चाहे उसे यह भी मालूम न हो कि फिल्म चीज क्या होती है जिसका परिणाम यह हो रहा है कि ना मालूम कितनी कम्पनियां बनती हैं और कुछ महीने बाद अपनी मौत स्वयं समाप्त हो जाती है। इस प्रकार यह लाइन इस बुरी तरह बदनाम हो चुकी है यदि नेक नियती से भी काम किया जाए तो भी लोग विश्वास तक करने को तय्यार नहीं होते। फिल्म कम्पनियों के बारे में एक शब्द चक्कर लगाता रहता है वह है "बोगस"। मैंने इस तीन माह की अवधि में लगभग छः हजार आदमियों से इस विषय पर बातचीत करने की कोशिश की है लेकिन इसमें से मेरा विचार है कि लगभग ८० प्रतिशत आदमियों ने बगैर कुछ सुने ही वही रटा हुआ वाक्य दोहरा दिया—छोड़ो यार, यह सब बोगस कम्पनियां होती हैं लेकिन जब उन्हें मैं यह कहता हूं कि यह कम्पनी मैंने खोली है, मेरा यह प्रोग्राम है तो वे कुछ दिलचस्पी लेते हैं। लेकिन दूध का जला छाछ को भी फूंक २ कर पीता है। कोई शीघ्र विश्वास करने के लिए तय्यार नहीं होता और प्रारम्भ में मुझे वह समय देखना भी नसीब हुआ जब कि मेरे हृदय में विचार आया कि मैं इस कम्पनी को बन्द कर दूं लेकिन मैंने हिम्मत न हारी। अपने हाथों दफ्तर में झाड़ू लगाया और कोशिश की कि किसी तरह इस कम्पनी को सफल बना सकूं और मैं अपने मित्रों का अत्यन्त आभारी हूं जिन्होंने मुझे इस आड़े समय में सहायता दी और आज कम्पनी को इस योग्य बनाया कि मैं आज गर्व से यह घोषित कर सकता हूं कि कम्पनी नियत समय पर शूटिंग शुरू कर सकेगी।

दरहकीकत है कि आजकल ६० प्रतिशत लोगों ने नए पात्रों की आवश्यकता का विज्ञापन देकर लड़के लड़कियों के लूटने का कारोबार चला रखा है लेकिन मेरे समझ में नहीं आता कि एक आदमी जो ईमानदारी से कार्य करना चाहता है बड़ा से बड़ा बलिदान देने को तय्यार है, लोगों को किस तरह से विश्वास दिलाए कि वह वास्तव में काम करना चाहता है। मेरे पास न तो वह शानदार दफ्तर है जिसमें आकर लोग जो कि फिल्म कम्पनी वालों को स्वर्ग समझते हैं, उसकी शान देख कर चकित हो जाएं।

और न मैं वे नाजायज तरीके जानता हूँ जिससे बिजनैस प्राप्त कर सकूं मैं तो केवल एक जानता हूँ। अपना प्रोग्राम साफ शब्दों में जनता के सामने रख देता हूँ चाहे वह इसे बोगस समझे या काम की चीज। लेकिन मुझे दुःख इस बात का होता है जब मेरे कानों में बगैर कुछ सुने 'बोगस' के शब्द पड़ते हैं। मैंने खुद आज तक किसी ऐसे आदमी से बिजनैस लेना ठीक नहीं समझा जो कि कम्पनी को अच्छी तरह न समझ गया हो क्योंकि मुझे रुपयों से ज्यादा कम्पनी की इज्जत की जरूरत है। मुझे अगर फिल्मी लाइन से दिलचस्पी है तो केवल इस किस्म की फिल्मों से जिससे मैं अपने देशवासियों की कुछ सेवा कर सकूं। और अगर आज मैं यह न कर सका तो यकीन जाने मैं स्वयं आपसे कह दूंगा कि यह मेरे बस का रोग नहीं। मुझे इतना लम्बा-चौड़ा मज़मून लिखने की जरूरत इसलिए हुई है कि मुझे इस सफलता को प्राप्त करने के लिये आपकी सहायता की जरूरत है और आपकी सहायता केवल उस समय ले सकता हूँ जबकि आपके दिल से वे तमाम सन्देह दूर कर सकूं जो विभिन्न कम्पनियों ने आपके दिमाग में बैठा रखे हैं।

मैंने इस कम्पनी को ५ लाख के लिये लिमिटेड करवाया है और इस पूंजी को १०-१० रु० के हिस्सों में बांटा है ताकि गरीब से गरीब आदमी भी हिस्से खरीद कर अपना कर्तव्य पूरा कर सके। कम्पनी की पहली क्रान्तिकारी फिल्म 'जनता इन्साफ मांगती है" में मैंने तमाम नए पात्र उपस्थित करने का निश्चय किया है। इस तरह से हम जहां बहुत से नए पात्र आपके सामने ला सकेंगे वहां बहुत सा रुपया बरबाद होने से भी बचा सकेंगे। इसे खरीदने की प्रार्थना करने से पहले मुझे एक बार फिर अपने भाइयों से अपील करना है कि वह केवल 'बोगस' का शब्द छोड़ कर इस कम्पनी को समझने की कोशिश करें और अगर उन्हें कोई वास्तविकता नजर आए तो वे अपनी हिम्मत से बढ़ कर सहायता देने की कृपा करें ताकि मैं आपको बता सकूं कि फिल्मों से क्या काम लिया जा सकता है। इस समय तक मैं लगभग एक लाख रुपये के हिस्से बेच चुका हूँ। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इसमें आपको काफी आर्थिक लाभ हो सकेगा लेकिन किसी भी हालत में मैं आपका रुपया बरबाद नहीं होने दूंगा। लाभ का रुपया जिसने जिस अनुपात से रुपया लगा रखा होगा उस अनुपात से बांट दिया जायगा। किसी को ५ हजार से ज्यादा के हिस्से नहीं दिये जाते ताकि प्रत्येक व्यक्ति फायदा उठा सके। मुझे आशा है कि वर्तमान आवश्यकता को समझते हुए आप लोग मुझे ज्यादा से ज्यादा हिस्से खरीद कर अपना सहयोग दे सकेंगे पुनश्च प्रथम क्रान्तिकारी फिल्म "जनता इन्साफ मांगती है" में काम करने के लिये हीरो हीरोइन और दूसरे महत्वपूर्ण रोल अदा करने के लिए लड़के लड़कियों की जरूरत है। मिलें या लिखें—

ए स० देवानन्द
डायरेक्टर इण्डियन नेशनल फिल्मज कारपोरेशन लिमिटेड,
लाजपतराय मार्केट, चांदनीचौक, दिल्ली।

कानपुर के शारी पार्क की शिया मस्जिद के धड़ाके के बारे में, जो अपने साथ ६ आदमियों को भी ले मरी मुस्लमानों का कहना है कि उनके नीचे बम्बों का एक कारखाना था।

अपने राम सरकार से पूछते हैं कि भारत में कितनी मस्जिदों के अन्दर बम्बों के कारखाने चल रहे हैं और वह कब तक चलेंगे।

× × ×

कानपुर के अखबारों का कहना है मस्जिद के मलबे में लोहे शीशे आदि के बोरे के बोरे मिले हैं।

हिन्दुस्तान के लिए कानपुर के मुस्लमान मुंह फाड़ने की बजाय कान फाड़ने की विशेष बम्ब बना रहे हैं।

× × ×

पटना टेलीफोन एक्सचेंज का महिलाकरण होने जा रहा है।

—एक शीर्षक

धीरे धीरे सरकार के सभी विभागों का महिलाकरण कर देना चाहिये। पुरुष को पिसते पिसते दिन भी बहुत हो गये। अब काम की अदला बदली करना ही अच्छा है।

× × ×

मधुबनी का समाचार है कि यहां जो फेयर प्राइस की दुकान खुली है उसका स्थान प्रतिमास बदल जाता है।

उचित मूल्य पर कपड़ा बेचने की इस दुकान को अभी कोई उचित स्थान मिला नहीं होगा। इसलिए लोग उचित समय पर उचित मौका निकाल कर इस घुमक्कड़ दुकान का कहीं खोज लिया करें, या फिर पुलिस से पूछताछ कर लें।

भारत सरकार का कहना है कि भाड़ा अधिक बढ़ जाने कारण के गेहूं का भाव २) रु० मन और बढ़ाया जाता है।

शाबाश चोरबाजारिये जो भाव अपने यहां करें वही तुम भी करो—

× × ×

तिरुमल राय की राय है कि चावल की इस वर्ष भी कमी रहेगी।

क्या मुंशी जी के पेड़ों पर इस साल भी फसल नहीं आयेगी।

× × ×

कांग्रेस की आंतरिक बुराइयों के लिए एक जांच समिति बनेगी।

—एक समाचार

किन्तु रिपोर्ट उसकी चुनावों के बाद लेना।

× × ×

पाकिस्तानी बैंकों का राष्ट्रीयकरण हो।

× × ×

मियां पहले पाकिस्तान का तो राष्ट्रीयकरण कर ले। जिसका ब्रिटिशीकरण हो चुका है।

× × ×

मधुबनी की एक महिला भूख से मर गई।

—एक शीर्षक

अन्न की तो कमी है नहीं। खाना बनाना नहीं आता होगा उसे।

× × ×

बुलन्दशहर की पुलिस ने गांव वालों को डाकू कह कर रिश्वत का एक नया आविष्कार किया है।

—हि० सा०

पुलिस का काम ही अब रिश्वतों के आविष्कार का रह गया है।

—पाराशर

[पृष्ठ २ का शेष]

निर्णय पंचायतों द्वारा हुआ करता था जिनका अध्यक्ष तहसीलदार व सदस्य लड़के व लड़की व गांव के मुखिया जिनको तड़वी या पटेल कहते हैं हुआ करते थे। यदि दहेज धापा नहीं मिलता तो लड़की का पिता व उसके सम्बन्धी व गांव का मुखिया लड़की को वापिस घर ले जाते। दहेज धापा की प्रथा में विशेषता यह है कि लड़की का पिता ही सब दहेज धापा की रकम अपने पास नहीं रख लेता है। क्योंकि जाति रिवाज के अनुसार उस रकम में से कुछ अन्य रिश्तेदारों व गांव के मुखिया यानि तड़वी या पटेल को भी देनी पड़ती है।

आदिवासियों में विवाह या स्त्री बनाने व दहेज धापे के जिन रिवाजों का ऊपर सिंहावलोकन किया गया है उससे यह स्वाभाविक है कि उनके कारण आदिवासियों में आपस में सदा भारी असंतोष बना रहता है और द्वेष वैर भाव एवं दलबन्दी को प्रोत्साहन मिलता है। अनुसूचित क्षेत्र में यदि फौजदारी जुर्मों के कारणों की छानबीन की जाय तो उससे पता चलेगा कि अधिकतर मारपीट आग लगाने व कत्ल करने की वारदातों का मूल कारण दहेज धापा विवाह व स्त्रियों को जबरदस्ती ले भागना है। औरतों व लड़कियों को स्त्री बनाने के लिए भगाये ले जाने के जुर्म भी बहुत भील भिलालों व पटलियों में तथा अन्य जाति के आदिवासियों में अक्सर हुआ करते हैं। गांव गांव में दलबन्दी व जाति जाति में झगड़ों के भी ये ही मूल कारण हैं जो कभी कभी भयंकर रूप धारण कर लेते हैं। यहां तक कि मुकदमेबाजी में फसकर अनेक कुटुम्बों का सर्वनाश हो जाता है। यदि आदिवासियों में दुराचार तथा दूषित वातावरण को दूर करना है और उनके चरित्र को जन साधारण के स्तर पर लाना है तो यह अधिक आवश्यक है कि विवाह सम्बन्धी घोटुल एवं दहेज धापे की कुप्रथाएं समाप्त करनी होंगी। और साधारण रीति से विवाह करने की पद्धति को प्रोत्साहन देना होगा। आदिवासी क्षेत्रों में कार्य करने वाली सामाजिक संस्थाएं एवं उनमें कार्य करने वाले कार्यकर्त्तागण इस ओर ध्यान दें तो आदिवासियों का शीघ्र सुधार किया जा सकता है।

आदिवासियों में शराब पीने का दुर्व्यसन अधिकतर है। स्त्री व पुरुष ही शराब नहीं पीते हैं बल्कि बच्चों को भी शराब पिलाई जाती है। प्रमुख त्यौहारों पर, जैसे होली, दिवाली व दशहरे पर शराब अधिक मात्रा में पीते हैं। बहुधा सगाई विवाह मुक्ता पशु बलि आदि के अवसर पर शराब अधिक पी जाती है। कुछ क्षेत्रों में जैसे, भूतपूर्व अलीराजपुर व जोबट आदि राज्यों में ताड़ी का भी उपयोग करते हैं। आदिवासियों की मेहनत की कमाई का अधिकांश भाग शराब में खर्च हो जाता है। बहुधा शराब पीने के लिए रुपया न होने पर जेवर बर्तन तलवार आदि सामान आदि भी शराब के लिए गिरवी रख देते हैं। केवल शराब के कारण मारपीट कभी कत्ल की भी वारदातें आदिवासियों में हुआ करती हैं। बहुधा देखने में आया है कि शराब के नशे में अपने पिता भाई तथा पत्नी तक का अकारण कत्ल कर दिया जाता है। यदि आदिवासियों में शराब बन्दी का प्रचार किया जाय तो उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है और वारदातों को भी रोका जा सकता है। मध्य भारत शासन ने बम्बई प्रान्त की सीमा से ५ मील तक दूरी तक के झाबुआ जिले के क्षेत्र में शराबबन्दी करके वहां की लगभग २५ दुकानें बन्द कर दी हैं। आदिवासी क्षेत्र में मध्यभारत शासन से त्यौहारों के अवसर पर शराब की दुकानें बन्द करा दी जाती हैं।

अधिकतर आदिवासियों के जीवन-निर्वाह का मुख्य साधन कृषि है। जंगलों के बीच में छोटे छोटे खेत निकाल कर उसमें अधिकतर मक्का व ज्वार उपजा लेते हैं। आदिवासी कृषि की साधारण पद्धति से अनभिज्ञ हैं और वे आज भी पुराने ढंग से खेती करते हैं जिसके कारण कृषि से बहुत कम उत्पन्न होता है। कुछ क्षेत्रों में सिंचाई के साधन एवं कृषि के लिये अधिक भूमि उपलब्ध न होने से आदिवासियों में कृषि की उन्नति होना सम्भव नहीं है। अधिकतर आदिवासी ही वन उपज एकत्रित करके बाजारों में विक्रय करते हैं। जंगल की लकड़ी काटना व खेतों में मजदूरी करना भी कुछ आदिवासियों का मुख्य धन्धा है। गुना शिवपुरी व मुरैना के जिलों में अधिकांश सेहरिये खेती नहीं करते हैं। उनके जीवन निर्वाह का एक मात्र साधन वन उपज एकत्रित करके क्रय करना ही है। वन उपज का क्रय विक्रय सहकारी संस्था द्वारा करने के हेतु एक संस्था श्योपुर परगने के गोरस ग्राम प्रयोगात्मक रूप में स्थापित की गई है जो सफलता पूर्वक कार्य कर रही है। यदि आदिवासी क्षेत्र में वन उपज के क्रय विक्रय की सहकारी संस्थाएं खोलने की दिशा में कदम उठाया जाए तो आदिवासियों की आर्थिक एवं औद्योगिक स्थिति सुधारी जा सकती है।

ज० नं० ई० पी० ४६१

पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा, मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिए अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, देहली में छपवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

"स्वतन्त्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे मैं लेकर रहूंगा"

— स्व० लोकमान्य तिलक

४ आना

दिल्ली रविवार १४ श्रावण संवत् २००८ DELHI. 29th JULY. 1951

स्वास्थ्य संसार

निद्रा पर विजय प्राप्त कीजिये!

श्री नीलकंठ एम० एस० सी०

ऐसे लोगों की संख्या बहुत अधिक होगी जिनकी नींद हलकी से हलकी आवाज से भी खुल जाया करती है। खिड़की की खड़खड़ाहट रास्ता चलने वालों के पैर की आहट, घड़ी बजने की आवाज—ये सभी चीजें उनकी नींद के झीने परदे के जो उनको हलके तौर से ढंके रहती है, अन्दर घुस जाती हैं; वे चौंककर उठ बैठते हैं और नींद घण्टों के लिए विदा हो जाती है।

निद्रा का प्रयोजन

स्वास्थ्य सम्बन्धी जितनी भी समस्याएं मनुष्य को परेशान किया करती हैं उनमें अनिद्रा की समस्या बहुत महत्वपूर्ण है। क्या कारण है कि हजारों व्यक्ति सोये देख पड़ते हुए भी वस्तुतः अर्द्धजाग्रत अवस्था में रहते हैं? क्या कारण है कि इतने अधिक व्यक्तियों को प्रातःकाल बिस्तर से उठने पर सोने जाने के समय से अधिक थकावट जान पड़ती है? कहीं-न-कहीं जरूर कोई खराबी है। निद्रा का मतलब शरीर को नष्ट हुई जीवनी शक्ति को पुनः प्राप्त करने, निःसत्व जीववस्तु का पुनर्निर्माण करने और दिन के काम के लिए पुनः ताजा, सशक्त बनने का अवसर प्रदान करना है। निद्रा एक प्रकार का विराम या अवकाश है जिसमें शरीर की थकावट दूर हो जाती है, नाड़ी-संस्थान अनवरत जागरण के भार से मुक्त हो जाता है, मस्तिष्क को शरीर पर नियंत्रण रखने के कार्य से फुरसत मिल जाती है और शरीर जीवन के छोटे-मोटे झंझटों से अलग हो जाता है हलकी नींद या अर्द्धजाग्रत अवस्था में सोने वाले व्यक्ति प्रकृति के क्षय-पूर्ति सम्बन्धी इस कार्य से कैसे लाभ उठा सकते हैं?

वास्तविक निद्रा

वे लोग कौन हैं जो गाढ़ी नींद सोया करते हैं? जरा मिट्टी खोदने वाले या इस तरह के किसी मजदूर की झोंपड़ी के अन्दर नजर डालिये और देखिये कि वह पटरे या किसी कड़े बिस्तर पर किस प्रकार पूरा बदन फैलाकर अंगों को ढीला किये सो रहा है। समान रूप से चलती हुई उसकी गहरी सांस पर भी जरा ध्यान दीजिये। उसके हाथ को उठाकर छोड़ दीजिये तो वह इस प्रकार गिर पड़ेगा जैसे बिल्कुल निर्जीव हो, वस्तुतः निद्रा ऐसी ही होनी चाहिए। मजदूरों तथा मेहनत करने वाले जानवरों के सामने निद्रा की समस्या नहीं पैदा होती। निद्रा बिना बुलाये दौड़ी आती है और शरीर को पूर्ण विश्राम और नवजीवन प्रदान कर चली जाती है।

अङ्गों का नियंत्रण

अब प्रश्न यह है कि वास्तविक निद्रा से होने वाले लाभ प्राप्त करने के लिए हम क्या करें। जो लोग मस्तिष्क का काम करते हैं या ऐसा काम करते हैं जिससे शरीर में थकावट नहीं आती उनके लिए पहला कार्य उचित व्यायाम है। व्यायाम का उद्देश्य कठिन शारीरिक कार्य ही करना नहीं है। यह सत्य है कि वे काम व्यायाम के ही द्वारा संभव होते हैं, पर वे तभी होते हैं जब अंगों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त हो जाता है। बहुत से लोग व्यायाम के इस महत्वपूर्ण पक्ष को बहुत जल्द भूल जाते हैं।

हममें से बहुतेरे भारी वजन उठाने या दूर की दौड़ लगाने के लिए अपनी पेशियोंका संकुचन कर सकते हैं, पर ऐसे कितने लोग होंगे जो उन्हीं पेशियों को इच्छानुसार ढीला भी कर सकते हों।

अङ्गों को ढीला कीजिये

बिस्तर पर पीठ के बल, अलग अंधेरे में लेट जाइये। दो-तीन मिनट सुगमता और नियमपूर्वक सांस लीजिए और फिर एक-एक अंग को ढीला करते जाइये। उदाहरणार्थ दाहिने हाथ से यह क्रिया आरम्भ कीजिये। यह निश्चय कर लीजिए कि वह पूरा ढीला हो गया है। एक मिनट इसे ध्यान में रखिये और फिर उसे उसी अवस्था में रहने देकर बायें हाथ की ओर ध्यान ले जाइये और उस पर भी वही क्रिया कीजिये। फिर पैरों के साथ भी वही कीजिए और खयाल रखिये कि श्वास की क्रिया ठीक वैसी ही रहे। अगर आपमें मानसिक या नाड़ी सम्बन्धी दौर्बल्य है, स्वभाव उत्तेजनशील है, तो आप देखेंगे कि जब तक आप बायें पैर की क्रिया पर पहुँचेंगे तब तक आपके हाथों में फिर तनाव आ चुका है। उन्हें फिर ढीला कीजिये और इस स्थिति में उन्हें कम से कम दस मिनिट रखिये। इस समय में आपको पता चल जायेगा कि बाद में आपकी इच्छाशक्ति का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं रह जाती।

अगर दस मिनट बीतते-बीतते आपको नींद आने लगे तो उसे जोर पकड़ने दीजिये। इसके अनन्तर आपकी चेतना फौरन गायब हो जायगी।

अनिद्रा पर विजय प्राप्त हो जाने पर नियन्त्रण सम्बन्धी यह अभ्यास यह समझकर छोड़ मत दीजिये कि अब प्रयोजन सिद्ध हो गया, इसकी कोई आवश्यकता नहीं रही। जब आपको यह अच्छी तरह ज्ञात हो जाय कि इच्छाशक्ति का कार्य शरीर का संचालन ही नहीं, उसे विश्राम के लिए बाध्य करना भी है, तो समझ लीजिए कि आपको स्वास्थ्य का मूल मन्त्र मालूम हो गया।

अगर आपका काम ज्यादा जोर डालने वाला है, काम करने के बाद आप सुस्त हो जाते हैं, तो घर पहुँचने पर आराम कुर्सी पर लेट जाइये और तनाव दूर करने वाली शक्ति को कार्य में प्रवृत्त कर दीजिये। इस प्रकार ८-१० मिनट सारे शरीर को ढीला करके रखिये इसका परिणाम देख कर आप चकित रह जायेंगे।

जो व्यक्ति विश्राम प्राप्त करने और उसका सदुपयोग करने की कला से भली भांति परिचित होता है वही अपने कार्य में कुछ अतिरिक्त शक्ति लगा सकता है, हर सेकेंड दो गज आगे निकल कर दौड़ में बाजी मार ले जा सकता है और जीवन यात्रा में जहां और लोग थक कर गिर पड़ते हैं, अपनी मंजिलें तय करता जा सकता है।

—आरोग्य से

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, २९ रविवार श्रावण सम्वत् २००८ [अङ्क १४

विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
और जब तक हमारे संविधान में इसकी गारण्टी नहीं कर दी जायगी,
हम तब तक चैन नहीं लेंगे।

जब अपना ही दोष हो तो—?

पाकिस्तान जिस प्रकार युद्ध के लिए तैयारी कर रहा है तथा भारत के विरुद्ध षड्यन्त्र, तोड़ फोड़ तथा गुप्तचर कार्यवाही में संलग्न है उसे देखते हुए भीषण परिणामों की आशंका करना कुछ अनुचित न होगा। यदि युद्ध हुआ तो दोनों ही ओर की जनता को भयंकर कष्टों में पड़ना पड़ेगा, तो भी यह स्पष्ट है कि इसमें से अधिकांश भारत की जनता के ही भाग्य में दिखाई देता है।

वास्तविकता तो यह है कि इस सब का दोष हमारे ही माथे है। पाकिस्तान को इस स्थिति में पहुँचाने वाला कौन है? यह कह कर कि अंग्रेजों ने देश का विभाजन किया, अपनी दुर्बलता का दोष दूसरों के सिर मढ़ना बड़ा सरल है। किन्तु क्या वास्तव में यह कह कर हम अपने आपको धोखा नहीं देते? क्या आज तक पाकिस्तान के समस्त पापों पर हमने ही पर्दा नहीं डाला? और क्या प्रत्येक बार हमारी ही मूर्खतापूर्ण दुर्बलता का लाभ उठा कर पाकिस्तान ने हमारे सिर में नहीं मारा?

मुस्लिम लीग की विभाजन की मांग को हमारे द्वारा स्वीकार कर लिया जाना लीगियों के द्वारा हमारी कायरता समझी गयी। उन्होंने समझा कि हम युद्ध तथा खून खराबे से डरते हैं। दुर्योधन ने भी ऐसा ही समझा था। पाकिस्तान की स्थापना के समय खुल कर हिंदुओं की हत्या, बलात्कार तथा लूट की गई, हमारी माताओं और बेटियों पर अत्याचार व दुर्व्यवहार हुए, हमारी सरकार कागजी कार्यवाही करने से आगे नहीं बढ़ी। इसे पुनः हमारी कायरता समझा गया, इसके अतिरिक्त और समझा भी क्या जाता?

काश्मीर पर चढ़ाई हुई और हम यह न कह सके कि यह चढ़ाई पाकिस्तान ने की है। जब हमारी विजय हो रही थी, जब कोई सैनिक अधिकारी संधि के पक्ष में न था, हमारे नेताओं ने किन्हीं अज्ञात राजनीतिक कारणों के कारण, संधि कर ली। पाकिस्तान लाखों हिन्दुओं की निष्क्रान्तों की सम्पत्ति डकार कर बैठ गया और हमारे पुनर्वास मंत्री ने संसद में घोषणा भर कर दी कि पाकिस्तान इस प्रश्न को हल नहीं करना चाहता है।

आसाम में मुसलमानों का प्रवेश आरम्भ हुआ और सीमावर्ती कई हिन्दू बहुल जिले मुस्लिम बहुल हो गए। पहिले राष्ट्रपति ने एक आर्डिनेंस बनाया और तत्पश्चात् भारतीय संसद ने एक कानून स्वीकार कर इस प्रकार के व्यक्तियों को निकालने की व्यवस्था की। किन्तु कितने वापिस लौटाए गए यह किसी को ज्ञात नहीं है। वे जिले आज भी मुस्लिम बहुल है।

पूर्वी बंगाल में हिन्दुओं के रक्त से होली खेली गयी और हमारे नेता विरोधी वक्तव्य निकालने से अधिक कुछ न कर सके। यदि कुछ किया भी तो वह दिल्ली समझौता जिसके द्वारा हारती हुई सारी बाजी पाकिस्तान जीत गया और और फिर तब से आज तक उसने वहां उसके कुछों को बसने नहीं दिया। किन्तु हम विरोध पत्र से आगे न बढ़ सके।

काश्मीर में ब्रिटिश अधिकारी षड्यन्त्र में सहायक हो रहे हैं, किन्तु हमारे नेता इस विषय में एक शब्द भी न कह सके। पाकिस्तान के सभी अधिकारी भारत के विरुद्ध बेहद प्रचार में संलग्न है किन्तु हम चूं न कर सके। भारत की सीमाओं पर, क्या राजस्थान, क्या पंजाब, क्या काश्मीर, क्या बंगाल, क्या आसाम, सभी जगह पाक सेनाओं का जमाव होता रहा और प्रतिरक्षा की तैयारियां करते हुए भी हम यह न कह सके कि पाकिस्तान आक्रमणपूर्ण कार्यवाही कर रहा है। हम जानना चाहते हैं कि यह सब क्यों? क्या कारण है कि भारतीय सरकार पाकिस्तान की कार्यवाहियों पर मुंह बन्द करके बैठी रही है और आज भी बैठी हुई है? हमने जो भी कहा पाकिस्तान के आरोप के उत्तर में ही कहा।

जनता की सरकार जनता को ही अन्धकार में रख कर चल रही है। पाकिस्तान अथवा अंग्रेजों के विरुद्ध तो बहुत कुछ कहा जा सकता है किन्तु जब अपना ही दोष हो—तो?

★

कर्मयोगी का संदेश

आगामी एक अगस्त को समस्त भारत में भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम के अग्रणी नेता तथा नौकरशाही के निर्मम आतंकपूर्ण शासन के अन्तर्गत भी "स्वतन्त्रता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है" के प्रचण्ड उद्घोषक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की पुण्य तिथि मनाई जा रही है। आज से लगभग ३२ वर्ष पूर्व उन्होंने अंग्रेजी सरकार के प्रति जो असहयोग की नीति अपनाई थी, अंग्रेजों की कूटनीतिक चालों को समझ कर जिस प्रकार देश के जनमत को सजग किया था, उसका स्मरण कर आज प्रत्येक देश-भक्त को रोमांच हो जाता है, विशेषकर आज की दलगत द्वेष-भाव से पूर्ण राजनैतिक स्थिति में जब उनके जैसे मार्ग प्रदर्शक की हमें उस समय से भी अधिक आवश्यकता है। लोकमान्य तिलक केवल एक राजनीतिक नेता ही नहीं थे। उनका राजनीति से अलग भी अपना एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व था, जिसके कारण उनके विरोधी भी श्रद्धावनत हो जाते थे। उनका प्रकाण्ड पाण्डित्य, अविश्रान्त अध्यवसाय तथा अगाध मनन उन्हें भारत के महान मनीषियों की श्रेणी में बिठा देते। राष्ट्र निर्माण की इस वेला में भारत के इस कर्मयोगी के अमर संदेश का यदि अल्पांश भी अनुशीलन किया जाय, तो न केवल आज राजनैतिक, जीवन विशुद्ध होने से बचा रहे अपितु राष्ट्रीय चरित्र का भी निर्माण हो सकता है।

कृतज्ञता और क्षमा

साप्ताहिक अर्जुन या वीर अर्जुन की स्थापना आज से करीब १६ १७ वर्ष पूर्व हुई थी। तब से अब तक (बीच के कुछ वर्षों को छोड़) मुझे इसकी सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इससे भी पहले दो वर्ष तक दैनिक अर्जुन के साप्ताहिक संस्करण का कार्य मेरे पास ही रहा है। १२ वर्ष की इस दीर्घ अवधि में, जो विश्व के इतिहास की दृष्टि से असाधारण महत्व रखती है निरन्तर एक पत्र में रहकर पाठकों की सेवा करने का सौभाग्य सचमुच मेरे लिये गौरव की वस्तु है और इससे भी बढ़कर गौरव का विषय है अपने पाठकों का सरल प्रेम तथा कृपालु लेखकों, कवियों और कहानीकारों का हार्दिक सहयोग। पाठकों ने सदा मुझे उत्साहित किया और अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थितियों में लेखकों ने, भले ही मैं अपने पत्र की विवशताओं के कारण उनकी सेवा नहीं कर सका, मुझे निरन्तर सहयोग दिया है। सचमुच अर्जुन के द्वारा जो थोड़ी बहुत पाठकों की सेवा मैं कर सका हूँ उसका श्रेय उन्हीं लेखकों को है। आज मैं अर्जुन का सम्पादन कार्य छोड़कर पाठकों और लेखकों के प्रेमी परिवार से विदाई ले रहा हूँ। इस अवसर पर उन सबके प्रति कृतज्ञता प्रकाश करते हुए मैं यह आशा करता हूँ कि वह पहले की तरह से भविष्य में भी अर्जुन के संचालकों और सम्पादकों को पूर्ण सहयोग देते रहेंगे।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

"वीर अर्जुन" साप्ताहिक के सम्पादक पं. कृष्णचन्द्र जी विद्यालंकार ने अवकाश ले लिया है। उनकी विदाई के समय अर्जुन परिवार की ओर से दिए गए प्रीतिभोज के पूर्व लिया गया चित्र।

अन्तर्राष्ट्रीय रङ्गमञ्च

मुस्लिम राष्ट्रों की आन्तरिक हलचल भयावह

योरुप में सामूहिक सुरक्षा योजना

कोरिया युद्ध विराम वार्ता में गतिरोध खुला

कोरियाई चिन्ता में

श्री जार्ज मार्शल

नया प्रस्ताव

ब्रिटेन के साथ चल रहे तेल के झगड़े के हल के लिए ईरान सरकार ने एक प्रस्ताव रखा है, जिसके अनुसार ब्रिटिश सरकार के एक प्रतिनिधि को तेहरान के लिए आमन्त्रित किया गया है। ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल की एक बैठक ईरान के उक्त सुझाव का स्वागत किया गया है। किन्तु साथ ही ब्रिटेन ने ईरान सरकार पर अबादान के तेल क्षेत्र में आंग्ल-ईरानी तेल कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार किये जाने का आरोप लगाया है। आंग्ल-ईरानी तेल कम्पनी के ईरान तथा इराक स्थित जनरल मैनेजर श्री ड्रेक ने गम्भीरता से ईरानी प्रस्तावों पर विचार किया है। विज्ञ क्षेत्रों में आशा प्रकट की जा रही है कि ब्रिटेन द्वारा ईरानी प्रस्ताव स्वीकार कर लिये जाने के पश्चात् स्थिति कुछ सुधर जायेगी।

कोरिया विराम-वार्ता

अमेरिका के विदेश मन्त्री श्री जार्ज मार्शल ने वाशिंगटन में युद्ध विराम समझौते के लिए कुछ आधारभूत शर्तें रखी हैं—

दोनों प्रदेशों के बीच एक सैनिक विभाजक रेखा खींची जाय, जो किसी भी पक्ष द्वारा पुनः युद्ध छेड़े जाने की स्थिति में प्रतिरक्षा का काम दे सके। किसी भी पक्ष को कोरिया में अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाने की आज्ञा न हो तथा दोनों पक्षों की ओर से एक दूसरे के निरीक्षण की पर्याप्त व्यवस्था रहे, ताकि दोनों पक्ष एक दूसरे की सैनिक शक्ति के सम्बन्ध में निश्चिन्त रह सकें। इन शर्तों में एक शर्त यह भी है कि युद्ध बन्दियों के बारे में कोई सम्मानपूर्ण समझौता किया जाय। इधर साम्यवादियों ने भी विराम गतिरोध को समाप्त करने के लिए एक प्रस्ताव रखा है जिसको विचारार्थ सर्वोच्च सेनापति जनरल रिजवे के पास भेजा गया है। इतने प्रयत्नों के पश्चात् भी कोरिया की स्थिति विशेष सुधार नहीं हुआ।

गुत्थी सुलझी क्या?

श्री हेरीमेन ने डा० मुसद्दिक को तेल के प्रश्न पर ब्रिटेन से चर्चा करने पर राजी कर लिया है।

मध्यपूर्व में अशान्ति

मध्यपूर्व के मुस्लिम राज्यों में पुनः अशान्ति के बादल उठ रहे हैं। अभी तक ईरान की पहेली उलझी ही हुई थी कि सहसा ट्रान्सजोर्डन के शाह अब्दुल्ला की हत्या कर डाली गई। इसका कारण बताया जाता है कि ब्रिटेन के प्रति अब्दुल्ला की नीति सहानुभूति की थी। बहुत समय पूर्व से ही मध्यपूर्व में ब्रिटेन और अमेरिका के प्रति विरोध तीव्र रूप से भड़काया जा रहा था। इसके पीछे मध्यपूर्व के आतंकवादी दल के कुछ प्रमुख व्यक्तियों का हाथ बताया जाता है, जिन्होंने लेबनान तथा ईरान के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री की हत्या कर दी थी। इस प्रकार मध्यपूर्व में विद्रोह की जो आग भड़क रही है, वह किसी भी समय महायुद्ध का कारण बन सकती है, क्योंकि पश्चिमी राष्ट्रों के स्वार्थ मध्यपूर्व के लगभग प्रत्येक देश के साथ किसी न किसी भांति उलझे हुये हैं। जोर्डन के सैनिक दल "होली फाइटर्स संस्था के सदस्यों (जिनमें से एक ने शाह अब्दुल्ला की हत्या की थी,) तथा जोर्डन के सैनिकों के बीच हुई मुठभेड़ के फलस्वरूप कई गिरफ्तारियां हुईं तथा जेरुसलम में कर्फ्यू लगा दिया गया। जनता तथा शासन के बीच इस प्रकार की मुठभेड़ लड़ाई एक व्यापक आतंक की द्योतक है।

जापानी शान्ति सन्धि

जापानी शान्ति सन्धि प्रस्ताव की प्रतिक्रिया एशिया के विभिन्न देशों में विविध प्रकार से हुई है। मलाया में इस बात को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है कि मलाया में जापान के व्यापार विस्तार से मलाया को हर्जाने के रूप में क्या मिलेगा। इस सम्बन्ध में मलाया के व्यापारियों को आशंका है—कि सन्धि पर हस्ताक्षर होने के बाद दक्षिणी पूर्वी एशिया के बाजारों में जापान भारतीय टैक्सटाइल व्यापार का प्रतिद्वन्द्वी हो जायेगा। एशिया के अन्य कुछ देशों ने भी इस शान्ति सन्धि के प्रति कोई विशेष उत्साह नहीं दिखाया है।

शिकार हो गये

स्व० श्री० अब्दुल्ला

संयुक्त योरोपीय सेना का निर्माण

योरोपीय सेना के निर्माण के लिए नियुक्त पंच राष्ट्रीय समिति ने सिफारिश की है कि पश्चिमीय योरोपीय राष्ट्र एक संयुक्त सबल सेना का निर्माण करें और अपने सैनिक साधनों को मिला कर एक कर लें। समिति ने यह भी सिफारिश की है कि जो राष्ट्र इस योजना से सहमत हों वे इस विषय में विचार करने के लिये संयुक्त विदेश मन्त्री सम्मेलन का आयोजन निकट भविष्य में ही करें।

अन्त में मैं उन सब त्रुटियों के लिए जो मेरे या मेरे साथियों के आलस्य, अज्ञान अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण हुई हों, पाठकों और लेखकों से क्षमा चाहता हूँ।

इस दीर्घ काल में जिन मित्रों से निजी सम्बन्ध बन गये हैं वे आगे भी कायम रहेंगे। भविष्य में मेरा पता यह रहेगा— मार्फत अशोक प्रकाशन मन्दिर १६ जैना बिल्डिंग्स रोशनारा रोड सब्जीमण्डी, दिल्ली —कृष्णचन्द्र

देश-वार्ता

"सभी समस्याओं का हल एकमात्र अखंड भारत"

नशे में बहक गए

श्री रफीअहमद किदवई

किदवई के दांव से सभी चक्कर में

पंजाब में पुनः भ्रष्ट कांग्रेसी शासन को लाने के प्रयास-- किदवई के दांवपेच

अपने त्यागपत्र को वापिस लेते हुए प्रकाशित किए गए वक्तव्य में श्री रफी अहमद किदवई वह करने में सफल हो गए प्रतीत होते हैं जिसमें वे लाहौर में सफल नहीं हुए थे। जब से श्री टण्डन कांग्रेस के अध्यक्ष हुए हैं तभी से श्री किदवई इस बात का यत्न कर रहे हैं कि पं० नेहरू कांग्रेस से पृथक हो कर नवीन दल का नेतृत्व करें। किन्तु अभी तक नेहरू टण्डन-द्वन्द्व करा पाने में वे सफल नहीं हो सके थे।

मन्त्रिमण्डल से त्यागपत्र देते हुए श्री किदवई ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वे मन्त्रिमण्डल में उसी दशा में रह सकते हैं जब कांग्रेस दल का विरोध करने तथा अन्य किसी भी विरोधी दल का सदस्य बनने की उनको स्वतन्त्रता रहे। प्रधानमन्त्री ने त्यागपत्र लौटा कर एक प्रकार से यह शर्तें स्वीकार कर ली और श्री किदवई तथा उनके साथी श्री अजीतप्रसाद जैन ने तुरन्त ही वक्तव्य प्रकाशित कर कांग्रेस अध्यक्ष पर कटु आक्रमण कर दिया।

श्री टण्डन ने दूसरे दिन प्रकाशित अपने वक्तव्य में यह स्पष्ट कर दिया कि है कि यदि प्रधानमन्त्री ने कांग्रेस विरोध की छुट्टी दे कर श्री किदवई को मन्त्रिमण्डल में रहने की अनुमति दी है तो यह एक 'असम्भव स्थिति' होगी। मन्त्रिमण्डल कांग्रेस की नीति को ले कर चलता है और इसलिए किसी भी मन्त्री द्वारा कांग्रेस का विरोध किया जाना असह्य होगा।

ज्ञात हुआ है कि पं० नेहरू ने भी श्री टण्डन को एक पत्र लिख कर किदवई-जैन वक्तव्य पर खेद प्रकट किया है। जो भी स्थिति अभी नहीं की नहीं है। यदि पं० नेहरू ने उपरोक्त वक्तव्य के मुताबिक भी श्री किदवई की मन्त्रि-

मण्डल में रखा तो यह स्पष्ट है कि स्वयं प्रधानमन्त्री तथा कांग्रेस दल के मध्य एक भारी खाई पड़ जायगी। उचित निर्णय बारह अगस्त को होने वाली कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में ही हो सकेगा ऐसी सम्भावना है।

पंजाब में गवर्नरी शासन

पंजाब के गवर्नर श्री चन्दूलाल त्रिवेदी ने यह दिखा दिया है कि शासन में सुधार किए जा सकते हैं और उसका स्तर उठाया जा सकता है। यही नहीं अनेकों बुराइयां भी रोकी जा सकती हैं। पंजाब के शासन में एकदम परिवर्तन होता दिखाई देता है और कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल के समय के अनेकों दोष गायब हो गए हैं।

शासन यों होता है

श्री चन्दूलाल त्रिवेदी

प्रान्त में शासन का यह सुधार कांग्रेसी क्षेत्रों को कुछ अच्छा लगता प्रतीत नहीं होता क्योंकि वे समझते हैं कि यदि गवर्नरी शासन सफल हो गया तो वे अयोग्य सिद्ध हो जायेंगे। इसीलिए एक ओर तो गवर्नर के शासन को असफल बनाने की चेष्टा की जा रही है वहां दूसरी ओर प्रान्त में पुनः शासन की बागडोर कांग्रेस के ही हाथ में लेने के दांव चल रहे हैं। ज्ञात हुआ है कि हाल ही में इसी सम्बन्ध में पंजाब कांग्रेस के एक प्रतिनिधि-मण्डल ने कांग्रेस अध्यक्ष श्री टण्डन से भेंट की और सम्भवतः प्रधानमन्त्री को भी स्थिति बताई।

साथ ही पंजाब कांग्रेस में दोनों दलों के मध्य एकता वार्ता शुरू चल रही है। कुछ क्षेत्रों का कथन है कि कांग्रेस पदारूढ़ हो कर ही आगामी चुनाव प्रान्त में जीतने का उद्योग करेगी। स्वयं कांग्रेसी क्षेत्र यह अनुभव करते हैं कि यदि गवर्नरी शासन इसी प्रकार से और कुछ समय चला तो उन्हें पंजाब में मत मिलना कठिन हो जावेगा।

लियाकत को उत्तर

श्री लियाकत अली के दूसरे तार का भी उत्तर पं० नेहरू ने भेज दिया है। इस उत्तर में प्रधान मन्त्री ने यह कहा है कि पाकिस्तान की भारी तैयारियों को देखते हुए हमारा हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना सम्भव नहीं। पं० नेहरू ने पूछा है कि मेरे गत उत्तर में

यही कैसे मिले

श्री गोपीचन्द भार्गव

इस कथन का कि जब भारत ने अपनी सेना का एक भाग घटा दिया पाकिस्तान बराबर सैन्यवृद्धि करता रहा है कोई उत्तर क्यों नहीं दिया गया।

प्रधानमन्त्री ने कहा है कि यदि पाकिस्तान युद्ध नहीं करना चाहता तो उसे युद्ध की तैयारियां तथा जेहाद का प्रचार बन्द करना चाहिए। साथ ही श्री लियाकत अली यह घोषणा करें कि पाक सेनायें भारतीय भूमि पर आक्रमण नहीं करेंगी। इस प्रकार की घोषणा से ही वर्तमान तनाव कम हो सकता है। यह भी ज्ञात हुआ है कि राष्ट्रमण्डलीय देशों ने भी भारत व पाकिस्तान को यह सुझाव दिया है कि दोनों प्रधानमन्त्री परस्पर मिल मतभेद दूर करने का यत्न करें।

अखण्ड भारत

डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी

जन संघ की नीति पर डा. मुकर्जी द्वारा प्रकाश

मिदनापुर जिले का त्रिदिवसीय दौरा करते हुए जन संघ के अध्यक्ष डा० श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने खड़गपुर की एक विशाल सार्वजनिक सभा में घोषणा की कि भारत की सारी समस्याओं का हल एक मात्र अखण्ड भारत है।

डा० मुकर्जी ने कहा कांग्रेस सरकार से इस सम्बन्ध में कुछ भी आशा करना दुराशा मात्र है। आज एक राष्ट्र की आवश्यकता है जो सबल हो और भारतीय संस्कृति पर आधारित हो। डा० मुकर्जी ने कहा यदि हम सरकार बनाने में सफल हो गये तो पहले जनता की भलाई के लिए शासन चलाने वाली यन्त्र ही हाथ में लेंगे। हमारी सरकार में सबका काम मिल सकेगा और भारत को अन्न वस्त्र के लिए विदेश में हाथ नहीं पसारना पड़ेगा। यदि हम सरकार बनाने में सफल न हुए तो एक ऐसा विरोधी दल तैयार कर सकेंगे जो जनता की भावनाओं का सच्चा प्रतिनिधित्व कर सके।

उत्तर प्रदेश में त्यागपत्र

उत्तर प्रदेश मन्त्रिमण्डल से श्री केशवदेव मालवीय तथा श्री निसार अहमद शेरवानी एवं पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी श्री जगनप्रसाद रावत ने भी कांग्रेस दल तथा अपने सरकारी पदों से त्यागपत्र दे दिया है। श्री मालवीय ने अपने वक्तव्य में कुछ-कुछ उसी लाइन पर कदम रखा है जिस पर श्री किदवई चले हैं। स्मरण रहे ये तीनों सज्जन किदवई दल के व्यक्तियों में से हैं।

मध्यपूर्व की उलझनभरी पहेली : ईराक

लेखक—
श्री नीरस जोशी

मध्य पूर्व के देश सदैव से ही आक्रमण कारियों के चंगुल में रहे हैं। इन देशों में सदैव ही राजनैतिक वातावरण क्षुब्ध रहता है। ईराक भी अपने अन्य पड़ोसी राष्ट्रों की तरह विदेशी बर्बरता के प्रदर्शन का केन्द्र रहा है। १६ वीं शताब्दी में एशिया के व्यापारिक मार्ग पर होने के कारण ब्रिटेन जर्मनी व रूस वालों की इस पर सदैव ही लालच दृष्टि रही। अन्त में ब्रिटेन ने अपनी कूटनीति का सहारा लेकर यहां अधिकार कर लिया। ब्रिटेन अधिकार करते समय यह नहीं जानता था कि यह देश किसी और दिशा में भी महत्वपूर्ण हो सकता है। १९२७ में किर्क के तेल कूपों से सर्वप्रथम तेल निकाला गया। तब से लेकर आज तक ईराक की राजनीति तेल से सम्बन्धित रही है। तेल से प्राप्त आय से देश की शिक्षा संस्थायें और हस्पताल चलाये जाते हैं। रेलें, सड़कें और सिंचाई का कार्य भी तेल पर ही निर्भर है।

क्षेत्रफल व जनसंख्या

ईराक का क्षेत्रफल प्राय पौने दो लाख वर्गमील है और जनसंख्या ४७ ६६ ००० है। सर्वप्रथम जनगणना १९४७ म हुई थी। इतनी बड़ी जनसंख्या के लिये ईराक में शिक्षा का प्राय अभाव ही है। प्रारम्भिक शिक्षा राज्य के नियमानुसार सब के लिये आवश्यक है परन्तु पाठशालाओं की कमी के कारण यह केवल एक कागजी योजना है। वास्तविक रूप में यहां देश की जनसंख्या का ४ प्रतिशत भाग ही शिक्षा प्राप्त करता है। शिक्षा के लिये धन व आपसी सहानुभूति की भी कमी है। देश की ६६ प्रतिशत जनता मुस्लिम है और राजभाषा फारसी। ईसाई, यहूदी यजदी और सबियन जातियों के अतिरिक्त स्वयं मुसलमान भी भिन्न-जातियों में विभक्त हैं।

इतिहास व राजनीति

ईराक म अनेकों बार स्वतन्त्रता का दमन किया गया है। प्रथम महायुद्ध के पश्चात् ब्रिटेन ने ईराक पर अपना पूर्ण अधिकार कर लिया। १९१८ में की गई आंग्ल फ्रांसिसी घोषणा से ईराक की जनता को स्वतन्त्रता मिलने की आशा अवश्य हुई थी परन्तु वह निमू ल सिद्ध हुई। एक वर्ष पश्चात् हुए शान्ति-सम्मेलन में ईराक की स्वतन्त्रता के लिये अनेकों योजनायें बनाई गई परन्तु अन्त में उसे ब्रिटेन के हवाले कर दिया गया। इस बन्दर बांट में फ्रांस वालों को सीरिया का प्रदेश मिला। उन्होंने सर्व प्रथम शाह फैसल को राजगद्दी से उतार दिया। ईराक में इसकी कड़ी प्रतिक्रिया हुई और विद्रोह के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे। तत्कालीन कमिश्नर पर्सी काक्स ने इस समय बुद्धिमानी से काम लेकर फैसल को ईराक का शासक बना दिया। इस प्रकार देश अव्यवस्था से बच गया। १९२६ में एक सन्धि के अनुसार ईराक को २५ वर्ष के लिये ब्रिटेन के अन्तर्गत कर दिया गया। परन्तु इस बात की छूट अवश्य दे दी गई कि यदि, वह राष्ट्र संघ का सदस्य बना दिया गया तो वह स्वतन्त्र हो सकेगा।

तूफानी राजनीति

शाह फैसल एक दूरदर्शी शासक थे परन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् शाह गाजी देश में व्यवस्था न रख सका। १९३६ में सेना ने विद्रोह कर दिया। देश का शासन छिन्न भिन्न हो गया। अन्त में पांच वर्ष पश्चात् एक सैनिक रशीदअली अल जिलानी ने चार सेनापतियों की सहायता से देश में धुरी राष्ट्र समर्थक सरकार स्थापित की। हिटलर जिलानी को वचनानुसार समय पर सहायता न दे सका। अन्त में अ ग्रेजी सेनाओं ने उसे देश छोड़ने पर विवश किया और इस प्रकार जून १९४१ में जैबट वापिस लौट आया। युद्ध समाप्त होने के समय जनरल नूरी की दूरदर्शिता के कारण देश मित्र राष्ट्रों के साथ हो गया। तत्कालीन विदेश मन्त्री श्री बेविन ने अरब लीग की स्थापना का वचन दिया। अन्त में सन्धि के अनुसार मित्र राष्ट्रीय सेनाओं ने ईराक छाड़ दिया। देश इस समय कर्ज के बोझ से दबा जा रहा था और वहां १००० प्रतिशत तक महगाई बढ़ चुकी थी।

आर्थिक स्थिति

वास्तविक रूप में यह देश सदैव से कर्जे के बोझ से दबा रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध में तेल इत्यादि पर काफी लाभ अर्जन करने के पश्चात् भी आज यह देश कर्ज से दबा हुआ है। विदेशी शासन नागरिकों के प्रति अनुत्तर दायित्व, राष्ट्रीय सम्पत्ति का ब्रिटेन में जमा रहना यह सब नवीन ईराक के लिए अभिशाप हैं। ईराक पर लुप्त औटोमन साम्राज्य की तरफ से काफी ऋण है। इस ऋण को टर्की के नवीन जनतन्त्र ने देन से मना कर दिया था। ब्रिटेन ने रेल इत्यादि पर लगी पूंजी को काफी लाभ लेकर स्थानीय सरकार को बेच दिया है।

पैदावार

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री हाशिमजवाद के अनुसार एक वर्ष किलोमिटर में ७० टन गेहूँ इत्यादि की उपज होती है। इसका अधिकांश शहरों में या निर्यात के लिये चला जाता है। किसान के पास तो केवल अपने निर्वाह भर के लिये बच पाता है। उस पर खेती में उन्नति करने के लिये सदैव धन की कमी रहती है। उनका जीवन अशिक्षित है। देश के बड़े भाग में मुद्रा का प्रचलन बिल्कुल नहीं है। उसके स्थान पर वस्तु विनिमय होता है। देश की मुख्य उपज नमक, कोयला, गन्धक व पत्थर है। गेहूँ, जो, कपास, चावल खजूर और तम्बाकू की खेती भी की जाती है।

सैनिक महत्व

१९०३ में लार्ड लैन्स डोन ने हाउस आफ लार्डस में कहा था कि "हमें फारस की खाड़ी में किसी अन्य शक्ति द्वारा किले बन्दी करने या सामरिक स्थान बनाने का विरोध करना होगा। ब्रिटिश हितों को सुरक्षित रखने के लिये हमें पूर्णशक्ति से इसकी रक्षा करनी होगी।' आज भी सामरिक दृष्टि से फारस की खाड़ी क समीप होने के कारण ईराक के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता है। पड़ोसी देश ईरान में आज ब्रिटेन विरोधी भावना प्रबल हो रही है। ब्रिटेन ईराक के सम्बन्ध में फूं क फूं क कर कदम रख रहा है। वह रूस के समीप होने के कारण अपनी सैनिक शक्ति निरन्तर इस देश में सगठित कर रहा है। ट्रांस जोर्डन के शाह अब्दुल्ला की मृत्यु से ब्रिटेन कुछ चिन्तित अवश्य हुआ है परन्तु वह अपने रूस विरोधी प्रयत्नों में कमी नहीं होने देना चाहता है।

अमरीका भी यहां पर मध्यपूर्व की सुरक्षा के बहाने अपनी सेनायें भेज रहा है। स्वयं ईराक में प्रत्येक १८ से २५ वर्ष के युवक के लिये सैनिक शिक्षा आवश्यक है।

विधान व विदेशों से सम्बन्ध

राज्य का प्रमुख शाह को माना जाता है वह मन्त्रियों की सहायता से राजकार्य चलाता है। ईराक की स्थापना को हुए केवल २६ वर्ष हुए हैं परन्तु यहां पर ३३ मन्त्रीमण्डल बदल चुके हैं। मन्त्री मण्डल को राज्य की निर्धन जनता का समर्थन प्राप्त नहीं है। उसे तो केवल वैधानिक लोगों का समर्थन प्राप्त है। ईराक बिना दल का प्रजातन्त्र' व बिना नेता का देश है। यहां पर केवल ४ राजनैतिक दल हैं जिनके तीन पत्र प्रकाशित होते हैं। साम्यवादी पत्र का प्रकाशन १९३७ में बन्द कर दिया गया था।

ब्रिटेन

ब्रिटेन ने देश का शोषण किया है परन्तु बाह्य परिस्थिति वश वह देश से अपना हाथ धीरे धीरे हटा रहा है। जनवरी १९४८ में एक ईराकी प्रतिनिधि मण्डल ब्रिटेन गया और पोर्ट्स माउथ में सन्धि पर हस्ताक्षर किये गये। इस सन्धि के अनुसार ईराक के कुछ हवाई अड्डों को ब्रिटेन को प्रयोग करने की छूट दे दी गई। ब्रिटेन ने भी ईराक को अनेकों सुविधायें दीं। परन्तु इस सन्धि का देश में गम्भीर प्रति क्रिया हुई और इसे समाप्त कर दिया गया। तब से लेकर आज तक ब्रिटेन के साथ कोई सन्धि नहीं की गई है।

फिलस्तीन

ईराक ने सदैव फिलस्तीन के नवीन राष्ट्र का विरोध किया है। संयुक्तराष्ट्र-संघ द्वारा विराम सन्धि का आदेश दिये जाने पर ईराक व सीरिया ही केवल दो राष्ट्र थे जिन्होंने इस आज्ञा का विरोध किया था। नूरी के प्रधान मन्त्री बनने पर जोर्डन के साथ मिलकर फिलस्तीन से सेनायें हटायी गई। ईराक ने इस समय भी फिलस्तीन से कोई सन्धि नहीं की। इतना ही नहीं उसने हैफा को जाने वाली तेल लाईन को भी बन्द कर दिया इससे देश का महान् हानि हुई।

ईराक के उद्योग

देश का यातायात पिछड़ी दशा में है। सड़कें व रेलें नहीं के बराबर हैं। केवल छोटे छोटे उद्योग ह देश में हैं। सिगरट कपास का काम ईंटें, तेल व साबुन बनाना और चमड़े का काम देश की उन्नति म सहायक है। हवाई अड्डे भी इने गिने हैं। बसरा की बन्दरगाह का महत्व हैफा तेल लाईन के बन्द होने के पश्चात् बढ़ गया है। देश के दक्षिणी भाग में यातायात का साधन छोटे छोटे जहाज हैं।

तेल

ईराक में प्रतिवर्ष ६,०२१००० टन तेल निकाला जाता है। देश का अधिकतर भाग तेल से प्राप्त होता है। ईराक में मध्यपूर्व के तेल उत्पादन का ११ २ प्रतिशत निकाला जाता है। देश में चार कम्पनीयों द्वारा तेल निकाला जाता है। इन कम्पनीयों को एक दीर्घ काल के लिये जमीन पट्टे पर दे दी गई है। इसके बदले में यह कम्पनियां शाह को कुछ धन प्रतिवर्ष देती हैं।

ईराक की राजनीति में नूरी का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्हें दस बार राजनीति से स्वास्थ्य व अन्य कारणों से सन्यास लेना पड़ा है। ऊपर कहा जा चुका है कि ईराक की आय हैफा तेल लाईन के बन्द होने के पश्चात् काफी कम हो गई थी परन्तु उसे अन्य उपायों

(शेष पृष्ठ ५३ पर)

कांग्रेस तथा मन्त्रिमण्डल में अद्वितीय उलझन

श्री किदवई गले में अटक गए !

क्या मौलाना आजाद गुत्थी सुलझा सकेंगे ?

(श्री होरीलाल सक्सेना)

श्री टण्डन जी

गत वर्ष २६ जनवरी को जब भारत प्रजातन्त्र घोषित हुआ तो भारतीय संविधान सभा के वह सभी सदस्य नई भारतीय संसद के सदस्य नहीं रहे जो किसी भी प्रांतीय धारा सभा के सदस्य थे। उत्तर प्रदेश से इस प्रकार के २४ स्थान संसद में रिक्त हो गये और उनके स्थान पर नये सदस्यों का निर्वाचन प्रांतीय धारा सभा द्वारा होना था। उत्तर प्रदेश के बहुमती पदारूढ़ दल ने इन स्थानों के लिये लगभग सभी सदस्य अपने ही दल में से निर्वाचित करा लिये, और इसी बात के विरोध में उत्तर प्रदेश के अल्पमती दल वालों ने विद्रोह का झंडा उठाया और विद्रोही कांग्रेस जन" की स्थापना हुई जिसका नामकरण बाद में "जन कांग्रेस" हो गया। यह दल उत्तर प्रदेश की कांग्रेस में नेहरू किदवई का दल था।

शतरंज के खिलाड़ी

गत वर्ष अक्तूबर के अन्त में श्री रफी अहमद किदवई अपने एक दौरे में जबलपुर गये थे। वहां एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए श्री किदवई ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि "मैं एक राजनैतिक खिलाड़ी हूँ। राजनीति में मेरी स्थिति वही है जो शतरंज के खिलाड़ियों की होती है—मुहरों को बैठाना और उठाना।" इसी भाषण के बीच उन्होंने बताया था कि वह इस देश में प्रजातन्त्र की सफलता के लिए विरोधी दलों का होना अति आवश्यक समझते हैं।

समाजवादियों का कांग्रेस त्याग

... से लगभग तीन वर्ष पूर्व गांधीजी की हत्या के तुरन्त बाद ही जब श्री जयप्रकाश नारायण ने सरदार पटेल पर गांधीजी की रक्षा न करने का आरोप लगाया और यह घोषणा की कि समाजवादी दल केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में सम्मिलित हो कर सरकार की सहायता करने को तैयार है तो सरदार पटेल ने स्पष्टतया कह दिया कि अब समाजवादियों के लिये कांग्रेस में कोई स्थान नहीं रहा है, और कुछ ही मास पश्चात् समाजवादियों को कांग्रेस से पृथक हो जाना पड़ा।

वामपक्षी मोर्चे की स्थापना

उस समय श्री रफी अहमद किदवई ने समाजवादियों का समर्थन किया और उन्हें कांग्रेस से अलग हो जाने के लिये प्रोत्साहित किया था। उसी समय से श्री किदवई इस बात का अथक प्रयत्न करते चले आ रहे हैं कि किसी प्रकार से प० जवाहरलाल नेहरू भी कांग्रेस को त्याग कर इस देश में एक वामपक्षी मोर्चा बना कर उसका नेतृत्व करें।

कृपालानी-टण्डन विरोध

इसी अभिप्राय से उन्होंने उत्तर प्रदेश के विद्रोही कांग्रेस दल को कांग्रेस से अलग हो जाने के लिए उत्साहित किया, जिसका फल यह हुआ कि आज उत्तर प्रदेश की कांग्रेस में प० जवाहरलाल नेहरू के दल के कोई भी सदस्य नहीं रह गये हैं। श्री किदवई भली प्रकार जानते हैं कि वह दिन अब अधिक दूर नहीं है जब प० नेहरू को भी कांग्रेस त्यागनी पड़ेगी और एक वामपक्षी दल बना कर उसका नेतृत्व करना होगा। इसी उद्देश्य से श्री किदवई ने कांग्रेस के अध्यक्ष के गत निर्वाचनों में श्री टण्डनजी के विरोध में पहले श्री शंकरराव देव को खड़वाने का प्रयत्न किया और जब श्री शंकररावजी के लिए कोई समर्थन मिलने की आशा नहीं रही तो आचार्य कृपालानी का समर्थन करा कर श्री टण्डन जी का डट कर विरोध कराया। इसमें सफलता न मिलने पर नासिक कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर प० नेहरू की सहमति और आचार्य कृपालानी के सहयोग से जनतन्त्री मोर्चा (डेमोक्रेटिक फ्रन्ट) स्थापित किया। इसका उद्देश्य भी यही था कि प नेहरू को कांग्रेस से निकलवा कर एक दूसरे दल का नेतृत्व करवाया जाय, और सम्भवतः श्री किदवई नासिक कांग्रेस में अपने इस उद्देश्य में सफल भी हो गये यदि उस समय सरदार पटेल जीवित न होते।

सरदार पटेल और कांग्रेस

प० नेहरू ने नासिक कांग्रेस जाने से पूर्व अपना विस्तृत वक्तव्य प्रकाशित कर दिया था जिसमें उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया था कि वह कांग्रेस में किन शर्तों पर बने रह सकते हैं। सरदार पटेल ने बजाय इस चुनौती को स्वीकार करने के श्री टण्डनजी से अध्यक्षीय भाषण ऐसा दिलवाया जिस पर प० नेहरू को कोई आपत्ति न हो और नासिक कांग्रेस में प० नेहरू के किसी भी प्रस्ताव का विरोध न तो स्वयम् ही किया और न होने ही दिया। इस प्रकार प नेहरू को कांग्रेस से लड़ कर पृथक होने का अवसर ही न मिल सका। यह निश्चित है कि यदि नासिक कांग्रेस में वे पृथक होने की घोषणा कर देते तो लगभग आधी कांग्रेस सरदार पटेल तथा श्री टण्डन जी को छोड़ कर प० नेहरू के नेतृत्व में आ जाती, और वह जिस दल के नेता बनते वह तुरन्त ही बड़ा बलशाली दल हो जाता। किन्तु सरदार पटेल ने अपने जीते जी कांग्रेस को टूटने नहीं दिया और प० नेहरू को कांग्रेस से अलग होने के लिए कोई अवसर नहीं दिया। इस प्रकार से प० नेहरू को कांग्रेस से अलग कराने का श्री किदवई का यह प्रयास भी असफल ही रहा।

कांग्रेस कार्यसमिति की सदस्यता

किन्तु, शतरंज का खिलाड़ी शह पर शह खाते हुए भी अन्त समय तक मात नहीं खाता। यही हालत श्री रफी अहमद किदवई की है। नासिक कांग्रेस में सफल न हो कर उन्होंने इस का प्रयत्न किया कि प० नेहरू नई कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य न बनें। इस में भी वह सफल हो ही गये थे और प० नेहरू ने श्री टण्डन जी को लिख भी दिया था कि वह नई कार्य समिति में सम्मिलित नहीं होंगे किन्तु अन्त समय में मौलाना अबुल कलाम आजाद ने प० नेहरू को प्रभावित करके श्री किदवई की बात नहीं चलने दी और वह कांग्रेस कार्य समिति में भी सम्मिलित हो गये।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

हार मानना तो श्री रफी अहमद किदवई ने कभी सीखा ही नहीं है। इसलिए उन्होंने धीरे-धीरे जनतन्त्री मोर्चे को बलशाली बनाना प्रारम्भ कर दिया और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की गत दिल्ली बैठक के अवसर पर ऐसा लगने लगा कि यह मोर्चा आज कांग्रेस से अलग हुआ और कल अलग हुआ। किन्तु एक बार फिर मौलाना आजाद का जादू प० नेहरू पर चल गया और उन्होंने मोर्चे को

किदवई प्रेम ने पं० नेहरू को विचित्र उलझन में डाल दिया है

बजाय कांग्रेस से पृथक होने के विवाहित ही करा दिया। इस का प्रभाव कृपालानी किदवई दल पर कितना भयंकर पड़ा यह सब को भली प्रकार ज्ञात है।

प्रजा पार्टी की स्थापना

इसके पश्चात् पटना में विघटित जनतन्त्री मोर्चे वालों का अधिवेशन किसान मजदूर प्रजा पार्टी बनाने के लिए किया गया और श्री किदवई कांग्रेस में रहते हुए भी उसमें सम्मिलित ही नहीं हुए वरन् उसकी कन्द्रीय समिति के सदस्य भी बन गये। इससे कांग्रेस में एक नई उलझन उपस्थित हो गई और ऐसा लगने लगा कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के बंगलौर अधिवेशन में श्री किदवई के ही मामले को ले कर श्री टण्डन जी और प० नेहरू में झगड़ा उठ खड़ा होगा और प० नेहरू सम्भवत कांग्रेस से पृथक होने की धमकी दे बैठेंगे। किन्तु श्री टण्डन जी इतने चतुर राजनीतिज्ञ निकले कि उन्होंने इस मामले पर श्री पं० नेहरू को कांग्रेस से पृथक नहीं होने दिया, और एक ऐसा प्रस्ताव स्वीकृत हो गया जिससे प० नेहरू को तो कुछ सान्त्वना अवश्य मिल गई किन्तु और कुछ नहीं हुआ।

मन्त्रिमण्डल से त्यागपत्र

इस पर श्री किदवई श्री अजीत प्रसाद जैन के साथ ही कांग्रेस से पृथक हो गये और अपने मन्त्रिपदों से भी त्यागपत्र भेज दिया। किन्तु वह यह भली प्रकार जानते थे कि प० नेहरू उनके त्यागपत्र स्वीकार नहीं कर सकेंगे, और ऐसा ही हुआ। प० नेहरू ने इन दोनों से मन्त्रिमण्डल के त्यागपत्रों को वापस ले लेने को कहा तो उन्होंने ऐसा करना इस शर्त पर स्वीकार कर लिया कि वे कांग्रेस के विरुद्ध राजनैतिक कार्य करने में पूर्णतया स्वतन्त्र रहेंगे। उनकी यह शर्त स्वीकार होने की देर नहीं थी कि श्री किदवई ने एक ऐसा तीखा वक्तव्य प्रकाशित कर दिया जिस से एक ओर तो श्री टण्डन जी और उनके समर्थक उत्तेजित हो उठे और दूसरी ओर प० जवाहरलाल नेहरू की शान्ति भंग हो गई।

जटिल परिस्थिति

अब एक बड़ी ही जटिल परिस्थिति उत्पन्न हो गई है जिस में प० नेहरू को अपनी दो नावों की सवारी वाली नीति का अन्त करना ही होगा। प्रश्न जो अब उठ खड़ा हुआ है उस का बड़ा ही वैधानिक महत्व भी है। श्री टण्डन जी यह आपत्ति उठाई है कि केन्द्र में जो मन्त्रिमण्डल है वह चाहे पूर्णतया कांग्रेस जनों का न भी हो, तब भी उसका आधार कांग्रेस है और जब तक यह वास्तविकता है उस समय तक उसका कोई भी सदस्य कांग्रेस का विरोध नहीं कर सकता। प० नेहरू का मत सम्भवत यह है कि वह प्रधानमन्त्री हैं, इसलिये उन्हें इस बात की पूर्ण स्वतन्त्रता है कि वह अपने मन्त्रिमण्डल में किसे रखते हैं। इन दोनों दृष्टिकोणों में बड़ा ही अन्तर है, और इन के हल होने पर ही इस जटिल गुत्थी का सुलझना निर्भर करता है।

मन्त्रि-मण्डल में संकट

यह गुत्थी कितनी उलझी हुई है इसका अनुमान करना साधारण बात नहीं है। राज्य मन्त्रियों तथा उप-मन्त्रियों को छोड़कर आज केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के चौदह मन्त्रियों में से आठ कांग्रेसी मन्त्रियों में प० नेहरू के अतिरिक्त केवल मौलाना आजाद तथा श्री हरेकृष्ण मेहताब ही उनके समर्थक हैं, अन्य पांच श्री राजगोपालाचारी, श्री कन्हैयालाल मुंशी, श्री जगजीवनराम, श्री गाडगिल तथा श्री श्रीप्रकाश—कांग्रेस के वर्तमान पदारूढ़ दल के समर्थक हैं। ऐसी स्थिति में यदि प० नेहरू ने इस बात का प्रयत्न किया कि श्री रफी अहमद किदवई और श्री अजितप्रसाद जैन को केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में रहने दिया जाय, तो यह पांचों मन्त्री तथा कुछ कांग्रेसी राज्यमन्त्री तथा उप-मन्त्री, उस मन्त्रि-मण्डल से अलग होने की मांग कर सकते हैं जिसमें कांग्रेस-विरोधी मन्त्री हों, क्योंकि यह तो कांग्रेस की सेवा करने तथा कांग्रेसी नीति का देश में प्रतिपादन कराने के उद्देश्य से ही प० नेहरू के मन्त्रि-मण्डल के सदस्य बने हैं। इसलिये प० नेहरू या तो इन कांग्रेसियों के त्याग-पत्र स्वीकार करें और इनके स्थान पर गैर-कांग्रेसी मन्त्रि-मण्डल बनावें, या उन्हें श्री किदवई और श्री जैन को मन्त्रिमण्डल से पृथक् करना पड़ेगा। ऐसी स्थिति में प० नेहरू संसद् के कांग्रेसी दल के नेता नहीं बने रह सकते और उन्हें अपने प्रधान-मन्त्री पद को छोड़ना पड़ेगा।

मन्त्रि-मण्डल का रूप

जहां तक श्री किदवई और श्री जैन का सम्बन्ध है उनके त्याग-पत्र लौटा देने के बाद इन दोनों से त्याग-पत्र पुनः मांगना भी अब साधारण बात नहीं है, क्योंकि मन्त्रि-मण्डल में उनकी वही स्थिति है जो अन्य गैर-कांग्रेसी मन्त्रियों—डा० अम्बेदकर, सरदार बलदेव सिंह आदि—की है जो दोनों अपने-अपने गैर-कांग्रेसी राजनैतिक दलों के नेता हैं। इसलिये यदि प० नेहरू ने श्री किदवई अथवा श्री जैन से त्याग-पत्र मांगने का साहस किया तो वह डा० अम्बेदकर, सरदार बलदेवसिंह तथा अन्य गैर-कांग्रेसी मन्त्रियों के भी निकाले जाने की मांग कर सकते हैं।

टंडनजी और पं० नेहरू

जहां तक श्री० टण्डनजी का प्रश्न है वह इस देश में हिन्दू संस्कृति के प्रबल समर्थक और मुस्लिम तुष्टीकरण के कट्टर विरोधी हैं, इसलिये वह प० जवाहरलाल नेहरू के सेकुलरवाद को देश के लिये बड़ा ही घातक समझते हैं, चाहे वह यह स्पष्टतया राजनैतिक कारणों से व्यक्त न कर सकें। इसलिये उन्हें कोई विशेष उलझन नहीं होगी यदि प० नेहरू आज श्री किदवई और श्री जैन का साथ देकर कांग्रेस से पृथक् हो जावें। कुछ राजनीतिज्ञों का तो यह भी कहना है कि श्री टण्डनजी नासिक कांग्रेस से अब तक किसी ऐसे अवसर की ताक में थे जब प० नेहरू कोई भयंकर भूल करें और उसके आधार पर उन्हें कांग्रेस त्यागनी पड़े और यह भूल प० नेहरू अब कर बैठे हैं श्री किदवई और श्री जैन के त्याग-पत्रों को लौटा कर।

मौलाना आजाद के प्रयत्न

अब मौलाना आजाद को इन जटिल गुत्थी को सुलझाने का कार्य प० नेहरू ने सौंपा है। इसमें उन्हें कहां तक सफलता मिलती है, इस पर ही कांग्रेस तथा प० नेहरू का भविष्य निर्भर करता है।

—★—

चंचलता !

[श्री ...]

श्यामल रजनी, घन-श्याम गगन,
करतीं बूंदें हैं चंचलता !
उन्माद उच्छ्वास से आकुल,
मधु जीवन की भावुक पुलपुल,
जितनी असफल
उतनी बूंदें

करती उर-सागर निश्चलता !
करती बूंदें हैं चंचलता !
मिट्टी फिर से जीवित होती,
वे बिखर रहे उस पर मोती,
मानस नीरद के
सजल, सरल

सम्पन्न सीपी की सुन्दरता !
करती बूंदें हैं चंचलता !
घन-तड़ित साथ गर्जन करता,
चुपचाप हृदय मेरा डरता,
लगते मुझको
केवल वे दो—

एकाकी पथ, वह नीरवता !
करतीं बूंदें हैं चंचलता !
पड़ती कलियों की रूप प्रभा,
मेरे जीवन के शिथिल प्रभ,
वह चली मधुप
सुधि मधुर उमड़—

जग को देने अपनी ममता !
करतीं बूंदें हैं चंचलता !

★

भारतीय संस्कृति की रक्षा भगवान का कार्य है

हिन्दू राष्ट्र व संस्कृति अक्षुण्ण रहे ऐसी ही उसकी इच्छा दीखती है

अन्यथा वर्तमान शासकों से इतनी भूलें न होतीं

[श्री उमाकान्त आप्टे

श्री बाबा साहेब आप्टे

राष्ट्रोत्थान का कार्य जिस भावना से चलता है उसमें कभी भी परिवर्तन नहीं होता। किन्तु उस कार्य का आकार तब बढ़ता है जब हृदय की उत्कटता बढ़ती है। यही सिद्धान्त अपने इस संघ कार्य पर भी लागू होता है। राष्ट्र निर्माण के अपने इस कार्य के विषय में हमने कभी यह नहीं सोचा कि यह थोड़े परिश्रम से हो जायगा। इसकी सफलता के लिए तो हृदय में भावना की उत्कटता तथा अविराम श्रम आवश्यक है।

कार्य का स्वरूप

इस कार्य का स्वरूप क्या है? प्रार्थना में प्रतिदिन इसे हम भगवान का कार्य कहते हैं। किन्तु क्या हम यह अनुभव भी करते हैं कि यह वास्तव में ईश्वरीय कार्य है, हम तो केवल भगवान के हाथ में एक हथियार हैं? हथियार के हृदय में नाना प्रकार की शंकायें नहीं उठा करतीं। उसका काम तो यही है कि उसने अपने आप को उस महान कारीगर के हाथ में सौंप दिया। अब उसके चलाने के अनुसार चलना, यही कार्य है, इतना नहीं। हम इस न आंच यह ही हमारी जिम्मेदारी है।

हिन्दू संघटन

यह काम क्या है?—भारत यह हिन्दू राष्ट्र है यह हमने यदि समझ लिया तो हिन्दुओं के बल को बढ़ाना यही कार्य स्वतः स्पष्ट हो जाता है। फिर इधर-उधर की बातों की या किसी के रोने-धोने की क्या चिन्ता? जैसे किसी की नौकरी होती है। वहां काम के समय उपस्थिति आवश्यक है, निश्चित समय तक रहना, जो बताया वह काम करना यह भी आवश्यक है। यदि कभी उसने सामान नहीं दिया और उसके कारण काम रुका रहा तो इसकी किसी को चिन्ता होती है क्या? नहीं होती, क्योंकि यह उसका विषय नहीं है। किन्तु उसी प्रकार अपने समय पर वहां उपस्थित होना भी उतना ही आवश्यक है।

भगवान पर विश्वास

फिर हमने जब यह समझ लिया कि भारतीय संस्कृति की रक्षा का कार्य तो भगवान का कार्य है तो हमें क्या चिन्ता? आकाश में काली घटा हो चाहे सफेद घटा हो हमारे लिए निराश होने का कोई कारण नहीं। किन्तु यदि यह भी मानें कि हमें उससे कुछ मतलब है तो भी इस विषय पर विचार करें।

> मेरा विश्वास है कि भगवान् इस देश का भला करना चाहता है। यदि उसकी यह इच्छा न होती कि देश की संस्कृति, धर्म, परम्परा, इतिहास आदि सभी सुरक्षित रहें, तो जिनके हाथ में शासन आया है, वे इतनी गलतियां न करते। उन्होंने भी देश के लिए बहुत कष्ट उठाये हैं। किन्तु उनके गलत सिद्धांत के कारण ही उनसे गलतियां होती चली गयीं। उनकी बुद्धि इस प्रकार भ्रमित हुई कि चेष्टा करने पर भी वे सुधार न सके।

स्वतन्त्रता प्राप्त होने के कारण हमारे राष्ट्रजीवन में जो कष्ट बढ़ गए हैं उनमें भी भगवान का कुछ उद्देश्य है। मनुष्य गलती करता है, भगवान गलती नहीं करता। अतः अपनी बुद्धि से इस विषय में भी कुछ विचार करें।

बुराई अंग्रेजों के सिर

स्वतन्त्र होने के पूर्व हमारे नेता प्रत्येक बात का दोष अंग्रेज के सिर मढ़ देते थे और उसे यहां से जाने के लिए कहते थे। अंग्रेज कहता था कि मैं तो यहां पर तुम्हारे ही लिए हूँ। मैं यदि यहां से चला जाऊंगा तो तुम परस्पर कट मरोगे, तुम्हारा जीवन बड़ा दुःखी हो जायेगा। किन्तु नेता कहते थे कि यह सब झूठ है तुम यहां से चले जाओ, फिर हम यहां पर स्वर्ग निर्माण करेंगे। इस बात का वे सारी दुनिया में ढोल पीटते थे। किन्तु क्या सारा दोष अंग्रेज के ही सिर था? क्या वास्तव में हम वैसे ही ईमानदार थे जैसा कि कहते थे? वास्तव में तो हम बड़े स्वार्थी थे। यह सब हमारा दम्भ था। और भगवान सब कुछ अच्छा लगता है, किन्तु दम्भ अच्छा नहीं लगता। हृदय में एक और मुख पर दूसरी बात यह बेईमानी है।

भारतीय संस्कृति

अपनी भारतीय संस्कृति का भी यही कथन है। जिस पर तुम्हारी श्रद्धा हो, जिसमें तुम्हारा विश्वास हो, उस पर अटल होकर चलो। भारतीय संस्कृति यह आवश्यक नहीं मानती कि राम अथवा कृष्ण, शिव या विष्णु, वेद व पुराण बुद्ध या महावीर किसी भी एक पर अथवा सब पर विश्वास रखना आवश्यक है। इसको मानो या उसको अथवा अन्य किसी को, किन्तु श्रद्धानुसार चलो अपना व्यवहार करो।

दैव की कृपा

दम्भ सबसे बड़ी बुराई है। यह श्रद्धा का नाश करता है। और भगवान को भी ऐसा लगा कि इनका दम्भ प्रकट करो। अतः उसने ऐसा चक्र चलाया कि अंग्रेज यहां से चला गया। हम यह देखते हैं कि हमारे किसी आन्दोलन अथवा बल से भयभीत होकर अंग्रेज नहीं गया। भारतवर्ष की स्वतन्त्रता के साथ ही साथ लंका, ब्रह्मा आदि को भी स्वतन्त्रता प्राप्त हुई जहां इस प्रकार के कोई आन्दोलन नहीं थे। यदि आन्दोलन के परिणामस्वरूप अंग्रेज जाता तो वे कैसे स्वतन्त्र हो जाते अतः पहिले जो बड़ी बड़ी डींगें मारी थीं उन्हें सत्य करने का भार हमारे नेताओं पर पड़ा।

बोझ हटा, बुराई उभरी

अंग्रेजों का जो बोझा था वह हट गया। बोझे से यदि इस देश की अच्छाइयां दबी हुई थीं, तो बुराइयां भी दबी हुई थीं। पत्थर की शिला के नीचे कंकड़ और कोमल पौधा दोनों समान रूप से दब जाते हैं। पत्थर का काम तो दबाना है। अतः अंग्रेजों के भार से दबी हुई हमारी बुराइयां हमारे ध्यान में नहीं आती थीं। भगवान ने वह बोझ इसलिए हटा दिया कि हम अपने आपको देख सकें। यदि हम दम्भी अथवा बेईमान हैं तो यह प्रकट हो जावेगा और फिर हम डींग नहीं मार सकेंगे। यदि हम ईमानदार हैं तो कार्य करने का निश्चय बढ़ेगा और देश ऊपर उठेगा।

दोष पहचानें

ऐसी ही कुछ भगवान की इच्छा प्रतीत होती है। यदि उसकी इच्छा न होती तो अंग्रेज कैसे जाता? अब से दस वर्ष पूर्व कोई सोचता था कि अंग्रेज इतनी सरलता से स्वयं चला जायगा? उसकी विशाल सैन्य शक्ति और हमारा अल्प बल। किन्तु फिर भी यदि उसकी इच्छा से अंग्रेज यहां से चला गया तो क्या अब उसकी इच्छा भिन्न है? नहीं, उसकी इच्छा तो यही है कि हम अपने दोषों को पहचानें और उन्हें दूर करें।

संघ का आरम्भ

ऐसे ही कुछ विचारों को लेकर १९२५ में संघ चला। किसी का विरोध नहीं किसी से द्वेष नहीं, केवल अपने दोष दूर करने का उद्योग। यह कार्य यदि सभी ने उठाया होता तो अंग्रेजों के जाने के समय तक हम इस योग्य होते कि शासन ठीक प्रकार सम्भाल सकते। १९४७ से पहले के सभी स्वयंसेवक जानते हैं कि संघ कार्य में इस प्रकार के अन्तःकरण के परिवर्तन पर ही सारा बल था।

कार्य की महत्ता

तो भी कार्य हुआ नहीं यह स्पष्ट है। अपने देश में फैले हुए सभी भेद-भाव ऊंच नीच तथा अन्य ऐसी ही कुभावनाओं को दूर कर परिचित अपरिचित सभी के प्रति एकात्मता का अटूट अनुभव कराना यह अपेक्षित है। यह कार्य गत सहस्र वर्ष में कभी नहीं हुआ। और यदि हमने ठीक प्रकार से किया तो आगे भी सहस्र वर्ष तक हम इसका लाभ उठा सकेंगे। यह कोई मरहम पट्टी करने का क्षणिक कार्य नहीं है। यह तो राष्ट्र के सभी दोषों को अन्दर से ही दूर कर सबल तथा स्वस्थ

(शेष पृष्ठ १६ पर)

कल के भारतीय प्रदेश में

पूर्वी बंगाल में भारी सैनिक तैयारियां : हिन्दुओं की नावें, ट्रक तथा मोटरें छिनी : वायुयानों द्वारा अभ्यास : फसल खड़े खेत छीन लिए गए : मुसलमान आसाम में फैल रहे हैं

पूर्वी पाकिस्तान का भारतीय सीमा पर भारी जमाव किया जा रहा है। गत सप्ताह ही चटगांव बन्दरगाह पर तीन जहाजों से १४ वीं पंजाब रेजीमेंट उतरी है और इसे मिला कर वहां पांच डिवीजन सेना किसी भी कार्यवाही के लिए तैयार है। ये सभी सैनिक पूरी तरह सुशिक्षित तथा शस्त्रास्त्र से लैस हैं। इसके अतिरिक्त पूर्वी पाकिस्तान ने अंसारों के रूप में भी एक स्थानीय सैनिक संगठन बना डाला है। लगभग प्रत्येक अंसार को आग्नेयास्त्रों की शिक्षा दे दी गई है।

पूर्वी बंगाल के हिन्दुओं की बहुत सी नावें, मोटरकार तथा यातायात व आवागमन के अन्य बहुत से साधन हाल ही में पाकिस्तान सरकार द्वारा ले लिये गये हैं। खाद्य सामग्री और पेट्रोल जैसे युद्ध के लिए आवश्यक पदार्थों को भारी मात्रा में संग्रह किया जा रहा है। ज्ञात हुआ है कि पूर्वी बंगाल सरकार इतना संग्रह कर लेना चाहती है कि कम से कम छः महीने तक उसे बाहर से किसी पदार्थ की आवश्यकता न पड़े।

× × ×

पूर्वी पाकिस्तान में वायु आक्रमण से सुरक्षा की सभी तैयारियां पूरी कर ली गयी हैं। ये सब प्रबन्ध अभी तक सुप्त हैं, किन्तु आदेश मिलते ही पूरी तरह काम करने लगेंगे। यह भी योजना बना ली गई है कि सभी शिक्षालय सैनिक अथवा ए आर पी अस्पतालों में परिवर्तित कर दिये जायेंगे।

एक अन्य समाचार के अनुसार कोट चांदपुर (जिला जैसोर, पूर्वी बंगाल) में एक नियमित छावनी स्थापित कर दी गई है। यह स्थान भारतीय सीमा से केवल सत्तरह मील दूर है। वहां पर नियमित पाकिस्तान सेना पड़ी हुई है। स्मरण रहे कि जनवरी १९५० तक पूर्वी पाकिस्तान में कोई सेना नहीं थी। अप्रैल १९५० में नेहरू लियाकत समझौते द्वारा पाकिस्तान ने समय प्राप्त कर यह सारी तैयारी कर डाली है।

× × ×

आसाम में प्राप्त होने वाले समाचारों से इस बात की पुष्टि हो गयी है कि आसाम की सीमा पर स्थित पूर्वी पाकिस्तान के जिले सिलहट तथा टिपरा के नगरों तथा प्रमुख गावों में सेना का जमाव किया जा रहा है। मुस्लिम युवक तथा युवतियों को सैनिक शिक्षा दी जा रही है और ट्रक, मोटर तथा नाव आदि तत्काल कार्यवाही की दृष्टि से इकट्ठी की जा रही हैं। पुलिस और अन्सारों की संख्या भी सभी जगहों पर बढ़ा दी गई है। नगरों में वायु आक्रमण सुरक्षा का भी प्रबन्ध कर लिया गया है। सिलहट के अनेकों स्थानों पर काश्मीर जिहाद के लिए सभायें तथा प्रार्थनायें हो रही हैं। सीमावर्ती कस्टम चौकियों पर भी कड़ाई बढ़ गयी है।

× × ×

आसाम में भारतीय सीमा के निकट पाकिस्तानी छोटे वायुयानों की उड़ानें तथा देखभाल की कार्यवाहियां बहुत बढ़ गयी हैं। ये यान कितनी ही बार सैनिक दस्तों के रूप में बहुत थोड़ी ऊंचाई पर भी उड़ते हैं, किन्तु भारतीय सीमा भंग नहीं करते। यह भी ज्ञात हुआ कि रात्रि में राकेट आदि के द्वारा वे अभ्यास भी करते हैं।

पूर्वी पाकिस्तान से भाग कर आसाम में आने वाले हिन्दुओं की संख्या भी बढ़ गई है। किन्तु विशेष बात यह है कि इस समस्त तनाव के होते हुए भी, पूर्वी बंगाल से आसाम में मुसलमानों के नये दल लगातार चले आ रहे हैं। ये आने वाले मुसलमान, भारतीय सीमा में प्रविष्ट कर शीघ्र ही आसाम के विभिन्न स्थलों में फैल जाते हैं और प्रान्त में रहने वाले अपने अन्य मुसलमान भाइयों की सहायता से तुरन्त ही कहीं न कहीं बस जाते और आसाम के आर्थिक ढांचे में मिल जाते हैं।

× × ×

पूर्वी पाकिस्तान में हिन्दुओं से किस प्रकार उनकी भूमि तथा सम्पत्ति छीनी जा रही है, इसका एक अन्य उदाहरण भी मिला है। कोटचांदपुर के दूसरी ओर नदी के परले किनारे आलमपुर नामक एक गांव है, जिस के सभी निवासी हिंदू हैं। कोटचंदपुर में छावनी स्थापित होने के कारण यह उचित समझा गया कि भारत के इन [illegible] को वहां से हटाया जाय। अभी तक इनमें से एक भी हिन्दू पाकिस्तान छोड़ कर नहीं गया था।

गत मई के प्रथम सप्ताह में एक दिन प्रातःकाल ग्रामवासियों ने देखा कि ढाका से आये हुए सरकारी अधिकारी उनकी जमीन की नाप-जोख कर रहे हैं। उन्होंने सुना कि उनकी भूमि छावनी के लिए ली जाने वाली है। कुछ ही दिन पश्चात् उन्हें नोटिस मिल गए। उन्होंने जिला मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित होकर सब हाल बताया, और उसने उन्हें आश्वासन दिया कि सब कुछ ठीक हो जायेगा। किन्तु ठीक यही हुआ कि शरणार्थियों ने उनकी फसल खड़ी हुई भूमि पर आकर बलपूर्वक अधिकार कर लिया।

× × ×

भारत-पाक काश्मीर विवाद के लिए सुरक्षा परिषद् द्वारा प्रेषित डा० ग्राहम काश्मीर से रावलपिंडी होते हुए कराची पहुँच गए। काश्मीर में उन्होंने शेख अब्दुल्ला से काश्मीर प्रश्न पर अनौपचारिक चर्चा की। ज्ञात हुआ है कि कराची में इस विषय पर उन्होंने औपचारिक वार्ता आरम्भ कर दी है। सर्व प्रथम उनकी भेंट पाकिस्तान के विदेश मन्त्री सर मुहम्मद जफरुल्ला खां से हुई। वार्ता के सम्बन्ध में कोई जानकारी प्राप्त नहीं हुई। तो भी यह अनुमान है कि जफरुल्ला ने डा० ग्राहम के समक्ष काश्मीर पर पाकिस्तान के अधिकार के पक्ष में सम्बन्धी दलीलें रखी हैं। डा० ग्राहम अभी दिल्ली भी आ रहे हैं। उनका विचार है कि चाहे भले ही भारत ने सुरक्षा परिषद् के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया हो, तो भी इस प्रश्न पर चर्चा करने की काफी गुंजाइश है।

× × ×

केन्द्रीय पख्तून जिरगा हिन्द के प्रधान मौलाना मुहम्मद जफर खां ने नयी दिल्ली में बताया कि पाकिस्तान पख्तूनिस्तान की सीमा पर बहुत बड़ी संख्या में सेना एकत्रित कर रहा है, जिसके पास सब प्रकार के आधुनिक शस्त्रास्त्र हैं। यह भी बताया कि हाल ही में पाकिस्तान ने कबाइली क्षेत्र के अरक्षित स्थान उदाहरणार्थ तिराह, बजौर, वजीरिस्तान, महमन्द और टोचा के निवासियों पर आक्रमण किए हैं। पख्तूनिस्तान की सीमा पर स्थित यह सेना निरन्तर बढ़ायी जा रही है, जिससे पख्तूनों पर एक व्यापक आक्रमण किया जा सके।

जल सेना ★ ★ ★

जहाजी बेड़े में क्रूजर का सार्वत्रिक महत्व

भा. ध्वजपोत 'दिल्ली' का परिचय

[श्री सु प शर्मा]

भारतीय जलसेना का ध्वजपोत दिल्ली

चौथी प्रकार का युद्धपोत जिसके विषय में हम कुछ लगे क्रूजर है। जैसा कि इसके नाम से ही प्रकट इसका मुख्य काम सुरक्षा सम्बन्धी कर्तव्यों के विषय में समुद्र में यात्रा करना है। अंग्रेजी के क्रूज शब्द का ही अर्थ होता है सुरक्षा सम्बन्धी कार्यों के लिए समुद्र में इधर उधर चलना। वैसा ही इसका काम रहने के कारण यह 'क्रूजर' कहलाता है

क्रूजर का उपयोग

जब कि गत महायुद्ध आरम्भ हुआ था ब्रिटेन ने जर्मनी का समुद्री घेरा डालने का यत्न किया था क्योंकि उसके जहाज युद्ध तथा खाद्य सामग्री लेकर प्राय अटलांटिक सागर को पार करते रहते थे। और इस कार्य को भली भांति करने के लिए अपनी तेज चाल तथा दूर तक कार्यवाही कर पाने की सामर्थ्य के कारण क्रूजर एक आदर्श ढंग का जलपोत था। जहां कि शत्रु के आक्रमणकारी दस्तों का भय है ऐसे क्षेत्र में से निकल कर जाने वाले जलपोतों को भली भांति बाहर पहुंचा देने के काम के लिए भी क्रूजर ही सर्वाधिक उपयुक्त पोत पाया गया है।

"नौ सेना के नेत्र"

वायुयानों के पदार्पण के पूर्व क्रूजर नौ सेना के नेत्र कहलाते थे क्योंकि वे युद्ध के लिए सज्जित बेड़े के आगे देखने वाले का शत्रु की स्थिति पता लगाने का और विध्वंसकों से सुरक्षा का कार्य करते थे। किन्तु आजकल भी खराब मौसम में जब कि वायुयान अपना काम नहीं कर सकते क्रूजर ही यह सब काम करते हैं।

आकार तथा स्वरूप

जिस प्रकार के काम का भार क्रूजरों पर पड़ता है उससे यह स्पष्ट है कि वह काफी बड़ा होना चाहिए जिससे कैसे भी मौसम में समुद्र में रह सके। इतना तेज चलने वाला हो कि व्यापारी जहाजों को पकड़ सके। इस प्रकार के अस्त्र भी उसके पास हों कि वह युद्धपोत के अतिरिक्त किसी भी अन्य जहाज से मोर्चा ले सके। और उनकी चादर भी इतनी मोटी हो कि साधारण मार को सह सके। मोटे तौर पर वह हर प्रकार के काम करने वाला जहाज होता है और किसी भी देश की जल सेना में इनकी बहुतायत नहीं होती।

काम चलाऊ क्रूजर

गत महायुद्ध में और १९१४-१८ के युद्ध में ब्रिटेन के पास क्रूजरों की कमी इतनी अधिक थी कि व्यापारी जहाजों को ही इनके अस्त्र देकर आवश्यक सामग्री को यथास्थान सुरक्षित पहुंचाने के लिए भेजना पड़ता था। गत युद्ध में भारत ने भी यही किया यद्यपि यह कहीं अधिक छोटे ... के विषय में था। इस प्रकार दीपावली कलावती और नेत्रावती जिनमें से सभी ने युद्ध कार्य किया पहिले व्यापारी जहाज थे। इन प... य ... लेफ्टिनेंट अधिकारी पार्लियामेंट व ऑफिसर मे से और युद्धकालीन ... मैं नए वा व्यापारी जहाजों के ... केवल युद्धकाल के ... कहलाते थे यही लोग ... थे।

क्रूजर दिल्ली

भारत के पास केवल एक क्रूजर है—भारतीय नव सेना पोत दिल्ली। इसका भार ... ०० टन से अधिक है और इस पर छ: ... इन्ची तोप तथा आठ छ: इन्ची तोप लगी हुई हैं। इन के अतिरिक्त बहुत से टारपीडो छोड़ने के व्यवस्था है। इस पर लगभग १२०० व्यक्ति रह सकते हैं।

स्वयं पूर्ण संसार

जलपोत ... अपने आप में एक संसार है ... पर एक डाक्टर तथा एक छोटा सा अस्पताल है (जिसे अंग्रेजी में सैनिक ... सिक बे कहते हैं) एक रोटी बनाने की भट्टी है जो प्रतिदिन लगभग ४०० पौण्ड रोटी तैयार कर लेता है ... भोजन ... है। सन् ३० के आरम्भ में एच एम एस आचलेस नाम से यह नव सेना में आया था ... महायुद्ध में बड़ा गौरवशाली कार्य किया है। आज यह भारतीय जल सेना का ध्वज पोत है और एक साथ ही ... काम कर रहा है।

दोहरा काम

हिन्द महासागर के विभिन्न भागों में जाकर और वहां भारतीय ध्वज दिखाकर यह हमारे देश की जल शक्ति का प्रतीक बन गया है। यह युद्ध सम्बन्धी कार्यवाही करने के लिए पूर्णत योग्य है किन्तु आजकल भारतीय नव सेना के सैनिकों ... रया का एक क्रूजर के संचालन की शिक्षा देने में ... विशेष रूप से ... है। इनसे ... पर आकर काम करती है ... मिल कर एक क्रूजर का ... बन ...

भविष्य

... के ... क्रूजर भी ... समय में ... विश्व ... नहीं रहा ... यार ... ल सेना के ... योजना ... तैयार है ... उनकी सम्पूर्णता ... उद्देश्य ... होने वाले धन की राशि पर ही निर्भर करती है।

×

पाकिस्तानी षडयन्त्रकारियों

गुप्तचरों का भारी जोर

सरकार जनता को वास्तविक

सिद्ध हो

भारत के प्रधान मन्त्री प० नेहरू ने हाल ही में अपने भाषण में इस बात का उल्लेख किया था कि पाकिस्तान भारतीय सीमा में तोड़ फोड़ तथा आक्रमण का कार्यवाही की सगठित तैयारिया कर रहा है। पाकिस्तान के प्रति आज तक तुष्टीकरण की नीति पर ही चलने वाले प० नेहरू के मुह से इस प्रकार के शब्द निकलने का एक ही अर्थ है कि पाकिस्तान की ये कार्यवाहिया इतना अधिक बढ़ गयी हैं कि प्रधान मन्त्री को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

भारत के विरुद्ध षड्यन्त्र

पाकिस्तान इस प्रकार की कार्यवाहियां अपने जन्म से ही करता चला आ रहा है। भारत में साढे चार करोड़ मुसलमानों में जिनमें से ६८ प्रतिशत ने पाकिस्तान को भाग का समर्थन किया था आज भी उसे बहुत से अपने समर्थक मिल जाते हैं। इनके कारण तोड़ फोड़ की कार्यवाही तथा गुप्तचरों का जाल बिछाने में पाकिस्तान को बड़ी सुविधा है। यह षडयन्त्र तथा भारत की स्वतन्त्रता का सकट कितना व्यापक रूप ले चुका है, और देश भर में किस प्रकार एक योजना के अनुसार पाकिस्तानी जाल काम कर रहा है, यह दिखाने के लिए विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों के आधार पर पाकिस्तानी षडयन्त्र का रूप यहा प्रस्तुत किया जा रहा है।

कानपुर में विस्फोट

भारत में अनेक प्रमुख व्यापारी नगरों तथा सैनिक स्थलों पर पाकिस्तानी षडयन्त्र चल रहा है। हाल ही में कानपुर में विशाल विस्फोट के साथ एक मस्जिद उड जाने का समाचार प्रकाशित हुआ है। यह मस्जिद मुस्लिम आबादी में है। विस्फोट के पश्चात् मुसलमानों ने कहना आरम्भ किया कि वहा एक एल्यूमिनियम फैक्टरी थी। किन्तु पुलिस वालों को बम बनाने के कारखाने के प्रमाण मिले। प्रतीत होता है कि अचानक किसी कारणवश विस्फोट हो जाने से कारखाना उड गया और इस प्रकार ईश्वर कृपा से इस भारी षडयन्त्र का पता चल गया।

दिल्ली काण्ड

मस्जिदों के धार्मिक आवरणों की आड में चल रहे सशस्त्र षडयन्त्र की गम्भीरता और व्यापकता का पता राजधानी में भी लगा है। बताया जाता है कि दिल्ली के प्रसिद्ध यमुना पुल को, जो दिल्ली व पजाब को उत्तर प्रदेश तथा

प० जवाहर लाल नेहरू

समस्त पूर्वी भारत से मिलाने वाला अत्यन्त महत्वपूर्ण पुल है डाइनामाइट द्वारा उडा देने के षडयन्त्र का पता बिलकुल अन्तिम क्षण पर लगा और पुलिस तथा सेना की भारी सख्या ही उसे विफल करने में सफल हो सकी। दिल्ली की विश्व प्रसिद्ध जामा मस्जिद वाला क्षेत्र जिसमें सारी मुस्लिम आबादी है, चारों ओर से घेर लिया गया और तलाशी में डाइनामाइट तथा अन्य विस्फोटक पदार्थ प्राप्त हुए बताये जाते हैं। यमुना पुल पर सैनिकों की एक भारी सख्या नियुक्त कर दी गई है और पुल सैनिक अधिकार में बताया जाता है। नगर में इस प्रकार की भी चर्चा है कि ट्रान्समिटर तथा कुछ अन्य महत्व का सामान भी गायब है।

गुप्तचरों का जोर

इसी प्रकार आगरा में भी मुस्लिम घरों से शस्त्रास्त्र तथा विस्फोटक पदार्थ प्राप्त होने के समाचार प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त पाक गुप्तचरों की गतिविधि भी बहुत बढ़ी दिखाई देती है। हाल ही में इसी प्रकार का एक गुप्तचर दिल्ली स्टेशन पर ही पकड़ा गया। इसी प्रकार एक गुप्तचर को जालन्धर छावनी के निकट पकड़ने का समाचार मिला है। इसी प्रकार का एक गुप्तचर फिरोजपुर मे एक सैनिक ड्राइवर से सैनिक रहस्य की बातें जानने की चेष्टा करता हुआ पकड़ा गया। बाद में इसने पुलिस को बताया कहते हैं कि भारत में गुप्तचर तथा तोड़ फोड़ की कार्यवाही की शिक्षा देने के लिए पाकिस्तान में एक विधिवत केन्द्र है। वहां मुस्लिम युवकों को इस प्रकार की शिक्षा दी जाती है। वे यहां आ कर स्थानीय विरोधी दल का सग ठन करते हैं और तोड़ फोड़ तथा पाकिस्तान को समाचार भेजने का काम करते हैं।

[श्री

स्वतन्त्र भारत में मुस्लिम सस्कृति के सबसे बड़े समर्थक

मौलाना अबुलकलाम आजाद
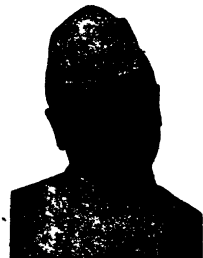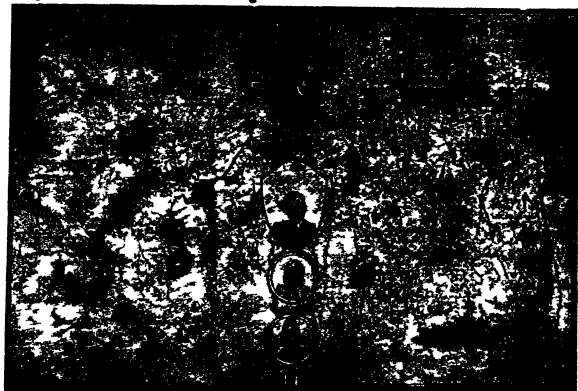
पिछली बार जब पाकिस्तान में जेहाद का भारी प्रचार हुआ था तब इस प्रकार के पर्चे वहां की जनता में बांटे गए थे। जिनमें पश्चिमी तथा पूर्वी पाकिस्तान की सीमा भारत तथा काश्मीर की ओर घूमी हुई तोपें तथा वायुयान दिखाये गए हैं। समुद्र में युद्धपोत है। बीच में स्व जिन्ना ख्वाजा नाजिमुद्दीन तथा मिया लियाकत अली खां के चित्रों के ऊपर पाकिस्तानी झण्डा है। आज भी जेहाद के प्रचार में अनेकों भारत विरोधी पर्चे पाकिस्तान में प्रचारित किए जा रहे हैं।

का देश भर में गुप्तजाल

: तोड़ फोड़ की चेष्टायें

स्थिति बताये, चुप्पी घातक सकती है।

नन्द]

कांग्रेसी नेताओं से स्वतन्त्र मुस्लिम राज्य स्वीकार कराने वाले

स्व० श्री मुहम्मद अली जिन्ना

काश्मीर में गुप्तचर

यह गुप्तचर तथा तोड़ फोड़ कार्यवाही काश्मीर में भी चल रही है पाकिस्तानी दूत तथा गुप्तचर वहां व सैनिक भेद लेने तथा मुसलमानों पाकिस्तान के पक्ष में करने का यत्न कर रहे हैं। यह कार्यवाही इतनी बढ़ गयी है कि हाल ही में जम्मू तथा काश्मीर के डी० आई० जी० पुलिस ने इस प्रकार की कार्यवाही करने वालों को कड़ी चेतावनी दी है और जनता को सचेत रहने के लिए कहा है।

ज्ञात हुआ है कि हाल ही में जम्मू तथा काश्मीर राज्य में अशान्ति फैलाने की दृष्टि से प्रविष्ट हुए छब्बीस पाकिस्तानी गुप्तचर समय पर सूचना मिल जाने के कारण पकड़ लिये गये और उनकी समस्त योजना विफल कर दी गयी। अधिकृत रूप से यह बताया गया है कि ये गुप्तचर पाकिस्तान द्वारा भेजे गये थे और इन्द्रारा तहसील के कुछ कठिन दर्रों से होकर वे भारतीय सीमा में प्रविष्ट हुए। राज्य पुलिस ने इन्हें समय से पहिचान लिया और गिरफ्तार कर लिया। उनकी तलाशी में निकली हुई सामग्री इस सारे पाकिस्तानी षड्यन्त्र का पता चला।

श्री लियाकत अली

कागजात गायब

काश्मीर के विषय में पाकिस्तानी गुप्तचर सैनिक तथा सरकारी भेदों को प्राप्त करने के लिए कितने दुःसाहस से काम ले रहे हैं इसका हाल ही में घटी एक घटना से पता चलता है। ज्ञात हुआ है कि कोई श्री सक्सेना जो काश्मीर सम्बन्धी महत्वपूर्ण कागजात अपने साथ दिल्ली ले जा रहे थे, मार्ग में ही गायब हो गये। वे कागजात काफी महत्वपूर्ण बताये जाते हैं। बाद में उनको भोपाल में पहचान कर बन्दी बनाया गया। वहां वह एक मुस्लिम युवती के साथ रह रहा था। इससे यह भी प्रतीत होता है कि पाकिस्तान द्वारा आयोजित इस गुप्तचर विभाग में स्त्रियां भी महत्वपूर्ण भाग ले रही हैं।

अग्निकांड

इसके अतिरिक्त देश में कई स्थानों पर आग लगने के समाचार प्रकाशित हुए हैं। स्वयं राजधानी में कितने ही स्थलों पर आगें लगी हैं। कुछ क्षेत्रों का विचार है कि इन आगों के पीछे भी रहस्य है और यह तोड़फोड़ की कार्यवाही है। भारत सरकार की पूर्ण चुप्पी इस विषय में और भी गम्भीर शंका उत्पन्न करती है।

पश्चिमी बंगाल का आर्थिक विनाश

साथ ही पश्चिमी बंगाल की अर्थ व्यवस्था को नष्ट करने का प्रयास पुनः प्रारम्भ हो गया है। पूर्वी बंगाल इस बात पर तुला हुआ दिखाई देता है कि अपने क्षेत्र से प्रत्येक हिन्दू नागरिक को निकाल दे। इस प्रकार पश्चिमी बंगाल की भूमि पर जिसमें पहिले से ही आबादी बहुत घनी है, लगभग एक करोड़ व्यक्ति और भेज दिये जांय और इस प्रकार उस प्रान्त का ढांचा पूर्णतः चौपट कर दिया जाय। एक प्रांत का आर्थिक सर्वनाश सारे भारत के आर्थिक ढांचे पर घातक प्रभाव डालेगा और इस प्रकार भारत में अस्त-व्यस्त जीवन हो जायगा।

पाक-योजना

पूर्वी पाकिस्तान के सताये हुए हिंदू भाग कर पुनः भारत आ रहे हैं। इससे भारत सरकार के लिए पुनः एक सिर दर्द पैदा हो गया है। पूर्वी बंगाल में पांच डिवीजन सेना तैयार रहने के समाचार प्राप्त हुए हैं। कुछ क्षेत्रों का कथन है कि पाकिस्तान का विचार है कि यदि पश्चिमी बंगाल का आर्थिक ढांचा टूट गया और यदि भारत पाक युद्ध का प्रसंग आया, तो पांच डिवीजन सेना से पूरे बंगाल तथा आसाम पर अधिकार जमाया जा सकेगा और इस प्रकार भारत को दोनों ओर से घेरा जा सकेगा।

आसाम में षड्यन्त्र

आसाम में भी पाकिस्तानी व्यापक षड्यन्त्र की तैयारियां कर रहे हैं। प्राप्त समाचारों से ज्ञात हुआ है कि यद्यपि पूर्वी बंगाल में युद्ध सम्बन्धी तैयारियों और वातावरण की गर्मी के कारण आसाम पाक सीमावर्ती क्षेत्रों में भारी तनाव है तो भी पाकिस्तान से आसाम में मुसलमानों के दल लगातार चले आ रहे हैं। वे लोग आते ही सारे आसाम में बिखर जाते हैं और पहिले से रह रहे

(शेष पृष्ठ २० पर)
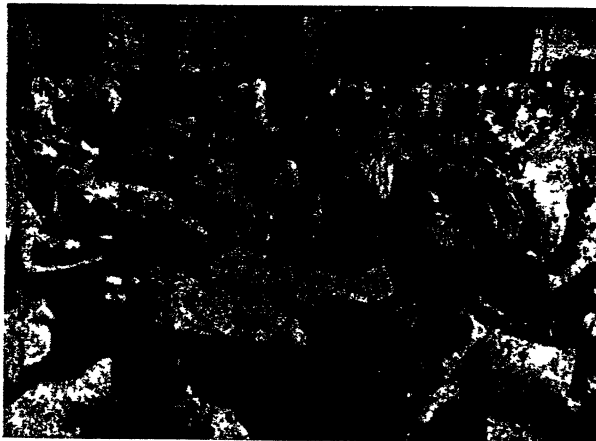
पूर्वी बंगाल से निकल कर भारत में आने वालों का भारी प्रवाह पुनः आरम्भ हो गया है। पूर्वी बंगाल से हावड़ा या स्यालदह आने वाली प्रत्येक गाड़ी इस प्रकार के पीड़ितों से भरी हुई आती है, अन्य कोई ठिकाना न होने के कारण वे स्टेशन पर ही पड़े हुए हैं। ऊपर इस प्रकार के विस्थापितों से भरे स्यालदह स्टेशन का दृश्य है।

महिला जीवन

पारिवारिक कलह के मनोवैज्ञानिक कारण

कुमारी [illegible] एम० ए०

किसी विद्वान ने कहा है कि धन का अभाव मनुष्य को दुःखी बना सकता है, किन्तु धन की बहुलता उसे निश्चित रूप से सुखी बना सकती यह संदिग्ध है। यही बात बहुत कुछ हमारे पारिवारिक जीवन पर भी लागू होती है।

जिस परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं होती उसमें जब द्वेष, कलह, पारिवारिक वादविवाद की घटनायें होती हैं, तो हम यह कह कर सन्तोष का अनुभव कर लेते हैं कि इस परिवार के सदस्यों के मनमुटाव का कारण आर्थिक है। परिवार का प्रत्येक सदस्य आर्थिक अभाव के कारण अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता फलस्वरूप उसके हृदय में क्षोभ उत्पन्न होता है और उसकी अभिव्यक्ति पारिवारिक कलह के रूप में होती है।

किन्तु बहुत से परिवारों में, जहां धनाभाव नाममात्र का नहीं होता, परिवार के प्रत्येक सदस्य की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के सब प्रकार के साधन होते हैं वहां भी प्रायः पारिवारिक अशान्ति के ऐसे ऐसे भयानक दृश्य देखने में आते हैं कि हृदय दहल उठता है। इन सब बातों का कारण क्या है?

दोषपूर्ण सामाजिक परम्परायें

मनोविज्ञान का यह सर्वसम्मत सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में कोई न कोई महत्वाकांक्षा होती है। विश्व की प्रगति का मूल ही व्यक्ति के हृदय में समय समय पर उठने वाली महत्वकांक्षा की लहरें हैं। समाज के महान संकटों और आपदाओं का सामना करके भी प्रत्येक व्यक्ति संसार में अपने लिये स्थान बना लेना चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में यह स्वाभाविक लालसा होती है कि पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में उसके महत्व को समझा जाय। किन्तु चिर काल से कुछ रूढ़िवादी संस्कार हमारे समाज में पनपते आ रहे हैं, जिसके कारण हमारे नारी समाज को अपनी महत्वाकांक्षा की तृप्ति का कोई अवसर ही नहीं मिलता।

मां बाप के घर

लड़की को परिवार में हीन दृष्टि से देखने की भावना हमारे सामाजिक जीवन में घर कर गई है। लड़के के जन्म के समय जिस परिवार में उल्लास और उमंग का अजस्र स्रोत प्रवाहित हो जाता है, उसी परिवार में लड़की के जन्म के समय नीरसता तथा मुर्दनी छा जाती है। आयु के तीन वर्ष तक तो खेल-कूद में मस्त लड़की को मां-बापों की इस पक्षपातपूर्ण एकांगी प्रवृत्ति का ज्ञान नहीं होता, किन्तु जब वह बड़ी हो जाती है, तब उसे यह बात बहुत अखरती है। उसकी मनोभावनाओं को इतनी गहरी ठेस पहुचती है और उसको अपना जीवन नरकतुल्य प्रतीत होने लगता है। जब वह अपने भाइयों के साथ खेलती है और भाई बहिनों के पारस्परिक लड़ाई झगड़े के समय भी मां भाई का पक्ष लेकर लड़की को डांटने लगती है और कहती है 'तू ढंग से रह, तुझे तो पराये घर जाना है," तो लड़की की आत्मा विद्रोह कर उठती है और वह अपनी ममतामयी मां को भी अपना शत्रु समझने लगती है। प्रायः बाप को कन्या के प्रति किंचित सहानुभूति होती है किन्तु अधिकांश समय घर से बाहर व्यतीत करने के कारण वह अपनी कन्या की मनोभावनाओं को नहीं जान पाता। इस प्रकार घर में लड़की की चित्तवृत्तियां अस्वस्थ और विकृत दिशा की ओर मुड़ती हैं। या तो वह मां बापों का विरोध करके ढीठ और उद्दंड बन जाती है। अथवा अपनी आत्मा का हनन कर सरल और सलज्ज बनने का ढोंग करती है।

इस प्रकार से उसकी स्वाभाविक प्रवृत्तियां अवरुद्ध हो जाती हैं और उसका अपना व्यक्तित्व इस पारिवारिक तानाशाही के कारण मूलतः नष्ट हो जाता है। उसकी धारणा बन जाती है कि उसे तो जीवन में इसी प्रकार बने रहने के लिए बनाया गया है। इस प्रकार समस्त नारी जाति में एक प्रकार की अतृप्ति और आत्महीनता की भावना घर कर जाती है। जिसका विष हमारे राष्ट्रीय जीवन में भी फैल जाता है।

पति गृह में

तरुणावस्था में लड़की महान् आकांक्षाओं को लेकर अपने कल्पना के स्वप्नों

सास और बहू के बीच होने वाले इस प्रकार के तनाव के दृश्य अधिकांश परिवारों में देखे जाते हैं।

में विभोर हो पतिगृह में प्रवेश करती है। अपने विगत जीवन के कटु अनुभवों को भूल वह फिर नये जीवन का निर्माण करना चाहती है। उसके हृदय में एक लालसा होती है कि यह परिवार स्वर्ग बन जावे। किन्तु वहां भी उसे उसकी सास उच्चासन पर विराजमान मिलती है, जिसकी वर्षों की आकांक्षायें आज पूरी होने जा रही हैं। उसने ऐसे वर्ष तक इतने कष्ट उठाकर अपने लाल का इसीलिये तो पालन किया था कि वह आकर उसको गृह कार्य से मुक्त कर देगी। उसकी सेवा परिचर्या करती रहेगी और सास अधिकार भी उस पर जमायेगी ही। बहू को अपनी इच्छानुसार अथवा बुढ़ापे में उत्पन्न अपनी सनकों के अनुसार चलाना तो उसका जन्मसिद्ध अधिकार है, उसे भला वह कैसे छोड़ सकती है। उसने भी तो अपनी सास की इसी प्रकार टहल की है। अब बताइये सास की इस मनोवृत्ति का उपचार क्या है। जिस लड़की ने अपने मां बाप के घर में उत्पन्न विषम परिस्थितियों के प्रति विद्रोह कर दिया था, वे तो यहां भी विद्रोह कर देती हैं। उनकी दृष्टि में चिड़चिड़ी और लड़ाकू सास का इससे अधिक कोई भी मूल्य नहीं है कि वह कुछ भी काम न कर बक-बक करने वाली बुढ़िया है, उसकी कौन सुने। यद्यपि यह स्थिति परिवार के लिये बहुत असन्तोष जनक है। किन्तु इसमें दोष किसका? इस दोष की जड़ें तो इतनी गहरी होती हैं, कि इसके मूल उपचार की आवश्यकता है। कन्या के हृदय में यदि मां बाप के घर से ही हीन भावना भर जाती हैं, तो वह पतिगृह में भी निराशा और अवसाद के वातावरण में अपना जीवन व्यतीत कर देती है। वह जीवन भर विद्रोह नहीं करती प्रायः सुशील सुगृहणी समझी जाती है किन्तु उसके अन्तर्मन की भावना में जब कभी अस्वस्थ रूप से उभर आती तब वह न केवल [illegible] अपितु समस्त परिवार में एक संकट उपस्थित कर देती। यदि बुद्धिमत्ता पूर्वक नारी मनोविज्ञान के इस महत्वपूर्ण पहलू को ठीक ढंग में समझ लिया जाय तो पारिवारिक जीवन की यह समस्या सदा के लिये हल हो सकती है।

जहां सम्मिलित परिवार नहीं

बहुत से परिवारों में परिवार के सदस्य पति-पत्नी या अधिक से अधिक एक दो बच्चे ही होते हैं। उस परिवार की महिला को सास के कठोरतम अनुशासन का सामना तो नहीं करना पड़ता किन्तु उस बेचारी को कभी २ पति की ही अहं भावना का शिकार होना पड़ता है। यदि इस प्रकार के परिवार में पति पत्नी को स्वतंत्र व्यक्तित्व का समादर करे, उसकी महत्वकांक्षाओं को फलने फूलने का उचित अवसर प्रदान करे तो गृह कलह का कोई कारण ही नहीं है। किन्तु पति यदि अपनी अहम्मन्यता के वशीभूत होकर पत्नी को दासी मात्र समझ कर व्यवहार करेगा और उसकी महत्वाकांक्षाओं को कुचलता रहेगा—तो पारिवारिक सुख कोसों दूर भागता रहेगा।

[शेष पृष्ठ १८ पर]

गोरक्षा व संवर्धन प्राचीन काल से भारत की महान परम्परा रही है

संस्कृत ग्रंथों में गोसाहित्य की झांकी

(श्री प्रयागदत्त शुक्ल)

> वैदिक काल से लेकर आज तक गोरक्षा तथा गो संवर्धन हिन्दुओं का प्रिय धर्म रहा है। वेदों से लेकर स्मृति काल तक संस्कृत साहित्य में जितने ग्रन्थ रचे गये, उनमें गायों का उल्लेख कई स्थानों पर आया है। हमारे प्राचीन, मनीषियों ने गो परिचर्या के सम्बन्ध में भी अपनी अमूल्य सम्मतियां दी हैं।

वैश्यानां तथा कृषि वैश्यकर्म

गोरक्षा वाणिज्यमपि कथ्यते ।

[illegible]

[illegible] ॥

अर्थात् वाणिज्य कृषकों को चाहिये कि वे गोवत्स की रक्षा यत्न पूर्वक जल, तृण, खल, औषधि आदि से कृपा पूर्वक किया करें। यही हमारा सनातन धर्म भारत में आज तक अबाधरूप से चलता आ रहा है। भारतीय अर्थशास्त्र के अनुसार राष्ट्र की पूंजी में गोधन का भी समावेश था। जिस राजा के राज्य में जितना अधिक गोधन होता था, वह उतना ही अधिक राजा गिना जाता था। प्रत्येक राजा लाखों की संख्या में गोधन पाला करते थे। महानन्द, नन्द, उप-नन्द की उपाधि भी गो धन पालन की अधिकता से ही जाती थी।

जिसके पास ६ लाख गायें हों, वह नन्द १८ लाख गायों का स्वामी महानन्द और साढ़े चार लाख गायें रखने वाला उपनन्द कहलाता था। विराट की उपाधि और भी ऊंची थी। मुसलमानों के आगमन तक यह परम्परा बराबर इस देश में जारी रही।

अथर्व वेद में गो हत्यारों को दण्ड देने की भी कड़ी व्यवस्था है।

'जो गौ के दूध का हरण करता है, हे राजन् उसके मस्तकों को अपने बल से काट डालो।'

अथर्व ८।३।१२

'दुग्ध देने वाले लोग गौओं के जल को यदि बिगाड़ें तो वे दुष्ट लोग क्षत्रिय नीति के लिए सर्वथा मार डाले जावें।'

अथर्व ८।३। ६

गोपालन और रक्षा

अत्रि स्मृति में लिखा है "जिसके गृह में एक भी गौ वत्स सहित अर्थात् दूध न देती हो, उसके यहां मंगल और कल्याण का नाश कहां। अर्थात् गृहस्थ के यहां गौ रखना, उसकी उचित सेवा करना आवश्यक धर्म है। अधिक दूध निकालने से, बछड़े को न छोड़ने से अथवा कम छोड़ने से, बहुत जोतने से या नाक छेदने से, यदि पर्वत में रोकने में पशु की मृत्यु हो जाय, तो जितना प्रायश्चित्त एक पशु मारने का कहा गया है, उसका चौथाई प्रायश्चित्त करे। जिस हल में आठ बैल हों, वह धर्मानुकूल है, ६ बैल का व्यवहार मध्यम, चार बैल हो वह [illegible] का कर्म, और दो बैल का हल तो बैलों की मारने वाला है। दो बैल का हल मात्र चौथाई दिन चार [illegible] बैल की [illegible], ६ बैलों की [illegible] पहर [illegible] और ८ बैलों की [illegible] [illegible] जोतना चाहिये [illegible] कहा है।

पाराशर ने लिखा है—अज्ञान से यदि बांधने से गौ की मृत्यु हो जाय तो उस पाप का प्रायश्चित्त कैसे हो। इस प्रकरण को हत्या करने वाला ब्राह्मणों की सभा में निवेदन करे और नियमानुसार प्रायश्चित्त करे। प्रायश्चित्त करके वेदमाता गायत्री का जप करे। रात्रि में गौओं के मध्य गोशाला में बसे और दिन में चरने को निकली गौओं के पीछे जंगल में भ्रमण करे। सभी ऋतुओं में अपनी और गौओं की रक्षा करे। अपने या अन्य के गृह में, खेत में या खलिहान में जाती हुई गौ को न स्वयं हटावे और न अन्य को हटाने के लिए कहे। गौओं के जल पीने पर स्वयं जल पीवे। उसके बैठने पर स्वयं बैठे, फंस जाने पर उसे निकाले, जो कोई मनुष्य ब्राह्मण और गौ की रक्षा अपने प्राणों को देकर करता है, वह स्वयं मुक्त हो जाता है।

गोदान का महत्व

वैदिककाल से आज तक हिन्दू समाज में गोदान का विशेष महत्व है। गौ के पूजन के अनेकों विधान धर्म ग्रन्थों में हैं। देवल का मत है कि गौ ८ मांगल्य द्रव्य में से एक है, उसके दर्शन, नमस्कार और प्रदक्षिणा करने से आयु की वृद्धि होती है, विष्णु के मत से गौ के विष्ठा, मूत्र, क्षीर, घृत, दधि और रोचना ६ पदार्थ मंगलदायक हैं। पद्म पुराण में लिखा है कि गौ पर हाथ फेरने से सब पाप नष्ट होते हैं और "नमो गोभ्य" मंत्र से प्रणाम करने पर अक्षय पुण्य होता है।

गौ परिचर्या

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार गाय को [illegible] से ९ मास तक नहीं दुहना चाहिए, पीछे के काल में ९ मास का दूध बछड़े के लिए छोड़ देना चाहिए, और [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] को [illegible] न देना चाहिए।

गायों को प्रातःकाल में जलादि देने के उपरान्त जल और तृण देना चाहिये। गोशाला में रात्रि में दीप, सफ़ाई, वाद्य और कथा का प्रसंग का प्रबन्ध हो, सभी मांगलिक कार्यों पर प्रथम गौ-पूजन करे। गौ को भरपेट चारा देना चाहिये, ताड़न, आक्रोश या खेद स्वप्न में भी न करे। गामय और गोमूत्र से कदापि घृणा न करे। ग्रीष्मकाल में गौओं के लिए शीतल छाया का प्रबन्ध और शीत में गोशालाओं में उष्णता का प्रबन्ध रहे। वर्षाकाल में जलपोषक और वायुविहीन गृह में धेनुओं को रखे। गोशाला में दुर्गन्धी न रखे, वहां पर मूत्र, विष्टा, थूकना, मल आदि विसर्जन न करे। गोशाला के निकट क्रीड़ा भी न करे जूता पहन कर या सवारी में बैठ कर गौओं के मध्य में गमन न करे। माता-पिता की भांति प्रत्येक गृहस्थ गौ का पालन करे।

"रात्रि में आराम कर चुकने पर प्रातःकाल, तृणादि देकर जब गौ अच्छी हालत में रहे, तब उसे दुहना चाहिये।

(शेष पृष्ठ १८ पर)

भारतीय संस्कृति की रक्षा भगवान का कार्य है

(पृष्ठ १ का शेष)

राष्ट्रजीवन जागृत करने का कार्य है। यही इस कार्य का स्वरूप है।

'भारत माता की जय'

हम नित्यप्रति 'भारत की जय' कहते हैं क्योंकि हम यह 'जय' सभी से बुलवाना चाहते हैं। केवल भारतवासियों से ही नहीं, सारे संसार से 'भारत माता की जय' यह घोष करवाना चाहते हैं। यह 'जय' पहले सारा संसार बोलता था। संसार भर में जिसे अन्न न मिले उसे अन्न, वस्त्र न मिले उसे वस्त्र, ज्ञान न मिले उसे ज्ञान, सहायता, मार्गदर्शन यह सब भारत से मिलता था। इसीलिए वह भारत की जय बोलता था।

किन्तु आज

किन्तु आज ? आज प्रत्येक हिन्दू को अपना विस्मरण हुआ है। कोई अपने को किसी प्रान्त का बताता है, कोई किसी दल का, तो कोई किसी जाति का। मैं यह नहीं हूँ, मैं तो भारत मा का पुत्र हूँ यह भाव कहीं दिखाई नहीं देता। बच्चे के सुख, आनन्द और बल आदि सभी का आधार तो मा है। यदि वह मा से दूर गया तो आनन्द कहां ? फिर यदि हमारे देशवासियों को अपनी मा का विस्मरण हो गया और वे उससे दूर चले गए तो जीवन में सुख कहां होगा ?

प्रेम का व्यवहार करें

किन्तु हमने तो यह देख लिया है कि यह हमारा भाई है मा को यदि भूल गया तो भूल गया। उसके द्वारा हजार बार भिन्न बर्ताव करने पर भी हम उससे प्रेम का ही व्यवहार करें। तब उसके हृदय में विचार उठेगा कि यह मुझ से प्रेम का बर्ताव क्यों करता है। यह मेरे दल का नहीं, प्रान्त का नहीं, मेरी भाषा नहीं बोलता, फिर ऐसा क्यों ? तब यह विचार उठेगा कि हम दोनों हिन्दुत्व के धागे से बंधे हुए हैं। यही इस प्रेम का कारण है। इस एकात्मता का अनुभव आते ही उसका बर्ताव बदलेगा। इस प्रकार उसके बर्ताव में परिवर्तन कर उसे भारत मा की गोदी में ला कर बिठाना है। इसमें किसी के विरोध का प्रश्न ही नहीं खड़ा होता।

पत्थर तक भी टूटेगा

क्या हम थोड़ी देर के लिए भी यह विचार करते हैं कि सारे हिन्दू मेरे अपने हैं। दूसरे लोग चाहे जैसा व्यवहार करें उसका प्रश्न नहीं। मेरा व्यवहार कैसा है ? दूसरा तो इस तथ्य से परिचित नहीं कि वह हिन्दू है। किन्तु मैं समझता हूँ कि यह हिन्दूराष्ट्र है, भारत मां है। मैं तो नित्य इसी भाव की प्रार्थना करता हूँ, 'भारत माता की जय बोलता हूँ'। फिर मेरे व्यवहार में अन्तर क्यों ? ऐसा कोई पत्थर नहीं है जो छैनी हथौड़े से न टूटे। कोई देर में टूटेगा तो कोई जल्दी, किन्तु टूटेगा अवश्य। जिसके हृदय में हिन्दुत्व के संस्कार प्रबल हैं वह जल्दी जागेगा, दूसरा देर में, किन्तु जागेगा, अवश्य, यदि हमने प्रयत्न भरपूर किया।

भगवान भला चाहता

मेरा विश्वास है कि भगवान इस देश का भला करना चाहता है। यदि उसकी यह इच्छा न होती कि देश की संस्कृति, धर्म, परम्परा, इतिहास आदि सभी सुरक्षित रहें तो जिनके हाथ में शासन आया है वे इतनी गलतियाँ न करते। उन्होंने भी देश के लिए बहुत कष्ट उठाये हैं। किन्तु उनके गलत सिद्धान्त के कारण ही उनसे गलतियां ही होती चली गयीं। उनकी बुद्धि इस प्रकार भ्रमित हुई कि चेष्टा करने पर भी वे सुधार न सके।

खिचड़ी राष्ट्र

थोड़ी देर के लिए मानें कि वे अच्छा शासन करते तो जो बातें वे कहते थे व इस देश में अपनी जड़ें जमा लेतीं। मिश्रित संस्कृति और चाहे जिस को मिला कर बनाये हुए खिचड़ी राष्ट्र का सिद्धान्त स्थिर हो जाता। लोग कहते कि तुम तो हिन्दू राष्ट्र कहते रह गए और उन्होंने सब कुछ कर बताया। हम बड़े आनन्द में हैं। यदि यह प्रत्यक्ष हो जाता तो यह सत्य स्थापित हो जाता कि यह खिचड़ी राष्ट्र है। यह भगवान को स्वीकार नहीं। इसी लिए जैसे अंग्रेज गया वैसे ही गलत सिद्धान्त पर आधारित होने के कारण इनके हाथ से गलतियां हुईं। आज लोग देखते हैं कि जिस सिद्धान्त के लिए उन्होंने ५० वर्षों तक कष्ट सहे आज उनसे उन्हीं के अनुकूल आचरण क्यों नहीं होता ?

गन्दगी दूर हो

लोग शरीर में निकले हुए फोड़े को देख कर कहते हैं कि बड़ा कष्ट है। किन्तु वैद्य कहता है कि यह बड़ा अच्छा हुआ। यदि यह गन्दगी दबी रह जाती तो बड़ा भयकर परिणाम होता। इसके निकल जाने के लिए थोड़े समय का कष्ट कहीं अच्छा है। अंग्रेजों के चले जाने के पश्चात यदि उन गलत सिद्धान्तों को ले कर चलने वाले ये लोग सफल हो जाते तो उस समय की अपनी दबी हुई बुराइयां दबी हुई ही रह जातीं। और गन्दगी सदा दबी नहीं रहती। यदि वह गन्दगी और कुछ समय तक दबी रहती तो इतने विस्फोट के साथ निकलती कि सब चौपट हो जाता।

हर्ष का विषय

अतः देश की वर्तमान स्थिति तो हर्ष का विषय है। इससे बराबर जन जागृति हो रही है। जिन थोड़े बहुत लोगों के हृदय में उन गलत सिद्धान्तों के प्रति कुछ प्रेम रह गया था, वह भी अब हिल उठा है। इसलिए भगवान तो अपना कार्य कर रहा है। अब हमें अपना कार्य करना है। अपना हृदय ईमानदार रहे हमारा हृदय कहे कि हम भारत के पुत्र हैं, भारत के सभी पुत्रों को प्रेम करेंगे, उनके दुःखों में भागी बनेंगे, उनकी सेवा करेंगे, और जिसका हृदय दुखता है उसे तो मीठा बोल भी प्रभावित करता है। आज देशवासियों का हृदय पीड़ित है। अब हम प्रेममय बर्ताव करें।

जड़ें गहरी हों

पेड़ पर पत्ते तभी बढ़ते हैं जब उसकी जड़ें पत्थरों तथा कंकड़ों से बढ़ती हुई भूमि में गहरी धस कर रस लेने लगती हैं। वह रस ही पत्ते बढ़ाता है। अन्यथा पत्ते नहीं बढ़ते और वृक्ष सूख जाता है बाह्य कार्यक्रमों को ही सब कुछ समझने की भ्रान्ति से हृदय और जीवन में जो आमूलाग्र परिवर्तन होना चाहिए वह पीछे छूट जाता है। आत्म निरीक्षण को स्थान नहीं रहता। उसके अभाव में अपना आचरण सुसंगत बनाऊंगा यह विचार निकल जाता है। पेड़ की जड़ें अन्दर नहीं जातीं।

आन्तरिक शक्ति चाहिए

केवल पानी से पौधा नहीं बढ़ता। चाहे जितना पानी दो पत्थर पर पेड़ नहीं उगता। और यदि जड़ें गहरी बैठ गयीं तो फिर पानी न मिला तो भी पत्ते बढ़ते हैं वृक्ष हरा रहता है। ऊपर पत्ते नहीं बढ़ते क्योंकि कम्यूनिस्ट या सोशलिस्टों की आंधी चल रही है, यह भ्रम है पत्ता तो अन्दर से आता है, उसी के अन्तःकरण का एक टुकड़ा बन कर आता है।

रचनात्मक शक्ति

मिट्टी में सुगन्ध, मिठास या रंग नहीं है। किन्तु बीज अपने प्रभाव से यह सब निर्माण करता है। यह सामर्थ्य भी अपने अन्दर उत्पन्न करने की साधना करेंगे, उसमें उत्पन्न होगा। इस राष्ट्र को ऐसा बनायें यह भगवान की इच्छा है। उसने सब प्रकार से अनुकूलता उत्पन्न की है। अब हमारा कार्य करना ही शेष है। कारीगर ने हथियार बनाया है। हथियार का दुरुपयोग ठीक नहीं। किन्तु यदि वह ... ही ... हो—जो वह कारीगर कोई साधारण कारीगर नहीं है वह न जाने कितनी सृष्टि बनाता और बिगाड़ता है। यदि हथियार टूट गया तो वह फेंक देगा, दूसरा ले लेगा ! उस के हाथ में होने जिस प्रकार महान् सौभाग्य का विषय है, उसके द्वारा फेंक दिया जाना महान दुर्भाग्य का। क्या हम उसे फेंका चाहते हैं ?

अनुकूल परिस्थिति

शेष सारी परिस्थिति अनुकूल है। कोई भूल भी करता हो तो ठीक हो जायगा। इस कारण उससे प्रेम न करने का कोई कारण नहीं। यदि हाथ गन्दगी में पड़ गया तो उसे काट कर फेंक नहीं देते। यह एकात्मता और वास्तविक राष्ट्रजीवन के संस्कार अभ्यास नहीं मिलते। इन्हें जागृत करना नितान्त आवश्यक है। इसीलिए इस कार्य का विस्तार आवश्यक है। अन्तःकरण में यह श्रद्धा चाहिए कि भारतीय संस्कृति की रक्षा का कार्य यह भगवान का कार्य है। असंख्य बाधाओं के होते हुए भी यह रुकने वाला नहीं पूरा ही होने वाला है। और फिर इसकी सिद्धि के लिए यदि मुझे अपना सुख छोड़ना भी पड़ा तो क्या बड़ी बात है। अपना सुख छोड़ने से यदि सब का सुख प्राप्त हो तो इससे बढ़ कर और कौन सी महान वस्तु चाहिए।

दृढ़ धारणा

यह धारणा ही महत्व की है कि जिस वस्तु के लिए मुझे यह कष्ट सहने पड़ रहे हैं वह कितनी महान है। एक बार यह धारणा जमी तो शेष सारी बातें गौण हो जाती हैं। फिर मनुष्य उसकी रक्षा अथवा प्राप्ति के लिए आग में भी सहर्ष कूद जाता है। जौहर के अनेकों उदाहरण हमारे सामने हैं। यदि हृदय के अन्दर पूर्ण श्रद्धा है तो फिर चारों ओर अनुकूलता ही अनुकूलता है। है। और यदि अन्य कोई बात है तो फिर ठिकाना नहीं यह सोच समझ कर आचरण करें।

सुनिश्चय आवश्यक

हमने यह मार्ग समझ कर ही लिया है। अतः इस पर तेजी से पैर बढ़ाना यही वांछनीय है। जब तक अपने चारों ओर एक भी हिन्दू ऐसा शेष है जो भारतीय संस्कृति से दूर नहीं गया तब तक हम चुप न बैठें, चैन न लें। उसके लिए जितना समय, श्रम और शौर्य लगाना चाहिए वह मैं करूंगा, ऐसा ही सुनिश्चय चाहिए। और यदि हम अपने कर्तव्य में भूल नहीं करते तो भगवान तो करता ही नहीं। इस प्रकार जहां नर और नारायण साथ आते हैं वहीं श्रीमद्-भगवद्गीता के अनुसार—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥

श्री, विजय तथा विभूति, आदि रहती हैं।

[पृष्ठ १२ का शेष]

शाम को चर कर आने पर दूध नहीं निकालना चाहिये, क्योंकि वह थक जाती है। अशक्त, डरी हुई, मस्ती में आई हुई या दो बच्चे देने वाली गाय का दूध अपथ्यकारक है।"

शुभाशुभ फलों का विवेचन

"बृहतसंहिता" ग्रंथ में गौ के शुभाशुभ लक्षण इस प्रकार लिखे हैं—"जिस गौ के दोनो नेत्र रुक्ष मूषिक के समान हो, तथा जिसके कानों में सदा मल देखा जाता है, ऐसी गाय अशुभ होती है, जिसकी नासिका विस्तृत, वर्ण गदहे के समान तथा देह करटातुल्य हो, मस्तक तथा मुख लम्बा, पृष्ठ विनत, ग्रीवा ह्रस्व और अधिक स्थूल रहे, गति मध्यम तथा खुर विदनारित हों, ऐसी गौ गृहस्थ को अमंगलदायक है। यदि एक अंग से हीन हो, तो वह गौ मंगलीक नहीं है।"

कृषि शासन में लिखा है—"अश्रुओं से मलीन और रुक्ष नेत्र वाली, मूषक नेत्र वाली, हिलते और चिपटे श्रृंगों वाली एवं निंद्य वस्तु खाने वाली या सिर से बोलने वाली गदहे के समान वर्ण वाली गौ शुभदायक नहीं है।"

वृषभ के अशुभ लक्षण ये हैं—"बलों से लिपटे हुवे उदर वाला और मोटी-मोटी नाड़ियों से भरे हुए गालों वाला तथा ३ स्थानों से मल त्यागने वाला, मार्जार नयन, कपिल वर्ण, काक वर्ण वाला वृषभ शुभदायक नहीं होता, जिसके काले ओठ, तालु, जिव्हा हो और बार-बार श्वास त्यागने वाला, श्वसनवृष' वृष समुदाय का नाश करता है। स्थूल गुदा और श्रृंगो वाला, श्वेत उदर विचित्र वर्ण वाला, ऐसा वृषभ त्यागने योग्य है।

गायों की पहिचान

उत्तम गौवों का लक्षण इस प्रकार बतलाये जाते हैं। जो देखने में सुन्दर, सुडौल, शांत स्वभाव, मन्द गति से चलती है, ऐसी गाय उत्तम मानी जाती है। जासे पानीदार चेहरे पर मातृ प्रेम टपकता हो, कान बड़े और लम्बे, सींग पीछे की ओर मुड़े हों। गर्दन पतली, सिर छोटा, और माथा चौड़ा हो। केश नरम, खाल पतली, भीतरी खाल का रंग पीला या नारंगी के समान हो। धड़ का अगला भाग पतला और पीछे का पुट्ठा चौड़ा और बड़ा हो। नसें टांगों की ओर जाती हों, वह मोटी और साफ दीखती हो। शरीर मांसदार, ढीला और लटका हुआ न हो। इस लक्षण की गौवें उत्तम होती है।

गेहूँ के समान रंग वाली, पैर पीले हो और सब देह लाल, सींग चिकने भाल मे टीका शुभदायक है। लम्बा डील, पांव भारी, चौड़े खुर, लम्बा मुख, पेट बड़ा और लम्बे सींगवाली गाय उत्तम होती है। सब शरीर काला, पैर मोटे, सींग खालिस भर के, पूंछ चमर, समान तन पीठ और पेट ऊंचे हो, ऐसी गाय अच्छी है। सफेद रंग, तीव सींगवाली गाय उत्तम होती है।

संस्कृति साहित्य में गो के सम्बन्ध में बहुत कुछ साहित्य मिलता है। हिन्दू राजा लोग स्वयं गोपालन करना अपना धर्म मानते थे। गोवध का सूत्रपात मुसमुसलमानी युग से आरम्भ होता है। तभी से आज तक गो वध का नाश इस भारत भूमि में हो रहा है। हमने जो कुछ विवरण दिया है, वह सब हमारी 'पूर्वजों' की देन है।

पृष्ठ १४ का शेष]

अब तक इस लेख में नारी की मनोभावनाओं को ठीक प्रकार से न समझने के कारण जो असन्तोष की परिस्थितियां जन्म लेती हैं, उन्हीं पर प्रकाश डाला गया है। किन्तु परिवार के पुरुष सदस्यों की विकृत मनोभावनाओं के कारण भी कभी २ समस्या हाथ से निकल जाती है।

आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक परिवार का प्रत्येक सदस्य एक दूसरे की मनोभावनाओं को उचित ढंग से विकसित होने का अवसर दें। मनोवैज्ञानिक कारणों को दूर कर ही हम पारिवारिक कलह को समूल नष्ट कर सकते हैं। आर्थिक सुख समृद्धि की विद्यमानता मात्र से ही सुखी पारिवारिक जीवन का निर्माण असम्भव है।

ईस्टर्न पंजाब रेलवे

सूचना

जनता की सूचनार्थ समय-विभाग में निम्नांकित परिवर्तन प्रकाशित किए जाते हैं—

(१) १ अगस्त १९२१ को तथा इस तारीख से कालका—शिमला और कालका—अम्बाला कैंट विभागों पर गाड़ियों के समय निम्न प्रकार परिवर्तित कर दिए जाएंगे।

ट्रेन नं०	स्टेशन से	स्टेशन तक	छूट का समय	पहुँच का समय
७ के. एस.	कालका	शिमला	१-३९	८-२०
१ के. एस	,,	,,	७-१८	१२-१०
३ के. एस.	,,	,,	७-४९	१२-०
१३ के. एस.	,,	,,	६-०	१६-२०
१४ के एस.	शिमला	कालका	१३-०	१९-२३
१० के एस.	,	,,	१३-३९	२०-२५
२ के. एस.	,,	,,	१९-४	२१-२७
४ के. एस.	,,	,,	१७-२९	२१-२०
६ के. एस.	,,	,,	१७-४०	२३-१०
८ के. एस.	,,	,,	१७-२०	२३-४१
२ डाउन	कालका	अम्बाला कैंट	०-२९	२-४

नं० १३ के. एस. और १४ के. एस. कोचिंग स्पेशल ट्रेनें नियमित सवारी गाड़ियां नहीं है। ये तभी चलाई जाती हैं जबकि वैसा करने की आवश्यकता पड़े। इन ट्रेनों द्वारा केवल सीमित संख्या में ही तीसरे दर्जे के मुसाफिरों को टिकट दिया जाता है।

मध्यवर्ती स्टेशनों पर गाड़ियों के समय जानने के लिए सम्बन्धित स्टेशन-मास्टरों से पूछ-ताछ करनी चाहिए।

(२) १-८-२१ से जहां गाड़ियां रुकनी बन्द हो जाएंगी।

१ डाउन कालका—दिल्ली—कलकत्ता मेल बब्बर, लालड़ और घुसकोट पर।

(३) नं० एस—१ अप और एस—१ डाउन शटल सवारी गाड़ियां जो दिल्ली और गाजियाबाद के मध्य चलती हैं केवल तीसरे दर्जे के मुसाफिर ले जाती हैं न कि सब क्लासों के जैसा कि १ जुलाई, १९२१ से लागू समय विभाग (सस्ता संस्करण) में दिखाया गया है।

चीफ एडमिनिस्ट्रेटिव आफीसर, दिल्ली।

मुल्ला जी की दाढ़ी

एक मुल्लाजी थे। एक छोटे से गांव में एक मसजिद में रहते थे। वे एक नम्बर चालाक। अपनी नई नई चालाकियों से वे गांव वालों को काफी प्रिय थे। मुल्लाजी किसी को हानि तो पहुँचाते नहीं थे, सबका मनोरंजन करते थे।

एक बार उनको किसी काम से कुछ दिनों के लिए गांव से जाना पड़ा। अपनी जगह मस्जिद में वे एक दूसरे मौलवी साहब एवजी पर छोड़ गए। उन्होंने सोचा कि इस तरह उनके पीछे काम भी चलता रहेगा और गांव पर उनका अधिकार भी पहले की तरह रहेगा।

लेकिन यह मुल्लाजी भी कम चालाक नहीं थे। इनको पता था कि पहले वाले मुल्लाजी को गांव के लोग बहुत पसन्द करते थे। धीरे-धीरे वे गांव वालों की आदतों से परिचित हो गये और इस प्रकार का काम करने लगे, जिससे गांव वाले उनसे प्रसन्न रहें। धीरे-धीरे गांव वाले उनसे हिलमिल गये और पहिले मुल्लाजी को भूलने लगे।

जब मुल्लाजी बहुत दिनों बाद वापिस लौटे तो इन नये मुल्लाजी की इतनी मान-प्रतिष्ठा देख कर बड़े घबराये। उन्होंने सोचा अब इसका गद्दी मुश्किल है। उन्होंने किसी तरह नये मुल्लाजी को गांव से उखाड़ने की ठानी।

एक बार उन्होंने गांव के कुछ लोगों को निमन्त्रण दिया, जिसमें नये मुल्ला भी आये। उन्होंने मुल्लाजी की तरफ इशारे करते हुए कहा—"अरे भाई, हमारे मुल्लाजी के क्या कहने? इनकी तो दाढ़ी का एक बाल भी किसी को मिल जाय तो वह निहाल हो जाये। मुझे ही देखिये, इनकी दाढ़ी के एक बाल से ही मालामाल हो गया। बड़ा अच्छा हुआ, जो ऐसा आदमी हमारे गांव में आ गया!"

यह कहना था कि गांव वालों ने मुल्लाजी की दाढ़ी का एक-एक बाल मांगना शुरू कर दिया। इससे पहले कि मुल्लाजी उन्हें समझायें, गांव वाले खुद ही दाढ़ी पर पिल पड़े और थोड़ी देर में मुल्लाजी की दाढ़ी ठूंठ ही रह गयी।

आखिर नये मुल्लाजी को गांव छोड़ना ही पड़ा।

—रामकृष्ण

महापुरुषों का बचपन

कक्षा भर में मूंगफली के छिलके इधर उधर पड़े देख कर अध्यापक महोदय बड़े झल्लाये। एक एक लड़के को बुला कर पूछा कि छिलके किसने फैलाए हैं, किंतु किसी ने भी उत्तर नहीं दिया। अन्त में अध्यापक महोदय ने हरेक विद्यार्थी से अपने सामने के छिलके उठाने के लिए कहा। सब लड़के छिलके उठाने लगे। लेकिन एक दुबले-पतले शरीर के छात्र ने छिलके उठाने से स्पष्ट इनकार कर दिया और कहा—"जब मैंने छिलके फैलाये ही नहीं हैं, तो मैं उठाऊंगा भी कदापि नहीं!" अध्यापक ने बहुतेरा धमकाया, परन्तु वह बालक टस से मस नहीं हुआ। आखिर उस दुर्बल शरीर बालक के सामने अध्यापक को हार माननी पड़ी। वह दुबला-पतला बालक और कोई नहीं, हमारे चरित्र-नायक, स्वतन्त्र संग्राम के महान् नेता लोकमान्य तिलक हैं, जिन्होंने अंग्रेजी शासन की क्रूरता के सामने भी कभी झुके नहीं टेके। दृढ़ता उनका मूल सिद्धान्त था।

एक बार उनके दुर्बल शरीर के कारण विद्यार्थियों ने उन्हें तिरस्कृत किया। तभी से उन्होंने नियमित व्यायाम करने की प्रतिज्ञा कर ली। कुछ समय बाद ही उन्होंने अपना शरीर लौह सदृश बना लिया। उनके जीवन की ऐसी अनेकों घटनाएं हैं, जो उनके अदम्य उत्साह और दृढ़ता का परिचय देती हैं।

—राकेश कुमार

अब जरा मेरा भी निशाना देखो

जरा हंसिये

एक बाबूजी किसी कार्यवश एक तेली के घर गये। तेली आकर उनसे बातें करने लगा, परन्तु उधर कोल्हू का बैल बराबर चलता रहा। बाबूजी ने पूछा— "क्यों चौधरी, तुम चले आये, तब भी बैल चल रहा है?"

"हां बाबू, घनी पर पत्थर रख दिया है तो वह समझता है कि हम बैठे हैं।"

"और अगर तुम्हारे चले आने के बाद वह चलना बन्द कर दे तो?"

"नहीं बाबू जी उसके गले में घण्टी बन्धी है। घण्टी न बजे तो हमें मालूम हो जायगा कि वह खड़ा हो गया है।"

"छि:," बाबू जी बोले— "रहे तेली आखिर तुम! अगर बैल खड़ा रहे और सिर हिलाता रहे, तब भी तो घण्टी बजती रहेगी।"

तेली ने विनीत भाव से हाथ जोड़ कर कहा— "अरे बाबू जी की बात! क आप लोगन की तरह पढ़ा लिखा थोड़े है!"

❀ ❀ ❀

भाव—क्यों भिखारी मौसी, बहुत दुबली हो गई हो? क्या बात है?

बिल्ली— क्या बताऊं! तुमसे दूध अच्छा देती हो, पर लोगों के घर पहुँचते

साथ-साथ

तक वह पानी बन जाता है। दम भर मार खाने पर कहीं एक घर में मिलता है, घूंट भर पानी। फिर राशनिंग ने भी तो हमें तंग कर रखा है घरों में अनाज का अभाव होने से चूहे भी गायब हैं!

❀ ❀ ❀

पुत्र— पिता जी, मैं जादू सीखने वाला हूं।

पिता— बेटा, पहले मेहनत करके स्कूल की परीक्षा पास करलो, फिर यह जादू-वादू के खेल सीखना।

पुत्र— परन्तु पिता जी परीक्षा पास करने के लिये ही तो मुझे जादू सीखना है!

❀ ❀ ❀

स्त्री— (दूकानदार से) क्यों जी, आप तो कहते हैं कि इन साड़ियों को छापने के पहले धोना और रंगना पड़ेगा, तो क्या हम काम के पैसे अलग देने होंगे?

दूकानदार—जी नहीं, हम तो सिर्फ रंगने और छापने के पैसे लेते हैं। धुलाई वगैरह का काम तो हमारे कारखाने में मुफ्त ही किया जाता है।

स्त्री— तो फिर अब की बार ये चारों साड़ियां सिर्फ धोकर ही दे दीजिये, रंगना और छापना फिर बाद में देखा जायेगा!

❀ ❀ ❀

[पृष्ठ १२ का शेष]

शाम को चर कर आने पर दूध नहीं निकालना चाहिये, क्योंकि वह थक जाती है। अशक्त, डरी हुई, मस्ती में आई हुई या दो बच्चे देने वाली गाय का दूध अपथ्यकारक है।"

शुभाशुभ फलों का विवेचन

"बृहत्संहिता" ग्रंथ में गौ के शुभाशुभ लक्षण इस प्रकार लिखे हैं—"जिस गौ के दोनों नेत्र रूप मूषिक के समान हों, तथा जिसके कानों में सदा मल देखा जाता है, ऐसी गाय अशुभ होती है, जिसकी नासिका विस्तृत, वर्ण गदहे के समान तथा देह करटातुल्य हो, मस्तक तथा मुख लम्बा, पृष्ठ विनत, ग्रीवा ह्रस्व और अधिक स्थूल रहे, गति मञ्जम तथा खुर विदमारित हों, ऐसी गौ गृहस्थ को अमंगलदायक है। यदि एक अंग से हीन हो, तो वह गौ मंगलीक नहीं है।"

कृषि शासन में लिखा है—"अश्रुओं से मलीन और रूक्ष नेत्र वाली, मूषक नेत्र वाली, हिलते और चिपटे श्रृंगो वाली एवं निंद्य वस्तु खाने वाली या सिर से बोलने वाली गदहे के समान वर्ण वाली गौ शुभदायक नहीं है।"

वृषभ के अशुभ लक्षण ये हैं—"नसों से चिपटे हुये उदर वाला और मोटी-मोटी नाड़ियों से भरे हुए गालों वाला तथा ३ स्थानों से मल त्यागने वाला, मार्जार नयन, कपिल वर्ण, काक वर्ण वाला वृषभ शुभदायक नहीं होता, जिसके काले ओठ, तालु, जिव्हा हो और बार बार श्वास त्यागने वाला, श्वसनवृष' वृष समुदाय का नाश करता है। स्थूल गुदा और श्रृंगों वाला, श्वेत उदर विचित्र वर्ण वाला, ऐसा वृषभ त्यागने योग्य है।

गायों की पहिचान

उत्तम गौवों का लक्षण इस प्रकार बतलाये जाते हैं। जो देखने में सुन्दर, सुडौल, शांत स्वभाव, मन्द गति से चलती है, ऐसी गाय उत्तम मानी जाती है। आंखें पानीदार चेहरे पर मातृ प्रेम टपकता हो, कान बड़े और लम्बे, सींग पीछे की ओर मुड़े हो। गर्दन पतली, सिर छोटा, और माथा चौड़ा हो। केश नरम, खाल पतली, भीतरी खाल का रंग पीला या नारंगी के समान हो। धड़ का अगला भाग पतला और पीछे का पुट्ठा चौड़ा और बड़ा हो। नसें टांगों की ओर जाती हों, वह मोटी और साफ दीखती हो। शरीर मांसदार, ढीला और लटका हुआ न हो। इस लक्षण की गौवें उत्तम होती है।

गेहूँ के समान रंग वाली, पैर पीले हो और सब देह लाल, सींग चिकने भाल में टीका शुभदायक है। लम्बा डील, पांव भारी, चौड़े खुर, लम्बा मुख, पेट बड़ा और लम्बे सींगवाली गाय उत्तम होती है। सब शरीर काला, पैर मोटे, सींग बालिश्त भर के, पूंछ चमर, समान तन पीठ और पेट ऊंचे हो, ऐसी गाय अच्छी है। सफेद रंग, तीक्ष्ण सींग-वाली गाय उत्तम होती है।

संस्कृति साहित्य में गो के सम्बन्ध में बहुत कुछ साहित्य मिलता है। हिन्दू राजा लोग स्वयं गोपालन करना अपना धर्म मानते थे। गोवध का सूत्रपात मुसलमानी युग से आरम्भ होता है। तभी से आज तक गो वंश का नाश इस भारत भूमि में हो रहा है। हमने जो कुछ विवरण दिया है, वह सब हमारी 'पूर्वजों' की देन है।

—————

[पृष्ठ ?४ का शेष]

जब तक हम क्षेत्र में नारी की मनोभावनाओं को ठीक प्रकार से न समझने के कारण जो असन्तोष की परिस्थितियां जन्म लेती हैं, उन्हीं पर प्रकाश डाला गया है। किन्तु परिवार के पुरुष सदस्यों की विकृत मनोभावनाओं के कारण भी कभी २ समस्या हाथ से निकल जाती है।

आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक परिवार का प्रत्येक सदस्य एक दूसरे की मनोभावनाओं को उचित ढंग से विकसित होने का अवसर दें। मनोवैज्ञानिक कारणों को दूर कर ही हम पारिवारिक कलह को समूल नष्ट कर सकते हैं। आर्थिक सुख समृद्धि की विद्यमानता मात्र से ही सुखी पारिवारिक जीवन का निर्माण असम्भव है।

—

ईस्टर्न पंजाब रेलवे

सूचना

जनता की सूचनार्थ समय-विभाग में निम्नांकित परिवर्तन प्रकाशित किए जाते हैं :—

(१) १ अगस्त १९५१ को तथा इस तारीख से कालका—शिमला और कालका—अम्बाला कैंट विभागों पर गाड़ियों के समय निम्न प्रकार परिवर्तित कर दिए जाएंगे।

ट्रेन न०	स्टेशन से	स्टेशन तक	छूट का समय	पहुँच का समय
७ के. एस.	कालका	शिमला	१-३९	८-२०
१ के. एस	,,	,,	७-१८	१४-१०
३ के. एस.	,,	,,	७-४५	१२-०
१३ के. एस.	,,	,,	३-०	१६-२०
१४ के. एस.	शिमला	कालका	१३-०	१९-२३
१० के. एस.	,	,,	१३-३५	२०-४५
२ के. एस.	,,	,,	१५-५	२१-२०
४ के. एस.	,,	,,	१७-२५	२१-२०
६ के. एस.	,,	,,	१७-३०	२२-१०
८ के. एस.	,,	,,	१७-५०	२३-४१
२ डाउन	कालका	अम्बाला कैंट	०-२५	२-४

नं० १३ के. एस. और १४ के. एस. कोचिंग स्पेशल ट्रेनें नियमित सवारी गाड़ियां नहीं है। वे तभी चलाई जाती हैं जबकि वैसा करने की आवश्यकता पड़े। इन ट्रेनों द्वारा केवल सीमित संख्या में ही तीसरे दर्जे के मुसाफिरों को टिकट दिया जाता है।

मध्यवर्ती स्टेशनों पर गाड़ियों के समय जानने के लिए सम्बन्धित स्टेशन-मास्टरों से पूछ-ताछ करनी चाहिए।

(२) १-८-५१ से यहां गाड़ियां रुकनी बन्द हो जाएंगी।

२ डाउन कालका—दिल्ली—कलकत्ता मेल कम्हार, डाबर और धूलकोट पर।

(३) नं० एम—१ अप और एम—१ डाउन शटल सवारी गाड़ियां जो दिल्ली और गाजियाबाद के मध्य चलती हैं केवल तीसरे दर्जे के मुसाफिर ले जाती हैं न कि सब क्लासों के जैसा कि १ जुलाई, १९५१ से लागू समय विभाग (सस्ता संस्करण) में दिखाया गया है।

चीफ एडमिनिस्ट्रेटिव आफीसर, दिल्ली।

एक बार उनके दुर्बल शरीर के कारण विद्यार्थियों ने उन्हें तिरस्कृत किया। तभी से उन्होंने नियमित व्यायाम करने की प्रतिज्ञा कर ली। कुछ समय बाद ही उन्होंने अपना शरीर लौह सदृश बना लिया। उनके जीवन की ऐसी अनेकों घटनाएं हैं, जो उनके अदम्य उत्साह और दृढ़ता का परिचय देती हैं।

—राकेश कुमार

साथ साथ

मुल्ला जी की दाढ़ी

एक मुल्लाजी थे। एक छोटे से गांव में एक मसजिद में रहते थे। वे एक नम्बर चालाक। अपनी नई नई चालाकियों से वे गांव वालों को काफी प्रिय थे। मुल्लाजी किसी को हानि तो पहुँचाते नहीं थे, उनका मनो रंजन करते थे।

एक बार उनको किसी काम से कुछ दिनों के लिए गांव से जाना पड़ा। अपनी जगह मस्जिद में वे एक दूसरे मौलवी साहब एवजी पर छोड़ गए। उन्होंने सोचा कि इस तरह उनके पीछे काम भी चलता रहेगा और गांव पर उनका अधिकार भी पहले की तरह रहेगा।

लेकिन यह मुल्लाजी भी कम चालाक नहीं थे। इनको पता था कि पहले वाले मुल्लाजी को गांव के लोग बहुत पसन्द करते थे। धीरे धीरे वे गांव वालों की आदतों से परिचित हो गये और इस प्रकार का काम करने लगे, जिससे गांव वाले उनसे प्रसन्न रहें। धीरे धीरे गांव वाले उनसे हिलमिल गये और पहिले मुल्लाजी को भूलने लगे।

जब मुल्लाजी बहुत दिनों बाद वापिस लौटे तो इन नये मुल्लाजी की इतनी मान प्रतिष्ठा देख कर बड़े घबराये। उन्होंने सोचा अब दाल गलनी मुश्किल है। उन्होंने किसी तरह नये मुल्लाजी को गांव से उखाड़ने की ठानी।

एक बार उन्होंने गांव के कुछ लोगों को निमन्त्रण दिया, जिसमें नये मुल्ला भी आये। उन्होंने मुल्लाजी की तरफ इशारे करते हुए कहा—"अरे भाई, हमारे मुल्लाजी के क्या कहने? इनकी तो दाढ़ी का एक बाल भी किसी को मिल जाय तो वह निहाल हो जावे। मुझे ही देखिये, इनकी दाढ़ी के एक बाल से ही मालामाल हो गया। बड़ा अच्छा हुआ, जो ऐसा आदमी हमारे गांव में आ गया।"

यह कहना था कि गांव वालों ने मुल्लाजी की दाढ़ी का एक-एक बाल मांगना शुरू कर दिया। इससे पहले कि मुल्लाजी उन्हें समझावें, गांव वाले खुद ही दाढ़ी पर पिल पड़े और थोड़ी देर में मुल्लाजी की दाढ़ी ठूंठ ही रह गयी।

आखिर नये मुल्लाजी को गांव छोड़ना ही पड़ा।

—रामकृष्ण

महापुरुषों का बचपन

कक्षा भर में मूंगफली के छिलके इधर उधर पड़े देख कर अध्यापक महोदय बड़े झल्लाये। एक एक लड़के को बुला कर पूछा कि छिलके किसने फैलाए हैं, किंतु किसी ने भी उत्तर नहीं दिया। अन्त में अध्यापक महोदय ने हरेक विद्यार्थी से अपने सामने के छिलके उठाने के लिए कहा। सब लड़के छिलके उठाने लगे। लेकिन एक दुबले-पतले शरीर के छात्र ने छिलके उठाने से स्पष्ट इनकार

अब जरा मेरा भी निशाना देखो

कर दिया और कहा—'जब मैंने छिलके फैलाये ही नहीं हैं, तो मैं उठाऊंगा भी कदापि नहीं!" अध्यापक ने बहुतेरा धमकाया, परन्तु वह बालक टस से मस नहीं हुआ। आखिर उस दुर्बल शरीर बालक के सामने अध्यापक को हार माननी पड़ी। यह दुबला पतला बालक और कोई नहीं, हमारे चरित्र नायक, स्वतन्त्र संग्राम के महान् नेता लोकमान्य तिलक हैं, जिन्होंने अंग्रेजी शासन की क्रूरता के सामने भी कभी घुटने नहीं टेके। दृढ़ता उनका मूल सिद्धान्त था।

जग हंसिये

एक बाबूजी किसी कार्यवश एक तेली के घर गये। तेली आकर उनसे बातें करने लगा, परन्तु उधर कोल्हू का बैल बराबर चलता रहा। बाबू जी ने पूछा—"क्यों चौधरी, तुम चले आये, तब भी बैल चल रहा है?"

"हां बाबू, घानी पर पत्थर रख दिया है तो वह समझता है कि हम बैठे हैं।

"और अगर तुम्हारे चले आने के बाद वह चलना बन्द कर दे तो?"

"नहीं बाबू जी उसके गले में घण्टी बन्धी है। घण्टी न बजे तो हमें मालूम हो जायगा कि वह खड़ा हो गया है।"

"छि," बाबू जी बोले— "रहे तेली आखिर तुम! अगर बैल खड़ा रहे और सिर हिलाता रहे, तब भी तो घण्टी बजती रहेगी!'

तेली ने विनीत भाव से हाथ जोड़ कर कहा—'अरे बाबू जी की बात! क्‍या आप लोगन की तरह पढ़ा लिखा थोड़े है!"

❀ ❀ ❀

गाय—क्यों बिचारी मौसी, बहुत दुबली हो गई हो! क्या बात है?

बिल्ली— क्या बताऊं! तुमतो दूध अच्छा देती हो, पर लोगों के घर पहुँचने तक वह पानी बन जाता है। दस घर मार खाने पर कहीं एक घर न मिलता है घूंट भर पानी। फिर राशनिंग ने भी ता हम तग कर रखा है घरों में अनाज का अभाव होने से चूहे भी गायब हैं!

❀ ❀ ❀

पुत्र— पिता जी मैं जादू सीखने वाला हूं।

पिता— बटा पहले महनत करके स्कूल की परीक्षा पास करलो फिर यह जादू-वादू के खेल सीखना।

पुत्र— परन्तु पिता जी परीक्षा पास करने के लिये ही तो मुझे जादू सीखना है!

❀ ❀ ❀

स्त्री— (दूकानदार से) क्यों जी आप तो कहते हैं कि इन साड़ियों को छापने के पहले धोना और रंगना पड़ेगा तो क्या इस काम के पैसे अलग देने होंगे?

दूकानदार—जी नहीं हम तो सिर्फ रंगने और छापने के पैसे लेते हैं। धुलाई वगैरह का काम तो हमारे कार खाने में मुफ्त ही किया जाता है।

स्त्री— तो फिर अब को बार ये चारों साड़ियां सिर्फ धोकर ही दे दीजिये रंगना और छापना फिर बाद में देखा जायेगा!

❀ ❀ ❀

[पृष्ठ १२ का शेष]

अपने सहधर्मी बान्धवों की सहायता से शीघ्र ही बस कर अपने को आसाम का ही बना लेते हैं। आसाम में भी इस प्रकार पाकिस्तान से आकर बसे हुए मुसलमानों की संख्या बहुत अधिक है। कुछ क्षेत्रों में तो यह भय भी प्रकट किया जा रहा है कि इसके कारण आसाम की स्थिति बड़ी संकटापन्न हो गयी है। यदि कभी भारत-पाक युद्ध हुआ, तो पाकिस्तान इन पहिले से ही भेजे हुए अपने दूतों के द्वारा प्रान्त-व्यापी विद्रोह खड़ा करा सकता है।

साम्प्रदायिक विद्वेष का प्रचार

विदित हुआ है कि हाल ही में बम्बई सरकार ने उत्तर प्रदेश की सरकार को एक पत्र द्वारा यह कहा है कि उत्तर प्रदेश के कुछ उर्दू पत्र उदाहरणार्थ कानपुर का 'शाहना शरीयत', साम्प्रदायिक विद्वेष का प्रचार कर रहे हैं जिसका प्रभाव उत्तरप्रदेश के बाहर भी पड़ता है। उत्तरप्रदेश के ये उर्दू पत्र लगातार विष फैला रहे हैं। हिन्दू समाज, देवीदेवता, धर्मग्रन्थ, महापुरुष सभी के विषय में वे अश्लील बातें प्रकाशित कर रहे हैं। स्वयं 'शाहना शरीयत' के मई अंक में महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी के विषय में अनेकों घृणित बातें प्रकाशित की गई हैं। इस प्रकार का प्रचार इतने व्यापक ढंग पर किया जा रहा है कि बम्बई सरकार को इसके विरुद्ध पत्र लिखना पड़ा।

मध्यभारत में दंगे

हाल ही में मध्यभारत के शान्त जीवन में भी साम्प्रदायिक उपद्रवों का समाचार प्राप्त हुआ है। उज्जैन, देवास मन्दसौर आदि कई स्थानों से दंगों का समाचार मिला है। जहां तक पता चला है ये दंगे प्रायः सभी स्थानों पर मुसलमानों की ओर से ही उकसाहट के प्रतिफल स्वरूप हुए हैं। उज्जैन में दंगा हुआ और फिर ये दंगों का सिलसिला शेष प्रान्त में फैल गया। इससे प्रतीत होता है कि इसके पीछे एक संगठित योजना कार्य कर रही है।

भारत सरकार की चुप्पी

इस प्रकार की ज्ञात और अज्ञात असंख्य घटनाओं के विषय में भारत सरकार की चुप्पी आश्चर्यजनक है। मुस्लिमपरस्त नीति के कारण सम्भवतः कांग्रेस सरकार यह सोचती हो कि यदि इस विषय में जनता को कुछ विशेष बताया गया तो अच्छा नहीं रहेगा। किन्तु यह स्मरण रहे कि प्रजातन्त्र पद्धति में और विशेषकर वर्तमान काल में, देश की सुरक्षा का दायित्व सभी देशवासियों पर रहता है। अतः उन्हें अन्धकार में रखना सदा घातक सिद्ध होता है। जहां एक ओर निर्दोष हिंदुओं पर भी अनेक झूठे दोष लगाकर पाकिस्तान उन्हें निकाल रहा है, वहां कांग्रेस सरकार मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के लिये देश में षड्यन्त्रकारियों तथा शत्रु के गुप्तचरों को उर्वर भूमि प्रदान कर रही है।

जनता चाहती है

कांग्रेस सरकार के इस रवैये को किसी प्रकार भी चुपचाप सहन नहीं किया जा सकता। जनता स्थिति जानना चाहती है, जिससे उसे पता रहे कि वह कहां खड़ी है और उसके सामने कौन कौन से संकट हैं। पाकिस्तान भारत के प्रति शत्रुता का व्यवहार कर रहा है और उसकी ओर से, अथवा उसे सहायता देने के लिये जो लोग भी इस देश में कार्य कर रहे हैं वे सब भारत के शत्रु हैं। देश की जनता चाहती है कि सरकार उसके शत्रुओं से उसे पूरी तरह परिचित रखे और उन्हें समाप्त करे। इस विषय में दिखाई जाने वाली चुप्पी किसी प्रकार भी उचित नहीं।

भगवान के अधिकारी

[पृष्ठ १० का शेष]

था। उसे लगा, मानो भगवान प्राप्ति के साधन, पण्डित जी के अतिरिक्त किसी को ज्ञात नहीं। मुक्ति के सुन्दर उपदेशों से वह आतुर हो उठा। व्यक्ति हो उसने कहा—"तो, मेरे पाप कटेंगे पण्डित जी मुझे बताओ।

सुनकर पण्डित जी चुप रहे। कोई उत्तर नहीं दिया। अपने चारों ओर दृष्टि डाल, कुछ समय पश्चात बोले—"भगवान ऐसे नहीं मिलते। वे सबके नहीं, जो सभी उसे पा जाय,' और अंधेरे में ही बड़बड़ाते हुए घर चल दिये।

शरद का स्वच्छ वातावरण था। विशेष कर इन दिनों पहाड़ों में काफी सर्दी पड़ती है। आधी रात के लगभग पण्डित प्रभुदयाल ने, एक उठती हुई आवाज का अनुभव किया। पास के खेतों में जाड़े से ठिठुरे हुए सियार बोल रहे थे। पण्डित जी ने सुना, और खूब कान लगाकर सुना। क्षण भर रुक कर मन में कहा—भगवान को भजते हैं ये भी। पाने का प्रयत्न करते हैं। पर वे ऐसे नहीं मिलते। उनके ऊपर करुणा के स्थान पर, उनका मन क्रोध से जल उठा।

घर पहुंचे! तो नित्य के नियमानुसार पूजा पाठ नहीं किया। अंधेरे में ही किवाड़ के कोने पर बैठ, विचारों में डूब गये। पत्नी रसोई में था। पांवों की आहट पा, चिराग ले, अन्दर आई।

पण्डित जी को अंधेरे में बैठे देख, आश्चर्य से बोली—"तुम अंधेरे में बाहर बैठे हो। आज क्या सन्ध्या पूजा की याद नहीं।"

"याद क्यों नहीं?" अपनी दृष्टि को बाहर के विस्तृत अन्धकार की ओर उठाते हुए पंडित जी ने कहा—"पाठक कैलाश क्या गया सभी चले भगवान को भजने। पर भगवान ऐसे नहीं मिलते।"

"तो कैसे मिलते हैं?" पत्नी ने सुना और हंसी आ गई। मुस्कराते हुए उसने कहा—"अच्छा, भगवान पाने की कौन दूसरी राह है?"

पण्डित चुप रहे। कुछ क्षण सोचने के पश्चात बोले—"मानव जीवन, अन्धकारमय दलदल में फंसा है। सहज ही उससे पार निकलना सम्भव नहीं। इसके लिए आत्मज्ञान की अखण्ड ज्योति चाहिए।"

सुनकर पत्नी चुप रही। मस्तिष्क चकरा गया। उसकी समझ में बात न आई। चुप रहना ठीक न सोच उसने कहा "तो इस दलदल से मनुष्य की मुक्ति कैसे होगी?"

पण्डित जी ने उसका जवाब नहीं दिया। अपने स्थान से उठ, उन्होंने एक बार बाहर के विस्तृत अन्धकार को देखा। पुनः अपने स्थान पर आ, दीपक बुझा बैठ गये।

पत्नी यह देख आश्चर्य में पड़ गई। सोचा, पागल हो गये हैं, पर नहीं, इतनी ज्ञान की बातें करते हैं। अन्त में पूछ बैठी—"आपने दीपक क्यों बुझाया?"

"अरे पगली! जानती नहीं'—सुनकर पण्डित जी ने कहा—"जिसके जीवन के चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार है उसमें इस दीपक के प्रकाश से क्या लाभ!" पत्नी चुपचाप चेहरे की ओर देखती रही। उसकी समझ में बात को न आते देख, पण्डित जी ने पुनः उदाहरण देते हुए समझाया—"तू समझ, जीवन ऐसा है जैसी हमारी ऊपर की तंग कोठरी। पीछे की खिड़की न खोलें तो फिर उसमें प्रकाश कहां? ठीक यही बात मनुष्य जीवन के लिए भी चरितार्थ होती है।"

कहते कहते पण्डित जी को पाठक की सुधि आई। प्रसंग बदलते हुए बोले—"देखा, पाठक के बच्चे को। कहता है कि कैलाश हो आया। धर्म भी जोड़ा, नाम भी कमाया।"

पत्नी ने सुना, तो चुप हो गई। कुछ क्षण सोच, एक दीर्घ निश्वास ले बोली—"हां, मुझसे भी कह रहा था, कि भगवान की इच्छा हुई, तो एक फिर जाऊंगा।"

"कमबख्त! अभी धरम करम नहीं किया। मालदार बनकर, कैलाश से लौटा। पत्नी ने सुना, और भारी स्वर में बड़बड़ाई—"उसके पास तो फूटी पाई न थी। कहता है, वहां साधु के चरणों के नीचे डाले रुपये, चुका दिये।"

"और क्या कहता था?" पण्डित जी ने प्रश्न किया। कहता था—"भगवान की कृपा है सब।"

सुनकर पंडित जी का चेहरा तमतमा उठा। बाहर के अन्धकार को देख, एक लम्बी सांस भरी। तभी पत्नी ने आकर पूछा—"आज क्या बनाऊं खाने को?"

"कुछ नहीं!" पण्डित जी ने अन्धकार से आंखें हटाते हुए कहा।

पत्नी कुछ देर किवाड़ पर खड़ी रही। और फिर चली गई। उसे जाते देख उन्होंने अपने आप कहा—खाया न खाया, सब समान है। भौतिक शरीर है खाने से अमर तो होता नहीं। हो सके, तो आज उपवास ही सही। तभी पत्नी ने फिर आकर कहा—"सुनते हो, आज खाना क्या बनाऊं।"

पण्डित जी चुप रहे। पत्नी की आंखें देख उन्हें लगा, कि उसके मन में कुछ बात है और वह कहना चाहती है? बरबस उसके चेहरे की ओर दृष्टि डाल कहा—"क्या बात है?"

किन्तु पत्नी ने कुछ उत्तर न दिया। हाथ के कटोरे को आंगन में पटक, रूखे स्वर से बड़बड़ाती हुई अन्दर चली गई।

पत्नी के रूठ जाने से चूल्हे में इस रात आग न जली और वह बिना कुछ खाये, सो गई।

बैठे बैठे नींद आने पर पण्डित जी भी सो गये।

रात में अधिक नींद न आई। आंखें लगती तो देखते—वे सारे गांव को समझा रहे हैं। जीव की सफलता आसान नहीं। आत्मा अजर है, अमर है। परमात्मा का कोई अंश इससे भिन्न नहीं। इसी के अन्दर भगवान सोता है, पर मिलता सबको नहीं। मिलता है उसको—जो ऊंची जाति का है और पाने का अधिकारी है।

सहसा सुबह हुई। नींद खुली। लगा कि उनके सिर में दर्द हो रहा है, ज्ञान तन्तुओं के विकृत हो जाने से, मस्तिष्क कुछ विषैला हो गया था, उन्होंने सुना है कि मन्दिर का घण्टा अब भी बड़े जोर से बज रहा था। आरती गान की सुमधुर ध्वनि कानों पर टकरा रही थी। सिर दबाये हुए उठ, तभी उन्होंने अपने आप कहा—"कमबख्त! कैलाश क्या हो गया। अब बुढ़ापे में बजरंसिंह भी चला भगवान को भजने।"

इस प्रकार सारा दिन असमय अशान्ति से व्यतीत हुआ। उनको पागल हुआ जान पत्नी बिना खिलाये, पड़ोस में बैठने को चल दी।

शाम के समय मन्दिर से फिर घण्टे की आवाज आई। पण्डित जी ने विचार आया, क्यों न इस बजरंसिंह को जाकर समझाया जाय। अभि करके

चि~~त्र~~लो~~क

फिल्मकार ने—छोटी भाभी का सफल चित्र निर्माण करने के बाद 'दीदार' सिनेमा जगत की भेंट किया था। 'दीदार' न केवल आर्थिक दृष्टि कोण से ही अच्छा चित्र था वरन् इसने कला की दृष्टि से विशेष ख्याति प्राप्त की। अपनी इस विजय के उपरान्त श्री राजेन्द्र जैन शीघ्र ही एक अन्य अनुपम चित्र 'घुंघरू' प्रस्तुत कर रहे हैं।

घुंघरू

संगीत, हास्य, तथा घुंघरू नृत्यों से परिपूर्ण घुंघरू' में ओमप्रकाश रामलोचन अभिनय कर रहा है। साथ में समित्रादेवी कुलदीप और बद्रीप्रसाद व के० एन सिंह प्रधान भूमिका में है। चित्र का निर्देशन 'दासी' के सफल निर्देशक हीरेन बोस कर रहे हैं और संगीत सी. रामचन्द्र आयोजित कर रहे हैं।

उक्त निर्माता के अन्य चित्र 'शिकवा' के विषय में यह सम्भावना है कि यह अपने निर्देशक रमेश सहगल के पहले सफल चित्रों 'शहीद' और 'समाधि' से विशेष ख्याति प्राप्त करेगा। प्रधान भूमिका में 'नूतन' दिलीप व स्वयं निर्देशक रमेश सहगल व मुबारक इत्यादि हैं।

'अनारकली'

इस ऐतिहासिक चित्र का शुभारम्भ १२ अप्रैल को हुआ था जिसमें चित्र जगत के व्यक्ति विशेष सम्मिलित थे। चित्र के लिये आवश्यक सामग्री तैयार हो चुकी है और श्री राजेन्द्र जैन इसको शीघ्र रजतपट पर लाने को उत्सुक हैं। कमाल अमरोही के निर्देशन में मीना कुमारी, कमल कपूर, सप्रू और बीना प्रधान भूमिका में हैं।

'संसार'

'चन्द्रलेखा' 'निशान' व 'मंगला' से लोक प्रिय चित्रों के बाद जैमिनी स्टूडियो शीघ्र ही अपना नवीन चित्र 'संसार' चित्र जगत की भेंट कर रहा है। आशा है यह चित्र सितम्बर के मध्य में राजधानी में प्रदर्शित किया जायेगा। सम्भावना है कि कला की दृष्टि में यह एक नवीन कृति होगी। उत्तर-भारत में इसके वितरण अधिकार 'राजश्री पिक्चर्स' के पास हैं।

फूलों के हार

श्री कान्त स्टूडियो कृत यह चित्र इस सप्ताह राजधानी के तीन प्रमुख सिनेमाओं में प्रदर्शित हुआ। श्री जी पी. पवार के निर्देशन में कलाकार गीताबाली शाकिरअली व योगार प्रधान भूमिका में हैं और संगीत हंसराज बहल द्वारा आयोजित है। वितरण अधिकार राजश्री पिक्चर्स के पास है।

(पृष्ठ ९ का शेष)

से बढ़ता जा रहा है। बसरा में भी तेल की खोज की जा रही है यदि इसमें सफलता प्राप्त हुई तो राज्य की आमदनी निसन्देह अधिक हो जायगी।

तेल समस्या

ईरान में तेल समस्या उलझ जाने के पश्चात् ब्रिटेन ईराक के तेल के सम्बन्ध में चिन्तित हैं। जानकार क्षेत्रों का विश्वास है कि यदि ब्रिटेन ने ईरान के प्रश्न को नेकनीयती से सुलझाया होता तो यह प्रश्न इतना गम्भीर न होता। ईराक तेल कम्पनी से भी रायल्टी के रूप में अधिक धन देने की मांग की गई है। बगदाद के क्षेत्रों का कहना है कि कम्पनी को प्रतिदिन साऊदी अरब व ईरान की भांति धन देना चाहिये। ब्रिटेन ईराक से एक समझौता करना चाहता है। ईराक की संसद के १८ सदस्यों ने मांग की है कि यदि ब्रिटेन न माने तो 'हमें अपने तेल उद्योग का राष्ट्रीयकरण करना चाहिये'

बचा कम्बख्त ! क्यों न ऐसे धर्मद्रोहियों को सजा दी जाय।

अपने स्थान से उठ, लकड़ी के सहारा ले, वे मन्दिर में पहुँचे। देखा, पहले की तरह बजरसिंह आरती में सिर झुका रहा था। उसी क्षण उन्हें लगा, कि उनके शरीर में पीड़ा अधिक हो गई है। मन्दिर के दिये का प्रकाश, उनकी आंखों में आग उगल रहा है। पीड़ा की परवाह न कर वे एकाएक चिल्लाए— "तुम्हारा सत्यानाश हो। भगवान तुम्हारे बाप का नहीं। नहीं मिलेगा ऐसे वह।" और आगे बढ़, जलते हुए चिराग को बुझा दिया।

"पागल है"—देख कर बच्चे चिल्लाये। और खूब हंसे। इस बीच सिर दर्द के बढ़ जाने पण्डित जी बेहोश हो, भूमि पर गिर पड़े। होश आने के उपरान्त देखा, गांव के बूढ़े बच्चों की चारों ओर भीड़ लगी है। और उन्हें सुधि में लाने की, चेष्टा कर रहे हैं।

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

राष्ट्रकवि गोस्वामी श्री तुलसीदास

४ आना

दिल्ली रविवार २१ श्रावण संवत् २००८ DELHI 5th AUGUST 1951

टिहरी गढ़वाल का अभावग्रस्त प्रदेश : रवांई

[श्री देवदत्त "राकेश"]

भारत की उत्तरी सीमा पर एक छोर से दूसरे छोर तक हिमालय अपने उतुंग शैल्य शिखरों सहित सर्वोन्नत प्रहरी की भांति खड़ा है। टिहरी गढ़वाल हिमालय की उपत्यका में स्थिति एक ऐसा प्रदेश है जहां की अनुपम प्राकृतिक छटा दर्शन का ध्यान बरबस ही अपनी ओर खींच लेती है।

टिहरी गढ़वाल की एक छोटी सी तहसील है रवांई। भौगोलिक दृष्टि से यह तहसील बहुत महत्वपूर्ण है। इस तहसील के उत्तरकाशी परगने में गंगा का एवं रवांई परगने में यमुना का उद्गम स्थान है। उत्तर प्रदेश का सीमान्त होने के साथ-साथ भारत का भी यह सीमान्त प्रदेश है। उत्तरकाशी परगने में नेलंग दर्रे पर तिब्बत और भारत की वह सीमा मिलती है, जहां से इन दोनों देशों में पारस्परिक व्यापार होता है। तिब्बत से भारत को ऊन और नमक आदि वस्तुएं आती हैं तथा यहां से गुड़ अनाज आदि ले जाया जाता।

इस तहसील के उत्तर पश्चिम में हिमाचल प्रदेश के बुशहर तथा थरोंच भाग हैं और दक्षिण में देहरादून जिला है। यहां का सांस्कृतिक एवं व्यापारिक सम्बन्ध अधिकतर हिमाचल के दूसरे प्रदेश जौनसार बावर से है।

जनसंख्या तथा शासन संचालन

यहां की जनसंख्या लगभग एक लाख है। यह प्रदेश ३१ पट्टियां तथा ८२२ ग्रामों में बंटा हुआ है। प्रत्येक पट्टी के प्रबन्ध के लिये ग्राम के चुने हुए पंचों की ग्राम पंचायत तथा अदालती पंचायत है। जिसका प्रधान सरपंच कहलाता है। रवांई की जनता ने यदि कभी स्वराज्य का सुख देखा है तो वह यही है।

शासन के लिये यहां राजगढ़ी में तहसीलदार की कचहरी लगती है और उत्तरकाशी में ए० डी० एम० का कोर्ट। पुलिस व्यवस्था यद्यपि पृथक है तथापि उसमें पटवारी, कानूनगो आदि से मदद ली जाती है। परन्तु यातायात की असुविधा तथा प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यहां नियमित पुलिस कार्य करने में अधिक सफल नहीं हो सके हैं। नैनीताल, अलमोड़ा और गढ़वाल की तरह यहां भी रेवेन्यू पुलिस ही अधिक सफल हो सकती है। यह प्रदेश पर्वतीय है तथा यहां की ऊंची चोटियों पर हमेशा बर्फ गिरती है।

उपज तथा उद्योग धन्धे

यह प्रदेश उपजाऊ है। यहां अधिकतर धान एवं आलू की खेती होती है। गेहूं, जौ, सरसों और मक्का की भी थोड़ी बहुत खेती होती है। यहां के आलू सबसे अधिक स्वादिष्ट माने जाते हैं। ये आलू और धान यहां से चकरौता तक बकरियों पर लाद कर लाये जाते हैं। अन्य कोई साधन यातायात का यहां नहीं है।

परन्तु इतने पर भी यहां की जनता निर्धन है। इस निर्धनता का सबसे बड़ा कारण है यहां के लोगों के स्वभाव की सरलता। पिछले नवम्बर में जब कि चकरौता में आलू का भाव २२) मन था। वही आलू रवांई के खरसाली ग्राम में २) मन बिक रहा था। इस प्रकार निर्यात में तो रवांई की जनता को हानि होती ही है आयात में भी वे नुकसान में रहते हैं। नमक उन्हें १६) मन मिलता है।

हिमालय का एक दृश्य

ऊंची जगहों में चौलाई, कुट्टू और मंगोरा की खेती होती है। मंगोरा और जौ का उपयोग अधिकतर शराब बनाने में किया जाता है। प्रति वर्ष लगभग पांच हजार मन चावल यहां से बाहर जाता है।

यहां का मुख्य धन्धा खेती है। परन्तु रिंगाल और सेलू से कुछ ग्रामोद्योग भी चलते हैं। सेलू से दरियां और रिंगाल से टोकरी बनाई जाती हैं। इसके अलावा प्रत्येक रवांई निवासी ऊन कातने और बुनने का कार्य करता है और अधिकतर स्त्री पुरुष अपने ऊनी कपड़े स्वयं ही बना लेते हैं। परन्तु इधर जंगल के नियमों में कड़ाई हो जाने के कारण भेड़ पालने का धन्धा कम होता जा रहा है।

आर्थिक स्थिति

इतनी अधिक उपज होते हुए भी यहां के हरिजनों (कोल्टा, डोवा, डूम और औजी) की आर्थिक दशा शोचनीय है। इन लोगों को भरपेट खाना तक नहीं नसीब होता। विवाह तथा दूसरे कामों के लिये जमींदार से कर्जा लेकर प्रायः सारी उम्र के लिये सूद पर उसके दास हो जाते हैं।

स्त्रियों की दशा

स्त्रियों की दशा तो यहां हरिजनों से भी बदतर है। छूट और तलाक प्रथा का बुरा परिणाम इन्हें ही भुगतना होता है। इसी गरीबी के कारण पिछले २५ वर्षों से अपनी स्त्रियों को वेश्यावृत्ति के लिये नीचे शहरों में ले जाने का रिवाज हो गया है। और आज इस बुराई की जड़ें बहुत गहरे तक पहुंच गई हैं। कन्या विक्रय की प्रथा भी यहां प्रचलित है।

पहाड़ी जीवन में यदि स्त्री पुरुष सभी लोग अधिक मेहनत न करें तो भरपेट खाने को नहीं प्राप्त हो सकता। खेती यहां का मुख्य धन्धा है। और जमीन यहां एक तो वैसे ही कम है और जो है, भी वह एक स्थान पर नहीं। वहां भी ऊंचे नीचे पहाड़ों में थोड़ी सी खेती योग्य जमीन दीखी, वहीं किसान ने खेत बना लिया। इस कारण प्रत्येक किसान को अनेकों स्थानों पर खेती करनी होती है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक बार वर्षा काल में खेत टूट जाते हैं। समतल स्थान न होने और पत्थरों की अधिकता के कारण वर्षा ऋतु में जमीन के पोषक तत्व जो खाद का काम करते हैं, बह जाते हैं। अतः प्रति वर्ष जमीन में यदि खाद न डाला जाय, तो उपज नहीं होती। खेतों तक खाद पहुँचाना तथा उसके लिये जंगल से पत्तियां बीनकर लाने का सारा काम पीठ पर ही करना होता है। इस प्रकार काम का अधिकांश बोझ स्त्रियों पर पड़ता है।

हल चलाने और लकड़ी लाने के अलावा और सारे ही बाहरी काम स्त्रियों को ही करने होते हैं। फिर उसके साथ २ घर का सारा काम तो स्त्री के ऊपर होता ही है। इन सबके साथ अपने एक से अधिक पतियों को भी उन्हें प्रसन्न रखना होता है। पुरुष यह समझता है कि उसने स्त्री को पैसा देकर खरीदा है। अतः उससे बैल की तरह पूरा २ काम लिया जाना चाहिये। परन्तु वास्तव में उससे बैल से भी अधिक कार्य लिया जाना चाहिये। परन्तु वास्तव में उससे बैल से भी अधिक कार्य लिया जाता है। यहां एक कन्या का मूल्य ५००) से लेकर १५००) तक होता है। अतः ससुराल वाले काम के लिये उसे पीटते भी हैं और कहा जाता है—

"तेरे बाप ने कोई मुफ्त थोड़े ही दिया है जो हराम का तुझे खिलायें।" इस प्रकार यहां लड़कियों को पाल पोसकर बेचना यहां कमाई का एक बड़ा साधन है।

प्रसव काल में तो यहां की नारी की दशा बड़ी ही दर्दनाक है। दाई का काम करने वाली यहां एक भी स्त्री नहीं है। नतीजा यह होता है कि अनेकों स्त्रियों की प्रसवकाल में अकालमृत्यु हो जाती है और अनेकों उचित चिकित्सा न होने के कारण सदैव के लिये रोगग्रस्त हो जाती हैं। प्रसव के पश्चात् स्त्री को जो विश्राम मिलना चाहिये, वह भी उन्हें नहीं मिलता। बहुधा ५ दिन के बाद ही जच्चा को खेतों पर जाना होता है। तलाक की प्रथा का होना यहां की नारी का सबसे बड़ा अभिशाप है

बहुपति प्रथा का दुष्परिणाम

उत्तरी रवांई में आम तौर पर एवं दक्षिणी भाग में निर्धन परिवारों में प्रथा प्रचलित है। प्राय: घर के सब भाइयों की एक ही पत्नी होती है। क्योंकि पहाड़ का जीवन बहुत कठिन तथा आर्थिक दशा बहुत खराब है और सामूहिक पारिवारिक जीवन के बिना चल नहीं सकता। अतः यहां उक्त प्रथा का आर्थिक महत्व है। "यदि सब भाई पृथक् २ शादियां कर तो उनके लिये पृथक २ घर, बरतन और खेत चाहिये अब एक ही होने के कारण सब भाई मिलकर रहते हैं। एक ही घर से काम चल जाता है। अलग-अलग विवाह करें तो एक पीढ़ी तो घर बनाने और गृहस्थी का सामान जुटाने में ही समाप्त हो जाय।

उक्त प्रथा का आर्थिक महत्व चाहे जो हो। स्त्रियों की दशा बहुत बुरी है। स्त्री का स्वतन्त्र अस्तित्व कुछ नहीं है। इस अस्वाभाविक प्रथा का स्त्री के स्वास्थ्य पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है और यही कारण है कि संसर्गजन्य गन्दी बीमारियां यहां बहुत पाई जाती हैं। प्रेम अथवा दाम्पत्य सुख का यहां के जीवन में कोई स्थान नहीं।

सम्पत्ति में स्त्री का कोई अधिकार नहीं माना जाता। माता पिता के घर से जो कुछ उसे मिलता है, वही उसकी

(शेष पृष्ठ २० पर)

१-वार्ता

पाकिस्तान पहिले युद्ध की तैयारियां बन्द करे

श्री पुरुषोत्तमदास टंडन

कांग्रेस अध्यक्ष की पूर्ण विजय

किदवई काण्ड समाप्त : भारत में पाक गुप्तचर

श्री रफीअहमद किदवई

चुनाव ५२ में

भारत के मुख्य चुनाव कमिश्नर श्री कुमार सेन ने बताया कि हिमाचल प्रदेश और पंजाब एवं उत्तर प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों के लोग अक्तूबर में मत दें गे, यद्यपि देश के शेष भागों में चुनाव जनवरी के प्रथम सप्ताह में आरम्भ होंगे और तीन सप्ताह के भीतर समाप्त हो जायेंगे।

हिमाचल प्रदेश और पंजाब के पहाड़ी भागों में जल्दी चुनाव होने का कारण यह है कि इन क्षेत्रों में जाड़े में बर्फ जम जायेगी और मतदान असम्भव हो जायगा।

हिमाचल प्रदेश से तीन सदस्य लोकसभा में और ३७ सदस्य राज्य के निर्वाचन मण्डल में वयस्क मताधिकार के आधार पर चुने जायेंगे। दोनों के चुनाव साथ साथ होंगे। पंजाब के अन्तर्गत हिमाचल प्रदेश में संसद का एक सदस्य और राज्य की विधान-सभा के सात सदस्य होंगे।

नियम के अनुसार चुनाव की तारीखों की सूचना मतदान से कम से कम ४८ दिन पूर्व दे दी जानी चाहिये। यह आशा की जाती है कि चुनाव कमिश्नर राष्ट्रपति से इस आशय का अनुरोध करेंगे कि इस मास के अन्त में पूर्व या सितम्बर के पहिले सप्ताह तक राष्ट्रपति विज्ञप्ति निकालें।

पहिले यह आशा थी कि मतदान में दो मास लगेंगे अर्थात नवम्बर और दिसम्बर में वे समाप्त हो जायेंगे। किन्तु तारीखें जनवरी १९५२ में हटा दी गई जिसकी प्रार्थना ४ बड़े राज्यों ने की थी। यह मतदान तीन सप्ताह में ही हो सकेगा।

राज्यों की सरकारों को कहा गया है कि वे चुनाव कमिश्नर को अनुकूल तारीखें सूचित करें और अपने मतदान के कार्यक्रम बता दें। उनकी सूचना के बाद ही चुनाव कमिश्नर राष्ट्रपति को चुनाव की निश्चित तारीखों के सम्बन्ध में विज्ञप्ति निकालने की सलाह देंगे।

चुनाव क्षेत्रों का निर्धारण अन्तिम रूप से संसद में परिवर्तित और स्वीकृत रूप में एक सप्ताह के भीतर प्रकाशित कर दिया जायगा और इस मास के अन्त से पूर्व ही मतदाता-सूचियां प्रकाशित करदी जायेंगी।

किदवई काण्ड समाप्त

ज्ञात हुआ है कि श्री रफी अहमद किदवई ने अपने मन्त्रिपद से त्यागपत्र दे दिया और वह राष्ट्रपति के द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। इसके साथ इस बीच प० नेहरू तथा श्री किदवई के मध्य हुआ पत्र व्यवहार भी प्रकाशित हो गया है। अपने पत्र में प० नेहरू ने यह लिखा है कि मन्त्रिमण्डल में रहते हुए किसी भी मंत्री को कांग्रेस के विरोध में काम करने की स्थिति उचित नहीं है। यहां व्यक्तिगत सम्बन्धों को नहीं लाना चाहिये क्योंकि विवादास्पद विषय व्यक्तियों से कहीं ऊंचे हैं। श्री रफी अहमद किदवई ने अपने पत्र में लिखा है कि मैंने यह निश्चय कर लिया है कि एक अन्य राजनीतिक दल में सम्मिलित हो जाऊं। ऐसी स्थिति में यही उचित है कि मैं मन्त्रिपद से त्यागपत्र दे दूं और आप उसे स्वीकार कर लें।

राजनीतिक क्षेत्रों का कथन है कि प० नेहरू ने यह तय कर लिया है कि वे कांग्रेस में रहेंगे और इसीलिए टण्डन जी से उनको लड़ाने का श्री किदवई का यह दांव खाली गया और उन्हें मन्त्रिपद अकेले ही छोड़ना पड़ा। यह निर्णय करने के पश्चात् ही प० नेहरू ने आगामी चुनावकी दृष्टि से चुनाव भाषण आरम्भ कर दिये हैं। इस सम्बन्ध में प्रथम भाषण राजधानी में गत रविवार को हुआ था।

अन्य क्षेत्रों का यह भी कथन है कि इस विवाद का लाभ उठा कर टण्डनजी ने न केवल नेहरूजी व किदवई को पृथक कर दिया वरन् स्वयं प्रधानमन्त्री से भी यह स्वीकार करा लिया कि कांग्रेस अध्यक्ष का स्थान उनसे ऊंचा है। इसलिए इस घटना को टण्डनजी की बहुत बड़ी विजय समझा जा रहा है।

लियाकत को उत्तर

प्रधान मन्त्री प० नेहरू ने श्री लियाकत अली खां के पत्र का उत्तर देते हुए यह स्पष्ट कर दिया है कि जब तक पाकिस्तान में युद्ध का उन्माद ठंडा नहीं हो जाता भारत सुरक्षा के लिए नियोजित सेनाओं को नहीं हटाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि मैं इस विषय को परस्पर चर्चा द्वारा हल करने के लिए सदैव तत्पर हूं और इसके लिए आपको दिल्ली आने का निमन्त्रण देता हूं। इस निमन्त्रण के साथ कोई शर्त नहीं लगी है आपकी जब इच्छा हो आप भारत आ सकते हैं।

इसी विषय पर प्रकाश डालने के लिए रविवार को राजधानी में हुई एक विशाल सभा में भाषण देते हुए प्रधान मन्त्री ने कहा कि यह दुख की बात है कि पाकिस्तान की युद्ध तैयारियों के समाचारों से दिल्ली तथा पूर्वी पंजाब की जनता में किसी प्रकार का भय नहीं फैला। पाकिस्तान द्वारा युद्ध की तैयारियों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हमारा इरादा पाकिस्तान या अन्य किसी देश पर आक्रमण करने का नहीं है। किन्तु भारत की सुरक्षा की दृष्टि से हम अपने कदम को आवश्यक समझते हैं।

प० नेहरु ने कहा कि पाकिस्तान ने धूसे को अपना राष्ट्रीय चिन्ह चुना है। इसका क्या मतलब होता है यह वे ही जाने। भारत का राष्ट्रीय चिन्ह अशोक चक्र है यह भारत की भावना का प्रतीक है। यह शान्ति तथा धर्म का चिन्ह है। दोनों राष्ट्रीय चिन्हों से दोनों देशों की मनोवृत्ति प्रकट होती है। प्रधानमन्त्री ने यह विश्वास दिलाया कि सरकार प्रत्येक परिस्थिति के लिए तैयार है और जनता को भयभीत होने का कोई कारण नहीं।

पाक गुप्तचर

भारत में पाक गुप्तचरों के पकड़े जाने के अधिकाधिक समाचार प्राप्त हो रहे हैं। अनुमान है कि इस सम्बन्ध में बन्दी बनाये गए लोगों की संख्या सैकड़ों में है। स्वयं काश्मीर तथा जम्मू प्रदेश में ही इनकी एक बहुत बड़ी संख्या बन्दी बनायी गयी है। हाल ही में पश्चिमी बंगाल में भी इसी प्रकार गिरफ्तारियां हुई हैं।

[शेष पृष्ठ २१ पर]

प० जवाहरलाल नेहरू सार्वजनिक सभा में भाषण दे रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय हल

कोरिया-वार्ता में विराम रेखा के प्रश्न पर गतिरोध

ब्रिटिश प्रतिनिधि ईरान जायेंगे

जापानी संधि पर प्रधान चीनी सेनापति चूतेह का क्रोध

अमेरिकी विदेश मन्त्री श्री एचेसन

ईरान की समस्या में सुधार

ब्रिटिश राजदूत सर फ्रांसिस शैफर्ड द्वारा ईरान के शाह से मिलने तथा ईरानी प्रस्तावों पर विचार करने के कारण स्थिति में कुछ सुधार की सम्भावना है। श्री हैरीमैन के सुझाव पर ईरान सरकार भी ब्रिटेन से समझौता चर्चा करने के लिये तैयार हो गई है। इधर अबादान में आंग्ल ईरान तेल कम्पनी का शोधक कारखाना पूरी तरह से बन्द हो गया है। कारखाने के ब्रिटिश कर्मचारियों को कुछ काल के लिये अवकाश पर भेजा जा रहा है। ईरान सरकार की देख रेख में कारखाने का पूर्ण हस्तान्तरण किये जाने तथा जाने वाले कर्मचारियों के स्थान पर अन्य कुशल कर्मचारियों की नियुक्ति तक कारखाना बन्द रखने का निश्चय किया गया है। श्री हैरीमैन ने स्थिति को सन्तोषजनक बताया है। श्री हैरीमैन ने इस सम्बन्ध में अमेरिकी राजदूत डा० हेनरी ग्रेडी से भी बातचीत की है। समझौता वार्ता से पूर्व ब्रिटिश प्रतिनिधि ने तेहरान सरकार से दो बातों के सम्बन्ध में स्पष्टीकरण मांगा है। पहिली बात तो यह है कि ब्रिटेन ने राष्ट्रीयकरण के सिद्धान्त को जो स्वीकार किया है, उसके सम्बन्ध में ईरान सरकार ने क्या अर्थ लगाया है। ब्रिटिश राजदूत का कथन है कि जब तक इस प्रस्ताव का स्पष्टीकरण नहीं हो जाता, तब तक कुछ प्रश्नों पर बाधायें बने रहने की सम्भावना है तथा स्पष्टीकरण हो जाने से सुलह वार्ता निर्विवाद रूप से चल सकती है। दूसरी बात है अबादान स्थिति ब्रिटिश कर्मचारियों के प्रति ईरानी अधिकारियों का दुर्व्यवहार। जब तक ईरान सरकार ब्रिटिश अधिकारियों के साथ सद्व्यवहार किये जाने का आश्वासन नहीं दे देती तब तक सुलह-वार्ता सफल होने में सन्देह है।

कोरिया वार्ता में पुन. गतिरोध

अमेरिका विदेश मन्त्री श्री डीन अचेसन ने ३८वीं अक्षांश पर विराम-रेखा का कम्यूनिस्ट प्रस्ताव अमान्य कर दिया है। एक संयुक्त राष्ट्रीय प्रवक्ता के अनुसार काएसोंग में ४५ मिनट तक हुई १४ वीं बैठक में संयुक्त राष्ट्रीय तथा कम्यूनिस्ट प्रतिनिधि मण्डलों के बीच मतभेद यथापूर्व रहे। युद्ध विराम वार्ता में सबसे बड़ी सम्भावित बाधा विदेशी फौजों की वापिसी का प्रश्न था। इस प्रश्न पर पहले भी वार्ता भंग होने की नौबत आ चुकी है। बाद में जब साम्यवादी प्रतिनिधि इस प्रश्न को विचारणीय विषयों की सूची से हटाने को तैयार हो गये, तो यह निर्णय हुआ कि इस प्रश्न पर बाद में भी विचार हो सकता है। गत सप्ताह अमेरिका के रक्षा मन्त्री जार्ज मार्शल ने कुछ आधारभूत शर्तें रखी थीं उन शर्तों पर सभी एकमत हो सकेंगे ऐसी सम्भावना प्रतीत नहीं होती। सम्भव है युद्ध विराम पंक्ति के बारे में मतभेद उत्पन्न हो जावे। साम्यवादी युद्ध विराम पंक्ति ३८ वें अक्षांश पर चाहते हैं जब कि संयुक्त राष्ट्रीय प्रतिनिधि ३८ वें अक्षांश के १२-२० मील उत्तर तक उक्त पंक्ति को रखना चाहते हैं। मास्को रेडियो ने सम्भावना प्रकट की है कि कोरियाई वार्ता के पश्चात् पांच बड़े राष्ट्रों में शान्ति समझौता हो सकेगा। सम्भव है कोरिया की युद्ध-बन्दी शान्ति सन्धि की पहली सीढ़ी हो।

इधर चीनी कमाण्डरों ने यह भी घोषणा की है अगर राष्ट्र संघीय प्रतिनिधि असम्भव तथा असंगत मांगों पर अड़े रहे तो वार्ता भंग हो जाने की सम्भावना है। चीनी सैनिक अधिकारी इस बात पर ही जोर दे रहे हैं कि युद्ध-बन्दी रेखा ३८ वीं अक्षांश के ही दोनों ओर हो और दोनों पक्ष उसे स्वीकार कर लें। इस समय तक दोनों ही पक्ष अपनी अपनी मांगों पर दृढ़ हैं किन्तु निकट भविष्य में आशा है कि दोनों पक्षों को किसी न किसी मध्य मार्ग का अवलम्बन करना पड़ेगा अन्यथा युद्ध बन्दी वार्ता में पहले की ही भांति पुनः गतिरोध उत्पन्न हो जायगा।

सीरिया में वैधानिक संकट

सीरिया के बीस हजार सरकारी कर्मचारियों के हड़ताल कर देने के कारण सीरिया का मन्त्रिमण्डल अनिश्चित स्थिति में बना हुआ है। इस हड़ताल के कारण समस्त सरकारी तथा व्यापारिक कार्य प्रायः बन्द से हो गये हैं। प्रधानमन्त्री खलेदा एल आजम ने अपने स्तीफे के समाचार की न अब तक पुष्टि की है और नहीं खण्डन इससे स्थिति और भी अनिश्चयात्मक सी हो गई है। पार्लियामैंट का समर्थन प्राप्त न होने के कारण आजम की स्थिति डांवाडोल सी प्रतीत होती है। सीरिया के वर्तमान प्रेजीडैंट हशेम एल अतासी पाशा ने सरकार पर पापुलिस्ट दल का सहयोग प्राप्त कर कुछ वैधानिक परिवर्तन करने पर जोर डाला है।

चीनी सेनापति जनरल चूतेह

जापानी शान्ति सन्धि

चीनी प्रधान सेनापति जनरल चूतेह ने अपने एक भाषण में घोषणा की है कि साम्यवादी चीन की सदा से ही यह इच्छा है कि कोरियाकी समस्या का शान्तिपूर्ण हल निकाला जाय। जनरल चूतेह ने इस बात का तीव्र विरोध किया है कि जापानी शान्ति सन्धि में भाग लेने से चीन की जनता को वंचित किया गया है। आपने अमेरिका पर आरोप लगाया कि अमेरिका ऊपर से शान्ति का ढोंग करते हुये भी कोरिया में अपना साम्राज्यवादी पंजा गड़ाये रखना चाहता है। जापानी शान्ति सन्धि के सम्बन्ध में अभी भारत ने भी अपनी निर्णायक सम्मति नहीं दी है। भारत सितम्बर में जापानी शान्ति सन्धि को स्वीकार करने के लिये होने वाले सानफ्रांसिस्को सम्मेलन में भाग लेगा या नहीं यह अभी तक अनिश्चित है। कहा जाता है कि भारत सरकार न केवल जापान को बराबरी का अधिकार देने के पक्ष में है उसे संयुक्त राष्ट्र संघ में अधिकार दिलाना चाहती है। भारत यह भी चाहता है कि केवल जापान ही नहीं यदि अन्य देश भी चाहें जो सुदूर पूर्व के मामले में हितैषी हैं अलग से सन्धि कर सकते हैं। इसी सन्धि में सम्मिलित हो सकते हैं। अमेरिका के प्रेजीडैंट ट्रूमैन ने भी सानफ्रांसिस्को में होने वाले इस सम्मेलन में सम्मिलित होने की घोषणा करदी है।

अबादान का विश्वविख्यात तेल कारखाना जिसमें कार्य बन्द हो गया है।

पाकिस्तान से युद्ध के नारों की आवाज लगातार आ रही है!

पाकिस्तान से जिस प्रकार लड़ाई के बिगुलों की आवाज़ आ रही और जेहाद के नारे आकाश में उठ रहे हैं उससे भारत तथा पाकिस्तान के मध्य युद्ध की सम्भावना बहुत बढ़ गई है। काश्मीर के विषय में पाकिस्तान के इरादे किसी से छिपे हुए नहीं हैं। पाक प्रधानमन्त्री तथा अन्य अनेकों उत्तरदायी लोग यह अनेक बार कह चुके हैं कि यदि भारत ने हमारे लिए काश्मीर नहीं छोड़ा तो हम शस्त्रों के बल पर काश्मीर को विजय करेंगे। दूसरी ओर भारत सरकार यह घोषणा पहिले ही कर चुकी है कि यदि पाकिस्तान ने काश्मीर पर आक्रमण किया तो वह केवल स्थानीय युद्ध नहीं रहेगा, वरन उसे भारत पर ही आक्रमण माना जायगा और उसका उत्तर पाकिस्तान को सीधा दिया जायगा।

सैनिक तैयारिया

काश्मीर में युद्ध विराम रेखा के दूसरी ओर तथाकथित आज़ाद काश्मीर क्षेत्र तो पाकिस्तानी छावनी का ही रूप लगभग ले चुका है। यह सारा समय पाकिस्तान ने इस प्रदेश में सड़कें तथा पुल बनाने तथा अधिकाधिक सेना एवं अस्त्रास्त्र इकट्ठे करने में ही व्यतीत किया है। इसके फलस्वरूप काश्मीर पर आक्रमण करने के लिये एक सन्नद्ध सेना पाकिस्तान ने वहां खड़ी करली है।

पश्चिमी पाकिस्तान

इसके साथ ही समस्त पश्चिमी पाकिस्तान में युद्ध का वातावरण जोरों से गरम है। पश्चिमी पजाब के सभी प्रमुख नगरों में वायुसुरक्षा के उपायों की तैयारी, रात्रि को पूर्णत अन्धकार रखने के अभ्यास तथा सैनिक प्रदर्शन हो रहे हैं। पाकिस्तानी प्रेस भारत के विरुद्ध विष उगलने में संलग्न है। जेहाद की चर्चा जोरों पर है। भारत की सीमा पर सेनाओं का जमाव किया जा रहा है। इस प्रकार सारे पाकिस्तान में लोगों की मनोवृत्ति युद्ध के अनुकूल बनायी जा रही है।

सीमाप्रान्त के क्षेत्र में कबाइलियों व पठानों में निरन्तर भारत के विरुद्ध युद्ध का प्रचार किया जा रहा है। काश्मीर के युद्ध को धर्म युद्ध बनाकर उन्हें पुन काश्मीर के धावे में भाग लेने के लिए उकसाया जा रहा है। सिन्ध में भी युद्ध का वातावरण गरम है करांची में सब से अधिक। लीगी नेशनल गार्ड के सदस्य स्थान स्थान पर प्रदर्शन कर रहे हैं। हाल ही में २०० सदस्यों का स्व० जिन्ना की कब्र पर प्रतिज्ञा कर अपने रक्त से हस्ताक्षर करने का समाचार प्राप्त हुआ। इस प्रकार उग्रता बढ़ती जा रही है।

क्या भारत पाक युद्ध होगा?

श्री "आनन्द"

पूर्वी बगाल

ऐसी ही दशा पूर्वी पाकिस्तान की है। वहा सैन्यसग्रह तथा सैनिक केन्द्रों की सख्या लगातार बढ़ रही है। वायु कार्यवाही भी जोरों से हो रही है। सीमावर्ती प्रदेश हिन्दुओं से रहित पहिले ही कर दिया गया है। सुरक्षा के नाम पर बहुत बड़ी सख्या में कार, ट्रक व नावें आदि एकत्रित करली गई हैं। अन्सारों की भी भारी तैयारियां चल रही हैं। पश्चिमी बगाल व आसाम की सीमा पर सेना इकट्ठी की जा रही है।

भारत की सुरक्षा

पाकिस्तान की इन तैयारियों को देखकर सुरक्षा की दृष्टि से भारत ने अपनी सीमाओं पर अपनी सेना इकट्ठी करली है जिससे आक्रमण की सम्भावना को यथासभव दूर रखा जा सके और यदि आक्रमण हो ही तो हम सोते हुए न पकड़े जांय। भारत की इस कार्यवाही को 'पाकिस्तान पर आक्रमण का इरादा' कहकर पाकिस्तान में सर्वत्र प्रचार किया जा रहा है। यह कहा जा रहा है कि भारत द्वारा पाकसीमा पर सैनिक जमाव पाकिस्तान पर आक्रमण के विचार से किया गया है और इससे पाकिस्तान की सुरक्षा को भारी भय होगया है तथा भारत के इरादों को पूरा न होने देने के लिए प्रत्येक पाकिस्तानी तैयार रहे।

युद्ध की सम्भावना

इन सब समाचारों के देखने से अधिकांश को यह प्रतीत होता है कि भारत तथा पाकिस्तान में युद्ध हो जायगा और हमें उसके लिए तैयार रहना चाहिये। जहा तक हमारे तैयार रहने का प्रश्न है इसमें किसी प्रकार के दो मत होने का प्रश्न नहीं उठता। एक स्वतन्त्र राष्ट्र को सदा ही ऐसी स्थिति का सामना करने के लिए कटिबद्ध रहना चाहिये, जो उसकी स्वतन्त्रता के लिए भयजनक हो, अथवा अपमानकारक हो। किन्तु भारत तथा पाकिस्तान में वर्तमान परिस्थिति में युद्ध होगा, इसमें मुझे बहुत सदेह है।

कांग्रेस की दुर्बलता

यदि हम विचार करेंगे तो दिखाई देगा कि मुस्लिम लीग और बाद में पाकिस्तान आरम्भ से ही कांग्रेसी नेताओं की एक भावना का अनुचित लाभ उठाते रहे हैं और वह भावना है इनकी युद्ध अथवा सघर्ष टालने की वृत्ति। अंग्रेजों के समय से लेकर आज तक बराबर इनका एक ही ढग रहा है और वह है सघर्ष की धमकी। और आज तक प्रत्येक प्रसग पर इस धमकी से घबरा कर ही कांग्रेसी नेता उनकी मांग स्वीकार करते आये हैं।

पाकिस्तान का जन्म इसी प्रकार की धमकी का परिणाम है। मुस्लिम लीग ने यह धमकी दी थी कि यदि पाकिस्तान स्वीकार नहीं किया गया तो सारे देश में खून खराबा हो जायगा और इस धमकी में थोड़ा ज़ोर लाने के लिए कलकत्ते की 'सीधी कार्यवाही', नोआखाली काण्ड तथा पंजाब में हुए मार्च १९४७ के दगे किये गये। स्मरण रहे ये सब बातें पंजाब तथा बगाल में ही हुई थीं, जहां कि मुस्लिम सरकारें थीं। इन काण्डों से घबड़ा कर कांग्रेस ने पाकिस्तान स्वीकार कर लिया।

विभाजन के पूर्व के मुस्लिम लीग के इतिहास से जो परिचित हैं वे जानते हैं कि महात्मा गांधी तथा अन्यान्य कांग्रेसी नेताओं ने तथाकथित एकता स्थापित करने के लिए लीगियों की कितनी ही अनुचित मांगें स्वीकार कीं किन्तु वह एकता कभी भी नहीं आयी। विभाजन के पश्चात भी पश्चिमी पाकिस्तान में हिन्दुओं का विनाश आरम्भ हुआ और हमारे नेता नयी दिल्ली में बैठे बैठे देखते रहे। यह अत्याचार तभी रुके जब भारत सरकार के रोकने पर भी भारत में उसकी अवश्यभावी प्रतिक्रिया हुई।

सघर्ष टालने की वृत्ति

काश्मीर पर पाकिस्तान ने आक्रमण किया और हम यह कहने से हिचकते रहे कि यह पाकिस्तान का आक्रमण है। सघर्ष टालने की हमारे नेताओं की बेचैनी इतनी अधिक थी कि जिस समय हम जीत रहे थे और यह दिखाई दे रहा था कि कुछ समय में हमारे वीर सैनिक शत्रु को पूर्णत खदेड़ देंगे हमने सन्धि कर ली और काश्मीर राज्य के एक तिहाई भाग पर पाकिस्तान का अधिकार बना रहने दिया।

गत वर्ष

पूर्वी बगाल में व्यापक विनाश आरम्भ होने के समय भी ऐसी ही युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। भारत द्वारा कोयला न देने तथा जूट न खरीदने के कारण पूर्वी बगाल की आर्थिक स्थिति शोचनीय हो गयी थी। आसाम पर हो रहे शान्त मुस्लिम आक्रमण को रोकने के प्रयत्न किये जा रहे थे। पूर्वी बगाल से बहुत बड़ी सख्या में मुसलमान निकल कर आसाम में, विशेषकर उसके सीमावर्ती जिलों में, बस रहे थे। इसके परिणाम स्वरूप वे सीमावर्ती भाग मुस्लिमबहुल हो गये थे। भारत सरकार का विचार था कि भारत में आकर इस प्रकार बसे हुए कई लाख मुसलमानों को निकाल कर उन्हें पुन

(शेष पृष्ठ २१ पर)

श्रद्धांजलि !

जिस महापुरुष की दिव्य वाणी ने आत्म विस्मृत हो निराशा के अथाह सागर में डूबते हुए भारत को एक अवलम्ब प्रदान किया, जिसके मुखारविन्द से निकले हुए रामचरितामृत ने मृतप्राय हिन्दूराष्ट्र को नवजीवन दिया, जिसके मानस से प्रवाहित हुई गंगा ने राष्ट्र के कण-कण को पवित्र करते हुए ज्ञान कर्म तथा भक्ति की ऐसी अपूर्व त्रिवेणी का रूप लिया जिसके पावन स्पर्श ने भारत के नर नारियों को श्रद्धा तथा विश्वास का कवच प्रदान किया, जिस सुकवि को पाकर स्वयं भाषा धन्य हो गई, उन्हीं राष्ट्रकवि श्री गोस्वामी तुलसीदासजी की जयन्ती ९ अगस्त को मनायी जा रही है। श्री गोस्वामीजी के रूप में एक कवि, एक महात्मा एक राष्ट्रनिर्माता एक देशोद्धारक सभी व्यक्तित्व एकीभूत हो गए हैं। उनकी जयन्ती एक महान् राष्ट्रीय पर्व है। उनकी पावन स्मृति में सम्पूर्ण राष्ट्र के साथ हम श्रद्धावनत हैं।

मध्यपूर्व लेखमाला—२

ट्रांसजोर्डन का परिचय

[श्री नीरस योगी]

श्री ग्लब पाशा

शाह अब्दुल्ला

मध्यपूर्व के मुस्लिम राष्ट्र सदैव से अपने साथी राष्ट्रों को आशंका की दृष्टि से देखते रहे हैं। मानव-जीवन का मूल्य इन देशों में पशु के बकरे से अधिक नहीं समझा जाता है। गत ३ वर्षों में इस भू प्रदेश में अनेकों राजनैतिक हत्यायें हुई हैं। पदलोलुपता निजी स्वार्थ, व धर्मान्धता ही इन हत्याओं का

पश्चिमी राष्ट्रों का व्यापक कुचक्र

मुख्य कारण है। जोर्डन के शाह अब्दुल्ला भी उन्हीं दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्तियों में से थे। अरब राष्ट्रों में इस हत्या के कारण अनेकों प्रतिक्रियायें हुई हैं। तथ्य की दृष्टि से केवल इतना कहा जा सकता है अरब लीग ने अपने बुद्धिमान् भाग्य विधाताओं में से एक को खो दिया है। जोर्डन इस समय विपत्तियों में से गुजर रहा है। पड़ोसी राष्ट्र उसकी इस विपत्ति से लाभ उठाने की धुन में हैं। स्वयं जोर्डन की स्थानीय राजनीति में दिन प्रतिदिन उथल पुथल हो रही है। उत्तराधिकार के विषय में अभी स्थानीय राजनीतिज्ञ अन्तिम निर्णय पर नहीं पहुँच पाये हैं। इतना अवश्य स्पष्ट है कि इन हत्याओं का संचालन किसी संगठित शक्ति द्वारा किया जाता है। ट्रांस जोर्डन की स्थिति को समझने के लिये उसके इतिहास व सामाजिक दशाओं पर दृष्टि पात करना आवश्यक है।

इतिहास व राजनीति

देश का उत्तरी भाग ईसा से प्राय १००० वर्ष पहले इजराईल के अन्तर्गत था। रोमन साम्राज्य के समय में भी इस भू भाग पर अनेकों आपत्तियां आईं। इतना सब होते हुए भी देश दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहा था। मुसलमानों के आगमन से पहले अरबों के राजा खोसरू ने इस प्रदेश को खूब नष्ट भ्रष्ट किया। सातवीं शताब्दी में मुसलमानों के आगमन के समय प्राय सारी जनसंख्या खानाबदोश हो चुकी थी। यह अपने जीवन-यापन के लिये पशुओं के साथ-साथ सब स्थानों पर भ्रमण करते रहते थे। देश की अव्यवस्था के कारण व्यापार प्राय समाप्त हो चुका था। अन्त में इस विस्तृत राज्य का १६वीं शताब्दी में अंग्रेजों द्वारा पुन अन्वेषण किया गया।

ओटोमन साम्राज्य के अन्तर्गत

ओटोमन साम्राज्य के अन्तर्गत देश अनेक भागों में बटा हुआ था। प्रथम महायुद्ध में टर्की के हार जाने पर यहां पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया। फ्रांस ने अपने अन्तर्गत प्रदेश सीरिया से शाह फैसल को निकाल दिया। शाह के भाई अब्दुल्ला ने थोड़ी सी सेना लेकर फ्रांस के विरुद्ध आक्रमण करने प्रारम्भ किये। तत्कालीन ब्रिटिश साम्राज्य मन्त्री श्री चर्चिल उन दिनों काहिरा में थे। उन्होंने लारेन्स के साथ मिलकर अब्दुल्ला को एक सम्मेलन में आमन्त्रित किया। अब्दुल्ला ने ब्रिटेन के कहने से फ्रांस का विरोध न करने का निश्चय किया। इसके फलस्वरूप उसे ट्रांस जोर्डन का अमीर घोषित कर दिया

शाह अब्दुल्ला की हत्या से

गया और कुछ आर्थिक सहायता भी दी जाने लगी। ब्रिटेन की नीति उस समय बारूद के स्थान पर धन खर्चने की थी। राष्ट्रसंघ ने भी इस निर्णय को २२ जुलाई १९२२ को मान लिया। यहूदी इस योजना के विरोध में थे क्योंकि वह इस प्रदेश को अपने राष्ट्रीय गृह फिलस्तीन में सम्मिलित करना चाहते थे।

यहूदियों के बढ़ते हुए विरोध के कारण उन पर अनेकों आपत्तियां आईं। उन्हें भूमि अधिकार से वंचित किया जाने लगा। २५ मई १९२२ को ब्रिटेन ने ट्रांसजोर्डन को अपने अन्तर्गत एक स्वतन्त्र प्रदेश मान लिया। २२ फरवरी १९२८ को एक कानून के अनुसार अमीर अब्दुल्ला ने विदेशी व वित्त सम्बन्धी सब कार्यों में ब्रिटेन की सहायता लेना स्वीकार किया। प्राय ६ वर्ष पश्चात् ट्रांसजोर्डन का अन्य अरब देशों में सलाहकार नियुक्त करने की भी आज्ञा दे दी गई। १९३९ में एक श्वेत पत्र द्वारा देश का शासन मन्त्रीमण्डल द्वारा चलाने की घोषणा की गई। १९४२ में वहां पर केवल ६ ब्रिटेनवासी ही सलाहकार के रूप में रह गये थे। १९४९ में ट्रांस जोर्डन को एक पूर्णत स्वतन्त्र राष्ट्र मान लिया गया और अब्दुल्ला को शाह बना दिया गया। देश का नाम भी हाशिमत का राज्य रख दिया गया।

ब्रिटेन के साथ सन्धि

द्वितीय महायुद्ध के समय शाह ने एक सन्धि के अनुसार देश में ब्रिटेन की सेनायें रखना स्वीकार कर लिया। सन्धि के दुहराये जाने पर शाह की स्वतन्त्रता में अनेकों बाधायें पड़ने लगीं। अरब राज्यों के विरोध करने पर देश के सैनिक व सांस्कृतिक विकास करने का दायित्व ब्रिटेन ने उठाना स्वीकार कर लिया।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने यहूदी प्रश्न के कारण इस देश को कुछ समय तक मान्यता प्रदान नहीं की। परन्तु कुछ समय पश्चात् इस प्रदेश की स्वतन्त्रता को स्वीकार कर लिया गया और दो दिन पश्चात् ब्रिटेन ने भी इजराईल के नवीन राष्ट्र को पूर्णत मान्यता प्रदान कर दी।

राज्य की सामाजिक दशा

प्रदेश का क्षेत्रफल ३४७५० वर्ग मील है। जनसंख्या ३ व ४ लाख के मध्य है। देश की जनसंख्या का काफी भाग जीवन यापन सामग्री के अभाव में इधर उधर घूमता है। १९४९ के फिलस्तीन युद्ध के पश्चात काफी मुस्लिम व ईसाई अरब इस प्रदेश में आ गये हैं। इन शरणार्थियों को बसाना ट्रांस जोर्डन से कम साधन देश के लिए एक समस्या है।

ब्रिटेन की स्थिति डांवाडोल

शाह नाज़ियों के साथ राज्य का कार्य करता है। धारासभा में भिन्न भिन्न जातियों के स्थान सुरक्षित हैं। प्रधान मन्त्री की इच्छानुसार सदन के बाहर के योग्य व्यक्ति को मन्त्री भी चुना जा सकता है। देश की सेना अरब राज्य में सबसे अधिक शिक्षित है। उसकी संख्या ६ हजार है और एक ब्रिटिश कमाण्डर ग्लब पाशा उसके सेना पति हैं।

देश का अधिकतर भाग मरुस्थल है। शासन की दृष्टि से बाकी भाग चार भागों में बटा हुआ है। देश की आय नगण्य है। ब्रिटेन द्वारा दिये गए धन से ही शासन कार्य व आवश्यक कार्य पूरे किये जाते हैं। फिलस्तीन युद्ध के पश्चात शरणार्थियों के आने के कारण देश की स्थिति डांवाडोल सी हो गई है।

शिक्षा

राज्य की भाषा अरबी है। प्रत्येक पाठशाला में अंग्रेजी में भी शिक्षा दी जाती है। प्रारम्भिक शिक्षा नि शुल्क है। कला के उत्थान के लिए भी केन्द्र स्थापित किये गये। १९४३ ४४ में पाठशालाओं की व विद्यार्थियों की संख्या इस प्रकार थी।

सरकारी पाठशालायें	६७
विद्यार्थी	९९०७
गैर सरकारी पाठशालायें	८६
विद्यार्थी	५९९४

इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि देश की जनसंख्या का अधिकतर भाग अशिक्षित है,

आर्थिक व प्राकृतिक साधन

ट्रांस जोर्डन एक कृषि प्रधान देश है। प्राकृतिक साधनों की कमी के कारण देश पिछड़ी दशा में है परन्तु भूमि का स्वामित्व स्थाई है। सुधारों के कारण देश की आय बढ़ जाने पर भी देश ब्रिटेन की सहायता पर निर्भर है। यदि तेल प्राप्त हो जाये तब देश की अवस्था में कुछ सुधार अवश्य होगा। बन्दरगाह न होने के कारण भी देश को महान आर्थिक हानि होती है।

कृषि प्रधान देश होते हुए भी कृषि योग्य भूमि बहुत कम है। [illegible]

[शेष पृष्ठ २२ पर]

हमारी राष्ट्रीयता का विशुद्ध स्वरूप भारतीय अथवा हिन्दू राष्ट्र के नवनिर्माण में सांस्कृतिक आधार न लेना भूल है

मिश्रित संस्कृति की रट असत्य तथा भ्रमपूर्ण है भारतीय जनसंघ के कार्यक्रम की गम्भीरता

[श्री बलराज मधोक]

भारतीय संस्कृति तथा परम्पराओं के आधार पर देश के नव निर्माण के लिये सर्व प्रथम आवश्यकता भारतीय संस्कृति पर अवलम्बित विशुद्ध राष्ट्रवाद को जगाने की है। राष्ट्रवाद आज के युग में विशेष रूप से ऐसी शक्ति है जो कि अपने आप को मानने वाले किसी भी जन-समुदाय में नव जीवन और नव उत्साह भर सकती है। राष्ट्रवाद देश-भक्ति के स्रोत का काम देता है। इससे प्रेरित हो कर व्यक्ति अपने देश व जाति के लिये हंसते २ बड़े से बड़ा बलिदान करते रहे हैं और आगे भी कर सकते हैं।

राष्ट्रवाद का महत्व

निर्बल शोषित व असंगठित देशों के लिये राष्ट्रवाद का विशेष महत्व है। राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत होने से लोग अपने व्यक्तिगत, दलगत अथवा वर्गिक स्वार्थों से ऊपर उठ कर सारे देश की दृष्टि से सोच सकते हैं। इस प्रकार राष्ट्रवाद किसी भी राष्ट्र के विभिन्न पक्षों, वर्गों व सम्प्रदायों में राष्ट्रहित तथा एकता का सूत्रपात करता है। यह सब लोगों की दृष्टि देश के ऐसे महापुरुषों, इतिहास व संस्कृति पर केन्द्रित कर देता है जो कि आपत्तिकाल में तो अवश्य ही उन सब को राष्ट्रहित में इकट्ठा कर देते हैं। इंग्लैंड राष्ट्रवाद के इन गुणों का जीता जागता चित्र है। वहां प्रबल राष्ट्रवाद होने के कारण लेबर व कनजरवेटिव, प्रोटेस्टेंट व केथोलिक सभी देश हित के लिए इकट्ठे होते रहे हैं और आगे भी उस के लिये सदा तैयार रहते हैं। इस प्रकार सच्ची राष्ट्रीयता देश व जाति की एकता व संगठन का साधन बन जाती है।

राष्ट्रीयता का आधार

राष्ट्रीयता का आधार राष्ट्र भावना है। जिन लोगों मे एक राष्ट्र होने का भाव और उसके लिये आवश्यक सम्मान चिन्ह विद्यमान हों उन्ही मे राष्ट्रवाद पनप सकता है। जिन लोगों में कोई समान भाव न हो उनको एक राष्ट्र बनाना सर्वथा कठिन होता है।

संसार में राजनीति शास्त्र के प्रमुख पंडितों ने राष्ट्र को एक जीवित मनुष्य को शरीर के अनुरूप बताया है। जिस प्रकार जीवित मनुष्य शरीर के लिए मास हड्डी का पिंजर और आत्मा का होना आवश्यक है उसी प्रकार एक राष्ट्र के लिये देश का पिंजर और उसमें संस्कृतिरूपी आत्मा का होना आवश्यक है। बिना अपनी भूमि के कोई भी जन समुदाय चाहे उस में राष्ट्र भावना कितनी भी तीव्र क्यों न हो एक राष्ट्र नहीं कहला सकता। यहूदी आज से तीन वर्ष पहिले तक सारे संसार में फैले हुये थे। उनकी भाषा एक है, परन्तु अपना कोई देश न होने के कारण वे अपने आप को एक राष्ट्र नहीं कह सकते थे। अब उन्होंने फिलस्तीन में अपना खोया हुआ घर पुनः प्राप्त कर लिया है। इसलिये अब वे एक राष्ट्र बन गये हैं।

इसी प्रकार एक ही देश में रहने वाले सभी लोग तब तक अपने आप को एक राष्ट्र नहीं कह सकते जब तक कि उन में उस देश के प्रति समान आदर का भाव और समान संस्कृति, इतिहास, महापुरुष व परम्पराएं न हों। इनके बिना वे शताब्दियों तक एक ही देश में इकट्ठे रहते हुए भी एक राष्ट्र नहीं कहला सकते।

भारत की राष्ट्रीयता

भारत एक प्राचीन देश है। प्रकृति ने इसकी सीमाओं को इस प्रकार बनाया है और इस पर ऐसी कृपा दृष्टि रखी है कि यह संसार के अति सुन्दर तथा समृद्धिशाली देशों मे प्रमुख माना जाता रहा है। इस देश के निवासी प्राचीन काल से इसको माता के नाम से पुकारते आ रहे हैं और इस पर जननी के समान श्रद्धा भी रखते आये है। इसका अपना एक उज्ज्वल इतिहास संस्कृति और परम्परा भी है। यह इतिहास केवल पिछले पचास वर्षों का ही नहीं बल्कि सहस्त्रों वर्षों का है।

इस देश मे रहने वाले जो लोग इस सारे देश को पूज्य समझते हैं और इस की संस्कृति, महापुरुषों तथा परम्पराओं को अपना मान कर उनका आदर करते हैं, उन से स्फूर्ति प्राप्त करते हैं और इस कारण अपने अन्दर एक विशेष प्रकार की एकता का अनुभव करते हैं वही इस देश के राष्ट्रीय कहला सकते हैं। जो लोग इस देश मे रहते तो हैं परन्तु देश की संस्कृति को नही अपनाते, देश के महापुरुषों को अपना महापुरुष न मान कर महमूद व गोरी जैसे विदेशी आक्रान्ताओं व डाकुओं को अपना महापुरुष मानते हैं वे इस देश में सदियों तक रहने के बावजूद भी इस देश के राष्ट्रीय नहीं कहला सकते। राष्ट्रीय बनने के लिये देश और उसकी आत्मारूपी संस्कृति के प्रति अटूट व अविभाज्य श्रद्धा होनी आवश्यक है। जिन लोगों की श्रद्धा का केन्द्र भारत देश और इसकी संस्कृति व महापुरुष न हो कर बाहर के देश और उनके महापुरुष ... भारत के राष्ट्रीय नहीं हो सकते। किसी देश का राष्ट्रीय होने की सभी सभ्य देशों में यही एक वैज्ञानिक व युक्तिसंगत कसौटी मानी गई है।

राष्ट्र-भक्ति व मजहब

राष्ट्र-भक्ति में मजहब का प्रश्न नहीं आता। एक व्यक्ति किसी भी ढंग से ईश्वर की पूजा करते हुए एक देश का राष्ट्रीय हो सकता है, यदि उसका पूजा का ढंग उसके देश व उसकी संस्कृति के प्रति श्रद्धा व वफादारी पर कुप्रभाव न डाले। भारत में सदा से ही विचार और मत स्वातंत्र्य रहा है। यहां कभी भी किसी व्यक्ति के पूजा के ढंग पर रोक नहीं लगाई गई। इसलिए भारत के रहने वाले सभी लोग चाहे वे आर्य समाजी हो या सनातनी, सिख हों या जैन, मुसलमान हों या ईसाई भारत के राष्ट्रीय बन सकते हैं, यदि उनका भारत और इसकी संस्कृति के प्रति सम्मान भाव हो।

मिश्रित संस्कृति

भारत की यह संस्कृति एक और अविभाज्य है, गङ्गा की धारा की तरह यह समय-समय पर बाहिर से आये हुए लोगों को अपने अन्दर आत्मसात् करते हुए उनकी सांस्कृतिक देन को भारतीय संस्कृति में मिला कर समुन्नत होती आई है। परन्तु इससे यह संस्कृति मिली-जुली नहीं बन गई। जिस प्रकार गङ्गा के पानी को उसमें यमुना, सरयू व गंडक के पानी के मिल जाने के पश्चात् भी गङ्गाजल ही कहा जाता है और कोई गङ्गा-यमुना का मिला-जुला पानी नहीं कहता, इसी प्रकार भारतीय संस्कृति समय-समय पर अन्य सांस्कृतिक प्रभावों को आत्मसात् करने के पश्चात् भारतीय संस्कृति ही है, मुस्लिम या मिश्रित संस्कृति नहीं।

भारतीय जन-संघ का प्रयास

भारतीय जन-संघ इसी भारतीय सांस्कृतिक आधार पर भारत का नव-निर्माण करना चाहता है। इसकी दृष्टि में भारत देश एक है। भारत की संस्कृति एक है और भारत राष्ट्र एक है। वह समझता है कि इस देश में मिली-जुली संस्कृति की रट लगाने वाले ही द्विराष्ट्र ... के जन्मदाता हैं और पाकिस्तान के भी। देश की एकता और राष्ट्र की समृद्धि के लिए उस रट को बंद करना आवश्यक है।

कई बार अपनी इस संस्कृति व राष्ट्र के नाम के विषय में लोगों के मन में कुछ भ्रम आता है। कोई इसे भारतीय नाम से पुकारते हैं और कोई हिंदू नाम से। परन्तु वास्तव में इस भ्रम का कोई कारण नहीं। भारतीय और हिंदू दोनों ही शब्द एक ही आशय को प्रकट करते हैं। दोनों का सम्बन्ध देश व उसकी संस्कृति से है, किसी एक संप्रदाय विशेष से नहीं। हिन्दू शब्द का सम्प्रदाय के अर्थ में प्रयोग भारत के किसी भी धर्मग्रंथ व शास्त्र में नहीं हुआ है। हिंदू वही है, जो भारत का सच्चा राष्ट्रीय है और वही भारतीय है।

हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है और वही भारतीयता का प्राण है। इसलिए यह शब्द समानार्थक हैं और इनमें से एक या दूसरे के प्रयोग के कारण किसी भी समझदार व्यक्ति के मन में कोई भ्रम उत्पन्न नहीं होना चाहिये।

[illegible] के भारतीय प्रदेश में

अमरीकी खाद्य सहायता में रोड़ा : 'सेनायें हटा कर कराची चले आइये' : पाक राष्ट्रीय चिह्न--घूंसा : समस्त पूर्वी बंगाल में त्रास : नैपालियों को पाकिस्तान से मिल जाने का निमन्त्रण

भारत सरकार के कृषि तथा खाद्य-मंत्री श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने हाल ही में यह बताया कि पाकिस्तान ने भारत को प्राप्त होने वाली अमरीकी खाद्य सहायता में रोड़े डालने की असफल चेष्टा की थी। जिस समय हमारी खाद्य स्थिति बुरी थी और सारे विश्व की सहानुभूति हमारे साथ थी, तथा अमरीकी जनता हमें खाद्य अन्न देने को उत्सुक थी, तब पाकिस्तान ही केवल एक देश था, जिसने अमेरिका में यह प्रयास किया कि हमें खाद्य न दिया जाय—यही श्री मुंशी के कथन का आशय था।

पाकिस्तान की समस्त विदेश नीति का आधारभूत सिद्धांत ही भारत विरोध है। पाक नेता समझते हैं कि पाकिस्तान भारत के प्रति घृणा के आधार पर बना है और जब तक यह घृणा बनी रहेगी, पाकिस्तान बना रहेगा। इसलिए प्रत्येक विषय पर भारत का विरोध कर दुर्भाव को जाग्रत रखने का ही सदा प्रयास रहता है। किन्तु पाकिस्तान के अधिकारी यह भूलते हैं कि घृणा की एक मात्रा ही इस संसार में जीवित रहती है। यदि घृणा उससे ऊपर बढ़े तो घृणा फैलाने वाला ही संकट में पड़ जाता है।

× × ×

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री श्री लियाकतअली खां ने भारत के प्रधानमन्त्री पं० नेहरू को सशर्त आमंत्रण देकर पाकिस्तान बुलाया है। मियां लियाकत का कथन है कि पाकिस्तान की सीमा पर से भारतीय सेनाएं हटा कर पं० नेहरू कराची आ सकते हैं। इस प्रकार विश्व के सम्मुख लियाकत ने स्वयं को दूध का धुला सिद्ध करने का प्रयास किया है। मानो कि भारत ने ही पाक सीमा पर सैन्य-संग्रह किया और वे तो अब भी शान्ति चाहते हों, तथा यदि भारत सेनाएं हटा कर शान्ति का वातावरण उत्पन्न करे, तो उन्होंने तो अपनी ओर से अभी से ही निमन्त्रण दे दिया है।

किन्तु पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री ने अपनी सैनिक तैयारियों तथा युद्धोन्माद को रोकने, भारत की सीमा पर जमाई हुई सेना को हटाने, भारत में षडयंत्र तथा तोड़-फोड़ की कार्यवाही करने तथा अन्य भी अनेकों इस प्रकार की बातों, जिनसे भारत की सुरक्षा संकट में पड़ती है, बन्द करने के विषय में कुछ नहीं कहा। नवाबजादा को भलीभांति पता है कि युद्ध की गर्मी कौन फैला रहा है और यदि वे सचमुच उसे रोकना चाहते हैं, तो उन्हें नयी दिल्ली की ओर नहीं, अपितु अपने ही चारों ओर देखना होगा।

× × ×

मियां लियाकतअली खां ने एक सार्वजनिक सभा में घोषणा कर घूंसे को पाकिस्तान का राष्ट्रीय चिन्ह बताया है। यह जहां एक ओर पाकिस्तान के युद्धोन्माद को बढ़ाने में सहायक है, वहां पाकिस्तानी नेताओं की मनोवृत्ति का भी प्रतीक है।

किन्तु श्री लियाकत यह भूलते हैं कि संसार में घूंसा केवल पाकिस्तान वालों के ही पल्ले नहीं आया और परमेश्वर न करे, किन्तु यदि घूंसेबाजी की नौबत ही आ गई, तो वे देखेंगे कि दूसरे के घूंसे में भी नाक तोड़ने की सामर्थ्य है। भारत के प्रधानमन्त्री ने अपने हाल ही के भाषण में यह कहा है कि पाकिस्तान ने अपना राष्ट्रीय चिन्ह घूंसा रखा है, जबकि भारत ने अशोक चक्र। यह अशोक चक्र जो शान्ति का प्रतीक है। भारत शान्ति चाहता है और केवल इसीलिए अब तक निभाव करता चला आ रहा है। वर्ना पाकिस्तान की इतनी बेवकूफियों पर तो घूंसेबाजी की नौबत कभी की आ गयी होती। किन्तु यदि यह संकट आया ही तो भारत का चक्र सदा सुदर्शन का रूप लेता रहा है।

× × ×

ज्ञात हुआ है कि आसाम-पूर्वी बंगाल सीमा पर स्थित तीन भारतीय ग्रामों पर पाकिस्तानी सेना ने अधिकार कर लिया है। साथ ही आसाम की ओर भी पूर्वी पाकिस्तान से निकल कर आने वालों की संख्या बहुत बढ़ गयी है। वे निर्वासित अपने साथ कितने ही प्रकार के अत्याचारों के समाचार ला रहे हैं। ऐसी स्थिति में भारत-पाक सीमा पर तनाव अधिकाधिक बढ़ता जा रहा है।

पाकिस्तान इस तनाव को अधिक बढ़ाने की चेष्टा कर रहा है। वह समझता है कि जितना ही अधिक भारत के विरुद्ध युद्धोन्माद बढ़ेगा उतने ही अधिक हिन्दू पूर्वी बंगाल को छोड़ कर भारत चले जायेंगे। पाकिस्तान की यह स्पष्ट योजना है कि वह अपने क्षेत्र में एक भी हिन्दू को न रहने दे और इसीलिए हिन्दुओं को निर्वासित करने के लिए वह किसी भी अवसर को चूकना नहीं चाहता।

× × ×

पाकिस्तान से प्राप्त होने वाले समाचारों से प्रकट होता है कि वहां ब्रिटिश अधिकारियों की गतिविधि बहुत बढ़ गयी है। ब्रिटेन के दो प्रमुख सैन्य अधिकारी जो भारत तथा पाकिस्तान से भली भांति परिचित हैं, फील्ड मार्शल सर क्लाड आचिनलेक तथा जनरल मेसी, दोनों ही पाकिस्तान में हैं और वहां की सैनिक तैयारियों में रुचि ले रहे हैं। ज्ञात हुआ है कि इन्होंने पाकिस्तान के दोनों भागों का दौरा कर सभी सैनिक केन्द्रों का निरीक्षण किया है तथा सेना एवं सैन्य अधिकारियों के स्तर उठाने के प्रयास में भी भाग लिया है। हाल ही में यह रहस्य भी खुल गया है कि काश्मीर आक्रमण में सर आचिनलेक का भी हाथ था। ब्रिटिश अधिकारियों की यह हलचल यही बताती है ब्रिटेन की नीयत आज भी साफ नहीं है।

× × ×

काठमाण्डू से प्राप्त होने समाचारों से यह पता चला है कि पाकिस्तान के कुछ उच्चस्तरीय क्षेत्रों ने वहां के अनेकों व्यक्तियों को पत्र लिख कर उन्हें भारत के विरुद्ध पाकिस्तान से सहयोग करने का निमन्त्रण दिया है। पत्रों में लिखा है कि भारत ने तुम्हारे देश को गुलाम बना लिया है। पाकिस्तान के साथ मिल कर इस गुलामी को उतार फेंको।

पाकिस्तान अपनी सेना में गुरखा सेना निर्माण कर रहा है और नेपाल के प्रमुख व्यक्तियों को भारी प्रलोभन दे रहा है। किन्तु पाकिस्तान को यह स्मरण रहे कि नेपाल के प्रधान-मन्त्री पाकिस्तान को क्या समझते हैं, यह बात आज से बहुत दिन पूर्व ही स्पष्ट हो चुकी है। पाकिस्तान अपने प्रयत्नों से नेपाल में कुछ गड़बड़ी करा सके यह तो संभव है किन्तु यह सम्भव नहीं कि इससे अधिक की कोई आशा रख सके।

श्मशान यात्रा

श्री प्रताप शंकर शुक्ल

'सुरेन्द्र के चाचा जी की मृत्यु [illegible]'

यह शब्द दरवाजे की देहली लांघते ही हम लोगों के कर्ण-कुहरों से टकराये, जो कि उनके मामा जी के मुंह से निकले थे।

'क्या'—मेरे मुंह से अनायास ही निकल गया। मुंह खुला का खुला रह गया।

हम लोग हतप्रभ हो एक दूसरे की ओर विस्फारित नेत्रों से देखने लगे। वातावरण अत्यन्त शान्त और निस्तब्ध हो गया। आंखें भूमि की ओर घूम गईं। बढ़ते हुये पग स्थिर हो गये। स्मित चेहरों पर गहन उदासी छा गई।

'मृत्यु कब हुई'—निस्तब्धता को भंग करते हुए मैंने प्रश्न किया।

'लगभग साढ़े तीन चार बजे के समय'—रुंधे कण्ठ से मन्द स्वर में उत्तर प्राप्त हुआ। वक्ता के चेहरे पर स्पष्ट वेदना झलक रही थी। वे उस समय घर के छोटे छोटे बच्चों को घर से बाहर पौली में घेरे बटोरे बैठे बहला रहे थे। पौली के एक कोने में एक तख्त पड़ा था। उसी पर वे बैठे थे। आस-पास बच्चे खेल रहे थे और आपस में लड़ झगड़ रहे थे। बीच बीच में मामा जी की बच्चों को डांटने की ध्वनि भी सुनाई पड़ती थी। मामा जी के उत्तर के उपरान्त वातावरण पुनः निस्तब्ध हो गया।

कुछ क्षण हम लोग भी पत्थर की भांति निश्चल खड़े रहे। समस्त मानसिक चेतना लुप्तप्रायः सी हो गई थी। विस्फारित नेत्रों से मैंने मामा जी की ओर देखा। कितना भीषण था वह दृश्य, घर की चहार दीवारी को तोड़-फोड़ कर आने वाला वह करुण-क्रन्दन, लोगों की वेदनामिश्रित श्वासें। ओह! दुःख पीड़ा और करुणा से व्याप्त सुरेन्द्र का मुख सहसा मेरी दृष्टि के सामने नाचने लगा और अधिक ठहरना कठिन हो गया। एक दूसरे का मुंह देखते हुए भारी मन से हम लोग मन्थर गति से वापस लौटने लगे।

'शव यात्रा कितने बजे प्रारम्भ होगी'—मौन भंग कर चलते चलते मैंने पूछ लिया।

'आध घंटे उपरान्त'—भरे मन से उन्होंने उत्तर दिया।

विचारों का चक्र द्रुतगति से चल रहा था। विभिन्न प्रकार के तर्क वितर्क नाना प्रकार के भाव हृदय में उथल-पुथल मचा रहे थे शव यात्रा में सम्मिलित होने का विचार कर हम चले आये।

× × ×

सुरेन्द्र के चाचा जी से मेरा अल्प-सा परिचय था। नाम था बसवन्त। गेहुँआ वर्ण, गोल चेहरा, छोटी नाक, बड़ी-बड़ी आंखें एवं इकहरा बदन न अधिक लम्बा न छोटा, साधारण कद था। आयु भी अधिक नहीं, केवल २४ वर्ष। पूर्ण तरुणावस्था रहने पर भी तारुण्य का अभाव था। मूछों की अभी रेख ही आई थी। दो तीन वर्षों से रोग-पीड़ित रहने के कारण दिनोंदिन स्वास्थ्य का ह्रास होता गया। रोग भी असाध्य था—क्षय रोग। सब प्रकार की चिकित्सा की, परन्तु कोई लाभ न हुआ। रोग दिन-प्रति-दिन असाध्य होता गया। परिणामस्वरूप रोग से अधिक भयंकरता रोगी में आ गई थी। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व मैंने प्रत्यक्ष बसवन्त को देखा था। चेहरे पर थकावट स्पष्ट लक्षित थी, पीत मुख, दुर्बल तन, मुरझाया हुआ मन देख कुछ क्षणों तक मेरे नेत्रों ने पहचानने में विलम्ब किया ! चर्मावशिष्ट शेष था उसमें। ध्वनि अति क्षीण हो गई थी। मुझे स्वप्न में भी कल्पना न थी कि हमारा यह मिलन अन्तिम है। परन्तु सत्य और कल्पना में अन्तर होता है। सत्य में वास्तविकता है और कल्पना में दोनों,—वास्तविकता तथा अवास्तविकता। इसका पता चल गया।

मानव जीवन में नित्य प्रति घटनाएं होती रहती हैं। उसमें किसी प्रकार का व्यतिक्रम नहीं आता। यह सब क्यों हो रहा है और कैसे हो रहा है। प्रतीत नहीं होता। एक रहस्यपूर्ण सी घटना घटित हो जाती है जो मन व प्राणों में भारी हलचल मचा देती है।

× × ×

'शीघ्रता करें' कदाचित शव-यात्रा प्रारम्भ हो चुकी होगी, हमारे साथी विजय ने चिन्ता प्रकट करते हुए कहा।

'रामकिशन को आ जाने दो, वह आता ही होगा, फिर चलेंगे।' मैंने स्वस्थ हो कर कहा।

मैं सोच रहा था और सोचते सोचते अपने में खो गया। कुछ घंटे पूर्व का दृश्य नेत्रों के समक्ष था सुरेन्द्र से मध्यान्ह में मिलन हुआ था। मुख पर चिन्ता की रेखायें स्पष्ट लक्षित हो रहीं थीं, किन्तु साथ ही हास्य भी झलक रहा था और उसी हास्य में उसने कहा था कि आज से तेरहवें दिन मेरी तेरहीं होने वाली है। उसका मतलब परीक्षाओं के प्रारम्भ होने के दिन से था। आज से ठीक तेरहवें दिन उसकी परीक्षा प्रारम्भ होने वाली थी। उक्त बात किसी दूसरे रूप में सत्य सिद्ध होने वाली है ऐसा हम दोनों का स्वप्न में भी विचार न था।

वर्षों बीत गये बिना किसी धक्के के बिना किसी उथल पुथल के बिना किसी परिवर्तन के। कहीं कोलाहल नहीं ... झटक नहीं ... संघर्ष नहीं। परन्तु वर्षों से जो ज्वालामुखी सुप्तावस्था में पड़ा था आज अचानक ही फूट पड़ा कुछ ही क्षणों में। इसे विधि की विडम्बना कहें अथवा नियति का क्रूर अट्टहास।

विचारों का चक्र अपनी पूरी गति पर चल रहा था कि इतने में विजय की ध्वनि कानों में गूंज गई!—'चलो शीघ्रता करो, देखो वह रामकिशन भी आ गया।'

और तब मानो सोते से हड़बड़ा कर उठ बैठने की स्थिति में आकर मैं भी कह गया—'हां, चलना चाहिए, प्रतीत होता है विलम्ब हो गया।' हम लोग लम्बे लम्बे डग रखते कुछ क्षणों में ही सुरेन्द्र के घर पर पहुँच गये।

परन्तु मेरी आशंका सत्य सिद्ध हुई। अर्थी जा चुकी थी। हम लोग विलम्ब से पहुँचे थे।

× × ×

भगवान भास्कर की रश्मिपुञ्ज का ऐश्वर्य समाप्त प्राय था। अस्त होते हुए सूर्य की रक्ताभ आभा प्रतीची में सर्वत्र छिटक कर निशागमन की सूचना दे रही थी। अनन्त आकाश निर्मल था। कहीं कहीं श्वेत बादलों की टुकड़ियां लक्षित हो रही थीं। "रात्रि की कालिमा गहरी होती आ रही है इसलिये साइकिलों से चलना ही उचित होगा।' विजय ने कहा "हां, अर्थी तो पहुँचने को होगी साइकिलों से चलना ही उचित रहेगा।" रामकिशन ने रमेश को बात का समर्थन करते हुए कहा।

कुछ समय बाद हम लोग तीव्रगति से अपनी लम्बी यात्रा आधी से अधिक पूरी कर श्मशान भूमि के समीप आ पहुँचे। कुछ पगों की दूरी पर थोड़े से मनुष्यों की ध्वनि कानोंमें गूंज उठी, 'राम नाम सत्य ......' इन लोगों के बीच में एक छोटी सी लालटेन अपनी धुंधली-सी रोशनी दे रही थी। लोगों की संख्या उंगलियों पर गिनने योग्य थी। कठिनाई से पन्द्रह, बीस थे। हम लोगों ने समझा जिनके लिए हम आए हैं वही यह ... हम लोग पास आ कर उतर गये। हमारी धारणा भ्रमपूर्ण निकली क्योंकि वह कोई और लोग आ रहे थे।

हम लोग उनके पीछे पीछे चलने लगे। श्मशान भूमि कुछ ही दूर रह गई थी। हम लोग चुपचाप चले जा रहे थे। निविड़ निशा थी, हम लोगों को छोड़ कर, मार्ग निर्जन था। दूर-दूर खड़े प्रहरियों की भांति बिजली की बत्तियां, मृत व्यक्तियों की स्मृति से विह्वल हो सहानुभूति प्रकट करती हुई, औंधा मुंह किये खड़ी थी। उनके मन्द पीत प्रकाश के अतिरिक्त सब अन्धकारमय था। मार्ग के दोनों ओर बबूल, बेर और नीम के पेड़ शान्त मुद्रा में गर्दन लटकाये अपराधियों की भांति खड़े थे। मार्ग के बाईं ओर चुंगी का नल अविरल गति से चल रहा था। सामने बड़े-बड़े बरामदे कोठी सी आकार वाले टीन वाले खड़े थे मानों कह रहे थे कि हमने बड़े बड़े अमीरों को, शक्तिशाली राजाओं और धनपति लोगों को पल भर में इस संसार से विदा कर दिया तो तुम क्या चीज हो, आ जाओ।

आह! कितना करुणाजनक व वीभत्स दृश्य था श्मशान भूमि पर, जिस पर रात्रि की गहन कालिमा क्षीण-तीन, चार-चार लोगों की टुकड़ियां अलग-अलग बैठी बातें कर रही थीं। जगह चितायें सुलग रही थी, कोई चिता खूब तेजी से जल रही थी, जिससे पता चलता था कि कुछ क्षण पूर्व ही उसमें अग्नि-संस्कार किया गया है। कुछ बुझने के समीप आ गई थी जो कदाचित् बहुत देर से जल रही थीं। कहीं-कहीं केवल बुझी चिताओं के ढेर थे।

सामने कल कल कल कल करती हुई कालिन्दी की धारा मन्थर गति से बह रही थी। कुछ दूर पर ही एक ऊंचे टीले पर भूतनाथ का मन्दिर था। श्मशान भूमि के मोरों की दहाड़ इस भयानक नीरवता को भंग करती हुई वातावरण को और भयावह कर रही थी। श्मशान भूमि धर्म-क्षेत्र बना हुआ था। आध्यात्मवाद की बड़ी बड़ी व्याख्याएं हो रही थीं। कुछ दूरी पर बैठे हुए बुजर्गों की टोली में सभी धर्मशास्त्र के उद्धरण सुनाये जा रहे थे। चार-पांच लोग चिता में चुन-चुन कर लकड़ियां रख रहे थे। वह अपना काम कर रहे थे। वृद्ध-वर्ग अपने अध्यात्म-चिन्तन में निमग्न था। ऐसा प्रतीत होता था कि घर बार छोड़े हुए साधू महात्माओं की टोली बैठी हुई संसार के दुःख दूर कर सुख शांति लाने के उपाय सोच रही हो।

एक वृद्ध कह रहे थे, 'मोह करना व्यर्थ है। जो आता है, वह जाता ही है।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

आचिनलेक व ग्रेसी की रहस्यपूर्ण हलचल

पाकिस्तान को भारत के विरुद्ध खड़ा करने में अंग्रेजों का हाथ

काश्मीर आक्रमण योजना में आचिनलेक का हाथ

फील्ड मार्शल आचिनलेक

नयी दिल्ली में प्राप्त होने वाले समाचारों से ज्ञात होता है कि नेहरूजी ने पाकिस्तान स्थित भूतपूर्व ब्रिटिश सैनिक अधिकारियों की हरकतों और भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध बढ़ती हुई कटुता की जो चर्चा श्री लियाकत-अली के वक्तव्य का उत्तर देते हुए की है, उससे ब्रिटिश सरकार बहुत क्षुब्ध हो गई है।

इस सम्बन्ध में फील्ड मार्शल सर क्लाड आचिनलेक के बार-बार पाकिस्तान जाने की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। यह बात अभी भूली नहीं है कि सर क्लाड विभाजन के समय भारत की संयुक्त सेना के संयुक्त प्रधान सेनापति थे। बाद में, जब तक देश का विभाजन पूर्ण नहीं हो गया, वह दोनों देशों की सेना के प्रधान सेनापति थे। यह स्मरणीय बात है कि विभाजन के बाद के दंगों और सेना के विभाजन के समय कुछ ब्रिटिश सैनिक अधिकारियों का जो रुख रहा, उसके कारण भारत ने दोनों देशों का एक प्रधान सेनापति बनाने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था।

सर क्लाड आचिनलेक इस वर्ष मार्च में पाकिस्तान गये थे और कुछ सप्ताह के लिए इंगलैंड जाने के बाद अप्रैल में पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तान का दौरा करने के लिये फिर से कराची लौट गये। मई, जून और जुलाई के महीनों में जब कि पाकिस्तान का तापमान ११९ अंश से भी अधिक होता है, वहां केवल सैर के लिए नहीं जाया जा सकता। यद्यपि "डान" ने कहा था कि सर क्लाड केवल ६ सप्ताह पाकिस्तान में रहेंगे, फिर भी अब तक उन्हें वहां इससे दूना समय हो चुका है।

सैनिक केन्द्रों के दौरे

पाकिस्तान में रहते हुए सर क्लाड ने लाहौर, जेहलम और रावलपिंडी के दौरे किये। ये सब सैनिक केन्द्र हैं। मई के आरम्भ में वह रावलपिंडी में पाकिस्तानी प्रधानमन्त्री से मिले और पाकिस्तानी सेना के प्रधान सेनापति जनरल अय्यूब खां के साथ ठहरे। क्वेटा में वह सैनिक अफसरों के कालेज के एक सम्मेलन में शामिल हुए। उन्होंने वहां विभिन्न बहसों में प्रमुख भाग लिया और एक सैनिक "अभ्यास" में भी शामिल हुए, जो कि काश्मीर को लक्ष्य बना कर किया गया था। उस अभ्यास में पाकिस्तान के बहुत से ऊंचे सैनिक अधिकारी शामिल हुए थे। इसके बाद सर क्लाड पूर्वी पाकिस्तान गये।

पूर्वी पाकिस्तान में

"डान" के १९ जून के अंक में उसके ढाका स्थित संवाददाता का एक पत्र प्रकाशित हुआ था, उसमें कहा गया था—"गुरुवार को फील्ड मार्शल आचिनलेक और पाकिस्तानी सेना के एडजुटेंट-जनरल अय्यूब खां ने कुमिल्ला का दौरा किया। कुमिल्ला के सैनिक अस्पताल का निरीक्षण करने के बाद वे मैनमती गये, जहां उन्होंने सैनिक टुकड़ियों और प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया। वे ढाका लौट आये हैं।" वास्तव में फील्ड मार्शल आचिनलेक ८ जून को ढाका पहुंचे और वह पूर्वी बंगाल के राज्यपाल के साथ ठहरे।

उसी समय के आस पास पाकिस्तानी सेना के भूतपूर्व प्रधान सेनापति जनरल ग्रेसी भी कराची पहुंचे। वह भी उन सैनिक केन्द्रों के दौरे कर रहे हैं।

विरोधी रुख

काश्मीर के झगड़े के आरम्भ से ही ब्रिटिश अफसरों, ब्रिटिश सरकार और ब्रिटिश पत्रों का रुख भारत विरोधी रहा है। कारण यह हो सकता है कि ब्रिटिशों ने भारत के विभाजन की बातें करते समय था तो पाकिस्तान को काश्मीर दे देने का वादा कर दिया हो, या वे चाहते हैं कि काश्मीर पाकिस्तान को मिलना चाहिये।

गिलगित का विद्रोह

विभाजन के पहले भी, जब कि ब्रिटिश सरकार ने घोषणा की थी कि गिलगित तथा अन्य राज्य फिर से काश्मीर के अन्तर्गत चले जावेंगे, गिलगित स्थित ब्रिटिश अधिकारियों को इस निर्णय पर रोष हुआ था। उन्होंने अपने आपको पाकिस्तान के प्रतिनिधि मान लिया और अगस्त १९४७ के आरम्भ में "गिलगित स्काउट्स" के नायक मेजर ब्राउन ने विद्रोह का नेतृत्व किया। कप्तान मथेसन तथा अनेक अन्य ब्रिटिश तथा मुसलमान अफसरों ने उसकी पूर्णत तथा दक्षता के साथ सहायता की। अमुस्लिम अफसरों तथा काश्मीर राज्य की सेना के आदमियों का लगभग सफाया कर दिया गया और पाकिस्तानी झण्डा फहरा दिया गया।

उस समय लेफ्टिनेंट कर्नल बेकन गिलगित में पोलिटिकल एजेंट था। बाद से स्वयं मेजर ब्राउन ने पाकिस्तान सरकार को गिलगित का शासन संभाल लेने का आमन्त्रण दिया। विभाजन के समय मेजर-जनरल एच० एल० स्काट नामक ब्रिटिश अफसर काश्मीर राज्य की सेना का कार्यालयाध्यक्ष था। उपर्युक्त घटनाएं होने के समय वह गिलगित गया। उस के साथ ब्रिगेडियर घनसारासिंह भी गये जिन्हें गिलगित का राज्यपाल नियुक्त किया गया। बाद में, जब मेजर स्काट श्रीनगर लौट आया ब्रिगेडियर को अनेक कारण बता कर राज्यपाल के पद से पृथक् कर दिया गया।

जब कबायलियों ने काश्मीर पर आक्रमण किया उस समय किसी को पता नहीं था कि काश्मीर में कितनी सेना है, और वह कहां है। उरी में ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह ने अगणित आक्रमणकारियों का सामना करने के लिए बहुत कठिनता से १५० व्यक्तियों को एकत्रित किया।

आक्रमण की योजना

काश्मीर के आक्रमण की योजना विभाजन के पूर्व ही बना ली गई थी। मेजर-जनरल शहीद अहमद ने, जो उस समय फील्ड मार्शल आचिनलेक का प्राइवेट सक्रेटरी था, बनाई थी।

विभाजन के बाद ही भारतीय सेना के प्रधान सेनापति सर राबलाकहार्ट के नाम पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त के गवर्नर सर जार्ज कनिंगहम के पास से एक पत्र आया जिसमें कबायलियों की प्रवृत्तियों और काश्मीर पर आक्रमण की योजनाओं का विवरण दिया गया था। यह रहस्यपूर्ण बात है कि इस पत्र की ओर तब तक किसी का ध्यान नहीं गया जब तक कि काश्मीर का युद्ध भीषण नहीं हो उठा और काश्मीर कमीशन भारत नहीं पहुंच गया। उस समय तत्कालीन प्रधान सेनापति जनरल बुचर ने भारत सरकार का ध्यान उस पत्र की ओर आकर्षित किया।

ग्रेसी का ऐतिहासिक पत्र

इसके पश्चात् वह ऐतिहासिक पत्र प्रकट हुआ जिसमें जनरल ग्रेसी ने काश्मीरी मोर्चे की स्थिति का सिंहावलोकन करते हुए घोषित किया था "ऊपर बताये हुए किसी भी क्षेत्र में, और खास तौर से मुजफ्फराबाद के क्षेत्र में, यदि भारतीय सेना सरलता से जीत गई तो पाकिस्तानियों के विरुद्ध कबायलियों का क्रोध उमड़ पड़ेगा। वे महसूस करेंगे कि उन्हें अधिक सहायता नहीं दी गई। इससे सम्भव है कि वे पाकिस्तान के खिलाफ हो उलट पड़ें।"

यह स्मरणीय है कि इस पत्र को गत वर्ष फरवरी में श्री बी० एन० नरसिंह राव ने सुरक्षा परिषद् के समक्ष पेश किया था और इससे सारे संसार में बहुत बड़ी सनसनी फैल गई थी।

पाकिस्तान में युद्ध की बातें

अब लगभग एक वर्ष हो गया, पाकिस्तान में भारत के विरुद्ध द्वेष प्रचार तथा धर्म युद्ध का आन्दोलन जोरों से हो रहा है। अनेक शहरों में हवाई आक्रमणों से रक्षा का अभ्यास कराया जाता है। पाकिस्तानी सैनिकों की छुट्टी रद्द कर दी गई है और सरकार के हाल के एक आदेश के अनुसार उनके वेतन में वृद्धि कर दी गई है। "अन्सारों" के समान अनेक स्वयं सेवक सेनाएं संगठित

(शेष पृष्ठ २० पर)

कवीन्द्र रवीन्द्र की

जापान में कुछ कलाकारों के साथ

कवीन्द्र रवीन्द्र बीसवीं शताब्दी के भारत के इतिहास की उन महान विभूतियों में से थे जिन्होंने केवल भारत ही नहीं संसार के सभी राष्ट्रों और सभी प्रकार के व्यक्तियों पर अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप लगा दी है। विभिन्न विरोधों में ग्रस्त मानवता ने उनके जीवन से समान रूप से प्रेरणा और स्फूर्ति प्राप्त की है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण से लेकर बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण तक के साहित्य मनीषियों में आपका स्थान निस्सन्देह सर्वोपरि है।

बीसवीं शताब्दी का काल भारत के लिए ही नहीं समस्त विश्व के लिए महान उथल पुथल परिवर्तन तथा उत्थान पतनों का काल रहा है। शताब्दी के पूर्वार्ध में ही देश में जाग्रति की चेतना अवश्य आ गई थी। किन्तु देशवासियों की आंखों में अभी सुषुप्ति का नशा था। आंखों में नींद की खुमारी थी। इधर पश्चिम में प्रथम महायुद्ध का ज्वालामुखी फटने ही वाला था। समस्त विश्व सर्वनाश के कगार पर खड़ा था। सर्वग्रासी महायुद्ध न मालूम कब अपने कराल दंष्ट्रा और लपलपाती जिह्वा से मानवता का सर्वनाश करने पर तुल जाये। ऐसी संकटपूर्ण परिस्थिति में विश्वकवि ने संगीत और लय को मधुर तान छेड़ कर स्वदेशवासियों को कर्तव्य निष्ठा और कर्म तत्परता की ओर प्रेरित किया तथा प्राची के इस सजग प्रहरी ने भौतिकवादी वैज्ञानिक सभ्यता के अनुगामी पश्चिम को भी कठोर चेतावनी दी —

शताब्दिर सूर्य आजि रक्तमेघ माझे।
अस्तगेला हिंसार उत्सवे आजि बाजे।
अस्त्र अस्त्र मरणेर उन्माद रागिनी
भयंकरी ! दयाहीन सभ्यता नागिनी।
तुलेछे कुटिल फणा चक्षेर निमिषे
गुप्तविष दन्त तार भरी तीव्र विषे।
स्वार्थे स्वार्थे बेधे थे संघात लोभे लोभे
छूटे छे संग्राम प्रलय मन्थन क्षोभे।
भद्रवशी बर्बरता उठयाद जागी,
पंकशय्या हाते लज्जा शरम तेयागी।

[रक्तवर्ण मेघों में आज शताब्दियों के सूर्य अस्त हो रहे हैं। आज हिंसा के उत्सव में अस्त्रों की झनकार के साथ ही साथ मृत्यु की भयंकर उन्माद रागिनी बज रही है। निर्भय सभ्यता नागिनी अपने विष वाले दांतों में तीखा जहर

भर कर क्षण क्षण में अपना कुटिल फन खोल रही है। स्वार्थ के स्वार्थ का संघात हो रहा है। लोभ के साथ लोभ का संघर्ष मचा हुआ है। भयंकर प्रलय को ला खड़ा करने के उद्दाम रोष से। भद्रवेशिनी बर्बरता अपनी पंक शय्या से जग कर उठी है। लाज शर्म से हाथ धो जाति प्रेम के नाम पर प्रचण्ड अन्याय धर्म को अपने बल की बाढ़ में बहा देना चाहता है]

बाल्यकाल और परिवार

कवि का पारिवारिक जीवन वेदों और उपनिषदों के वातावरण में व्यतीत हुआ। स्वयं उनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ब्रह्म समाज के प्रतिष्ठित नेता थे तथा संसार में रह कर भी सन्तों की भांति ही जीवनयापन करते थे। पिता के पुनीत और आध्यात्मिक आदर्शों ने कवि के हृदय पर अपनी अमिट छाप डाली। कवि सम्राट रवीन्द्र का ठाकुर वंश बंगाल के प्रमुख प्रवीण सुधारवादी और कला प्रिय परिवारों में गिना जाता है। सदा से ही ललित कला साहित्य और संगीतादि को इस परि[वार में] [प्रोत्साहन मिलता रहा है]। कवि की प्रतिभा के सर्वतोमुखी विकास के लिए यह भी एक अनुपम संयोग था कि

रवीन्द्र परिवार का प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी क्षेत्र में प्रतिभा सम्पन्न था। कवीन्द्र के बड़े भाई श्री द्विजेन्द्रनाथ प्रमुख दार्शनिक और समालोचक थे। दूसरे भाई ज्योतिरेन्द्र एक उच्चकोटि के चित्रकार थे। कवीन्द्र के भतीजे श्री अवनीन्द्रनाथ और गगेन्द्रनाथ की तूलिका का चमत्कार तो विश्व ख्याति प्राप्त है। इस प्रकार के वंश परम्परागत संस्कारों में भारत के रवीन्द्र का उदय हुआ जिसकी प्रचण्ड किरणों ने समस्त विश्व को एक नवीन ज्योति प्रदान की। वर्तमान भारतीय संस्कृति और कला के नये युग के निर्माण का श्रेय कवीन्द्र रवीन्द्र और उनके परिवार को है।

शिक्षा दीक्षा और साहित्य निर्माण

बाल्यावस्था से ही रवीन्द्र को पाठशाला के अनुशासनपूर्ण और परतन्त्र वातावरण से घृणा थी जीवन पर्यंत उनकी यही धारणा रही कि छोटे छोटे भोले बालकों को अध्यापकों के कठोर नियन्त्रण और अनुशासन में सौंप देने से उनकी स्वभावजन्य मानसिक शक्तियों की गति अवरुद्ध हो जाती है तथा उनकी प्रतिभा उचित ढंग से प्रस्फुटित नहीं हो पाती। संसार की कठोरता से अपरिचित केवल लाड़ प्यार के ही आकांक्षी बालक की कोमल भावनायें पाठशाला के आतंकपूर्ण वातावरण में झुलस जाती हैं। संसार के समस्त कोलाहल से परे निर्जन, शान्त वातावरण में सुरम्य प्रकृति की गोद में शान्तिनिकेतन का निर्माण कवि की इस प्रकृति का द्योतक है। बालक रवीन्द्र ने दृढ़ता के साथ पाठशाला के संकुचित नियमों का विद्रोह किया। अतः उन्हें घर पर ही पढ़ाने लिखाने की व्यवस्था कर दी गई।

पढ़ाई लिखाई के साथ कवि को बंगाल के विभिन्न नगरों में घूमने का तथा प्रकृति के अनुपम सौंदर्य के रसास्वादन करने का अवसर मिला। सन् १८७७ में उन्हें विदेश भ्रमण तथा कुछ शिक्षा प्राप्त करने का भी अवसर मिला। किन्तु भारतीय संस्कृति के त्यागपूर्ण तथा आध्यात्मपरक वातावरण में पले होने के कारण कवि को पश्चिम का वातावरण अनुकूल प्रतीत नहीं हुआ और वे भारत लौट आये। भारत आते ही उन्होंने साहित्य सृजन प्रारम्भ कर दिया और अठारह वर्ष की अवस्था में ७००० काव्य पंक्तियां और उच्च कोटि के गद्य का भी निर्माण कर डाला। १८८१

दीनबन्धु एन्ड्रयूज तथा अपने परिवार के कुछ सदस्यों के साथ

व

धारणा थी कि सम्पूर्ण विश्व ईश्वर का काव्य है। साहित्य का आदि सृष्टा अन्तर्यामी विश्व पुरुष भी एक कवि और गायक है। यों तो कवि की प्रतिभा का विकास साहित्य के सभी अंगों में हुआ है किन्तु उनका प्रमुख काव्य संगीतमय ही है। उनकी प्रतिभा की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति उनके गीतों में ही हुई है। उनकी दृष्टि में विश्व की घटनाओं में एक विशेष प्रकार की ताल है लय है और इन्हीं को मिला कर विश्व संगीत का निर्माण हुआ है। संगीत का यह महत्त्व स्वीकार कर कवि ने अपने भक्ति भावपूर्ण कुछ गीतों को ही भारतीय संस्कृति की महान सजधज के साथ गीतांजलि की माला में पिरोया है। रवीन्द्र की उच्चतम आध्यात्मिक साधना गीतांजलि के गीतों में छिपी हुई है। गीतांजलि के गीतों में संगीत की स्वरलहरी तथा साहित्य की मिठास दोनों साथ २ मिलती हैं। कवि ने जीवन को सदैव मंगलमय रूप में ही देखा है। समस्त विश्व के कण कण में एक महान अलौकिक शक्ति के प्रकाश का आभास पा कर भक्त हृदय आनन्दातिरेक से खिला उठता है

शान्तिनिकेतन का सुन्दर नृत्य मण्डली जिसके द्वारा गुरुदेव ने विश्व को भारतीय संस्कृति का अमर संदेश दिया

अमर साधना

लेखक श्री सुरेश मिश्र

में उनकी कविताओं का पहला संग्रह प्रकाशित हुआ। विश्वसाहित्य में और विशेष कर हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद की जो धारा प्रस्फुटित हुई उसका श्रेय कवीन्द्र रवीन्द्र को ही है। अपने एक काव्य संग्रह की भूमिका में उन्होंने इस की चर्चा करते हुए लिखा है— मैं दालान में टहल रहा था। एकाएक सघन कुंजों से सूर्य की रश्मियां फूट पड़ीं। मेरी पलकें जाग उठीं और मैंने देखा कि समस्त संसार अद्भुत ज्योति में स्नान कर रहा है। चारों ओर सौंदर्य की लहरें बह रही हैं आनन्द फूल रहा है। वे ज्योतिकिरणें मेरे अन्तराल में समा गईं और मेरे हृदय का संचित नैराश्य और दुःख उस सार्वभौमिक प्रकाश में जगमगा उठा। इस प्रकार कवि के भावुक हृदय में रहस्यवाद का प्रस्फुटन हुआ। १९१२ में इसी आधार पर उन्होंने गीतांजलि की रचना की और जब १९१३ में उन्हें उस पर नोबेल पुरस्कार मिला तो समस्त विश्व का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ और शस्य श्यामला बंग भूमि का यह महान गायक विश्व कवि की उपाधि से विभूषित किया गया।

गीतांजलि

काव्य के सम्बन्ध में कवि की

तू प्रकाश को प्रकाशमय करता
है प्रकाश का स्रोत है।
मेरी आंखों का अन्धकार भी
समाप्त हो गया समाप्त हो गया।
पृथ्वी और आकाश आनन्द व
हास्य से भर गये।
जहां तक दृष्टि जाती है मंगल
ही मंगल दिखाई देता है।
तेरा प्रकाश वृक्षों के पत्तों पर नाच
कर हृदय को उल्लास से भरता है।
तेरा प्रकाश पक्षियों के घोंसलों में
गीतों को कड़ियां जोड़ता है।
तेरा प्रकाश प्रेम बन कर मेरे
अंग २ को स्पर्श कर रहा है।
और मेरे हृदय को दिव्य आनन्द
से भर रहा है।

इस प्रकार सरल और संगीतमयी भाषा में सज्जित भावनाओं और सरसता से ओतप्रोत गीतांजलि भौतिकवादी साहित्य और संस्कृति को कवि की अनुपम और अलभ्य देन है।

राष्ट्रीय जागरण और रवीन्द्र

अन्तर्राष्ट्रीयता के पोषक होते हुए भी, गुरुदेव राष्ट्रीयता के प्रति पूर्ण रूप से सजग थे। भारत की शोचनीय तथा पददलित

साइमन के आगमन के समय पंजाब के भीषण अत्याचार को देख कर कवि का हृदय दहल उठा था और उन्होंने विरोध स्वरूप सर की उपाधि तत्कालीन वाइसराय को लिख कर ठुकरा दी थी जिसकी गूंज विश्व के कोने कोने में फैल गई। वे भारतीय संस्कृति के प्रथम राजदूत थे। उनके गौरवमय संदेश ने विश्व में एक नई धारा प्रवाहित कर दी राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत उनकी ओजस्विनी कविताओं को सुन कर विदेशी शासक सशंक हो गये और उनके पीछे गुप्तचर छोड़ गये। रवीन्द्रनाथ ने किसी भी राजनैतिक आन्दोलन में सक्रिय भाग नहीं लिया नाही उन्होंने हल्ला गुल्ला करके ढोल पीट कर अपनी देश भक्ति को प्रमाणित किया। प्रकृति तथा मानव हृदय की सहज भावनाओं के साथ संयोग न होने के कारण कवि को इस प्रकार की देश

भक्ति से घृणा थी। एक स्थान पर उन्होंने इस प्रकार के देश भक्तों की ओर तीखा व्यंग कर लिखा है —

ओरे तोरा!

नेइ वा कथा बललि।
दाड़िये हाटेर मध्यिखाने
नेइ जागालि देश।
मरिस मिथ्ये बके झके
देखे केवल हासे लोके।
ना हय निये आपन मनेर आगुन
मने मनेइ ज्वललि।
नेइ जागालि पल्ली।

[अरे भाई क्या बिगड़ गया अगर तूने कोई बात नहीं कही? बाजार में खड़े होकर अगर तुमने ग्रामों को जगाने का काम नहीं किया तो क्या हो गया। बेकार प्रलाप कर कर मर रहे हो देख कर लोग केवल हंसते हैं। अपने ही मन की आग में तुमने मन ही मन

(शेष पृष्ठ २० पर)

आज से लगभग सत्तरह वर्ष पूर्व गुरुदेव वीर अर्जुन परिवार में पधारे थे।

नारी जगत

नारी के प्रति भारतीय तथा अभारतीय दृष्टिकोण में भेद

मातृत्व की प्रतिष्ठा !

★ सुजाता

आधुनिक युग प्रगति का युग कहा जाता है। जीवन के अनेक क्षेत्र में प्रगति करने की एक एक प्रवृत्ति इस युग की विशेषता है। वैसे तो प्रगति का भाव मानव जीवन के अन्तरंग में आदिकाल से ही रहा है। और उसी के फलस्वरूप पशु और मनुष्य में इतना अन्तर दिखाई देता है, किन्तु ईसा की इस बीसवीं शताब्दी में जो कुछ प्राचीन है उसे ठुकरा कर, नई वैज्ञानिक सभ्यता के नशे में मन की उच्छृंखल प्रवृत्तियों के अनुसार आगे बढ़ने को प्रगति समझा जाता है।

इसी प्रकार की प्रगति का रंग भारत की नारी पर भी कुछ कुछ चढ़ता दिखाई देता है। भारत में स्त्री शिक्षा सदा ही एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय रहा है। परतन्त्रता के काल में जैसे अन्य अनेकों दुर्गुण उत्पन्न हुए वैसे ही यहां स्त्री शिक्षा का भी अभाव हो गया। आज जो शिक्षा यहां चल रही है उसका ढांचा योरुप से आया है। इसीलिए उसमें योरुपीय जीवन के संस्कार करने की ही अधिक सामर्थ्य है अतएव उसका परिणाम भी वैसा ही हमें दिखाई पड़ता है।

भारतवर्ष के अतिरिक्त सभी लोगों ने स्त्री को भोग की वस्तु माना है और वैसा ही उसे बनाने का यत्न भी किया है। वैसे ही वातावरण में रहने के कारण वहां की नारी ने भी अपने समुख भोग प्रधान जीवन को ही सदा रखा है। किन्तु भारतीय संस्कृति की दृष्टि इससे बिल्कुल भिन्न है। उसने नारी को माता के रूप में देखा है। माता अर्थात् पुरुष की जननी। इससे नारी का अधिक गौरवान्वित रूप प्रकट हुआ है।

माता पर बालक को केवल प्रसव करने मात्र का दायित्व नहीं होता वरन उसे भली भांति पाल कर एक योग्य नागरिक के रूप में बड़ा कर, देश को सौंप देने का भी भार होता है। वह राष्ट्र की एक पीढ़ी का भविष्य बना और बिगाड़ सकती है और इस प्रकार कितनी ही पीढ़ियों को प्रभावित कर सकती है। राष्ट्र जीवन के निर्माण में नारी के इस अत्यन्त महत्वपूर्ण योग को ही स्वीकार कर भारतवर्ष ने उसे इस पवित्र भाव से देखा है।

आधुनिक काल के प्रगतिवादियों के समान भारतीय मनीषियोंने थोड़े ही समय में पृथ्वी पर स्वर्ग उतारने के स्वप्न कभी नहीं देखे। वे यह समझते थे कि यह संसार बड़ा विचित्र है और इसमें सबसे अधिक विचित्र है मनुष्यका स्वभाव। जब तक प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र का इतना विकास नहीं हो जाता कि वह सामाजिक जीवन के दायित्व को समझ सके तब तक कितना भी प्रयास किया जावे पूर्णत सुखी राष्ट्र जीवन जाग्रत नहीं हो सकता।

इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति को एक सुयोग्य नागरिक बनाना यही उन्होंने सर्वाधिक आवश्यक समझा। इस दृष्टि से योग्य शिक्षा पर ही सबसे अधिक बल दिया गया और माता बालक की सबसे बड़ी गुरु है इस तथ्य को आज के पश्चिमी जगत के भी सभी शिक्षा शास्त्री एकस्वर से स्वीकार करते हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि बालक के अन्त करण में जिस शुद्धता और पवित्रता को हम देखना चाहते हैं वह उसके आदि गुरु उसकी माता के हृदय में पहले होनी चाहिए, इस तथ्य को स्वीकार करते हुए भी उस आधार पर समस्त सामाजिक जीवन को ढालने का कोई विशेष उद्योग पश्चिम में आरम्भ नहीं हो सका है जब कि भारत ने इस तथ्य को समझ कर ही नारी के माता रूप को ही सर्वाधिक महत्व प्रदान किया।

बालक के योग्य विकास का कार्य कोई सरल कार्य नहीं है। बालक कोई मिट्टी का लौंदा नहीं जिसे जैसा चाहो सांचे में ढाल लिया जाय। बालक जन्म से ही एक आन्तरिक प्रवृत्ति लेकर आता है और उसके योग्य विकास के लिए उसकी प्रवृत्ति का ध्यान रखना आवश्यक है। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि जिन व्यक्तियों की इच्छा शक्ति प्रबल होती है उनकी सतानों में प्रायः इसका अभाव पाया जाता है। कारण यही है कि माता अथवा पिता की प्रबल इच्छा शक्ति के बोझ से ही बालक की वह मानसिक शक्ति मुर्झा जाती है, उसे विकास का अवसर ही नहीं मिल पाता।

अत नारी का सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य अपने स्वभाव में इस प्रकार का परिवर्तन करना है कि वह बालक के क्रम-क्रम विकसित होते हुए मानसिक जगत् पर बोझ न बनकर उसकी सहायक बने। उसको अपने हृदय में आवश्यक धैर्य तथा सहिष्णुता उत्पन्न करना आवश्यक है। बालक की आन्तरिक प्रकृति ही उसे आगे बढ़ने को प्रेरित करती रहती है। वह जिस कार्य को करता है, ठीक समझ कर करता है। बालक में जानने की इच्छा इतनी प्रबल होती है, जितनी पुरुष में भी नहीं होती। अत यह सम्भव है कि वह कोई गलत कार्य करे या गलत दिशा में चले। किन्तु उसके सही या गलत के निर्णय को पूरी तरह अपने सिर लेना ठीक नहीं। उसे सही मार्ग की ओर लाने की चेष्टा करती हुई माता यह सदा सोचती है कि मेरे द्वारा यह निर्णय होने के स्थान पर स्वयं बालक में ही यह विचार करने की शक्ति को जगाना अधिक उचित है। तभी बालक के स्वतन्त्र व्यक्तित्व का विकास सम्भव है।

इस दृष्टि से यदि देखें तो भारतीय नारी का जीवन एक आजीवन साधना है, जिसमें वह अपने देश या राष्ट्र की भावी पीढ़ी को योग्यतर बनाने के लिए अपने को अधिकाधिक कुशल बनाने में रत रहती है। विवाह से पूर्व अथवा पश्चात् वैवाहिक जीवन के वे क्षण, जिनमें उसके कामिनी रूप को प्राधान्य प्राप्त होता है, सारे जीवन का एक छोटा-सा भाग है। माता का गौरवमय रूप ही उसके अधिकांश जीवन को घेरता है। भारत ने उसके इसी रूप को भली प्रकार पहिचाना है और यही प्रयत्न किया है कि वह भी अपने वास्तविक रूप को पहचाने। राष्ट्र जीवन का निर्माण एक महान साधना है, जिसमें नारी पर ही सबसे अधिक भार है।

अजन्ता के ऐतिहासिक चित्रों में मातृत्व का एक भाव

तिब्बत की संधि से संकट हमारी उत्तरी सीमा पर आ गया है

चीनी-तिब्बत संधि व भारत की सुरक्षा

★ श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

पेकिंग का हंसिया हथौड़ा अंकित लाल झंडा विश्व की छत तिब्बत पर फहराने लगा है। मार्शल च्यांगकाईशेक जहां विफल मनोरथ रहा, वहां माओत्से-तुंग सफल-मनोरथ हो गया। विशाल चीनी साम्राज्य का तिब्बत एक प्रान्त हो कर रहे, इसके लिये पिछले चालीस से अधिक वर्षों तक वह बराबर प्रयत्न कर रहा था। उसका मनोरथ और उसकी महत्वाकांक्षा चीनी तिब्बत सन्धि से पूर्ण हो गई। पेकिंग और ल्हासा के बीच जो सन्धि हुई, जो १६ सूत्री करार हुआ है, इसका अन्तिम परिणाम ही नहीं, बल्कि उसका तात्कालिक परिणाम यह होगा कि तिब्बत चीन का एक सामन्ती राज्य न होकर एक प्रान्त हो जायगा। अनिवार्यत: इसका भारत की प्रतिरक्षा और सुरक्षा पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। भारत और चीन आज मित्र हैं। परन्तु राजनीति में मैत्री और शत्रुता स्वार्थपरक समय सापेक्ष होती है।

समझौते के पश्चात् कम्युनिस्ट चीन के सर्वेसर्वा माओत्सेतुंग श्री जिग्मे को भोज दे रहे हैं।

एक प्रान्त हो गया

दलाई लामा ने तिनके के समान कम्यूनिस्ट आंधी के सामने सिर झुका दिया। माओत्सेतुंग ने सेना का प्रदर्शन किया, रक्त बहाया, फूट डाल कर पंचन लामा को अपना कठपुतली बनाया और लाख से कम समय में चीन का एक पुराना स्वप्न साकार और मूर्ति रूप में पूरा होते हुए देख लिया। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी इस पर गर्व कर सकती है कि कुमिन्तांग जहां विफल रहे, वहां वे पूर्ण सफल हुए। १९११-१२ में ल्हासा से तिब्बतियों ने चीनी फौजों को भगा दिया। उस समय चीन अपने हृदय में यह भाव सजाये हुए रहा कि तिब्बत फिर कब उसका एक अविभाज्य अंग बनता है। चीन ने एक क्षण के लिए भी इस बात को नहीं माना कि तिब्बत उस का एक प्रान्त नहीं रहा। जो लोग समझते हैं कि गवर्मेंट बदलने, राजनीतिक विचारधारा बदलने और कलम परिवर्तित होने के साथ देश की राष्ट्रीय भावना आकांक्षा और राष्ट्र नीति बदल जाती है। वे इस से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। चीनी शासन-प्रबन्ध के अन्तर्गत तिब्बत को मिलाने और उस को एक 'मेनलैण्ड' बनाने के लिए चीन सदा ही उत्सुक रहा है।

दो रूप

चीन तिब्बत सन्धि के दो पहलू हैं। एक तिब्बती और दूसरा चीनी। तिब्बत चीन का एक आतरिक अंग हो गया। तिब्बती सेना का स्वतन्त्र रूप नहीं रहेगा। उसका विसर्जन कर दिया जायगा और तिब्बती सैनिक चीन की लाल सेना के सैनिक हो जायेंगे। आंतरिक इकाई और एक घटक होने के कारण तिब्बत का अन्य देशों के साथ सीधा सम्बन्ध न रहेगा। पेकिंग द्वारा उसका बाहरी दुनिया से सम्बन्ध होगा। ल्हासा में संयुक्त चीनी-तिब्बती कमीशन रहेगा। वह कमीशन वहां पहुँच भी गया है और २०० चीनी कम्यूनिस्ट भी पहुँच गये हैं। तिब्बती रेडियो चीनी कम्यूनिस्टों के नियन्त्रण में चला गया है। सैनिक कमीशन के सब सदस्य पेकिंग द्वारा नामजद होंगे, इसका अर्थ स्पष्ट है। तिब्बत और उसकी भूमि चीनी हो गयी है।

सन्धि के चीनी रूप में कहा गया है कि तिब्बत को स्वायत्त शासन प्राप्त होगा। परन्तु वह स्वायत्त शासन आन्तरिक शासन तक सीमित है। दूसरे पेकिंग का आग्रह है कि पचन लामा को तिब्बत में बुला कर रखा जाय। पचन लामा के पिछले इतिहास को देखते हुए सन्धि में इसका समावेश करने का अर्थ स्पष्ट हो जायगा। इसका अर्थ है कि तिब्बत का आन्तरिक शासन द्वैध शासन होगा—द्विराज्य होगा। पचन लामा का चीन के प्रति स्नेह सम्बन्ध है। इसके विपरीत दलाई लामा भारत की ओर देखता है। पचन लामा के तिब्बत में रहने से शासन में पद-पद पर संघर्ष उत्पन्न होगा। जब यह संघर्ष महत्वपूर्ण और गम्भीर स्थिति पर पहुँच जायगा, तब पेकिंग तिब्बत के आंतरिक स्वायत्त शासन के नाटक का अन्त कर देगा। १७ सूत्री करार में कम्युनिस्ट फन्दा कसने के लिए आवश्यक छेद रखे गये हैं और आवश्यकतानुसार उनको और अधिक गहरा किया जा सकता है।

पूर्ण नियन्त्रण

ल्हासा में चीनी सैनिक मिशन के रहने और तिब्बत द्वारा स्थानीय सुरक्षा को दृढ़ करने में 'जनमुक्ति सेना' (पीपल्स लिबरेशन आर्मी) को सहायता देने का वचन, एवं चीनी सेना के अन्दर तिब्बती सेना का पूर्ण विलय तथा चीन द्वारा तिब्बत के परराष्ट्र सम्बन्धों का पूर्ण नियन्त्रण, इन सब बातों ने मिल कर तिब्बत के राजनीतिक जीवन का नियन्त्रण पूर्ण रूप से पेकिंग के हाथ में दे दिया है। इस रूप में इससे पहले कभी भी तिब्बत द्वारा चीनी आधिपत्य स्वीकार नहीं किया गया। शिमला कनवेंशन १९१४ में भी इस रूप की कल्पना नहीं की गई थी। भारत और ग्रेट ब्रिटेन ने जब तिब्बत पर चीन का प्रभुत्व किया था, तब वह केवल नाममात्र का था। पर इस सन्धि के बाद राजनीतिक दृष्टि से तिब्बत का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व किसी रूप से न रहेगा। निःसन्देह तिब्बत के आर्थिक विकास की बात कही गई है। खेती, पशु पालन और उद्योगों की उन्नति करने के लिए कहा गया है। इसका अर्थ है कि आर्थिक दृष्टि से भी तिब्बत चीन का एक भाग और एक अंग होगा। दलाई लामा का शासन तिब्बत में समाप्त करने की यह सन्धि भूमिका मात्र है। यह केवल कोरी कल्पना नहीं। १९०९-१९१० में चीन ने एक बड़ी सेना ल्हासा भेजी थी। इसका प्रकट उद्देश्य बताया

समझौते पर हस्ताक्षर—दाहिनी ओर के कोने में तिब्बती प्रतिनिधि मण्डल के नेता श्री जिग्मे समझौते पर हस्ताक्षर कर रहे हैं।

[शेष पृष्ठ १८ पर]

श्मशान यात्रा

[पृष्ठ १० का शेष]

उसके बारे में सोच क्या करना। जो संसार में जन्म लेता है, वह मृत्यु को प्राप्त होता ही है और जो मृत्यु को प्राप्त होता है वह किसी न किसी रूप में फिर संसार में आता है। सब प्राणी उत्पत्ति के पूर्व निराकार थे, जन्म लेने पर आकार वाले प्रतीत होते हैं, जब उनका अन्त हो जाता है तब फिर वे अनन्त में लीन हो जाते हैं। संसार माया है, आनी जानी है। आत्मा तो अमर है वह तो कभी मरती नहीं। जिस प्रकार मनुष्य पुराने कपड़े उतार कर नये कपड़े पहन लेता है उसी प्रकार आत्मा भी पुराने शरीर को छोड़ कर नये शरीर में प्रवेश करती है'। वृद्ध सज्जन आत्मा की अमरता की पुष्टि गीता के श्लोक सुना कर रहे थे।

इस प्रकार वह वृद्ध न जाने क्या २ आध्यात्मिक उपदेश देते रहे। चिता बन रही थी, पास में ही शव रक्खा हुआ था। मृतक का कनिष्ठ भ्राता भी वहां कुछ दूर पर खड़ा था। नाम था केशरी। थोड़ा हटकर बगल में ही सुरेन्द्र पृथ्वी की ओर आंख गड़ाये बैठा न जाने किस चिन्ता में निमग्न था। न जाने उसके अन्तः करण में उस समय कैसा ज्वर उठ रहा था।

मेरा मस्तिष्क कुछ सोच रहा था, अविरल न जाने आज मस्तिष्क में अविरल विचार-शक्ति कहां से आ गई थी। विचार करते करते न जाने मैं कब बैठ गया, पता न चला। मैं सोच रहा था—"जीवन कितना अस्थिर है……जो कल तक बोलता चालता था, हम उसे प्यार करते थे। आज वह बोलता नहीं… … हिलता डुलता नहीं……हम उसे छूने से डरते हैं। कल जिसे देख हम प्रसन्न होते थे उसे आज हम देखकर रोते हैं। मानव जीवन क्या है? … पानी के बुलबुले के सदृश कितना अस्थिर है। पर फिर किसका मोह? … … किसकी ममता? … कैसा विछोह? … कैसा वियोग? … कैसा संयोग? … सब माया है। क्या अपना पराया? फिर यह सोचना ही अर्थ हीन है कि वह मेरा है, यह तेरा है। मनुष्य परस्पर लड़ता क्यों हैं? कितनी ओछी है मानव बुद्धि?" कान में गूंज उठे वृद्ध के मुख से कुछ क्षण पूर्व निकले शब्द।

विचारो का प्रवाह चल ही रहा था कि क्रिया पूरी हो गई। बारह वर्ष के किशोर केशरी को क्रियाकर्म की शास्त्रीय विधि समझाई जा रही थी। बालक केशरी ने पिता को अग्नि संस्कार किया। उसकी आंखें डबडबा आईं। हृदय मूक क्रन्दन कर रहा था। थोड़ी देर में अग्नि की लपलपाती लपटों ने अस्थि पंजर अवशेष शरीर को अपनी गोद में समेट लिया।

× × ×

टन, टन, टन … टन …

निविड़ निशा के भयानक सन्नाटे को चीरते हुए घंटों की आवाज गूंज उठी। रात्रि के बारह बजे थे। मैंने एक सांस खींच कर करवट बदली और आपाद मस्तक कम्बल खींच कर सोने का असफल प्रयास किया। आंखों को जोर से बन्द किया। परन्तु पलकों के आंचल में छिपी वह दुनियां और भी भयानकता के साथ सामने आई। विचार तन्द्रा को समाप्त करने के निमित्त आंखें बन्द की थीं परन्तु विचारों का वेग उससे और बढ़ गया। वही सारा चित्र सामने आ गया। वही श्मशान भूमि … वही चिताऐं … असहाय नेत्रों से मृत की ओर देखा। ऐसा लगा कोई खड़ा है। आंखों मे चिन्ता की चिता सुलग उठी। हृदपिन्ड की धड़कन बढ़ गई। ऐसा मालूम हो रहा था कि शरीर का सम्पूर्ण रक्त कोई चूस रहा है। घबराहट बढ़ने लगी। लेटे रहना असम्भव हो गया। हड़बड़ा कर उठ बैठा। 'स्विच आन' कर दिया। खिड़की खोल दी। कमरे के प्रत्येक कोने पर सरसरी दृष्टि डाली। खिड़की से झांक कर देखा। कहीं कोई है तो नहीं। परन्तु कहीं कोई दिखलाई नहीं दिया। खिड़की के पास आकर खड़ा हो गया। बाहर की ओर देखने लगा। बाहर देखते ही मुझे अपनी अवस्था का स्मरण हो आया। नेत्रों के समक्ष नाच गये, वह विचार जो श्मशान में उठे थे।

शर्म! शर्म!! शर्म!!! जैसे कोई चिल्ला उठा। ऐसा प्रतीत हुआ मानों किसी के हाथ झटके के साथ उठ रहे हैं। खुली आंखो के सामने कुछ घण्टे पूर्व का भयानक चित्र अट्टहास कर उठा—हा! हा!! हा!!! तेरा कोई मूल्य नहीं, कोई अस्तित्व नहीं। कितना भोला है तू। श्मशान भूमि पर सोच रहा था किसका मोह? … किसकी ममता! … कैसा वियोग? … कैसा संयोग? … अब क्यों करता है अपने भावों का मोह? क्यों घबराता है? … खिलखिला कर मैं खिड़की से हट गया। मुझे अपनी कमजोरी पर झुंझला आ गई। मन में चेतना का संचार हुआ। सोचने लगा—

कितना अस्थिर है मनुष्य का मन! और उससे भी अधिक कितने अस्थिर है उसके विचार!! क्षण में कुछ सोचता है, क्षण में कुछ!!!"

स्मृति पटल पर वह चित्र अमित रूप से अंकित है कदाचित अब वह मिट न सकेगा।

सस्ता साहित्य मण्डल के सत्प्रकाशन

भागवत धर्म—ले० श्री हरि भाऊ उपाध्याय। प्रकाशक— सस्ता साहित्य मण्डल, कनाट सर्कस, नई दिल्ली। मू० ४॥)—सजिल्द ६॥)।

हिन्दू शास्त्रों और विशेषतः पुराणों में भागवत पुराण का बहुत महत्व है। इस पुराण का भी ११ वां स्कन्ध उसका सार माना गया है। प्रस्तुत पुस्तक उसी स्कन्ध के पूर्वार्ध की सुन्दर व्याख्या है। श्री हरिभाऊ उपाध्याय हिन्दी में गांधी वादी विचार धारा के उत्कृष्ट लेखक और राजनैतिक कार्यकर्ता के रूप में प्रसिद्ध हैं, किन्तु यह पुस्तक लिख कर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि राजनीति से अधिक रुचि वे अध्यात्मचिन्तन में लेते हैं।

भागवत पुराण भक्ति प्रधान है और योग व कर्म की अपेक्षा भक्ति पर अधिक बल देता है। एक मात्र भगवान भागवत में आत्मसमर्पण उसका सार है, किन्तु यह सब कुछ विविध पौराणिक कथाओं के द्वारा इतनी सुन्दर रीति से बताया गया है कि पढ़ने में रोचकता का अभाव नहीं होने पाता। उपाध्याय जी २० वीं सदी में हुए हैं और पुराण लिखे गये थे सम्भवतः १-१॥ हजार वर्ष पूर्व। इसलिए सब पौराणिक कल्पनाओं को अन्ध श्रद्धा के बिना कैसे माना जाय, यह समस्या लेखक के सामने स्थल-स्थल पर आई है और इसका समाधान लेखक ने सुन्दर ढंग से किया है। जो लोग ईश्वर के अवतार लेने में विश्वास करते हैं, उन्हें तो कोई बाधा नहीं आती। किन्तु आज के बुद्धिवादी मानव का सतोष भी उन्होंने किया है। उनकी सम्मति में ईश्वर की शक्ति प्रत्येक प्राणी में है, अतः सभी प्राणी ईश्वर के अवतार हैं। हम उन्हीं को अवतार कहते हैं, जो अपने विशिष्ट गुणों के कारण ईश्वर के अधिक निकट हों। इसी तरह वह ईश्वर की एकता में (बहुदेव वाद में नहीं) विश्वास करते हैं और विभिन्न देवों या देवताओं को उसकी शक्तियों का रूप देते हैं। यही कल्पना ऋषि दयानन्द की थी।

भागवत की टीका सुन्दर हुई है और प्रायः सब स्थलों पर आवश्यकतानुसार उपाध्यायजी व्याख्या करते जाते हैं, जो उनके अच्छे अध्ययन और गम्भीर चिन्तन को सूचित करती है। कहीं-कहीं वे बहुत अधिक विस्तार में भी चले गये हैं। दूसरे ग्रन्थों से भी उन्होंने पर्याप्त उद्धरण दिये हैं। अध्यात्म प्रेमियों तथा दर्शन में रुचि लेने वालों के लिये यह विस्तृत व्याख्या बहुत लाभकर होगी।

पुस्तक का गेटअप छपाई आदि आकर्षक है। आज के राजनीतिक और भौतिक युग में सस्ता साहित्य मण्डल इस अध्यात्म ग्रन्थ के प्रकाशन के लिये धन्यवाद का पात्र है।

★

बापू के आश्रम में— लेखक व प्रकाशक वही। मूल्य १) रु०।

किसी के लेखों, उपदेशों से हम उस को उतना नहीं समझ सकते, जितना उसके निकटवर्तियों के संस्मरणों से, क्योंकि निकटवर्तियों को उसके हृदय का यथार्थ दर्शन होता है। यह बात गांधी जी के सम्बन्ध में भी है। इसीलिये यदि उनके स्वरूप को समझना हो तो उनके सम्बन्ध में लिखे गये संस्मरण अधिक सहायक होंगे। उपाध्यायजी को गांधीजी के निकट चिरकाल तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। प्रस्तुत पुस्तिका में अनेक सुन्दर संस्मरण दिये गये हैं। उन जैसे सिद्धहस्त लेखक की भाषा और शैली सजीव है। इस पुस्तक को पढ़ कर हम गांधीजी को अधिक निकट से जान सकेंगे। किन्तु एक शब्द हम लेखक से भी कहना चाहते हैं कि अनेक स्थलों पर उनकी अपनी भूमिका पुस्तक की मनोरंजकता को कुछ कम कर देती है। संस्मरण बिना किसी टीका टिप्पणी के आयें तो अच्छा है।

★

सर्वोदय तत्व-दर्शन — लेखक—श्री गोपीनाथ धावन, प्रकाशक—वही। मूल्य—७) सजिल्द। बढ़िया छपाई गैटअप और कागज।

समालोचना के लिये प्रत्येक पुस्तक अथवा पत्रिका की दो प्रतियां आना आवश्यक है, अन्यथा केवल प्राप्ति स्वीकार ही किया जायेगा। —संपादक

यह कम आश्चर्य और दुःख की बात नहीं है कि हम मार्क्स और लेनिन के ग्रन्थों का अध्ययन करके देश और विश्व की समस्याओं का समाधान उनमें पाने का प्रयत्न करते हैं किन्तु न हम अपने देश की संस्कृति का अध्ययन करते हैं और न उसके महान् प्रचारक महात्मा गांधी को समझने का प्रयत्न करते हैं। आज देश का दिमाग अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों के हाथ में है और उनमें से ९, ७ प्रतिशत भी ऐसे न होंगे जो जोता, भारतीय संस्कृति तथा गांधीवाद के बारे में कुछ जानकारी रखते हैं। प्रस्तुत पुस्तक इसी कमी को दूर करने के लिये लिखी गई है।

गांधीजी सर्वोदय में साम्यवाद देखते थे। उनके सर्वोदय में हिंसा, असत्य, क्रोध और द्वेष को स्थान नहीं था। गांधी जी की सम्पूर्ण विचार धारा को लेखक ने सर्वोदय दर्शन का नाम दिया है। प्रस्तुत पुस्तक में सत्य, अहिंसा, धर्म और राजनीति, साधन की पवित्रता, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अस्पृश्यता निवारण, चरित्र आदि के सम्बन्ध में गांधीजी की मान्यतायें विस्तार से दी गई हैं। ग्रामोद्योग और ग्राम पंचायत गांधी-वाद के दो मूल स्तम्भ हैं जिन्हें हम आर्थिक और शासकीय क्षेत्रों में विकेन्द्रीकरण का नाम दे सकते हैं। हमारी सम्मति में भारतीय संस्कृति के यही दो स्थूल रूप हैं, जिनका संदेश महात्मा गांधी ने विश्व को दिया है। वस्तुतः पश्चिमी मार्क्सवाद का उत्तर भी इन्हीं दोनों में निहित है। हमारी नम्र सम्मति में इस विषय की जितनी अधिक चर्चा की जानी चाहिये थी, लेखक उतना विस्तार में नहीं जा सका है और सम्भवतः इसका कारण यह है कि वह सत्याग्रह के बहुत अधिक विस्तार में चला गया है। गांधीजी का अधिकांश जीवन विदेशी शक्ति से संघर्ष में बीता है। इसलिये सत्याग्रह, जो संघर्ष का एक साधन है, उनके जीवन का एक प्रधान अंग बन गया। किन्तु इसी से वह सर्वोदयवाद का प्रधान अंग नहीं बन जाता। इसी तरह कांग्रेस और उसका संगठन भी सर्वोदयवादी की दृष्टि में बहुत महत्व नहीं रखता। लेखक ने इन्हें कुछ अनावश्यक महत्व दे दिया है और ऐसा प्रतीत होता है कि पुस्तक का नाम सर्वोदय तत्व-दर्शन न होकर गांधी विचार-दर्शन होता तो अच्छा होता।

पुस्तक का अंतिम प्रकरण "अहिंसक राज्य" बहुत सुन्दर है और वह समस्त विश्व के राजनीतिज्ञों और विचारकों के के लिये पर्याप्त विचार सामग्री देता है। विश्व शांति का वास्तविक समाधान इस अध्याय से होता है।। हम आशा करते हैं कि भारत के आज के निर्माता गांधीजी के नाम की सिर्फ दुहाई न दे कर इस पुस्तक में चित्रित समाज के निर्माण का प्रयत्न करेंगे।

★

गांधी शिक्षा— (तीन भाग (प्रकाशक—वही, मूल्य—क्रमशः ।),।),।)

प्रस्तुत पुस्तिकायें विद्यार्थियों के लिये लिखी गई हैं। इनमें बालकों के लिये सुबोध सामग्री का संग्रह किया गया है। यह सामग्री गांधी जी की आत्मकथा, मंगल प्रभात, आरोग्य की कुंजी, हिन्द स्वराज्य आदि पुस्तकों से ली गई है। प्राय: सभी लेख मनोरंजक हैं या शिक्षाप्रद और चरित्र निर्माणकारी। पुस्तकों की छपाई और मोटा टाईप आकर्षक है। महा भारत की ऐतिहासिकता के सम्बन्ध में संदेह छोटे बालकों में बुद्धिभेद पैदा करता है। ऐसा प्रकरण न दिया जाता तो अच्छा था।

—कृष्ण

★

चीन तिब्बत संधि व भारत की सुरत्ता

[पृष्ठ १२ का शेष]

दलाईलामा

गया था कि सेना वहीं रखी जायगी। परन्तु उसका असली उद्देश्य दलाईलामा को गद्दी से उतारना था। दलाई लामा भाग कर भारत पहुँचा। चीनियों ने पंचम लामा को तिब्बत पर राज्य करने के लिए आमन्त्रित किया। परन्तु पंचम लामा समझदार और देशभक्त निकला और उसने चीनी निमन्त्रण स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। अब स्थिति बदल गई है। पंचम लामा चीनियों के हाथ की कठपुतली मात्र है। चीनी सैनिक मिशन ल्हासा में रहते हुए इस बात का पूर्ण रूप से प्रयत्न करेगा कि पंचम लामा के पक्षपाती व्यक्ति ही सब मुख्य और प्रधान जगहों में नियुक्त किये जायें और रखे जाय। राजनीतिक और सैनिक गतिविधि और चालों में दलाई लामा पूर्णतया पराजित हुआ है। यदि वह अब ल्हासा लौटा भी तो तिब्बती सरदारों की उसको पहले के समान भक्ति और निष्ठा प्राप्त न होगी। क्योंकि समझदार सरदार समझ गए हैं। दलाई लामा अस्ताचल गामी सूर्य है। फलत तिब्बती राजनीति में लामा का निकट भविष्य में कोई स्थान न रहेगा।

तात्कालिक प्रभाव

तिब्बत पर चीन का प्रभुत्व और अधिराज्य स्थापित हो जाने से चीन और भारत की सीमा सैकड़ों मील तक परस्पर स्पर्श करने लगी है और साथ ही मीलों दूर तक छूती चली गई है। लद्दाख से लेकर सादिया तक यह सीमा छूती हुई चली गई है। भारत का तिब्बत से निकट का सांस्कृतिक और व्यापारिक सम्बन्ध है। ल्हासा में भारत का एजेण्ट रहता है। डाक तार का सम्बन्ध है। व्यापार-मार्ग दोनों के लिए खुले हुए हैं। वे भविष्य में जारी रहेंगे या नहीं यह पेकिंग की इच्छा पर निर्भर है। पेकिंग भारत को किस दृष्टि से देखता है। यह अक्टूबर १९५० को मालूम हो गया था, जब चीन ने कहा था कि भारत व

चीन विरोधी विदेशी प्रभाव से प्रभावित है। इसलिए भविष्य में भारत चीन की ओर से निश्चिन्त नहीं रह सकता। तिब्बत पर चीन का नाम मात्र का प्रभुत्व स्वीकार करने से उत्पन्न दायित्व को भारत भी परिवर्तित स्थिति में पूरा करने के लिये बाध्य नहीं। तिब्बत पर अकेले पेकिंग का ही शासन रहेगा या मास्को का भी। यह बात ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता। परन्तु सिकियांग आन्तरिक मंगोलिया और मंचूरिया पर मास्को का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव और शासन स्थापित होने के बाद तिब्बत बचा रहेगा, यह मानना सम्भव नहीं। मध्य एशिया में रूसी वर्चस्व और प्रभाव को देखते हुए विश्व की छत पर भी यदि उसकी आंख हो, तो क्या आश्चर्य!

ल्हासा में चीनी मिशन के रहने से भूटान, सिक्किम, नेपाल और लद्दाख ये सब उसके द्वारा प्रभावित होंगे। इनमें आन्तरिक यातायात और संचार का विकास और प्रसार करने पर सर्वोत्तम दिया जायगा। भारत और तिब्बत के बीच .....ों और दर्रों का सैनिक दृष्टि से विकास किया जायगा। मध्य दुनिया में तिब्बत की महत्वपूर्ण स्थिति का विचार करके चीनी वहां अपने अड्डे बनायेंगे। खनिज और अन्य सम्पत्ति का भी वे पता लगायेंगे और सैनिक दृष्टि से उनका उपयोग करेंगे। इसलिए तिब्बत चीन का एक भाग है, एक प्रांत है, यह मान कर भारत को चीन-भारत-नीति पर पुनः विचार करना चाहिए और आत्मरक्षा की नई व्यवस्था करनी चाहिए। बदली स्थिति में अपने को बदलना ही जीवन और सुरक्षा का मार्ग है। क्या हम सत्य और यथार्थ तत्व की हम उपेक्षा करेंगे?

बालबन्धुओं से—

प्यारे बाल बन्धुओं,

तुमको यह जान कर प्रसन्नता होगी कि हमने 'बालबन्धु परिषद्' के पाठकों को परिषद् का नियमित सदस्य बनाने का आयोजन किया है। इस प्रकार तुम्हारे इस पृष्ठ पर अब तुम्हारी ही रुचि के लेख कविता, चित्र आदि छापे जायेंगे। पर यह सब तभी हो सकेगा, जब कि तुम स्वयं जल्दी से इसके सदस्य बन जाओगे तथा अपने दूसरे साथियों को भी सदस्य बनाओगे। साथ ही तुम अपनी रचनायें पहेलियां चुट कुले और चित्र आदि भी हमें भेजोगे तो और भी अच्छा रहेगा। जब सदस्यों की संख्या बढ़ जायेगी, तो बहुत से अच्छे २ कार्यक्रम तुमको मिलेंगे, जिसमें तुम को बहुत से नये मित्रों से मिलने का अवसर मिलेगा।

बच्चो ! यह तुम्हारा पृष्ठ है। इस पर छपा हुआ प्रत्येक अक्षर तुम्हारा ही लिखा हुआ होना चाहिये। इसलिये जल्दी से इसके सदस्य बन कर अपनी रचनायें हमें भेजो। बालबन्धु परिषद् की सदस्यता के नियम यह हैं।

सदस्यता के नियम

१ १६ वर्ष तक की आयु के बालक तथा बालिकायें इस के सदस्य बन सकते हैं।

२ सदस्यता का कोई शुल्क नहीं है।

३ इसी पृष्ठ पर छपा हुआ सद स्यतापत्र स्याही से साफ अक्षरों में हिंदी में भर कर निम्नलिखित पते पर भेजा जाना चाहिये।

रचनायें भेजने के नियम

१ रचना अधिक बड़ी नहीं होनी चाहिये।

२ वह रचना तुम्हारी स्वयं की लिखी हुई होनी चाहिये।

३ स्याही से साफ अक्षरों में कागज़ के एक ओर लिखी हुई होनी चाहिए।

४ इस पृष्ठ पर बालबन्धु परिषद् के सदस्यों की रचनाओं को प्रमुखता दी जायगी।

५ रचना भेजते समय अपनी सद स्यता की क्रम संख्या अवश्य लिखें।

६ कहानी कविता चुटकुले पहे लियां आदि सभी बालोपयोगी रचनायें भेजी जा सकती हैं।

से कटो ——————

सदस्यता-पत्र

नाम

आयु

संरक्षक

पूरा पता

क्रम संख्या (   ) तिथि २-८-५१

महा पुरुषो का बचपन

बचपन के सबसे बुरे दिन वे होते हैं, जब छोटे छोटे बालकों को पाठशाला और अध्यापक का भूत सवार रहता है। स्कूल में जाने पर न मालूम कौन सा अपराध हो जावे और अध्यापक की मार खानी पड़े। जो बच्चे कुछ साहसी और जिद्दी स्वभाव के होते हैं वे कभी कभी स्कूल जाने से इन्कार कर देते हैं। इन्कार करने का कारण यह नहीं होता कि वे बच्चे पढ़ना नहीं चाहते। बच्चे पढ़ना तो चाहते हैं लेकिन मास्टर जी के डंडे से पिटकर नहीं। क्यों ठीक है न ? यदि तुम्हें कोई इस प्रकार से पढ़ाना चाहे जिससे तुम्हारी पढ़ाई भी होती रहे और मास्टर जी के डंडे का भी सामना न करना पड़े तो तुम उसे क्या कहोगे। मेरे विचार में तुम उसे अपना हितैषी सम झोगे और उसका आदर करोगे। तो बच्चो इस प्रकार के तुम्हारे हितैषी गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर थे जिनकी ६ मई को सारे भारत में पुण्य तिथि मनाई जा रही है। उन्होंने भी बचपन में इसी प्रकार स्कूल जाने से मना कर दिया था, लेकिन फिर भी वे अनपढ़ नहीं रहे। संसार के बड़े से बड़े विद्वानों में उनकी गणना हुई।

बड़े होने पर उन्होंने शान्ति निके-तन नामक एक ऐसी संस्था खोली जहां बच्चों को मास्टर जी के डंडे का डर नहीं रहता था। उन्होंने अधिकतर कवितायें बंगला में लिखी हैं। बच्चों पर भी उन्होंने अच्छी अच्छी कवितायें लिखी हैं। क्या तुम उनकी कोई कविता चाहोगे, तो सुनो —

बच्चा अपने दादा से चांद के बारे में पूछता है।

कदम गाछेर डाले
पूर्णिमा चांद आटका पड़े
जखन सन्ध्या काले
तखन कि के उतारे
धरे आनते पारे

अर्थात कदम की डाल पर से चन्द्रमा झांक रहा है। क्या उसे कोई उतार सकता है। इस पर दादा उत्तर देता है कि तुम बड़े मूर्ख हो। क्या चन्द्रमा भी हाथ आ सकता है। बालक फिर पूछता है—

चांद जे थाके अनेक दूरे
केमन करे छुई
आमि बोलि दादा तुमी
जानों ना किच्छुई
मा आमादेर हासे जखन
ऐ दूर जानलार भाके
तखन तुम बोलबे किना
अनेक दूर थाके

अर्थात दादा तुम कुछ नहीं जानते। मां भी झरोखे से झांक रही है। उससे तो मैं बोल सकता हूँ। लेकिन चन्द्रमा को क्यों नहीं। इस प्रकार गुरु देव ने बच्चों पर बहुत सी कवितायें और कहानी लिखी हैं।

—श्याम भय्या

जब हृदय उछालें लेता है ।

जरा हंसिये

मैनेजर—(क्लर्क से) आज फिर तुम देर से आये हो ?

क्लर्क—जी बात यह हुई कि आज मेरी आंख देर से खुली

मैनेजर—तो क्या तुम घर पर भी सोते हो ?

× × ×

आज फिर नौकरानी ने चीनी की एक प्लेट तोड़ दी थी। गुस्से से भर कर मालकिन ने उसे बुला कर डांटा और कहा— 'तुम पर जुर्माना भी क्या करू, हर महीने तुम अपनी तनख्वाह से कहीं अधिक मूल्य की चीजें तोड़ देती हो। समझ में नहीं आता कि तुम्हारा इलाज क्या हो ?'

इलाज ?' नौकरानी इतमीनान से बोली— आप मेरी तनख्वाह बढ़ा दीजिये ?

× × ×

मजिस्ट्रेट—(अपराधी से) तुम्हें शरम आनी चाहिये कि तुम सातवीं बार अदालत में आये हो !

अपराधी—हुजूर गुस्ताखी माफ हो मुझ से अधिक तो आपको शरम आनी चाहिये क्योंकि आप प्रतिदिन अदालत में आते हैं !

मोहन—जेल में रहने से एक बात का आराम है।

सोहन—वह क्या ?

मोहन—वहां कोई कम्बख्त आधी रात को जगा कर यह तो नहीं कहता कि जाकर देख आओ पिछवाड़े वाला दरवाजा बन्द है या खुला !

क्या तुम्हारे पिताजी घर में हैं ?"
नहीं वे बाहर गये हुए हैं।
कब तक वे घर लौटेंगे ?
ठहरिये मैं अभी अन्दर जाकर उनसे पूछ कर आता हूँ।

कवीन्द्र रवीन्द्र की अमर साधना

[पृष्ठ १३ का शेष]

जब किया, तो क्या बुरा हुआ ? क्या हुआ जो तुमने गांव को नहीं जगाया ?] इनकी स्वदेश भक्ति भी आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख थी। उनका कोई ऐसा राष्ट्रीय गान नहीं है, जो भक्ति और भावना के अन्यान्य क्षेत्रों में व्यवहृत न हो सकता हो। उनके सभी गान सार्वभौम, हैं उन्होंने साधक (देश-भक्त साधक भी) को पुकार कर कहा है। यदि तोरे डाक शुने केऊ न आसे,

तबे एकला चलो रे।
एकला चलो, एकला चलो,
एकला चलो रे।

[यदि तेरी पुकार सुन कर कोई नहीं आता, तो तू अकेला ही चल, अकेला ही चल।]

देशभक्ति का मार्ग कंटकाकीर्ण है, उसमे पग-पग पर बाधायें हैं। सत्य मार्गावलम्बी देश-भक्त को, जब संसार पागल कहता है, तो उसके हृदय पर गहन निराशा छा जाती है। कवि इस प्रकार के सच्चे देश-भक्त को आश्वासन देकर कहता है—

ये तोरे पागल बले।
तोरे तुइ बलिसने किछु।
आज के तोरे के मन भेबे
अंग ये तोर धूलो देबे।
काल से प्राते माला हाते।
आसबे रे तोर पिछु पिछु॥
आज के आपन मानेर भरे
थाक से बेसे गदिर परे
काल के प्रेमे आसबे ने
करबे से तार माथा नींचु,

[जो तुझे पागल कहे उसे तू कुछ भी मत कह। आज जो तुझे कैसा कुछ समझ कर धूल उड़ाता है, वही कल प्रातःकाल हाथ में माला लिये तेरे पीछे-पीछे फिरेगा। आज चाहे वह मान कर के गद्दी पर बैठा रहे; किन्तु कल निश्चय ही वह प्रेम पूर्वक नीचे उतर कर तुझे अपना शीश नवावेगा।

आज संसार का दुर्दिन है। तृतीय विश्व-युद्ध की घनघोर घटाओं ने शान्ति के आकाश को तिमिराच्छन्न कर लिया है। देशभक्ति का नाम व्यक्तिगत और दलगत स्वार्थ-सिद्धि मात्र रह गया है। गुरुदेव का भौतिक शरीर यद्यपि हमारे बीच नहीं है किन्तु उनकी विश्व के कण-कण में व्याप्त संगीतमयी स्वर लहरी आज भी हमें स्फूर्ति प्रदान कर रही है, तथा मर्णनाश की ओर उन्मुख विज्ञानवादी पश्चिमी जगत को सचेत कर रही है।

(पृष्ठ २ का शेष)

सम्पत्ति है। सन्तान पर सब पिताओं का बराबर अधिकार होता है। स्त्री बहुधा दूसरे के घर जाते समय अपने बच्चों को छोड़ जाती है। स्त्री का स्वतन्त्र विकास बहुपति प्रथा के रहते असम्भव है।

वैश्यावृत्ति की करुण कहानी

आज से ३० वर्ष पूर्व वहां वैश्यावृत्ति की पाशविक प्रथा प्रारम्भ हुई थी। वहां से सर्वप्रथम वैश्यावृत्ति के लिये जाने वाली स्त्री का नाम पिनीठा है। वास्तव में यह स्त्री वहां से अपने पति के साथ शिमला नाचने गाने के लिये गई थी। परन्तु वहां एक वेश्यालय में फंस गई। रवांई की डीखा, ओजी और बाजगी जाति की स्त्रियों का पेशा ही गांव-गांव में नाच गाकर भीख मांगने का है। उन्हीं में से यह भी एक थी। वहां से जब वह सुन्दर गहनों और कपड़ों से सजकर वापस लौटी तो उसके परिवार एवं ग्राम की अन्य स्त्रियों को भी लगा कि इसका काम ही ठीक है। धीरे-धीरे पिनीठा अपने परिवार की कई लड़कियों को वेश्यावृत्ति के लिये शिमला ले गई। इस प्रकार वह औरतों को वेश्यावृत्ति के लिये लाने का कार्य करने लगी। जो स्त्री खून पसीना एक करके मेहनत करने पर भी भर पेट खाना न पाती थी, उन्हें इस प्रकार गहने, कपड़ों से सजे देखकर बहुतों को प्रलोभन हुआ और पचासों स्त्रियां पिनाठी ने इस कार्य के लिये रवांई से निकाल ली।

इन सब बातों का मूल कारण पर्वतीय व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति है। इतने जघन्य कृत्यों के पश्चात् भी वे कभी ऋण भार से मुक्त नहीं हो पाते।

उपचार क्या हो

प्रकृति की गोद में स्वच्छन्द विचरण करने वाले इन पर्वतीय बन्धुओं की दशा सुधारने का उत्तरदायित्व हम पर तथा बहुत कुछ सरकार पर भी है। सर्वप्रथम वहां व्यापक शिक्षा प्रचार की आवश्यकता है ताकि वहां के निवासी अपने आत्म-सम्मान सहित मनुष्यों की तरह रह सकें। बीसवीं सदी के सभ्यता प्रधान युग में भी इस प्रदेश के व्यक्तियों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ, तब कब होगा।

—x—

[पृष्ठ ११ का शेष]

हो गई हैं और ये पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तान—दोनों में ही है।

पाकिस्तान भारत की शक्ति से परिचित है, फिर भी वह जनता को उसके विरुद्ध युद्ध के लिए तैयार कर रहा है। यह समझना कठिन है। पाकिस्तान की इन हरकतों को देख कर क्या अनुमान किया जा सकता है ? निम्नलिखित दो बातों में से एक सही हो सकती है:—

(१) या तो सारी की सारी चीज एक झूठा जाल है, जिसका उद्देश्य पाकिस्तानी जनता का ध्यान आंतरिक राजनीति और संघर्षों से हटा कर दूसरी ओर आकर्षित करना है, या

(२) पाकिस्तान को कोई दूसरी शक्तियां इन उत्तेजनात्मक कार्यों के लिये भड़का रही है।

चि~~~त्र~~~लो~~~क

संसार

गृहस्थ जीवन विभिन्न भावनाओं का एक समुच्चय है। प्रसन्नता और प्रगति परिवार के सदस्यों के परस्पर व्यवहार पर निर्भर होती है। प्रत्येक व्यक्ति उक्त सिद्धान्त को मानता है और इसके अभाव से कितना दुष्परिणाम होता है यह जानता हुआ भी क्या वह इसको अपने जीवन में घटाता है? पारिवारिक व्यवस्था किस प्रकार की करनी चाहिये इसको जैमिनी ने निज चित्र "संसार" में भली प्रकार प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

चित्र एक परिवार के जीवन पर आधारित है जिसके सब सदस्य एक दूसरे के प्रति सद्भावनायें रखते हैं परन्तु कुछ दूसरों की समस्याओं को समझ नहीं पाते कुछेक का दृष्टिकोण भिन्न है। वे निज स्वभाव में इस बात को भूल जाते हैं कि इसका परिवार जो कि माता पिता भाई व बहिन का बना है उस पर क्या प्रभाव पड़ेगा। प्रेम और उत्तरदायित्व एक ओर आज्ञापालन एक ओर इन भावों के द्वन्द्व का चित्रण इस चित्र में किया गया है। जीवन क्षेत्र में मनुष्यों को प्रेम द्वेष सुख दुख इत्यादि से लड़ना पड़ता है और सब परिस्थितियों में अन्य परिजनों के साथ अपने को व्यवस्थित करना आवश्यक है इसको 'संसार' में देख कर मनुष्य निज जीवन की वास्तविकता को देख सकेगा। कथानक के उपयुक्त कलाकारों का ही संग्रह विशेष सावधानी से इस चित्र में किया गया है। भारत के प्रमुख नगरों में इसका प्रदर्शन निकट भविष्य में हो रहा है।

वितरण अधिकार राजश्री पिक्चर्स को प्राप्त है।

राजपूत

यदि कथानक, कलाकार और संगीत ही चित्र की महानता के द्योतक हैं तो राजपूत सर्वथा महान चित्र होगा। भावनाओं से ओतप्रोत तथा साहसभरी घटनाओं से भरे इस चित्र में सुरैया के नेतृत्व में जयराज, सप्रू, कुलदीप, शकुन्तला ने चित्रकला का विशद् प्रदर्शन किया है। संगीत हंसराज बहल द्वारा आयोजित है राजस्थान के दृश्यों से यह चित्र अति मनोरंजक बन गया है। बेनाई एण्ड कं० द्वारा यह चित्र शीघ्र प्रदर्शित किया जायेगा।

वैजयन्ती माला 'बहार' में

बड़ी बहू

अपर इण्डिया पिक्चर्स लिमिटेड 'बाजी' और 'बुजदिल' के बाद 'बड़ी बहू' प्रस्तुत कर रहे हैं। इस चित्र का निर्देशन एस० भट्ट और संगीत अनिल बिश्वास द्वारा किया गया है। मुख्य भूमिका में निम्मी शेखर सुलोचना चैटर्जी हैं। इस चित्र के अतिरिक्त इन्होंने 'लक्ष्मी नारायण', नाना भाई भट्ट द्वारा निर्देशित एक पौराणिक चित्र, 'मदहोश' जे० बी० एच० वाडिया का संगीत भरा चित्र 'बेताब' और सिनबाद दी सेलर के वितरण अधिकार भी प्राप्त किये हैं।

(पृष्ठ ४ का शेष)

महत्वपूर्ण बात यह है कि पकड़े जाने वाले अधिकांश लोग सैनिक महत्व के स्थानों के निकट, अथवा तोड़ फोड़ की कार्यवाही करते हुए पकड़े गए हैं। स्थान स्थान पर हुई तलाशियों से भी इस समाचार की पुष्टी हुई है कि देश भर में इस प्रकार का एक संगठित दल कार्य कर रहा है। यह भी ज्ञात हुआ है कि पाकिस्तान के अन्दर एक इस प्रकार का नियमित शिक्षा केन्द्र है जो गुप्तचर कार्य की ट्रेनिंग दे कर लोगों को भारत भेजता है। भारत सरकार सतर्कतापूर्वक इस प्रकार के लोगों को देख रही है।

क्या भारत-पाक युद्ध होगा ?

[पृष्ठ १ का शेष]

पाकिस्तान भेज दिया जाय। इसके लिये भारतीय संसद द्वारा एक विशेष कानून भी बनाया गया था। यह कार्यवाही पाकिस्तान द्वारा भारत में आयोजित पक्षपाती कार्यवाहियों के हितों के विरुद्ध पड़ती थी।

दिल्ली समझौता

अतः पाकिस्तान ने पूर्वी बंगाल में हिंदुओं का विनाश आरम्भ किया और वातावरण इतना गरम किया कि संघर्ष अनिवार्य प्रतीत होने लगे। किन्तु पाकिस्तान से संघर्ष टालने की नीति के कारण पं० नेहरू शान्ति प्रयत्नों तक ही सीमित रहे और परिणाम दिल्ली समझौता हुआ, जिसके फलस्वरूप आसाम में प्रविष्ट हुए मुसलमानों को बाहर निकालने का विचार भारत सरकार ने छोड़ दिया, जूट खरीदना आरम्भ कर दिया और कोयला देना भी। जितने हिन्दू पाकिस्तान में कम हो गए वह अलग एक लाभ हुआ।

युद्ध का नारा

काश्मीर के प्रश्न पर एक बार पुनः पाकिस्तान ने वही मार्ग अपनाया है। भारत पर आक्रमण की त्यारी करने के आरोप से इस बार आरम्भ किया गया है और समस्त विश्व में इस बात के ढोल बजाये जा रहे हैं कि भारत से पाकिस्तान को खतरा है। पाकिस्तान की सीमाओं में युद्ध की भारी तैयारियां की जा रही हैं और युद्धोन्माद भड़काया जा रहा है। यह सब इसीलिये है कि भारत के नेताओं को यह प्रतीत हो कि पाकिस्तान से संघर्ष होगा और वे इसे टालने के लिए उतावले हो उठें।

ध्यान देने योग्य

यह विशेष रूप से ध्यान देने वाली बात है कि पाकिस्तान युद्ध की तैयारियां इस प्रकार कर रहा है जिससे सारे संसार को उनका पता चल जावे। युद्ध की तैयारियां सदा ही अत्यन्त गुप्त रूप से होती हैं। यदि वास्तव में पाकिस्तान भी युद्ध ही चाहता होता तो उसकी तत्सम्बन्धी तमाम कार्यवाही इतने चिल्ला कर तथा सारे विश्व को सुना कर नहीं होती। दूसरी महत्व की बात लियाकत द्वारा नेहरू को दिया गया निमन्त्रण है। पाकिस्तान के नेताओं ने यह निमन्त्रण विशेष प्रकार का वातावरण उत्पन्न करने के पश्चात ही भेजा है जिससे पं० नेहरू चर्चा द्वारा संघर्ष टालने के प्रयत्न में झुकें और काश्मीर उनके हवाले कर दें।

पं० नेहरू सावधान !

हर्ष का विषय है कि हमारे प्रधानमंत्री ने पाकिस्तान से व्यवहार करने में सर्वप्रथम दृढ़ता तथा राजनीति कौशल का कुछ परिचय दिया है। यदि यह दृढ़ता बनी रही तो थोड़ा उछल कूद कर पाकिस्तान ठिकाने से आ जायगा। मियां लियाकतअली खां भूल कर भी भारत से युद्ध नहीं चाहते, क्योंकि वे भलीभांति समझते हैं कि भारत युद्ध का अन्त पाकिस्तान के ही ... में होगा। वे तो केवल गीदड़ भभकी व कूटनीतिक कुशलता से कांग्रेसी नेताओं की दुर्बल मनोवृत्ति का लाभ उठा कर काश्मीर को हड़पना चाहते हैं। इसलिए यह विश्वास है कि वे पं० नेहरू का दो टूक उत्तर पाकर भी पत्र व्यवहार जारी रखेंगे।

पाकिस्तान सशस्त्र संघर्ष आरम्भ करेगा, इसमें भारी सन्देह है, क्योंकि ऐसी स्थिति में वह समझता है कि भारतीय मुसलमानों का जीवन संकट में पड़ जावेगा। तो भी यदि उसने आरम्भ ही किया, तो अमेरिका व ब्रिटेन के इसी आश्वासन पर कि शस्त्र उठाते ही राष्ट्रसंघ बीच में कूद पड़ेगा और तब पं० नेहरू पर काफी दबाव डाल कर उन्हें दबाया जा सकेगा। भय युद्ध का नहीं, केवल इस बात का है कि हमारे प्रधानमन्त्री की मुस्लिम तुष्टीकरण व संघर्ष टालने की मनोवृत्ति कहीं उन्हें झुका न दे और वे काश्मीर को पाकिस्तान को न दे बैठें।

दिल्ली साप्ताहिक वायदा बाजार

[ले० — श्री ब्रह्मानन्द अरतिया]

१ अगस्त बुधवार को समाप्त सप्ताह के दैनिक भाव निम्न हैं :—

चांदी टुकड़ा चेम्बर सावन डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
बृहस्पति	१८२।)	१८६॥।-)	१८२)	१८६॥।-)
शुक्र	१८२॥।=)	१८७=)	१८२॥।)	१८७-)
शनि	१८७=)	१८७॥।=)	१८६॥=)	१८७॥)
सोम	१८७॥।=)	१८८॥।=)	१८९॥=)	१८८॥=)
मगल	१८८।-)	१८८॥=)	१८७॥।=)	१८८॥=)
बुध	१८८॥)	१९०॥=)	१८८॥)	१९०।=)

गवार माघ डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
बृहस्पति	१२=)।	१२॥=)॥	१२=)	१२॥-)॥
शुक्र	१२।=)॥	१२।=)॥	१२=)	१२=)॥
शनि	१२)॥	१२।)	१२)	१२)।
सोम	११॥।=)॥	१२=)॥	११॥=)।	१२=)।
मगल	१२=)।=	१२।=)	१=)॥	१२।-)॥
बुध	१२।)॥	१२॥-)।	१२=)॥	१२॥)

मटर भादवा डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
बृहस्पति	१६।-)॥	१६॥।)॥	१६=)।	१६॥=)=
शुक्र	१६॥)॥	१६॥-)॥	१६।-)॥	१६।=)।
शनि	१६।)	१६॥-)॥	१६।)	१६॥)।
सोम	१६॥=)॥	१६॥।=)॥	१६।=)॥=	१६॥-)=
मगल	१६॥-)॥	१७)।	१६॥-)	१६॥=)।=
बुध	१६॥।)॥	१६॥=)।	१६॥=)।	१६॥-)।

[पृष्ठ ७ का शेष]

खनिज व व्यापार

देश में रसायनक, पोटाश व गधक पाये जाते हैं। कोयला नहीं के बराबर है। छोटे उद्योग भी कम ही हैं। साधनों की कमी के कारण कच्चे रूप में सीरिया को निर्यात कर दिया जाता है। कुछ कपड़ा, खाद्य वस्तुएं इत्यादि निर्यात की जाती है। देश में ओटोमन बैंक की एक शाखा कार्य करती है। यातायात के साधन भी अत्यन्त पिछड़ी दशा में है। केवल एक बन्दरगाह अकबा है। यह सऊदी अरब व फिलस्तान के समीप होने से इसका महत्व अत्यन्त बढ़ गया है,

मध्यपूर्व के देशों से सम्बन्ध

ऊपर कहा जा चुका है कि मध्यपूर्व के मुस्लिम राष्ट्र सदैव एक दूसरे को आशंका की दृष्टि से देखते हैं। इसी के कारण दिन प्रतिदिन वहां प्रमुख राजनीतिज्ञों की हत्या हो रही है। आजतक प्रायः १२ राजनैतिक हत्याओं का कलंक इस प्रदेश पर लग चुका है। राज्यों का स्वामित्व स्थायी नहीं होता है। शाह अब्दुल्ला को मिश्र व अन्य राष्ट्र आशंका की दृष्टि से देखते थे। सऊदी अरब इसलिए अब्दुल्ला का विरोध करता था ! क्योंकि उन्होने हेजाज को, जो कि उनका पैतृक राज्य से वापिस मांगने का आन्दोलन चलाया था। मिश्र सदैव से नेतागिरी के चक्कर में पड़ रहा है। उसने अब्दुल्ला द्वारा फिलस्तीन के विभिन्न प्रदेश को ट्रांसजोर्डन में मिला लेने का कड़ा विरोध किया था। यरुशलम के भूतपूर्व मन्त्री ने भी अपने इस प्रदेश को छिन जाने पर कड़ा विरोध प्रकट किया था। स्वयं अरबलीग ने शरणार्थियों को वापिस लौटे जाने को कहा था। परन्तु शाह ने इसका विरोध किया और उनके बसाने के अनेकों प्रयत्न किए थे। शाह की अंग्रेजों द्वारा शिक्षित सेना को भी अन्य अरबराष्ट्र आशंका की दृष्टि से देखते हैं।

अमेरिका व मध्यपूर्व

अमरिका की नीति अब के स्थान पर मध्यपूर्व में शक्ति का प्रयोग करने की रही है। उसने अभी हाल में वहां पर अनेकों हत्याओं में भाग लिया है क्योंकि वह अपने मित्र ब्रिटेन को इस प्रदेश से बाहर निकालना चाहता है। अ० अली-आसमारा की मृत्यु से ईरान में ब्रिटेन का तेल साम्राज्य समाप्त होगया है। अमेरिका के दूत का इस सम्बन्ध में मध्यस्थता करना भी कूटनीति से रहित नहीं है। शाह अब्दुल्ला की मृत्यु से ब्रिटेन ने अपना सबसे बड़ा एक मुस्लिम समर्थक खोदिया है। उसे अब इस प्रदेश में अपने सैनिक अड्डे भी समाप्त हो जाने का डर है। शाह की मृत्यु से देश का शासन भी छिन्न भिन्न हो गया है। किसी योग्य शासक के अभाव में मध्यपूर्व के अन्य राष्ट्र अपना बदला चुकाने के लिये लालायित हैं। कुछ सप्ताहों में ही वहां पर ब्रिटेन, अमरिका व मध्यपूर्व के देशों के भाग्य का निपटारा होगा। प्रत्येक शक्ति इस भूभाग पर इसलिये नियन्त्रण रखना चाहती है कि यहां से रूस के तेल कूपों पर सफलता से हमला किया जा सकता है। प्रथम दौर में अमेरिका विजयी होगया है। अब देखें कि ऊंट किस करवट बैठता है।

'सिविल एण्ड मिलिटरी गजट' के सम्पादक ने आस्ट्रेलिया से लौटकर बताया है कि पाकिस्तानी खातूनों, युसुफ हारून की बहिनों ने आस्ट्रेलियनों को मोह लिया है।

बे-पर्दा नजर आईं, जो चन्द बीबियां,
अकबर ज़मीं में ग़ैरते-कौमी से गड़ गया,
पूछा जो उनसे बीबीयों,
पर्दा तुम्हारा क्या हुआ ?
कहने लगीं कि अक्ल पर,
मर्दों की पड़ गया।

यह शेर अकबर ने समय से पहिले ही लिख दिया था, जो अब पाकिस्तान ने सार्थक करना आरम्भ किया है।

× × ×

पाकिस्तान की प्रथम खातून लियाकतअली की दिल्ली की मास्टरनी घरवाली ने औरतों को युद्ध के लिये तैयार होने की अपील की है।

यह उन्होंने अभी नहीं बताया कि अपने पुराने परिचितों के सामने लड़ने के लिये पर्दे में आयेंगी या बेपर्दा होकर।

× × ×

आगा खां के सुपुत्र प्रिंसअली खां एक अन्य हालीवुड की अभिनेत्री से शादी करने जा रहे हैं।

यदि वह हालीवुड की सारी ही अभिनेत्रियों से एक साथ ही शादी कर डालें, तो हो सकता है, मुसलमानों के ख्वाजा सम्प्रदाय के अलावा और भी मुस्लिम सम्प्रदाय उन्हें गुरू मानने लगें।

× × ×

किदवई और जैन ने अपने स्तीफे वापिस ले लिये हैं।

— नेहरूजी

सोचकर यह शायद कि पता नहीं तकदीर में आगे भी कुर्सी लिखी है या नहीं, जितने दिन बैठा जाय बैठ लो।

× × ×

जयप्रकाशनारायण का कहना है कि कृपलानी की प्रजापार्टी के पास कोई ठोस योजना नहीं।

ठोस योजना उन्होंने इसलिए नहीं रखी कि योजनाएं अधिक ठोस हो जाने के कारण उनमे तोल खाना घुमाने की जगह नहीं रहती। ठोस योजना वालों को भी उन्होने इसी लिये छोड़ा कि वह योजनाओं को ज्यादा ठोस करते जाते थे।

× × ×

श्री पालीवाल का कहना है कि पन्त-सरकार के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव रखा जायगा।

घर के चिराग से आग लगाने मे जितनी इन्हें हाथ सिकाई होती है, उतनी बाहर की आग में नहीं।

× ×

प्रेस ट्रस्ट का कहना है कि ब्रिटिश पाकिस्तान को सहयोग दे रहे हैं।

आश्चर्य की क्या बात है। जब बनाने मे उन्होंने सहयोग दिया तो मरवाने मे क्यों न दें।

× × ×

लियाकतअली पाकिस्तान से भागने की तैयारी कर रहे हैं।

— एक पत्र

अपने राम की राय में उन्हें पहिले लन्दन भागना चाहिये और उसके बाद अमेरिका भाग जाना चाहिये। सरकारी रुपये पर हाथ साफ कर जाना चाहिये।

× × ×

पति से अन-बन होने के कारण फुलेरा की एक स्त्री कुएं मे गिरकर मर गई।

— एक सम्वाददाता

कुएं यदि औरतों की मृत्यु में इसी तरह सहयोग देते रहे तो सरकार को भारतीय विधुरों के घर बसाने की समस्या से और टक्कर लेनी पड़ेगी, इसलिये अच्छा है इन्हें बन्द ही करा दें।

× × ×

उत्तर प्रदेश के न्यायमन्त्री चौधरी चरणसिंह का कहना है कि हमारे यहां कहीं असन्तोष नहीं है, यह अखबार के व्यर्थ हल्ले है।

अपने राम की यही सन्तोष है कि चौ० साहब को अब मन्त्री बनने के बाद असन्तोष नहीं रहा और जो थोड़ा बहुत है, वह अखबारों पर।

× ×

भाषण और लेखन स्वातन्त्र्य को लोग 'लाइसेंस' समझ बैठे है।

— वही भाषण

यही एक दिन आपके राजनीतिक गुरू भी कहा करते थे।

× × ×

शक्ति हमारे हाथ में है, हम फासिस्ट भी बन सकते हैं। आज हमारे हलके लाठी-चार्ज तक की आलोचना की जाती है।

फासिस्ट बनिये, गोली चलवाइये। नवम्बर-दिसम्बर तक जो चाहे बन लीजिये।

× × ×

श्री कृपलानी का कहना है कि यदि कांग्रेस ठीक रास्ते पर चल पड़ी तो मैं हिमालय पर्वत पर चला जाऊगा।

तब तो कांग्रस को पुराने रास्ते पर ही चलना ठीक है क्याकि आपको प्रायश्चित के लिये हिमालय तो न जाना पड़ेगा।

× × ×

उत्तर प्रदेश के कृषि मन्त्री शेरवानी ने स्तीफा दिया और झट से वापिस भी ले लिया।

इसी का नाम है सफाई, यदि पट से न लेते तो चट से मन्जूर हो जाता और सारी कृषि इनके बिना चमगादड़ चर जाते।

× × ×

लियाकतअली का कहना है कि पाकिस्तान का चिह्न मुका होगा।

— प्रेस ट्रस्ट

इसके अलावा आपकी जनता और कुछ समझती भी नहीं।

× × ×

कानपुर की सूती मिलों में हड़ताल होगी।

— एक शीर्षक

ऊनी मिलो में करते तो कुछ चोर-बाजारियों को भी लाभ होता।

— पाराशर

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

योगिराज श्री अरविन्द

दिल्ली रविवार २८ श्रावण संवत् २००८ DELHI 12th AUGUST 1951

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, २८ रविवार श्रावण सम्वत् २००८ [अङ्क १६

विचार-प्रकाशन का स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
और जब तक हमारे संविधान में इसकी गारण्टी नहीं कर दी जायगी,
हम तब तक चैन नहीं लेंगे।

१५ अगस्त !

भारत स्वतंत्रता प्राप्ति दिवस पांचवीं बार आया है। इसके पुनरागमन का इतिहास प्रिय तथा कटु अनुभवों का इतिहास है, आशा तथा निराशा की कथा है। इसके साथ राष्ट्र के अरमान तथा वेदनायें बंधी तड़प रही है, अरमान जो निकल न सके, वेदनायें जो मिट न सकीं। और अब गत वर्षों का लेखा जोखा लेकर यह पुनः उपस्थित हुआ है।

पूरे चार वर्ष हुए जब भारत विदेशी शासन से मुक्त हुआ था। बन्धनों के टूटने के समय प्रत्येक हृदय उल्लसित था। यद्यपि पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त व पश्चिमी पंजाब में हिन्दुओं के जनधन की होली जल रही थी, पूर्वी पजाब, दिल्ली तथा शेष भारत का जीवन एक कृत्रिम रेखा के द्वारा सहसा मध्यरात्रि में अपने से पृथक हो जाने वाले बान्धवों के क्रन्दन से विक्षुब्ध था, तो भी देश ने यथासम्भव उत्साह से उत्सव मनाकर स्वतंत्रता देवी का स्वागत किया, धूमधाम से समारोह हुए।

विदेशी शासन से त्रस्त जनजीवन ने खुलकर सांस लेने का यत्न किया। किन्तु यह क्या, उसे सांस लेने क्यों नहीं दिया जाता? प्राण बचाकर किसी प्रकार निकल आये हुए लोगों ने सुना कि उन्हें पुनः भट्टी में प्रवेश करने को कहा जा रहा है। सीमा रेखा तक दौड़कर आने वाले का सीमा के किनारे वध कर दिया गया किन्तु इस ओर खड़ा उसका रक्षक उसकी ओर हाथ न बढ़ा सका। असहाय तथा निराश्रित बालकों को कौन संभाले?

यही नहीं, लोग समझे कि अंग्रेज गए तो अंग्रेजों का काला शासन भी गया अतः उन्होंने जरा हाथ पांव सीधे करने चाहे ही थे कि अंग्रेजों द्वारा बनाये गए सुरक्षा कानूनों ने डाट कर कहा—'खबरदार, अंग्रेज गया है, अंग्रेजों की रचना नहीं गई।' और लोगों ने नेत्र मलकर आश्चर्य पूर्वक देखा कि सचमुच वे अंग्रेजों द्वारा बटी गई रस्सियों से अभी भी जकड़े हुए हैं।

चार वर्ष की स्वतंत्रता और देश कहां से कहां आ गया। कुछ लोग आज भी निस्संकोच भाव से कह देते हैं कि भारत ने इन चार वर्षों में बड़ी प्रगति की है, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त की है, अग्रणी देशों में स्थान बनाने में सफल हुआ है। किन्तु लेखा जोखा तो कुछ और ही बनता है।

आज लोग उससे अधिक निराश हैं जितने कि वे विदेशी शासन में थे। उस समय विदेशियों से टक्कर लेने वाले नेताओं के पीछे चलने का उत्साह तो था। अंग्रेजों पर विजय पाने की महत्वाकांक्षा तो थी। किन्तु विदेशियों को जीतने का दावा करने वाले महापुरुषों को अपनी स्वयं की बुराइयों से, दुर्बलता में हारते देखना कितना करुण था—कितना निराशाजनक था। कामदेव विजय की घोषणा करने वाला यदि किसी कुरूप वेश्या के पीछे दौड़ पड़े तो उसे देख कर कैसा लगेगा?

किंकर्तव्यविमूढ़ हुआ देश का जनजीवन सोचता है कि स्थिति में यह गंभीर परिवर्तन कैसे हुआ? इन चार ही वर्षों में देश में अकाल की स्थिति आ गयी, वस्त्र का अभाव हो गया, बेकारी बढ़ गई, अर्थ संकट मुंह बाए खड़ा है, महगाई का ठिकाना नहीं, भ्रष्टाचार सौगुना होकर त्रास दे रहा है, चरित्र का घोर पतन हो गया, आखिर क्यों, कैसे? क्या यह सब अपने आप हो गया?

पाकिस्तान दिनरात हमारा अपमान कर रहा है। हमारे बान्धवों पर अत्याचार हुए, हमारी अरबों खरबों रुपये की सम्पति छीन ली गयी। हमारी भूमि पर आक्रमण हुए, काश्मीर के वक्षस्थल पर आज भी शत्रु के खेमों के कीले गड़े हुए हैं, आसाम में शत्रु फैलते चले जा रहे हैं, भारत विजय के मन्सूबे बंध रहे हैं, और हम प्रत्येक अपमान को सहकर चुप बैठे रहे। पाकिस्तान सिर में काट रहा है और जिनकी कृपा से इसका जन्म हुआ वे चुपचाप बैठे हैं। आखिर क्यों?

हम न्याय का पक्ष लेकर विश्व के सम्मुख जाते हैं कोई हमें पूछता तक नहीं। हम मानवता की दुहाई देते हैं कोई सुनता तक नहीं। हम सत्य का नाम लेते हैं, और वे हमारी हंसी उड़ाते हैं, आखिर क्यों?

चार वर्ष में देश ने अनुभव किया कि अंग्रेज चले गए किन्तु अपनी बू छोड़ गए हैं और उसी ने हमारे स्वदेशी नेताओं पर अधिकार कर लिया है। आज वे जनता से उतना ही दूर रहते हैं जितनी दूर अंग्रेज रहते थे। उसी प्रकार शासन करते हैं जिस प्रकार अंग्रेज करते थे। वही ठाठ बाट बल्कि उससे भी अधिक रखना चाहते हैं जो अंग्रेज रखते थे। उन्हीं काले कानूनों की, उनसे भी अधिक काले कानूनों की। इन्हें आवश्यकता पड़ती है, जिनसे अंग्रेज शासन करते थे। देश की वर्तमान दशा क्या केवल स्वतंत्रताप्राप्ति के पश्चात आने वाले संकट मात्र है अथवा पूर्णतः असफल सिद्ध हुए वर्तमान शासक दल की गलत नीति, पतित नेता और विचित्र सनकों का फल है?

चार वर्ष का परिणाम तो यह है, देखें पांचवे वर्ष में कुछ परिवर्तन होता है या नहीं।

—०—

लेख प्रतियोगिता

पारितोषक—५००

'वीर अर्जुन' की ओर से एक लेख प्रतियोगिता आरम्भ की जा रही है। लेख का विषय तथा प्रतियोगिता के नियम नीचे दिए जा रहे हैं। यह नियम प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए मान्य होंगे। अन्यथा उस रचना को प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जावेगा।

विषय :—भारतीय देशी राज्यों में विलय के पूर्व जनता की जीवन-निर्वाह की स्थिति कहीं अच्छी थी। विलय के पश्चात शासन व्यवस्था राजाओं के स्थान पर जन-नेताओं के हाथ में आ जाने के कारण स्थिति सुधरनी चाहिए थी। किन्तु वस्तुस्थिति इसके विपरीत है। राज्यसंघों में आज जनकष्ट कहीं अधिक बढ़ा हुआ है और स्थिति अधिकाधिक बिगड़ती दिखायी देती है। उपरोक्त दृष्टि से निष्पक्ष विचार करते हुए राजस्थान तथा मध्यभारत इन दो राज्य संघों के जनकष्टों के कारणों की व्याख्या कीजिए।

नियम :—

१. प्रतियोगिता में भाग कोई भी व्यक्ति ले सकता है।

२. प्रतियोगिता में भेजे जाने वाले लेख कागज के एक ओर स्पष्ट व सुपाठ्य अक्षरों में लिखे होने चाहिये। दुष्पाठ्य अथवा अस्वच्छ लेखों को प्रवेश नहीं मिलेगा।

३. भाव प्रकाशन स्पष्ट तथा संक्षेप में हो। यथासम्भव समस्या के सभी अंगों पर विचार किया गया हो।

४. जो उदाहरण दिये जायें वे सप्रमाण हों और जो सुझाव प्रस्तुत किये जायें, वे व्यवहार्य हों।

५. प्रतियोगिता में आने वाले सभी लेखों पर 'वीर अर्जुन' का कापीराइट होगा, तथा कोई लेख वापिस नहीं किया जायगा।

६. निर्णायकों का निर्णय अन्तिम रूप में मान्य होगा। निर्णायकों के नामों की घोषणा निकट भविष्य में 'वीर अर्जुन' में प्रकाशित की जायेगी।

७. लेख का विस्तार ३००० शब्दों से अधिक न हो।

८. प्रतियोगिता में भेजे जाने वाले लेखों के 'वीर अर्जुन' कार्यालय में पहुँचने की अन्तिम तिथि ३१ अक्टूबर है।

९. लिफाफे पर 'लेख प्रतियोगिता के लिए' यह स्पष्ट लिखा होना चाहिये।

१०. सर्वोत्कृष्ट लेखकों को ३००) रु०, द्वितीय को १००) और तृतीय तथा चतुर्थ का ५०) ५०) रु० का राशि द्वारा सम्मानित किया जायगा। प्रविष्ट लेखों की योग्यतानुसार निर्णायक इस वितरण व्यवस्था में परिवर्तन भी कर सकते हैं।

देश वार्ता

पाक के भारत-विरोधी षड्यन्त्र में निरन्तर वृद्धि

ब्रिटेन का सक्रिय सहयोग प्राप्त

तरुणों की रक्तसिक्त प्रतिज्ञा : श्री जैन पुन: संकटग्रस्त

डा० अम्बेदकर

हिन्दू कोड बिल पास करा कर रहूंगा

संसद् का अधिवेशन

संसद का वर्षाकालीन अधिवेशन ६ अगस्त से प्रारम्भ हो गया। अपने उद्घाटन भाषण में राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने पाकिस्तान की आक्रमणात्मक नीति का विरोध करते हुए देश की खाद्य तथा वस्त्र समस्या पर भी प्रकाश डाला। राष्ट्रपति ने इस अधिवेशन में हिन्दू कोड विधेयक अवश्य पास किये जाने की आशा प्रकट है। विगत कई वर्षों से हिन्दू कोड विधेयक इतना विवादास्पद विषय रहा है कि संसद में बार बार प्रयत्न किये जाने पर भी विधेयक को निरन्तर स्थगित करना पड़ा। इसका प्रभाव भारतीय समाज पर दूर व्यापी पड़ेगा। यह समझ कर ही विधेयक के तीव्र विरोधी न होते हुए भी संसद के कुछ सदस्यों ने इस सम्बन्ध में जनता का मत जान लियेजाने की आवश्यकता पर अधिक जोर दिया है। किन्तु राष्ट्रपति की इस घोषणा से वर्तमान कांग्रेस सरकार की विधेयक को जनमत की उपेक्षा कर किसी न किसी भांति पास कराने की इच्छा स्पष्ट्या प्रकट होता है।

संसद के वर्तमान अधिवेशन में दूसरा महत्वपूर्ण निर्णय जो हुआ वह है—आसाम का ३८ वर्ग मील का इलाका भूटान को वापिस दिये जाने का निश्चय। आसाम का यह इलाका तीस वर्ष पूर्व भारत की तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने आसाम में मिला लिया था। दो वर्ष पूर्व हुई भारत भूटान सन्धि के अनुसार भारत सरकार ने आसाम का उक्त इलाका भूटान को वापिस कर देने का वचन दे दिया था। भारत सरकार के अनुसार उक्त निर्णय भारत और भूटान के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध की दृष्टि से न्याय्य है किन्तु संसद के बहुत से सदस्यों ने इसके विरुद्ध तीव्र असन्तोष व्यक्त किया और कहा कि यह आसामी जनता के साथ सरासर अन्याय है क्योंकि इससे आसाम को आर्थिक क्षति उठानी पड़ेगी। दूसरे भूटानी उस इलाके में बहुत कम रहते हैं।

चुनाव घोषणा

संसद में विधि मन्त्री डा० अम्बेदकर द्वारा चुनावों की निश्चित तिथि ३ जनवरी से २४ जनवरी तक घोषित कर दिये जाने के पश्चात विभिन्न राजनैतिक दलों की गतिविधियां तीव्रता से प्रारम्भ हो गई हैं। दिल्ली में आम चुनावों के बाद बनने वाली विधान सभा की सम्भावनाने राजधानी के वातावरण को काफी क्रियाशील बना दिया है।

बिहार सरकार ने अपने प्रदेश के राजनैतिक कैदियों को धीरे धीरे रिहा करने का निश्चय कर लिया है वे ताकि चुनाव में भाग ले सकें। इधर राजस्थान की पांच लाख स्त्रियों को मताधिकार से वंचित किये जाने के विरुद्ध महिलाओं ने एक सार्वजनिक भाषण में विरोध प्रकट किया है। महिलाओं का यह आन्दोलन चुनाव के प्रति जन साधारण के दृष्टिकोण का परिचायक है।

रक्त सिक्त प्रतिज्ञा

गत रविवार को हिन्दू महासभा भवन में सैकड़ों व्यक्तियों ने जिनमें अधिकांश संख्या विद्यार्थियों की थी अपने अंगूठे के रक्त से हस्ताक्षर कर प्रतिज्ञा की कि देश पर संकट उपस्थित होने की स्थिति में वे अपने बहुमूल्य प्राणों को देश हित अर्पण करने में संकोच नहीं करेंगे। नवयुवकों द्वारा उठाया गया यह कदम उनकी देश भावनाओं का द्योतक है तथा साथ-साथ ही यह कार्य हिन्दू महासभा की चुनाव में विजय का आधार भी किसी सीमा तक हो सकता है।

पाकिस्तानी षडयन्त्र

पाकिस्तान की भारत के प्रति शत्रुता की नीति तथा भारत पर आक्रमण करने की दृष्टि से दिन प्रतिदिन अधिक तीव्र गति से बढ़ाये गये सैन्यबल के कारण भारत में जो क्षोभ का वातावरण उत्पन्न हुआ था उसका भारत सरकार द्वारा शान्तिपूर्वक शमन करने की निरंतर चेष्टायें की जा रही हैं। किन्तु पाकिस्तानी जासूसों के देश विदेश में गुप्त जाल तथा पाकिस्तान सरकार की षड्यन्त्रपूर्ण नीति के कारण भारत में शांति की स्थिति अधिक समय तक रह सकेगी यह सन्दिग्ध है। भारत सरकार ने पाकिस्तान सरकार से कहा है कि वह आसाम के गोलपाड़ा जिले से ब्रह्मपुत्र नदी में

श्री अजितप्रसाद जैन

संकट मंडरा रहा है

अवस्थित द्वीपा दाई खोवाधार और सालपाड़ा से पूर्वी बंगाल की सशस्त्र पुलिस को जिस पर उसने अवैधानिक अधिकार कर लिया था, हटा ले। भारतीय प्रदेश को बलात् अधिकारगत करने की पाकिस्तानी दुर्नीति पहले भी समय समय पर प्रकट होती रही है। अभी हाल में ही मुजफ्फरपुर के एक छोटे से गांव में हिन्दू वेष में एक पाकिस्तानी गुप्तचर पकड़ा गया है जिसके पास १००) के पाकिस्तानी नोट निकले, जो वह भारत में रहने वाले अन्य गुप्तचरों को बांटने आया था। पाकिस्तान को समय समय पर अमेरिका और ब्रिटेन से सैनिक सहायता मिलती रहती है किंतु उसने ब्रिटेन से जो हाल हीं में ३६ जेट लड़ाकू विमान खरीदे हैं उसे यहां गम्भीर दृष्टि से देखा जा रहा है। ब्रिटेन भी खरीद हुए विमानों को यथाशीघ्र पाकिस्तान पहुँचा देने के प्रयत्न में है। हैदराबाद के फरार लायकअली का इस योजना में पूरा हाथ बताया जाता हैं। जब तक पाकिस्तान अपने भारत विरोधी मार्ग पर पूर्ववत् चल रहा है तब तक भारत और पाकिस्तान के प्रधान मन्त्रियों के बीच शान्ति हेतु चल रहा पत्र व्यवहार निरर्थक है।

श्री जैन पर संकट

पिछले बहुत समय से केन्द्रीय मन्त्रिमंडल

[शेष पृष्ठ २१ पर]

गत रविवार को देहली के हजारों तरुणों ने रक्त सिक्त प्रतिज्ञा की कि वे मातृभूमि की रक्षा लिए सर्वस्व अर्पण कर देंगे। चित्र में हिन्दू महासभा के महामन्त्री श्री महन्त दिग्विजयनाथ अपने रक्त से हस्ताक्षर कर रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय रङ्गमंच

कोरिया तथा ईरान तेल-वार्तामें नई प्रगति : लाय हैन्डरसनकी नई नियुक्ति

श्री ट्रूमैन

कोरिया
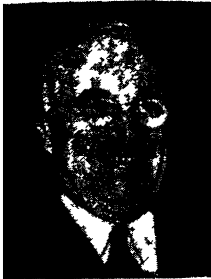
कोरिया में कायसोंग क्षेत्र में सशस्त्र कम्यूनिस्ट सेना की एक टुकड़ी के आ जाने के कारण युद्धविराम वार्ता रुक गयी थी और राष्ट्र संघ के प्रधान सेनापति जनरल रिजवे ने बड़ा कठोर रुख धारण कर लिया था। उन्होंने राष्ट्र संघीय प्रतिनिधियों को वापिस बुला लिया और उक्त घटना पर भारी क्षोभ प्रकट किया।

वैसे तो शान्ति वार्ता कितने ही दिनों से मध्यवर्ती प्रदेश पर अड़ी हुई थी। कम्यूनिस्ट चाहते थे कि ३८ अक्षांश को ही शान्ति रेखा मान लिया जाय जबकि जनरल रिजवे इस बात पर अड़े हुए थे कि दोनों ही सेनाओं की वर्तमान स्थिति को ही शान्ति रेखा के दो ओर का पक्ष माना जाय। कोई भी पक्ष अपनी बात से हटा नहीं था किन्तु इस प्रकार अकारण शान्ति वार्ता लम्बी करने के लिए जनरल रिजवे अधिक उत्सुक नहीं हैं यह स्पष्ट हो गया था। इस बीच उपरोक्त घटना हो गयी।

कम्यूनिस्ट सेनापति ने उक्त घटना के लिए भारी खेद प्रकट किया है और क्षमा याचना की है। पेकिंग रेडियो की भी ध्वनि इसी प्रकार की है। कम्यूनिस्ट सेनापति ने आग्रह किया है कि इस बात के लिए शान्ति वार्ता तोड़ी न जाय। इससे कुछ क्षेत्रों का अनुमान है कि कम्यूनिस्ट युद्धबन्दी चाहते हैं और अब पुन वार्ता आरम्भ होने पर सम्भवत ३८ अक्षांश की जिद पर अड़े नहीं रहेंगे। जनरल रिजवे ने कम्यूनिस्ट सेनापति के उत्तर को स्वीकार कर लिया है किन्तु यह कठोर चेतावनी दी है कि यदि इस घटना की पुनरावृत्ति हुई तो वार्ता भंग हो जावेगी। प्रतिनिधि मण्डल वार्ता प्रारम्भ करने के लिए टोकियो से कोरिया लौट आया है।

तेल वार्ता में प्रगति

तेहरान में ईरानी प्रतिनिधिमण्डल तथा ब्रिटिश प्रतिनिधि श्री स्टोक्स के बीच कई दिनों से चल रही वार्तालाप के परिणामस्वरूप अनुमान लगाया जाता है कि ईरान की तेल वार्ता शीघ्र ही किसी निश्चयात्मक सीमा तक पहुंच जायगी। श्री स्टोक्स ने ब्रिटेन का रुख स्पष्ट करते हुए कहा है कि यद्यपि ईरान के वर्तमान वातावरण में इस प्रकार के लक्षण हैं, जिससे समझा जा सके कि ईरान के सभी विवेकशील व्यक्ति समझौते के पक्षपाती हैं किन्तु फिर भी ब्रिटेन किसी भी अयुक्ति-युक्त तथा असम्मानजनक शर्तें मानने के लिए तैयार नहीं होगा। श्री स्टोक्स ने समझौते से पूर्व सर्वप्रथम ईरानी तेल के यथापूर्व निर्यात की मांग पेश की। आंग्ल ईरानी तेल कम्पनी के कर्मचारी इस बात पर अधिक बल दे रहे हैं कि जिन व्यक्तियों के नियन्त्रण में उन्हें कार्य करना है वे सभी दृष्टियों से योग्य हों। ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री श्री एटली इससे पूर्व ही घोषणा कर चुके हैं कि ब्रिटेन ईरान से सर्वथा सम्बन्ध विच्छेद नहीं करेगा। इसलिए जानकार क्षेत्रों का कथन है कि दोनों प्रतिनिधिमण्डल शीघ्र ही किसी मध्यम मार्ग का अनुकरण करेंगे।

श्री लाय हैन्डरसन

लाय हेंडरसन तेहरान की नई नियुक्ति

यह अब प्राय निश्चित हो गया कि लाय हैंडरसन दिल्ली से हट कर

(शेष पृष्ठ २२ पर)

देश के मतवालों का गहरा रक्त उसके पीछे चमक रहा है

१५ अगस्त की लालधारी

★ श्री शिवशंकर 'भारती'

आज पन्द्रह अगस्त है। इस दिन की स्वर्णिम प्रभात को देखने के लिए क्या कुछ हुआ, इसका हमारे स्वतन्त्रता संग्राम की पृष्ठभूमि पर एक रोमाञ्चकारी इतिहास अंकित है। जहां महात्मा गांधी ने शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा भारतीयों को अपने अधिकार के लिए प्रेरित किया, वहां दूसरी ओर क्रान्तिकारी आदर्शों पर देश में एक लाल रक्त का तूफान आया, जिसमें हंसते २ करोड़ों युवक और युवतियों ने स्वतन्त्रता के लिए बलिदान दिए।

देश के इस पतन व भ्रष्टाचार का सारा उत्तरदायित्व कांग्रेस के स्वार्थी नेताओं के सिर पर है

अरविन्द और क्रान्तिकारी

योगी अरविन्द ने १९०८ में भारतीय आतंकवाद को जन्म दिया। सन् १९१४ की अमेरीका से सम्बन्धित गदर पार्टी ने देश में सशस्त्र क्रान्ति की चेष्टा की। माना कि वह असफल रहे, किन्तु फिर भी इससे तरुणों के रक्त में तूफान आया और आगे चल कर सरदार भगतसिंह की अमर कहानी इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित हो गई। चन्द्रशेखर आजाद इसी युग के भारतीय रिपब्लिकन आर्मी के सर्वोच्च सेनापति थे, जिन्होंने ब्रिटिश नौकरशाही की दस गोलियां खा कर स्वतन्त्रता के संग्राम को बहुत तेजी से आगे बढ़ा दिया था।

सन् १९३० में जब कांग्रेस असहाय युग की तरह लड़खड़ा रही थी उस समय सुभाष ने, नहीं, नहीं, महाबलाधिकृत नेता सुभाष ने, कांग्रेस को आगे बढ़ाने के लिए आलम्बन दिया. किन्तु कांग्रेस इतनी निर्बल हो चुकी थी कि कि नेता सुभाष बोस आगे बढ़ गए। अंग्रेजों ने भारतीयों को जबरदस्ती गर्दन पकड़ कर युद्ध में घसीटा। उस समय कांग्रेस की शक्तिहीन आवाज को अंग्रेजों ने ठुकरा दिया था। वह सेनानी सुभाष भला इस अपमान को कैसे बर्दास्त करता। एक दिन वह बागी झुटपुटे में अन्तरध्यान हो विदेशों मे जा पहुँचा। कांग्रेस जिस कार्य को करने मे असमर्थ रही, बाहर जा कर उसने उन्हीं भारतीय सेनाओं को शत्रु के विरुद्ध आजाद हिन्द सेना में परिवर्तित कर दिया। उस सेनानी ने सिपाहियो से रक्त मांगा, "शत्रु का रक्तपान करने के लिए"। इस समय देश मे क्रान्ति की अग्नि प्रज्वलित हो उठी थी और जल, थल और वायु सेनाओं ने विद्रोह कर दिया। यह पन्द्रह अगस्त की पृष्ठभूमि इस प्रकार लाखों देशभक्त विद्रोही तरुणों के रक्त से रंगी गई।

देश का विभाजन

शायद इस पर भी स्वतन्त्रता देवी को रक्त से स्नान करना शेष था। देश के विभाजन की बात न मानते हुए भी विभाजन स्वीकार कर लिया गया और इसका जो दुष्परिणाम लाखों निरपराध प्राणियों की निर्मम हत्या के रूप में हमारे सामने आता है, यह किस का कसूर है? यह सभी विचारवान् पुरुष जानते हैं कि यह कलंक का धब्बा कांग्रेस के मस्तक से कभी मेटा नहीं जा सकता। इतना ही नहीं आज देश में शरणार्थी भाइयों की जो दुर्दशा हो रही है वह किसी से छिपी नहीं। इस समस्या की आज दिन तक कोई समुचित व्यवस्था नहीं हो पाई है।

इधर आइये! उन असंख्य अमर आत्माओं की ओर भी देखें जिन्होंने हंसते हसते देश के लिए गोलियां खाईं और फांसी के तख्तों पर झूल कर अपने प्राण दे दिए। हम उनका नाम तक भी नहीं जानते। जिन शहीदों के रक्त से फाग खेल कर स्वतन्त्रता का भव्य स्वप्न देखा है, क्या उसमें उन अमर हुतात्माओं की राष्ट्र की ओर से कोई स्मृति भी है! अस्तु छोड़िये इस बात को भी, आप कहेंगे कि मरे की बात छोड़ कर जीने वालों की ओर देखना है। आइए इधर भी देखें! प्रश्न तो इस बात का है कि अनेकों राजनैतिक ध्वस्त परिवार जिन्होंने अपना सर्वस्व देश की बलि वेदी पर निछावर कर दिया है, उनके लिए हमारी सरकार ने क्या किया? ऐसे अनेकों परिवार, कार्यकर्ता, और विद्यार्थी आर्थिक परिस्थितियो के शिकार बन भूख से दम तोड़ रहे हैं। हमारी राष्ट्रीय सरकार इस ओर सर्वथा मौन और उदासीन दिखलाई देती है। उस दिशा मे वह अपने ज्ञान-चक्षु सर्वथा बन्द किए बैठी है। क्या यह ठीक है कि 'किस किस को याद कीजिये किस किस को रोइये। आराम बड़ी चीज है मुंह ढक कर सोइए।'' यह उक्ति सर्वांश चरितार्थ हो उठी है।

शासन में असन्तोष

विदेशी शासन के जाने के पश्चात ठीक उसी प्रकार हुआ जैसे बारात के जाने के बाद बेटी वालों के घर की दशा होती है। उस झिलमिल में वातावरण का नैराश्यपूर्ण साम्राज्य होता है। कहीं टूटे फूटे मटकने, सब्जी की सूखी पत्तलें, छप्पर का खिंचा हुआ फूंस और कांव कांव करते पत्तलों पर मंडराते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। एक ओर घर के बर्तनों में कुत्ते स्वच्छन्दता से मुंह डालते नजर आते हैं। आज हमारे देश की ठीक वैसी ही अवस्था हो गयी है। बड़े बड़े पूंजीपति हमारे देश की अरक्षित पूंजी को भ्रष्टाचार के रूप में अपहरण कर रहे हैं। प्रान्तों के बड़े बड़े मन्त्रीगण जब इस दुर्व्यवस्था को फैला सकते हैं तो उससे बढ़ कर क्या कोई और उदाहरण उपस्थित किया जा सकता है। स्वतन्त्रता मिलने से पूर्व पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने गोरखपुर के अपने एक भाषण में कहा था कि यदि मेरे हाथ मे शक्ति आ जाए।

तो मैं भ्रष्टाचार और घूंसखोरी करने वालों को फांसी के तख्तों पर लटकवा दूंगा। इसके सिवाय कि हाथी के दांत दिखाने के और खाने के और इस दिशा में कुछ और भी किया गया? जिन पर भ्रष्टाचार करने और उनको प्रोत्साहन देने की जुम्मेदारी है, क्या ऐसे किसी भी आदमी को फांसी के तख्ते पर लटकाया गया? यदि प्रान्त २ में नाममात्र के लिए भी ऐसा किया गया होता तो देश में भ्रष्टाचार का नाम ही कभी का समाप्त होगया होता।

हमारी राष्ट्रीय सरकार की आधार-शिला जिस अंग्रेजी सरकार की नीति पर अवलम्बित है, क्या वह राष्ट्र के लिए कम खतरनाक है? कल तक हम गैर शासन के दोष निकालने में व्यस्त थे किन्तु आज तो हमारा स्वयं का ही शासन कितना नापाक होगया है। कितनी अधिक दुर्व्यवस्था फैल गयी है। सरकारी दफ्तरों की तो अजीब दशा है। अपने कर्तव्य को पूर्ण करने की निष्ठा प्रायः आज राजकीय दफ्तरों से लुप्त हो गयी है। वहां अनुशासन अपने बन्धन ढीले कर चुका है।

नये परिवर्तनों की मांगें

आज कांग्रेस का गढ़ लड़खड़ा रहा है। कांग्रेस से बड़े-बड़े नेता और मन्त्रियों का त्यागपत्र देकर निकलना कांग्रेस के अन्त का परिचायक है। कांग्रेस के खिलाफ आज की जनता की आवाजें राष्ट्रीय सरकार में एक गम्भीर परिवर्तन की मांग पेश करती हैं। देश का आर्थिक जीवन आज घोर संकट से होकर गुजर रहा है। जनता उसी शासन को चाहती है जिसमें उस की समस्याओं का हल हो। जब तक जनता की समस्याओं का हल नहीं होता निर्धनता और भुखमरी दूर नहीं होती तब तक हम कैसे स्वतन्त्र!

१९४७ के १५ अगस्त में जो प्रभात था और लोगों में जो उल्लास था आज वह मिट सा गया है। रोटी, रोजी का ही नहीं इससे अधिक व्यापक प्रश्न हल होने पर ही १५ अगस्त का यह महान् दिन सफल कहा जा सकता है।

पाकिस्तान आसाम की भूमि पर शान्त आक्रमण कर रहा है

आखिर सरकार कठोर कदम क्यों नहीं उठाती ?

श्री जवाहरलाल नेहरू

श्री लियाकतअली खां

हतभाग्य आसाम !

★ श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

भारत सरकार के विद्युत और सवर्धन मन्त्री श्री श्रीप्रकाश ने लखनऊ में भाषण देते हुए देश-रक्षा, समर-नीति और रण कौशल का अध्ययन करने की आवश्यकता की ओर विशेष रूप से ध्यान खींचा है। इसकी आवश्यकता से इन्कार नहीं किया जा सकता। परन्तु भारतीय सीमा की रक्षा करना और भारत भूमि का सूत भर भी परकीय देश के हाथ में न जाने देना इससे भी अधिक आवश्यक है। इसके अतिरिक्त अपने देश की चप्पा चप्पा जमीन का पता होना चाहिए। जिस सरकार को अपने देश का ज्ञान नहीं क्या वह उसकी रक्षा करने में समर्थ हो सकती है ?

मुस्लिम लीग की पाकिस्तान पर गृद्ध दृष्टि है, यह बहुत पहले से सब को ज्ञात थी। आसाम का सिलहट जिला पाकिस्तान मे मिला दिया गया। परन्तु इससे पाकिस्तान को सन्तोष नहीं है। वह समूचे आसाम को धीरे धीरे निगल जाने का प्रयास कर रहा है। वह धीरे-धीरे एक-एक गाव को हड़प कर समूचे आसाम को निगल जायगा और डकार भी न लेगा। भारत सरकार पाकिस्तान की इस योजना से परिचित है, ऐसा नहीं मालूम होता। पाकिस्तान हमला करेगा या नहीं, इसी पर यहा ऊहापोह हो रहा है।

समझा जाता है कि पाकिस्तान काश्मीर पर आक्रमण करेगा। निस्सदेह वहा उसकी पूरी तैयारी है। परन्तु यह भुला दिया गया है कि काश्मीर के ही समान वह आसाम पर भी आक्रमण की योजना रखता है। वह योजना ही नहीं बना रहा बल्कि उसने आसाम पर धावा बोल दिया है। आश्चर्य की बात यह है कि आसाम पर आए इस सकट को देश, जनता और सरकार इन तीनों में से कोई भी अनुभव नहीं करता। इस अवस्था मे आसाम यदि अपने को हतभाग्य माने तो क्या आश्चर्य ! आज उसके पास श्री गोपीनाथ बारदोलई सदृश नेता भी नहीं जिसने कि मन्त्री मिशन की योजना के विरुद्ध तूफान खड़ा कर दिया था और कांग्रेस को बाध्य किया था कि वह उस योजना को अस्वीकार कर दे। क्योंकि आसाम बंगाल के अन्दर समा जाने और 'प्रच्छन्न रूप से भी पाकिस्तान का एक भाग बनने' के लिये तैयार नहीं।

यह क्या आश्चर्यजनक नहीं ?

पर आज क्या है ? आसाम के तीन गावों पर पाकिस्तानी सेना ने अधिकार कर लिया है यह समाचार छपता है। भारत सरकार द्वारा इसका प्रतिवाद किया जाता है। नई दिल्ली इस में संशोधन करती है। विज्ञप्ति में बताया जाता है कि पाकिस्तानी सेना ने जिन गावों पर दखल किया है वे बेनाम के गाव हैं और विवादग्रस्त गाव हैं ! क्या यह सच है ? जब देश की सरकार ही उन गावों को विवादग्रस्त कहती है, तब आसाम अपने माथे को ठोक कर रह जाय कि नहीं ? भारत सरकार के विज्ञ अधिकारियों को अपने देश का कितना ज्ञान है, उसका यह एक अच्छा उदाहरण है।

क्या वस्तुत उन गावों का कोई नाम नहीं ? क्या यह ठीक है कि उन गावों के विषय में दोनों सरकारों में विवाद है और झगड़ा है ? नही। नई दिल्ली की विज्ञप्ति न केवल भ्रामक है, अज्ञान मूलक है बल्कि वस्तुस्थिति के भी विपरीत है। भारत सरकार का यह कथन कि पाकिस्तानी सेना द्वारा कोई दखल या सीमा का भग नहीं हुआ सर्वथा और सोलहों आने जिस प्रकार गलत है उसी प्रकार यह भी गलत है कि इन गावो का नाम नहीं और पहले आसाम सरकार के शासन प्रबन्ध में नहीं थे।

गोआलपाडा जिले के अन्दर

ये तीन गाव ब्रह्मपुत्र नदी द्वारा बनाए गए द्वीपों में हैं। ये द्वीप मानकाचर और शालमारा के बीच हैं। इन तथाकथित बेनाम के गावों का नाम आसाम सरकार को भली भाति विदित हैं। इन गावो के बारे में उसके पास विस्तृत जानकारी मौजूद है।

ये गाव मानकाचर और शालमारा थाना के अन्तर्गत हैं। ये दोनों थाने गोआलपाडा जिले के अन्तर्गत हैं। इन तीनों गावों के नाम हैं।

१ बेहिलारचर
२ डोइखावाचर
और
३ सालपाराचर

ये तीनो गाव पूर्णतया, निर्विवाद रूप से भारतीय सीमा के अन्दर हैं और पाकिस्तानी सेना द्वारा इन पर दखल होने से पहले तक ये आसाम सरकार के नियन्त्रण और शासन में थे। आसाम की पुलिस इन गावों में कानून और व्यवस्था की रखवाली करती थी। पाकिस्तान द्वारा इन गावों पर अधिकार करने के महत्त्व को कम करना एक भारी गलती करना होगा। इस प्रकार की भूलों का परिणाम आसाम और भारत आज भी भोग रहा है। पाकिस्तान में जब जहाद बोलने का आन्दोलन चल रहा है, शस्त्रास्त्रों का संग्रह हो रहा है और सेनाओं का जमाव किया जा रहा है, तब इस प्रकार की घटना की उपेक्षा करना प्रथम श्रेणी की एक राजनीतिक भूल होगी।

चार-पाच मील

'आसाम ट्रीब्यून' के सम्वाददाता ने इस सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है वह आंख खोलने वाला है। उसका कहना है कि 'मालूम हुआ है कि पाकिस्तान के सशस्त्र व्यक्तियों ने पुलिस स्टेशन दक्षिण सालमारा में डाइखोवाचर के समीप सालपाराचर गाव पर अधिकार कर लिया है। इस प्रकार वे भारतीय प्रदेश के अन्दर चार या पाच मील तक चले आए हैं। उन्होंने चार कैम्प लगा लिए हैं। दो डाखोवाचर में और दो सालमारा में।

मिन्-चाखया और सालमारा के बहुत से लोगो को पाकिस्तान के सशस्त्र सैनिकों ने धान की फसल काटने से रोक दिया है। वे लोग शिकायत भी नहीं कर सकते क्योंकि वे लोग जानते हैं कि डोईवोवारचर और सालमारा पूर्णत पाकिस्तानी सेना के अधिकार में हैं।' 'आसाम ट्रीब्यून' का यह भी कहना है कि बेहिलारचर (मानकीचर पुलिस थाने के अन्तर्गत) गाव के मुसलमान चौकीदारी टैक्स अब रावमारा (पाकिस्तान) थाने में दाखिल कर रहे हैं। वे वे पाकिस्तान सशस्त्र सैनिकों के निर्देश से कर रहे हैं।

इन गावों के पूरे रिकार्ड गौरीपुर राज स्टेट में हैं। इसलिए यह कहना कि ये बिना नाम के हैं और विवादग्रस्त हैं ठीक नहीं, और यह केवल नई दिल्ली के अधिकारियों के अज्ञान को सूचित करता है। पाकिस्तान ने जान-बूझ कर योजनापूर्वक भारतीय सीमा का अतिक्रमण किया है। अत इसकी उपेक्षा एक मिनट के लिए भी नहीं करनी चाहिए।

यह पहला अवसर नही

आसाम प्रदेश का भाग पाकिस्तान द्वारा इस रीति से हड़पा जाना और निगला जाना पहली बार नहीं हुआ है। देश विभाजन के बाद से पाकिस्तान ने आसाम की भूमि का थोडा थोडा करके अपने अधिकार में करने की नीति अपना रखी है। इससे पहले पथारिया हिल रिजर्व का राष्ट्रीय दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण भाग पाकिस्तान १९४८ में निगल गया। भारत सरकार की ढुलमुल नीति और शान्ति नीति के कारण वह यह साहस कर रहा है। पाकिस्तान की इससे भूख और बढ़ गई। सिलहट शिलांग रोड पर डाउकी सीमा के समीप पाकिस्तान ने भू भाग पर अधिकार कर लिया। पाकिस्तान के यह कुकृत्य सरकार को बहुत देर में मालूम हुए।

[शेष पृष्ठ १४ पर]

मध्यपूर्व-३

सीरिया व लेबनान का भूत तथा वर्तमान

[श्री नीरस योगी]

मध्यपूर्व के देशों की राजनीति सदैव से चिन्ता का विषय रही है। इतिहास के मध्य युग मे इन प्रदेशों द्वारा एशिया-यूरोप में व्यापार किया जाता था। अनेकों कारण, जिनमे स्थानीय राजनीति से सम्बन्धित कारण ही मुख्य थे, इसमें बाधक सिद्ध होने लगे। व्यापार से समृद्ध नगरों के स्थान पर उनके केवल खंडहर ही रह गये और उनके निवासी अपने जीवन निर्वाह के लिये खानाबदोशों की भांति भिन्न भिन्न स्थानो पर घूमने लगे। अब कुछ दशाब्दियों से फिर इन क्षेत्रों में जीवन का संचार होने लगा है। अनेकों योजनायें बना कर इस प्रदेश की सुरक्षा के प्रश्न को हल किया जा रहा है। कारण केवल एक है कि यहां पर तेल की प्राप्ति होती है। तेल आज की राजनीति में अपना विशेष स्थान रखता है। बिना तेल प्राप्त किये कोई भी सभ्य राष्ट्र अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं को भली भांति पूर्ण करने में समर्थ नहीं हो सकता है। शांतिकाल के अतिरिक्त युद्धकाल मे भी तेल के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता है। तेल के कारण ही स्थानीय राजनीति मे भी दिन प्रतिदिन अनेकों परिवर्तन होते रहते हैं। सीरिया व लेबनान भी अपना भाग्य तेल से सम्बन्धित होने के कारण उसके हानि व लाभ से भली भांति परिचित हं। इस प्रदेश की राजनीति का अनुभव करने के लिये हमें भिन्न भिन्न कोणों पर दृष्टिपात करना होगा।

सीरिया व लेबनान का क्षेत्रफल ७० हजार वर्गमील है। इसमें से केवल ६७१० वर्गमील मे खेती की जाती है, बाकी कृषि योग्य भाग खाली पड़ा रहता है। उसे सब्जियां बोने व चरागाह के रूप मे नियुक्त किया जाता है। देश के उत्तर में टर्की का जनतन्त्र, पूर्व मे ईरान, दक्षिण मे फिलस्तीन व जोर्डन व पश्चिम मे भूमध्य सागर का क्षेत्र है। देश की उर्वरा भूमि के कई भाग हैं। देश मे सदैव पानी की कमी रहती है। भिन्न-भिन्न क्षेत्र मे वर्षा भिन्न भिन्न अनुपात मे होती है। अतएव इसका पैदावार पर गहरा असर पड़ता है। एक प्राकृतिक झील होम्स व तीन नदियां औरोमट्स, लिटानी व यूफ्रेट्स इस प्रदेश में बहती हैं।

जनसंख्या

१९४६ मे सीरिया व लेबनान की जनसंख्या इस प्रकार थी।

सीरिया	३,००६,०२८
लेबनान	१,१६२,१०८

जनसंख्या में खानाबदोश अर्ध-खानाबदोश, कृषक व शहरी लोग सम्मिलित हैं। देश की जनसंख्या का ६० प्रतिशत कृषि पर निर्भर है।

भाषा व धर्म

भाषा के रूप में अरबी का प्रयोग किया जाता है। सीरिया की जनसंख्या का अधिकतर भाग (अरब) मुस्लिम है। लेबनान की अधिकतर जनसंख्या ईसाई है। दोनों देशों मे जनसंख्या का अनुपात इस प्रकार है।

	मुस्लिम	ईसाई
सीरिया	६८.८ प्रतिशत	३० प्रतिशत
लेबनान	४७ ,,	५२७ ,,

इतिहास व राजनीति

प्रथम महायुद्ध के समाप्त होने तक सीरिया व लेबनान ओटोमन साम्राज्य के अन्तर्गत थे। गत शताब्दी में दोनों देशों के दैनिक जीवन पर पश्चिमी देशों का काफी प्रभाव पड़ा।

सीरिया के तीन विद्वानों ने अरब साहित्य को एक नवीन जीवन प्रदान किया। देश मे अनेकों विद्यालय खोले गये। यातायात का भी विकास किया गया। मध्यपूर्व के किसी अन्य प्रदेश की अपेक्षा सीरिया के यातायात साधन उन्नत अवस्था में हैं। प्रथम महायुद्ध मे टर्की के हार जाने पर यहां फ्रांस का अधिकार हो गया। फ्रांस की दमन नीति के कारण अरब जनता दिन प्रतिदिन स्वशासन की मांग करने लगी। इसकाल फ्रांस की नीति ईसाइयों को प्रोत्साहन देने की थी। १९२५ में फ्रांस के विरुद्ध एक विद्रोह किया गया, परन्तु उसे दबा दिया गया। प्रायः १० वर्ष तक बातचीत चलने के पश्चात् १९३६ में एक सन्धि पर हस्ताक्षर किये गये।

सीरिया में एक राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई परन्तु आगामी तीन वर्षों मे सरकार व फ्रांस के बीच विरोध की खाई गहरी होती गई। सरकार के त्यागपत्र देने पर फ्रांस ने फिर से अपना पूर्ण अधिकार जमा लिया।

जून १९४१ में इस प्रदेश पर मित्र-राष्ट्रीय सेनाओं का अधिकार हो गया। ब्रिटेन ने सीरिया को स्वतन्त्रता प्राप्त करने में योग देने का वचन दिया। अन्त में इसी वर्ष सीरिया व लेबनान को स्वतन्त्र घोषित कर दिया गया। परन्तु कुछ वर्षों तक यह स्वतन्त्रता नाम मात्र की ही थी। १९४२ तक फ्रांस मे मार्शल पेतां की कठपुतली सरकार का शासन था। उसकी शक्ति का ह्रास होने पर स्वयं उसके साथी भी उसका विरोध करने लगे।

१९४३ में ब्रिटेन के कारण फ्रांस को वैधानिक सुधारों की घोषणा करनी पड़ी। फ्रांस ब्रिटेन की इस प्रदेश के प्रति सहानुभूति को आशंका की दृष्टि से देखता था। इसी वर्ष ८ नवम्बर को रियाद की सरकार ने फ्रांस से संबन्ध तोड़ लेने का निश्चय किया। फ्रांस ने तीन दिन पश्चात् मन्त्रिमंडल को गिरफ्तार कर लिया। संयुक्त राष्ट्र-संघ व अन्य प्रदेशों में इसका विरोध किया गया। अन्त में ब्रिटेन की चेतावनी पर फ्रांस को अपना रुख पलटना पड़ा।

सीरिया व लेबनान को अमरीका व रूस ने भी मान्यता प्रदान कर दी। फ्रांस इस समय सतर्क था। उसने दमिश्क पर अधिकार कर लिया। हजारों मनुष्य मारे गये। अन्त में ब्रिटेन ने सीरिया पर अधिकार कर लिया। फ्रांसीसी लेबनान प्रदेश में चले गये। अन्त में एक समझौते द्वारा ब्रिटेन व फ्रांस ने दोनों देशों को छोड़ना स्वीकार कर लिया।

विधान

सीरिया व लेबनान स्वतन्त्र प्रजातंत्र हैं। सीरिया का राष्ट्रपति मुस्लिम होता है। लेबनान का राष्ट्रपति ईसाई व प्रधानमन्त्री मुस्लिम होता है। विधान में फ्रांस को दी जाने वाली समस्त सुविधायें समाप्त कर दी गई हैं।

राजनैतिक दल

सीरिया मे केवल एक दल शक्तिशाली है। इस दल ने ही प्रथम सरकार का निर्माण किया था। आंतरिक बुराइयों के कारण सरकार के विरुद्ध सेना ने विद्रोह करके उसे १९४९ में पलट दिया। अन्य छोटे-छोटे दल भी हैं, जिनमें मुस्लिम भ्रात संघ व साम्यवादी दल प्रधान हैं।

लेबनान में सबसे शक्तिशाली दल १९४३ से सरकार बनाये हुए हैं। १९४७ में रियाद ने ६०० स्थानों पर अधिकार कर लिया। समाचारपत्रों ने चुनावों की वैधता का प्रश्न उठाया और उसके हल न होने पर धारा सभा के समाचार प्रकाशित न करने की धमकी दी। रियाद के विरोध करने पर भी एक कमेटी बनाई गई, परन्तु उसे अपना कार्य वैधानिक अड़चनों के कारण समाप्त कर देना पड़ा।

लेबनान के अन्य राजनैतिक दल इस प्रकार हैं—

अ. राष्ट्रीय दल

इस दल का अब राजनीति पर कम अधिकार है। क्योंकि सरकार के त्यागपत्र देने के कारण इस दल को फ्रांस के हित में सरकार बनाना स्वीकार किया था।

ब. भूमध्य सागर सांस्कृतिक दल

सीरिया व लेबनान को अलग २ प्रदेश बनाना चाहते हैं। सदस्य संख्या ईसाई हैं।

स. सीरियन राष्ट्रीय दल एक अर्ध सैनिक संस्था है।

द. राष्ट्रीय मुक्ति दल।

ज. साम्यवादी दल।

[शेष पृष्ठ १७ पर]

१५ अगस्त १९५१

जन स्वतन्त्रता के इस शुभ दिन -
मेरी सबको अमित वन्दना!
कड़ियां युग की तोड़-फोड़ कर
खेल रहा नवयुग, नवजीवन,
दानवता का वक्ष चीर कर—
बढ़ा मनुजता का पग नूतन,
कोटि कण्ठ से आज मुखर हो
गूंजा स्वर्णोन्मय सुषमा-स्वर
स्वर्ग शहीदों की शुभ आकृति—
भी अंकित हर एक ध्वजा पर,
अमर चेतना रश्मि-ज्योति मे—
मेरी सबको प्रेम अर्चना। जन ....
कठिन विगत के बलिदानों मे
उपजा यह विजयोत्सव भारी,
शव-शव की मिटती श्वासों से
हुआ मनुज जीवन अधिकारी,
इन अधिकारों की छाया में
अगणित त्याग खड़े हैं सम्मुख,
पर्व दिवस की पथ यात्रा में
बिखरे शूल खड़े हैं अभिमुख,
उन पर पग धरने वालों को—
मेरे मन की मृदुल कामना। जन.... ..
जाग उठी जन-मन की आशा
करने फिर उन्नति का वंदन,
यौवन जाग उठा अन्तर में
मरने प्रति, विजय के गायन,
जय! जय!! के सुकमार स्वरों से
दिशा, गगन, जल, थल मुखरित हैं,
भाव-प्रसूनों से मानस के
"इस दिन" के पल-पल सुरभित हैं,
आज इन्हीं मानस सुमनों से—
मेरी सबको स्मरण-साधना!
जन स्वतन्त्रता के इस शुभ दिन—
मेरी सबको अमित वेदना!

—जीवनप्रकाश जोशी 'प्रभाकर'

★

मनुष्य का स्वभाव मानसिक प्रवृत्तियों के आधार पर बनता है

अन्तर्जगत की प्रवृत्तियां

[श्री रतनलाल परमार]

मनुष्य के लिये सबसे अधिक दुर्बोध और रहस्यमय उसका मन ही है। मानव मन अनन्त शक्तियों का भंडार है। किन्तु अपनी मानसिक शक्तियों को ठीक ढंग से जाग्रत न कर सकने के कारण मनुष्य संसार के संघर्ष में असफल हो निराशोन्मुख हो जाता है।

ज्ञान-विज्ञान

मनोविज्ञान का विषय गहन गम्भीर है, किन्तु एक पल में ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की परिक्रमा करने वाले मन का क्षेत्र विस्तृत होते हुए भी उसका स्थान तो सीमित ही है। जब हम ज्ञान की प्रारम्भिक अवस्था का अतिक्रमण कर जाते हैं, तो मन नितान्त गौण हो जाता है। मनोविज्ञान में हम क्या देखते हैं? हम जानना चाहते हैं कि मन क्या है? मन क्या-क्या कर सकता है और क्या करने में असमर्थ है? इन सब तथ्यों का ज्ञान प्राप्त करने के लिये हम घटनाओं के मूल एवं परिणामों की ओर ध्यान देते हैं। इस प्रणाली को ज्ञान-विज्ञान की प्रणाली की संज्ञा से सम्बोधित किया जाता है। उदाहरण के लिए हम एक घटनाविशेष को कसौटी पर कसते हैं। किसी व्यक्ति ने कहा है कि, "राम, मनोहर से अत्यन्त घृणा करता है।" हम मनोविज्ञान के आधार के लिये यह अवलोकन करने की चेष्टा करेंगे कि अमुक व्यक्ति ने ऐसे विचार क्यों प्रकट किये? अभिवक्ता के पास इस घटना के लिये क्या आधार है और इस वार्ता के मूल में क्या तथ्य है? दूसरा उदाहरण—"अमुक सज्जन के पिताजी का [illegible] हो गया है; अतः उस दीन की आर्थिक स्थिति अत्यन्त हीन हो गई है।" ऐसी परिस्थिति में हम साधारण प्रकार से ही अनुमान लगा सकते हैं कि घटनाविशेष के क्या परिणाम हो सकते हैं एवं परिस्थितियों से बाध्य व्यक्तिविशेष क्या-क्या चेष्टा-प्रचेष्टाएं कर सकता है? घटनाओं से उनके मूल की ओर जाने का नाम ज्ञान है और घटनाओं से उनके परिणामों की ओर जाने का नाम विज्ञान है। इस ज्ञान-विज्ञान की बात को हम स्पष्ट शब्दों में इस प्रकार से भी कह सकते हैं कि सूक्ष्म के प्रति हमारी बुद्धि की जो धारणाएं निर्माण होती हैं उनको ज्ञान कहते हैं एवं स्थूल (पार्थिव-भौतिक) के प्रति अनुभूति के पश्चात् जो धारणाएं निर्मित होती हैं उसका नाम विज्ञान है।

मानव स्वभाव

आदतें, चेष्टा अथवा स्वभाव प्रकृति के दूसरे नाम हैं। भली बुरी जो आदतें हमारी बन जाती हैं, उनसे जीवन का गहरा सम्बन्ध रहता है। आदतें तथा चेष्टाएं प्रायः मानसिक अथवा शारीरिक दुर्बलताओं की सूचक तथा कभी-कभी उनका प्रतिकार होती हैं। उदाहरण के लिये—"कोई व्यक्ति बारम्बार अपनी मूंछों पर बल लगाता है।" क्या कारण हो सकता है, इस चेष्टा का? या तो उस व्यक्ति को अपनी मानसिक दुर्बलता के कारण क्रोध अधिक आता होगा अथवा अपनी शारीरिक दुर्बलता पर उसकी यह प्रतिक्रिया होगी या अपनी मानवीय दुर्बलता को वह इस प्रकार बाह्य चेष्टाओं से छिपाना चाहता होगा। कोई-कोई मनुष्य थोड़ी-थोड़ी देर में अपनी भुजाओं अथवा गालों को फुलाता है। वे लक्षण अपनी निर्बलता और क्षीणता को भली भांति समझने के हैं। अनेक पुरुषों में सामने देखकर वार्तालाप करने का साहस नहीं होता, तो कई मनुष्य बातचीत करते हुए नाखूनों से अथवा तिनकों से धरती कुरेदने लगते हैं। ये सब चेष्टाएं मनोबल के अभाव की द्योतक हैं। जिस व्यक्ति में जिस तत्व का जितना अधिक अभाव होता है, वह उतना ही निराश, हतोत्साह और कुचेष्टाओं से ग्रस्त रहता है।

जिस प्रकार से प्रकृति की कर्मण्यता के कारण विश्व में नित्य ही अनेक घटनाएं घटित होती रहती हैं, उसी प्रकार से मानव-जीवन में भी उसकी चंचल प्रकृति के कारण अनेक घटनाओं का सृजन होता रहता है। मानव-जीवन एक महान संघर्ष तथा क्रिया-प्रक्रियाओं का भण्डार ही तो है? घटनाओं के ऊहापोह के कारण प्रकृति में ऊष्मा, वर्षा, शीत आदि ऋतुओं का क्रम से सृजन होता है। इसी प्रकार से मनुष्य के जीवन में भी बाल्यकाल, यौवन और वृद्धावस्था का आगमन होता है। एक स्वर्णिम समय ऐसा भी आता है, जब प्रकृति में आनन्द ही आनन्द का प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। सर्वत्र शीतलमन्द सुगन्ध, सर्वत्र नयनाभिराम सुवर्ण, सर्वत्र सुन्दर सुमनावलियां और सर्वत्र सरस फलों का बाहुल्य हो जाता है और किसी भी स्थान पर किसी भी प्रकार के अभाव का अनुभव नहीं होता। प्रकृति की भांति इसी प्रकार से जीवन मे भी एक बार सुन्दर, स्वर्णिम ऋतुराज बसन्त ऋतु का आगमन होता है। जब संसार का प्रत्येक कण सुन्दर एवं सुखद प्रतीत होता है। कभी-कभी जीवन का यह उल्लास बसंत मानव जीवन में उन्माद और कुचेष्टाओं के रूप में भी फूट पड़ता है। जीवन का उन्माद ऐसा होता है कि वह दबाया नहीं जा सकता, स्वभावानुसार शक्ति को प्रकट होना ही पड़ता है। यदि जीवन की शक्ति को कोई सत्य मार्ग प्राप्त हो जाता है, तो फिर जीवन में बड़े उपयोगी और महान् कार्यों का सम्पादन होता है और नहीं तो जीवन की हार निश्चित ही है। असफलता के कारण अनेक जीवन हारने वाले प्राणियों को इसलिए कभी-कभी जीवन से खीझ कर आत्म-हत्या करनी पड़ती है कि संसार और जीवन में निराशा एवं पराजय के लिए कोई स्थान ही नहीं रहता।

मन की प्रवृत्तियां

मन के विषय में जितना अधिक कहा जाय, उतना ही थोड़ा है। मन की सहस्रों प्रवृत्तियां होती हैं और उनके नाना प्रकार भी। राग-द्वेष, घृणा-मोह, क्षोभ-भय, काम-क्रोध, जिज्ञासा-तितिक्षा आदि का समावेश मन की सहस्रधा प्रवृत्तियों में होता है। मन की ये नाना प्रकार की प्रवृत्तियां स्वयं चालित नहीं होती हैं, परन्तु जब उन शक्तियों पर कहीं से आघात होता है, तो वे क्रुद्ध सर्पिणियों की भांति फुफकार उठती है और मनुष्यत्व पर एकबारगी छा जाती हैं, और विवेक को पूर्णतया प्रच्छन्न कर देती हैं। ऐसे असाधारण अवसरों पर जागृत पुरुषार्थ के बल पर मनुष्य कभी कभी नितान्त अनुचित और आश्चर्यजनक कार्य भी कर जाता है। कहते हैं कि मन तो जड़ है, परन्तु आत्मा की छाया ही उसको सदैव परिचालित किया करती है। जो कुछ भी हो मन के रहस्य सम्पूर्णतया ज्ञात नहीं किये जा सकते; किन्तु यह तो निश्चित ही बात है कि मन में शतशः प्रकारों की अनन्त शक्तियों का भंडार है। यदि हम मनोबल को प्राप्त करें, मन पर अपनी विजय-पताका फहरायें तथा अदम्य इच्छा शक्ति का सदैव संवर्द्धन करें और जीवन को एक महान् संघर्ष मान कर मनोविज्ञान के आधार पर कार्य करते रहें, तो जीवन में फिर निश्चित सफलता ही सफलता रहेगी। मनोविज्ञान की सफलता और उपयोगिता भी जीवन के साफल्य पर ही तो निर्भर है।

प्रेम और घृणा

मनुष्य आकार-प्रकार में जैसा ऊपर से दिखाई देता है, वह उसके अतिरिक्त भी कुछ और है। मनुष्य के अन्तर में हृदय नाम का एक स्थान रहता है और उसमें अनेक उत्कट आकांक्षाएं विराजमान रहती हैं। मानव-हृदय के कोमल स्थान मे प्रेम नाम का एक महान तत्व भी छिपा रहता है। यह प्रेम तत्व बड़ा विचित्र होता है। प्रेम के लिये मनुष्य कभी कभी अकरणीय कार्य करने में भी नहीं हिचकिचाता। प्रेम का आग्रह इतना प्रबल होता है कि उसके लिये संसार को शत्रु बनाने के साहस का मनुष्य के मन में प्रादुर्भाव हो जाता है। प्रेम के आग्रह में प्रबल, असाधारण एवं आश्चर्यजनक शक्तियां रहती हैं। अतः प्रेम की सफलता मनुष्य को स्वास्थ्य, सौन्दर्य, बुद्धि चातुरी, शक्ति एवं कार्यक्षमता प्रदान करती है और प्रेम की असफलता मनुष्य को देती है अश्रु, अवसाद और घृणा आदि अवाञ्छनीय भावनाएं।

प्रेम और घृणा एक ही तत्व के दो पहलू हैं और ये दोनों ही पहलू मनोविज्ञान के दो बड़े आधार हैं। जब प्रेम में निराशा प्राप्त होती है, तो मनुष्य की समस्त भावनाएं घृणा के दुखद रूपों में परिवर्तित हो जाती हैं। घृणा के स्वरूप भी अनेक प्रकार के हैं। कभी कभी कट्टर प्रेम इतनी प्रबल घृणा में परिणत होता जाता है कि प्रेमी, प्रेम-पात्र की नृशंस हत्या तक कर डालता

(शेष पृष्ठ १६ पर)

कहानी

मांग का सिंदूर

★ श्री ईश्वरप्रसाद वर्मा

अभी वर्षा हो कर ही चुकी थी। नन्ही नन्हीं शीतल फुआर हवा के झकोरों के साथ अठखेलियां करती हुई प्रकृति के सौन्दर्य को द्विगुणित कर रही थी। शीला अपने घर की खिड़की पर खड़ी प्रकृति की इन अठखेलियों का आनन्द ले रही थी। सहसा उसे स्मरण हो आया कि आज तो करवा चौथ है और अभी तक वह पूजा की तैयारी भी नहीं कर पाई। एक अपार अनिर्वचनीय आनन्द मे विभोर हो वह शीशे के सामने जा बैठी और शृंगार करने लगी। सहसा उसके स्मृति पटल पर बाल्यकाल की स्मृतियां उभर आई, उसके मस्तिष्क मे बचपन की बाल-क्रीडाएं एक-एक करके नाचने लगी "जब वह बच्ची थी, गुड्डे गुड़िया का ब्याह रचाया करती थी तेल की छोटी छोटी पूरियां टीन की कड़ाही मे बनाने मे उसे विचित्र आनन्द आता था। मां के बार-बार चीखने पर भी, "अरी! क्या कर रही है, तुझे कुछ सूझता भी है, कम्बख्त रात-दिन इसी खेल मे पड़ी रहती है। अब तेरे बाल-बच्चे होंगे तो शीला के कानों में जूं तक नरेंगती। वह आनन्द से किलकारियां मारती मां के गले मे लिपट जाती और बालसुलभ सहज चंचल मुस्कान से मां की उद्विग्नता शांत कर देती।

पर आज यह सब घटनायें उसके लिए स्मृतियों की पतली रेखा के समान थीं। शीला अभी अपनी विचार तरंगो मे डुबकियां लगा ही रही थी कि बाहर से द्वार खटखटाने की आवाज आई। शीला शृंगार आदि का सामान सब कुछ वहीं छोड़ दरवाजे पर दौड़ी-दौड़ी आई और दरवाजा खोला। देखा कि उसके पतिदेव खड़े मुस्करा रहे हैं।

ओ कहीं जाने की तैयारी हो रही है। कुमार ने जरा मुस्कराते हुए कहा।

"कहीं भी नहीं, आज करवा चौथ है न, इसीलिए जरा बाल सवार रही थी।"

अच्छा! आज पतिदेव की ही मंगल कामना के लिए यह सब कुछ हो रहा है।

शीला ने पति की बात सुनकर लज्जा से आंचल मे मुंह छिपा लिया। दो पल को वह भूल गई कि आज उसके घर मे पर्याप्त सामान भी नहीं है, जिससे वह भली प्रकार त्यौहार मना सके। पर न मालूम क्यों पति के दृढ़ तथा आश्वस्त की ओर देख कर वह अपना सारा दुःख भूल जाती।

अचानक कुमार का वह प्रसन्नता चिन्ता मे परिणत हो गई। "आज मुझे खाली बैठे एक साल हो गया आखिर कब तक एसे चलता रहेगा। कुमारने मुंह लटकाये लटकाये ही कहा। चिन्ता की रेखायें स्पष्टतया उस के मुख पर अंकित थी। वह एक दम धम्म से चारपाई पर बैठ कर कहने लगा, "शीला! दुःख की भी कोई हद होती है। आज यदि कहीं मेरी नौकरी होती या पैसा होता, तो शीला! तुम्हारे जैसी देवी को क्यों इतना कष्ट उठाना पड़ता। कहते-कहते कुमार की आंखों में आंसू छलछला आये।

शीला कुमार को इस प्रकार व्याकुल देख कर चिन्तित हो उठी। आन्तरिक वेदना को हृदय मे दबा कर ढाढस बंधाती हुई बोली—"आप इतनी चिंता क्यों करते हैं? जिसने पैदा किया है वह पेट भरने को भी न देगा क्या?

और फिर शीला ने विषय को बदलते हुए मृदुल शब्दों मे कहा, "अच्छा चलो हाथ मुंह धो कर खाना वाना खा लो। इतना कह दोनो भोजन की थाली पर जा विराजे। कुमार से आज कुछ खाया न गया और वह उठ खड़ा हुआ। चिन्ताओं मे कहीं भोजन अच्छा लगता है शीला ने भी उसी थाली का बचा-खुचा खाया और दोनों अपनी अपनी चारपाई पर जा लेटे। मगर क्या इस तरह कहीं नींद आया करती है? शीला तो थकी होने के कारण लेटते ही सो गई, पर कुमार की तो नींद उड़ गई थी। उसे रह-रह कर सोच आ रहा था कि भविष्य का क्या होगा। उसकी फूल सा कोमल पत्नीको उसके देखते ही देखते दुःख लग गया। इसका क्या उपचार करे और क्या न करे। इसी उधेड़बुन मे रात बीत गई। वह नित्यप्रति की भांति बिना कुछ खाये पिये ही आज घर से निकल पड़ा। भाग्य-चक्र की लीला विचित्र ही होती है कि किसी को क्या पता अगले पल क्या होने वाला है?

सारे दिन की कड़कड़ाती धूप में और लू के थपेटों से टक्कर खाता कुमार आखिर हताश हो एक पेड़ के नीचे जा बैठा। शरीर मे कुछ चेतना का आभास हुआ। इतने मे एक व्यक्ति ने आकर पूछा भैया! भर्ती का दफ्तर कहां हुइयेई?

"भर्ती का दफ्तर" इस शब्द को विस्मय से कुमार ने दोहराया। मानो इस शब्द को सुनने मात्र से ही कुमार को सब कुछ मिल गया हो। उसका हृदय प्रसन्नता से खिल उठा। उसी आनन्द मे उसकी जबान ने फिर यही दोहराया "भर्ती का दफ्तर"—क्या काम है वहां। मरना चाहते हो, और कुमार खिलखिलाकर हंस पड़ा। "क्या लड़ाई पर जाओगे?" कुमार ने मुख पर आशंका का भव लाते हुये पूछा।

प्रश्नकर्ता ग्रामीण ने गंभीर मुद्रा में जवाब दिया "भैया हम वहां पल्टन में भर्ती होइबे ना तो का करी। भैया पेट की खातिर दर २ भटकी, झिड़कियां खाई इस कम्बख्त पेट की आग बुझाइये को। हम पल्टन मे भर्ती हो जाई मरना हुईयेई तो यहा पर भी मरिबै और वहा पर भी कोई ने रोक सकि है।

"हां हां ठीक है दर दर ठोकरें खाने से तो यह अच्छा है" इन शब्दों को दोहराते हुए कुमार के सोचने की दिशा भी बदल गई। उसने खड़े होते हुये जवाब दिया—"वह देखो भैय्या सामने उसी का दफ्तर है" और कुमार स्वयं भी उधर चल पड़ा। वह कुछ ही दूर चला होगा कि एकाएक उसके पैर रुक से गये, मानो भारी दलदल में फंस गये हों वह जितना पैर आगे बढ़ाता बढ़ न पाता। उसके दिमाग में उथल-पुथल सी मच रही थी। विचारों में एक ज्वार-भाटा सा उठने लगा; एक ओर स्त्री का प्रेम दूसरी ओर जीविका की समस्या एक ओर घर का मृदुल दुलारमय जीवन दूसरी ओर भयंकरता का साकार रूप युद्ध। उसे कुछ चेत हुआ। उसने सिर को झटका दिया और पुनः साहस संचित किया।

कुछ देर स्तब्ध रहने के पश्चात् कुमार ने निर्णय कर लिया कि वह अवश्य भर्ती हो जायेगा। जब मरना ही है तो जैसे यहां तैसे वहां। मृत्यु कहीं भी पीछा नहीं छोड़ती। दिल को जरा हिम्मत बधाते हुये कुमार ने स्वयं ही कहा "यहां कहीं एक दम थोड़े ही भर्ती कर लेंगे? कुछ दिन तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, तब नियुक्ति होगी। तब तक शीला को तैयार कर लूंगा।

यह निश्चय कर कुमार दफ्तर में चला गया। सेना के अधिकारी ने बड़े आदर सत्कार तथा प्रेम भाव से बातचीत की, और कुमार को हवलदार के पैद की नियुक्ति का आदेश दे बैरक में जाने के लिए पुलिस वाले के साथ भेज दिया।

यह सब कुछ देख कुमार अवाक रह गया। उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। उसे इसका विचार तक न था कि उसे जाते ही भर्ती कर लिया जायेगा। अब उसकी शीला का क्या होगा। वह अकेली किस भांति इस असह्य दुःख को सह सकेगी। उसकी शीला से मिलने की इच्छा प्रबल हो उठी। वह उतावला हो उठा, पैर तेजी से चलने लगे और एकाएक उसकी आंखों के सामने अंधेरा सा छा गया धड़ाम ओह!

क्या हुआ साहब! पुलिस वाले ने अचम्भे से कुमार को उठाते हुए पूछा।

कुछ नहीं, कुछ नहीं, जरा ठोकर लग गई थी। उसमें उठने की सामर्थ्य भी नहीं रही थी। पर उठा। मजबूर था और फिर चलने लगा। वह चल तो रहा था पर उसकी आंखों के सामने बार २ शीला का चित्र नाचने लगता शीला का क्या होगा।

"यह है बैरक साहब!" कहकर पुलीस मैन चला गया और कुमार पर-कटे असहाय पंछी की भांति बैरक में पड़े पलंग पर लेटकर छटपटाने लगा। अपने विगत जीवन की मृदुल स्मृतियों को वह जितना ही भुलाने का प्रयत्न करता, उतनी ही तीव्रता से वे उभर आती।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

स्वतन्त्र भारत के पांचवें वर्ष लग्न का भविष्य

[श्री हरदेव शर्मा ज्योतिषाचार्य]

श्रावण शुक्ला १२ अंगलवार तदनुसार ता० १४ अगस्त (अर्धरात्रोत्तर १५ अगस्त) १९५१ ई० को इष्ट घट्यादि ७७।२६ पर वृष लग्न में भारत को स्वतंत्र हुए चार वर्ष पूर्ण होकर पांचवां वर्ष आरम्भ हो जावेगा। उस समय की ग्रहस्थिति निम्न है—

स्वतन्त्र भारत का पांचवां वर्ष लग्न

और यह है स्वतन्त्र भारत का जन्मलग्न [ता० १५ अगस्त १९४७ इष्ट ५१।२७]

गत वर्ष इन्हीं दिनों हमने 'श्रीस्वाध्याय' के 'ग्रीष्माङ्क' में स्वतन्त्र भारत के चतुर्थ वर्षलग्न का विचार करते हुए स्पष्ट लिखा था कि—"इस वर्ष विश्व-युद्ध नहीं होगा''' भारत के शारीरिक बल एवं आर्थिक स्थिति में कोई विशेष सुधार न हो सकेगा। "सरकार अपने कार्य से जनता को प्रसन्न नहीं कर सकेगी। भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और चोर बाजारी से जनता त्रस्त होकर शासन का विरोध करने पर बाध्य होगी। किसी प्रधान पुरुष का निधन होगा।'' शान्तिपूर्ण ढंग से अखण्ड काश्मीर भारत के अधिकार में न आ सकेगा। यह प्रदेश भारत और पाकिस्तान की प्रतिस्पर्धा का अड्डा बना रहेगा।'' इत्यादि।

वर्तमान वर्ष के 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' और 'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्क में सं० २००८ का जो विस्तृत भविष्य विवेचन हमने किया था वह पाठकों को विदित ही है। अब यहां पांचवें वर्ष लग्न की ग्रहस्थिति पर शास्त्रीय विचार प्रकट करेंगे।

द्विजन्मा योग

स्वतन्त्रता का यह पांचवां वर्ष भारत के लिए बड़ा क्रांतिकारी और ऐतिहासिक घटनाओं को लेकर आ रहा है। ग्रहस्थिति अनेक प्रकार की उलझनों और आपत्तियों को प्रकट कर रही है। एक प्रकार से इस वर्ष में स्वतन्त्रता का पुनर्जन्म ही कह दिया जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। क्योंकि इस वर्ष का लग्न वही आया है जो जन्म लग्न था। वर्षलग्न जन्म लग्न के समान (एक) होने पर ज्योतिष-शास्त्र की परिभाषा में उसे 'द्विजन्मा योग' कहते हैं।

जिस प्रकार किसी व्यक्ति की वर्ष-कुण्डली में द्विजन्मा योग हो और लग्न लग्नेश बलवान न हो तो उस व्यक्ति को वह सारा वर्ष कष्टप्रद जाता है। इसी प्रकार यह वर्ष भारत राष्ट्र के लिए कठिनाई का आवेगा। सरकार एवं जनता के सामने अनेक विषम-समस्याएं उत्पन्न होकर अग्निपरीक्षा का समय उपस्थित होगा। त्रिविधतापों से जनता सन्तप्त रहेगी। आर्थिक संकट भयानक रूप धारण करेगा। लग्नेश शुक्र शत्रु राशि में नीचाभिलाषी होकर राज्येश शनि से द्विर्द्वादश योग बना रहा है और प्रजासत्तात्मक पराक्रमेश चन्द्रमा अष्टम भाव में चला गया है। अतः राजा प्रजा का वैमनस्य उग्ररूप धारण करेगा। पारस्परिक प्रतिस्पर्धा और राजनैतिक दल बन्दियों के दल-दल में भारत का द्रव्य और दिमाग बुरी तरह दब जावेगा। जन्मलग्नेश वर्षलग्नेश शुक्र पापयुक्त है और केन्द्र तथा पंचम स्थान में पाप ग्रह भी देश के दु:ख दारिद्र्य और धननाशादि अशुभ फल के सूचक हैं।

त्यागभावना निर्लोभवृत्ति और उदारता का उच्चादर्श कहीं दिखाई नहीं देगा। राजनैतिक सामाजिक गतिरोध के साथ ही मनुष्यों के प्रज्ञापराध और अधार्मिक मनोवृत्ति के कारण भारत में दैवी-प्रकोप (अनावृष्टि, अतिवृष्टि, दुर्भिक्ष अग्निकाण्ड भूकम्प महामारी आदि) से भी बहुत हानि होगी। इन दैवी आपत्तियों का मूलकारण और उनसे बचने के उपाय हम गत वर्ष के ग्रीष्माङ्क (वर्ष ६ अङ्क ४) में शास्त्रीय आधार पर भली प्रकार लिख चुके हैं। जब तक इन आपत्तियों के मूल कारण के प्रतिकार का प्रयत्न नहीं किया जायगा तब तक संसार में सुख शान्ति का साम्राज्य स्थापित होना सर्वथा असम्भव है, अस्तु।

इस वर्ष आसाम, बिहार, उड़ीसा, बंगाल, नेपाल, तिब्बत, काश्मीर, पंजाब, राजस्थान और पूर्व दक्षिण एवं पश्चिमोत्तरीय सीमा प्रदेशों में उत्पात अधिक होंगे। किसी प्रधान पुरुष की मृत्यु होगी। केन्द्रीय व प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलों में उलट फेर होगा। कई बगुले भक्तों का असली रूप इस वर्ष सामने आयेगा। साम्प्रदायिकता का आतंक बढ़ेगा। यत्र तत्र चोर डाकू लुटेरों द्वारा जन-धन का अपहरण होगा। कुछ एक उच्च पदारूढ़ व्यक्ति अपने साहस एवं सहनशीलता का सन्तुलन खोने के कारण जनता के कोपभाजन बनेंगे। तीसरे मास से आगे का समय विशेष विपद् ग्रस्त रहेगा। इस वर्ष में गुरु लाभस्थान में बलवान् है। यही एक भारत की प्रतिष्ठा और स्वतन्त्रता को जीवन प्रदान करता रहेगा। शनि का प्रतियोगी होने के कारण यह गुरु आरम्भ में आर्यों को अनेक आपत्तियों में डालकर अन्त में उनके गौरव को बढ़ाने वाला सिद्ध होगा।

संक्षिप्त द्वादश भाव फल

१. लग्नेश शुक्र वक्री होकर हृदय स्थान में केतु के साथ पाप ग्रहों के मध्य में विराजमान है और लग्न पर शनि की दृष्टि है अतः भारतीय प्रजा का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य इस वर्ष पतनोन्मुख रहेगा। वीर्य विकार एवं अनाचार की वृद्धि होगी। हृदय में स्नेह सद्भावना न रहेगी। राष्ट्र के किन्हीं दो प्रमुख पुरुषों को स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण विश्राम करना पड़ेगा।

२. धनभाव शनि से दृष्ट और धनेश पाप मध्य बैठा है। अतः इस वर्ष जन साधारण की आर्थिक स्थिति संकटापन्न रहेगी, राज्यकोष की स्थिति भी चिन्ताजनक बनेगी। कुछ प्रान्त ऋणग्रस्त होंगे। करों के बोझ से जनता सन्त्रस्त होगी। पूंजीपति और श्रमिकवर्ग के संघर्ष से औद्योगिक क्षेत्रों में गतिरोध उत्पन्न होगा।

३. तृतीयेश चन्द्रमा अष्टम में और पराक्रम में नीचस्थ मंगल के साथ सूर्य है अतः जनता के साहस एवं पराक्रम का ह्रास होगा। प्रजाजनों में कहीं भी उत्साह एवं आनन्द की तरंगें दिखाई नहीं देंगी। सूर्य गुरु के कारण राजा वा अधिकारी वर्ग की ओर से पूर्ण साहस और शौर्य दिखाया जावेगा, परन्तु वह दिखावा मात्र ही रहेगा। आयात निर्यात में कठिनाई होगी। किसी बड़े अधिकारी व सेनापति को यान दुर्घटना से आघात होगा।

४. लग्नेश शुक्र धनेश पंचमेश बुध के साथ चतुर्थ भाव में है, अतः भूमि-सुधार, ग्राम सुधार, नगर-निर्माण, कृषि एवं उपज वृद्धि के लिए नवीन योजनाएं बनेंगी। नये बांध, खानें, नहरें और सड़कों के विस्तार में पर्याप्त व्यय होगा। परन्तु चतुर्थ भाव केतु और चतुर्थेश सूर्य नीचस्थ मंगल के साथ होने से ये सब योजनाएं पूर्णरूपेण सफल न हो सकेंगी। कहीं अर्थाभाव से, कहीं अनुभवी त्यागी कार्यकर्ताओं के अभाव से, कहीं प्रकृति-प्रकोप से तो कहीं राजनैतिक पारस्परिक प्रतिस्पर्धा से पूर्ण प्रगति में बाधा उपस्थित होगी। गृह-मन्त्री और गृह विभाग के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है।

५. पंचमेश बुध केन्द्र में है और पंचमभाव गुरु से दृष्ट है, अतः इस वर्ष विज्ञान और शिक्षा संस्थाओं की उन्नति विशेष होगी। शिक्षा में पर्याप्त सुधार होगा। पंचम में शनि पड़ा है अतः हिन्दी संस्कृत साहित्य की उन्नति में अन्दर बाहर के शत्रुओं द्वारा बाधा पड़ेगी। शिक्षामन्त्री के लिए भी यह वर्ष नेष्ट रहेगा।

६ षष्ठेश शुक्र चतुर्थ भाव में बुध केतु के साथ है अतः भारत की जल स्थल नभ सेना में पर्याप्त सुधार होगा। सैनिक संगठन सुदृढ़ बनेगा। शत्रु स्थानाधिपति शुक्र लग्नेश भी है और शत्रु राशि में ही पड़ा है अतः यह कई गुप्त शत्रु भी उत्पन्न करता है। वर्तमान कांग्रेसी सरकार के कई अपने अन्तरङ्ग निजी व्यक्ति भी शत्रु बन सकते हैं और अनार्य प्रकृति के विदेशी एवं पड़ोसी गुप्तचर भारत को हानि पहुँचाने की ताक में रहेंगे। अतः ऐसे प्रच्छन्न शत्रुओं से भारत को सदा सतर्क रहना चाहिये। मंगल के कारण कहीं सैनिक संघर्ष और कहीं रक्तपात की भी सम्भावना है। परन्तु भौम दृष्टि होने के कारण अन्त में शत्रुओं के सभी दुष्प्रयत्न निष्फल होंगे। रक्षामन्त्री के लिए यह वर्ष अग्नि परीक्षा का होगा।

७. सप्तमेश मंगल नीच का है और सप्तभाव शनि मंगल से दृष्ट है अतः भारत के वाणिज्य व्यवसाय के लिए वर्ष उन्नति कारक नहीं है। निम्न कोटि का व्यापारी वर्ग असन्तुष्ट रहेगा। मध्यम श्रेणी के लोगों को अपना जीवन निर्वाह कठिन होगा। नियन्त्रण से अनेक गृहस्थ आपद्ग्रस्त होंगे। गुरु दृष्टि होने के कारण विदेशों से भारत का सम्बन्ध सहानुभूति पूर्ण रहेगा।

८. अष्टम भावस्थ चन्द्रमा सूर्य मंगल से षडष्टक योग बना रहा है अतः किसी राजपुरुष की मृत्यु होगी। रोगादि उपद्रव भी बढ़ेगा। गुरु दृष्टि होने के कारण उत्पादन में वृद्धि और मृत्यु से जन्म संख्या अधिक होगी।

९ नवम (भाग्य) भाव पर सूर्य मंगल शनि की दृष्टि है। अतः इस वर्ष भी भारत के भाग्य विधाता रूठे ही रहेंगे। धार्मिक भाव का ह्रास होगा और आर्य लोग कष्ट पावेंगे। भाग्येश उच्चाभिलाषी है और गुरु से दृष्ट भी अतः आगे चलकर तुला के शनि में सम्भवतः

(शेष पृष्ठ १४ पर)

विश्व को चमत्कृत करने वाली योगिराज श्री अरवि

[श्री “

आश्रम में संगीत कक्षा

योगिराज श्री अरविन्द घोष की जीवन लीला समाप्त हो गयी किन्तु उनका कार्य आज भी जीवित है उनके विचार भारत की अक्षय निधि में सुरक्षित हो चुके हैं। उनका दर्शन विश्व दार्शनिकों को भी प्रकाश देने वाला और भारत के सम्मुख राष्ट्र निर्माण का आधार उपस्थित करने वाला है। उनका जीवन शुक्र के तारे के समान पूर्वाकाश को प्रकाशित करता हुआ भारत की सर्वतोमुखी प्रतिभा रूपी उषा के आगमन की सूचना दे रहा है।

प्रतिभाशाली जीवन

श्री अरविन्द का बाल जीवन प्रतिभाशाली छात्र का जीवन है जिसने शिक्षा की सभी सीढ़ियों को सफलता पूर्वक पार करते हुए आई० सी० एस० तक जाने का प्रयास किया। किन्तु अन्तर में छिपी हुई ज्वाला तो भड़क उठने का अवसर देख रही थी। फिर श्री अरविन्द आधुनिक अर्थ में एक सुखी जीवन की चिन्ता में कैसे लगते। भारत की पराधीनताजन्य दुर्दशा से इनका हृदय उमड़ पड़ा और स्वतन्त्रता आन्दोलन में वे अविलम्ब कूद पड़े।

अध्यात्म की ओर

किन्तु शीघ्र ही श्री अरविन्द की अन्तर्दृष्टि और भी सूक्ष्म हो गयी। भारत की सेवा के लिए बढ़ते हुए इन्हें भारत की गोद में पले समाज की दिव्य आत्मा के दर्शन हुए। उनकी दृष्टि राष्ट्र के उस महान आध्यात्मिक वैभव पर केन्द्रित हो गयी। इतना महान वैभव और ये दुर्दशा। श्री अरविन्द के हृदय-सागर में मन्थन प्रारम्भ हुआ।

जेल में दर्शन

आन्दोलन की व्यस्तता में भी उनके अवचेतन मानस में एक तूफान उठ रहा था। किन्तु जेल जीवन में वह बाह्य व्यस्तता समाप्त हो गयी और श्री अरविन्द का ध्यान अपने अन्तर में उठती हुई अध्यात्म लहरियों पर केन्द्रित हो गया। एक बार स्थिर हुई दृष्टि फिर विचलित न हुई। पहिले धुंधला दीखने वाला चित्र धीरे धीरे साफ होना आरम्भ हुआ और तब स्पष्ट रूप में सम्मुख आ गया।

दिशा परिवर्तन

आध्यात्मिक विभूति के इस दर्शन ने श्री अरविन्द के जीवन में क्रान्ति कर दी। जेल से बाहर आने के पश्चात अपने प्रथम भाषण में उन्होंने इसका
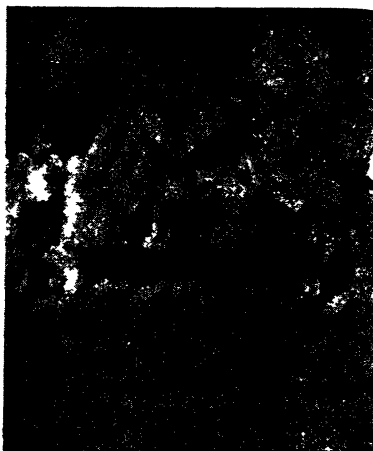
शारीरिक विकास श्री अरविन्द के योग में प्रमुख स्थान र

उल्लेख किया और राजनीतिक जीवन को छोड़कर परमसत्य की खोज में लगने का निश्चय बताया। स्थिति बदल गयी। जिससे ब्रिटिश सरकार घबराती थी उसी को ऐसा स्थान ढूंढने की चिन्ता हुई जहां बैठकर वह अपनी साधना में लग सके और इतना बलवान शत्रु कोई व्याघात न पहुँचा सके।

योगिराज के दुर्लभ दर्शन साथ में माताजी हैं। श्री अरविन्द वर्ष में केवल चार बार दर्शन देते थे।
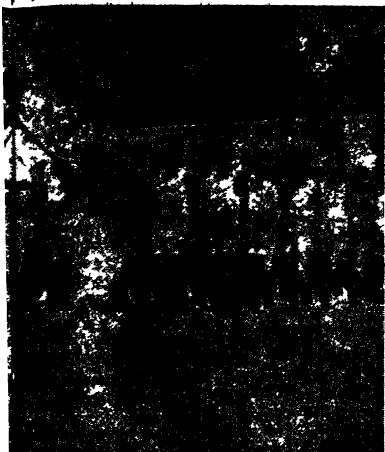
है। यहां आश्रमवासियों के एक प्रदर्शन का दृश्य है।

भारत की आध्यात्मिक विभूति
द् तथा उनका दर्शन

न्द"]

पाण्डिचेरी

अत भारत की भूमि पर ही फ्रांस द्वारा अधिकृत पाण्डिचेरी में बैठ कर एक महान स"त की अनवरत तपश्चर्या का इतिहास है। श्री अरविन्द की तपोभूमि शीघ्र ही एक आश्रम के रूप में परिव र्तित हो गयी। उनकी ओर गुरुभाव से देखने वाले अन्य अनुयायी वहां पहु चने लग और अरविन्द आश्रम ने एक एक प रवार का रूप ले लिया। श्री अरविन्द अधिकाधिक साधना में लीन होते गए।

"माता जी"

कुछ समय पश्चात् एक फ्रेंच महिला भी इ न परिवार में आ गयीं। श्री अरवि"" की अनन्य भक्ति से इनका अन्त करण भरा हुआ था। परम सत्य की खोज में बढते हुए श्री अरविन्द के चरणचिन्हों को देखते हुए इन्होंने भी उसी पथ पर बढ़ना आरम्भ किया। आ श्रमवासियों की देखभाल तथा सब •यवस्था का भार इन्होंने सभाल लया और समस्त आश्रम की यह माता बन गयीं। अपने अ यवसाय से श्री अरविन्द की साधना म इ होंने भी अपना एक स्थ न बना लिया। आश्रम का जीवन अधिक आनन्दित हो उठा।

साक्षात्कार

अ"त में श्री अ वि " की साधना पूरी हुई और उ " आत्मसाक्षात्कार हुआ। मानसिक ज्ञान की सीमाओं को पार कर वे निस्सीम से एक हो सके। जीवन का मूल उनके हाथ आ गया। हस्तामलकवत वह स्पष्ट हो गया। यह श्री अरविन्द के जीवन के दूसरे अध्याय की समाप्ति थी सृजन और विनाश जन्म व मरण स य तथा भ्रान्ति के रहस्य उनके सम्मुख खुल चुके थे। उनकी दिव्य दृष्टि ने प्रश्नवाचक चिन्ह कहीं रहने नहीं दिया था।

आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् श्री अरविन्द के नेत्र संसार की ओर उठे। उन्होंने देखा कि विश्व की स्थिति क्या है, मानवता की दशा क्या है। उन्होंने अनुभव किया कि जगत को उनके दर्शन की आवश्यकता है। अत वे अपने दर्शन को संसार के लोगों के सामने रखने के लिए प्रयत्नशील हुए। उन्होंने अपनी अनुभूति को शब्दबद्ध करने का प्रयास किया। उनकी लिखी कितनी ही पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध दिव्य जीवन' है।
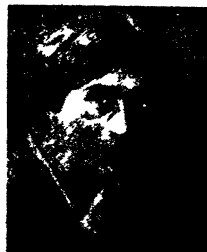
माताजी

दर्शन

श्री अरविन्द के अनुसार किसी भी वस्तु को जानने के लिए उससे ही एक हो जाना सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। ज्ञाता और ज्ञेय की एकता म ही ज्ञेय के सम्पूर्ण रहस्य प्रकट हो पाते हैं। इस सृष्टि के पीछे परमसत्य है और उसका ज्ञान प्राप्त करने का मार्ग यही है कि उससे एक हो जाया जाय।

[शेष पृष्ठ १८ पर]

अन्तिम दर्शन

दर्शन के पश्चात् श्रद्धालु भक्त की आत्म-विभोर मुद्रा।

स्वतन्त्र भारत का भविष्य

[पृष्ठ ११ का शेष]

२०१० से भारत का भाग्य उज्ज्वल बनने लगेगा ।

१०. दशमेश शनि दमशाभावसे अष्टम गया है, शत्रु ग्रह सूर्य मंगल की इस पर दृष्टि है अत. इस वर्ष केन्द्रीय और प्रान्तीय शासकों के लिए कठिन अग्नि-परीक्षा का समय उपस्थित करेगा। सबल हाथों से शत्रुओं का सामना करना पड़ेगा। एक छिद्र को बन्द करते ही दूसरी दरार फटने लगेगी। राज्येश मित्र-क्षेत्र मे गुरु से दृष्ट है अतः विरोधी वातावरण के होते हुवे भी वर्तमान सरकार का अस्तित्व स्थिर रह सकेगा। मन्त्री मण्डल मे परिवर्तन अवश्यम्भावी है।

११. लाभ स्थान में स्वक्षेत्री गुरु भारत को शक्तिशाली एव स्वावलम्बी बनाने में सहायक होगा । शनि पहले बाधा डालेगा ।

१२. व्ययेश मंगल नीच का होकर सूर्य के साथ तीसरे भाव में है। अत इस वर्ष राजनैतिक दल बन्दियों, सत्तारूढ होने की महत्वाकाक्षाओं, वाणिज्य व्यवसाय और सुरक्षा सम्बन्धी कार्यों में राष्ट्र का धन विशेष रूप से व्यय होगा। सूर्य मंगल शनि के कारण पाकिस्तान से आन्तरिक सम्बन्ध अच्छे न रहेंगे। सैनिक संघर्ष होगा। कश्मीर में जन-धन का विनाश होगा। पश्चिमोत्तरीय भारतीय सीमा पर शत्रु द्वारा आतङ्क फैलेगा ।

तीन मास के ग्रहयोग

क्रूरग्रह वक्री होने पर महाक्रूर हो जाते हैं और शुभग्रह वक्री होने पर विशेष शुभ फलदायी बन जाते हैं।

वर्षारम्भ में जो दो क्रूरग्रह (शनि और नेपच्यून-इन्द्र) वक्री थे, वे अब मार्गी हो गये हैं और आगे श्रावण शु० २ को गुरु और भा० शु० १० को शुक्र वक्री हो रहे हैं। गुरु मार्ग शु० २ और शुक्र आश्विन कृष्णा १० ता० २६ सितम्बर तक वक्री रहेंगे । अतः इस ३ मास की अवधि में ये दोनों ग्रह संसार में रोग, दुर्भिक्ष, युद्ध उत्पातादि अशुभ फलों को न्यून करेंगे। युद्ध उत्पातादि कारक मंगल श्रावण शु० ४ ता० ७ अगस्त को कर्क (नीच) राशि में प्रवेश करेगा, इस पर सुख शान्ति कारक गुरुदेव की मित्र दृष्टि रहेगी, अत· इस अवधि में बड़े-बड़े राष्ट्रों में शान्ति और सन्धि चर्चाएं अधिक चलेंगी । सम्भव है ईरान की वर्तमान विस्फोट स्थिति शान्त हो जावे और कोरिया काण्ड भी यहां समाप्त होता दिखाई दे। ईरानी तेल के झगड़े में कोई समझौते का मार्ग निकल आये तो आश्चर्य नहीं । शनि कन्या राशि में चल रहा है और पाकिस्तान की भी कन्या राशि है अतः काश्मीर की समस्या अभी सुलझने न पावेगी। शनि पाकिस्तानियों को आरम्भ में उन्मत्त एवं आक्रान्ता बनाकर अन्त में विनाश करेगा। कन्या का शनि काश्मीर में विग्रह-विनाश कारक रहेगा। यह हम अपने पंचाग और गताङ्क में बता ही चुके हैं।

अब यहां हम तीन मास में आने वाले अन्य योगों का विवेचन करेंगे।

१. श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को गुरुवार है, अतः काले तिल, तेल और उड़द महंगे होंगे।

२. मघा से चित्रा तक पांच नक्षत्र में शुक्र का भूछिद्वार माना गया है। इस अवधि में शुक्र भूछिद्वार में ही रहेगा, यह प्रजा में दुख, जलनाश या अतिवृष्टि से उपद्रवकारक है।

३. श्रावण शुक्लपक्ष में तिथिक्षय आगे कार्तिक मास में छत्रभंग या उत्पात सूचक है।

४. सिंह राशि में शुक्र धान्य सुवर्ण लाल रंग की वस्तुएं और चतुष्पदों का भाव मंहगा रहेगा।

५. भाद्रपद मास में सिंह राशि में सूर्य बुध- शुक्र एकत्र रहेंगे, ये सब अन्न- पदार्थ को महगा करने वाले हैं।

६. भाद्रपद कृष्ण ३० को सिंह राशि में पंचग्रह योग जलप्लावन या उत्पात सूचक है।

७. भाद्रपद कृष्ण में सिंह राशि में शुक्रास्त राजाओं को कष्ट और अनावृष्टिकारक है।

८. आश्विन कृष्ण ३ को मंगलवार अन्न की मंहगाई और अग्निभय का सूचक है—

९. आश्विन शुक्ल ६ को मंगलवार है, अतः उड़द, कपास आदि का संग्रह करने से आगे चैत्र मे अच्छा लाभ होगा।

१०. श्रावण शुक्ल २ को मीन राशि में गुरु वक्री हो रहा है। यह ससार में धन क्षय, चौरादि उपद्रवों से प्रजा में पीड़ा और सब प्रकार के अन्न धान्य, गुड़, खांड, घृत, तैल अलसी आदि पदार्थ विशेष मंहगे करेगा तथा कपास, रुई में भी पर्याप्त तेजी लाती है।

सारांश

उपर्युक्त सब योग संसार में रोग दुर्भिक्ष, उत्पात, धनक्षय और जन हानि के द्योतक हैं। पंजाब, काश्मीर, राजस्थान और पूर्वी भारत में उपद्रव अधिक होंगे। इस अवधि में एक बड़ी बात सन्तोष की है कि गुरु शुक्र दोनों शुभग्रह बलवान् हैं और शनि मंगल पर गुरु की दृष्टि रहेगी। अतः उपद्रवों के कारण उपस्थित होने पर भी स्थिति काबू से बाहर नहीं होने पावेगी। वक्री गुरु शुक्र अन्न, वस्त्र घृत तैलादि रस पदार्थों को विशेष मंहगा न होने दे कर सब वस्तुओं को ६ मास तक मंदी की ओर ही ले जावेंगे। आगे माघ मास जनवरी १९५२ से उक्त सभी वस्तुओं में विशेष तेजी प्रारम्भ होगी। इस अवधि में उक्त योग आधिदैविक आधिभौतिक उपद्रव और सामाजिक, राजनैतिक संघर्षमात्र करावेंगे।

नारी-जीवन

नारी-शक्ति के जागरण पर ही देश का भविष्य अवलम्बित है

त्यागमय नारी जीवन

[कुमारी नीलिमा एम० ए०]

एक बार स्वामी विवेकानन्द से किसी जिज्ञासु व्यक्ति ने प्रश्न किया—'विधवाविवाह आदि नारी जाति की सामाजिक स्थिति के सुधार के सम्बन्ध में आपकी क्या योजनायें हैं? इस पर स्वामी जी ने खीम कर उत्तर दिया था—'मैं न नारी हूँ, न विधवा हूँ। फिर आप मुझ से यह प्रश्न क्यों पूछते हैं? क्या पुरुष ही सर्व शक्तिमान है कि वह अपने आप को सब प्रकार से सबल और सशक्त समझ कर समस्त नारी जाति के उद्धार का भार अपने ही ऊपर ले ले। क्या नारी भी अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व को विस्मृत कर अपनी उन्नति तथा अपनी महात्वाकाक्षाओं की पूर्ति का आधार पुरुष जाति को ही मान ले?

स्वामी जी ने उत्तर क्या दिया, मानों नारी जाति की समस्या के मूल पर आघात किया हो। उनके उत्तर मे जहा एक ओर नारी की परवशता की झलक मिलती है वहां उसके लिये एक चेतावनी भी है जो उसे स्वतन्त्र व्यक्तित्व के निर्माण की प्रेरणा प्रदान करती है।

वैदिक कालीन नारी

आज के तथाकथित प्रगतिशील युग म प्राचीन का सवथा उन्मूलन कर नवीन सभ्यता के निर्माण की जो पुकार मची हुई है उससे हमारा नारी जीवन भी प्रभावित हुआ है। समय की गतिशीलता के साथ वह भी प्राचीन को सर्वथा भुला कर नवीन सभ्यता के निर्माण की ओर अग्रसर हो रही है। प्रगति के अपने उन्माद में वह अपने जीवन के उस गौरवमय इतिहास के पृष्ठ भी नहीं उलटना चाहती जब वह स्वतन्त्रता के लिये पुरुष जाति के विरुद्ध आन्दोलन न कर स्वय ही समाज की सचालिका थी। नारी के प्रति वैदिक-कालीन समाज का दृष्टिकोण माता का होने के कारण समाज के निर्माण का समस्त उत्तरदायित्व भी तत्कालीन नारी समाज पर ही था।

वैदिक कालीन नारी न केवल विदुषी तथा आत्मनिर्भर होती थी बल्कि उसने ऋग्वेद की बहुत सी ऋचाओं का भी निर्माण किया था। हमारे भौतिक जगत से भी सर्वथा परे समस्त विश्व में व्याप्त जो एक परम शक्ति है उसके साक्षात्कार का अधिकार किसी जाति अथवा वर्ग विशेष तक ही सीमित नहीं है, मानव जीवन का लक्ष्य ही उस परम सत्य का साक्षात्कार करना है। वैदिक काल की नारी ने भी उस परम सत्य का अपने जीवन में साक्षात्कार किया। वेदों और उपनिषदों के अमर सत्य को आत्मसात कर त्यागमय जीवन को ही अपना आदर्श बनाया। भरी हुई धार्मिक सभाओं म उसने अपनी स्वतन्त्र धार्मिक सम्मतिया रख कर तत्कालीन विद्वजनों को चमत्कृत कर दिया। अपनी प्रमुख धार्मिक शक्तियों को पहिचान कर उसने अपने जीवन का स्वय ही निर्माण किया। उसने निःसकोच हो कर स्वय ही अपने जीवन साथी को चुना युद्धभूमि म उसके साथ रह कर अपने कर्तव्य का पालन किया।

देश पर पड सकट के निवारण के लिये युद्धभूमि की ओर जाते हुए पुरुषों को उनके पीछे नारी जाति की रक्षा कौन करेगा इस ओर सोचने का अवसर तक नहीं दिया।

पराधीनता का अभिशाप

विदेशी आक्रान्ताओं के निरन्तर आक्रमणों से पादाक्रान्त भारत का सामाजिक और राजनैतिक जीवन जब विश्रृखलित सा हो गया तो उसका प्रभाव नारी जाति पर भी पड़ा। फल स्वरूप नारीरक्षा के नाम पर उसके कर्तव्य चहारदीवारी तक ही सीमित कर दिये गये। सकट के समय म अपनाये नियमों ने धीरे धीरे रूढ़ियों का रूप धारण कर लिया और समय के साथ ही पराधीनता की श्रृखलायें दृढ़ से दृढ़तर होती चली गई।

नारी के कर्तव्य केवल पारिवारिक जीवन तक ही सीमित कर दिये गये इससे वह जितनी पराधीन हुई उससे कहीं अधिक पराधीन वह इसलिये हुई कि उसने अपना स्वतन्त्र अस्तित्व खो दिया। इसमें उसका अपना दोष न होकर परिस्थितियों का ही दोष अधिक था।

मातृ शक्ति की पहिचान

नारी जाति चाहे कितनी ही विमुख होने की चेष्टा करे किन्तु मातृत्व का उत्तरदायित्व सदैव से नारी जाति पर रहा है और रहेगा। नारी जाति के सरस मातृत्व का आदर्श सन्तान उत्पन्न कर उनका पालन पोषण करना मात्र ही नहीं है। उसका आदर्श इससे भी कहीं ऊचा है। नारी जाति जब अपने मातृत्व के उच्चतम आदर्श को समझ लेती है, तब उसके सम्मुख केवल अपने पुत्र-पुत्री ही नहीं संसार का समस्त मानव जगत सन्तान के समान हो जाता है। उस समय नारी का दृष्टिकोण यही होता है कि उस पर मातृत्व का उत्तरदायित्व भार है।

बीसवीं शताब्दी की महानतम आध्यात्मिक विभूति स्वामी रामकृष्ण परमहंस तथा योगिराज अरविन्द से कौन अपरिचित होगा। स्वामी रामकृष्ण की पत्नी शारदादेवी ससार में रहते हुये भी समस्त सांसारिक बन्धनों से परे थीं। अपने आश्रम में रहने वाले प्रत्येक साधक पर उनका पुत्रवत स्नेह था। अरविन्द आश्रम की माताजी जिस प्रकार आश्रम की सारी देखरेख अपने हाथों से करती हैं उसमें नारी जाति की मातृ-शक्ति का आभास मिलता है।

प्रगतिशीलता के उन्माद में बहती हुई नारी से युग की सबसे बड़ी मांग यही है कि वह अपने व्यक्तित्व को पहिचान कर, स्वतन्त्रता का आन्दोलन न कर स्वय ही नाना प्रकार के प्रचार हीन मार्गों पर चलते हुए समाज का मार्ग प्रदर्शन करे। वर्तमान भयकर परिस्थितियों में अन्ततोगत्वा सारा भार उसी पर आना पड़ता है।

सावन की रिमझिम में झूला झूलना कितना आह्लादपूर्ण है।

मांग का सिंदूर

[पृष्ठ १० का शेष]

कुमार जब सारे दिन तक घर न लौटा तो शीला के मनमें शंकाओं के तूफान उठने लगे। अनिष्ट की आशंकाओं ने उसका हृदय मथ डाला। उसका किसी काम में मन नहीं लगता। अगाध प्रेम में शंकाएं बहुत उठना स्वाभाविक ही है। कहीं आत्महत्या तो नहीं कर ली या कहीं किसी गाड़ी के नीचे तो नहीं आ गये। भगवान न करे उनको कुछ हो यह कहकर शीला अपने दिल को ढाढस बंधाती। वह कभी हनुमान जी का स्मरण करती तो दूसरे ही क्षण किसी देवी देवता को भेंट चढ़ाने की मन ही मन मनाती। रात भी उसने व्याकुलता से काटी। प्रातःकालीन सूर्य की किरणों ने उसके दुःख की ज्वालाओं को और भी तीव्र कर दिया। शीला विक्षिप्त की तरह इधर उधर चक्कर लगाती और फिर चुप बैठ जाती। आज घर में खाना भी नहीं बना। अकेले पेट के लिए इतना आडम्बर क्यों। सास के बार २ कहने पर भी शीला को शान्ति न मिलती। इस तरह तड़पते हुए उसे दो दिन बीत गये।

वह अपने अनिश्चित भविष्य की कल्पना कर भावी जीवन के ताने-बाने बुन ही रही थी कि उसके कानों में कर्ण कटु शब्द सुनाई पड़े। "बेकारी से तंग आये नवयुवक ने बस द्वारा आत्म-हत्या की" यह शब्द सड़क पर तेजी से दौड़ता हुआ एक अखबार वाला बार २ चिल्लाकर दुहरा रहा था। शीला का शंकाकुल हृदय सहसा व्यथित हो उठा। आंखों के आगे अन्धकार छा गया। हृदय की गति मानों रुकने सी लगी। उसने अखबार मंगा कर देखा तो मालूम हुआ कि आत्महत्या करने वाले युवक का नाम कुमार है। सहसा शीला चीत्कार कर उठी और धड़ाम से धरती पर गिर पड़ी। उसकी बूढ़ी सास और पड़ोसियों को वास्तविकता समझने में देर नहीं लगी। धीरे २ चारों ओर कुहराम सा मच गया। दारुण दुःख और सन्ताप से परिपूर्ण इस वातावरण में भी शीला के हृदय में एक अस्पष्ट सा विचार पूरी तरह जमा हुआ था, जिसके कारण अन्दर ही अन्दर उसे सान्त्वना मिल जाती थी। उसे विश्वास था कि उसे विधाता के और चाहे कितने ही क्रूर आक्रमणों का सामना करना पड़े, किन्तु उसका सुहाग अमर है। उसकी मांग का सिन्दूर-नहीं पुंछ सकता। ऐसी अनहोनी कल्पना से पूर्व ही वह अपने आपको समाप्त कर डालना चाहती थी। चाहे कुछ भी हो किन्तु कुमार जीवित है—यह आत्म विश्वास उसके जीवन की ज्योति को कोटि कोटि झंझावातों के बीच भी नहीं बुझने दे रहा था। कुछ बूढ़ी औरतों ने शीला के हाथ की चूड़ियां फोड़ीं। पैर व हाथों के मांडुर पोंछ दिये शीला चिल्ला रही थी, वे जीवित हैं मेरा सुहाग अमर है ऐसा नहीं हो सकता, पर उसकी सुनता ही कौन था? उसके मांग का सिन्दूर पोंछने के लिए जब कुछ औरतें आगे बढ़ीं तब वह फिर चिल्लाई। इस चीत्कार को सुनकर कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था, जिसका दिल न भर आया हो।

"मेरी मांग मत पोंछो यह अपशकुन मैं अपने घर में न होने दूंगी। वे जीवित हैं मेरा सुहाग अमर है।" यह कह कर वह फूट २ कर रोने लगी। संसार में अब उसका कोई अवलंब न था। विधाता ने उसके जीवन को अपंग बना दिया था।

आज शीला को रोते २ एक दो नहीं तीन माह बीत चुके थे। अब रोना ही उसका एकमात्र काम था। रोते रोते उसकी आंखें सूज गई थीं, वह सारे दिन प्राणहीन देह लिये चारपाई पर पड़ी रहती न स्नान और न भोजन करने ही उठती। संध्या समय उसे ज्वर हो आता, रात भर देह तवे की भांति तपती रहती। और वह चारपाई पर बैठी हुई निस्पन्द नेत्रों से द्वार की ओर ताकती रहती। चारों ओर शून्यता ही शून्यता होती। रातों को वह चीख उठती। वे आ गये-वे आ गये और दरवाजे की ओर भागती। लोग कहते भी कि तुम्हें यहां चली जा पर वह इस बात पर तैयार न होती।

इतनी असह्य वेदना सहने के पश्चात् भी उसके हृदय में आत्म-विश्वास की लौ मन्द नहीं हुई थी। कुमार के अभाव ने उसके जीवन को निश्चेष्ट अवश्य बना दिया था, किन्तु उसकी मृत्यु की कल्पना को भी स्वीकार करने के लिये उसका हृदय तैयार नहीं था।

मां स्वयं चल कर शीला को देखने आई। शीला के सौन्दर्यविहीन, आभाहीन मुख को देख कर उसके हृदय को धक्का सा लगा। अपनी इकलौती पुत्री पर हुए असमय वज्रपात से क्षत-विक्षत उसका हृदय पुत्री को देख कर फटने-सा लगा।

शीला का मुंह हल्दी-सा पीला, शव समान शून्य निष्प्रभ अंग ऐसे हो गये कि वह उन्नीसवें वर्ष में ही ६० वर्ष की बुढ़िया सी हो गई थी।

आज शीला की हालत और बिगड़ गई थी। वह चारपाई पर लेटी आकाश की ओर देख रही थी। बुखार काफी तेज हो गया था। वह उसी की तेजी में न जाने क्या बड़बड़ा सी रही थी। वह कभी इधर और कभी उधर की करवटें बदलती, कितना चाहती थी कि नींद आ जाये, पर चिन्ता में कब नींद आती है। जितनी बातें सोचनी थीं, सब सोच चुकी थी, चिन्ताओं का भी अन्त हो गया था, पर पलकें न झपकीं—मां, पानी।

मां ने एक घूंट पानी उसके सूखे से कंठ में डाल दिया। उसकी ठंडक से शीला की एक क्षण के लिए आंख झपकी उसने देखा कि कुमार घर की ओर आ रहे हैं, वह चिल्ला उठी—आ गये मां, वो आ गये। और शीला के शरीर में न जाने कहां की शक्ति आ समाई थी। वह चारपाई से एकदम उठी और दरवाजे की ओर भागी। मां और सास ने उसे पकड़ना चाहा, पर वह बस में न आई। इसका यह प्रतिदिन का काम हो गया था। शीला खम्भे से जा टकराई, उसके माथे से खून की धार बह रही थी, पर उसे उसकी चिन्ता न थी। वह एकदम सम्भली और पुनः दरवाजे की ओर भागी। जैसे ही शीला ने दरवाजा खोला तो कुमार सामने खड़ा था।

कुमार शीला की हालत देख अवाक् रह गया। शीला का खोया धन उसे वापिस मिल गया। कुमार शीला के साथ घर में आया, तो मां ने हर्ष से आंसू बहाते हुए पीछे से कहा—बेटा! शीला, यह तेरी मांग के सिन्दूर का ही प्रताप है। शीला खुशी में नाच उठी।

"आज कुमार ने स्वयं उसकी मांग में अपने हाथ से सिन्दूर भरा।"

[पृष्ठ ९ का शेष]

है। जब कोई प्रेमी प्रेमास्पद को अप्राप्य समझ लेता है, तो वह जीवन का आनन्द खो देता है और फिर प्रेम-पात्र को विस्मरण करने की चेष्टा करता है, किंतु रहता है वह सदैव असफल ही। प्रेमास्पद के वियोग में प्रेमी उसको अनेक वस्तुओं में देखता है और अपनी सरस रागात्मक अनुभूतियों को नाना रूपों में (रंग, शब्द, अश्रु, मूर्ति) चित्रित करता है। प्रेम और घृणा के अतिरेक में मनुष्य संसार से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लेता है। और साधु-सन्यासी (निरीह) तक बन जाता है एवं कभी-कभी प्रिय-पात्र के लिये मर मिट भी जाता है।

प्रेम में एक बात यह बड़ी विचित्र अद्भुत होती है कि इसमें जीवन की समस्त शक्तियां केन्द्रीभूत हो जाती हैं। केन्द्रीभूत शक्तियां संसार में आश्चर्यजनक घटनाओं का सर्जन कर सकती हैं और उनसे चमत्कारिक फल भी उत्पन्न हो सकते हैं। कभी कभी प्रेमी अपने प्रियतम के लिये—उसके सुख और कल्याण के लिये, बड़े-बड़े बलिदान भी करते देखे गये हैं। यहां तक कि प्रेमी अपनी महत् आशा-आकांक्षाओं का भी त्याग कर देते हैं—ऐसे ही त्याग को सच्चा प्रेम कहा जा सकता है। प्रेम का स्वार्थी दृष्टिकोण मोह होता है, अतः वह दुखदायी होता है। मोह और प्रेम में बड़ा अन्तर है, अतः समय आने पर मोह (झूठा प्रेम) कभी टिक भी नहीं सकता।

सीरिया व लेबनान का भूत तथा वर्तमान

(पृष्ठ ८ का शेष)

राजनैतिक समस्या

अल्पसंख्यकों के कारण साम्प्रदायिक स्थिति की विशेष रूप से जांच की जाती है। फ्रांस का सर्वत्र विरोध किया जाता है। दोनों देश अरब लीग के सदस्य हैं। फिलस्तीन के शरणार्थियों के प्रति उनका रुख सहानुभूति का है।

सीरी नाईट्स दल अरबलीग को एकांगी संस्था मानता है। शाह अब्दुल्ला की बृहत्तर सीरिया योजना एक भूतकाल की वस्तु है। ईराक व सीरिया के संगठन की सम्भावना भी समाप्त हो गई है क्योंकि फ्रांस वाले अब भी उसका आन्तरिक रूप में विरोध करते हैं।

एक बात अवश्य है कि कोई भी दल अब विदेशी सत्ता का अधिकार नहीं चाहता है। १९४८ में दोनों देशों ने इजराईल के नवीन राष्ट्र पर आक्रमण किया, परन्तु उन्हें हारकर पीछे हटना पड़ा। मध्य पूर्व के देशों में सीरिया व ईराक दो ही एस देश हैं जिन्होंने सदैव ही संयुक्त राष्ट्र संघ की सत्ता का विरोध किया हैं।

समाचार पत्र व शिक्षा

सीरिया व लेबनान की राजधानी में समाचार पत्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन पत्रों ने सदैव ही राष्ट्रीय भावना का आदर किया है। पत्रों की स्थिति इस प्रकार है —

	दैनिक पत्र	प्रकाशन संख्या
सीरिया	७	२० हजार
लेबनान	८	१९ हजार

इसके अतिरिक्त कुछ साप्ताहिक पत्र भी प्रकाशित होते हैं। कुछ समाचार पत्रों का प्रकाशन कभी कभी राजनैतिक विरोध के कारण स्थगित करना पड़ता है।

शिक्षा का प्रबन्ध दोनों देशों में अत्यन्त पिछड़ी दशा में है, वहां पर तीन प्रकार की पाठशालायें प्रचलित हैं।

१ सरकारी पाठशालायें— इनका प्रबन्ध मन्त्री के हाथ में होता है।

२ विदेशी पाठशालायें— इनका संचालन मिशन द्वारा किया जाता है।

३ धार्मिक पाठशालायें।

स्वतन्त्रता के पश्चात् ही सरकार ने अपनी निजी पाठशालायें खोलनी आरम्भ करदी है। क्योंकि उसके विचार में मिशन द्वारा नियंत्रित पाठशालाओं में विदेशी शिक्षा का प्रमुत्व है।

१९४९ ५० में दोनों देशों में पाठशालाओं की संख्या इस प्रकार थी।

	प्रारम्भिक पाठशालायें	विद्यार्थी
सीरिया	११६९	१६३,६२६
लेबनान	१८००	१०१,२१०

इसके अतिरिक्त सीरिया में उच्च शिक्षा के लिये ८८ कालिज हैं व एक विश्व विद्यालय है। लेबनान में दो विश्वविद्यालय हैं।

आर्थिक समस्या

दोनों देश कृषि पर निर्भर हैं। स्थानीय उद्योग दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहे हैं। मुद्रा स्थिर नहीं है। औद्योगीकरण में सबसे बड़ी बाधा कच्चे माल की है। देशों में खनिज पदार्थ नहीं के बराबर पाये जाते हैं। देश में कीमतें बहुत ऊंची हैं। तेल निकालने के लिए २३ मार्च १९४८ को सीरियन पैट्रोल कम्पनी को अनुमति दी गई, परन्तु युद्ध के कारण कार्य बन्द करना पड़ा। अब फिर उसे चालू किया गया है। सादरीया से अबादान तक तेल लाईन बनाने की योजना है।

सीरिया को सैनिक विद्रोहों की पाठशाला कहा जाय तो अति उत्तम होगा। गत ३ वर्षों में वहां पर तीन बार सैनिक विद्रोह हो चुके हैं। अभी हाल में मध्यपूर्व के देशों में हत्याओं की लहर दौड़ रहा है। सीरिया भी इससे अछूता नहीं रहा है। वहां भूतपूर्व प्रधान मन्त्री की भी हत्या करदी गई हैं। हजारों कर्मचारियों के हड़ताल करने के कारण देश का दैनिक जीवन छिन्न भिन्न होगया है। स्वयं प्रधान मन्त्री भी विश्वास प्राप्त न हो सकने के कारण दुविधा में हैं।

इन प्रदेशों में होने वाली घटनाओं को पश्चिमी संसार बड़ी गम्भीरता पूर्वक विचार कर रहा है। एक महत्वपूर्ण प्रदेश के कारण अमेरिका की आंखें भी इसी तरफ लगी हुई हैं। यदि देश की आन्तरिक स्थिति न सुधरी तो उस पर अवश्य विदेशी शक्ति का अधिकार हो जायेगा।

योगिराज श्री अरविन्द तथा उनका दर्शन

[पृष्ठ १२ का शेष]

अध्यात्म

साधारण जगत् मानसिक स्तर पर कार्य करता है। किन्तु सीमा यहीं तक नहीं है। इसके अतिरिक्त दो स्तर और हैं, एक इस मानसिक स्तर से नीचे और दूसरा इससे ऊपर। मानसिक स्तर से नीचे का स्तर अविभूत का है और जड़ता इसका विशिष्ट गुण है। किन्तु मन के परे का स्तर अध्यात्म का क्षेत्र है, चैतन्य इसका विशेषता है।

समस्त सृष्टि या तो इस मानसिक स्तर पर आचरण करती है, अथवा इससे निम्न स्तर पर। किन्तु सृष्टि की नियन्ता शक्ति तो मानसिक स्तर से ऊपर है। उससे साक्षात्कार करने के लिए तो मानव व्यापार के परे जाना पड़ेगा। तभी उसे समझ सकते हैं। मन की सीमा से बाहर होने के कारण मन की चेष्टा से उसे समझ पाना सम्भव नहीं।

मानस से परे

साधारण जगत् के व्यवहार जिस चेतना के आधार पर चलते हैं, उसमें द्वैत का भाव सम्मिलित है। मन तथा बुद्धि के प्रयोग से किसी को समझने की चेष्टा में ज्ञाता और ज्ञेय दोनों का भाव रहता है। किन्तु ज्ञाता तथा ज्ञेय की प्रथक स्थिति में ज्ञेय के सम्पूर्ण रहस्य ज्ञाता के सम्मुख उपस्थित नहीं हो पाते। वह तो इस द्वैत से परे जाकर एक होने पर ही सम्भव है। वह स्थिति साधारण चेतना द्वारा सम्भव नहीं, क्योंकि साधारण चेतना तो ज्ञाता और ज्ञेय को भिन्न-भिन्न देखती है। इसके लिए मानसिक स्तर से ऊपर आध्यात्मिक चेतना आवश्यक है।

एकात्मता

क्लिष्ट विषय को समझने के लिए एक उदाहरण लें। संगीत का सर्वाधिक आनन्द तभी प्राप्त होता है, जब व्यक्ति अपने अस्तित्व को भूल कर वायुमण्डल में गूंजती हुई स्वर लहरियों में खो जाता है। यह आनन्द अनिर्वचनीय है, क्योंकि वाणी उस स्थिति पर रहती ही नहीं। इसी प्रकार सृष्टि के रहस्य को समझने के लिए उस मन से परे की स्थिति पर पहुँचना आवश्यक होता है, जहां साधक अपने आपको भूल कर साध्य से एक हो जावे। उस स्थिति का अनुभव और आनन्द भी उसी प्रकार अनिर्वचनीय है। अन्तर इतना ही है कि संगीत की स्वरमाधुरी व्यक्ति की कर्णेन्द्रिय के द्वारा मन को अपनी ओर खींच लेती है, जबकि जीवन में यह आध्यात्मिक स्तर प्राप्त करने के लिए साधक को आत्मा के संकल्प का सहारा लेकर आगे बढ़ना पड़ता है।

सर्वाङ्गीण विकास

श्री अरविन्द का यह योग आत्मा की खोज में, शरीर की उपेक्षा नहीं सिखाता अपितु शरीर को स्वस्थ अवस्था में बनाये रखना आवश्यक मानता है। इसी दृष्टि से यह सामाजिक जीवन में अर्थ की उपेक्षा नहीं करता। यह जीवन के सर्वाङ्गीण विकास को लेकर चलता है।

जन सम्पर्क

श्री अरविन्द अपने जीवन काल में वर्ष में केवल चार बार प्रकट होते थे। उन अवसरों पर देश विदेश से आये हुए उनके सहस्रों अनुयायी तथा भक्त पाण्डिचेरी में अरविन्द आश्रम में एकत्रित हो जाते थे।

"माताजी" के साथ श्री अरविन्द उन्हें दर्शन देते थे। भक्त लोग पंक्तिबद्ध होकर उनके सामने से निकलते जाते थे। इन चार अवसरों के अतिरिक्त श्री अरविन्द बहुत ही कम अवसरों पर बाहर आते थे। उनके अनुसार वे इस संसार में "उच्चतर चेतना" जगाने का कार्य कर रहे थे, और उन्हें विश्वास था कि शीघ्र ही वह जागरण आने वाला है।

कर्त्तव्य

कैसा अद्भुत संयोग है कि भारत के स्वतन्त्रता-प्राप्ति-दिवस तथा श्री अरविन्द के जन्म दिवस दोनों की तिथियां एक ही हैं। दोनों ही प्रतिवर्ष १५ अगस्त को आते हैं। श्री अरविन्द का भौतिक स्वरूप तो नहीं रहा किन्तु उनका आध्यात्मिक स्वरूप आज भी हमारे समक्ष है। भारत के इस पुत्र के चरणों में समस्त संसार के विद्वानों ने अपना माथा नवाया है। उनकी स्मृति में एक विश्वविद्यालय निर्माण करने का उद्योग चल रहा है। इससे अच्छा स्मारक और क्या हो सकता है। किन्तु इससे भी पूर्व यह आवश्यक है कि योगिराज अरविन्द की लीलाभूमि पाण्डिचेरी विदेशी चंगुल से मुक्त हो।

[पृष्ठ ७ का शेष]

इस खोए भू-भाग को वापस लेने का कोई यत्न नहीं किया गया। १६४१ में रेलवे मन्त्री श्री गोपालस्वामी आयंगर जब आसाम में आए थे तब वे कावकी इलाके में भी पत्रकारों के साथ गए थे। जाँच के बाद उनको विश्वास हो गया था कि पाकिस्तान द्वारा भारतीय प्रदेश का भाग हड़प लिया गया है। परन्तु उसको वापस पाने के लिए सरकार की ओर से कोई प्रयत्न नहीं किया गया।

यही नहीं खासी जयन्तिया पहाड़ियों के सीमा क्षेत्र में विशेषता बारचेरा कोबरी के समीप पाकिस्तान द्वारा भारतीय प्रदेश के भाग को हड़पने का बार-बार प्रयत्न किया गया है। आसामी जनता हृदय से वेदना के साथ अनुभव करती है कि सरकार की लापरवाही ढिलमुल नीति और अनिश्चयात्मक वृत्ति के कारण आसाम का खनिज पदार्थों और खेती की दृष्टि से समृद्ध और वन्द सम्पत्ति से पूर्ण बहुत सा भाग पाकिस्तान के अधिकार में चला गया है। इसको फिर वापस पाने के लिए अभी तक कोई यत्न नहीं किया गया है। वह न केवल इनको वापस चाहता है, बल्कि यह भी चाहता है कि पाकिस्तान के सशस्त्र हमले से उसकी रक्षा की जाय।

भारत सरकार को इधर कुछ अधिक ध्यान देना चाहिए। पूर्वीय सीमान्त के महत्व को कम न करना चाहिये। साथ ही उसको यह भी समझना चाहिये कि शान्ति स्थापना और मैत्री की कुंजी कमजोरी और निर्बलता नहीं। राख पर से हरेक व्यक्ति गुजर जाता है। पर दहकते अंगारों पर से कोई नहीं गुजरता। गर्मियों में सूखी नदियों को बच्चे भी पार कर लेने का साहस करते हैं। परन्तु वास्तव में भरी नदी को बड़े तैराक भी पार करने का साहस करते हुए हिचकते हैं।

क्या भारत सरकार इस सत्य को समय रहते समझेगी और इसके अनुसार कार्य करेगी ?

बाल बन्धुओं से

प्रिय बन्धुओं,

पिछले सप्ताह के अंक में बालबन्धु परिषद् का सदस्यतापत्र प्रकाशित हुआ था, जिसको अनेक उत्साही बालबन्धुओं ने भर कर भेजा है तथा साथ ही रचनायें भी भेजी हैं। जिनकी रचनायें इस बार नहीं छप सकी उन्हें निराश नहीं होना चाहिये। उन्हें फिर से प्रयत्न करना चाहिये। अगली बार उनकी रचनायें छप सकेंगी ऐसी आशा है।

हां, बच्चो एक बात का ध्यान और रखना कि सदस्यतापत्र इस पृष्ठ पर छपे हुए फार्म पर ही भेजना चाहिये। अपने हाथ से सदस्यतापत्र बनाने की आवश्यकता नहीं है। संरक्षक के स्थान पर अपने पिता या संरक्षक का पूरा नाम लिखना चाहिये, केवल 'पिताजी' या 'भाई साहब' लिखना काफी नहीं है। और क्रमसंख्या का स्थान खाली छोड़ देना चाहिये, वह कार्यालय में भरी जायगी तथा सदस्यों को 'अर्जुन' उसकी सूचना दे दी जायगी।

नये सदस्य इन सब बातों का सावधानीपूर्वक पालन करेंगे, तथा शीघ्र ही अपनी रचनायें हमें भेजेंगे ऐसी आशा है।

—श्याम भय्या

सूचना

१७ अगस्त को रक्षाबन्धन का महान पर्व है। इस उपलक्ष में १९ अगस्त के अंक में इस पृष्ठ पर रक्षाबन्धन पर विशेष प्रकाश डाला जायगा सभी बालकों को इस विषय पर अपनी रचनायें शीघ्र भेजनी चाहियें।

— यहां से काटो

सदस्यता-पत्र

नाम ………………………………

आयु ……

संरक्षक …

पूरा पता

क्र संख्या (……) तिथि १-८-५१

महापुरुषों का बचपन

श्रावण शुक्ला सप्तमी (६ अगस्त) को हिन्दी के प्रमुख कवि तुलसीदास की जयन्ती मनाई गई थी। हमारे बालबन्धुओं को भी तुलसी से परिचय पाने की इच्छा होगी अतः यहां महाकवि का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

गोस्वामी तुलसीदास का जन्म सं० १५८९ में राजपुर ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। ऐसा कहते हैं कि गोस्वामी जी जब उत्पन्न हुए तो पांच वर्ष के बालक के समान थे और उनके मुख में पूरे दांत थे। पैदा होते ही वे रोए नहीं केवल उनके मुख से 'राम' शब्द निकला। इस घटना से बालक के पिता ने उन्हें राक्षस समझा और छोड़ना चाहा परन्तु माता ने स्नेहवश उसे अपनी एक दासी मुनिया को पालने पोसने के लिए दे दिया। मुनिया की मृत्यु के समय तुलसी की अवस्था केवल ५ वर्ष की थी। उस समय बाबा नरहरिदास ने उसे अपने पास रख लिया और शिक्षा दीक्षा दी। इनके साथ एक बार गोस्वामी जी काशी आए और वहां पंचगंगा घाट पर रामानन्द जी के पास रहने लगे। वहीं पर इन्होंने अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया और विद्वान हो बचपन में इस प्रकार माता पिता से तिरस्कृत तथा इधर उधर घूमने वाले इस बालक ने बड़े हो कर अमर महाकाव्य 'रामचरितमानस' की रचना की। ऐसा कहा जाता है कि विपत्तियां आने पर मनुष्य के गुण चमक उठते हैं। तुलसी के साथ भी ऐसा ही हुआ। तुलसी के बाल्यकाल से हमें संदेश मिलता है कि विपत्तियों से घबराना नहीं चाहिए।

बन्धुओं! तुम भी बड़े हो कर तुलसी के समान अपने देश व समाज का गौरव बढ़ाओगे, तथा मातृभाषा हिन्दी के साहित्य-कोष को अनेक अमूल्य रत्नों से भर देंगे ऐसी आशा है।

क्या तुम जानते हो

● अजगर की उम्र १०,००० वर्ष की भी होती है।

● सूर्य में सात रंग होते हैं।

कर्णधारों से

लेखक (रामनिवास जाजू)

राजभवन की आजादी को, झोंपड़ियों में भी आने दो।
महापर्व के महात्म्य को, आज मुझे घर घर गाने दो॥

★ ★ ★

उमड़ा था स्वदेश का प्यार,
किसी के अन्तर में अनजान।
कि जिसने दे सीने का खून,
किया संचारित नूतन प्राण।

★ ★ ★

प्राण में था खेतों का रंग,
और थी खलिहानों की तान।
तान में थे भावी के चित्र,
कि जिसमें होगा स्वर्ण विहान।

★ ★ ★

किन्तु क्यों निशा निगलती रही
अनेकों अब तक शुभ्र प्रभात।
कि जिसके कारण हुए निराश,
नहीं है आशा भी अब साथ।

★ ★ ★

किन्तु अब आशा का प्रतिबिम्ब,
पर्व क्यों कृत्रिम आशा लाता।
जो बनना था साकार स्वप्न,
अब फिर भी स्वप्न दिखाता।

★ ★ ★

पर ओ! सपने बन जाने वालो —
अब मंजिल के मदिरालय में, हमें न रोको बढ़ जाने दो।
राजभवन की आजादी को, झोंपड़ियों में भी आने दो॥

★ ★ ★

राष्ट्र पर आये जो तूफान,
मानना, वे थे अशुभ निशान।
किन्तु जब आया था विश्राम,
बने थे तुम ही तो मेहमान।

★ ★ ★

मिलाकर आश्वासन का घूंट,
सदा सहलाया तुमने घाव।
लिये कुछ नई योजना कर में,
तुमने सोचा, मिटे अभाव।

★ ★ ★

किन्तु क्या इसी दशा में रहकर,
तुम पा लोगे वह उद्यान।
कि जिसमें विविध खिलेंगे फूल,
मिलेगी सौरभ किन्तु समान।

★ ★ ★

अरे बस यह तो थोथी मूठ,
करेगी कब तक रक्षा बोलो।
अपने ही अतीत से साथी,
अपने वर्तमान को तोलो।

★ ★ ★

यही स्वदेशी सत्य समझ लो —
आज राष्ट्र के महापर्व, पर सिंहासन को तप जाने दो।
राजभवन की आजादी को, झोंपड़ियों में भी आने दो॥

★

[पृष्ठ ४ का शेष]

के सदस्य श्री किदवई तथा श्री जैन द्वारा मंत्रिमंडल से त्यागपत्र देने तथा बाद में वापिस ले लेने के कारण जो दलीय वाद-विवाद चल रहा था, तथा जो वैधानिक मतभेद उत्पन्न हो गये थे, वे किदवई द्वारा पुन: त्यागपत्र दे देने के कारण समाप्त होते जा रहे थे। किन्तु कुछ क्षेत्रों में श्री जैन के मंत्रिमंडल में रहने पर भी आपत्ति उठाई जा रही है। उत्तर प्रदेश की कांग्रेस कमेटी ने मांग की है कि जिन व्यक्तियों ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया है, उन्हें विधान-मण्डलों से भी त्यागपत्र दे देना चाहिये। साथ ही कांग्रेस कमेटी श्री किदवई और श्री जैन के एक सम्मिलित वक्तव्य पर भी आपत्ति उठाई है। इस प्रकार श्री जैन का संसद् तथा मंत्रिमंडल में अधिक समय तक बना रहना सम्भव नहीं प्रतीत होता।

दिल्ली साप्ताहिक वायदा बाजार

[ले० — श्री ब्रह्मानन्द भरथिया]

८ अगस्त बुधवार को समाप्त सप्ताह के दैनिक भाव निम्न हैं:—

चांदी टुकड़ा चेम्बर सावन डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
बृहस्पति	१९०॥)	१९२।≡)	१९०।≡)	१९२=)
शुक्र	१९१॥।-)	१९२।=)	१९१)	१९२≡)
शनि	१९२।)	१९२॥)	१९०)	१९०=)
सोम	१९०)	१९०॥)	१८९)	१८९॥=)
मंगल	१८९।॥)	१९०।=)	१८९॥)	१९०।)
बुध	१९१=)	१९२≡)	१९०॥-)	१९१।)

गवार माघ डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
बृहस्पति	१२॥)॥	१२॥।)	१२।≡)॥	१२॥≡)
शुक्र	१२।≡)॥।	१२॥-)	१२।)।	१२।=)॥।=
शनि	१२।-)	१२॥)॥।	१२)॥	१२-)
सोम	१२≡)।	१२।)।=	११॥≡)	१२)
मंगल	१२)॥	१२।-)।	१२)	१२।)॥
बुध	१२।-)॥	१२।≡)	१२।)।=	१२≡)॥

मटर भादवा डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
बृहस्पति	१६॥≡)।	१७=)।	१६॥-)॥	१७)।
शुक्र	१६॥=)॥	१६॥≡)।	१६॥-)।	१६॥-)॥।
शनि	१६॥=)॥।	१६॥≡)=	१६॥)	१६॥)॥
सोम	१६॥)।	१६॥=)॥	१६≡)	१६॥।)॥
मंगल	१६॥-)।	१६॥-)	१६।≡)	१६।॥)॥
बुध	१७)	१७-)	१६॥।)॥	१६॥।)॥

विचार और सलाह

इस सप्ताह तैयारी चांदी की मांग कमजोर रही। आमद का जोर रहा। अब बम्बई में मन्दड़िया गिरोह की तरह तेजड़िया गिरोह भी बन गया है। इस प्रकार लिवाल और बिकवाल का जोर बंधता जा रहा है।

इधर राजनैतिक स्थिति में लोगों को यह विश्वास होता जाता है कि अभी निकट भविष्य में भारत-पाकिस्तान युद्ध न होगा। परन्तु व्यापारी वर्ग युद्ध अवश्यम्भावी समझता है।

सलाह

चार दिन से बाजार १९२॥) और १८९) के बीच घूम रहा है। अतः केवल १) सैकड़े की नुकसान की लिमिट रख कर १८९) के आसरे खरीदना और १९२॥) के आसरे बेचना अच्छा है। साथ ही जिस ओर बाजार इन दोनों भावों में से किसी को तोड़े तो उसी ओर बाजार के साथ चलना अच्छा है।

गवार और मटर बाजार

इस सप्ताह गवार और मटर का रुख काफी ढीला रहा। सब जगह वर्षा हो जाने और सीमा पर फौजों की तैनाती के कारण पंजाब वाले गवार के बिकवाले रहते हैं। साथ ही यू० पी० की मंडियों में ऊंचे भावों में तैयार मटर का ग्राहक भी नहीं आता है। परन्तु सटोरियों ने बाजार को ताना हुआ है। भारत में अन्न स्थिति धीरे-धीरे सुधरती रहने के कारण खाद्यान्नों के भाव भी थोड़े बहुत ढीले हैं। सरकार खाद्यान्नों के भाव गिराने में तुली हुई है।

सलाह

गवार दो तीन सप्ताह पूर्व के ऊंचे भाव १२॥=)। को ≡) मन से ऊपर की ओर नहीं काट सकता है। अतः गवार और मटर क्रमशः जब तक १२॥) और १७=)। से नीचे रहें, नीचे का रुख अन्य था, ऊपर का रुख समझना चाहिये।

[पृष्ठ ५ का शेष]

ईरान में अमरीकी राजदूत का पद संभालेंगे। श्री हैंडरसन को ईरान में नियुक्ति का कारण उनका मध्यपूर्व की समस्या से पूर्णतया जानकर होना बताया जाता है। न्यूयार्क में इस समय श्री हैंडरसन के उत्तराधिकारी के प्रश्न पर गम्भीरता से विचार हो रहा है। क्योंकि अमेरिका—दिल्ली में अमेरिकन राजदूत की नियुक्ति के कार्य को सर्वाधिक महत्वपूर्ण समझता है। कुछ क्षेत्रों में चर्चा है कि सम्भवतः श्री चैस्टर बोल्टे नई दिल्ली में अमेरिका के राजदूत नियुक्त होंगे।

रजि० नं० ई० पी० ५६१

प० दुर्गाप्रसाद शर्मा, मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिए अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, देहली में छपवाकर प्रकाशित किया।
सम्पादक—केशवदेव शर्मा

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

४ आना

महाभारत के महानायक

जीवन और मनोविज्ञान

व्यावसायिक चुनाव में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

श्री रामचरण महेन्द्र

आप जब अपनी जीविका का प्रश्न हल करने के लिए अपने वास्ते एक पेशे का चुनाव करने निकलें, तो आपको कई आवश्यक तत्व स्मरण रखने होंगे। प्रत्येक पेशे के साथ मनुष्य-समाज की सद्भावनायें या दुर्भावनाएं जुड़ी हुई हैं। ये सद्भावनाएं या दुर्भावनाएं पेशेवर लोगों की 'मानसिक विद्युत' के चमत्कारों के फल हैं। मन जैसी इच्छा करता है, जैसे कार्य और कल्पनाएं रखता है, वैसे ही मानसिक चित्र उसके अन्त पटल पर अंकित होते हैं और इन्हीं से 'मानसिक विद्युत' उत्पन्न होती है। यह बिजली अच्छी या बुरी होती है। वैयक्तिक रूप से यह आस-पास वालों, समूचे वातावरण तथा समाज पर प्रभाव डाला करती है। प्रत्येक वस्तु पर गुप्त रूप से मानव-संस्कारों का प्रभाव पड़ता है और यह 'विद्युत' जड़ पदार्थों में भी बल का संचार करती है। मकानों तक में वहां के रहने वालों की इच्छाएं और भावनाएं घुस जाती हैं। भले विचारों से परिपूर्ण मकान में प्रवेश करते ही एक प्रकार की शांति और शीतलता का अनुभव होने लगता है। जिन स्थानों पर बुरे विचारों के मनुष्य रहते हैं, वहां जाकर अपने आप उनमें रहने वाली गुप्त मानवीय तरंगों का असर होने लगता है। जिन स्थानों पर दुराचारी लोग रहते हों, या जहां कत्ल, भ्रूण हत्यायें, गन्दे, वीभत्स और जघन्य कार्य हुए हों, उन घरों की ईंट-ईंट से दुःख, भय, शंका, उद्वेग इत्यादि मनोविकारों का प्रादुर्भाव होता है, उग्र मानसिक अनुभूतियां जल्दी ही मरती नहीं, बल्कि स्थानों, व्यक्तियों तथा वातावरण में मंडराती रहती हैं।

विचारों की विद्युत

मनुष्य के विचारों, भावनाओं तथा आन्तरिक संस्कारों की बिजली प्रतिक्षण उठती रहती हैं। विचार केवल शब्द नहीं, वरन् मूर्तिमान पदार्थ हैं, जिन्हें वैज्ञानिक यन्त्रों की सहायता से प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। विचारों के चित्र भी लिये जाने लगे हैं। अमरिका में ऐसे सूक्ष्मदर्शी कैमरे बनाये गये हैं जो विचारों के चित्र स्पष्ट रूप से खींच लेते हैं। विचार हर घड़ी हमारे मन में से निकल कर सूक्ष्म तरंगों के रूप में बाहर उठते रहते हैं। यह विद्युत पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के समान है। विचारों का मानसिक विद्युत् ब्रह्माण्ड में व्याप्त ईथर-तत्व में उठती है।

एक खास पेशे वाले व्यक्ति एक विशेष प्रकार के विचार और सम्बन्ध रखते हैं। इन विचारों का सामूहिक प्रभाव समाज पर पड़ता है। उन्हीं के अनुसार समाज पेशेवर लोगों के विषय में अच्छी या बुरी धारणायें बनाता है। कई महापुरुष संसार की भलाई वाले विचारों में प्रवृत्त रहते हैं और उच्चकोटि की पवित्र विचारधारा संसार में प्रवाहित करते हैं, तदनुसार जनता को इतना लाभ पहुंचता है कि संसार हजारों वर्षों तक उन्हें स्मरण रखता है। महात्मा गांधी को अपनी विचारधारा के कारण प्रेम दया परोपकार, सत्य, सहानुभूति के विचारों को फैलाने में पर्याप्त सफलता मिली। संसार के महापुरुष मानस-रेडियो से सदा अपनी विचारधारा वातावरण में फैंका करते हैं।

पेशे का चुनाव और मनोभाव

अपने पेशे का चुनाव करते समय यह देखिये कि समाज में उसके लिए कैसे मनोभाव हैं, उसका समाज में कैसा आदर है, दूसरे लोगों की उसके प्रति कैसी भावनाएं हैं, समाज उस पेशे को आदर की दृष्टि से देखता है, या निकृष्ट समझता है, जनसाधारण ने उसके विषय में क्या धारणा बना रखी है।

हमारा व्यक्तिगत अनुभव है कि संसार में पेशे अधिक फूलते-फलते हैं, जिनके साथ समाज की सहानुभूति, आदर, प्रेम प्रतिष्ठा और सेवा का भाव मिश्रित रहता है। इसके विपरीत वे पेशे अधिक नहीं फलते-फूलते, जिनमें हमें दूसरों का हृदय दुखाना पड़ता है, समाज के साथ दमन अनीति, निर्दयता अमानुषिकता या सताये देने का अप्रिय कार्य करना पड़ता है। इनसे दूसरों की 'हाय' निकलती है। जब मुर्दा खाल की श्वास से लोहा तक भस्म हो जाता है, फिर जीवित प्राणियों के दुःखी हृदयों से निकली हुई हाय, सिसक, रोदन, शाप या हाहाकार से क्या कुछ नहीं हो सकता?

कुछ अप्रिय पेशे

हमारे एक मित्र जेलर हैं—ब्राह्मण, प्रतिष्ठित, सुयोग्य एवं अनुभवी। गत १९२० वर्ष से जेल के अध्यक्ष हैं। कैदी उनके नाम मात्र से कांपते हैं, उनकी आवाज और गाली सुनते ही सहम उठते हैं सब पर आतंक छाया रहता है। समाज में सफल गिने जाते हैं, किन्तु गृहस्थ जीवन में शायद सबसे दुःखी हैं। यौवन ही में चार पुत्रियां छोड़ कर धर्मपत्नी विदा हो गई, अपना स्वास्थ्य खराब हो गया, बीमार रहते हैं। पुत्र हुए, किन्तु मर गये। आये दिन कुछ न कुछ विपत्ति चली आती है। बड़े भाई साहब का देहान्त हो गया और उनकी भी सम्पूर्ण गृहस्थी का भार इन पर आ पड़ा। एक विवाहित पुत्री का स्वर्गवास हो गया, अब स्वयं भी लकवे से परेशान हैं। जहां तक हम समझते हैं, इन सभी दुःखों का कारण कैदियों की मूक आहें हैं। उनका कोसना, बद्दुआयें, गालियां देना, अशुभ वाणी का उच्चारण—इन सभी बातों का अदृश्य प्रभाव हमारे इन मित्र के जीवन पर कल्पित रूप से पड़ा है।

हमारे एक और मित्र थानेदार हैं। थानेदार साहब खूब मोटे ताजे और काफी मालदार हैं, किन्तु लोगों की सद्भावनाएं उनके साथ नहीं हैं। यद्यपि वे रिश्वत नहीं लेते, किन्तु प्रत्येक व्यक्ति यही समझता है कि ये रिश्वत, झूठ, अन्याय का पैसा खाते होंगे। कुछ ही दिन हुए उनके यहां चोरी हुई। उनकी युवती पत्नी, दो पुत्र और तीन पुत्रियां छोड़ कर चल बसी। घर में कोई न रहा तो बड़े पुत्र का विवाह किया। विवाह के लिए गये, तो वापस आने पर पता चला कि पीछे माताजी का स्वर्गवास हो गया है। उन्हें अब घर सूना प्रतीत होता है।

इसी प्रकार हम अनेक उदाहरण दे सकते हैं। पुलिस की ज्यादती, समाज और जनता के साथ पुलिस वालों का दुर्व्यवहार सब कोई जानता है। इसी प्रकार डाक्टर को अशुभ समझा जाता है। डाक्टर मरे हुए रोगी की परवाह न कर अपनी फीस की परवाह करता है। उसे अपने पैसे ही से मतलब रहता है। चाहे चिकित्सा वह कर सके या न कर सके, उसे जनता को मूर्ख बना धोखे में डालना आता है। वकीलों का पेशा झूठ और तर्क पर अवलम्बित है। मवक्किल से अधिक से अधिक रुपया खींचना, मुकदमेबाजी के लिए उकसाना, व्यर्थ का झूठा वितण्डावाद खड़ा करना, फैशन-परस्ती फैलाना, इन सभी का नाम वकालत है। वेश्या तथा वकील, इन दोनों का ही पेशा झूठ, स्वार्थ, छल कपट, बेईमानी धोखेबाजी पर अवलम्बित है। पग पग पर इन्हें आत्म स्वतन्त्रता अन्तरात्मा, सत्यता का हनन करना पड़ता है। इन

(शेष पृष्ठ १६ पर)

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार १२ भाद्रपद सम्वत् २००८ [अङ्क १८

विचार-प्रकाशन की स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
और जब तक हमारे संविधान में इसकी गारण्टी नहीं कर दी जायगी,
हम तब तक चैन नहीं लेंगे।

भगवान श्रीकृष्ण

भारत की उर्वरा भूमि सदा ही महात्माओं और महापुरुषों को प्रसव करने में अग्रणी रही है, किन्तु भगवान् श्रीकृष्ण को जन्म देकर तो वह स्वयं ही धन्य हो गयी। भगवान् कृष्ण का व्यक्तित्व इतना व्यापक, विशाल तथा गम्भीर है कि उन्हें अब तक के महापुरुषों में अद्वितीय कहा जा सकता है। केवल भगवान् रामचन्द्र का ही व्यक्तित्व उनकी तुलना में खड़ा हो सकता है। किन्तु कई विशेषताओं में तो वे भगवान रामचन्द्र को भी पीछे छोड़ जाते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण की ऐतिहासिकता में कुछ क्षेत्र सन्देह करते हैं किन्तु अब इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं कि श्रीकृष्ण ने भौतिक रूप में इसी भारत भूमि मे जन्म लिया, एक महान तत्वदर्शी अन्वेषक की भांति अपने समय की सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों का अवलोकन कर एक युगपुरुष की भांति समाज को अपने पीछे लगाया तथा उसे एक सूक्ष्म व्यावहारिक जीवन दृष्टि प्रदान की, जिसको लेकर युग-युगान्तर तक समाज में एक आत्मविश्वास और दृढ़ता की भावना बनी रही।

भारतीय जीवन पर कृष्ण का इतना दूर व्यापी प्रभाव पड़ा है कि कभी कभी कृष्ण की मानवीयता पर सन्देह होने लगता है और उनको दैवी शक्ति अथवा स्वयं परमेश्वर ही मानकर सन्तोष कर लेना पड़ता है। कभी कभी विचार उठता है कि भारत भूमि में समय समय पर कृष्ण नाम के अनेक व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने समाज को संजीवनी शक्ति प्रदान की। किन्तु ऐतिहासिक तथ्यों ने कृष्ण के जीवनकाल तथा उनके महान कार्यों के सम्बन्ध में कोई सन्देह अथवा असाधारणता नहीं रहने दी है। इस दृष्टि से कृष्ण ने हमारे ही समान मानव जीवन ग्रहण किया और अपने अलौकिक कार्यों से अपने जीवन में ही पूर्णता प्राप्त की।

भारतीय वेदान्त दर्शन के अनुसार विश्व में एक अनन्त, अविनाशी तथा पूर्ण-शक्ति विद्यमान है। भौतिक संसार के समस्त जड़ और चेतन पदार्थ उसी महान् शक्ति द्वारा परिचालित हैं तथा अलग अलग शरीर धारण किये हुये दिखाई देने वाले प्रत्येक जीवधारी मानव में भी उसी की प्रतिच्छवि दृष्टिगोचर होती है। लौकिक जगत के अनुभवों को ही प्राप्त कर सकने के कारण इस महान् शक्ति तथा प्रत्येक जीवधारी तथा चेतन में भी उसका प्रतिबिम्ब देख सकने की क्षमता प्रायः हममें नहीं होती। प्रत्येक जीवधारी प्राणी पूर्णता के मार्ग की ओर निरन्तर अग्रसर रहता है और उसकी पूर्णता की चरम सीमा मानवात्मा मे विश्वात्मा का साक्षात्कार कर उसमें एक रूप हो जाना है।

समाज में समय २ पर अवतरित होने वाले युग नेताओं में उस परमशक्ति का अंश अधिकतम मात्रा में होता है। अपितु वे मानवीय पूर्णता के उस उच्चतम शिखर पर पहुँचे होते हैं कि उनकी मानवीयता पर सन्देह होने लगता है। इसी आधार पर हमारे समाज मे युग की महात्माओं को धीरे धीरे अलौकिक आसन पर बिठा देने की परिपाटी सी चल पड़ी है।

कृष्ण भी इसी प्रकार के महापुरुषों में से हैं जिनके भौतिक अथवा सांसारिक जीवन से प्रेरणा प्राप्त करने से अधिक उनको परमेश्वर मानकर पूजने की ओर ही हमने अधिक ध्यान दिया है।

यह ठीक है कि मानव सुलभ भक्ति भावना की परितृप्ति के लिये कोई न कोई आलम्बन आवश्यक है, किन्तु वह आलम्बन पूर्णता के शिखर पर पहुँचने के लिये साधन हो, स्वयं साध्य ही न बन जाये। भावनाओं का प्रवाह मनुष्य को जहां उन्नति की ओर ले जाता है, वहां उसको अपेक्षित मार्ग से दूर भी हटा ले जाता है।

आज की विषम परिस्थितियों मे हम इसी दृष्टि से कृष्ण के जीवन का अवलोकन करें। उनके सूक्ष्म जीवन दर्शन, उनकी राजनैतिक सूझ बूझ तथा उनकी उत्कट देशभक्ति पर विचार करें। भक्तिभाव से उनके स्मरण मात्र से तन्मय हो जाने से हमारी धार्मिक भावनाओं को अवश्य तन्मयता मिलती है, किन्तु आज युग की मांग यही है कि हम कृष्ण के जीवन का समग्र रूप से अवलोकन कर स्फूर्ति ग्रहण करें।

—★—

मध्यभारत में नवीन दल का उदय

देशी राज्यों की विभिन्न छोटी बड़ी इकाइयो मे बद्ध सार्वजनिक जीवन ने उस दिन संतोष की सांस ली जिस दिन मध्य भारत संघ बना था। क्योंकि उस से वहा की जनता ने राजतन्त्र के चंगुल से मुक्त होकर जनतन्त्र की ओर अग्रसर होने का श्रीगणेश किया था। वहां के शासन की बागडोर यद्यपि कांग्रेसी कहे जाने वाले व्यक्तियो के ही हाथ में आई तथापि उनमें से अधिकाश व्यक्ति ऐसे हैं जिन्होने सन् ४२ के आन्दोलन के समय माफी मांग ली थी। यही कारण है कि मध्य भारत की कांग्रेस और सरकार दोनों का ही जनता पर उतना भी प्रभाव नही है जितना कि वहा के पदच्युत महाराजाओं का अब भी है। यह एक कड़वा तथ्य है, किन्तु है सत्य! दूसरे मध्यभारत के कांग्रेसियों, यहां तक कि मन्त्रियो तक ने प्रादेशिक गुटबन्दियों मे सक्रिय भाग लेकर वहां के जीवन को इन्दौर-ग्वालियर की प्रतिद्वन्द्विता में ला पटका है। इससे मध्यभारत की एकता को सांघातिक धक्का लगा है। इसके अतिरिक्त मध्यभारत की जनता कांग्रेसी शासन से ऊबी हुई भी प्रतीत होती है, जिसके गर्भ मे शासन की अयोग्य एवं अनुभव हीन नीतियां हैं। चम्बल बांध योजना पर लाखों रुपये खर्च करने के पश्चात् अब उसका स्थानान्तरण किया जाना इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। ऐसी परिस्थिति में वहां की जनता का कांग्रेस से विमुख हो जाना स्वभाविक है। इसी को लक्ष्य करते हुये पिछले दिनों उत्तरप्रदेश के किसी नेता ने कहा था कि १५ अगस्त को मध्यभारत मे उल्लू बोल रहे थे। अब आगामी चुनाव निकट आ रहे हैं। हिन्दू महासभा केवल दो-तीन जिलों के अतिरिक्त सर्वत्र प्रभावहीन है। समाजवादियों और कम्यूनिस्टों के लिये वहां कोई स्थान नहीं है। ऐसी स्थिति मे प्रांत के प्रमुख नागरिकों द्वारा किसी नये राजनैतिक दल का निर्माण किया जाना स्वभाविक है। प्राप्त समाचारों के आधार पर ज्ञात हुआ है कि शीघ्र ही वहां भारतीय जनसंघ (मध्यभारत) की स्थापना की जाने वाली है। पंजाब की भांति मध्यभारत मे भी यह नवीन राजनैतिक दल जनता की आकांक्षाओं का केन्द्र बने बिना न रहेगा, यह निर्विवाद है।

नेहरू-टण्डन विवाद

नेहरू-टण्डन विवाद ने अब उग्र-रूप धारण कर लिया है। अभी तक नेहरू जी ने तथा उनके साथियों ने टण्डन जी तथा उनके साथियों को समय-असमय मे बदनाम करने की निरन्तर चेष्टा की है जिसका प्रत्युत्तर टण्डन जी तथा उनके साथियो ने या तो मौन रहकर दिया है या इतनी संतुलित भाषा का प्रयोग किया है, जिसको सर्वसाधारण टण्डन जी का आत्म-समर्पण समझते आये हैं। किन्तु अब संभवतया टण्डनजी के साथियो ने नेहरूजी को नेहरूजी की ही भाषा मे उत्तर देने की ठान ली है। मध्यप्रदेश के गृहमन्त्री पं० द्वारिकाप्रसाद जी मिश्र का वक्तव्य इसी प्रकार का है। उन्होने यह कह कर कि पं० नेहरू अपने आपको कांग्रेस से बड़ा समझने लगे हैं, पं० नेहरू पर सीधा वार किया है। यह वार अभूतपूर्व है। ऐसा वार आज तक गैर कांग्रेसी तो करते आये हैं, किन्तु किसी कांग्रेसी ने अब तक नही किया था। इससे प्रतीत होता है कि यदि पंडित नेहरू और उनके साथी अपनी कार्यवाहियो से कांग्रेस को धक्का मार कर चेताना चाहते हैं तो पं० मिश्र ठीक इसके विपरीत पं० नेहरू को उनकी तानाशाही प्रवृत्ति के विरुद्ध एक धक्का देकर जगाना चाहते हैं।

★

चीनी राष्ट्रवादी सेनाओं का बर्मा में जमाव

तेल-वार्ता भंग होने से हलचल

जनरलिस्मो चागकाई शेक

चीन नहीं तो वर्मा ही सही।

चीनी सेनाओं का जमाव

चीनी राष्ट्रवादी सेनाओं ने बर्मा की उत्तर पूर्वी सीमा के साथ और चीनी युन्नान प्रान्त के किन्हीं दक्षिण पश्चिमी क्षेत्रों के तटस्थ प्रदेश में अपनी छावनी डाल ली है।

यहा प्राप्त सूचनाओं के अनुसार च्यांगकाई शेक के अब शिष्ट राष्ट्रवादी सैनिक युन्नास्थित अन्य राष्ट्रवादी सैनिकों से मिलने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे बर्मा की लम्बी सीमा को पार कर युन्नान में घुस गये हैं।

साथ ही बर्मी सेनाएं उनके प्रवेश को रोकने के लिए उनसे युद्ध कर रही हैं।

कूटनीतिक स्रोतो का कहना है कि एक समय राष्ट्रवादी बर्मा की सीमा से युन्नान के अन्दर २५ मील तक घुस गये थे किन्तु व इस समय सीमा क दोना ओर स्थिति ऊबड खाबड प्रदेश की १५० मील की पतली रेखा पर एकत्रित हैं।

रूसी जहाज

अमरीका क विदेश विभाग ने घोषित किया है कि रूस ने फिर उन ६७० छोटे जहाजों को लौटाने मे इन्कार कर दिया है जो कि उधार पट्टा कानून के अन्तर्गत युद्धकाल मे रूस को दिये गए थ।

रूस का कहना है कि अमरीका ने उन्हें उस नेचमा स्वीकार कर लिया था। लेकिन कल यहा रूस के प्रतिनिधियो ने मास्को के उधार पट्टा हिसाब को चुकता करने के लिए २४ करोड डालर की रकम मे और वृद्धि करना स्वीकार कर लिया। लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया कि वे और कितनी अधिक रकम देने को तैयार हैं।

रूस का कहना है कि अब केवल ३१८ जहाज बाकी रह गये हैं। अन्य जहाज दुर्घटनाओं मे या नौसैनिक कार्रवाइयों में खत्म हो गये हैं। इन जहाजों म पनडुब्बी नावें सुरगे साफ करने वाले जहाज और ८४ व्यापारिक जहाज शामिल हैं।

काएसोंग वार्ता

काएसोंग स आने वाले समाचारों से केवल यही पता चलता है कि आज काएसोंग में चार व्यक्तियो की सैनिक शान्ति कमटी में यह निश्चय हुआ कि उनकी छटी बैठक कल होगी।

हिन्द चीन के कम्यूनिस्ट नेता हो चि मिन्ह ने घोषणा की है कि उनकी कम्यूनिस्ट वीतमिन्ह सरकार फ्रेंच हिन्द चीन में फ्रांसीसिया के विरुद्ध लम्बी लड़ाई' छेड़ने के लिए नए कदम उठायेगी।

आपने कहा इनमें आर्थिक और धन सम्बन्धी कण्ट्रोल का सम्मेलन भी शामिल रहेगा। किसानों के लिए इकहरा खेतिहर कर तथा उद्योगपतियों एवं व्यापारियों के लिए कुछ परिवर्तन तथा औद्योगिक कर जारी किए जायेंगे। राज्य सस्थाओं म उचित छटनी होगी और छटनी म आये लोगों को अन्यत्र लगाया जायगा।

एक अन्य अवसर

ब्रिटिश प्रतिनिधि रिचर्ड स्टोक्स ने ईरानियों को इस बात के लिए अंतिम अवसर दिया है कि वे उनकी नई योजना पर पुनर्विचार करे। दूसरी बार भी श्री स्टोक्स ने इस बात पर जोर दिया है कि अबादान के तेल शोधक कारखाने का व्यवस्थापक ब्रिटिश होना चाहिए। स्मरण रहे श्री स्टोक्स ने आठ सूत्री कार्यक्रम वापिस लेकर केवल एक वाक्य का प्रस्ताव रखा है कि अबादान कारखाने का मैनेजर कोई अंग्रेज हो जो ईरानियों के विषय में कार्य करे।

ब्रिटिश सूत्रों का कहना है कि यदि अबादान में तेल के उत्पादन और शोधन के लिए योग्य कर्मचारी नहीं रहे तो यातायात और क्षति पूर्ति के बारे में विचार विमर्श करने के लिए कोई बात नही रहती। इस समय भी ब्रिटिश विशेषज्ञ ही उपलब्ध योग्य व्यक्ति है जो कि वहां काम कर रहे हैं। इसीलिये श्री स्टोक्स यह अनुभव करते हैं कि अबादान में ब्रिटिश व्यवस्थापक को रखने की शर्त ही समझौते का आधार हो सकती है।

बाद के समाचारों से पता चलता है कि ईरान के प्रधानमन्त्री डा० मुसद्दीक श्री स्टोक्स से मिले और उनसे ८० मिनट तक बातचीत की। डा० मुसद्दीक ने बताया हमे आपकी यह मांग स्वीकार नहीं है कि अबादान के तेल कारखाने का मैनेजर ब्रिटिश होना चाहिए। तब मुसद्दिक ने नये प्रस्ताव रखे जिनको श्री स्टोक्स ने अस्वीकार कर दिया और कहा मुझे दुःख है कि हम कल जा सकेंगे।

कोरिया-वार्ता समाप्त

कोरिया के पूर्वी मोर्चे में नई लड़ाई होने के समाचार भी प्राप्त हुए है। क्योंकि दक्षिणी कोरिया के आक्रमणों के विरोध में कम्यूनिस्टों ने जोरों के साथ सेनाएं भेजी हैं।

टोकियो से यह घोषणा की गई है कि कम्यूनिस्टों ने यह शिकायत की है कि काएसोंग युद्ध विराम वार्ता म गतिरोध उत्पन्न करने वाली एक घटना हुई है वह यह है कि संयुक्त राष्ट्र के हवाई जहाज ने एक कम्यूनिस्ट जीप पर हमला किया और उसे नष्ट कर दिया।

महत्वपूर्ण पहाड़ियों पर कब्जा करने के लिए कम्यूनिस्ट सेनाओं ने हमला किया और वे सफल भी हुई। कई स्थानों पर संयुक्तराष्ट्र की सेनाओं को पीछे भी हटना पड़ा जिस पर उन्होंने इन पाच दिनों म अधिकार किया था।

तेहरान वार्ता भंग

तेहरान में चल रही तेलवार्ता के भंग होने की सम्भावना ने लन्दन में चिन्ता की लहर फैला दी है। ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री श्री एटली ने ईरानी तेल सकट पर विचार विमर्श करने के लिए मन्त्रिमंडल की बैठक बुलाई और परिस्थिति पर विचार किया।

वायु सेना के एक अधिकारी एयर मार्शल सर जान स्लैसर तथा तेल कम्पनी के अध्यक्ष सर विलियम फ्रेजर ने भी वार्ता में भाग लिया। जानकार क्षेत्रों के अनुसार गत ११ घन्टों के अन्दर तेहरान में स्थिति कुछ बदल गई है। मन्त्रिमंडल की बैठक म इस महत्व पूर्ण प्रश्न पर विचार हुआ कि वार्ता भंग होने पर क्या कदम उठाया जाय। अगर बिना किसी समझौते के श्री स्टोक्स लन्दन लौट आते हैं तब ब्रिटेन को अबादान के कारखाने के सम्बन्ध में विचार करना होगा। कुछ समय पहले प्रधानमन्त्री श्री एटली और लार्ड जोविट ने संकेत किया था कि अगर वार्ता सब ठीक है।

श्री मुसद्दिक

अन्तिम रूप से भंग की जायगी तो अबादान के तेल शोधक कारखाने को सैनिक नियन्त्रण में रखा जाय। उक्त निर्णय पर पुन विचार किया जायेगा। परराष्ट्र विभाग के एक प्रवक्ता ने कहा कि जब तक सफलता की तनिक भी आशा रहेगी तब तक ब्रिटिश नीति के सम्बन्ध में कोई अन्तिम निर्णय नहीं किया जायगा।

क्रांति दिवस

वियतनाम मे अगस्त क्रांति की छटी वर्षगांठ तथा २ सितम्बर को वियतनाम आजादी दिवस के सम्बन्ध में कम्यूनिस्ट नेता ने यह वक्तव्य दिया है। आपने अपने समर्थकों से कहा, हमे यह अनुभव करना चाहिए कि हमारा प्रतिरोध लम्बा और मुश्किल होगा और अन्तिम विजय के आने से इसको बड़ी कठिनाइयों स मुकाबला पड़ेगा।

देश-वार्ता

नेहरू की तानाशाही एशिया से प्रजातन्त्र को समाप्त कर देगी

द्वारकाप्रसाद मिश्र का आरोप

रंगा और भार्गव नया दल बनायेंगे

श्री टंडन

धर्म संकट में

पाकिस्तान युद्ध का शोर बन्द करे

कांग्रेस अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम दास टंडन ने हाल ही में एक भाषण में घोषित किया कि कोई भी मुख्य मन्त्री और यहां तक कि एक प्रधान मन्त्री भी कांग्रेस की मर्यादाओं को नहीं तोड़ सकते।

श्री टंडन ने जो कि एक सार्वजनिक सभा में भाषण दे रहे थे कहा कि कांग्रेस के आदेशों का पालन करना कांग्रेस सरकारों की जिम्मेदारी है।

कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि पाकिस्तान का निर्माण एक गलती थी। लेकिन अब पश्चाताप करने से लाभ नहीं। अब हमें पाकिस्तान के अस्तित्व को स्वीकार कर लेना चाहिये। आपने कहा कि पाकिस्तान में युद्ध का शोर है। पाकिस्तान को युद्ध का शोर छोड़ देना चाहिए।

आपने कहा कि हम अपनी सेनाएं काश्मीर से नहीं हटायेंगे। क्योंकि ऐसा करने से पाकिस्तान को काश्मीर में अनुचित रूप से घुसने का मौका मिल जायगा।

पंडित नेहरू अपने को कांग्रेस से बड़ा समझने लगे हैं

मध्य प्रदेश के गृह मन्त्री श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र जिन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दिया है अपने एक वक्तव्य में आज बताया कि पंडित नेहरू के वक्तव्यों से पता चलता है कि पंडित नेहरू अपने को कांग्रेस सरकार से भी बड़ा समझने लगे हैं।

प्रधान मन्त्री पण्डित नेहरू पर श्री मिश्र ने यह आरोप लगाया है कि पं० नेहरू का यह कहना अनुचित है कि मन्त्रिमंडल के बनाने में पार्लमेंट्री बोर्ड कांग्रेस कार्य समिति और कांग्रेस अध्यक्ष को कुछ नहीं कहना चाहिये। यह पंडित नेहरू का अनुचित रवैया है कि वे कांग्रेस अध्यक्ष पर दबाव डालें कि किस किसको कार्यसमिति का सदस्य बनायें।

श्री मिश्रा ने संसद की पार्टी की बैठक में दिये गये श्री मेहताब और पंडित नेहरू के वक्तव्य के बारे में आलोचना करते हुए कहा कि यदि नेहरू जी को डिक्टेटर बना दिया गया तो कांग्रेस अपना प्रजातान्त्रिक स्वरूप नष्ट कर देगी।

जहां तक मेरा सवाल है मैं यही आग्रह करूंगा कि पंडित नेहरू को डिक्टेटर बनाने का अर्थ यह है कि एशिया से प्रजातन्त्रवाद समाप्त हो जायेगा।

भारत कृषक मजदूर जनता पार्टी

श्री एन० जी० रंगा ने, जिन्होंने कि ४ मास पूर्व कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया था, एक नये राजनीतिक दल बनाने की घोषणा की। इस दल का नाम 'भारत कृषक मजदूर जनता पार्टी' होगा।

एक प्रेस कान्फ्रेंस में भाषण देते हुए आपने बताया कि उनकी पार्टी अगले चुनावों में कृषक मजदूर प्रजा पार्टी और अन्य पार्टियों के साथ समझौता करेगी। परन्तु इस पार्टी का अलग स्वतन्त्र व्यक्तित्व रहेगा क्योंकि यह विशुद्ध ग्रामीणों की संस्था होगी जब कि कृषक मजदूर प्रजापार्टी मध्यम वर्ग के लोगों की संस्था है।

इस पार्टी को स्वरूप देने के लिए देहली में २२ अगस्त को एक सम्मेलन होगा जिस में लगभग २०० प्रतिनिधि भाग लेने वाले हैं।

मानसरोवर में कम्युनिस्ट सेनायें

तिब्बत के साथ व्यापार सम्बन्ध रखने वाले स्थानीय व्यापारियों का कहना है कि उनके तिब्बत शाखा कार्यालय से प्राप्त समाचारों के अनुसार चीनी कम्युनिस्ट सेनाएं ग्यान्त्से क्षेत्र तक पहुंच गई हैं। ग्यान्त्से तिब्बत का द्वितीय व्यापार केन्द्र है और भारत ल्हासा और भारत शागान्त्से मार्ग पर महत्वपूर्ण नगर है।

कम्युनिस्ट सेनाओं की सही संख्या नहीं बताई गई। पश्चिमी तिब्बत में स्थित मानसरोवर क्षेत्र में भी कम्युनिस्ट सेनाओं के पहुंचने का समाचार मिला है। मानसरोवर हिन्दुओं का तीर्थ तो है ही भारत की सीमा से बहुत दूर भी नहीं है।"

महिला-मताधिकार

ज्ञात हुआ है कि संसद के इसी अधिवेशन में जन प्रतिनिधित्व कानून में एक महत्वपूर्ण संशोधन किया जायगा। वह संशोधन यह है कि विवाहित महिलाओं (श्रीमती) को मताधिकार दिया जाय। स्मरण रहे कि भारत की लगभग २६ लाख महिलायें अपने पतियों के नाम न बताने के कारण मताधिकार से वंचित हो गयी थीं।

इस सिलसिले में अजमेर की कुछ महिलाएं श्रीमती शारदा भार्गव के नेतृत्व में प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू से मिलीं और अनुरोध किया कि विवाहित महिलाओं को अपने पतियों के नाम न बताने के कारण मताधिकार से वंचित क्यों किया जा रहा है। श्रीमती भार्गव ने बताया कि देश में एक पुराना रिवाज चला आ रहा है कि विवाहित स्त्रियां अपने पति का नाम बताना अपशकुन मानती हैं। इसके लिए महिलाओं को उनके मताधिकार से वंचित नहीं करना चाहिये। नेहरूजी ने स्वीकार किया कि इस गलती को सही किया जाना चाहिये।

श्री नेहरू

कुछ समझ में नहीं आता

डा० भार्गव का नया दल

पूर्वी पंजाब के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री डा० गोपीचन्द भार्गव ने अम्बाला में अपने समर्थकों की बैठक का आयोजन किया। पंजाब के ७० धारासभाइयों में ४७ उनके पक्ष के हैं। यह कहा जाता है कि भार्गव दल कांग्रेस छोड़ने का विचार कर रहा है। उक्त दल का विचार है कि कांग्रेस से अलग होकर राज्यपाल के शासन का अन्त किया जा सकता है और आगामी चुनावों की तरह। यह भी कहा जाता है कि यह दल समानान्तर कांग्रेस बनाने का भी विचार कर रहा है। अन्तिम निर्णय शायद हाल की बैठक में न हो क्योंकि ८ व ६ सितम्बर को होने वाली कांग्रेस महासमिति की बैठक की गतिविधि का भी यह ध्यान रखना चाहते हैं।

अगर श्री पुरुषोत्तम दास टंडन ने कांग्रेस की अध्यक्षता छोड़ी तो भार्गव दल सरकारी कांग्रेस दल के समानान्तर नया दल स्थापित करने की चेष्टा करेगा। प्रवक्ता का कहना है कि इस समय इस सीमा प्रदेश में नया दल खड़ा करने से ...क ... ठीक ... क्योंकि कम हो जायेंगे। अभी से धारासभाई

[शेष पृष्ठ २१ पर]

अब तो नया दल बनायेंगे

प्रो० रंगा

डा० गोपीचन्द भार्गव

गीता के स्फूर्तिकण

कल्पना कीजिए कि हमारी जान लेने के लिए या हमारी स्त्री अथवा कन्या पर बलात्कार करने के लिए, अथवा हमारे घर में आग लगाने के लिए या हमारा धन छीनने के लिए, कोई दुष्ट मनुष्य हाथ में शस्त्र लेकर तैयार हो जाय और उस समय हमारी रक्षा करने वाला हमारे पास कोई न हो, तो उस समय हमको क्या करना चाहिए? क्या 'अहिंसा परमो धर्मः' कहकर ऐसे आततायी की उपेक्षा की जाय — 'ऐसे आततायी या दुष्ट मनुष्य को अवश्य मार डाले, यह विचार न करे कि यह गुरु है, बूढ़ा है, बालक है या विद्वान ब्राह्मण है।'

× × ×

अंग्रेज ग्रंथकार पारलौकिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि की ओर कुछ ध्यान नहीं देते। उन लोगों ने तो खुल्लम-खुल्ला यहां तक प्रतिपादन किया है कि व्यापारियों का अपने लाभ के लिए झूंठ बोलना अनुचित नहीं है। किन्तु यह बात हमारे शास्त्रकारों को सम्मत नहीं है। इन लोगों ने कुछ ऐसे ही मौकों पर झूंठ बोलने की अनुमति दी हैं जबकि केवल सत्य शब्दोच्चारण (अर्थात् केवल वाचिक सत्य) और सर्वभूतहित (अर्थात् वास्तविक सत्य) में विरोध हो जाता है और व्यवहार की दृष्टि से झूंठ बोलना अपरिहार्य हो जाता है।

× × ×

'धर्म शब्द धृ (= धारण करना) धातु से बना है। धर्म से ही सब प्रजा बंधी हुई है। यह निश्चय किया गया है कि जिससे (सब प्रजा का) धारण होता है वही धर्म है।' यदि यह धर्म छूट जाय तो समझ लेना चाहिए कि समाज के सारे बन्धन भी टूट गए; और यदि समाज के बन्धन टूटे, तो आकर्षण-शक्ति के बिना आकाश में सूर्यादि ग्रह-मालाओं की जो दशा हो जाती है, अथवा समुद्र में मल्लाह के बिना नाव की जो दशा होती है, ठीक वही दशा समाज की भी हो जाती है इसलिए उक्त शोचनीय अवस्था में पड़कर समाज को नाश से बचाने के लिए व्यासजी ने कई स्थानों पर कहा है कि यदि अर्थ या द्रव्य पाने की इच्छा हो तो 'धर्म के द्वारा' अर्थात् समाज की रचना को न बिगाड़ते हुए प्राप्त करो, और यदि काम आदि वासनाओं को तृप्त करना हो तो वह भी 'धर्म से ही' करो।

× × ×

लोकसंख्या की न्यूनाधिकता का नीतिमत्ता के साथ कोई नित्य सम्बन्ध नहीं हो सकता। दूसरी यह बात भी ध्यान में रखने योग्य है कि कभी-कभी जो बात साधारण लोगों को सुखदायक मालूम होती है, वही बात किसी दूरदर्शी पुरुष को परिणाम में सबके लिए हानिप्रद दीख पड़ती है। उदाहरणार्थ, साक्रेटीज और ईसामसीह को ही लीजिए। दोनों अपने-अपने मत को परिणाम में कल्याणकारक समझकर ही अपने देशबन्धुओं ने इन्हें 'समाज के शत्रु' समझकर मौत की सजा दी! इस विषय में 'अधिकांश लोगों का अधिक सुख' इसी तत्व के अनुसार उस समय के लोगों ने और उनके नेताओं ने मिलकर आचरण किया था, परन्तु अब इस समय हम यह नहीं कह सकते कि उनका व्यवहार न्याययुक्त था। सारांश यदि 'अधिकांश लोगों का अधिक सुख' को ही घड़ीभर के लिए नीति का मूल तत्व मान लें तो भी उससे ये प्रश्न हल नहीं हो सकते कि लाखों करोड़ों मनुष्यों का सुख किसमें है, उसका निर्णय कौन और कैसे करे?

× × ×

मनुष्यत्व के विषय में भी आधिभौतिकवादियों के मन में प्रायः सब लोगों के बाह्य विषय सुख ही की कल्पना प्रधान होती है, अतएव आधिभौतिक सुखवादियों की यह अन्तिम श्रेणी भी—कि जिसमें अन्तःसुख व अन्तःशुद्धि का कुछ विचार नहीं किया जाता—हमारे आध्यात्मवादी शास्त्रकारों के मतानुसार निर्दोष नहीं है। यद्यपि इस बात को साधारणतया मान भी लें कि मनुष्य का सब प्रयत्न सुखप्राप्ति तथा दुःखनिवारण के ही लिए हुआ करता है, तथापि जब तक पहिले इस बात का निर्णय न हो जाय कि सुख किसमें है—आधिभौतिक अथवा सांसारिक विषय भोग ही में अथवा और किसी में—तब तक कोई भी आधिभौतिक पक्ष ग्राह्य नहीं समझा जा सकता।

× × ×

मन से दुःखों का चिन्तन न करना ही दुःख निवारण की अचूक औषधि है और इसी तरह मन को दबाकर सत्य तथा धर्म के लिये सुखपूर्वक अग्नि में जलकर भस्म हो जाने वालों के अनेक उदाहरण इतिहास में भी मिलते हैं। हमें जो कुछ करना है मनोनिग्रह के साथ और उसकी फलाशा को छोड़कर तथा सुख दुःख में समभाव रखकर करना चाहिये। ऐसा करने से न तो हमें कर्माचरण का त्याग करना पड़ेगा और न हमें उसके दुःख की बाधा ही होगी। फलाशा त्याग का यह अर्थ नहीं है कि हमें जो फल मिले उसे छोड़ दें, अथवा ऐसी इच्छा रखें कि वह फल किसी को कभी नहीं मिले। इसी तरह फलाशा और कर्म करने की केवल इच्छा, आशा, हेतु या फल के लिये किसी बात की योजना करने में भी बहुत अन्तर है।

× × ×

सुख और दुःख दो भिन्न तथा स्वतन्त्र वेदनायें हैं, सुखेच्छा केवल सुखोपभोग से ही तृप्त नहीं हो सकती, इस लिए संसार में बहुधा दुःख का ही अधिक अनुभव होता है। परन्तु इस दुःख को टालने के लिये तृष्णा या असन्तोष और सब कर्मों का भी समूल नाश करना उचित नहीं। उचित यही है कि फलाशा को छोड़कर सब कर्मों को करते रहना चाहिए, केवल विषयोपभोग सुख कभी पूर्ण होने वाला नहीं, वह अनित्य और पशुधर्म है, अतएव इस संसार में बुद्धिमान मनुष्य का सच्चा ध्येय इस अनित्य पशु धर्म से ऊंचे दर्जे का होना चाहिये। आत्मबुद्धि प्रसार से प्राप्त होने वाला शान्ति सुख ही सच्चा ध्येय है। इसीलिये सदा निष्काम बुद्धि से कर्म करते ही रहना चाहिये।

× × ×

कर्म करके दूसरों को दुःख न देने का आत्मौपम्य दृष्टि का सामान्य धर्म है तो ठीक, परन्तु जिस समाज में आत्मौपम्य दृष्टि वाले सामान्य धर्म की ओट के इस दूसरे धर्म के— कि हमें भी दूसरे लोग दुःख न दें— पालने वाले न हों उस समाज में केवल एक पुरुष ही यदि इस धर्म को पालेगा तो कोई लाभ न होगा। अतएव आततायी पुरुष को मार डालने से जैसे अहिंसा धर्म में बट्टा नहीं लगता, वैसे ही दुष्टों का उचित शासन कर देने से साधुओं की आत्मौपम्य बुद्धि या निरवैरता में भी कुछ न्यूनता नहीं होती। बल्कि इस प्रकार दुष्टों के अन्याय का प्रतिकार कर दूसरों को बचा लेने का श्रेय अवश्य मिल जाता है। जब परमेश्वर भी साधुओं की रक्षा के लिये दुष्टों का विनाश करने के लिये समय-समय पर अवतार लेकर लोक संग्रह किया करता है तब और पुरुषों की बात ही क्या है। यह कहना भ्रमपूर्ण है कि "वसुधैव कुटुम्बकम" रूपी बुद्धि हो जाने से अथवा फलाशा छोड़ देने से पात्रता अपात्रता का अथवा योग्यता-अयोग्यता का भेद ही मिट जाना चाहिये।

× ×

यह सच है कि कर्मप्रवाह अनादि है और जब एक बार कर्म का चक्कर शुरू हो जाता है, तब परमेश्वर भी उसमें हस्तक्षेप नहीं करता। तथापि अध्यात्म शास्त्र का यह सिद्धान्त है कि दृश्यसृष्टि केवल नाम रूप या कर्म ही नहीं है, किन्तु इस [illegible] आवरण के लिए आधारभूत एक आत्मरूपी, स्वतन्त्र अविनाशी ब्रह्मसृष्टि है तथा मनुष्य के शरीर की आत्मा उस नित्य एवं स्वतन्त्र परब्रह्म ही का अंश है।

केवल कर्मों की ओर देखें तो मनुष्य की दृष्टि से प्रत्येक कर्म में कुछ न कुछ दोष या अवगुण अवश्य मिलेगा। परन्तु यह वह दोष नहीं जिसे छोड़ने के लिये गीता कहती है। मनुष्य के किसी कर्म को जब हम अच्छा या बुरा कहते हैं, तब वह अच्छापन या बुरापन यथार्थ में उस कर्म में नहीं रहता किन्तु कर्म करने वाले मनुष्य की बुद्धि में रहता है। इसी बात पर ध्यान देकर गीता में कहा है कि इन कर्मों के बुरेपन को दूर करने के लिये कर्ता को चाहिये कि वह अपने मन और बुद्धि को शुद्ध रखे।

× × ×

गीता इस बात को नहीं मानती कि 'ज्ञानी होने से मनुष्य की सब प्रकार की इच्छाएं या वासनाएं छूट ही जानी चाहिये।' सिर्फ इच्छा या वासना रहने में कोई दुःख नहीं, दुःख की सच्ची जड़ है उसकी आसक्ति। इससे गीता का सिद्धांत है कि सब प्रकार की वासनाओं को नष्ट करने के बदले ज्ञाता को उचित है कि केवल आसक्ति को छोड़ कर कर्म करे। यह नहीं कि उस आसक्ति के छूटने से उसके साथ ही कर्म भी छूट जावे।

× × ×

अर्जुन उठ, युद्ध कर, नपुंसकता तुझे शोभा नहीं देती !

भगवान श्रीकृष्ण तथा उनका जीवन दर्शन

[श्री विजय]

भगवान श्रीकृष्ण के जीवन में ज्ञान तथा कर्म का अद्भुत संयोग दिखाई देता है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में श्रेष्ठता प्राप्त करने वाले महापुरुष तो बहुत हुए हैं, किन्तु सर्वाङ्गीण विकास के उदाहरण थोड़े ही मिलते हैं। इनमें श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व असंदिग्ध रूप से सर्वोपरि है। वे ज्ञानियों में सर्व-श्रेष्ठ ज्ञानी थे, योद्धाओं मे श्रेष्ठ योद्धा थे, राजनीतिज्ञों में विलक्षण राजनीतिज्ञ थे, योगियों में योगिराज थे, संगठनकर्त्ताओं में श्रेष्ठ थे, संगीतज्ञों में अग्रणी थे, शासकों में सर्वोपरि थे, कर्मयोगियों में श्रेष्ठ थे, धर्म के मर्मज्ञ थे, सम्पूर्ण राजसी वैभव तथा विलासमय जीवन में रहते हुए भी इन सबसे पृथक थे, अलिप्त थे। वे राष्ट्रनिर्माता थे, उनकी टक्कर का व्यक्तित्व इतिहास में दूसरा दिखाई नहीं देता।

जीवन का सार

गीता श्रीकृष्ण के जीवन की ही व्याख्या है। गीता में जो दर्शन उपस्थित है, उसका मूर्तिमान रूप स्वयं श्रीकृष्ण हैं। गीता के रूप में उन्होंने अपनी समस्त अनुभूति तथा जीवन का सार अर्जुन के सम्मुख रखा था। कर्म उनके जीवन का मूलमन्त्र था और कर्माकर्म की समस्या ही अर्जुन के संमुख खड़ी हुई थी। अपने अभिन्न-हृदय सखा की इस महती समस्या को सुलझाने के लिए उन्होंने अपने जीवन का सार ही उसके सामने रख दिया। इसी ने अर्जुन की बुद्धि पर पड़े मोह के आवरण को हटाया तथा भ्रमित चित्त को स्थिर कर, उसके सभी सन्देहों को दूर कर दिया। अर्जुन के हृदय में पुनः निश्चय प्रकट हुआ और गाण्डीव की टंकार से शत्रुपक्ष दहल उठा।

गीता का सन्देश

भगवान् श्रीकृष्ण के अनुसार एकता तथा शाश्वतता ही जीवन के मूल की विशेषता है। व्यक्ति आते और जाते रहते हैं, किन्तु जीवन चलता रहता है। वह शाश्वत है। उसमे भंग नहीं होता। जन्म और मृत्यु यह तो व्यक्ति के जीवन में शरीर का बनना अथवा नष्ट होना मात्र है। इससे यथार्थ जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह जीवन आत्मा की स्थिति का फल है। आत्मा अनादि तथा अनन्त है। अतः जीवन शाश्वत है।

मृत्यु से जीवन का विनाश मानना भ्रम है। वह भ्रम है शरीर को ही जीवन मान लेने का। किन्तु विभिन्न शरीरों में पृथक-पृथक रूपसे दिखाई देने वाला जीवन अनेकरूपी नहीं है। इस अनेकता के पीछे एक शाश्वत एकता छिपी हुई है। वही वास्तविक जीवन है। उसकी रक्षा तथा पोषण ही यथार्थ कर्तव्य है। उसको देखना तथा समझना, उसका साक्षात्कार ही परम-आवश्यक है। उस एकता को न समझ पाने के कारण ही व्यक्ति जन्म तथा मृत्यु पर हर्ष तथा शोक मनाता है। जिस प्रकार एक व्यक्ति कपड़े बदलता है उसी प्रकार आत्मा शरीर बदलता है किन्तु इससे आत्मा की नित्यता में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

जीवन की एकता

जीवन की यह एकता अनेकरूपों में प्रकट हुई है। किन्तु रूप को ही जीवन मानने के भ्रम मे पड़ जाने से जीवन ही अनेक प्रतीत होता है। यह भ्रम व्यक्ति द्वारा स्वय ही उत्पन्न किया जाता है। आत्मा की एकता ही समस्त प्रेम तथा एकता का आधार है। यही वात्सल्य, रति, सख्य आदि भावों में प्रकट होती है। किन्तु यह एकता इन्द्रियों का विषय नहीं है, मन का भी विषय नहीं है। इन्द्रियां तो इस सृष्टि में प्रकट रूपों को ही ग्रहण करती है। आंखों को अनेक आकार के पदार्थ दिखाई देते हैं, नाक नाना प्रकार की गंध ग्रहण करती है, कान अनेक प्रकार के शब्द अथवा ध्वनि सुनते हैं, जिह्वा अनेक प्रकार के रसों का आस्वादन करती है, और त्वचा विभिन्न प्रकार के स्पर्शों को अनुभव करती है। मन भी इन्हीं के द्वारा समझाए गए स्वरूप को ग्रहण करता है। ऐसी स्थिति मे इन्द्रिय या मन के स्तर तक ही रहने वाला व्यक्ति आकार अथवा रूप को ही जीवन मानने के भ्रम में रहता है और रूप को ही वास्तविक मानता है। मृत्यु का अर्थ उस रूप का नष्ट होना है। रूप को ही सत्य मानने के कारण मृत्यु की कल्पना उसे दुःखदायी लगती है।

निर्मल बुद्धि

किन्तु यदि यह स्पष्ट हो गया कि जीवन एक तथा शाश्वत है तो स्वरूप तथा आकार के प्रति उत्पन्न होने वाला मोह नष्ट हो जाता है। व्यक्ति की बुद्धि निर्मल हो जाती है वह जीवन की इस नित्यता को दृष्टि मे रख कर ही कार्य करती है। ऐसा व्यक्ति सृष्टि की इस अनेकरूपी एकता को देखता है, उसके भेदों को देखता है, उन्हें देखने से उसे

खुल उठे द्वार कारा के

श्री शारदिन्दु

[१]

ब्रज में छैला था अन्धकार,
ब्रज के प्राङ्गण में अन्धकार,
ब्रज के जीवन में अन्धकार,
काले बादल—
ब्रज की पीड़ा के श्याम सजल
घन गरज रहे थे रह-रह कर,—
कुछ उफनाते,
कुछ गरमाते,
उस नीले-नीले अम्बर पर
जग के प्राणों को दहलाते!
वह भाद्र मास
की मध्य रात्रि,
वह मथुरा का कारा विशाल
यमुना तट पर
वह बन्दिनि मा
दुख से जर्जर,
कृश, छाया-सी,
परवशता की चल-प्रतिमा-सी,—
प्रसव-वेदना से पीड़ित हो
लहर-आह पर किरण प्रात-सी
तड़प-तड़प उठती थी पल-पल
लो चमक उठा
उस अन्धकार में वह प्रकाश नव
अहि-ललाट पर मरकत-मणि-सा,
नव-प्रभात-सा,
प्राची के नव-अरुण-बाल-सा,
सन्ध्या के झुरमुट में पुलकित
विधु-दीपसा,
आलोकित करता कारा को!
खुल उठे द्वार,
क्या सूली-सी घुस आई वह
जग की फुहार,
सोए प्रहरी
निद्रा गहरी—
मे पड़ अचेत।
उस अन्धकार में,

बादल के धुंधले प्रकाश में
प्रेतों की चलती छाया-सा
श्याम मूर्ति
भर उसे अङ्क में —
हसते शिशु को—
चलती चोरों-सी छिप-छिप कर
धीमे-धीमे,
अपनी पग-ध्वनि को थपकी दे,
क्योंकि उसे—
नवजात बाल को,
अरुण बाल को
दीपित करना था भूमण्डल,
भारत का मुख!

× × ×

'कल-कल, छल-छल'
लो बोल उठा यमुना का जल,—
'आओ पाहुन!
तुम शिशु अजान
पर अति महान्
तुममें भारत-मां का गौरव,
तुममें युग का सञ्चित गौरव,
मैं चूम तुम्हारे पद-पङ्कज,
कर लू सार्थक अपना जीवन!'
चमकी विद्युत्,
गरजे बादल,
शत नागों के स्नेहाञ्चल में
वह विहस उठा—
भारत-मां का गौरव महान्,
भारत-मा का वैभव महान्,
भारत-मा का शैशव महान्,
यमुना के नीले अञ्चल पर,
पवनाञ्चोलित उस कल-कल पर!

[२]

गोकुल के हरे-भरे बन में,
वृन्दा के उर्वर कानन में,
बन कर नटवर,
गोपाल सुघर,
वह फूट उठा
भारत के तममय अम्बर में,
भारत के तममय प्राङ्गण में,
आलोक प्रखर!
कांपे असाधु,
राक्षस, पिशाच, रजनीचारी,
अत्याचारी,
लम्पट, कायर, कुत्सितकर्मी,
जनता के वे बर्बर शासक,
चिर-उत्पीड़क!

× × ×

बज उठी मधुर
ब्रज के सौरभमय मधुबन में
फिर प्रेम-वेणु,
गुञ्जित करती,
मुखरित करती,
बन-बन, उपवन,
जग का कण-कण,
भारत का मन!
उस गोप-देश में,
सरल गोपियों के पुलकित
आलोड़न में
नाच उठा
भारत का मन
रुनझुन-रुनझुन!

× × ×

एक हृदय से,
एक निश्चय से,
बोल उठे सारे नर-नारी,
राजा, ज्ञानी, रङ्क, सुयोगी,
बड़े-बड़े ऋषि, मुनि, पण्डितवर,
ऊंच-नीच बालक-जवान-जर:—
'तुम योगिराज
तुम गोपिराज,
तुम भारत के अभिराम श्याम,
मन के मोहन,
चितचोर सरल,
तुम दिव्य शक्ति,
निष्काम भक्ति,
तुम दुष्ट दलन के लिए काल,
तुम अन्धकार के लिए ज्वाल,
आलोक प्रखर,
गोपाल सुघर,
नटवर नागर,
तुम में भारत-मा का गौरव,
तुम में युग का सञ्चित गौरव!'

★

हर्ष तथा विषाद कुछ नहीं होता। वह स्थिर बुद्धि हो अपना कर्त्तव्य कर्म करता है। ऐसा व्यक्ति समस्त विश्व को अपना आत्मीय मानता है।

भौतिक दृष्टि

पर संसार में इस प्रकार सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने वाले कितने हैं। संसार के अधिकांश व्यक्ति इन्द्रियों के स्तर पर ही रहते हैं और इन्द्रियोपभोग में ही जीवन की सफलता मानते हैं। इन्द्रियों की पिपासा उपभोग से कभी शान्त नहीं होती, प्रत्युत अधिकाधिक बढ़ती जाती है और उसे सन्तुष्ट करने की इच्छा से व्यक्ति अधिकाधिक भौतिकता की ओर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप धन, ऐश्वर्य, सत्ता, समृद्धि आदि का मूल्य उसकी दृष्टि में जीवन से भी अधिक हो जाता है और उन्हें प्राप्त करने के लिए वह किसी भी प्रकार के अनाचार, दुराचार तथा अत्याचार करने से पीछे नहीं हटता। स्वार्थ-साधन ही उसका उद्देश्य बन जाता है, बुद्धि भ्रमित हो जाती है और वह दूसरों के सुख व सम्पत्ति को छीन कर अपनी सुखेच्छा को पूर्ण करने का षड्यन्त्र करता है।

यज्ञ का भाव

ऐसा व्यक्ति जीवन के सुन्दर तथा सरस प्रवाह को गदला कर देता है। स्वार्थ तथा भौतिकता की उपासना उसमें आसुरी वृत्तियों को भड़का देती है और वह जीवन की मूलभूत एकता के विरुद्ध कार्य करता है। फलस्वरूप व्यापक प्रतिक्रिया आरम्भ होती है और जन-जीवन असंख्य कष्टों में पड़ जाता है। उस समय यह आवश्यक होता है कि कोई बलवान पुरुष इस प्रकार फैले हुए अधर्म का नाश करे और ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करे जिससे एकता तथा आत्मीयता की अनुभूति को आधार प्राप्त हो। एकता और आत्मीयता का भाव ही व्यक्ति जीवन में आत्मसमर्पण तथा त्याग का रूप लेता है। यही यज्ञ की भावना है और इस यज्ञ पर ही यह सृष्टि आधारित है।

कर्म, धर्म तथा योग

अतः जीवन की एकता को निरन्तर अक्षुण्ण रखने का यत्न करना ही यथार्थ कर्म है। यह कर्म ही व्यक्ति का धर्म है। इस कर्म को कुशलतापूर्वक करना ही योग है। यदि इसमें बाधायें आकर खड़ी होती हैं तो उन्हें दूर करने का यत्न करना चाहिए। ये बाधाएं यदि वे व्यक्ति भी हुए जिनके भौतिक आकार को हम बाबा, मामा, चाचा, भाई, प्रियजन आदि करके जानते हैं, तो क्या हुआ? आत्मा अमर है। किसी के मारने से कोई मरता नहीं, न कोई किसी को मारता है। यह सर्वत्र व्याप्त जीवन की एकता का प्रवाह जब जब गंदा होता है तब अपने को स्वच्छ करने का स्वतः प्रयत्न करता है। उसका यह संकल्प प्रत्येक युग में किसी व्यक्ति के रूप में प्रकट होता है। जीवन की एकता की दृष्टि से प्रियजन और पर जन में कोई भेद नहीं। उसकी प्रतिष्ठा के लिये यदि युद्ध में प्रियजनों का भी संहार करना पड़े तो अवश्य करना चाहिये। यही धर्म है। इससे विमुख होना महान पातक है।

कृष्ण की जीवनदृष्टि

संक्षेप में यही श्रीकृष्ण की जीवन दृष्टि है। यही भाव उनके जीवन में सर्वत्र, प्रत्येक घटना में दिखाई देता है। अत्याचारियों का वध और साधु तथा सज्जनों का परित्राण यही उनके जीवन का सार है। जिस बालक के प्रेम ने संपूर्ण ब्रजभूमि को पागल बना डाला, उसी ने अपने बाल गोपालों के बल पर मथुरा में राज्यशक्ति की और कंस के अत्याचारी शासन का अन्त किया। मथुरा के निवासियों को जरासंध के कष्ट से बचाने के लिये द्वारिका चले गये। शिशुपाल का वध किया और

[शेष पृष्ठ १६ पर]

कहानी

धर्म क्या है !

श्री आनन्द

महाभारत के युद्ध का पन्द्रहवाँ दिन था। पितामह भीष्म तथा आचार्य द्रोण का पतन हो चुका था। अंगराज कर्ण कौरव सेना के सेनापति थे। उनके निर्देश में कौरव सेना उत्साहित होकर पाण्डव पक्ष पर आक्रमण कर रही थी। कर्ण के बाण जिधर घूम जाते थे, पाण्डव सैनिकों के शव बिछ जाते थे। थोड़ी ही देर की बाण वर्षा में सैनिकों में हाहा-कार मच जाता था और भगदड़ी मच जाती थी। उसी समय कौरव दल वेग से आक्रमण करता था। सूर्य पुत्र कर्ण अपने प्रताप से पाण्डवों के व्यूह के उस भाग को दग्ध कर दूसरे भाग को भस्म करने जुट जाते थे।

महारथी कर्ण आज दुर्योधन की कूटनीति को सफल बनाने के विचार से रणक्षेत्र में आए थे। दुर्योधन का विचार था कि यदि किसी प्रकार धर्मराज युधिष्ठिर को जीवित ही बन्दी बनाया जा सके, तो कौरव शिविर में लाकर उन्हें पुनः जुआ खेलने के लिए उद्यत किया जा सकता है और जुए में हरा कर उन्हें पुनः वनवास के लिए भेजा जा सकता है। इस प्रकार वह विजय सरलता से ही हाथ में आ जाती है, जिसमें भीष्म तथा द्रोण के पतन से सन्देह उत्पन्न हो गया है। और युधिष्ठिर को बन्दी बनाने का भार उसने सौंपा था, अपने अभिन्न सखा तथा सेनापति महाबली कर्ण पर। कर्ण आज इसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए प्रयत्नशील थे।

उनके इस कार्य की सिद्धि में सबसे बड़ी बाधा पाण्डव सेना थी अर्जुन को ललकार कर संशप्तकगण रण-क्षेत्र के दूसरी ओर ले गये थे। अतः युधिष्ठिर को घेर कर खड़ा शेष पाण्डव दल उनके सम्मुख था। इसी को वे अपने विशाल भुजदण्डों से मथ रहे थे। उनके बाणों की भीषण वर्षा में पाण्डव व्यूह टिक न सका। एक-एक कर उसके कई भाग टूट गये और बांध की दीवार में से घुसते हुए जल के समान कौरव दल उनमें प्रविष्ट होकर उन्हें और अधिक पीड़ा करने लगा।

शीघ्र ही शत्रुपक्ष को विदलित कर महारथी कर्ण वहां आ पहुँचे, जहां धर्म-राज युधिष्ठिर युद्ध कर रहे थे। कर्ण के रथ के पीछे बाणों से लदे हुए बारह छकड़े चल रहे थे, जिनमें से बाण लेकर बारह व्यक्ति लगातार उनका तूणीर भर रहे थे। इन बाणों की मार से पाण्डवदल में त्राहि त्राहि मचा दी थी। अब युधिष्ठिर को सम्मुख देख कर कर्ण का उत्साह द्विगुणित हो गया। उन्हें लगा कि वे अपने उद्देश्य की सिद्धि के निकट आ पहुँचे हैं। अब केवल बाण वर्षा से सहायक सैनिकों को पीछे धकेल देना और युधिष्ठिर को मूर्च्छित कर अपने रथ में डाल कर ले जाना मात्र ही शेष है।

कर्ण के प्रताप से भागते हुए पाण्डव पक्ष को देख कर धर्मराज युधिष्ठिर क्रोधित हो उठे। यह जानते हुए भी कि श्रीकृष्ण ने उन्हें कर्ण से युद्ध न करने के लिए कहा हुआ है वे अपने दल की यह भारी पराजय न सह सके। भागते हुए सैनिकों को ललकार उन्होंने पुन युद्ध करने के लिए उत्साहित किया और उनका उत्साह बढ़ाने के हेतु स्वयं आगे होकर कर्ण पर आक्रमण किया। युधिष्ठिर के धनुष से छूटे हुए बाणों ने प्रत्यंचा खींचती हुई कर्ण की मुट्ठी को बींध दिया, अतः क्षणभर के लिए कर्ण के रथ से बाणों का अजस्र प्रवाह रुक गया। अपने राजा के इस कृत्य से पाण्डवदल उत्साहित हो उठा। भागते हुए सैनिकों के पांव रुक गए और वे लौट कर कौरवों से जूझ पड़े। युद्ध ने घमासान रूप धारण कर लिया।

किन्तु कर्ण की मुट्ठी क्षणभर को ही ढीली पड़ी। दूसरे ही क्षण क्रोधित होकर उसने अधिक वेग से प्रहार आरम्भ किए, स्वयं युधिष्ठिर को ही युद्ध करते देख कर उनका उत्साह उमड़ पड़ा। रथ को मण्डलाकार घुमाते हुए, धनुष की डोरी को कान तक खींच उसने अद्भुत वेग से मर्मभेदी बाण छोड़ने आरम्भ किये। उनका शरसन्धान अचूक था। धनुष पर बाण चढ़ाने का वेग इतना अधिक था कि डोरी खींची ही दिखाई देती थी। उसके रथ से बाणों की अन-वरत् वर्षा हो रही थी।

युधिष्ठिर ने अपनी शक्तिभर युद्ध करने का यत्न किया, किन्तु कर्ण का वेग असह्य था। पाण्डवदल विचलित हो उठा। कर्ण के बाण युधिष्ठिर को बींधने लगे। उसने उनकी ध्वजा काट दी, उनके धनुष की डोरी काट दी। युधिष्ठिर ने जैसे ही दूसरी डोरी चढ़ाने का यत्न किया, कर्ण के बाणों ने धनुष ही काट दिया। युधिष्ठिर ने जितने शस्त्रास्त्र उठाये वे या तो उनके हाथ में ही कट गए या अपनी ओर आते हुए उन्हें मार्ग में ही कर्ण ने काट गिराया। उसके मर्मभेदी बाण युधिष्ठिर का कवच तोड़ कर शरीर में घुस गये, उनके रोम-रोम में कर्ण के बाण बिंध गये। उन्होंने खड़े रहने की चेष्टा की, किन्तु नेत्रों के सम्मुख अन्धकार छा गया। उनकी दोनों भुजायें, मुख तथा वक्षस्थल बाणों से क्षत विक्षत था। सहसा कर्ण के एक बाण ने उनके वक्ष पर गहरी चोट की और वे सम्भल न सके। एक क्षणभर पैर डगमगाये, नेत्रों का अन्धकार बहुत गहरा हो गया और धर्मराज युधिष्ठिर संज्ञाहीन होकर रथ में लुढ़क पड़े।

× × ×

थोड़ी ही देर में रणक्षेत्र के दूसरे कोने पर युद्ध करते हुए अर्जुन को पता चला कि कर्ण ने युधिष्ठिर को बुरी तरह घायल कर मूर्च्छित कर दिया है। उसने तो उन्हें बन्दी बना ही लिया होता, किन्तु श्रीकृष्ण के गुप्त आदेश से युधिष्ठिर के मूर्च्छित होते ही उनका सारथी तुरन्त रथ भगा कर शिविर में ले गया। शिकार हाथ से निकल जाने के कारण क्रोधित हुए कर्ण की मार से पाण्डव सैनिक भाग रहे थे, व्यूह टूट गया था।

समाचार पाते ही अर्जुन चिन्तित हो उठे। उनकी अनुपस्थिति में आज कर्ण ने धर्मराज की ऐसी दुर्दशा की। क्रोधावेश में उन्होंने अपने होंठ काट लिए तुरन्त ही उन्होंने श्रीकृष्ण से कहा कि वे उनका रथ कर्ण की ओर ले चलें। किन्तु श्रीकृष्ण जानते थे कि इन्द्र की दी हुई अमोघ शक्ति अभी तक कर्ण के पास सुरक्षित है। अर्जुन का इस समय उसके सम्मुख जाना उचित नहीं। अतः उन्होंने सुझाया कि कर्ण को रोकने का भार महाबली भीम पर छोड़कर पहिले धर्मराज की दशा देख आयें। अर्जुन की समझ में आ गई। उसने पुकार कर भीमसेन से कहा—"आर्य, कर्ण ने आज धर्मराज को बहुत पीड़ित किया है और वे मूर्छित अवस्था में शिविर में पहुँच गए हैं। सेना भाग रही है। आप जरा इस दुष्ट को थोड़ी देर रोकें। मैं और कृष्ण धर्मराज की दशा देखकर अभी लौटकर आते हैं।"

भीम ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया और अपने सारथी को रथ कर्ण की ओर ले चलने का आदेश दिया।

श्रीकृष्ण तथा अर्जुन जिस समय शिविर में पहुंचे धर्मराज युधिष्ठिर पलंग पर पड़े हुए थे। वैद्यों ने उनके शरीर में लगे बाण निकाल दिये थे और मरहम पट्टी कर दी थी। उनके घावों में असह्य दाह हो रहा था और वे नेत्र मींचे हुए चुपचाप पड़े थे दोनों सखाओं ने वैद्यों से पूछा, गम्भीर चिन्ता की कोई बात न था, हां महाराज घायल अवश्य बहुत अधिक हो गए थे। धीरे से शिविर में दोनों ने प्रवेश किया। युधिष्ठिर के सारे शरीर पर पट्टियां बंधी हुई थीं, और वेदना के चिन्ह उनके मुख पर स्पष्ट थे। अर्जुन का हृदय उमड़ आया। उन्होंने आगे बढ़कर बड़े भाई के चरण छुए।

स्पर्श अनुभव कर युधिष्ठिर ने नेत्र खोल दिये। सामने श्रीकृष्ण तथा अर्जुन खड़े थे। मन की प्रक्रिया बड़ी विचित्र है। कृष्णार्जुन को सामने देखकर युधिष्ठिर को लगा कि उनके पीछे युद्ध कर अर्जुन ने कर्ण को मार डाला और अब यह शुभसंवाद सुनाने यहां आए हैं। कर्ण मारा गया, उन्हें इतनी पीड़ा पहुँचाने वाला उनकी विजय में सबसे बड़ा बाधा, पाण्डवों का आजन्म शत्रु, कर्ण अब जीवित नहीं है इस कल्पना ने उनके अन्तःकरण को हर्ष से भर दिया, उनके नेत्र चमक उठे। हर्षित वाणी में उन्होंने कहा, "अर्जुन और श्रीकृष्ण, तुम दोनों को यहां देखकर मेरा सारा कष्ट दूर हो गया। अर्जुन, तुमने कर्ण को मार डाला यह परम सौभाग्य का विषय है। तुम धन्य हो। तुम्हारा पराक्रम धन्य है। मैं तुम जैसा वीर भाई पाकर धन्य हो

गया। उसने मुझे बड़ी पीड़ा दी, मेरा रोम-रोम वेदना से जल रहा है। किन्तु मैं अब सारी पीड़ा भूल गया हूँ।

युधिष्ठिर के कथन को सुनकर श्री कृष्ण तथा अर्जुन ने एक दूसरे की ओर देखा। तब हाथ जोड़कर विनयपूर्वक अर्जुन ने उत्तर दिया, आर्य, आपको भ्रम हुआ है। कर्ण अभी तक मरा नहीं है। किन्तु आपकी यह दशा देखकर क्रोध से मेरा अंग-अंग जल रहा है। मैं प्रण करता हूँ कि उसे शीघ्र ही मार डालूंगा। आप व्याकुल न हों।"

"कर्ण अभी तक जीवित है और तुम भाग कर यहां चले आए हो," वेदना से व्याकुल युधिष्ठिर के विवेक ने उनका साथ छोड़ दिया, "तुम्हारे जीवित रहते उसने सारी सेना को मथ डाला, दोनों दलों के योधाओं के सम्मुख मेरा घोर अपमान किया, यह दुर्दशा कर डाली, और तुम कुछ न कर सके। स्त्रियों की भाँति भागकर शिविर में चले आए। धिक्कार है तुम्हारी वीरता पर, धिक्कार है तुम्हारे पौरुष पर। इससे तो अच्छा हो कि गाण्डीव किसी अन्य के ही हाथ में दे दो!"

क्षण भर के लिए स्तब्धता फैल गयी। युधिष्ठिर की कटूक्ति आवश्यकता से अधिक कटु थी। मौन खड़े हुए श्रीकृष्ण अर्जुन के मुख पर भावों के चढ़ाव उतार पढ़ते रहे। तब उन्होंने देखा कि उसके मुख पर एक अस्वाभाविक दृढ़ता आयी और उसके दाहिने हाथ ने खड्ग को म्यान से बाहर खींचा। शिविर में कोई शत्रु नहीं था। फिर अर्जुन खड्ग क्यों निकाल रहा है? क्या—और दूसरे ही क्षण उन्होंने अर्जुन को एक ओर खींच लिया। युधिष्ठिर नेत्र बन्द किए पड़े हुए थे।

कृष्ण के पूछने पर अर्जुन ने बताया कि उसकी इस प्रकार की प्रतिज्ञा है कि जो उसके पौरुष को धिक्कारे तथा गाण्डीव किसी दूसरे के हाथ में देने के लिए कहे वे उसका वध करेंगे। आज युधिष्ठिर ने ही वह प्रसग उपस्थित कर दिया है और प्रतिज्ञा धर्म का पालन करने के लिए वे धर्मराज का वध करेंगे।

प्रसंग ने एक कठिन रूप ले लिया है यह स्पष्ट हो गया। श्रीकृष्ण समझ गए कि उनकी, प्रखर बुद्धि और गहरी सूझ की परीक्षा का एक और अवसर आ गया है। अर्जुन द्वारा युधिष्ठिर के वध का अर्थ उनकी जीवन भर की साधना का विनाश होगा। भारत मे धर्मराज्य की कल्पना ही रह जायगी। दुर्योधन और शकुनि भावी पीढ़ी के सम्मुख आदर्श होंगे। उन्होंने अर्जुन से कहा, "पार्थ, ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हें धर्म का ज्ञान नहीं है। इसीलिए तुम धर्म के भ्रम में अधर्म करने पर उतारू हो गए हो। गुरुजनों का वध करने के लिए उनका शरीर नाश ही नहीं करना पड़ता। उनका अपमान ही उनका वध है। प्रतिज्ञापूर्ति के हेतु धर्मराज का वध करना हो तो उन्हें धिक्कारो, उन्हें गालियां सुनाओ, उनका अपमान करो।"

अर्जुन समझ गए। उन्होंने आगे बढ़कर बड़े भाई को सम्बोधित किया, "युधिष्ठिर! तुम मुझे कायर बताते हो। तुम जो कभी शस्त्र चलाना नहीं सीखे। तुम तो साधु होने के लिये हो, युद्ध तुमने कब कब जीते हैं। तुम तो केवल जुआ ही खेल सकते हो, और उसमें भी नहीं जीत सकते। तुमने अपनी पत्नी का अपमान देखा, अपने भाइयों का अपमान देखा, और कभी शस्त्र उठाया! कायरों के समान जंगलों में ही मुंह छिपाते रहे। तुम्हारे मुख में वीरता और पौरुष की बातें शोभा नहीं देतीं।"

सुनकर युधिष्ठिर स्तब्ध रह गये। उन्होंने केवल एक क्षण को नेत्र खोलकर अर्जुन की ओर देखा भर, फिर उन्हें पुनः मूंद लिया। इधर अर्जुन की मुख मुद्रा बदल गयी। कठोरता के स्थान पर ग्लानि आ गयी। क्षण भर स्तब्ध खड़े रह कर उसने पुनः तलवार निकाली श्रीकृष्ण फिर चौंके। बोले, "क्यों पार्थ, अब क्या संकट है? अब तो तुम्हारा प्रण पूरा हुआ?"

"मोहन, मैं आत्म ग्लानि तथा पश्चात्ताप की अग्नि में जला जा रहा हूँ।" अर्जुन ने कहा, "मैंने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ति के आवेश में दूसरे धर्म का नाश कर डाला। अपने देवतुल्य बड़े भाई का अपमान किया। वे मेरे पिता के समान हैं, मेरे सम्राट हैं। उनका अपमान कर यह मुख मैं संसार में कैसे दिखाऊंगा। अतः मैंने निश्चय किया है कि पश्चाताप स्वरूप आत्महत्या करूंगा।"

श्रीकृष्ण ने अपना दाहिना हाथ उठा कर अर्जुन के कन्धे पर रखा और प्रेमपूर्वक दबाया। उनके नेत्र अर्जुन के नेत्रों से आ मिले। मधुर तथा मोहक वाणी से उन्होंने धीरे से कहा, "मित्र, तुम धर्म के भ्रम में अधर्म कर रहे हो। शरीर का नाश करना सबसे बड़ा अधर्म है। शास्त्र का कथन है कि आत्मप्रशंसा आत्म हत्या है। अतः अपने निश्चय की पूर्ति के लिए तुम अपने मुख से अपनी प्रशंसा करो।"

दूसरे ही क्षण युधिष्ठिर के कानों ने सुना, "और सुनो, अपने पराक्रम का परिचय कराता हूं। मैंने ही निवात कवचों का वध किया, स्वयं भगवान शंकर से युद्ध कर उन्हें प्रसन्न किया। चित्रसेन गन्धर्व को परास्त किया। विराट नगर पर हुई लड़ाई में अकेले ही सारी कौरव सेना और महारथियों को परास्त किया। मैं विश्व विख्यात योधा हूं। मेरे बाण से शत्रुओं के प्राण दहल जाते हैं।"

युधिष्ठिर ने नेत्र खोल दिये। वे समझ न सके कि यह सब उनका अनन्य आज्ञाकारी अर्जुन कह सकता है। मर्माहित वाणी से वे केवल इतना ही बोल सके, "अर्जुन तुम ठीक कहते हो। तुम वीर हो और मैं कायर अब या तो मुझे मार डालो अन्यथा मैं वन चला जाऊंगा।" "धर्मराज की वाणी आगे न बढ़ सकी, उनके नेत्रों में अश्रु छलक आये।

तब श्रीकृष्ण ने उनके पलंग पर बैठ कर उन्हें धीरे से उनकी पूर्वोक्त कटूक्ति से उत्पन्न हुआ संकट समझाया और बताया कि अर्जुन ने उनके ही आदेश से यह सब किया है। परिस्थिति तथा श्रीकृष्ण की गहरी सूझ समझते ही युधिष्ठिर चकित हो गये। "भैया" कह कर रोते हुए चरणों में गिरते अर्जुन को उन्होंने संभाला और कहा, "कृष्ण, आज आपने हम दोनों भाइयों को जीवनदान दिया। अर्जुन के बिना मैं भी आत्मघात कर लेता। मैं किस प्रकार कृतज्ञता प्रकट करूं!"

"राजन! कृतज्ञता प्रकट करने के लिए बहुत समय मिलेगा। इस समय तो कर्ण आपकी सेना का नाश कर रहा है। अकेले भीम उसे रोक रहे हैं। अर्जुन का युद्ध भूमि से देर तक अनुपस्थित रहना ठीक नहीं। अतः आप हमें अनुमति दें।"

और कुछ ही क्षण पश्चात पाञ्चजन्य का घोष सुनकर सबने देखा कि वेग से दौड़ते हुए कर्ण के रथ के घोड़ों को धीमा किया। कपिध्वज रणक्षेत्र में आ पहुँचा था।

—×—

५००) पारितोषिक

लेख प्रतियोगिता

'वीर अर्जुन' की ओर से एक लेख प्रतियोगिता आरम्भ की जा रही है। लेख का विषय तथा प्रतियोगिता के नियम नीचे दिये जा रहे हैं। ये नियम प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए मान्य होंगे।

विषय:—भारतीय देशी राज्यों में विलय के पूर्व जनता की जीवन-निर्वाह की स्थिति कहीं अच्छी थी। विलय के पश्चात शासन व्यवस्था राजाओं के स्थान पर जन-नेताओं के हाथ में आ जाने के कारण स्थिति सुधरनी चाहिए थी। किंतु वस्तुस्थिति इसके विपरीत है। राज्य-संघों में आज जनकष्ट कहीं अधिक बढ़ा हुआ है और स्थिति अधिकाधिक बिगड़ती दिखाई देती है। उपरोक्त दृष्टि से निष्पक्ष विचार करते हुए राजस्थान तथा मध्यभारत इन दो राज्यसंघों के जनकष्टों के कारणों की व्याख्या कीजिये।

नियम:—

१. प्रतियोगिता में भाग कोई भी व्यक्ति ले सकता है।

२. प्रतियोगिता में भेजे जाने वाले लेख कागज के एक ओर स्पष्ट व सुपाठ्य अक्षरों में लिखे होने चाहिए। दुष्पाठ्य अथवा अस्पष्ट लेखों को प्रवेश नहीं मिलेगा।

३. भाव प्रकाशन स्पष्ट तथा संक्षेप में हो। यथासम्भव समस्या के सभी अंगों पर विचार किया गया हो

४. जो उदाहरण दिए जायें वे सप्रमाण हों और जो सुझाव प्रस्तुत किये जाय, वे व्यवहार्य हों।

५. प्रतियोगिता में आने वाले सभी लेखों पर 'वीर अर्जुन' का कापीराइट होगा, तथा कोई लेख वापिस नहीं किया जायगा।

६. निर्णायकों का निर्णय अन्तिम रूप से मान्य होगा। निर्णायकों के नामों की घोषणा निकट भविष्य में 'वीर अर्जुन' में प्रकाशित की जायेगी।

७. लेख का विस्तार ३००० शब्दों से अधिक न हो।

८. प्रतियोगिता में भेजे जाने वाले लेखों को 'वीर अर्जुन' कार्यालय में पहुंचने की अन्तिम तिथि ३१ अक्टूबर है।

९. लिफाफे पर 'लेख प्रतियोगिता के लिए' यह स्पष्ट लिखा होना चाहिये।

१०. सर्वोत्कृष्ट लेखक को ३००) रु०, द्वितीय को १००) और तृतीय तथा चतुर्थ को ५०) ५०) रु० की राशि द्वारा सम्मानित किया जायगा। प्रविष्ट लेखों की योग्यतानुसार निर्णायक इस वितरण-व्यवस्था में परिवर्तन भी कर सकते हैं।

भारत में संवाद-प्रेषण व्यवस्था का विकास

इस समय संसार में विज्ञान की प्रगति इतनी क्षिप्र है कि मानव कल्पना शक्ति भी उसकी गति को नहीं पहुँच पाती। यह कथन वितन्तु (बेतार का तार) संवाद प्रेषण के विषय में बहुत ठीक बैठता है, क्योंकि उसके द्वारा समय और दूरी को तो काल्पनिक सूत्र के समान बांध लिया गया है।

अभी १८७० तक भारत संसार से बिलकुल अलग था और नौकाओं के अतिरिक्त विदेशों से सम्पर्क स्थापित करने का और कोई साधन नहीं था, किन्तु एक पीढ़ी बीतने तक भारत अन्तर्वर्ती तारों तथा रेडियो सिग्नलों के द्वारा लाखों शब्दों के सम्वाद विदेशों को भेज चुका था। अब यह अवस्था है कि भारत का संसार के महत्वपूर्ण देशों से टेलीफोन सम्बन्ध है और कुछ ही मिनटों के समय में संवादों को सहस्रों मील दूर भेजने की व्यवस्था विद्यमान है।

संसार के विभिन्न देशों के मध्य सुदूर-सम्वाद प्रेषण व्यवस्था में 'गति' शब्द जितना उपयुक्त और सार्थक है उतना शायद और कोई नहीं। बम्बई में टेलीफोन का चोंगा उठाकर कुछ क्षणों में ही लन्दन में किसी व्यक्ति से बातचीत करना अथवा दिल्ली के तारघर में कुर्सी पर बैठे बैठे खटखटा कर मास्को से सम्पर्क स्थापित करना क्या किसी चमत्कार से कम है! अब तो इतना ही शेष है कि हम टेलीविजन के द्वारा दूर स्थान पर बैठे व्यक्ति को साक्षात देख सकें, किन्तु सम्भवतः इसमें अभी कई वर्ष लगेंगे।

रेडियो तार सर्विस

अन्य देशों के समान भारत में भी १९२७ तक अन्तर्वर्ती तार ही विदेशों का सम्वाद भेजने के माध्यम रहे, किन्तु उसके बाद भारत और ब्रिटेन के मध्य रेडियो तार सर्विस चालू हुई। भारत में रेडियो द्वारा सम्वाद प्रेषण की व्यवस्था के विकास के विषय में यहां कुछ बताना अप्रासंगिक न होगा पहले की राजनीतिक परिस्थितियों में भारत की समुद्र पार सम्वाद प्रेषण व्यवस्था मुख्यतः ब्रिटिश साम्राज्य की आवश्यकताओं तथा हितों को ध्यान में रखकर लन्दन की मार्फत ही की गयी थी। किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अपनी इस व्यवस्था का राष्ट्रीयकरण कर लिया। पहली जनवरी १९४७ को 'इण्डियन रेडियो एण्ड केबल कम्यूनिकेशन कम्पनी' से सरकार द्वारा यह सर्विस अपने हाथ में लिये जाने के बाद से इस क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति हुई है। पहले भारत में केवल दो स्थायी तथा सीधी वितन्तु (बेतार का तार) सर्विस थीं जबकि आज एक दर्जन रेडियो मण्डल (सर्किट) हैं। अब भी इस सर्विस को पर्याप्त नहीं कह सकते क्योंकि अभी कई देशों के साथ तार तथा टेलीफोन का सम्बन्ध लन्दन की मार्फत करना पड़ता है।

समुद्र पार सम्वाद प्रेषण सर्विस की देख-रेख तथा संचालन का कार्य भार केन्द्रीय संचार मन्त्रालय के आधीन है और धीरे धीरे इसमें विकास किया जा रहा है और हमारी सर्विस यूरोप के उन्नत देशों तथा अमेरिका के समान होती जा रही है। भारत सरकार ने इन सर्विसों के विकास के लिये १,००,००,००० रुपये की लागत की एक पंचवर्षीय योजना स्वीकार की है जिसके अन्तर्गत लगभग सब देशों के साथ सम्बन्ध स्थापित हो जायगा। योजना का सब कार्य सम्पन्न हो जाने के बाद पर्याप्त सीमा तक लन्दन पर भारत की निर्भरता कम हो जायगी और इसके साथ ही सम्भवतः राजस्व में भी वृद्धि हो जायगी।

वितन्तु व्यवस्था

एक ओर तो वितन्तु (बेतार का तार) व्यवस्था द्वारा लन्दन की मार्फत

देहली लन्दन सम्पर्क स्थापित करने के पूर्व आपरेटर सतर्क बैठे हैं।

भारत का संसार के लगभग सब देशों से सम्बन्ध है किन्तु दूसरी ओर बम्बई अथवा दिल्ली से न्यूयार्क, मास्को, मेलबोर्न, टोकियो, जकार्ता, शंघाई, बैंकाक तथा काबुल का सीधा सम्बन्ध है।

बम्बई लन्दन सर्विस १९२७ में आरम्भ हुई थी जो अब भी ठीक ढंग से कार्य कर रही है। दिल्ली लन्दन मण्डल (सरकिट) द्वितीय विश्व युद्ध के दिनों में बना था, इसमें काफी सुधार हो गया है और काम में भी ९ से १५ प्रतिशत तक वृद्धि हो गई है।

चीन की स्थिति स्थिर न होते हुए भी भारत ने उस देश के साथ तार द्वारा सीधा सम्बन्ध बनाये रखा है, जो पहले पुकिंग के साथ था और अब शंघाई के साथ है। युद्ध के दिनों में बम्बई तथा टोकियो की सर्विस बन्द हो गई थी, जो अगस्त १९५० से पुनः चालू कर दी गई है।

इस समय बम्बई तथा न्यूयार्क के बीच दो अलग अलग मण्डल (सरकिट) काम करते हैं। पिछले जून में नई दिल्ली और मास्को के बीच सीधी सर्विस आरम्भ की गई जब कि पहले रूस को लन्दन की मार्फत तार द्वारा सवाद भेजे जाते थे। इधर हाल में बम्बई तथा काबुल बम्बई तथा बैडियोंग (इन्डोनेशिया) और बम्बई तथा बैंकाक (थाईलैंड) के मध्य सीधे मण्डल लग गये हैं। युद्ध काल में अस्थाई रूप से चालू किये गये बम्बई मेलबार्न मण्डल को अब स्थायी बना दिया गया है। अब तक बम्बई तथा ईराक, हिन्द चीन, पूर्वी अफ्रीका तथा बर्लिन के बीच सम्बन्ध बनाने के विषय में परीक्षण हो रहे हैं।

रेडियो टेलीफोन

वितन्तु-व्यवस्था की भांति रेडियो टेलीफोन द्वारा भी भारत लन्दन की

[शेष पृष्ठ १४ पर]

लन्दन और मास्को के लिए रेडियो वितन्तु की व्यवस्था

मुरली की मधुरध्वनि व पांचजन्य

भारत के महान कर्म

आज से लगभग पांच सहस्र वर्ष पूर्व भयंकर घन गर्जन तथा प्रकृति के भीषण संघात के बीच कारा के निविड़ अन्धकार में राष्ट्र की सनातन आत्मा भगवान कृष्ण के रूप में प्रकट हुई। कंस के कारागार में एक ऐसा पुण्य प्रकाश उतरा, जिसने युग-युग तक के लिए समस्त भूमण्डल को आलोकित कर दिया। पृथ्वी पर हर्ष की हिलोर दौड़ गई। जड़ चेतन प्राणवान हो उठे। रौद्ररूप प्रकृति ने भी निमिष भर के लिये रिमझिम रिमझिम बूंदें बरसाकर मंगलगान किया। हवा के एक ही झकोरे से कारागार के द्वार खुल गये। वासुदेव और देवकी ने विस्फारित नेत्रों से इस अप्रतिहत प्रतिभा वाले अद्भुत बालक को देखा और कहा कि इस छोटे से बालक को तो जन्म से ही आसुरी बन्धन स्वीकार नहीं हैं।

इस मधुर दैवी वेला में असुर सो गये। मानो दैवी शक्ति के प्रादुर्भाव से ही आसुरी शक्तियां लुप्त हो गई। विश्वात्मा की महामाया के समक्ष कंस की आसुरी माया नष्ट हो गई। इस महाकाल की रात्रि में ही जब कालिंदी भी अपने कूल कगारों को तोड़ने के लिये मचल रही थी, वासुदेव ने राष्ट्र की इस आशा किरण को गोकुल में पहुँचा दिया।

बस फिर क्या था। राष्ट्र की महान शक्ति, गीता का सतत कर्मशील जीवन ब्रज की धूल में लोट लोट कर बड़ा होने लगा। यमुना के कगारों और ब्रज के सघन वन कुंजों में कृष्ण लीला की प्रतिच्छाया दृष्टिगोचर होने लगी। ब्रज भूमि के आबाल, वृद्ध, नर-नारी कृष्ण की बांसुरी की मधुर तान से अपनी सुध बुध खो बैठे।

बाल्य काल

जिस असाधारण बालक का अवतार ही भीषण बाधाओं और संकटों के बीच हुआ उसका बालकाल भी कहां शान्ति से बीत सकता था। भावी राष्ट्र की इस आशा किरण नन्हें से बालक को राहु के समान ग्रसित करने के लिए समस्त आसुरी शक्तियां एक साथ ही नाना भांति के षड्यन्त्र करने लगीं। कुरुक्षेत्र के विशाल रणांगण में गीता के जिस सतत कर्ममय सन्देश ने राष्ट्र की प्रसुप्त आत्मा को झकझोर कर जगा दिया, वही सन्देश मानों इस बालक के जीवन में जन्म से ही प्रस्फुरित होने लगा।

योद्धा कृष्ण

सं

उद्धार का सूत्रपात्र

आसुरी विपत्तियों को इतने उग्र-रूप में सामने देखकर भी बाल कृष्ण विचलित नहीं हुये। अपनी अद्भुत संगठन शक्ति तथा महामानवीय व्यवहार से उन्होंने ब्रज के ग्वालबालों में सदाचार और निर्भीकता का महामन्त्र फूंक दिया। नन्द सब प्रकार से साधन सम्पन्न थे, किन्तु कृष्ण ने गांव के अपढ़ और भोले भाले ग्वालबालों को साथ लेकर गोपालन जैसा महत्वपूर्ण कार्य अपने हाथों में लिया। गोपालन उस समय राष्ट्र की महान आवश्यकता थी, क्योंकि थोड़ी दूर पर ही मथुरा के निरंकुश शासक कंस ने गो वंश को नष्ट करने की प्रतिज्ञा सी कर ली थी। कंस के अतिरिक्त गोकुल के आस-पास कंस जैसी आसुरी वृत्ति के और भी लोग रहते थे। कृष्ण ने अपने बाल संघ द्वारा असुरों को भी नष्ट किया और आसुरी वृत्ति को भी। कृष्ण के निष्कपट और प्रेमपूर्ण व्यवहार के कारण गोकुल के समस्त नर-नारी कृष्ण के इंगित मात्र से ही अपना सर्वस्वार्पण करने के लिए प्रस्तुत हो गये। इनके

गोपाल कृ

का जयघोष आज भी गूंज रहा है
योगी भगवान कृष्ण

न का सूत्रपात

कहने पर ही गोकुल में युग-युगान्तर से चली आ रही इन्द्र पूजा को समाप्त कर गोकुलवासियों ने गोवर्धन पूजा प्रारम्भ की।

नवजीवन संचार

प्राचीन परम्पराओं और रूढ़ियों को तोड़ना एक साधारण कार्य नहीं है, किंतु कृष्ण ने बाल्यकाल से ही समाज की जीर्ण-शीर्ण रूढ़िवादी शृंखलायें तोड़ कर नवीन मर्यादायें स्थापित कीं। नन्द के आंगन में खेलते, कदम्ब की छाया में बंसी बजाते, ग्वालबालों और गायों की टोली कहीं भी वे ध्येय और कर्तव्य को नहीं भूले। देश किस प्रकार समृद्धशाली बने, वाह्यान्तरिक शत्रुओं से किस प्रकार मुक्त रहे, इस बात की उन्हें सदैव ही चिन्ता थी और इसी महान् एकनिष्ठ भावना से प्रेरित होकर उन्होंने व्यक्तिगत अहंभाव और मान-मर्यादाओं को त्याग कर व्यक्ति-व्यक्ति के जीवन में ही नहीं, उसकी आत्मा में प्रवेश किया। कठिनतम परिस्थियों में भी नवीनता और ग्लानि को पास नहीं फटकने दिया। संघर्षपूर्ण जीवन में भी केवल वाणी से ही नहीं, कर्म से उन्होंने सौंदर्य और प्रेम की परिभाषा की। कृष्ण का बालचरित्र काव्य की भांति मधुर और संगीतमय है। युग-युगान्तर से भक्त कवि उनके पावन बाल चरित्र को गाते गाते नहीं अघाते हैं। नवधा भक्ति के विविध प्रकारों से आराधना करके भी भक्त हृदय को सम्पूर्ण शान्ति नहीं मिलती, जब तक कि वह कृष्ण के बाल चरित्र को स्मरण कर तन्मय एवं विभोर नहीं हो जाता। ऐसा सरस और भावपूर्ण था कृष्ण का बाल जीवन।

मथुरा गमन

गोकुल छोड़ कर मथुरा में आना कृष्ण के जीवन की और साथ ही राष्ट्र के इतिहास की भी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना है।

मथुरा से कंस द्वारा कृष्ण के लिए बुलावा आया। कृष्ण के होठों पर एक सरस मुस्कान दौड़ गई। अंग अंग खिल उठा, हृदय पुलकित हो उठा। यही तो उपयुक्त अवसर था उस महापराक्रमी, किन्तु आततायी और निरंकुश कंस को नष्ट करने का। देखते-देखते ही गोकुल के समस्त ग्वाल-बाल कृष्ण के पास आदेश की प्रतीक्षा में आकर खड़े हो गये। कृष्ण का गोकुल छोड़ कर जाना गोकुलवासियों को प्रिय न था। भला जिस भूमि के एक-एक कण-कण से कृष्ण का आत्मीयता का सम्बन्ध हो गया था। जिस मिट्टी में लोट-लोट कर उन्होंने अपनी बाल-लीला समाप्त की थी, उस भूमि पर निवास करने वाले चेतन प्राणी कृष्ण के मथुरा गमन का समाचार सुन कर क्यों न व्याकुल हो उठते, जबकि गोकुल की गायें और बछड़े भी दारुण दुःख का अनुभव कर रहे थे। कृष्ण के लिए एक महान् धर्म संकट उपस्थित हो गया। एक ओर राष्ट्रीय कर्तव्य था दूसरी ओर मन की समस्त कोमल भावनाओं से ओत-प्रोत मानवीय प्रेम। किन्तु भावना से कर्तव्य ऊंचा है, यह जानकर ही उन्होंने राष्ट्रीय कर्तव्य को सर्वोपरि समझा। एक ओर गोकुल के नर-नारी, स्वयं यशोदा और नन्द अपनी सुध-बुध खोये आत्मविस्मृत से खड़े थे, दूसरी ओर कृष्ण का रथ मथुरा की ओर द्रुतगति से बढ़ा जा रहा था। बाद में कृष्ण देश की परवर्ती राजनीति में इतनी बुरी तरह उलझ गये कि उन्हें पुनः गोकुल में एक बार भी आने का अवसर नहीं मिला। मन और चित्त की समस्त वृत्तियों के साथ उन्होंने गोकुल वासियों से प्रेम किया और अवसर आने पर कर्तव्य के आह्वान पर समस्त मोह ममता छोड़ कर वे चल पड़े। ऐसा था संसार में जल कमलवत रहने वाला वह निष्काम कर्मयोगी कंस जैसे शक्तिशाली और साधन सम्पन्न शासक को परास्त करने के लिये न उनके पास विशाल सुसज्जित सेना थी न ही युद्ध शस्त्रास्त्र। किन्तु

[शेष पृष्ठ १८ पर]

ध्यानावस्थित कृष्ण

न्न

भारत में संवाद-प्रेषक व्यवस्था का विकास

[पृष्ठ १५ का शेष]

मार्फत संसार के लगभग सब देशों से सम्बन्धित है। इसके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय टेलीफोनी के द्वारा भारत का इंडोनेशिया, मिश्र तथा ईरान से सीधा सम्बन्ध है। इस वर्ष मार्च महीने में प्रथम एशियाई खेलों के दिनों में बम्बई तथा टोकियो के बीच अस्थायी रूप से रेडियो टेलीफोन का सीधा सम्बन्ध स्थापित हुआ था। अब जापान इस सर्विस को स्थायी बनाने के लिये उत्सुक है।

संवाद प्रेषण के कार्यों से फुर्सत होने की अवस्था में समुद्र-पार रेडियो टेलीफोन सर्विस को अखिल भारतीय रेडियो के कार्यक्रमों के अन्तर्गत अन्तर्देशीय वादविवादों एवं वार्तालापों के लिए भी काम में लाया गया है।

एक साथ कई स्थानों के लिए समाचार तथा सरकारी विज्ञप्तियों को प्रसारित करने की व्यवस्था पिछले दो वर्षों से बहुत कुशलतापूर्वक चल रही है। विदेशों में अपने दूतावासों में समाचार आदि इसी प्रकार भेजे जाते हैं। इस समय एशिया, आस्ट्रेलिया, ईस्ट इंडीज, लंका, अफ्रीका तथा यूरोप में १६ ऐसे केन्द्र हैं जहां हमारे इन प्रसारणों को ग्रहण करने की व्यवस्थाएं हैं।

इसके अतिरिक्त रेडियो-फोटो तार के द्वारा हस्तलिपियों, चित्रों, प्रामाणिक कागज-पत्रों तथा हाथों के बने चित्रों को विद्युत संकेतों द्वारा भेजा जाता है। यह सर्विस बम्बई से लंदन, आस्ट्रेलिया, न्यूयार्क तथा सान-फ्रांसिस्को के लिये हैं। एशियाई खेलों के दिनों में ३ से १२ मार्च तक चित्र भेजने के लिये बम्बई से टोकियो के बीच अस्थायी रूप से एक-तरफा सर्विस आरम्भ की गई थी।

समुद्र-पार संवाद-प्रेषक सर्विस द्वारा समुद्री तार (केबल) सर्विसों का संचालन किया जाता है। जो विदेश भेजे जाने वाले तार विद्युत संकेतों द्वारा नहीं भेजे जाते उन्हें समुद्री तारों द्वारा भेजा जाता है। भारत से समुद्री तारों की तीन शृंखलाओं का संचालन होता है, जो ये हैं (१) बम्बई अदन पोर्ट सूडान - एलेग्जेंड्रिया - माल्टा - जिब्राल्टर-लंदन, (२) बम्बई-अदन-मोम्बासा-जंजीबार-साईचिलीज, तथा (३) मद्रास-पेनांग-सिंगापुर।

समुद्रपार केवल सर्विसें

समुद्र-पार संवाद-प्रेषक सर्विस डाक तथा तार विभाग के सहयोग से कलकत्ता तथा बम्बई के बीच टेलीप्रिंटर लाइन का संचालन भी करती है, जिसके द्वारा पूर्वी भारत से विदेशी संवादों को शीघ्रतापूर्वक प्रेषित तथा प्राप्त किया जाता है। इसी प्रकार बम्बई तथा दिल्ली के बीच एक रेडियो टेलीग्राफ सर्विस भी आरम्भ की गई है।

दिल्ली से सीधे लंदन तथा मास्को के लिये तथा बहुत से स्थानों के लिए एक साथ संवाद प्रसारित करने की जिन विद्युत संवाद (वायरलैस टेलीग्राफ) सर्विसों का संचालन होता है उनको और उत्तम तथा विस्तृत करने के सम्बन्ध में विचार किया जा रहा है। आशा है शीघ्र ही इस कार्य में पर्याप्त सहायता मिल सकेगी।

नारी जीवन

श्रीकृष्ण तथा तत्कालीन नारी समाज

[श्रीमती सुशील कुमारी]

समाज की आन्तरिक दुर्बलता तथा राजनैतिक अदूरदर्शिता के फल स्वरूप आज हमारे समक्ष अपहृत नारियों की समस्या भयंकर रूप से आई है। आततायियों के चंगुल से छुड़ाई गई महिलाओं को समाज में किस प्रकार ग्रहण किया जाय जिससे उनका गौरव पूर्ववत बना रहे, तथा जिससे सामाजिक आदर्शों में भी किसी प्रकार का अन्तर न आय, यह एक गम्भीर समस्या बन गई है।

इतिहास बताता है कि समाज को इस प्रकार की संकटपूर्ण स्थिति का सामना समय २ पर करना पड़ा है, और उसके निवारण का उपाय भी तत्कालीन युग पुरुष करते रहे हैं। कृष्ण के समय में भी न्यूनाधिक आज की सी ही स्थिति विद्यमान थी।

कन्याओं का उद्धार

नरकासुर ने अपने बन्दीगृह में १६१०८ आर्य कन्याओं को बलपूर्वक डाल रखा था। तत्कालीन बलशाली राजा भी नरकासुर के प्रभाव से आतंकित थे, इस लिये नरकासुर के बन्दीखाने से उन महिलाओं को नहीं छुड़ाया जा सका। कृष्ण ने जिनका जन्म ही असहायों की सहायता कर उनको आततायियों के पंजों से छुड़ाने के लिये हुआ था नरकासुर का वध कर उन आर्य कन्याओं का उद्धार किया। नारी सम्मान की रक्षा हमेशा ही कृष्ण के जीवन का एक महत्वपूर्ण कार्य रहा है। नारी जाति को शत प्रतिशत विश्वास था कि कृष्ण के रहते हुए उनके गौरव और सतीत्व पर किसी भी प्रकार की आंच नहीं आने पायेगी।

कन्याओं का उद्धार अवश्य हुआ किन्तु कृष्ण को एक समस्या का हल करने के पश्चात् एक अन्य समस्या में उलझ जाना पड़ा। तत्कालीन समाज की आज की ही भांति अपनी कुछ नैतिक और सामाजिक मर्यादायें थीं जिनसे लेशमात्र भी हटना समाज के रूढ़िवादी संस्कारों में पले व्यक्तियों को प्रिय नहीं था।

यह एक निर्विवाद सत्य है कि समाज के निर्माता व्यक्ति विशेष ही होते हैं जन साधारण नहीं। इसी प्रकार समाज की प्राचीन मर्यादाओं को समाप्त कर नई मर्यादायें स्थापित करने का कार्य भी कुछ व्यक्ति विशेष ही करते हैं, जिनकी वर्तमान से ऊपर उठकर भविष्य के पर्दे को फाड़कर देख लेने की अद्भुत दिव्य शक्ति होती है।

कृष्ण ने नरकासुर के बन्दीखाने से महिलाओं का उद्धार कर उनके अभिभावकों को नाना भांति की नीतियों द्वारा समझाने का प्रयास किया और अन्त में जब उन्हें इस कार्य में सफलता नहीं मिली। तब उन्होंने स्वयं ही उन महिलाओं का वरण किया।

समाज की तत्कालीन मर्यादाओं को तोड़कर कृष्ण जैसे महान् लोकनायक ही ऐसा कर सके।

नारी रक्षक

नारी के सम्मान और गौरव की रक्षा के लिये कृष्ण ने आपत्तियों और विघ्नों के बीच भी अथक प्रयत्न किया। तत्कालीन नारी समाज की दयनीय अवस्था तथा परावलम्बी स्थिति के होते हुये भी कृष्ण ने प्रत्येक प्रसंग पर नारी के प्रति अपने विशाल दृष्टिकोण का परिचय दिया है।

महाभारत और कृष्ण

महाभारत भारत भूमि पर लड़े जाने वाला एक ऐसा युद्ध था जिसका प्रभाव परवर्ती सामाजिक और राजनैतिक जीवन पर सहस्त्रों वर्ष तक रहा। महाभारत के अन्य कारण चाहे कुछ भी हों किन्तु इस महासंग्राम की पृष्ठ भूमि में नारी सम्मान की रक्षा का प्रश्न ही विशेष रूप से रहा। द्रोपदी के व्यंग वाक्य से क्षुभित दुर्योधन ने भरी सभा में द्रोपदी का अपमान करने की ठान ली, तो इधर द्रोपदी के अपमान से क्रुद्ध भीम ने दुर्योधन की जंघा का रक्त पीने की प्रतिज्ञा कर डाली। दुर्योधन ने ही पहिले अपनी प्रतिज्ञा का पालन कर द्रोपदी को भरी सभा में अपमानित करना चाहा। भीम की गदा और अर्जुन के गाण्डीव के रहते भी जब कोई शक्ति द्रोपदी की के सम्मान की रक्षा नहीं कर सकी। तब कृष्ण ने ही द्रोपदी की रक्षा उस समय की प्रतिकूल परिस्थिति में भी की।

नारी की स्थिति

द्रोपदी की घटना से स्वभावतः ही हृदय में प्रश्न उठता है — क्या नारी की अपनी मानमर्यादा, अथवा कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है जो उसको किसी भी समय जड़ पदार्थ की भांति किसी को भी सौंपा जा सकता है। कृष्ण का व्यक्तित्व एक असाधारण व्यक्तित्व था। कृष्ण ने समाज में प्रचलित नारी के प्रति उपेक्षा के दृष्टिकोण को आमूल परिवर्तित करने का निरन्तर उद्योग किया।

महाभारत के पश्चात

महाभारत के अवसान पर एक ओर पाण्डव शिविरों में हर्षोन्माद अपनी चरम सीमा पर था। अपनी विजय से उन्मत्त पाण्डव पक्ष के नायक नाना भांति के विजयोत्सव में लीन थे। दूसरी ओर एक करुण क्रन्दन और हृदयविदारक चीत्कारों की आवाजें सुनाई पड़ रही थीं। वह करुण क्रन्दन और चीत्कारें थीं उन असहाय महिलाओं की जिनके पति अथवा पुत्र युद्ध भूमि में मारे गये थे। उन आहत हृदया महिलाओं में १०० पुत्रों की माता गान्धारी ही सर्वाधिक व्यथित प्रतीत हो रही थी। कृष्ण को सम्मुख देखकर गान्धारी का क्रोध

(शेष पृष्ठ २० पर)

राधा-कृष्ण नृत्य की दो आकर्षक मुद्रायें

व्यावसायिक चुनाव

[पृष्ठ २ का शेष]

पेशों को करने वाले विरले ही फलते-फूलते देखे जाते हैं।

इसके विपरीत, उन पेशों को लीजिए जिनके साथ संसार की सद्भावना जुड़ी है। अध्यापक, पुजारी, पादरी, लेखक, प्रचारक, समाज-सुधारक, क्लर्क दूकानदार, किसान, मजदूर, ग्वाला जुलाहा इत्यादि व्यक्तियों के ऐसे पेशे हैं, जिनके साथ समाज की सद्भावनाएं जुड़ी हुई हैं। इनसे सामाजिक प्रतिष्ठा तो होती ही है, साथ ही मनुष्य को समाज का प्रेम, सहानुभूति, उदारता इत्यादि आत्मिक भावनाएं भी प्राप्त होती हैं। परोपकार और सेवा पर टिके हुए सभी व्यवसाय उपयोगी और अच्छे हैं। सेवा और परोपकार का क्षेत्र तो अपरिमित है। लोगों की स्वार्थ-भावना और नाजायज फायदा उठाने की प्रवृत्ति ने समाज के कुछ व्यवसायों को बदनाम कर दिया है। इस स्वार्थ-भावना के कारण नागरिकों में पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष फूट और कलह-वृद्धि होती है। राष्ट्रीय नेता, वैज्ञानिक आविष्कारक, कवि, चित्रकार, धर्मोपदेशक, कलकारखाने के कारीगर, सार्वजनिक कर्मचारी, इत्यादि के साथ जन-समुदाय की भलाई, समाजहित, सेवा, परोपकार की कल्याणकारी भावनाएं मिली हुई हैं। प्रत्येक व्यक्ति इन्हें हृदय से प्यार करता है और शुभ कामनाएं देता है। सद्भावनाओं, शुभ आशीर्वादों के प्रताप से वे पेशे कम आमदनी के होते हुये भी फलते-फूलते हैं। कम पैसा मिलने पर भी इनके कार्यों में बरकत होती है।

व्यवसाय के नये आदर्श

यदि आप अफसर हैं, ऊंचे ओहदे पर बैठे हुए हैं, सरकार के अंग हैं, तो जनता पर रोब गांठना, डांटना फटकारना, स्वार्थ-सिद्ध, भेंट, रिश्वत नाजायज लाभ उठाना छोड़ दीजिए। जनता के मनोभावों की अवहेलना कदापि न कीजिए। दूसरों की उत्तम या निकृष्ट मनोभावनाओं का अच्छा या बुरा प्रभाव अवश्य पड़ेगा। जिन-जिन पेशों में दूसरे का मन दुखाया जायेगा, निर्धनों और गरीबों की मूक आहें, बददुआयें गालियां पड़ेंगी, उनके करने वाले रोते-चिल्लाते और अतृप्त दिखाई पड़ेंगे। ऐसे दूकानदार जो कूड़ा करकट मिलाकर चीजें बेचते हैं, या कम तोलते हैं, आखिरकार घाटे में ही रहते हैं। जो आमदनी, ईर्ष्या, द्वेष, छल-कपट, संकीर्णता, बेईमानी, और कलह से खींची गई है, वह व्यर्थ जायेगी। न्याय और ईमानदारी से कमाया हुआ धन ही वास्तविक समृद्धि प्राप्त करेगा।

सूदखोर बनिये, कलाली कसाई इत्यादि क्या कभी आज तक आनन्दित हुए हैं? स्वार्थमय विचारधारा वाले वकील, डाक्टर, पूंजीपति, मुनाफेखोर, कंजूस बनिए, गरीबों का रक्त शोषण करने वाले बेईमान जमींदार कभी फल-फूल नहीं सकते। कपट और स्वार्थ जब पेशे में घुसता है, तो अशांति उत्पन्न कर देता है। मैंने अनेकों बार देखा है कि हरे वृक्ष काटने वाला, कसाई को गाय बेचने वाला, बकरे, मुर्गी, अंडे, कबूतर, मांस, मछली बेचने वाले व्यापारी सदा दुःखी रहते हैं। जो पति पत्नी पर अत्याचार करते हैं, या जो अफसर मातहतों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं, वे कभी समृद्धिशाली नहीं होते।

—x—

[पृष्ठ ८ का शेष]

जरासन्ध को मरवाया नरकासुर को मार कर सहस्रों स्त्रियों का उद्धार किया और भ्रष्ट हुई स्त्री को कोई आदर नहीं देता अतः बलात् भ्रष्ट की गयी उन नारियों को समाज में आदर दिलाने के लिए स्वयं उन सब से विवाह कर लिया।

राष्ट्र योजना

अनेको राज्यों को बनाने और मिटाने की क्षमता रखते हुए भी स्वयं अपने लिए राज्य कहीं भी नहीं लिया। पाण्डवों के रूप में उन्हें ऐसे लोग मिले जो धर्म की के रक्षा लिये अपना सर्वस्व खोने को तत्पर थे, जिनमें संसार को जीतने की शक्ति थी किन्तु उनकी वह अजेय शक्ति धर्म के बन्धन से बंधी थी। उन्हीं को आगे कर श्रीकृष्ण की राजनीति चली। राजसूय यज्ञ उन्हीं की योजना थी, किन्तु दुर्योधन तथा शकुनि के कुचक्र ने वह योजना विफल कर दी। अतः कुरुक्षेत्र में उन्होंने राष्ट्र जीवन का सारा मैल धो डालने की योजना बनाई, और पाण्डव जैसे भोली बुद्धि के लोग दुर्योधन जैसे कपटी से धूर्तता में नहीं जीत सकेंगे यह विचार कर स्वयं पाण्डवों के सारथी बने।

आदर्श जीवन

अर्जुन की कायरता का अर्थ था श्रीकृष्ण की सम्पूर्ण जीवन की साधना की समाप्ति। इसीलिए अर्जुन के सम्मुख उन्होंने अपना जीवन ही संक्षेप में रख दिया। इस प्रकार युधिष्ठिर को चक्रवर्ती सम्राट बनाकर स्वयं भी उनके आधीन बन गये। धर्म की जैसी मर्मज्ञता श्रीकृष्ण के जीवन में दिखाई देती है ऐसी भीष्म पितामह अथवा महर्षि वेदव्यास के जीवन में भी नहीं है। गीता कर्मयोग का महान शास्त्र है और उसके रूप में श्रीकृष्ण के जीवन की अनन्त गम्भीरता हमारे संमुख है। बड़े बड़े सम्राटों को भी धूल में मिलाने की सामर्थ्य रखने वाला धर्म के स्तम्भ ऋषियों तथा मुनियों के चरण धोने का काम ही अपने सिर लेता था। भारतीय जीवन के कण कण पर श्रीकृष्ण की छाप है। उनके महान आदर्श को आज सम्मुख रखने की आवश्यकता है।

महत्वपूर्ण लेख माला—५

स्वतन्त्र मिश्र भी ब्रिटेन के चंगुल में पड़ा छटपटा रहा है

मिश्र का संघर्षपूर्ण जीवन

★ नारस यागी

श्री नहसपाशा

ब्रिटेन का साम्राज्य प्रायः समाप्ति पर है। उसके साथी नित्यप्रति उससे अलग हो रहे हैं। ब्रिटेन की क्षीण शक्ति होने के कारण उसके आश्रित भी दिन प्रतिदिन उसे धमकी दे रहे हैं। यह आश्रित देश अपनी खोई हुई स्वतन्त्रता को फिर पाना चाहते हैं। मिश्र भी इन्हीं परतन्त्र राष्ट्रों में से एक है। वह भारत बर्मा, पाकिस्तान की भांति पूर्ण स्वतन्त्रता चाहता है। आज उसे ब्रिटेन के अंकुश का कोई भय नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति भी आज मिश्र की सहायक है। रूस के समीप होने के कारण ब्रिटेन व उसका साथी अमेरिका कोई कड़ा कदम उठाने से डरते हैं। अमेरिका मिश्र को प्रसन्न करने के लिए चार सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत सहायता देना चाहता है।

मिश्र विश्व के सबसे महत्वपूर्ण जल मार्ग के समीप है। १०० मील की स्वेज नहर आज ब्रिटेन व अमरीका के लिए सिर दर्द बन गई है। मिश्र ने इस जल मार्ग पर अपना अधिकार प्रदर्शित किया है। वह इसको मुक्त नहीं रखना चाहता है।

ब्रिटेन व अन्य राष्ट्रों ने मिश्र के इस अधिकार पर सन्देह प्रकट किया है। सुरक्षा परिषद् से भी मिश्र के विरुद्ध एक प्रार्थना की गई है। ब्रिटेन के प्रतिनिधि सर ग्लैडवन जैब के अनुसार मिश्र शांतिकाल में नहर को बन्द नहीं कर

शाह फारूक

सकता। सुरक्षा परिषद् का निर्णय चाहे कुछ भी हो। मिश्र उसे मानने के लिए बाध्य न होगा। ईरान ने अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के निर्णय को ठुकरा दिया है। मिश्र भी यदि संयुक्त राष्ट्र-संघ के निर्णय को ठुकरा दे तो कोई आश्चर्य न होगा।

मिश्र की स्थिति

मिश्र में पूर्व व पश्चिम की सभ्यता का सामंजस्य होता है। वह प्राचीन व नवीन देशों के मध्य एक कड़ी है। अफ्रीका एशिया व यूरोप के मध्य स्थित होने के कारण यह प्रदेश सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भूतकाल में मिश्र के मार्ग द्वारा उत्तरी अफ्रीका के काफले एशिया के समृद्ध देशों में व्यापार करने के लिए आते थे। आज भी यह प्रदेश पूर्व व पश्चिम के हवाई मार्गों का महत्वपूर्ण केन्द्र है।

मिश्र अपने पड़ोसी देशों की भांति दीर्घकाल से साम्राज्यवादी मनोवृत्ति का शिकार रहा है। तृतीय महायुद्ध समीप है। प्रत्येक दल अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए लालायित है।

रूस के समीप होने के कारण पश्चिमी राष्ट्र कोई भी अवाञ्छनीय कदम उठाने से डरते हैं। मिश्र का इतिहास वीरतापूर्ण है। मिश्र की स्थापना एक मनुष्य के श्रम का प्रतिफल है। शाह मोहम्मद ने सर्वप्रथम मिश्र के राज्य की स्थापना की थी। परिस्थितियों के चक्र में पड़ कर यह देश अपनी स्वतन्त्रता को बैठा। फ्रांस व ब्रिटेन के एक लम्बे संघर्ष के पश्चात् इस पर ब्रिटेन का अधिकार हो गया। आज ब्रिटेन की शक्ति युद्ध पूर्व स्तर पर नहीं है। अपनी दयनीय परिस्थिति व अन्तर्राष्ट्रीय कारणों से

श्री मारीसन

उसे अनेकों प्रदेशों को छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा है। मिश्र के राजनीतिज्ञ ब्रिटेन की इस कमजोरी का पूरा लाभ उठाना चाहते हैं।

इतिहास

मिश्र पर अनेक बार बाहरी शक्तियों द्वारा आक्रमण किया गया। १८०५ में मिश्र में टर्की का साम्राज्य समाप्त हो चुका था। कुछ समय पश्चात् उस पर फ्रांसीसियों का अधिकार हो गया। अंत में १८८२ में अंग्रेजों ने इस प्रदेश से फ्रांसीसियों को बाहर खदेड़ कर अधिकार कर लिया। तब से लेकर आज तक ब्रिटेन सब प्रकार से इस देश का शोषण करता रहा है। मिश्र को आंशिक अर्थों में स्वतन्त्रता अवश्य प्राप्त हो चुकी है। आज मिश्र ब्रिटेन की बदली हुई परिस्थिति के कारण राष्ट्रीय भावना के वशीभूत होकर स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए लालायित है।

(शेष पृष्ठ २० पर)

भारत के महान कर्मयोगी भगवान कृष्ण

(पृष्ठ १२ का शेष)

हृदय में अदम्य उत्साह तथा आत्म-विश्वास लिये अपनी अपूर्व संगठन शक्ति के बल पर विजित बाल सेना को लेकर वे निर्भीक कंस के दरबार में पहुंच गये और शीघ्र ही कंस को सेना सहित मारकर मथुरावासियों को आततायियों के चंगुल से छुड़ाया। फिर स्वयं मथुरा पर शासन न कर उग्रसेन को राजगद्दी सौंपकर स्वयं जीवन के अन्य महान् कर्तव्यों की ओर मुड़े।

राजनीति में प्रवेश

अवतरण से अवसान तक कृष्ण का जीवन एक महान कर्मयोगी, देशभक्त तथा लोक संग्राहक का जीवन रहा है। जन्म से पूर्व ही मानों उनकी कर्तव्य दिशा निर्धारित हो चुकी थी और जन्म लेते ही वे जीवन के विशाल रणक्षेत्र में एक वीर योद्धा की भांति पैठ गये। जीवन पर्यन्त निष्काम भाव से संघर्षरत रहे और अन्त में कुरुक्षेत्र के मैदान में पाञ्चजन्य के तुमुल घोष के साथ कर्मरत जीवन का अमर सन्देश दे गये जिससे भारतीय जीवन आज तक अनुप्राणित है।

मथुरा में कंसादि का वध करके उन्होंने सन्तोष की सांस भी न ले पाई थी कि जरासिन्ध ने मथुरा पर आक्रमण कर दिया। मथुरा की संगठित जन-शक्ति ने उसका डटकर सामना किया और उसे सोलह बार खदेड़ दिया। अन्त में यह जानकर कि कृष्ण के व्यक्तित्व से चिढ़ कर ही जरासिन्ध बार बार मथुरा पर आक्रमण करता है, उन्होंने देश हित के लिए मथुरा छोड़ना ही लाभप्रद समझा और द्वारकापुरी को राजधानी बनाने का निश्चय किया, किन्तु कर्तव्य की प्रेरणा उन्हें हस्तिनापुर (देहली) खींच लाई जहां कौरवों और पाण्डवों के पारस्परिक मतभेदों ने युद्ध की पृष्ठ भूमि तैयार कर दी थी और न मालूम किस क्षण विस्फोट हो जाये इसका किसी को आभास नहीं था। कृष्ण ने दूरदर्शिता पूर्वक देश की वास्तविक स्थिति को पहचान लिया था और तदनुसार ही हस्तिनापुर में एक शक्तिशाली संगठित केन्द्रीय शासन सत्ता स्थापित करने की ठान ली।

कुरुक्षेत्र की रणभूमि में

भगवान कृष्ण ने सब प्रथम इस बात का पूरा पूरा प्रयत्न किया कि किसी प्रकार एक ही रक्त मांस के बने हुए बान्धवों के रक्तपात बिना ही पारस्परिक समस्यायें सुलझ जायें। किन्तु उनका प्रयत्न विफल रहा और युद्ध ठनकर ही रहा। परिणाम सर्वविदित है।

महाभारत भारतीय इतिहास की शौर्य से भरी रोमांचपूर्ण कहानी है, जिसका अन्तिम परिणाम सर्वनाश के रूप में प्रकट हुआ, किन्तु इससे देश के शत्रुओं का विनाश अवश्य हो गया। महाभारत की घटनाओं को क्रमबद्ध अवलोकन करने से कृष्ण का व्यक्तित्व ही ऐसा केन्द्र बिन्दु प्रतीत होता है जिसने अपने चारों ओर एक महान आलोक निर्माण किया था। वह महान आलोक जिससे देश के शत्रुओं और धर्मनाशकों के हृदय कांप उठते थे, भयातुरों को सान्त्वना मिलती थी। देश के नारीवर्ग को विश्वास था कि कृष्ण के रहते हुए उनके सतीत्व और मान मर्यादा पर आंच नहीं आयेगी। कृष्ण ने महाभारत में सक्रियरूप से भाग नहीं लिया किन्तु इस सत्य से कौन विमुख हो सकता है कि महाभारत में पाण्डवों की विजय कृष्ण की विजय थी। और कृष्ण की विजय सत्य और धर्म की विजय थी।

भारतीय जीवन प्रणाली सभ्यता संस्कृति तथा दर्शन पर जितना व्यापक प्रभाव कृष्ण का पड़ा उतना राम को छोड़कर और किसी महापुरुष का नहीं पड़ा। विद्वानों ने उनके जीवन कार्यों का अनुशीलन किया, कलाकारों ने जीवन से प्रेरणा प्राप्तकर संगीत नृत्य तथा चित्रकला की दिशा में न मालूम कितनी प्रगति की। भारतीय जीवन का एक-एक अंग पर, भारत के कण-कण पर भगवान कृष्ण के अमर जीवन की अमिट छाप है।

कृष्ण जन्मोत्सव के इस मंगलमय पुनीत अवसर पर हम कृष्ण के पावन चरित्र का यदि अनुशीलन करें और उस का अनुकरण करें तो हमारे आज राष्ट्रीय जीवन पर जो विपत्ति के प्रलयकारी मेघ छाये हुये हैं, वे क्षण भर में इधर उधर बिखर जायेंगे, इसमें कोई सन्देह नहीं है। — श्री सुरेशचन्द्र मित्र

— × —

बाल-बन्धु परिषद

प्रिय बन्धुओ!

बहुत प्रसन्नता की बात है कि तुम बाल बन्धु परिषद् के लिए बड़े उत्साह से रचनायें भेज रहे हो। बहुत-सी रचनायें तो छप जाती हैं, पर जो नहीं छपतीं, उनमें भेजने वालों की कोई असावधानी होती है। इसीलिये इस पृष्ठ पर रचनाएं भेजने के जो नियम छापे गये हैं, उनका ठीक-ठीक पालन करना चाहिये।

बहुत से बच्चों ने हमारे पास सदस्यता पत्र भर कर भेजे हैं। परन्तु सबको अलग अलग क्रम सं० बताना तो असम्भव है। इसीलिए अगले अंक में तुम्हारे नाम और क्रम संख्या छापी जायेगी। उस समय तुम अपना नाम ढूंढ कर अपनी क्रम संख्या लिख लेना।

एक बात और है। २९ अगस्त को भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म दिन है। श्रीकृष्ण बचपन में तुम्हारे जैसे ही शैतान बालक थे। इसीलिए उनके विद्यार्थी जीवन की एक घटना यहां दी गई है आशा है पसन्द आयेगी।

तुम्हारा—
श्याम भय्या

रचनायें भेजने के नियम

(१) कहानी कविता, चुटकले पहेलियां आदि सभी बालोपयोगी रचनायें भेजी जा सकती हैं पर वे स्वयं की लिखी हुई होनी चाहियें। कहीं से नकल करके नहीं भेजनी चाहियें।

(२) रचना दो पृष्ठ से अधिक नहीं होनी चाहिये तथा साफ अक्षरों में कागज के एक ओर लिखी होनी चाहिये।

(३) इस पृष्ठ पर बाल-बन्धु परिषद् के सदस्यों की रचनाओं को प्रधानता दी जाती है। अतः रचना के साथ अपना नाम पता व क्रम संख्या अवश्य लिखें।

महा पुरुषों का बचपन

वत्स! वन में जा कर यज्ञ के लिये समिधा तो ले आओ सन्दीपन मुनि ने कहा—

जो आज्ञा गुरु जी शिष्य का उत्तर था।

गुरु जी की मधुर वाणी ने फिर कहा—और देखो! अपनी सहायता के लिये सुदामा को भी साथ लेते जाना।

जो आज्ञा शिष्य ने फिर कहा—

दोनों मित्र जैसे ही वन जाने को तैयार हुए सामने गुरु माता आ गईं। वे पुत्र स्नेह से द्रवित हो गईं और वन जाते हुए दोनों बालकों को कुछ भुने चने ला दिये जिससे कि भूख लगने पर खा सकें।

× × ×

दोनों मित्र वन में चले जा रहे थे। एकाएक अन्धकार होने लगा। आंधी और वर्षा का वेग भी बढ़ने लगा। और दोनों मित्र उस विपत्ति काल में बिछुड़ गये। सुदामा एक पेड़ के आश्रय बैठे थे। उन्हें भूख लगने लगी और वे बैठे २ सारे चने खा गये अपने मित्र के लिये कुछ भी बचा कर नहीं रखा। वर्षा और आंधी का वेग धीरे २ कम हुआ सुदामा का अपना मित्र मिल गया।

'सुदामा भाई! भूख लगी है। वो चने तो निकालो जो चलते समय माता जी ने दिये थे।' सुदामा के पास चने तो थे नहीं, पर वह सत्यवादी ब्राह्मण बोल उठा 'वो तो सब मैंने खा लिये। अनायास ही मित्र के मुख से निकल पड़ा तुम बहुत दरिद्री हो। तुम जीवन पर्यन्त इसी प्रकार दरिद्री रहोगे।' सुदामा ने सुन तो लिया पर उसे क्या मालूम था कि ये वचन साक्षात् भगवान के कहे हुए हैं।

× × ×

बहुत दिनों के बाद सुदामा एक गांव में दीन दशा में रहने लगे और उनके मित्र श्रीकृष्ण द्वारका के राजा हो गये। सुदामा को अपनी दरिद्रता पर बहुत दुःख हो रहा था। एक दिन उनकी पत्नी ने कहा—तुम कहा करते हो कि मेरे मित्र द्वारका के राजा हैं तो उनके पास जा कर कुछ ले क्यों नहीं आते? और सुदामा चल दिये कृष्ण के पास।

ज्यों ही सुदामा के आने का समाचार कृष्ण को मिला वे नंगे पांव दौड़े आये दौड़ते भी क्यों नहीं उनका बचपन का साथी जो आया था। दोनों मित्र बहुत देर तक बैठे बातें करते रहे और अन्त में कृष्ण ने बहुत प्रेमपूर्वक सुदामा को विदा किया। सुदामा को कृष्ण ने प्रत्यक्ष कुछ भी नहीं दिया परन्तु चुपचाप सुदामा को अतुल धन राशि प्रदान करके मित्र धर्म को निभाया।

बन्धुओ! हो सकता है कि तुम में से कोई कृष्ण बने और कोई सुदामा ही रह जाय। परन्तु बचपन की मित्रता भुलाना नहीं।

इस महा पुरुष के बचपन की यह घटना कृष्ण जन्माष्टमी के दिन हमारा पथ प्रदर्शन करेगी ऐसी आशा है।

—अपर्णा देवी शर्मा

'तितली'

श्री प्रमानन्द कादियान 'मधुकर'

तू रंग बिरंगे पर वाली,
पुष्पों का मधु पीने वाली
तज डेढ़ दिवस के जीवन में
तितली इतना भरमाती क्यों?
तितली तू उड़ जाती क्यों है?

यह बहार है अल्प समय की,
अल्प आयु तेरे प्रियतम की
मधु पीते जिसका तितली तू
उसे छोड़ कर जाती क्यों है?
तितली तू उड़ जाती क्यों है?

प्रेम सहस्रों से करके
उनका सुन्दर मधु हर लेती है,
प्रेम एक से होता तितली
अन्य से नेह लगाती क्यों है?
तितली तू उड़ जाती क्यों है?

नहीं रहेगा फिर यह यौवन
पुष्पों से सुख कर आलिंगन,
करना है तो करले तितली
दूर दूर मंडराती क्यों है?
तितली तू उड़ जाती क्यों है?

चुटकुले

एक आदमी ने किसी मूर्ख आदमी से पूछा—देखो तो मेरी आंख में क्या गिर गया है?

मूर्ख आदमी ने जवाब दिया—कुछ सफेद सफेद है।

पहला—सफेद सफेद क्या है?

दूसरा—ऐसा है जैसे कुत्ते का पिल्ला!

—अवधकर भट्ट लखनऊ

× × ×

यहां से काटो

सदस्यता-पत्र

नाम

आयु

संरक्षक

पूरा पता

संख्या ( ) तिथि २९-८-५१

मिश्र का संघर्षपूर्ण जीवन

[पृष्ठ १७ का शेष]

मिश्र द्वारा ब्रिटेन पर आरोप लगाया गया है कि वह देश का सब प्रकार से शोषण करना चाहता है । ब्रिटेन की विभाजन नीति सदैव ही परतन्त्र देशों के लिये अभिशाप सिद्ध हुई है । इजराइल द्वारा युद्ध में हराए जाने के पश्चात् मिश्र ने ब्रिटेन पर यह आरोप भी लगाया था कि वह स्थानीय सैनिक शक्ति को प्रोत्साहन नहीं दे रहा है । आर्थिक दृष्टि से पिछले कुछ महत्वपूर्ण छोटे से देश में गत दो दशाब्दियों से नील घाटी की एकता का नारा चुनाव का सजीव अंग रहा है । ब्रिटेन आज मिश्र को छोड़ना नहीं चाहता है । इसी बात से घबरा कर मिश्र ने १९३६ की आंग्ल मिश्री सन्धि को तोड़ने की धमकी दी है । आज तक ब्रिटेन कुछ नरम दली लोगों की सहायता से इस प्रसंग को टालता आया है । नहसपाशा के मन्त्री मण्डल ने भी शाह को इस सम्बन्ध में सहायता का विश्वास दिलाया है । वफद दल सूडान को भी मिश्र में मिलाना चाहता है । इस सम्बन्ध में सरकार ने अपनी नीति की घोषणा करते हुए कहा था कि शीघ्रातिशीघ्र नील नदी के दोनों भागों को विदेशियों से खाली कराया जायगा और मिश्री ताज के अन्तर्गत एकता स्थापित की जावेगी ।

स्वार्थों का संघर्ष

सूडान की समस्या व स्वेज का प्रश्न मिश्र की राष्ट्रीय सीमा से निकलकर अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न बन गया है । आज जब कि विश्व पर तृतीय महायुद्ध के बादल मंडरा रहे हैं शाह फारूक की चेतावनी व नहस पाशा का ब्रिटेन के प्रति विद्रोह कुछ गूढ़ अर्थ रखता है । भले ही बाद में वह ईरान की भांति बन्दर घुड़की ही निकले । यह कूटनीतिक पैंतरे बाजी मिश्र की एक राजनीतिक भूल है । मिश्र में साम्यवाद का प्रभाव धार्मिक दृष्टि से कभी भी नहीं पनप सकता । इस्लाम सदैव से साम्यवाद का विरोध करता रहा है । वह पश्चिम की कूटनीतिक पैंतरेबाजी से पूर्णतय परिचित है अतएव वह बीच के मार्ग को अपनाना चाहता है । रूस भी इस दिशा में विशेष रूप से जागरूक है ।

मिश्र की सर्वांगीण उन्नति नहीं हुई है । आज भी वहां काहिरा के समीप मिट्टी की टूटी फूटी झोपड़ी देखी जा सकती है । मध्य युगीन रीति रिवाज आज भी प्रचलित हैं । मिश्र का किसान अपने पूर्वजों की भांति नील नदी के पानी को खेती के लिये उपयोग में लाता है वस्तु के रूप में काठ की एक गुड़िया प्रतिवर्ष नील नदी के देवता को प्रसन्न करने के लिए पानी में फेंकी जाती है । हैरीडोटस ने नील को मिश्र का जीवन कहा है । यह मिश्र के लिए एक चिरंतन सत्य है । मिश्र एक कृषि प्रधान देश है इथोपिया के पहाड़ों से निकलने वाली नदी देश के सबसे उपजाऊ भाग का निर्माण करती है । देश की मुख्य उपज जिस पर आर्थिक ढांचा निर्भर है, कपास है । इसे श्वेत स्वर्ण भी कहा जा सकता है । मिश्र की कपास लंबे रेशेवाली व सर्वोत्तम होती है । नील घाटी के अधिक उर्वरा होने के कारण यहां पर बहुत बड़ी संख्या में लोग बसते हैं । प्रायः १२०० मनुष्य प्रतिवर्ग मील में रहते हैं । दस वर्षों में प्रायः २० प्रतिशत जन संख्या बढ़ जाती है । अर्थात मिश्र में जन्म मरण की संख्या विश्व के किसी भी देश से अधिक है । सन् १९१७ में मिश्र में १२६४० ० एकड़ में कपास की खेती होती थी व बीस करोड़ पौंड के मूल्य की कपास का निर्यात किया जाता था ।

सामाजिक अवस्था में भी दिन प्रतिदिन सुधार किया जा रहा है । राज्य की भाषा अरबी है और धर्म इस्लाम । जन संख्या का एक बड़ा भाग मुसलमान है । इसके अतिरिक्त देश में अनेकों विदेशी जातियां भी रहती हैं । देश में शिक्षा का भी अच्छा प्रबन्ध है । राज्य में प्रायः सब प्रकार की पाठशालाएं हैं । तीन विश्व विद्यालय भी स्थापित किये जा चुके हैं । राज्य में बेकारी बड़ी मात्रा में फैली हुई है । काफी संख्या में शिक्षित लोग बेकार फिरते हैं मिश्र में श्रमिक संगठन भी दिन प्रतिदिन संगठित होते जा रहे हैं । १९३२ में प्रायः दो सौ श्रमिक संगठन थे जिनकी सदस्य संख्या १ लाख थी । हड़ताल इत्यादि का बुरी प्रकार से दमन किया जाता है । इन सबका कारण कारखानों के मालिकों का एक संगठन है । यदि मिश्र में इसी प्रकार बेकारी बढ़ती रही तो वह दिन दूर नहीं, जब कि मजदूर लोग राज्य के प्रति वफादार न रहेंगे ।

ब्रिटेन की दोहरी नीति

सामरिक दृष्टि से मिश्र का प्रदेश कम महत्वपूर्ण नहीं है । जर्मनी की भांति रूस भी यहां पर अपना अधिकार करना चाहता है । ब्रिटेन जानता है कि भूमध्यसागर पर अधिकार रखने के लिए मिश्र आदि देशों को प्रसन्न रखा जाय । इसके एक छोर पर स्वेज नहर है और दूसरे पर जिब्राल्टर का टापू, जिसके लौटाने के लिए भी स्पेन ने ब्रिटेन से मांग की है अमरीका द्वारा स्पेन से एक सन्धि की जा चुकी है जिसका ब्रिटेन व फ्रांस ने विरोध किया है । इस नई उलझन के कारण ब्रिटेन कुछ चिंतित प्रतीत होता है । वह सोचता है कि उसकी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति का कायाकल्प होने जा रहा है । विदेशमंत्री मौरीसन का कथन कि चर्चिल भूत काल के व्यक्ति हैं, यह स्पष्ट करता है कि श्री मौरीसन सब प्रकार से हताश हो चुके हैं । वह अपनी राजनीतिक भूल को पार्टी बन्दी में परिवर्तित करना चाहते हैं । उनकी साम्राज्य संबंधी नीति कुछ भी हो इतना अवश्य कहा जा सकता है कि चर्चिल जैसे उग्रपंथी लोगों ने ही दमन व शोषण द्वारा ब्रिटेन का साम्राज्य स्थापित किया था ।

मिश्र ने एटलांटिक संधि में भी सम्मिलित न होने की घोषणा की है वह तो केवल यह चाहता है कि उसे स्वतन्त्र देश मान लिया जाय और ब्रिटिश सेनाएं उसकी भूमि को छोड़ कर चली जावें । ब्रिटेन से इस संबंध में एक लम्बे अरसे तक बातचीत चलकर टूट गई है । इतना अवश्य निश्चित है कि यदि ब्रिटेन व मिश्र में कोई समझौता न हो सका तो दोनों देशों के संबंध सदैव के लिए बिगड़ जावेंगे ।

—०—

[पृष्ठ १२ का शेष]

अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया । उन्होंने कृष्ण को शाप दिया 'जिस प्रकार मेरे कुल का सर्वनाश हुआ है उसी प्रकार तुम्हारे कुल बन्धु भी आपस में इसी प्रकार लड़कर समाप्त हो जायेंगे । माता गन्धारी के हृदय की वास्तविक स्थिति को समझकर कृष्ण ने उनका शाप स्वीकार किया और उनको सब प्रकार से समझाकर सान्त्वनायें दीं ।

कृष्ण के जीवन में इस प्रकार के प्रसंग अनेकानेक आये हैं, जब उन्होंने समाज की प्रचलित मर्यादाओं से ऊपर उठकर नारी सम्मान को सर्वोपरि महत्ता दी ।

कृष्णकालीन नारी समस्या आज भी हमारे सम्मुख है । क्या कृष्ण के आदर्शों पर चलकर हम उसका उचित निराकरण कर सकेंगे ।

— —

आपकी भावनाओं का लाभ उठाने वाले यह भिखारी

[श्री सत्य]

उस व्यक्ति से, चाहे वह बुड्ढा हो चाहे जवान, चाहे स्त्री हो चाहे बालक, आप और मैं दोनों अच्छी तरह से परिचित हैं, जो कि सड़क के किसी भी कोने पर हमारी दया को जाग्रत करने का प्रयत्न करते हुए कुछ मांगने का प्रयत्न करते हैं। वास्तव में कई भले हैं, कइयों पर दया आती है, और आपकी अथवा मेरी जेब में से कुछ न कुछ उनके पास चला ही जाता है।

प्रत्येक भिखमंगा विनिमय के इस सिद्धांत को अच्छी तरह से जानता है कि बिना किसी प्रकार के विनिमय के कोई चीज प्राप्त नहीं हो सकती, इसी लिए प्राप्त होने वाले पैसों से ही वे अपने उदर पोषण के लिए पैसों के विनिमय में कुछ खाद्य सामग्री प्राप्त कर लेते हैं। पर फिर भी वे हमें बिना किसी प्रकार की कोई चीज दिए मांगने की धृष्टता कर बैठते हैं और हम भी कैसे इस सिद्धांत से प्रभावित होते हुए भी एक बारगी इसको भूल जाते हैं, और मेरी अथवा आपकी जेब से कुछ न कुछ निकल कर उनके पास पहुँच ही जाता है। अपने आप को सुरक्षित अथवा जिन्दा रहने की भावना, तथा उसके लिए किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के प्रयत्नों को हमारी भावुकता दया का स्वरूप दे देती है। तब हम 'दानी' हो जाते हैं तथा जिसको कुछ दिया जा रहा है वह भिखमंगा, कुछ अच्छे उच्च शब्दों में दान ग्रहण करने वाला कहा जा सकता है।

विनिमय के सिद्धान्त को आप जानते हैं। कहीं नौकरी किए अथवा बिना किसी प्रकार परिश्रम किये, जो पैसे आपने किसी भिखमंगे को दे दिए हैं, आपके पास भी नहीं होते। फिर आपने उस भिखमंगे को कुछ क्यों दे दिया? इसलिये कि वह आपको आशीर्वाद दे? उसका कल्याण हो जाय? पर वास्तव में यह मृग मरीचिका है! क्योंकि जो कुछ दिया जा चुका है, वह अपर्याप्त है। तथा जो आशीर्वाद प्राप्त किया गया है, उसमें व्यवसायिकता है, अपने जीवन के प्रति चैतन्यता है, आत्मा की आवाज नहीं। किन्हीं विशेष कारणों से वह भीख मांगने के लिये मजबूर है। उन कारणों के संघर्ष में आवश्यकता पड़ने पर आपके पसंद के शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है, पर विश्वास कीजिए, वे शब्द साधारणतया निरर्थक ही होते हैं। प्रत्येक भीख मांगने वाला कुछ ढीठ अवश्य होता है। पर उसमें नैतिक विश्वास नहीं होता कि वह आपसे किसी की जरा कम पर वह विश्वास कर सके कि आपसे निःस्वार्थ रूप से कुछ न कुछ प्राप्त होगा ही। देने वाले या तो आशीर्वादों के कायल होते हैं अथवा न दिए जाने पर भिखमंगों द्वारा प्रयुक्त वाणी से डरते हैं। कुछ अंशों तक पाप पुण्य का चक्कर भी होता है, जिसमें पुण्य के चक्र को अपनी ओर करने का विशेष प्रयत्न होता है। कुछ मिलाकर भीखमंगों को भीख मिलती है। और भीख देने वाले किसी न किसी तरह देते भी हैं।

इन दरिद्र नारायण भिखमंगों को किसी हालत में छोड़ा नहीं जा सकता। साधारणतया इनके कारण हैं, जिसके द्वारा कि भिखमंगों की उग्र समस्या हमारे सामने आती है।

बेकारी

अच्छे पढ़े लिखे योग्य व्यक्ति भी आर्थिक विनिमय, श्रम करने की स्थिति में भी जब नहीं कर पाते, तो उन्हें किसी की दया पर आधारित होना पड़ता है। जीवन का मोह उन्हें भीख के लिए मजबूर भले ही कर दे, वास्तव में वे भीख से घृणा करते हैं। यदि उन्हें मौका मिल सके तो वे सहर्ष इस पेशे को, इस क्रम को छोड़ सकते हैं। पर लम्बा समय बीत जाने के बाद निराशावादी हो जाने पर इनकी योग्यताओं का कोई फायदा नहीं उठा सकता। इनकी लघुता की ग्रन्थि इतना विकृत रूप धारण कर लेती है कि वे अपने आपको किसी काम का समझ कर अपना महत्व इसी में समझने लगते हैं कि उनकी गरीबी पर तरस खा कर उनकी सहायता की जाय।

व्यवसाय

भीख मांगना एक व्यवसाय भी बन गया है। परिस्थितियों के चक्कर में आने वाले ये व्यक्ति इस धन्धे को व्यवसाय का रूप दे देते हैं, जो कि अपनी आवश्यकताओं को बुरी तरह से बढ़ा लेते हैं। उनका बौद्धिक विकास भी काफी अच्छे दर्जे पर होता है। अपनी बुद्धि के बल पर वे किसी के दिल में दया पैदा कर सकते हैं तथा विभिन्न प्रकार से दया पैदा कर सकते हैं तथा विभिन्न प्रकार से दया उत्पन्न करने के तरीके इजाद किये करते हैं। कई भजन गाते हैं। कई अपने हाथ पावों को गम्भीर रूप से क्षत विक्षत करके लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करते हैं। इनमें कई हट्टे-कट्टे भी होते हैं। जिनकी प्रमुख दलीलों में से एक यह भी है कि भीख मांगना भी एक परिश्रम है, मेहनत है। न देने पर ये बुरी तरह से आलोचना भी करते हैं। अपमान करने से भी नहीं हिचकिचाते। अपने पर दया करने के लिए हरएक व्यक्ति को अपनी विचित्र विचित्र बातों से प्रभावित करने का प्रयत्न व्यवसायिक भिखमंगे किया करते हैं। जो कि इस क्षेत्र में इस हद तक आ जाते हैं कि जो किसी प्रकार का काम देने पर भी नहीं कर सकते।

साधू सन्यासी

ये भिखमंगे समाज में अपना कुछ प्रतिष्ठित अंशों तक स्थान रखते हैं। ऐसा विश्वास होता है कि उन्हें सम्भव की कोई आवश्यकता नहीं, इसलिए वे असाधारण शक्ति सम्पन्न होते हैं। उनके आशीर्वाद, कल्याणकारी प्रवचन पर लोगों की विशेष श्रद्धा भी होती है। पर ये वास्तव में आज आर्थिक बोझ से उत्पीड़ित समाज पर भार ही हैं। जो कि जीवन से मोह रख कर जीने की कामना लेकर रोटियां अथवा उदर-पोषण की चिन्ता तो करते हैं, पर उस उदर-पोषण के लिए क्रिया क्रम पर विश्वास नहीं रखते। ये महात्मा साधारण चीजें भक्षण भी नहीं करते। साधारणतया इनके ठाठ निराले ही होते हैं, जो कि जन भावना की उच्चता का नाजायज फायदा उठाने का प्रयत्न करते हैं।

जनता भीख न दे!

रेल के डब्बे के एक कोने पर ऐसा लिखा हुआ है कि जनता इन्हें, अर्थात् इन भिखमंगों को भीख न दे। बम्बई में तो नित्य पैदा होने वाली योजनाओं में से एक यह भी थी जिसमें 'भिक्षा-बन्द करो आन्दोलन' की आवाज उठाई जाय! इसका इलाज यह बताया गया था कि इन्हें भीख न दी जाय। मानवोचित दशा में किसी को भी दुखित देख कर सहायता करने को जी चाहता है, और करना भी चाहिए। पर, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इस प्रकार दी जाने वाली भीख इन भिखमंगों का किसी भी हद तक उद्धार अथवा भलाई कर सकती है। इसके लिए जो चन्दा जमा किया गया है, उस पर लोगों का कोई खास विश्वास नहीं है। क्योंकि एक तो दृष्टिकोण यह है कि सरकार ने भी 'फेशनेबुल भीख' मांगने का तरीका अख्तियार किया है। इस बात की पृष्ठभूमि इस तथ्य पर आधारित है कि भिखमंगों की उत्पत्ति किसी भी प्रकार जब तक श्रम की मात्रा न बढ़ाई जाय जब तक पूंजी का केन्द्रीयकरण नहीं किया जाय, जब तक बेकारी की समस्या को न हटाया जा सके नहीं हटने की। जब तक ऐसा नहीं हो जाता, आप में अथवा मुझ में जब दया का संचार कुछ अधिक मात्रा में होने लगे तो बिना अपनी स्थिति की परवाह किए भावुकता में बह कर, क्योंकि यह मानवता के नाते एक बहुत बड़ा तकाजा है, भीख मांगने वाले पैदा होते चले जाएंगे और हम भी कभी उनको गाली कभी अपमान कभी व्यंग्य सूचक देते हुए उनके नारकीय जीवन को पनपाते हुए पैसा दो एक पैसा आना उनके पसरे हुए झोले में डाल ही देंगे, जिसे न तो वे हजम कर सकेंगे न उसको सम्भाल कर रख सकेंगे, वे नित्य प्रति दानवों की सृष्टि करते जाएंगे, हो सकता है कि कल उसी श्रेणी में मैं खड़ा होऊं अथवा आप खड़े हों सबसे दयनीय तथा घृणित पतित जीव— भिखमंगे!!!

[पृष्ठ ५ का शेष]

समर्थक भार्गव दल से कुछ खिन्न से जान पड़ते हैं, क्योंकि उनके कुछ समर्थक के कारनामों के कारण ही प्रान्त के राजनैतिक क्षेत्र में यह गड़बड़ पैदा हुई है। प्रदेश की धारा सभा टूटने से समस्त सदस्यों के भत्ते मारे गये।

अपदस्थ अधिकारी

ज्ञात हुआ है कि वाणिज्य मन्त्रालय के ४ बहुत ऊंचे अफसर घूसखोरी और भ्रष्टाचार के अपराध में अपदस्थ कर दिये गये हैं। यह अफसर मन्त्रालय की आयात और निर्यात सम्बन्धी शाखा में काम करते थे।

उनसे इस बात की भी सफाई मांगी गई है कि उनके विरुद्ध न्यायालय में मुकदमे क्यों न चलाये जाय अथवा सरकारी जांच बैठा कर और कड़ी कार्रवाई क्यों न की जाय।

दिल्ली साप्ताहिक वायदा बाजार

[ले० — श्री ब्रह्मानन्द भरतिया]

२२ अगस्त बुधवार को समाप्त सप्ताह के दैनिक भाव निम्न हैं:—

चांदी टुकड़ा चेम्बर भादवा डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
बृहस्पति	१८६॥=)	१९०≈)	१८६≈)	१८६।≈)
शुक्र	१८६।≈)	१८६।≈)	१८८।≈)	१८८॥-)
शनि	१८८।)	१८६)	१८७॥)	१८८॥-)
सोम	१८६॥।≈)	१९०।≈)	१८६॥)	१८६॥)
मंगल	१९०)	१९०॥)	१८६॥)	१९०≈)
बुध	१९०-)	१९०।)	१८६।)	१८६।≈)

गवार माघ डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
बृहस्पति	११॥≈)॥।	११॥≈)॥	११।-)॥	११॥)॥
शुक्र	११॥≈)॥।	११॥≈)	११।-)॥≈	११॥-)
शनि	११॥-)।	११॥-)॥।	११।≈)॥	११॥)॥
सोम	११॥-)।	११॥≈)॥	११॥)॥≈	११॥≈)
मंगल	११॥≈)।	११॥।-)	११॥≈)	११॥।)॥
बुध	११॥≈)॥	११॥।)॥	११॥-)	११॥-)।

मटर भादवा डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
बृहस्पति	१६≈)॥।	१६≈)॥	१२॥।-)॥	१३≈)॥
शुक्र	१६≈)	१६।-)॥	१२-)॥	१३।-)॥
शनि	१६।≈)॥।	१६॥)॥	१६।)॥	१६≈)
सोम	१६॥)।	१६॥-)॥	१६≈)॥।	१६।)॥
मंगल	१६।)	१६।-)।	१६≈)॥	१६।)॥
बुध	१६।)।	१६।≈)।	१६।)।	१६।)॥

विचार और सलाह

चान्दी

इस सप्ताह स्थानीय बाजार में तो तैयारी की मांग बढ़ी खराब है परन्तु माल की आमद का जोर है। प्रारम्भ में मन्दड़ियों का भारी जोर रहा क्योंकि उन्होंने बाजार को गिराने के लिये भारी परिमाण में डिलीवरी देने का प्रबन्ध किया परन्तु बाजार घट जाने पर वह मन्दड़िये नफा खाने के लिये नीचे भाव में खरीदने आ गये। अतः बाजार बिकवाल की कमी में मजबूत बन्द हो गया।

राजनैतिक स्थिति अनिश्चित-सी है। भारत पाकिस्तान के सम्बन्ध यद्यपि अब कुछ और अधिक नहीं बिगड़े हैं परन्तु अभी सम्बन्धों में कोई सुधार भी प्रारम्भ नहीं है और नाही भारतीय जनता का पाकिस्तान के प्रति कोई विश्वास है। इधर कोरिया में युद्ध चल रहा है और संधि के विषय में कोई निश्चित बात नहीं है। परन्तु मुद्रा पुनर्मूल्यन का विचार भी अभी लोगों को खुली खरीदारी करने से रोकता है।

इसी कारण अब बाजार रुक गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि बाजार ऊपर की ओर चलने के लिये अपनी तैयारी कर रहा है।

सलाह

इस समय बाजार साप्ताहिक १८७॥) को चार दिन से न तोड़ सका है अतः अब तक १८७॥) से ऊपर रहे ऊपर का रुख अन्यथा नीचे का रुख समझना चाहिये। मेरी राय में बाजार अब १८७॥) से नीचे नहीं जावेगा।

गवार और मटर

इस सप्ताह गवार वर्षा के समाचारों परे डोला रहा। भारत पाकिस्तान युद्ध की साधारण आशंका से पंजाब वाले बराबर बिकवाल रहे। परन्तु बाद में बम्बई के अच्छे रुख और नीचे भावों में नफे वालों की खरीददारी के कारण खासी मजबूती आ गई।

इधर मटर सारे ही सप्ताह मजबूत रहा परन्तु अन्त में कुछ ठिठक गया। हापुड़ के तेजड़िये अभी भी बाजार को उठाने के लिये जोर लगा रहे हैं। परन्तु ऊंचे भावों में आम व्यापारी वर्ग उनका साथ नहीं देता।

सलाह

इस सप्ताह के प्रारम्भ में गवार और मटर ने नीचे के भाव क्रमशः ११।-) और १२॥।-)॥ बनाये और बाद में इनको तोड़ने की कोशिश नहीं की। अतः स्पष्ट है कि बाजार अब तक इन भावों से ऊपर रहे, ऊपर का रुख अन्यथा नीचे का रुख समझना चाहिये।

गाण्डीव के तीर

बीकानेर सप्लाई-विभाग का कोई कर्मचारी रुपया उड़ाकर फरार हो गया है। —'लोकमत'

कार्य की अधिकता के कारण माल की बजाय रुपये की सप्लाई कर गया होगा बेचारा।

× × ×

अलवरी के थानेदार मियां हनीफ का उनके भतीजे ने पत्र लिखा है कि आप तो जून में ही आने वाले थे हम मकान लिये आपका इन्तजार कर रहे हैं। —एक समाचार

उन्हें लिख देना चाहिये कि यदि पाकिस्तान का भी काम यहीं से करता रहूँ तो ठीक रहेगा, यही सोच रहा हूं।

× × ×

हम ७ दिन में भारत को जीत लेंगे। —पाकिस्तानी नेता

डरते हैं कि इस से पहिले ही दूसरे का घू सा न पड़ जावे।

× × ×

पंजाब में राज्यपाल के शासन के गीत गाये जा रहे हैं।

अब तो बाकी राज्यों के गवर्नरों के गीत गवाये जाने का अवसर जनता को देना चाहिये।

× × ×

भारत पाक-युद्ध होने की सम्भावना नहीं है। —जयप्रकाश

अब तो रेलवे हड़ताल की सम्भावना ही स भव माने लेते हैं।

× × ×

पूर्वी ब गाल की आर्थिक नाकेबन्दी हो। —श्याम प्रसाद मुखर्जी

आपका क्या विश्वास है कल कहने लगोगे राजनीतिक नाकाबन्दी हो फिर कहोगे शारीरिक नाकाबन्दी हो अतएव नम्बर धार्मिक पर आ जाएगा। सरकार नाकेबन्दी की रही और वह भी दुश्मन की। कोई क्या कहेगा मार डाला बिन पानी मगरमच्छ।

× × ×

बर्दवान के लोग वर्षा के आह्वान लिये मेंढकों के पाणि ग्रहण सस्कार करा रहे हैं। —एक शासक

आदमी को छोड़कर जिस जानवर का पाणी-ग्रहण सस्कार करा दिया जाय उसका ही अच्छा। कम स कम यह अन्न सकट तो खड़ा नहीं करते।

× × ×

कलकत्ते के ५००भूखमार्च वालों के ५ नेताओं को पुलिस ने पकड़ लिया। —प्रेस ट्रस्ट

मतलब यह हुआ कि ५०० म स ५ की रोटियों का प्रबन्ध हुआ बाकी ४९५ यूं ही म्युनिसिपल के सांडों की तरह छुड़ा दिये गये। सारी कहानी का निचोड़ यह है कि ५ म स ५ का प्रबन्ध सरकार कर सकती है।

× × ×

कश्मीर के १०० प्रतिशत मुसलमान भारत के साथ हैं। —श्री सईद

वैसे तो भारत के भी इतने ही थे लेकिन पता नहीं कब वो बिन्दी भग गई।

× × ×

राजस्थान में नकली चुनाव का अभ्यास किया गया —एक सम्वाददाता

अभ्यास इस बात का कराने की आवश्यकता थी की उसकी चुनाव म कितने नकली वोट धकेल जा सकते हैं।

× × ×

नेहरू जी का कहना है कि पाकिस्तान युद्ध के गलत रास्ते पर है और मैंने राज्यपालों को आदेश दे दिया है कि वह सुरक्षा का कोई काम न करें।

आपने मालूम होना है भारतीय इतिहास इति तक अध्ययन किया है और इसी लिये राज्यपाल को 'आखबन्द 'कान खुले' रखने की आज्ञा दी है।

रही रास्ते की बात सो उसके अच्छा बुरा होने को छोड़ दिया, आपने तो किसी रास्ते पर जाना भी है या नहीं यह नहीं सोचा।

× × ×

नेहरू पाकिस्तान से युद्ध में सरकार का साथ देगा। —एक शीर्षक

नेहरू जी भी अभी शायद इसलिये चुप हैं कि दो चार साथी मिल जावें, तो काम आगे बढ़ाये।

× × ×

बाजार में कपड़ा बचना कठिन होता जा रहा है। —श्री मेहताब

शायद कपड़े की दुकान ऐसी जगह खुल गई है जहां ग्राहकों की पहुंच नहीं।

× × ×

डा० अम्बेदकर का कहना है कि मां व हिन लाखान के कारण राजस्थान की २० लाख स्त्रियां मत दान से वंचित रहेंगी।

आपके विधान में ऐसा ही है क्या कि अमुक की मां और बी० बी० ही मतदाता हो सकती हैं बहिन, बेटी और मां नहीं।

तब तो कानून से इनका आप क्या उद्धार करेंगे बाप तक तो बनवा नहीं सके।

× × ×

मैं इस्तीफा देने को तैयार हूं। —टंडन जी

विद्वान कह गये हैं, समय के साथ चलो और समय कहता है कि कांग्रेस को छोड़ दो, अब सभी लोग समय के साथ कांग्रेस को छोड़ चले तो आप भी छोड़िये।

× × ×

नेहरू जी अपने इस्तीफे के विचार पर अडिग रहे हैं। —एक शीर्षक

देहात की एक कहावत सुनिये—

मिलकर बैठो मिलकर बैठो यार न टूटे,
घर की नारी छुटे, पर यार न छूटे।

आगे आप जानते ही हैं।

—चिरंजीलाल पाराशर

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

श्री महावीर स्वामी

४ आना

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार १ आश्विन सम्वत् २००८ [अङ्क २१

विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
और जब तक हमारे संविधान में इसकी गारण्टी नहीं कर दी जायगी,
हम तब तक चैन नहीं लेंगे।

द्वारकाप्रसाद मिश्र का भाषण

मध्यप्रदेश के भूतपूर्व गृहमन्त्री पं० द्वारकाप्रसाद मिश्र ने इस सोमवार को दिल्ली की महती सार्वजनिक सभा में जो भाषण दिया, वह कई दृष्टियों से असाधारण था। उसकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उसका विषय प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू की अयोग्यताओं का प्रदर्शन था। साधारणतया कोई ऊंचा नेता और शिष्ट तथा विचारवान व्यक्ति इस प्रकार केवल किसी एक व्यक्ति को अपने भाषण का विषय नहीं बनाता। और यदि कोई बनाता भी है तो उसे अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता। प० द्वारकाप्रसाद मिश्र का भाषण, प्रधानमन्त्री नेहरू की अयोग्यताओं के प्रदर्शन के लिए ही होने पर भी हम उसे असाधारण बतला रहे हैं। यह देख कर शायद कुछ लोगों को आश्चर्य होगा।

परन्तु इसमें आश्चर्य की बात कुछ नहीं। पं० द्वारकाप्रसाद मिश्र ने यह भाषण करके केवल "कुफ तोड़ा है।" नेहरूजी के विरुद्ध कुछ भी कहना अथवा उनका विरोध करना कांग्रेसी क्षेत्रों में 'कुफ' समझा जाने लगा था। इससे देश की और भारतीय जनता की अपरिमित हानि हो रही थी और हो रही है। मिश्रजी ने उस कुफ को तोड़ कर नेहरूजी के विरोध का और आलोचना का द्वार खोल दिया है। इसका लाभ यह होगा कि नेहरूजी के प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण देश में जनतान्त्रिक परम्पराओं की हानि होकर 'डिक्टेटरशिप' को जो बल मिलने लगा था, वह रुक गया। जो लोग सब कुछ जानते और समझते-बूझते हुए भी नाना प्रकार की आशंका, भय और आतंक के कारण, नेहरूजी का उचित विरोध करते हुए भी झिझक जाते थे, वे अब एक बार कुफ टूट जाने पर स्वतन्त्रतापूर्वक जनतन्त्र के मार्ग पर अग्रसर, होने लगेंगे और नेहरूजी की स्वेच्छाचारिता के कारण देश की जो हानियां हो रही हैं, उनसे देश के बच जाने की आशा बलवती हो जायगी।

हमारा तो ख्याल है कि नेहरूजी के इस अनुचित प्रभाव और आतंक के कारण ही, श्री टण्डनजी यह जानते, मानते और कहते हुए भी कि नेहरूजी का समस्त कांग्रेस को धमकाने और धक्का मारने का कार्य हानिकारक तथा अन्यायपूर्ण है, उनका त्यागपत्र स्वीकार कर लेने का साहस नहीं कर सके। अब मिश्रजी ने जिस नये मार्ग पर पग बढ़ाया है, उसमें यदि प्रगति होगयी तो भारतीय जनता भी इतनी जागृत, चेतन और सशक्त हो जायगी कि नेहरूजी सरीखे अधिकार प्रेमी व्यक्तियों को उसी प्रकार पदच्युत कर दे, जिस प्रकार प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्धों के पश्चात् पार्लमेंट के निर्वाचनों में ब्रिटिश जनता ने इन युद्धों के विजेता होते हुए भी लायड जार्ज और विन्स्टन चर्चिल को कर दिया था।

मिश्रजी ने जिस नये मार्ग पर पदार्पण किया है, उसका महत्व और आवश्यकता इस कारण भी है कि अब नेहरूजी के कांग्रेस का डिक्टेटर बन जाने पर भी, उनकी नेहरू विरोधी आलोचनाओं से प्रेरणा पाकर, बहुसख्यक कांग्रेसजनों को नेहरूजी का विरोध करने का और उनकी उचित आलोचना करने का और साहस आ सकेगा। जो लोग नेहरूजी की नीतियों और गतिविधियों को नापसन्द करते हैं वे वैसा करते हुए भी मन मार कर बैठे रहें और सार्वजनिक जीवन को अचेतन और निष्कर्मण्य बनावें। इसकी अपेक्षा अच्छा यह है कि वे अपनी बात को स्पष्ट कहें और आवश्यकता हो तो उच्चतम नेता का विरोध भी करें। इसके बिना देश में जनतान्त्रिक परम्पराओं का बीज जम ही नहीं सकता।

किदवई की राजनीति

अब यह स्पष्ट हो गया है कि कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन में नेहरू जी की विजय यथार्थ में श्री रफी अहमद किदवई की विजय है। कांग्रेस में किदवई साहब प० नेहरू के नेतृत्व के आधार स्तम्भ थे। इसीलिए प० नेहरू उनको कार्यकारिणी में सम्मिलित करने के लिए इतनी दूर तक बढ़े कि तत्कालीन कार्यकारिणी को ही नष्ट होना पड़ा तथा टण्डन जी ने भी अपना पद छोड़ दिया। महासमिति के अधिवेशन के एक दिन पूर्व सायकाल पत्रकारों से बातचीत करते हुए टण्डन जी ने यह बात भली प्रकार स्पष्ट कर दी थी कि उनके और नेहरू जी के मध्य सारा संघर्ष "एक व्यक्ति" को ले कर था। यद्यपि उन्होंने नाम नहीं लिया था तो भी यह स्पष्ट था कि उनका अर्थ श्री रफी अहमद किदवई से ही है।

प० नेहरू के कांग्रेस अध्यक्ष बनने ही यह स्पष्ट कर दिया गया है कि कांग्रेस से पृथक हुए लोगों को पुनः उसमें सम्मिलित करने का प्रयास आरम्भ हो गया है किन्तु राजनीतिक शतरंज के चतुर खिलाड़ी रफी साहब इस स्थिति का पूरा लाभ उठाना चाहते हैं। वे यह समझते हैं कि कांग्रेस के केन्द्रीय सगठन मात्र पर अधिकार होने से कुछ न होगा क्योंकि आगामी चुनाव के लिए कांग्रेस के उम्मेदवारों के नाम तो अपने अपने क्षेत्र से प्रदेश कांग्रेस कमेटियों द्वारा ही केन्द्रीय चुनाव बोर्ड के सम्मुख उपस्थित किए जायेंगे। ऐसी स्थिति में जब तक प्रदेश कांग्रेस कमेटियों पर अधिकार नहीं होता तब तक अपने अनुकूल व्यक्तियों को ही अधिक टिकट दिला पाना कठिन होगा।

इसीलिए प० नेहरू के पदारूढ होते ही किदवई साहब ने बम्बई में एक वक्तव्य देकर वह वातावरण बनाने का प्रयास किया है। जिसका सहारा लेकर प० नेहरू प्रत्येक प्रदेश कमेटी में भी आवश्यक परिवर्तन करने के लिए आगे बढ़ सकें। कांग्रेस इस चुनाव के समय स्वार्थ का अखाड़ा बनी हुई है। सिद्धान्तों की दुहाई देकर स्वार्थ का नाच नाचा जा रहा है। टण्डन जी को अपदस्थ करने में सफल होने के पश्चात प० नेहरू के समर्थकों की स्वाभाविक चेष्टा है कि वे सारे कांग्रेस सगठन पर छा जायें। तभी तो भविष्य में कांग्रेस दल पर छा जायें। तभी तो भविष्य में कांग्रेस दल पर पूर्ण अधिकार रह सकेगा और फलस्वरूप कांग्रेस पार्लियामेण्टरी दल में भी उनके ही समर्थक हो सकेंगे।

इसी दृष्टि से श्री किदवई ने कहा है कि प्रदेश कांग्रेस कमेटियों से पं० नेहरू को अवाछनीय तत्वों को "निकाल देना" चाहिए। हमारे विचार में तो इस प्रकार दल में से निकालने की पद्धति का अनुसरण तो केवल कम्यूनिस्ट पार्टी ही करती रही है और वह इसलिए कि उस दल में भिन्न मत रखने तथा विचार स्वतन्त्रता के लिए कोई स्थान नहीं है और प० नेहरू उन्हें कांग्रेस में पुनः लाने के लिए उस पर पूरा आचरण भी करेंगे। इसमें भी किसी प्रकार का सन्देह नहीं। श्री किदवई कांग्रेस के आन्तरिक सगठन पर पुनः अधिकार प्राप्त किए बिना नहीं छोड़ेंगे। यह कांग्रेस के किस दिशा में चलने का सूचक है, और अपने को जनतन्त्र का सबसे बड़ा समर्थक कहने वाले प० नेहरू किधर जा रहे हैं, यह बताने की आवश्यकता नहीं।

—०—

टंडनजी कांग्रेस कार्यसमिति में शामिल होंगे

संविधान में संशोधन अवैधानिक

संसद मे प्रेस विधेयक का विरोध

श्री टंडन जी

श्री रविशंकर शुक्ल

नई कार्यकारिणी में शामिल होंगे

टंडन जी कार्यसमिति में

पं० जवाहर लाल नेहरू के कांग्रेस अध्यक्ष बनने के पश्चात यह एक आम प्रश्न उठ खड़ा हुआ था कि टंडनजी का भावी कार्यक्रम क्या होगा? वे कांग्रेस में रहेंगे अथवा उससे त्याग पत्र दे देंगे। किन्तु अब इस सम्बन्ध में कोई शंका नहीं रही है कि नेहरू जी के कार्यकारिणी में सम्मिलित होने के आमन्त्रण को उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया है। टंडनजी द्वारा कांग्रेस कार्य समिति में सम्मिलित होने का निर्णय कर लिये जाने पर भी उनके साथियों का भावी कार्यक्रम अनिश्चित सा प्रतीत होता है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री रविशंकर शुक्ल ने महासमिति की बैठक में नेहरू जी के कांग्रेस अध्यक्ष बनने के विरुद्ध जो मत दिया है, उस पर भी बड़ी गम्भीरता के साथ विचार किया जा रहा है। यह भी अनुमान लगाया जाता है, कि यदि श्री शुक्ल ने मध्य प्रदेश के भूतपूर्व गृहमन्त्री श्री द्वारका प्रसाद मिश्र के मार्ग का अनुसरण किया तो मध्यप्रदेश के कांग्रेस मन्त्रिमण्डल में गम्भीर संकट उपस्थित हो जायेगा।

प्रेस विधेयक

संसद के कांग्रेस दल ने सर्वसम्मति से प्रेस विधेयक पास करने का निश्चय कर लिया है। गृह मन्त्री के प्रेस विधेयक को प्रवर समिति को सौंप दिये जाने के प्रस्ताव का संसद के कई सदस्यों द्वारा जोरदार विरोध किया गया। आलोचकों की प्रधान दलील है कि इस प्रकार के विधेयक की अभी कोई आवश्यकता नहीं है। दूसरे बिल की धारायें बहुत अधिक व्यापक हैं। विरोधी सदस्यों का स्पष्ट मत है कि इस विधेयक द्वारा पत्रों की स्वतन्त्रता के अपहरण की सम्भावना है।

काश्मीर संविधान सभा

काश्मीर की संविधान-सभा का उद्घाटन युवराज कर्णसिंह अक्तूबर के तीसरे सप्ताह में करेंगे। काश्मीर सरकार का एक इंजीनियर हाल में ही संसद भवन की ठीक व्यवस्था तथा अन्य सुविधाओं का अध्ययन करने के लिये दिल्ली आया था। इससे प्रतीत होता है कि काश्मीर में अक्तूबर तक संविधान सभा का निर्माण हो सकेगा। प्रजा परिषद् ने भी इन चुनावों में नेशनल कांफ्रेंस के सदस्यों के मुकाबले में अपने सदस्य खड़े करने का निश्चय किया है।

कम्यूनिस्ट उपद्रव

राज्य मंत्री श्री एन० गोपाल स्वामी आयंगर ने संसद में बताया कि हैदराबाद के साम्यवादी उपद्रवों से ग्रस्त क्षेत्रों की स्थिति में सुधार हो रहा है। उन्होंने कहा कि हत्या, लूटमार आदि के मामले अब भी चलते हैं, लेकिन पहले से कम हैं। साम्यवादी दल ने व्यक्तिगत हत्याओं के आरोप को निराधार बताया है, परन्तु हैदराबाद में उसका नाम ६७ [illegible] साम्यवादी दल के नाम से पुकारा जा रहा है।

संविधान में संशोधन अवैधानिक

उच्चतम न्यायालय की संविधान शाखा के प्रधान न्यायाधीश श्री कानिया की अध्यक्षता में उत्तर प्रदेश बिहार और मध्यप्रदेश के जमींदारों की अर्जी पर, जिसमें संविधान संशोधन अधिनियम की प्रामाणिकता को चुनौती दी गई है, सुनवाई प्रारम्भ की। अदालत ठसाठस भरी थी। इस अधिनियम के जरिये राज्य सरकारों द्वारा जमींदारी उन्मूलन के लिए बनाए गए कानूनों को प्रामाणिक बनाने के लिए संविधान में दो नए अनुच्छेद जोड़े गए थे।

आवेदकों की ओर से श्री पी० आर० दास ने पैरवी करते हुए कहा कि यह अधिनियम सर्वथा गैरकानूनी है। क्योंकि अस्थायी संसद को संविधान में संशोधन करने का कोई हक नहीं है। इसके अलावा अगर संसद को यह अधिकार प्राप्त हुआ मान भी लिया जाय तो भी जो नए अनुच्छेद समाविष्ट किए गए हैं, वे अवैधानिक हैं, क्योंकि संसद ने उन्हें अपने संविधान संशोधन अधिकार के मातहत नहीं अपितु विधि निर्माण अधिकार के मातहत बनाया है।

पाकिस्तानी कुप्रचार

ज्ञात हुआ है कि भारत सरकार ने गत दो तीन दिन के अन्दर पाकिस्तानी समाचार पत्रों में छपे इन समाचारों की तुरन्त रिपोर्ट मांगी है कि जोधपुर सीमान्त में होकर पाकिस्तान जाने वालों के साथ तथाकथित बुरा बर्ताव किया गया और उन्हें सताया गया।

[आप पर अनुशासनात्मक कार्यवाही करने का विचार किया जा रहा है।

यहां कहा गया है कि यह पहला समय नहीं है कि पाकिस्तानी समाचार पत्रों ने मनघड़न्त अत्याचारों की अफवाहों का एक सुसंगठित आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया है। भूतकाल में इस प्रकार के आरोपों की जांच पड़ताल की गई और वे नितान्त निराधार साबित हुए।

अतः यह सम्भव है कि इस प्रकार की चालें अपनाने का कारण यह हो कि इस अवसर पर जिहाद के जोश को गर्मागर्म रखा जाए, विशेषतया इसलिए कि पाकिस्तान में ब्लैक-आउट आदि रखने के अन्य उपायों का अप्रत्याशित फल यह निकला है कि बहुत से स्थानों में आतंक व्याप्त हो गया है।'

आगामी आम चुनाव

आगामी आम चुनावों की तारीखें घोषित करदी गई हैं। देश में १ अक्तूबर तथा २४ जनवरी १९५२ के बीच चुनाव हो जायगे लेकिन जलवायु-सम्बन्धी कारणों से हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, हैदराबाद, ट्रावनकोर कोचीन भोपाल तथा बिलासपुर राज्यों में जल्दी चुनाव हो जाएंगे। सबसे पहले चुनाव हिमाचल प्रदेश में २५ अक्तूबर १९५१ को होंगे। उत्तर प्रदेश के पहाड़ी इलाकों में मध्य फरवरी में चुनाव होंगे किन्तु २८ फरवरी तक उनके परिणाम घोषित कर दिये जाएंगे।

★

दिल्ली की एक विशाल सार्वजनिक सभा में मध्यप्रदेश के भूतपूर्व गृहमन्त्री श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र भाषण दे रहे हैं।

पं. नेहरू की तानाशाही व साम्प्रदायिकता घातक

कांग्रेस चुनावों में नहीं जीत सकती

सांस्कृतिक आधार पर देश का पुनर्गठन हो

[श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र]

श्री जवाहरलाल नेहरू

गत ६ सितम्बर को प्रधान मन्त्री प० नेहरू ने अपने करौल बाग के सार्वजनिक भाषण में मुझ पर कुछ ऐसे आरोप लगाये जो केवल निराधार ही नहीं सत्य से कोसों दूर थे। प० नेहरू ने अपने भाषण में यद्यपि मेरा नाम नहीं लिया किन्तु फिर भी यह स्पष्ट है कि जिस व्यक्ति पर वे आरोप लगाये गये थे वह मैं ही हूँ। स्थानीय दैनिक टाइम्स आफ इण्डिया ने तो बिल्कुल स्पष्ट रूप से ही लिख दिया था कि प० नेहरू का संकेत स्पष्टतया मिश्रजी की ओर ही था।

प० नेहरू के भाषण के कुछ दिनों बाद ही उन्हीं के कुछ प्रमुख कांग्रेसियों का एक वक्तव्य प्रकाशित हुआ जिसका तात्पर्य था कि जिन व्यक्तियों ने देश के राष्ट्रीय नेताओं का अपमान किया है उनके विरुद्ध कोई कारगर कदम उठाना चाहिये मैंने उस वक्तव्य को कई बार पढ़ा। अपने कुछ मित्रों को भी दिखाया जिनमें कुछ वकील और कानून के पंडित भी थे। किसी ने भी मेरे इस विचार से असहमति प्रकट नहीं की कि उक्त वक्तव्य मेरे लिये एक धमकी थी। अन्यथा मेरे विरुद्ध कारगर कदम उठाने का अर्थ क्या हो सकता है? जरा वे ही बतावें जिन्होंने ऐसी मांग की है।

कांग्रेस छोडने का निश्चय

मैं अपने साथियों के आरोपों का तुरन्त ही उत्तर देता किन्तु उस समय तक मैं संस्था के नियमों और अनुशासन से बंधा हुआ था। कांग्रेस संस्था में होते हुए कांग्रेस की आलोचना करना तथा जनता के सामने वास्तविक स्थिति लाना मैंने उचित नहीं समझा। मैंने शीघ्र ही समझ लिया कि प० नेहरू अपने को देश से बड़ा समझने लगे हैं। वे स्वयं किसी संस्था के नियमों का पालन करने के स्थान पर समूचे देश से ही अपने नियमों का जबरदस्ती पालन कराना चाहते हैं। मैंने सोचा कि जब तक मैं कांग्रेस में हूँ मेरा कांग्रेस पर लगाये जाने वाले किसी भी आरोप से बचाव नहीं हो सकता और शीघ्र ही मैंने उस संस्था से अपना त्याग पत्र दे दिया जिसकी सेवा में पूरी ईमानदारी से ३० वर्षों से करता आ रहा हूं और मैं गर्वपूर्वक इस बात को कह सकता हूँ कि देश के किसी भी कांग्रेसी से कम मैंने सेवा नहीं की है।

कांग्रेस का मंच बन्द

मैं जानता हूँ कि आज कांग्रेस का मंच मेरे लिये खुला हुआ नहीं है। मैं भारतीय जनसंघ का धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मेरे लिये मंच का प्रबन्ध किया। यदि भारत भर में कोई भी ऐसी कांग्रेस कमेटी है जिसने नेहरू जी की गुलामी करने का ठेका ले लिया है तो वह देहली की प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी है जिसके अध्यक्ष श्री ब्रह्मप्रकाशजी हैं। वे अपनी जिस नीति को कार्यान्वित करने में लगे और मैं सफल नहीं हो सके उस नीति को वे देहली में सफल बना सके इसके लिये मैं उन्हें बधाई देता हूं। किन्तु मैं दिल्ली की कांग्रेस कमेटी को चेतावनी देना चाहता हूँ कि उन्होंने जो कड़वा बीज बोया है उसका फल उन्हें शीघ्र ही चखना पड़ेगा। मुझे विश्वास है कि दिल्ली की जनता उन्हें शीघ्र ही दिखा देगी कि कुछ व्यक्ति ही नेहरू जी की गुलामी कर सकते हैं दिल्ली की सारी जनता नहीं।

जनता निर्णय करे

आज मैं जनता की कचहरी में अपनी फरियाद लेकर आया हूँ जनता जज है जो चाहे निर्णय करे। मैं जो आज सुनाने आया हूँ सुनाकर ही जाऊंगा। यदि लोगों में से प्रत्येक मेरे सिर पर एक एक पत्थर भी मारेगा तो मैं सहर्ष सिर झुका लूंगा किन्तु जबान बन्द नहीं करूंगा। संविधान ने मुझको जो विचार प्रकाशन का अधिकार दिया है उसको जीते जी मुझसे कोई नहीं छीन सकता। आज तक कांग्रेस ने मुझे जनता के सामने अपनी फरियाद करना ही सिखाया है और वही मैं भी कर रहा हूँ। देश के किसी भी व्यक्ति द्वारा नियम विरुद्ध कार्य करने पर उस पर मुकदमा चलाया जाता है जनता को हिंसा के लिए नहीं भड़काया जाता।

भावी कार्यक्रम

मुझ से मेरे कई मित्रों तथा मिलने वाले सज्जनों ने यही प्रश्न किया कि क्या मैंने भारतीय जनसंघ में सम्मिलित होने का निश्चय कर लिया है। मैं उन स्त्रियों में से नहीं हूं जिन्होंने आज तो तलाक दे दिया और कल दूसरा विवाह कर लिया। मैं देश के विभिन्न दलों को तथा उनकी गतिविधियों का अध्ययन कर शीघ्र ही निर्णय कर सकूंगा। वैसे आप मेरे भाषण से अनुमान लगा सकते हैं कि मैं भारतीय जनसंघ के कितने समीप हूँ।

नेहरू तानाशाह क्यों ?

मैंने अपने पहिले वक्तव्य में जब नेहरूजी को तानाशाह कहा था तो मुझ पर चारों ओर से बौछार लगीं। सेवाग्राम के सन्त भी चुप न रह सके और उन्होंने मेरे इस आरोप का खण्डन किया। जब तर्क के आधार पर मेरी बात को मिथ्या प्रमाणित नहीं किया जा सकता तो और भी मार्ग अपनाये जा सकते हैं। यह मैं जानता हूँ। किन्तु मैं तो आज जान माल का बलिदान करने के लिए निकला हूँ। किसी भी परिस्थिति में अपनी बात कहूंगा। संसार की कोई भी शक्ति मुझे इस कार्य से रोक नहीं सकती। आप सबको अनुमान होगा कि कभी कभी घर में कुटुम्ब का नेता तानाशाही प्रकृति का होता है। वह चाहता है कि सब उसकी इच्छानुसार चलें। फिर भी कोई बिगड़े दिल ऐसा निकल ही आता है जो सीना तानकर चलता है और अपनी कर ही डालता है। प० जी ने अपनी एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा था— मैं और चाहे कुछ भी होऊं डिक्टेटर नहीं हो सकता। लेकिन इतना जरूर चाहता हूं कि लोग मेरी बात जरूर मानें भला बताइये यह तानाशाही नहीं तो और क्या है वे अपने त्यागपत्र द्वारा दल से, सरकार से और जनता से अपनी उचित अनुचित सभी बातें मनवाना चाहते हैं। उन्होंने हमेशा ही हर प्रश्न पर तानाशाही भाषा का प्रयोग किया है। उनकी हमेशा यही हरकत रहती है

हिन्दू कोडबिल

जब हिन्दू कोडबिल का प्रश्न उपस्थित हुआ तब भी प० जी यही कहने लगे। हिन्दू कोड पास होगा चाहे कुछ हो जाये। मेरा मरण अथवा जीवन इसी के लिए है। यह कहां का लोकतन्त्रात्मक ढंग है कि पहले तो अपनी बात मनवाने के लिए और पलायन होने के लिए कांग्रेस अध्यक्ष का स्थान खाली कर या और जब वह स्थान खाली हो गया तो आप कहते हैं अच्छा जब आप लोग मुझे चाहते ही हैं और अन्य कोई इस कुर्सी पर बैठने वाला नहीं है तो लो मैं ही बैठ जाता हूँ।

श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र

ऐसा कोई भी व्यक्ति जिसने अपना दिमाग दूसरे के हाथ बेच नहीं दिया है भली प्रकार समझ सकेगा उनकी यह कहां तक भलमानसाहत है। जरा यह भी सुनिये कि उन्होंने अध्यक्ष के नाते पहली बैठक में किस प्रकार नाटकीय ढंग से कांग्रेसपार्टी के सदस्यों का समर्थन प्राप्त किया। जब वे पहिली बैठक में पहुंचे तो सदस्यों से कहने लगे— आप लोग फिर एक बार भली प्रकार सोच समझ लो। क्या सचमुच आप मुझ पर विश्वास करते हो। हम पर जब कोई नहीं बोला तो पंडित जी कहने लगे अच्छा यदि आप लोग सन्मुख मुझे चाहते हैं तो किसी नाम अपना समर्थन जोर से प्रकट कीजिये फिर एक न उठकर कहा ही [illegible] तो फिर आप ही न बताइये कि आप क्या चाहते हैं। इस पर प० जी ने कहा तो जोर से नयाहन्द बोलिये। कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्यों की दशा भी उक्त किस्सा की सी मालूम होती है। [illegible] व्यक्ति के हाथ में भाग्य सौंप दिया है पर उनको [illegible] रते हैं। जरा आप उनकी [illegible] देखिये जाकर। उनमें इतना साहस न ा प्रतीत होता कि वे बाहर निकलकर किसी के सामने आ सकें।

स्व० सरदार वल्लभभाई पटेल

अद्भुत तर्क

सच्चा प्रजातान्त्रिक ढंग यही है कि कोई भी व्यक्ति अपनी बात कहे और दूसरे की भी शान्ति के साथ सुने और फिर जो उचित फ़ैसला हो उसे माने। हमारे देश के विगत इतिहास में ऐसी अनेकानेक घटनाएं हैं, जब किसी भी व्यक्ति को सच बात कहने पर जान से ही हाथ धोना पड़ा। पण्डितजी ने अपने एक भाषण में अद्भुत तर्क उपस्थित किया कि यदि कुछ व्यक्तियों को कांग्रेस से मतभेद था तो पहले ही क्यों नहीं कांग्रेस छोड़ दी? किन्तु जब पण्डितजी से किसी निर्णय के सम्बन्ध में कहा जाता है तो वे तुरन्त कह देते हैं—"The time was not right" यह युक्ति तो हरेक व्यक्ति के साथ ही लागू हो सकती है।

अब नहीं सहेंगे

आज तीस साल तक हम उन्हें सिर पर उठाये फिरे, उनकी तुनकमिजाजी भी सही। उन्होंने दो लातें भी मार दीं, तो चू भी न की। धैर्य से काम लिया। किन्तु वे तो अब ऐसा समझने लगे हैं—'वीर विहीन मही मैं जानी" वे जो चाहें करते रहें, हम करते हैं? क्या और लोगों ने चूड़ियां पहन रखी हैं? अब तक हम उनकी तुनक मिजाजी सहते रहे। किन्तु अब वह तुनक मिज़ाजी देश के लिए ही घातक सिद्ध हो रही रही है, तो अब हम नहीं सहगे।

मैं साम्प्रदायिक अथवा वे

पंडित नेहरू ने मुझ पर साम्प्रदायिक होने का आरोप लगाया है। किन्तु मैं आज दिल्ली की जनता के सामने घोषणा कर देना चाहता हूं कि यदि भारत का सबसे बड़ा फिरकापरस्त है तो वह है आपका प्रधानमन्त्री। यह बात मैं यों ही नहीं कह रहा हूं। इसके लिए मेरे पास प्रमाण हैं, जो कुछ कहूँगा, प्रमाण सहित कहूँगा। जहां तक मेरे साम्प्रदायिक होने का सम्बन्ध है, मैं पंडितजी को चुनौती देता हूं कि मेरे कुल ७ वर्ष के मन्त्रित्वकाल में वे एक भी ऐसा उदाहरण दिखायें कि जो मेरे साम्प्रदायिक होने का द्योतक हो। इसके लिये व चाहें तो सेक्रेटेरियेट की फाइलें निकलवा कर देख सकते हैं। हां मैंने यह हमेशा आंखें खोल कर देखा है कि कौन देश का शत्रु है और कौन मित्र। फिर चाहे वह किसी भी धर्म अथवा वर्ग का हो।

कठपुतली बन रहे हैं

अनेकों बार बातचीत में शुरू से किदवई साहब ने कहा है कि जहां तक शासन और सियासत का सवाल है, पण्डितजी एक बहुत बड़ा ज़ीरो हैं, अर्थात् शून्य हैं। यदि साफ शब्दों में कहूं तो किदवई साहब उस शून्य के पीछे रह कर ही हाथ साफ करना चाहते हैं। पण्डितजी देश का सर किसी दूसरे की गोद में रख देना चाहते हैं। किन्तु वे याद रखें कि इससे हिन्दुस्तान का सिर कटेगा, उनका नहीं।

नेहरू की अदूरदर्शिता से कत्लेआम

मैं पण्डितजी से पूछना चाहता हूं कि यदि आप में ज़रा भी अक्ल होती तो पश्चिमी पंजाब के दंगों के बाद आपको समझ जाना चाहिये कि उसके परिणाम स्वरूप पूर्वी पंजाब में क्या होने वाला है? पं० नेहरू की अदूरदर्शिता के कारण देश में जो कत्लेआम हुआ, वह देश के इतिहास में काले अक्षरों से लिखा जायेगा। मेरे पास जब पश्चिमी पंजाब और सीमान्त के कुछ भाई मिलने आये और पूछा कि हम वहां रहें अथवा भारत में आयें, तब मैंने यही कहा था कि यदि वे अपनी जान बचाना चाहते हैं, तो शीघ्र ही भारत में आ जायें। ईश्वर करे उनकी बुद्धि आ गई हो और वे जान बचा कर चले आये हों।

पंजाब में गवर्नरी शासन

पण्डितजी की फिरकापरस्ती का दूसरा उदाहरण लीजिये। केन्द्रीय निर्वाचन बोर्ड की बैठक में मैं पहला व्यक्ति था, जिसने यह सलाह दी कि पंजाब में अविलम्ब गवर्नर शासन घोषित कर दिया जाय। वर्ना पंजाबभर में हिन्दू सिखों के बीच दंगे प्रारम्भ हो जायेंगे। उस समय मेरी बात नहीं मानी गई। क्योंकि उस समय तक मुस्लिम लीग के पुराने साथी सच्चर साहब पंजाब में मंत्रिमण्डल कायम रखने की धुन में लगे थे। खैर मुझे किसी से तात्पर्य नहीं, चाहे सच्चर हो चाहे भच्चर।

कुछ दिन बाद फिर जब मैं निर्वाचन बोर्ड की मीटिंग में पहुँचा तो पं० नेहरू सिर झुकाये बैठे थे। मैं समझ नहीं पाया कि यह मातमपुरसी किस लिये हो रही है। बहुत कहने सुनने पर पण्डितजी ने उगल दिया—"मैंने तो कल ही पार्लियामेंटरी बोर्ड से स्तीफा दे दिया है। आज तो मैं टंडनजी का लिहाज करके चला आया।

राजर्षि टण्डन

मौलाना नेहरू षड्यन्त्र

बंगलौर में भी जब नेहरू जी ने किदवई साहब को कार्य कारिणी में लेने पर ज़ोर दिया, तभी हमने कहा था कि किदवई साहब कार्यकारिणी में आ सकते हैं यदि वे ऐसी हरकतें न करें जैसी की वे उत्तर प्रदेश में हमेशा से करते आ रहे हैं। उसी समय पण्डितजी ने एक ऐसी बात कही जो उनकी फिरकापरस्ती का स्पष्ट प्रमाण है। उन्होंने कहा— "यदि राजाजी मन्त्रिमण्डल छोड़ जायें तो देश को इतनी हानि नहीं होगी, किन्तु यदि मौलाना साहब हमारे साथ नहीं रहे तो देश की बहुत बड़ी हानि होगी।

मुसलमान सचेत हो जायें

मद्रास की मुस्लिम लीग ने अपनी एक घोषणा में कहा है कि जब तक पंडित नेहरू कांग्रेस और सरकार में हैं हमारे हित सुरक्षित हैं। किन्तु मैं भारत वर्ष के मुसलमानों को सचेत कर देना चाहता हूँ कि उन्हें अपनी रक्षा के लिये भारत की ३५ करोड़ हिन्दू जनता का पल्ला पकड़ना पड़ेगा। केवल नेहरूजी ही उनकी रक्षा नहीं कर सकेंगे। आप यह न भूलें कि हिन्दू अत्यन्त सहनशील है और वह आपको किसी भी प्रकार की हानि नहीं होने देगा। आपने अंग्रेजों का पल्ला पकड़ा, वे चले गये, लीग का पल्ला पकड़ा तो वह पाकिस्तान चली गई, अब आपने नेहरू जी का पल्ला पकड़ा, वे भी चले जायेंगे फिर आपकी रक्षा कौन करेगा। इसलिये आप याद रखें कि आप को भारतीयता अपनानी पड़ेगी, इस देश की संस्कृति का आदर करना पड़ेगा, इसी में आपका कल्याण है। यदि अकबर हिन्दू मुसलमानों की एकता का इतना प्रयत्न करने पर भी मुसलमानों का भला नहीं कर सका तो पं० नेहरू क्या तुम्हारा भला कर सकेंगे।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

मध्य भारत में भारतीय जन-संघ का उदय

[प्रो० बलराज मधोक

आपके पावों में चक्कर क्या मतलब ?

आपकी जीवन में बहुत घूमना होगा। यह शब्द मुझसे बहुत वर्ष पहिले एक ज्योतिषी महाराज ने कहे थे जिनका मैं उपहास मात्र के लिये अपना हाथ दिखा बैठा था। उस समय मुझे उन शब्दों पर जरा भी विश्वास न था। परन्तु अब अपने गत २६ वर्षों के जीवन पर दृष्टिपात करने से मैं महसूस करता हूँ कि उन ज्योतिषी महाराज के वह शब्द ठीक ही थे। मेरे पावों में सचमुच ही चक्कर है।

अभी ३० अगस्त को ही मैं डलहौजी व काला टाप की चोटियों को फांदता हुआ चम्बा नूरपुर, सुजानपुर पठानकोट इत्यादि स्थानों में घूमता हुआ गुरदासपुर पहुँचा ही था कि मुझे तुरन्त इन्दौर के लिए प्रस्थान करने की सूचना मिली क्योंकि वहां पर दो सितम्बर को सारे मध्य भारत के प्रमुख नागरिक उस प्रदेश में विधिवत भारतीय जन संघ की स्थापना करने के लिए एकत्रित हो रहे हैं। कर्तव्य मार्ग में सूचना और आज्ञा एक ही शब्द के दो रूप है। अतः उसी दम वहां मे चलने का निश्चय किया।

दो सितम्बर प्रातः ढाई बजे गाड़ी इन्दौर स्टेशन पर रुका। मैं आखें मलता हुआ नीचे उतरा। मन में यही सोच रहा था कि इस बे वक्त घड़ी में कहां जाऊं कि इतने में कानों मे एक परिचित आवाज पड़ी। आंख उठा कर देखा तो सामने श्री मनोहर राव जी मोघे को खड़े पाया। मेरी चिन्ता खतम हुई। दो घंटे सोने को मिल गये।

दिन चढ़ा तो आंख खुली। शरीर में अभी सफर की थकान थी और आंखें नींद से बोझल हो रही थी। मेरे मुंह से अनायास ही उर्दू कवि के शब्द निकले—

सुबह सफर शाम सफर
है जिन्दगी का अन्जाम सफर।

और मैंने सोचा कि जिन्दगी के इस सफर में आराम कहां। जगने के समय में नींद का क्या काम ? तुरन्त उठा और नये नगर में नये दिन का स्वागत किया।

दोपहर को एक बजे गणेश मंडल के विशाल हाल में जन संघ का सम्मेलन हुआ। सारा हाल मध्यभारत के विभिन्न नगरों व जिलों से आये हुए प्रतिनिधियों से खचाखच भरा हुआ था। ३५० से कुछ अधिक ही लोग थे। मुझे बताया गया कि उनमें मध्यभारत के सभी प्रमुख नागरिक सम्मिलित थे। डाक्टर वकील बैरिस्टर हाईकोर्ट के अवकाश प्राप्त जज किसान जमींदार तथा व्यापारी सभी प्रकार के लोग वहां आये हुए थे।

सम्मेलन की कारवाई वन्दे मातरम् के गान से शुरू हुई। सभी लोगों ने खड़े होकर भारत मां की वन्दना की। उसके तुरन्त बाद सम्मेलन ने इन्दौर के प्रमुख नागरिक वैद्यराज रामनारायण शास्त्री को सर्व सम्मति से सम्मेलन का अध्यक्ष चुन लिया।

अन्य लोगों की तरह श्री रामनारायण जी भी मेरे लिये बिलकुल नये व अपरिचित व्यक्ति थे। परन्तु उनको देखते ही मेरे मन में उनके लिए श्रद्धा का भाव जाग उठा। उनके विशालकाय परन्तु सौम्य मूर्ति उनका मिठास भरा सम्बोधन सहानुभूति तथा सभा को संयमित रूप में चलाने की उनकी कुशलता का मेरे मन पर कभी न मिटने वाला प्रभाव पड़ा है।

सम्मेलन में भाग लेने वाली अन्य विभूतियों में मऊ के श्री सूरजमल नागर एडवोकेट विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। छोटा कद चपटा मुंह तेज आंखें और तीक्ष्ण बुद्धि उनका परिचय है। ग्वालियर के श्री मिश्रा मऊ के जमादार साथी उज्जैन के श्री कैलाशचन्द्र भार्गव तथा इन्दौर के श्री किशोरीलाल गोयल ने भी सम्मेलन की सफलता के लिए उल्लेखनीय काम किया। ये सभी सज्जन प्रभावशाली वक्ता हैं।

सम्मेलन ने सर्वसम्मति से मध्य भारत में भारतीय जनसंघ स्थापित करने का प्रस्ताव पास किया और उसके घोषणापत्र तथा अस्थायी संविधान को भी विधिवत मान्यता दी।

सम्मेलन ने मध्यभारत जनसंघ के प्रधान के नाते बड़नगर निवासी श्री बद्रीलाल दवे को चुना है। श्री दवे एक असाधारण व्यक्ति हैं। आप के लाइरी के बाहर जिन्दगी में उनमें एक भी नहीं है। वे राजनीति के लीडर नहीं मनुष्य हैं सच्चे मनुष्य। उनके समारोप भाषण के द्वारा मैं तथा वहां एकत्रित अन्य लोगों ने उनके जीवन में अद्वितीय कर्तव्य निष्ठा और आदर्शवाद की झलक देखी। उनके नेतृत्व में मध्यभारत जनसंघ शीघ्र ही एक बलवान संगठन बन जायगा इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। उनको सहकारी भी बहुत अच्छे मिले हैं। श्री मनोहर राव जैसे कर्मठ व्यक्ति को प्रधान मन्त्री चुन कर मध्यभारत के संस्थापकों ने आधा मैदान मार लिया है। बाकी का वह अपने प्रयत्न से जीत ही लेंगे।

सम्मेलन के पश्चात मुझे दो दिन उज्जैन और इन्दौर के चक्कर काटने पड़े।

[शेष पृष्ठ १८ पर]

सम्मेलन के अध्यक्ष — वैद्य प० रामनारायण जी शास्त्री

जन-संघ के अध्यक्ष — श्री बद्रीलालजी दवे

जन-संघ के उपाध्यक्ष — प० आनन्दबिहारी मिश्र

जन संघ के प्रधान मन्त्री — श्री मनोहरराव मोघे

जन संघ के सहायक मन्त्री — श्री कैलाशप्रसादजी भार्गव

जन-संघ के सहायकमन्त्री

श्री सूरजमलजी गर्ग

मध्य भारत में जन-संघ की स्थापना के लिए इन्दौर में होने वाले सम्मेलन के दो दृश्य। प्रतिनिधि जन-संघ के अस्थाई घोषणा पत्र तथा विधान पर विचार कर रहे हैं।

मध्य पूर्व लेखमाला ८

अविकसित सूडान का राजनैतिक भविष्य

[श्री नीरस योगी]

मध्य पूर्व के देशों में सूडान की समस्या सदैव से चिन्ता का विषय रही है। सूडान के पिछड़े हुए प्रदेश का उसके पड़ोसी मिश्र व ब्रिटेन ने भली प्रकार शोषण किया गया है। आज भी देश राजनैतिक रूप से दो भागों में बटा हुआ है। उत्तरी व दक्षिणी सूडान में आप भिन्न भिन्न परिस्थितियों का अनुभव कर सकते हैं। देश के दोनों भाग ऐतिहासिक भौगोलिक व जन सख्या के विभाजन के प्रतीक हैं। देश का उत्तरी भाग इथोपिया व मध्ययुगीन न्यूबा से सम्बन्धित है। इस भाग के सांस्कृतिक सम्बन्ध अरब जाति से अधिक हैं इसी कारण इस मध्यपूर्व का एक भाग कहा जा सकता है। इसके विपरीत दक्षिणी भाग को सर्वप्रथम गुलामों का व्यापार करने वालों ने खूब रौंदा था। १८६० में देश पर टर्की व मिश्र का सम्मिलित शासन हो गया। सांस्कृतिक रूप में देश अफ्रीका के अधिक समीप है।

देश का क्षेत्रफल ९६७५०० वर्ग मील है। उत्तर से दक्षिण तक इस प्रदेश की लम्बाई प्राय १००० मील है। अधिक से अधिक चौड़ाई १२०० मील है। देश की जनसख्या ६५ लाख से ७५ लाख तक आकी जाती है। १९०८ की सरकारी गणना के अनुसार यह सख्या ७५४७००० है। जलवायु पर वर्षा का अधिक प्रभाव है। यह वर्षा उत्तर से प्रारम्भ हो कर दक्षिण तक फैल जाती है। वर्षा के कारण ही देश में वनस्पति उत्पन्न के केन्द्र है। सुदूर उत्तर में देश का अधिकतर भाग रेगिस्तान है। जनसख्या अपना जीवन निर्वाह नील नदी के किनारे के उपजाऊ प्रदेशों में करती है।

नील नदी का प्रभाव

श्वेत व नील धारायें खारतम के समीप एक होकर मुख्य नील नदी का रूप धारण करती हैं। नील नदी पर सूडान का एक प्रकार से मिश्र की अपेक्षा अधिक अधिकार है। मिश्र को प्रत्येक समय यह आशंका लगी रहती है कि सूडान से विवाद के समय यदि सूडान नील का पानी रोक दे तो मिश्र का सब से अधिक उर्वरा प्रदेश रेगिस्तान में परिवर्तित हो जायगा। इसी कारण मिश्र सूडान को अपना अभिन्न अंग बनाना चाहता है। ७ मई १९२९ की सन्धि के अनुसार मिश्र नील नदी के जल का प्रयोग कर सकता है। यह सन्धि एक अन्वेषण के आधार पर हुई थी। इस योजना का उद्देश्य मिश्र में सिंचाई योजनाओं का कार्यान्वित करना था। जहा तक सूडान का सम्बन्ध है वह अपनी कृषि के लिए सीमित मात्रा में जल का उपयोग कर सकता है। इस सीमा का एक उद्देश्य है कि किसी भी प्रकार मिश्र व सूडान के सबंध कटु न होने पाय। सूडान के लाभ के लिये किसी भी योजना को कार्यान्वित करने से पहले मिश्र की अनुमति आवश्यक है। मिश्र ने नील नदी पर सिंचाई योजना को कार्यान्वित करने से पहले सूडान को विश्वास दिलाया था कि वह सदैव सूडान के हितों पर ध्यान देगा। देशों में कपास की अत्यधिक उपज होती है। इसी कारण इस प्रदेश पर इटली

श्री मौरिसन — स्व० श्री बेविन

ब्रिटेन के स्वर्गगत और वर्तमान विदेश मन्त्री जिनका कूटनीति सूडान के लिये सदा अभिशाप सिद्ध हुई।

व इंग्लैंड ने अधिकार करना चाहा। सूडान पर १९२४ में दबाव डाल कर यह मनवाया गया कि वह प्रति वर्ष ५००० पौंड से अधिक की उपज पर २० प्रति शत इटली को देगा। इसके लिये इटली अपने अन्तर्गत गेस के प्रदेश में कोई बाध न बाधेगा। अर्थात् सूडान को कपास की उपज के लिये उचित जल दिया जायगा।

देश की स्थिति

सूडान का उत्तरी भाग अरब बहुल प्रदेश है। मिश्र पर अरब लोगों का अधिकार हो जाने पर इस प्रदेश में मुस्लिम धर्म का प्रचार हुआ। १३ वीं शताब्दी के पश्चात् देश में अरब लोगों का बड़ी मात्रा में आगमन हुआ। १५वीं शताब्दी के अन्त तक देश में ईसाई धर्म का लोप हो चुका था और मुस्लिम धर्म का पूर्ण रूप से प्रसार हो चुका था। प्राकृतिक विभाजन के कारण सूडान की जनता अन्य अरब देशों से भिन्न है। अपने सामाजिक व धार्मिक रीति रिवाजों में सूडान के लोग अरब जगत के समान ही हैं। उन प्रदेशों में भी जहा कि अरब राष्ट्रीयता कमजोर है राजनैतिक व सामाजिक रूप से सूडान पूर्णत अरब प्रदेश का अंग है। इस प्रदेश की भाषा वेष आचार और ऐतिहासिक रीतिरिवाज पूर्णत अरब जगत से सम्बन्धित हैं। मुख्य विभाजन इस प्रकार है—

१ ऊट चराने वाले खानाबदोश।
२ पशु चराने वाले खानाबदोश।
३ ग्राम निवासी।
४ शहरी नागरिक।
५ विदेशी जातिया यह मुख्यत व्यापार सरकारी नौकरी कृषि की देख रेख इत्यादि करती हैं। इन जातियों में मिश्र ग्रीम सीरियन व आरमीनिया के निवासी मुख्य हैं।

देश की जनसख्या में अरब लोगों के अतिरिक्त अन्य जातिया भी सीमित सख्या में सम्मिलित हैं। इनमें यूबीयन व बेजा प्रमुख हैं। दारफुर व कोरडोफान की जातियों का भी अपना एक स्थान है।

देश का दक्षिणी भाग

देश के उत्तरी भाग का शासन, भाषा व आर्थिक विकास अरब जगत् की भांति है। इसके विपरीत देश का दक्षिणी भाग पूर्णत अमरीकी प्रदेश कहा जा सकता है। देश आर्थिक रूप से समृद्ध होने पर भी पिछड़ी दशा में है। कुछ जातिया पूर्ण रूप से मध्ययुगीन आदर्शों पर चलती हैं। अन्य खेती बाड़ी में पुराने साधनों का प्रयोग करती हैं। कला अविकसित दशा में है। देश मे कपड़ा पहनने का रिवाज नहीं है उसे केवल विलास की वस्तु माना जाता है। इस भाग की जनसख्या का विभाजन जातियो मे इस प्रकार है।

दल	सख्या
१ नीलाटिक दल	—
२ भिलका	१०० ०००
३ दिनका	प्राय ५०० ०००
४ नूयेर	प्राय ३०० ०००
५ नील हेमरियटस — इसमें कई छोटे दल सम्मिलित हैं (बारी लोटूको टरकान व अन्य।)	
६ अजाण्डे या जाण्डे	२०० ०००

इतिहास व राजनीति

आंग्ल मिश्री सूडान एक राजनैतिक इकाई है। इसका जन्म टर्की मिश्र काल (१८२० ८९) में हुआ था। इस काल से पहले का इतिहास प्राय लुप्त हो चुका है। टर्की मिश्र युग में देश पर विदेशियों के अधिकार का कारण सोने की खाने था। इसके अतिरिक्त देश की जनता को गुलाम बना कर बेगार ली जाती थी। इस काल सूडान को एक लाभ अवश्य हुआ कि वह शासन व राजनैतिक दृष्टि से एक इकाई में परिवर्तित हो गया। देश के साथ यूरोपीय देशो से व्यापार किया जाने लगा। इस प्रकार देश उनकी राजनीति से पृथक न रह सका। देश पर अनेकों बार विदेशियो ने अधिकार करने की चेष्टा की। इस दिशा मे वह किसी प्रकार सफल भी रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति

मिलनर कमीशन की रिपोर्ट में सूडान को मिश्र से भिन्न प्रदेश बताया है। यह भिन्नता व्यापारिक क्षेत्र में स्पष्ट है। इसकी स्वीकारोक्ति आंग्ल मिश्री सन्धि (१८९९) से भी प्रकट होती है। १९३६ की आंग्ल मिश्री संधि के अनुसार यह निश्चित किया गया कि इस सन्धि का मुख्य उद्देश्य सूडान की उन्नति करना होगा। देश में सूडान की जनता को नौकरिया व अन्य आर्थिक साधन प्रदान किये जायेंगे। इस सधि के अनुसार यह निश्चित् किया गया कि गवनर जनरल यह निश्चित करेंगे कि देश में मिश्र की सेना कितनी रहे व उसे किस स्थान पर रखा जावे। सूडान के आर्थिक सम्बन्धों के विषय में यह निश्चित किया गया कि इस प्रश्न को ब्रिटेन व मिश्र के आर्थिक विभाग द्वारा सुलझा जावेगा।

सीमायें

१९०२ की सन्धि के अन्तर्गत अबीसिनिया व सूडान की सीमायें निर्धारित कर दी गई है। इसी सन्धि के अन्तर्गत यह निश्चित् किया गया कि

(शेष पृष्ठ १८ पर)

कहानी

छाता

श्री आनन्दप्रकाश जैन

'मैं झूठ नहीं बोलता, भगवान् कसम, मेरा दिरदा अन्दर आ रहा है।'

संसार में बहुत-सी परस्परविरोधी बातें पाई जाती हैं। कभी-कभी यह अन्तर्विरोध तीव्र रूप में सामने आता है। इस पर ध्यान देने से भी कभी-कभी काम चल जाता है, लेकिन कभी-कभी ध्यान देने से

ऊपर कहे शब्द एक व्यक्ति जोर-जोर से बोलता हुआ बस स्टैंड के क्यू में आ खड़ा हुआ, उसके पीछे आ कर खड़ा हो गया एक सफेद बालों वाला बूढ़ा उसी के साथ साथ। बूढ़े ने कहा, तुम्हारा तो दिमाग खराब है।'

वह व्यक्ति अपने दिमाग खराब होने का प्रतिवाद ही करना चाहता था कि पगड़ी सम्भालते हुए एक पण्डितजी बूढ़े के पीछे आ खड़े हुए। बूढ़े ने परिचित की तरह उनसे कहा, आइए पण्डितजी, आपका काम हो गया।'

पण्डितजी के उत्तर देने से पूर्व एक युवती आई और वह पण्डितजी के पीछे खड़ी हो गई। एक अज्ञात संकोच से पण्डितजी जरा सिकुड़ गये। तभी उनकी निगाह आकाश की ओर गई और मानो प्रत्युत्तर में बादल कड़कड़ा कर गरज उठे, साथ ही हलकी-फुलकी बूंदें गिरनी शुरू हो गई। इन सब व्याघातों से वह बूढ़े का उत्तर देना शायद भूल गए। बूढ़े के आगे खड़े युवक की ओर मुंह करके पण्डितजी ने कहा, 'रामेश्वर दयाल, बारिश आ गई है।" उसके हाथ में छाता था।

रामेश्वरदयाल ने कहा— हां, पंडितजी !'

लेकिन इस आपसी स्वीकारोक्ति से वर्षा रुकी नहीं। बूंदें जरा मोटी होकर गिरने लगीं। अब पण्डितजी ने भयग्रस्त होकर इधर-उधर ताका। इतने में रामेश्वर दयाल ने छाता खोल लिया। तुरत-बुद्धि से पण्डितजी ने अपने आगे खड़े बूढ़े से कहा, 'मगीराम, पिछला निमोनिया तो भाई, आधी जान ले गया था।'

बूढ़े मगीराम ने मतलब समझ कर तपाक से कहा, 'हां, हां, पण्डितजी, आपको बूंदें नहीं लगनी चाहियें। आप आगे आ जाइये, रामेश्वर के छाते में, मैं पीछे हुआ जाता हूँ।'

पण्डितजी आगे आगए और बूढ़ा पीछे हो गया। बूंदें अब और जोर से पड़नी आरम्भ हुईं। पण्डितजी रामेश्वर दयाल से सट कर और छाते में को दुबक गए। एक बार भी उन्होंने पीछे फिर कर नहीं देखा।

बूढ़े ने अपनी धोती की फेंट खोल ली और उसे इकहरी करके सिर पर ओढ़ ली।

तभी बस आ गई और क्यू सिमट कर धीरे-धीरे उसमें समाने लगा। जितनी देर में बूढ़े का बारी आई, उसकी धोती में से पानी छन छन कर उसके चेहरे पर चूना चाहिये था, लेकिन बस में चढ़ते हुए जब उसने धोती समेटी, वह सूखी थी। आश्चर्यान्वित होकर उसने पीछे देखा युवती की जो अपने छाते को बन्द करके निचोड़ने में लगी हुई थी।

बूढ़े को धन्यवाद देना नहीं आता था, इसीलिए उसने नहीं दिया, किन्तु उसके चेहरे पर प्रसन्नता की आभा खेल गई।

जब कण्डक्टर ने सीटी दी, दरवाजे के पास ही बैठी हुई युवती से रेलिंग पकड़ कर खड़े हुए बूढ़े ने प्रश्न किया, 'कहां रहती है बेटी ?'

जवाहर क्वार्टर्स में, १६ नम्बर का फ्लैट है।' युवती ने उत्तर दिया।

'ओ हो !' बूढ़े ने सहानुभूति मिश्रित स्वर में कहा, 'तब तो इसके बाद चार नम्बर बस और पकड़नी होगी !'

'कोई बात नहीं !' युवती ने कहा, 'मैं रोज आती-जाती हूँ।'

'अच्छा, अच्छा, बड़ा अच्छा है !' बूढ़े ने मग्न होकर कहा, तभी आगे की सीट पर बैठे पण्डितजी चिल्लाए, 'यहां आजा इधे न, मगीरामजी, सीट खाली है।'

और बूढ़ा आगे बढ़ गया।

जिस समय बस अपने अन्तिम ठिकाने पर रुकी, धूप निकल आई थी और आसमान साफ हो चला था। धीरे-धीरे लोग बस से उतर रहे थे और बूढ़ा सबसे आगे बैठने के कारण अब सबसे पीछे था। सबके उतरने पर जब वह भी अपने पग पायदान पर रखने लगा, उसकी निगाह बराबर की सीट पर गई और वह चिल्ला उठा—'अरे, रे, वह • छाता !'

इसके पहले कि और लोग देख कि क्या हुआ, बूढ़े ने झपट कर छाता उठाया और फुर्ती से बाहर निकल कर अपनी दृष्टि चारों ओर दौड़ाई। जरा दूर देखने पर उसे चार नम्बर बस की क्षण क्षण में दूर होती पीठ दिखाई दी, जिस पर लिखा था 'फिर मिलेंगे' जिसे उसके प्राइवेट स्वामी से खरीद लेने पर भी सरकार ने नहीं मिटाया था।

स्थिति सभी उपस्थित लोगों की समझ में आगई। युवति को इस बस के ठहरते न ठहरते चार नम्बर बस दिखाई दी होगी और वह हड़बड़ाहट में उसे पकड़ने के लिये उतरते समय अपना छाता भूल गई।

'आखिर तुम मुझे क्यों दुःख देने पर तुले हुये हो। मैं एक दिन बारिश में भीगकर मर थोड़े ही जाती। आज तुम्हें फिर ज्वर है।

पंडितजी ने हंसकर कहा— 'बच्चिए भगवान जब देता है छप्पर फाड़कर देता है।"

'हूँ' बूढ़े ने कहा, "और आप देखेंगे कि किस तरह वह फिर वापिस भगवान् के पास पहुंचा दिया जाता है मुझे लड़की का पता मालूम है।'

सोता है ही पण्डित जी ने कहा, शास्त्र में लिखा है कि खोया हुआ माल अपनाना भी चोरी है,' और उन्होंने एक उचटती हुई ललचाई दृष्टि उस सुन्दर बल बूटेदार मजबूत छाते पर चोरी से फेंक कर हटाली।

मैं कहता हूं इतनी सिर दर्दी करने की जरूरत क्या है बेकार इतनी दूर जाओगे, आओगे युवक रामेश्वरदयाल अगले दिन छाता बगल में दबाए बाहर जाने को तत्पर बूढ़े से उसके पीछे पीछे द्वार तक आते आते बोला।

इतने में द्वार के सामने पण्डितजी दिखाई दिए और बूढ़े ने मुस्कराकर कहा 'तुम्हें मालूम नहीं, शास्त्रों में लिखा है कि

मैं झूठ नहीं बोलता, भगवान कसम पण्डितजी ' रामेश्वरदयाल कहता ही रहा और बूढ़ा बरामदा पार कर सड़क पर पहुँच गया।

आध घण्टा बसों की घूं घूं में बिता कर जब उसने जवाहर क्वार्टर्स के फ्लैटों के नम्बर एक एक करके पढ़ने शुरू किये, तो उन्नीस नम्बर मिलते देर न लगी। फ्लैट के सामने खड़े होकर उसने एक बार बगल में दबे छाते की ओर देखा और दस्तक देने के लिये द्वार की ओर हाथ बढ़ाया।

तभी अन्दर से एक युवक की

[शेष पृष्ठ १७ पर]

भूमध्यसागर

स्पेन-अमेरिका व पश्चि

[श्री केशव

-बर्गोस में गोथिक ढग   दुर्ग गजघर का मध्य भाग

सन् १९३९ में समाप्त हुए गृह युद्ध ने स्पेन को आर्थिक दृष्टि से बड़ी खराब दशा में छोड़ा था जिससे वह आज तक नहीं सभल पाया है। जनरल फ्रेंको के शासन सभालते २ द्वितीय विश्वयुद्ध का भी गणेश हो गया जिसमें ब्रिटेन तथा फ्रांस जर्मनी के विरुद्ध खड़े हो गए। आन्तरिक स्थिति सुधारने तथा पुनर्निर्माण का काम करने के लिए स्पेन को बाहरी सहायता आवश्यक थी। उसको मशीनें तथा विशेषज्ञ चाहिए थे जो उसके अविकसित उद्योगों का विकास कर सकते तथा स्पेन के निवासियों को उनके लिए योग्य शिक्षा देते। उसे धन तथा विदेशी मुद्रा की आवश्यकता थी। किन्तु युद्ध के कारण उसे कुछ भी प्राप्त न हो सका।

कारण

सहायता न मिल पाने का एक अन्य कारण भी था। स्पेन का गृहयुद्ध प्रजातन्त्र और राजतन्त्र के बीच युद्ध था। १९३१ में स्पेन में गणराज्य स्थापित किया गया था और उसे उखाड़ कर ही जनरल फ्रेंको ने अपना एकछत्र शासन स्थापित किया था। ब्रिटेन तथा फ्रांस और अमेरिका आदि को यह परिवर्तन रुचिकर न लगना स्वाभाविक ही था। अत इन देशों की सरकारें फ्रेंको का शासन के अनुकूल न थी। साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध प्रजातन्त्र और अधिनायकवाद के मध्य युद्ध बन गया था। ऐसी स्थिति में स्पेन के अधिनायक को सहायता देकर अधिक बलवान बनाना इन्हें किसी भी प्रकार अभीष्ट नहीं हो सकता था।

इसके अतिरिक्त एकछत्र शासक होने के कारण तथा ब्रिटेन फ्रांस आदि के द्वारा विरोधी ढग स्वीकार कर लिए जाने के कारण स्पेन का स्वाभाविक

तथा इटली की ओर झुका। सम्भवत यह इस कारण भी हो कि स्पेन को विदेशी सहायता की आवश्यकता थी और ब्रिटेन तथा फ्रांस आदि उसकी सहायता करने के लिए तत्पर न थे। जो हो किन्तु यह तो स्पष्ट था कि जनरल फ्रेंको का झुकाव जर्मनी तथा इटली की ओर था और उसने इन देशों से सन्धियां भी की थीं। किन्तु वे सन्धियां युद्ध विषयक नहीं थीं यद्यपि युद्ध के दिनों में कई बार यह सम्भावना उपस्थित हुई थी कि स्पेन धुरीराष्ट्रों की ओर से युद्ध में कूद पड़ेगा।

क्षीण शक्ति पश्चिमी राष्ट्र

यह भी कहा जा सकता है कि युद्ध आरम्भ होने के पश्चात् कोई भी देश, विशेष कर ब्रिटेन तथा फ्रांस, इस स्थिति में ही नहीं रहे थे कि वे मशीन, धन तथा विशेषज्ञों से स्पेन की सहायता कर पाते। महायुद्ध छिड़ने के थोड़े ही दिन पश्चात् जर्मनी की यांत्रिक सेनाओं के आगे फ्रांस धराशायी हो गया गया था, और ब्रिटेन अपनी सारी शक्ति से युद्धोपयोगी सामग्री बनाने में जुट पड़ा था। उस समय तो ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री श्री चर्चिल ब्रिटेन की मुख्य भूमि पर यदि जर्मनों का अधिकार हो गया तो उपनिवेशों से युद्ध चलाने की बात तक करने लगे थे। फिर दूसरे की किसे सूझती।

असहाय अवस्था

जो भी हो यह सत्य है कि अपनी स्थिति सुधारने और उद्योगों का विकास कर पाने के लिए आवश्यक सहायता

जनरल फ्रांको

स्पेन को कहीं से भी प्राप्त न हो सकी। किन्तु युद्ध की एक अन्य देन महगाई थी। युद्ध के कारण विदेशों से जो कुछ माल स्पेन में आता था वह भी बन्द सा हो गया। अत जनकष्ट और भी बढ़ गया। किन्तु महगाई ने इस कष्ट को बढ़ाने में और अधिक सहायता की। महायुद्ध की समाप्ति के पश्चात् सभी देश अपने अपने यहा पुनर्निर्माण तथा पुन सस्थापन कार्य में जुट गए। केवल एक मात्र अमेरिका ही इस स्थिति में था जो सहायता कर सकता था। वह भी ब्रिटेन तथा पश्चिमी यूरोप के युद्ध द्वारा नष्ट हुए देशों की सहायता में लगा। विदेशी मुद्रा की स्पेन में पहिले ही कमी थी। अब महगाई के कारण तो अमेरिका से माल मगाना और भी कठिन हो गया। साथ ही आन्तरिक दशा में सुधार करना भी कठिन हो गया।

सक्षेप में स्पेन के लोगों को फ्रेंको के शासन के आरम्भ होने से आज तक आर्थिक सकट, अभाव तथा कष्ट में ही जीवन बिताना पड़ रहा है। जनरल फ्रेंको की सरकार ने इन समस्याओं को हल करने की चेष्टा भी की किन्तु बाहर किसी प्रकार की सहायता के अभाव में उसे आन्तरिक सगठन पर ही निर्भर रहना पड़ा। परिणामस्वरूप आज के स्पेन में गरीबी पर्याप्त मात्रा में दिखायी देती है। वहां व्यापार की दशा अच्छी नहीं है। यातायात के साधन थोड़े हैं। सड़कें खराब हैं। स्पेन का नागरिक तथा ग्रामीण जीवन काफी अभावग्रस्त जीवन है।

कम्यूनिज्म का प्रसार

यह अभाव ही कम्यूनिज्म का जन्म स्थान है। महायुद्ध में समस्त पश्चिमी यूरोप व ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति भयकर रूप से बिगड़ जाने तथा पुनर्वास एव निर्माण की महान समस्याओं को हल कर के पुन नागरिक जीवन को व्यवस्थित करने में उनके असमर्थ होने के कारण यह भय खड़ा हो गया था कि कहीं विजयी रूस के प्रभाव से इस समय सारे यूरोप पर ही कम्यूनिज्म न छा जाए। यदि यूरोप इस प्रकार रूसी कम्यूनिज्म के पजे में चला गया तो स्वय अमेरिका के लिये और उन सिद्धान्तों के लिए सकट खड़ा हो जायेगा जिनके लिये अमे

रिका खड़ा है। साथ ही अपनी विजय द्वारा जो ससार भर का नेतृत्व आज अमेरिका के हाथ में आ गया है वह नष्ट हो जायगा और रूस की विजय सारे एशिया में रूस को विजयी बना देगी।

क्योंकि उत्पादन के अपार साधन उसके बढ़ जायेंगे।

मार्शल योजना

इसी प्रकार के कारणों से अमेरिका

श्री शूमा

... ब्रिटेन तथा फ्रांस ने स्पेन-अमरीक

...की राजनीति

...मी यूरोप की सुरक्षा

[... वर्मा]

...श्चिमी यूरोप के देशों का आर्थिक सहा...ता देने के लिए तत्पर हुआ। उस ...मय के अमेरिकी विदेश मन्त्री श्री जार्ज ...र्शल के नाम पर ही इस अमेरिकी ...हायता योजना का नाम मार्शल सहा...

खेन
कोरुंका
तोलूस
बरसेलोना
...ट
भूमध्यसागर
का टेजोना
ओरान
अलजेरिया

...ा पड़ गया। आज संसार रूस और ...मेरिका के पीछे दो दलों में बटा हुआ ...और दोनों ही पक्ष सामरिक दृष्टि ...एक दूसरे को बांधने की चेष्टा कर

श्री मौरीसन

...प्रि...का विरोध किया है।

रहे हैं। अमेरिका द्वारा के चारों ओर के देशों को अपने पक्ष में मिलाने और उन्हें सुदृढ़ बनाने के लिए सहायता देने का बड़ा भारी उद्योग हो रहा है। ब्रिटेन के गत चुनाव में एक भी कम्यूनिस्ट उम्मेदवार के सफल न होने ने यह तथ्य स्पष्ट कर दिया है कि अभाव तथा जन-कष्ट ही कम्यूनिज्म के पनपने के मुख्य कारण हैं। इस प्रकार की सहायता के बदले में प्रत्येक देश से सामरिक सुविधाएं तथा सैनिक अड्डे अमेरिका प्राप्त कर रहा है।

इस तथ्य पर अधिक जोर देने की आवश्यकता नहीं कि स्पेन की भौगोलिक स्थिति सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। स्पेन के हवाई तथा जलसेना के अड्डे न केवल भूमध्यसागर के ही एक बहुत बड़े भाग को प्रभावित कर सकते हैं वरन अटलांटिक तथा उत्तरी अफ्रीका पर भी बहुत प्रभाव डाल सकते हैं। रूस के विरुद्ध समस्त पश्चिमी यूरोप का संगठित मोर्चा अधूरा ही रहेगा यदि स्पेन उसमें सम्मिलित न हो। साथ ही आर्थिक सहायता के सहारे अमेरिका संसार में अपने जल तथा वायु सेना के अड्डे स्थापित कर रहा है। इस प्रकार वह जहां एक ओर कम्यूनिस्ट देशों के घेरने के यत्न में है वहां वह अपनी शक्ति तथा प्रभाव के विस्तार में भी लगा हुआ है।

इसी दृष्टि से कुछ समय पूर्व अमेरिका तथा स्पेन में कूटनीतिक वार्ता का श्रीगणेश हुआ है। इस वार्ता के लिए अमेरिकी जलसेना के प्रधान एडमिरल शरमन स्पेन आए थे। उन्होंने जनरल फ्रैंको तथा उनकी सरकार से अमरीकी सहायता देने और बदले में वायुसेना के अड्डे तथा जलसेना के लिये स्पेन की बन्दरगाहों का उपयोग करने की सुविधाएं लेने के विषय में चर्चा की थी। एडमिरल शरमन ने स्पेन की सेना का भी निरीक्षण किया था और सेनापतियों से भी बातचीत की थी। स्पेन से वापिस लौटते हुये अमेरिकी जलसेनापति ने पश्चिमी यूरोप के सर्वोच्च सेनापति जनरल आइजनहोवर से भी पेरिस में भेंट की थी। किन्तु अमेरिका लौटने के पूर्व ही एडमिरल शरमन अचानक देहान्त हो गया।

इस विषय में यह स्मरणीय है कि ब्रिटेन तथा फ्रांस की सरकारों ने अमेरिका द्वारा स्पेन को सहायता दिये जाने के कदम का विरोध किया था। दोनों का कथन था कि इस प्रकार की सहायता अनुचित है। किन्तु अमेरिका के विदेश मंत्री श्री डीन एचेसन ने पत्रकारों को बताया कि अमरिका पश्चिमी यूरोप की सुरक्षा में स्पेन को एक आवश्यक कड़ी मानता है। अतः स्पेन की सहायता वह आवश्यक समझता है। तब से ब्रिटेन तथा फ्रांस की ओर से कोई प्रतिक्रिया प्रकट नहीं की गई है। यद्यपि वह स्पष्ट है कि वे स्पेन को मिलने वाली इस सहायता के विरुद्ध हैं। इसी लिए स्वयं जनरल फ्रैंको ने एक वक्तव्य प्रकाशित कर भावी अमेरिकी सहायता के विरोधी ब्रिटेन तथा फ्रांस की निन्दा की थी।

स्पेन का सुप्रसिद्ध गिरजाघर

आर्थिक सहायता के अन्तर्गत अमेरिका द्वारा स्पेन के पांच हवाई अड्डे और तीन बन्दरगाह मांगे जा रहे हैं। साथ ही दिए गए नक्शे में वे भली प्रकार दिखाए गए हैं। तीनों बन्दर क्रमशः फेरोल, केडिज तथा कार्टिजेना हैं। प्रस्तावित हवाई अड्डे लूगो, सेविले मेड्रिड, वेलेन्सिया तथा बार्सीलोना हैं। अमेरिका इन अड्डों का प्रयोग करने की सुविधा चाहता है। बड़े विमानों के चढ़ने तथा उतरने की दृष्टि से इन्हें उपयुक्त बनाने के लिए आवश्यक व्यय स्वयं अमेरिका करेगा। इसी प्रकार बन्दरगाहों में भी उचित सुधार अमेरिका ही करेगा।

सैनिक महत्व

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि ये हवाई अड्डे तथा बन्दरगाह सैनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। लूगो, सेविले, वेलेन्सिया तथा बार्सीलोना के हवाई अड्डे स्पेन के चारों कोनों पर स्थित हैं। लूगो उत्तरपश्चिम में है सेविले दक्षिण पश्चिम में। वेलेन्सिया तथा बार्सीलोना की स्थिति क्रमशः दक्षिण पूर्व तथा उत्तर में है। वेलेन्सिया और बार्सीलोना तो समुद्र के किनारे ही हैं लूगो और सेविले समुद्र के निकट हैं। पांचवां स्थान मेड्रिड स्वयं स्पेन की राजधानी है और स्पेन के मध्य में स्थित है।

बन्दरगाहों में फेरोल स्पेन के उत्तर पश्चिमी कोने पर स्थित है। फ्रांस और स्पेन के तट से बनी हुई बिस्के की खाड़ी के यह एक कोने पर है और इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। गत लेख में यह बताया जा चुका है कि यह स्पेन के पोत निर्माण उद्योग का भी एक केन्द्र है। केडिज का बन्दरगाह जिब्राल्टर के जल मार्ग के मुहाने पर अटलांटिक की ओर है। यह इस मार्ग पर नियन्त्रण रखने तथा उत्तरी अफ्रीका के तट की दृष्टि से महत्वपूर्ण बन्दरगाह है। कार्टेजेना का बन्दर स्पेन के दक्षिण पूर्वी तट पर भूमध्यसागर में स्थित है। भूमध्यसागर की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण बन्दरगाह है।

संक्षेप में लूगो तथा फेरोल बिस्के की खाड़ी की दृष्टि से महत्वपूर्ण नौ तथा वायु अड्डे हैं। साथ ही फेरोल के बन्दर का लूगो का हवाई अड्डा सुरक्षा प्रदान करता है। केडिज तथा सेविले जिब्राल्टर जलमार्ग तथा मोरक्को की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। केडिज की वायु सुरक्षा का भार सेविल पर है। वेलेन्सिया और कार्टेजेना में अन्तर कुछ अधिक होते हुए भी इसी प्रकार का सम्बन्ध है। बार्सीलोना का हवाई अड्डा स्पेन के केनरी द्वीप समूह को सुरक्षा प्रदान करता है। सामरिक दृष्टि से इन द्वीपों का महत्व क्ये-

प्रे० ट्रूमैन

खवीय नहीं है। इसके साथ ही वेडी-लिया तथा बालीओना के हवाई अड्डे पश्चिमी भूमध्यसागर की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं।

स्पेन तथा अमेरिका में अभी तक कोई सन्धि नहीं हुई है। किन्तु इस सम्बन्ध में चर्चा चल रही है और आशा है कि सन्धि हो जावेगी। अभी तक यही दिखाई देता है कि जनरल फ्रैंको इन अड्डों को देकर भी अमेरिकी सहायता प्राप्त करना चाहेंगे। क्योंकि उनकी सरकार का ध्यान स्पेन की आन्तरिक स्थिति का सुधारने की ओर अधिक है। काल चक्र की गति बड़ी विचित्र है। जिस स्पेन का अबसे कुछ समय पूर्व एक ओर अमेरिका के विशाल भूभाग पर और दूसरी ओर फिलीपाइन्स द्वीप समूह पर अधिकार था आज वही अमरिका की सहायता की आशा लगाये बैठा है।

छपते-छपते

समाचार मिला है कि "तपेदिक" रोग की भारत विख्यात महौषधि "जबरी" (JABRI) ने हजारों ऐसे-ऐसे रोगियों की जान बचा दी, जिनको (X RAY) आदि के बाद डाक्टरों, वैद्यों ने जवाब दे दिया था। यदि आप सब तरफ से नाउम्मेद हो चुके हों, तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार जबरी की जरूर परीक्षा कर लें। परीक्षार्थ हो नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। मूल्य जबरी नं० १, सोना मोती भस्मोंयुक्त पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु० नमूना १० दिन २०) रु० जबरी नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग हैं। हमारा तार का पता (JABRI JAGADHRI) ही काफी है।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा रईस बूटा बैंकर्स (२) 'जगाधरी' (E P.)

भारत में कच्चे माल की स्थिति

★ श्री गणेशलाल शर्मा

कच्चा माल आर्थिक विकास की रीढ़ है। इस का स्थान औद्योगिक विकास में सर्वप्रथम है। पूंजी, शक्ति, श्रम आदि दूसरी श्रेणी में आते हैं। आज के युग में कोई भी देश कच्चे माल के बिना औद्योगिक दृष्टि से फूल-फल नहीं सकता। संयुक्त राष्ट्र अमरीका का वैभव प्रधानतया: इसके असीमित कच्चे माल में ही निहित है। रूसने आश्चर्यजनक उन्नति इसीलिये की है कि उसके पास अपार कच्चे माल के स्रोत हैं। ससार के इतिहास मे कच्चे मालपर नियंत्रण स्थापित करने के लिये बड़े-बड़े साम्राज्य कायम हुए। कच्चे माल की प्राप्ति की प्रतिस्पर्धा के कारण दो महायुद्धों का जन्म हुआ और तीसरे महा समर की भूमिका तैयार हो रही है अतः कच्चे माल की महत्ता असंदिग्ध है और वह आज की औद्योगिक उन्नति का प्राण है।

कच्चे माल का अभाव

आज ससार में कच्चे माल का बहुत अभाव है। इसका कारण यह है कि पहले तो कुछ वस्तुएं, जैसे कोयला, लोहा, गन्धक और जस्ता आदि का उत्पादन अपर्याप्त ही होता है, दूसरे कच्चा माल उत्पन्न करने वाले कई देशो पर साम्राज्यवादी राष्ट्रों का एकाधिकार है तीसरे, रूस तथा अमरीका के मामले मे आपसी तनाव तथा कोरिया-युद्धके कारण शस्त्र निर्माण और युद्ध की तैयारी के लिये कच्चा माल बड़े पमाने पर सग्रह किया जा रहा है। स० रा० अमरिका सग्रह कर्त्ताओ मे प्रमुख है इसी सग्रह के कारण कच्चे माल के मूल्यों मे भी काफी वृद्धि हो गई है और यह समस्या और भी बन गई है। फलत आज ससार के बहुत देशों के समक्ष औद्योगिक सकट उपस्थित हो गया है। भारत भी आज इस औद्योगिक सकट से मुक्त नहीं है।

प्रमुख कच्चे मालो मे निम्नलिखित वस्तुओं का समावेश किया जा सकता है -- लोहा और फौलाद, तांबा एल्युमीनियम, शीशा, जस्ता, राग, गिलट, (निकल) टगस्टन, कोबाल्ट, मैंगनीज, कोयला, अभरक, पेट्रोलियम, क्षार, गन्धक रबर, पाट, कपास, और ऊन।

भारत की स्थिति

आजकल हमारे देश मे लगभग १० लाख टन फौलाद का वार्षिक उत्पादन होता है, जबकि देश की आनुमानित वार्षिक आवश्यकता २० लाख टन से अधिक है। भारत ने १६४८ में १,१२००० टन फौलाद का आयत किया। भारत फौलाद के विषय में सर्वदा परमुखापेक्षी रहा है।

तांबा

तांबे का उपयोग बिजली के तार, बर्तन तथा पीतल आदि बनाने में किया जाता है। भारत में इसका कुल वार्षिक उत्पादन ६६०० टन है, जबकि इसकी कुल आवश्यकता ४०,००० टन की आकी जाती है। १६५० में भारत ने सात करोड़ रुपये के मूल्य का १२,००० टन तांबे का आयात किया। उच्च कोटि का तांबा भारत मे उपलब्ध नहीं होता। अतः इसके लिये हमे सर्वथा विदेशों पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

यह धातु बर्तनों से लेकर समुद्री जहाज तथा हवाई जहाज तक बनाने के काम मे आता है। भारत में इसकी आनुमानित आवश्यकता १२,००० टन वार्षिक है, परन्तु उत्पादन केवल ३५०० टन ही होता है और विदेशों से लगभग ८३०० टन मंगवाया जाता है।

इस का उपयोग पानी तथा गैस के छापेखाने में, बिजली के तारों में तथा अन्य धातुओं के साथ मिश्रित करने में अधिक होता है। इसका वार्षिक उत्पादन १२५० टन है, जबकि इसकी कुल जरूरत ८०१० टन है १६५० मे दो करोड़ रुपये का शीशा आयात किया गया।

इसका उपयोग इस्पात तथा इस्पात की वस्तुएं बनाने में अधिक होता है। इसका सम्मिश्रण तांबा, जस्ता और राग मे भी किया जाता है। मैंगनीज के उत्पादन मे भारत का स्थान ससार मे दूसरा है। यह यहा प्रचुर मात्रा मे उत्पन्न होता है। १६४७ मे ४,५१,०३४ टन मैंगनीज भारत मे पैदा हुआ। यह काफी मात्रा मे विदेशों मे भेजा जाता है।

भारत मे उच्च कोटि का कोयला बहुत कम पाया जाता है। संसार में जितना कोयला उत्पन्न होता है, उसका केवल २ प्रतिशत ही भारत में पैदा होता है। १६४६ में भारत में ३,१४,६०,००० टन कोयले का उत्पादन हुआ। फिर भारत अपनी आवश्यकता की पूर्ति के पश्चात् कुछ कोयले का निर्यात करता है। १६४८-४६ में भारत ने ११,३२,१०० टन कोयला विदेशों मे भेजा।

पैट्रोलियम उत्पादन हमारी आवश्यकता से भी कहीं कम होता है। १६४८-४६ मे भारत में ३,६१.००,००० गैलन पेट्रोलियम उत्पन्न हुआ जबकि हमारे देश की कुल वार्षिक आवश्यकता ८० करोड़ गैलन की है। अत हम को इसके लिये विदेशों पर ही आश्रित रहना पड़ता है।

एक वर्ष मे भारत में १६००० टन रबर उत्पन्न होता है जबकि इसकी कुल आवश्यकता २०००० टन है। इसका भी कुछ आयात होता है। किन्तु अमरीका आदि देशो में कृत्रिम रबर के अविष्कार ने रबर का महत्व घटा दिया है।

पटसन और कपास

विभाजन के पूर्व पटसन के उत्पादन में भारत का एकाधिकार था। किन्तु अब स्थिति यह है कि लगभग ७५ प्रतिशत पटसन पाकिस्तान उत्पन्न करता है और पटसन के प्रायः कुल ११२ कारखाने भारत मे रह गये है, जिन्हे कच्चे पटसन की अत्यन्त आवश्यकता है। भारत और पाकिस्तान के पारस्परिक झगड़ों के फल स्वरूप भारत ने पटसन के उत्पादन में वृद्धि अवश्य की है। १६४६-४७ में भारत मे १५०२ लाख पटसन की गांठों का उत्पादन हुआ और १६५०-५१ मे ६२०७ लाख गाठे उत्पन्न की गई। परन्तु अब भी भारत को ५० लाख और अधिक गांठों के लिये पाकिस्तान पर निर्भर रहना है।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व भारत कपास मे स्वावलम्बी ही नहीं था, अपितु काफी कपास का निर्यात भी करता था। परन्तु विभाजन से कपास की स्थिति में बिलकुल परिवर्तन हो गया। लगभग २५ प्रतिशत कपास उपजाने वाली भूमि पाकिस्तान मे चली गई। इस २२ प्रतिशत भूमि के अधिकाश भाग में लम्बे रेशे की कपास उत्पन्न होती थी। भारत मे लम्बे रेशे वाली कपास उपजाने वाले क्षेत्र बहुत कम है। १६४६-५० में भारत में २१,६५ लाख कपास गाठे पैदा हुई, जब कि विभाजन के पूर्व १६४६-४७ मे ३५,८५ लाख गाठे हुई था। इस प्रकार आज १४ लाख गाठो से अधिक की कमी पड़ती है।

भारत बहुत से आवश्यक कच्चे माल के लिए विदेशो पर निर्भर है इसलिए कच्चे माल के विश्वव्यापी अतिसग्रह से भारतीय उद्योग के सम्मुख एक विकट परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। यद्यपि सग्रही करण अभी पराकाष्ठा पर पहुँचा है, फिर भी बहुत से भारतीय कारखानों का भविष्य अधकार मय है।

ग्लास और बेस-मैटल इण्डस्ट्रीज के काम आने वाले खनिज जैसे जस्ता, रांगा और पीतल की चद्दरों का काफी अभाव है। बतलाया जाता है कि इस वर्ष इस उद्योग के लिये कुल जरूरत का ¼ ही कच्चा माल विदेशों से मिला है।

अतिसंग्रह का भारत के कई अन्य उद्योगो जैसे औषधि और रासायनिक उद्योग, ग्लास और सिरेमिक उद्योग, एंजिनीयरिंग-उद्योग, रबर उद्योग, पाट-उद्योग, प्रीजर्व्ड एण्ड इण्डस्ट्रीज, बिस्कुट-

[शेष पृष्ठ २० पर]

पंजाब की समृद्धि का आधार: नांगल बांध योजना

[पृष्ठ २३ का शेष]

प्रमुख नहर में जो खुदाई होगी वह ७० करोड़ घन गज है।

इस महान प्राजैक्ट का महत्व

संयुक्त पंजाब मे नहरों का एक जाल सा बिछा हुआ था और उसकी सुख समृद्धि बहुत हद तक इन्हीं पर आश्रित थी। पंजाब की इस नहरी व्यवस्था का विश्व की सिंचन व्यवस्थाओं मे अपना एक विशिष्ट स्थान था। इन नहरों से पंजाब के राज्य कोष को ६.३० करोड़ रुपये की वार्षिक आय थी और ११६ करोड़ रुपये का अनाज प्रति वर्ष पैदा होता था। विभाजन के उपरान्त भारतीय पंजाब को इस महान सम्पदा का केवल २० प्रतिशत भाग ही मिला यद्यपि इसके हिस्से में संयुक्त पंजाब की कुल आबादी का ५७ प्रतिशत और कुल क्षेत्रफल का ३४ प्रतिशत भाग आया। हमारे इस विच्छिन्न राज्य के व्यापक प्रदेश में सिंचाई सुविधाओं की अपर्याप्तता और अभाव के कारण सदा के लिए दुर्भिक्षता की आशंका बनी हुई है।

इस प्राजैक्ट की सिंचन सीमा के अन्तर्गत कुल ६४ लाख एकड़ क्षेत्र आता है। इसमें ३६० लाख एकड़ में प्रतिवर्ष सिंचाई हो सकेगी इस प्राजैक्ट की सम्पन्नता पर ३०८२२००० मन अतिरिक्त खाद्यान्न और ४०००००० मन रुई तथा अतिरिक्त कपास पैदा होगी। इसके अतिरिक्त अन्य कई कीमती फसलें तम्बाकू तिलहन गन्ना और सब्जियां भी पैदा की जायेगी।

पंजाब में सस्ती बिजली के अभाव में बड़े भारी उद्योग स्थापित नहीं हो सकता। भाखड़ा डैम में सम्मिलित शक्ति से बड़ी भारी मात्रा में बिजली पैदा होगी जिससे राज्य भर के बड़े छोटे उद्योगों का विकास हो सकेगा और अवसर प्राप्त का क्षेत्र भी और अधिक व्यापक हो जायगा।

पंजाब राज्य का भविष्य अधिकतर इस योजना की सम्पन्नता पर ही निर्भर है। हम [illegible] दाना [illegible] पर आ [illegible] है। [illegible] अनुमान [illegible] काम करना [illegible] वर्ष में ही इस पर खर्च की सारी [illegible] पंजाब में अधिक की आय होगी। इस योजना में एक भी पैसा नहीं जिसे अनुत्पादक खर्च कहा जा सके।

—,—

छाता

[पृष्ठ ११ का शेष]

आवाज सुन पड़ी 'ओह तुम कितनी सुन्दर हो !"

बूढ़ा ठिठक कर रुक गया, वह निश्चित करने लगा कि दरवाजे पर दस्तक देने के लिए यह अवसर ठीक होगा कि नहीं, 'छाता खो देने से तुम्हारे मुख पर संतोष और सुख की जो छाया दीख रही है, वह कितनी भली है, मैं चाहता हूँ कि वह छाता कभी न मिले, लेकिन मैं फिर कहता हूँ कि यह तुम्हारा '

दूर से कोई व्यक्ति आता दीख पड़ा और बूढ़ा दूसरे के द्वार पर इस प्रकार खड़े होना असभ्यता समझ कर वह वहां से हट गया किन्तु एक बात तो उसे अजीब मालूम हो रही थी, छाता खो देने से दम्पत्ति संतुष्ट थे इसका अर्थ था कि छाते का वापस आना उसके लिए अशुभ होगा।

वह चुपचाप जिस राह से आया था उसी से लौट गया। घर पहुँचने पर पड़ोसी पंडितजी अपने द्वार पर खड़े मिले। बूढ़े को देखकर और उनकी बगल में वह छाता देखकर वह खिलखिलाए, 'कहिये मागीराम जी, नहीं मिली ?'

उन्हें देखते ही बूढ़े ने प्रश्न किया, 'भला पंडित जी, भगवान की देन किस प्रकार लौटाई जाए।'

'इसके लिये शास्त्रों में एक ही विधान है। किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान करदी जाए। पंडितजी मुस्कराए।

बूढ़े ने एक अर्थभरी दृष्टि से उनकी ओर देखकर 'हूँ' की और अपने द्वार में घुस गये। युवक आफिस जाने की तैयारी कर रहा था। उसे देखते ही बोला, 'मिली ?' फिर छाते को देखकर उसने स्वयं ही उत्तर दिया, 'नहीं मिली।'

'आज वहां छाता खोने पर संतोष मनाया जा रहा है', बूढ़े ने कहा, 'दुबारा बारिश में भीगने पर सम्भव है वह न रहे। तब एक बार और इसे लौटाने की चेष्टा की जाएगी।'

युवक ने उपेक्षा से मुंह फेर कर पिचका दिया।

रामेश्वरदयाल छाता लेकर दफ्तर नहीं गया था। फलतः वह खूब भीगता आया। वर्षा बड़े जोर से हुई थी, किन्तु बूढ़ा बड़ा खुश था। उल्लास से उसने अपनी प्रसन्नता को और द्विगुणित करने के लिये उससे पूछा, 'जिस समय तुम रास्ते में थे, ठीक उसी समय फुहार पड़ी थी न।"

'पड़ी थी, तो ?' रामेश्वर ने आश्चर्य से पूछा।

'ठीक है।' बूढ़ा बड़ा खुश हुआ। रामेश्वर गरदन मटकाकर अपने कपड़े उतारने लगा।

निश्चय के अनुसार रामेश्वर की आंख बचाकर बूढ़ा अगले दिन सुबह छाता बगल में दबाकर चुपके से खिसक लिया। पीछे से पंडितजी पुकारते ही रह गए, 'अजी, मागीरामजी, जरा सुनिए तो।'

जाने पहचाने फ्लैट पर पहुँच कर बूढ़े ने आस्तीन ऊपर की और इतमीनान से द्वार खटखटाने के लिए अंगुली किवाड़ों पर रखी। जो आशंका थी वही हुआ। उसे आश्चर्य हुआ, क्या सारी रात और दिन इस घर में केवल एक ही तुच्छ सी वस्तु की चर्चा चलती रहती है।

'आखिर क्यों तुम मुझे दुःख देने पर तुले हो ?' बूढ़े ने द्वार के के छिद्रों से देखा कि एक लड़की एक युवक के सिर पर हाथ रखे हुए कह रही थी "क्यों तुमने इस दूसरे छाते को घर में लाकर रखा ? मैं एक दिन बारिश में भीगकर मर थोड़े ही जाती। ऐसी चीज को घर में रखकर तुमने गुड़ गोबर कर रखा है। आज तुम्हें फिर ज्वर है।'

'मैं कहता हूँ कि यह सब तुम्हारा '

युवती के सुबक-सुबक कर रोने की आवाज ने आगे नहीं सुनने दिया। बूढ़ा सहम कर एक किनारे आ खड़ा हुआ। वह स्थिति पर सोचने लगा। उसे किसी भी दशा में छाता घर वापस नहीं ले जाना था। वह फिर से उस नालायक रामेश्वर का मुंह चिढ़काना और उस पंडित की अलचाई दृष्टि नहीं देखना चाहता था। उसे किसी भी तरह आज इस युवती से फैसला कर लेना है। वह स्त्री इतनी भली है कि स्वयं वर्षा में भीग सकने की परवाह न करते हुए उसने छाते को उसके ऊपर ताने रखा और भलाई पाने के लिए उसे किसी तरह इस उपकार को जताने की चेष्टा भी नहीं की। अगर वह अपनी धोती के सूखे पल्ले से अनुमान न लगा लेता तो उस युवती की वह नेकी दरिया में चली गई होती।

वह निश्चय करके वेग से आगे बढ़ा और बिना कुछ सुनने की प्रतीक्षा किए उसने खटाखट कई बार किवाड़ों को अंगुली से ठोका।

द्वार खुल गया। 'अरे बाप रे, आप !' युवती आश्चर्य से बगल में छाता दबाए बूढ़े को देखकर लगभग चीख उठी। उसने उसे अन्दर नहीं आने दिया। 'देखिए, मेरे पति बीमार हैं। इस कारण मैं अपने काम पर भी नहीं जा सकी, और यह चीज जो आप बगल में दबाए हैं, मैं जानती हूँ आप इसे लौटाने आए होंगे। मैं आपके साधुवाद की प्रशंसा करती हूँ। लेकिन, मेहरबानी करके इसे इस घर में न लाइए। इसे जो मैं आप-

बूझ कर बस में छोड़ आई थी। फिर मिलिएगा। क्षमा। इस छाते को रख कर फिर आकर मिलिएगा।' उसने द्वार बन्द कर लिए।

अभिभूत बूढ़ा अभी किंकर्त्तव्यविमूढ़ खड़ा ही था कि अन्दर से आवाज आई, 'और हां ठहरिए, सुनिए' दरवाजा खुला और वैसा ही, बिलकुल उसकी बगल में बगल में दबे छाते की तरह का एक दूसरा छाता उस युवती ने बूढ़े की दूसरी बगल में खोंस दिया और झट से किवाड़ बन्द करते हुए बोली, 'इसे भी ले जाइए और इन्हें फिर कभी यहां न लाइए।' द्वार बन्द होते ही भीतर से एक युवक की ओर की हंसी सुनाई दी।

भरे रास्ते बूढ़ा आया और बहरा सा बना, खोया-खोया सा रहा और जिस समय वह दोनों छाते दोनों बगलों में दबाए अपने द्वार से घर में घुसा, रामेश्वर और पंडितजी एक साथ बैठे हुए मिले।

'आखिर यह माजरा क्या है ?' रामेश्वर बूढ़े को इस दशा में देखकर बोला।

'क्या यह दूसरा उन्हें पुरस्कार देने के लिए आप बाजार से खरीद कर लाए हैं ?' पंडितजी ने भी पूछा।

बूढ़े ने निढाल होकर खाट पर बैठते ही एक सांस में सारी घटना सुना दी।

सुनकर पंडितजी खूब खुलकर हंसे। 'क्या प्रेमी पति है। वह पत्नी को बिना छाते के काम पर नहीं जाने देना चाहता और पत्नी छाते से पीछा छुड़ाने को उधार खाए बैठी है।'

'यही तो।' बूढ़ा अभी भी विस्मय कर रहा था।

पंडितजी ने कहा, 'हो सकता है कि किसी महान शास्त्रज्ञ ने उन्हें यह व्यवस्था दी हो कि छाता उनके लिए अशुभ है। हो सकता है कि पत्नी अपने घर में पति को बीमार रहते देखकर उस अशुभ का कारण किसी विद्वान से पूछ बैठी हो।'

बूढ़े की आंखें चमकीं। उसने बात जोड़ी, 'और उस विद्वान् को उस वस्तु से पीछा छुड़ाने की तरकीब यानी किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान दे देने वाली बात बतानी भूल गई हो। हो सकता है कि वह लड़की को वह साफ-साफ न बताना चाहता हो कि वह विद्वान् स्वयं ही एक बहुत बड़ा सुझाव है।'

'सो तो है ही, सो तो है ही।' पंडितजी ने आंखें नचाते हुए उठने का उपक्रम किया।

तुरन्त बूढ़े ने दूसरा सवाल किया : 'भला, पंडितजी उस दिन बस पर खड़े-खड़े मैंने पूछा था कि काम हो गया, तो आपने कोई उत्तर नहीं दिया था। सो वह क्या काम था, आप कहां ठहर गये थे ?'

'अजी, आप जानते हैं कि आजकल नास्तिकता बढ़ रही है, रोजगार का मन्दा है। एक भक्तिन मिल गई थी। दुःख में थी। उसे उपदेश देने के लिए ठहर गया था।'

पंडितजी चलने लगे, तो बूढ़े ने फिर कहा, 'और वह भक्तिन जवाहर क्वार्टर्स में रहती है। उसके पति का दुःख ही उसका दुःख था ...'

'आप जानते हैं। पिछले निमोनिया ने आधी जान तो ले ही ली थी ...' पंडितजी ने क्षमा प्रार्थना सी की और वह अपने घर बिना और कुछ सुने लपक चले।

—०—

अविकसित सूडान का····

[पृष्ठ १० का शेष]

अबीसिनिया नील नदी की नील धारा पर कोई अड़चन न खड़ी करेगा। १६२४ की फ्रांस-ब्रिटेन सन्धि के अनुसार फ्रेंच अफ्रीका व सूडान की सीमाएं निर्धारित कर दी गई हैं।

शासन व सेनायें

देश के उत्तरी भाग व दक्षिणी भाग का शासन प्राय भिन्न है। तब भी देश अन्य पड़ोसियों की अपेक्षा उन्नति कर चुका है। देश में सेनाएं अधिकतर आक्रमणों का विरोध करने के लिए रखी जाती हैं। यह आक्रमण प्राय. अबीसीनिया की तरफ से हुआ करते थे। १६४४ के दिसम्बर मे देश से मिश्री सेनाएं पलायन कर दी गईं। गवर्नर जनरल ने देश की सेना एक ब्रिटिश सैनिक की अध्यक्षता में संगठित करनी प्रारंभ की। द्वितीय महायुद्ध के समय इन ३०,००० सैनिकों ने इटली का कड़ा विरोध किया था।

देश मे अनेकों बार स्वतन्त्रता का दमन किया गया है। मिश्र भिन्न-भिन्न कारणों से इस प्रदेश पर अधिकार करना चाहता है। इन कारणों में आर्थिक व राजनैतिक ही मुख्य हैं। सूडान का एक दल मिश्र में मिलने का विरोध करता है। इसके विपरीत कुछ लोग मिश्र की मांग का समर्थन करते हैं। ब्रिटेन की नीति इस सम्बन्ध में विभाजन की है। वह एक शतरंज के खिलाड़ी की भांति चाल चल रहा है। इस सम्बन्ध में ब्रिटेन की नीति चाहे कुछ भी हो, सूडान के कृषि मंत्री अब्दुल खलील की वे चेतावनी सदैव सत्य रहेगी। अभी कुछ दिन हुए उन्होंने सूडान के मिश्र में विलय किये जाने के प्रश्न पर कहा था कि—"मिश्र नील घाटी की एकता चाहता है, जैसा कि असीगा दल कह रहा है। परन्तु वह ब्रिटेन से इस सम्बंध में वार्ता चला रहे हैं। यह मूर्खता है और विरोध का कारण है। सेकसक्सेस को मिश्र को एक पाठ पढ़ाना चाहिये कि वह ब्रिटेन के स्थान पर सूडान से वार्ता प्रारम्भ करे।"

मिश्र के राजनीतिज्ञ आज भी इस चेतावनी का अर्थ नहीं समझे हैं। वह ब्रिटेन को ही सूडान का भाग्य विधाता मानते हैं। वह दिन दूर नहीं, जब कि मध्यपूर्व की सुरक्षा के नाम पर मिश्र के प्रधानमंत्री यह आश्चर्य के साथ देखेंगे कि इस प्रदेश में अमरीका अपने पांव फैला रहा है। यदि इस सघर्ष में अमेरिका ने योग नहीं दिया तो यह निश्चित है कि रूस इस प्रदेश पर अपना अधिकार चाहेगा। सूडान की पिछड़ी व निर्धन जनता इस कार्य में कहां तक सहायक होगी, यह आज की साम्राज्यवादी शक्तियां भली प्रकार जानती हैं।

×✪×

मध्य भारत में भारतीय जन-संघ का उदय

(पृष्ठ ९ का शेष)

तीन सितम्बर सायंकाल को उज्जैन में भारतीय जनसघ का पहली सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। दूसरे दिन मुझे माधव कालेज में कश्मीर विषय पर बोलने के लिये आमन्त्रित किया गया।

उज्जैन महाराजा विक्रमादित्य और श्री महान कालेश्वर की नगरी है। अवन्तिका के नाम से यह नगरी भारतीय सस्कृति और कला का चिरकाल तक केन्द्र रही है। आज भी वहां पर स्थित महाकालेश्वर का मन्दिर और इसके पास से कल कल करती बहती हुई क्षिप्रा नदी उज्जैन और भारत के अतीत गौरव को याद दिलाते हैं। परन्तु आज वहां पर उस अतीत गौरव का अंश नहीं मिलता। ग्वालियर के महाराजा ने अपनी रियासत के मध्यभारत में विलीनी करण के कुछ देर पहिले उज्जैन की प्राचीन परम्परा को पुनः जागृत करने का प्रयास शुरू किया था। उन्होंने वहाँ पर महाराजा विक्रमादित्य का स्मारक और एक विश्वविद्यालय खोलने का आयोजन किया था। परन्तु उन योजनाओं को कार्यरूप में लाने से पहिले ही उनकी सत्ता समाप्त हो गई।

मध्यभारत की कांग्रेस सरकार के कारनामें अन्य प्रान्तों की कांग्रेस सरकारों से कहीं अधिक काले हैं। उनको दलगत झगड़ों से अवकाश नहीं मिलता इसलिए उज्जैन की ओर ध्यान कौन दे।

जनसघ बन जाने से अब आशा की जा सकती है कि उसके हाथ में सत्ता आने से फिर उज्जैन का भाग्य जागेगा और वह फिर एक बार भारत का सांस्कृतिक केन्द्र बन सकेगा।

मध्य भारत भारत का एक पिछड़ा हुआ प्रदेश है। सारे मध्यभारत में एक भी उच्चकोटि का समाचार पत्र नहीं है। इन्दौर से दो एक दैनिक निकलते हैं, परन्तु वे कांग्रेस के विभिन्न दलों का प्रतिनिधित्व करते हैं और अपने दल से बाहिर के सब लोगों पर कीचड़ उछालते रहना ही पत्र कारिता का आदर्श समझते । इसलिए वह ।की ग्रामीण जनता को राजनैतिक शिक्षा देने के लिए प्रयत्न करना पड़ेगा।

—♦—

मुसलमानों के विशेषाधिकार

विधान पास हो जाने पर भी मौलाना आज़ाद ने मुसलमानों के विशेष अधिकार का प्रस्ताव रखा। पं० नेहरू उसके लिये सहमत थे, किन्तु स्व० सरदार पटेल के कारण वह प्रस्ताव पास नहीं हो सका। सरदार पटेल ने उस समय खीजकर कहा था कि यह कौन सी राष्ट्रीयता का नमूना है। यदि सरदार पटेल इस समय जीवित होते तो मैं कभी भी कांग्रेस से अलग नहीं होता। आज भी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की ओर से प्रादेशिक कांग्रेस कमेटियों को जो पत्र भेजे गये हैं उनमें कहा गया है कि अल्पसंख्यकों को अधिक से स्थान दिये जायें। क्या यह सब पंडितजी की फिरकापरस्ती नहीं है।

वाहरे शास्त्रों के पंडित

पंडितजी ने अपने भाषण में कहा "यह ज्योतिषी भी कितने बेवकूफ बेहूदा होते हैं, मेरा बस चले तो ज्योतिष शास्त्र को ही समाप्त करा दूं। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ज्योतिषी ने उनसे कह दिया है कि आपके बुरे दिन आने वाले हैं, कदाचित इसी से वे बेचारे ज्योतिषियों से इतने क्षुब्ध हैं। विज्ञान और ज्ञान पर प्रतिबन्ध सोवियट रूस में भले ही लगते हों, किन्तु यहां तो यह सब तानाशाही ही कहलायेगा पं० जी ने यह भी कहा कि मेरे से अधिक शास्त्र किसी ने भी नहीं पढ़े। किन्तु पं० जी ने कैसे शास्त्र पढ़े हैं, यह मैं भली भांति जानता हूं। शास्त्र तो संस्कृत में हैं, किन्तु मेरे पास तो उनका हिन्दी में लिखा एक ऐसा पत्र है जिसको देखकर ऐसा लगता है कि किसी अनपढ़ औरत ने लिखा हो। पं० जी ने उन अंग्रेजों के अंग्रेजी में लिखे ग्रन्थ पढ़े हैं जिनमें वेदों को गड़रियों के गीत बताया गया है। पंडित नेहरू यहां भी विदेशी सभ्यता स्थापित करना चाहते हैं और सबको छुरी कांटों से खाते देखना चाहते हैं। पं० जी को आज चारों ओर से चापलूस घेरे खड़े हैं, इसलिये उनकी समझ में इतनी सी बात नहीं आती कि भारत में कभी किसी सम्राट अथवा शासक ने धर्म पर हस्तक्षेप नहीं किया, इसी से यहां कभी किसी राजा का सिर नहीं कटा। यहां के किसी शासक ने यदि शास्त्रों का पंडित होने का दावा किया है तथा अपनी इच्छानुसार शास्त्रीय प्रमाणों को तोड़ा मरोड़ा है तो उसकी दशा कंस जैसी ही हुई है।

सिविल कोड क्यों नहीं

अब पं० नेहरू मुसलमानों के धार्मिक रीति रिवाजों में हस्तक्षेप न करने का आश्वासन देते हैं, फिर हिन्दू कोड का क्या प्रयोजन। यदि वे वास्तव में सारे देश का ही हित चाहते हैं तो एक

पं० नेहरू की तानाशाही और साम्प्रदायिकता घा[र]

[पृष्ठ ८ का शेष]

सिविल कोड बिल ही क्यों नहीं बना देते जो समान रूप से सभी देशवासियों पर लागू हो। किन्तु किसी ने ठीक ही कहा है कि "टेढ़ जान शंका सब काहू, वक्र चन्द्रमा ग्रसहि न राहू। किन्तु अब तो पंडित नेहरू यही कहेंगे कि मैं ही शास्त्र हूं। क्या प्रधान मन्त्री के मुख से निकली कोई बात गलत हो सकती है? हिन्दू कोड बिल के सम्बन्ध में मेरी प्रार्थना है कि यदि पुरानी परिपाटी के अनुसार चारों सभाओं में ही इन बातों का निर्णय होता हो तो १५-२० वर्ष और ठहर जाइये, प्रजातन्त्र के पौधे को जरा पनपने दीजिये। हम मांगने जा रहे हैं खाना कपड़ा और हमें मिल रहा है कोड बिल। यदि यहां तानाशाही स्थापित हो गई तो सारे अधिकार डिक्टेटर ही ले लेगा। इसलिये ५०० वर्ष की व्यवस्था को बदलने का प्रयत्न क्यों किया जा रहा है।

भीषण षड्यन्त्र

जिस समय पिछले दिनों सरदार पटेल देहरादून में थे मैंने उनसे कहा था कि अब तक स्व० मोतीलाल नेहरू जीवित रहे वे पंडितजी की तुनकमिजाजी सहते रहे, बाद में महात्मा गांधी और तत्पश्चात् आप उनको संभालते रहे। आपके बाद उन्हें कौन संभालेगा। इस पर सरदार पटेल ने कहा था कि यदि टंडनजी कांग्रेस की बागडोर संभाल लेंगे तो मैं शान्ति के साथ मर सकूंगा। सरदार के वचनों का इससे अधिक अनादर और क्या हो सकता है कि टंडन जी की इस प्रकार से राजनैतिक हत्या करदी जाय हमारा पं नेहरू को निकालने का कोई इरादा नहीं था जैसा कि उनके चापलूस साथियों ने उन्हें भड़काया। जिस व्यक्ति को ३० वर्ष तक हमने कन्धों पर लादा और उसकी बातें सहीं, उस को हम निकालते क्यों। हम तो केवल यही चाहते थे कि नेहरू जी पर कुछ नियन्त्रण रहे जिससे उनके आस पास बैठे लोग उनके नाम पर शासन न कर सकें। पं० नेहरू डिक्टेटर ही बनें। डिक्टेटर कुछ भला करेगा, कुछ बुरा भी किन्तु वे तो स्वयं डिक्टेटर भी नहीं बन सकते। वे तो दूसरों के ही हाथों में खेल रहे हैं।

घर घर ईंट बजेगी

पं० नेहरू ने संसद में कहा कि यदि कांग्रेस में साम्प्रदायिकता का प्रवेश हो गया तो गली २ ईंट बजेगी, किन्तु मैं कहता हूं कि वर्तमान दशा में तो गली गली क्या घर घर ईंट बजेगी।

कांग्रेस को झाड़ू

पं० नेहरू कांग्रेस को का[...] चाहते हैं क्योंकि देश में भ्रष्टा[चार बढ़] रहा है। किन्तु मैं बताना चाह[ता हूं कि] देश को भ्रष्टाचार और कां[...] बढ़ना [...] का दोष कांग्रेस [...] नहीं, स्वयं कांग्रेसी सरकारों [...] हां कांग्रेस अथवा व्यक्ति वि[शेष को] बलिदान का बकरा बनाया [जाय यह] दूसरी बात है। इन सब बातों से [कांग्रेस] को झाड़ू चाहे लग जाय किन्तु [...] नहीं होगी।

टंडनजी की राजनैतिक ह[त्या]

टंडनजी को अपदस्थ करने [के] षड्यन्त्र आरम्भ हो गये थे तभी मैंने [टंडन] जी से कह दिया था कि चुनाव [...] आ रहे हैं, आपके पदलोलुप [साथी] आपको धोखा दे जायेंगे। [...] कि उन लोगों से कहना चाहता हूं कि बड़े दुराचार के पश्चात् भी वे चुना[व] जीत नहीं सकेंगे। जब सब कु[छ हो] गया तब भी उन लोगों ने, जो [...] स्थान सुरक्षित करना चाहते थे बात का प्रयत्न किया कि समि[ति] टंडन जी के पक्ष में भाषण भी न [दे]। उस समय मुझे ऐसे खूनी की याद [आ] गई, जो खून करने के बाद उसे छि[पाना] चाहता है। मैंने तो टंडन जी से [कहा] कि आपकी हत्या करने के बाद यह भी यह चाहते हैं कि आपका जना[जा] कहीं धूमधाम से न निकल जाय।

भारत छोड़ो प्रस्ताव का विरोध

'भारत छोड़ो आन्दोलन' के प्रस्ताव के कारण पं० नेहरू आज प्रधानमंत्री बने हैं, किन्तु यह बहुत कम लोग जानते हैं कि नेहरू जी ने अन्त तक इस आन्दोलन का विरोध किया। वे चीन की सहायता करने के लिये भारत में लड़ाई नहीं छेड़ना चाहते थे। बाद में भारत छोड़ो आन्दोलन का सारा श्रेय प० नेहरू ने अपने ऊपर ले लिया। जीवन भर स्व० सुभाषचन्द्र बोस के साथ षडयन्त्र किया, बाद में आई० एन० ए० के मुकदमे में भाग ले कर सारा श्रेय स्वयं लिया।

ायदा बाजार

भरतिया]

ैनिक भाव निम्न हैं —

डिलीवरी

	बन्द	दैनिक घटबढ़
)	१८६॥=)	॥=)
)	१८६।॥=)	।॥)
)	१८६॥=)	≡)
)	१८६।-)	।-)
)	१८६।-)	।=)
)	१८८।-)	१।-)

री

=)॥	१२-)॥	।)=
=)॥	११॥≡)॥=	≡)॥
॥=)॥	१२=)।	≡)
॥≡)।	१२)	≡)॥
॥-)॥	११॥=)	।)
॥-)।	११॥=)।	=)।

नीवरी

॥≡)॥	१६-)	।)॥
॥)।=	१५॥≡)	।-)।=
।=)	१६=)।	।)।
।=)॥	१६)॥	।)॥
॥)॥	१२॥-)॥	≡)॥
२॥-)	१६॥=)	≡)।

गवार और मटर

इस समय बाजार में वर्षा के कारण बिकवाल तो आता है, परन्तु भ रत वदेशीय अन्न का इन दो मासों में ात कम होने के कारण खरीददार भी पकड़ता है। प ाब में अब भी सलों की हालत सतोषजनक नहीं कही जाती है। कुछ लोगों की यह भी धारणा है कि सरकार द्वारा अन्न और वस्त्र की छूट केवल चुनावों के समाप्त होने तक ही रहेगी। रुख अच्छा ही है।

२।

म घट-बढ
ाजार निकट
चलना चाहता
८, उसी ओर चलना

सलाह

गवार माघ और मटर मंगसीर जब तक क्रमश ११॥-) और १२॥) से ऊपर रहे, तब तक ऊपर का रुख अन्यथा मन्द का रुख समझना चाहिये।

'सुरैया' कुलदीप पिक्चर्स जलवा में

राज० न० इ० पा० ७६१

प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिए अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, देहली में छपवाकर प्रकाशित किया।

वीर अर्जुन

शेर कैसे पकड़े जाते

★ श्री विराज

आप किसी चिड़ियाघर में गये हैं? वहां पर विचित्र विचित्र जन्तुओं को देखा है? हिमालय के बाघ, मध्य भारत के केसरी आसाम के हाथी, चीते, भेड़िये, पहाड़ी भालू, बर्मा के गैंडे, मगरमच्छ, और अजगर देखे हैं? मैं मानता हूँ कि इन भयंकर जन्तुओं को देख कर आपको रोमांच नहीं हुआ, आपको किसी प्रकार का भय नहीं लगा। यह भी मैं मानता हूँ कि आप ने धारीदार बाघ को कंकड़ फेंक कर मारे हैं और उनसे क्रुद्ध हो कर उसने जब अपना बड़े बड़े दांतों वाला विशाल मुख खोला है और गर्जना की है, तब यह सब आप को तमाशे से अधिक नहीं लगा। किन्तु क्या आपको पता है कि इस विकराल जन्तु को काबू में करने के लिये कितने व्यक्तियों ने जान की बाजी लगा दी।

आप केवल अनुमान ही कर सकते हैं कि जंगल में स्वच्छन्द रूप से फिरने वाला जंगल का राजा कितना भयंकर हो सकता है! यदि मैं आपको उन शिकारियों की कहानियां सुनाने लगूं, जो शेर के शिकार को जाकर शेर के सामने आने पर डर गये थे, बेहोश हो गये थे, या उन्होंने नित्यकर्म आदि का कुछ ऐसा अनियम कर दिया था, जो उनकी वीरता को लांछित करने वाला था, तो अपने आप में एक लेख नहीं, एक छोटी-मोटी पुस्तक तैयार हो जाय। ऐसी कहानियां ढेरों हैं, छपी हुई भी और बेछपी भी। इस बात में तनिक भी अत्युक्ति नहीं है कि इन हिंस्र जन्तुओं का शक्तिशाली बन्दूक से भी शिकार करते हुए प्राण हथेली पर रख लेने पड़ते हैं और बहुत बार उन्हें फिर हथेली पर से उठाने का अवसर नहीं मिलता। शेर की एक थाप, चीते की एक झपट, हाथी की सूंड की एक लपेट, या अजगर की एक गुंजलक मनुष्य की आयु को निःशेष करने के लिये पर्याप्त होती है।

परन्तु हिंस्र जन्तुओं को गोली मार देने भर की वीरता के आधार पर चिड़ियाघर नहीं बने हैं। इन दैत्यों को जीते जी काबू करने के लिये जिस साहस, वीरता और कौशल की आवश्यकता है, वह जिनमें था और है, उन्होंने ही दुनिया भर के चिड़ियाघरों का निर्माण किया है। इसमें संदेह नहीं कि मनुष्य की बुद्धि ने भी इस संघर्ष में अपना महत्वपूर्ण भाग चुकाया है।

क्यों पकड़े जाते हैं

ऐसा कहा जाता है कि बड़ी आयु के पशु पकड़ लिये जाने पर स्वतन्त्रता के लिये भीषण संघर्ष करते हैं और बहुत बार अनशन द्वारा प्राण त्याग देते हैं। हमने जितने सांप और अजगर पकड़े, उनमें से कई ने इस प्रकार आत्मघात कर लिया। चूहा सांप का भोजन है। एक कोबरा सांप के पिंजड़े में जब एक चूहा छोड़ा गया, तो लगभग दो सप्ताह तक दोनों ने एक दूसरे को कुछ नहीं कहा। उसके बाद चूहे ने भूख से व्याकुल हो कर कोबरा को काटना प्रारम्भ कर दिया, किन्तु कोबरा अपने व्रत पर अटल रहा।

इसी प्रकार गुरिल्ला (वनमानुष) को जीते जी पकड़ना बहुत कठिन होता है। आज तक किसी भी चिड़ियाघर में बड़ा गुरिल्ला साल भर से अधिक जीवित नहीं रखा जा सका।

शेर को पकड़ना

शेर, बाघ और बघेरों को पकड़ने के लिये कटघरे का उपाय बरता जाता है। लकड़ी का एक मजबूत कठघरा बनाया जाता है। इस बात का भली प्रकार निश्चय कर लिया जाता है कि कोई भी जंगली प्राणी उसे तोड़ न सके। इसका दरवाजा बिल्कुल अलग होता है। वह ऊपर से नीचे की ओर गिरने से बन्द होता है और फिर ऊपर की ओर खींचने से ही खुलता है—लगभग उसी तरह जिस तरह रेलगाड़ी की खिड़कियां ऊपर-नीचे उठा गिरा कर खोली और बन्द की जा सकती हैं। यह यह ऊपर की ओर से नीचे गिर कर बंद होने वाला दरवाजा इस तरह साध कर खुला रखा जाता है कि थोड़ा सा झटका लगते ही गिर पड़े। इस तख्ते का—जो दरवाजा ही होता है—सम्बन्ध अन्दर लटके मांस के टुकड़े से ठीक ऐसा ही होता जैसे पुराने ढंग के चूहेदानों में रोटी के टुकड़े का दरवाजे से होता था। मांस के टुकड़े को तनिक सा खींचने भर से दरवाजा स्वयं बन्द हो जाता है।

प्रायः जंगली हिंस्र प्राणी कठघरे में घुस कर मांस के टुकड़े को खींचने का प्रयत्न करते हैं। और कठघरे में बन्दी हो जाते हैं। बहुत बार ऐसा होता है कि जिस पशु को पकड़ने के लिए कठघरा लगाया जाता है उसके आने से पहले ही कोई अनभीष्ट छोटा-मोटा पशु गीदड़ या भेड़िया कठघरे में आ घुसता है। तब अगले दिन उसकी यथोचित पूजा करने के बाद नये सिरे से फिर कठघरा सजाना पड़ता है।

इस तरह बहुत से शेर और बाघ पकड़े जाते हैं। पर सब बाघ मूर्ख नहीं होते। ऐसे बाघों के भी कई उदाहरण मिले हैं कि वे पिंजड़े में नहीं घुसे बल्कि निकट ही कहीं घात लगा कर बैठ गये। और अगले दिन सवेरे जब शिकारी पिंजड़े को देखने आये तो उन पर टूट पड़े। एक बार ऐसा हुआ कि एक बाघ ने जब मांस का टुकड़ा खींचा तो दरवाजा बन्द हो गया। परन्तु बाघ ने निकलने के लिए बहुत फुर्ती की। वह निकल तो न सका, पर उसका एक अगला पंजा दरवाजे के नीचे दब गया। जब सवेरे शिकारी आये, तो उसने असाधारण शक्ति लगा कर दरवाजे को ऊपर उठा कर खोल दिया और दो आदमियों को वहीं समाप्त कर दिया और स्वयं जंगल में भाग गया।

पकड़ने की गुफा

अरावली की पहाड़ियों में सोना नाम का एक स्थान है। वहां गरम पानी का स्रोत भी है। वहां के लोगों ने बघेरों को पकड़ने के लिए कठघरों का काम कृत्रिम गुफाओं से लेने का आविष्कार किया हुआ है। कृत्रिम गुफा से मेरा मतलब भारी पत्थरों से बनी हुई उन नीची और तंग खोलियों से है, जो देखने में गुफा सी जान पड़ती हैं। वे इतनी नीची होती हैं कि इनमें बघेरा कूद नहीं सकता, और इतनी पतली कि वह इनमें घुम नहीं सकता। दरवाजा स्वयं बन्द करने के लिए इनमें भी वही उपाय बरता जाता है जो हमने ऊपर लिखा है। गुफा में बघेरे के फंस जाने के बाद दरवाजे पर एक बोरी डाल कर उसमें बघेरे को बन्द कर लिया जाता है। इतने प्रयत्नों के पश्चात इस विकराल जन्तु को काबू में किया जाता है।

चीता पकड़ने की विचित्र पद्धति

चीते पकड़ने के लिए भी कठघरे से से अच्छा उपाय दूसरा नहीं है। किन्तु अमेरिका में छपी एक पुस्तक में बताया गया है कि चीते एक और अनोखे तरीके से पकड़े जाते हैं। चीते अमेरिका में नहीं पाये जाते, इसलिए पुस्तक में चीते पकड़ने की इस विधि को भारतीय बताया गया है। पुस्तक में लिखा है कि चीता जब भूखा होता है, तब एक ऐसी जगह जाता है, जहां बहुत से चाले परस्पर मिलते हैं। यह प्रायः किसी पेड़ के निकट होती है। इस पेड़ को खोज कर इसके आस-पास मजबूत रस्सियों के फन्दे बांध दिये जाते हैं। चीते आकर इन फन्दों में फंस जाते हैं।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार ८ आश्विन सम्वत् २००८ [अङ्क २२

विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
और जब तक हमारे संविधान में इसकी गारण्टी नहीं कर दी जायगी,
हम तब तक चैन नहीं लेंगे।

हिन्दू कोड बिल

वर्तमान संसद के अन्तिम अधिवेशन में हिन्दू कोड बिल विचारार्थ उपस्थित है। इस बिल का जो इतिहास है और जितना तीव्र जनविरोध इसके प्रति प्रकट हुआ है वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जहां तक इतिहास का प्रश्न है यह बिल हमारे वर्तमान शासकों ने अंग्रेजों से उत्तराधिकार में लिया है। यह प्रधानमन्त्री पं० नेहरू अथवा डा० अम्बेडकर के मस्तिष्क की ही उपज नहीं है। इसका जन्म अंग्रेज के मस्तिष्क में हुआ था और डा० अम्बेडकर के सवर्ण हिन्दुओं के प्रति रोष का लाभ उठाकर इन्हीं के द्वारा इसे लिखवाना आरम्भ किया।

विरोध की दृष्टि से एक जनतांत्रिक शासन द्वारा उपस्थित किसी बिल का इतना कड़ा विरोध नहीं किया गया जितना इसका। देश भर में इसके प्रति असन्तोष है। बड़े तथा छोटे, विद्वान् या मूर्ख, स्त्री या पुरुष सभी के द्वारा इसका विरोध हुआ है और हो रहा है। राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद व्यक्तिगत रूप से इसके प्रबल विरोधी बताये जाते हैं। पं० नेहरू के 'सेक्युलरिज्म' का समर्थन करने वाले कितने ही कांग्रेसी नेता इसके विरुद्ध हैं। संसद में हुए भाषण इसके प्रमाण हैं। देश भर में विरोध की उग्रता की चर्चा प्रायः प्रत्येक समाचार पत्र ने की है।

इतना सब होते हुए भी संसद में हिन्दू कोड को स्वीकृत कराने के प्रयत्न चालू हैं। गणतंत्र का नारा लगाने वाले इस शासन और उसके नेताओं को देखने के पश्चात विचार उठता है—क्या यह सचमुच में गणतंत्र है? तुरन्त ही लोग कहेंगे—यह गणतंत्र नहीं तो और क्या है? हमारे संविधान में हमने यह घोषणा की है कि भारत एक गणराज्य है। हमारी संसद, जिसमें कि देश की जनता के प्रतिनिधि बैठे हुए हैं, बहुमत से ही किसी भी विषय का निर्णय करती है। इस प्रकार उस निर्णय के पीछे देश के बहुमत का अप्रत्यक्ष समर्थन रहता है। जनता यदि चाहे तो उन्हें चुनाव में अपदस्थ कर सकती है।

किन्तु संविधान में 'गणराज्य' लिख देने मात्र से ही तो गणराज्य नहीं बन जाता। गणराज्य तो पूर्णतः एक व्यावहारिक रूप है। जब तक व्यवहार तथा आचरण में यह नहीं आता तब तक इस शब्द का कोई अर्थ नहीं और यदि कोई अर्थ है भी तो वह गणराज्य का धोखा है। संविधान में घोषित करना तो केवल एक औपचारिक रूप है। उसका यथार्थ रूप तो उन गणतांत्रिक परम्पराओं का निर्माण करना है जो देश की गणतंत्र व्यवस्था की आधार होती हैं। ये परम्परायें इतनी प्रबल बनायी जाती हैं कि कितना भी प्रभावशाली व्यक्तित्व शासन की बागडोर क्यों न संभाले वह इनके विरुद्ध आचरण करने का साहस नहीं कर पाता।

यह एक निर्विवाद सत्य है कि प्रभावशाली व्यक्तित्व के दबाव में मनुष्य कई बार अपनी इच्छा और धारणा के प्रतिकूल भी आचरण कर जाता है। स्वार्थ के लिए भी ऐसा ही देखा गया है। फिर जहां स्वार्थ के साथ ही साथ प्रभावशाली व्यक्तित्व का दबाव भी हो तब तो कहना ही क्या है। ऐसा ही स्थान भारतीय संसद और उसका कांग्रेसी दल है। एक ओर जहां पं० नेहरू का व्यक्तित्व सारी कांग्रेस संस्था से भारी हो रहा है वहां दूसरी ओर संसद के वर्तमान कांग्रेसी सदस्य पुनः उसी कुर्सी पर बैठने के लिए पंडितजी का ही मुंह देखते हैं। ऐसी स्थिति में उनसे भिन्न मत प्रकाशन करने का साहस किसमें है, विशेष कर टण्डनजी के इतिहास को देखते हुए! न यह संसद जनता के द्वारा चुनी हुई ही है जिससे इसे यथार्थ प्रतिनिधित्व प्राप्त हो।

यथार्थ में संविधान में लिखना अथवा संसद में मतों की संख्या अधिक दिखाना ही गणतन्त्र नहीं है। यह तो केवल उसका एक औपचारिक रूप है। यथार्थ गणतन्त्र तो उसकी आत्मा की सुरक्षा में है, और वह आत्मा है जनता की इच्छा और हित की दृष्टि से आचरण करना। गणतन्त्र के विधानशास्त्रियों का कथन है कि यदि ऐसी स्थिति भी उत्पन्न हो जाये जब जनता की इच्छा उसके विपरीत हो जिसको कुछ लोग जनता का हित समझते हैं तब उस पर बलात् लादने के बजाय उसकी इच्छा के अनुकूल ही आचरण करना चाहिये चाहे उससे कुछ हानि ही होती हो। इस प्रकार की हानि से जनता को जो अनुभव प्राप्त होगा वह एक कितना ही गुना लाभ होगा।

भारत के इतिहास में इस प्रकार का उदाहरण है। केवल जनता की इच्छा-पूर्ति के लिये राजा रामचन्द्र ने अपनी अर्धांगिनी, महारानी, सती सीता का गर्भवती अवस्था में भी परित्याग कर दिया था। उस समय की शासन व्यवस्था देखने में एक तन्त्रीय होगी किन्तु वह गणतन्त्र की आत्मा की रक्षा का एक अनुपम उदाहरण है। इसी लिए रामराज्य भारत की एक अमर स्मृति और आदर्श बन गया है। भारतीय जनता घोषणाओं और नारों को नहीं समझती, वह तो थोथी बातें हैं। वह तो केवल आचरण को देखती है। आज हिन्दू कोड या उसके एक अंश को स्वीकार कराने का प्रयत्न, वह भी उस समय जब कि वर्तमान कांग्रेसी संसद अपने अन्तिम दिन गिन रही है, गणतन्त्र की आत्मा के विरुद्ध आचरण है।

—×—

अनुचित दबाव

स्वातन्त्र्य संग्राम के दिनों में देश की तत्कालीन लोक प्रिय संस्था कांग्रेस ने अहिंसात्मक युद्ध के नाम पर कुछ ऐसे मार्गों का अवलंबन किया था, जो आज स्वयं उसके लिये विषम समस्या का कारण बन रहे हैं, जबकि आज कांग्रेस दल सत्ता रूढ़ है। आजकल आन्ध्र प्रान्त के निर्माण के लिये स्वामी सीताराम आमरण अनशन कर रहे हैं। आन्ध्र प्रांत के निर्माण की मांग बिल्कुल नई नहीं है, किन्तु आज तो उसने प्रजातांत्रिक मार्गों के स्थान पर दुराग्रह का मार्ग ग्रहण कर लिया है। इस आन्दोलन के पीछे निहित राजनैतिक स्वार्थों के विस्तार में न जाते हुये भी हम स्वामी सीताराम के इस अनुचित कदम का स्वागत नहीं कर सकते। प्रधान मन्त्री द्वारा उनकी मांग स्वीकार किये जाने का आश्वासन तो और भी अधिक आपत्तिजनक है यदि दुराग्रह से प्रभावित होकर प्रधान मन्त्री आन्ध्रप्रान्त का निर्माण करने के लिये उद्यत हैं तो कहा नहीं जा सकता कि इसी प्रकार अनुचित दबाव में आकर वे कितने नये प्रान्तों का निर्माण कर डालेंगे और सरदार पटेल द्वारा निर्मित एकता को पुनः विश्रृंखलित करने की ओर पग बढ़ायेंगे। यदि स्वामी सीताराम अपनी इस अनुचित मांग में सफल हो गये तो किसी भी प्रान्त के कुछ लोकप्रिय व्यक्ति इसी प्रकार का दबाव डाल कर देश की एकता को संकट में डाल सकते हैं। इसीलिए स्वा० सीताराम ही नहीं, किसी भी व्यक्ति के इस प्रकार के दुराग्रह के विरुद्ध लोकमत जाग्रत करने की आवश्यकता है।

× × ×

अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच

ईरान सरकार की रूस से नई व्यापारिक सन्धि

ईरान तेल-वार्ता

ब्रिटेन तेल वार्ता पुन प्रारम्भ करने के लिये १५ दिन का अल्टीमेटम देने के बारे में ईरान के प्रधानमंत्री डा० मुसाद्दिक और राष्ट्रपति ट्रूमैन के प्रतिनिधि श्री हैरीमैन में जो पत्र व्यवहार हुआ था, वह प्रकाशित कर दिया गया है। इस पत्र-व्यवहार से प्रतीत होता है कि श्री हैरीमैन ने यह अल्टीमेटम ब्रिटेन को पहुँचाने से इनकार करने का कारण यह दिया कि इसमें कोई नई बात नहीं कही गई है, जिससे कि पुन वार्ता चलाई जा सके, इसके विपरीत इससे मामला और अधिक बिगड़ अवश्य सकता है। उनका कहना कि यह अल्टीमेटम देने से समझौते की रही सही आशाएं भी विलीन हो सकती हैं। तथापि उन्होंने अपने पत्र म लिखा था कि मैं मामले को निबटाने मे सहायता देने को तैयार हूँ, बशर्ते कि वार्त्ता व्यावहारिकता और आपसी सद्भावना पर आधारित हो। उन्होंने डा० मुसाद्दिक से अपील की कि वे अपने प्रस्तावों पर पुनर्विचार करें और आशा प्रकट की थी कि तेल-वार्त्ता फिर प्रारम्भ हो सकती है।

डा० मुसाद्दिक ने अपने पत्र में लिखा था कि वे ब्रिटेन को तेल-वार्त्ता प्रारम्भ करने के लिए १५ दिन का अल्टीमेटम इसलिए देना चाहते हैं कि अनिश्चितता और दुविधा की स्थिति असह्य हो जाय।

ईरानी सरकार के अधिकारियों ने सोमवार को घोषित किया है कि वे सोवियत् सघ से एक नया समझौता करने की तैयारी कर रहे हैं, जिससे ब्रिटेन के साथ तेल के राष्ट्रीयकरण पर झगड़ा हो जाने से जो क्षति हो गई है, वह पूरी हो गई है।

ब्रिटेन में आम चुनावों की हलचल

सरकारी सूत्रों ने कहा है कि ईरानी तेल प्रतिनिधि दल नियुक्त कर दिया गया है, जो सोवियत सघ से अदल बदल के आधार पर एक समझौते की व्यवस्था करेगा और तब एक व्यापारिक समझौते पर हस्ताक्षर हो जावेंगे।

उन्हीं सूत्रों स कहा गया है कि पोलैंड और चेकोस्लोवेकिया ने ईरान को विश्वास दिलाया है कि वे ईरान का बिना साफ किया हुआ तेल बड़ी मात्रा में खरीद लेंगे। उनकी यह कार्य रूस की प्रेरणा से किया जा रहा है।

चीन में जाने वाले भारत के सांस्कृतिक प्रतिनिधि मंडल के कुछ प्रमुख व्यक्ति। साथ में भारत स्थित चीनी राजदूत भी खड़े हैं।

ब्रिटेन में आम चुनाव

आगामी २५ अक्टूबर को ब्रिटेन में आम चुनाव समाप्त हो जायेंगे। चुनावों से पूर्व पार्लमैंट भग कर दिये जाने की परम्परा के अनुसार ब्रिटेन की वर्तमान पार्लमैंट ५ अक्टूबर का भग करदी जायेगी। ब्रिटेन का वर्तमान चुनाव अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण प्रतीत होता है, क्योंकि इस समय सत्तारूढ़ दल की स्थिति वहा के प्रमुख विरोधी अनुदार दल की अपेक्षा बहुत अच्छी नहीं है। ब्रिटेन के वर्तमान शासन में परिवर्तन और अनुदार दल का प्रभुत्व सम्भावित ब्रिटेन की अन्तर्राष्ट्रीय नीति के परिवर्तन का सूचक है। इस समय विभिन्न दलों की स्थिति इस प्रकार है। मजदूर दल ३११ अनुदार दल तथा उसके साथी — २९६ उदारदल ६ स्वतन्त्र १, आयरिश राष्ट्रीय २ तथा अध्यक्ष— १। ३ स्थान अभी रिक्त हैं।

चीनी सद्‌भावना मडल

चीनी सूत्रों से पता चला है कि एक भारतीय सद्‌भावना शिष्टमण्डल २० सितम्बर को यहा से हांगकांग के रास्ते चीन को जायगा। १ अक्टूबर को पेकिंग में चीनी जन-सरकार की स्थापना के दूसरे वार्षिक समारोह में वह सम्मिलित होगा।

चीन की पांच प्रमुख लोकप्रिय संस्थाओं ने शिष्टमण्डल को आमंत्रित किया था और अ० भा० शांति परिषद तथा बम्बई और कलकत्ता के भारत चीन मैत्री समाजों के मार्फत यह निमन्त्रण भेजा गया। ज्ञात हुआ है कि चीन का एक सांस्कृतिक प्रतिनिधिमण्डल अक्टूबर के तीसरे सप्ताह में कलकत्ता पहुँचेगा। उस में १५ प्रतिनिधि होंगे। उसके नेता सांस्कृतिक मामलों के उपमन्त्री सिंगची लिन होंगे। शिक्षा, साहित्य कला संगीत तथा शिल्प के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त व्यक्ति प्रतिनिधिमण्डल में होंगे, उनमें संस्कृत के एक प्राध्यापक भी रहेंगे।

अभी जो कार्यक्रम है उसके अनुसार प्रतिनिधिगण बनारस, दिल्ली, बम्बई कलकत्ता, मद्रास, पूना, अजन्ता की गुफाओं महाबलीपुरम तथा बंगलौर की यात्रा करेंगे। वे भारत में ६ मास बितावेंगे।

—०—

(आर्गनाइजर के सौजन्य से)

देश-काल

संसद में हिन्दू कोड विधेयक नये रूप में प्रस्तुत

उत्तर-पूर्वी आसाम में भयंकर जल प्रलय

हिन्दू कोड विधेयक

संसद के वर्तमान अधिवेशन में विचारार्थ प्रस्तुत हिन्दू कोड विधेयक केवल संसद में ही नहीं, समस्त देश में चर्चा का विषय रहा। पिछले कुछ समय से अत्यन्त देश व्यापी प्रतिक्रिया से प्रतीत होता है कि देश की बहुसंख्यक जनता इसके विपक्ष में है। सम्भवतः इन्हीं सब कठिनाइयों को दृष्टि में रखते हुए विधेयक को जैसे तैसे एकाएक पास कराने के लिए उत्तरदायी व्यक्तियों ने भी अपने रुख को बदल दिया है। जिसके फलस्वरूप निश्चय किया गया है कि हिन्दू कोड-विधेयक का नाम बदल दिया जायेगा और संसद के वर्तमान अधिवेशन में विधेयक की विवाह सम्बन्ध विच्छेद सम्बन्धी धाराओं पर ही विचार किया जायेगा। इसलिये विधेयक के इन दोनों भागों की २९ धाराएं स्वीकृत हो जाने के पश्चात इसका नाम बदल दिया जायेगा। तथा इसमें कुछ अन्य आवश्यक और अधिक संशोधन कर दिये जायेंगे। विधेयक के अन्य भाग भावी विधि मंत्री या भावी सरकार अलग विधेयक के रूप में प्रस्तुत कर सकेगी। उन दो धाराओं को भी जनता के सभी वर्गों पर लागू किया जाय अथवा किसी वर्ग विशेष को किन्हीं धार्मिक मान्यताओं के कारण उन धाराओं से मुक्त किया जाये यह भी अभी अनिर्णीत है और संसद के सिख प्रतिनिधि ने तो स्पष्ट रूप से यह मांग रखी है कि सिखों को इन दो धाराओं से सर्वथा मुक्त रखा जाय।

कांग्रेस का विवाद समाप्त

पं० नेहरू को कांग्रेस महासमिति द्वारा सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुन लिये जाने के पश्चात प्रतीत होता है कि कांग्रेस का विवाद कम से कम अभी तो समाप्त हो ह गया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि कांग्रेस में उत्पन्न चिरकालीन गतिरोध को शान्तिपूर्वक समाप्त करने के लिये टंडन जी जिस संयम शालीनता का परिचय दिया वह कांग्रेस के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। किन्तु इस गतिरोध को दूर करने के लिये जिस अप्रजातांत्रिक और अवैधानिक मार्ग का अवलम्बन किया गया, उसे भी देश सम्भवतः नहीं भूल सकेगा। नेहरू जी के कांग्रेस अध्यक्ष बनने के पश्चात कृपलानी किदवई की किसान-मजदूर प्रजा पार्टी में भी आग सी पड़ गई है और यह आशा की जाती है कि किसान मजदूर प्रजा पार्टी के स्तम्भ शीघ्र ही कांग्रेस में सम्मिलित हो जायेंगे। नेहरू जी ने अपनी नई कार्यकारिणी की घोषणा भी कर दी है। जिसमें एक दो व्यक्तियों को छोड़ कर शेष सब नये ही हैं।

चुनावों की तैयारी

देश की विभिन्न राजनैतिक संस्थाएं चुनाव आन्दोलनों में पूरी तरह जुट गई हैं। इस समय देश का जो राजनैतिक वातावरण है, उसको देखते हुए यह स्पष्ट है कि आज किसी व्यक्ति विशेष या संस्था का किसी व्यक्ति विशेष अथवा संस्था के साथ गठबंधन का आधार विशुद्ध व्यक्तिगत स्वार्थ हानि ही है। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के फलस्वरूप ही श्री कृपलानी के डैमोक्रेटिक फ्रंट का निर्माण हुआ। और तत्पश्चात् उसका विघटन हुआ। साथ किसान मजदूर प्रजा पार्टी के अन्तर्गत कृपलानी और किदवई का गठबंधन भी एक आश्चर्य का ही विषय है। चुनाव को ही भावी जीवन का आधार मानने के कारण टंडन जी के अब तक के घनिष्ट मित्रों ने भी उन्हें धोखा दे दिया है। संक्षेप में व्यक्ति विशेष अथवा दल किसी के सम्बन्ध में भी आज यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि कौन व्यक्ति अथवा संस्था किस व्यक्ति अथवा दल से गठबन्धन कर लेगी।

संसद भवन के सामने हिन्दू कोड बिल विरोधी प्रदर्शन

पाकिस्तान का विष-वमन

पाकिस्तान के युद्धोन्माद का तापमान शनै शनै उतर रहा है। किन्तु काश्मीर में संविधान परिषद् के चुनाव ज्यों ज्यों समीप आ रहे हैं उसका तापमान पुनः बढ़ रहा है। पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री श्री लियाकतअली खां तो गाली गलौज पर भी उतर आये हैं। उन्होंने अपने एक भाषण में कहा है कि काश्मीर शेख अब्दुल्ला की कोई बपौती नहीं है।

भारत विरोधी प्रचार जारी रखने के लिये पाकिस्तान ने भारत पर पख्तूनिस्तान आन्दोलन के समर्थक होने तथा पंजाब की नदियों के पानी से वंचित रखने की साजिश का अभियोग लगाया है। पाकिस्तान भारत पर यह आरोप भी लगाता है कि भारत अपने यहां के मुसलमानों को योजनापूर्वक निष्कासित कर देना चाहता है।

आसाम में भयंकर बाढ़

आसाम के उत्तरी-पूर्वी भाग में भयंकर बाढ़ आई हुई है। ब्रह्मपुत्र, डिहांग तथा लोहित नदियों ने कई गांवों को पानी में डुबा दिया है। ५०००० से अधिक व्यक्ति बेघर बार हो गये हैं तथा सम्पत्ति व पशुओं की भी भारी क्षति हुई है। पूर्वी लखीमपुर के सखोवा, बोगडुंग तथा रोहमोरिया के गांव अभी तक तीन से लेकर १० फुट तक गहरे पानी में डूबे हुए हैं। डिब्रूगढ़ में ब्रह्मपुत्र का पानी का स्तर इतना ऊंचा बढ़ गया है कि नगर के कुछ भागों को खतरा उत्पन्न हो गया है। बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में पका भोजन वायुयान से नीचे गिराया जाता है।

भारतीय जनसंघ की एक सार्वजनिक सभा में संघ के मन्त्री श्री गुरुदत्त वैद्य भाषण दे रहे हैं।

"दमा" और पुरानी खांसी के रोगियो! नोट कर लो

१४-१०-५१ [अब चूके तो फिर साल भर पछताना पड़ेगा] 14-10-51

हर साल की तरह इस साल भी हमारी जगत विख्यात महोषधि (चित्रकूट) "बूटी" के कई हजार पैकेट आश्रम में रोगियों को मुफ्त बांटे जायगे, जो (शरद् पूर्णमाए) तारीख १४ अक्तूबर को एक ही खुराक खीर में खाने से सदा के लिए इस दुष्ट रोग से छुटकारा मिल जाता है। बाहर वाले रोगी जो समय पर आश्रम में न आ सकें, वह सदा की तरह २॥) (2/8/-) विज्ञापन रजिस्टरी आदि खर्च मनीआर्डर से भेज कर तुरन्त मंगा लें, जिससे अपने घर पर ही ठीक समय पर सेवन करके पूरा लाभ उठा सके। देर करने से गत वर्ष की तरह सैकड़ों को निराश होना पड़ेगा। नोट कर लें कि वी० पी० किसी को नहीं भेजी जाती है। अमीर आदमी धर्मार्थ बांटने के लिए कम से कम २५ आदमियों के लिए ४५) रु० रियायती मूल्य भेजें। जल्दी करें। अभी से मंगा कर रख लें।

पता—रायसाहब के. एल. शर्मा रईस, आश्रम, (२) "जगाधरी" (E.P.)

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नयी आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

प्रमेह, सुजाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डा० जसानी की जगत् विख्यात असल दवा

'जसाणी पील्स' (गोनो-किलर) (मुर्गा-छाप)(रजिस्टर्ड)

JASANI PILLS

पुराना या नया प्रमेह, सुजाक, पेशाब में मवाद और जलन होना, पेशाब रुक-रुक कर या बूंद-बूंद आना इस किस्म की बीमारियों को जसाणी पील्स नष्ट कर देती है।

—:मूल्य:—

५० गोलियों की शीशी का ४॥), वी. पी. डाक व्यय:—॥=)

तीन शीशी १२॥) रु०, वी० पी० डाक व्यय सहित

एक मात्र बनाने वाले— डा० डी० एन० जसानी

(V. A.) विट्ठलभाई पटेल रोड, बम्बई ४

बम्बई का ६० वर्षों का मशहूर पुराना अंजन

आंखों में

कैसा ही धुन्ध, गुबार जाला, माड़ा, फूला, पड़बाल, मोतियाबिन्द, नाखूना, रोहे, पक जाना, लाल रहना, कम नजर आना या वर्षों से चश्मा लगाने की आदत हो इत्यादि आंखों की तमाम बीमारियों को बिना आपरेशन दूर करके "नैन जीवन" अंजन आंखों को आजीवन सतेज रखता है। कीमत १।) रु० ३ शीशी लेने पर डाक खर्च माफ।

पता— कारखाना नैनजीवन अंजन बम्बई नं० ४

जनता से अपील

श्री शरत्चन्द्र जी एक महान् उपन्यासकार थे। उनके उपन्यासों का जो अपनी शैली के कारण सर्व-प्रिय है अनुवाद हिन्दी, गुजराती, तामिल, तेलगू इत्यादि भारत की भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मनी इत्यादि भाषाओं में भी विशेष रूप से हुआ है। इस अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महान लेखक का निधन हुए आज १३ वर्ष हो गये हैं, परन्तु खेद है कि देश भर में उनका कोई स्मारक नहीं। इस अभाव को दूर करने के लिए कलकत्ता में एक भव्य भवन निर्माण करने की आयोजना की गई है। कलकत्ता कार्पोरेशन ने रास बिहारी एवेन्यू में इस कार्य के लिए एक बीघा भूमि प्रदान की है। भवन में एक बृहद् पुस्तकालय, लेखक की समस्त रचनाएं, हस्तलिपियों तथा निजी समान, कला और शिल्प की विशेष कृतियें होंगी। आर्थिक सुविधा होने पर देश-विदेश से आये लेखकों के निवास का उचित प्रबन्ध किया जायेगा। योजनानुसार व्यय का अनुमान पांच लाख के लगभग है। हम सब देशवासियों से आग्रह निवेदन करते हैं कि वे उदार हृदय से इस स्मृति कोष के लिए यथाशक्ति धन भेजें।

श्यामाप्रसाद मुकर्जी वासन्तीदेवी अतुलचन्द्र गुप्त

धन भेजने का पताः—

१. श्री० एन० सी० चुन्डेर, अवैतनिक कोषाध्यक्ष
२. प्रिंसीपल के० डी० घोष ,, महामन्त्री

शरत् स्मृति कोष, इम्पिरियल बैंक आफ इण्डिया लि०
६, स्ट्रांड रोड कलकत्ता।

पूछताछ का कार्यालयः—४, अरबिन्दु रोड कलकत्ता पर है।

अपार भीड़ आकर्षित कर रहा है

नावल्टी नित्य १२, ३॥, ६॥ व ९॥ बजे
इतवार सुबह ९ बजे भी
एडवान्स बुकिंग ९॥ से ११॥ व ४॥ से ५॥

रीगल नित्य १२, ३।, ६॥ व ९॥ बजे
इतवार सुबह ९ बजे भी
एडवान्स बुकिंग ९॥ से १२॥ व ४॥ से ८

एक असाधारण चित्र जिसके प्रेम की सरसता तथा गीतों की मधुरता सदा के लिये आपके हृदय पर अङ्कित हो जायगी

कृष्णा मूवीटोन कृत

त रा ना

कलाकार — ★ मधुबाला ★ दिलीपकुमार
★ श्यामा, ★ कुमार, ★ जीवन, ★ गुलाब, ★ गोप

गीत — मधोक; प्रेमधवन तथा कैफ

संगीत — अनिल विश्वास
दिग्दर्शक — राम दरयानी

आज से ही

दिलशाद—मुरादाबाद। रूबी—अलीगढ़। अशोक—नैनीताल। रियाल्टो—मसूरी।
प्रभात—देहरादून तथा लक्ष्मी—सहारनपुर में भी।

वितरक—जगत टाकीज डिस्ट्रीब्यूटर्ज, चांदनी चौक, देहली।

शाबाश, पं० द्वारकाप्रसाद मिश्र !

[स्वामी सत्यदेव परिव्राजक]

देश में एक अभूतपूर्व घटना घट गई है। हमारे इतिहास में कई हजार वर्ष पहले दुर्योधन की सभा में ऐसी ही जघन्य घटना घटी थी, जब दुःशासन ने भरी सभा में पतिव्रता द्रौपदी के कपड़े उतारे थे। वह आदर्श नारी का अनादर था। रविवार ९ सितम्बर को नई दिल्ली में वैसा ही अपमान आर्य संस्कृति का हुआ, जब तपस्वी टण्डन जी को नेहरू जी की तानाशाही स्थापित करने के लिए अपमान सहित अध्यक्ष पद से पृथक होना पड़ा।

पं० नेहरूजी कांग्रेस कार्य समिति में टण्डनजी के साथ मिलकर काम नहीं कर सकते। उन्हें चाहिये रफीअहमद किदवई जैसे साथी। मनुष्य अपने साथी संगियों के द्वारा ही पहचाना जाता है। किदवई वह व्यक्ति है, जिसने महाराजा बड़ौदा को गद्दी पर बिठलाने का लालच देकर दो लाख रुपया एंठ लिया। तपस्वी टण्डन जी तो ऐसे कुकर्म कर नहीं सकते। फिर भला नेहरूजी उनके साथ मिलकर काम क्यों करने लगे ?

त्याग का सौदा

नेहरूजी ने अपने त्याग का सौदा किया है। जितना त्याग उन्होंने किया, उससे हजारों गुना ज्यादा वैभव उन्होंने पा लिया, यह तो त्याग की दुकानदारी है। फिर प्रजा उनके लिये पागल क्यों होती है ? प्रजा की यही अज्ञानता है, जिसके लिये आज वह हजारों की संख्या में इकट्ठी होकर तालियां पीटती है, कल वही प्रजा, यदि उस आदर्श व्यक्ति को फांसी मिलती हो तो फांसी के स्थान पर आकर वैसे ही तालियां पीटेगी। जो लोग प्रजा की तालियों को सुनकर अपना [illegible] मानते हैं, वही अन्त में खून के आंसू बहाया करते हैं।

किदवई क्या चाहते हैं !

अब किदवई क्या चाहते हैं ? [illegible]

[illegible]

भिन्न भिन्न टण्डन जी को विदा कर फिर नेहरूजी के लिये अध्यक्ष बनाये जाने का प्रस्ताव भी कर दिया।

संस्कृति का निरादर

नेहरूजी फूलकर कुप्पा हो गये और मुस्कराते हुये सिंहासन पर आ बैठे। देश के गण्यमान्य कांग्रेसी बुत की तरह बैठे हुए यह नृशंस नाटक देखते रहे। भारत की संस्कृति का इस प्रकार का अपमान उन्होंने उसी प्रकार सहन किया जैसे ५००० वर्ष पहले उनके पूर्वजों ने किया था।

हिन्दू कोड बिल क्यों ?

पं० नेहरू जी भारत-राष्ट्र को असाम्प्रदायिक राज्य बतलाते हैं। उनसे कोई यह पूछे कि असाम्प्रदायिक राज्य में हिन्दू कोड बिल कैसा ? हिन्दू कोड बिल तो हिन्दू राज्य में बन सकता है, असाम्प्रदायिक राज्य में वीभत्स राइटस बिल (महिला अधिकार विधेयक) पास हो सकता है, जिससे देश की सारी नारियों के अधिकारों की रक्षा हो। मुसलमानों के घरों में तो चार-चार स्त्रियां सौतिया डाह से जीवन भर जलती रहें, नेहरूजी उनका करुण क्रन्दन क्यों नहीं सुनते ? मुसलमानों का डर है न। उनको उनकी वोटें चाहिये।

मेरे देश के लोगों !

क्या देश में कोई आर्य पुत्र, निर्भीक ब्राह्मण अथवा कोई शंकराचार्य का शिष्य नहीं रहा ? आज समय है बोलने का। मेरे देश के लोगों ! आज तुम्हारी आत्माओं की परीक्षा का समय आ गया है। यह घड़ी है, जो फैसला करेगी कि तुम सचमुच स्वाधीनता के अधिकारी हो, आर्यों के वंश से हो और भारतीय संस्कृति के मानने वाले हो।

शाबाश पं० मिश्र !

भारत राष्ट्र की करोड़ों की आबादी में से एक शेर निकला— एक नरपुंगव खड़ा हुआ— वह नर श्रेष्ठ, जिसने कृष्णायन लिखा है। उसने कृष्णायन लेखक होने का अपना सच्चा अधिकार सिद्ध कर दिया। किताबें तो बहुत लिखते हैं, किन्तु लेखक वह जो मनसा वाचा कर्मणा अपनी कृति के लिये जिए। शाबाश पं० द्वारकाप्रसाद मिश्र ! धन्य है माता जिस ने तुम्हें पैदा किया। माता का एक गुणी पुत्र अच्छा है, करोड़ों मूर्खों से कुछ नहीं हो सकता। अकेला चांद अन्धकार का नाश करता है, लाखों तारे कुछ नहीं कर सकते।

पं० द्वारका प्रसाद मिश्र ने भारत वर्ष की लाज रखली और तानाशाह के सामने खम ठोककर खड़ा होगया है। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। अब वे कायर भी सोचने लगेंगे, जिन्होंने स्वार्थ और कायरता वश तपस्वी टण्डनजी की राजनीतिक हत्या होने दी है। मैं तो लाचारों से लाचार बैठा हूँ, अन्यथा सारे देश को रौंद कर इस पाप का परिहार करता। यह असाधारण घटना है।

पं० नेहरू को चेतावनी

पं० नेहरूजी समझते हैं कि उनकी बड़ी विजय हुई, लेकिन मैं बुलन्द आवाज से घोषणा करता हूँ कि उनकी कीर्ति का सूर्य अस्त होना प्रारम्भ हो गया है। उन्होंने एक ऐसे आदमी का अपमान किया है, जिसने बड़े धैर्य से उनकी चोटों को सहन किया, किन्तु उलट कर चोट नहीं की। आज यदि टण्डनजी के स्थान पर कोई दूसरा होता तो नेहरूजी से पूछता कि क्या उन्होंने भारत को हानि पहुँचाने के सिवाय इसकी कोई भलाई भी की है ?

हिमाद्रि शिखर

★ श्री रामप्रकाश अग्रवाल ★

नभ में देखो हेमाद्रि शिखर !
कितना ऊंचा ! कितना उज्ज्वल !! पग धूल रहे शत शत निर्झर !
कितनी वर्षाएं बीत चुकीं
कितनी झञ्झाएं टूट चुकीं
कितनी संध्याएं निकल गईं
कितने आघात सहे प्रतिपल
पर उसने हार नहीं मानी, वह खड़ा रहा उन्नत शेखर !
उर में भर सिंहों का गर्जन
श्वासों में विहगों का गुंजन
वाणी में कोकिल का कूजन
नयनों में करुणा का दर्शन
मुख पर मधुहास लिये निर्मल, वह जग को देता निर्भय वर !
लिये
जाड़ा निदाघ उत्ताप लिये
पावस वाली बरसात लिये
वह चिर निसर्ग का कोलाहल
इसने सब रङ्ग निहारे हैं, इसमें रक्षित इतिहास अमर !
संध्या से पाया शान्ति-दान
ऊषा से कर्मों का विधान
भास्कर से नव जग-मुक्त भान
पूनो से उज्ज्वल [illegible]
ले ले कर दान सदा जग को देता आया जीवन अक्षर !
दिक् छोर मिलाता विकट भाल
[illegible] से लिपटा है [illegible]
[illegible] किरीट नक्षत्र माल
इस एक उदर में सब भूतल
यह किसकी मनुस्मृति का सम्बल ?

छपते-छपते

समाचार मिला है कि "तपेदिक" रोग की भारत विख्यात महौषधि "जबरी" (JABRI) ने हजारों ऐसे-ऐसे रोगियों की जान बचा दी, जिनको (X-RAY) आदि के बाद डाक्टरों, वैद्यों ने जवाब दे दिया था। यदि आप इस तरह से नाउम्मीद हो चुके हों, तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार जबरी की जरूर परीक्षा कर लें। परीक्षार्थ हो नमूना जारी किया गया है, जिसमें सफलता हो सके। तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। मूल्य जबरी नं० १, सोना मोती भस्मोंयुक्त पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु० नमूना १० दिन २०) रु० जबरी नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। हमारा तार का पता (JABRI JAGADHRI) ही काफी है।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा रईस एण्ड बैंकर्स (२) 'जगाधरी' (E.P)

इतिहास की खोज

मध्यभारत में प्राचीन अवशेष की खोज

गोलाकार मृणानलिका कूप

[श्री वि. श्री वाकणकर]

मनुष्य जीवन के तीन प्रमुख आधार हैं—भोजन, जल और वायु। इसमे वायु प्रकृति ने स्वच्छन्दतापूर्वक वितरित की है। प्राचीन काल में जल प्राप्ति के साधन आज के समान परिपूर्ण नहा थे। इसी कारण मनुष्य ने अपने प्रागऐतिहासिक जीवन में जल सुलभ स्थानों को अपना निवासस्थान बनाया अर्थात वे छोटे जलाशय, नदी तट, कुञ्ज तीर्थ एव सागर तट पर ही रहते थे।

क्वचिद् भूमौ गिरौ वापी नदी तीरेषु वै तटा
कुञ्जेषु सर्व तीर्थेषु सागरस्य तटेषुच ॥
पद्म० भूमि० अ० २८।२१

नदी तट पर सभ्यता का विकास

अत्यन्त प्राचीन तीर्थ एव प्राग्-ऐतिहासिक नगर या ग्राम अधिकतर नदी तट पर स्थित हैं। धीरे धीरे मनुष्य को सरलता साथ आवागमन व्यापार एव उद्योग के निमित्त नदी तट छोड कर अन्य स्थानों पर अपना निवास स्थान बदलना पड़ा और तब उसे भूगर्भान्तर जल स्रोतों का संशोधन करना पड़ा। उस निमित्त छोटे छोटे सीरों व खड्डों से अपना काम प्रारम्भ कर अपनी आवश्यकता व कौशल के द्वारा विकसित विशाल व दीर्घ जीवी जलाशय बनाने पड़े। उन्हें वापी तड़ाग दीर्घिका कूप ताल इत्यादि नामाभिधान मिला। वापी कूप व कुण्ड इत्यादि घरों में भी वे रहते थे मोहनजोदड़ो हरप्पा आदि की खुदाई में अनेक अत्यन्त व्यवस्थित कूप एव जलाशय प्राप्त हुए हैं।

मध्यभारत में नये प्रयत्न

मध्य भारत के सभी प्राचीन अवशेषों मे एक नई ही कूप सदृश वस्तु का सशोधन हुआ है तथा उसके विषय में व्यापक खोज आवश्यक है। वह वस्तु गोलाकार मृण नलिका कूप के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रकार के गोलाकार कूप उज्जैन, महेश्वर कायथा, महतपुर, नगधार, मन्दसोर, केसर में अधिक मिले हैं। उज्जैन के उत्खनन के समय ऐसे अनेक कूपों का अन्वेषण हुआ। श्री ग म गाडकर्णी महोदय ने विक्रम स्मृति ग्रंथ मे पृ ४७६ पर लिखा है कि 'वहां प्राप्त हुई वस्तुओं में सबसे मनोरंजक गोलाकार कूप हैं। इनकी बनावट भी बहुत विचित्र है। मिट्टी के लगभग दो फीट वृत के साठ से आठ इन्च ऊंचे नल एक दूसरे के ऊपर फसा दिये जाते थे। इस प्रकार के २० से २४ तक नल एक दूसरे में फसे पाये गये हैं और वे १२ से १४ फीट ऊंचे तक मिले हैं। इनके भीतर पाई गई वस्तुएं भी अनेक प्रकार की हैं जैसे मृत्तिकामुद्रा बर्तन, घोड़े या गधे की हड्डियां (जैसा एक स्थल पर पाया गया है) आदि। अनुमान यह किया जाता है कि ये गोल पात्र अनाज या अन्य आवश्यक समान रखने के काम में लाये जाते थे। बड़े बड़े मिट्टी के बर्तन भी वहां मिले हैं। इनमें मनुष्य की हड्डियां रखी हैं और उसमें एक मिट्टी की मुद्रा भी मिली है जिस पर सम्भवतः उस व्यक्ति का नाम अंकित है, जिसकी वे अस्थियां हैं। इस मुद्रा की दूसरी ओर नदी का आकार बना हुआ है। इस पात्र में एक दूसरी मिट्टी की मुद्रा भी मिली है जिसके एक ओर मनुष्य का सिर है और दूसरी ओर कमल का फूल बना हुआ है।

मैंने स्वयं ऐसे ११ कूप महेश्वर में १० कूप उज्जयिनी में दो कूप कायथा में ४ मन्दसोर में १ महतपुर में २ नगधार मे ०२ केसूर में और १ मथुरा में देखे हैं। इनमें अधिकतर कूपों में अस्थिका भस्मक टूट मिट्टी के बर्तन, अस्थिपात्र सीप शंख, मिट्टी की गोलियां मिली हैं कुछ विद्वानों के मत से ये धान्य भण्डार थे, कुछ उन्हें अस्थिभण्डार भी कहते हैं। मालवा के कुछ ग्रामों में पूर्वजों की अस्थियां एकत्र करने की प्रथा है। वे अस्थियां जब कोई गगाजी अथवा प्रयाग जाते हैं तब वहां विसर्जित करने के लिये ले जाते हैं। अन्यथा उनका सग्रह पीढ़ियों तक चलता है। महतपुर व मन्दसोर के बीबा बावल मस्जिद वाले कूपों में केवल महीन मिट्टी ही प्राप्त हुई।

पुरातन अस्तित्व

इन कूपों का अस्तित्व प्राग ऐतिहासिक स्तरों पर कहीं भी देखने में नहीं आया। इनका प्रारम्भ प्राकृतिक भूमि से लेकर सर्वस्तरों पर गुप्त कालीन स्तर के मध्य तक दिखाई देता है, अतएव यह निश्चित है कि इनका प्रारम्भ उत्तर गुप्त काल का है। इन कूपों के वृत में बड़ा अन्तर पाया जाता है, उज्जैन में २ फीट, २ फीट ११ इन्च, ३ फीट २ इन्च। महेश्वर में ३ फीट, २ फीट ३ इन्च, २ फीट १ इंच। केसूर में १ फीट ८ इन्च

और १ फीट ११ इन्च। महतपुर में २ फीट ३ इन्च कायथा में २ फीट ७ इन्च मन्दसोर में २ फीट ११ इन्च २ फीट ७॥ इन्च व २ फीट १० इन्च वृत के कूप प्राप्त हुए हैं। इनकी नलिकाओं की ऊंचाई भी कहीं ४, ६, ८ ९ और ११ इन्च है। कुम्हारों ने सुविधानुसार इन्हें बनाया होगा। इन कूपों में धान्य भण्डार नहीं होंगे क्योंकि इतने छोटे और सकड़े कूपों के नीचले भागों से धान्य निकालना कठिन है। ये केवल जलकूप ही होंगे अथवा अस्थिभण्डार ही होंगे।

इन कूपों की नलिकाएं अन्दर से समान रहती हैं किन्तु बाहर दोनों छोरों पर १ से १॥ इन्च मोटी रहती है दोनों मुंह मिलाने पर डाल अन्दर या बाहर रहता है तथा इस कारण वे एक दूसरे पर जमकर बैठती हैं।

केसूर में बाह्यस्तर पर ही इनका देखना हुआ है, पर अन्यत्र इनका अन्दर बाहर परीक्षण करने पर भी उपरोक्त बातें पाई गई हैं। साथ दिये हुए छाया-चित्र व भाव चित्र से इनके आकृति की स्पष्ट कल्पना आ सकेगी। छाया चित्र मध्यभारत पुरातत्व विभाग के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं।

—०—

★

अभी हाल में ही उज्जैन (मध्यभारत) में गोलाकार मृणनलिका कूपों की खोज की गई है। चित्र न० १ में दो घेरों वाले तथा चित्र न० २ में चार नलियों वाले कूप चित्रित हैं।

★

क हा नी

कार्टूनिस्ट

❀ श्री 'शलभ'

'यहीं बैठ जाओ'—चपरासी ने रूखी भरी हुई आवाज में कहा। मगनीराम बरामदे में रखी हुई बेंच पर जाकर बैठ गया। उसके छाते से अभी तक पानी की बूंदें झर रही हैं। उसने एक खंभे के सहारे उसे टिका दिया। दुआबा गांव से चला आ रहा है। पौ फटने से एक घड़ी पहिले वह उठा था, शौचादि से निवृत्त हो घर से निकल पड़ा। अभी पांचवां घंटा लगा ही था कि उसने स्कूल के अहाते में पैर रखा। एक बजा है। आकाश घनीभूत बादलों के अन्धकार से ढक गया है। अविराम वर्षा, मेघ गर्जन और बिजली की चमचमाहट! उसकी चमक इस समय भी साफ २ कौंधती हुई दिखाई दे रही है। मगनी बाबू अपने भीगे हुए वस्त्रों को कुछ निचोड़ने का उपक्रम करने लगा। घड़ड़ड़—एक बार बिजली कौंध उठी, हृदय दहल सा गया। स्कूल के कमरों के छत की टिन खड़खड़ाहट कर रहे हैं।

दूसरा चपरासी छाता ले कर कहीं से आ पहुँचा। मगनीराम को धोती निचोड़ता देख, बोला—'अजी, देखते नहीं हो, फर्श गीला हो रहा है। यह कपड़े निचोड़ने की जगह है? मगनी बाबू सहम गया। फिर बेंच पर आ बैठा। उसका सारा बदन कांप रहा है। अविराम वर्षा के पानी के झोंकों को सहता अपने गांव से चला आ रहा था; शरीर थक कर चूर-चूर हो गया, आंखें आरक्त वर्ण।

इतने में एक दुबला-सा व्यक्ति आ पहुँचा। उसने अपना झरता हुआ छाता एक खंभे के सहारे खड़ा कर दिया। पैंट, कोट, बूट, बड़ी सुसज्जित वेष-भूषा। मगनी बाबू उठ खड़ा हुआ झुक कर प्रणाम किया। आगन्तुक महोदय लाप-रवाही ढंग से अमरीका का नकशा ले कर फिर चल दिये। मगनी बाबू खड़ा २ ताकता ही रह गया। सोच रहा था शायद हेडमास्टर है।

लो, कुछ पता लगा। मगनी सिकुड़ा हुआ एक ओर बेंच पर बैठा है। कोई उसे पूछता तक नहीं—वह यहां क्यों आया है। इतने में कक्षायें बदलने के लिये इधर-उधर अन्य अध्यापक आने जाने लगे। मगनी उन सब को खड़ा हो-हो नमस्कार करने लगा, शायद उसके लिये ये सब हाई स्कूल के हेड-मास्टर हैं, हाकिम हैं, बड़े हैं! उसमें इतना साहस भी नहीं कि वह किसी को कुछ पूछे। ठंडी २ हवा के तीर से लगने वाले झोंके उसके शरीर की हड्डियों की ठठरी तक को हिलाने लगे। उसकी आंखें थकान से झिंप सी रही हैं। पर उसके भीगे वस्त्र भीष्म पितामह की शर-शैय्या की तरह उसकी आंखें लगने ही नहीं देते। ऊपर से डांट पड़ने का डर दिमाग पर सवार है। घड़ड़ड़—

बिजली फिर कौंध उठी। उसने एक बार आसमान की ओर देखा, चमक का उजाला एक ही बार में तड़प के साथ क्षितिज के सुदूर छोर तक फैल गया। उफ! कैसी वर्षा हो रही है। उसे अपने गांव के मिट्टी के घर की याद हो आई, उस पर भी यह बिजली चमक रही होगी, घर बैठ तो नहीं जायेगा। इतनी देर हो गई, वेतन नहीं मिला, फिर घर कब तक लौट सकेगा……अरे, अंधेरा हो जायेगा, इसका हृदय कुछ विद्रोह-सा करने लगा। उसे अंधेरे की झिमी-लिका बिजली की कौंध के प्रकाश में साफ २ नजर आने लगी। मन की उकसाहट बढ़ने लगी। इतने में एक महाशय ने अपनी 'एम्पायर स्टिक' हाथ में घुमाते हुए प्रवेश किया। मगनी बाबू के पैर अपने आप उठ पड़े, वह खड़ा हुआ, झुक कर प्रणाम किया। टन-टन—सातवां घंटा बजा। एक चपरासी दौड़ता हुआ आया। उन महाशय ने अपना 'फैल्ट हैट' उतार कर उसे दिया। फिर 'बरसाती' उतारी। सामने वाले कमरे का चिक हटा कर अन्दर प्रवेश किया।

मगनी फिर अपनी जगह पर आ कर बैठ गया। उसका हृदय धड़कने लगा — 'वेतन बिल' पास हो कर 'ट्रेजरी' से आया या नहीं। आज दो महीना बगैर वेतन बीत गया है। उफ! कैसी बुरी गुजर रही है। नहीं तो फिर खाली हाथ लौटना पड़ेगा। उसका शरीर एक बार सिहर उठा। इतने में आफिस की घंटी टुन टुन कर बज उठी। चपरासी दौड़ कर अन्दर गया। दो मिनिट बाद फिर बाहर निकल आया।

'सुना जी, तुम्हें अन्दर बुलाते हैं'—चपरासी ने उसे इशारा किया, मगनी उठ खड़ा हुआ। ठंडी शीत से उसके पैर कांप रहे हैं। वह चपरासी के पीछे २ जा पहुँचा। 'चिक' उठा; फिर गिरा। दोनों अन्दर पहुँच गये। दीवार के सहारे मगनीराम खड़ा हो गया।

'कहां से आये हो? क्या चाहते हो?' स्प्रिंगदार कुर्सी पर अपना ठिंगना डीलडौल हिलाते हुए हेडमास्टर ने पूछा।

'जी, मैं दुआबा गांव के सरकारी मदरसे में मास्टर हूँ।'

'अच्छा, वेतन लेने आये हो?' अपनी मार्मिक दृष्टि से घूरते हुए हेड-मास्टर बोला।

'जी, हां!'

'अब कौन देगा, वेतन! इतनी देर से आये हो। तुम्हें जल्दी आना चाहिये।

'साहब, मैं जल्दी ही……!'

'क्या जल्दी ही? इतनी देर तक तुम लोगों की इन्तजारी ही में बैठे रहें? सातवां 'पीरियड' लग चुका है। आठवां लगने वाला है और स्कूल टाइम खतम होने आया है। टन-टन फिर घंटी बजी। चपरासी झट से अन्दर आ पहुँचा। हुक्म मिला—सामने के कमरे से क्लर्क साहब को बुला लाओ। एक मिनिट हुआ होगा। एक अन्य महाशय ने प्रवेश किया। गौर से देखिये—उनके हाथ में एक 'सोलोलाइट' का होल्डर है, नंगा सिर, दो अंगी धोती, पैर में देशी जूते।'

'देखिये, रोकड़ बन्द हो गई।' हेडमास्टर ने अपनी कलाई की घड़ी की ओर निगाह डाल कर कहा।

'जी हां, यह सब काम समाप्त हो चुका है!' पीछे मुड़ कर 'मगनी' की ओर देखते हुए—'अजी, तुम लोगों को हजार बार कहा, इतनी देर से मत आया करो, क्या तुम्हारा ही काम किया करें? जानते हो यह 'पे सेन्टर' है! मजाक नहीं। कैसे-कैसे आदमी दुनिया में हैं!'

'साहब, मैं जल्दी ही आ गया था। पन्द्रह कोस से चला आ रहा हूँ। आज तो वेतन मिल ही जाना चाहिये, फिर कभी देरी नहीं होगी'—मगनी ने दबी जबान से कहा।

'तुम लोग हर समय ऐसा ही कहा करते हो। स्कूल बंद होने का समय है। फिर से रोकड़ चालू करो—आपके लिये।'

'अच्छा, बाबू साहब! आज तो चुकता कर ही दो। कड़कती आवाज से फिर बोले—मिस्टर, इस तरह की देरी आयन्दा कभी बर्दाश्त नहीं की जा सकती! जानते हो, यदि आज चुकता नहीं किया जावे तो मियां को कल वापिस पैर घसीटने पड़ेंगे। अच्छा, तो चुकता कर दो। दोनो बाहिर निकल आये। क्लर्क ने अपनी अलमारी खोली, रोकड़ निकाली। कुछ लिखा, फिर 'स्टाम्प' लगवा कर दस्तखत लिये। रुपये गिने गये। मगनी बाबू ने अपने भीगे, कांपते हाथ बढ़ाये और चुपचाप ले लिये। इतनी हिम्मत फिर न हुई कि खजान्ची की मेज पर फिर उन्हें वह गिन ले। एक सन्तोष की सांस ले वह उठ खड़ा हुआ। आफिस से बाहर निकल आया।

……बाहर तूफान चल रहा है। पेड़ के पेड़ हवा की लहरों में गिरे हुए कीचड़-पानी चाट रहे हैं। आवश्रान्त वर्षा—घोर घड़घड़, तड़तड़, नदी-नाले एकाकार बह रहे हैं। मगनी कह रहा था—आज कई पर्वत खंड टूट-टूट कर धराशायी हो रहे हैं। एक बार फिर

[शेष पृष्ठ ११ पर]

कांग्रेस में भारतीय संस्कृति को स्थान नहीं है

[श्री गुरुदत्त]

कांग्रेस में स्वराज्य आन्दोलन के जन्मदाता लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

जब से श्री टंडन जी कांग्रेस के प्रधान बने थे तब से यह भ्रम सा उत्पन्न हो गया था कि शायद कांग्रेस भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए पग उठाएगी। प्रधान पद स्वीकार करने से पूर्व टंडन जी भारतीय संस्कृति के लिए धुंआधार व्याख्यान देते रहते थे। १९४८ में गांधी मैदान में जनाधिकार समिति के मंच पर से आप ने २॥ घंटा भर पचास हजार से ऊपर श्रोताओं को जो व्याख्यान दिया था वह किसी को भूल नहीं सकता। उस और अनेकों ऐसे भाषणों के उपरान्त टंडन जी का कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया जाना अवश्य ही ऐसी धारणा उत्पन्न करने वाला था कि स्वराज्य प्राप्ति के अनन्तर कांग्रेस अपनी नीति बदलने को उद्यत है।

व्याख्या में परिवर्तन

यद्यपि श्री टंडन जी कांग्रेस के प्रधान बनने के पश्चात् भारतीय संस्कृति की अपनी व्याख्या में अदल बदल करने का यत्न करते रहे हैं, तो भी वह प्रधान नहीं रह सके और उनको वास्तविक कांग्रेस के सम्मुख सिर झुकाना पड़ा है। हम कई बार इस बात का स्पष्टीकरण कर चुके हैं कि कांग्रेस की नींव ही इस बात पर रखी गई थी कि हिन्दु और मुसलमान दो मजहब हैं और इन को मिलाकर एक जाति बनानी है। टंडन जी के व्याख्यानों से यह समझ में आता था कि वह हिन्दु का एक मजहब न मान कर एक जाति मानते थे और इस जाति की संस्कृति और मर्यादा भारत में प्रचलित रखना चाहते थे। जब वे प्रधान बने तब यह समझा गया कि कांग्रेस अपनी आधारभूत बात को छोड़ टंडन जी के विचारों को अपना रही है। परन्तु पिछले सप्ताह की घटना ने हमारा यह भ्रम निवारण कर दिया है।

प० जवाहरलाल जी तथा उनके साथियों ने यह बात स्पष्ट कर दी है कि श्री टंडन जी जो कुछ करते रहे हैं, उसके लिए कांग्रेस में स्थान नहीं है। पंडित जी बीसियों बार हिन्दु जाति को एक फिरका और पिछड़ा हुआ फिरका बता चुके हैं और टंडन जी हिन्दुओं को भारत की उच्च कोटि की सभ्यता के उत्तराधिकारी और उपासक मानते हैं। कांग्रेस ने टंडन जी को पदच्युत कर यह बात स्पष्ट कर दी है कि वह नेहरू जी की विचार धारा का अनुकरण करती है।

जब भारत में विदेशी राज्य था तो कांग्रेस का एक लक्ष्य स्वराज्य प्राप्त करना भी था। कांग्रेस के अतिरिक्त अन्य हिन्दु संस्थाएं भी थीं जो स्वराज्य प्राप्ति के लिए यत्नशील थीं। स्वराज्य प्राप्ति भारत की अनेकों संस्थाओं में एक समान उद्देश्य था। स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् इस समानता का लोप हो जाना निश्चित ही था। कांग्रेस स्वराज्य प्राप्ति के अतिरिक्त भी कुछ थी और आज वह देश के सम्मुख स्पष्ट हो रहा है।

तीव्र मतभेद

श्री टंडन जी और उनके विचार के लोग कांग्रेस को स्वराज्य प्राप्ति के अतिरिक्त एक हिन्दु अथवा भारतीय संस्था मानते थे। प० जवाहरलाल इस को एक अहिन्दु संस्था मानते थे। महात्मा गांधी इस मतभेद को जानते थे। इस कारण वह स्वराज्य प्राप्ति के उपरान्त कांग्रेस को बन्द कर देना चाहते थे। दोनों दलों ने कांग्रेस को अपनी ओर घसीटने का यत्न किया और टंडन पार्टी को वास्तविकता के सम्मुख सिर झुकाना पड़ा।

हमारा इससे यह अभिप्राय है कि कांग्रेस की नींव हिन्दुओं के संगठन को मिटा कर एक अहिन्दु जाति के निर्माण के लिए रखी गई थी। सन् १८८५ में तो स्वराज्य प्राप्ति इसका ध्येय नहीं था। स्वराज्य प्राप्त करने का ध्येय श्री बालगंगाधर तिलक ने १९०७ में भारत के सम्मुख रखा और कांग्रेस ने इसको १९१३ में कलकत्ता में अपनाया। स्वराज्य प्राप्ति तो कांग्रेस के कार्यक्रम में इसके जन्म से २८ वर्ष पीछे आई। यह कार्यक्रम पूर्ण हुआ। कम से कम यह कहा जा सकता है कि कांग्रेस जिसको १९१३ में स्वराज्य समझती थी वह मिल गया। अतएव कांग्रेस अपने पूर्व ध्येय, जो इस १८८५ में अपने सम्मुख रखा था, पर आकर डट गई है।

आंग्ल कूटनीति

महात्मा गांधी और अन्य हिन्दु नेता जो कांग्रेस में स्वराज्य प्राप्ति के लिए सम्मिलित हुए थे, वह भूल गए थे कि यह तो कांग्रेस का वास्तविक ध्येय था ही नहीं। उस अंग्रेज ने जिसने कांग्रेस की नींव रखी थी उसने स्वराज्य प्राप्त करना इसके उद्देश्यों में नहीं रखा था। उसका लक्ष्य था भारत में हिन्दु संगठन को, जो श्री स्वामी दयानन्द श्री राजा राममोहनराय, और अन्य हिन्दु नेताओं के कारण सजग हो रहा था, ढीला कर दिया जाए। इसी उद्देश्य से कर्नल जैक एक और अंग्रेज ने सर सैय्यदअहमद को कांग्रेस से पृथक रहने के लिए कहा था।

स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् कांग्रेस अपने प्राथमिक उद्देश्य पर आती चली जाती है। हमारा कहना है कि श्री टंडन जी का कांग्रेस के प्रधानपद से च्युत किया जाना इसी बात का लक्षण है। यह कहा जा सकता है कि देश में एक जाति का निर्माण एक शुभ कार्य है। इसका

लेखक

विरोध देशद्रोह है। परन्तु कांग्रेस का यह उद्देश्य नहीं है। यदि एक जाति-निर्माण मात्र उद्देश्य होता, तो देश में ७५ प्रतिशत लोगों में जो एक जाति होने की भावना थी, वह नष्ट करने का यत्न न किया जाता और उसको केन्द्र बना कर अन्य छोटे छोटे फिरकों को उस जाति की धुरी पर ले आया जाता। कांग्रेस तो एक जाति निर्माण नहीं, प्रत्युत एक अहिन्दु जाति निर्माण के लक्ष्य से बनी थी और कांग्रेस ऐसा कर रही है। इसके प्रमाण पग पग पर मिलते हैं।

कांग्रेस जब से बनी है, तब से ही इसने कभी यह जानने का यत्न नहीं किया कि भारत में कौन बसते हैं, वे क्या विचार रखते है, उनकी क्या आकांक्षाएं और भावनाएं हैं? जो संस्था निष्पक्ष होकर जाति निर्माण का कार्य करना चाहती है, उसको बहुमत की अवहेलना नहीं प्रत्युत उसमें अन्य लोगों और विचारों का समन्वय करने की आवश्यकता है। कांग्रेस अपने इतिहास से इस बात को स्पष्ट कर चुकी है कि इसको हिन्दु विचारधारा की रक्षा, सुधार इत्यादि की इतनी चिन्ता नहीं, जितनी मुसलमान विचार धारा की रक्षा की है। सन् १८८५ से लेकर सन १९०७ तक तो कांग्रेस में ज्ञान ही नहीं था। इस पर भी मुसलमानों को अपने में लाने के लिए वह चिन्तित थी। १८८६ की एक घटना इस बात को भलि भांति प्रकट करती है। उस समय सर सैय्यदअहमद ने मुसलमानों को कांग्रेस में सम्मिलित होने से मना कर दिया था। सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने अपनी 'आपबीती' पुस्तक में लिखा है कि इससे कांग्रेस क्षेत्रों में बहुत चिन्ता हुई। इलाहाबाद में होने वाले कांग्रेस के अधिवेशन में मुसलमानों का सम्मिलित होना प्रकट करने के लिए वे अपने खर्चा

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आज धर्म का सच्चा स्वरूप समझने की आवश्यकता

श्री स्वामी आत्मानन्द जी

इस समय जब कि हम यहां खड़े हैं हमारे चारों ओर एक दृश्य देखने को मिल रहा है जो भारत के अनुरूप नहीं है। जिसे हमारी आंखें देखना नहीं चाहतीं। हम भारत को सम्मान के जिस उच्च स्थल पर पहुंचाना चाहते हैं वह आज देश के सामने प्रचलित कार्यक्रम पर चल कर प्राप्त करना कठिन है। हम आज भारतीय संस्कृति को उद्धार का दृष्टि ले कर कार्य करना चाहिये। हमारी सांस्कृतिक श्रेष्ठता कितनी है उसके लिए हमारा इतिहास उच्च स्वर में बोल बोल कर कह रहा है। उस महान सागर में से हम एक बिन्दु भी ले कर चलें तो विश्व का कल्याण हो सकता है। भारत के इतिहास में कभी ऐसा अवसर नहीं आया जब कि वह उत्थान के शिखर पर हो और उसने दूसरों का नष्ट करके अकेले ही जीने की इच्छा की हो। ऐसा उज्ज्वल है हमारा इतिहास और ऐसी संस्कृति के हम पुजारी हैं जिसने संसार को सभ्यता का पाठ पढ़ाया। आज के सभ्य कहलाने वाले देशों का तो जन्म भी नहीं हुआ था जब भारत के बालक आध्यात्म भावना के गीत गाते थे। वे भावनायें जो शारीरिक भावनाओं से बहुत ऊंची हैं। देश के छोटे छोटे बालकों ने जो बलिदान दिए वे हृदय में उल्लास की ज्योति जगाने वाले हैं।

चतुर्दिक संस्कृति के शत्रु

आज हम ऐसे स्थान पर खड़े हैं जहां खड़े हो कर हम चारों ओर देखना पड़ेगा। हम चारों ओर अपनी संस्कृति के शत्रुओं को खड़ा पाते हैं। उनके मन के विरोध को दूर कर उनको भारतीय संस्कृति का उपासक बनाना है। इसके लिए हम स्वयं सावधान हों। हम क्या हैं यह पहचान कर खड़े हों। मनुष्य प्रवाह में बह जाता है। बरसात की नदियों में बहते हुए जानवरों को पानी के थपेड़ों से बचाना कठिन ही होता है। आप एक विषम स्थल पर खड़े हैं। आपका ध्येय बहुत ऊंचा है। आप चारों ओर के वायुमण्डल को भारतीय संस्कृति के रंग में रंगना चाहते हैं यह सर्वोत्तम कार्यक्रम है। इसके लिए पहले अपनी ओर देखने की आवश्यकता है। अपनी शारीरिक, मानसिक, तथा आध्यात्मिक अवस्था क्या है।

मानसिक अवस्थायें

हम देखें क्या हमारी तीनों अवस्थायें भारतीय संस्कृति के अनुकूल हैं? क्या वे पवित्र हैं। हमारे शास्त्रों में ऐसे रहस्य हैं जिन में एक एक को सामने रख कर संसार के मनुष्य जीवन निर्माण कर सकते हैं। आज लोगों को धर्म से भय लगता है। कहते हैं धर्म भावना तो क्षुद्र भावना है—यह तो अफीम की गोली है यह भावना आपस में संग्राम कराती है। जिसने केवल ईसाइयों का इतिहास पढ़ा है और रोमन कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेन्ट का सतत चलने वाला संघर्ष ही पढ़ा है या जिसने मुस्लिम इतिहास ही पढ़ा है और उनके अत्याचारों को सुना है वे तो यही कहेंगे कि धर्म संग्राम कराता है आपस में वैर विरोध बढ़ाता है इसके अतिरिक्त उनकी बुद्धि सोच भी क्या सकती है। पर जिसे हम भारतीय संस्कृति कहते हैं उसके बिना कल्याण व शान्ति सम्भव नहीं। आज की संग्राम की ज्वालाएं इस पावन गंगा जल के स्पर्श मात्र से शान्त हो सकती हैं इसे यथार्थ हम नहीं पहचानते इसीलिए यह सोचते हैं कि धर्म बुरा संस्कृति बुरी है।

धर्म का सच्चा स्वरूप

मनु महाराज से किसी ने पूछा महाराज धर्म किसे कहते हैं। भारतीय धर्म का संकुचित अर्थ नहीं कर सकते मनु महाराज धर्म के दस लक्षण बताये उनमें सबसे पहला बताते हैं धृति जिसके तीन रूप हैं—सात्विक राजसिक और तामसिक। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सात्विक धृति का उपदेश देते हुए कहा कि सात्विक धृति वह अमोघ शक्ति है जिससे मनुष्य अपने शारीरिक तथा मानसिक बल को व आध्यात्मिक भावनाओं को ठीक मार्ग पर चला सकता है। अपने प्राणों को मुट्ठी में ले लेता है और जी चाहे जैसे चलाता है। यह संयम मन इन्द्रियों और प्राणों पर होना आवश्यक है। हमारी संस्कृति की शिक्षा तो पुरुष निर्माण करती है। माता पिता अपने बालक के गले में फूलों की माला डाल कर आचार्य के पास ले जा कर कहते हैं—हे पिता! आप इस बालक को गर्भ में धारण करें। माता के गर्भ से निकल बच्चा प्यार की माता हो जाती है उसके पश्चात आचार्य का बालक बन जाता है इसीलिए ज्ञान का निर्माण करने वाले गुरु पिता कहलाते थे। यह है हमारी संस्कृति की श्रेष्ठता। आज तो भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता तथा शिक्षा का पाठ पढ़ाने का काम मुस्लिम संस्कृति के पुजारियों के हाथ में है आज स्वाधीन भारत में भी यह अवस्था है क्या हमारा जीवन व परम्परा ऐसे हाथों में रह जाने से नष्ट हो सकते हैं जिन्हें ज्ञान भी नहीं प्रेम तो क्या होगा।

आज पाश्चात्य सभ्यता से विवश हैं कि हमारी भारतीय संस्कृति का धर्म बतलाया गया है। भारत के ब्रह्मचर्य योगी तपस्वी त्यागी तथा विद्वान होते थे। वे आज कल के समान वकील डाक्टर तहसीलदार म्युनिस्पल कमिश्नर नहीं हुआ करते थे। वे तो जितेन्द्रिय पुरुष निर्माण करते थे।

शासक भी त्यागी

भगवान् राम ने भी जब भरत के आग्रह करने पर घर लौटने से इन्कार कर दिया तो भरत को अपनी खड़ाऊं देते हुए उन्होंने कहा कि तुम अयोध्या जा कर राज्य करो, एक सच्चे भारतीय राजा की भांति पर स्त्री को माता के समान देखना दूसरे के धन पर कभी लोभ नहीं करना कुल की मर्यादा भंग नहीं करना नीच लोगों का संग न करना शत्रु के सामने शौर्य दिखाना विपत्ति में धैर्य रखना सम्पत्ति में स्वामी बनकर भी विनय प्रदर्शित करना यह शब्द भारतीय नरेश ही कह सकता है और कोई न कह सकेगा।

भौतिकवाद से अभिशप्त अमरीका

अमरिका आज भी छोटे छोटे देशों को लूट लूट कर खा जाने की ताक में बैठा है। इस प्रकार की श्रेष्ठता की शिक्षा देने वाली संस्कृति तथा निर्बलों की रक्षा करने वाली और दीनों को अन्न देने वाली संस्कृति क्या साम्प्रदायिक कही जा सकती है? क्या यह संग्राम कराती है? तो क्या आज वह पाश्चात्य सभ्यता जो निर्बलों का नाश करती है संसार का कल्याण कर सकती है। वह तो निर्बलों का नाश करती है भारतीय संस्कृति उस का उद्धार करती है। यह सभ्यता नहीं असुरता का रूप है। आज भी जन मन जन के प्राणों में कल्याण जीवन लक्ष्य केवल भारत के तरुण ही सोच सकते हैं यही संसार को अन्न धन देने वाले हाथों में शान्ति है। वही आत्मा से बलि भी तैयार हैं।

सत्य निग्रह शौर्य विद्या आदि सभी लक्षण मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए ही हैं। भारत की श्रेष्ठता का ज्ञान हम संसार के कोने कोने में पहुँचाने के लिए सिद्ध हुए हैं। यह कार्य तभी सम्पन्न होगा जब हम स्वयं पुरुष बनकर और अपनी शक्ति के अनुरूप जीवन बना कर संसार के सामने खड़े हों।

यह एक मात्र साधन है जो आज के इस संघर्ष पीड़ित संसार को शान्ति दे सकता है तथा विश्व का कल्याण कर सकता है।

मेरा तो अन्त में यही कहना है कि आप सब बन्धु इस कठिन मार्ग की बाधाओं की चिन्ता न करते हुए अपना पुरुषत्व प्रकट करें तो ही आपका ध्येय पूरा हुआ दिखाई देगा। भगवान् आपको सब प्रकार यश दे जिससे कि भारत पुनः जगद्गुरु का स्थान प्राप्त करे।

—•—

कांग्रेस में परस्पर विरोधी विच

श्री रविशंकर शुक्ल

महासमिति में नेहरू जी के कांग्रेस अध्यक्ष बनने के विरुद्ध मत दिया

टण्डन नेहरू में मतभेद

पं० नेहरू और राजर्षि टण्डन में कांग्रेस के अन्तर्गत ही विचारधारा के कुछ तीखे मतभेद हैं इन्हें कोई कितना भी छिपाये वे छिप नहीं सकते। पं० नेहरू और राजर्षि टण्डन ही नहीं देश की लगभग सभी राजनीतिक और सांस्कृतिक संस्थायें धर्मनिरपेक्ष राज्य को ही आदर्श राज्य मानती रही हैं। पर उस धर्मनिरपेक्ष राज्य के स्वरूप के प्रश्न पर यदि पं० नेहरू एक कोने पर हैं तो राजर्षि टण्डन दूसरे कोने पर हैं। जहां राजर्षि टण्डन धर्मनिरपेक्ष राज्य का अर्थ किसी भी जाति विशेष के धर्म और रीतिरिवाजों में राज्य को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है ऐसा मानते हैं और देश के सभी नागरिकों का समान अधिकार स्वीकार करते हैं वहां पं० नेहरू धर्मविशेष के लोगों को अल्पसंख्यक होने के कारण विशेष सुविधायें देने के समर्थक हैं।

विस्फोट व्यक्तिगत कारणों से

राजनीति का केन्द्र बंगलौर से दिल्ली आते ही कांग्रेस की अन्तर्गत राजनीति में जो विस्फोट हुआ है उसका तात्कालिक कारण वे मतभेद नहीं हैं। कांग्रेस के अन्तर्गत दोनों ही विचारधारा के लोग इस मतभेद को भली प्रकार समझ कर भी भविष्य पर दृष्टि रख कर एक दूसरे को निभा रहे थे और यदि स्पष्ट शब्दों में कहा जाय तो एक दूसरे को धोखा दे रहे थे। आज पं० नेहरू देश को सरकार के और कांग्रेस के सर्वेसर्वा हो जाने के बाद भी पं० नेहरू के अपने समर्थकों में केवल श्री टण्डनजी की ही विचारधारा के लोग नहीं सैकड़ों की संख्या में श्री हरप्रसाद मिश्र

भरे पड़े हैं। और कांग्रेस के प्रभाव में कही जाने वाली जनता में तो वे हजारों की संख्या में हैं। यह पं० नेहरू भी जानते हैं और उनके अनुयायी भी। पर जैसा कि मैंने अभी कहा है इस विस्फोट का तात्कालिक कारण ये मतभेद नहीं थे। पं० नेहरू ने आदर्श और सिद्धान्त की बातें कर यह प्रश्न व्यक्तिगत नहीं है इस बात की बार बार सफाई देने की कोशिश की है पर घटनाओं का चक्र इस बात का प्रमाण है कि इस विस्फोट का तात्कालिक कारण व्यक्तिगत और केवल व्यक्तिगत है

किदवई की चाल

गत कई कांग्रेस महासमिति में अपनी एक भी चाल सफल न होने के कारण श्री रफी अहमद किदवई ने कांग्रेस छोड़ने की घोषणा करते हुए श्री अजितप्रसाद जैन के साथ जो संयुक्त वक्तव्य दिया था उसमें कांग्रेस के अध्यक्ष राजर्षि टण्डन पर बहुत ही निम्न स्तर पर उतर कर आक्षेप किये गये थे।

इसके बाद जो कुछ हुआ और जिस प्रकार राजर्षि टण्डन के दृढ़ और कठोर रुख का चारों ओर से समर्थन हुआ उससे पं० नेहरू की स्थिति विषम हो गई और उन्हें अपनी इच्छा के विपरीत अप्रत्यक्ष रूप में रफी अहमद किदवई को मन्त्रिमण्डल छोड़ने के लिए कहना पड़ा। पर इस मामले में जो उन्हें मुंह की खानी पड़ी उसे उन्होंने इतना व्यक्तिगत समझा कि अपनी आगे की योजना उन्होंने शायद उसी दिन निश्चित कर

नई दिल्ली में महासमि

ली होगी जिस दिन उन्हें श्री किदवई का त्यागपत्र स्वीकार करना पड़ा।

टण्डन जी का साथ क्यों छोड़ा

स्वाधीनता प्राप्त हो जाने के पश्चात् अधिकांश कांग्रेसियों का नैतिक स्तर गिर चुका है इसे स्वयं कांग्रेसी नेता भी स्वीकार करते हैं। विचारधारा से टण्डन

श्री गंगाधर

जी के साथ होकर भी वे नेहरू को इस लिये साथ रखना चाहते थे कि उनका प्रमुख उद्देश्य निर्वाचन में चुनकर आना उसी के द्वारा सिद्ध हो सकता है।

उत्तर प्रदेश के प्रधान मन्त्री पं० गोविन्दवल्लभ पंत और श्री पुरुषोत्तमदास

(बायें) नेहरूजी महासमिति की बैठक में भाग लेने जा रहे हैं। उनके साथ श्रीमती वि

महासमिति की बैठक में श्री टण्डनजी डा० राय से विचार विमर्श कर रहे हैं।

टण्डन के पिछले सम्बन्धों को ध्यान में रखकर जब हम कांग्रेस महासमिति में श्री पंत जी द्वारा ही श्री टण्डन जी का त्यागपत्र स्वीकार किया जाय यह प्रस्ताव उपस्थित हुआ देखते हैं तो हमें प्राचीन नीतिवाक्य सहसा स्मरण हो आता है कि आत्मानं सततं रक्षेत् दारैरपि धनैरपि। अपने पद की दृष्टि से टण्डनजी का साथ छोड़कर पंतजी ने कूटनीतिज्ञता का परिचय दिया। उन्होंने सोचा होगा कि यदि वे आज टण्डनजी का साथ देते हैं तो उत्तरप्रदेश के प्रधान मन्त्रित्व पर बहुत दिनों से घात लगाये किदवई के भाग्य से छींका टूट पड़ेगा और वे कहीं के नहीं रहेंगे।

उनका यह तीर कितना ठीक निशाने पर बैठा है यह टण्डनजी के त्यागपत्र स्वीकार किये जाने पर श्री रफीअहमद किदवई ने पंत आदि को अवसरवादी कहकर जो अपनी निराशा व्यक्त की है, उससे स्पष्ट हो जाता है। जहां पंतजी जैसे महानुभाव की यह हालत है

करना चाहते थे क्या उसका आभास कहीं मिलता है विशेष रूप से यह देखने के लिये मैं सभा भवन के दरवाजे पर उत्सुकता के साथ खड़ा था।

अपनी आत्मा का वध

आने वाले सदस्यों की मुखाकृति की ओर मैं ध्यान से देखता रहा। पर उनके चेहरे पर उस भावी चैतन्य की आभा दिखाई देना तो दूर रहा, साधारण प्रसन्नता भी नहीं दिखाई दी। लगभग सभी के मुंह लटके हुये थे। वधस्थल की ओर जाने वाले अपराधियों की तरह लगभग सभी सिर झुकाये चले जा रहे थे। इस घटना को श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र ने कहा है—यह टंडनजी की राजनीतिक हत्या हुई है। मैं कहता हूं गलत है। यह महासमिति के सदस्यों द्वारा स्वयं अपनी आत्मा का वध है। टंडनजी तो भारत के इतिहास में अमर हो गये।

जब कांग्रेस के अध्यक्ष राजर्षि टंडन अधिवेशन स्थल पर पहुंचे, बाहर खड़े कुछ लोगों ने उनके स्वागत में जय के नारे लगाये। इतनी उत्तेजना पर्याप्त थी। दिल्ली कांग्रेस का टंडन विरोध छिपा नहीं है। फिर व्यवस्था के लिये नियुक्त उसके स्वयंसेवक कैसे सहन कर सकते थे कि उनके होते हुए टंडनजी की जय के नारे लगें। उन्होंने भी पं० नेहरू की जय, फिरकापरस्ती मुर्दाबाद के नारे गला फाड़ फाड़ कर लगाना शुरू किये। और उनका साथ दिया श्री विनायजी की प्रेरणा से विदर्भ से आये तथाकथित नेहरू मोर्चे के कुछ व्यक्तियों ने और ग्वालियर से लाये गये कुछ इने गिने लोगों ने।

जनता उदासीन

किन्तु दिल्ली की सर्वसाधारण जनता ने इस तथा कथित महान् घटना की ओर उपेक्षा से देखा है। यह इस बात का प्रमाण है कि कांग्रेस का जनता से आत्मीय सम्बन्ध टूट चुका है और वह उसमें होने वाली घटनाओं से अपना कोई वास्ता नहीं मानती।

आग बुझी नहीं

टंडन जी के अब तक के साथी श्री गोविन्दवल्लभ पंत ने टंडन जी का त्यागपत्र स्वीकार करने का प्रस्ताव रखा और श्री कामराज नादर ने उसका समर्थन किया। प्रस्ताव बहुमत से पास हुआ। दूसरा पं० नेहरू से कांग्रेस की अध्यक्षता स्वीकार करने की प्रार्थना करने वाला प्रस्ताव विधान राव ने उपस्थित किया और उसका समर्थन किया बम्बई के श्री एस० के० पाटील। बहुमत से स्वीकार हुआ। बहुत प्रयत्न के बाद भी ये दोनो प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार नहीं हो सके यह इस बात का प्रमाण है कि कांग्रेस में नेहरू विरोध की अग्नि आज प्रकट रूप में बुझी दिखाई देने पर भी शेष है।

अपराध की भावना

पं० नेहरू अपने भाषण में स्पष्ट यह नहीं बता सके कि पुरानी कांग्रेस कार्यसमिति में वास्तव में क्या दोष थे और नये संगठन में वे दोष किस प्रकार दूर होंगे। टंडन जी को हटा कर नेहरू जी का इस प्रकार से अध्यक्ष चुनने में कुछ न कुछ गलती हुई है यह अपराध की भावना महासमिति के सदस्यों में इतनी भर गयी थी कि पं० नेहरू के सारे भाषण में कहा जाता है कि न तो तालियां ही बजीं और न किसी प्रकार हर्ष ध्वनि ही हुई।

दूसरे दिन

पं० नेहरू के मन में यह विचार भी स्वाभाविक रूप से उठ रहा होगा कि कि महासमिति के सदस्यों ने आज जो उनका समर्थन किया है वह वास्तव में अपनी इच्छा से नहीं, अपितु किसी स्वार्थ के दबाव में पड़ कर किया है। इसीलिए उन्होंने उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष चुने जाने के निर्णय पर फिर से विचार करने का आग्रह करते हुए कहा कि मैं चाहता हूं कि न आप मुझे धक्का दें और न मैं आपको। आप एक बार फिर सोच लें। महासमिति के सदस्यों से उन्होंने कहा कि यदि वे उन्हें वास्तव में कांग्रेस का अध्यक्ष चाहते हैं, इस बात का सबूत दें। उन्होंने कहा—मैं हाथ उठा कर सबूत लेने के पक्ष में नहीं हूं। पं० नेहरू क्या सबूत चाहते थे, कहा नहीं जा सकता। कुछ लोगों का अनुमान है कि कांस्टीट्यूशन क्लब का वह हाल पं० नेहरू के जयघोष के नारों से गूंज उठे, यही उनकी इच्छा होगी, सदस्यों के तो समझ में ही नहीं आ रहा था कि वे पं० नेहरू को सन्तुष्ट करने के लिए अब और क्या करें? उनमें से एक ने साहस बटोर कर पूछा—आपही बताइये कि हम किस प्रकार सबूत दें। पं० नेहरू कुछ देर के लिए ठिठके। क्या, वे कहना कुछ चाहते थे, पर शायद संकोचवश कह न सके। फिर उन्होंने कहा अच्छा तो आप फिर 'जयहिंद' कहिये। मार मार कर सीधे किये किसी बच्चे को जब पिता या अध्यापक जोर से पाठ पढ़ने के लिए कहता है, उस समय उसकी जो रुआंसी आवाज निकलती है वही सदस्यों के उस "जयहिन्द" में सुनाई दी। नेहरू को भी इसका अनुभव हुआ। उन्होंने कहा—'What a poor response' फिर से उन्होंने 'जयहिंद' कहने के लिए कहा। सदस्यगण चिल्ला उठे 'जय हिन्द' हुटर बाकर चीत्कार करने वाले सर्कस के जीवों का करुण क्रंदन मुझे उसमें सुनाई दिया।

खुला अधिवेशन तमाशा

१७, १८, १९ अक्टूबर को कांग्रेस का खुला अधिवेशन करने का प्रस्ताव स्वीकार हुआ। लोगों के मन में स्वभावत यह संदेह उठा कि यदि खुला अधिवेशन करना ही था तो महासमिति की बैठक में इतना महत्वपूर्ण निर्णय क्यों लिया गया? अनेक पत्रकारों के मन में उठा यह संदेह निराधार नहीं है कि वह खुला अधिवेशन किन्हीं विशेष समस्याओं पर निर्णय करने के लिए नहीं, अपितु आगामी चुनाव की दृष्टि से जनता का कांग्रेस की ओर आकर्षित करने के लिए एक बहुत बड़ा तमाशा होगा।

मौलाना प्रसन्न

प्रस्ताव स्वीकार हो जाने के बाद मौलाना अबुल कलाम आजाद ने उठ कर टंडन नेहरू मतभेद की पृष्ठभूमि अपने दृष्टिकोण से समझनी चाही। उन्होंने कहा यदि टंडनजी के कांग्रेस अध्यक्ष बने रह कर समस्या सुलझ जाती तो बहुत अच्छा होता। पर जो कुछ हुआ है ठीक ही हुआ है। मौलाना के शब्दों से प्रतीत होता था कि इस परिवर्तन से वास्तव में उन्हें प्रसन्नता हुई है। एक सदस्य से नहीं रहा गया। उसने कहा चूंकि मौलाना द्वारा उस अप्रिय चर्चा का पुन सूत्रपात हो गया है अत अन्य सदस्यों को भी उस विषय पर बोलने का अवसर मिलना चाहिये। पर नेहरू इसकी अनुमति देकर सारे संसार के प्रतिनिधि पत्रकारों के सामने अपनी खुली-खुली आलोचना सुनना कैसे पसंद करते? उन्होंने बिना कोई कारण बताये सदस्य की वह मांग ठुकरा दी।

आगे व्यक्ति का राज

महासमिति का अधिवेशन समाप्त हुआ। पं० नेहरू कांग्रेस के सर्वेसर्वा बन गये। अब इसके बाद—? यह प्रश्न सभी के सामने मुंह बाये खड़ा है। कार्य समिति के नामों की घोषणा हो चुकी है। कार्यसमिति के जिन सदस्यों ने कुछ आशायें लेकर टंडनजी का साथ छोड़ा था उनमें से अधिकांश पं० नेहरू की कार्यसमिति में नहीं लिये गये हैं। 'गुनाह बेलज्जत'। श्री पुरुषोत्तमदास टंडन को छोड़कर शेष लगभग सभी पं० नेहरू की हां में हां मिलाने वाले हैं, देश की अथवा कांग्रेस की सभी भावनाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले नहीं। जो २ स्थान अभी रिक्त रखे गये हैं वे स्पष्टत नेहरू का समर्थन करने वाले श्री किदवई आदि के वापस लौटने की आशा में ही हैं।

यदि आगामी चुनाव में कांग्रेस विजयी हुई तो सारे देश में आज से भी अधिक कठोर रूप से एक पार्टी का और उसके द्वारा एक व्यक्ति का राज कायम होगा। उसे हम नाम चाहे कितना ही मधुर क्यों न दें उसके परिणाम बहुत ही भयंकर होंगे।

मध्यपूर्व लेखमाला—९

साइप्रस द्वीप पर ब्रिटेन की मोर्चाबन्दी

[श्री नीरस योगी]

मजदूर दल के नेता श्री चर्चिल

मध्य पूर्व के देश आज साम्राज्यवादी कूटनीति का शिकार हो रहे हैं। ब्रिटेन आज साम्यवाद की बढ़ती हुई शक्ति से खिन्न प्रतीत होता है। उसके पुराने साथियों द्वारा आज प्रत्यक्ष रूप से साम्यवाद का विरोध किया जा रहा है। मध्य पूर्व भी तेल राजनीति, स्वेज पर मिश्र में अधिकार की मांग, तृतीय महायुद्ध का खतरा व साम्यवाद का बढ़ता प्रभाव सम्मिलित रूप में ब्रिटेन के सिरदर्द का कारण बन गये हैं। श्री बेविन की फिलस्तीन सम्बन्धी नीति का उनके साथियों के अतिरिक्त उनके उग्रतम विरोधी श्री चर्चिल ने भी समर्थन किया था। परन्तु आज ब्रिटिश साम्राज्य पंगु नहीं बनना चाहता है। यदि मजदूर दल के नेता आन्तरिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिये मध्यपूर्व मे अपने स्वार्थों को छोड़ना भी चाहें तब भी वह वहां रहने के लिये विवश किये जा सकते हैं। 'मध्यपूर्व त्याग' की नीति का श्री चर्चिल ही कड़ा विरोध न करेंगे, विश्वास किया जाता है कि मजदूर दल भी इसका समर्थन करेगा। ब्रिटेन के आम चुनाव समीप हैं, अतएव श्री एटली इस खतरे से बचना ही चाहेंगे।

मध्यपूर्व में ब्रिटेन के सहायक

ब्रिटेन के मध्यपूर्व मे सहायक इने-गिने ही हैं। उसके कई प्रसिद्ध साथी राजनैतिक हत्याओं के शिकार हो चुके हैं। स्वर्गीय जनरल अली रजमारा व स्वर्गीय शाह अब्दुल्ला मध्यपूर्व के प्रमुख राजनीतिज्ञ थे। उनकी सहायता का प्रश्न आज अतीत का विषय बन गया है। जीवित राजनीतिज्ञों मे शाह इब्न सऊद ही अब ब्रिटेन के एकमात्र प्रभावशाली साथी हैं। इनके अतिरिक्त समस्त जनता पश्चिमी शासकों का विरोध करती है। आज ब्रिटेन की सत्ता को ईरान के अतिरिक्त मिश्र भी चुनौती दे रहा है। नील घाटी की एकता व स्वेज छोड़ने की मांग के कारण ब्रिटेन के राजनीतिज्ञ उलझन में पड़ गये हैं। यदि वह इन मांगों के समर्थन के रूप मे इस प्रदेश का परित्याग करना चाहें तब भी वह अपनी स्थिति सुदृढ़ करने का कोई साधन नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं। ब्रिटेन के भूतपूर्व मन्त्री श्री चर्चिल को आज अपने देश का भविष्य धुंधला प्रतीत हो रहा है। वह अपने सर्वस्व की बाजी लगा कर भी इन प्रदेशों पर अधिकार रखने के पक्ष में हैं। राजनैतिक स्थिति एकांगी नहीं होती है। एक प्रयत्न में असफल हो जाने पर भी कुशल राजनीतिज्ञ कभी हार नहीं मानते हैं। यही हाल आज ब्रिटिश सरकार का है। वह जानती है कि यदि किसी कारणवश उसे स्वेज के प्रदेश को छोड़ना पड़ा तब उसके साम्यवाद विरोधी प्रयत्नों में ढील आ सकती है। इसी भावना के वशीभूत हो कर वह साईप्रस के द्वीप में मोर्चाबन्दी कर रही है। इस द्वीप में ग्रीस-टर्की सीमा साम्यवाद के विरुद्ध बनाई जा सकती है। साथ ही इस द्वीप से ब्रिटेन स्वेज नहर की रक्षा भी कर सकता है। क्योंकि वह जानता है कि स्वेज नहर छोड़ने पर भी यह स्थान युद्धकाल में उसके लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

साईप्रस द्वीप की स्थिति

साईप्रस भूमध्य सागर के द्वीपों में अपना एक विशेष स्थान रखता है। यह द्वीप सीरिया से ६० मील, टर्की से ४० मील व स्वेज नहर के मुहाने पोर्ट सईद से २६० मील की दूरी पर स्थित है। पहाड़ों पर चढ़ कर आप किसी भी दिन जब कि आकाश निर्मल हो अनातोलिया की हिम सीमा को देख कर आनन्द उठा सकते हैं। द्वीप का क्षेत्रफल ३,५८४ वर्गमील है, इसमे ६२ प्रतिशत में कृषि की जाती है व २० प्रतिशत भूमि सुरक्षित वन है। देश को प्राकृतिक रूप में ३ भागों में बांटा जा सकता है। साईप्रस की जलवायु स्वास्थ्यप्रद है व अक्टूबर से मार्च तक प्रायः २१.१९ इंच वर्षा होती है।

ब्रिटिश प्रधान मन्त्री श्री एटली

देश को यूनान के साथ मिलाने के अनेकों प्रयत्न किये जा रहे हैं। देश का साम्यवादी दल इस दिशा में निरन्तर प्रगति कर रहा है। इस दल की सदस्य संख्या ३०००० है, जिस में से ६० प्रतिशत की भावना यूनान के प्रति अनुकूल है। इसके साथ ही साथ अन्य कुछ दल भी उसे सहयोग देते है। देश के यूनान के साथ सांस्कृतिक सम्बन्ध अवश्य रहे हैं। इसके अतिरिक्त साईप्रस-यूनान संगठन के लिए कोई स्पष्ट कारण प्रतीत नहीं होता है। साम्यवादी दल इस द्वीप का यूनान में इसलिए विलीनीकरण चाहता है कि उसे आशा है कि यूनान किसी दिन कामिन्फार्म के अन्तर्गत आ जायगा। इस प्रकार साईप्रस का महत्वपूर्ण द्वीप भी रूस की शक्ति का एक अंग बन जावेगा। द्वीप पर अनेकों बार मिश्र, ईरान, रोम और बैजान्टियम सत्ता ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया है। फ्रांस की संस्कृति का भी यहां काफी प्रसार हुआ है। १४८९ में यहां वेनिस की सेनाओं ने अधिकार कर लिया। १५७१ मे यह द्वीप ओटोमन साम्राज्य के अन्तर्गत आ गया। अन्त में ४ जून १८७८ को तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री डिजराइली ने साईप्रस को टर्की से इस आधार पर ले लिया कि ब्रिटेन एशियाटिक-टर्की की रक्षा रूस के आक्रमण के समय करेगा। यदि रूस ने कार इत्यादि को छोड़ना स्वीकार कर लिया, तब ब्रिटेन भी साईप्रस छोड़ देगा। तब से लेकर आज तक साईप्रस ब्रिटेन के अधिकार में है।

धार्मिक संगठन

द्वीप की ४५०, ११४ जनता का धर्म के आधार पर विभाजन न होकर जातीय रूप में संगठन है। देश के ईसाई यूनान की आधुनिक भाषा का अपभ्रंश प्रयोग करते हैं। मुस्लिम जन-संख्या

[शेष पृष्ठ २२ पर]

कांग्रेस में भारतीय संस्कृति को स्थान नहीं है

[पृष्ठ १० का शेष]

जाने के दो मिस्त्रियों को अपने कन्धे पहिनाकर डैलीगेट बनाकर ले गये थे।

मुस्लिम पोषक नीति

१९०७ के पश्चात् तो कांग्रेस मुसलमानों को प्रसन्न करने के अनेकों यत्न करने लगी थी। इन यत्नों का प्रथम परिणाम १९१६ में लखनऊ पैक्ट के रूप में प्रकट हुआ। इस पैक्ट द्वारा कांग्रेस ने न केवल हिन्दू हितों का बलिदान किया प्रत्युत देश हितों की भी हत्या की।

इसके पश्चात् खिलाफत आन्दोलन को स्वराज्य आन्दोलन का एक अंग बनाना और महात्मा गान्धी का खिलाफत के बिना राजनीतिक अवसरों को भी ठुकरा देना यह स्पष्ट प्रकट करता है कि कांग्रेस का ध्येय हिन्दुओं का विरोध करना उस समय भी बना हुआ था।

महात्मा जी का यह घोषित करना कि स्वराज्य प्राप्ति मुसलमानों के सहयोग के बिना नहीं होगी उसी मनोवृत्ति को प्रकट कर रही है जिसके लिये कांग्रेस की नींव रखी गई थी।

१९३० में कांग्रेस का मुसलमानों को कांग्रेस में सम्मिलित करने के लिए मैकडानल्ड सरकार की व्यवस्था मानना, १९३२ में महात्माजी का मुसलमानों को अलिखित चैक देना, १९३४ में साम्प्रदायिक योजना मौन रहकर मानना और फिर श्री राजगोपालाचार्य का और श्री भूला भाई देसाई का बिना हिन्दुओं से पूछे पाकिस्तान की योजना स्वीकार करना। १९४५ में हिन्दू मुसलमानों में समानता की स्थिति मानकर शिमला कान्फ्रेंस में जाना, और पश्चात् १९४७ में अपने सब वचनों और सिद्धान्तों की हत्या कर पाकिस्तान मानना ये सब बातें हैं कि हिन्दुओं के हित और देश के हित कांग्रेस के सम्मुख सदैव गौण रहे हैं। केवल मात्र एक बात इनकी समझ में आती रही है कि किस प्रकार देश की अल्पसंख्यक जातियों को सुदृढ़ व बहु संख्यक जाति के विरुद्ध खड़ा करना है।

यही विचारधारा है जिसका परिणाम टण्डनजी का कांग्रेस प्रधान पद से अलग हो जाना हुआ है। तनिक देखिए कि इस घटना में कौन कारण है। टण्डनजी के निकल जाने से कांग्रेस में पं० नेहरू ही सर्वे सर्वा हो गये हैं। श्री टण्डनजी हिन्दुओं का बुरा भला कहने वाले नहीं हैं। भारतीय संस्कृति को वे सच्ची वस्तु मानते हैं। उन्होंने ही स्वराज्य के पश्चात् मुसलमानों के लिये पृथक प्रतिनिधित्व स्थिर रखने का प्रस्ताव किया था। वे हिन्दी के विरोधी हैं। वे हिन्दू कोड बिल के प्रबल समर्थक हैं। उनका राजनीतिक गठबन्धन श्री अम्बेडकर और श्री किदवई हैं। हिन्दू महासभा और भारतीय जन संघ को साम्प्रदायिकों की संस्थाएं मानते हैं। अपने राजनीतिक विरोधियों को मटियामेट करने वाले हैं। काश्मीर की उलझन के वे जिम्मेवार हैं। हैदराबाद के अस्तित्व में उनका हाथ है। आज भी वे राज्यों की कांग्रेस कमेटियों को लिखने का साहस करते हैं कि मुसलमानों के लिए धारा सभाओं में विशेष स्थान हो। विदेशों में चरित्रहीन राजदूत भेजकर भारत के नाम को कलंकित करने की जिम्मेवारी उनकी है। भारत का अंग्रेज अमरिका का मित्र न रहकर कम्यूनिस्ट चीन का मित्र बना है तो केवल नेहरू जी की कृपा से। यदि आज अफ्रीका और लंका में भारतीयों की दुर्दशा हो रही है तो उसका उत्तरदायित्व श्री पं० नेहरूजी पर है। करोड़ों रुपयों के गबन जो जीपों की खरीद, मकान निर्माण के कारखाने, इरविन्रोड की दुकानों सतों की खाद इत्यादि के विषय में हुआ है उनको छुपाने का श्रेय भी श्री पं० को है। सम्पूर्ण स्थित भारत दूत की फजूल खर्चियों की सफाई भी पण्डितजी ने ही दी है।

इस प्रकार के पण्डितजी हैं, जो कांग्रेस के सर्वे सर्वा हो गये हैं। कांग्रेस ने उनको विधान के सब बन्धन तोड़कर अपना सिरमौर बनाया है। इस प्रकार कांग्रेस ने अपनी असलीयत का परिचय दिया है। इससे हमारा कहना है कि यह बात साफ हो गई है। महात्मा गान्धी 'रघुपति राघव राजाराम' की रट लगाते हुए उक्त पं० जवाहरलाल नेहरू को हिन्दुओं के गले में बांधते रहे थे। राम के भक्त साढ़े तीन सौ बीबियों के रखने वाले खलीफा का राज्य स्थापित करने में संलग्न रहे हैं। कांग्रेस एक निष्पक्ष स्टेट होते हुए हिन्दू कोड बिल जैसे दूषित कानून को बनाने का यत्न करती रही है। स्वतन्त्रता की पुजारी संस्था प्रेस बिल पास कराने में सिर तोड़ यत्न कर रही है।

अब भण्डा फूटा है केवल अन्धे ही अब कांग्रेस को देशीय संस्था मानेंगे। ६६ वर्ष तक कांग्रेस भोले भाले हिन्दुओं को धोखे में डालकर अपने पीछे लगाती रही है। आज वह अपने असली रूप में प्रकट हो गई है। अब तो टण्डन जी का भी भाँति पं० जवाहरलाल की अध्यक्षता में काम करना भी लोगों को धोखा नहीं दे सकेगा। इस घटना से केवल एक ही परिणाम निकलता है और वह यह है कि कांग्रेस के लोग देश की कांग्रेस से सीधा सम्बन्ध है। कांग्रेस की दृष्टि में हिन्दुओं का विरोध देश भक्ति है।

इस प्रकार की स्पष्ट परिस्थिति में राष्ट्रवादी लोगों का एक मात्र कर्तव्य कांग्रेस को राज्य से पदच्युत करना है। कांग्रेस जवाहरलाल है और जवाहरलाल हिन्दू धर्म, संस्कृति और मर्यादा को मिटा देने पर तुले हुए हैं।

—०—

नारी का प्रतिशोध—लेखक श्री हरिशरणदास 'शरण'; प्रकाशक—विद्या मन्दिर प्रकाशन सिराहा बहराम खाँ दरियागंज दिल्ली, मूल्य १)

प्रस्तुत उपन्यास एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना के आधार पर लिखा गया है, जिसमें लेखक ने अपनी सजीव कल्पना शक्ति से भी काफी काम लिया है। इस उपन्यास की सर्वाधिक विशेषता इसके नारी पात्रों के सफल चित्रण में है। अपने स्त्री पात्रों के माध्यम से लेखक ने भारतीय नारी तथा भारतीयता का समुचित मूल्यांकन किया है। उपन्यास के नवाब आदि विधर्मी पात्रों ने भी हृदय की सच्ची भावना के साथ शत्रु पक्ष के साथ उदारता का परिचय दिया है। ऐतिहासिक उपन्यासों के अभाव के इस युग में शरण जी का यह प्रयास वस्तुतः प्रशंसनीय है।

सर्वोदय यात्रा—श्री विनोबा भावे; प्रकाशक—भारत जैन महामण्डल वर्धा; मूल्य १)

आचार्य विनोबा भावे गान्धीवाद की सर्वोदय विचारधारा के प्रमुख प्रवर्तक माने जाते हैं। सर्वोदय के अंग प्रत्यंग का आपने बड़ी गम्भीरता के साथ अनुशीलन किया है और अपने विभिन्न ग्रन्थों में उसकी विशद व्याख्या कर मानव बुद्धि सुलभ व्यावहारिक मार्ग प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत पुस्तक में, तीसरे सर्वोदय सम्मेलन शिवरामपल्ली (हैदराबाद) में सम्मिलित होने के लिए जाते समय विभिन्न स्थानों पर दिये गये विनोबा जी के प्रवचनों का संग्रह है। परमात्मा, समाज तथा राष्ट्र सम्बन्धी प्रत्येक प्रश्न को आपने सर्वोदयवादी दृष्टिकोण से ही देखने का प्रयत्न किया है। सर्वोदय के सर्वव्यापी दृष्टिकोण को समझाने के लिये प्रस्तुत पुस्तक के लेखन का प्रयास उपयोगी है।

—सुरेश

हमारी अर्थनीति—लेखक: सन्तराम अग्रवाल, प्रधान रामराज्य परिषद्, अमृतसर, पृष्ठ ३८।

इस बात से कोई भी समझदार आदमी इन्कार नहीं कर सकता, स्वयं भारतीय शासन-प्रणाली का कोई सदस्य भी नहीं, कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे जीवन में, हमारे शासन में एक 'सर्वतोमुखी पतन' आ गया है। इसका कारण क्या है? और, क्या इसका कुछ उपाय भी है?

प्रस्तुत पुस्तिका के विचार-शील लेखक श्री सन्तराम अग्रवाल के अनुसार हमारी वर्तमान दुर्दशा का कारण है—हमारा अपनी भारतीय 'अर्थनीति' परम्परा से विमुख होना। भारतीय जीवन-दृष्टि, भारतीय अर्थबुद्धि तथा भारतीय अर्थनीति' की ऐतिहासिक तथा शास्त्रीय स.की प्रस्तुत करते हुए, 'उपसंहार' में लेखक महोदय वर्तमान अवस्थाओं के विवेचन एवं वर्तमान (सामाजिक) रोग के उपचार पर आते हैं।

'अर्थनीति' की परम्परा में 'अर्थ' का अभिप्राय भारतीय 'ऐहिक' जीवन वृत्ति से है (जैसे 'धर्म' का अभिप्राय परलोक वृत्ति से है) और 'नीति'-तन्त्र में प्राचीन परम्परा एवं वर्तमान की आवश्यकताओं के अनुसार उस परम्परा के अनुकूल परिवर्तन सहित प्रयोग—शास्त्रीय वैज्ञानिकता के, मन्त्र तथा यन्त्र दोनों अंग समाविष्ट हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक की खोज है कि हमारे समाज-सुधारक भी जिस 'धर्म संस्थापन' के लिये अवतरित होते रहे उसकी मुख्य उपयोगिता एवं उद्देश्य देश अथवा राष्ट्र की आर्थिक दशा को उन्नत कर देना ही था। 'अर्थ चक्र' में 'धर्म-चक्र' सदा से एक पुट बन

है।
से उद्
'राष्ट्र
का सामयिक
रूप में हृदय
'रामराज्य' क
कता से प्रतान्ना
को बधाई देत हु
'परिषद्' के सभ
नीति' का ही
विचारणीय सामग्री स

...स्य युद्धोन्माद:

तत्रस्था
स्ता प्रजी
र्थमायनतस्य-
जाले पतिता
न्य दृश्यन्ति।
याकतमलीका-
राष्ट्रचिन्हमुद्घोष्य
व महर्षयित्वा तत्रस्था
सनाह्वयति, उत्पादयति
युद्धाय जनतायाम्। सैनिक-
शिक्षा जननार्थं प्रदीयते, बाल-
लकस्य सैनिकशिक्षा प्रदीयते, शस्त्राणि
ह्मेभ्यो वितीर्यन्ते, नगरेषु रात्रावन्धकार
ि यते, वायुसेनाक्रमणरक्षणार्थम विदे-
शेभ्य शस्त्राणि च ीयन्ते। एतत्सर्वं
सूचयति यत् भारतपाकिस्तानयोर्यु द्ध-
सम्भावना प्रतिदिन वर्द्धमानाऽऽस्ते।

काश्मीरविषये पाकिस्तानयुद्धाभि-
सन्धिम तिरोहित कस्यापि जनस्य।
पाकिस्तानस्य प्रधानमन्त्री, विदेशमन्त्री,
अन्ये च तत्रत्या शासका नेतारश्चानेकश
सभासु भाषणेषु चेद् घोषितवन्तो यद्
काश्मीरोऽस्माकं अस्ति नो चेत् 'कश्मा
करिष्ये वयं विजयेन' इति नीतिमुररी-
कृत्य क्षणमपि न अर्हीष्याम। पर
भारतीयप्रधानमन्त्रिणा श्रीनेहरूमहोदयेन
स्पष्टं कथित यत् पाकिस्तानीयैः काश्मीरे
निर्हिताक्रमण भारते आक्रमण मन्यते,
यतो हि काश्मीरो भारतसंघनिर्वाचनाद्
भारतस्याङ्ग वर्तते। भारत च सर्वैः
सभाविवेचनायै काश्मीरस्य विधा-
स्यति। काश्मीरे युद्धविरामरेखाया पारे
ह्यहूरतराणां प्रमोत्पादनाय पाकिस्तानी-
यधिकारिभि स्वतन्त्रकाश्मीरनाम्ना एक
स्वतन्त्र राज्य स्थापितम्। तस्मिन्नेव
प्रदेशे पाकिस्तानाधिकारिभि यातायात-
मार्गाणां सेतूनां च निर्माण कृत पर्याप्त
धन व्ययीकृत्य। पर्याप्तमात्रायां तत्र सैन्य
स्थापितम्, शस्त्राणि चापि संगृहीतानि।
तेनेद स्फुट प्रतीयते 'काश्मीरे आक्रमण
कर्तुं आधुनिकयुद्धसाधनै सुसज्जित
विशाल सैन्य पाकिस्तानेन एकत्र कृतम्,
इति।

पश्चिमपाकिस्तानप्रदेशेऽपि युद्धा-
योजनमतिमात्रायां विधीयते। पश्चिम-
पञ्चनदप्रान्तस्य प्रमुखेषु नगरेषु जनतायै
वायुयानाक्रमणात् रक्षणविधे शिक्षा
दीयते, नगरेषु रात्र ६-९६१ बजे,
जनताया सम्मुखं उत्साहवर्धनार्थं सैन्य-
प्रदर्शन च क्रियते। पाकिस्तानस्य समा-
चारपत्राण्यपि भारतस्य विरुद्ध विषमु-
द्गमन्ति। सर्वत्र धर्मयुद्धस्योद्घोषः
क्रियते। भारतीयसीमासमीप च सैन्य-
सग्रह क्रियते।

यद्यपि इदानीं युद्धसम्भावना न
प्रतीयते तथापि "उत्तिष्ठमान शत्रुहि
नोपेक्ष्य पथ्यमिच्छता", इति नीतिव-
चनानुसार शत्रोरुपेक्षा न कार्या।

कार्टूनिस्ट

[पृष्ठ ९ का शेष]

भयंकर धड़धड़ हुआ, बिजली कौंध उठी, चमक से सारा संसार प्रकाशमान हो गया।

मंगली बाबू ने इने-गिने नोटों को अपनी धड़कती हुई छाती से चिपकाये, टूटी चाबियों का छाता खोल लिया। नंगे पैर अपने गाव की पगडंडी पर चल पड़ा—छप...छप...छप...!

× × ×

'भारत मां के बच्चों के सिर पर आदर्शों का एक बड़ा बोझा उन्हें अपने पूर्वजों की थाती के रूप में मिला है। वास्तव में वही सर्वाधिक सम्पत्ति जो अपने बड़ों से मिली है, एक अतुलित शक्ति है। ग्रामीण शिक्षक उस शक्ति के सदुपयोग करने के अवसर की प्रतीक्षा में हैं, लेकिन अवसर आ ही नहीं रहा है। शिक्षक राष्ट्र की सम्पत्ति है, शिक्षक जगत गुरु है, नेता है—वह सब कुछ है, लेकिन संसार की वास्तविक परिस्थिति उसको आज की सचाई की ओर बार-बार देखने को मजबूर कर रही है। ठोकरों पर ठोकरें, लानतों पर लानतें, चोटों पर चोटें—उनकी चपेटों के चक्कर में उनका सिर चकरा रहा है। लगने वाली एक-एक चोट कहती है—शिक्षक आज राष्ट्र का सबसे बड़ा भिक्षुक है, कंगाल है, दलित है, दरिद्र है! पर उसे 'नारायण' बनने का मौका ही नहीं मिल रहा है। वह उसकी प्रतीक्षा में है, लेकिन किसी चीज की प्रतीक्षा किसी को कुछ नहीं देती; वह प्रतीक्षा जो है!'

व्यासजी ने यह कहते-कहते अपनी पगड़ी मेज पर रखी। सभी लोग उनके प्रवचन को सुन रहे हैं। दो आगंतुक बाहर से तशरीफ लाये। 'नमस्ते' की। बोले—'खजान्ची साहब, हमें वेतन जल्दी चुका दीजिये। आजकल समय बहुत बुरा है, कल की ही बात है, मगनीराम लूट लिये गये, बेचारे के सिर में कुठार की सख्त चोटें आई हैं।'

'हैं, लूट लिये गये?' व्यासजी का चेहरा गम्भीर हो गया।

'हां, साहब! कञ्जरों के डेरे पास ही में तो हैं, अपराधी जाति ही ठहरी। न जाने वे कौन लोग थे? खजान्ची ने दराज खोली, वेतन बिल निकाले। सबके चेहरे गम्भीर तथा हृदय धड़क रहे थे। 'भाई मांगीरामजी! आपका वेतन 'ट्रेजरी' से स्वीकृत होकर नहीं आया है, जब आयगा तब सूचना भिजवा दी जायगी'—खजान्ची ने बिल देखते हुए कहा। 'और देखिये, ये नई ग्रेडों की लिस्ट है, आप लोगों को नई ग्रेडें मंजूर हैं या पुरानी?' 'हमें तो पुरानी ही चाहिये, साहब!'

'तो, पांच रुपये माहवार मंहगाई के कट जाया करेंगे, चलो लिखो यहां जल्दी' कागज का टुकड़ा देते हुए खजान्ची फिर बोले।

'हैं; साहब मैं तो इसके लिये सोचूंगा' मांगीलाल ने कहा। मेरी चढ़ी हुई तनख्वाह की दरख्वास्त शिक्षाधिकारी जी को भेज दी या नहीं। ये लो—'पांच' फिर कम हो रहे हैं, जैसे दुनियां से अब मंहगाई कम ही हो गई हो। एक चपरासी या पुलिस के सिपाही के बराबर वेतन हो गया—हम लोगों का। धन्य हो—वाह-वाह! "यह क्या कह रहे हो यहां पर! जानते हो यह आफिस है, मजाक नहीं!"—खजान्ची ने आंखें नचाकर मेज पर हाथ ठपकारते हुए कहा। 'हां, बाबू साहब नाराज न होइये"—व्यास बीच में बोल उठे। देखिये बड़े २ वेतन वालों के लिए बड़ी २ ग्रेडें, बड़ा २ मंहगाई भत्ता, बड़ी २ सुविधायें। हम गरीबों के लिये इतनी निम्न ग्रेडें। १०००) पाने वाले को १००) मंहगाई की भी और जरूरत होती है? और २५)वाले को १२) की हो? बड़ों को तो मकान 'फ्री', नौकर 'फ्री'—यह तो अन्धेर नहीं है बाबू साहब। दीखती आंखों अन्याय हो रहा है। बोलने वाला 'मुर्गा' पहिले हलाल कर दिया जाता है। दुनिया में यह रीति सदा से चली आ रही है।

"तो आप लोग अपने 'स्टाफ रूम' में जा बैठिये, वहीं बातें करिये। सोचिये, कोई सुनेगा तो क्या कहेगा'—खजान्ची ने दबी जबान से फिर कहा। 'साहब, तो मेरी दरख्वास्त भेज दी गई या नहीं? मेरा चढ़ा हुआ वेतन रुका हुआ है"—मांगीलाल बोल उठे।

'अभी नहीं, क्या 'आफिशियल सीक्रेट्स' आपको बता दिये जायें? आपको इससे क्या मतलब—गई नहीं तो—कल परसों तक भेज देंगे"—उत्तर मिला। 'अजी, साहब! उसे डेढ़ महीने के करीब होने आया है, आप नहीं जानते मेरे घर का क्या हाल है! आप उसे जल्दी ही कृपा कर भेज दीजिये'—विनीत भाव से मांगीलाल ने कहा।

महाशय जी, मैंने तो उस पर आदेश लिख-लिखा कर तैयार कर रक्खा है, एच. एम. के दस्तखत होते ही भेज दी जावेगी। अच्छा, व्यास जी! आपके इस माह के वेतन से दो दिन का वेतन क्यों नहीं काट दिया जावे—यह आदेश देखिये। आप इस महीने में तीन बार १०-१० मिनट की देरी से स्कूल तशरीफ लाये हैं' क्लर्क ने एच. एम. का आदेश-पत्र सामने रखते हुए कहा। व्यास के ललाट पर आवेग से तीन रेखायें पड़ गईं—'ठीक है!' कागज फेंकते हुए वे उठ खड़े हुए। 'लोग-बाग घंटों तक गायब रहते हैं, आये दिन सरकारी काम के बहाने इधर-उधर जाते हैं, सरकारी पैसा है कि मौज है। 'साहब' घंटों देर से घर से निकल कर आफिस में आते हैं। यह सब बदनसीबी हम जैसे लोगों को ही निगल रही है। हर समय सिर पर अनुशासन का डंडा तैयार है। कहते हैं—'समरथ को नहीं दोष गुसाईं' व्यास महोदय अपने चेहरे पर हाथ फेरते हुए बड़बड़ा उठे। इतने में सामने के आफिस मेज पर—टून टून घण्टी बजी। चपरासी अन्दर दौड़ा गया। एक क्षण पश्चात् 'आदेश-पत्रक' लेकर बाहिर निकल आया। खजान्ची बाबू को लाकर दिया। विनयकुमार और सर्वेश बोल उठे—'क्या है भाई? क्या सौगात लाये हो?' खजान्ची ने देख कर कहा 'आप सब लोग इस पर दस्तखत कीजिये। सतीश आदेश-पत्रक पढ़ने लगा—'मालूम हुआ है आजकल टीचर्स अपने रिक्त घण्टों में स्कूल से चले आया-जाया करते हैं अतः हिदायतन लिखा जा रहा है कि वे अब अपने खाली स्कूल समय में स्कूल-बाउन्डरी को छोड़कर कहीं नहीं जाया करें।'

सब लोग एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। विनय ने अपना 'पेन' निकाला और दस्तखत करना आरम्भ हो गया।

× × ×

डा० द्विवेदी लायब्रेरी रूम में विराजमान हैं। दो चार सहयोगी सज्जन और बैठे हुए हैं। 'रिसेज' चल रहा है। आपसी बातचीत में लोग मशगूल हैं। 'डाक्टर' ने खड़िया से एक ऊदबिलाव की शक्ल का जानवर बनाया। उस पर लिखा टीचर्स! एक मेथेमेटिशियन पास ही में बैठे हैं, बोले—'इस के सामने इस तरह का एक अजगर बनाइये। यह लो—'यह अजगर बन गया, कैसा मुंह फाड़ रहा है—देखो, कितने भयंकर दांत हैं—बेचारे इस टीचर को निगल जायगा।' डा० ने कहा—'यह [illegible] नहीं [illegible]

है !' इतने में हिन्दी साहित्य के प्राध्यापक मिश्र आ पहुँचे, बोले—अजी, अजगर के खुले हुए मुंह तक एक गोला बनाओ ताकि यह इस घेरे से कहीं बाहिर भग न सके और पीछे एक बजू सा सूरज बनाओ जो इस जानवर पर गिर रहा हो !'

'ओह, ह्वाट ए फाइन आइडिया इट इज—थंडर वास्ट !' अंग्रेजी के अध्यापक बोल उठे। 'बनाओ, बनाओ—थंडर वास्ट इस पर लिखो—'इमेजियट आफिसर'। पी ओ—यह लिखा'—'डाक्टर' ने खड़िया जोर से घिस डाली। बोला—'आखिर इस गोलार्ध में इस जानवर को कहीं बाहर भगने का रास्ता ही नहीं है। यह तो एक सुन्दर कार्टून बन गया, इसे 'शंकर्स वीकली' में भेज दो। दोस्त, शंकर क्या कमाल का कार्टूनिस्ट है ! कार्टून क्या होते हैं—जान फूंक देता है।'

'अजी, शंकर की भी ऐसी सूझ-बूझ नहीं हो सकती'—डाक्टर साहब बोले था 'आखिर हम किस शंकर से कम हैं, इस 'आइडिया' को हमें उसे जरूर भेज देना चाहिये। यदि मैं 'कार्टूनिस्ट' होता तो इसे किसी अखबार में जरूर छपवाता।'

'और उस समय अध्यापक तो जरूर नहीं होता'—व्यास बोल उठे। सब खिलखिला कर हंस पड़े। 'डाक्टर' बोला—हां, भाई ! नहीं तो सरकार मारे डंडे के इस खोपड़े का कचूमर निकाल देती।

'अजी, हम भी क्या कोई टीचर हैं, यहां सड़ रहे हैं और कुछ पैसों में ? इतना सा तो बाजारों में कुल्फी बेचने वाला किसी सिन्धी का छोंडा तक कमा लेता है—एमरजीपेड, एमरजी पेड—अंग्रेजी के अध्यापक ने कुछ गम्भीर वाणी में कहा।

......'और 'एमरजी एज्यूकेटेड' नहीं ?'—एक बार फिर हंसी के ठहाके से 'हाल' गूंज उठा। व्यास बोले—'हम लोगों में साहस की अत्यन्त कमी है, आज प्रधानाध्यापक अपनी सिफारिश के साथ हमारे 'आवेदन पत्र' परीक्षा में बैठने की इजाजत के लिये 'डायरेक्टर' साहब के पास भेजने वाले हैं न ? देखो, पढ़ने लिखने पर भी कितना प्रतिबन्ध है—जैसे सरकार हमारी परीक्षा-फीस के पैसे व किताबों के पैसे भी मुफ्त में हमें देती हो और शायद डिग्रियां दिलवा रही हो !' व्यास ने फिर अपने चेहरे पर हाथ फेरा।

इतने में फिर आफिस से टन टन की आवाज आई। सब लोग सहम गये। दो चार बार चपरासी आवभरी कम में आ पहुँचा बोला—'आप सबको हेडमास्टर साहब आफिस में बुला रहे हैं।' सब लोग उठ खड़े हुए और सहमते हुए आफिस में कुर्सियों पर बैठ गये। हेडमास्टर ने आवेदन पत्रों का पुलिन्दा दराज से निकालते हुए कहा—'अजी डाक्टर ! आज तो दिमाग काम करते २ बहुत थक गया है !'

......तो कुछ नाश्ते का प्रबन्ध किया जाय। 'डाक्टर, ने उठते हुए कहा उसकी आंखों में अनुनय विनय नाच उठी। 'सविनय' बोला— 'हां-हां कुछ तो होही जाना चाहिये।' 'तो दालसेव और चाय मंगवाली जावे ?' 'कहता हुआ डाक्टर खड़ा हुआ। 'अजी ऐसी क्या बात है, भाई ! पेट में कुछ देर तक टिके—ऐसा माल हो तो किया जाय, नहीं तो सब बेकार है — सजांघी बाबू आंखे नचाते हुए बोल पड़े। 'हां हां वह अभी हाजिर करता हूं।' डाक्टर उठकर बाहिर निकल पड़ा, उसके साथ विनय भी।

'देखिये सब लोगों की सिफारिश हम कर नहीं सकते, नियम की सख्ती तो आप लोग जानते ही हैं, इसमें मेरा क्या वश चल सकता है ? कानून कानून है— स्याही से लिखे जाते हैं पर उनका पालन तलवार से होता है'—हेडमास्टर ने अपना 'पेन' निकालते हुए कहा।

'नहीं साहब, आपकी सिफारिश ही सब कुछ है'—विधान बाबू बोले।

'महाशय ! फिर भी सभी को कैसे सिफारिश कर सकता हूँ ? फिर मैं जानता हूँ—कौन काबिल सिफारिश के है और कौन नहीं !'—उन्होंने अपनी कलम उठाई। एक एक आवेदन पत्र पर लिखना आरम्भ किया। इतने में 'डाक्टर' रसगुल्लों से भरे दोने व दाल-सेव के कागज के थैले ले आया। फिर क्या था—लोग-बागों ने हाथ साफ किया। इसके उपरान्त 'डाक्टर' ने सभी के हाथ धुलाये। फिर वह अन्दर आ कर हेडमास्टर की कुर्सी के पास बैठ गया।

'अच्छा, डाक्टर ! बोलो तुम्हारे लिये क्या लिखा जावे ?' हेडमास्टर ने अपनी कृत्रिम मुस्कान के साथ कहा।

'यही कि 'द्विवेदी' सुयोग्य अध्यापक हैं, इनको इजाजत मिलनी ही चाहिये'—'डाक्टर हंसते हुए बोले।

'तो और सुयोग्य नहीं ?'—हेडमास्टर फिर बोले।

नहीं-नहीं—पर मुझे तो मिलनी ही चाहिये'—'डाक्टर' ने अपनी मर्दंन हिलाते हुए कहा।

'अच्छा तो ये लो, बस ठीक है ? मैंने तुम्हारे लिए पहिले से ही लिख रखा है !— हेडमास्टर ने 'आवेदन-पत्र' उसके हाथ में थमा दिया। तो अब आप लोग तशरीफ ले जा सकते हैं, आज की डाकसे ये सब आवेदन पत्र भिजवा दिये जायेंगे।' हेडमास्टर उठ खड़ा हुआ, 'डाक्टर ने गद्गद् कंठ से हर्षोन्मत होते हुए कहा— 'साहब आप बहुत दयालु हैं, सहृदय हैं, महान हैं !'

सब लोग स्कूल के फाटक से निकलने लगे। 'द्विवेदी' मनोमुग्ध चल रहे हैं। एक महाशय ने पूछा— 'यार रस गुल्ले कितने पैसे के आए थे ?' 'यहां ढाई रुपये के।' डाक्टर सलज्ज बोल उठा, 'तुम्हारे लिये तो रसगुल्ले कारगर साबित हो गये भाई !' व्यास व्यंग बोले—

'अजी हम लोग 'शंकर, से क्या कम अच्छे कार्टूनिस्ट हैं ?' पीछे से एक आवाज उठी।

सब लोग जोर का ठहाका मार कर हंस पड़े। 'व्यंग' और घृणा से लोगों के चेहरे विकृत हो उठे।

—x—

दिल्ली साप्ताहिक वायदा बाजार

[ले० — श्री ब्रह्मानन्द मरतिया]

१९ सितम्बर बुधवार को समाप्त सप्ताह के दैनिक भाव निम्न हैं :—

चांदी टुकड़ा सेम्बर भादवा डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द	हैं येक घटबढ़
बृहस्पति	१८७॥≈)	१८८≈)	१८६॥।)	१८६॥≈)	१।≈)
शुक्र	बाजार बन्द रहा।				
शनि	१८६॥)	१८७॥)	१८६।-)	१८७।≈)	१≡)
सोम	१८७।≡)	१८८।)	१८७।≡)	१८८।)	॥-)
मंगल	१८८।≈)	१८८।।)	१८८≡)	१८९।≡)	॥-)
बुध	१८७॥।)	१८८।≈)	१८७॥)	१८८)	।॥≈)

गवार माघ डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द	हैं येक घटबढ़
बृहस्पति	११।≈)।	११॥≡)	११॥)	११॥≡)॥।	≈)॥।
शुक्र	बाजार बन्द रहा।				
शनि	१२≈)।	१२॥)≈	१२।-)॥	१२॥)	≈)।≈
सोम	१२॥-)	१२॥≡)॥	१२॥)	१२॥-)॥	≡)॥
मंगल	१२॥)।	१२॥-)॥	११॥≡)	१२॥)	≈)॥
बुध	१३।)॥	१३।≈)॥≈	१३≡)	१३।)॥।	≡)।

मटर मंगसिर डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द	हैं येक घटबढ़
बृहस्पति	१५॥-)	१५॥≡)	१५॥।)॥	१५॥≈)।≈	≈)॥
शुक्र	बाजार बन्द रहा।				
शनि	१६-)	१६।)	१६-)	१६।)	≡)
सोम	१६।≈)॥।	१६।≡)॥	१५।-)॥	१६।≈)॥।	≈)
मंगल	१६।-)	१६।≈)।	१६≈)॥	१६≡)॥	≡)॥
बुध	१६॥)।	१६॥≈)	१६।≈)	१६।≡)	।)

सलाह और विचार

चान्दी

इस समय चान्दी सोने का बाजार बोझल हुआ है। बम्बई में तैयार सोना वायदे से ॥-) तोला नीचा है।

पाण्डिचेरी से सोना चोरी से आने के कारण बम्बई में स्टाक बढ़ता जा रहा है। मक्सिको ने पाकिस्तान और जर्मनी को ६०,००,०० औंस चान्दी बेची है अतः सोने की तरह अब पाकिस्तान से चोरी से चान्दी के भी आने की संभावना बन गई है। बैंक कर्मचारियों की हड़ताल की भी बातचीत आधारहीनतया दीख पड़ी है। कोरिया में सन्धिचर्चा फिर चलने को है।

सलाह

बाजार पिछले सप्ताह के ऊंचे भाव को न पार कर सका और पिछले सप्ताह के नीचे भाव को तोड़ चुका है। इस सप्ताह का ऊंचा भाव १८८॥।) है। अतः इससे जब तक नीचे रहे नीचे का रुख अन्यथा ऊपर का रुख समझना चाहिये।

गवार और मटर

इस समय यद्यपि मटर की कोई विशेष मांग नहीं है परन्तु गवार की चारों ओर खरीद दीख पड़ती है। पंजाब की खुश्की ही इसका एक मात्र कारण है। रुख अभी तक अच्छा है।

खाद्यान्न स्थिति

इस विषय में निम्न बातें ध्यान देने योग्य हैं—

(१) पिछले दो मासों में विदेशीय अन्न के आयात में कमी हुई है।

(२) बम्बई में गेहूँ की राशन वितरण मात्रा में २५ प्रतिशत की कमी हो गई है और वहां पर राशन में दिया जाने वाला अनाज खाने योग्य नहीं है।

(३) बंगाल में चावल की भारी कमी हो गई है तथा बिहार में चावलों का भाव चढ़कर अब ४२) प्रतिमन का हो गया है।

(४) सरकार किसानों से जितना अन्न वसूल करना चाहती थी उसका लगभग दो तिहाई ही वसूल कर सकी है।

(५) उत्तर प्रदेश और पंजाब में खुश्की के कारण फसलों की हालत खराब है।

ऐसी स्थिति में पुनः आने वाली खाद्यसंकट की गम्भीरता स्पष्ट है।

सलाह

गवार माघ वायदा मंगलवार को प्राईवेट ऊंचे भाव १३।)॥ से ऊपर निकल कर नीचे आ गया है। अतः १२।≡) से जब तक नीचे रहे नीचे का रुख अन्यथा ऊपर का रुख समझना चाहिये।

★

साइप्रस द्वीप पर ब्रिटेन की मोर्चाबन्दी

[पृष्ठ १६ का शेष]

जिसका उद्गम स्थान टर्की है, टर्की भाषा का प्रयोग करती है। अमन करने वाले अथवा शिक्षित लोग ही अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं। देश की ७८.१ प्रतिशत जनता देहातों में अथवा छोटे कस्बों में रहती है। गत जन-गणना, जो कि प्राय: २३ वर्ष पहले हुई थी, तब से लेकर आज तक इस द्वीप की जन संख्या प्राय. ३२.१ प्रतिशत बढ़ गई है। यहां एक वर्गमील में १२५ मनुष्य निवास करते हैं। देश का अधिकांश भाग शिक्षित है। देश की शिक्षित जनता का यूनान के प्रति विशेष झुकाव है।

आर्थिक दशा

ओटोमन साम्राज्य के समय देश की जन संख्या निरन्तर घट रही थी। जनता अशिक्षित व कर्जे के बोझ से दबी हुई थी। साईप्रस एक कृषि प्रधान द्वीप है। अब भी यह अपनी आवश्यकता के लिये बाह्य सहायता पर निर्भर रहता है। देश की सुरक्षा के लिये ब्रिटेन प्रतिवर्ष कुछ धन अवश्य देता है। अभी हाल में उसे उन्नति के लिये १,७२०,००० पौंड प्राप्त हुए हैं।

कृषि देश की २।३ जनता कृषि करती है। कृषक की अपनी भूमि होती है। जिसकी सुरक्षा की गारन्टी, न्याय द्वारा होती है। कृषि का यन्त्रीकरण करने की योजना भी बनाई जा रही है। कृषि से दैनिक वेतन भी कुछ अधिक प्राप्त होता है। एक दस वर्षीय योजना के अन्तर्गत सरकार ने कृषि उन्नति के लिए २ लाख पौंड धन दिया है। बीज भी बाहर भेजे जाते हैं।

वन

द्वीप के वन प्राकृतिक साधन हैं। ६२२ वर्ग मील का क्षेत्र वनों का १० प्रतिशत भाग सरकारी है। सरकार को अकेले १९०६ से वनों की लकड़ी से ८६ हजार पौंड की आय हुई थी।

खनिज व वस्तुएं

द्वीप में तांबा काफी मात्रा में पाया जाता है। साईप्रस नाम भ्र ग्रेजों का दिया हुआ है क्योंकि यहां तांबा या काफी प्राप्त होता है। लोहा व कुछ अन्य खनिज पदार्थ भी मिलते हैं जिनका कि निर्यात किया जाता है। बनी हुई वस्तुओं के रूप में बटन, शराब, पनीर व बनावटी दांतों का निर्यात किया जाता है।

देश की धन की कमी को युद्ध लाभ से पूरा किया जाता है। विदेशियों को भ्रमण के लिये प्रोत्साहित किया जाता है इससे भी एक बड़ी आय होती है। १९४७ में सरकार की आय इस प्रकार थी।

चुंगी	२३.२ प्रतिशत
आयु कर	११.७ "
अन्य कर	७.३ "
नशीली वस्तु कर	८.१ "

देश की जनता का धन बैंकों में अधिक मात्रा में है। जनता की समृद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। देश में तीन बड़े बैंक इस कार्य को करते हैं। कई अन्य छोटे बैंक भी हैं। जनता का बैंक की धन राशि इस प्रकार है।

१९३७	२० लाख पौंड
१९४७	१०,२१६,०० पौंड

१० वर्षीय योजना व उन्नति

आर्थिक आंकड़े प्राय: ठीक रूप में प्राप्त नहीं होते हैं। द्वीप की समस्या ३ प्रकार की है, सुरक्षा, शिक्षा व कार्य। १९४६ में प्रकाशित योजना के अन्तर्गत धनराशि का एक बड़ा भाग सुरक्षा पर उससे कम शिक्षा पर व्यय होगा। कृषि पर व्यय किया जाने वाला धन नगण्य है। इसी कारण यहां साम्यवाद को आश्रय प्राप्त होता है। साईप्रस को ब्रिटिश साम्राज्य का कुञ्ज कहा जाता है। आज उसकी स्थिति स्पष्ट रूप से ऐसी ही है। देश मे नये नये हवाई अड्डे भी बनाये गये हैं जो कि सब मौसमों में काम करते हैं। ब्रिटेन आज साईप्रस के उथले पानी में बड़े जहाजों के लिये ठहरने का स्थान बनाने के लिए भी प्रयत्न शील है।

द्वीप का सामरिक महत्व

ब्रिजराइली के लिए यह द्वीप एक महत्वपूर्ण था। परन्तु प्रथम महायुद्ध में इसकी गणना तृतीय श्रेणी के स्थानों में रही। आज परिस्थिति बदल चुकी है। ब्रिटेन का साम्राज्य नित्य प्रति समाप्त हो रहा है। उसे स्वेज नहर छोड़ने के लिये विवश किया जा रहा है। यदि ब्रिटेन को स्वेज नहर छोड़नी पड़ी तब उसके व्यापार को गहरा धक्का लगेगा। इस कारण से ब्रिटेन यहां किलेबन्दी कर रहा है। राष्ट्रपति ट्रूमैन के यूनान-टर्की सहायता कार्य के अन्तर्गत भी साइप्रस को सहायता दी जायगी।

साइप्रस का प्रत्येक नागरिक यूनान का भक्त होता है। यह शिक्षा उसे माता पिता से प्राप्त होती है। राजनैतिक दल विशेषकर साम्यवादी दल द्वीप को यूनान में मिलाना चाहता है। ब्रिटेन अपनी कमजोरी से परिचित है। अतएव वह द्वीप के उत्थान के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है जिससे कि वहां साम्यवाद न पनप सके।

बालबन्धुओं से

प्रिय बन्धुओं,

इस बार स्थानाभाव के कारण हम आपका पृष्ठ देने में असमर्थ रहे; इसका हमें खेद है। आगामी अंक से आपका पृष्ठ विशेष सजधज के साथ प्रकाशित होगा। सम्पादक

चित्र लोक

बादल की रजत जयन्ती

वर्मा फिल्म कृत 'बादल' गत २५ सप्ताह में राजधानी में अति सफलता से चल रहा है। १९५१ में यह ही एक चित्र है जिसको रजत जयन्ती सप्ताह मनाने में सफलता हुई है 'बादल' जीवन की साहसिक घटनाओं से भरपूर कला व अभिनय की दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट चित्र सिद्ध हुआ है। चित्र के सफल प्रदर्शन में बेलवल फाइनेन्स आफ इन्डिया लि० देहली जो कि चित्र के वितरक हैं, का प्रयास प्रशंसनीय है।

तराना

कृष्णा मूविटोन का प्रेम व संगीत भरा चित्र 'तराना' इस सप्ताह राजधानी में मालकटी व रीगल में प्रदर्शित हुआ। प्रधान भूमिका में मधुबाला, दिलीप-कुमार श्यामा, जीवन, कुमार व गोप इत्यादि हैं। उत्तर भारत में अन्य कई प्रमुख स्थानों पर भी इसी तिथि को प्रदर्शित करने में अमृत टाकीज डिस्ट्रीब्यूटर्ज व्यस्त हैं।

सरकार

मोहन पिक्चर्स कृत 'सरकार' गत सप्ताह राजधानी में रिट्ज, कला व प्लाजा में प्रदर्शित किया गया। कला अभिनय की दृष्टि से चित्र अति सफल रहा है। प्रधान भूमिका में बीना अजीत शशिकला उल्हास कुक्कू इत्यादि हैं। उक्त चित्र के वितरक प्रकाश टाकीज डिस्ट्रीब्यूटर्स उत्तर भारत के प्रमुख स्थानों में इसे प्रदर्शित करने में व्यस्त हैं।

लक्ष्मी नारायण

'कृष्ण विवाह', सुरेखा हरण, रामभक्त, हनुमान व हनुमान पताल विजय के सफल निर्माता ने एक अद्वितीय पौराणिक चित्र 'लक्ष्मी नारायण' प्रस्तुत किया है जो कि संगीत तथा कथासार की दृष्टि म अति सफल है। होमी वादिया द्वारा निर्मित व नाना भाई भट्ट द्वारा निर्दिष्ट यह चित्र राजधानी के प्रमुख सिनेमाओं में आगामी सप्ताह प्रदर्शित किया जायेगा।

सौदामिनी

भारत के प्रमुख लेखक स्व० शरत बाबू के 'स्वामी' उपन्यास का चित्रण 'सौदामिनी' चलचित्र में करने का प्रयास प्रशंसनीय है। कला, अभिनय, संगीत की दृष्टि से यह चित्र अति सफल रहेगा ऐसी आशा है। कमल प्रकाश पिक्चर्स देहली द्वारा यह चित्र राजधानी व अन्य प्रमुख नगरों में शीघ्र ही प्रदर्शित किया जायेगा।

नखरे

पारो पिक्चर्स कृत 'नखरे' चित्र जिसकी प्रधान भूमिका में गीताबाली नसीरखान, जीवन, डेविड, बद्रीप्रसाद व पारो ने अभिनय किया है फिल्म भारती द्वारा राजधानी में शीघ्र प्रदर्शित किया जायेगा। सूर्यकुमार द्वारा निर्दिष्ट प्रणय व संगीत भरा यह चित्र उत्तर भारत के अन्य प्रमुख नगरों में अति सफलता से चल रहा है।

मुसलमान अब कांग्रेस मे खूब आयेंगे। —एक नेता

हा अब लीग का अलग आफिस खोलने का आवश्यकता भी नही है।

× × ×

हिन्दू कोड का विरोध बिना पढे लिखे लोग ही कर रहे । —नेहरूजी

कहना उनका भी ठीक है कि आप जैसे पढे लिखे लोगो में तो बिल का उपयोग होता हा है फिर हमें भी साथ क्यो खींचते है।

× × ×

मैं नहरू जी की बात मानने में अम्समर्थ था। —टंडनजी

एक दिन सुभाष बोस भी असमर्थ थे। दोनो ने ही खाट उलटवाली।

× × ×

हम लोग अब भी कांग्रेस में नही आयेंगे। —आचार्य कृपलानी

अब तो कांग्रेस ही आप मे आ गई है।

× × ×

कांग्रेस से भागे हुओं को लौटने पर उनके पद दिये जायें।

—कृष्णदत्त पालीवाल

आर जो पद विहीन थे उन्हे भी २-४ महीनों के लिए पद देकर पदधारी कर दिया जाय।

× × ×

हम ३० वर्षों तक नेहरू को कधो पर उठाये फिरे। —द्वारिकाप्रसाद मिश्र

काश, आप कधों पर न चढाकर पैरों चलना सिखा देते।

× × ×

मुसलमानों को भारत मे वोट मिलने की कम आशा है। —आजाद

कुछ वोटर पाकिस्तान से क्यो न बुलवा लिये जायें।

× × ×

हमे अल्प सख्यको को चुनावों मे अधिक खडा करना चाहिये —नेहरूजी

ताकि पाकिस्तान के मजे अल्पसख्यक नहीं लेलें।

× × ×

कौओं का आनन्द कमानतों तक ही रहता है।—एक कांग्रेसी एम एल ए

वैसे उन्हे अपने मित्र तो मानते हा न।

× × ×

दरभगा के ७०० गाव पानी में ७ लाख आदमी परेशान —एक शीर्षक

निश्चय ही वह भूखे-प्यासे लोग अब अपनी करों के पानी में आ चुके हैं।

× × ×

बिहार के चार-चार मन्त्री एक कमरे मे रहकर सदस्यो को मकान दे।

--अध्यक्ष असेम्बली

मन्त्री लोग शाम को भी असेम्बली में ही पखी लगा लिया करें तो क्या हर्ज है।

× × ×

वकिंग कमेटी के अधिवेशन मे राजा जी ने टण्डनजी का हाथ देखा --वे०टू०

और हाथ देखकर ही वह बताया होगा कि केतु तुम पर कब से सवार था।

× × ×

कांग्रेस को चुनावो के लिए धन की आवश्यकता है। --एक समाचार

मुफ्ता मुफ्ती मे अबकी बार वाट मिलते नजर नहीं आते।

× × ×

मेरी मुस्लिम पत्नी की सम्पत्ति निष्क्रान्त घोषित करदी गई।--पालीवाल

यह भी गनीमत समझिये कि पत्नी को निष्कान्त सम्पत्ति नहीं माना।

× × ×

नेशनल स्टोडियम दिल्ली के तालाब में कानून का विद्यार्थी डूबा --एकसमाचार

चलिए एक तो माई का लाल निकला जो नेशनल स्टीडियम के तालाब में कानून को भी ले डूबा।

× + ×

देहरादून के एक कांग्रेसी नेता दुकान दिलाई को १) सैंकडा कमीशन लेते हैं। --देहरादून समाचार

परमिट और लाइसेंसो का भाव भी लाजिए।

× × ×

अब मिलें राज्यो की आवश्यकता के अनुसार कपडा तैयार करगी।

--श्री मेहताब

कोमते तो मिलवालो की आवश्यकतानुसार ही कूपेंगी न।

× × ×

मैं रुष्ठ कांग्रेसियो को फिर कांग्रेस आने का निमन्त्रण देता हूँ। --नेहरूजी

अमा हसा मोती चुगते, तो मान सरोवर से जाते ही क्यो।

✶ × ☸

समाजवादी पार्टी दिल्ली म्यु० सीटों पर ४७ उम्मीदवार खडा करेगी।

--एकसमाचार

पार्टी म जो दो चार रह गये, उन्हें ही क्यों छोड़ा जाय। यह कहिए सारे मेंबर खडे होंगे।

× × ×

परमानन्द नेत्र सुधारक सघ के एक मुनीम एक युवती को भगाकर ले जाते पकडे गए हैं। एक शीर्षक

यह उससे अपने नेत्रों का सुधार करवाने ले जा रहे होंगे।

× × ×

सघ के स्वयमेवक देश भक्तो को मत देंगे। -एक समाचार

जेल की सनद का भी कोई कीमत मानी जावेगी या नहीं।

--चिरञ्जीलाल पाराशर

रजि० नं० ई० पी० ४६१

महान

मनोरंजक धार्मिक चित्रों का नया स्तर

विभिन्न और निराले विषयों पर अनूठा चित्र

"हनुमान पाताल विजय"

"राम भक्त हनुमान" — "सुरेखा हरण"

के निर्माता की अन्य अनुपम कृति

लक्ष्मी नारायण

★ मीनाकुमारी ★ ★ ★

महान उद्घाटन २० सितम्बर से

मोती, इम्पीरियल व देहली और नई देहली के दो अन्य सिनेमाओं में।

देहली, यू०पी० और पंजाब के वितरक — अपर इंडिया पिक्चर्स लि०, देहली व जालंधर।
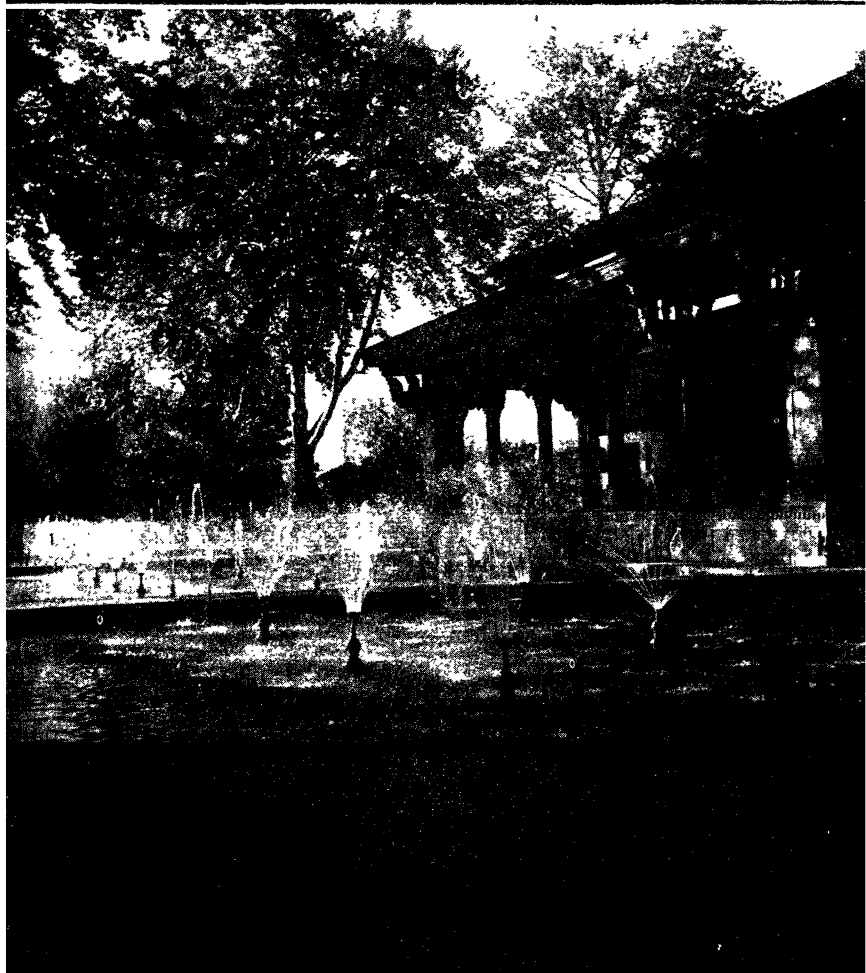
पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक [illegible] बाज़ार देहली में छपवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक—केशवदेव शर्मा

एक मरखनी भैंस के चित्र को लिखा त हुवे दिल्ली के एक साप्ताहिक म एक लेखक बताते हैं कि मेरे साहित्य का प्रतीक यह है।

लेखक महोदय को 'प्रतीक' तो सुन्दर मिला लेकिन वह घर मिला या बाहर।

× × ×

ज्ञात हुआ है कि टंडनजी, नेहरूजी और पंतजी ने कांग्रेस टिकिट के लिये प्रार्थना-पत्र नहीं दिये हैं।

यह भी पास वालों की लिस्ट में होंगे।

× × ×

श्री गुलजारीलाल नन्दा भारत सरकार के योजना मन्त्री बनाये गये हैं।

आवश्यकता तो योजना विसर्जन मन्त्री की थी जो अलमारियों को खाली कराये।

× × ×

भारत सरकार का कहना है कि आप का पुराना पद अवैतनिक कर दिया गया है।

अब यह काम नन्दा साहब का है उनकी नौकरी को जरा देखभाल कर करें कि कभी कुछ दिन बाद इस पद के पैसे भी मांग न कर दिये जायें।

× × ×

भारत संयुक्त राष्ट्रों के साथ है।
—विजय लक्ष्मी पंडित

अपने राम को तो इतने म ही सन्तोष है कि अकेला नहीं है।

★ × ×

भारत में स्त्री शिक्षा की जांच श्रीमती सहगल करेंगी।—एक समाचार

क्या घर-घर जाकर गालियों की परीक्षा लेंगी।

× × ×

नैरोबी के एक शादी जुलूस पर मधु मक्खियों ने हमला कर दिया —एक शीर्षक

शायद वह दुलहन को भी कोई मधु-मक्खी ही समझ बैठी होंगी।

× × ×

महाशय कृष्ण ने पंजाब भर में जहर भर दिया है। —श्री सच्चर

और उस जहर का असर हुआ है कांग्रेस पर कि तू मुझको पटक मार मैं तुझको पटकूं।

× × ×

हिन्दी भक्त महाशय उर्दू का अखबार क्यों निकालते हैं। —यही भावना

एक सौ रुबार फार्मूला हिन्दी का हिमायती नहीं था। और पाठक हैं अधिकतर कांग्रेसी जिन्हें हिन्दी से चिढ़ है।

× × ×

मद्रास के पास केवल दो मास का अन्न है। —प्रे० ट्र०

मासिक व्रतों के लाभों की लिस्ट श्रीमती मुंशी को शीघ्र मद्रास भेजनी चाहिये।

× × ×

सरकार अपने दोषों को ढकने के लिये प्रेस बिल बना रही है।
—आचार्य कृपलानी

यह बताइये कि मन्त्री लोग बिल में दोषों को साथ लेकर घुसेंगे या दोष तुम्हें देखने को बाहर छोड़ जायेंगे।

× × ×

देश के हित को ध्यान में रखते हुए रेल हड़ताल स्थगित करनी पड़ी।
—जयप्रकाश नारायण

लीडरी के हित के लिये भी यही अच्छा है।

× × ×

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपने स्तीफे की वापसी के लिये दर्खास्त दे दी है। —एक समाचार

यही लिखा होगा—
तौ कू और, न मौकू ठोर।

× × ×

श्री किदवई भी कांग्रेस में आने वाले हैं। —दूसरा समाचार

और ठिकाना भी कहां।

× × ×

चुनावों के बाद नेहरूजी अध्यक्षपद छोड़ देंगे —तीसरा समाचार

और यदि चुनावों ने कांग्रेस को छोड़ दिया तब।

× × ×

पं० मिश्र में बुद्धि की कमी है
—नेहरूजी

तो थी भी वह कांग्रेस के हवाले कर आये।

× × ×

नेहरूजी के एक वक्तव्य ने पाकिस्तान को हमला करने से रोक दिया।
—स्वामी जी

अनेक वाक्यों ने ही हमला करने का हौसला भी दिया था।

× × ×

राष्ट्रपति और नेहरूजी में भी कोड बिल पर मतभेद है —एक समाचार

तब तो कोड बिल से पहिले मत भेद विधेयक क्यों न पास करलें।

× × ×

राम और सीता का विवाह सुखद नहीं था। —डा० अम्बेडकर

शायद इसलिये कि किसी अस्पताल में नहीं हुआ था।

× × ×

बर्मा सरकार श्री मगलासेन को संघ का सदस्य होने के कारण निकाल रही है। —एक शीर्षक

संघ के सदस्यों को तो भारत बर्मा पाकिस्तान सब जगह से निकाल कर कहीं दूर दूर बसाया जाय, जहां आदमियों के सिर न जोड़ सकें।
—चिरंजीलाल पाराशर

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार १७ आश्विन सम्वत् २००८ [अङ्क २३

विचार-प्रकाशन की स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और जब तक हमारे संविधान में इसकी गारन्टी नहीं कर दी जायगी, हम तब तक चैन नहीं लेंगे।

हिन्दू-कोड बिल की अन्त्येष्टि

हिन्दू-कोड बिल की अन्त्येष्टि क्रिया हो गई। इस समाचार से हिन्दू-कोड बिल के जड़-मूल से विरोधी को तो प्रसन्नता होगी ही, जो लोग हृदय से इसके पक्षपाती थे, उनको भी प्रसन्नता होगी। कारण यह है कि हृदय से हिन्दू समाज के कानूनों में सुधार चाहने वाले लोगों को भी यह पसन्द नहीं था कि प्र० म० नेहरूजी और विधिमन्त्री डा० अम्बेडकर जिस धक्केबाजी से इस बिल को संसद् में ठेलठाल कर कानून का रूप देना चाहते थे, उस प्रकार भारत की कानून पुस्तकों को कलंकित किया जाय।

प्रधानमंत्री की यह धक्केबाजी यदि संसद् में चल जाती तो इसका स्वाभाविक परिणाम यह होता कि आगामी संसद् को नेहरूजी की और वर्तमान संसद् की भूलें सुधारने के लिए श्रम, समय और धन का असाधारण व्यय करना पड़ता। धक्केबाजी और जल्दबाजी में पास किया हुआ कानून हिन्दु समाज सरीखे व्यापक और विविध तथा प्राचीन रीति-रिवाजों का पालन करने वाले समाज के लिए किसी भी प्रकार व्यवहार्य नहीं हो सकता था। यही कारण है कि बख्शी टेकचंद और पं० ठाकुरदास भार्गव सरीखे सच्चे समाज सुधारकों को भी प्रधानमंत्री की धक्केबाजी का विरोध करना पड़ रहा था।

हमारा विश्वास है कि यदि प्रधानमन्त्री अपना हठ और दुराग्रह छोड़ कर इस बिल पर विचारवान समाजसुधारकों को शान्ति और धैर्य के साथ विचार करने का अवसर देते तो इस बिल के बहुत से कट्टर विरोधी भी निश्चय ही केवल विरोधी भावना छोड़ कर इस बिल को सुधारने और संवारने के विचार में सम्मिलित हो जाते। परन्तु प्रधानमन्त्रो के दुराग्रह के कारण यह शुभ परिणाम तो हुआ नहीं और समाज के विविध भागों मे परस्पर एक ऐसी गांठ पड़ गई जिसके सुलझने में बहुत अधिक समय लगने की सम्भावना है। स्वयं प्रधानमन्त्री को भी उनके इस कार्य से कोई यश नहीं मिला। प्रत्युत उनके यश और लोकप्रियता में एक धब्बा बड़ा लग गया। लोगों को उनके चरित्र की इस निर्बलता का ज्ञान हो गया कि जिद् पकड़ लेने पर विचारवान पुरुषों की विचारशक्ति का और जनमत का तनिक भी आदर नहीं करते और अपनी बुद्धि के सामने किसी की बुद्धि को कुछ नहीं समझते। उनकी इस निर्बलता का जनता को ज्ञान हो जाना इस देश में जनतन्त्र के भविष्य की दृष्टि से तो अच्छा ही है परन्तु इस देश की बहुसंख्यक अनजान जनता की दृष्टि से अच्छा नहीं है। अनजान जनता को सन्मार्ग पर ले जाने के लिए कभी कभी ऐसे प्रभावशाली नेताओं की आवश्यकता हुआ करती है जो अपने प्रभाव और अधिकार से कार्य की सिद्धि कर सकें। इस देश में जनतन्त्र का परीक्षण सर्वथा नया होने के कारण अभी कुछ काल तक इस प्रकार के नेताओं की आवश्यकता रहने की सम्भावना है। नेहरू जी को हमारे देश में अब तक यह सम्मान प्राप्त था, परन्तु पिछले दिनों उन्होंने अपने कई दुराग्रहपूर्ण कार्यों के द्वारा इस सम्मान को खो दिया, यह नेहरू जी के लिए तो बुरा हुआ ही देश के लिए भी कुछ अच्छा नहीं हुआ फिर भी हमें इस बात की प्रसन्नता है कि उनका यह दुराग्रह हिन्दू कोड बिल सरीखे बहुसंख्यक जनों की बुराई भलाई से सम्बद्ध कार्य के विषय में नहीं चल सका। हमें आश्चर्य इसी बात का है कि यह प्रत्यक्ष दीख जाने पर भी कि इस बिल के विरोधियों की संख्या उपेक्षणीय नहीं है और इतना बड़ा बिल संसद् में इतने स्वल्प काल में पास नहीं हो सकेगा वह तब तक अपने हठ पर अड़े ही रहे जब तक कि घटनाचक्र ने उन्हें धक्का मार कर और उनकी आंखों में अंगुली गड़ा कर उन्हें यह नहीं बतला दिया कि तुम किस दिशा में जा रहे हो उसमें सिवाय पहाड़ से टकरा जाने के तुम्हें और कुछ नहीं मिलेगा। अन्त में नेहरू जी को समझ आ गई, इसी पर संतोष करना चाहिये।

★

कांग्रेस का भविष्य

कांग्रेस में लगभग चौथाई शताब्दी तक पूर्ण दत्तचित्तता तथा लगन से काम करने वाले देश के जाने परखे कुछ व्यक्तियों के उक्त संस्था से त्यागपत्र देने के पश्चात् कांग्रेस संगठन तथा उसके सर्वेसर्वा नेता जनता के लिये जिज्ञासा तथा कौतूहल का विषय बन गये हैं। जनसाधारण के हृदय में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि क्या कांग्रेस का तथा उसके कर्णधारों का कार्य आज दलबन्दी तथा क्षुद्र व्यक्तिगत स्वार्थों तक ही सीमित रह गया है? क्या कांग्रेसजनों का कांग्रेस से त्यागपत्र देकर अन्य संस्थाओं में सम्मिलित होकर उन व्यक्तियों से गठबन्धन कर लेना, जिनके वे जीवन-पर्यन्त प्रबल विरोधी रहे हैं तथा बाद में किसी आकर्षण तथा प्रलोभन के वशीभूत होकर पुनः संस्था में सम्मिलित होने का विचार करना लज्जाजनक नहीं है। पहिले चाहे कभी इस प्रकार के कार्य जनता के लिये नितान्त अस्पष्ट तथा आश्चर्यजनक रहे हों। किन्तु आज जनता से यह नग्न सत्य छिपा नहीं है कि आज की राजनीति तथा देशभक्ति व्यक्तिगत स्वार्थों तक ही सीमित रह गई है। दूसरे जनता का सीधा सम्बन्ध प्रख्यात नेता नामधारी व्यक्तियों से न आकर उन छोटे २ स्थानीय कांग्रेस जनों के साथ आता है, जो बहु संख्या में आज कांग्रेस से अलग आकर खड़े हो गये हैं। जनता की दृष्टि में किसी भी संस्था का वास्तविक मापदण्ड उस संस्था के उन व्यक्तियों से है, जिनसे उसका नित्यप्रति काम पड़ता है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि आज जनता कांग्रेस के छोटे बड़े योग्य अयोग्य सभी नेताओं अथवा साधारण कांग्रेस जनों से परिचित हो गई है।

घटना चक्र की गतिविधि को देखने पर स्वयं कांग्रेस के कर्णधारों को ही संस्था का भविष्य अन्धकारमय दीखता है, इसमें अवलेश मात्र भी सन्देह नहीं रह गया है। क्योंकि आज जनता पहिले से कहीं अधिक सचेत है और भुलावे में नहीं आ सकती।

× ×

वैधानिक बेड़ियां

जम्मू की प्रजा परिषद ने शेख अब्दुल्ला की नेशनल कांफ्रेंस द्वारा चुनावों के सम्बन्ध में मनमानी करने के विरुद्ध राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री से अपील की है। किन्तु भारत सरकार ने अपने आपको स्वयं ही ऐसी वैधानिक बेड़ियों में जकड़ लिया है, जिनसे मुक्त होना आज असम्भव-सा प्रतीत होने लगा है। हमने विधान में काश्मीर को एक प्रथक इकाई के रूप में स्वीकार किया है और इसी आधार पर वहां संविधान परिषद का प्रथक निर्माण किया जा रहा है। राजनैतिक दूरदर्शिता का दृष्टिकोण तो यही था कि काश्मीर भी अन्य राज्य संघों की भांति भारत की ही एक अंग माना जाता तथा भारत का विधान ही काश्मीर पर भी लागू होता। किन्तु अबकी परम्परागत अदूरदर्शिता पूर्ण नीति के कारण भारत सरकार ने अपने आपको जिस प्रकार जकड़ा है उससे मुक्त होकर न्यायपूर्ण पक्षपात रहित दृष्टिकोण से प्रजापरिषद के साथ न्याय करना असम्भव प्रायः हो जाता है।

———

नेहरू पक्षपात और प्रजापार्टी

बिहार के विद्रोही कांग्रेसी नेता श्री महामाया प्रसाद सिंह के इस विचार से हम पूर्णतया सहमत हैं कि जो लोग नेहरू-पक्षपात के कारण किसान-मजदूर-प्रजापार्टी को छोड़कर पुनः कांग्रेस में सम्मिलित हो रहे हैं उनके हट जाने से यह पार्टी निर्बल नहीं होगी। उन लोगों के इस कार्य से उनके किसी स्वार्थ की सिद्धि भले ही हो जाए, जनता में उनका आदर नहीं बढ़ेगा और स्वभावतः वे जिस पार्टी में जाएंगे उस पार्टी की भी प्रभाव वृद्धि में वे सहायक नहीं होंगे। उनके निकल जाने से किसान-मजदूर प्रजापार्टी का संख्या-बल भले ही घट जाए परन्तु जनता में उसका सम्मान बढ़ जाएगा, क्योंकि अब उस पार्टी में केवल ऐसे व्यक्ति रह जाएंगे जो कि अपने विश्वासों और सिद्धान्तों के कारण कांग्रेस से पृथक् हुए हैं। जिस प्रकार राजर्षि टण्डन ने कांग्रेस अध्यक्ष पद छोड़कर भी जनता में अपना सम्मान और प्रभाव बढ़ा लिया है उसी प्रकार इस पार्टी में भी केवल सिद्धान्त-प्रिय व्यक्तियों के रह जाने पर इस पार्टी का आदर और प्रभाव जनता में बढ़ जाएगा।

× × ×

अन्तर्राष्ट्रीय रङ्गमञ्च

तेल क्षेत्र के ब्रिटिश कर्मचारी ईरान छोड़ेंगे

अफ्रीका में बर्बरता का पुनर्जन्म

मिश्र में मन्त्रिमण्डलीय संकट

जनरल रिजवे

आखिर मेरा प्रयत्न सफल हुआ न ?

रूस और मिश्र में व्यापार समझौता

मिश्र रूस के साथ व्यापार समझौते का प्रयत्न कर रहा है।

विदेशमन्त्री मोहम्मद सलाहउद्दीन पाशा पूर्तिमन्त्री अहमद हमजा पाशा के एतद्विषयक प्रस्ताव से सिद्धान्ततः सहमत हो गए हैं।

मिश्र को रुई के बदले में रूसी अनाज पैट्रोल इमारती लकड़ी खाद तथा अन्य रासायनिक द्रव्य मिलेंगे।

ईरान का तेल

दक्षिणी तेल क्षेत्रों के सभी ईरानी सैनिकों को तैयार रहने की आज्ञा दे दी गई है। परन्तु ईरानी सरकारी क्षेत्रों में यह विश्वास किया जा रहा है कि अबादान में बचे हुए ३०० ब्रिटिशों को निकालने में रुकावट डालने के लिए ब्रिटेन किसी प्रकार की आक्रमक कार्यवाही नहीं करेगा।

ब्रिटिश राजदूत सर फ्रान्सिस शेफर्ड ने आज ईरान के विदेश मंत्री बागेर कानमी के पास कल निष्कासन आज्ञा का कड़ा विरोध किया।

विश्वास किया जाता है कि वे राजदूत शाह से मिलने का भी प्रयत्न करेंगे और उन्हें लन्दन के दृष्टिकोण से अवगत करायेंगे।

डा० मुसद्दिक ने ३०० ब्रिटिश कर्मचारियों को नाक अबादान के बन्द तेल शोधक कारखाने में एकत्रित हैं ३ अक्टूबर की रात तक देश छोड़ने की आज्ञा दे दी है।

युद्धविराम वार्ता करने का प्रस्ताव पूर्ण

संयुक्तराष्ट्र संघ और कम्युनिस्टों के सम्पर्क अधिकारी कायसोंग में मिले हैं। टोकियो में प्रेक्षकों का विश्वास है कि सम्पर्क वार्ता गतिरोध को समाप्त करने में जनरल रिजवे द्वारा किया गया व्यक्तिगत प्रयत्न सफल हुआ है।

जनरल रिजवे ने कम्युनिस्ट सम्पर्क अधिकारी को देने के लिए सम्पर्क अधिकारी को एक सम्वाद लिखाया जो कि सायंकाल के समय दे दिया गया।

आज प्रातः कम्युनिस्टों की ओर से पानमुनजोंग पर संयुक्तराष्ट्र संघ के अधिकारी को एक सम्वाद दिया गया।

सम्पर्क अधिकारियों में आज ८० मिनट तक बातचीत हुई। पैकिंग रेडियो ने कम्युनिस्टों के अनुसार बताते हुए कहा कि कर्नल चाग का यह प्रस्ताव है कि सम्पर्क अधिकारियों द्वारा बातचीत समाप्त करदी जाय क्योंकि वह निरर्थक है जब तक कि संयुक्तराष्ट्र संघ का अधिकारी कम्यूनिस्टों के इस प्रस्ताव का उत्तर देने में असमर्थ है कि कायसोंग में पूर्ण रूप से युद्ध विराम वार्ता आरम्भ की जाय।

मिश्र में मन्त्रिमण्डलीय सकट

मिश्र के प्रधानमन्त्री नहस पाशा द्वारा अपने वफदी मन्त्रिमण्डल में एक छोटा सा परिवर्तन करने के कारण मन्त्रिमण्डलीय सकट उत्पन्न हो गया है।

पश्चिमी जर्मनी की स्वतन्त्रता का प्रश्न

डा० कोनराड एडेन्यूर ने ब्रिटेन, फ्रांस और अमरीका के हाई कमिश्नरों से पश्चिमी जर्मनी को स्वतन्त्रता प्रदान करने से सम्बन्धित समझौते पर वार्ता आरम्भ की। श्री एडेन्यर पश्चिमी जर्मनी के चान्सलर हैं।

उक्त तीनों देशों के हाई कमिश्नरों और पश्चिमी जर्मनी के चान्सलर के बीच प्रथम बातचीत फ्रांस के हाई कमिश्नर के निवास स्थान पर हुई। इस बातचीत के कई मास तक चलने की सम्भावना है।

ईरान की तेल समस्या

अन्तरराष्ट्रीय जगत में ईरान की स्थिति उसके तेल के कारण ऐसी ही थी जैसे शरीर में हृदय की होती है। द्वितीय विश्व महायुद्ध तक और बाद में भी ईरान का तेल मित्रराष्ट्रों के लिए अनिवार्य वस्तु थी। किन्तु अब अन्यत्र भी तेल उपलब्धि से एवं ईरान के बने रहने से इस अनिवार्यता का जोर कम हो गया है, यद्यपि पश्चिम के लिए ईरानी तेल अब भी महत्वपूर्ण है।

डा० मुसद्दिक का नया प्रस्ताव

ब्रिटेन द्वारा डाक्टर मुसद्दिक के वार्ता प्रारम्भ करने के नवीनतम प्रस्ताव को भी ठुकरा दिये जाने के कारण स्थिति बड़ी विषम हो गई है। ईरानी जनता जहां डा० मुसद्दिक को अपना रक्षक समझ रही थी वहां अब वह सन्देह में पड़ गई है। मजलिस में डा० मुसद्दिक का विरोध क्रमशः बढ़ रहा है। अबादान के २२ हजार ईरानी कर्मचारियों को सेवा से पृथक करने की आंग्ल ईरानी कम्पनी की घोषणा से ईरान की माध्यमिक जनता को विशेष घबराहट फैल गयी है। कम से कम लगभग ७०-८० हजार ईरानी प्रजा की रोटी छिन जायगी। ईरान सरकार द्वारा उन्हें वेतन न दे सकने के कारण इन २२ हजार कर्मचारियों द्वारा भी डा० मुसद्दिक का विरोध करना स्वाभाविक ही होगा।

यद्यपि ईरान ने सब ओर से हार कर अब रूस से भी व्यापारिक वार्ता तेल के सम्बन्ध में प्रारम्भ की है तथापि रूस ईरान की कुछ सहायता कर सकेगा इसमें सन्देह है। ईरान द्वारा रूस का पल्ला पकड़ना जहां उसके लिये कड़ाई से निकल कर चूल्हे में गिरने के समान होगा वहां सरकार के इस कार्य को कम्युनिस्टों एवं कम्युनिस्ट विरोधी दलों में खुला संघर्ष प्रारम्भ हो जाने की सम्भावना है तथा ईरानी तेल समस्या का आधार स्टर्लिंग से हटकर डालर और रुबल हो जाय।

डा० मुसद्दिक

ब्रिटिश कर्मचारियों को निकाल कर ही जायगा

बर्बरता का पुनरुद्धार

दक्षिण अफ्रीका में मलान सरकार पृथकता की जिस नीति का अनुसरण कर रही है उसे स्वयं उनके अपने रंग के गोरे बर्बरता का पुनरुद्धार बता रहे हैं।

ब्रिटेन के उदारदली पत्र स्टार के सम्पादकीय में यह लिखा गया है कि डा० मलान की नीति क्रिश्चियन धर्म के विरुद्ध, अनैतिक और अन्यायपूर्ण है। जिस समय यूरोपियन जादू टोनों और भूतों में विश्वास करते थे उस समय भी इतनी पृथकता भावना नहीं थी जितनी डा० मलान अब कर रहे हैं। सम्पादकीय के अन्त में लिखा गया है कि डा० मलान सभ्यता और संस्कृति का क्षेत्र छोड़ कर दूसरे ही क्षेत्र [असभ्यता] में चले गये हैं।

देश-वार्ता

राष्ट्रपति के हस्तक्षेप से हिन्दू कोड स्थगित

पूर्वी बं० से निष्क्रमण पुनः जारी

देहली जिला-बोर्ड के चुनाव प्रारम्भ

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

आपके तीव्र विरोध के कारण संसद में हिन्दू कोड बिल पर विचार स्थगित होगया।

हिंदू कोड बिल

हिन्दू कोडबिल की जिन दो धाराओं पर संसद में काफी बहस हो रही थी वे डा० राजेन्द्रप्रसाद जी के हस्तक्षेप और इस बात पर कि 'मैं इस बिल के बारे में कोई भी जल्दबाजी नहीं करना चाहता हूँ अपितु गम्भीर रूप र इस पर विचार किया जाना चाहिये, और यदि ऐसा न किया जायेगा तो मैं त्यागपत्र दे दूंगा।' पंडित नेहरू ने बिल पर विचार करना स्थगित कर दिया है। इस पर विधि मंत्री डा० भीमराव अम्बेडकर ने मंत्रि मण्डल से त्याग पत्र देने का निश्चय कर लिया है। उन्होंने कांग्रेसी सरकार पर यह आरोप लगाया है कि आगामी चुनावों मे हार के भय से ही हिन्दू कोडबिल पर विचार स्थगित कर दिया गया है। कांग्रेस सरकार की ढिल मिल और अवसरवादिता की नीति से असन्तुष्ट होकर उन्होंने त्यागपत्र दिया है ऐसी चर्चा है।

चुनावों की धूम

आज देश में सर्वत्र चुनावों की धूम मची हुई है। विभिन्न दलों के प्रयत्न इन चुनावों में जीतने के लिये निरन्तर जारी हैं।

दिल्ली जिला बोर्ड के चुनाव भी २७ ता० स हो रहे हैं। मुख्यत दो ही दलों के बीच संघर्ष चल रहा है। वहा पर २० च त्र से लोगों को खड़ा किया गया है। जनसंघ और कांग्रेस में इस चुनाव में मोर्चा डटा हुआ है।

कांग्रेस इतनी पुरानी है और उसे सर्व साधन उपलब्ध हैं फिर भी हाल ही में चालू हुई संस्था जनसंघ ने लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। और लोगों की सहानुभूति भी उसी ओर अधिक दिखाई दे रही है। आज कल के और पिछले दिनों के समाचारों से यह विदित हुआ है कि कांग्रेस ने उस ओर धु आधार प्रचार के लिये अपने स्वयंसेवक भेजे है। और जनसंघ वाला ने भी भेजे हुए हैं। किन्तु लोगो का दृष्टिकोण अब कांग्रेस की ओर से बुरा सा ही दिखता है। लोग जनसंघ की ओर ही अधिक झुक रहे हैं इसलिए इस चुनाव में जनसंघ की ही विजय दिखाई देती है।

काश्मीर मे भी चुनाव चर्चा चल रही है। वहा पर नेहरू के प्यारे शेख द्वारा काश्मीर के चुनावो में काश्मीर प्रजा परिषद के ४२ उम्मीदवारों के नाम पत्र रद्द कर दिए ह और उसके विरोध म परिषद् ने राष्ट्रपति को एक स्मृति पत्र भी भजा और साथ ही परिषद् का शिष्टमण्डल भी पंडित नेहरू और श्री गोपालस्वामी आयंगर स मिला था परन्तु उसका कोई ठोस परिणाम नहीं निकलता दिखता क्योंकि पंडित नेहरू ने इस शिष्ट मंडल को कोई उत्तर नहीं दिया और श्री आयंगर ने केवल एक कोरा आश्वासन दिया कि श्री गुलाम मुहम्मद बख्शी को पत्र लिखा जायगा। उनके इस आश्वासन स यह स्पष्ट हो गया है कि भारत सरकार काश्मीर के आंतरिक मामलों म पूर्णत स्वतन्त्र हैं।

इसलिए यह अब स्पष्ट हो गया है कि काश्मीर के चुनाव एकपक्षीय ही होंगे।

पूर्वी बंगाल से हिन्दुओं का निष्क्रमण जारी

पूर्वी बंगाल स हिन्दुओं का प्रवास इस वर्ष के जून मे जोरों पर आया था और अभी तक असाधारण रूप ग्रहण किये हुए है।

खबरों से प्रकट होता है कि हिन्दुओं के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता है।

हिन्दुओं के घरों पर उनम से उनके मालिकों को निकाल कर भी अधिकार दिया जा रहा ह और उनके मालिकों सम्बन्धियो एव प्रतिनिधियों के वापिस जाने पर भी उनके मकान उनको लौटाये नहीं गये हैं।

मन्दिर और पूजा के अन्य स्थान अपवित्र कर दिये गये हैं।

अन्सार और छोटे अधिकारी अब भी हिन्दुओं को सता रहे ह और स्थानीय अधिकारी हिन्दुओं की शिकायतों की उपेक्षा करते हैं। हिन्दुओं के घरों में उनकी सम्पत्तियों को छीनने और उन पर अत्याचार करने की घटनाएं बहुत हो रही हैं।

सरकार की नीति का यह एक प्रमुख भाग है क पाठ्य पुस्तकों को इस्लाम धर्म और संस्कृति का बड़प्पन दिखाते हुए फिर से लिखा जाय। संशोधित पुस्तकों में प्राय ऐसी बातें होती हैं जो हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस पहुँचाती ह और हिन्दू इतिहास एव संस्कृति की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता।

कायदानाओं पर इस तरह का दबाव गुप्त रूप से डाला जाता है कि वे हिन्दुओं को नौकरी न दें और अगर वे ज्यादा संख्या म नौकर हो तो उनको निकाल दिया जाय।

हिन्दुओं से बहुत ज्यादा आयकर और बिक्री कर लेने की भी शिकायतें आई हैं। कुछ क्षेत्रों म उन पर नागरिक रक्षा कोष या देश रक्षा के नाम से विशेष उगाहियां की गई हैं।

यह खबर मिली है कि बहुत से सरकारी दफ्तरों म नये मुसलमान कर्म

(शेष पृष्ठ १ पर)

डा० अम्बेडकर

हिन्दू कोड बिल के स्थगित होजाने से क्षुब्ध हो मन्त्रिमंडल से त्यागपत्र देने का निश्चय कर लिया है।
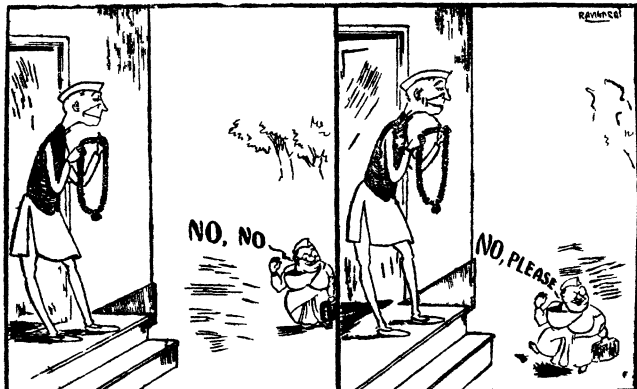
श्री नेहरू ने असन्तुष्ट कांग्रेसजनों को पुन कांग्रेस में आने के लिये आमन्त्रित किया है।

बंग-संस्कृति के विनाश का पाकिस्तानी षडयन्त्र

पूर्वी बंगाल के अल्पसंख्यकों की समस्या नित्यप्रति गम्भीर होती जा रही है। भारत सरकार द्वारा दिल्ली समझौते की समाप्ति के संकेत मात्र से ही स्थिति स्पष्ट हो गई है। असहाय हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों को रोकने में भारत सरकार असमर्थ प्रतीत होती है। हिन्दुओं में बड़ी संख्या में बलात् धर्म परिवर्तन कराये जाने के कारण मुस्लिमों की संख्या नित्यप्रति बढ़ रही है। यह मुस्लिम हिन्दुओं के साथ किस प्रकार का व्यवहार करेंगे यह विभाजन के समय से आज तक होने वाले अत्याचारों से प्रकट है। इस्लाम का प्रचार परिवर्तित हिन्दुओं के कारण ही अधिक हुआ है। १४ वीं शताब्दी में काला पहाड़ नामक एक नव मुस्लिम ने बंगाल में मुस्लिम धर्म प्रचार करने में सहायता दी थी। अलाउद्दीन खिलजी का प्रसिद्ध सेनापति मलिक कफूर भी पहले हिन्दू था। उसके कारण भी अनेकों हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन करना पड़ा। आज स्थिति स्पष्ट है। एक बड़ी मात्रा में हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कराया जा रहा है। यदि हिन्दू काला पहाड़ व मालिक कफूर के पदचिन्हों पर चल कर मुस्लिम धर्म का कितना प्रचार करेंगे, इस स्थिति की भयानकता का विचार पाकिस्तान में होने वाले अत्याचारों से किया जा सकता है।

दिल्ली समझौता

दिल्ली समझौते पर हस्ताक्षर होने से पहले भारतीय क्षेत्रों में यह आशा की जाती थी कि पाकिस्तान की अल्पसंख्यकों के प्रति बरती जाने वाली नीति के कारण भारत सरकार कोई कड़ा कदम उठायेगी। पाकिस्तान ने इस समय कूटनीति से काम ले कर दिल्ली समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये। भारत सरकार ने इस समझौते के हो जाने के पश्चात् अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ ली थी। परन्तु पाकिस्तान की नीति नित्यप्रति अत्याचार करने की ही रही है। आज पाकिस्तान के प्रत्येक भाग से जिहाद की आवाज आ रही है। साथ ही पाकिस्तान भारत को अल्पसंख्यकों की रक्षा का पूर्ण आश्वासन दे रहा है। यदि इस समय भी दिल्ली समझौते के समान किसी योजना पर विचार किया गया तो यह हमारी

नेहरू-लियाकत पैक्ट और उसके बाद

(कुमारी वृजरानी शर्मा)

नीति का दिवालियापन ही कहा जायेगा।

प्रधान मन्त्री नेहरू व्यक्तिगत रूप से देश हितैषी भद्र व पुरुष हैं। परन्तु व्यक्ति विशेष पर किसी देश की राजनीति निर्भर नहीं होती। नेहरू जी के विचार में यदि पाकिस्तान के विरुद्ध इस दशा में कोई कड़ा कदम उठाया गया तो उसका असर काश्मीर पर पड़ेगा। काश्मीर की जनता के विचार पाकिस्तान के प्रति कुछ भी हो, वह वास्तविक रूप में उसकी शरणार्थियों के प्रति बरती जाने वाली नीति से सन्तुष्ट नहीं है। यदि इस युक्ति को सत्य भी मान लिया जाये कि पूर्वी बंगाल में कड़ा कदम उठाने से काश्मीर पर असर पड़ेगा, तब भी यह कोई ठोस कारण प्रतीत नहीं होता। पूर्वी बंगाल के हिंदुओं को आज बलि का बकरा इसलिये बनाया जा रहा है कि नेहरू सरकार इस सम्बन्ध में कोई उचित हल निकालने में असमर्थ रही है।

धर्म निरपेक्षता का नारा

भारत, धर्म निरपेक्ष जनतन्त्र है। भारत सरकार की नीति प्रत्येक धर्मावलम्बी के प्रति समानता की रही है। आदर्श के रूप में यह नीति उचित समझी जा सकती है परन्तु मानव समाज का अन्तिम ध्येय आदेश न हो कर वह तो ध्येय पर पहुँचने का लक्ष्यमात्र है। कुछ लोगों का विचार है कि भारत सरकार मुसलमानों से चुनाव में वोट लेने के लिये भारत मे स्थान दे रही है। इस नीति का कुछ भी अर्थ हो यह एक अलग विषय है। यहा केवल इतना ही स्वीकार किया जा सकता है पाकिस्तान से आने वाले प्रत्येक हिन्दू के बदले में उतने ही मुसलमानों को वहां भेजा जाय। धर्मनिरपेक्ष राज्य में इस प्रकार की योजना पर कभी अमल नहीं किया जा सकता है। अतएव भारत सरकार को आने वाले हिन्दुओं के पुनर्संस्थापन के लिये पाकिस्तान सरकार से भूमि लेनी चाहिये।

आज पाकिस्तान भारत पर मुक्का ताने खड़ा है। भारत के प्रत्येक कोने में गुप्तचरों का जाल फैला है। नित्यप्रति भारतीय सीमा की अवहेलना की जा रही है। पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दुओं से विशेष कर लिया जा रहा है। यह कर जिसे 'जिमी' कहा जाता है जजिये का दूसरा स्वरूप है। वास्तविक रूप में यह कर पाकिस्तान के धर्मयुद्ध (जिहाद) के लिये एकत्रित किया जा रहा है परन्तु प्रचार इस बात का किया जा रहा है कि यह धन हिन्दुओं की सुरक्षा पर व्यय होगा। किसी चोर को घर की रक्षा करने के लिये नियुक्त करना एक मूर्खता ही कहा जायेगा। यही स्थिति आज पाकिस्तान में है। मुस्लिम पुलिस को हिन्दुओं की रक्षा के लिये प्रयोग किया जा रहा है। इस सुरक्षा का आनन्द पूर्वी पाकिस्तान के हिन्दू किस प्रकार उठा रहे हैं यह नित्य प्रति होने वाली दुर्घटनाओं से स्पष्ट है।

नेहरूजी ने अपने स्वामी म० गांधी की अवहेलना करके पाकिस्तान के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था। गांधीजी जीवन पर्यन्त साम्प्रदायिकों का विरोध करते रहे थे। आज नेहरूजी इस सिद्धान्त को जड़मूल से समाप्त करने जा रहे हैं। राजनीतिज्ञ समय को परखकर चलने वाला होता है। उसका मुख्य ध्येय जनता की सुरक्षा व उन्नति के लिये होता है। आज पाकिस्तान के अल्पसंख्यक भारत सरकार से दिल्ली समझौते के समान किसी समझौते की अपेक्षा नहीं करते हैं। वह चाहते हैं कि उन्हें सम्मान पूर्वक जीवन बिताने के लिये भारत सरकार सहायता दे। जब डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी मन्त्री-मण्डल में थे तब सरकार ने शरणार्थियों की पूर्ण सहायता का आश्वासन दिया था। आज इस प्रस्ताव की केवल रूप-रेखा ही जीवित है। भारत सरकार पाकिस्तान के अल्प-संख्यकों की सहायता व रक्षा करने मे नितांत असफल रही है।

पाकिस्तान में ही शरणार्थियों के साथ दुर्व्यवहार हो रहा है ऐसी बात नहीं है। भारत सरकार भी उनको पूर्ण रूप से सहायता करने में असमर्थ रही है। पुनः संस्थापन के लिये बनाई गई अनेकों योजनायें कागजी ही सिद्ध हुई हैं। आज शरणार्थी समस्या उग्र इस कारण भी है कि भारत सरकार उनका मानसिक पुनर्संस्थापन करने में असमर्थ रही है। उनके मानसिक विकास के लिये कुछ नहीं किया जा सका है। उनकी शिक्षा का प्रबन्ध नगण्य है। यह सर्वसिद्ध सत्य है कि जब तक किसी व्यक्ति को मानसिक सुख न पहुँचेगा वह अपना कार्य सुचारू रूप से नहीं कर सकता है। भारत सरकार का यह कहना है कि उसके साधन परिमित हैं, अनेक रूपों में आर्थिक समस्या निम्न स्तर पर पहुँच चुकी है, यह भी कारण भारत सरकार बताती है।

भारत की आर्थिक स्थिति दृढ़ नहीं है इस सत्य का समर्थन प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है परन्तु इसका कारण क्या है यह केवल राजनीतिज्ञ की चाल होती है। पाकिस्तान भी आर्थिक संकट से मुक्त नहीं है। परन्तु वह अपना आर्थिक संकट हिन्दुओं की उपस्थिति बताकर जनता की भावना से खेल रहा है। इसके विपरीत भारत सरकार को अन्तर्राष्ट्रीय मूर्ख कहा जा सकता है। पूर्वी बंगाल की समस्या आर्थिक स्तर पर भी सुधारी जा सकती है। भारत पाकिस्तान को कपड़ा, चीनी और कोयला इत्यादि कई महत्वपूर्ण वस्तुएं भेजता है। समझौते के अनुसार पाकिस्तान भारत को रुई व जूट देता है परन्तु वह किसी न किसी प्रकार अधिक माल लेकर कम माल देता है। यदि भारत अपनी आर्थिक नीति का ठीक प्रकार से नियन्त्रण करे तब भी समस्या किसी प्रकार सरल हो सकती है।

पाकिस्तान में हिन्दुओं को धार्मिक सुविधायें नहीं। जितने हिन्दू भारत आते हैं उनसे कम ही मुसलमान पाकिस्तान जाते हैं। पाकिस्तान सरकार द्वारा प्रकाशित आंकड़ों में इस सत्य को पूर्ण रूप से उलट दिया गया है। इस

[शेष पृष्ठ २१ पर]

श्राद्ध और तर्पण

आश्विन मास का कृष्ण पक्ष पितृ-पक्ष के नाम से प्रसिद्ध है। अपढ़ लोग इसे पितर पख तथा कुन्वेलवती कनागत कहते हैं। हिन्दू इन दिनों तर्पण तथा श्राद्ध करते हैं। लोगों का विश्वास है कि इस पक्ष में पितर अपनी सन्तानों से यह आशा रख कर कि हमें पिण्डदान मिलेगा तथा पीने के लिए जल की प्राप्ति होगी, इस लोक में आते हैं। जब वे अपनी सन्तान को तर्पण तथा श्राद्ध करते हुए नहीं देखते, तो निराश होकर वापस चले जाते हैं। हमारे प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ भी इसकी पुष्टि करते हुए बतलाते हैं कि इस संसार में मनुष्य के लिये श्राद्ध से बढ़कर और कोई कल्याण कारक वस्तु नहीं है। धृतराष्ट्र ने ऐसे व्यक्तियों को, जो अपने पितरों के निमित्त आश्विन मास में श्राद्ध नहीं करते, मूर्ख कहा है।

समयानुसार भेद

प्राचीन तथा वर्तमान काल के तर्पण तथा श्राद्ध की क्रियाओं पर दृष्टि डालने पर हमें एक महान अन्तर दिखाई देता है। आजकल लोग केवल रीति रिवाज तथा परम्परा की दृष्टि से ही तर्पण आदि करते हैं। पुराणों में जो नियम विधियां दी हुई हैं, उन्हें बहुत कम लोग ही अपनाते दिखाई देते हैं। शायद यही कारण है, कि श्राद्ध का शास्त्रीय दृष्टिकोण तथा महत्व समझ में नहीं आता है।

पितरों का भेद

पद्मपुराण के अनुसार सात पितर माने गये हैं। उनमें से चार तो मूर्तिमान तथा मूर्तिरहित हैं। वे सभी अमित तेजस्वी हैं तथा स्वर्ग में निवास करते हैं। उन पितरों का निवास-स्थान, जो कश्यप की सन्तान हैं, सोमपथ नामक लोक है। बर्हिषद् संज्ञक पितृगण मार्तण्ड-मण्डल लोक में तथा प्रजापति कर्दम के पुत्र पुलस्त्य, जो कि आज्यप नाम से प्रसिद्ध हैं, कामदुघ नामक लोक में निवास करते हैं। जिन सोमप नाम वाले पितरों से ही सम्पूर्ण प्रजासृष्टि का विस्तार हुआ है, जो ब्रह्मा जी से भी श्रेष्ठ हैं, तथा जिनकी स्वधा से उत्पत्ति हुई है, वे ब्रह्मलोक के ऊपर स्थित सुमानस नामक लोक में बसते हैं। नर्मदा नदी उन्हीं की पुत्री है।

पिता, पितामह तथा प्रपितामह वसु, रुद्र तथा आदित्य के स्वरूप हैं। पितरों के पास हव्य तथा कव्य पहुँचाने के साधन उनके नाम तथा गोत्र ही हैं। मंत्र की शक्ति तथा हृदय की भक्ति से हमारे पितरों के अधिपति अग्निष्वात्त उनके पास श्रद्धा के अन्न का सारभाग भेजने की व्यवस्था करते हैं। अग्निष्वात्त आदि को संसार में जन्मे, दिव्य योनि को तथा मनुष्य आदि योनि को प्राप्त पितरों के पते मालूम रहते हैं। उन माता पिता को जो दिव्य योनि प्राप्त करते हैं, श्राद्ध का अन्न अमृत रूप में मिलता है। दैत्य योनि, यक्ष योनि सर्प योनि तथा पशुयोनि में गए हुए पितरों को वही अन्न भोग, पान, वायु तथा तृणरूप में मिलता है।

तर्पण-विधि

तर्पण तथा श्राद्ध कर्मों में पितरों के लिये दक्षिण दिशा उत्तम मानी गई है। देवताओं के लिये उत्तरमुख होकर बैठे। विद्वान पुरुष के लिए श्राद्ध का समय कृष्णपक्ष का अपराह्न तथा शुक्लपक्ष का

मृत पूर्वजों का पिण्डदान देने की प्रथा अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही है।

पूर्वाह्न अच्छा समझा जाता है। पितरों का तर्पण करते समय पवित्र भाव से 'तृप्यताम्' कहते हुए नाम-गोत्र का उच्चारण करना चाहिए।

जल में नहाकर भीगे वस्त्र पहने हुए तर्पण करने से पितर देवताओं सहित सदैव सन्तुष्ट रहते हैं। यदि दाता स्थल या जल में खड़ा होकर जल या स्थल में तर्पण का जल गिराता है, तो उसका दिया हुआ जल किसी के पास नहीं पहुँचता। सूखे वस्त्र धारण किए हुये किसी पवित्र स्थान में बैठकर पितरों का तर्पण करने से उनके पितर दसगुने तृप्त होते हैं।

तर्पण के लिए कुश तथा तिल आवश्यक हैं। पद्मपुराण के अनुसार कुश के संसर्ग से जल अमृत से भी बढ़कर हो जाता है, अतएव पवित्र तथा श्राद्धकर्म में उनका उपयोग किया जाता है।

श्राद्ध की उचित रीति

श्राद्ध करते समय उचित समय का ध्यान रखना आवश्यक है। सुबह से ले कर सन्ध्या तक पन्द्रह मुहूर्त होते हैं। तीन-तीन मुहूर्तों का एक-एक जोड़ा बना दिया है। इस प्रकार कुछ पांच जोड़े होते हैं। सांयकाल में श्राद्ध करने से बचना चाहिये।

श्राद्ध के लिए पात्रों का चुनाव भी सोच विचार कर करना चाहिये। स्मरण रखने योग्य है कि श्राद्ध में नींबू, श्लेष्मातक, सेमल, नक्तमाल्य, बहेड़ा तथा कैथ निन्दित हैं।

ब्राह्मणों के बिना श्राद्ध पूर्ण नहीं समझा जाता। अतएव हमें उनके विषय में भी जान लेना चाहिए। स्कन्दपुराण तथा पद्मपुराण के अनुसार तीनों लोकों तथा प्रत्येक युग में ब्राह्मण देवता बड़े पवित्र माने गये हैं। वह देवताओं का भी देवता है। स्वर्ग के देवता तो परोक्ष हैं, पर ब्राह्मण भगवान् के प्रत्यक्ष स्वरूप हैं। वह सभी का गुरु पूज्य एवं तीर्थस्वरूप मनुष्य है। वह साक्षात् धर्म की मूर्ति है। पृथ्वी पर सबको मोक्ष वही प्रदान करता है। अतएव संसार में उसकी किसी से भी तुलना नहीं की जा सकती।

दान तथा मान द्वारा ब्राह्मण की सेवा करनी उत्तम दक्षिणा से युक्त सौ यज्ञों के अनुष्ठान से भी बढ़कर है। ब्राह्मणों की पूजा करने वाला कभी भी दरिद्र, दुःखी या रोगी नहीं होता तथा वह शीघ्र ही परब्रह्म परमात्मा को पा लेता है।

श्रोत्रिय तथा सदाचारी ब्राह्मण सदैव पूज्य होते हैं। उन्हें ही श्राद्ध में भोजनों के लिए निमन्त्रित करना चाहिए।

कुमार्गगामी, नास्तिक तथा समस्त धर्मों से शून्य ब्राह्मण अधम मानने योग्य हैं। मनुजी का कथन है कि ऐसे द्विजों को श्राद्ध मे सम्मिलित नहीं करना चाहिए।

श्राद्धभोजी ब्राह्मण तथा यजमान को उचित है कि वे दुबारा भोजन न करें। मैथुन, यात्रा, कलह तथा दिन में शयन इन सब बातों को वे उस दिन सर्वथा त्याग दें।

श्राद्ध करने की विधि

श्राद्ध की विधि यह है। गोशाला को अथवा ऐसे स्थान को जो दक्षिण की ओर से नीचा हो, गोबर से लीपे। पितरों के लिए खीर बनावे, जिसमें घी तथा मधु मिला दे। फिर एक बित्ता लम्बी तथा चार अंगुल चौड़ी माप के निर्वापस्थान बनावे। हाथ की लम्बाई बराबर खैर की तीन करछुल बनावे, जिनमें चांदी को थोड़ा बहुत अवश्य संसर्ग हो। फिर लिपी हुई पृथ्वी पर गोमूत्र से मण्डल बनावे। इसके बाद ब्राह्मणों को आदरपूर्वक बुला कर यथा-विधि सेवन करे। फिर हवन एवं विश्वे-देवों को अर्पण करने से जो अन्न बचे उसके अनेक पिण्ड बनावे। साधारण-तया पिण्ड ऐसे हों, जो दो साल के बछड़े के मुंह में समा सकें। तदुपरान्त वेदियों पर रेखा बनावे। फिर स्नान-शोधन की क्रिया करे, अर्थात् अवनेजन पात्र द्वारा जल को रेखांकित वेदी पर गिरावे। इसके पश्चात् दक्षिण की ओर मुख करके वेदी पर कुश बिछावे। उन पर सभी पिण्डों को एक एक करके

गीत

★ श्री शिवेन्द्रकुमार शर्मा 'परिवर्तन'

युग का क्षितिज अरुण अम्बर में, पीत-किरण मुसकाईं !

विरण जाग तू,—

आज जागरण लिए किरण यह, निखिल भुवन पर छाईं !!

गूंज उठे वन,

मुखरित जीवन,

नई चेतना, रवि की किरणें, निज-गति में भर लाईं !
युग का क्षितिज अरुण अम्बर में, पीत-किरण मुसकाईं !!

बीत चुकी निशि,

पुलकित दिशि-दिशि,

स्वप्न मुंद गए—जन-मानस की, कलिका] खिल लहराईं !
युग की क्षितिज अरुण अम्बर में पीत-किरण मुसकाईं !!

पलक खोल अब,

प्रात हुआ अब,

नियति और जग जागृत करतीं, कलित किरण यह आईं !
युग का क्षितिज अरुण अम्बर में, पीत-किरण मुसकाईं !!

विरण जाग तू,—

आज जागरण लिए किरण यह, निखिल भुवन पर छाईं !!

...★...

युग-मानव !

★ श्री महेन्द्र 'राजा'

युग-निर्माता, हे युग-स्रष्टा, युग-मानव, हे युग-देवदूत,
युग-नन्ददीप, युग-उद्धारक, मानव मन की उज्ज्वल-विभूति।
युग-धर्म बताया इस जग को, युग सृष्टि रची तुमने आकर,
युग-निबिड़-तिमिर का नाश किया, नव डाला यह युग-रत्नाकर।

युग-संस्थापक ! तुमने आकर इस नव-युग का संस्थान किया,
युग-दीप जला युग - मानव का है दूर सभी अज्ञान किया।
युग-कलावन्त ! आ फिर युग को कुछ अपनी कला सिखा जाओ,
युग-वीणा रख युग-अधरों पर कुछ नूतन तान सुना जाओ।

युग-अमर चिन्ह, युग तीर्थंकर, युग-परिवर्तक, व्यवहार सरल,
युग ताण्डव नृत्य दिखा युग को, मच जाये युग में उथल - पुथल।
युग के अन्दर ज्यों ही युग-मानव का युग पाया युग - क्रन्दन,
युग को तुमने सन्देश दिया अब युग करता तेरा वन्दन।

युग-नायक, हे युग-उन्नायक, युग-जनक ! तुम्हारा अभिनन्दन,
युग - अभिर्माण, हे युग - प्रकाश, युग तेरा करता है अर्चन।
युग-ज्ञान सुधा के मधुर स्रोत युग वीर और युग - कर्मनिष्ठ,
युग-शुभ श्रद्धा की मूर्ति और स्फूर्ति स्रोत, ओ सत्य - निष्ठ।

युग-बोहित मध्य धार में है, हे युग - स्रष्टा अब पार करो,
युग का अभिनन्दन चरणों में अर्पित है अब स्वीकार करो॥

—★—

रखे। फिर पितर के नाम-गोत्र आदि का उच्चारण करते हुए एक-एक पिण्ड को दाहिने हाथ में ले कर तिल तथा जल के साथ पिण्डदान करे।

स्कन्दपुराण में लिखा है—

पिण्डमग्नौ सदा दद्याद्भोगार्थी सततं नरः।
प्रजार्थं पत्न्यै वै दद्यान्मध्यमं मंत्रपूर्वकम्॥
उत्तमां द्युतिर्माप्नोति गोषु नित्य प्रदापयेत्॥

अर्थात् पिण्डदान करने वाला यदि भोग की इच्छा रखता हो, तो पिण्ड को अग्नि में डाले। पत्नि को मंत्र पढ़ते हुए मध्यम पिण्ड देने से सन्तान सुख प्राप्त होता है। गौओं को पिण्ड देने से उत्तम कान्ति मिलती है। जल में पिण्ड को विसर्जित करने से बुद्धि, यश तथा कीर्ति की प्राप्ति होती है। दीर्घायु की इच्छा रखने वाला अपने पिण्डों को कौओं को दे दे। आकाश और दक्षिण दिशा पितरों को बहुत प्रिय है। अतएव यदि कार्तिकेय जी की सेवा में पहुँचने की अभिलाषा हो, तो दक्षिण की ओर अपना मुख करके समस्त पिण्ड आकाश में फेंक दे। मुर्गे को भी पिण्ड खिला देने से कार्तिकेय जी का लोक मिलता है।

यह सब कुछ कर चुकने के बाद 'लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्तु' कहते हुए अपने दाहिने हाथ को पिण्डाधारभूत कुशों पर पोंछ दे। तत्पश्चात् पुनः प्रत्यवनेजन करना चाहिए। फिर पिण्डों पर पितरों का आवाहन करके उनका यथाविधि पूजन करे। तदनन्तर पिण्डों के ऊपर कुश रख कर पितरों का विसर्जन करे। विद्वान पुरुष को चाहिए कि वह सभी पिण्डों में से थोड़ा-थोड़ा भाग निकाल कर ब्राह्मणों को खिला दे।

जब ब्राह्मण भोजन कर ले, तो उससे आशीर्वाद लेना चाहिए। कहा है कि जो घर ब्राह्मण के आशीर्वाद से वंचित रहते हैं, वे श्मशान तुल्य हैं—

स्वाहास्वधास्वस्तिविवर्जितानि।
श्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि॥

सर्वप्रथम ब्राह्मण के हाथ में जल दे, और उससे प्रार्थना करे कि जल ही देवता का निवासस्थान है। सभी चीज़ों का जल में समावेश है। आपके हाथ में दिया हुआ यह जल हमें कल्याण-प्रद हो।

अपां मध्ये स्थिता देवाः
सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।
ब्राह्मणस्य करे न्यस्ताः
शिवा आपो भवन्तु नः॥
(स्कन्दपुराण)

फिर ब्राह्मण के हाथ में पुष्प तथा अक्षत देते हुए कहे—

लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु
लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।
लक्ष्मीर्वसति वै सोमे
सौमनस्यं सदास्तु मे॥
अक्षतं चास्तु मे पुण्यं
शान्तिः पुष्टिर्धृतिश्च मे॥
यच्छ्रेयस्करं लोके
तत्तदस्तु सदा मम।
(स्कंद पुराण, क० गो० पृ० १०१२)

ब्राह्मण को दक्षिणा भूयसी, देते समय कहे—

दक्षिणाः पान्तु सर्वत्र बहुदेयं तथास्तु नः।

इस समय ब्राह्मण को चाहिए कि वह यजमान की प्रार्थना का 'एवमस्तु' कहते हुए अनुमोदन करे।

इस प्रकार यह पक्ष हमें अपने उन माता-पिता का स्मरण कराता है, जिन्होंने हमें यह शरीर प्रदान किया, तथा संसार में कुछ करने के योग्य बनाया। उनकी पवित्र स्मृति हमें जीवन की विभिन्न कठिनाइयां पार करने में सहायता दे, यही हम सब की कामना है।

— श्री कृष्णकुमार

:★:

कहानी

प्रेम धूलि

★ श्री चन्द्रप्रकाश सक्सेना

एक दिन जब की अविरल धाराओं के बीच अर्चना अग्नि की लाल लपटों में उलझाने के लिये मन को होम एक परदेसी की हो गई। मंत्रोच्चारण के बीच एक बार अतीत की घटनायें मचलीं और उसका घूंघट उघाड़ कर एक दम उसके सम्मुख आ खड़ी हुई उन्हीं स्मृतियों के बीच प्रदीप की मुखाकृति उभर आई—लम्बा, सांवला, भावपूर्ण मुखड़ा, लाल अश्रुपूर्ण आंखें, कांपते अधर ...... चीख चीख कर अर्चना से कह उठे—'अर्चा—तुम इतनी निष्ठुर, इतनी निर्मम बन गईं— पाषाणी! विदा बेला भी इतनी कठोर!! एक बार " अन्तिम बार तो अपने आंचल से यह ढुलकते आंसू पोंछ दो तो यह सदैव को शुष्क हो जावें।'

पर अर्चना तो कठोर नहीं! कठोर तो तुम्हीं हो प्रदीप, जो अपने प्रेम का यह बोझ किसी अज्ञात को सौंप कर भी मुस्करा रहे हो। यह तो अर्चना के हृदय से पूछो कि उस पर क्या बीत रही है।

सहसा अर्चना की दृष्टि अपने आंचल की किसी के आंचल से बंधी गांठ पर पड़ी। भावावेश में उसने होंठ काट लिया। हृदय में उमड़ता भावनाओं का तूफान उसने वहीं रोक कर भटकती हुई कल्पना को झकोड़ दिया। सत्य का वीभत्स रूप उसके सम्मुख हो-हो कर उसकी बेबसी पर हंस पड़ा और हृदय तरल हो उसके दृगों से बह निकला।

प्रदीप सब कुछ देखता रहा— हृदय में व्यथा छुपाये और अधरों पर मुस्कान लिये। पर, विदा बेला उसके भी आंसू बांध तोड़कर बह निकले।

अश्रुओं का वेग जब कम हुआ तो अर्चा जा चुकी थी। प्रदीप के लिये संसार रिक्त हो गया— पर यह तो होना ही था। प्रदीप''' फिर अब व्यर्थ पीड़ा से खिलवाड़ करने का अर्थ— ? पगले, अब भूल जाओ उसे, और प्रदीप ने सचमुच अपना मन अध्ययन में उलझाने का प्रयत्न किया '' '' किन्तु '' ''' ?

× × ×

पतिगृह को आलोक से भर कुछ ही दिनों में अर्चना लौट आई— व्यथा और विषाद की साकार मूर्ति बन कर, बुझी-बुझी सी। उसकी कोमल अभिलाषायें पद-दलित हो चुकी थीं। वह स्वयं भी एक मुरझाई हुई कलिका थी जिसे विकसित होने से पूर्व ही विधि के निर्मम हाथों ने तोड़ लिया था।

बुझा हुआ दीप और मुरझाये फूल लिये अर्चना प्रदीप से मिलने आई। प्रदीप ने उसे न पहचानने का प्रयत्न किया' उसकी उपेक्षा करना चाही किन्तु अर्चना ने यह सब करने नहीं दिया, बोली—'नमस्ते......।'

हां, मैं सचमुच भूलने का प्रयत्न करता हूँ, किन्तु'''

प्रदीप ने चाहा उत्तर न दे, चुपचाप चला जावे कमरे से, किन्तु 'वह' तो मार्ग घेरे खड़ी थी—उत्तर तो उसे देना ही पड़ेगा। बोला—'नमस्ते। ......कहो कैसी हो......।'

अचानक दृष्टि मिल गई। प्रदीप को अनुभव हुआ जैसे अर्चना के प्रशान्त दृगों में व्यथा का सागर उमड़ रहा हो जिसे उस ने व्यथित मुस्कान में बांध रखा हो और अर्चना को लगा मानो प्रदीप के प्रदीप्त हृदय में युग युग का छिड़ा संघर्ष और भी विकट हो उठा हो।

हृदय की धड़कन बढ़ गई। वाणी जाग्रत हो गई बोली अर्चना—'तुम्हें इस से क्या! .....निर्मम!!'

अरे! यह कैसा कटु स्वर, यह कैसी बात'''क्या अर्चना विवाह से सन्तुष्ट नहीं। प्रदीप ने कहना चाहा—'क्यों अर्चा, पतिदेव कैसे हैं?' किन्तु शब्द अधरों पर आ कर रुक गये, बात बदल कर बोला '' '''ठीक कहती हो अर्चा, मुझे अधिकार भी क्या है।'

'अधिकार! '''अधिकार की बात कहते हो पर मत भूलो प्रदीप कि यह कह कर कहीं तुम उस प्यार का अपमान...... ।'

बीच ही में बात काट कर विक्षिप्त सा प्रदीप बोल उठा—'मत दोहराओ अर्चा! मत दोहराओ वे बातें!! प्यार शब्द से मुझे पीड़ा होती है अब तो सब कुछ बदल चुका।'

'नहीं प्रदीप! '''नहीं!! मैं तो बिलकुल वही हूँ, मेरा हृदय वही है पर तुम—तुम.......।'

'हां' मैं सचमुच भूलने का प्रयत्न करता हूँ ''प्रयत्न में हूँ कि तुम्हें भूल जाऊं' किन्तु ...... ।'

और तभी कोई आ गया। बात अधूरी ही रह गई अर्चना ने एक बार बुझा हुआ दीप जलाने का प्रयत्न किया। मुरझाये पुष्प जैसे पानी में पड़ कर कुछ समय के लिए सजीव हो उठे। अधूरा प्यार पूरा होने के लिए छटपटाने लगा पर प्यार—प्यार कभी पूरा भी हुआ है।

प्रदीप ने चाहा कि अर्चना से कह दे—'अर्चा जिस पथ पर इतना आगे बढ़ कर तुम्हें पीछे लौटना पड़ा उस पर फिर बढ़ने का प्रयत्न मत करो' ''' अब तो वहां गर्म राख का एक ढेर है— आलोक रहित किन्तु उसमें अब भी इतनी गर्मी है कि तुम जल जाओगी''' पीछे लौट जाओ ' ' किन्तु वह यह सब कह नहीं सका—बहुत चाहने पर भी नहीं।

× × ×

पूर्णिमा का चन्द्र नदी की उन्मत्त लहरों से खिलवाड़ कर रहा था। शुभ्र ज्योत्स्ना तट पर बिखरी पड़ी थी। धीरे धीरे शीतल वायु के झोंके वातावरण को विकम्पित कर रहे थे। तट पर असंख्य स्त्री पुरुष प्रकृति की गोद में खेल रहे थे। वहीं एक ओर—हलचल और कोलाहल से अलग बैठा था प्रदीप—सामने उस के चन्द्र का प्रतिबिम्ब नदी की मौजों में कांप रहा था मानों प्रियतम के आलिंगन में कोई षोडशी बाला हर्ष से विकम्पित हो। प्रदीप उसे देख रहा था—अपलक! पैर उसने पानी में डाल रखे थे। कुर्ते के बटन उसने खोल रखे थे। अस्त-व्यस्त रेशमी बाल हवा से बार बार हिल रहे थे। वह विमुग्ध-सा खोया हुआ सोच रहा था काश! ऐसे में अर्चा भी होती।

तभी अर्चना आकर बोली— 'यहां हैं आप! सारे में खोज फिरी तब मिले हो।'

'अरे! बड़ा कष्ट हुआ तुम्हें' बिना देखे प्रदीप ने कहा, जैसे उसके आने से उसे विशेष प्रसन्नता नहीं हुई। अर्चना उसके पार्श्व में खड़ी थी। प्रदीप का मन नाच रहा था वह सोच रहा था इस सुन्दर बेला में बैठकर अर्चना के साथ अतीत की बीती बातें दोहराये— फिर क्या कभी ऐसा अवसर आवेगा! किन्तु उसे तो संकोच ने घेर रखा था।

[शेष पृष्ठ १४ पर]

सम्पूर्ण लेखमाला—१०

अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष और कूटनीति का केन्द्र : ईरान

[श्री नीरस योगी]

श्री अहमदशाह रजा पहलवी

ईरान के भूतपूर्व भाग्य विधाता

ईरान आज ब्रिटेन की सत्ता को चुनौती दे रहा है। लड़खड़ाता हुआ ब्रिटिश शासन आज अपने अंतिम क्षणों की प्रतीक्षा में है। ब्रिटेन का शासन सूत्र आज इतना निर्बल हो चुका है कि वह किसी भी प्रकार अपने को डूबने से बचाने में असमर्थ प्रतीत होता है। स्वयं प्रधानमंत्री एटली आज इस गुत्थी को सुलझाने में असमर्थ रहे हैं। वह आज इस प्रश्न पर अपने दल के अस्तित्व को मिटता हुआ पा रहे हैं। निःसन्देह ब्रिटेन के आम चुनावों में यदि अनुदार दल की विजय हुई तो यह निश्चित है कि मध्यपूर्व विशेषकर ईरान व मिश्र की परिस्थिति गम्भीर रूप में करवट बदलेगी। ब्रिटेन को ईरान के तेल कूपों को छोड़ने में संकोच इस कारण होता है कि वहां पर रूस का प्रभाव फैल जायगा। ईरान के एक पत्र के अनुसार रूस-ईरान वार्ता में विनिमय के सम्बन्ध में बातचीत चलने पर रूस ने कुछ राजनैतिक सुविधाओं की मांग की है। वह मांगें इस प्रकार हैं—

(१) ब्रिटेन के ईरान स्थित बैंक को सदैव के लिए बन्द कर दिया जावे। (ईरान सरकार ने बैंक पर विदेशी विनिमय कार्य करने पर पाबन्दी लगा दी है)

(२) अजरबेजान के दक्षिणी प्रान्त के गवर्नर डा० एगवाल को भी रूस की मांग पर बर्खास्त कर दिया गया है।

(३) अबादान से ब्रिटिश कारीगरों को निकाल दिया जावे।

(४) साम्यवादी देशों को ही ईरान का तेल बेचा जावे।

(५) गिरफ्तार किये गये तूदेह दल के समस्त सदस्यों को रिहा किया जावे।

(६) साम्यवाद विरोधी कानूनों को समाप्त कर दिया जावे।

रूस की समस्त शर्तों को धीरे धीरे ईरान सरकार द्वारा पूरा किया जा रहा है। आज ईरान की समस्या स्थानीय नहीं है अपितु वह पूंजीवाद व साम्यवाद का शक्ति प्रदर्शन केन्द्र बन गया है। यदि यह समस्या निरन्तर गम्भीर रूप धारण करती रही, तो यह निश्चित है कि ब्रिटेन को भारत की भांति इस प्रदेश को छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

ईरान की स्थिति

रूस तक पहुँचने के लिए ईरान एक सुगम मार्ग है। प्राय ६,२८,००० वर्गमील में यह प्रदेश फैला हुआ

ब्रिटिश प्रधानमन्त्री श्री एटली

ईरान का प्रश्न आपके राजनैतिक अस्तित्व का प्रश्न बन गया है।

है। देश की जन संख्या में अनेक बार परिवर्तन हुए हैं। सैमाइट दल व टर्की के निवासी देश के प्राचीन नागरिक नहीं हैं अपितु वहां आकर बस गये हैं। विश्वसपूर्ण आंकड़ों के अभाव में देश की जन संख्या प्राय १,५०,००,००० मानी जाती है। १९४८ में प्रकाशित आंकड़ों के आधार पर इसे कुछ अधिक बताया गया है। कुछ भी हो, इस महान् जन शक्ति का केवल १५ प्रतिशत भाग ही शहरों में निवास करता है। देश में अकाल मृत्यु भी बड़े पैमाने पर होती है। देश में अनेक जातियां निवास करती हैं। राज्य धर्म प्राय मुस्लिम है परन्तु इसके अतिरिक्त अन्य धर्म के लोग भी बड़ी संख्या में निवास करते हैं।

इतिहास व राजनीति

राष्ट्रीय रूप में आधुनिक ईरान की स्थापना १६ वीं शताब्दी में हुई थी। इससे पहले ईरान एक राजनैतिक रूप में न होकर भौगोलिक रूप में था। देश पर अनेक बार बाहर से आक्रमण किए गये। सिकन्दर, तैमूर, चंगेज खां, नादिर शाह व अन्य आक्रमण करने वाले आये और चले गये परन्तु ईरान आज तक अपने प्राचीन रूप को अक्षुण्ण रख सका है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि साम्यवाद की लहर में, यदि कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया तो, यह देश बह जावेगा।

रूस और ईरान का मतभेद कोई नवीन नहीं है। रूस ने अनेक बार विधान इत्यादि में परिवर्तन करने की मांग की है।

ब्रिटेन ने भी अनेक बार ईरान में अपने स्वार्थों की सिद्धि करनी चाही है। १९१९ में प्रथम महायुद्ध के पश्चात् ब्रिटेन ने एक सन्धि की जिसके अनुसार कुछ ब्रिटिश नागरिक ईरान में काम करने के लिये नियुक्त किये गये। रूस ने इस काल ईरान को अनेक सुविधायें प्रदान की। लेनिन ने जार की नीति का अनुसरण करने से इन्कार कर दिया। इस प्रकार जार—ईरान सन्धि की समस्त धारायें अवैधानिक घोषित कर दी गई।

रजाशाह पहलवी व आधुनिक ईरान

देश के इस संकट काल में रजाशाह पहलवी का निर्माण हुआ। १९२१ में

शाह रजमारा

गोली के शिकार

उसने देश पर सैनिक अधिकार कर लिया और स्वयं को प्रधान सेनापति घोषित कर दिया। प्राय चार वर्ष पश्चात् तत्कालीन शाह अहमदशाह काजर को गद्दी से उतार दिया गया गया और विधान सभा ने रजाशाह पहलवी को शाह घोषित किया। नये शाह ने देश में अनेक आर्थिक व राजनैतिक सुधार किये। शिक्षा व सैनिक सेवाएं अनिवार्य कर दी गई।

द्वितीय महायुद्ध

इसमे सन्देह नहीं कि रजाशाह एक कुशल शासक थे द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ होने पर उन्होंने अपने देश को युद्ध में तटस्थ रखने की घोषणा की। रूस व ब्रिटेन ने ईरान से जर्मन लिखे पक्षों को निकालने की सलाह दी परन्तु रजाशाह ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया अन्त में रूस व ब्रिटिश सैनिकों ने देश पर आधिकार कर लिया और १६ सितम्बर १९४१ को रजा शाह को अपने पुत्र के पक्ष में गद्दी छोड़ने के लिये विवश किया। मोहम्मद रिजा को नया शाह बनाया गया। धीरे धीरे ईरान ने इटली व जापान से भी अपने कूटनीतिक सम्बन्ध विच्छेद कर लिये।

एक त्रिपक्षीय सन्धि के अनुसार ब्रिटेन व रूस ने ईरान की सुरक्षा का भार अपने पर ले लिया। १ दिसम्बर १९४३ को चर्चिल ट्रूमैन, स्टालिन ने एक संयुक्त घोषणा में ईरान को समस्त आर्थिक सहायता देना स्वीकार की। जिससे कि वह अपनी स्वतन्त्रता का पूरा उपभोग कर सके। इस योजना के अन्तर्गत ईरान को बाह्य सहायता अनेक बार दी गई है।

ईरान रूस संघर्ष

१९४३ में एक ब्रिटिश कम्पनी ने दक्षिणी-पूर्वी ईरान में तेल निकालने की छूट चाही। एक अन्य कम्पनी ने भी उसी प्रकार की मांग की परन्तु ईरान के मन्त्रीमंडल ने यह कह कर इस प्रश्न को टाल दिया कि ईरान एक स्वतन्त्र इकाई नहीं है और विदेशी सेनाओं के रहते हुए इस प्रश्न पर विचार नहीं किया जा सकता है। रूस ने भी इसी प्रकार की मांग की परन्तु ठुकराये जाने पर रूस के अखबारों व तूदेह दल ने सरकार का

[पृष्ठ १६ का शेष]

डा० मुसद्दिक

पदारूढ़ होते ही तेल समस्या से बुरी तरह उलझना पड़ा।

साहित्य-रत्न परीक्षोपयोगी लेख–

महाकवि दिनकर और कुरुक्षेत्र

श्री सुरेश चन्द्र

कुरुक्षेत्र श्री दिनकर की नवीनतम काव्य कृति है। कामायनी तथा साकेत के पश्चात् कुरुक्षेत्र को आधुनिक युग को प्रतिनिधि काव्यकृति कहा जा सकता है। यद्यपि कुरुक्षेत्र में गुप्त जी के साकेत की सी व्यापकता तथा प्रसाद जी की कामायनी की भाँति गम्भीर दार्शनिकता नहीं है। किन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुरुक्षेत्र में दिनकर जी आधुनिक युग की प्रमुख समस्याओं को स्पष्ट रूप से प्रकाश में लाने में सफल हुये हैं। महाभारत के एक अध्याय की पृष्ठभूमि लेकर दिनकर जी ने हमारे समक्ष एक जीवन दर्शन प्रस्तुत किया है तथा मानव व्यवहार की शिक्षा दी है। महाभारत के युधिष्ठिर भीष्म संवाद को लेकर प्रस्तुत काव्य की रचना की है। किन्तु अधिकांश में दिनकर जी ने आधुनिक युग से ही प्रेरणा ग्रहण की है और दिन प्रति दिन की विषम समस्याओं का ही समाधान करने का प्रयत्न किया है।

कुरुक्षेत्र की प्रमुख समस्या

महाभारत के भीषण नरसंहार तथा चतुर्दिक करुण हाहाकार से संत्रस्त युधिष्ठिर का मन और हृदय आत्मग्लानि से भर जाता है। विजेता की स्थिति में होते हुए भी उन्हें अपने चारों ओर युद्ध में वीर गति प्राप्त व्यक्तियों की आत्मायें व्यंगवाण छोड़ती हुई दृष्टिगोचर होती हैं। उनके मस्तिष्क के सम्मुख नानाप्रकार के दृश्य उपस्थित होकर शीघ्र ही विलीन हो जाते हैं। वे स्वर्ग की ओर जाते हुए दुर्योधन को देखते रहे जो उनकी ओर एक कुटिल व्यंगात्मक मुस्कान छोड़ते हुए स्वर्ग की ओर जा रहा है। अपने इसी शंकाकुल तथा द्विधात्मकता पूर्ण मानसिक संताप को लेकर वे भीष्म पितामह के सम्मुख उपस्थित होते हैं। युधिष्ठिर को प्रतीत होता है कि उनके वैराग्य में छल करुणा में दम्भ और न्याय में प्रतिशोध की अग्नि निहित है। किन्तु भीष्म पितामह स्वयं ही बुद्धि तथा भावना के संघर्ष में उलझे हुए थे। युधिष्ठिर जिस प्रकार अपनी शिकायत व्यक्त करते हैं और जिस प्रकार भीष्म पितामह उसका सतर्क समाधान करते हैं यही कुरुक्षेत्र का मुख्य विषय है।

युद्ध की अनिवार्यता

कुरुक्षेत्र के प्रारम्भ में ही युद्ध विषयक समस्या उठाई गई है। आखिर वह नरसंहारक और विनाशकारी युद्ध जिसके कारण चारों ओर कुरूपता तथा भीषणता का साम्राज्य स्थापित हो जाता है, किस कारण होता है। इसका मुख्य उत्तरदायित्व किस पर है—संपूर्ण समाज पर—अथवा उसके नियामक तथा संचालक किसी व्यक्ति विशेष पर जिसके अन्तर्मन में प्रसुप्त विचार एक भीषण विस्फोटक युद्ध ज्वाला के रूप में प्रकट होते हैं। युद्ध के औचित्य के प्रमाण में प्रायः यह तर्क उपस्थित किया जाता है कि युद्ध देश तथा जाति के सम्मान की रक्षा के लिए किया जाता है। किन्तु लेखक इस तर्क का स्वीकार न करते हुए प्रश्न करता है कि क्या देश की लज्जा का विषय ही कोई तत्व है। लेखक की दृष्टि में व्यक्ति विशेष के हृदय में प्रज्वलित द्वेष और प्रतिशोध की भावना ही युद्ध के रूप में व्यक्त होती है। संक्षेप में युद्ध राष्ट्रीय नेताओं की मन ज्वाला को शान्त करने का उपक्रम मात्र है। फिर सहसा प्रश्न उठता है कि क्या कोई व्यक्ति स्वतः युद्ध चाहता है। लेखक का मत है कि साधारणतः व्यक्ति युद्ध नहीं करना चाहता बल्कि उसे तो विवशतः युद्ध की भट्टी में अपने आप को झोंकना पड़ता है। युद्ध के कारण जो सर्वत्र कुरूपता तथा भयंकरता व्याप्त हो जाती है दीर्घ काल तक जिस अव्यवस्था का सामना करना पड़ता है उसके कारण कोई भी व्यक्ति से दूर ही रहना चाहता है। अपनी इसी दुविधा को ले कर युयुत्सु धृतराष्ट्र के सम्मुख उपस्थित होते हैं।

> जानता हूँ लड़ना पड़ा था
> हो विवश किन्तु
> चाहु सनी प्रीत मुझ
> दीखती अशुद्ध है।
> ध्येय जन्य सुख या कि
> साधु दुख शान्ति जन्य
> ज्ञात नहीं, कौन बात
> नीति के विरुद्ध है।
>
> जानता नहीं मैं कुरुक्षेत्र
> में खिला है पुण्य
> इतना महान पाप यहाँ
> फूटा बना बना युद्ध है।

युधिष्ठिर को इस प्रश्न का उत्तर देते हुए भीष्म उसके स्वरूप तथा सत्ता का परिचय देते हैं। भीष्म युद्ध की तुलना उस आंधी से करते हैं जो एक वेग के साथ वन की अशक्त तथा कोमल लताओं को उखाड़ कर फेंक देती है। बलिष्ठ और सशक्त शाखाओं वाले वृक्ष इससे भयभीत नहीं होते न उनकी कोई हानि होती है। तूफान के बाद वन की विध्वस्त स्थिति को देख कर शोक और सन्ताप करना जिस प्रकार मूर्खता है उसी प्रकार युद्धोत्तर भीषण नरसंहार के परिणामस्वरूप व्याप्त विनाश को देख कर आत्मग्लानि में डूब जाना भी कायरता है। जिस प्रकार आंधी प्रकृति के भीतर आवश्यक प्रक्रिया का विस्फोट है उसी प्रकार युद्ध मानव समाज में संचित होने वाली विद्वेष और प्रतिशोध की वृत्तियों का विस्फोट है। जिस प्रकार आंधी और बवंडर का उत्तरदायित्व किसी एक वस्तु अथवा और व्यक्ति पर नहीं है, उसी प्रकार युद्ध का उत्तरदायित्व कोई व्यक्ति विशेष अपने ऊपर ले कर आत्मग्लानि में डूब जाय तो यह विडम्बना ही होगी। युद्ध की चिनगारी व्यक्ति के हृदय में उत्पन्न होती है। युद्ध की ललकार सुन कर प्रतिशोध की भावना जाग्रत हो जाती है, रक्त खौलने लगता है और तलवार स्वयं हाथ में आ जाती है।

श्री दिनकर

मानव बुद्धि से पर

इस प्रकार लेखक ने युद्ध को अनिवार्य और मानव बुद्धि से पर बतलाया है। युद्ध की अनिवार्यता के सम्बन्ध में दिनकर जी के अपने तर्क अवश्य हैं किन्तु युद्ध को रोकने का कोई अमोघ उपचार सुझाने में वे प्रायः असफल रहे हैं। युद्ध में सम्मिलित होने वाले व्यक्ति व समूह या राष्ट्र की नैतिकता या औचित्य की परीक्षा भी लेखक ने एक ही कसौटी पर स्थिर की है और वह है—ज्वलित प्रतिशोध की भावना। ज्वलित प्रतिशोध कभी पाप पूर्ण नहीं हो सकते अर्थात् युद्धाग्नि में आहुति देने के लिए विशुद्ध प्रतिशोध की भावना के अतिरिक्त और कुछ भी आवश्यक नहीं। युद्ध की अनिवार्यता के सम्बन्ध में दिनकर जी ने एक और भी तर्क प्रस्तुत किया है। तप करुणा क्षमा आदि गुण व्यक्तिगत धर्म हैं। वह सामूहिक गुण नहीं है अतः समाज में इनका प्रयोग व्यापक रूप से नहीं किया जा सकता। इस प्रकार व्यक्तिगत और सामूहिक धर्म भिन्न भिन्न होने की मान्यता के आधार पर युद्ध को चिरस्थायी मानने की प्रवृत्ति प्राप्त होती है। अनन्त और सम्भवतः सबसे अधिक प्रभावशाली तर्क संसार में हिंसा की प्रधानता है। धर्म तप और अहिंसक व्यक्ति की करुणा कल्पना है। जब तक संसार में हिंसक और अन्य पशुपूर्ण वृत्तियों की प्रमुखता रहेगी तब तक युद्ध अनिवार्य होते ही रहेंगे। किन्तु लेखक ने उन अहिंसक प्रवृत्तियों के शमन का कोई मार्ग निर्देशन नहीं किया है।

युद्धों में अन्तर

स्वार्थ साधन के हेतु किये गये युद्धों से लेखक ने धर्मयुद्ध की तुलना भी की है। दलितों और शोषितों का क्रोध व प्रतिशोध भावना से प्रबुद्ध हो कर जाग उठता है व युद्ध धर्मयुद्ध बन जाता है और वह न्यायोचित है। इस प्रकार दिनकर जी ने आधुनिक परिस्थितियों में समाज की मान्यता के आधार पर प्रतिष्ठित करने का क्रान्तिमय मार्ग सुझाया है और युद्ध को अनिवार्य बता पर्याप्त कर दिया है।

कुरुक्षेत्र का जीवन दर्शन

कुरुक्षेत्र में भीष्म युधिष्ठिर को वैराग्य भावना त्याग कर जीवन क्षेत्र में प्रवेश करने के लिये प्रोत्साहित करते हैं। सन्यास ले के वन में पलायन कायरता के अतिरिक्त कुछ नहीं। जब तक एक भी मनुष्य के हृदय में सहानुभूति और करुणा का लेशमात्र भी है तब तक मनुष्यता के लिये निराश होने की आव-

[शेष पृष्ठ १२ पर]

नैनीताल की

[श्री हरिश्चन्द्र गुप्त

नैनीताल चीना शिखर से विद्युत प्रकाश से जगमगाता रात्रि का मनमोहक दृश्य।

नगाधिराज हिमालय में कई ग्रीष्म पुरियां स्थित हैं यथा कलिम्पोंग, अल्मोड़ा, रानीखेत, दार्जलिंग मसूरी, नैनीताल, शिमला, डलहौजी, लैन्सडाउन, धर्मशाला, सोलन, और शिमला आदि। यह ठीक है कि यात्रा की सुविधा और स्वास्थ्य की दृष्टि से मसूरी इन सब में श्रेष्ठ है। किंतु नैनीताल की स्वर्गिक आभा, ताल का सुन्दर, नेत्राकर्षक और मनोरम दृश्य इसे मसूरी से कहीं अधिक सुन्दर कहा जा सकता है। वहां की सुन्दर सुन्दर गगनचुम्बी पहाड़ियों पर खिले हुए पुष्प इस प्रकार मन हृदय को मोह लेते हैं कि जैसे किसी स्वर्गिक अप्सरा का रत्न-जड़ित उत्तरीय बरबस तपस्वियों का हृदय रिझा लेता था।

नैनीताल में लोग बड़ी बड़ी दूर से प्रकृति के इस सुन्दरतर प्रदेश को देखने के लिये आते हैं और उसकी एक कल्पना अपने मस्तिष्क में बना कर चले जाते हैं और वह भी विवश होकर। क्योंकि जो वहां एक बार ग्रीष्म ऋतु में आगया वह जब तक काफी मात्रा में ठंड न पड़ने लगे तब तक जाने की सोच भी नहीं सकता—यही एक चमत्कार है इन पहाड़ियों का अपनाने की भावना एक सुन्दर रहस्य है यह। जब ओर असह्य ठंड पड़ने लगती है तब नैनीताल के प्रेमी अगले ग्रीष्मकाल तक विरह-वेदना सहने के लिए छोड़ जाते हैं, विवश जो हैं वह!

नैनीताल में सुख दुःख, सौन्दर्य—कुरूपता, और हानि लाभ आदि सभी दिखते हैं—एक अजीब सामञ्जस्य है इसमें धूप छांह जैसा, और यह प्रकृति का एक अटूट नियम भी है।

तो नैनीताल में जहां पहाड़ियों पर ऊंचे ऊंचे स्थानों पर बंगले आदि दिखाई देते हैं वहां पहाड़ियों की जड़ों में—खोतारों में घास फूस के, कुछ गरीबों के बगले? कुटियाएं भी दिखाई देंगी। धनवानों के अट्टहासों के बीच गरीबों की कुछ करुण किन्तु दबी हुई चीखें भी सुनाई देंगी। आज होटल की भव्य इमारत में बजते आरकेस्ट्रा की मधुर और कर्णप्रिय ध्वनियों में, गर्मियों में आने वाले साजन?—वेश्या प्रीतम की बाट निहारती हुई और आने वाले को लौटता न देख कर, करुण स्वर में ग्रामीण भाषा के हृदय को छू लेने वाले गीतों की कुछ पंक्तियां इसी प्रकार खो जाती हैं जिस प्रकार दहाड़ते हुये उदधि में कल-कल करती हुई सरिताओं की मधुर किन्तु शान्ति ध्वनियां समा जाती हैं। एक ओर जहां होटलों और रेस्त्राओं में चम्मच-कांटों की ध्वनियां सुनाई देती हैं वहीं उनसे कुछ दूर पर फूस की झोपड़ियों से मिट्टी के बरतनों की और लकड़ियों पर पड़ते हुये कठोर और कर्णकटु प्रहारों की आवाजें सुनाई देती हैं। एक ओर जहां रम, शैम्पेन, व्हाइट हार्स और ब्लैक नाईट की व्हिस्की की बोतलों के मुंह खुलते हैं वहां दूसरी ओर देशी और ठर्रे की मदिरा की आराधना की जाती है, जो कभी भी आराधकों को छुट्टी नहीं देती। कहते हैं और सत्य भी है कि 'पहले मदिरा को मनुष्य पीता है और बाद में मदिरा मनुष्य को पीने लगती है।' परिणाम स्वरूप नैनीताल के वे कुली लोग जिन्हें कभी अधिक धन प्राप्ति हो जाती है—शरीर में स्वाभाविक उष्णता बनाए रखने के लिये चाय छोड़ कर मदिरा पान करने में ही अपना गौरव समझने लगते हैं।

नारी का सम्मान!

एक ओर जहां नैनीताल में नारी

नैनीताल की भूमि और तराई मेघ मालाओं और सूर्य किरणों

की पूजा होती है वहां दूसरी ओर उसका घोर अपमान भी। बड़ी २ कोठियों और बंगलों में, जब विश्व के एक भाग में निद्रादेवी का साम्राज्य छाया होता है, कुछ नारियां खुले आम अपने सौन्दर्य का क्रय विक्रय करने में लीन होती हैं—मजबूर जो है न वे बेचारी, असहाय! गरीब!! निर्बल!! ऐसी कोठियों में, बंगलों में जहां सौन्दर्य का मोल (गुप्त रूप में) होता है, वहां पर नारी का सतीत्व चन्द चांदी के चमकते हुये टुकड़ों पर निर्धारित किया जाता है, जहां नारी की विवशता, दरिद्रता और कमजोरी से मनमाना लाभ उठाया जाता है। वहीं ठीक उन्हीं स्थानों पर ऐसा सुना जाता है कि बड़े २ धर्मों के ठेकेदार पूंजीपति और समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति रहते हैं। रात्रि में अपनी कामपिपासा को शांत करते हैं और दिन में वह वही बन जाते हैं जो कि वह नहीं हैं जिसका कि वे बाना वह पहिने हुए होते हैं। जो शेर की खाल में गीदड़ होते हैं या रात्रि के कौशिक सम होते हैं। नैनीताल में आपको तड़क-भड़क देखने को मिलेगी, रहने के लिए मनचाहा स्थान मिलेगा, भोजन मिलेगा, आमोद-प्रमोद मिलेगा और वस्तुतः हर वस्तु मिलेगी—पर, हां आपकी जेबों में लाख-लख के भगवान्—नगद नारायण! बिना इसके आप 'कुछ' नहीं हैं। यदि आपकी जेब साफ हो जाए तो उस जैसी परिस्थिति की कल्पना कीजिये—कहां से खाएंगे, क्या पीएंगे और कहां रहेंगे? तो, इन होटलों, रेस्त्राओं और डाक बंगलों में रहने और इनका पूरा-पूरा उपयोग करने के लिए चाहिए—गरम जेब! गरमा गरम जेब!! और फिर सब कुछ मौजूद, सर्वसाधन उपलब्ध!! कमरे में या कमरे में पड़े-पड़े ईश्वर को कोस

रमणीय नैनीताल का एक प्रशस्त मैदान और राजमार्ग

नमोहक छटा

साहित्यालङ्कार]

: सारी चीजें कदाचित आपके बरब ले जायेंगी—निहारे करेंगी और आर र ाह-ा गे, उकता जाएगे तो वह मह करेंगी और आप सो जायेंगे, ी प्रकार, जिस प्रकार घर म आराम से ते होंगे।

राजयक्ष्मा के रोगी

एक और आश्चर्यजनक बात नैनी ल के विषय में है। लोग, और अधि ...

...आदि भी इस नगर में हैं, किन्तु वह लिया केवल धनवानों को ही मिल सकती है। क्योंकि वित्तार्जन और धनार्जन में बहुत कम, विरले ही लोग भेद भाव समझते हैं।

शांति की खोज में आने वालों को किसी

जिला नैनीताल में स्थित भीमताल की एक झलक

...पहाड़ में कितनी मनोरम और आकर्षक दिखाई देती है

...र बीमार लोग और ज्यादातर (टी० बी०) राजयक्ष्मा के शिकार रोगी यहां ..., अपने जीवन को बचाने और रोग-...से स्वास्थ्य लाभ के हेतु आते हैं, ... नैनीताल नगर में ही गरीबी से अर-... युद्ध करते हुए और गरीबों में काफी ... जिसे जवान पुरुष ही इस दुष्परिणाम-...री रोग में उलझ कर संसार को त्याग ...ते हैं। वहां अस्पताल हैं, किन्तु बड़े ...गों के लिए ही उनकी सृजना हुई ...है। वहां गरीबों के रोग डाक्टरों ... कम्पाउण्डरों की जेबों मे फायदा ... रहते हैं, जहां कि उनकी जेबों में ...ए आराम पड़े होने चाहिए। ...विधा के कई कालिज और स्कूल

गुहा में आत्म-शांति चाहे अवश्य मिल जाय, परन्तु यदि कोई नगर में रह कर शांति की खोज करे तो वह यदि मूर्ख नहीं तो बौद्ध-मूर्ख अवश्य कहा जा सकेगा। शांत वातावरण होते हुए भी प्रत्येक के हृदय में अशांति का तूफान सदैव ही करवटें बदलता रहता है।

मजदूर वर्ग की स्थिति

नगर का अछूत और मजदूर वर्ग उन मकानों की सबसे नीचे की मंजिलों में रहते हैं। जिन्हें अंधेरी तहखानों का नाम दिया जा सकता है। वहां बदबू, सीलन और बीमारियों के कारखाने खुले हुए हैं। मेहतर लोग अपने सिरों पर मल की बाल्टी उठाते हैं और बदले में उन्हें मिलते हैं ३४-३५ रुपये! यदि ये मेहतर लोग और घरों में फालतू समय में काम करते हैं तो इन्हें महगाई के रुपये भी नहीं दिये जाते।

स्वतन्त्रता के बाद

भारत में अधूरा आने वाली तथाकथित आज़ादी के बाद तालाब के फ्लैट पर लाखों रुपया व्यय करके उसके ऊपर एक रंग बिरंगा फौवारा बनाया गया है। मजदूरों के घरों की रोशनी लेकर तालाब की शान को उसके किनारों को खूब सजाया गया है। इतनी सब बातों के होते हुए भी मजदूरों और अछूतों के झोंपड़ों का वही हाल है, जो पहिले था। वह इस प्रकार की व्यवस्था के नाम को रोते हैं, किन्तु बरसात में।

वह नैनीताल जो कि भारत के सभ्य, सुसभ्य, सुशिक्षित, गरीबों के हमदर्द और जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों के लिए सैर सपाटे की एक रमणीक वनस्थली है, वहीं मानवता पर कलंक के स्वरूप मजदूरों और अछूतों की एक नगरी वर्ग लोक भी है।

उपर्युक्त बातें तो केवल एक बड़ी सिरीज का अवलोकन मात्र है। यदि कोई चाहे तो वहां पर जाए और विशेष रूप से अछूत और मजदूरों के जीवन के अध्ययनार्थ दो तीन वर्ष में कुछ ज्ञानार्जन कर जनता के सम्मुख इस नैनीताल के स्वरूप को और भी खुले शब्दों में सामने रखे। और फिर पूछे हम अपनी भारतीय सरकार से बोलो, तुम में क्या है, क्या यही तुम्हारा रामराज्य है, यही तुम्हारे रामराज्य की झांकी है? यही सुधार तुम देश में करना चाहते हो, और क्या नैनीताल के गरीब निवासियों से इसी बात पर तुम 'वोट' लेना चाहते हो?

★★

[पृष्ठ ११ का शेष]

श्यकता नहीं। आधुनिक विज्ञान की प्रगति मनुष्य को मानसिक रूप से उन्नत की चरम सीमा पर ले गई, किन्तु इससे उसके हृदय का विकास नहीं हुआ है। बल्कि वह संकुचित हो गया है। जब मनुष्य के हृदय का विकास होगा। उसकी सद्वृत्तियां जागृत होंगी तथा पारस्परिकता, समता, समरसता, सामञ्जस्य का विकास होगा। तभी वास्तव में विश्वशांति का मार्ग प्रशस्त होगा। यही कुरुक्षेत्र का आधुनिक युग में सन्देश है।

वीर अर्जुन साप्ताहिक का मूल्य

वार्षिक	१२)
अर्ध वार्षिक	६॥)
एक प्रति	चार आना

नैनीताल का एक प्राकृतिक दृश्य

प्रेम-धूलि

[पृष्ठ ६ का शेष]

अर्चना को प्रदीप की यह नीरवता अच्छी नहीं लगी, बोली— 'क्या दशा होती जा रही है तुम्हारी ?

'कुछ भी तो नहीं' ।

प्रदीप ! अर्चना खड़ी है, ओ मूर्ख !! वह तुमसे बातें करने आई है एक बार तो उसे बैठने को कहदे'······

बड़ा साहस करके बोला वह, 'बैठो न कुछ देर······'

अब बैठ जाओ अर्चा ! यह निर्मम तुम्हारा हाथ पकड़ कर नहीं बैठायेगा, न ही बैठने का अधिक आग्रह करेगा, तुम तो जानती भी हो इस की प्रकृति। अरे नहीं एक बार तो मना कर के देखो ही ।

'नहीं ! इस समय नहीं बैठूंगी··· भाभी भी साथ हैं'— कहकर अर्चा मानों चलने को तैयार हुई किन्तु वह गई नहीं ······ऐसा अवसर क्या फिर कभी आयेगा ?

'अर्चा ! कितना सुहावना समय है'

'हा—और उससे भी सुन्दर जीवन के वह क्षण हैं।'

'देखो न अर्चा यह सुन्दर क्षण होते हुये भी कितने सार हीन हैं। इनके भुलावे में मत पड़ो, भूल जाओ इन्हें'···

अर्चना ने उसकी ओर ऐसे देखा जैसे अभी रो देगी, और फिर धीरे से बोली—'नारी का प्यार क्या इतना निर्बल होता है प्रदीप बाबू।'

'यह मैंने कब कहा ! मेरा मतलब तो केवल इतना ही था कि अब तुम्हारा विवाह हो चुका, तुम दूसरे की पत्नी हो······ मेरे साथ तुम्हारा सम्बन्ध अब··· '

'संबन्ध'······संबन्ध किस किस के साथ मैंने जोड़ा है प्रदीप ! मां, बाप, भैया, भाभी सभी से तो वैसा ही संबन्ध मेरा अब भी है फिर एक तुम्हारे साथ ही सबन्ध क्यों अनुचित हो गया विवाह होते ही ! यदि विवाह के पश्चात् मैं तुम्हें प्यार करती तो कदाचित अनुचित होता भी किन्तु मैं तो तुम्हें बहुत पहले से— जब मैं केवल बच्ची थी— तभी से प्यार करती हूं··· '

कितनी पागल है यह भोली अर्चना और कितना निष्ठुर है यह प्रदीप !! सब कुछ जानकर भी ऐसा कहकर सदैव ही बाला के हृदय को दुखा देता है । सत्य ही तो कहती है अर्चना—प्रेम तो अगाध है अनन्त है फिर उसकी सीमायें क्यों ?

प्रदीप ने अपनी गलती अनुभव की और उस की आंखों में झांककर बोला— 'ठीक कहती हो अर्चा ! मैं अब कभी ऐसा नहीं सोचूंगा·· '

और अब खुले से वह बातें करने में उलझ गये—ढेर सारी बातें वे करते गये सिनेमा की, कालिज की, सखी की; सहेलियों की,······और जब उस दिन वे एक दूसरे से जुदा हुए तो दोनों के मन पर जो एक भार सा था वह हट चुका था।

× × ×

स्कूल जाते समय आज अर्चा फिर आई। प्रदीप कमरे में बैठा कुछ पढ़ रहा था। अचानक अर्चना को आया देख वह कुछ व्यस्त-सा हो उठा ।

अर्चना आज उदास थी प्रति दिन उसके अधरों पर नृत्य करने वाली गुलाबी मुस्कान आज कहीं खो गई थी। नयनों में गंगा, यमुना हिलोरें ले रही थीं । अर्चना आती तो प्रायः थी किन्तु उसमें आज यह परिवर्तन क्यों ·· ?

धीरे से मुस्करा कर उसे हंसाने के लिये प्रदीप बोला— क्यों अर्चा खैर तो है··· ··आज यह मुहर्रमी सूरत क्यों बना रखी है ?

क्या उत्तर दे अर्चना ? वह कैसे कहे कि अब उसे जाना होगा, बिछुड़ना होगा उससे। बहुत कुछ कहना है, हृदय में तूफान है, क्या कहे ? कैसे कहे ?? कुछ समझ में नहीं आता !

अरे ! क्या बात है ? बोलती क्यों नहीं ? शंकित हो उठा प्रदीप।

अर्चना फिर भी नहीं बोली, जैसे वाणी मौन हो गई हो ! मुंह फेर कर उसने आंखों में तैरते आंसू पोंछ डाले ।

'नहीं बताओगी अर्चा ?'

'क्या बतलाऊं······' अर्चना ने ऐसे कहा जैसे वह न बताने को विवश हो ।

'तुम सुस्त क्यों हो इतनी ?'

और उत्तर देने के बजाय अश्रु भार से दबी पलकें फेर कर अर्चना चली गई— प्रदीप के लिए एक समस्या छोड़ कर ।

'अर्चना क्यों व्यथित है इतनी'— प्रदीप ने तो फिर उसे कोई आघात नहीं पहुंचाया !······नहीं !! तो फिर आज की अकुलाहट के पीछे क्या है ? क्या है ?

शाम को कालिज से लौटते समय अर्चा फिर आई। प्रदीप अब भी कमरे में ही बैठा सुबह की घटना पर विचार कर रहा था। अर्चना को देख कर वह चौंक उठा, किन्तु अर्चना बिना कुछ कहे सुने उसके सामने एक बण्डल रख कर लौटने लगी—एक बार उसने घूम कर देखा और फिर चली गई।

प्रदीप ने बण्डल खोल डाला। सुन्दर सुगन्धित रुमाल में लिपटा एक पत्र था और थी कागज में बंधी एक पुड़िया, जिस पर लिखा था-'प्रेम-धूलि !'

वह पत्र पढ़ने लगा—लिखा था '·········

अब तो वह भार सहन करने में असमर्थ हो गई हूँ, तुम्हारी निधि तुम्हें ही लौटा रही हूँ। मेरे प्यार की अंतिम स्मृति समझ कर इसे सदैव सुरक्षित रखना।

सुबह जो बिना कुछ बोले चली आई उसके लिए क्षमा कर देना। कल समय निकाल कर यदि मिल सको तो···'

अच्छा———विदा।

तुम्हारी—अर्चा

और उसी समय ममता आ गई बोली—'प्रदीप भइया अर्चा दीदी ससुराल जा रही हैं··· ''क्यों भइया ससुराल क्या बहुत बुरी जगह है ? जो अर्चा जीजी इतना रो रही है ?

सुन कर प्रदीप का दिल भर आया। उसकी अर्चा जा रही है—न जाने फिर कब आवे ! अभागा सिसक-सिसक कर रो पड़ा·········

सामने पत्रों की राख पड़ी थी— जिन्हें कभी रात्रि की शान्त नीरवता में, श्यामल घटाओं में और चान्दनी रातों में हृदय के उद्‌गारों से सजाया था— उन्हीं पत्रों की राख उसके सम्मुख बिखरी पड़ी थी, जिसे अर्चना अन्तिम उपहार के रूप में 'प्रेम-धूलि' कह कर उसे वापस लौटा गई थी—और वह रोता रहा ·····रोता रहा और सोचता रहा, न जाने क्या क्या · ······?

★

केश-प्रसाधन के विविध रूप

[कुमारी नीलिमा]

अनन्त काल से प्रत्येक देश तथा जाति की महिलाओं में केश शृंगार के अपने अपने विशिष्ट ढंग रहे हैं, जिनमें समयानुसार परिवर्तन भी होते रहते हैं। किसी जाति अथवा देश विशेष में कोई प्रथा जो जब शुरू हो जाती है, तब वह उस जाति अथवा देश का अपना फैशन हो जाता है। बैबीलोनियन में किसी समय बालों को घुंघरदार बनाकर एक रेखा में खड़ा करने की प्रथा थी। हीयन की गिरजाघर की पुजारिनें जब आराधना में तन्मय हो जाती थीं तब अपने बालों को अस्त-व्यस्त में कर लेती थीं। कालान्तर में अस्त व्यस्त ढंग से केशों का रखना ही सौंदर्य का प्रतीक माना जाने लगा।

साथ ही वे बालों में नाना प्रकार के सुगन्धित तेलादि लगाती थीं।

एक प्रसिद्ध किंवदन्ती

आस्ट्रिया की साम्राज्ञी एलिजाबेथ के सम्बन्ध में एक किम्वदन्ती प्रसिद्ध है। साम्राज्ञी अपने सिर के एक एक बाल से अत्यन्त प्रेम करती थी और वास्तव में उसके अनुपम सौंदर्य उपकरण उसके सुनहले बाल ही थे। वह एक सुनहले बालों का नकली गुच्छा सिर पर इस प्रकार रख लेती थी कि वे उसके अपने ही बाल प्रतीत होते थे वे केश एक सतत प्रवहमान झरने की भांति उसकी पीठ पर लटकते रहते थे। उसका भ्रम था कि उसके सिर पर से गिरा एक भी बाल अमूल्य और अलभ्य है। इसलिये केश शृंगार के

लम्बे-लम्बे केशों वाला लम्बा और बड़ा सिर किसी समय नारी के लिए गौरव का विषय और उसके सौन्दर्य का प्रतीक था। यहूदी और ग्रीस महिलायें साधारणतया बड़े बाल रखती थीं, और उनको सोने चांदी और हीरे मोतियों से सजाती थी। रोमन महिलायें किसी समय अपने बालों को टोप के आकार का बना कर रखती थीं। और साथ ही सौन्दर्य वृद्धि के लिये कुछ नकली बालों को अपने शरीर के चमड़े के साथ चिपकाये रहती थीं, ताकि वे स्वाभाविक लगें।

समय वह चटाई बिछा लेती थी, यदि शृंगारोपरान्त एक भी बाल उसकी चटाई पर गिर जाता तो उस दासी की शामत आ जाती थी जो उस समय मंगल-गीत गाती होती थी। इसलिए उसकी कोई भी दासी साम्राज्ञी के केश-प्रसाधन के समय उपस्थित होने में हिचकती थी। प्राचीन गौल्स जाति में लम्बे बाल सौंदर्य और सम्मान के सूचक होते थे। इसीलिए जूलियस सीजर ने इस जाति को अपने अधिकार में करते समय अपने आधि-पत्य के प्रदर्शन के रूप में कुछ व्यक्तियों के बाल काट डाले थे। ऐंग्लो-सैक्सन और डानेज जातियों में विवाह से पूर्व युवतियां बालों को खुला रखती थीं। किंतु विवाह के पश्चात् वे अपने बालों को काट कर एक-सा कर लेती थीं और फिर उनको नाना ढंगों से सजाती थीं। ग्रीस में किसी समय एक मनोरंजक प्रथा थी, जिसके अनुसार विवाह से कुछ दिन पूर्व ही युवक और युवतियां अपने बालों को काट कर किसी मूर्ति के सामने काट कर चढ़ा देते थे। मृत व्यक्तियों के बालों को अपने घरों के द्वार पर लगाने की प्रथा भी वहां बहुत समय तक प्रचलित रही। उनका विश्वास था कि मृत व्यक्ति की आत्मा को तब तक शांति नहीं मिलती, जब तक कि उसके बालों को काट कर न फेंक दिया जाय।

भारतीय केश-प्रसाधन

भारतीय महिलाओं में भी केश-प्रसाधन के विभिन्न ढंग रहे हैं, जिनमें एक ढंग जो सर्वाधिक प्रचलित रहा है। त्रिवेणी नाम से जाना जाता था। इस विशेष ढंग के अनुसार बालों को तीन भागों में विभाजित कर उन्हें सिर के एक भाग में ही स्थित कर दिया जाता था। विवाहित महिलाएं बालों को सिर पर ही बांध कर रख पाती थीं। केवल अविवाहित या नव-विवाहित महिलाएं ही बालों को लटके रहने देने की अधिकारिणी होती थीं।

वियोग के क्षणों में

कालिदास-कालीन महिलायें जब कभी लम्बे काल के लिए अपने पतियों से विलग रहना पड़ता था, वे बालों को एक वेणी में ही रख लेती थीं। यह 'एक वेणी' पद्धति के नाम जानी जाती थी, जिसका कालिदास अपने मेघदूत में स्थान-स्थान पर वर्णन किया है।

प्राचीन मिस्र में बालों को लाल रंग की पद्धति प्रचलित थी।

जंगली जातियों में

केवल सभ्य और सुसंस्कृत जातियों में ही नहीं, असभ्य और जंगली जातियों में भी केश-शृंगार की ओर विशेष से ध्यान दिया जाता है। कहीं छोटे केश और कहीं लम्बे-लम्बे केश—प्रायः जंगली जाति में अपनी-अपनी प्रथायें हैं।

आजकल शिक्षित महिलाओं में वेणियां लटकाने की प्रथा जोर पकड़ती जा रही है। कहीं बालों को भी गुच्छे रूप में रख कर पुष्पादि से गुंथित किया जाता है।

★★

अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष और कूटनीति का केन्द्र : ईरान

[पृष्ठ १० का शेष]

खुले रूप में विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। ईरान सरकार द्वारा रूस के प्रति विरोध भी प्रदर्शित किया गया, परन्तु वह निष्फल सिद्ध हुआ। अन्त में १० जनवरी १९४६ को संयुक्त राष्ट्र संघ से प्रार्थना की गई। संघ ने आपसी बातचीत से झगड़े को सुलझाने की सलाह दी। अन्त में ४ मई को रूस को कुछ शर्तों के साथ तेल निकालने की सुविधा प्रदान कर दी गई। साम्यवादी तूदेह दल ने फिर भी अपना आन्दोलन जारी रखा। एक आम हड़ताल हुई। अनेक स्थानों पर भीषण रक्तपात हुए। अन्त तूदेह दल के ३ सदस्यों को मन्त्रीमंडल में ले लिया गया। अराजकता फैलने पर जनता ने मांग की कि प्रधान मन्त्री के अतिरिक्त सब मन्त्री त्यागपत्र दें। रूस ने इन झगड़ों का उत्तरदायित्व ब्रिटेन पर डाला। अन्त में नवीन मन्त्री-मण्डल का निर्माण किया गया और समस्त साम्यवादियों को बाहर निकाल दिया गया।

कुछ समय पश्चात् मजलिस को बर्खास्त कर दिया गया। नवीन मजलिस का निर्माण करने पर उसने गत समझौते को मानने से इन्कार कर दिया क्योंकि उसे भय था कि इस प्रकार तेल रूस के आधीन हो जायेगा। इस प्रकार रूस व ईरान के सम्बन्ध कटु हो गये और रूस ने अपने सब सम्बन्ध तोड़ दिये।

१९४६ में संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने भी ईरान से एक सैनिक सहायता सन्धि की। इस सन्धि के अनुसार यह निश्चय किया गया कि बिना अमरीका से परामर्श लिये ईरान की सैनिक व्यवस्था में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकेगा।

सरकार व शासन

ईरान के वर्तमान शाह मोहम्मदरिजा १९४१ में अपने पिता के गद्दी छोड़ने पर शासक बने थे। वह मन्त्री मण्डल की सहायता से अपना कार्य चलाते हैं। देश की पुरुष वयस्क जनसंख्या द्वारा मजलिस का चुनाव किया जाता है। २१ क्षेत्रों से १३६ सदस्यों का चुनाव किया जाता है। शाह कर इत्यादि लगा सकते हैं या हटा सकते हैं। धारा सभा में विरोधी दल सगठित नहीं है। देश में सैनिक व्यवस्था भी पूर्ण रूप से उचित नहीं है। रिजाशाह के समय में कोई विशेष राजनैतिक दल न था परन्तु आज वहां अनेक दल हैं। समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता पर अनेकों बार कुठाराघात किया जाता है।

तेल की राजनीति व अन्य उद्योग

तेल के अतिरिक्त देश में अन्य कई उद्योग हैं। इनमें कपड़े की मिलें व ऊन उद्योग प्रमुख हैं। १९३७ में देशमें प्रायः ३० लाख गज कपड़ा तैयार किया गया था। देश में खनिज पदार्थ भी थोड़े-थोड़े मात्रा में पाये जाते हैं।

आज ईरान की राजनीति प्रदेश की सीमा से निकल कर तेल की सीमाओं में प्रविष्ट हो गई है। १९०८ में मस्जिदे सुलेमान में तेल का पता लगा था। तब से लेकर आज तक निरन्तर इस उद्योग की उन्नति हो रही है। अकेले १९४५ में ही ईरान को १५ लाख पौंड की तेल से आय हुई थी। तेल की राजनीति के कारण ही ईरान को अपने सुयोग्य मन्त्री व सैनिक जनरल रजमारा से हाथ धोना पड़ा है। रूस व ब्रिटेन के संघर्ष आज इस प्रदेश में बढ़ते जा रहे हैं (अप्रत्यक्ष रूप में)। जनरल रजमारा की मृत्यु के पश्चात् यह विश्वास किया गया था कि ईरान पर अमरीका का जाल फैल जायेगा। परन्तु आजकल की स्थिति का निरीक्षण करने पर ज्ञात होता है कि बाजी रूस के हाथ रहेगी। ईरान ने राष्ट्रीयकरण करने की चेतावनी देकर ब्रिटेन को असमंजस में डाल दिया है। कुछ भी हो इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ब्रिटेन अपने ईरान में स्वार्थों को सहर्ष न त्याग कर सकेगा। संघर्ष की दशा में यह निश्चित है कि रूस ईरान की सरकार की सहायता करेगा। यदि रूस ऐसा न भी करे तब भी उसकी सेनायें देश में घुस अवश्य जायेंगी। इस प्रकार आज देश का भविष्य अन्धकार में प्रतीत होता है।

जीवन-बोध और सभ्यता

★ श्री गजाननराव माडखोलकर

आज का मानव जीवन को तोड़ कर बुद्धि और शिक्षा, धन और ऐश्वर्य के खोखले अहंकार और दम्भ में डूबा होते हुए भी कहता है कि मेरा जीवन सुधार के लिए है। क्रान्ति के लिए है। किन्तु यदि मानव को जीवन के सहज बोध को अपने में फिर से जाग्रत करना है तो उसे जीवन को स्पर्श कर के चलना होगा। श्री माडखोलकर मराठी साहित्य के सुप्रसिद्ध आलोचक तथा निबन्धकार हैं। प्रस्तुत निबन्ध में आपने जीवन की यथार्थ व्याख्या की है।

जब मानव ने विलास-कक्ष में बैठ कर ऐश्वर्य और लक्ष्मी की जीवन-आकांक्षाओं से खेल किया तब उसने सृष्टि कर दी—एक आदर्शवाद के वृक्ष की—जिसमें बड़े ही सौरभ एवं मादक पुष्प फूलते थे। पर उसकी जड़ें खोखली थीं, क्योंकि उसकी सृष्टि का निर्माण विलास की नींव पर हुआ था। और इस तरह आदर्श को हमने छोड़ा। कुछ दिन तक मानव की यह रंगरेलियां चलती रहीं—चलती रहीं और तब एक दिन जीवन ने मुस्करा कर कहा—आओ जरा और कुछ खेलें—आओ जीवन का वसन्त मना लें। और तब विलास की इन प्रतिक्रियाओं ने जन्म दिया यथार्थवाद को।

यथार्थवाद मानव को एक बोध हुआ। एक चेतना उसमें आयी और वह संघर्ष रत हो गया। क्योंकि यथार्थ ने जन्म दिया था—जीवन की तमाम कशमकशों को।

किन्तु इस सबके साथ मानव ने जीवनबोध का विकृत कर दिया। सभ्यता की दौड़ में वह जितना आगे आया, उतना ही जीवन की चेतना को उसने विलास के सागर में खो दिया—यहां तक कि आज जीवन यथार्थ से—उस यथार्थ से जो कवि एवं कलाकार के शब्दों में सत्य है, शिव है और सुन्दरम् है—टूट कर विलास की गोदी में जा पड़ा और अपने पतन की सिसकियों को लिये रो रहा है। किन्तु यह रुदन क्या अनन्त है? सभ्यता में तो हम बढ़ गये, लेकिन जीवन की प्रगति हमारी कितनी तेजी से कुण्ठित हुई, यह हमने न देखा। विद्या के मार्ग को हमने इतनी तेजी के साथ तय किया कि वहां हम पहुँचे जहां विद्या अविद्या बन गई। हम चकराये, किन्तु समझे नहीं। बुद्धि की गरिमा से हम इतने अभिभूत हो गये कि हमने श्रद्धा और विश्वास को धता बता दिया और तब हुआ यह कि हम में जीवन नहीं रह गया—उसका बोध लुट गया और हम जिंदा लाशों में परिवर्तित हो गये।

जीवन के सहज बोध को यदि अपने में मानव को फिर से जाग्रत करना है तो उसे जीवन को स्पर्श करके चलना होगा।

जब मैं देखता हूँ कि आज का मानव जीवन को तोड़ कर, बुद्धि और शिक्षा धन और ऐश्वर्य विलास और पाप, सुरा और सुन्दरी के खोखले अहंकार, दम्भ और अभिमान में डूबा हुआ मानव जब चलता है—तो कहता है कि कि मेरा जीवन सुधार के लिये है, क्रांति के लिये है। मानवता के कल्याण के लिए है।

किन्तु मैं कहता हूँ कि यह बकवास है। एक ओर विलास की सृष्टि करते हो और कहते हो, यह कल्याण की रचना हो रही है, तो तुम पर हंसी आती है।

कदाचित् कुछ होंगे जो कहने लगेंगे कि यह जीवन का बोध नहीं है जो तुम बतला रहे हो। कुछ होंगे जो कहेंगे कि मैं कट्टरता और कठमुल्लापन की शिक्षा दे रहा हूँ। लेकिन नहीं। मैं धर्म को एक अफीम का नशा कहता हूँ। मैं ईश्वर पर विश्वास करता हूँ। किन्तु जीवन के बोध को, उसके भीतर अप्रच्छन्न एक आचरण को कुण्ठित होते नहीं देख सकता हूँ।

मैं पूछता हूँ कि क्या आचरण को खोकर जीवन जीवनीय रह जाता है? आचरण की अनुप्रेरणा से ही जीवन के

खोकर मानव ने पैसे कमाये, बड़ी-बड़ी गगनचुम्बी अट्टालिकायें और प्रासाद निर्मित किये—वासना का अम्बार लगा दिया गया। लेकिन वह भी हम सबने मूक हो कर, कातर होकर, बेबस होकर स्वीकार कर लिया। क्यों? इसलिये कि हममें यथार्थ जीवन का बोध नहीं था। हम नहीं जानते थे कि जीवन कहते किसे हैं।

और मैं कहता हूं कि हम आज भी नहीं जानते कि जीवन क्या है, उसका बोध क्या है।

हम चल रहे हैं, हम कार्य कर रहे हैं, हम महल, हवाई जहाज, मोटर और टेलीफून, रेडियो बना रहे हैं, तो हममें इसलिये जीवन है—यह सब मैं कुछ नहीं

बोध में एक दीप्ति, एक चमक, एक ओज और एक प्रगति आती है। और तब जीवन स्वयं एक प्रकाश पुंज बन जाता है।

पुरातन की कब्र पर हमने जिस नवीन की रचना की, उसकी बाह्य गुफाकारियों में हम कुछ इतना भटक गये कि मानवता की वाणी, उसके निपीड़न का स्वर ही हम न सुन सके। हमने देखा कि हमारे सामने जीवन का—जीवन के बोध का सौदा भाव, उसकी खरीद फरोख्त चांदी के चमचमाते सिक्कों से की गयी लेकिन हमारी आंखें देखती रहीं। हमने देखा कि जीवन को

मानता। मैं जीवन उसे मानता हूं जो सत्य भावना पूर्ण हो, जिसमें एक प्रवाह हो। जो मानवता को उत्पीड़ित और कराहता हुआ देखकर ज्वालामुखी की तरह धधक उठे। जो चिनगारी नहीं—एक अग्नि पुंज होता है, जिसकी लपलपाती जिह्वाओं में एक रोष होता है, एक गति होती है, एक तेजी होती है। मैं तेजी चाहता हूं।

और जीवन का बोध?—यह एक भावना है, जो जीवित होनी चाहिये। एक ऐसी भावना जो अतीत में श्रद्धा और विश्वास के साथ खेलती थी, आनन्द करती थी—एक ऐसी भावना जो आज

वर्तमान में कृत्रिम गुफाकारियों में भटक रही है। यह क्यों? इसलिये कि वहां उसे एक सत्ता, एक क्षणिक उल्लास प्राप्त हो जाता है। एक उत्तेजना।

* * *

आज वर्तमान सभ्यता का जो रूप है, उसमें जीवन नहीं है, उसकी ज्योति नहीं है। क्योंकि जीवन को स्वयं हमने अपनी कृत्रिम बौद्धिक प्रगति से जो व्यक्ति के हृदय को कुचल कर आगे बढ़ी है विकृत कर दिया है।

इसलिये यदि हम जीवन के सच्चे बोध को फिर से अपने भीतर अनुभव करना चाहते हैं। यदि हम चाहते हैं कि हम मानवता का कल्याण कर सकें तो हमें बर्नार्डशा के गम्भीर शब्दों में कहना होगा कि जीवन कोई धुंधली और छोटी मोमबत्ती के समान नहीं है। यह उस सुन्दर टार्च की तरह है, जिसे मानव को जीवन के इन विशिष्ट क्षणों में पकड़ कर अखण्ड प्रकाश के रूप में जलाकर देखना होगा जिससे कि मानवता की वर्तमान पीढ़ी के साथ ही भावी सन्तति भी जीवन के आलोक को देख सके। उसके प्राणों में एक आलोक—एक प्रकाश फैल जाय और तब हमें ज्ञात होगा कि जीवन क्या है—जीवन का बोध क्या है।

क्या तरुणाई उत्तर देगी?

क्या खण्डित आधारों पर ही भवन खड़ा कर सकता कोई?
भग्न हृदय के टुकड़ों को क्या फिर से जोड़ सका है कोई?
चोट भले ही मिट जाए पर क्या व्रण मिटा सका है कोई?
भारत पुनः अखण्डित होगा आस मिटा सकता क्या कोई॥ १॥

तीस कोटि सन्तति के रहते भारत क्यों हो पाया खण्डित?
निरपराध लाखों माँ बहिनें आखिर क्यों हो पायीं दण्डित?
नस-नस में पुरखों का शोणित रग रग में क्या धर्म नहीं था?
क्या वह सब था? फिर क्या उर में हिन्दू का अभिमान नहीं था॥ २॥

क्या भारत माँ का ध्यान नहीं था? हम हिन्दू हैं यह भान नहीं था?
कुछ मान न था सम्मान न ... अपने कर्मों का ज्ञान न —
फिर क्यों शान्त और मौन रहे सब? क्यों ललनाएं लुटती देखीं
रक्त क्यों न संतप्त हुआ? क्यों मातृ प्रतिष्ठा मिटती देखी॥

दुख हृदय की प्रखर भावना से हिलोर जब उमड़ आती है
उन भीषण कांडों की स्मृति से प्राण हृदय की जग जाती है!
मातृव्यथा के प्रश्न पूछती क्या उत्तर देगा कोई
प्रबल आत्म विश्वास प्रकट कर क्या चमकेगी तरुणाई॥

खण्डित भारत अखण्ड होगा—अवश्य होगा! किन्तु कभी फिर
राष्ट्रद्रोह की वह प्रवृत्ति उठा सकेगी ना फिर निज सिर!
ऐसी सुस्थिति समर्थ दृढ़तम क्या भारत में आ न सकेगी!
यही प्रश्न है माँ के मन में क्या तरुणाई उत्तर देगी॥ ३॥

श्री 'तपस्वी'

प्रिय बन्धुओ !

दो सितम्बर के अंक में जो चार पहेलियां छपी थीं, उनके उत्तर इस प्रकार हैं—

(१) सूई धागा (२) हाथी (३) चांदी का रुपया। (४) कमल का फूल।

पिछले अंक में 'महादेव की पिण्डक' नाम से जो कहानी छपी थी, उसके लेखक का नाम भूल से रह गया था। वह कहानी कलकत्ता से भाई ओमप्रकाश ने भेजी थी।

और हां, एक बात और। 'वीर अर्जुन का दीपावली अंक' बड़ी धूम-धाम से निकल रहा है। उसका विस्तृत विवरण तो मैं अगली बार दूंगा, पर उसके लिए तुम्हें चित्र तथा रचनाएं शीघ्र भेजनी चाहिये।

तुम्हारा—
श्याम भय्या

—+—

पहेलियों के ठीक उत्तर भेजने वाले

अवधविहारी श्रीवास्तव, खुरई। वेदप्रकाश मित्तल, मुजफ्फरनगर। रोशनलाल जायडू, सागर। सुरेशचन्द्र वार्ष्णेय, अलीगढ़। त्रिलोकी अज्ञात, कोटा। जयभगवान अग्रवाल, रामनगर। कु० प्रेमलता गुप्त, कोटा। कमलादेवी सोनी, कोटा। भगवानसिंह, खुरई। प्रेमानन्द कलिका, बरेली। कु० उर्मिला साहू, नागपुर। सदाशिवराव मोघे, खुरई। हरिमोहन, हाथरस। उमेशदेव शर्मा, मुरादाबाद। राजकुमार स्वामी, दिल्ली। कु० सन्तोष, हलद्वानी। सुशीलकुमार स्वामी, दिल्ली। कु० अपर्णादेवी, दिल्ली। भगवानचन्द्र शाह।

★

ऊंट की तपस्या

श्री हेमन्तप्रकाश गौतम

एक ऊंट को तप करते-करते,
कुछ भय हुआ,
ब्रह्माजी ने हो प्रसन्न
उससे यों वचन कहा—
"मांगो कुछ वरदान वत्स !
तुमने अति कष्ट सहा"
हाथ जोड़, नत मस्तक होकर
उसने यही कहा—
"बड़ा पेट होने से
चरने में होता है कष्ट
दस योजन लम्बी गरदन हो
जिससे हों दुख नष्ट"
"एवमस्तु" कह ब्रह्माजी तो
हो गये अन्तर्ध्यान
बैठे - बैठे चर लेने से
हुआ ऊंट को मान
किन्तु एक दिन आंधी,
वर्षा से व्याकुल बेचारा
किसी गुफा में शीश छुपाने
गया भाग्य का मारा।
उसी गुफा में भूखे - प्यासे
दो सियार रहते थे
भूख प्यास से भांति-भांति के
नित-प्रति दुख सहते थे।
देख ऊंट की गरदन
उनके मुंह में पानी आया,
हाय ! झपट उन दुष्टों ने
उसको ही चट निबटाया।
"बिना विचारे सहसा
जो ऐसा करते हैं
वे निर्बुद्धि सदा
ऊंट सम ही मरते हैं॥"

★

तुम्हारे पत्रों का उत्तर

१. मधुसूदन जालान (गोहाटी)—१६ वर्ष की आयु तक के सभी बालक-बालिका सदस्यता पत्र भर कर निःशुल्क हमारे सदस्य बन सकते हैं। बस यही हमारे नियम हैं।

२. सम्पतकुमार हारीत (जयनगर) प्रिय सम्पत ! हमारा पता यह है—सम्पादक, बाल बन्धु परिषद्, c/o वीर अर्जुन (साप्ताहिक), श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

३. सन्तोषकुमार शर्मा 'सुमन' (डीडवाना)—हमें तुम्हारा पिछला कोई पत्र नहीं मिला सुमन ! पत्रों का उत्तर हम इसी पृष्ठ पर यथासम्भव देते हैं। अपनी पहेलियां फिर दुबारा जरूर भेजना। और हां, सन्तोष ! तुम्हें संतोष रखना चाहिये। सब ठीक हो जायगा।

४. विट्ठलभाई पटेल (सागर)—भय्या नाराज तो हम किसी से भी नहीं हैं। हां, सदस्य तुम बना लिये गये हो, पर नाम छपने के लिए थोड़ा इन्तजार करना चाहिये। सभी के नाम क्रमानुसार छपते हैं।

५. त्रिलोकी अज्ञात (कोटा)—देखो भय्या ! पुरानी सदस्य संख्या तो अब नहीं चलती। अब तुम्हें फिर से क्रम संख्या लेनी होगी और भविष्य में उसी का प्रयोग करना। हां, कहानी अपनी अवश्य भेजो, इसमें पूछने की कौन-सी बात है ?

६. उमेशदेव शर्मा (मुरादाबाद)—'कलम सखा' हम जल्दी ही आरम्भ करने वाले हैं, उमेश ! तुम परीक्षा में पास हो गये, उसके लिए बधाई, पर देखना, मिठाई खाते समय अपने बाल बन्धुओं को मत भूल जाना। कविता तो तुम्हारी नहीं छप सकेगी, पर अपना चित्र अवश्य भेजना।

★

जरा हंसिये

एक अंग्रेज ने जोंक (खून पीने वाला कीड़ा) कभी नहीं देखा था। उसने एक एक भारतीय से पूछा—यह क्या है ?

उसने बताया—यह जोंक है।

अंग्रेज ने कहा—यह कैसी जोक है। (Joke—हंसी) जो कि मेरी टांग में घुसी जा रही है।

—रामेश्वरनाथ मलहोत्रा, होशियारपुर

× × ×

एक सेठजी नाव में बैठ कर जा रहे थे। उन्होंने मल्लाह से पूछा—तुम्हें कुछ पढ़ना-लिखना आता है ? मल्लाह ने कहा—नहीं। सेठजी ने कहा—तुमने तो अपनी आधी आयु ऐसे ही खो दी। थोड़ी देर बाद तूफान आया और नाव डूबने लगी। मल्लाह ने सेठजी से पूछा—'आपको तैरना आता है ?' उन्होंने कहा—'नहीं।' मल्लाह ने कहा—'सेठजी ! मैंने तो आधी आयु ही व्यर्थ खोई थी। आपने तो सारी आयु खो दी।'

—शारदा, दिल्ली

× × ×

हम क्या किसी से कम हैं।

यहां से काटो

सदस्यता-पत्र

नाम

आयु

संरक्षक

पूरा पता

आन की रक्षा

घटना उस समय की है जब भारत-वर्ष में मुगलों का राज्य था। उन्हीं दिनों मोहम्मद शाह नामक एक जागीरदार अपनी जागीर में प्रजा पालन किया करता था। एक दिन मोहम्मद शाह अपने महल के झरोखे में बैठा था, नीचे सड़क पर उर्मिला नाम की एक युवती आ रही थी।

उर्मिला बड़ी रूपवान युवती थी। मोहम्मदशाह ने उसे देखा और सैय्यद नामक अपने एक सैनिक से उसे अपने सम्मुख उपस्थित करने के लिए कहा।

सैय्यद ने जब उर्मिला को उपस्थित किया तब मोहम्मदशाह ने उससे कहा--मैं तुम्हारे साथ शादी करना चाहता हूँ।

उर्मिला—मैं तो आपकी जागीर की एक पुत्री हूँ। आप तो मेरे पिता के समान हैं। आपको ऐसा प्रस्ताव नहीं करना चाहिये।

मोहम्मद—मैं तुम्हें अपनी बेगम बनाना चाहता हूँ।

उर्मिला—ऐसा कदापि नहीं हो सकता।

मोहम्मद—[आवेश में] मेरी बात टालने का क्या नतीजा होगा, जानती है?

उर्मिला—क्या नतीजा होगा?

मोहम्मद—तुझे अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा!

उर्मिला—मृत्यु का मैं स्वागत करूंगी!

मोहम्मद—मान जा!

उर्मिला—मैं अपने विचार पर दृढ़ हूँ!

जब यह वार्तालाप हो रहा था तब वहां सैय्यद के अतिरिक्त एक अन्य सैनिक भी खड़ा था, जिसका नाम दौलतसिंह था। युवक दौलतसिंह से यह दृश्य देखा नहीं जा रहा था। वह अंदर ही अन्दर क्रोध से आगबबूला हो गया था।

उर्मिला की दृढ़ता का उत्तर पाकर मोहम्मद शाह उसकी ओर बढ़ा। किन्तु दौलतसिंह ने बीच में ही ललकार कर कहा—खबरदार! एक राजपूत के सम्मुख हिन्दू युवती से छेड़छाड़ करना यम को बुलावा देना होगा।

मोहम्मदशाह स्तब्ध खड़ा रह गया। उर्मिला दौड़ कर दौलतसिंह के पीछे चली गई। इसी बीच सैय्यद ने अपनी तलवार खींच कर दौलतसिंह को ललकारा। दौलतसिंह भी तलवार खींच कर सामने आ गया। दोनों भिड़ गये। तलवारें एक दूसरे की गरदन की प्यासी हो गयी। पैंतरे बदले जाने लगे। एक का वार और दूसरे का काट होने लगा। बिजली-सी चमक रही थी। देखते ही देखते दौलतसिंह की तलवार ने सैय्यद की गरदन उड़ा दी।

मोहम्मद शाह हक्का बक्का खड़ा था। दौलतसिंह ने खून से भीगी तलवार को मोहम्मज शाह पर छिड़क दिया और कहा—मैं जाता हूँ। यदि आपको भी अपने अरमान पूरे करने हों तो बुलवा भेजियेगा।

इतना कह कर वह उर्मिला को लेकर चला गया।

× × ×

जब दौलतसिंह चला गया तब मोहम्मद शाह ने शोर मचाया। अनेक सैनिक चारों तरफ से दौड़ कर एकत्र हो गये।

मोहम्मद—तुम लोगों के होते हुए काफिर की यह मजाल कि वह सैयद को कत्ल कर जावे? चलो, मेरा घोड़ा तैयार करो। मैं अभी उसका पीछा करना चाहता हूँ।

बात की बात में मोहम्मद शाह पांच-छः सैनिकों को साथ ले दौलतसिंह का पीछा करता हुआ वहां जा पहुँचा जहां उर्मिला का घर था। उर्मिला और दौलतसिंह पहुँचते ही थे कि मोहम्मद शाह ने पीछे से ललकारा—ओ काफिर? हमारी बिल्ली और हम से ही म्याऊं।

दौलतसिंह ने कुछ उत्तर नहीं दिया, किन्तु तलवार खींच कर खड़ा हो गया। मोहम्मद शाह के अन्य सैनिक उसपर टूट पड़े। देखते ही देखते फिर खांडा खट-कने लगा।

उर्मिला का पिता जयराम भी तल-वार खींच कर मैदान में आ गया। एक तरफ दो और दूसरी तरफ छः थे। मोह म्मद शाह भी तटस्थ न रह सका। दौल तसिंह और जयराम के तलवार के वार बड़े नपे तुले पड़ रहे थे। वे जान की बाजी लगा कर लड़ रहे थे। शीघ्र ही उन्होंने एकाएक करके सभी सैनिकों को तलवार के घाट उतार दिया। यह देखकर मोहम्मद शाह भाग खड़ा हुआ, किन्तु दौलतसिंह ने उसे बच कर न निक लने दिया। एक ही वार में उसकी गरदन उतार ली।

जयराम—बेटा दौलतसिंह, तुम्हारा बड़ा आभारी हूँ।

दौलतसिंह—मैंने तो अपना कर्त्तव्य पालन किया है, पिता जी!

×

जल्दी चल लीला, देखती नहीं, स्कूल को देर हो रही है।

बाल पहेली

[कन्हैयालाल जे० माथुर]

मुंह काला बिल्ली नहीं
दो जीभें, नागिन नहीं,
पांच पति पर द्रोपदी नहीं।

उत्तर—कलम

काली नदी कलूटा पानी।
डूब मरी चन्द्रा वलि रानी॥

उत्तर—पूरी

दूध-भात का हिस्सेदार।
कोठी का हूँ पहरेदार॥
बाबा जी के घर का धन।
हूँ चोरों का मैं दुश्मन॥

उत्तर—कुत्ता

★

हमारे नए सदस्य

२७. प्रकाश चन्द पटोरिया (सागर)
२८. ओमप्रकाश (कलकत्ता)
२९. महेन्द्र बालकीलाल (इंदौर)
३०. बलीन्द्र देव महेन्द्र (गुना)
३१. छोटेलाल विश्वकर्मा (सागर)
३२. सुरेन्द्रनाथ गोरा (देहली)
३३ लाजपतराय गोरा (देहली)
३४. हेमंतप्रकाश गोतम (गुना विदिशा)
३५. ओमप्रकाश आर्य (नई देहली)
३६. सन्तोष कुमार शर्मा (बीकानेर)
३७. मञ्जुला कुमारी (रामपुर)
३८. ललित किशोर चौरासिया (नागपुर)
३९. महावीर प्रसाद अग्रवाल (बरनौल)
४०. दीनदयाल सक्सेना (मेरठ)
४१. मदनलाल शर्मा (अलीगढ़)
४२. तारादत्त जोशी (नैनीताल)
४३. बिहारीलाल (आवरोठ)
४४. रमेश वर्मा (नैनीताल)
४५. कु० आनन्दी जंदली (गढ़वाल)
४६. नगेन्द्र कुमार जैन (जयपुर)
४७. गोविन्द दास सिंघल (झांसी)

★

अपनी देववाणी सीखिये

संस्कृत-संस्कृत्योः साधारणीकरणोपायाः

[ले०—श्री साथुराम प्रो० मिमंसा कालिज]

कथं संस्कृत-संस्कृत्योः एतद्-देश-प्रसूतेषु जनगणेषु साधारणीकरणं भवत्येव ? तत्र उपायचिन्ता एव साम्प्रतम् अस्माकम् विषयः।

किं तावद् आदौ संस्कृत-संस्कृतिभ्यां नः अभिप्रेतम् ? संस्कृतम् इति हि शब्दो नैव वेदे उपलभ्यते। संस्कृति-विषये पुनः "सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा।" "तानि धर्माणि प्रथमानि आसन्।" अस्यार्थः—संस्कृतिः किल नामाहुः सर्व-बीज-प्रकृतिः इति यथा प्राचिनः प्राहुवन्तः, संस्कृतस्य जननी प्रावदायिनी च बभूव। प्रथमम् अजन्म-जन्म आसीत् संस्कृतेः, अनन्तरं सम्भूतात् संस्कृतस्य अन्यस्य वा कस्यापि वस्तुनः सम्भवः सम्भवति। संस्कृतिः जननी वा, प्रकृतिः वा, अतः अन्यद् जात, अन्यं विकृतिःवा विकृतिः वा।

भाषा-साधारणीकरणे राष्ट्रिय-करणे वा 'संभारती', पुनरपि संक्षिप्य 'भारती' एव तावद् तस्या नाम गृह्यताम्। अस्याः नियमने अस्मदीया भाषाः अभिविष्य, उपलक्ष्य च इमे, यथा—

(१) भिक्ष—भिक्षायाम् इत्यादयः सर्वे अपि पाणिनीया धातवः संस्कृतिवाहिनः।

(२) एकस्य अपि धातोः विविधानि अर्थमुखानि स्वर-व्यत्ययेन रूप-व्यत्ययेन च एकस्यापि भावस्य विश्वतोमुखीनतां प्रकटयितुम् अलम्।

(३) जीवद् भाषासु हलन्तानि नामाख्यातानि नोपलभ्यन्ते। तत् तेषां परिहारो 'भारत्यां' श्रेयान्।

(४) धातुरूपेषु कृ—भू—अस्ति योग एव लकारेभ्यो गृह्यताम्।

(५) नपुंसकं क्रिया—विशेषणेषु एव।

(६) लकारेषु त्रयः काल-वाचिनः ये ते, विधि—लोटौ च क्रियामूर्छने ('मूड्स') अभिव्यञ्जयितुम् अलम्। अपेक्षया कृत्य—प्रत्ययाः सुविधेया लाघवावहाः च।

(७) समासेषु तत्पुरुषः अव्ययीभाव. बहुव्रीहिः च अल्पवृत्तिः साधीयान्, संग्रहः सुकरः च।

(८) क्रिया-विशेषण-सुकरतां निर्बद्धा उपसर्गाः यथा किल वेदेषु व्यवधन्, लोकरुचि च उपसेवयितुं पारयिष्यन्ति एव।

(९) संस्कृते नवशब्दोपन्यासः वैज्ञानिकक्षेत्रेषु साधारणीभावे अवरोधः। अल्परिहाय चाहि आता है—प्रकृतिषु श्रुति सन्निध्येन एव पदरचना क्रियेत। तत्र स्वर्गतानां शिवदत्त महाभागानां प्रतिभा विना अलम् भाषा ज्ञानम् अपि प्रमाणम् अनुकरणीया च।

ए० एम० (एण्टी मेरिडियम)—अवाक् मध्याह्नात्।

पी० एम० (पोस्ट मेरिडियम)—पश्चात् मध्याह्नात्।

वेस्ट कोट—कटि पर्यन्तं वासयति वासकटिः।

पायजामा—पादं यावद् आयामो यस्य पादायामः।

अर्थात् मयूर-व्यंसक प्रतिभा एव अथ नः उपयोगे साहाय्यम् उतापि प्रमाणम्।

भाषासंस्करणे एष प्रयत्नः प्रथमतः संस्कृतिं नवजीवनदायिनीम् इव संग्रहीतुं प्रवर्तते। भाषा संस्कृतेः पुनः माध्यम-मात्रम्।

सूत्रेषु, धातुगणेषु, अन्यत्र च संस्कृतस्य लोकभाषाविस्तरः विकीर्णः। स पुनः संस्कारमर्हति। संस्कृति-संक्रमे इत्थं तावद् दिनचर्या व्यतीयेत आकाशवाणी विकिरणे (रेडियो ब्रौडकास्ट)—

(क)—१. अम्बः प्रभातवन्दन रूपेण उप.स्तवनेन सर्वः अपि जनः शय्यां जहातु।

२. सन्ध्याकाले शृणोतु जनः—'उदुत्यज्ज्योतिरेति वा।'

३. निशोपगमे लोकवाक् मवाद् अयहित्या-हेला-सट्टकादि प्रयोगाः ग्रामान् ग्रामान् महदेकराष्ट्रं प्रकुर्वन्तु।

४. अन्ततश्च स्वप्न पूर्वं राष्ट्रगीतम् उपगीयताम्—

यत्राधिमतिमुक्ता, यत्र शुद्धा मनस्विता।
पूतं यत्र हृदाप्लावि, शांतं साम्ये सदोदयि।
स्वर्मये लोक आसृते तत्र राष्ट्रं विबुध्यताम्।
मम राष्ट्रं विबुध्यताम्।
राष्ट्रं नो अनुबुध्यताम्॥

(ख) उत्सवेषु यथा—

५. श्रावणी मासि उपाकर्म, उपनयनम्। मधुमासि दीक्षान्तः। शरदि नवाश्रम प्रवेशः। पूर्णचन्द्रेषु मधुमास शृंगारः।

६. ग्रामप्रयोगेषु प्राकृत अपभ्रंशानां लीलासु च ब्रज-अवधी-पाञ्चाली-प्रयोजनीयता।

(ग) प्रौढशिक्षा संस्थानेषु—

७. वृद्धपुरुषाणां नारीणां च कृते संस्कृत-संस्कृती पाठप्रणाल्यां स्वीक्रियेताम्।

८. शिक्षाक्रमश्च संस्कृति-संस्कृत-परः विद्यालयावस्थायाः प्रक्रमेत।

(घ) साधारणा अन्ये—

९. रंगचित्रेभ्यः समाचारपत्रेभ्यः कुतूहलस्तम्भेभ्यः च उभयम् अपि संस्कृति-संस्कृते अधीयीरन्। तत्र तत्र शिशवः प्राकृतम्, नेतारः प्रौढ़-संस्कृतम्, प्रकृतयः सरल संस्कृतं भाषाः प्रस्तावम् अर्हन्ति।

(ङ) एतस्मादन्यत्र—

१०. राष्ट्रस्याभियुक्ताः (अकबर) अकब्बनार-बहान्—आई० ए० एस० प्रभृति कर्मकरान् परीक्षादिषु सम्यक् सगुणम् संस्कृतिसंस्कृत-अधीतिभिः नियुञ्जन्तु।

११. विकल्प-भाषा-पत्रं परीक्षार्थिनाम् अनिवार्यं प्रयच्छेत। अथवा न यावद् संस्कृत-संक्रमः प्रवर्तेत तावत्संस्कृति-पत्रम् एव राष्ट्रभाषामाध्यमेन मातृभाषामाध्यमेन वा परीक्षासु पञ्चाशदङ्कमयम् अवश्यंसम्भरणीयं शिक्षापथास्याम् अंगीभूतं तिष्ठतु।

उभे अपि इमे विषे—संस्कृतं संस्कृतिश्च भारतीयानां वेदितव्ये समुपस्कर्तव्ये च।

—+—

बंग संस्कृति के विनाश का पाकिस्तानी षड्यन्त्र

[पृष्ठ ९ का शेष]

आक्रों की बघाई की राजनीति का विनोद ही कहा जा सकता है।

पाकिस्तान बनाने का श्रेय ब्रिटेन को है। आज भी ब्रिटेन व अमरीका पाकिस्तान को भारत के विरुद्ध सहायता दे रहे हैं। ब्रिटेन के कुशल सैनिक कालीन बुनने वाली संस्था के प्रतिनिधि के रूप में पाकिस्तानी सैनिकों व नागरिकों को एक संगठित मोर्चा बनाने में सहायता दे रहे हैं। नेहरू जी द्वारा आकिनलेक व जनरल माउंस अली की प्रतिनिधियों पर आपत्ति उठाने वाले पर प्रधानमन्त्री एटली ने इस घटना को शिष्टाचार कहकर व्यक्त किया था परन्तु जब बंगाल चैम्बर्स आफ कामर्स के अध्यक्ष ने नेहरू जी के कथन का समर्थन किया तब भी एटली को वह समझ कर विश्वास कर लिया प्रतीत होता है कि अब तो इनके भाई अंग्रेज भी उनकी पोल खोल सकते हैं। अमरीकी राजनीति पैसे की राजनीति है। उसका अध्ययन भली प्रकार किया जा सकता है। इसके विपरीत ब्रिटेन की कूटनीति की थाह पाना सम्भव नहीं है। भारत सरकार को भविष्य में किसी अंग्रेज अफसर द्वारा पाकिस्तान को सहायता दिये जाने पर कड़ा कदम उठाना होगा। अन्यथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उसकी प्रतिष्ठा को क्या धक्का पहुँचने की सम्भावना है।

पाकिस्तान की सरकार एक उग्र धार्मिक सरकार है। उसके साथ एक ही दिशा में समझौता हो सकता है कि उसका युद्ध उन्माद समाप्त कर दिया जावे। प्रधान मंत्री नेहरू के रहते हुए इस दिशा में सम्भावना प्राय नगण्य ही मानी जा सकती है। स्वयं बेगम लियाकत अली एक विधवा हिन्दू मास्टर की पुत्री है। उनका अल्पसंख्यकों प्रति कितना प्रेम है यह उनके द्वारा की जाने वाली नौंच खसौंट से स्पष्ट है। भारत पाकिस्तान मैत्री एक अन्य दिशा में भी सम्भव है। यदि पाकिस्तान में धान बन्धुओं की सरकार होती है (जैसा कि सम्भव नहीं,) तब भी दोनों देशों के सम्बन्ध सुधर सकते हैं।

पश्चिमी बंगाल के प्रधानमन्त्री ने यह सम्भावना प्रकट की है कि यदि पाकिस्तान से अधिक मात्रा में अल्पसंख्यक आये तो पश्चिमी बंगाल का आर्थिक ढांचा छिन्न भिन्न हो जायगा। डा० राय पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर होने वाले अत्याचारों से अपरिचित नहीं हैं। सार्वजनिक रूप से वह स्वयं इसका समर्थन कर चुके हैं तब ऐसी दशा में सत्य की अवहेलना करना कितना भयानक हो सकता है, यह किसी से छुपा नहीं है। आर्थिक संकट के नाम पर डेढ़ करोड़ हिन्दुओं को मुसलमान बनने देना राजनीति नहीं है कहा जा सकता है। इस योजना पर चल कर यह निश्चित् है कि फिर एक बार विभाजन की दुर्घटना की पुनरावृत्ति हो सकती है? क्योंकि उस समय एक बड़ी संख्या में काला पहाड़ और मलिक काफूर पाकिस्तान में होंगे।

★

[पृष्ठ ९ का शेष]

धारी पुराने हिन्दू कर्मचारियों के अधिकारों की उपेक्षा करके उन्नत किये जा रहे हैं।

इन खबरों की निस्सन्देह जांच नहीं की गई है किन्तु इनको हमारे केन्द्रीय मंत्री ने पाकिस्तान के केन्द्रीय मन्त्री के सम्मुख समय-समय पर प्रस्तुत किया है।

आंध्र राज्य बनेगा ?

आचार्य विनोबा भावे ने यह आशा व्यक्त की कि आंध्र प्रांत शीघ्रातिशीघ्र ही बन जायेगा।

उन्होंने स्वामी सीताराम से अनशन त्यागने को केवल उस समय कहा जब उन्हें यह विश्वास हो गया कि राजेन्द्र बाबू और नेहरूजी आंध्र राज्य के निर्माण के लिए भरसक प्रयत्न कर रहे हैं।

आंध्र का निर्माण एक सीधा-सादा मामला है। वहां के लोग केवल इतना चाहते हैं कि उस राज्य का कार्य वहीं की भाषा में चलाया जाए। सर्व प्रथम इस राज्य में उन क्षेत्रों को शामिल किया जाएगा जो विवादग्रस्त नहीं हैं। शेष हिस्सों को मध्यस्थता के लिए छोड़ दिया जायगा। सीमा वाले जिलों के लोग दोनों भाषाओं को समझते हैं और बोलते हैं। अब कोई भी व्यक्ति विवादग्रस्त क्षेत्रों के प्रश्न पर बेजा दबाव नहीं डालेगा। और कांग्रेस के भूतपूर्व महामन्त्री श्री काला वेंकटराव ने कहा कि आम चुनावों से पहले आंध्र राज्य का निर्माण वैधानिक दृष्टि से असम्भव है। और तत्काल तो केवल इतनी आशा की जा सकती है कि भारत सरकार दृढ़ निश्चय कर ले जिसके बाद यथाशीघ्र प्रांत निर्माण के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएं।

×

दिल्ली साप्ताहिक वायदा बाजार

[ले० — श्री महानन्द अरलिया]

१९ सितम्बर बुधवार को समाप्त सप्ताह के दैनिक भाव निम्न हैं :—

चांदी टुकड़ा चेम्बर भादवा डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द	दैनिक घटबढ़
बृहस्पति	१८७॥)	१८८।)	१८७॥-)	१८७॥।=)	।=)
शुक्र	१८७॥।=)	१८८)	१८७॥-)	१८७॥।=)	=)
शनि	१८७॥।=)	१८६।)	१८७॥-)	१८६।)	१।=)
सोम	१८८॥)	१८८।-)	१८८।-)	१८६।-)	१)
मंगल	१८६।)	१६०)	१८६=)	१८६॥-)	॥=)
बुध	१८६॥।)	१८६॥।)	१८६-)	१८८।)	॥=)

सोना चेम्बर सितम्बर डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द	दैनिक घटबढ़
बृहस्पति	११०॥-)	११२=)	११०॥-)	११०।=)	।=)
शुक्र	१११=)	१११॥-)	१११=)	१११)	।=)
शनि	१११=)॥	१११॥)	१११=)॥	१११।-)	।)॥
सोम	१११।=)	१११।=)	११०॥=)	११२=)॥	।)
मंगल	१११)	१११।=)	१११)	१११=)	=)
बुध	१११=)	१११।)	१११=)	१११।)	=)

गवार माघ डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द	दैनिक घटबढ़
बृहस्पति	१३।)	१३॥=)	१३=)	१३।=)॥।	॥)
शुक्र	१३।=)	१३॥=)	१३।)॥।	१३।=)	।=)॥
शनि	१३॥-)॥	१३।=)	१३।=)	१३॥)॥	।-)
सोम	१३॥-)	१३।=)॥।	१३॥-।)	१३।=)॥	।=)॥
मंगल	१३॥।=)	१३॥।=)॥	१३॥)	१३॥-)	।=)॥।
बुध	१३।=)॥	१४=)॥	१३।=)॥	१४)	।=)॥।

मटर मंगसिर डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द	दैनिक घटबढ़
बृहस्पति	१६।-)॥	१६।=)	१६।)॥	१६॥)॥।	।=)॥
शुक्र	१६॥)॥।	१६॥-)॥	१६॥)॥	१६।=)।	।-)
शनि	१६॥-)॥	१६॥-)॥।	१६॥-)।	१६॥)	।)॥
सोम	१६=)॥	१६॥=)॥	१६=)	१६॥=)॥	।)॥
मंगल	१६॥-)।	१६॥=)।	१६॥)	१६॥-)	।-)।
बुध	१६॥=)	१६॥=)	१६।=)	१६॥)॥।	।)

विचार और सलाह

चान्दी सोना

इस समय चान्दी सोने की आमद चालू होते हुये भी रुख अच्छा है। इसी कारण बम्बई में मैसूर सोने के फैसलों का कोई प्रभाव न पड़ा।

वायदे क्षेत्र में लेन का विशेष जोर रहा पंजाब और स्थानीय सटोरियों ने खरीदा परन्तु बिरला को साधारण सी बिकवाली दीख पड़ी।

सरकारी खर्चों के भरे जाने और नोटों के चलन में कमी हो जाने के कारण रुपये की कमी अनुभव हो रही है अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोष द्वारा अभी न तो सोने के भाव ही बढ़ाये जायेंगे और नहीं स्वर्णमूल्यन होगा।

ईरान और ब्रिटेन का तेल का न सुलझा। ईरान रूस की तेल वार्ता से स्थिति में बिगाड़ पैदा हो सकता है। परन्तु कोरिया युद्ध-संधि-चर्चा बाजार को उठने नहीं देती है।

सलाह

रुख तो अच्छा है परन्तु अनिश्चित है। अतः इस स्थिति में १८६।) से नीचे जाता नहीं दीखता। सोना १११॥-) से जबतक नीचे रहे तबतक बेचना ही अच्छा है।

गवार और मटर

इस समय सटोरियों का भारी बोझा बढ़ा है। खुश्की के समाचारों पर पंजाब और सेवाले के ऊंचे भावों के कारण बम्बई वाले मटरे के विशेष खरीददार रहे। तेजी मन्दी वाले वालों को भी माल देना पड़ा। यू० पी० वाले मटरे के बेचू रहे। परन्तु मटरे को भी गवार के साथ उछलना पड़ा।

सलाह

रुख पूर्णतया अनिश्चित है फिर भी मटर और गवार जब तक क्रमशः १६॥) और १३॥) से ऊपर रहे ऊपर का रुख अन्यथा नीचे का रुख समझना चाहिये।

रजि० नं० ई० पी० ४६१

पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा, मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिए अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, देहली में छपवाकर प्रकाशित किया।
सम्पादक— केशवदेव शर्मा

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

दिल्ली रविवार १७ भाद्रपद संवत् २००८ DELHI SEPTEMBER 2nd 1951

४ आना

पथ-भ्रष्ट बालकों की समस्या

★ श्रीमती शान्ति गुप्ता बी ए.

भीड़ भड़क्के या मेले-ठेले में कभी आपकी भी जेब कटी है ? यदि आप विशषरूप से सावधान रहते हैं और कोई गिरहकट आपके ऊपर हाथ साफ नहीं कर सका है, तो आपने राह चलते चांदनी चौक जैसे किसी बड़े बाजार म ऐसे दृश्य तो अवश्य देखे होंगे कि अभी अभी किसी की जेब कट गई है और वह व्यक्ति परेशानी की हालत में एक लड़के को पकड़े खड़ा है और कह रहा है—"द मेरा पर्स नहीं तो पुलिस क हवाले करता हूँ।" लड़का बड़ी दीन सी मुद्रा बना कर हाथ जोड़ रहा है, कहता है—"बाबू जी, मैं क्या जानूं कैसा पर्स मैं तो खड़ा ट्राम का इन्तजार कर रहा था।" यदि आप भी वहां खड़े हो गये हैं, तो लड़के को देख कर आप भी यही कहेंगे कि लड़का निर्दोष और सीधा सादा है, बाबू जी को भ्रम हो गया है, पर्स तो कोई और बदमाश उड़ा कर ले गया होगा। यदि तलाशी लेने पर भाग्य या दुर्भाग्य से पर्स उस लड़के के पास से निकल आता है, तो बस फिर देखिये—लड़का पिटता है और फिर पुलिस के हवाले किया जाता है। तब आपके मन में यह विचार अवश्य आवेगा कि इतना छोटा सा लड़का है और कैसा गजब करता है ! कितनी सफाई है इस के हाथ में ! ऐसे विचार आने तो स्वाभाविक हैं किन्तु कभी आपने यह विचारने की चेष्टा भी की है कि आखिर यह लड़का अध पतन की इस स्थिति को कैसे पहुँच गया ? और जब इतनी छोटी अवस्था में यह सफाई है, तो बड़ा होकर कैसा पक्का चोर बनेगा और देश अथवा समाज को कितनी क्षति पहुँचावेगा ? यह बुरा आचरण बचपन में क्रमश बढ़ते-बढ़ते एक दिन मनुष्य को बहुत बड़ा डाकू बना देता है। कारागार के बन्दियों का इतिहास बचपन से अवश्य ही ऐसा रहा होगा। अतएव यदि हम देश के हित के लिए कारागार के अपराधियों की सख्या घटाना चाहते हैं, तो देश के पथ-भ्रष्ट बच्चों को सम्भालना होगा। बचपन में पड़ी कुटेव आजन्म नहीं छूटती—इस सत्य को लेकर बच्चों को बचपन से ही कुसगतियों और कुसस्कारों से बचाना चाहिये। उनमे अच्छे सस्कार भरना देश जाति की सच्ची सेवा है।

पथ-भ्रष्ट बालक कौन है ?

पथ भ्रष्ट बालको को तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—

(१) निराश्रित— जिन बालकों के मा बाप मर गए हों या बिछुड़ गए हों। या जिनके मा बाप उनकी ओर से उदासीन हो अथवा स्वयं भी पथ भ्रष्ट हों।

(२) कुसगति-ग्रस्त— जो बालक निकम्मे लड़कों अथवा बदमाशों की सगति में रहकर नशा करना, जुआ खेलना, भीख मागना वेश्याओं के यहा जाना, सीख जाते हैं, अथवा जिनके सरक्षक ही उनके नाश का कारण बन जाते हैं।

(३) किशोर अपराधी— किशोर अपराधी व किशोर बालक हैं, जिन्होंने कानून की दृष्टि में कोई ऐसा भयकर अपराध किया हो जिसकी सजा काला पानी या फांसी तक हो।

कुछ समय पहले तक अपराध शास्त्र के पण्डितों का यह विश्वास था कि पथ भ्रष्ट बालकों में अपराधी प्रवृत्ति वशानुगत होती है, अत असाध्य होती है। किन्तु हाल ही में डाक्टर सिरिलबर्ट ने २०० पथ भ्रष्ट बालकों की जीवनियों के अध्ययन से यह धारणा गलत सिद्ध की है। उन्होंने पता लगाया कि ८० प्रतिशत बालकों के परिवारों में अपराध का कोई इतिहास तक न था और केवल २१ प्रतिशत बालकों के सम्बन्धियों को अपराध के लिए सजा मिली थी। मतलब यह कि बालक अपराध के वातावरण में रहकर ही अपराधी वृत्ति ग्रहण करता है, मा-बाप से लेकर नहीं जन्मता। दूसरे शब्दों में, किसी भले घर का लड़का भी पथ-भ्रष्ट हो सकता है।

बालकों के बिगड़ने के निम्नलिखित मुख्य कारण हैं—

घर.

(अ) घर की गरीबी—इस में कौन आश्चर्य की बात है कि एक भूखा बच्चा पास में हलवाई की दुकान पर सजे हुए लड्डुओं के थाल में से कुछ लड्डू चुरा ले, अथवा एक बे-घर निराश्रित बालक भिखमगा न होकर चोर बन जाय। गरीबी के कारण मा बाप आजीविका कमाने के लिए दिन भर बाहर रहते हैं और बच्चों को मा बाप का प्रेम और निरीक्षण नहीं मिल पाता, वे खाली रह कर बुरी बुरी बातें सीख जाते हैं।

(आ) गृह कलह—मा बाप के आपस के कलह और झगड़े का प्रभाव बच्चों पर बड़ा भयकर पड़ता है। वे आपस मे झगड़ते और बच्चो के प्रति उदासीन हो जाते हैं। फलत बच्चो पर ठीक नियन्त्रण नहीं रहता और बच्चे मनमानी करने लगते हैं।

(इ) घर का दूषित वातावरण—मा बाप स्वय भ्रष्ट आचरण के हैं यह जान कर बालक स्वभावत उनका अनुकरण करने लगता है। बच्चे के कोमल व कच्चे विचारों पर इससे अधिक कुसस्कारों की छाप और क्या लग सकती है, जब वह देखता हो कि उसके मा-बाप जो कुछ कमाते हैं, जुआ खेलकर गवा देते हैं शराब पी कर गन्दा आचरण और निकृष्ट कर्म करते हैं। यह सब देख कर उसके मन में विकार उत्पन्न होने लगते हैं और वह धीरे धीरे बुरे कामों की ओर प्रवृत्त हो जाता है।

(ई) बेरोजगारी—बाप यदि जीविकाहीन है, तो लाचार हो कर मा को काम करने बाहर जाना होता है, जिस के फलस्वरूप बच्चे उपेक्षित रह जाते हैं। मा के नैसगिक प्रेम को न पाकर वह उस कमी को कुसगति से पूरा करने का प्रयत्न करते हैं। कभी कभी बेरोजगार बालक भी अपनी भूख मिटाने के प्रयत्न में अपराध कर बैठता है।

फिल्में

आजकल की फिल्मों के निर्माता यह भूल बैठे हैं कि फिल्मों के देखने वाले युवा रसिकजन ही नहीं, बच्चे भी हैं। उन्हें तो केवल रुपया चाहिये, चाहे देश और जाति रसातल को जाये। कुछ फिल्मों मे गिरहकटों, चोर डाकुओं और बदमाशों के ऐसे बढ़िया काम दिखाये जाते हैं कि जिन्हें देख कर किशोर मन फड़क उठता है और स्वय भी हाथ की सफाई सीखने में लग जाता है। मदिरापान तथा कामुकतापूर्ण दृश्यों का भी कुप्रभाव बच्चों के मस्तिष्क पर पड़ता है।

दुकानों में आकर्षक वस्तुओं का प्रदर्शन

दुकानों के शो-केसों में सजी हुई नाना प्रकार की खेल प्रमोद की वस्तुयें देख कर किस बच्चे का मन नहीं ललचा उठता ? मनचाही वस्तु लेने योग्य पैसे तो किसी ही बच्चे के पास होते होंगे, अत जब किसी गरीब बच्चे का मन उन्हें लेने के लिये आकुल हो उठता है तो वह चुरा कर या उड़ा कर उन्हे लेने का प्रयत्न करता है।

स्कूल

पढ़ाई से जी चुराने वाले बालक भी पथ-भ्रष्ट बालकों की श्रेणी मे आते हैं। वर्तमान शिक्षा पद्धति का यह दोष है कि सभी बच्चों के लिये एक ही पाठ्य क्रम रहता है। विचारणीय बात है कि एक कक्षा के ३० बच्चों की बुद्धि कुशाग्र होती है, किसी की साधारण और किसी की मन्द— कोई-कोई निपट मूढ़ भी होता है। कहने का अभिप्राय यह है कि बौद्धिक धरातल के अनुरूप ही बालक की पढ़ाई होनी चाहिये। पाठ्यक्रम अनुकूल न होने से बालक स्कूल से जी चुराने लगते हैं और घर से पढ़ने के बहाने, बुरी सुहबतों या दूसरे कामों

[शेष पृष्ठ १९ पर]

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार १७ भाद्रपद सम्वत् २००८ [अङ्क १६

विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
और जब तक हमारे संविधान में इसकी गारण्टी नहीं कर दी जायगी,
हम तब तक चैन नहीं लेंगे।

नेहरू टण्डन विवाद

प्रधान मंत्री पं० नेहरू अपने आग्रह पर दृढ़ हैं कि कांग्रेस कार्यकारिणी का पुनर्निर्माण होना चाहिये। अन्यथा वे कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य नहीं रहेंगे। दूसरी ओर श्री टण्डन इस बात पर दृढ़ हैं कि कांग्रेस कार्यकारिणी बनाने का कार्य कांग्रेस अध्यक्ष का है। अन्य किसी भी व्यक्ति को इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। पं० नेहरू यदि चाहते हैं तो किसी व्यक्ति विशेष के कार्यकारिणी सदस्य रहने न रहने के प्रश्न पर विचार किया जा सकता है, किन्तु कार्यकारिणी के पुनर्निर्माण का प्रश्न ही नहीं उठता।

यथार्थ में यदि देखा जाय तो श्री टण्डन ने कहीं औचित्य को भंग नहीं किया है और यथासम्भव पं० नेहरू से सहयोग किया है। प्रसिद्ध कांग्रेसी पत्र 'दि हिन्दुस्तान टाइम्स' के मतानुसार कांग्रेस के अप्रिय होने का कारण कांग्रेस संस्था नहीं, वरन् गत चार वर्षों का कांग्रेसी शासन है जिसके प्रमुख पं० नेहरू रहे हैं। संसद् के कांग्रेस दल की सभा में दिये भाषण में भी प्रधान मंत्री ने यह नहीं बताया कि उनके त्याग पत्र देने के कारण क्या हैं।

दूसरी ओर पं० नेहरू को कांग्रेस का भी अध्यक्ष बनाने की चर्चा जोरों पर हैं। केन्द्रीय मन्त्री श्री हरेकृष्ण मेहताब से लेकर श्री शंकरराव देव तक खुले रूप से इस विचार का प्रचार कर रहे हैं। पं० नेहरू ने इस सुझाव के विरुद्ध कुछ भी नहीं कहा है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उन्हें इससे कोई विरोध नहीं है और यदि ऐसा प्रसंग आया तो वे प्रधान मंत्री रहते हुए कांग्रेस अध्यक्ष का पद भी संभाल लेंगे।

इस प्रकार एक ही व्यक्ति सब में पदों व अधिकारों को स्थापित करने का परिणाम क्या हो सकता है, इस पर किसी ने विचार किया है क्या? जब पाकिस्तान के प्रधान मंत्री ने लीग का अध्यक्ष पद भी स्वीकार किया था, तो हमारे ही देश के प्रमुख व्यक्तियों ने कहा था कि श्री लियाकतअलीखां पाकिस्तान के तानाशाह बन रहे हैं। यदि पं० नेहरू के अतिरिक्त भारत के अन्य किसी भी व्यक्ति पर प्रधान मंत्री तथा कांग्रेस अध्यक्ष के दोनों पद आरोपित किए जाते तो सम्भवतः पं० नेहरू ही उस योजना के सब से बड़े विरोधी होते। किन्तु अपने विषय में वे चुप हैं।

उनके त्यागपत्र देने के बाद कांग्रेस में जो देश-व्यापी प्रतिक्रिया हुई है उससे पं० नेहरू ने इतना तो समझ ही लिया प्रतीत होता है कि अ. भा. कांग्रेस कमेटी के आगामी अधिवेशन में उनकी विजय के ही लक्षण अधिक हैं। इसीलिए वे अपनी माग के औचित्य अनौचित्य का विचार न करते हुए उस पर दृढ़ हैं।

हाल ही में उत्तर प्रदेश के कांग्रेसी नेताओं द्वारा पं० नेहरू से की गई भेंट से यह तथ्य और भी भली प्रकार प्रकट होता है। इस विवाद का एक हल यह कुछ लोगों ने सोचा था कि कांग्रेस कार्यकारिणी का निर्माण अध्यक्ष के हाथ में न छोड़कर कांग्रेस महासमिति को दे दिया जाय और वह कार्यकारिणी के सदस्यों का चुनाव करे। इस हल को श्री टण्डन अस्वीकार नहीं करते और पं० नेहरू के आग्रह की भी रक्षा हो जाती।

किन्तु ज्ञात हुआ है कि पं० नेहरू ने इसे अस्वीकार कर दिया है और उत्तरप्रदेश के नेताओं को यह बता दिया है कि कार्यकारिणी का चुनाव महासमिति के हाथ में दिए जाने के वे पक्ष में नहीं हैं। किन्तु कार्यकारिणी का पुनर्गठन होने की अपनी माग पर वे दृढ़ हैं। उन्होंने यह भी बता दिया बताया जाता है कि इसके दो ही मार्ग हैं—या तो कार्यसमिति के सदस्य स्वतः त्यागपत्र दे दें या श्री टण्डन उसे विघटित कर नयी कार्यसमिति पं० नेहरू से सलाह कर बनावें।

इस सबका सीधा अर्थ यही है कि पं० नेहरू श्री टण्डन को अपने सामने झुकाने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हैं, और इस प्रकार अपने व्यक्तित्व को संस्था से भी ऊपर उठाने पर तुले हुए हैं। हम पं० नेहरू से पूछना चाहते हैं कि यदि आज वे कांग्रेस के अध्यक्ष होते और श्री टण्डन श्री प्रधान मन्त्री होते तथा इसी प्रकार वे कार्यसमिति को विघटित कर अपनी सलाह से बनाये जाने का आग्रह कर रहे होते तो क्या वे उस मांग को स्वीकार कर लेते?

कांग्रेस में जमे हुए आज के अखाड़े का इतना ही अर्थ है कि पं० नेहरू स्व० गांधीजी के समान स्वयं को संस्था से भी बड़ा बनाने के प्रयत्न में हैं जबकि श्री टण्डन प्रत्येक कांग्रेसजन को संस्था के अन्दर, उसके अनुशासन में, उससे निश्चित रूप से छोटा बनाकर रखना चाहते हैं। वे जिस प्रकार दूसरों को बांधना चाहते हैं, उसी प्रकार स्वयं भी बंधना चाहते हैं।

किन्तु पं० नेहरू इसके लिये तैयार नहीं दिखायी देते। वे समझते हैं कि आगामी चुनाव में कांग्रेस का काम उनके बिना चल नहीं सकता। अगले वर्ष चुनाव के पश्चात् संसद तथा लोक सभाओं की कुर्सियों पर बैठने की इच्छा रखने वाले कांग्रेसजन इस दृष्टि से उनके मूल्य को समझते हैं और इसीलिए स्वार्थ के वशीभूत होकर वे उनका समर्थन कर रहे हैं। उनमें स्वयं इतना साहस नहीं कि वे जनता के सामने जाकर वोट मांगे, इसीलिए वे पं० नेहरू को आगे करना चाहते हैं। पं० नेहरू ने अपनी चोट समय देखकर की है। परिणाम जो भी निकले किन्तु यह अवश्य दिखाई देगा है कि अगले सप्ताह होने वाला अधिवेशन कांग्रेस के जीवन का एक ऐतिहासिक अधिवेशन होगा।

—•—

पं० मिश्र का वक्तव्य

पं० मिश्र के मूल वक्तव्य को लेकर देश के अनेक कांग्रेस जनों ने जो उनकी आलोचना की है तथा पं० नेहरू के पक्ष में वक्तव्य दिये हैं, उससे पं० मिश्र द्वारा उठायी गयी आपत्तियां दूर नहीं होती। पं० मिश्र ने जहां एक ओर पं० नेहरू को 'तानाशाह' बनने के मार्ग पर अग्रसर होने वाला कहा है, जिस बात का कि सबसे अधिक विरोध किया गया है, वहां कुछ मूल प्रश्नों को भी उन्होंने उठाया है जिनका कि "पं. नेहरू का विरोध करने का दुस्साहस" कह कर नेहरूजी के समर्थकों ने कोई उत्तर नहीं दिया।

पं० मिश्र के अनुसार कांग्रेस अध्यक्ष तथा प्रधान मन्त्री दोनों ही पदों पर पं० नेहरू को बैठाने का प्रस्ताव अनुचित है। उन्होंने यह भी कहा कि जब कांग्रेस तथा कांग्रेस अध्यक्ष मन्त्रिमण्डल में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करते तो प्रधान मन्त्री क्यों कार्यसमिति में हस्तक्षेप करते हैं। दोनों को अपनी अपनी वैधानिक स्थिति में कार्य करने की स्वतन्त्रता तथा परस्पर सद्भाव रहना ही उचित है।

पं० मिश्र ने इस बात का भी उल्लेख किया है कि संसद का कांग्रेसी दल अ० भा० कांग्रेस संगठन का एक भाग है और ऐसी दशा में कांग्रेस के मनोनीत अध्यक्ष तथा प्रधान मंत्री के बीच विवाद में उसे नहीं पड़ना चाहिए था, न ही पं० नेहरू को अपनी उपस्थिति में विश्वास का प्रस्ताव स्वीकार कराना चाहिए था। पं० मिश्र ने कहा है कि कांग्रेस के सिद्धान्त रक्षा नितान्त आवश्यक हैं यदि सिद्धांत नष्ट कर दिया तो कांग्रेस मर जायगी। सिद्धांत की रक्षा आगामी चुनावों में हारने का भय उठा कर भी की जानी चाहिए।

पं. मिश्र की इन बातों का किसी ने उत्तर नहीं दिया है। स्वयं पं. नेहरू ने पं. मिश्र की आलोचना की प्रशंसा की है। आगामी अधिवेशन में पं. मिश्र के अनुसार कांग्रेस का जीवन मरण का प्रश्न तय होने वाला है। यह आवश्यक है कि आज स्वार्थ में अन्धे न होकर दलबन्दी से ऊपर उठकर सिद्धान्तों की दृष्टि से विचार व आचरण करना हम सीखें।

---

५००) पारितोषिक

पारितोषिक वितरण के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न

१—सर्वोत्कृष्ट लेख के निर्णयार्थ किन-किन महानुभावों को परीक्षक-समिति में सम्मिलित किया जाय, इस सम्बन्ध मे अपना सुझाव भेजिये। प्रस्तावित व्यक्ति मध्यभारत अथवा राजस्थान के जीवन से पूर्ण परिचित होने चाहिये।

२—पारितोषिक वितरण के सम्बन्ध में हमारे पास सुझाव आये हैं कि लेख भेजने की अन्तिम तिथि को ३१ अक्टूबर के बजाय १५ अक्टूबर कर दिया जाय और पारितोषिक दिवाली के शुभ मुहूर्त पर लक्ष्मी पूजन के अवसर पर ३० अक्टूबर को वितरित कर दिया जाय। इस सुझाव को स्वीकार करने में हमें कोई आपत्ति नहीं है। फिर भी लेखक अपने सुझावों से हमें सूचित करें।

३—कुछ लेखकों ने पूछा है कि वे अपना लेख ३१ अक्टूबर को ही भेजें या उससे पूर्व! इस सम्बन्ध में लेखक जितनी जल्दी अपने लेख भेजेंगे उतना ही अच्छा होगा।

—व्यवस्थापक

देश-वार्ता

नेहरू व टण्डन अपनी अपनी बात पर दृढ़

मिश्र द्वारा गृहमंत्री पद से त्यागपत्र

नेहरू जी द्वारा आ. जुगलकिशोर का प्रस्ताव अस्वीकार

श्री नेहरू

समस्या ज्यों की त्यों

कांग्रेस अध्यक्ष श्री टण्डन तथा पं० नेहरू के मतभेदों से उत्पन्न गम्भीर समस्या को सुलझाने का जितना प्रयत्न किया जा रहा है, समस्या उतनी ही उलझती जा रही है। इस समस्या को सुलझाने में देश के कोने-कोने के कांग्रेसी तथा गैर कांग्रेसी विचारक अपनी अपनी सम्मतियां दे रहे हैं। आचार्य जुगलकिशोर ने एक सुझाव रखा था कि कांग्रेस अध्यक्ष के बजाय कांग्रेस महासमिति ही कांग्रेस कार्यकारिणी का निर्वाचन करे किन्तु इसके विपरीत पं० नेहरू का आग्रह है कि कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य स्वयं त्यागपत्र दे दें और नई कार्यकारिणी का निर्वाचन पं० नेहरू के सुझाव पर हो। पं० द्वारिकाप्रसाद मिश्र ने अपने त्यागपत्र के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कुछ दिन पूर्व कहा था कि उन्होंने पं० नेहरू की तानाशाही प्रवृत्तियों से तंग आकर ही मन्त्रिपद से त्यागपत्र दिया है। उन्होंने अपने त्यागपत्र का दूसरा कारण सरकार की पाकिस्तान के प्रति ढिलमिल नीति बताया। उन्होंने अपने एक वक्तव्य में कहा कि यदि पाकिस्तान अल्पसंख्यकों को सुरक्षा प्रदान करने में असमर्थ रहा, तो हम उनके लिये प्रदेश पाकिस्तान पर आक्रमण करके भी लेने में संकोच नहीं करेंगे। नई देहली में होनेवाली कांग्रेस की बैठक इस समस्या को कहां तक सुलझा सकेगी यह संदिग्ध है।

जापानी शान्ति सन्धि

जापान सम्बन्धी शान्ति-सन्धि के सम्बन्ध में हाल में ही भेजे गये अमेरिकी पत्र पर भारत सरकार का उत्तर आज वाशिंगटन भेज दिया गया है। एक श्वेतपत्र जिसमें भारत द्वारा भेजे गये उत्तर के साथ दोनों सरकारों के बीच हुआ पत्रव्यवहार शामिल है, संसद में प्रस्तुत किया जा रहा है। भारत ने काफी सोच का विरोध करते हुये कुछ बातों पर अधिक जोर दिया है।

१ भारत जापान में किसी भी तरह अमरीकी फौजों का रहना उचित नहीं समझता।

२ जापान के निकटवर्ती जिन टापुओं से जापान का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं और जो उसने हमला करके नहीं लीये हैं, वे सब जापान को वापिस कर दिये जाने चाहियें।

३ फारमोसा पर चीन का अधिकार निश्चित है। अतः वह शीघ्र ही उसे सौंप देना चाहिये। भारत का जापान की सन्धि पर हस्ताक्षर न करना विश्व की एक महान घटना है। जापान ने स्वयं इसका स्वागत किया है।

संसद की कार्यवाही

इस सप्ताह संसद की कार्यवाही किसी हद तक जन-साधारण के लिये नीरस रही। टैरिफ आयोग विधेयक पर काफी समय लगा और वह स्वीकृत होगया है। विस्थापित व्यक्ति (ऋण-व्यवस्था) विधेयक प्रवर समिति को सौंप दिया गया इस सम्बन्ध में पुनर्स्थापन मन्त्री श्री अजीतप्रसाद जैन ने कहा कि विधेयक में एक क्रान्तिकारी सिद्धान्त निहित है और वह सिद्धान्त यह है कि पश्चिमी पाकिस्तान की विस्थापितों के मामलों में किसी कर्जदार से उसकी ऋण चुकाने की सामर्थ्य के बाहर रकम न मांगी जाए। मन्त्री ने यह आश्वासन भी दिया कि आवश्यकता होने पर पूर्वी बंगाल के सम्बन्ध में भी सरकार नया विधेयक पेश कर सकती है।

आ. जुगलकिशोर

गैर सरकारी प्रस्तावों में सबसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव बंगाल की सीमा में हेरफेर का था किन्तु वह अस्वीकृत हो गया। इसके सम्बन्ध में बहस का उत्तर देते हुए गृह मन्त्री ने कहा कि सरकार को इस मामले में गम्भीरता से विचार करना होगा। यह प्रश्न बंगाल का ही नहीं बल्कि सारे भारत का है।

अ० भा० वैद्य समाज बनाने का प्रस्ताव विधि मन्त्री के इस आश्वासन पर वापस ले लिया कि सरकार इसका अध्ययन करने के लिये एक समिति नियुक्त करेगी। अभी संसद में 'स' श्रेणी के राज्यों के सम्बन्ध में विधेयक पर विचार हो रहा है।

भारतीय मुसलमानों का रुख

नेहरू लियाकतअली पत्र व्यवहार बन्द हो चुका है। पाकिस्तान ने एकमात्र तरीका अपनाया है कि भारत के प्रत्येक कथन को विपरीत अर्थ किया जाए तथा सब प्रकार की ऊटपटांग बातें फैला कर उसे दुनिया में बदनाम किया जाए। भारत के चौदह स्वतन्त्र विचारों के मुसलमानों ने डा० ग्राहम को अपने आवेदनपत्र में कहा कि पाकि-

(शेष पृष्ठ २२ पर)

अन्तर्राष्ट्रीय रङ्गमञ्च

रिजवे द्वारा कोरिया-वार्ता पुनः चालू करने का आमन्त्रण

अब्दुल्ला-हत्या अभियोग

जार्डन के शाह अब्दुल्ला की हत्या के सम्बन्ध में बिठाई गई विशेष फौजी अदालत ने अपना निर्णय दे दिया है। कुल दस अभियुक्तों में से ६ को मृत्यु दण्ड की सजा दी गई तथा बाकी चार निरपराधी घोषित किये गये। मृत्यु दण्ड प्राप्त अभियुक्तों में यरूशलम के भूतपूर्व मुफ्ती के चचेरे भाई डा० मूसा अलहुसेनी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। शाह अब्दुल्ला की हत्या गत २० जुलाई को यरूशलम की एक मसजिद में कर दी गई थी, जबकि वे नमाज के लिये प्रवेश कर रहे थे।

जापानी शान्ति सन्धि

जापानी शान्ति सन्धि के अमेरिकी मसविदे के प्रति विभिन्न राष्ट्रों के अपने अपने निजी दृष्टिकोण हैं। संसार के कूटनीतिज्ञ इस सम्बन्ध में अन्ततो गत्वा इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि संसार की आधी से अधिक जनता ने

तेहरान में ब्रिटिश प्रतिनिधि श्री रिचार्ड स्टोक्स, डा० मुसद्दिक और अमेरिकन प्रतिनिधि श्री हैरीमेन के बीच हुई अन्तिम बैठक जिसमें ईरान तेल-वार्ता भंग हो गई।

अमेरिकी मसविदे को ठुकरा दिया है तथा यह भी अनुमान लगाया जाता है कि सानफ्रांसिस्को में सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर हो जाने के बाद भी आधे से अधिक संसार की जापान से युद्धस्थिति बनी रहेगी। भारत, बर्मा और यूगोस्लाविया ने अभी तक सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किये हैं। रूस और चीन से तो मसविदा स्वीकार कर लिये जाने की किसी प्रकार भी आशा नहीं है। इण्डो-नेशिया यद्यपि सम्मेलन में भाग लेगा किन्तु सन्धि पत्र को स्वीकार नहीं करेगा। अमेरिका ने भी इस सम्बन्ध में एक कूटनीतिक चाल चली है। वह यह है कि सम्मेलन में भाग लेने वाले किसी भी राष्ट्र के प्रतिनिधि को बहस के लिये अवसर नहीं दिया जायेगा। स्वयं जापान ने भी उक्त शान्ति प्रस्ताव से असहमति प्रकट की है। पूर्वी जापानी सभा के

जार्डन के शाह अब्दुल्ला की हत्या के मुकदमे में डा० मूसा अपना बयान पेश कर रहे हैं।

जापानी शान्ति-सन्धि का व्यापक विरोध

भूतपूर्व कर्नल मसानोबू सूजी ने कहा है कि यदि अमेरिका वास्तव में जापान को साम्यवादी चंगुल से मुक्त रखना चाहता है तो वह जापान को अपने ही भाग्य पर छोड़ दे। उन्होंने यह भी कहा है जापान में अमरिकी हवाई अड्डे होने के कारण जापान की रक्षा कदापि नहीं हो सकती बल्कि जापान की शान्ति ही खतरे में पड़ जायेगी। अमेरिका द्वारा जापानियों को पूर्ण अधिकार दे दिये जाने के बाद जापानी स्वयमेव अपनी रक्षा कर सकेंगे। रूस के उपविदेशी मन्त्री श्री ग्रोमिको ने यह भी कहा है कि यदि रूस ने सानफ्रांसिस्को सम्मेलन में भाग लिया तो वह शान्ति सन्धि पर अपने प्रस्ताव अलग से पेश करेगा।

तेल-वार्ता पुनः प्रारम्भ

ईरान के डा० मुसद्दिक द्वारा ब्रिटिश ईरान तेल वार्ता समाप्त कर दिये जाने के फलस्वरूप ईरानी मजलिस में विरोधी पक्ष ने क्षोभ और असन्तोष का वातावरण उत्पन्न कर दिया है। स्टोक्स व हैरीमैन आदि आगन्तुकों की प्रतिक्रिया के अपने अपने स्थानों पर लौट जाने के पश्चात ईरानी मजलिस में इस बात को लेकर काफी वाद-विवाद हुआ कि मजलिस ने डा० मुसद्दिक को ब्रिटेन के साथ वार्ता चालू रखने का ही अधिकार दिया था

उत्तरी कोरिया का चीनी प्रतिनिधि मण्डल जिसने कासांग में चल रही कोरिया वार्ता को समाप्त कर दिया है।
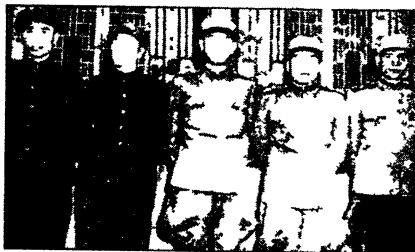
न कि समाप्त करने का। अब पता लगा है कि ब्रिटिश ईरान वार्ता भंग होने पर भी तेहरान में अमेरिकन राजदूत श्री ग्रेडी बातचीत को पुनः चालू रखेंगे। डा० ग्रेडी की यह मुलाकात आंग्ल-ईरानी तेल विवाद के सम्बन्ध में नई अमेरिकी मध्यस्थता के रूप में प्रारम्भिक वार्ता है। अमरिकन क्षेत्रों में विचार किया जाता है कि श्री ग्रेडी द्वारा पुनः चलाई गई वार्ता टूटी हुई शृंखला को पुनः जोड़ने में सहायक सिद्ध होगी। अपने विरोधी पक्ष के प्रबल विरोध से डा० मुसद्दिक यहाँ तक आत-कित हैं कि उन्होंने उक्त मजलिस के उस अधिवेशन में भाग लेने से इनकार कर दिया है जिसके कई सदस्य उनकी तेल नीति को चुनौती देने को तैयार हैं।

कोरिया वार्ता

पिछले दिनों कोरिया वार्ता भंग हो जाने की राजनैतिक क्षेत्रों में काफी चर्चा रही। राष्ट्र संघीय प्रधान सेनापति जनरल रिजवे ने कम्युनिस्टों को पत्र भेज कर कहा है कि यदि वे वार्ता चालू रखना चाहें तो मैं पुनः अपने प्रतिनिधि सहर्ष भेज सकता हूँ। किन्तु प्रारम्भ से दोनों ओर से कुछ आधारभूत विवादग्रस्त प्रश्न थे जिनके कारण उक्त वार्ता अधिक समय तक नहीं चल सकी थी सर्व प्रथम कोरियाई जनरल नमइल ने संयुक्त राष्ट्रीय सेनाओं पर यह अभियोग लगाया कि कासोंग के क्षेत्र में कुछ चीनी फौजी मारे गये। दूसरा आरोप २२ अगस्त की रात को संयुक्त राष्ट्रीय विमान द्वारा कासोंग के तट पर भीषण बम-वर्षा किये जाने का था। इसी प्रश्न को कुछ अधिक रंग देकर वार्ता भंग कर दी गई और पेकिंग रेडियो ने स्पष्ट घोषणा कर दी कि उक्त बम वर्षा अमेरिकी षड्यन्त्र के फल स्वरूप थी। पहले तो आशा की जाती थी कि कासोंग पर बम वर्षा के आरोप की निष्पक्ष जाँच किये जाने से गुत्थी कुछ सुलझ जाएगी। किन्तु जनरल रिजवे ने साम्यवादियों की उस प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया है जिसमें उन्होंने संयुक्त राष्ट्रीय विमानों द्वारा कासोंग पर बम वर्षा की फिर से जाँच करने के लिए कहा था। जनरल रिजवे यद्यपि वार्ता पुनः चालू रखने के लिये इच्छुक हैं किन्तु वे बम वर्षा की कथित जाँच के आग्रह को साम्यवादियों द्वारा कोरिया वार्ता में विलम्ब किए जाने का प्रयत्न बताते हैं। अब तक की दशा से स्थिति में कोई विशेष सुधार की आशा नहीं है।

नेहरू-टण्डन विवाद की प्रतिक्रिया

महिला सम्मेलनों की आड़ में चुनाव प्रचार

(हमारी बिहार की चिट्ठी)

नेहरू-टण्डन संघर्ष को ले कर बिहार के राजनैतिक क्षेत्र में अन्य प्रान्तों से अधिक उथल-पुथल मची हुई है। बिहार के मुख्य मन्त्री डा० श्री कृष्णसिंह ने ही सबसे पहले नेहरू जी के पक्ष का खुले रूप से समर्थन किया था। उसके बाद से उनके दल के पं० प्रजापति मिश्र से ले कर साधारण से साधारण कांग्रेसी ने भी अपने अध्यक्ष टण्डन जी पर छींटा कसने की चेष्टा प्रारम्भ कर दी है। परन्तु अधिकतर कांग्रेसी अभी तक गंभीरता बनाये हुए हैं एवं एक मत से उनकी राय है कि टण्डन जी का पक्ष वैधानिक एवं तर्क की दृष्टि से सत्य एव उचित है। अगर कांग्रेस का यह अवांछनीय संघर्ष टाला नहीं जा सका तो बिहार के वोट तो दोनो पक्षों में बंट ही जायंगे परन्तु टण्डन जी का पलड़ा भारी रहेगा ऐसी आशा है। कांग्रेसी क्षेत्रों को छोड़ कर जनसाधारण मे भी इस प्रश्न की अत्यधिक चर्चा है। रास्ते मे, मोटर में, हरेक स्थान पर, हरेक मुख पर यही विषय है। लोगो की राय है कि नेहरू जी की आदर्शवादिता से दब कर ही कांग्रेस के कर्मठ नेताओं ने जनतन्त्र का नारा बुलंद किया है। वे चाहते है कि देश संगठित रहे एवं बाहरी आक्रमणों से रक्षार्थ जनसाधारण मे राष्ट्र प्रेम निर्माण किया जाय। यहां के प्रमुख दैनिक पत्र 'इंडियन नेशन' एव 'सर्चलाइट' ने भी अपने अग्रलेखों के द्वारा इस प्रश्न पर निष्पक्ष रूप से प्रकाश डाला है।

महिला-सम्मेलन

बिहार प्रादेशिक महिला सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन गत सप्ताह श्रीमती लीलावती मुंशी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। बिहार की प्रमुख कांग्रेस कर्मी श्रीमती रामप्यारी देवी एम० एल० सी० इस अधिवेशन की स्वागताध्यक्षा थीं। बिहार के राज्यपाल श्री माधवहरि अणे ने सम्मेलन का एवं निरक्षर प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। वैसे तो देखने मे यह सम्मेलन स्त्रियों का उनके अधिकारों की प्राप्ति के लिये संगठन मात्र ही है, परन्तु वास्तव मे आगामी चुनाव को ध्यान मे रख कर ही ये सब सम्मेलन आयोजित हो रहे हैं। वयस्क मताधिकार मिलने के बाद से स्त्रियों के वोटो के लिये बेहद दौड़ धूप हो रही है। बिहार कांग्रेस के प्रमुख दो दलों के अनुरूप स्त्रियों के संगठन से नारी समाज को कितना लाभ पहुँचेगा यह तो समय ही बतलायेगा।

चुनाव घोषणापत्र

चुनाव जैसे जैसे निकट आ रहा है, सभी राजनैतिक दल अपने अपने घोषणापत्र को प्रकाशित करते जा रहे हैं। चुनाव घोषणा पत्र अगर सभी दलों के इकट्ठे किए जायें तो उनमें बहुत ही कम अन्तर दिखाई पड़ेगा। वास्तविक अन्तर तो नेतृत्व में है। कोई भी वर्तमान राजनैतिक दल इस बात के लिये तैयार नहीं है कि जनता की भलाई के लिये अपने दलगत स्वार्थ को तिलांजली दे। अभी-अभी क्रान्तिकारी समाजवादी दल के नेताओं उपनेताओं की एक बैठक पटना में हुई थी। बैठक समाप्त होने के बाद एक प्रेस सम्मेलन मे चुनाव घोषणापत्र पेश करते हुए उन के नेताओ ने बतलाया कि चुनाव के द्वारा तो वे सत्ता प्राप्त करने की आशा ही नही करते हैं—वे तो इसके द्वारा वातावरण निर्माण करके क्रान्ति कराने का स्वप्न देखते हैं। बिहार मे विधान सभा के लिये वे लोग २५ उम्मेदवार खड़े करे गे—संसद के लिये कोई उम्मेदवार अभी तक मिला ही नहीं है। बिहार की राजनीति के जानकार लोगों का यह मत है कि इस पार्टी को कोई सफलता नहीं मिलेगी।

प्रजातंत्र की छीछालेदर

राजनैतिक जगत में इस प्रकार की छीछालेदर देख कर देशभक्तों के हृदय मे अतीव वेदना प्रकट हो उठी है। चारों तरफ से मांग आ रही है कि भारतीय संस्कृति एवं मर्यादा के आधार पर एक राजनैतिक संगठन निर्माण करना आवश्यक है। पाकिस्तान की तुष्टीकरण की नीति का परित्याग कर देश की रक्षा एवं उत्कर्ष की दृष्टि से आवश्यक मार्ग का अनुसरण यह नयी संस्था करे। कुछ क्षेत्रों में तो युवक कार्यकर्ताओं में इस नये दल के निर्माण के विलम्ब के कारण अत्यधिक क्षोभ फैल रहा है। कांग्रेस एवं अन्य संस्थाओ की आपसी कलह स्वार्थपरता एवं क्षुद्रता देखकर उनके सच्चे कार्यकर्त्ता नये आधार पर देश की सेवा करने का अवसर खोज रहे हैं। अगर इस प्रकार की संस्था शीघ्र निर्माण की गई तो प्रान्त के प्रमुख नागरिकों का ही नहीं बल्कि बहुत सी संस्थाओं का सहयोग भी इसे अवश्य प्राप्त होगा।

कांग्रेस की बदनामी चार वर्ष के कांग्रेसी शासन के कारण हुई है

सहयोगी हिन्दुस्तान टाइम्स का मत

संसद् के कांग्रेस दल ने अपने नेता जवाहरलाल नेहरू में अपना विश्वास पुनः प्रकट किया है। शासन के प्रमुख तथा जनता के नेता के रूप में इसी प्रकार का विश्वास श्री नेहरू के प्रति अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा भी निश्चित् रूप से प्रकट किया जायगा, किन्तु इस प्रकार के विश्वास प्रकाशन से अ. भा. कां. कमेटी का उक्त व्यक्ति में विश्वास किसी प्रकार भंग नहीं होता, जिसे प्रतिनिधियों ने एक विशेष अवधि के लिए कांग्रेस का अध्यक्ष चुना है। एक अच्छे शासन तथा स्वस्थ राजनीतिक जीवन के लिए यह आवश्यक है कि प्रधानमन्त्री और दल के अध्यक्ष के पद पृथक-पृथक रखे जायें। एक दल अपने घोषणापत्र तथा वार्षिक सम्मेलनो मे स्वीकृत प्रस्तावों मे मोटे सिद्धान्त तथा कार्यक्रम निर्धारित करता है। उसके संसदीय दल का यह कर्तव्य है कि वह उन्हें यथासंभव ढंग से अधिक से अधिक पूरा करे। किन्तु कोई भी सत्तारूढ़ दल जनता के अन्य वर्गों से समझौता किए बिना शासन नहीं चला सकता। इस प्रकार का समझौता दल के अध्यक्ष द्वारा नहीं हो सकता। उसे प्रधानमन्त्री ही कर सकता है। दोनों पदों को एक ही व्यक्ति को सौंपने से दल के संगठन को चलाने में वैधानिक कठिनाइयां खड़ी हो जायेंगी।

दुर्भाग्य से दल की बैठक में हुई कार्यवाही का अधिकृत वृत्तान्त केवल श्री नेहरू के भाषण की प्रतिलिपि तक ही सीमित है। भाषण के बाद हुआ वाद्-विवाद तथा संशोधित प्रस्ताव को स्वीकार करने की पद्धति भी यदि बताई गई होती, तो स्थिति अधिक स्पष्ट होती। अनुमानित वृत्तान्तों से जनता और भी भ्रम में पड़ गयी है। मूल प्रस्ताव का वह भाग, जिसमें चुनाव लड़ने का सारा दायित्व श्री नेहरू को देने के लिए कहा गया था, क्यों निकाल दिया गया? क्या वह इसलिए था कि भवन के सदस्यों ने सोचा कि इसका अर्थ श्री टंडन में अविश्वास प्रकट करना होगा, जिसके प्रति अपनी सहमति प्रकट करने के लिए दल तैयार नहीं था? क्या वह इसलिए निकाल दिया गया कि श्री नेहरू ने उसे स्वीकार नहीं किया? क्या यह स्पष्ट कर दिया गया था कि जिस दशा में वह प्रस्ताव स्वीकार किया है, उससे श्री टंडन या श्री नेहरू को कांग्रेस में अपने वर्तमान पद से त्यागपत्र दिए बिना इस विवाद के सुलझाव का मार्ग बन्द नहीं होगा? क्या यह स्पष्ट कर दिया गया था कि प्रस्ताव ऐसा कोई सुझाव नहीं देता कि दल श्री नेहरू के शासन के प्रमुख रहते हुए भी कांग्रेस अध्यक्ष पद स्वीकार करने के पक्ष में है? हम समझते हैं कि उस अवसर पर हुए भाषणों में इन प्रश्नों के उत्तरों के विषय में कोई सन्देह नहीं छोड़ा होगा।

सचाई यह है कि कांग्रेस की अप्रियता उस ढंग के कारण है जिससे कि उसने गत चार वर्षों में देश का शासन चलाया है। कांग्रेस अध्यक्ष पद पर आरूढ़ वर्तमान व्यक्तित्व तो केवल गत जाड़ों में ही सामने आया, और इसके पूर्ववर्त्ती दो अध्यक्षों में से एक ने विरोध स्वरूप त्यागपत्र दे दिया और दूसरा नीचे दब रहा। किसी भी दशा में यह नहीं कहा जा सकता कि अध्यक्षों में से किसी ने भी शासन क्षेत्र में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप किया। यह भी उतना ही सच है कि जहां कांग्रेसजनों ने श्री नेहरू की विदेशी-नीति तथा असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण का पूर्णतया हृदय से समर्थन किया है, वे कितनी ही बार उस ढंग का समर्थन नहीं करते जिस ढंग से वह इन क्षेत्रों में काम करते हैं। और यदि वे चुप रहते हैं तो वह उनके महान व्यक्तित्व के प्रति आदर के कारण। (आर्थिक विषयों पर न वह स्वयं स्पष्ट हैं न अधिकांश कांग्रेसजन)। इसी प्रकार जब उनका भाषण सुनने के लिए लोग सहस्रों की संख्या में सभाओं में एकत्र हो जाते हैं तो वे प्रायः राष्ट्र के नेता को देखने तथा सुनने के लिए ही होते हैं न कि किसी विशेष विचार धारा पर अपनी सहमति प्रकट करने। वर्तमान स्थिति का यह एक अनिवार्य पहलू है। कांग्रेस में रहकर भी पं नेहरू का विकास दल से कुछ भिन्न प्रकार से हुआ है, किन्तु प्रमुख कांग्रेसजन तथा राष्ट्रीय नेता के रूप में उनकी अकेली स्थिति पर कभी सन्देह नहीं प्रकट किया गया। यथार्थ रूप से श्री टण्डन के हृदय में श्री नेहरू के प्रति न केवल प्रेमभाव है बरन उन्होंने श्री नेहरू को अपना पूर्ण सहयोग दिया है। वर्तमान परिस्थिति में कांग्रेस तथा देश का हित, अब जब कि एक "झटका" दिया जा चुका है, श्री नेहरू तथा श्री टण्डन के साथ मिलकर चलने में ही है।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

कांग्रेस शासन ने ही कांग्रेस को बदनाम किया है

टण्डन जी की जीत निश्चित

पं० नेहरू त्याग-पत्र वापस ले लेंगे

[श्री होरीलाल सक्सेना]

स्व० महात्मा गांधी

आपने आज से चार वर्ष पूर्व ही कांग्रेस को विसर्जित करने की सलाह दी थी।

आज देश भर के कांग्रेसजनों का ध्यान दिल्ली में होने वाली ८ ९ सितम्बर की अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक की ओर एकटक लगा हुआ है, और उन्हे चिन्ता केवल एक बात की है कि किसी प्रकार भी पं० जवाहरलाल नेहरू आगामी निर्वाचनों में कांग्रेसी अभ्यर्थियों अथवा उम्मेदवारों के लिये देश भर का दौरा करके उन्हे सफल बनाने का प्रयत्न करें। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिकांश सदस्य आगामी निर्वाचनों में केन्द्रीय संसद अथवा प्रान्तीय विधान सभाओं के लिये सदस्य हैं। इनका व्यवहार जनता के साथ गत चार वर्षों में क्या रहा है यह वह भली प्रकार जानते हैं और उन्हें पूर्ण विश्वास है कि वह अपने बल पर किसी भी परिस्थिति में निर्वाचित नहीं हो सकते। इसलिए उन्हें पं० नेहरू के सहारे की आवश्यकता है। उनका अनुमान है कि जिस तरह सन् १९३६ ३७ तथा सन् १९४६ के साधारण निर्वाचनों में पं० नेहरू के देश भर के तूफानी दौरों के फलस्वरूप कांग्रेस को चारों ओर सफलता ही सफलता मिली थी उसी तरह आज भी यदि पं० नेहरू कांग्रेस के लिये देश-व्यापी दौरे करें तो वह फिर निर्वाचित हो सकते हैं।

कूप मण्डूकों की दशा

आज के कांग्रेसजनों की उपमा यदि कूप मण्डूकों से दी जाय तो कोई अतिशयोक्ति न होगी, क्योंकि उन्हे आज यह तक नहीं दीखता कि १५ अगस्त १९४७ के दिन स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाने के फलस्वरूप तथा भारत का विभाजन हो जाने के कारण कांग्रेस की इस दशा को कोई आवश्यकता नहीं रह गई। और जो व्यवहार कांग्रेसजनों ने—ग्राम कांग्रेस कमेटियों से लेकर अखिल भारतीय कांग्रेस तथा संसद के सदस्यों तक—देश की जनता से परमिटों आदि के सम्बन्ध में बर्ता है वह भी आज के कांग्रेसजनों को दिखाई नहीं देता इसी कारण से उनकी धारणा अब भी बनी हुई कि पं० नेहरू के दौरों से कांग्रेसजन पुनः निर्वाचित हो सकते हैं। इसी भ्रमपूर्ण धारणा ने पं० नेहरू में भी शासन मद इतना अधिक मात्रा में भर दिया है कि उन्हें भी वास्तविकता दिखाई नहीं देती। वह यह भूल जाते हैं कि गत द्वितीय महायुद्ध को ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री मि० विंस्टन चर्चिल ने ही जितवाया,

नेहरू-टण्डन विवाद पर आज सारे देश की आंखें लगी हुई हैं।

किन्तु इसके थोड़े ही काल के पश्चात् जब ब्रिटेन में साधारण निर्वाचन हुए तो जनता ने श्रमिक दल को ही अपने शासन के लिये निर्वाचित किया, यही दशा आगामी निर्वाचनों में कांग्रेस की होने जा रही है। स्वर्गीय सरदार पटेल इस अटल सत्य को जानते थे और इसी लिये जब तक वह जीवित रहे उन्होंने साधारण निर्वाचन होने ही नहीं दिये। पं० नेहरू को यह दम्भ है कि यदि वह कांग्रेस के लिये एक बार पुनः दौरा कर देंगे तो कांग्रेस की विजय निश्चित् है। उनकी यह धारणा कहां तक ठीक है वह निर्वाचन से स्पष्ट हो जायगा।

कांग्रेस की चिकित्सा का प्रयत्न

अपने इस दम्भ के कारण आज पं० जवाहरलाल नेहरू मृत्यु शैया पर पड़ी हुई कांग्रेस की चिकित्सा अपने राजनैतिक झटकों द्वारा करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

गांधी जी का वसीयतनामा

गांधी जी ने अपने अन्तिम दिनों में इस बात का अनेक प्रयत्न किया कि भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाने के पश्चात् अब कांग्रेस नामक संस्था के लिये देश की राजनीति में कोई स्थान नहीं रहा और उसे विघटित कर दिया जाय और यही बात उन्होंने अपने अन्तिम दिन भी कही थी जिसे श्री किशोरलाल मशरूवाला ने गांधीजी का अन्तिम इच्छापत्र अथवा वसीयतनामा के नाम से प्रख्यात किया है। कांग्रेस तो विदेशियों से लड़ने के लिये एक सेनामात्र थी जिसका कार्य स्वतन्त्रता मिलते ही समाप्त हो गया। इस सेना में कोई भी व्यक्ति भर्ती हो सकता था जो देश के लिये अपनी आहुति देने के लिये उद्यत हो। उसकी शिक्षा क्या है उसका आचार विचार क्या है, उसका आचरण कैसा है इन सब बातों पर कभी भी कोई विचार नहीं किया गया और किया भी नहीं जा सकता था क्योंकि अंग्रेज से लड़ने में इन सब बातों पर ध्यान देने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। इसलिये यदि आज कांग्रेसी शिक्षा में आचार विचार में अथवा आचरण में निम्न श्रेणी के ही व्यक्ति हैं तो इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है? आश्चर्य की बात तो तब होती जब यह सैनिक उच्च श्रेणी के सिद्ध होते। आज हमारे देश का शासन इन्हीं अशिक्षित सैनिकों के हाथों में है और इसका जो फल होना चाहिये वही हमारे सम्मुख आ गया है।

स्व० सरदार पटेल

कर्णधार के बिना कांग्रेस की नौका डगमगा रही है।

कांग्रेस शासन ने बदनाम किया

अभी हाल ही में कांग्रेस के स्थानीय मुख पत्र हिन्दुस्तान टाइम्स ने अपने एक अग्रलेख में कांग्रेस की वर्तमान राजनीति पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि वास्तविकता तो यह है कि कांग्रेस की बदनामी का कारण तो वह ढंग है जिससे उसने इस देश का शासन गत चार वर्षों में चलाया है। यदि जनता सहस्रों की संख्या में पं० नेहरू का भाषण सुनने आती है तो वह केवल अपने वीर सेनानी के दर्शन करने तथा उसकी वाणी सुनने आती है न कि उसकी नीति का समर्थन करने। वास्तविकता भी यही है। ब्रिटेन में भी आज तक जनता मि० चर्चिल के दर्शन करने आती है जिसने उन्हें शत्रु के भय से बचाया था उसका समर्थन करने के लिये नहीं।

दर्शन अथवा नीति समर्थन

किन्तु पं० जवाहरलाल नेहरू को यह भ्रम हो गया है कि यह भोली भाली जनता जो उनके दर्शन करने तथा उनकी वाणी सुनने आती है वह उनकी आज की नीति से भी सहमत है और वह इसका समर्थन भी करती है। इसीलिये वह समझते हैं कि उन्हें यह अधिकार प्राप्त है कि वह जैसा भी उचित समझें देश को वैसे ही घसीट ले जायं। किन्तु देश आज उनकी अधिकांश नीतियों से असहमत है। पं० नेहरू ने कांग्रेस के पूर्व घोषित उद्देश्यों की अवहेलना करके अंग्रेजों तथा मुस्लिम लीग से मिल कर कांग्रेस के उस समय के अधिवेशन तक की सहमति के बिना इस देश के विभाजन को स्वीकार किया और वह बटवारा हो जाने के पश्चात् भी उन्होंने हिन्दू मुस्लिम जनता की अदला बदली को स्वीकार नहीं किया

[शेष पृष्ठ २० पर]

कल के भारतीय प्रदेश में

खानबन्धुओं की स्थिति पर पं० नेहरू के खेदप्रकाश पर विरोध पत्र : भारत पर व्यापार समझौता भंग करने का आरोप : हिन्दुओं का निष्क्रमण : आसाम सीमा पर गोली चली : ग्राहम कराची में

पाकिस्तान में खान बन्धुओं की गिरफ्तारी पर कुछ दिन पूर्व एक सार्वजनिक सभा में भारत के प्रधान मन्त्री पं० नेहरू द्वारा खेद प्रगट किये जाने का मिया लियाकत की सरकार द्वारा विरोध किया गया है। इस सम्बन्ध में भारत सरकार को एक विरोध पत्र भेजा गया है। पत्र में कहा गया है कि खान बन्धुओं की गिरफ्तारी व रिहाई पाकिस्तान का एक घरलू प्रश्न है। इस प्रकार के प्रश्न पर अपने विचार प्रगट कर भारत के प्रधानमन्त्री ने मैत्री सम्बन्धों तथा दिल्ली समझौते के विरुद्ध आचरण किया है।

उक्त पत्र के उत्तर में भारत के विदेश मन्त्रालय की ओर से पाकिस्तान को यह बता दिया गया है कि खान अब्दुलगफ्फार खां के कारावास के सम्बन्ध में खेद प्रकट कर भारत ने कुछ भी अनुचित नहीं किया। खान बन्धु भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के वीर सैनिक रहे हैं और देशवासियों की सेवा के लिए उन्होंने भारी कष्ट उठाये हैं। भारत उनकी सेवाओं को नहीं भुला सकता। साथ ही यह खेद का विषय है कि ऐसे व्यक्ति का जीवन इस स्थिति में बीत रहा हो।

× × ×

गत शनिवार को प्रकाशित एक प्रेस नोट में पाकिस्तान सरकार ने भारत पर यह आरोप लगाया है कि वह "व्यापार समझौते के आधीन" उस "सब सामान" नहीं दे रहा है। प्रेस नोट में कहा है कि भारत द्वारा पाकिस्तान को जून के अन्त तक सब मार्गों से भेजे गये कोयले का कुल आयात ३,२१,४२१ टन है जब कि उस तारीख तक ६०१ ००० टन तय हुआ था। जुलाई के अन्त तक भी पूर्ण राशि ४,२८,०३१ टन ही है। प्रेस नोट में यह भी कहा गया है कि भारत में माल गाड़ी के डिब्बों की कमी के कारण पाकिस्तान रेलवे ने १२०० डिब्बे भारत भेजना तय किया था किन्तु भारत की ओर से इसका कोई उत्तर नहीं दिया गया।

स्मरण रहे कि कुछ ही समय पूर्व भारतीय संसद् में भारत के व्यापार मन्त्री ने अपने वक्तव्य में पाकिस्तान पर यह आरोप लगाया था कि वह व्यापार समझौते का ठीक प्रकार पालन नहीं कर रहा है और वचन के अनुसार जूट नहीं भेज रहा है। पाकिस्तान ने सदा की ही भांति अपने को दूध का धुला सिद्ध करते हुए जूट की कमी का दोष भी भारत के सिर ही मढ़ा है। पाकिस्तान के प्रेस नोट के अनुसार वह जूट तो भारत को ही पाकिस्तान के खुले बाजार में खरीदना था। फिर पाकिस्तान का क्या दोष?

× × ×

एक विरोधपत्र द्वारा पाकिस्तान सरकार ने भारत सरकार से भारत की अमेरिका स्थित राजदूत श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित के भाषण के प्रति विरोध प्रकट किया है। पाकिस्तानी रिपोर्ट के अनुसार श्रीमती पंडित ने दोनो राज्यों की भावी एकता की संभावना प्रकट कर दिल्ली समझौते को भंग किया है। उक्त समझौते के अनुसार पाकिस्तान का कथन है, भारत सरकार इस बात के लिए वचनबद्ध है कि दोनों राज्यों की एकता की चर्चा न की जाय।

किन्तु क्या पाकिस्तान इस तथ्य से भी इन्कार करता है कि अब से कुछ ही वर्ष पूर्व दोनों राज्य एक ही देश थे और आज भी दोनों एक ही देश की भूमि पर स्थित दो राज्य हैं। भारत के विरोध का बुखार पाकिस्तानी नेताओं पर इतने जोर से सवार है कि वे इतिहास और वास्तविकता को भी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं। यदि उनका वश चले तो वे दोनों को ही मिटा दें और अपने वश भर वे मिटाने का यत्न भी कर रहे हैं। भारत एक देश के नाते स्वयं एक भौगोलिक इकाई है। प्रकृति ने स्वयं इसे एक बनाया है। इस भूमि पर अनेकों राज्य रहते तथा मिटते आये हैं, उससे इसकी भौगोलिक एकता में कभी अन्तर नहीं पड़ा। फिर कौन कह सकता है कि भविष्य में ये दोनों राज्य भी एक नहीं हो जायेंगे। यह सम्मति तो भारत के इतिहास का एक निष्पक्ष पाठ है। इसमें राजनीति का तो अंश भी नहीं है।

× × ×

पूर्वी बंगाल से हिन्दुओं का निष्क्रमण जारी है अब तक एक काफी बड़ी संख्या में पूर्वी पाकिस्तान से निकल कर हिन्दू पश्चिमी बंगाल तथा आसाम आदि में पहुँच चुके हैं। आने वाले लोगों के कथनों से पता चला है कि हिन्दुओं के जीवन तथा सम्पत्ति को किसी प्रकार की सुरक्षा प्राप्त नहीं है। फलस्वरूप भारत की ओर भगदड़ मची हुई है। इतना ही नहीं पाकिस्तानी अधिकारी इन निर्वासितों के साथ बड़ा कठोर व्यवहार करते हैं। पश्चिमी बंगाल की आर्थिक स्थिति पर इन निर्वासितों का भारी बोझ पड़ गया है।

साथ ही सीमा पर पाकिस्तानी क्षेत्र में पर्याप्त सैनिक कार्यवाहियां तथा तैयारियां चल रही हैं। पूर्वी बंगाल की सारी सीमा पर कड़ी सैनिक व्यवस्था व देख रेख जारी है। हाल ही में आसाम सीमा का निरीक्षण करने के लिये गये हुए एक भारतीय अधिकारी तथा उसके दल पर पाकिस्तानी सीमा के अन्दर से सैनिकों ने गोली चला दी, जिससे कुछ व्यक्ति घायल हो गये। फलस्वरूप बाध्य होकर भारतीय सैनिकों को भी गोली का उत्तर गोली से ही देना पड़ा। आसाम सरकार द्वारा उक्त घटना के प्रति एक कड़ा विरोध पत्र पाकिस्तान सरकार को भेज दिया गया है।

× ✶ ×

भारत पाक झगड़े में अरब देशों द्वारा तटस्थ रहने के निर्णय से भारत के विरुद्ध सभी मुस्लिम देशों को खड़ा करने के पाकिस्तानी विचार को एक गहरा धक्का लगा है। साथ ही सीमा प्रान्त में काश्मीर के प्रश्न पर पठानों

[शेष पृष्ठ २० पर]

पाकिस्तान का युद्धोन्माद कम हो रहा है— श्री शुन्यी

आयुर्वेद-चिकित्सा प्रणाली सर्वथा वैज्ञानिक है

सरकार की पक्षपातपूर्ण नीति घातक

[श्री गुरुदत्त]

राजकुमारी अमृतकौर

अंग्रेजी स्कूलों तथा कालिजों में पढ़ा भारतवासी आधा अंग्रेज तो अवश्य बन जाता है। वे अंग्रेजी पढ़े लिखे जिनके परिवारों में भारतीयता की योति उनके पूर्वजों के विचारों के कारण जलती है उनमें अंग्रेजीयत का अंश पनप नहीं सका। ऐसे लोग वर्तमान परिस्थिति में अपवाद मात्र हैं। अंग्रेजी पढ़ों के सम्मुख भारतीयता के पक्ष में चाहे कितनी युक्तियां दें उनके मस्तिष्क में बात बैठ नहीं सकती।

ऐसा कहा जाता है कि स्काटलैंड के रहने वालों के मस्तिष्क में हास्य रस घुसेड़ने का केवल एक ही उपाय है। उनकी खोपड़ी की टाकी उतार कर हास्य रस के चूर्ण की पुड़िया मस्तिष्क में डाल टाकी पुनः सी देने से ही शायद वह इस रस का स्वाद ले सकते हैं। यही बात भारत के अंग्रेजी पढ़े लिखों के मस्तिष्क में भारत की महिमा घुसेड़ने की हो तो हो। इन लोगों के मस्तिष्क के चारों ओर फौलादी दीवारें बन चुकी हैं। ये दीवारें भ्रम पक्षपात और अपनी विद्वत्ता के अभिमान की है और इनको भेदकर किसी युक्ति युक्त बात का प्रभाव इन के मस्तिष्क पर होना असम्भव प्रतीत होता है।

यही बात आयुर्वेद के विषय में है। डाक्टर कैनेथ वाकर ने अपनी पुस्तक (डाईगनोजिज ओफ मैन) में लिखा है कि ये द्वितीय अथवा तृतीय श्रेणी के वैज्ञानिक ही होते हैं जो केवल वैज्ञानिक मार्ग को ही सत्य का मार्ग मानते हैं। ज्यों ज्यों ज्ञान का क्षेत्र बढ़ता जाता है उसी प्रकार बाहर का अन्धकार बड़ा और बड़ा प्रतीत होने लगता है। ज्ञान की वृद्धि विनयम उत्पन्न करती है।

आनरेरी डी० एस० सी० की उपाधि प्राप्त करने से कोई वैज्ञानिक नहीं बन जाता परन्तु यह भारत का दुर्भाग्य है कि इस प्रकार की डिग्रियें लिए हुए व्यक्ति इन लोगों को साक्षी देने का अधिकार बना लेते हैं, जिनका पूर्ण जीवन सत्य की खोज में व्यतीत हो गया है।

आखिर झगड़ा क्या है? आयुर्वेद के मानने वाले यह कहते हैं कि इस विज्ञान की उन्नति में सरकार यत्नशील हो परन्तु अंग्रेजी पढ़े लिखे ऐसे लोगों से बनी सरकार जिनके परिवारों में भी कभी भारतीयता नहीं थी आयुर्वेद की निन्दा करती है। सरकार का कहना है कि आयुर्वेद तीन सहस्र वर्ष पुरानी गली सड़ी विद्या है। इस पर धन व्यय करना, देश के धन का व्यर्थ खोना है। यह वाक्य प० जवाहरलाल जी नेहरू और श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर जी के हैं। दोनों भारत के ज्ञान विज्ञान से अनभिज्ञ आनररी डी० एस० सी० डिग्री याफ्ता भारत सरकार के रत्न हैं।

वद्य समाज के विद्वान् भारत सरकार को यह बात अनेक बार बता चुके हैं कि जिस विषय को वे नहीं जानते उसमें न बोलें तो अच्छा है। डाक्टर शुलमान के वाक्य को स्मरण रख चुप रह तो ठीक ही होगा। डा० साहब लिखते हैं।

महापुरुष उन विषयों पर बात कर जिसको वे भली भांति नहीं समझते मानव समाज की उन्नति में बाधक होते हैं।

प० जवाहर लाल को उन विद्वानों के मत के सम्मुख शीश झुका देना चाहिये जो सरकार की ओर से नियुक्त १० कमेटियों में बैठ आयुर्वेद के विषय में मत दे चुके हैं। १९२१ से लेकर १९५१ तक अंग्रेजों के काल में और प० जवाहर लाल जी के काल में भारत सरकार ने आयुर्वेद के विषय में १० कमेटियें नियुक्त की और उन कमेटियों ने बिना अपवाद के यह मत दिया है कि आयुर्वेद एक वैज्ञानिक वस्तु है और इस को प्रोत्साहन देने से देश की चिकित्सा सम्बन्धी समस्यायें सुलझ जाएंगी। इन कमेटियों में प्रायः एलोपैथिक डाक्टर बैठे हैं। ऐसी परिस्थिति में इन विद्वानों की सम्मति को ठुकरा कर पंडित जी का उक्त मत और भारत सरकार का आर से आयुर्वेद का विरोध अत्यन्त देश हित घातक बात है।

पंडित जवाहर लाल जी मनमानी करने में बहुत विख्यात हैं। देश भर के विरोध में हिन्दू कोड बिल मनवाने का हाईकोर्टों की सम्मति का विरोध कर विधान में परिवर्तन और अन्य कई ऐसी बात हैं जो पंडित जी विद्वानों की सम्मति के विरुद्ध करते रहते हैं।

पंडित जी की अपनी सरकार ने चोपड़ा कमेटी नियुक्त की। इस कमेटी में सात ऐलोपैथिक डाक्टर तीन हकीम और एक वैद्य थे। इस पर भी कमेटी ने यह मत प्रकट किया कि यद्यपि आयुर्वेद की उन्नति में रुकावट उत्पन्न करते सदियां बीत गई हैं तो भी भारत में इसकी मांग है और यह एक समृद्ध विज्ञान है।

इस कमेटी की रिपोर्ट के विरुद्ध भी हमारे प्रधान मंत्री जिहाद चला रहे हैं। जब उनके सार्वजनिक वक्तव्य काम नहीं करते तो खुफिया चिट्ठियां भेज कर

लेखक

आयुर्वेद का विरोध करने में भी संकोच नहीं करते।

संगठन

भारतवर्ष के आयुर्वेद विद्वानों की एक सभा बनी हुई है। इसका नाम निखिल भारतीय महासम्मेलन है। यह सभा समय समय पर सरकार को अपनी सम्मति से सूचित करती रहती है। परन्तु सरकार इसके मत की अवहेलना कर आयुर्वेद के विषय में ऐलोपैथिक डाक्टरों की राय मांगती रहती है। इन एलोपैथिक डाक्टरों में भी उन डाक्टरों की राय को मानती है। जिन्होंने या तो आयुर्वेद पढ़ा ही नहीं या घर में बैठ कर आयुर्वेद को अंग्रेजी में लिखित पढ़ कर अपने को आयुर्वेद के विद्वान मानने लगे हैं।

भारत सरकार उन डाक्टरों की सम्मति को मानती है जो ऐलोपैथिक जगत में या तो पचास वर्ष पिछड़े हुए हैं या नौकर के लोभ में अपने मालिकों को प्रसन्न करने का यत्न करते रहते हैं।

इस में एक उदाहरण से बात स्पष्ट हो जायेगी। डाक्टर मकडल सीनियर मैडिकल आफिसर मिनिस्ट्री आफ हैल्थ इंगलैंड कहते हैं।

तपेदिक निरोधक प्रभाव अभी तक संदेहात्मक है। पिछले बीस वर्ष के परीक्षण ने चिकित्सक संसार को अभी भी सदेह में डाला हुआ है कि यह टीका ठीक है या नहीं।

इसके विरुद्ध डाक्टर बैंजेमन एड वाइजर औन ट्यूबर्कलोसिज डाइरैक्टर जैनरल आफ हैल्थ सरविसज नई दिल्ली कहते हैं

बहुत से देशों में बीस वर्ष के परीक्षण ने यह बताया कि यह एक सुरक्षित और लाभकारी परीक्षण है।

इस प्रकार के उदाहरण बहुत हैं जहां हिन्दुस्तानी सरकार के नौकर डाक्टर यूरोप के विद्वानों से भिन्न मत रखते हैं।

[शेष पृष्ठ १८ पर]

गीत

★ श्री 'शलभ' साहित्य रत्न ★

'जो न किनारे लगे नाव तो
डूबी' — यही समझ लूं ?

तुम कहते — कल्पित वह रेखा,
बढ़ना उधर सदैव मना है।
मन कहता—'मांझी ! बढ़ जाओ'
और हृदय विश्वास घना है।
भला, डूबने के भय से क्यों
मोड़ तरी अपनी दूं ?

गहर रहा सागर उन्मादी
और चतुर्दिक जल ही जल है।
उमड़ रहा चहुँ ओर, हठीली—
लहरों का सुन्दर छल बल है।
उर तो निश्छल, फिर छल-बल क्या
छिपा कहां निश्छल दूं ?

फिर, लहरें भी तो निज साथी
जीवन का अनुराग लिये हैं।
नौका की गति वर्धमान कर
बड़वा विष की आग पिये हैं।
पर, न जल गई, खेल रही सब,
लहरें क्यों न इन्हें छू ?

आये चाहे नहीं किनारा
पर नौका नित बढ़ी जा रही।
आंधी - पानी, तूफानों में
और धार से लड़ी जा रही।
नहीं दिशायें सभी उजेली,
दीप बुझा क्यों फिर दूं ?

—◌—

अपना इतिहास

★ श्री परमेश्वर द्विरेफ ★

इतिहास चिरन्तन है अपना !

दुनियां के जब पशु तुल्य लोग,
थे मूक, न थी मुख में वाणी।
जब छाया था सब जगह तिमिर,
थे नग्न जंगली सब प्राणी।
तब यहां वनस्थलियों में शिव,
होता था सस्वित् साम गान।
सरिता के निर्मल तीरों पर,
होता था प्रातः स्नान, ध्यान।

हों सुखी, निरामय, सभी जन्तु,
कोई भी कभी न दुख पायें।
सब ही प्राणी मंगल देखें,
ले परोपकार की इच्छायें।
निज जीवन-यापन करता था,
शिव भव्य, सभ्य, प्रत्येक मनुज।
सब खिले खिले, सब थे प्रसन्न,
ज्यों सरिता में प्रात अंबुज।

सब सत्य नहीं कुछ यह सपना।
इतिहास चिरन्तन है अपना।

अनुनय

★ श्री शालिग्राम मिश्र

पल भर तो जीवन से ऊपर
उठ कर देखो इस दुनिया को,
उठ कर देखो इन तारों को,
इन बिना शूल के फूलों को,
देखो रुक कर, देखो हंस कर,
देखो यह भी कितने सुन्दर ॥१॥

वह एक लहर जो अभी-अभी
आई, तट छू कर लौट गई,
वह एक कली जो अभी-अभी
मुसकाई थी उल्लास-भरी.
टूटा था अभी सितारा जो,
देखो, इनका सुख भी नश्वर ॥२॥

तट किन्तु उदास नहीं होता,
लहरों का धैर्य नहीं खोता,
फूलों ने लेकिन कभी नहीं
अपनी हंसने की बान तजी,
टूटते सितारे का सपना,
तुम क्या जानो, कितना सुन्दर ॥३॥

यह जलती दीपशिखा देखो,
आलोकित करती है तम को,
इन निम्न कोटि के जीवों को.
इन तुच्छ पतिङ्गे कीड़ों को,
देखो, मडराते ही रहते,
जल कर, मर कर, ये सदा अमर ॥४॥

तुम चांद सितारे छूने को
रोते हो, और मचलते हो,
जिसमें प्रकाश का लेश नहीं
तुम सदा धुएं से जलते हो,
तुम धीरे धीरे चलते हो,
मेरी गति के बन्धन बन कर ॥५॥

पल भर तो जीवन से ऊपर
उठ कर देखो इस दुनिया को,
उठ कर देखो, इन तारों को,
इन बिना शूल के फूलों को,
देखो रुक कर, देखो हंस कर,
देखो, यह भी कितने सुन्दर ॥६॥

—◌—

कहानी

माया-मोह

* श्री देवोदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

सन्ध्या के झुटपुटे में डाकिया अभी-अभी जो पत्र दे गया है, उसे पढ़ कर लता को गहरा आश्चर्य हुआ। एक धक्का सा लगा—जैसे किसी महानदी की प्रशान्त लहरों पर सरकती नौका एकबारगी डगमगा उठी हो। आखिर बड़े भैया को यह क्या सूझी! अरे उन्हें अलग ही होना था तो ऐसी जल्दी क्या पड़ी थी? अभी पिताजी की आंखें बन्द हुए छ महीने भी तो नहीं बीते। बेचारी मा की गीली आंखें अभी सूख भी तो नहीं सकीं कि यह हिस्सा बांट हो गया। माना कि छोटा भाई उमाकान्त काफी अवारा है। परिवार की उसे रत्तीभर चिन्ता नहीं। दिन दिन भर घर से गायब रहता है। रात में भी आधी रात के पहले कभी घर नहीं आता। पता नहीं कहां रहता और क्या करता है? बेचारी छोटी भाभी रात दिन रोती रहती है।

बड़े भैय्या को उमाकान्त की यह अवारागर्दी तनिक भी पसन्द नहीं। पिताजी के भी सामने ही वह अनेक बार उमा की भर्त्सना कर चुके थे। कह चुके थे—'यह उमाकान्त किसी दिन हमारे परिवार पर ऐसा धब्बा लगाएगा कि हम लोग उसे कभी धो न सकेंगे। दिन दिन भर और आधी-आधी रात तक यह गायब रहना ठीक नहीं।

पिताजी को भी उसकी अवारागर्दी से घोर घृणा थी। दो एक बार तो बुरी तरह उमा की पीठ पूजा भी वह कर चुके थे। परन्तु इधर अपने अन्तिम दिनों में पिताजी ने उमा को डाटना फटकारना एकदम बन्द कर दिया था। मारना पीटना तो बहुत पहले से ही छोड़ दिया था। जब से उमा का विवाह हुआ पिताजी ने कभी उस पर हाथ नहीं छोड़ा। कहा करते थे— लड़कों-बच्चों पर अन्त तक नियन्त्रण छोड़े ही रखा जाता है। बनन-सुधरने की उम्र तक ही यह काम देता है। इसके बाद यह नियन्त्रण कटुता उत्पन्न कर बैठता है। इसी तरह पिताजी अपने आप बड़बड़ाते रहते और अपने मन की खीज व्यक्त करते रहते।

पिताजी के इस प्रकार बड़बड़ाने का स्पष्ट अर्थ था कि परोक्ष रूप से उमाकान्त पर कुछ प्रभाव पड़े और उसकी अवारागर्दी में अन्तर आ जाय। लेकिन चिकने घड़े पर पानी की तरह उमा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

पिताजी और बड़े भैय्या की इस भर्त्सना और नियन्त्रण के बीच भी उमा सुधर नहीं सका। इसका कारण था— मां का दुलार और पक्षपात! हां पक्षपात ही इसे कहना होगा। मा की ममता उमाकान्त को अप्रत्याशित रूप में आज भी—अब तक है। जब कभी पिता जी उसे डांटते फटकारते मा की आंखें गीली हो जातीं। आंचल के एक छोर से अपनी गीली आंखों को पोछते-पोछते मां का स्नेह सिक्त हाथ उमा के सिर पर पहुँच जाता। कहने लगतीं— मेरा छोटा बच्चा अब इस घर में किसी को नहीं सुहाता! बचपन से ही कठोर नियन्त्रण में रखा होता तो आज यह नौबत क्यों आती! मिट्टी का कच्चा बर्तन ही ठोक-पीट कर मनचाहे रूप में बदला जा सकता है। लेकिन पक जाने पर— कड़ा हो जाने पर यह नुस्खा कामयाब नहीं हो सकता बल्कि उस बर्तन को ही नष्ट कर देता है। और भी जाने क्या क्या कहती रहतीं। दो चार बार तो पिताजी ने भी इस बात पर मां को कड़ी फटकार सुनाई थी परन्तु जो होना था वह होकर ही रहा। उमा की अवारागर्दी में कोई अन्तर न आ सका।

आज के पत्र में मा ने बड़े भैया के अलग हो जाने तथा जायदाद का हिस्सा बांट हो जाने की जो बात लिखी है उसके मूल में छोटे भैया उमाकान्त की यह आवारागर्दी ही हो सकती है। छोटी सन्तान पर मां बाप का स्नेह स्वभावत अधिक होता है। क्यों होता है इसे तो लता अब तक समझ नहीं सकी लेकिन मां का जो स्नेह उमा पर अब तक है वह इसी बात का पोषक है।

बड़े भैया और बड़ी भाभी की ओर से लता एकदम निश्चिन्त है। एक कालेज में बड़े भैया प्रोफेसर हैं। भरपूर वेतन मिलता है। चैन से जीवन कट रहा है। न ऊधव का लेना न माधव का देना। भगवान् ने एक पुत्र से भाभी की गोद भी भर दी है। उनके जीवन में कहीं कोई अभाव नहीं। लता ने मन ही-मन भगवान् से प्रार्थना की— उसके बड़े भैया और भाभी सदा दूधों पूतों फूलें फलें।

लेकिन छोटे भैया भाभी के लिए लता का मन विकलता से भर उठा। क्या होगा इस छोटे भैया का अब? अब तक तो इसने कभी कोई काम किया नहीं। आवारागर्दी और काम? उत्तर और दक्षिण दिशाओं के ये दो छोर कभी मिल नहीं सकते। और मा का क्या होगा?

पत्र में मां ने लिखा है— बड़े भैया ने मुझ से कहा था कि मैं उनके साथ रहूं। लेकिन बेटी तुम्हारे छोटे भैया भाभी को छोड़ कर बड़े भैया भले ही सुख चैन से रह लें मैं इन्हें कैसे छोड़ दूं? माना कि उमा आवारा है। कोई काम उसने आज तक नहीं किया। आगे भी शायद वह कुछ न करेगा। लेकिन गृहस्थी का भार जब उस पर पड़ेगा तब उसे कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा। तुम्हारे पिता जी ने उमा का विवाह इसी आशा से किया था कि गृहस्थी की जंजीर में जकड़ जाने पर सम्भव है इसकी आवारागर्दी मिट जाए। लेकिन पिता जी की यह अभिलाषा अब तक पूरी नहीं हुई। इसका कारण मेरी समझ में यही है कि विवाह हो जाने पर भी गृहस्थी का भार उमा को कभी सहन नहीं करना पड़ा। अब छोटी भाभी के साथ मेरा भी पेट भरने का प्रश्न उमा के सामने रहेगा तो वह कहां तक निष्क्रिय रहेगा? और अब भी यदि उमा कोई काम धंधा करने लगे तो तुम्हारे बड़े भैया के अलग हो जाने को मैं उमा के लिए एक वरदान ही समझूंगी।

मा के इन उदास विचारों की गहराई में उतर कर लता को लगा कि मा की ममता कभी एकांगी नहीं हो सकती। बड़े भैया ने उमा की आवारागर्दी से असन्तुष्ट हो कर ही यद्यपि यह हिस्सा बांट किया है और उमा तथा मा को अनेक झंझटों और परेशानियों से टकराने के लिए निराधार छोड़ दिया है फिर भी मा का हृदय कितना विशाल है कितना उदार कि वह अपने बड़े पुत्र के इस काम को भी छोटे पुत्र के लिए वरदान समझ सन्तोष कर रही है। अरे वरदान जब होगा तब होगा अभी हाल तो छोटे भैया को छठी का दूध याद आ जायगा। जिसने कभी अपने हाथों पानी का गिलास भर कर नहीं पिया वह जीविकोपार्जन के लिए जब दिन भर कोई काम धंधा करेगा तब उस पर क्या बीतेगी इसे भुक्तभोगी ही समझ सकता है।

इन्हीं विचारों में डूबती उतराती लता अपने घर के भीतरी आंगन में एक पलंग पर चुप चाप बैठी थी। घर पर झुके नीम की सघन डालियों पर पाखियों की चहचहाहट जारी थी। कभी कभी नीलाकाश में उन्मुक्त उड़ते पक्षियों के जोड़े भी लता का ध्यान खींचते और वह एक पुलक प्रकम्प से भर उठती।

लता के अन्तर की नारी ने स्वीकार किया कि ये पक्षी मानव से कहीं अधिक हिल मिल कर रहना जानते हैं। दिन-भर कहीं भी उड़ते रहें दाना चुगने कितनी ही दूर क्यों न चले जाएं परन्तु सन्ध्या होते ही आ मिलते और किसी भी वृक्ष की डाली पर एक साथ ही रैन बसेरा करते हैं। लेकिन मानव में यह बात नहीं। मानव ने विवेक पाया है, बुद्धि पाई है। इनके सहारे वह तनिक तनिक-सी बात पर जाने क्या-क्या सोचा करता है और एक दूसरे के प्रति राग-द्वेष से भर उठता है। मानव जितना दूसरों को दुख नहीं पहुँचाता,

[शेष पृष्ठ १४ पर]

भूमध्यसागर

[श्री केशवदे

भूमध्य सागर की स्थिति बड़ी विचित्र है। प्रकृति ने इसकी रचना कुछ इस प्रकार से की है कि इतना विशाल होते हुए भी यह चारों ओर से भूमि से घिरा हुआ है। एक सुदृढ़ किले की भांति इसमें प्रवेश करने का एक ही मार्ग हो इस सागर की भी स्थिति है। चारों ओर भूमि से घेर कर प्रकृति ने केवल एक ही छोटा सा द्वार इसमें प्रवेश करने के लिए छोड़ा था। अब मनुष्य ने अपने परिश्रम से एक द्वार और बना लिया है। यदि यह मार्ग भी प्रकृति द्वारा बन्द कर दिया गया होता तो आज का भूमध्यसागर एक अत्यन्त विशाल खारी झील होता।

प्रभावशाली स्थिति

भूमध्य सागर के बिना यूरोप का इतिहास ही कुछ और होता। यूरोप का इतिहास तथा राजनीति ही नहीं वहां का जलवायु उपज व्यापार युद्ध सामाजिक जीवन सभी पर भूमध्य सागर का बहुत बड़ा प्रभाव है। यूरोप का प्रत्येक देश अपनी विदेश नीति में भूमध्यसागर के विचार को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान देता आया है। राजनीतिज्ञों की यह मान्यता रही है कि जिसका भूमध्य सागर पर प्रभाव रहेगा उससे समस्त दक्षिणी यूरोप प्रभावित रहेगा। इसीलिये इस सागर पर अपना प्रभाव तथा अधिकार बनाये रखने का यत्न सभी करते रहे हैं।

ब्रिटन की सफलता

इन प्रयत्नों में सबसे अधिक सफलता ब्रिटन को मिली और सामरिक दृष्टि से इसके अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थलों पर आज भी उसका अधिकार है। इसीलिए इतनी दूर होते हुए भी ब्रिटेन का प्रभाव भूमध्य सागर में इसके किनारे बसे हुए देशों से भी अधिक है। ब्रिटन के हाथ से इन स्थानों को छीन लेने के प्रयत्न कई बार कई देशों ने किए हैं किन्तु उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। इन स्थलों के बल पर ही दोनों विश्वयुद्धों में ब्रिटन शत्रु की शक्ति को काफी प्रभावित करता रहा है। दोनों ही युद्धों में भूमध्यसागर का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है और जय पराजय के अंतिम निश्चय को बहुत दूर तक यह प्रभावित करता रहा है।

उलझन भरी राजनीति

भूमध्य सागर की राजनीति सदा से ही उलझी हुई है। प्राचीनकाल से दक्षिणी यूरोप के इन देशों को इसके मध्य का परिचय रहा है। बाहर के संसार से व्यापार करने के लिए उनके लिये एक ही मार्ग प्रकृति ने खुला छोड़ा था। वह है जिब्राल्टर का जल डमरूमध्य। इस स्थान पर यूरोप तथा अफ्रीका के दोनों सिर एक दूसरे के इतना समीप आ गये हैं कि एक अति संकरा जलमार्ग शेष रह गया है। यह जलडमरूमध्य भूमध्य सागर को अन्ध महासागर से मिलता है। दक्षिणी यूरोप के सभी देशों को बाहर के संसार से जलमार्ग द्वारा सम्पर्क बनाये रखने के लिए यही एकमात्र मार्ग था।

स्थल से व्यापार

इसीलिए हम देखते हैं कि प्राचीन काल में दक्षिणी यूरोप के देशों का व्यापार लगभग सारा ही स्थल मार्ग से होता था। दूसरे किनारे अफ्रीका महाद्वीप के होते हुए भी व्यापार के विकास को अधिक स्थान नहीं था। कारण केवल मिश्र की नील नदी की घाटी को छोड़कर शेष समस्त उत्तरी अफ्रीका में सहारा का संसार का सबसे बड़ा मरुस्थल फैला हुआ है। अमेरिका को कोई उस समय जानता नहीं था। विश्व का सारा व्यापार भारत में केन्द्रित था। अतः यूरोप का सारा व्यापार मध्यपूर्व के देशों के द्वारा भारत तथा शेष एशिया से होता था। इसीलिये दक्षिणी यूरोप के इन देशों ने अपनी जलशक्ति का विकास करने की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया जबकि ब्रिटेन के लिए तो संसार से सम्पर्क स्थापित करने को एकमात्र जल मार्ग ही था। अतः उसने आरम्भ से ही अपनी जलशक्ति का विकास किया। जलशक्ति का विकास करने वाला दूसरा देश स्पेन था और स्पेन की जलशक्ति को नष्ट करके ही ब्रिटेन संसार की प्रमुख जल शक्ति बन सका।

कृष्णसागर

भूमध्यसागर का ही एक छोटा भाई कृष्णसागर है। जिस प्रकार भूमध्यसागर एक संकरे से जलमार्ग से अन्ध महासागर से मिला हुआ है वैसे ही कृष्णसागर एक संकरे से जलमार्ग से भूमध्य सागर से मिला हुआ है। जिस प्रकार अन्ध महासागर तथा भूमध्यमहासागर की चौकी जिब्राल्टर है उसी प्रकार कृष्णसागर तथा भूमध्यसागर के मध्य के मार्ग की चौकी इस्तम्बूल है। इसी स्थल पर समुद्र की छोटी सी रेखा को पार कर यूरोप का पूर्वी देशों से व्यापार चलता था। किन्तु मध्ययुग में अरब से उठी हुई मुसलमान आक्रमणकारियों की आंधी ने इस नगर पर अधिकार कर लिया और इस मार्ग को बन्द कर दिया।

> भूमध्यसागर का प्रदेश विश्व की राज...
> है। इस क्षेत्र में स्थित प्रत्येक राज्य का ...
> ही समस्यायें भी हैं। इसके साथ ही यह ...
> के राजनीतिक दाव पेचों का अखाड़ा बना ...
> के देशों का परिचय पाठकों को कराने ...
> प्रारम्भ की जा रही है। यह लेख उस ...

जलशक्ति का लाभ

इसका परिणाम यह हुआ कि दक्षिणी यूरोप के इन समृद्ध देशों के सामने जलमार्ग के अतिरिक्त बाहर के संसार से सम्पर्क स्थापित करने तथा व्यापार करने के लिये अन्य कोई मार्ग शेष नहीं बचा। किन्तु इस दृष्टि से इनकी जल शक्ति पर्याप्त बलवान नहीं थी। उस समय समुद्री लुटेरों का जोर था और इंगलैण्ड

की राजनीति

[... वर्मा]

...लिये एक बलवान जल सेना आवश्यक ...। अतः हम देखते हैं कि स्थल मार्ग ...बन्द होने के बाद यूरोप का व्यापार ...र्वी देशों के द्वार खाना जिसकी जल ...सि प्रबल थी। इसीलिए ब्रिटेन यूरोप ...सभी देशों से आगे निकल सका और

...नीति में अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रदेश ...अपना इतिहास है और अपनी ...विश्व दो महान राजनो तक पहुँ ...हुआ है। इसी दृष्टि से इस प्रदेश ...की दृष्टि से एक नयी लेखमाला ...लेखमाला का प्रथम भाग है।

...क समय समारव्यापी साम्राज्य स्थापित ...ने में सफल हो सका।

टर्की की स्थिति

जिस प्रकार जिब्राल्टर पर अधिकार ...ने वाला भूमध्य सागर में प्रवेश ...तथा बाहर निकलने को रोक सकता ...वैसे ही इस्तम्बूल पर अधिकार ...ने से कृष्ण सागर नियंत्रित हो ...ता है। कृष्णसागर के तट पर रूस बालकान राज्य तथा टर्की हैं और उसके द्वार पर टर्की का अधिकार है। रूस के दांत बहुत दिनों से इस मार्ग पर अधिकार करने पर हैं और कई बार इसके लिए युद्ध भी हो चुके हैं। किन्तु टर्की का राज्य इसके दोनों ओर आज भी है और आज यह पूर्णतः टर्की के अधिकार में है। सामरिक दृष्टि से टर्की की यह स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

स्वेज नहर

पहिले यूरोप से भारत अथवा पूर्व के अन्य देशों को आने के लिए सारे अफ्रीका महाद्वीप का चक्कर काट उत्तमाशा अन्तरीप हो कर आना पड़ता था। किन्तु जब संसार के भूगोल का अधिक ज्ञान हुआ तो पता चला कि अरब के प्रायद्वीप तथा अफ्रीका में मध्य स्थित लाल सागर लगभग भूमध्य सागर तक ही चला गया है और इन दोनों के मध्य में लगभग सौ मील की रेगिस्तानी भूमि की एक पट्टी है। उस समय यह विचार हुआ कि यदि एक विशाल नहर द्वारा लाल सागर को भूमध्य सागर से जोड़ा जा सके तो पूर्व के देशों को आने के लिए सहस्रों मील का चक्कर बच सकता है।

अतः एक कम्पनी के द्वारा जिसके सबसे अधिक हिस्से ब्रिटेन ने खरीदे थे यह नहर खोदने का उद्योग हुआ और अनेकों कठिनाइयों के पश्चात् यह तैयार हो सकी। लाल सागर और भूमध्य सागर का जल परस्पर मिल गया और इस प्रकार भूमध्य सागर अरब सागर तथा हिन्द महासागर से मिल गया। यह नहर ही विश्व विख्यात स्वेज नहर है और अन्तर्राष्ट्रीय जलमार्ग है। यह अपने आप में एक लेख का विषय है और दोनों महायुद्धों में अत्यन्त महत्वपूर्ण जलमार्ग सिद्ध हुई है। इसके भूमध्य सागर वाले सिरे पर संसार प्रसिद्ध बन्दरगाह सईद है। इस प्रकार मनुष्य के प्रयत्न ने भूमध्य सागर को एक और मार्ग खोल दिया। जिब्राल्टर और सईद बन्दर इन दोनों मार्गों पर ब्रिटेन का अधिकार रहने के कारण भूमध्य सागर पर ब्रिटेन का नियन्त्रण सदा ही प्रभावपूर्ण रहा है।

जलमार्गों की ओर ध्यान जाने तथा संसार में साम्राज्य फैलाने की लिप्सा ने पश्चिमी यूरोप के देशों का ध्यान सर्वप्रथम उत्तरी अफ्रीका की ओर आकर्षित किया। मिश्र पहिले ही ब्रिटेन के प्रभाव में आ चुका था। फ्रांस तथा इटली ने शेष उत्तरी अफ्रीका पर अधिकार कर लिया। इटली द्वारा अधिकृत प्रदेश लीबिया है। और फ्रांस द्वारा शासित प्रदेश मोरक्को अलजीरिया तथा ट्यूनिसिया है।

किनारे के देश

अब हम एक बार भूमध्यसागर के किनारे बसे देशों पर एक दृष्टि डालें। सर्वप्रथम स्पेन है। उसका जिब्राल्टर के प्रश्न पर ब्रिटेन से झगड़ा है। जिब्राल्टर स्पेन की भूमि पर है किन्तु उस पर ब्रिटेन का अधिकार है। स्पेन चाहता है कि जिब्राल्टर उसे मिलना चाहिये किन्तु ब्रिटिश स्वार्थ इतने महत्वपूर्ण नाके को छोड़ने के लिए तत्पर नहीं। इसके बाद फ्रांस का दक्षिणी तट है इससे आगे इटली है। इटली की टांग सीधी भूमध्यसागर के मध्य तक चली गयी है और इसी के नीचे इटली का टापू सिसली है जिसको मिलाकर यह अफ्रीका के निकट तक पहुँच जाता है।

युगोस्लाविया

इटली से आगे युगोस्लाविया है। ट्रीस्ट के प्रश्न पर इटली तथा युगोस्लाविया में विवाद चला आता है और आज भी चल रहा है। युगोस्लाविया का एक ओर इटली से झगड़ा है दूसरी ओर रूस उसका शत्रु है। कम्यूनिस्ट देश होते हुए भी रूस की साम्राज्यवादी नीति का विरोधी होने के कारण ही युगोस्लाविया विश्व की राजनीति में आज प्रमुख स्थान प्राप्त है और मार्शल टीटो एक प्रमुख व्यक्ति गिने जाते हैं।

युगोस्लाविया के नीचे अलबानिया है। यह एक गणराज्य है यद्यपि गत महायुद्ध के दिनों में इस पर इटली तथा जर्मनी का अधिकार था और उससे पहिले तक इसमें एकतन्त्र राज्य था। यहां भी कम्यूनिस्ट प्रभावित सरकार है किन्तु १९४६ में जब इसे गणराज्य घोषित किया गया था ब्रिटेन व अमरीका ने इसे एक स्वतन्त्र राज्य स्वीकार ही इस शर्त पर किया था कि यहां स्वतन्त्ररूप से चुनाव हों।

ग्रीस तथा टर्की

इससे आगे ग्रीस है। ग्रीस (यूनान) का भूतकाल बड़ा ही तेजस्वी रहा है, किन्तु आज यह पिछड़े हुए राष्ट्रों में है। तो भी सामरिक तथा अन्य दृष्टियों से ग्रीस की स्थिति महत्वपूर्ण है। विशेष कर रूस के बढ़ते हुए कम्यूनिज्म का अवरोध करने की दृष्टि से। कम्यूनिज्म अभी तक भूमध्यसागर में नहीं आया है, किन्तु वह आने का भारी प्रयत्न कर रहा है। युगोस्लाविया में यद्यपि कम्यूनिज्म आ अवश्य गया है किन्तु वह रूसी कम्यूनिज्म नहीं है जिसको बढ़ाने तथा रोकने के प्रयत्न ही आज विश्व की राजनीति का सार हैं।

ग्रीस के पश्चात टर्की है। टर्की का प्रदेश भूमध्यसागर तथा कृष्णसागर को

[शेष पृष्ठ २२ पर]

माया-मोह

[पृष्ठ ११ का शेष]

उससे कहीं अधिक दूसरों को दुःखी किया करता है। तब वह बुद्धि-विवेक किस काम का ?

बड़े भैया को लेकर लता कुछ गहरी उतरने लगी। माना की उमा बड़े भैया के नियन्त्रण में नहीं रहता। कुल-मर्यादा का वह ध्यान नहीं रख पाता। लेकिन बड़े भैया को यह भी तो सोचना चाहिये कि किसी की आदत एकदम नहीं, धीरे-धीरे ही छूट सकती है। उमा की आवारागर्दी दूर होने में भी कुछ समय लगेगा। परन्तु बड़े भैया ने यह सब शायद सोचा नहीं। यदि सोचते, तो उसे अलग करने में इतनी जल्दबाजी न करते। फिर उन्हें यह भी तो सोचना था कि जिस उमा पर मां का अप्रत्याशित स्नेह है उसे अलग करने पर मां को भी अनेक झंझटों का सामना करना पड़ेगा।

बेचारी मां! लता की आंखें फिर गीली हो गईं। पिता के निधन से जिस मां का अन्तस्तल एकबारगी चकनाचूर हो चुका हो; जिसके आंसू अभी सूख भी न पाए हों, उस मां को छोटे भैया के साथ संसार की विषमताओं का अनुभव करनेके लिये इस प्रकार छोड़ देना, कहां तक उचित कहा जा सकता है! पता नहीं, बड़े भैया ने आखिर क्या सोचकर यह सब उतावली कर डाली!

यही सब सोच-विचार रही थी लता कि पंकज ने दबे पांव आकर चुपचाप उसकी आंखों पर अपनी हथेलियां रखते हुए आंख मिचौनी का अभिनय करना चाहा। लेकिन लता की आंखें गीली पाकर उसे एक धक्का लगा। चौंककर उसने अपनी हथेलियों को लता की आंखों पर से हटाते हुए कहा— 'अरे, तुम रो रही हो लता?

लता ने भारी पलकें उठाते हुए अपने साजन को चुपचुप देखा और तत्काल पलकें झुकालीं।

पंकज का आश्चर्य और बढ़ गया। जो लता सदा अपनी मीठी बातों के फूलों से माधवी लता की तरह न केवल स्वयं मुस्कराती रहती है, बल्कि पंकज को भी मुस्कराते रहने का अवसर देती रहती है, वह आज इतनी उन्मत्त क्यों? उसकी आंखों में आंसू क्यों? पूछा— 'आखिर बात क्या है, लता?'

लता फिर भी गुमसुम। निकट पड़ा मां का पत्र लता ने चुपचाप पति के हाथ पर धर दिया।

पंकज ने धड़कते हृदय से पत्र पढ़ा। लेकिन पत्र पढ़ लेने पर उसकी आशंका निर्मूल सिद्ध हुई। लता की गीली आंखों और भारी हृदय को देख, उसने समझा था कि कोई अनहोनी घटना घट चुकी होगी। पंकज ने कहा— 'अरे इतनी सी बात और इतना बड़ा आयास!'

'तुम इसे छोटी बात समझ रहे हो!' लता ने अपनी गीली आंखों को आंचल के एक सिरे से पोंछते हुए कह दिया।

'छोटी नहीं, तो क्या बड़ी बात है! पंकज ने मुस्कराते हुए कहा— 'आज के युग में संयुक्त परिवार-प्रणाली तो विरले ही घरों में पाई जाती है, लता! युग के साथ सामाजिक मर्यादाएं और प्रथाएं भी बदल चुकी हैं। जहां कहीं इनका कोई अस्तित्व बच रहा है, वहां भी धीरे-धीरे बदलती जा रही हैं। दूर क्यों जाती हो मेरे ही घर में देख लो पिता जी नागपुर में रहते हैं, बड़े भैया लखनऊ में अपनी पत्नी और बच्चों के साथ हैं और मैं यहां प्रयाग में हूं।'

'लेकिन यह परिवार अपनी परिस्थितियों के कारण ही अलग अलग रहता है। पिताजी अपना घर नहीं छोड़ना चाहते। पेंशन उन्हें मिलती है। इस लिए वह नागपुर में हैं। बड़े भैया लखनऊ में सिविल सर्जन हैं। तुम यहां अपनी नौकरी कर रहे हो। हिस्सा बांट तो इस परिवार में हुआ नहीं।

'वह भी किसी दिन हो जायगा। माना कि पिता जी के रहते वह नहीं होगा, लेकिन यह कौन कह सकता है कि उन के बाद भी हम भाइयों का बटवारा न होगा? एक परिवार के सदस्यों में जो आत्मीयता होनी चाहिए, वह सदा दूर दूर रहने से कायम नहीं रह पाती। और किसी तरह यह भी मान लिया जाय कि हम दोनों भाई आजीवन अपनी जायदाद का बंटवारा न करेंगे, तो इस कौन मान लेगा कि हमारी सन्तान भी सदा एक साथ ही रहती जाएगी?

लता ने प्रकृतिस्थ होते हुए कहा— 'तुम तो बहुत आगे की बात करने लगे। मेरे पिता जी का देहान्त हुए अभी छः महीने भी तो नहीं बीते कि बड़े भैय्या ने छोटे भैया को अलग कर दिया। उमा ने कोई काम आज तक अपने हाथों नहीं किया। अब वह कैसे क्या करेगा?

पंकज ने अब गम्भीर होते हुए कहा—'तुम कहो तो उमाकान्त को यहां बुला लूं? कोई कामधन्धा करना चाहे तो उसकी खुशी, और न करना चाहे तो यों ही हमारे यहां बना रहे।'

लता का हृदय भीतर ही भीतर पुलकित हो उठा। उसके छोटे भैय्या के प्रति पंकज के हृदय में अलौकिक आत्मीयता का आभास पाकर वह गद्-गद् हो उठी। कहा— 'तुम्हारी आत्मीयता उस के प्रति सदा बनी रहे, यही चाहती हूं। लेकिन उमा को यहां बुलाना मैं ठीक नहीं समझती।'

पंकज ने आश्चर्य से पूछा—'क्यों? जिसके लिये तुम इतनी चिन्ता कर रही हो, उसे बुला लेने में तो तुम्हें प्रसन्न होना चाहिये न?'

"फिर कभी देखा जायगा।' लता ने कहा—'बड़े भैय्या का आश्रय तो कर सम्भव है, उसकी आवारागर्दी कम हो जाए और वह कोई काम धंधा करने लगे।

'तुम्हारी मां ने भी तो यही लिखा है।' पंकज ने आंगन में चहल कदमी करते हुए कहा—'अच्छा है, यदि उमा इसी बहाने कुछ करने धरने लगे। और करेगा क्यों नहीं? जब सिर पर पहाड़ टूटता है, तब शक्ति रहते मानव उसे हटा फेंकने का प्रयत्न भी करता है।'

'जो भी हो, मुझे लगता है कि बड़े भैया ने कुछ उतावली से काम लिया है। छोटे भैय्या के साथ बेचारी मां कैसे रहेगी? पता नहीं, क्या क्या कष्ट झेलना पड़े उन्हें? सदा सुखों में रहने वाली मां को भगवान जाने अब किस तरह अपनी जिन्दगी बितानी पड़ेगी?'

तुम्हारे बड़े भैय्या का जहां तक संबन्ध है, उतावली का आरोप उन पर भले ही लगा दिया जावे, लेकिन उन्होंने जो कुछ किया है, उसे अनुचित नहीं कहा जा सकता। शरीर के किसी अंग के विकृत हो जाने पर उसे चिपकाये रखना बहुत बड़ी मूर्खता है। बुद्धिमानी इसी में है कि विकृत अंग यदि लाइलाज हो जावे, तो उसे तत्काल कटवाकर फेंक दिया जाए। तुम्हारे बड़े भैय्या ने उमाकान्त को सुधारने के लिए—सुमार्ग पर लाने के लिए जब अन्य कोई मार्ग न देखा होगा तभी उसे अलग किया होगा। और तुम्हारी मां का जहां तक सम्बन्ध है वे स्वेच्छा से ही उमा के साथ रहने का निश्चय कर चुकी हैं।'

'उमा पर उनका अगाध स्नेह जो है!'

'वह स्नेह नहीं मोह है, लता! मोहाभिभूत मानव उचित अनुचित का विचार नहीं कर पाता।'

तभी लता की विवेकशील नारी ने स्वीकार किया कि वह स्वयं भी तो मोहाभिभूत हो रही है। छोटे भैया के लिए, मां के लिए वह जो इतनी चिन्तित और परेशान हो रही है, वह सब उसका मोह नहीं तो क्या है? उसने पूर्णतः प्रकृतिस्थ होते हुए कहा—'तुम ठीक कह रहे हो। मैं भी तो मोह से अब तब भर भर उठती हूं।'

'जब तुम्हारी मां बुढ़ापे में मोह नहीं छोड़ सकतीं, तब क्या तुम इस तरुणाई में ही मोह से दूर रहना चाहती हो? यह सम्भव नहीं, लता! इस संसार में माया मोह का जादू बड़ा प्रबल होता है। विरले इससे मुक्त हो पाते हैं। जो इस माया मोह से मुक्त हो जाते हैं, उन्हें संसार के दुख दर्द भी अभिभूत नहीं कर पाते।' और पंकज अपने कपड़े बदलने चला गया।

लता ने नल पर आकर हाथ मुंह धोया और पंकज के साथ नाश्ता करने की तैयारी में जुट गई।

— —

मध्यपूर्व लेख माला--६

मध्यपूर्व के अविकसित प्रदेशों की समस्या

[श्री नीरस योगी]

यमन साऊदी अरब के दक्षिण पूर्वी किनारे पर स्थित है। इसकी सीमा के उत्तर व पूर्व में साऊदी अरब का शक्तिशाली देश है। राज्य की जनसंख्या ३ लाख से साढ़े तीन लाख तक है। धर्म प्रायः मुस्लिम है। देश की मुस्लिम आबादी दो भाग शिया व सुन्नी में बंटी है। राजधानी साना है। राजधानी को देखने से प्रतीत होता है, मानों मध्य युगीन राज्य का छोटा-सा कस्बा है।

इतिहास व विदेशी राजनीति

तिब्बत की भांति यमन भी बाह्य संसार से प्रायः अलग ही रहता है। कभी-कभी तो स्थानीय व अन्य राजनीतिक कारणों से यमन का अस्तित्व कुछ समय के लिए नक्शे से ही समाप्त होने लगा था। आज तक वहां केवल कुछ ही विदेशी प्रवेश पा सके हैं। आज भी यह राज्य अरब लीग व संयुक्त राष्ट्र-संघ का सदस्य होने के पश्चात् विदेशी राजनीति से प्रायः अछूता है। देश की आन्तरिक स्थिति सुदृढ़ नहीं है। प्राचीन काल में इस मार्ग द्वारा ईराक से भारत के साथ व्यापार किया जाता था।

यमन का प्राचीन धर्म आजकल के धर्म से भिन्न था। प्राचीन धर्म के ध्वंसावशेष अब भी राजधानी साना के समीप पाये जाते हैं। धीरे-धीरे देश में ईसाई धर्म का प्रचार हुआ। सबसे अन्त में मुस्लिम धर्म इस देश में फैला। देश में प्रारम्भिक काल में अनेकों वर्षों तक हिमारिमाईट कुल का राज्य रहा। राज्य के शेख अपना सम्बन्ध इसी कुल से प्रकट करते हैं। ईथोपियन राज्य के समय ईरान की तरफ से देश पर आक्रमण हुआ और एक शताब्दी में ही देश भर में मुस्लिम धर्म फैल गया। ९ वीं शदी में इमाम याह्या ने देश पर अधिकार करके वर्तमान रशीदी कुल की नींव डाली। तब से लेकर आज तक कुछ समय को छोड़ कर यह वंश आज तक देश में शासन कर रहा है। हजरत मोहम्मद से सम्बन्धित यह कुल फातिमा व अली की सन्तान है।

१८४७ में यमन को ओटोमन साम्राज्य के शाह सलीम प्रथम ने जीता। विजय आंशिक रूप में ही थी, क्योंकि प्रायः २०० वर्षों तक किनारे के प्रदेशों में पोर्चगीज, डच, फ्रांस, ब्रिटेन और स्वीडन वालों का क्रम से अधिकार रहा। विदेशी शक्तियां पूर्ण रूप से यमन पर अधिकार न कर सकीं। १९ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में देश पर वहाबियों का आक्रमण हुआ, परन्तु वह देश में अपना प्रभाव न फैला न सके। वहाबियों की बढ़ती हुई शक्ति के कारण मिश्र को भय हुआ और उसने यमन पर अधिकार कर लिया, परन्तु १८४० में देश पर फिर टर्की का अधिकार हो गया। टर्की ने अपने शासनकाल में देश पर अनेकों अत्याचार किये। प्रथम महायुद्ध के समय अदन पर ब्रिटेन ने आक्रमण किया, तब टर्की के १४,००० सैनिक उनका विरोध करने के लिए भेजे गये। अन्त में प्रथम महायुद्ध के उपरान्त देश को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई।

यमन में दो दल थे, रशीदी व इदरीस। ब्रिटेन ने ईदरीस लोगों की सहायता की थी। उसने उनके पक्ष में होडेडा पर अधिकार बनाये रखा। अन्त में दोनों दलों में ११ फरवरी १९३४ को एक समझौता हो गया और ईदरीस ने देश पर अपना स्वत्व समाप्त होने की घोषणा की। यमन के नवीन राज्य को रूस, हालैंड व संयुक्त राष्ट्र अमरीका का समर्थन सन्धि के रूप में मिला। द्वितीय महायुद्ध के समय देश युद्ध से अछूता रहा, परन्तु उसकी सहानुभूति मित्रराष्ट्रों की तरफ थी। अन्त में ब्रिटेन के दबाव में आकर यमन ने इटली में डाक्टरी मिशन को देश से बाहर निकाल दिया।

विधान व सरकार

देश के शासक का नाम इमाम अहमद है। शेख ही देश का शासक व धर्म गुरु है। इस प्रकार वह राज्य शक्ति व धार्मिक शक्ति का प्रधान माना जाता है। देश में १८००० के लगभग सेना भी है। आपत्तिकाल में इन सैनिकों की संख्या १५ से २० हजार तक और बढ़ाई जा सकती है। सैनिक प्रायः नंगे पैर रहते हैं। देश में कोई भी नाविक या वायुसेना नहीं है।

इमाम याह्या का कत्ल

७८ वर्ष की अवस्था में भी देश पर इमाम का आतंकपूर्ण शासन था। १५ जनवरी १९४८ को देशभर में यह अफवाह फैल गई कि इमाम की मृत्यु हो गई है। वास्तविक रूप में इमाम अभी जीवित था। देश में निरंकुशता बढ़ने लगी। अन्त में १७ फरवरी को जबकि इमाम अपने खेतों की तरफ जा रहा था, तब हजबाज के समीप उसे प्रधानमन्त्री तथा अन्य दो मनुष्यों के साथ मार दिया गया। धन की रक्षा करते हुए इममाम के दो पुत्र हुसैन और मोहसिन को भी जीवन से हाथ धोना पड़ा। सैयद अब्दुल्ला को राज्य का इमाम घोषित कर दिया गया। राजकुमार अहमद ने राजधानी साना पर अधिकार कर लिया। इमाम अब्दुल्ला को बन्दी बना कर हाजा ले जाया गया और ८ अप्रैल को मुकदमा चला कर उसे एक अन्य मनुष्य के साथ फांसी दे दी गई।

इमाम अब्दुल्ला के काल में देश में आतंक का ही राज्य रहा। उसने अपने इमाम बनने की घोषणा सब स्थानों पर करा दी। अरब लीग ने अपना एक प्रतिनिधि देश की घटनाओं का अवलोकन करने के लिए भेजा। परन्तु इमाम के मरने के पश्चात राजकुमार अहमद को इमाम बना दिया गया। शीघ्र ही शाह फारुक, ब्रिटेन व संयुक्त राष्ट्र संघ ने उन्हें सहायता प्रदान कर दी।

आर्थिक स्थिति

देश के दक्षिण पश्चिमी भाग में खेती की जाती है जिसमें कि जनता का पालन होता है। जहां पर पानी प्राप्त नहीं है वहां खजूर इत्यादि की उपज होती है। देश में कहीं भी रेल नहीं है। सड़कें अत्यन्त खराब दशा में हैं। टेलीफून व डाक व्यवस्था अत्यन्त गिरी हालत में हैं।

अदन का राज्य

इसका क्षेत्रफल प्रायः १ लाख १२ हजार वर्गमील है। १९४६ में देश की संख्या ८०,५१६ थी। इसमें ५१००० मनुष्य थे। देश में अरब (५८५००) सौमाली, भारतीय व यहूदी निवास करते हैं। देश की जलवायु अत्यन्त उष्ण है। अदन एक मुक्त बन्दरगाह है। यहां पर दवाइयां शराब व नमक के अतिरिक्त सब वस्तुओं पर कर लगता है। देश में सिंगार बनाना, रागई का काम, साबुन बनाना व मछली पकड़ने का उद्योग विकसित हैं। बाहर से आने वाले जहाज यहां पर तेल व कोयला लेते हैं इससे भी देश को काफी आय होती है। देश का अधिकतर व्यापार माल का दुबारा निर्यात करने से होता है इसके आंकड़े इस प्रकार हैं।

आयात निर्यात
भारतीय रुपयों (आयात निर्यात)

१९४४	१७४१३४४६२,	९३६३१८८९
१९४५	१४९९३१७८८,	७६९५७९४६
१९४६	१९३२७९०४३	८९११५५०१

देश में अच्छी सड़कें हैं। भारतीय रुपये के अवमूल्यन से पहले लेन देन भारतीय रुपयों में किया जाता था। परन्तु अब वह पौंड में होता है। भारत जंजीबार व मिश्र इत्यादि तक समुद्री तार भेजने की व्यवस्था है। देश में हवाई अड्डा भी है। सामरिक दृष्टि से इस प्रदेश का महत्व कम नहीं है। द्वितीय महायुद्ध के समय १९४१ में इसे इटली के विरुद्ध सैनिक स्थान बनाया गया।

कुवेत

ईरान की खाड़ी के समीप कुवेत एक स्वतन्त्र राज्य है। उत्तर पश्चिम में इसकी सीमा ईराक, दक्षिण में साऊदी अरब के समीप में गुजरती है। देश के स्थाई निवासी थोड़े ही हैं। कुवेत ही देश की राजधानी है। खाड़ी के समीप स्थित यह नगर एक अच्छी बन्दरगाह है। राजधानी की जन संख्या प्रायः ७० हजार है। इसके समीप खजूर, गेहूं और फलों का स्थानीय उपयोग के लिये उत्पादन किया जाता है। जलवायु स्वास्थ्य प्रद है। एक आधुनिक सड़क बसरा तक जाती है। रेगिस्तान के यातायात साधन भी ठीक हैं। देश में बेतार का यन्त्र व हवाई अड्डे भी हैं।

तेल उद्योग

२३ दिसम्बर १९२४ को शेख ने एक कम्पनी को तेल का ठेका दे दिया। यह ठेका १५ वर्ष के लिये है। इस कम्पनी की स्थापना ब्रिटेन में की गई है। ब्रिटेन व अमरीका इसके बराबर के साझीदार हैं। इस तेल क्षेत्र से विश्व में सबसे अधिक उत्पादन किया जाता है। १९४७ में इन तेल कूपों से १ करोड़ ६० लाख बैरल तेल निकाला गया था। देश से निर्यात किये गये तेल पर ३॥) रुपये प्रतिटन के हिसाब से शेख को रायल्टी दी जाती है। १९४७ में शेख को ५ लाख पौंड धन दिया गया था। यह आय शेख के लिये एक समस्या है। वह देश के आर्थिक व सामाजिक उत्थान के लिये प्रयत्नशील है। कुवेत एक अच्छी बन्दरगाह भी है। किसी अंश में मध्यपूर्व की सुरक्षा कुवेत पर निर्भर है। इतिहास सुरक्षित न होने के कारण इस तथ्य पर पूर्ण रूप से तो प्रकाश नहीं डाला जा सकता है परन्तु इतने अंश में अवश्य स्वीकार किया जा सकता कि यह स्थान शांतिकाल व युद्ध काल में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। फारस की खाड़ी इस स्थान से पूर्ण रूप में नियन्त्रण किया जा सकता है। देश में नवीन तेल कूपों के पता लग जाने पर आशा की जाती है कि अब प्रति वर्ष २७ लाख बैरल तेल निकाला जा सकेगा। ब्रिटेन ईरान के तेल कूपों झगड़े के कारण इस सम्बन्ध में बातचीत चला रहा है।

प्रायः १०० वर्षों से देश में रेल बनाने की होड़ सी लगी है। १९०३ में टर्की ने जर्मनी को बर्लिन-बगदाद रेलवे

[शेष पृष्ठ १८ पर]

पथ-भ्रष्ट बालकों की समस्या

[पृष्ठ २ का शेष]

के घरों मे समय बिताते हैं वहां पर बुरी आदतें सीखते हैं और आवारा हो जाते हैं।

गली में खेलना

यों तो बिना निरीक्षण का कोई भी खेल हानि पहुँचाता है, किन्तु गली मुहल्लों मे आवारा लड़को के साथ गोलियों और कौड़ियों का जुआ जैसे खेल बालकों को चोरी इत्यादि की आदतें सिखा देते हैं। हार भुगताने के लिए घरो से पैसे चुराये जाते हैं, यार दोस्तों की दावत के लिए रुपये उड़ाने पड़ते हैं और कुसगति म पड़कर फिर जेवरों की चोरी तककी नौबत आ जाती है।

पथ भ्रष्टता के उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त सौतेली मा का अत्याचार, अवकाश के समय मनोरजन के साधना का अभाव किसी भी विषय को लेकर मस्तिष्क में द्वन्द्व उत्पन्न होना इत्यादि और भी कई कारण हैं। इन सभी कारणों का ज्ञान लेने क पश्चात् पाठकों म यह जिज्ञासा उत्पन्न होना स्वभाविक है कि आखिर इस प्रकार के बिगड़े आवारा लड़को को कैसे सुधारा जा सकता है? पथ भ्रष्ट बच्चो के सुधार के दो तरीके हैं—एक तो निरोधात्मक और दूसरे उपचारात्मक।

विष वृक्ष को जड़ जमने से पहले ही उखाड़कर फेंक देना चाहिए, इससे सभी सहमत होंगे। अत निरोधात्मक उपाय ही अधिक सफल और लाभदायक है। किन्तु हमारे देश में इनका प्रयोग बहुत ही कम है, अथवा कहिए नही के बराबर है। मा-बाप द्वारा बच्चों को सदाचार की शिक्षा में कुछ परिवर्तन, अवकाश के समय का सदुपयोग करने के लिए बाल मनोरजन केन्द्रों कीस्थापना बालको के योग्य फिल्मों का निर्माण इत्यादि ध्यान देने योग्य है। बच्चो मे अपराधी वृत्ति को रोकने के लिए बेरोजगारी का उन्मूलन भी आवश्यक है। हमारी सरकार का कर्तव्य होना चाहिए कि देश मे सबको उनकी योग्यता के अनुसार काम मिले और कोई बेरोजगार न रहे। समुन्नत देशो की तरह यहा भी बेरोजगारी के भत्ते की व्यवस्था होनी चाहिये।

उपचारात्मक उपायो का उद्देश्य बालक को उस के अपराध के लिए सजा देना नहीं है वरन् उन उपायो का प्रयोग करना है जिनसे वह बालक अपने पिछले कुसस्कारो को छोड नये सिरे से अपना जीवन प्रारम्भ कर सकें। उसे ऐसे वातावरण में रखना है जिसका उसके तन, मन और आत्मा पर स्वास्थ्यप्रद प्रभाव पड़े क्योंकि मनुष्य अपने वातावरण की ही उपज है। वे उपचारात्मक उपाय मुख्यत तीन हैं—

१. आजमाइशी रिहाई

पथ-भ्रष्ट बालक अदालत द्वारा नियत किए गये एक अफसर विशेष के निरीक्षण में रहता है। अपने घर पर रहकर स्कूल मे पढ़ना, कोई अन्य कार्य सीखना ठीक दिनचर्या के अनुसार चलना, आदतें सुधारना और बच्चो की अदालत द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करना— इस स्थिति मे यह सब आवश्यक है। यह अफसर विशेष उस का एक तरह से हितैषी मित्र होता है, जो उसकी कठिनाइयों को समझता है और उसकी सहायता करता है। इस अफसर को 'प्रोबेशन आफिसर' कहते हैं।

बाल-सस्था में रखकर सुधार

गन्दे वातावरण, बुरे साथियों की सगति, कर्तव्यच्युत मा-बाप के प्रभाव से निकालकर बालक को ऐसी सस्था में रखा जाता है, जहा पर पिछले जीवन की गन्दगी से तो मुक्ति मिले ही, साथ ही उसकी प्रवृत्तिया अच्छे कामों की ओर प्रेरित कर दी जाये। उसे सवेरे से लेकर सोने के समय तक इस तरह व्यस्त रखा जाय कि अपने पिछले जीवन के विषय मे सोचने का या पिछले कुसस्कारो को जगाने का अवसर ही न मिले। ऐसा प्रबन्ध कर देना चाहिए कि उसका मन पढ़ने लिखने में, दस्तकारी आदि सीखने मे और खेल कूद में लग जाये। कुछ समय तक ऐसे नियमित और अनुशासित जीवन में रहकर बिगड़े हुए बालक ठीक राह पर चल निकलते हैं।

३. किसी आदर्श-गृह में देखभाल

बच्चे के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए जिस वातावरण की आवश्यकता होती है, वह अच्छी से अच्छी बाल-सस्था की अपेक्षा किसी मध्यम श्रेणी के कुटुम्ब में कहीं अधिक मिल सकता है। जिन पथ-भ्रष्ट बालको के मा बाप नहीं हैं, या जिनके माँ-बाप का आचरण ठीक नही है' उनको दूसरे अच्छे परिवार में रख कर उनकी प्रारम्भिक शिक्षा के अभाव को दूर करके ठीक राह पर लगाना ही इस उपचार का उद्देश्य है। ये घर दो प्रकार के होते हैं। एक तो निशुल्क और दूसरे सशुल्क। इन गृहों की व्यवस्था के लिये एक अफसर विशेष नियुक्त होता है, जो बालक तथा Foster Home या पालक-गृह की देख भाल करता है और सरक्षक व बालक की कठिनाइयोंको दूर करता है। यह प्रथा हमारे देश म अभी तक प्रचलित नहीं है। एकाध ही ऐसा घर है और उसम भी एक दो ही बच्चे भेजे गये हैं। हा, दिल्ली म इस प्रकार का एक सफल आयोजन सरकार द्वारा अधिकृत 'चिल्ड्रन्स एड सोसायटी' नामक सस्था है। इस की स्थापना १६३६ में लेडी ग्रिग के सरक्षकत्व में हुई थी। प्रारम्भ में ऐसे कानून के अभाव में जो पथ-भ्रष्ट बालकों पर लागू किया जा सके, काम में बहुत कठिनाइया होने लगीं। अत अपने साथ जनमत का बल लेकर सरकार पर जोर डाला गया और सन् १६३८ में 'चिल्ड्रन-ऐक्ट' जो कि बम्बई प्रात के चिल्ड्रन-ऐक्ट पर आधारित है, पास हो गया। उपयुक्त सस्था इसी ऐक्ट के अनुसार कार्य करती है। इसका उद्देश्य १६ वर्ष की अवस्था से कम उम्र के पथ-भ्रष्ट बालकों का निरीक्षण, सरक्षण और शिक्षण है।

चिल्ड्रन ऐक्ट कार्यरूप में कैसे परिणत होता है, यह भी सक्षेप में बता देना आवश्यक है। सबसे पहले जुवेनाइल-कोर्ट अर्थात् बच्चों की अदालत की आवश्यकता पड़ती है, जहा पर बालक पुलिस द्वारा पकड़े जाने के बाद उपस्थित किया जाता है यह अदालत अन्य अदालतों की तरह भयावह स्थान नहीं है। इसका उद्देश्य बच्चों को सजा देना न होकर उन्हे सुधारना है। यहा पर कैदी के लिए कोई कटघरा नहीं होता। अपराधी बालक को बिना हथकड़ी के उपस्थित किया जाता है। अदालत मे मजिस्ट्रेट, प्रोबेशन आफिसर, पुलिस का वकील, बालक का बाप और उसका वकील उपस्थित रहते हैं। गवाहों को बारी बारी सबूत के लिये बुलाया जाता है। इनके अतिरिक्त अदालत में दूसरे आदमियों का आने की अनुमति नहीं होती। मजिस्ट्रेट बच्चे से बड़ी सहानुभूति के साथ उन सब कारणों को जानने का प्रयत्न करता है जो उसकी इस अवस्था के लिए उत्तरदायी होते हैं अदालत का सीधा सादा वातावरण भी इसी उद्देश्य से रक्खा जाता है कि बालक कहीं आतकित होकर घबरा और डर न जाय और सच-सच बता सके। पुलिस का सबूत हो चुकने पर 'प्रोबेशन आफिसर' से रिपोर्ट मांगी जाती है। वह आफिसर अपनी रिपोर्ट में बच्चे के घर, माँ-बाप के आचरण, स्कूल के साथी या उसके कारखाने आदि के सम्बन्ध में उचित छान बीन के पश्चात् आवश्यक सूचना देता है। उसकी रिपोर्ट में बालक के लिये उपयुक्त उपचारों का सुझाव भी होता है। अदालत की कार्यवाही पूरी होने के पश्चात् यदि यह प्रमाणित हो जाय कि बालक अपराधी है तो उपचार के उन उपायो पर विचार किया जाता है जिनसे बालक का जीवन सुधरे और जो सबसे उपयुक्त उपाय होता है वह उसके लिए निर्धारित कर दिया जाता है। इन उपचारात्मक उपायो का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है—

१ बालक को डरा-धमका कर छोड़ दिया जाय।

२ मा-बाप, सरक्षक या अन्य सम्बन्धियों से, जिनके पास बालक रहता है, उसके अच्छे चाल-चलन की जमानत ले कर उसे उन्ही के सुपुर्द कर दिया जाय। यदि सरक्षक स्वय आचरण-भ्रष्ट है, तो बालक को अन्य किसी योग्य व्यक्ति, सगे-सम्बन्धी अथवा सस्था की सरक्षता में दे दिया जाय।

३. बालक के लिए अदालत स्वय कोई सरक्षक नियुक्त करे और बालक उसकी देख रेख में छोड़ दिया जाय।

४. बालक को अच्छे आचरण का वचन देने पर आजमाइशी रिहाई पर छोड़ दिया जाय।

५ यदि अदालत को बालक के आचरण से यह विश्वास हो जाय कि बेंत लगाना हुए ढीठ बालक के लिए आवश्यक है, तो उसे यही दण्ड दिया जाय।

६ यदि मा-बाप या सरक्षक की लापरवाही से ही बालक बिगड़ा है तो उन पर जुर्माना किया जाय।

७ यदि बालक की अवस्था १४ वर्ष या इस से अधिक हो तो कारावास दण्ड दिया जा सकता है।

८ बालक विशेष के आचरण को देखते हुए उसे कानून के अन्तर्गत और भी दण्ड दिया जा सकता है।

उपर्युक्त सभी उपचारात्मक उपायों मे से सब से लाभदायक उपाय है बालक को किसी बाल सुधार-सस्था में रखना।

अन्त में इस प्रसङ्ग मे एक अन्य उपचारात्मक उपाय 'रिफामेटरी-स्कूल' की चर्चा करना अनुचित न होगा। यह उपचार अपेक्षाकृत पुराना और उसी अनुपात से असामयिक भी है। इसका मुख्य दोष यह है कि इसम अपराधी-बालक के मनोवैज्ञानिक अध्ययन की अपेक्षा नियन्त्रण और दमन का उपयोग अधिक होता है, जिससे जेल का-सा वातावरण उत्पन्न हो जाता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि नियन्त्रण और दमन दोनों ही अप्राकृतिक और अहितकर साधन हैं। इसीलिए अब प्राय सभी जगह 'रिफार्मेटरी-कानून' को उठा लिया गया है।

—×—

नारी जगत

आपका सौन्दर्य-प्रसाधन आपकी रुचि का परिचायक है

सौंदर्य साधना के तीन युग

[कुमारी शान्त]

प्राचीन शृंगार

सीता तथा मत्स्यगंधा आदि का जीवन पढ़ने से हमें उस समय के शृंगार के बारे में बहुत सी-बातें मालूम होती हैं। उबटन उशीर और अङ्गराग का प्रचार भी इसी युग से आरम्भ हुआ। चित्रकूट-वन में सीता का अनुसूया द्वारा फूलों से सजाये जाने का वर्णन रामायण में मिलता है। एक दूसरी जगह पर भी तुलसीदास द्वारा सीता की पायलों की नूपुर-ध्वनि का बहुत ही मधुर वर्णन किया गया है। कालिदास के साहित्य की ओर जब हम देखते हैं तो उसे हम

केश शृंगार

उस समय के प्रचलित रीति रिवाजों में रमा पाते हैं। कालिदास के 'मेघदूत' में यक्ष-पत्नी सौंदर्य के शिखर पर है। अलकापुरी की खुली हुई खिड़की पर खड़ी वह प्रतिमा सी लगती है। उसकी केशराशि अगर चन्दन के धुए से सुगन्धित, जूही के हलके पीले फूलों से गुंथी नागिन की तरह उसकी पीठ पर लहराती थी। काले बालों के बीच चमकती मढ़ी हुई सिन्दूर की रेखा यक्ष के दूर होने का परिचय देती थी। धीमे धीमे घूमते हुए पैरों में पड़ी रत्न जटित पायलों से मधुर आवाज गुञ्जरित होती थी। इसके अतिरिक्त देवताओं की स्त्रियों का सौन्दर्य-वर्णन करते हुए हीरों जड़े कङ्गनों तथा कानों के कमलों जैसे कर्ण फूलों का भी जिक्र मिलता है।

फिर कालिदास लाते हैं हमारे सम्मुख तपस्विनी कन्या शकुन्तला का रूप। अर्धशरीर पर वल्कल वस्त्र, बालों, कानों और हाथों में फूल, गले में रुद्राक्ष की माला डाले और माथे पर चन्दन का एक टीका—यह है आदिकाल का पवित्रतम शृङ्गार। इससे शकुन्तला के फूलों से शृंगार करने का और किसी विशेष ढंग से बालों को गूंथने का पता चलता है। उसका यह पवित्र और सादा शृङ्गार हमें इस बात का परिचय देता है कि स्त्री केवल पुरुष को रिझाने के लिये अपने को नहीं सजाती, बल्कि अपने सौन्दर्य को बढ़ाना उसकी एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है।

उस समय की स्त्रियां प्रायः बिछुए, चूड़े तथा सोने चांदी के अन्य कई तरह के जेवर पहना करती थीं। मूंगे और मोती के आभूषणों का रिवाज भी धीरे धीरे चला। उस जमाने का जितना भी साहित्य मिलता है उसमें शृङ्गार का मुख्य हिस्सा है संस्कृत और हिन्दी की कविता में नायिकाओं का जो नखशिख वर्णन मिलता है, उसमें स्त्रियों के पूर्ण शृङ्गार की बड़ी सुन्दर व्याख्या की गई है। प्रायः १६ प्रकार के शृंगार होते थे जो कि आज तक चले आ रहे हैं जैसे माथे पर बिन्दी, सर पर सिन्दूर और आंखों में काजल, मुख व शरीर पर अंगराग, अङ्गों में आभूषण इत्यादि।

मध्यकालीन शृंगार

समय के बदलने के साथ-साथ सजावट के तरीकों और सजावट की चीजों में परिवर्तन हुआ। शकुन्तला के बालों में गुंथे और कानों में झूमते हुए फूल मध्यकाल में नूरजहां के केवल हाथों तक ही पहुँच पाये। तब रिवाज आया फूलों को सभी अंगों पर न सजा कर केवल कलाई में बांधने का। अब उसकी आवश्यकता भी न थी, क्योंकि अन्य अंगों को सजाने के लिए सोने चांदी और कीमती पत्थरों के अनेकों आभूषण तैयार थे। फूलों की महक इत्र फुलेल के रूप में उनके कपड़ों में रहती थी। और गुलाब का इत्र तो मलका नूरजहां की ही देन है। हाथों में चौड़ी-चौड़ी चूड़ियां और उनके आगे जड़ाऊ कड़े उनकी पतली गोरी कलाइयों को ढके रखते थे, और सुन्दर ढंग से कुरते पर बाजूबन्द बांधती थीं। मध्यकाल की स्त्रियां बनावटी खूबसूरती में आदिकाल से कुछ आगे ही थीं। वे होठों को अधिक लाल रखने के लिये पान खाती थीं और दांतों की कान्ति अधिक चमकाने के लिये मिस्सी मलती थीं। पोशाक में भी कुछ फर्क आया। औरतें गोटा किनारी लगे हुये लहंगे पहनने लगीं। पंजाब में गरारे और सलवार का प्रचार हो गया। उस जमाने की सजावट का नमूना नूरजहां ने पूर्ण रूप से दिखाया है। तंग पेंचे की बड़ घेर की सलवार पतला चिकन का तंग और ऊंचा कुरता और पतली जाली की ओढ़नी ढीले बालों में लाल रंग का मोतियों वाला परांदा दाईं तरफ बालों में जड़ाऊ झूमर कानों में झुमके और आंखों में पतली धार का शाहसुरमा बायें हाथ में गुलाब का फूल, ये सब उसे खूबसूरती को चरमसीमा तक पहुँचा देते हैं।

आधुनिक शृङ्गार

धीरे धीरे रङ्गमंच बदलता है और २० वीं सदी के दूसरे तीसरे दशक में ऊंची एड़ी का जूता पहने हाथ में पर्स लिये स्त्री ने समाज में प्रवेश किया। मुख पर लगे हुए पाउडर पर रूज का लेप और होठों पर लगी हुई लिपस्टिक का लाल धब्बा निगाह को चकाचौंध कर देता है।

लीजिये एक और बहिन आई। आपकी मांग जरा टेढ़ी सी है। आप ५ या ६ किस्म के रंगों के पाउडर की जरूरत महसूस कर रही हैं क्योंकि उन नीली साड़ी के साथ उनका गन्दुमी मुंह मैच नहीं करता। और हां आप उनके फूले हुए बालों को देख चकरा रही होंगी। यह भी एक शृङ्गार है जो बड़ी मेहनत से काफी समय जाया करके एक हेयर कर्लिंग मशीन से बनाया जाता है। और नाखूनों को तो शायद आपने लाल पालिश लगा हुआ देखा होगा। फेस पाउडर के समान इसके भी लाल रंग के कई शेड होते हैं जैसे बैंगनी नीला आदि। यह है आज कल का लुभाने वाला शृङ्गार जो दिन पर दिन तरक्की कर रहा है। आधुनिक युग के शृङ्गार के प्रति अभिरुचि निरन्तर बढ़ती रहती है।

आधुनिकतम सौन्दर्य प्रसाधन

[पृष्ठ ६ का शेष]

आयुर्वेद और एलोपेथी

आयुर्वेद और वर्तमान ऐलोपैथी में सिद्धान्तिक भेद है। वर्तमान ऐलोपैथी जिसके गुणानुवाद करते करते हमारे नेता थकते नहीं थकते कीटाणुवाद पर आधारित है। डाक्टरों का मत है कि प्रत्येक रोग कीटाणुओं से उत्पन्न होता है। आयुर्वेद ऐसा नहीं मानता। इसमें यह बात मानी जाती है कि कीटाणुओं के शरीर में अपना प्रभाव उत्पन्न करने से पूर्व शरीर में दोष बढ़ जाते हैं। रोग दोषों में वैषम्य आजाने का नाम है। कीटाणु पीछे आते हैं।

यह बात अब नवीन वैज्ञानिक भी मानने लगे हैं। परन्तु भारतीय ऐलोपैथ तो तब मानेंगे जब आयुर्वेद के सिद्धान्त 'विधाता' के डाक्टर यूरोपियन भाषा में वर्णन करेंगे। यह बात तो सब जानते हैं कि मलेरिया इत्यादि रोग भी जिनके कीटाणु भली प्रकार देख लिए गए, एक स्थान, अथवा परिवार में सबको नहीं होते। कीटाणुओं के प्रभाव से पहिले शरीर में दोष वैषम्य होना आवश्यक है। दोषों का सन्तुलन रहे तो प्लेग आदि के कीटाणु भी प्रभाव नहीं उत्पन्न कर सकते।

आयुर्वेद के पण्डित लोक अर्थात् वात, पित्त, कफ के सिद्धान्त को सहस्रों वर्षों से मानते हैं और पचास वर्ष से भारत सरकार को बता रहे हैं। भारत सरकार के सलाहकार हिन्दुस्तानी ऐलोपैथ विज्ञान की प्रगति में इतने पिछड़े हुए हैं कि वे इस बात को मानते ही नहीं वे और 'वात पित्त कफ' की हंसी उड़ाते रहते हैं। परन्तु अब युरोप के डाक्टर भी इस सिद्धान्त को मानने लगे हैं।

डाक्टर सैले, डायरैक्टर आफ ऐक्स पैरिमैंटल मेडिसन एण्ड सरजरी, युनिवर्सिटी आफ मौन्ट्रील अपनी नवीनतम पुस्तक में लिखते हैं कि शरीर के भीतर स्राव करने वाली ग्रन्थियों के स्रावों में प्रत्येक प्रकार की बीमारी का मुकाबला करने की शक्ति विद्यमान है। जब वे सतुलित मात्रा में होते हैं तो रोग शरीर में उत्पन्न नहीं हो सकता।

आयुर्वेद मानता है कि वात, पित्त कफ इन ग्रन्थियों के स्रावों में सक्रिय पदार्थ अथवा शक्ति हैं। वैशेषिक दर्शन के अनुसार शक्ति भी पदार्थ है। अतएव जो डाक्टर सैले १९५१ मे कह रहे हैं, चरक में ईसा के जन्म से चार पांच सहस्र वर्ष पूर्व कहा गया था।

केवल यही नहीं प्रत्युत वात, पित्त, कफ के सतुलन टूटने पर शरीर की क्या दशा होती है, भली भान्ति आयुर्वेद में वर्णित है।

आयुर्वेद उन ग्रन्थियों के स्थानों को जो शरीर के ऊपर के भाग में उपस्थित हैं 'कफ' नाम देता है। उन ग्रन्थियों के स्थानों को जो शरीर के मध्य भाग में स्थित है 'पित्त' नाम देता है। और नाभी से नीचे की ग्रन्थियों के स्थानों को 'वात' पुकारता है। इनमें से किसी के दूषित होने, किसी के कम होने अथवा किसी के अधिक होने से जो जो लक्षण उत्पन्न होते है वह चरक मुनि ने भली भांति वर्णन किए हैं। साथ ही उनकी चिकित्सा का भी वर्णन है।

यदि डाक्टर सैले का अन्वेषण चलता रहा तो उनको उस स्थान पर पहुँचने, जहा आयुर्वेद पहुँचा हुआ है, अभी एक सौ साल लगेंगे।

भारत सरकार जो आज अपने पिछड़े हुए डाक्टरों की राय पर करोड़ों रुपया की औषधियों पर और बी. सी. जी. जैसे घातक इन्जैकशनों पर व्यय कर रहे हैं, पीछे पछतावेंगे। इन औषधियों का प्रभाव मनुष्य की मानसिक शक्तियों पर घातक सिद्ध हो रहा है। ये औषधियां जहां रोग के कीटाणुओं को मारती हैं वहां मनुष्य शरीर के कोमल अंगों पर भी आघात करती हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि आयुर्वेद के सिद्धान्त पुन वैज्ञानिक जगत में विख्यात हो रहे है परन्तु भारत सरकार तो इस मान की भागी नहीं बनेगी और आयुर्वेद विज्ञान के प्रवेताओं को मान नहीं मिलेगा।

हमारा भारत सरकार से कहना है कि वे कूप मण्डूक न बनें। विज्ञान किसी की बपौती नहीं। वर्तमान भौतिक विज्ञान तथा रसायनिक विज्ञान वह नहीं रहा जो प० नेहरू ने अपने स्कूल में पढ़ा था। आज वह दर्शन शास्त्रों के समीप आता जाता है। न पदार्थों में गुरुत्व और न ही दो बिन्दुओं में न्यूनतम अन्तर एक सीधी रेखा मानी जाती है। समय और अन्तर के अर्थ वे नहीं रहे जो शायद प० नेहरू जी ने पढ़े थे। ससार बहुत आगे निकल गया।

विद्वानों पर भरोसा रख कर सरकार को कार्य करना चाहिए। अपने अपने विषय के विद्वानों की अवहेलना करने से विनाश निश्चय है।

[पृष्ठ १५ का शेष]

बनाने की अनुमति दे दी। अन्त में ब्रिटेन को उन्हीं ने पूर्ण अधिकार प्रदान कर दिये। साऊदी अरब के शाह अब्दुल अजीज १८९३ से १९०३ तक कुवैत में ही शरणार्थी के रूप में रहे थे। इसी स्थान से उन्होंने रियाद पर अधिकार किया था। देश पर हाशियों ने भी दो बार आक्रमण किया है परन्तु ब्रिटेन के कारण वह विजय आंशिक रूप में ही प्राप्त कर सके हैं।

देश के शासक का नाम शेख अब्दुल्ला अस-सलीम अस सुबाइम है। ब्रिटेन के साथ सम्बन्ध २३ जनवरी १९०२ की सन्धि पर आधारित हैं। ब्रिटेन का एक राजनैतिक दूत भी कुवेत में रहता है।

बाल-बन्धुओं से

प्रिय बन्धुओं !

इस बार हम अपने कुछ सदस्यों के नाम तथा क्रम संख्या दे रहे हैं। अन्य सदस्यों के नाम अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे। भविष्य में पत्र व्यवहार करते समय तथा रचना भेजते समय अपनी क्रम संख्या अवश्य लिखनी चाहिए। भविष्य में एक 'पहेली-प्रतियोगिता' करने का विचार है। उसमें केवल सदस्य ही भाग ले सकेंगे। अतः जल्दी से जल्दी सदस्यता पत्र तथा पहेलियां भेजनी चाहिये।

तुम्हारा
श्याम भय्या

हमारे सदस्य

क्रम	नाम	स्थान
१.	जयभगवान गौतम 'अनिल'	(मेरठ)
२.	उमाशंकर तिवारी,	(मध्यभारत)
३.	अनिल जैन 'प्रदीप'	(राजस्थान)
४.	जयभगवान	(नैनीताल)
५.	उषा देवी बजाज	(देहली)
६.	विजय चन्द्र लोढ़ा	(जयपुर)
७,	रमेशकुमार अजवानी	(सागर)
८.	प्रीतमलाल	(भाबाई)
९.	कमलेश कुमारी	(नई दिल्ली)
१०.	कन्हैयालाल माथुर	(जोधपुर)
११.	प्रेमचन्द कटिहा 'मधुकर'	(बरेली)
१२.	भगवानदत्त कौशिक	(महेन्द्र गढ़)
१३.	मीठालाल पालरेचा	(सादड़ी, मारवाड़)
१४.	अपर्णा देवी शर्मा	(देहली)
१५.	अमरनाथ	(जोधपुर)

भारत के सैनिक

श्री अनिल जैन 'प्रदीप'

हम भारत के सच्चे सैनिक,
कभी न हिम्मत हारेंगे।
जम के कष्टों से जा डट कर,
सत्य, सौम्य जीवन पायेंगे ॥१॥
तुंग हिमालय पर चढ़ कर,
अरि दल को ललकारेंगे।
नन्ही नन्हीं तलवारों से,
हम बढ़ बढ़ उनको मारेंगे ॥२॥
प्रताप, शिवा की हम संतान,
कायर बनना फिर क्या जानें।
जीवन के प्रति पद पद पर,
निर्भय बन हम गायें गाने ॥३॥
छूतछात का भूत भगा कर,
हम सबको गले लगायेंगे।
हम भारत के सच्चे सैनिक,
हम कभी न हिम्मत हारेंगे ॥४॥

मारवाड़ का शेर

[श्री परमानन्द शर्मा]

सन् १६६८ की बात है। एक दिन लालकिले में बादशाह औरंगजेब का दरबार लगा हुआ था। सरदार यथायोग्य अपने-अपने स्थान पर विराजमान थे।

थोड़ी देर में बादशाह सोने की जंजीर से बन्धे शेर को अपने साथ लिये

किशन के यश

दरबार में आते हुए दिखाई दिये। चोबदार ने बादशाह के आगमन का समाचार दरबारियों को देते हुए कहा, 'बा अदब, बा मुलाहज़ा, होशियार! शहनशाहे हिन्द तशरीफ ला रहे हैं।'

दरबारी खड़े हो गये। बादशाह को सलाम किया गया। बादशाह अपने सिंहासन पर बैठ गये। दरबारी भी बैठ गये। अपने शेर को सहलाते हुए बादशाह ने कहा, 'अल्लाताला की रहमत से मेरे शेर का सामना किसी राजा का शेर नहीं कर सकता। अगर कोई हो तो मेरे शेर से लड़ा सकता है।

यह सुनते ही दरबारियों में निस्तब्धता छा गई। परन्तु जोधपुर के राजा जसवन्तसिंह से न रहा गया।

उन्होंने सलाम करके कहा, 'आपके जंगली शेर से मेरा इन्सानी शेर कुंवर पृथ्वीसिंह लड़ सकता है। यदि परीक्षा करनी हो तो अपने और मेरे शेर को लोहे के जंगले में लड़ाकर देख लीजिये।

दरबारी विस्मय में डूब गये। बादशाह ने राजा से कहा, अपने शेर को मेरे सम्मुख उपस्थित करो।'

राजा जसवन्तसिंह ने कुंवर पृथ्वीसिंह को इशारे से सलाम करने को कहा। पृथ्वीसिंह मैदान में आ गया।

बादशाह ने कुंवर पृथ्वीसिंह को देखकर कहा, 'यह तो इन्सान है! यदि कोई इसके मुकाबले का शेर हो तो लाइये क्यों कुंवर को दुनिया इफानी से खोना चाहते हो?'

यह सुनते ही पृथ्वीसिंह ने कहा, 'हाथकंगन को आरसी क्या? मैं राजपूत बच्चा हूँ! अभी आपके शेर के दो टुकड़े किये देता हूँ।'

बादशाह ने कहा, 'अच्छा! तुम्हारे साथ कुश्ती कराये देता हूँ।'

दरबार बरखास्त कर दिया गया। जहां शेर के टहलने की जगह थी वहां पर सब दरबारी जमा हो गये। औरंगजेब स्वयं भी अपने शेर को लिये वहां गये और उसे जंगले में छोड़ दिया और जसवन्तसिंह से कहा, 'अपने शेर को इस जंगले में भेज दीजिये। और भेजने से पहले कुंवर से खूब गले मिल लीजिये। शायद इसके बाद मिल सके या ना मिल सकें?

राजा ने कोई उत्तर न दिया। कुंवर ने कपड़े उतार दिये और कहा, 'मैं इस गीदड़ शेर को बिना खंजर के ही मार दूंगा यह कह सबको सलाम कर जंगले में प्रवेश किया।'

फिर शेर को ललकार कर कहा, 'अभागे बादशाह के शेर! कुछ शक्ति रखता है तो आ दो हाथ दिखा।' शेर ने जब कुंवर को जंगले में अकेला देखा तो फौरन ही अंगड़ाई तोड़कर एकदम बड़ी जोर की चिंघाड़ मारकर कुंवर के ऊपर छलांग मारी। पृथ्वीसिंह ने उसके दोनों हाथ ऊपर ही ऊपर पकड़ लिये। और फौरन ही उसके पेट पर लात मारकर पैर के नीचे शेर को गिरा दिया और उसके दो टुकड़े कर दिये। दोनों टुकड़े बादशाह औरंगजेब के सामने कुंवर ने फेंक दिये और कहा, 'लीजिये अपने शेर को खूब प्यार कर लीजिये शायद फिर ना देख सकें।' शेर को मरे देखकर तमाम दरबारियों ने हर्ष से करतलध्वनि की। और कुंवर पृथ्वीसिंह की जय के नारे लगाये। दिखावटी रूप से तो औरंगजेब ने भी शाबाश कहा। परन्तु मन में जल गया। और हृदय से कहा यह लड़का मेरे दुश्मन जसवन्तसिंह का है। अब इसका सर्वनाश करना ही अच्छा है। बाप तो था ही शेर, पर बेटा बाप से भी बढ़कर मारवाड़ का शेर निकला।

मनमे सोचा खुदा न करे किसी समय मेरे से नाराज हो गया तो इस शेर की तरह मेरे भी दो टुकड़े कर देगा। इसलिये इसे मरवा देना ही अच्छा है। औरंगजेब चालाक तो था ही। कुंवर के लिये जहर में रंगी हुई पोशाक बनवाई जो सब दरबारियों के सामने इनाम के तौर पर दी और कहा लो बेटा पृथ्वीसिंह वास्तव में ही तुम शेर हो क्योंकि शेर के शेर ही होते हैं।' यह कहकर

[शेष पृष्ठ २२ पर]

यहां से काटो

सदस्यता-पत्र

नाम ....

आयु ....

संरक्षक ....

पूरा पता ....

१-६-५१

कांग्रेस शासन ने ही कांग्रेस को बदनाम किया है

[पृष्ठ ७ का शेष]

जिसके फलस्वरूप पाकिस्तान में तो हिन्दुओं का रहना असम्भव हो गया किन्तु मुसलमान इस देश में पहले से भी अधिक सुविधापूर्वक रहने लगे।

दो स्पष्ट मत

आज देश की सारी राजनीति इसी एक प्रश्न को लेकर दो स्पष्ट मतों में विभक्त हो गई है। पं० नेहरू का स्पष्ट मत है कि इस देश में जो भी व्यक्ति रहता है वह यहां का नागरिक है और उसे यहां सब प्रकार के अधिकार प्राप्त रहेंगे, बिना इस बात का विचार किये हुये कि पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ क्या व्यवहार होता है। इसके विपरीत देश का मत स्पष्ट है कि जब विभाजन होगया तो छोटा भाई अपने घर में शांति पूर्वक रहे और बड़ा भाई अपने घर में।

कांग्रेस के दो दल

आज कांग्रेस की राजनीति भी मुख्यतः इसी प्रश्न को लेकर दो दलों में विभक्त हो गई है, यद्यपि यह बात स्पष्ट शब्दों में कही नहीं जाती। वर्तमान कांग्रेस अध्यक्ष श्री० पुरुषोत्तमदास टण्डन का विरोध पं० नेहरू तथा उनके दल ने इसी आधार पर किया है। वह श्री टण्डन जी के राष्ट्रीयवाद को प्रतिक्रियावाद के नाम से घोषित करते हैं। किन्तु देश तथा वर्तमान कांग्रेस कहां तक श्री टण्डन जी के इस "प्रतिक्रियावाद" की समर्थक है यह तो इसी से स्पष्ट है कि इस समय २५ प्रादेशिक कांग्रेस कमेटियों में से लगभग २० पूर्ण तथा श्री० टण्डन जी के मत की ही समर्थक हैं, और प्रान्तीय सरकारें तो लगभग सभी श्री टण्डन जी के ही साथ हैं। और जो थोड़े बहुत कांग्रेस जन पं० नेहरू के मत के थे वह सब कांग्रेस को त्याग कर किदवई-कृपलानी के कृषक-प्रजा दल में सम्मिलित हो गये हैं।

सांप मरे, लाठी न टूटे

अखिल भारतीय कांग्रेस की आगामी बैठक में पं० जवाहरलाल नेहरू के त्यागपत्र पर विचार होना है, जो उन्होंने धमकी के रूप में कांग्रेस कार्य समिति तथा केन्द्रीय निर्वाचन समिति से दिया है। श्री टण्डनजी ने अपने इस अधिकार पर अडिग डटे रहने की स्पष्ट घोषणा कर दी है कि वही कार्य समिति का निर्माण करने के अधिकारी हैं और वह कांग्रेस के अध्यक्ष के इस अधिकार को सुरक्षित रखने के लिए अध्यक्षपद तक को ठुकरा देने के लिए तैयार बैठे हैं। उधर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य अधिकांशतः आगामी निर्वाचनों में प्रत्याशी अथवा उम्मेदवार हैं और उन्हें पं० नेहरू के समर्थन की आवश्यकता है इसलिए वह किसी भी प्रकार के समझौते का प्रयत्न कर रहे हैं, जिससे सांप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे।

कांग्रेस-संविधान में परिवर्तन

जो सुझाव अब सामने आया है और जिसके स्वीकृत होने की पूर्ण आशा भी है, वह है कांग्रेस के संविधान को बदल कर कार्य समिति को निर्वाचित कराने के बजाय कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा निर्मित किये जाने के। अनुमान किया जाता है कि इससे पं० नेहरू शान्त हो जायेंगे, यद्यपि विजय श्री टण्डनजी की ही रहेगी, क्योंकि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में उन्हीं के दल का बहुमत बना है।

श्री टण्डनजी की विजय निश्चित्

आज की स्थिति में विजय पूर्णरूप से श्री टण्डनजी की ही है, चाहें वह अध्यक्षपद से त्यागपत्र दे दें और चाहें कांग्रेस का संविधान बदल कर कांग्रेस कार्य समिति निर्वाचित की जाय। पं० नेहरू का त्यागपत्र लौट आना तो पूर्ण तया निश्चित है।

—★—

[पृष्ठ ८ का शेष]

को भड़काने के कय्यूम साहब के प्रयत्नों को अधिक सफलता नहीं मिल रही है। इस विषय में अफगानिस्तान के एक पत्र में प्रकाशित एक वक्तव्य द्वारा इपी के फकीर ने पठानों को पाकिस्तान के फंदे में न आने की चेतावनी दी है। फकीर का कथन है कि पख्तूनिस्तान आन्दोलन को दबाये रखने के लिये ही पाकिस्तान काश्मीर के प्रश्न को उभार रहा है तथा कबीले वालों में उसी प्रकार का प्रचार कर रहा है। यदि कबीले वाले इस प्रचार में बह गये तो पख्तूनिस्तान का आन्दोलन शिथिल पड़ जायगा और यही पाकिस्तान चाहता है।

× × ×

भारत-पाक काश्मीर विवाद पर राष्ट्र संघ के प्रतिनिधि डा० ग्राहम अभी तक अपने प्रयत्नों में लगे हुये हैं। वे हाल में ही तीसरी बार नई दिल्ली रह कर कराची गये हैं। स्वतन्त्रता दिवस पर वे भारत की राजधानी में ही थे। इन दिनों में डा० ग्राहम ने प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू से लम्बी बातचीत की। कराची में जाकर वे पाकिस्तानी नेताओं से मिल रहे हैं। भारतीय प्रमुख मुसलमानों द्वारा डा० ग्राहम को दिये गये आवेदन पत्र से पाकिस्तान में कुछ खलबली मची है। विदेश मन्त्री सर जफरुल्ला तो रुक ही न सके तुरन्त ही उस सम्बन्ध में वक्तव्य प्रकाशित कर बैठे।

यह सब होते हुए भी डा० ग्राहम ने अभी तक अपनी कोई योजना प्रस्तुत नहीं की है। उनकी बातचीत दोनों ही ओर से शान्त तथा सुलझे से ढंग रही है। समस्या का क्या हल वे उपस्थित करते हैं, यह अभी सामने नहीं आया। इतना अवश्य ज्ञात हुआ है कि डा० ग्राहम ने असैनिकीकरण पर एक ठोस प्रस्ताव बना लिया है और उस पर वे भारत सरकार से बातचीत भी कर चुके हैं। कराची में वे उसी प्रस्ताव के आधार पर चर्चा करेंगे।

—★—

दिल्ली साप्ताहिक वायदा बाजार

[ले० — श्री महानन्द अरविया]

२४ अगस्त शुक्रवार को समाप्त सप्ताह के दैनिक भाव निम्न हैं :—

चांदी टुकड़ा पेम्पर मादवा डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
वृहस्पति	१८६॥-)	१८६॥-)	१९०॥=)	१९०॥=)
शुक्र	बाजार बन्द रहा।			
शनि	१९०॥)	१९०=)	१८६॥=)	१९०।)
सोम	१९०।)	१९०।-)	१८६॥।)	१८६॥।)
मंगल	१८६॥)	१८६॥=)	१८८।=)	१८८।॥=)
बुध	१८८॥)	१८६)	१८८-)	१८८॥।=)

गवार माघ डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
वृहस्पति	११॥=)॥	११॥=)।	११॥=)॥	११॥=)॥
शुक्र	बाजार बन्द रहा।			
शनि	१२=)।॥	१२।)।	१२-)।॥	१२=)॥
सोम	११॥।=)।	१२-)	११॥।-)	११॥।=)
मंगल	११॥।=)।	१२=)॥	११॥।=)।	११॥।=)।॥
बुध	१२)	१२)	११॥।)॥	११॥।-)॥

मटर मादवा डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द
वृहस्पति	१६-)।	१६=)	१६।-)।	१६।=)॥
शुक्र	बाजार बन्द रहा।			
शनि	१६॥-)	१६॥-)।॥	१६।=)॥	१६=)।
सोम	१६।=)॥	१६।=)	१६।-)॥	१६।=)
मंगल	१६=)	१६॥)॥	१६।-)॥	१६।=)
बुध	१६॥)	१६॥)।	१६।=)।॥	१६=)॥

विचार और सलाह

चांदी

इस समय बाजार नीचे भाव पर टिक गया है। नीचे भावों में तेजड़िये और मन्दड़िये दोनों ही खरीददार बने रहते हैं। बाजार में सौदा कम है, अतः चक्कर भी कम है।

स्थानीय बाजार में माल की आमद विशेष मात्रा में हो रही है, परन्तु खपत थोड़ी रहती है। इसी कारण स्थानीय बाजार उठता नहीं है। बम्बई में मांग अच्छी है, इसी कारण बम्बई कुछ तनी हुई है।

राजनैतिक स्थिति पहले की तरह ही बनी हुई है। भारत-पाकिस्तान सम्बन्ध में कोई हेरफेर नहीं हुई है। साथ ही कोरिया युद्ध भी चल रहा है और अब वहां संधि की आशा समाप्त हो गई है। भारत का विदेशीय व्यापार सन्तुलन भी भारत के अनुकूल ही है और इस अनुकूलता में वृद्धि होने की आशा बढ़ती जाती है।

इस प्रकार बाजार में बाजार को उठाने और गिराने के कारण बराबर की जोड़ बने हुए हैं, जो इसे अधिक इधर-उधर हिलने नहीं देते।

सलाह

इस सप्ताह बाजार पिछले सप्ताह के नीचे भाव १८७॥) को नहीं तोड़ सका है, परन्तु पिछले सप्ताह के ऊपर के भाव १९०॥) से भी नाममात्र ही ऊपर आकर वापस आ गया है। अतः स्पष्ट है कि बाजार किसी ओर चलने की तैयारी कर रहा है। अतः जब तक बाजार १८७॥) से ऊपर रहे, तेजी का व्यापार करना श्रेष्ठ है।

गवार और मटर

इस सप्ताह मटरे में हापुड़ वालों की थोड़ी या बहुत बिकवाली रही। गवारे में प्रारम्भ में तो खुश्क मौसम के कारण पंजाब वालों की खरीद रही, परन्तु बाद में राजस्थान से गवार खुल जाने के कारण खरीददार न रहा। बिकवाल बाजार को दबा रहा है। मौसम भी अब उतना हानिप्रद नहीं है, जितना कि पहले था।

चोर बाजार में भी खाद्यान्नों के भाव गिर ही रहे हैं। देश का अन्न संकट टल जाने के कारण लोगों में घबराहट नहीं है। आलू की पैदावार भी इस वर्ष ४.२ प्रतिशत अधिक है।

सलाह

इस सप्ताह सोमवार को गवार ११॥।-) बिक कर मंगलवार को १२=)॥ बिका। अतः ११॥।-) भाव एक रुकावट का है। अतः जब तक ११॥।-) से ऊपर रहे, ऊपर का रुख अन्यथा नीचे का रुख समझना चाहिये।

मटरा भी पिछले सप्ताह के ऊंचे भाव १६॥-)॥ से ऊपर किसी भी दिन बन्द न हो सका है, अतः जब तक यह १६॥=) से नीचे रहे नीचे का रुख अन्य ऊपर का रुख समझना चाहिये।

भूमध्यसागर की राजनीति

[पृष्ठ १२ का शेष]

मिलाने वाले जल डमरू मध्य, व मारमरा सागर के दोनों ओर है। इसी दृष्टि से टर्की का सामरिक महत्व बहुत अधिक है। यदि यह मार्ग खुल जाता है तो कृष्णसागर स्थित रूसी समुद्री बेड़ा भूमध्यसागर में आ जाता है। अभी तक तो जिब्राल्टर पर ब्रिटिश तथा मारमरा सागर के जलमार्ग पर टर्की का अधिकार रहने के कारण रूसी समुद्री बेड़े को भूमध्यसागर में प्रवेश करने की ही गुंजाइश नहीं है।

इसके दक्षिण की ओर सीरिया, फिलस्तीन तथा ट्रांसजोर्डन हैं। फिलस्तीन के यहूदियों तथा शेष अरब जगत में पुराना वैर चला आता है और निकट भूतकाल में ही यहूदियों ने अरबों से लड़कर फिलस्तीन पर अधिकार कर लिया। अरबों ने उनके विरुद्ध सम्मिलित युद्ध घोषणा की किन्तु, यहूदी पराजित नहीं हुए। परिणामस्वरूप यहूदी राष्ट्र स्थिर हो गया। बन्दर हैफा पर ईरान और ईराक से आती हुई तेल की पाइप लाइन समाप्त होती है।

फिलस्तीन के पश्चिम में मिश्र है। मिश्र में यद्यपि एक स्वतन्त्र शासन है और शाह फारुक का अधिकार है, किन्तु वहां आजभी ब्रिटिश सैनिक अड्डे हैं। और प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय जलमार्ग स्वेज नहर मिश्र ही के प्रदेश में है। मिश्र की राजधानी काहिरा है और इस देश की समृद्धि में नदी का विशेष भाग रहा है।

मिश्र के पश्चिम में लीबिया है। गत महायुद्ध के पूर्व इस पर इटली का शासन था। आज यह संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से ब्रिटेन के नियन्त्रण में दिया हुआ है। इसके पश्चिम में ट्यूनिसिया, अल्जीरिया तथा मोरक्को हैं। यह प्रदेश फ्रांस के अधिकार में हैं। मोरक्को का उत्तरी बिन्दु जिब्राल्टर के निकट तक पहुँच केवल जरा सा जलमार्ग छोड़ देता है।

इस प्रकार भूमध्यसागर के चारों ओर देशों की स्थिति है। इसके अतिरिक्त कृष्णसागर के एक ओर टर्की; दूसरी ओर बालकान राज्य तथा तीसरी ओर सोवियत रूस है।

इसके अतिरिक्त भूमध्यसागर में कई प्रसिद्ध टापू हैं, जिनका सदा ही बड़ा सामरिक महत्व रहा है। इटली के पश्चिम की ओर दो बड़े द्वीप कार्सिका तथा सार्डीनिया हैं। इनमें से सार्डीनिया इटली के अधिकार में है और कार्सिका फ्रांस के। मुसोलिनी के काल में इटली ने कार्सिका की मांग की थी। इटली के दक्षिण पश्चिम में स्थित सिसली के विषय में हम पहिले ही चर्चा कर चुके हैं। यह भी इटली के अधिकार में है।

सिसली के दक्षिण में एक अत्यन्त छोटा सा द्वीप माल्टा है। छोटा होते हुए भी इसका सामरिक महत्व बहुत अधिक है क्योंकि यह एक प्रकार से भूमध्यसागर के मध्य में पड़ता है, और पोर्ट सईद, माल्टा तथा जिब्राल्टर पर ब्रिटिश नियन्त्रण के कारण सारे भूमध्य सागर पर ब्रिटिश समुद्री बेड़े का प्रभाव रहता है। गत महायुद्ध में लीबिया की लड़ाई में इस द्वीप पर स्थित वायु तथा समुद्री अड्डे ने बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया था।

इनके अतिरिक्त दो अन्य प्रमुख द्वीप क्रीट तथा साइप्रस हैं। इनमें क्रीट तो ग्रीस के अधिकार में है। किन्तु साइप्रस ब्रिटिश अधिकार है। वैसे तो क्रीट के उत्तर में अनेकों छोटे बड़े द्वीप हैं किन्तु क्रीट ही इनमें सबसे बड़ा है। साइप्रस का हवाई अड्डा अपने चारों ओर के प्रदेश को प्रभावित करता है।

[पृष्ठ १२ का शेष]

पोशाक पहनने को कही कुंवरने पहन ली। पहनते ही विष सारे शरीर में फैल गया और कुंवर की मृत्यु दरबार में ही दो घन्टे बाद हो गई।

थोड़े दिन बाद काबुल के पठानों ने बगावत करदी। जिसको दबाने के लिए राजा जसवन्त सिंह को काबुल भेज दिया। विद्रोहियों को राजा ने हरा तो दिया परन्तु स्वयं भी मारा गया। जब राजा मर गया तो राजा की छोटी रानी कमलावती राजा के साथ काबुल में सती हो गई। और बड़ी रानी महामाया और कुंवर अजीतसिंह को औरंगजेब ने लाल किले में कैद कर लिया। उनको भी औरंगजेब मरवाना चाहता था। परन्तु "जाको राखे साइयां मार सके ना कोय" जब यह समाचार जोधपुर पहुँचा तो दुर्गादास राठौर और उनका भाई समरसिंह औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हुये, और कहा "कुंवर अजीत सिंह और महामाया को हमें दे दीजिए।" पर औरंगजेब ने मना कर दिया और कहा "मैं जसवन्तसिंह का वंश नष्ट कर के छोड़ूंगा। मेरे दरबार से चले जाओ।" इस पर दुर्गादास ने कहा, कि आपको अब भी सान्त्वना न मिली ? कुंवर पृथ्वीसिंह को तो विष की पौशाक पहना कर मारा और जसवन्तसिंह को काबुल में मरवाया। अतः तो ईश्वर के लिये राजा जसवन्तसिंह का वंश नष्ट न करो। पर दुष्ट औरंगजेब और कैसा जुल्म अमार ने साफ इन्कार कर दिया। और दुर्गादास व समर सिंह ने दरबार में ही तलवारें खींच लीं और दुष्टों को मार कर रानी और कुंवर को छुड़ा लाये। और जोधपुर पहुँच गये। औरंगजेब इस अपमान को न सह सका शाहजादा अकबर शाही को १६६८ ईस्वी में एक विशाल सेना देकर जोधपुर का किला घेर लेने की आज्ञा दी। किला घेर लिया गया और छः मास तक दोनों ओर के वीर इस लड़ाई में काम आते रहे। अन्त में उदयपुर के महाराणा राजसिंह की सहायता से राजपूतों की विजय हुई। औरंगजेब ने राजपूतों से सांभर के मुकाम पर सुलह करली और अकबरेशाही ताज पहन कर वहीं से मुसलमान सहित मक्का हज करने चला गया।

इस प्रकार अन्त में सत्य की विजय और असत्य की हार हुई।

[पृष्ठ ६ का शेष]

कांग्रेस तथा कांग्रेसजनों पर पाप की एक अधिक मात्रा चढ़ी हुई नहीं है। उन्हें दूसरे दलों की अपेक्षा एक नेहरू एक टंडन, एक राजगोपालाचार्य तथा एक आजादी का लाभ है। चूंकि कोई मूलभूत विषय नहीं हैं अतः अ० भा० कांग्रेस कमेटी को मतविरोध दूर करने में कठिनाई नहीं होनी चाहिये।

[पृष्ठ ७ का शेष]

स्वातः अपितु भारतीय मुसलमानों के लिए घातक है, किन्तु पाकिस्तान के प्रधानमंत्री तथा विदेश मन्त्री का कहना है कि यह वक्तव्य इन मुसलमानों ने स्वेच्छा से नहीं दिया, किन्तु नेहरूजी ने लिखवाया है और यह भारत में मुसलमानों की दयनीय स्थिति का द्योतक है। इस पाकिस्तानी आरोप का जोरों से खंडन किया गया है, किन्तु पाकिस्तान का अधिकारी-वर्ग तो सत्य से आँखें बन्द ही रखना चाहता है, अन्यथा भारतीय मुसलमानों का रुख उसकी नीति के प्रति कैसा है, यह दिन-पर-दिन स्पष्ट होता जा रहा है। शिया-सम्मेलन के एक प्रस्ताव करके यह घोषित कर दिया है कि काश्मीर में पाकिस्तान की नीति अन्यायपूर्ण है और प्रत्येक भारतीय मुसलमान उसका विरोध करेगा। इसी प्रकार के उद्गार उस्मानिया विश्वविद्यालय के उप-कुलपति अली यावरजंग ने भी प्रकट किये हैं कि भारतीय मुसलमानों में कोई भय या निराशा नहीं है।

एक तरह और एक भाव की गवरन पर राशन में दाम १-) और खुली सेल में ॥-) है। —एक व्यापारी

इसका मतलब यह है कि सरकार में एक आख से देखने वाला कोई नहीं।

× × ×

काग्रेस की अवहेलना करने का अधिकार प्रधान-मन्त्री को भी नही।

—टण्डन जी

श्रीमान् जी इसीलिये तो नेहरु जी ने भी अपनी एक टाग अलग हटाली

× × ×

पेशावर में ११ घण्टे तक ब्लैक-आउट। —एक शीर्षक

कयूमखा को अब अपने राज्य में आखो से देखने वालों की आवश्यकता है भी नहीं।

× × ×

काएसोंग (कोरिया विराम वार्त्ता केन्द्र) पर बमबर्षा आरम्भ हो गई।

—प्रेस ट्रस्ट

काफी दिन सुस्ता लिये। अब कुछ दिन लड़लो और उसके बाद आराम करने का कोई और बहाना करके लड़ाई बन्द कर लेना। सुस्ता-सुस्ता कर लड़ने से आदमी थकता नहीं।

× × ×

यदि लड़ाई हुई तो पाकिस्तान समाप्त हो जायगा।—मैनचेस्टर गार्डियन

आपकी भेंट लायकअली से शायद नहीं हुई।

× × ×

पाकिस्तान का युद्ध ज्वर धीरे धीरे उतर रहा है। —श्री मुन्शी

मलेरिया है, अभी बरसात पर चढ़ेगा या कभी-कभी कुनाइन तैयार रखिये और कोई इलाज नही।

× × ×

किदवई विनोबा भावे के सामने काग्रेस गृह-त्याग की सफाई देंगे।

सफाई की गवाही मे कृपलानी को पेश करके नेहरू जी की दुहाई देकर कहेंगे कि हे दादा दो नावो पर टिके मेरे पैरो का पजामा खतरे में पड़ गया था।

× × ×

आने वाले दिनों में लड़ाई से लगने वाली आगो को बुझाने के लिये हमारे यहा से सामान खरीदिये,

—बुकविल क० लाहौर

इस सामान के साथ बुर्के और रखने शुरू कर दीजिये, अच्छी बिक्री रहेगी आने वाले दिनों मे।

× × ×

यदि भारत की जनता भी अपनी सारी सेनाओं के साथ बन्दूकें लेकर आ जाये तो हम डरने वाले नहीं।

— लियाकतअली

क्योंकि चौकसी के लिए सारे पाकिस्तान को खोखला करना शुरू कर दिया है, खन्दकें खोद-खोद कर।

× × ×

ग्राहम कराची मे दोबारा रास्ता भूले। —'डान' कराची

कराची जगह ही ऐसी है जहा आदमी रास्ता तो क्या असलीयत तक भूल जाता है। पूछ लो लियाकतअली से। गवाही में यार लोग लायकअली भगोड़े को पेश करते है।

—चिरंजीलाल पाराशर

वीर अर्जुन

सचित्र साप्ताहिक

४ आना

श्री गणेशायनमः

हम हिन्दी शीघ्र लिपि का निर्माण कैसे करें ?

श्री महेशचन्द्र गुप्त-]

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बने दो वर्ष व्यतीत हो गए। इन दो वर्षों में राष्ट्र ने हिन्दी के विकास के लिए क्या किया और क्या कर रहा है, यह सर्वविदित ही है। इस विषय पर जितनी भी मीमांसा की जाय उतनी ही थोड़ी है। अंग्रेजी का स्थान प्राप्त करने के लिए १५ वर्ष की अवधि हिन्दी के लिए रखी गयी है, पर जिस गति से हिन्दी के लिए कार्य हो रहा है, उस गति से १५ वर्ष तो क्या ३०-२० वर्ष भी थोड़े हैं। इस गति से हिन्दी कभी भी गौरवान्वित नहीं हो सकती।

शीघ्रलिपि की आवश्यकता

एक ओर हिन्दी की व्यापकता के लिए वैज्ञानिक, रसायनिक, यान्त्रिक आदि कोषों की आवश्यकता है तो दूसरी ओर हिन्दी की शीघ्रलिपि की भी भारी आवश्यकता है। आजकल के हिन्दी युग में नाटक, कहानी, उपन्यास, गल्पों की भरमार हो रही है। क्या इन सभी से हिन्दी की उन्नति हो सकती है ? मुझे सन्देह लगता है। यही कारण है कि हम हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान नहीं दे पा रहे हैं।

अन्य किसी और विषय को न लेते हुए यहां हम शीघ्र लिपि को ही लेते हैं। शीघ्रलिपि भाषा के प्रचार एवं विकास का मुख्य स्रोत होती है। यदि इस क्षेत्र का समुचित विकास किया जाय तो भाषा निश्चय से अन्य विश्व भाषाओं की समानता प्राप्त कर सकती है।

क्या कारण है ?

हिन्दी शीघ्र-लिपि क्षेत्र के ५० वर्ष के प्रयत्नों पर यदि विहंगम दृष्टिपात किया जाय तो उसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में थोड़ा-थोड़ा ज्ञान होने लगता है। पर इन प्रयासों को कितनी सफलता मिली है, यह एक चिन्तनीय विषय है। चारों ओर निराशा ही निराशा दीख पड़ती है। इसका क्या कारण है ? कारण है हमारे शीघ्र-लिपि रचयिताओं का पिट्मैन प्रणाली (अंग्रेजी शार्टहैंड) का अन्धानुकरण करना। मैं यह बात नहीं कहता कि अनुकरण करना बुरा है। अनुकरण किया जाय। जिस प्रकार नकल में भी अक्ल की आवश्यकता है, उसी प्रकार यदि शीघ्र-लिपि में अनुकरण करना ही है तो उन्हीं चीजों का अनुकरण किया जाय जो हमें भाषा की वैज्ञानिकता की दृष्टि से आवश्यक हैं।

हिन्दी के व्यंजन और स्वर

हिन्दी भाषा की वैज्ञानिकता एवं ध्वन्यात्मकता की दृष्टि से इतनी व्यापक है कि पिट्मैन ने भी, जिसका हम अनुकरण करने में अपना गौरव समझने लगे हैं, अपनी शीघ्र-लिपि निर्माण के लिए हिन्दी के व्यंजनों एवं स्वरों के मूलभूत सिद्धान्तों को ग्रहण किया और तब कहीं अपनी शीघ्र-लिपि की रचना की है। उदाहरण के लिए पिट्मैन ने अंग्रेजी शीघ्र-लिपि के अधिकांश व्यंजन जैसे—(पे-गे-दृथ-टी-इश-जी-इंग रे-वे-ये-हे आदि) हिन्दी व्यंजनों के ध्वन्यानुकूल क्रमशः (प-ग-थ-ट-श-ज-ङ-र-व-य-ह) के लिए अपनाये हैं। यही हाल स्वरों के क्रम का है। फिर यह सोचना मात्र भी कि बिना पिट्मैन का अनुकरण करे काम नहीं चल सकता, यह कोरी कल्पना है। अपनाई हुई चीज को अपनाना अपने अपनत्व से गिरना है।

हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषाओं में महान अन्तर है। अनुकरण वहीं होना चाहिए जहां भाषा की वैज्ञानिकता पर कुठाराघात न हो। पाठकों एवं शीघ्र-लिपि रचयिताओं की सुविधा के लिए शीघ्र-लिपि व्यंजनावली निम्नांकित है।

उपरोक्त व्यञ्जनों को निश्चित करने के विशेष कारण, जो कि पाठकों के विचारार्थ वर्णानुसार दिये जाते हैं।

महाप्राण व्यञ्जन

इससे पूर्व कि इन्हें वर्णानुसार लिखा जाय, यहां वर्णों में प्रयुक्त अल्प एवं महाप्राणों का वर्णन कर देना उचित है। यह तो सर्वविदित है ही कि किसी अल्प-प्राण में 'ह' की ध्वनि के योग होने से महा प्राण बनता है। प्रत्येक वर्ग में पहला, तीसरा व्यंजन अल्प प्राण एवं दूसरा, चौथा महाप्राण होता है। वर्ग के पांचवें अक्षर अनुनासिक कहलाते हैं। शीघ्र-लिपि में वर्ग के पहले और दूसरे व्यंजन को हल्के चिन्ह से तथा तीसरे, चौथे व्यञ्जन भारी चिन्ह से बोधित किये गये हैं। महाप्राण व्यंजनों को मध्य से काट कर बोधित किया गया है। ऐसा करने से विद्यार्थी वर्ग प्रथम चिन्ह को याद करके अन्य व्यंजन को सरलता से याद कर लेता है।

कवर्ग

पिट्मैन प्रणाली के ध्वन्यानुकूल (के-गे) चिन्हों को जो कि हिन्दी के क-ग व्यञ्जन हैं, (क-ग) चिन्हों के लिए सरलता से अपना सकते हैं, इनको मध्य से काट कर ख-घ महाप्राण का रूप दे सकते हैं। वर्ग का पांचवा व्यंजन (ङ) है। वह पिट्मैन के इंग चिन्ह से बोधित किया जा सकता है।

चवर्ग

ध्वन्यानुकूल पिट्मैन के (चे-जे) चिन्हों को हिन्दी में (च-ज) व्यञ्जनों के लिए अपना लेना चाहिये। छ-झ के लिये मध्य से काटने का नियम अपना लेना उत्तम है। वर्ग का अन्तिम व्यञ्जन 'ञ' को, जो कि शब्दों के मध्य में ही प्रयुक्त होता है, अब न-बिन्दु जैसे अनंचय से बोधित किया जाने लगा है। हिन्दी में ञ्-न् को आधे से या बिन्दु से बोधित करते हैं। अतः ञ-ण-न को शीघ्र-लिपि पिट्मैन के न चिन्ह से ही बोधित करना चाहिये। ण के लिये भिन्न चिन्ह देने की परम्परा चल पड़ी है, परन्तु ऐसा करने वालों को विदित होना चाहिये कि ण तथा न एक ही हैं। बंगला भाषा में भी इनका प्रयोग होता है। उच्चारण की दृष्टि से दोनों को न व्यंजन की संज्ञा देते हैं, परन्तु विकल्प से भाषों में ण-न का भिन्न-भिन्न प्रयोग करते हैं। शीघ्र-लिपि लेखक को भाषा का पूर्ण ज्ञान आवश्यक है। अन्ततः शीघ्र-लिपि में ञ-ण-न व्यञ्जनों के लिए केवल पिट्मैन का न चिन्ह ही प्रयुक्त करना चाहिये।

टवर्ग-तवर्ग

इन वर्गों के चिन्हों को निश्चित करने में बहुत मतभेद है। पिट्मैन का अन्धानुकरण करने वाले पिट्मैन के टी-चिन्ह को ही हिन्दी में ट व्यञ्जन के लिए देते हैं, जब कि हिन्दी में ट वर्ग का प्रयोग हिन्दी में त वर्ग की अपेक्षा १० प्रतिशत भी नहीं है। अंग्रेजी के टी व्यञ्जन का प्रयोग हिन्दी में त व्यञ्जन के लिए ही होता है। अतः पिट्मैन के 'टी डी चिन्ह' हिन्दी में त द व्यञ्जनों के लिए प्रयुक्त होने चाहिये। इन्हें मध्य से काटकर थ ध व्यंजनों का निर्माण किया जा सकता है।

पिट्मैन के चिन्ह ले लें

पिट्मैन के इ च चिन्ह को '(' हिंदी में ट के लिये ले लेना उत्तम है, कारण कि हिन्दी में च चिन्ह का निर्माण त चिन्ह को काटकर चुके हैं। ट वर्ग के चिन्ह निश्चित होने चाहिए, जो कि '( )' कोष्ठ से सम्बोधित किए जाते हैं। कारण कि अन्य वर्ग एव शेष चिन्ह इन दोनों संकेतों के निश्चित करने से ही सुगम, संबोध एवं सरल लिखे जाते हैं। जैसे ठीक ठाक, ठोक ठाक, टीप टाप, चोट चाट, टिकिट आदि आदि। इन दोनों के चिन्हों को मध्य से तथा मोटा मध्य से काट कर ठ तथा ढ व्यंजनों का निर्माण किया जा सकता है।

दोनों वर्गों के पांचवे चिन्हों का वर्णन चवर्ग में किया जा चुका है।

पवर्ग

ध्वन्यानुकूल पिट्मैन के पी बी चिन्हों को हिन्दी में प-ब व्यंजनों के हेतु एव मध्य से काट कर फ-भ का निर्माण सरलता से हो जाता है। ऐसा देखने में आ रहा है कि अन्य रचयिता वर्ग फ फ़ मे अन्तर करके दो चिन्ह दोनों के देते हैं, पर वे यह भूल जाते हैं कि हिन्दी में फ़-क़-ज़-ग़-ख़- व्यंजनों का, जो कि निरी उर्दू की ही देन है, फ-क-ज-ग-ख साधारण व्यजनों से ही बोधित करते हैं। हिन्दी जगत में उर्दू प्रयुक्त व्यजनों का प्रयोग शुरू हो गया है अतः इन व्यंजनों मे भेद प्रकट करने की दृष्टि से दो चिन्ह देना शीघ्र लिपि रूपक रूप ही नहीं अपितु भाषा के लिए अभिशाप रूप सिद्ध होगी। वर्ग का पांचवां व्यंजन 'म' है जो पिट्मैन के (एम-चिन्ह) से सबोधित किया जा सकता है।

य-व:

पिट्मैन प्रणाली की व्यंजन के लिए, अंग्रेजी भाषा की ध्वनि के अनु-

[शेष पृष्ठ १६ पर]

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार २१ भाद्रपद सम्वत् २००८ [अङ्क २०

विचार-प्रकाशन की स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
और जब तक हमारे संविधान में इसकी गारण्टी नहीं कर दी जायगी,
हम तब तक चैन नहीं लेंगे।

नेहरू-टण्डन विवाद

कांग्रेस महासमिति में उपस्थित होने वाले संघर्ष को टालने के अभी तक के सारे प्रयत्न व्यर्थ गए हैं। कांग्रेस के वर्तमान संविधान के विरुद्ध मांग होने पर भी पं० नेहरू अपने आग्रह पर दृढ़ हैं और एक ऐसी स्थिति उत्पन्न करने पर तुले हुए हैं, जिससे कांग्रेस का ही विभाजन हो जाने की संभावना उपस्थित हो सकती है। कांग्रेस के प्रमुख नेता कांग्रेस अध्यक्ष श्री टण्डनजी व प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू से लगातार मिल रहे हैं, किन्तु अभी तक कोई निश्चित परिणाम सामने नहीं आया और यह दिखाई देता है कि यह संघर्ष टल नहीं सकेगा और महासमिति के अधिवेशन में दोनों ही पक्ष एक दूसरे की चोटें झेलेंगे। कांग्रेस की यह आन्तरिक कमज़ोरी प्रकट न हो, इसीलिए यह अधिवेशन गुप्त रूप से किया जा रहा है।

अधिवेशन का परिणाम क्या होगा है, यह तो निश्चित रूप से अगले सप्ताह ही पता चलेगा किन्तु जो कुछ दिखाई देता है, उससे उसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है। प्रकाशित समाचारों के अनुसार पं० नेहरू का पक्ष प्रबल पड़ता दिखाई देता है। कई राज्य कांग्रेसों ने, जिन्होंने अध्यक्षीय चुनाव में टण्डनजी का समर्थन किया था, पं० नेहरू का समर्थन करने का निश्चय कर लिया है। व्यक्तिगत रूप से भी अनेकों कार्यकर्त्ताओं ने पक्षविपक्ष में अपना मत प्रकट किया है। चुनाव सामने हैं और कांग्रेस की ओर से भविष्य में गद्दियों पर बैठने का स्वप्न देखने वाले लोग अपनी गत सेवाओं का स्मरण कर जनता के सामने आकर वोट मांगने का साहस नहीं कर पाते। अतः पं० नेहरू का मूल्य अधिक बढ़ गया है। कांग्रेस में सिद्धांत का स्थान तो स्वार्थ ने ले ही लिया है, फिर इस समय यदि यह दृश्य दिखाई दे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

किन्तु टण्डनजी का बल भी कुछ इतना कम नहीं है, जितना समाचारों से प्रतीत होता है। उनके समर्थक उन्हें खोने के विचार में नहीं दिखाई देते, यह बात अवश्य है कि वे प० नेहरू को भी खोना नहीं चाहते। जहां तक टण्डनजी का प्रश्न है, उन्होंने स्वयं इस गुत्थी को सुलझाने का प्रयत्न किया है और संभवतः कांग्रेस अध्यक्ष रहते हुए किसी भी व्यक्ति को, वह चाहे पं० नेहरू ही क्यों न हों, अपने सिर पर बिठा लेने के बजाय वे अन्य किसी भी हल को स्वीकार कर लेते। किन्तु पं० नेहरू ने कोई विकल्प ही शेष नहीं छोड़ा है। ऐसी स्थिति में टंडनजी के सम्मुख सिद्धान्त-रक्षा का प्रश्न खड़ा हो गया है। कांग्रेस का अध्यक्ष ही कांग्रेस का नेता है, जिसे प्रतिनिधियों के बहुमत का समर्थन प्राप्त होता है। यह अध्यक्ष कांग्रेस के नियंत्रण में कार्य करे, यह तो स्वाभाविक है, किन्तु किसी एक कितने भी बड़े व्यक्ति अथवा वर्ग के नियन्त्रण में यदि कार्य करेगा, तो वह देश के अहित में होगा और संस्था के प्रजातांत्रिक रूप को भी नष्ट कर देगा।

कांग्रेस का विधान कार्यकारिणी बनाने के लिए अध्यक्ष को ही पूर्ण अधिकार देता है। फिर वर्तमान कार्यकारिणी को भंग कर उनकी सलाह से नयी कार्यकारिणी बनाने की पं० नेहरू की मांग स्पष्टतः अवैधानिक है। पं० नेहरू जैसे व्यक्ति को यह बात शोभा नहीं देती, किन्तु स्वार्थ अपने दोष नहीं देखता। आज पं० नेहरू की मांग पूरी करने के लिए कांग्रेस के विधान में संशोधन करने की भी चर्चा है। किन्तु अवैधानिक मांग को वैधानिक बनाने के लिए विधान में ही परिवर्तन करना स्वार्थी कांग्रेसजनों को ही शोभा देता है। उचित मार्ग तो यह होगा कि संशोधन [illegible] जाती।

क्या टण्डन जी सिद्धान्त रक्षा के लिए लड़ेंगे? स्पष्ट ही यह कांग्रेस के जीवन मरण का प्रश्न है। यदि महासमिति के निर्णय से व्यक्ति संस्था से ऊंचा उठ गया तो कांग्रेस संस्था केवल एक व्यक्ति के विचारों पर अपनी मुहर लगाने वाली बन जायगी। जब गांधीजी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन से हिन्दी हिन्दुस्तानी के प्रश्न पर त्यागपत्र दिया था तब उसे टण्डन जी ने चुपचाप स्वीकार कर लिया था। वह भी एक सिद्धान्त रक्षा का ही प्रश्न था जिसके लिये टण्डन जी ने गान्धी जी के व्यक्तित्व की भी चिन्ता नहीं की थी। प० नेहरू का व्यक्तित्व कितना ही बड़ा होते हुए भी गान्धी जी से बड़ा नहीं है। क्या टण्डन जी पुन उसी दृढ़ता का परिचय देंगे? और यदि कांग्रेस में सिद्धान्त का स्थान स्वार्थ ने ही ले लिया है तो क्या उसे ही धक्का देना उचित न होगा?

★

भारत और अफगानिस्तान

अफगानिस्तान के प्रधान मन्त्री शाह मोहम्मद खान का देहली में आगमन भारत तथा अफगानिस्तान के बीच सद्भावनापूर्ण सम्बन्धों का सूचक तो है ही, साथ ही इसका अन्तर्राष्ट्रीय महत्व भी कम नहीं है। पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच पख्तूनिस्तान के प्रश्न को लेकर काफी समय से तनातनी चल रही है। अब इस मतभेद ने जितना उग्र रूप धारण कर लिया है वह इसी से प्रकट है कि श्री मोहम्मद खान कराची के मार्ग से न होकर बम्बई के मार्ग से दिल्ली आये हैं। विभाजन से पूर्व अफगानिस्तान का अन्य राष्ट्रों से सम्बन्ध कराची की बन्दरगाह द्वारा ही था, किन्तु अब अफगानिस्तान के प्रधान मन्त्री का पाकिस्तान की भूमि का स्पर्श तक न करने का संकल्प पाकिस्तान और अफगानिस्तान के सम्बन्ध विच्छेद का ही द्योतक है। इधर कुछ समय से अफगानिस्तान में यह भावना प्रबल होती जा रही है कि वहां के निवासियों की धमनियों में आर्यों का विशुद्ध रक्त प्रवाहित हो रहा है, और इसी नाते उनका भारत के साथ अटूट सांस्कृतिक सम्बन्ध है। स्मरण रहे कि अफगानिस्तान कभी भी उन मुस्लिम राष्ट्रों में नहीं रहा जिसको इस्लाम के नाम पर किसी अन्य राष्ट्र के विरुद्ध किसी सामूहिक षडयन्त्र में शामिल किया जा सके। मुगल कालसे ही भारत के तत्कालीन मुगल शासकों के साथ अफगानिस्तान के कभी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध नहीं रहे। इस्लाम धर्मावलम्बी अफगानिस्तान को इस्लाम का नारा कभी भी आकर्षित नहीं कर सका भारतने प्रारम्भसे ही जिस प्रकार शान्तिपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय नीति अपनाई है उससे पाकिस्तान जैसे धर्मान्ध देश चाहे भले ही प्रभावित नहीं हुए हों, किन्तु कोई भी शान्तिपूर्ण तथा निष्पक्ष देश भारत की नीति की सराहना किये बिना नहीं रहेगा। भारत में अफगानिस्तान के प्रधान मन्त्रीका जो हार्दिक स्वागत हुआ है वह अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भारत की शान्तिपूर्ण तथा निष्पक्ष नीति का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसका सर्वत्र स्वागत किया जायेगा।

राष्ट्रभाषा की महत्ता

भारतीय संविधान परिषद द्वारा भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी स्वीकार कर लिए जाने के पश्चात् राष्ट्रभाषा की महत्ता को जितनी गम्भीरता के साथ अन्तर्राष्ट्रीय जगत ने अनुभव किया है उसका चतुर्थांश भी हमारे देश में नहीं किया गया। अफगानिस्तान के प्रधान मंत्री आजकल नई दिल्ली में आए हुए हैं। संसद सदस्यों द्वारा आयोजित सम्मान पार्टी में आपने भाषा सम्बन्धी कठिनाई होने पर भी टूटी फूटी हिन्दी में ही भाषण देने का प्रयास किया और इस प्रकार उत्सव में प्रदर्शित उन व्यक्तियों के सम्मुख आदर्श उपस्थित किया जो आज भी अंग्रेजी में भाषण देते समय गर्व का अनुभव करते हैं। हमारे प्रधान मन्त्री भी इसका अपवाद नहीं हैं। अफगानिस्तान के प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रभाषा को सम्मानित किए जाने के पश्चात् हमारे प्रधान मन्त्री को भी हिन्दी में ही भाषण करना पड़ा, यद्यपि ऐसे अवसरों पर अंग्रेजी के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में बोलना आपकी स्वाभाविक प्रवृत्ति के विरुद्ध है। विदेशियों द्वारा हमें अपनी राष्ट्रभाषा का आदर करने की प्रेरणा दिये जाने का यह पहिला ही अवसर नहीं है। इससे पूर्व भी श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित का पत्र मास्को सरकार ने केवल इसी आधार पर स्वीकार नहीं किया था कि भारत की राष्ट्रभाषा अंग्रेजी नहीं है, हिन्दी है। यह यह हमारे लिये वस्तुत लज्जा का विषय है कि हमे अपनी राष्ट्रभाषा का आदर करने का पाठ विदेशों से पढ़ना पड़े। फिर भी हमें आशा है कि हमारे देश में आकर हमें राष्ट्रभाषा की शिक्षा देने की किसी विदेशी को पुनः आवश्यकता नहीं पड़ेगी। क्या सरकार स्वयं ही इस सम्बन्ध में सतर्क होकर अपने कर्तव्य का पालन करेगी?

★

ईरान तेल-वार्ता पुनः प्रारंभ होने की संभावना

ईरान तेल वार्ता

तेहरान में आंग्ल ईरानी प्रतिनिधि मण्डल के बीच हो रही सन्धि वार्ता के असफल हो जाने पर परिस्थितियों ने दोनों पक्षों को पुन वार्ता प्रारम्भ करने के लिए बाध्य कर दिया है। यद्यपि कोई भी पक्ष प्रकट रूप से किसी भी अपमान जनक शर्त को स्वीकार करने को तैयार नहीं है, किन्तु इतना स्पष्ट है कि दोनों ही पक्ष अपना हित पारस्परिक सहयोग में ही देखते हैं और इसके लिए प्रयत्न शील भी हैं। आंग्ल ईरानी तेल कम्पनी ने चेतावनी दी है कि यदि कोई फर्म या व्यक्ति ईरान सरकार से कच्चा तेल या तेल से उत्पन्न वस्तुयें खरीदेगा तो कम्पनी अपने अधिकारों की रक्षा के लिए आवश्यक कार्यवाही करेगी। ईरान के उपप्रधान मन्त्री श्री हुसैन फातमी ने कहा कि यद्यपि ब्रिटेन ईरानी प्रस्तावों को वर्तमान रूप में अस्वीकार कर चुका है, तथापि ईरान अपनी प्रस्तावों की पुनर्व्याख्या करके ब्रिटेन से तेल वार्ता पुन प्रारम्भ करेगा। डा० फातमी ने यह भी घोषणा की है ईरान विदेशी टैक्नीशियनों की सहायता से अबादान के विशाल तेल कारखाने को पुन चालू करेगा। इधर ईरान के प्रधान मन्त्री डा० मुसद्दिक ने भी ब्रिटेन को चेतावनी दी है कि यदि पन्द्रह दिन के भीतर वार्ता पुन प्रारम्भ हुई तो ईरानी तेल कम्पनियों से ब्रिटिश कर्मचारी तत्काल ही निकाल दिये जायेंगे।

आम चुनाव

देश के २८ राज्यों में से १८ राज्यों के आम चुनावों की तिथियां चुनाव आयोग ने घोषित करदीं। देश के अधिकांश भाग में चुनाव ३ जनवरी से २४ जनवरी तक होंगे। केवल हिमाचल प्रदेश में ही बाद में बरफ पड़ने के कारण चुनाव अक्टूबर मास में ही समाप्त हो जायेंगे। समस्त देश के चुनावों का परिणाम फरवरी के अन्त तक घोषित किये जाने की सम्भावना है। दिल्ली उपनगरों में चुनावों के लिये ग्रामीण जनता को शिक्षित करने के लिये स्थान-स्थान पर नकली चुनाव हो रहे हैं, जिनमें ग्रामीण बड़े उत्साह से भाग ले रहे हैं।

अफगानिस्तान भारत के साथ

ग्राहम असफल लौटे : कोरिया में बम वर्षा

कोरिया वार्ता खटाई में

कोरियाई क्षेत्रों से प्राप्त समाचारों के अनुसार अमरीकी विमानों ने साम्यवादी सेनाओं और रसद केन्द्रों पर भारी विस्फोटक पदार्थ तथा बम गिराये गये। काएसोंग युद्ध विराम-वार्ता अभी खटाई में ही पड़ी है। कुछ क्षेत्रों का यह भी विचार है कि जनरल रिजवे पुन वार्ता प्रारम्भ करने के लिये किसी नये वार्ता स्थल की शर्त पर जोर देंगे। प्योंगयांग रेडियो ने अमेरिका पर आरोप लगाया है कि अमेरिका कायेसोंग वार्ता इसलिये समाप्त करना चाहता है जिससे कि वह जापान का शस्त्रीकरण करके कोरिया युद्ध जारी रख सके।

कांग्रेस गतिरोध

कांग्रेस अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमदास टंडन ने अपने एक वक्तव्य में कहा है कि मुझे कदाचित कांग्रेस संकट के सम्बन्ध में स्वय स्वीकृत मौन को तोड़कर स्थिति के स्पष्टीकरण के लिये शीघ्र ही वक्तव्य देना पड़े। वर्तमान परिस्थितियों में राजनैतिक क्षेत्रों का स्पष्ट मत होता जा रहा है कि नेहरूजी की तानाशाही प्रवृत्तियों से ऊबकर टंडन जी त्यागपत्र देकर कांग्रेस की बागडोर नेहरूजी को सौंप देंगे। संसद के प्रमुख सदस्य श्री हरिविष्णु कामथ ने श्री नेहरू की नीति का तीव्र विरोध करते हुये कहा है कि किसी संस्था के प्रधान के विपरीत और उक्त संस्था की स्वीकृति से पूर्व किसी एक व्यक्ति की, फिर वह चाहे कितना ही महान हो, इच्छा को बलात कार्यान्वित करना विधान के विपरीत तो है ही साथ ही तानाशाही के पद पर अग्रसर होना भी है।

अफगान प्रधान मन्त्री का आगमन

अफगानिस्तान के प्रधान मन्त्री शाह मोहम्मद खान आजकल देहली आये हुये हैं। आपने भारतीय संसद में अपना भाषण देते हुये भारत तथा अफगानिस्तान के बीच सद्भावना पूर्ण सम्बन्धों पर जोर दिया। इस सम्बन्ध में सर्वाधिक उल्लेखनीय बात यह है कि संसद के सदस्यों की ओर से आपके स्वागत के उपलक्ष में दी गई सम्मान पार्टी में आपने अपना भाषण हिन्दी में ही दिया।

डा० ग्राहम जेनेवा को

संयुक्त राष्ट्रीय काश्मीर प्रतिनिधि डा० फ्रांक ग्राहम काश्मीर के सम्बन्ध में यहां अनौपचारिक वार्ता करने के पश्चात भारत से लौट रहे हैं। डा० ग्राहम ने काश्मीर से सेनायें हटाने का प्रस्ताव रखा था किन्तु उसे किसी भी पक्ष ने स्वीकार नहीं किया। इसके पश्चात् डा० ग्राहम कराची जायेंगे तथा वह पाकिस्तानी अधिकारियों से विचार विमर्श करने के पश्चात जेनेवा चले जायेंगे और वहां अपनी अब तक की बातचीत का एक प्रतिवेदन सुरक्षा परिषद के सम्मुख रखेंगे। काश्मीर के सम्बन्ध में अब तक किये हुये संयुक्त राष्ट्रीय प्रयत्नों की असफलता ने परिस्थिति को शान्ति पूर्वक सुलझाने का मार्ग प्राय अवरुद्ध सा कर दिया है।

दिल्ली के निकट नांगलोई नामक ग्राम में ग्रामीणों को आगामी चुनाव के समय मतदान की शिक्षा देने के लिए एक नकली चुनाव का आयोजन किया गया था। जिसमें लगभग ५०० लोगों ने मत दिये। चित्र में (बाईं ओर) एक राजनैतिक दल का प्रचारक अपने उम्मीदवार के पक्ष में प्रचार कर रहा है। (दाईं ओर) घूंघट वाली ग्रामीण महिलायें भी मतदान में किसी से पीछे नहीं।

अफगानिस्तान के प्रधान मंत्री शाह मोहम्मद खान का प्रधानमन्त्री पं० नेहरू तथा अन्य सरकारी अधिकारियों द्वारा स्वागत।

पण्डित नेहरू द्वारा चौदह वर्ष पूर्व किया गया आत्मनिरीक्षण

जवाहरलाल नेहरू

[श्री जवाहरलाल नेहरु]

प० नेहरू ने यह लेख एक उपनाम से कलकत्ता के नवम्बर १९३७ के 'माडर्नरिव्यू' के लिए लिखा था। यह वह समय था जब अ० भा० कांग्रेस १९३८ के लिए अपने अध्यक्ष को चुनने ही वाली थी। प० नेहरू प्रत्यक्ष में आगे भार उठाने के लिए राजी नहीं थे। वे १९३० और १९३७ में दो बार कांग्रेस अध्यक्ष रह चुके थे। उस समय कांग्रेस अध्यक्ष राष्ट्रपति कहलाता था। आज कांग्रेस के संघर्ष और पं० नेहरू द्वारा प्रधान मन्त्री तथा कांग्रेस अध्यक्ष पद दोनों सम्भालने की तैयारी के समय इस लेख का सामयिक महत्व है। क्या प्रधान मन्त्री नेहरू पुन अपने मन का विश्लेषण करेंगे? देश के हित के नाम पर कहीं वे अहित के ही मार्ग पर तो कदम नहीं रख रहे हैं?

"राष्ट्रपति जवाहरलाल की जय!" भीड़ के बीच से तेजी से निकलते हुए राष्ट्रपति ने सिर उठा कर देखा, उसके दोनों हाथ उठ कर नमस्कार के लिए जुड़ गए और उसके कठोर श्वेत मुख पर मुस्कान चमक उठी। वह एक उत्साहयुक्त व्यक्तिगत मुस्कान थी और जिन लोगों ने उसे देखा उन्होंने तुरन्त ही उसका समर्थन किया और बदले में मुस्कराये तथा हर्ष प्रकट किया।

मुस्कान समाप्त हो गई और पुनः मुख कठोर व उदास। भीड़ में जो भाव उसने जगाये थे उनके मध्य में भी विकारहीन हो गया। लगभग ऐसा ही प्रतीत हुआ कि मुस्कान और उसके साथ की मुखमुद्रा के पीछे वास्तविकता नदारद थी। वह तो उस भीड़ की प्रशंसा प्राप्त करने के व्यापार के हथकण्डे थे, जिसका कि वह प्रिय बन गया है। क्या ऐसा था?

उसे पुन देखिये। एक भारी जुलूस है और उसकी कार को घेर कर सहस्रों पुरुष अपने हर्षोन्माद में उसे उत्साहित कर रहे हैं। अपनेआप को भली प्रकार संभाल कर, और खड़ा लगता हुआ, एक देवता के समान गंभीर और उमड़ते हुए जनसमूह से अविचलित वह अपनी सीट पर खड़ा है। सहसा वह मुस्कान या एक प्रसन्नतासूचक हास्य पुनः प्रकट होता है और वातावरण का तनाव टूटता सा लगता है और भीड़ उसके साथ साथ हंसती है यह न समझते हुए कि वह किस लिए हंस रही है। वह और अधिक देवता के तुल्य नहीं है, वह अब एक मनुष्य है जो अपने चारों ओर खड़े सहस्रों पुरुषों से अपने सम्बन्ध तथा सहयोग का दावा करता है, और भीड़ स्नेह तथा प्रसन्नता अनुभव करती है और उसे अपने हृदय में बिठा लेती है। किन्तु मुस्कान चली गई है और कठोर श्वेत मुख पुनः था

क्या यह सब स्वाभाविक है अथवा चतुराई से सोची गई एक सार्वजनिक पुरुष की चालबाजी है। शायद यह दोनों ही हैं और लम्बी आदत अब स्वभाव में बदल चुकी है। सर्वाधिक प्रभावशाली मुद्रा वही है जिसमें सबसे कम मुद्रा की बनावट प्रकट हो, और जवाहरलाल ने एक अभिनेता के रंग तथा पाउडर के बिना अभिनय करना भली भांति सीख लिया है। अपने लापरवाह से दिखाई देने वाले ढंग से वह जनता के रंगमंच पर पूर्ण कलात्मक अभिनय करता है। यह सब उसे और देश को कहां लिए जा रहा है? बाहर से निरुद्देश्य दिखाई देते हुए भी वह क्या प्राप्त करने के लिए बढ़ रहा है? उसके आवरण के पीछे क्या छिपा है। कौन सी इच्छाएं, सत्ता प्राप्त करने का कौन सा निश्चय, कौन सी अतृप्त आकांक्षायें?

किसी भी दशा में ये प्रश्न रोचक होंगे, क्योंकि जवाहरलाल एक ऐसा व्यक्तित्व है जो रुचि और ध्यान खींच लेता है किन्तु हमारे लिए इनका भारी महत्व है, क्योंकि वह भारत के वर्तमान से बंधा है, और सम्भवतः भविष्य से भी और उसमें वह शक्ति है कि वह भारत का महान हित या महान अहित कर सके। अतः हमें इन प्रश्नों का उत्तर ढूंढना ही चाहिए।

लगभग दो वर्ष से वह कांग्रेस का अध्यक्ष है और कुछ लोग सोचते हैं कि वह कार्यकारिणी में केवल एक सत्यानुगामी के रूप में है, जिसे दूसरों ने दबा कर अथवा नियन्त्रित कर रखा हुआ है। और फिर भी आग्रहपूर्वक सतत रूप से वह अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा तथा प्रभाव जनता तथा सब प्रकार के समुदायों और लोगों में बढ़ाता चला जा रहा है। वह किसान और मजदूर, जमींदार और पूंजीपति, व्यापारी और राही, ब्राह्मण व अछूत, मुसलमान, सिख, पारसी, ईसाई और यहूदी और उन सभी के पास जो भारतीय जीवन की विविधता के अंग हैं, जाता है। इन सभी से वह किञ्चित भिन्न भाषा में बात करता है, सदा ही उन्हें अपनी ओर जीत लेने का प्रयत्न करते हुए। ऐसे सामर्थ्य से जो उसकी अवस्था में आश्चर्य जनक है उसने भारत की इस विशाल भूमि के दौरे किए हैं और सभी जगह उसका जनता द्वारा असाधारण स्वागत किया गया है। सुदूर उत्तर से कुमारी अन्तरीप तक वह इस प्रकार गया है, जैसे कोई विजयी सीजर आ रहा हो, अपने पीछे एक प्रशंसा और किंवदन्तियों की लीक छोड़ता हुआ। क्या यह सब उसके लिए एक साधारण सा विचार है जो उसे प्रसन्न करता है, या कोई गहरी योजना या किसी शक्ति का खेल है जिसे वह स्वयं नहीं जानता? क्या यह सत्ता प्राप्त करने का उसका संकल्प है जिसका उसने अपने जीवन चरित्र में उल्लेख किया है। जो उसे भीड़ से भीड़ की ओर ले जा रहा है और उससे स्वयं अपने आप से कहलवा रहा है—"मैंने लोगों के इन ज्वार को अपने हाथों से आकर्षित किया है और अपने संकल्प को आकाश के मध्य सितारों में लिखा है।"

क्या होगा यदि विचार बदल जाये? जवाहरलाल जैसे व्यक्ति, महान् और श्रेष्ठ कार्यों के करने की अपनी क्षमता के होते हुए भी प्रजातन्त्र में भय का कारण होते हैं। वह अपने को एक प्रजातन्त्रवादी, एक समाजवादी कहता है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह सचाई के साथ ऐसा करता भी है, किन्तु प्रत्येक मनोवैज्ञानिक जानता है कि अन्त में मन हृदय का गुलाम है और न्याय का अर्थ सदा ही मनुष्य की इच्छाओं और दुर्दमनीय आकांक्षाओं के अनुकूल लगाया जा सकता है। जरा-सा मुड़े और जवाहरलाल प्रजातन्त्र के धीमे चलने वाले ढांचे को एक ओर हटाते हुए एक अधिनायक (डिक्टेटर) बन सकता है। वह तब भी प्रजातन्त्र तथा समाजवाद के नारे को काम में ला सकता है, किन्तु हम सभी जानते हैं किस प्रकार फासिज्म सदा इसी भाषा पर पला है और बाद में उसे बेकार कह कर एक ओर फेंकता रहा है।

जवाहरलाल निश्चित ही विचार से अथवा स्वभाव से फासिस्ट नहीं है। फासिज्म के भौंडेपन तथा गन्दगी के लिए वह बहुत अधिक शाहाना तबियत है। उसका मुख और वाणी ही हमें बताती है कि—

सार्वजनिक स्थानों पर दिखाई देने वाले निजी चेहरे निजी स्थानों पर दिखाई देने वाले सार्वजनिक चेहरों से कहीं अच्छे और श्रेष्ठ हैं।

फासिस्ट चेहरा एक सार्वजनिक चेहरा है और जनता में या निजी स्थान पर वह कोई हर्षदायक चेहरा नहीं है। जवाहरलाल का चेहरा और उसकी वाणी निश्चय ही निजी हैं। इसमें कोई गलती नहीं है कि भीड़ में भी और सार्वजनिक सभाओं में भी उसकी वाणी एक निकट से परिचित वाणी है, जो प्रत्येक व्यक्ति से यथार्थत घरेलू ढंग

[शेष पृष्ठ २२ पर]

नेहरू-टंडन गतिरोध समाप्त होने की आशा नहीं

समझौते के सभी प्रयत्न विफल

टण्डन जी को बहुमत का समर्थन प्राप्त

[श्री होरीलाल सक्सेना]

८ तथा ९ सितम्बर को दिल्ली में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की जो बैठक होने जा रही है, उसमें क्या होगा यह कहना बड़ा ही कठिन है, किन्तु आज इस कमेटी का जिस प्रकार का निर्माण है उससे तो यही दीखता है कि यदि दोनों नेताओं में कोई समझौता न हो सका तो पं० जवाहरलाल नेहरू तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद के कांग्रेस कार्य समिति तथा केन्द्रीय निर्वाचन समिति से त्यागपत्र स्वीकार हो जायेंगे, और पं० नेहरू तथा उनके रहे सहे सहयोगी धीरे धीरे कांग्रेस से पृथक होने पर बाध्य हो जायेंगे।

आश्चर्य क्यों ?

इस अनुमान से उन लोगों को तो आश्चर्य हो सकता है जो कांग्रेस की आन्तरिक राजनीति से भली प्रकार परिचित नहीं हैं, और जो अपने विचार समाचार-पत्रों के आधार पर ही निर्धारित करते हैं, किन्तु जो लोग कांग्रेस की आन्तरिक राजनीति को अच्छी तरह से जानते हैं उनके लिये इस अनुमान को भ्रामक मानने का कोई विशेष अवसर नहीं है।

कांग्रेस की समस्या

इस गुत्थी को समझने के लिये वास्तविक परिस्थिति पर दृष्टि डालना अति आवश्यक है। कांग्रेस के सम्मुख आज समस्या क्या है ? केवल यही कि आगामी साधारण निर्वाचनों में कांग्रेस की विजय होनी चाहिये, जिससे कि वर्तमान सत्ताधारी दल अपने स्थानों पर आसीन बना रहे। इस मौलिक सिद्धान्त पर सभी कांग्रेसजन एकमत हैं, किन्तु कांग्रेस में आज दो स्पष्ट दल हैं, जैसा कि 'हरिजन' के सम्पादक श्री किशोरलाल मशरूवाला ने स्पष्टतया लिखा है। इसलिए आगामी निर्वाचनों में कांग्रेस की विजय के सम्बन्ध में भी दो परस्पर-विरोधी मत हैं, और इन दोनों मतों का नेतृत्व आज पं० जवाहरलाल नेहरू तथा श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन करते हैं।

सैद्धान्तिक मतभेद

श्री टण्डन जी ने श्री मशरूवाला की टिप्पणी का उत्तर देते हुए जो वक्तव्य दिया है उससे यह मतभेद पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है। मतभेद आज कांग्रेस के दोनों दलों के बीच जो भी है वह है केवल 'भारतीय संस्कृति' के सम्बन्ध में। श्री टण्डन जी ने अपने वक्तव्य में कहा है कि "मैं अनेकों बार कह चुका हूँ कि मैं हिन्दू संस्कृति, मुस्लिम संस्कृति, या जैन संस्कृति अथवा अन्य किसी प्रकार की संस्कृति को स्वीकार नहीं करता जो किसी धर्म-विशेष पर आधारित हो। मेरे लिये तो संस्कृति का सम्बन्ध तथा उसका जन्म होता है देश की धरती से। मैं सदा ही भारतीय संस्कृति की बात करता हूँ, जिसका अभिप्राय हमारे देश की संस्कृति से है। मैं इसका सम्तुलन करता हूँ एक विशाल नदी से जो हिमालय पर्वत में निहित विभिन्न स्थानों से उपजती है और मार्ग में अपनी सब शाखाओं के जल को समेटती हुई समुद्र में जाकर मिल जाती है, और इस तरह से उसकी शक्ति भी बढ़ती जाती है और यह शाखायें उसमें मिलती हुई उसका मार्ग तक बदल देती हैं। इसी तरह से हमारी संस्कृति भी बनती है। नये तथा पुराने, भूतकाल के अथवा वर्तमान सभी अंशों से मिलकर। इसमें हमारे देश में बसने वाले सभी विभिन्न मतावलम्बी विचारक तथा कार्यकर्ता सम्मिलित हो जाते हैं। यह कोई ऐसी संकीर्ण वस्तु नहीं है जो किसी साम्प्रदायिक समूह के भीतर ही सीमित हो, वरन् यह तो एक विशाल तथा चिरायु धारा है जो हमारे देश की जनता के जीवन तथा भाग्य का निर्माण करती है।"

पं० नेहरू का मतभेद

संस्कृति की इससे सुन्दर व्याख्या सम्भव नहीं है, किन्तु भारतीय मुसलमान तथा पं० जवाहरलाल नेहरू इसी परिभाषा को स्वीकार करने के लिये उद्यत नहीं हैं। उनके अनुसार मुस्लिम संस्कृति भारतीय संस्कृति से पूर्णतया भिन्न है, और इसलिये उसे भारतीय संस्कृति में मिलाया ही नहीं जा सकता। साम्प्रदायिक आधार पर भारतवर्ष का बंटवारा हिन्दुस्थान तथा पाकिस्तान में हो जाने से तो यह बात और भी अधिक स्पष्ट हो गई है। पं० नेहरू यद्यपि अपने भाषणों में सदा यही कहा करते हैं कि वह मि० जिन्ना के दो राष्ट्रों वाले सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करते, किन्तु वास्तव में वह मुस्लिम संस्कृति के भारतीय संस्कृति में विलीन होने के कट्टर विरोधी हैं, जिससे यह स्पष्ट है कि वह वास्तव में दो राष्ट्रों वाली नीति के ही समर्थक हैं।

मौलिक मतभेद है

यदि ऐसा न होता, तो उनमें तथा श्री टंडन में मतभेद का प्रश्न कभी उठता ही नहीं। इन सब बातों से यह स्पष्ट है कि पं० नेहरू तथा श्री टंडन के मतों में बड़ा ही मौलिक मतभेद है। पं० नेहरू का मत भारतीय मुसलमानों के अत्यधिक निकट है और श्री टंडन का मत हिन्दू महासभा तथा भारतीय जनसंघ आदि से बहुत मेल खाता है। वास्तव में स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर की तो हिन्दू की परिभाषा ही यही है कि जो व्यक्ति भी इस देश को अपनी पुण्य भूमि तथा मातृभूमि मानता है, वही हिन्दू है। बैरिस्टर सावरकर की परिभाषा तथा श्री टंडन की व्याख्या में कोई विशेष अन्तर नहीं है, किन्तु भारतीय मुसलमान इस परिभाषा को स्वीकार करने के लिए कदापि तैयार नहीं हैं और इसीलिए पं० नेहरू भी इसके विरोधी हैं।

कांग्रेस के दो स्पष्ट दल

आज की कांग्रेस इसी आधार पर दो स्पष्ट दलों में विभक्त हो गई है। दो दल बनाना उसी समय से प्रारम्भ हो गया था जबसे कि अभागे १५ अगस्त सन् १९४७ के दिन हमारी मातृभूमि के दो भाग किये गये, और वह भी इसी संस्कृति के प्रश्न को लेकर। दलबन्दी गांधी जी के जीवनकाल तक तो किसी प्रकार दबी रही, किन्तु उनके हटते ही यह शनैः शनैः स्पष्ट होती गई, यहां तक कि आज ऐसे लगभग सभी व्यक्ति कांग्रेस से पृथक हो चुके हैं, जो बैरिस्टर सावरकर अथवा श्री टण्डन जी की एक संयुक्त भारतीय संस्कृति को स्वीकार नहीं करते।

श्री टण्डन का समर्थन

कांग्रेस की २९ प्रदेश कांग्रेस कमेटियों में से तीन चार को छोड़ कर शेष सभी आज श्री टण्डन की भारतीय संस्कृति की परिभाषा को ही उचित मानती हैं और इसलिए उन्हीं की समर्थक हैं। यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है उन सब वक्तव्यों से जो देश के विभिन्न मुस्लिम नेताओं ने हाल ही में अब तक पं० नेहरू के नेतृत्व के समर्थन में प्रकाशित किये हैं—जैसे डा० किचलू, शेख अब्दुल्ला, मि० सादुल्ला सैयद अली

(शेष पृष्ठ २१ पर)

कल के भारतीय प्रदेश में

भारत सरकार द्वारा द्वितीय श्वेतपत्र : पाक अधिकारियों द्वारा युद्ध का व्यापक प्रचार : खून की प्यास बुझाने वाली कविताएं : ईरान में पाक राजदूत के भारत विरोधी प्रचार पर क्षोभ

भारत सरकार ने पाकिस्तान सरकार द्वारा १ जुलाई से १५ अगस्त के मध्य तक भारत के विरुद्ध किये गए प्रचार पर आज एक श्वेतपत्र जारी किया है। इस पत्र के कथनानुसार पाकिस्तान के प्रचार का उद्देश्य लोगों को युद्ध के लिए भड़काना या यह दिखाना है कि काश्मीर के मामले पर भारत और पाकिस्तान का मेल अवश्यम्भावी है। पाकिस्तानी नेता कह रहे हैं कि पाकिस्तान काश्मीर के भाग्य का फैसला लड़ाई के मैदान में करेगा और भारतीय लुटेरों को काश्मीर से मिटा कर दम लेगा। पाकिस्तानी अखबारों में भारतीयों के खून से गाजियों की प्यास बुझाने की कविताएं बहुत छप रही है।

इस विषय पर यह दूसरा श्वेतपत्र है। पहला श्वेतपत्र सितम्बर १६५० से जून १६५१ तक की घटनाओं पर था। दूसरे श्वेतपत्र में जिस अरसे तक की घटनाओं का उल्लेख है, उसी में श्री लियाकतअली खां ने पाकिस्तान को "मुक्के" का राष्ट्रीय निशान दिया।

श्वेतपत्र में पाकिस्तान के सरकारी व गैरसरकारी नेताओं के वक्तव्यों के उद्धरण, विभिन्न राजनीतिक व धार्मिक संस्थाओं के प्रस्तावों, पाकिस्तान रेडियो के ब्राडकास्टों और प्रेस-टिप्पणियों का समावेश है। श्वेतपत्रों में छपी कविताओं के उद्धरणों की भरमार है।

× × ×

१४ पृष्ठ के श्वेत पत्र के प्रस्ताव में कहा गया है कि सितम्बर १६५० से ३६५१ तक भारत के विरुद्ध काश्मीर प्रश्न पर पाकिस्तान द्वारा किये गये युद्ध प्रचार पर श्वेत पत्र प्रकाशित होने के बाद पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री ने १४ अगस्त को कराची में बोलते हुये कहा कि अगर मैं प० नेहरू के स्थान पर होता तो इससे मुझे और अधिक विश्वास हो जाता कि पाकिस्तान में जेहाद की बात है, युद्ध की नहीं, क्योंकि जेहाद का वास्तविक मतलब न्याय व सत्य के लिए संघर्ष करना है जब कि युद्ध का अर्थ दूसरों से प्रादेशिक सीमाओं की इच्छा से लड़ना है।

पाकिस्तान किस प्रकार जेहाद के जरिए न्याय और सत्य तथा शांति व कानून के शासन के लिये हमले की बात को छोड़कर प्रयत्न कर रहा है श्वेत पत्र में इस पर प्रकाश डाला गया है।"

× × ×

श्वेत पत्र में दिये गये कुछ उद्धरण ये हैं :—

आजाद काश्मीर के भूतपूर्व प्रेसीडेंट सरदार मोहम्मद इब्राहीम खां ने २ जुलाई को कहा 'हमारे पास इसके सिवाय और कोई चारा नहीं कि हम पुनः युद्ध आरम्भ कर काश्मीर के भाग्य का निर्णय युद्ध क्षेत्र में करें। इस बार अगर उन्होंने लड़ाई फिर आरम्भ कर दी तो वे अपनी मातृभूमि से भारतीय सत्ता हड़पने वालों को निकाले बिना चैन नहीं लेंगे।"

एक सप्ताह बाद काजी मोहम्मद इसा ने कहा "पाकिस्तान काश्मीर में अपने भाइयों को भारत व उसके कठपुतले शेख अब्दुल्ला के पंजों से मुक्त करने के लिये पुनः हथियार उठाएगा।"

जिन्ना अवामी लीग की कराची प्रांतीय शाखा के संयोजक श्री मंजूर-उल-हक ने १८ जुलाई को कहा "भारत को केवल तबाह कर देने वाली फौजी हार ही अक्ल आ सकती है। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि यह मामला शांतिपूर्ण वार्ता से नहीं सुलझ सकता बल्कि लोहे और खून से। भारत के साथ युद्ध का मतलब है कुफ्र और इस्लाम के बीच लड़ाई।"

६ अगस्त को चौधरी गुलाम अब्बास ने कहा "मैं प्रस्ताव करता हूँ कि आजाद काश्मीर के लोगों को लड़ाई के प्रश्न पर फैसला करने की आज्ञा दे दी जाय। मुझे विश्वास है कि आजाद काश्मीर अन्त में विजयी होगा।"

× × ×

श्वेत पत्र में कहा गया है कि खून की प्यास की भावना व्यक्त करने वाली उत्तेजनात्मक कविताओं का प्रचार निरन्तर बढ़ रहा है तथा पाकिस्तान के उर्दू समाचार पत्रों में वे प्रति दिन के कालम के रूप में छप रही हैं। इनमें से कुछ ये हैं —

"हम अपनी प्यास शत्रु के खून से बुझाएंगे।' "कब तक गाजी खून की लाली से शान नहीं जीतेंगे।"

"पवित्र जेहाद आरम्भ करने का एक खुला आदेश आ गया है, अपने सिरों पर कफन बांधे काश्मीर की ओर चल पड़ो।"

"हम भारतीयों के खून के व्यर्थ में ही प्यासे नहीं हैं।"

"सम्पूर्ण उत्तर पश्चिमी सीमाप्रांत के कबाइली काश्मीर में लड़ाई की आवाज एक बार फिर गुंजा रही हैं।"

× × ×

भारत के विरुद्ध विदेशों में पाकिस्तान का प्रचार इतना उन्मादपूर्ण हो गया है कि विदेशी सरकारें और विदेशी समाचार पत्र इस पर गंभीरता से विचार करने लगे हैं। हाल ही में ईरान सरकार और ईरान के समाचार पत्रों ने पाकिस्तान के राजदूत श्री गजनफर अली खां को यह चेतावनी दी है कि वे भारत के विरुद्ध अपमानपूर्ण आन्दोलन न करें।

यह प्रतीत होता है कि श्री गजनफर अली खां, भारत के विरुद्ध जिस ढंग से उन्मादपूर्ण प्रचार कर रहे थे, उसके विरोध में कुछ समय पूर्व ईरान के विदेश कार्यालय ने उन्हें चेतावनी दी थी कि ईरान के समाचार पत्रों में प्रकाशित रिपोर्टों के अनुसार पाकिस्तान के राजदूत ने ईरानी सरकार का कहना मानने की बजाय, ऐसे ढंग से उत्तर दिया जिसे समाचार पत्रों ने धृष्टतापूर्ण कहा। इस घटना के सम्बन्ध में ईरान के एक पत्र तेहरान मुसव्वर ने पाकिस्तान के इस को ईरान सरकार के प्रति 'अपमानजनक' समझते हुए यह लिखा:—

'विशेष रूप से पाकिस्तानी दूतावास ने विदेशी पत्रों द्वारा नेहरू के विरुद्ध की गई तीव्र आलोचना को प्रकाशित किया और तभी भारतीय दूतावास ने ईरान सरकार से इसकी शिकायत की।

"ईरान सरकार ने पाकिस्तानी दूतावास से यह कहा कि वह ऐसा कार्य न करें। किन्तु पाकिस्तानी दूतावास ने विदेश मन्त्रालय के इस कार्य के प्रति विरोध प्रदर्शित किया। पाकिस्तान के राजदूत के निकट सूत्रों का कथन है कि ईरान के विदेश मंत्रालय ने पाकिस्तानी दूतावास के विरोध पत्र को ईरान सरकार का अपमान माना है और ऐसा समझते हुए वह पत्र दूतावास को लौटा दिया है।"

मध्य पूर्व लेखमाला—७

ब्रिटेन की विभाजक नीति का शिकार: फिलस्तीन

[श्री नीरस योगी]

डेविड गुरियन

इजरायल के प्रधानमन्त्री

फिलस्तीन का प्रदेश सदैव से अपने पड़ोसी राष्ट्रों की भांति उथल-पुथल का केन्द्र रहा है। अनेकों बार इस भू प्रदेश का बाह्य शक्तियों द्वारा शोषण किया गया है। आज भी यह प्रदेश कूटनीति का शिकार है। उसका विभाजन कर दिया गया है। प्राचीन फिलस्तीन का प्रदेश उत्तर में सीरिया व लेबनान, पूर्व में जोर्डन नदी, कृष्ण सागर व अकाबा की खाड़ी, दक्षिण में मिश्र के प्रान्त सिनाई व पूर्व में भूमध्य-सागर से घिरा हुआ है। फिलस्तीन के एक भाग को इजराइल कहा जाता है। यह यहूदी बहुल प्रदेश है। देश के दूसरे भाग को जोर्डन के शाह अब्दुल्ला ने अपने राज्य मे मिला लिया था। यह प्रदेश अरब बहुल है।

फिलस्तीन का प्रदेश भौगोलिक दृष्टि से अनेकों भागों में बटा हुआ है। इस में जलवायु भिन्न भिन्न होने के कारण उपज भी भिन्न भिन्न हैं। फिलस्तीन की स्थाई जनता का विभाजन ३१ मार्च १९४७ को इस प्रकार था—

कुल जनसंख्या	१८६७,१२०
मुस्लिम	१,०१०,८७०
यहूदी	६१४,२२६
ईसाई	१४३,१६२
मुस्लिम खानाबदोश	६६,६३३
अन्य जातियां	१५८५९

देश में विभाजन के कारण एक बड़ी मात्रा में निष्क्रमण हुआ है। इस महान् परिवर्तन से कितना दुख होता है, यह तो हमारे दुख भोगी शरणार्थी भाई ही जान सकते हैं। इजराइल का आर्थिक ढांचा अन्य देशों से समृद्ध यहूदियों के आगमन के कारण दृढ़ हो चुका है। परन्तु इसके विपरीत अरब लोग आज भी कैम्पों में दयनीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

१९२२ से लेकर विभाजन होने तक देश की मुस्लिम व ईसाई जनसंख्या केवल दुगनी बढ़ी है। इसका कारण प्राकृतिक है। इसके विपरीत यहूदियों की जनसंख्या ७ गुना बढ़ गई थी। यहूदियों के बाहर से आने पर ही देश का आर्थिक ढांचा सुदृढ़ हुआ है। देश में विभिन्न धर्मों में सब से अधिक मृत्यु संख्या अरबों की है। देश के अधिकतर यहूदी नवयुवक हैं। १९४४ में ४२ प्रतिशत यहूदी २४ से ४१ वर्ष तक की आयु के थे। इसके विपरीत अरब लोगों में यह संख्या केवल २५ प्रतिशत थी। देश में अनेकों जातियां निवास करती हैं। इन में मुस्लिम, यहूदी, ईसाई, समेरिटन्स, ड्रूज व बहाईस मुख्य हैं।

देश का विभाजन राजनैतिक न हो कर धार्मिक है। यह विभाजन अरब, ईसाई व यहूदियों के मध्य न होकर अरब व यहूदियों के मध्य हुआ है। फिलस्तीन के अरब राष्ट्रीयता के प्रतीक हैं। उनकी भाषा अरबी है। भाषा सम्बन्धी एकता केवल कठिनाइयों को दूर करने के लिए है। बाहर से आने वाले यहूदियों की वेषभूषा से उनके पहले देशों का ज्ञान होता है।

इतिहास व राजनीति

ईसा से दो शताब्दी पूर्व सीरिया के मरुस्थल से कुछ यहूदी आकर फिलस्तीन में बस गये। इन्हें हिब्रू कह कर पुकारा जाता था। यह लोग अदृश्य शक्ति को अपना देवता मानते थे। सर्व प्रथम डेविड ने इनके संगठन का प्रयत्न किया। शाह सुलेमान की मृत्यु के पश्चात देश दो भागों में विभक्त हो गया। देश में इस समय रक्तपात का दौर दौरा था। देश की दुर्बलता से लाभ उठा कर रोम ने देश पर अधिकार कर लिया। ५०० वर्ष तक देश रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत रहा। साम्राज्य की शक्ति क्षीण होने पर देश पर अरबों का आक्रमण हुआ और वह इस्लाम का एक प्रदेश बना लिया गया। अपने पड़ोसी सीरिया की भांति देश पर अनेकों आपत्तियां आई हैं। १५१७ में देश पर टर्की का अधिकार हो गया। ओटोमन साम्राज्य में देश का खूब शोषण हुआ। इन ४०० वर्षों में यहूदियों पर अनेकों अत्याचार किये गये।

यहूदियों का उत्थान

अनेकों देशों में हुए अत्याचारों से क्षुब्ध होकर यहूदियों ने अपना राष्ट्रीय स्थान बनाने की चेष्टा की। इसका प्रवर्तक एक रूसी डाक्टर लियोन पिन्सकर था। आस्ट्रिया के एक पत्रकार थियोडर हरजल ने १८९६ में एक यहूदी राष्ट्रीय घर स्थापना करने का सुझाव रखा। इसी समय यूरोप के यहूदी अपनी बस्तियां बसा रहे थे। १८७० में इजराईल विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। ओटोमन साम्राज्य से प्राप्त भूमि पर एक कृषि विद्यालय स्थापित किया गया। इस काल की यहूदी बस्तियां राजनैतिक रूपधारण न कर सकी थीं। १८८१ में एक रूसी-यहूदी इलीजर बेन-येहूदा ने जो कि फिलस्तीन में बस चुका था हिब्रू भाषा के पुनर्निर्माण का प्रयत्न प्रारम्भ किया।

वनाडट

फिलिस्तीन की मध्यस्थता में जान से भी हाथ धो बैठे

बेलफोर घोषणा

१९१४ में युद्ध प्रारम्भ होने पर यहूदी संस्था ने निष्पक्ष रहने की घोषणा की। लार्ड बेलफोर ने इस काल यहू-

(शेष पृष्ठ १६ पर)

त्याग और बलिदान का प्रतीक भगवा ध्वज ही वैदिक ध्वज है

गौरवमय भगवा ध्वज

[श्री चिरंजीव शर्मा]

वीर अर्जुन के सम्पादक द्वारा मेरा ध्यान श्री भवानीलाल 'भारतीय' के 'आर्यध्वज का स्वरूप' शीर्षक पत्र की ओर आकृष्ट किया गया। जिसमें मेरे २२ जुलाई के अंक में प्रकाशित लेख पर कुछ आपत्ति प्रकट की गई। लेखक का कहना है कि भगवा ध्वज को प्रमाणित करने के लिए निर्दिष्ट वेदमन्त्रों के संबन्ध में मुझे भ्रांति हुई है। पत्र लेखक ने अपनी इस बात को सिद्ध करने के लिए सर्वथा निराधार आधार भी लिए हैं। किन्तु अब यदि मैं कहूँ कि ऐसी भ्रान्ति समझना ही लेखक की भ्रान्ति है तो यह असत्य न होगा। मैं जानता हूँ कि अपनी इस बात को सिद्ध करने के लिए मेरे पास सबल प्रमाण हैं और उन्हीं को सामने रखते हुए मैं लेखक के भ्रम का परिहार करने की कोशिश करूंगा।

लेखक का कहना है कि 'यज्ञस्य केतु अरुणं यजध्वै' को मैंने जान-बूझकर 'अरुण केतु यजध्यै' के रूप मे उपस्थित किया है पर लेखक को पता हो कि मैंने उसे 'अरुण केतु यजध्यै' के रूप में ही लिखा था। जल्दी में लिखे 'ण' को 'स' समझने की गल्ती के कारण ही ऐसा छप गया था। रही 'यज्ञस्य' और अरुण शब्द की बात। सो अरुण शब्द का अर्थ भी तो भगवा ही होता है न कि लाल। श्री सातवलेकर जी ने इस शब्द का अर्थ इस प्रकार किया है—

'अरुण का अर्थ है Reddish रक्तिम, भगवा, रक्त सदृश।" इसलिये अरुण' हो चाहे अरुण अर्थ मे कोई अन्तर नहीं आता। यज्ञस्य शब्द तो भगवा ध्वज की महत्ता को और भी अधिक ऊंचा उठा रहा है। यज्ञ का साधारण अर्थ है देव-यजन। किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से यज्ञ का अर्थ होता था समाज का एकत्रित जन-समुदाय। और चाहे देव-यजन और चाहे जन दोनों दृष्टियो से हमारी पवित्रता तथा सामुदायिकता का प्रतीक होने के नाते यह ध्वज हमारा वन्द्य ही है।

मन्त्र की व्यवस्था

दूसरे मन्त्र के सम्बन्ध मे लेखक का कहना है कि उस मन्त्र का पता न होने के कारण उस मन्त्र के बारे मे कुछ कह नहीं सके लेखक को सन्तोष हो जाए इस लिए उक्त मन्त्र की क्रम-संख्या मैं दे रहा हूँ। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल मे पचासवें सूक्त का तीसरा मन्त्र यदि देख लें तो उन्हे मेरी बात की सचाई का अनुभव हो जाएगा। लेखक उस मन्त्र को पढ़कर अपनी कल्पना को दौड़ा कर किसी दूर से देखी अग्नि के रंग का ध्यान करे और फिर कह सकें तो कह दें कि अग्नि का रंग लाल होता है भगवा नहीं।

एता उत्या उषस' वाले मन्त्र के सम्बन्ध में लेखक कहते हैं— इस मन्त्र का देवता उषा है और इसमें सूर्य के प्रकाश-विज्ञान का वर्णन है। इस लिए केवल 'केतु' शब्द से भगवा ध्वज की सिद्धि नहीं हो जाती।

मै जानता हूँ कि उक्त मन्त्र का देवता उषा है किन्तु उषा का रंग भगवे के सिवाए और कैसा होता है और सूर्य का प्रकाश-विज्ञान किन अर्थों को प्रकट करता है यह मैं प्रयत्न करने पर भी नहीं समझ सका। लेखक ने तो न जाने किस कारण से इस सम्बन्ध में मौन साध रखा है। रही भगवा ध्वज की सिद्धि सो उसके लिए उषस. केतु— उषा का ध्वज और रजसः भानु'— धूलि के समान तेजस्वी रंग ही काफी है। उषा का ध्वज भी तो उसी रंग का हो सकता है जो रंग उषा का हो और धूलि के समान तेजस्वी अर्थात् सूर्य के सामने आई हुई उड़ती धूल सिवाए भगवा के और कोई नहीं होती। हां वह भगवा जरा हल्का पन लिए अवश्य होता है।

'स्तवा हरी सूर्यस्य केतु' के संबन्ध में लेखक का यह कहना है कि इसमें राजधर्म का वर्णन है। मैं यह किसी भी अर्थ द्वारा नहीं समझ सका। मैं ही क्या शायद कोई भी मान नहीं सकेगा। इसी प्रकार लेखक का यह कहना कि केतु का अर्थ झण्डा न होकर सूर्य-किरण है भी सर्वथा भ्रममूलक है। लेखक जरा स्वामी दयानन्द जी द्वारा रचित उणादि-कोष १।७४ पर दृष्टि डालें। वहां महर्षि का कहना है—

'केतु ग्र'ह' पताका वा।' केतु ग्रह या झण्डा होता है। सायण तथा यास्क मे भी बहुत जगह केतु शब्द का यही अर्थ लिया है?

हरि से हल्दी या हरिद्रा अर्थ मेरी कोरी कल्पना नहीं इसके पीछे निरूक्त और व्याकरण का प्रमाण है। हरित शब्द की निरुक्ति इस प्रकार है—

हरि आति हरि अवति इति वा।
जो हरेपन को प्राप्त होती है।

यही अर्थ हरित का भी है अतः हरित और हरिद्रा दोनों के मूल में हरि शब्द है जिससे हरिद्रा अर्थ का निकलना कल्पना मात्र नहीं कही जा सकती। श्री सातवेलकर जी ने भी इसका यही अर्थ किया है—

'हरि' शब्द कपिल, हल्दी के रंग की रश्मियां, यह अर्थ बता रही हैं। Reddish brown रक्त सदृश पीला। यह वर्ण उगते सूर्य की किरणों का होता है। यह रंग भी भगवा ही होता है।'

व्याकरण-प्रमाण

अरुण का अर्थ भगवा होने के सम्बन्ध में लेखक व्याकरण का प्रमाण चाहते हैं किन्तु उन्हें भूलना न चाहिए कि अर्थ-ज्ञान के लिए व्याकरण नहीं कोष ही प्रामाणिक हुआ करते हैं। और संस्कृत के 'अमर कोष तथा मेदिनी कोष में अरुण का अर्थ कहीं लाल नहीं किया गया। अमर कोष में लाल के लिए अलग शब्द बताए गए हैं—

लोहितो, रोहितो, रक्त', शोणः कोकनदच्छविः

उसके बाद अरुण शब्द को लेते हुए उन्होंने लिखा है 'अव्यक्त रागस्त्वरुण.' अस्पष्ट राग-लाली वाला अरुण होता है।

यहां अरुण शब्द का अलग से लिखना हमें बता रहा है कि उसका अर्थ लाल कभी नहीं हो सकता। अव्यक्त राग भगवे के सिवाए और कोई है नहीं। मेदिनी कोष में भी।

अरुणो 'अव्यक्त रागे' ह' ठप मिलता है न कि 'अरुणो रक्ते।' एक चीज और भी ध्यान देने योग्य है। संस्कृत ग्रन्थों में अरुण ध्वज को 'पारिजात ध्वज' की संज्ञा भी दी गई है। यह क्या है?

'पारिजात के डंठलों को सुखा कर उनमें लाल लाल. को निकाल कर उसका महीन चूर्ण बना लेते हैं। उस चूर्ण को पानी में घोल कर जब कपड़ों पर लगाया जाता है तब वह तेजस्वी भगवा रंग बनता है। लेखक का कहना है कि लेखक इस बात को अनुभूत करके बेशक देख लें। अरुण का अर्थ लाल ही होता है।' क्या वे इसके लिए कोई भी प्रमाण देंगे?

ध्वज गुरु क्यों

लेखक चाहते हैं कि मैं उन्हें झण्डे के पूज्य होने के विषय में शास्त्रों का प्रमाण दूं। किन्तु मैं जानता हूँ कि वैसा करने पर लेखक महोदय उन्हें पुराण-पंथियों की गप्पें और प्रक्षिप्त मान कर पीछा छुड़ा जाएंगे। अतः मैं उन्हें उनके घर का ही प्रमाण देता हूँ।

स्वामी दयानन्दजी ने केतु शब्द की सिद्धि इस प्रकार की है—केतु शब्द 'चायृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ पाणिनि ने यह बताया है—चायृ पूजा निशामनयोः। चायृ पूजा और ज्ञापक अर्थों में आता है। 'चायः की' १।७२। इस उणादि सूत्र से चायृ को की आदेश होकर यह केतु शब्द बनता है।

अब लेखक देख लें कि केतु शब्द 'पूज्यते' जो पूजा जाए है ही होगा या कोई और। फिर व्याकरण के अनुसार ही जो 'पूजनीय' इस अर्थ को लिए हैं, उसे हम ऐसा मानने से क्यों और कैसे इनकार करें?

श्री गणपतिराव बा० गोरे ने इस सम्बन्ध में एक और बड़ी महत्वपूर्ण बात कही है। श्री भारतीय जैसे जिन आर्य समाजियों को 'जड़ झण्डे की पूजा' से चिढ़ है, उन्हीं के सम्बन्ध मे वे लिखते हैं—

'अक्तूबर १९३३ में ऋषि दयानन्द निर्वाण-अर्ध शताब्दि के अवसर पर अजमेर में श्री सा० आ० प्र० सभा की ओर से एक नवीन आर्य-ध्वज गीत का निर्माण किया गया था, जिसकी एक लाख के लगभग प्रतियां दो रंगों में छपवा कर बांटी गई थीं। झण्डे पर फूलों की मालाएं चढ़ाई गई, उसके नीचे कई प्रकार के देशी-विदेशी बाजे बजाये गये, उसे लहराया गया और ४० हजार स्त्री-पुरुषों ने खड़े होकर वह नूतन-रचित ध्वज-गीत (जयति ओम् ध्वज) गाया। अब तो वह गीत प्रत्येक आर्य समाज में झंडा लहराते समय गाया जाता है।

.........झंडे पर फूलों की माला चढ़ाते हैं, बाजे बजाते हैं। सामने खड़े हो कर ध्वज-गीत गाते हैं। शान्ति पाठ के पश्चात् सब मिल कर झंडाभिवादन (दोनों हाथ जोड़ कर झंडे को नमस्कार करना) करते हैं। यह कार्यवाही हमने स्व० श्री स्वामी सर्वानन्दजी, श्री स्वामी वेदानन्दजी, श्री सार्वदेशिक सभा के भूतपूर्व प्रधानों और श्री नारायण स्वामी जी महाराज तथा श्री स्वतन्त्रानन्दजी की अध्यक्षता में भी देखी है।

अब जब आप स्वयं ध्वज को पूज्य मान कर उसी के योग्य कृत्य करते हैं, तो दूसरों को ऐसा करने से क्षुब्ध होने का क्या अर्थ?

'वादे-वादे जायते तत्व बोध.' के लिए मैंने ऊपर का वाक्य कहा है। मै श्री भारतीय से प्रार्थना करूंगा कि वे सत्य को समझ कर उसे पचाने की शक्ति लाएं तभी हम विवाद से बच कर तत्व की ओर आ सकेंगे।

× × ×

भारतीय विचारकों की रचनात्मक कल्पना शक्ति का उदाहरण

श्री गणेश का स्वरूप

[श्री 'आनन्द"]

'श्रीगणेशायनम श्री गणेश को नमस्कार करना प्रत्येक शुभ कार्य या मंगलाचरण में सर्वप्रथम परम्परागत मान्यता है। हिन्दु जीवन का प्रत्येक कार्य श्रीगणेश की वन्दना से आरम्भ होता है। वे भगवान् शंकर तथा देवी पार्वती के पुत्र हैं। समस्त देवसमाज में वन्दनीय हैं व सर्वप्रथम पूज्य हैं। विद्या तथा बुद्धि के दाता हैं। ऋद्धि सिद्धि उनकी दासी हैं। लम्बोदर तथा गजानन उनके प्रिय सम्बोधन हैं। सम्पत्ति उनके चरणों में पड़ी रहती है। फलादि उनके सम्मुख उपस्थित हैं। बही खाता उनके निकट है। सिंहासन पर वे विराजमान हैं मुकुटधारी हैं। चूहा उनका वाहन है। दीपावली के पुण्य पर्व पर लक्ष्मी के साथ ही साथ गणेशपूजन भी होता है।

राष्ट्रीय रूप

पार्वतीनन्दन श्री गणेश की महिमा के विस्तार का ठिकाना नहीं। गणेश गणनायक गजबदन गणपति आदि उनके नाम हैं। उनके प्रति अपनी भक्ति प्रकट करने उनके स्वरूप का ध्यान करने के लिए भारतीय राष्ट्र प्रति वर्ष गणेश चतुर्थी का पवित्र महोत्सव मनाता है। काल चक्र के फलस्वरूप उत्तर भारत में यह त्योहार उतना प्रभावपूर्ण नहीं रहा है। किन्तु दक्षिण भारत में विशेष कर महाराष्ट्र में यह त्योहार आज भी बड़ी धूम धाम से मनाया जाता है। स्वर्गीय लोकमान्य तिलक ने दो राष्ट्रीय महोत्सव मनाने पर जोर दिया था—वे हैं गणपति महोत्सव तथा शिवाजी महोत्सव।

लोकमान्य जैसे महापुरुष का गणपति महोत्सव मनाने का आग्रह उनकी किसी प्रकार की पुरातनतावादी वृत्ति के कारण नहीं था। उनके जैसे विद्वान से यह आशा ही नहीं की जा सकती कि वे अन्धविश्वासों अथवा मिथ्या परम्पराओं में फंसेंगे। उन्होंने तो इस उत्सव को मानने पर बल इसलिए दिया था कि इसमें राष्ट्रीय चरित्र को जाग्रत करने की भारी सामर्थ्य है। आज जबकि स्वतन्त्र भारत ने एक गणराज्य का रूप ले लिया है यह समझना और भी अधिक आवश्यक हो गया है कि हमारे ऋषियों ने गणपति का रूप क्या और क्यों समझा था।

शास्त्रीय महत्व

हिन्दुओं के देवी देवताओं की खिल्ली उड़ाने वाले लोगों को सम्भवतः कुछ आश्चर्य होगा यदि मैं यह कहूं कि वे रचनात्मक कल्पना शक्ति के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं। आज का पश्चिमी मनोविज्ञान भी इस तथ्य को मानता है कि शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों में रचनात्मक कल्पना शक्ति का विकास भी एक है। वास्तव में मानव-जीवन की प्रगति का अधिकांश श्रेय इसी मानसिक शक्ति को है। वह यह भी मानता है कि अविकसित मस्तिष्क सूक्ष्म विचारों तथा भावों को समझ भी नहीं सकता उन्हें ग्रहण करना तो बहुत बड़ी बात है। उन्हें सूक्ष्म विचार समझाने के लिए उस विचार को किसी स्थूल रूप में प्रकट करना आवश्यक है। देवी देवताओं के विभिन्न रूप इसी प्रकार के अनेकों सूक्ष्म तथा गम्भीर भावों को व्यक्त करने के लिए कल्पना शक्ति का सहारा लेकर मूर्त रूप देने का एक महत्वपूर्ण प्रयत्न है।

गणपति के रूप में

श्रीगणेश के रूप में भारतीय विचारकों ने एक आदर्श गणराज्य के आदर्श प्रधान का चित्र हमारे सामने उपस्थित किया है। इसका यह अर्थ नहीं कि आदर्श प्रधान का स्वरूप गणेश के समान होना चाहिये। गणेश के शरीर के विविध अंग विभिन्न गुणों के द्योतक हैं वे ही गुण गणराज्य के प्रधान में आवश्यक हैं। इसी भाव को और स्पष्ट करने के लिए ही गणेश गणों के स्वामी गणनायक गणों के नेता गणपति गणों के पति गणाध्यक्ष—गणों का मुख्य अथवा गणों का प्रतिनिधित्व करके बोलने वाला यह उनके शुभ नाम हैं। गणों का सीधा सादा अर्थ एक प्रजातन्त्र राज्य है।

श्री गणेश का शरीर मनुष्य का है क्योंकि प्राणधारियों में मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ है। वे सिंहासन पर मुकुट धारण कर विराजमान हैं जो कि नेतृत्व व शक्ति के अधिकार के चिन्ह हैं उनका मस्तक हाथी का है। इसके दो कारण हैं। सबसे अधिक लम्बी नाक और सबसे बड़े कान हाथी के ही होते हैं। बड़े कानों का सरल अर्थ दूर तक की सुनने वाला है। और लम्बी नाक स्वाभिमान की प्रतीक है। इसी भाव को प्रकट करने वाला एक मुहावरा भी भाषा में प्रचलित है। किन्तु इसके साथ ही गणेश के मुख में दो नहीं किन्तु एक ही दन्त है इसीलिये उनका नाम एकदन्त भी है।

एकदन्त

यहां हाथी के मस्तक का भाव और अधिक खुलता है। यदि गणेश की कल्पना करने वाले का अभीष्ट हाथी का मस्तकधारी मानव बनाना होता तो स्वभावतः ही दो दांतों का चित्र सामने आता। किन्तु विचारक का ध्यान तो अपने भाव के प्रकाशन पर है। वचन में एकता अर्थात् एक ही बात कहना उसी पर दृढ़ रहने के गुण का प्रदर्शन करने के कारण ही गणेश के एक ही दन्त है।

गणेश लम्बोदर हैं अर्थात् उनका पेट बहुत बड़ा तथा गहरा है। अर्थ सरल है कि उनके पेट में अपनी बात वहीं पच जाती है। अपने बड़े कानों से जिस प्रकार वे राष्ट्र में घटने वाली असंख्य घटनाओं को सुनते हैं उसी प्रकार उन्हें पचा जाने की सामर्थ्य भी रखते हैं उनमें उद्विग्न नहीं हो उठते अथवा संयम के अभाव में दूसरों के आगे उन्हें कह नहीं डालते।

श्रीगणेश के चार हाथ हैं। एक में अंकुश है जो शासन पर अंकुश रखने का प्रतीक है एक में रस्सी है जो न्याय दण्ड का प्रतीक है एक में कमल है जो लक्ष्मी का प्रतीक है और एक अभय दान देने को उठा हुआ है। शासन न्याय तथा सम्पत्ति इनकी व्यवस्था यदि ठीक रहे तो उस राज्य में अपने आप ही प्रत्येक व्यक्ति को अभयदान मिल गया अधिकांश कष्ट तो इन्हीं की गड़बड़ी से होते हैं।

अद्भुत वाहन

है सबसे विचित्र गणेशजी का वाहन है। वह है चूहा। चूहा गुप्तचर का प्रतीक है। यह स्मरणीय तथ्य है कि चूहे विचित्र स्थानों पर भी पहुंचने का मार्ग पृथ्वी के अन्दर बना लेते हैं। इस प्रकार के भी उदाहरण मिले हैं कि एक देश के चूहे गुप्त रूप से जलपोत पर चढ़ कर समुद्र मार्ग से दूसरे सुदूर देशों में पहुंचे हैं। और यह सब अत्यन्त गुप्त रूप से। इसीलिये चूहे को गुप्तचर का प्रतीक रखा है। यह कहना कुछ अनुचित नहीं है कि एक विशाल गणराज्य में गणपति को गुप्तचरों के माध्यम से सारे राज्य में घूमना तथा व्यवस्था की देखरेख करना चाहिये।

श्रीगणेश के सम्मुख फल तथा मिष्टान्न आदि रखे हैं। साथ ही मुद्राओं का भी ढेर लगा है। अर्थ अत्यन्त स्पष्ट है। इस प्रकार के कुशल गणपति के काल में देश धन तथा धान्य

[शेष पृष्ठ ४ पर]

भूमध्यसागर की राजनीति (?)

जलमार्ग के प्रहरी स्पेन

[श्री केशव

स्पेन का प्रायद्वीप यूरोप के दक्षिणी भाग का सबसे अधिक पश्चिमी प्रदेश है। एक बंधे हुए घूंसे के समान यह यूरोप की शेष भूमि से आगे निकल कर समुद्र के वक्ष में चला गया है। इस भूखण्ड में स्पेन तथा पुर्तगाल स्थित हैं। पुर्तगाल इस प्रायद्वीप के पश्चिमी तट पर एक छोटा सा स्वतन्त्र राज्य है। शेष प्रायद्वीप स्पेन कहलाता है। इस के तीन ओर समुद्र है। दो ओर तो विशाल अन्धमहासागर की तूफानी लहरें इसके तट से टकरा कर गर्जन करती रहती हैं। तीसरी ओर भूमध्य सागर इसके तटीय प्रदेश को धोता रहता है। केवल उत्तर पूर्व का कोना ही आगे विस्तृत होकर यूरोपीय महाद्वीप का आकार धारण कर लेता है।

भौगोलिक स्थिति

स्पेन की सीमा केवल एक ही यूरोपीय देश से लगती है। वह है फ्रान्स। स्पेन की उत्तर पूर्वी सीमा के पार फ्रांस का प्रदेश है। किन्तु प्रकृति ने यहां पर दोनो प्रदेशों के मध्य दीवार खड़ी की हुई है। स्पेन की उत्तर पूर्वी सीमा पर भूमध्यसागर से लेकर अन्धमहासागर के तट तक पाइरेनीज पर्वतमाला के हिमाच्छादित शिखर खड़े हुए हैं। यह पर्वत माला अत्यन्त दुर्गम है और यूरोप के किसी भी देश द्वारा भूमि से होकर स्पेन पर आक्रमण करने में सदा से ही एक बहुत बड़ी बाधा रही है।

दूसरी ओर स्पेन का दक्षिणी तट उत्तरी अफ्रीका के पश्चिमोत्तर प्रदेश मोरक्को से लगभग आ मिलता है। बीच में भूमध्यसागर तथा अन्धमहासागर को मिलाने वाले जिब्राल्टर जलडमरूमध्य की पतली सी धारा मात्र है। फ्रांस तथा मोरक्को यही दो प्रदेश स्पेन की भूमि के अत्यन्त निकट हैं, इसलिए इन दो देशों से स्पेन की सुरक्षा को सदा भय रहा है। साथ ही सीमा के एक छोटे से भाग को छोड़कर शेष सभी ओर समुद्र से घिरा रहने के कारण स्पेन के निवासियों का ध्यान आरम्भ से ही जलशक्ति के विकास की ओर गया था और एक समय ऐसा भी था जब स्पेन संसार की सबसे बड़ी जलशक्ति समझा जाता था।

सामरिक महत्व

सामरिक महत्व की दृष्टि से स्पेन की भौगोलिक स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जब तक स्वेज नहर नहीं बनी थी, तब तक तो भूमध्य सागर के प्रवेश द्वार पर स्पेन का ही अधिकार था। अठारहवीं शताब्दी में स्पेन तथा ब्रिटेन के मध्य हुए युद्ध में ब्रिटेन ने जिब्राल्टर की चट्टान पर अधिकार कर लिया और तब से उस पर उसी का अधिकार है। इसलिए स्पेन इस मुख्य जल द्वार पर नियन्त्रण वैसा नहीं रहा है, जैसा कि प्रकृति ने उसे दिया था और जिसे दूसरी ओर स्थित मोरक्को के इस जल-द्वार से लगते हुए प्रदेश पर अधिकार कर उसने और सुदृढ बना लिया था। केवल जिब्राल्टर को छोड़ कर इस जल द्वार के दोनों ओर का प्रदेश स्पेन के अधिकार में है। स्वेज का मार्ग बन जाने से भी स्पेन के महत्व में कोई विशेष कमी नहीं आयी है। स्पेन पर अधिकार रखने वाली शक्ति यदि बलवान् हो तो उत्तरी अफ्रीका तथा भूमध्यसागर को पर्याप्त प्रभावित कर सकती है।

शासन

स्पेन में आजकल जनरल फ्रांको का एक तन्त्र शासन है। वैसे तो स्पेन का इतिहास राजतन्त्र का ही इतिहास है किन्तु दो बार यहां प्रजातन्त्र शासन प्रणाली स्थापित हो चुकी है जिसे समाप्त कर पुनः एक तन्त्रीय शासन चालू हुआ है। स्पेन में प्रथम गणराज्य सन् १८७३ में स्थापित हुआ था किन्तु वह सन् १८७४ में ही समाप्त हो गया। दूसरी बार १४ अप्रैल १९३१ को स्पेन में प्रजातन्त्र राज्य की घोषणा की गई जो लगभग आठ वर्ष चल कर एक अप्रैल १९३९ को जनरल फ्रैंको की अन्तिम विजय से समाप्त हो गया।

१९ अप्रैल १९३७ को जनरल फ्रैंको ने अपने आधीन एक तन्त्रवादी सभी दलों को एक करके एक प्रबल शक्ति संग्रह करली। स्पेन का गृह युद्ध काफी लम्बा चला और उस समय की प्रजातन्त्रवादी सरकार ने भारी युद्ध किया, किन्तु जनरल फ्रैंको की प्रबलशक्ति के आगे वे टिक न सके।

क्षेत्रफल तथा जनसंख्या

स्पेन का कुल क्षेत्रफल १९९,५०४ वर्गमील है। यह पचास प्रान्तों में बटा हुआ है। सब से घना बसा हुआ प्रान्त बार्सीलोना है जिसकी आबादी बीस लाख से भी अधिक है और क्षेत्रफल २९४२ वर्गमील है। दूसरे नम्बर पर मेड्रिड प्रान्त है जिसकी आबादी अठारह लाख के लगभग है और क्षेत्रफल ३०८९ वर्गमील है। मेड्रिड नगर के मध्य में स्थित है और इसकी राजधानी है। १९४० की जनगणना के अनुसार स्पेन की जनसंख्या २,५८,७७,९७१ थी। अब सम्भवतः दो करोड़ अस्सी लाख के लगभग होगी।

धर्म

ईसाइयों का कैथोलिक धर्म स्पेन में प्रधान धर्म रहा है और राजधर्म भी रहा है। स्पेन के शासक कैथोलिक धर्म के यूरोप में स्तम्भ रहे हैं। इसी कारण स्पेन का उन यूरोपीय देशों से द्वेष रहा है जहां कैथोलिक धर्म की सत्ता समाप्त

स्पेन की कला

हो गयी और कई युद्ध इसी द्वेष भाव के कारण हुए। यह बात नहीं कि मार्टिन लूथर की हवा स्पेन को लगी ही न हो। किन्तु इस आन्दोलन को यहां अधिक पनपने नहीं दिया गया। दोनों बार प्रजातन्त्र राज्य स्थापित होने पर अवश्यमेव यह घोषणा की कि स्पेन का कोई राजधर्म नहीं है, किन्तु उसके समाप्त होते ही उसकी पुनः प्रतिष्ठा हो गई। जनरल फ्रैंको ने राज्य संभालते ही कैथोलिक धर्म को स्पेन का राज्य धर्म घोषित कर दिया था।

वल्लाडोलिड के निकट सिमनकस में का दुर्ग जिसमें सन १९६२ से राष्ट्रीय संग्रहालय है

१४ वीं ग [illegible]

एक भाग अलहमरा सिंह दरबार

नाम	भार	मुख्य तोपें
कबेरा	४८२७	६ गा। ६'४ तोपें
मेण्डेज नुनेज	४६८	८ तोपें ४ ७ इन्ची
गेलिसिया	८२९	८ तोपें ६ इन्ची
अलमिरटे कवेरा	७ ९७६	
मिग्यूल डिकर्वेंटेस	८२५०	
केनेरियास	१०६७०	८ तोपें ८" ८ तोपें

का संक्षिप्त परिचय

देव वर्मा]

सैन्य शक्ति

मध्यकालीन युग में स्पेन की शक्ति संसार के अग्रणी राष्ट्रों में थी और संसार भर मे इसके उपनिवेश थे। किन्तु आज स्पेन एक पिछड़ा हुआ देश है। स्पेन की स्थल सेना मे सत्तरह डिवीजन है। इसके अतिरिक्त चार डिवीजन सेना मोरक्को में है। साथ ही एक आर्मर्ड ब्रिगेड और एक ब्रिगेड घुड़सवार सेना का है । स्पेन की एक स्वतन्त्र वायुसेना है। इसके दो विभाग हैं। एक विभाग का काम भूमि सम्बन्धी सभी दायित्व को संभालना है जिसमें

र एक नमूना

हवाई अड्डों की सुरक्षा भी सम्मिलित है। दूसरे विभाग में विशेष सेना है जिसमें छतरीधारी सैनिक भी हैं। वायु सेना को भी कमाण्ड में बांटा हुआ है जिनके नाम ये हैं —

ये केन्द्र जलडमरूमध्य, लेवाण्टे, पाइरेनीज, अटलान्टिक, बालियरस, केनेरीज और पश्चिमी अफ्रीका तथा मोरक्को क्षेत्र। वायुयान बनाने का एक छोटा कारखाना भी है ।

जलसेना

स्पेन की जल सेना में कु युद्ध पोत हैं इनका विवरण निम्न प्रकार है —

	टारपीडो व्यूब	हार्स पावर	गति
१ ५	—	२५००००	२५ ५
	६	४५०००	२८
	६	८००००	३१
[illegible] १२		१०,०००	३३

इनके अतिरिक्त १६ विध्वंसक, ८ स्लूप, ६ सुरंग बिछाने वाले ५ पन डुब्बी, ७ सुरंगनाशक, तथा साधारण प्रकार के बहुत से जहाज हैं साथ ही २० विध्वंसक ४ स्लूप व अन्य प्रकार के बहुत से जहाज बन रहे हैं। पोत निर्माण कार्य मुख्यतः फेरोल तथा कार्टेजेना के बन्दरों पर ही होता है कैडिज में केवल थोड़ा सा ही काम होता है। नौसेना के बेतार के तार के स्टेशन कैडिज बार्सीलोना, माहोन पोर्टवेड्रा, कार्टेजेना और फेरोल में है।

खनिज पदार्थ

स्पेन एक कृषि प्रधान देश है। किन्तु खनिज पदार्थों की दृष्टि से भी प्रकृति की इस पर कृपा है जितने अधिक खनिज पदार्थ स्पेन में निकलते हैं उतने यूरोप के अन्य किसी देश में नहीं निकलते। साधारण खनिज पदार्थों के अतिरिक्त यहां पर एन्थ्रेसाइट, कोयला, लिगनाइट, तांबा, लोहा, सोना, मैंगनीज पोटाश, पहाड़ी नमक गंधक, टिन, जस्ता तथा वोलफ्राम काफी मात्रा में निकलते हैं। सन् १९४६ में २२०४२२ कर्मचारी खनिज पदार्थ सम्बन्धी उद्योगों में काम करते थे। उस वर्ष उत्पादन का मूल्य ५,००,३३,३१,३४७ पेसेटा था जिसमें १,६६,७३ १२ ६२८ की आय केवल खानों से हुई थी। (एक पेसेटा लगभग आठ आने के होता है)।

यातायात

सड़क तथा रेल मार्ग मिलाकर स्पेन में यातायात के मार्गों की लम्बाई अस्सी मील मे ऊपर है, इसमें रेलमार्ग ग्यारह हजार मील के लगभग है जिसमें १२५ मील बिजली की रेल है। स्पेन के रेल मार्ग की चौड़ाई जान बूझकर फ्रांस के रेलमार्ग की चौड़ाई से भिन्न रखी गई है। सामरिक दृष्टि से सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पाइरेनीज पर्वतमाला में होकर कोई रेलमार्ग निकालने का विचार ही नहीं किया गया था। फ्रांस तथा स्पेन में पुरानी शत्रुता चली आती है और अनेकों युद्ध हुए हैं। पाइरेनीज पर्वतमाला इन दोनों के मध्य में प्राकृतिक दीवार है। किन्तु अब इस प्रकार का रेलमार्ग बन गया है। तो भी स्पेन के रेलमार्ग की चौड़ाई फ्रांसीसी रेल मार्ग से भिन्न होने के कारण सीमावर्ती स्टेशन पर यात्रियों को गाड़ी बदलनी पड़ती है।

केनेरी द्वीपसमूह—स्वयं स्पेन के ही दो प्रान्त हैं। इनका क्षेत्रफल ७४१६ वर्ग किलोमीटर है और आबादी आठ लाख के लगभग है।

स्पेनिश सहारा के दो भाग हैं। रियो डि ओरो, ७३३६२ वर्गमील, और सेकिया एल हमरा ३२०४७ वर्गमील। यह भाग ब्लेंको से आरम्भ होता है। इसको मासारसा कावो ब्लेंका प्रायद्वीप के मध्य से दो कर जाता है और १९०० में फ्रांस के साथ हुई संधि के अनुसार फ्रांसीसी प्रदेश से मिल जाती है। वहां से सीमा रेखा अटलार तेमार के किनारे से गुजरती हुई यजील की नमक की खानों को फ्रांस के लिये छोड़ देती है। वहां से यह कर्क रेखा तक आती है और वहां दक्षिणी स्पेनिश प्रोटक्टरेट की दक्षिण सीमा तक

(शेष पृष्ठ २० पर)

उपनिवेश

स्पेन के वर्तमान उपनिवेशों की जनसंख्या तथा क्षेत्रफल लगभग निम्न प्रकार है—

उपनिवेश	क्षेत्रफल वर्गमील	लगभग जनसंख्या
अफ्रीका के उपनिवेश		
१ मारक्को—स्पेन के अधिकार का उत्तरी क्षेत्र, जिसमें अल्हूसिमा, स्यूटा, चेफेरिना, मेलिल्ला, पेनोंग, डि वेलेज हैं।	८२	१४८०००
इफनी प्रदेश में स्पेनिश क्षेत्र	७४१	३५०००
उत्तरी क्षेत्र में स्पेनिश प्रोटक्टरेट	७५६२	११२००००
दक्षिणी क्षेत्र में स्पेनिश प्रोटेक्टरेट	१० ०३१	१२०००
मोरक्को कुल	१८४१४	१२ ८७,०००
२ सहारा में स्पेनिश प्रदेश रियो डि ओरो तथा सेकिया एल हमरा का क्षेत्र	१०५४०१	३७०००
३ गिनी का स्पेनिश प्रदेश करनेवाले पो० कोरिसको, एनोबी और एनोपोस नामक चार द्वीपों को मिला कर	१०,८५२	१७० ६००
अफ्रीका कुल	१३४७१५	१४,९४,६००

अविला नगर के चारों ओर गहरे ग्रेनाइट पत्थर की बनी दीवार का एक भाग ।

नहर के जल को ऊपर से ले जाने के लिए सेगोविया में बना हुआ एक ढांचा । यह रोमन रचना है ।

श्री गणेश का स्वरूप

[पृष्ठ ११ का शेष]

से भरपूर रहेगा। खाद्य सामग्री की प्रचुरता होगी। धन की बहुलता होगी। भुजाओं के निकट ही बहीखाते हैं जो यह बताते हैं कि आय व्यय का उचित ब्यौरा रखना बहुत !आवश्यक है। उसके बिना सम्पत्ति के नष्ट हो जाने का भय रहता है। ऋद्धि सिद्धियों द्वारा सेवा भी समृद्धि की महानता को ही सूचित करती है।

शिव-पार्वती का स्वरूप

यह गणेश के स्वरूप का संक्षिप्त भाव है। वे भगवान शिव तथा पार्वती के पुत्र हैं। शिव और पार्वती का स्वरूप स्वयं अपने आप में कम से कम दो लेखों का विषय है। अत उसे हम यहां छोड देते हैं। किन्तु गणपति समस्त गण का प्रतिनिधि होने के कारण सर्वाग्रणी हो जाता है। सारे समाज की श्रद्धा उसमें केन्द्रित होती है और वह सम्पूर्ण समाज की उचित व्यवस्था कर सबको अभय देता है। वह विद्या तथा बुद्धि का स्वयं भडार है। इसीलिए वह सर्वप्रथम पूज्य है। उदात्त राष्ट्रीयता की इस अंत्यतम भूमि के केन्द्र होने के कारण ही सर्वप्रथम गणेश का ही स्मरण तथा उनकी ही वन्दना होती है।

वर्तमान गणपति से

श्रीगणेश के रूप को ठीक प्रकार से समझने से गणेश चतुर्थी का राष्ट्रीय महत्व स्वय स्पष्ट हो जाता है। अत उसके विषय मे कुछ न लिखकर मैं अपने वर्तमान गणराज्य के प्रधान के लिए प्रयुक्त किये जाने वाले शब्द "राष्ट्रपति" के विषय म दो शब्द कहूँगा। भारतीय विचारकों ने राष्ट्र तथा राज्य को अलग अलग माना है। राष्ट्र है कुछ गुण विशेष से सम्पन्न समाज तथा राज्य है। उस समाज की दिन प्रतिदिन कीआवश्यक व्यवस्था तथा सेवा करने वाली एक संस्था भारतीय विचारक राष्ट्र को सर्वोपरि मानते हैं। कोई भी व्यक्ति सबसे ऊचा नही है उसका स्वामी नहीं हो सकता। शिव और पार्वती का उल्लेख पुन एक बार करते हुए मैं इस तथ्य की ओर ध्यान दे आकृष्ट करू गा। भगवान शिव तथा पार्वती राष्ट्र तथा संस्कृति के प्रतीक हैं। इन दोनो की अनिवार्य एकता दिखाने के लिए ही भगवान शिव का एक रूप अर्धनारीश्वर है। श्री गणेश उनके पुत्र हैं। सबसे पूज्य होते हुए भी वे राष्ट्र के पुत्र ही हैं। इसीलिए गणपति गण राज्य क स्वामी हैं, राष्ट्रपति नहीं।

क्या हम भी अपने पूर्वजों की गम्भीर दृष्टि अपनायेंगे और सस्ती भावुकता तथा पश्चिम की नकल में न पड कर ठीक प्रकार से विचार करेंगे? भारतीय संस्कृति ने राष्ट्र के प्रति जितने उच्च विचार रखे हैं उतने विश्व की किसी भी संस्कृति में नहीं पाये जाते। क्या हम भी राष्ट्रपति शब्द के स्थान पर गणपति शब्द का व्यवहार करेंगे और तदनुसार अपने संविधान में भी संशोधन करेंगे?

जीवन में सफलता का रहस्य : मानसिक शक्तियों का जागरण

[श्रीमती मनसा पंडित एम० ए०]

प्रयत्नों द्वारा पता चला है कि मानसिक-शक्ति और भौतिक-शक्ति में काफी समानता है। वह शक्ति क्या है ? भौतिक या प्राकृतिक शक्ति कई प्रकार की नहीं होती। उसके जो नाना रूप दृष्टिगोचर होते हैं, वे एक ही मूल शक्ति के विभिन्न रूपान्तर मात्र है। न केवल इतना ही, वरन् मूल शक्ति मात्रा में घटती या बढ़ती नहीं, केवल उसके रूपान्तर में उसकी मात्रा कम या अधिक हो सकती है। उदाहरण के लिए १०० मन कोयला लीजिये। १०० मन कोयले में जितनी भी शक्ति है, उसका परिमाण निश्चित है, वह घट बढ़ नहीं सकती। अब यदि हम कोयले को भट्ठी में दें तो वह कोयला गर्मी या ताप के रूप में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करेगा। इस गर्मी की शक्ति को इंजन से हम आसानी से 'गति' का रूप दे सकते हैं। या फिर डाइनेमो की सहायता से हम इसे बिजली में बदल सकते हैं। या बिजली द्वारा हम गति या गर्मी पैदा कर सकते हैं। शक्ति केवल एक है जो इस उदाहरण के अनुसार १०० मन कोयले में निहित है। परन्तु नाना प्रकार की प्रणालियों द्वारा हम उसका प्रदर्शन भिन्न भिन्न प्रकार से अपनी इच्छा या आवश्यकतानुसार जिस रूप में चाहें कर सकते हैं। परन्तु यदि हमारे व्यापार में ही कुछ दोष हो, तो हम उस शक्ति को दूसरा रूप देने में चाहे समर्थ हो जायें, परन्तु उस शक्ति का पूर्ण मात्रा में प्रयोग, होना असम्भव होगा। ताप को बिजली का रूप देने में कुछ न कुछ गर्मी अवश्य ही व्यर्थ जाती है। परन्तु हमेशा याद रखने की बात यह है कि वह शक्ति केवल व्यर्थ जाती है, नष्ट नहीं होती। वह कुछ समय तक हवा में रहती है, फिर धीरे धीरे आस-पास की वस्तुएं उस गर्मी को आत्मसात कर लेती हैं।

व्यापक इच्छाएं

उपर्युक्त उदाहरण से इच्छा या मानसिक शक्ति की प्रक्रिया को समझा जा सकता है। मनुष्य के जीवन का काफी बड़ा भाग इच्छा करने और उसके प्रयत्न में व्यय हो जाता है। कोई न कोई इच्छा जीवन में सदा ही उपस्थित रहती है और मनुष्य उसकी पूर्ति के उद्योग में व्यस्त रहता है। शराबी सदा शराब की इच्छा करता रहता है, तो वैज्ञानिक चौबीस घण्टे किसी आविष्कार की ही धुन में लगा रहता है। स्त्रियों को ही लीजिये—कोई सुन्दर-सुन्दर वस्त्रों पर दीवानी है तो कोई हर समय शीशे के आगे बैठकर अपने शारीरिक श्रृंगार में ही व्यस्त है, और कोई तीसरी कपड़े घर को सजाने में ही लगी रहती हैं। इस प्रकार किसी व्यक्ति को शान्ति की इच्छा है तो दूसरा उत्तेजक दृश्यों अथवा उपादानों की तलाश है। वह मेले तमाशे आदि की ही कामना करता रहता है, जैसे शान्ति उसे काटने दौड़ती हो। विश्लेषकों और परीक्षकों से पता चला है कि इन विभिन्न इच्छाओं के पीछे मनुष्य की दो मुख्य आदिम-वृत्तियां कार्य रत रहती हैं। एक तो है आत्म-रक्षा की वृत्ति और दूसरी है जाति-रक्षा की वृत्ति।

सक्रिय प्रयत्न

ये दोनों वृत्तियां भिन्न भिन्न प्रतीत होते हुए भी वास्तव में एक मुख्य स्वयंभू वृत्ति के ही दो रूप हैं। और वह मुख्य वृत्ति है अपने विशेष जीव-वर्ग की रक्षा की वृत्ति। एक उदाहरण द्वारा ऊपर कही सभी बातें आसानी से समझी जा सकती है। एक व्यक्ति क्रिकेट प्रेमी है। वह अपनी शारीरिक शक्ति का बहुत भाग खेल मे ही व्यय करता है। यदि वह केवल इच्छा ही करे और उस इच्छा को पूरा करने के लिए उसमें कोई शक्ति न हो तो वह इच्छा भी व्यर्थ ही जायेगी क्योंकि तीसरे पहर की सुस्ती पैदा करने वाली गर्मी में बल्ला लेकर रन बनाने के लिए तो शक्ति की ही आवश्यकता है। प्रायः लोग कहते सुने जाते हैं—'मुझे व्यायाम की आवश्यकता है।' प्रश्न यह है कि यह परेशानी क्यों ? उट्ठक-बैठक भाग-दौड़ की क्या आवश्यकता ? बात असल में यह है कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम परमावश्यक है और लम्बी आयु पाने के लिये स्वास्थ्य का अच्छा होना जरूरी है। अतएव स्पष्ट है कि किसी न किसी सीमा तक क्रिकेट खेलने या व्यायाम करने की इच्छा के पीछे 'रक्षा' की भावना ही काम करती है।

अचेतन जगत

परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। अचेतन में एक और भी अभिप्राय रहता है। काम-सम्बन्धी इच्छा के दमन करने की शिक्षा हमें बाल्य-काल से ही मिलनी प्रारम्भ हो जाती है और प्रायः हम इस इच्छा से सम्बन्धित मानसिक संघर्षों को अपने अचेतन अथवा उपचेतन मन में ले जा कर दमन करने में भी सफल हो जाते हैं। परन्तु इस इच्छा विशेष के पीछे लगी शक्ति तो उपस्थित रहती ही है, जो उस दमितशमित इच्छा के निकलने का मार्ग ढूंढती रहती है। क्रिकेट के खेल से मानसिक और उत्तेजना भी प्राप्त होती है उसकी भाति में कम भी है। अतएव इन गुणों के कारण इस शक्ति के विकास के लिए क्रिकेट या इसी प्रकार के अन्य खेल भी अच्छे मार्ग हैं। अभिप्राय यह है कि काम सम्बन्धी इच्छा को दमन करने पर उस इच्छा की प्रेरक शक्ति किसी दूसरे कार की प्र उत्तेजना की खोज करती है जहां कामेच्छा व्यय हो सके।

मानसिक शक्ति का किसी वांछनीय कार्य में उपयोग होना मनोवैज्ञानिक भाषा में 'सबलिमेशन' (उदात्तीकरण) कहलाता है। इसका यह अर्थ नहीं कि खेल ही में इस शक्ति का उपयोग होना उदात्तीकरण है। धर्मरत होना, कला-प्रेमी होना, गान-विद्या का ज्ञान प्राप्त करना विज्ञान मे रत होना आदि सभी उदात्तीकरण के भिन्न भिन्न रूप हैं। इस शक्ति का अवांछनीय कार्यों मे भी व्यय हो सकता है, जैसे शराब और अन्य नशीली वस्तुओं का सेवन करना। हिस्टीरिया या वात नाली विकार की उत्पत्ति द्वारा भी इस दमित इच्छा की शक्ति खर्च हो जाती है। परन्तु इस प्रकार अवांछनीय कार्यों में व्यय होना इस शक्ति के निकास का घटिया मार्ग है—यद्यपि यह किसी सीमा तक अनधक काम वृत्ति और उससे उत्पन्न होने वाले मानसिक संघर्षों को चेतन मन में सवेग आने से रोकने में काफी सहायक होता है। लेकिन यह सब इतना सहज नहीं है, जितना पढ़ने से मालूम होता है। यहां तो हम सब कुछ बहुत ही संक्षेप में बता रहे हैं। वास्तव में इच्छा-शक्ति के परिवर्तन के पीछे जो कारीगरी छिपी है, वह बहुत ही पेचीदा है।

कई बार ऐसा देखा गया है कि खेलने के पीछे लगी शक्ति आसानी से मस्तिष्क सम्बन्धी व्यायाम की इच्छा के पीछे लग जाती है—अर्थात् शतरंज, गणित या विज्ञान इत्यादि। उदाहरण के लिए एक मनुष्य को लीजिये। छुट्टी का दिन है, प्रातःकाल वह अपने किसी मित्र से कहता है—"आज तीसरे पहर जरा कस के टेनिस रहेगी।" परन्तु दोपहर से बारिश शुरू हो जाती है और वह अपने मित्र के साथ शतरंज लगा कर बैठ जाता है। यह शतरंज बिछाना साधारण बात नहीं है। शतरंज की बाजी इसलिए बिछ जाती है कि वर्षा के कारण शारीरिक व्यायाम की सुविधा नहीं मिली। फलतः मस्तिष्क के व्यायाम की ओर उसकी रुचि हुई। इस प्रकार टेनिस खेलने की इच्छा के पीछे लगी उसकी मानसिक शक्ति दूर कर पूरी उत्तेजना और इच्छा तृप्ति की भावना के साथ दूसरी दिशा को बह गई। इसमें भी उसे वही इच्छित थकावट और सन्तुष्टि मिलेगी जो टेनिस के खेल के बाद मिलती।

स्वाभाविक दिशा

यहां यह बात उल्लेखनीय है कि भौतिक शक्ति की तरह मानसिक शक्ति भी पूरी की पूरी एक दिशा से दूसरी दिशा को नहीं बह जाती। अधिकांशतः तो वह अपने स्वाभाविक रूप में मनुष्य मे सदा ही उपस्थित रहती है। यह मात्रा प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव व चरित्र के अनुसार ही कम या अधिक हो सकती है। और जिस प्रकार भौतिक शक्ति के रूपान्तर मे मशीन या इंजन की सामर्थ्य और योग्यता बहुत कुछ काम करती है, ठीक उसी प्रकार मानसिक शक्ति का स्थानान्तरन्यास भी मनुष्य विशेष की योग्यता व सामर्थ्य पर ही निर्भर करता है।

वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति को भिन्न मात्रा मे वह मानसिक शक्ति प्राप्त होती है, जो सदा इच्छापूर्ति के द्वारा ही अपने विकास का उपयुक्त मार्ग ढूंढ लेती है।

यहां यह बताना उपयुक्त होगा कि इच्छा के पीछे काम करने वाली मानसिक शक्ति को निम्नकोटि के लक्ष्यों से हटा कर उच्चतम लक्ष्य की ओर प्रेरित करने का सामर्थ्य मनुष्य मे किस प्रकार और कहां से आता है। जैसा पहले भी बताया गया है, यह सामर्थ्य प्रत्येक व्यक्ति में एक ही मात्रा मे नहीं होता। कुछ लोगों का विश्वास है कि यह सामर्थ्य मनुष्यमे वंशानुक्रम परम्परागत या शारीरिक प्रकृति-गत होता है। इसमें अधिक आश्चर्यजनक प्रभाव डालने वाली दो और बातें हैं। पहली तो मनुष्य को अपनी परिस्थिति और दूसरी जीवन के प्रथम तीन चार वर्षों में माता-पिता के आचरण का मन पर प्रभाव।

पारिवारिक प्रभाव

अक्सर देखा गया है कि योग्य माता-पिता की सन्तानें बुरी हो जाती हैं। इसका कारण क्या है। मनोविश्लेषण से पता चलता है कि जो माता-पिता अपने बच्चों पर बहुत कठोर नियंत्रण रखते हैं, उनकी सन्तान के चरित्र में एक प्रकार की न्यूनता रह जाती है, और जो माता-पिता बहुत अधिक लाड़ प्यार करते हैं, उनकी सन्तान के चरित्र में एक दूसरे प्रकार का दोष आ जाता है। बालक पर उसकी आया, उसके अपने कमरे उसके जीवन के प्रथम कुछ वर्षों में देखे गये दृश्यों और अनुभवों का भी काफी प्रभाव पड़ता है। बुरे माता-पिता की सन्तान किसी आकस्मिक घटना या उपेक्षा के कारण योग्य और उत्तम हो सकती है, और एक सुयोग्य

ब्रिटेन की विभाजक नीति का शिकार फिलस्तीन

[पृष्ठ १ का शेष]

श्री चाचल

जिनकी गृद्ध दृष्टि फिलस्तीन पर अब भी लगी है

दियों का पक्ष लेते हुए लार्ड रोथस को एक पत्र लिखकर स्थिति स्पष्ट की थी।

"सम्राट की सरकार फिलस्तीन में यहूदियों के राष्ट्रीय गृह का निर्माण करना चाहती है। इस कार्य को करने के लिये वह अपनी पूर्ण शक्ति का उपयोग करेगी। यह अवश्य स्पष्ट है कि कोई भी ऐसा काम नहीं किया जायेगा। जिससे कि फिलस्तीन की अन्य जातियों पर प्रभाव पड़े अथवा उन यहूदियों पर जो कि अन्य देशों में राजनैतिक सुविधाओं का उपभोग कर रहे हैं।"

युद्ध समाप्त होने के दो वर्ष पश्चात् तक फिलस्तीन में ब्रिटेन का फौजी शासन रहा। अन्त में ३१ सितम्बर १९२३ को इस प्रदेश को राष्ट्र संघ द्वारा पूर्णरूप से ब्रिटेन को दे दिया गया। इस दिन से फिलस्तीन का इतिहास ब्रिटेन अरब यहूदी सम्बन्धों पर निर्भर रहा है। समय मिलते ही ब्रिटेन ने बालफोर घोषणा को कार्यान्वित करना शुरु किया। अनेकों बार इस नीति के कारण देश में भयानक रक्तपात हुए। एक अरब प्रवक्ता ने इस समय कहा था कि 'ब्रिटेन की नीति पर चलने के अर्थ हैं किसी दिन फिलस्तीन से अरब राष्ट्रीयता का लोप हो जाना।' आज से प्राय २८ वर्ष पहले की गई भविष्यवाणी आंशिक रूप सिद्ध हो चुकी चर्चिल ने बालफोर घोषणा का स्पष्टीकरण करते हुए अपने एक स्मरणपत्र में लिखा था कि इस घोषणा के यह अर्थ नहीं है कि सारा फिलस्तीन यहूदियों को दे दिया जाये। ब्रिटेन की इस विभाजन नीति के कारण देश में अनेकों बार जनहानि हुई है।

ब्रिटिश श्वेत पत्र

ब्रिटेन दोनों दलों में कोई समझौता कराने में असमर्थ रहा। क्योंकि उसकी नीति का मूल ही विभाजन था। अन्त में मई १९३९ में एक गोलमेज सम्मेलन बुलाया गया और एक श्वेत पत्र प्रकाशित किया गया। अरब इस श्वेत पत्र से प्रसन्न थे। द्वितीय महायुद्ध के प्रारम्भ होने पर ब्रिटेन की आर्थिक सहायता पाकर वे अपनी उन्नति करने लगे। यहूदी इस श्वेत पत्र से अप्रसन्न थे। यहूदी विरोध रहते हुए भी हिटलर के अत्याचारों के कारण ब्रिटेन की सहायता करने के इच्छुक थे। ब्रिटेन अरबों के विरोध के भय से समझ कर पैर रख रहा था। अन्त में सेना के दो भागों में बांटा गया। अरब यहूदी ब्रिगेड अलग अलग करदी गई। फिलस्तीन का खतरा टल चुका था। अतएव यहूदी सैनिक यूरोप की मुक्ति के लिये भेजे गये। अरबों की कोई सेना इस कार्य के लिये नियुक्त नहीं की गई। युद्ध काल में प्राय २५००० अरब यहूदी सैनिकों ने ब्रिटेन की सहायता की थी।

पोलैण्ड से भागने के पश्चात् अमरीका में यहूदियो की १९४८ को डेविड बेन गुरियन ने बिल्टमोर होटल में इसी नाम से एक योजना की घोषणा की। इस योजना के अन्तर्गत बेलफोर योजना से उन्नति की अपेक्षा की गई। युद्ध का खतरा इजराईल पर टल ही चुका था। अतएव १९४२ से ही वहां पर आतंकवादी कारवाई प्रारम्भ हो चुकी थी। यहूदी नेताओं ने ऊपरी मन से इन कारवाईयों का विरोध किया। शस्त्रागारों से शस्त्रों की संगठित रूप से चोरी की जाने लगी यहूदी संगठनों को धन अमरीका से प्राप्त होता था। उसकी निष्पक्षता को तोड़ने की कोशिश की गई। यहूदी हिटलर के आतंकों की पुनरावृत्ति नहीं चाहते थे। अन्त में सितम्बर १९४५ में प्रें० ट्रूमैन ने एक पत्र लिखकर ब्रिटिश प्रधान मन्त्री एटली से फिलस्तीन में १० हजार यहूदियों को शरण देने की अपील की।

ब्रिटिश सरकार अपने पर ही अत्यन्त व्यस्त थी वह इन आतंककारी

[illegible]

जिनके आतंकपूर्ण शासन से त्रस्त फिलिस्तीन ने ब्रिटेन की ओर आशापूर्ण नेत्रों से देखा

कारवाईयों में नहीं उलझना चाहती थी। अन्त में उसने भारत की भांति देश का विभाजन करके हटना स्वीकार किया। सुरक्षा परिषद् ने भी इसका समर्थन किया। ब्रिटेन के इस प्रदेश से हटते ही देश में रक्तपात प्रारम्भ हो गया। अन्त में डा० बर्नाडोट को शान्ति स्थापना के लिए भेजा गया। डा० बर्नाडोट इस शान्ति प्रयास में अपने जीवन से भी हाथ धो बैठे।

देश की आर्थिक दशा

देश की १९२० से ही निरन्तर आर्थिक उन्नति हो रही है। १९४१ में देश में पालिस व हीरे काटने का काम शुरू किया गया। देश में शाक सब्जी का बड़ी मात्रा में उत्पादन होता है। देश में उपयोग किए जाने वाले कुल अन्न का २५ प्रतिशत बाहर से आयात किया जाता है। देश में यहूदियों के आने के कारण उद्योगों के लिए स्थानीय मण्डी लाभकारी है। देश में खनिज पदार्थों की अत्यन्त कमी है। कुछ खनिज पदार्थ समुद्र से प्राप्त किए जाते हैं। इंजराइल की स्थापना के पश्चात् देश पर महान् आर्थिक व राजनैतिक आपत्तियां आईं परन्तु इन सब के होते हुए भी देश निरन्तर उन्नति कर रहा है। अभी हाल के हुए चुनावों में डेविड गुरियन को फिर से प्रधान मन्त्री चुन लिया गया है। इंजराइल को अब अपनी उन्नति के कारण पड़ोसी अरब राष्ट्रों से कोई भी डर नहीं रहा है। अरब लोगों द्वारा आक्रमण किए जाने पर उसने उन्हें एक कड़ी सैनिक पराजय दी थी।

माता-पिता सब प्रकार के मनसूबे बांध कर भी प्राय बुरी सन्तान पैदा करते हैं। अतः किन्हीं दो मनुष्यों की तुलना, उनके गुण अवगुणों की मीमांसा तभी ठीक से की जा सकती है जब उनके गत जीवन से भी भली प्रकार परिचय प्राप्त कर लिया जाय। सम्भव है कि जीवन में असफल एक मनुष्य इसलिये सफल न हुआ हो कि उसमें अपनी इच्छा के पीछे लगी शक्ति का परिपाक करने की सामर्थ्य न थी वरन इसलिये असफल हुआ हो कि उसे अपनी सारी शक्ति अपनी कुप्रवृत्तियों को रोकने में ही लगा देनी पड़ी।

—★—

नारी जगत

पारिवारिक जीवन के निर्माण में समन्वयात्मक दृष्टिकोण

सुखी जीवन का आधार

[स्व० श्रीमती होमवती देवी]

स्वर्गीय श्रीमती होमवती देवी यद्यपि भौतिक रूप से हमारे समक्ष नहीं है, किन्तु अपनी अमर साहित्यिक कृतियों के रूप में जो अमूल्य निधि वे हिन्दी जगत् को दे गई हैं इससे कौन अपरिचित है। आपके प्रस्तुत लेख में कुछ पारिवारिक समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है।

यों तो परिवार के सभी नाते अपना कुछ न कुछ महत्व रखते ही हैं परन्तु पति पत्नी के नाते की बराबरी कोई नहीं कर सकता। यह बात सभी को स्वीकार करनी होगी। कारण स्पष्ट है कि मानसिक और शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन पति पत्नी दोनों ही पर निर्भर करता है, अन्य किसी पर नहीं। पति-पत्नी के सम्बन्ध में आत्म विश्वास, सेवा और प्रेम की जितनी आवश्यकता है उसी प्रकार त्याग और बलिदान का भी महत्व कुछ कम नहीं है, तभी जीवन सुखपूर्ण और शान्तिमय बन सकता है।

प्रेममूलक विवाह

बहुत से लोगों का विचार है कि वर तथा कन्या को परस्पर पसन्दगी से या कहिए कि प्रेम विवाह की परिपाटी के आधार पर किया गया विवाह अधिक सफल हो सकता है। परन्तु मैं ऐसा नहीं मानती, कारण कि आज देश और विदेशों में जो तलाक की भावनाएं दिन-दिन पनपती आ रही हैं उनमें अधिकांश प्रेम तथा पूर्व परिचय के आधार पर ही किए गए विवाहों का विच्छेद सुनाई पड़ता है। जब कल्पना जगत से उतर कर हम वास्तविक संसार में पदार्पण करते हैं, तब कोरी बातों से या केवल बाह्यरूप की रंगीनियों से ही सन्तोष कर लेना कठिन हो जाता है। वास्तविकता क्या है यह जानने के लिए कौतूहल और इच्छाएं बढ़ने लगती हैं। रूप रंग के साथ साथ गुणों की आवश्यकता महसूस होने लगती है, और वहीं से पति पत्नी में परस्पर आकर्षण और विकर्षण का सूत्रपात होना आरम्भ होने लगता है। किसी भी सुन्दर पुष्प के प्रति स्थाई आकर्षण नहीं हो सकता, यदि उसमें सुगन्ध नहीं है तो । और यदि सुगन्ध है और सौन्दर्य भी है तो उसका पारखी भी चतुर होना चाहिए अन्यथा वन्य कुसुम के समान वह अल्प काल में ही मुरझा जायेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि पति पत्नी दोनों ही समान रूप गुण वाले और चतुर पारखी हों, तभी सम्भव है कि वह अपने छोटे से परिवार तथा जीवन में भूतल पर ही स्वर्ग की रचना करने में सफल हो सकें।

अनमेल विवाह

इस सफलता के लिए सबसे प्रथम आवश्यक है कि अनमेल विवाह न किए जाएं। समवयस्क तथा समान रूप से वर-कन्या का चुनाव हो, और दहेज जैसी कुप्रथाओं को छोड़ कर वर-कन्या के भविष्य की ओर ही ध्यान दिया जाए।

सफलता का आधार

दूसरी बात है, शिक्षा और फैशन जिसका प्रचार आजकल अधिक देखने में आ रहा है, और वर कन्या दोनों ही पक्ष के माता पिता यह जानकर सन्तोष कर लेते हैं कि उन्होंने अपना अपना कर्त्तव्य भली प्रकार पूरा कर दिया। लड़के वाला सोचता है कि उनका पुत्र पढ़ लिख कर जब कुबेर बन जावेगा, और उसका उचित मोल तोल करने में भी नहीं चूकते, कोई इंजीनियर तो कोई डिप्टी कलक्टर और मुंसिफी के आधार पर मूल्य नियत करते हैं। उधर कन्या पक्ष वाले समझते हैं कि उनकी कन्या रूप रंग और फैशन में तो साक्षात् उर्वशी है ही, साथ ही बी० ए० या एम० ए० की उपाधियों से विभूषित है, फिर क्या कमी है? पति रात दिन आंखों में अंजन के समान रखेगा। परन्तु ऐसा सदा नहीं होता। आरम्भ में एक क्षणिक आवेश में रह कर भले ही दोनों भ्रम में पड़े रहें किन्तु वास्तविक जीवन में पदार्पण करने के साथ साथ अनेक त्रुटियां साकार रूप में सामने में आ खड़ी होती हैं, और तब हाथ आने पर एक दूसरे के गुण अवगुणों की परख में जुट जाते हैं। यहीं से पति-पत्नि के जीवन की सफलता और असफलता का परीक्षण आरम्भ होता है। इस दशा को सम्हालने के लिए ही बड़े त्याग, बलिदान, प्रेम और लगन की आवश्यकता है। जिसकी शिक्षा का प्रबन्ध आज तक न किसी स्कूल में है और न किसी कालिज में। ऐसी शिक्षा तो हमें अपने व्यावहारिक जीवन और संस्कृति से ही प्राप्त हो सकती है, जिसका क्षेत्र घर और घर के प्राणी ही हो सकते हैं। इसी को हम नागरिकता कह सकते हैं।

केवल शृंगार ही नहीं

जब दिन भर का हारा थका पति दफ्तर या कचहरी, दुकान अथवा कारखाने से शाम को लौटेगा— तब वह इतने ही से कैसे सन्तुष्ट हो सकेगा कि उसकी सुघर पत्नी खूब बनाव शृंगार किए हुए उसके स्वागत में खड़ी रहे या कोई उपन्यास अथवा मासिक पढ़ने में व्यस्त रहे। इसके अतिरिक्त वह यह भी पसन्द करेगा कि वह घर को साफ सुथरा तथा व्यवस्थित देखे, कोई वस्तु इधर से उधर बेतरतीब पड़ी हुई न दीखे, बच्चे गन्दे और व्यर्थ रोते भींकते सामने न आ खड़े हों, और गृहस्थी उनके खान पान और आराम की व्यवस्था भूल कर दिन भर की जमा की हुई नौकरों की शिकायतें या परिवार वालों की बुराइयों अथवा बच्चों की बीमारी का रोना उसके सम्मुख न ले बैठे।

पुरुषों से

यही बात पुरुषों के ऊपर भी लागू होती है। अनेक पुरुषों का स्वभाव होता है कि मित्रों में बैठकर खूब हंसी-खुशी से समय बिता सकेंगे किंतु घर में पैर रखते ही उनकी भवें तन जायेंगी। किसी को अकारण ही डाटना और किसी को फटकारना, कहीं जूते उतारकर फेंकना तो कहीं कोट मानो वह सबके अन्नदाता-स्वरूप ऐसा व्यवहार करने के अधिकारी हैं जो कि पशुओं के साथ भी नहीं करना चाहिये। अस्तु जब जब मैं पढ़े लिखे और सभ्य तथा सुशिक्षित कहे जाने वाले लोगों में इस प्रकार की आदतें और व्यवहार देखती हूँ तो मन में उत्पन्न होने वाली कोमल भावनाएं घुट कर रह जाती हैं।

प्राचीन काल में बाल्यकालीन शिक्षा

लड़के लड़कियां आठ दस वर्ष की आयु में ही गुड़ियों के खेल द्वारा बहुत कुछ सीख लेते थे और वह अल्पकालीन ज्ञान उनका भविष्य बनाने में बहुत कुछ सहायक होता था। वह अनुभवी दम्पति बन कर जीवन में पदार्पण करते थे। किन्तु आज पढ़े लिखे सुशिक्षित व्यक्ति भी इस ज्ञान से अनभिज्ञ होते हैं।

रोग ग्रस्त अवस्था

बहुत से स्त्री पुरुष रोग ग्रस्त होने पर उदासीनता का परिचय देने लगते हैं। इस क्रिया से हृदय सहसा टूट जाता है और फिर लाख यत्न करने पर भी वह नहीं जुड़ पाता। या प्राय

[शेष पृष्ठ २० पर]

आज की बालिका, कल की माता

हम हिन्दी शीघ्र लिपि का निर्माण कैसे करे

[पृष्ठ २ का शेष]

कृत एवं भाषा के प्रचुर प्रयोग से दो चिन्ह देती हैं जो क्रमश वी तथा व्हे' हैं। पर हिन्दी मे व्हे ध्वनि का कहीं भी प्रयोग नहीं अत पिट मैन का केवल वी-चिन्ह ही हिन्दी में व-व्यजन के लिये अपनाया जा सकता है। व्हे तथा वे चिन्हा का हिन्दी म व्यजन के लिये अपनाया जा सकता है। कारण कि देखने में एक रूप एवं इनसे बनने वाले सभी सकत वैज्ञानिक एव मौलिक प्रतीत हाते हैं। व्हे चिन्ह का व व्यजन क लिए लेने से मनुष्य दास्य भाव्य विषय आदि अनेका शब्द अति सरलता से लिखे जात हैं अन्य किसी चिन्ह से नहीं।

र ल ह

ध्वन्यानुकूल पिट मैन के आर एल हे चिन्ह हिन्दी के र ल ह व्यजन ही हैं। अत इन सकेता को ले लेना चाहिये।

म श ष

स चिन्ह के लिए हम साहित्य सम्मेलन द्वारा स्वीकृत ऋषि प्रणाली को अपना सकत हैं। कारण कि इन चिन्हों स वे सभी चिन्ह अति सुगमता से मिलते हैं जो कि पिट मैन के एस-चिन्ह से कभी भी नहीं मिल सकते।

श-ष व्य जनों के लिये स के दूसरे सकेत को मोटा कर देना चाहिये। मोटा करने का नियम मौलिक है और स का कर्कश रूप ही तो श-ष होता है।

च,—

यहां हमको पिटमैन का अनुकरण कर लेने में काई आपत्ति नहीं। जो चिन्ह पिटमैन एक्स-व्य जन के लिए देता है वही चिन्ह हिन्दी मे च के लिये होना चाहिये। जिस प्रकार के-एस के मेल से एक्स-व्य जन बनता है उसी प्रकार क-ष व्य जनों के मेल से च-व्यजन बनता है। इस प्रकार मौलिक चिन्ह का निर्माण करना चाहिये।

ड़-ढ़:—

र चिन्ह को मोटा करके लिखने से ड-ढ़ चिन्हों का निर्माण सरलता से हो जाता है। यद्यपि ड-ढ का ऊपर का चिन्ह गति में बाधक है परन्तु तो भी हमको यहां स्वीकार अन्य कर्कश व्यजना के निर्माण के अनुकूल स्वीकार करने चाहिए। र हुक के अध्याय म यह बाधा समाप्त हो जाती है।

साहित्य सम्मेलन क्या करे —

भाषा की उन्नति एव विकास साहित्य सम्मेलनों द्वारा ही होता है। अत एक लेखक के रूप में मैं साहित्य सम्मेलन से अनुरोध करता हूँ कि वह हिन्दी राष्ट्र भाषा हो जाने पर एक मौलिक एव वैज्ञानिक प्रणाली को जन्म दे। प्रस्तुत ऋषि प्रणाली से मेरा भाषा विज्ञान की दृष्टि से मौलिक मतभेद है। यदि सम्मेलन मौलिक शीघ्र लिपी की उत्पत्ति कर ले तो मुझे दृढ़ विश्वास है कि हिन्दी की शीघ्र लिपि अंग्रजी शीघ्र लिपि से भी कहीं अधिक मौलिक एव वैज्ञानिक ही नहीं हो जायेगी अपितु गति में आश्चर्य जनक वृद्धि होगी।

—x—

चिता की लपटें

[पृष्ठ ७ का शेष]

उसका समष्टिगत आशा लोक स्वार्थ उदधि में डूबने जा रहा था।

नहीं नहीं वह शिवाजी को मरने नहीं दे सकती। वह अपने को तैयार खड़े हिन्दु राष्ट्र के अमर दीपक को एकबारगी बुझने नहीं देगी। वह भाग भागी पाडुरग के कक्ष मे पहुँची पर कक्ष शून्य था। पाण्डुरग वश के दुर्भाग्य को आमन्त्रित करने जा चुका था। शून्य की ओर देखते देखते उसकी शून्य दृष्टि प्रथम बार बरस पड़ी। बहु ही वह एव जहां हाथस ब्राह्मणी के आसू गिरे थे वहीं उस शाकाकुल भारत की नारी के आसू गिर कर मिल गए। शुद्रता का महानता स मिलन हो गया।

परन्तु आसू बहाने से तो नियति म परिवर्तन नहीं होता। अब क्या होगा? कमर की दीवारें चिल्ला चिल्ला कर उससे पूछने लगीं अब क्या होगा? सहसा दृश्य था स कक्ष की एक एक वस्तु से यह प्रश्न आ आकर उसकी आखों से टकराने लगा कि 'अब क्या होगा? वह विक्षिप्त सी हो गई नहीं' वह शिवाजी की रक्षा करेगी। अवश्य करेगी। प्रश्न धुधला पड़ता पड़ता समाधान के रूप म परिवर्तित हो गया। उसी क्षण से यह प्रश्न आ उपस्थित हुआ कि मैं क्या करू? विचार आने के साथ ही उसने निश्चय किया कि वह शिवाजी को सूचना देगी। वह उन्हें अपने ससुर के षडयन्त्र से परिचित करा देगी।

गृह द्वार के बाहिर एक पग भी न रख पाई थी कि उसकी दृष्टि अपने पति पर पड़ी और पड़ी ही रह गई वह एक हिन्दु नारी थी। पति रहित जीवन की कल्पना भी उसके लिए असह्य थी। और अपने ही हाथों वह अपने पति को मौत के मुह में झोंकने जा रही है' यह विचार उसके मर्म स्थल को कुरेदने लगा। तीसरा वाक्य उसकी आखों के समक्ष हठपूर्वक घूमने लगा मेरा पति मेरा सर्वस्व और उसके बढ़ते हुए पाव रुक गए। मस्तिष्क घूमने लगा वह पति के चरणों में जा बैठी। उठी, पति की शय्या के चक्कर लगाये और न जाने कितनी बार अपना जीवन देकर पति के जीवन के लिए भगवान से प्रार्थना की।

उसकी विचार धारा बहने लगी। पति को सहायता न मिलती तो' उसके पति को औषधि क्यों न मिली? क्योंकि वह हिन्दु थे। तो न जाने कितनी उस जैसी अभागिनों को केवल हिन्दु होने के कारण सुहाग से वचित कर दिया गया होगा और कितनी जायेंगी होंगी। क्या उन सबको भी उसके समान अप्रत्याशित सहायता मिल सकती है। और उसको मिली हुई सहायता तो उन सब बहिनों के आशा केन्द्र को भी समाप्त करने जा रही थी। एक बार फिर उसका अन्त करण आन्दोलित होने लगा। वाक्य के शब्द फिर परिवर्तित हो गए मेरा राष्ट्र मेरा समाज उसका सर्वस्व। फिर कहीं वह विचार परिवर्तित न हो जाए कहीं उसकी दुर्बलता उसको पराभूत न कर ले इस आशका से उसने भागना प्रारम्भ कर दिया। सीधे आकर मन्दिर में शिवाजी के चरणों में ही विश्राम लिया सूचना देते देते उसके आखों से अविरल आसू बहने लगे। इन आसुओं के पीछे उसके धधकते हुए हृदय में जल रहे शोलों से उठ रही लपटें दिख रही थीं और उन लपटों में दिखती थी धू धू कर जलती उसके पति की चिता।

———

बाल-पहेली प्रतियोगिता

प्रिय बन्धुओ,

इस अंक में चार पहेलियां दी जा रही हैं। इनका उत्तर हमारे २३ सितम्बर के अंक में प्रकाशित होगा तथा साथ ही हम उन बन्धुओं का नाम भी छापेंगे जो इनका सही उत्तर हमारे पास भेजेंगे। उत्तर १७ सितम्बर तक आ जाने चाहिये। थोड़ा सोचो और विचार करो, उत्तर जल्दी ही समझ में आ जायेंगे। हां एक बात और कि बालबन्धु परिषद् के सदस्य ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं, अतः जिन बालबन्धुओं ने अभी तक सदस्यतापत्र भर कर नहीं भेजा, उन्हें उत्तर भेजते समय अपना सदस्यतापत्र भी भेजना चाहिये।

तुम्हारा
श्याम भैया

बाल नाट्य-मण्डली

हमारे सदस्य

१६.	—	उमेशदेव शर्मा, (मुरादाबाद)
१७.	—	श्यामलाल श्री वास्तव, (सागर)
१८.	—	उदाशंकर भट्ट, (लखनऊ)
१९.	—	श्रीमलता कोठीवाल, (मुरादाबाद)
२०.	—	उदयभानु मिहल (आगरा)
२१.	—	हरचरणदास (श्री करनपुर)
२२.	—	लक्ष्मीप्रसाद मुरारका (फतहपुर)
२३.	—	गोविन्द सहाय वर्मा (राठ)
२४.	—	विजयप्रकाश अग्रवाल (अल्मोड़ा)
२५.	—	सुरेशकुमार (ऐटा)
२६.	—	सरोजदत्ता (नई देहली)

यहां से काटो

सदस्यता-पत्र

नाम ....

आयु ....

संरक्षक ....

पूरा पता ....

६-९-५१

महापुरुषों का बचपन

एक दिन एक लड़की गणित का एक सवाल हल करने बैठी। प्रश्न कठिन तो नहीं था परन्तु उसे वह बहुत अधिक कठिन मालूम पड़ा क्योंकि उसे गणित सरीखे शुष्क विषयों में रुचि नहीं थी। अतः घण्टों परिश्रम करने के बाद भी वह उस प्रश्न को हल न कर सकी।

इसी समय उसके मन में उत्साह की लहर जाग्रत हुई। उसकी कलम कागज पर निरुद्देश्य चल पड़ी। उसके मन में जो कुछ आया वह उसे बगैर समझे बूझे लिखती चली गई। उस समय उसे ऐसा प्रतीत होता था मानो वह कोई स्वप्न देख रही हो। जो कुछ वह लिखती जा रही थी स्वप्न ही में लिख रही हो। कुछ देर में उसका स्वप्न टूटा और चकित हो कर उसने देखा कि उसने तो अंग्रेजी की एक बहुत सुन्दर कविता लिख डाली है। उस लड़की की यह प्रथम कविता थी। उसे देख कर बहुत से व्यक्ति तो यह विश्वास ही नहीं कर सके कि ग्यारह वर्ष की बालिका इतनी सुन्दर कविता लिख सकती है?

यह बालिका और कोई नहीं, स्वर्गीय श्रीमती सरोजनी नायडू थीं।

—महेन्द्र बाकलीवाल

चुटकले

दो आलसी मित्र एक आम के पेड़ के नीचे लेटे हुए थे। पेड़ से एक आम टूट कर एक मित्र की छाती पर गिर पड़ा। सड़क पर एक आदमी जा रहा था। जिसकी छाती पर आम पड़ा था, उसने एक व्यक्ति को पुकार कर कहा—अजी, श्रो महाशयजी, ज़रा इस आम को मेरे मुंह में तो निचोड़ दीजिये। उस व्यक्ति ने कहा—तुम बड़े आलसी हो, तुम्हारी छाती पर आम पड़ा है और तुमसे खाया भी नहीं जाता। दूसरे आलसी ने कहा—अजी ये सचमुच बड़ा आलसी है! रातभर कुत्ता मेरा मुंह चाटता रहा, इसने हटाया तक नहीं!

—सुलोचना देवी, देहली

× × ×

एक मास्टर कुछ लड़कों को पढ़ाते समय कहने लगा—अगर समझो मैं एक पत्थर से टकरा कर गिर जाऊं और मर जाऊं, तो उसका क्या परिणाम होगा?

लड़कों ने ताली बजा कर कहा—हमें एक दिन की छुट्टी मिल जायगी।

—शारदा देवी, देहली

बनो साहसी औ विश्वासी

(श्री लक्ष्मीदेवी स्वामी, दिल्ली)

यह पूजा की बेला आली!
फिर भी क्यों है सूनी थाली?
चलती रही युगों से अब तक.
प्रतिदिन पूजा यही निरन्तर
आज निराश हुई क्यों पगली
देख निराशा को यह झलकी।

× × ×

भेंट किया सब कुछ चरणों पर
किन्तु मिला बस! एक अश्रुकण।
हृदय विहीन देव प्रतिमा यह
मूक, सलोनी भोली भाली
अरे कभी ना समझ सकी है
व्यथित हृदय की करुण कहानी
छोड़ो बस मिथ्या अर्चन को
अब बनो साहसी औ विश्वासी।

— —

बाल-पहेली

(१)

कोटे से गिरधर जी डाई गज की पूंछ।
ज्यों ज्यों चलें गिरधर जी,
कटती जावे पूंछ।

(२)

चार चक्कर चलें, दो पत्ते डुलें।
आगे सांप चले, पीछे चवर डुलें।

(३)

मूली का सा पकता, दही का सा रंग।
बताओ तो बताओ, नहीं चलो हमारे संग।

(४)

मैं तीन अक्षरों का एक फूल हूं। मेरा पहला अक्षर काट देने से मैं एक कुचित पदार्थ बन जाता हूं। बीच का अक्षर काट देने से मलीन बन जाता हूं तथा अन्त का अक्षर काट देने से मैं कुछ कम हो जाता हूं। बताओ मैं कौन हूं।

———

जल-मार्ग प्रहरी स्पेन का संक्षिप्त परिचय

[पृष्ठ १२ का शेष]

जाती है। इस प्रदेश के मुख्य नगर रियो डि ओरो मे अघमहासागर पर विला सिसनेरो हैं और लेक्विा एल हमरा में स्मारा है।

मोरक्को के दक्षिण प्रोटेक्टरेट के पश्चिम मे अघ महासागर है। वह उत्तर मे कबो जूबी से वान या ड्राआ तक है और दक्षिण में १६०४ केरे हिस्पानो—फ्रेंच समझौते के अनुसार की सीमाओं तक। इसका क्षेत्रफल १०,०२६ वर्ग मील है और जनसख्या लगभग १२०००, मुख्य नगर केबो जूबी और प्यूरटो केनसेडो हैं।

इफ्नी का स्पेनिश प्रदेश—टेढ्वान से १३०० किलोमीटर के अन्तर पर अन्धमहासागर के तट पर इसकी दक्षिणी सीमा पर आसाका नदी है (जिसे फ्रांसीसी नन कह कर पुकारते हैं)। इसका क्षेत्रफल ७४१ वर्गमील, जनसख्या ३२००० तथा केन्द्र सीदी इफ्नी है। १८६० में यह प्रदेश मोरक्को ने स्पेन के लिये छोड़ा था किन्तु ६ अप्रैल १६३४ तक इस पर अधिकार नाममात्र को था। उसी दिन प्रथमबार इस पर स्पेन का झण्डा फहराया गया। १६१२ की फ्रांस के साथ हुई सन्धि के अनुसार इस प्रदेश की सीमायें १६३५ में फ्रेंच सरकार द्वारा पुन घटा कर ७४१ वर्गमील के क्षेत्र तक सीमित कर दी। इफ्नी और स्पेनिश सहारा के प्रदेश में एक अर्धसैनिक शासन है जिसका केन्द्र केबो जूबी में है। इसका अधिकारी मोरक्को का हाई कमिश्नर है जो टेढ्वान रहता है। इसके नीचे दो अधिकारी हैं, एक इफ्नी के लिए और दूसरा सहारा के लिए।

गिनी के स्पेनिश प्रदेश का क्षेत्रफल १००३६ वर्गमील हैं और जनसख्या १३८,७१७ (६२५ गोरे) है। मुख्य नगर बाटा है। द्वीपो का क्षेत्रफल ८१२ वर्गमील है तथा जनसख्या २८७०८ (१६३५ गोरे) है। मुख्य द्वीप फरनेन्डो पो है जिसका क्षेत्रफल ८०० वर्गमील है तथा जनसख्या २६,४०५ है जिसमे स १५०६४ सेन्टा इसाबेल जिले मे रहते हैं। सारे उपनिवेश का शासक सेन्टा इसाबेल में रहता है। अन्य द्वीप एन्नोबोन (७ वर्ग मील), कोर्सिको (२॥ वर्गमील), छोटा (२२ एकड़) व बड़ा एलोबी (३/४ वर्ग मील) हैं।

—★—

(पृष्ठ १७ का शेष)

देखा जाता है कि आजकल के फैशन में स्त्रिया अन्य पुरुषों के सामने अनेक प्रकार के भाव प्रदर्शन करने से नहीं चूकतीं। इसी प्रकार कुछ पुरुष भी बाहर की स्त्रियों से अधिक खुलकर और घुल मिल कर बातें करना अधिक पसद करते हैं। यह नहीं सोचते कि उनकी गृहिणी को यह कैसे सहन हो सकता है जब कि वह उससे सीधे मुह बोलते भी नहीं। ऐसी दशा में कलह का सूत्रपात न हो यह कदापि सम्भव नहीं है।

हमारी भारतीय सस्कृति में तो इन सब बातों की नितान्त आवश्यकता है। इन्हीं आदर्शों के ऊपर हमारे समाज की दीवारें खड़ी हुई हैं। पुरुष और स्त्री दाम्पत्य-जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये कहे जाते हैं। गुण, शील और आदर्श तथा व्यवस्था में दोनों का सतुलन समान होना चाहिये तभी सफल दम्पति कहलाने योग्य बन सकते हैं।

—∞—

और इत्यादि। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि बहुत थोड़े हिन्दू कांग्रेस जनों ने श्री टण्डन के विरुद्ध तथा पंडित नेहरू के पक्ष में वक्तव्य दिये हैं। कई पत्रों ने अपने अनुमान लगाये हैं कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अमुक अमुक प्रान्तों के इतने इतने सदस्य श्री नेहरू के समर्थक हैं, किन्तु यह अनुमान कितने निराधार हैं यह इसी से स्पष्ट है कि २९ प्रादेशिक कांग्रेस कमेटियों में से चार-पांच को छोड़ कर किसी ने भी कांग्रेस के अध्यक्ष श्री टण्डन से यह प्रार्थना नहीं की है कि वह अपना त्यागपत्र देकर पं० नेहरू को कांग्रेस अध्यक्ष नियुक्त करवा दें। इससे स्पष्ट है कि अन्य सभी प्रादेशिक कांग्रेस कमेटियां श्री टंडन की ही समर्थक हैं, और इन प्रादेशिक कांग्रेस कमेटियों के सदस्य ही कांग्रेस के प्रतिनिधि होते हैं, जो अपने में से कुछ सदस्य निर्वाचित करके अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में भेजते हैं। ऐसी स्थिति में यदि पं नेहरू तथा श्री टंडन के पक्ष तथा विपक्ष में मत लिए जाने का प्रश्न उठा तो श्री टंडन की विजय निश्चित है। हां यह सत्य है कि यदि पं० नेहरू आज से तीन चार मास पूर्व अपना त्यागपत्र देते बजाय डेमाक्रेटिक फ्रण्ट अथवा जनतन्त्री मोर्चे को विघटित कराने के, तो अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में मत लिये जाने पर उनकी विजय हो सकती थी, आज तो उनके अधिकांश समर्थक किसान मजदूर प्रजा पार्टी में सम्मिलित हो चुके हैं, और जो शेष रह गये हैं उनकी गिनती बहुत थोड़ी है।

कांग्रेस सदस्यों की कामना

पं नेहरू का अनुमान है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिकांश सदस्य आगामी निर्वाचनों के लिये या तो केन्द्रीय संसद् के लिए अथवा प्रांतीय विधान सभाओं के लिए उम्मेदवार हैं और वह सभी कांग्रेसजन भली प्रकार जानते हैं कि उन्होंने गत चार वर्षों में अपने अपने क्षेत्रों में जनता की कितनी सुन्दर सेवायें की हैं और इनके बल पर उनके विपक्ष मे जितने चाहें मत डलवाये जा सकते हैं पक्ष में नहीं। ऐसी स्थिति में इन्हें यह आशा है कि यदि पं नेहरू सन् १९३६-३७ के निर्वाचनों अवसर पर किये गये देश-व्यापी दौरे की तरह ही इस समय भी भ्रमण कर दें तो उन्हे विजय की कुछ आशा हो सकती है। यही कारण है जिससे कि आज अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिकांश सदस्य पं० नेहरू के कांग्रेस में ही रहने के पक्षपाती हैं।

बागडोर छोड़ने के समर्थक नहीं

किन्तु, इनमें से बहुत कम ऐसे हैं जो अपने दल के नेता श्री टण्डन के हाथों से कांग्रेस की बागडोर चले जाने के समर्थक हों क्योंकि श्री टण्डन के

नेहरू-टण्डन गतिरोध समाप्त होने की आशा नहीं

(पृष्ठ ६ का शेष)

स्थान पर पं नेहरू के कांग्रेस अध्यक्ष बन जाने का अर्थ तो यही होगा कि जो लोग अब तक कांग्रेस छोड़कर प्रजापार्टी में गये हैं वह पुनः कांग्रेस में लौट आयेंगे और वर्तमान पदाधिकारियों को कांग्रेस त्यागनी पड़ेगी, जिसका फल तो यही होगा कि उनमें से अधिकांश के लिए कांग्रेस की ओर से उम्मेदवार बनाये जाने का प्रश्न ही नहीं उठेगा। और इसीलिए पं० नेहरू का कांग्रेस के लिए दौरा करना उनके किसी काम का नहीं आयगा। इसलिए, यदि इन दोनों नेताओं मे समझौता न हुआ और मत लिये जाने की नौबत आई, तो पं० नेहरू को अवश्य ही हार होगी।

यदि श्री टण्डन हटे ?

श्री० टंडन ने यह तो स्पष्ट हो कह दिया है कि वह वर्तमान कांग्रेस कार्य समिति को बदलेंगे नहीं, चाहे इसके लिए उन्हें अपने अध्यक्ष पद से ही त्याग पत्र दना पड़े। और इसी आधार पर पं० नेहरू यह विचार कर रहे हैं कि यदि श्री टण्डन अध्यक्ष पद से हट गये तो वह इस पद को भी इस समय स्वीकार कर लेंगे। किन्तु वह सम्भवतया यह भूल जाते हैं कि कांग्रेस के संविधान में अध्यक्ष के निर्वाचन की एक विशेष पद्धति दी हुई है। जिसके अनुसार ही अध्यक्ष पद रिक्त हो जाने पर नया अध्यक्ष निर्वाचित हो सकता है। इस नियम के अनुसार कांग्रेस के कोई भी दस प्रतिनिधि अध्यक्ष पद के लिये किसी भी प्रतिनिधि का नाम मनोनीत कर सकते हैं, और यदि एक से अधिक नाम आता है और वापस नहीं होता तो निर्वाचन होना ही न आवश्यक है। इसी लिए इस प्रकार नियमानुकूल निर्वाचन होने मे एक डेढ मास लगना आवश्यक है। साधारण निर्वाचनों की तिथियों की निकटता को देखते हुए यह सम्भव नहीं जान्पता और आज कांग्रेस की यह स्थिति है नही कि वह अखिल-भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक मे पं० नेहरू अथवा किसी भी व्यक्ति को नया कांग्रेस अध्यक्ष सर्व सम्मति से निर्वाचित हो जाने दे। जैसा कि पं० द्वारिकाप्रसाद मिश्र तथा श्री अलगूराय शास्त्री आदि के व्यवहार से स्पष्ट ही है।

पं० नेहरू ने कांग्रेस को नष्ट किया है

साथ ही यह भी सत्य है कि आज अधिकांश कांग्रेसजन यह अनुभव करते हैं कि आज देश में कांग्रेस की जो दुर्गति हो गई है उसके मुख्य कारण पं० जवाहरलाल नेहरू ही हैं—उनकी शिथिलता की अंतर्राष्ट्रीय नीति से सारे संसार को इस देश का शत्रु बना दिया है। उनकी पाकिस्तान-सम्बन्धी दब्बू नीति ने लाखों पुरुषार्थियों को नष्ट कर दिया है और इस देश को आन्तरिक रूप से कुचल दिया है। उनकी ब्रिटेन से मित्रता की नीति तथा कश्मीर सम्बन्धी नीति ने इस देश का लगभग तीन अरब रुपया फूंक कर आर्थिक दृष्टि से देश को पूर्णतया खोखला कर दिया है और उनकी कण्ट्रोलों की नीति ने चारों ओर भुखमरी फैला दी है। ऐसी स्थिति मे इनका अनुमान है कि यदि कांग्रेस जनों को आगामी निर्वाचन में निर्वाचित होना है तो उन्हें राष्ट्रवादी नीति ही पड़ेगी। इस मे पं० नेहरू बहुत बड़ा रोड़ा सिद्ध होंगे इसलिये यदि पं० नेहरू श्री टंडन के साथ सहयोग करके कांग्रेस में रहने को तैयार नहीं होते तो उन्हे लाचार होकर उनके त्यागपत्र को स्वीकार करना ही पड़ेगा, कांग्रेस जन पं० नेहरू का समर्थन चाहते हैं अपनी राजनैतिक आत्महत्या नहीं, इससे स्पष्ट है कि यदि आपस में इन दो नेताओं में कोई समझौता न हो सका तो प० नेहरू को हीं कांग्रेस से पृथक होना पड़ेगा। अब दोनों विचार धाराओं के लिये कांग्रेस में स्थान नहीं रहा है।

संकट टाला जायगा

वैसे तो इन मे समझौते की कोई सम्भावना नही दीखती, किन्तु इसमें कोई विशेष आश्चर्य न होगा यदि इन दो नेताओ में से अन्त में कोई एक झुक जाये और निर्वाचनों के बाद तक के लिए यह संकट टाल दिया जाय।

और यदि श्री० टण्डन के स्थान पर पं० नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष किसी भी तरह से हो गये तब तो कांग्रेस नष्ट भ्रष्ट हो जायगी और उसका वही हाल हो जायगा जो आज नेहरू सरकार का है।

—×—

दिल्ली साप्ताहिक वायदा बाजार

[ले० — श्री ब्रह्मानन्द भरतिया]

५ सितम्बर बुधवार को समाप्त सप्ताह के दैनिक भाव निम्न हैं :—

चांदी टुकडा चेम्बर भाद्वा डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द	दैनिक घटबढ़
बृहस्पति	१८८॥=)	१८१।)	१८८॥)	१८८॥।-)	॥।)
शुक्र	१८८॥।=)	१८१।-)	१८८॥-)	१८८॥=)	॥।)
शनि	१८८॥)	१८८॥=)	१८८=)	१८८।-)	॥)
सोम	१८८॥=)	१८१।=)	१८८॥=)	१८१)	॥।)
मंगल	१८८॥।-)	१८१॥।-)	१८८॥=)	१८१॥=)	१=)
बुध	बाजार बन्द रहा।				

गवार माघ डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द	दैनिक घटबढ़
बृहस्पति	१२)	१२-)॥	११॥=)॥	११॥=)॥	=)॥
शुक्र	१२)।	११॥-)।	११॥-)॥	११॥-)॥	=)
शनि	११॥)	११॥)	११॥=)॥	११॥=)॥	-)॥
सोम	११॥)=	११॥)॥	११॥)=	११॥)॥	॥)।=
मंगल	११॥-)	११॥-)	१२)।	१२)	=)।
बुध	१२=)॥	१२)	११॥)॥	११॥-)॥	।)॥

मटर मंगसिर डिलीवरी

वार	खुला	ऊंचा	नीचा	बन्द	दैनिक घटबढ़
बृहस्पति	१६॥-)।	१६॥)	१६॥=)॥	१६=)॥	=)।
शुक्र	१६॥)	१६॥)॥=	१६॥=)॥	१६॥=)।	=)॥=
शनि	१६=)	१६=)	१६=)।	१६=)॥	।)॥
सोम	१६)	१६=)।	१२॥-)॥	१२॥=)	।-)॥
मंगल	१२॥-)	१६=)॥	१२॥-)॥	१६=)	।=)॥
बुध	१६।-)।	१६॥)।	१६।)=	१६=)॥	=)॥=

पं. नेहरू द्वारा चौदह वर्ष पूर्व किया गया आत्मनिरीक्षण

[पृष्ठ ७ का शेष]

बात-सी लगती है। उसे सुनने वाला या उस भावपूर्ण मुख को देखने वाला आश्चर्य करता है कि इनके पीछे क्या छिपा है, कौन से विचार तथा इच्छायें, कौन से विचित्र दबे हुए अथवा दृढ़तापूर्वक जमे हुए भाव, कौन-सी कामनाएं जो दब कर उसकी शक्ति बन गई हैं, कौन-सी आकांक्षायें हैं, जिन्हें वह स्वयं अपने ही सामने स्वीकार करने का साहस नहीं कर सकता। विचार शृंखला उसे सार्वजनिक भाषण में उपस्थित रखती है, किन्तु अन्य अवसरों पर उसकी चेष्टाएं उसे धोखा दे जाती हैं, क्योंकि उसका मन विचित्र प्रदेशों और कल्पना में रम जाता है और वह पलभर के लिए अपने साथी को भूल जाता है तथा अपने मस्तिष्क के कीड़ों से न सुना जा सकने वाला वार्तालाप करता है। क्या वह उन मानवी सम्बन्धों पर विचार करता है, जिन्हें अपनी कठोर तथा तूफानी जीवन यात्रा में वह प्राप्त नहीं कर सका क्या वह उनकी चाह रखता है? अथवा क्या वह अपने इच्छा के भविष्य का और संघर्षों व विजयो का स्वप्न देखता है, जिन्हे कि वह समझता है कि प्राप्त करेगा? उसे यह भली प्रकार पता होना चाहिए कि जो मार्ग उसने चुना है, उसके किनारे विश्रामक कोई स्थान नहीं और विजय का भी अर्थ और अधिक भार होता है। जैसा कि लारेन्स ने अरबों से कहा था—"विद्रोह के लिए कोई विश्रांतिगृह नहीं हो सकते, हर्ष का कोई मूल्य नहीं चुकाया जा सकता।"

हर्ष शायद उसके लिए न हो, किन्तु हर्ष से भी बड़ी कोई वस्तु उसकी हो सकती है यदि भाग्य व लक्ष्मी उसपर दयालु हैं—जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति।

जवाहरलाल एक फासिस्ट नहीं हो सकता। और तो भी उसमें एक अधिनायक की सभी बातें हैं—भारी लोकप्रियता, निश्चित उद्देश्य को प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प, शक्ति, अभिमान, संगठन कुशलता, योग्यता, कठोरता, और जनता के प्रति उसका सारा प्रेम होते हुए भी, दूसरों के प्रति एक असहिष्णु वृत्ति, और दुर्बल तथा अयोग्य के प्रति एक प्रकार की घृणा। उसके क्रोध की तेजी भली भांति ज्ञात है और जब उसे काबू में कर लिया जाता है तब भी होठों की मरोड़ उसे धोखा दे जाती है। काम पूरा कराने का उसकी दुर्दमनीय इच्छा, जो उसे पसन्द न हो उसे हटा देने और नया बनाने का इच्छा, कठिनाई से ही अधिक समय तक प्रजातंत्र की मन्द गति के साथ उसे रख सके। यह हो सकता है कि वह बाहर का स्वरूप वैसे ही कायम रखे, किन्तु वह यह देखेगा कि उसके संकल्प के सामने वह सदा झुकता रहे। साधारण काल में वह केवल एक योग्य और सफल शासक होता किन्तु इस क्रान्तिकारी युग में सीजर का भाव सदा ही द्वार पर खड़ा है, और क्या यह सम्भव नहीं कि जवाहरलाल अपने को सीजर मान ले?

यहीं पर जवाहरलाल और भारत के लिए भय है। क्योंकि भारत सीजर के मार्ग से स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त करेगा, और चाहे वह एक उदार तथा योग्य अधिनायक के नीचे कुछ उन्नति कर सके, तो भी उसकी प्रगति रुकी रहेगी और उसके लोगों का मुक्ति दिवस दूर चला जायगा।

लगातार दो वर्ष से जवाहरलाल कांग्रेस का अध्यक्ष है और कुछ बातों में उसने अपने आपको ऐसा बना लिया है कि उसे छोड़ा नहीं जा सकता। अत कुछ लोग यह सुझाते हैं कि उसे तीसरी बार भी चुना जाय। किन्तु इससे बढ़कर अहित भारत तथा जवाहरलाल का नहीं किया जा सकता। उसे तीसरी बार चुनकर हम एक व्यक्ति को कांग्रेस के मूल्य पर ऊंचा उठा देंगे और लोगों को अधिनायकवाद की भाषा में सोचने के लिए प्रेरित करेंगे। हम जवाहरलाल को अनुचित वृत्तियों के प्रोत्साहित करेंगे और उसके अहंकार व अभिमान को बढ़ा देंगे। उसे यह विश्वास हो जायेगा कि अकेला वही इस भार को उठा सकता है और भारत की समस्या को सुलझा सकता है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि पद के लिए बाहर से उदासीन दिखायी देते हुए भी उसने कांग्रेस में गत सत्तरह वर्षों में महत्वपूर्ण पदों पर अधिकार रखा है। वह यह सोचता होगा कि उसे छोड़ा नहीं जा सकता और किसी व्यक्ति को ऐसे सोचने की अनुमति नहीं दी जा सकती। कोई उसे तीसरी बार कांग्रेस का अध्यक्ष स्वीकार नहीं कर सकता। उसकी बहुत अधिक चापलूसी और प्रशंसा कर हमें उसे बिगाड़ न दें। उसका अहंकार, यदि कोई है तो, पहले ही पर्याप्त है। उसे रोका जाना चाहिए। हमें सीजर नहीं चाहिए।

उज्जैन कांग्रेस के कागजात गायब।

—एक समाचार

लीजिये अब यार लोगों ने कागजों से भी कांग्रेस का नाम समाप्त करना शुरू कर दिया।

× × ×

देश में मेरी प्रतिष्ठा बढ़ रही है, कांग्रेस में घट रही है।

—नेहरू जी

क्यों कि कांग्रेस की प्रतिष्ठा देश में घट रही है।

× × ×

८-९ सितम्बर को नेहरू-दिवस मनाओ। - यू० पी० छात्र

न जाने कब कोई परीक्षक ही यह भी पूछ बैठे कि जन्म-दिवस, मृत्यु-दिवस और स्वागत-दिवस मे आपने कौनसा मनाया और कब।

× × ×

आगरा मोती कटरे की पुलिस के पास रहने वाला कुम्हार लुट गया।

—एक शीर्षक

पुलिस चौकी को चोर साफ कर गये यही बहुत है।

× × ×

मिश्र जी के भाषण से सचिवों और समाइयों को प्रसन्नता हुई है।

—आगरे का एक दैनिक

मालूम किस-किस के घर फैला यह भी लिखिये।

× × ×

हिन्दू कोड बिल पास हुआ तो देश चौपट हो जायगा। —श्री मिश्र

तब तो समझिये बिल का उद्देश्य पूरा हुआ।

× × ×

पटना के तीन कांग्रेसी एम० एल० ए० सरकार को धोखा देने के अपराध में २ वर्ष के लिए जेल भेजे गये।

— एक शीर्षक

जेल की बजाय तो उन्हें और ही कहीं भेज दिया जाता तो अच्छा था। पहले जेल की बदौलत ही एम. एल. ए. बने थे।

× × ×

कानपुर के श्री हनुमानदास अय-पुरिया चोर बाजारी में पकड़ लिए गये।

—एक समाचार

इन सीधे-साधे व्यापारियों को बता दो कि भाई अब चोर बाजारी 'गुनाह' मे शामिल कर ली गई है।

× × ×

रेलवे कर्मचारी मांगें न माने जाने पर जेलें भर देंगे।

—जयप्रकाश

वह तो पहले ही भरी हुई हैं और कोई ठिकाना ढूंढ लीजिये। न हो माल गाड़ी के डब्बों में ही घुस जाइये।

× × ×

यदि चुनावों से सरकार न बदली गई तो क्रांति से बदल दी जावेगी।

—आचार्य कृपलानी

गांधीवाद के आचार्य, आचार्य कृप-लानी को यार लोगों की राय है कि चुनावों से पहिले क्रांति ही क्यों न करा जाय, शायद चुनावों की फिर आवश्य-कता ही न पड़े।

× ★ ×

राजस्थान सरकार ने कुम्हारों और मिट्टी दोनों पर टैक्स लगा दिया है।

— एक समाचार

अगली बार हलवाई और जलेबी पर और इसी तरह बाद में माली और सब्जी पर। इकहरे टैक्स से काम चलता भी नहीं।

× × ×

कांग्रेस से अब कोई आशा नहीं।

— श्री शास्त्री जी

बिलकुल, अब तो दिल्ली आना भी बेकार रहेगा।

× × ×

स्टालिन बौद्ध-धर्म ग्रहण करेंगे।

— श्री मराल

यूं कहिये कि बिल्ली हज को जावेगी।

× × ×

पाकिस्तान विदेशों में भारत-विरोधी प्रचार कर रहा है।

प्रचार ही कर रहा था और कुछ भी।

—श्री चिरंजीलाल पाराशर

—०—

रजि० नं० ई० पी० ४६१

पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा, मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिए अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, देहली में छपवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक—केशवदेव वर्मा

विजया-अङ्क

२१ आश्विन संवत् २००८ DELHI 7th OCTOBER 1951

वार्षिक मूल्य १२)
अर्धवार्षिक मूल्य ६)
विदेश में १ पौंड

४
आना

हिन्दू-कोड बिल पर विचार स्थगित।
—एक समाचार

अच्छा हुआ, अन्यथा विचार करने वालों के भी स्थगित होने का भय था।

× × ×

कोई कारण नहीं रहा जो मुझे कांग्रेस में आने से रोके।
—श्री किदवई

जो कारण था, वही कल्याण बन गया।
सैयां भये कोतवाल, अब डर काहे का।

× × ×

कांग्रेस का अधिवेशन कूटनीतिक बस्ती में होगा। —एक शीर्षक

नीति को कूटने के लिए स्थान है भी उत्तम।

× × ×

नेहरू जी चुनाव आन्दोलन पंजाब से आरम्भ करेंगे। —एक समाचार

और जनता को यह बतायेंगे कि प्रधानमन्त्री अभी वहीं दिल्ली है। यहां तो जो है सो टंडनजी की उठा लाया हूँ।

× × ×

श्री मुद्गल ने संसद के अपमान का कार्य किया था। —सभापति

आश्चर्य है कि इतनी बड़ी संसद में केवल एक ही मुद्गल हाथ लगा।

× ×

हिन्दू कोड बिल की स्वीकृति एक नैतिक अन्याय होगा।
—गोविन्द मालवीय

वह तो राजनैतिक अन्याय होने जा रहा था, बस जरा सी कसर रह गई।

× × ×

सरकार चुनावों से पहले हिन्दी को राजभाषा घोषित कर दे। —टंडन जी

क्यों कि उसके बाद तो हो ही जायेगी। अच्छा है मुफ्त में ही पका हुआ आम हाथ आ जाय।

× × ×

श्रीमती लीलावती मुन्शी का मुकाबली नर्गिस अभिनेत्री बम्बई में करेगी।
—एक समाचार

नेताओं की सरकार से अभिनेताओं की सरकार बनेगी भी भली।

× × ×

मैं धूनी पीटने का काम करता हूँ।
—महावीर त्यागी

और कुछ मंदारियों की कला का भी अनुभव होगा। कहां है त्यागी पुलिस सैल की।

× ^ ^

ईमानदार और सच्चे आदमी बाहर से भी खोजे जायेंगे। —एक कांग्रेसी

घर में कमी पड़ गई क्या ईमानदारों की।

×

राजकुमारी अमृतकौर स्वास्थ्य मन्त्री बने।
—प्रेस ट्रस्ट

जनता के स्वास्थ्य को शायद और खराब न करने के लिए बनाये गये होंगे।

× × ×

कांग्रेस में वापस आने वाले सिद्धांतहीन हैं। —महामायाप्रसाद

क्या पता कांग्रेस के सिद्धान्तों को और भी हीन करने आ रहे हों।

× × ×

मेरठ कांग्रेस पर मुस्लिम लीग हावी। —एक सम्वाददाता

बाकी कांग्रेस पर मुसलमान हावी। कम से-कम मेरठ में पार्टी हो हावी करा रखी है। दिल्ली में तो बिना पार्टी के भी चढ़े बैठे हैं।

× × ×

कानपुर में २७० बोतल शराब पकड़ी गई है। —प्रेस ट्रस्ट

रख रखी होगी किसी चुनाव के आकांक्षी ने आकांक्षी वोटरों के स्वागत को।

× × ×

भारतीय जापान के बारे में अधिक जानें। —एक जापानी

अभी रेफनों के बाद ही कोई जान सकेगा।

× × ×

कांगड़े से ६ मील दूरी की एक पहाड़ी पर बन्दूक बनाने का कारखाना पकड़ा गया है। —प्रेस ट्रस्ट

यह कोई नई बात नहीं। नई बात केवल इतनी ही है कि उस कारखाने को आजमगढ़ से ज्यादा दूर रख दिया।

× × ×

पाकिस्तान बालक को वापस भेज दिया। —भारत सरकार

कम से कम मराव गोपालदास से ही बदल लेते।

× × ×

बीकानेर नगर कांग्रेस के कोषाध्यक्ष ने स्तीफा दे दिया। —एक संवाद

कांग्रेस के कोषाध्यक्षों को तो अब और ही घर खोलना चाहिये।

× × ×

जयपुर का अफ्यून कानून अवैध।
—सुप्रीम कोर्ट

खाने पीने की चीजें होनी कानून से अलग ही चाहियें।

× × ×

कांग्रेस को तोड़ा जाय।
—कुंवर रतनसिंह

टूट तो गई थी अब फिर जोड़ी जा जा रही है। —चिरंजीलाल पराशर

ईस्टर्न पंजाब रेलवे

सूचना

इस विज्ञप्ति द्वारा सर्व साधारण की सूचनार्थ यह प्रकाशित किया जाता है कि आई. आर. सी. ए. कोचिंग टेरिफ (नं० १२) के नियम ११६ में निर्दिष्ट वस्तुओं को किसी भी अवस्था में असबाब के रूप में, चाहे मुसाफिरों के सुपुर्द हो कर या ब्रेक-वैन में, नहीं ले जाया जाना चाहिए। निर्दिष्ट वस्तुएं निम्न प्रकार है—

(i) दुर्गन्ध इत्यादि से मन खराब करने वाली वस्तुएं तथा गीली खालें, चमड़े इत्यादि सिवाय जंगली जानवरों की उन खालों के जो कि मालिक के जोखम पर हवा-बन्द सन्दूकों में सुरक्षित रूप से बन्द हों।

(ii) विस्फोटक पदार्थ, खतरनाक और प्रज्वलन शील वस्तुएं।

(iii) किसी भी विवरण की विशाल वस्तुएं जिन पर उनकी विशालता के कारण पार्सलों के रूप में स्वीकार किये जाने पर किराया उनकी माप के अनुसार लगने वाला हो।

(iiii) तेल, ग्रीस, घी, पेन्ट इत्यादि, यदि वे ऐसे टीनों में बन्द करके ले जाई जा रही हों जो छूने, टूटने या चूने से अन्य वस्तुओं को नुकसान पहुँचायें।

—चीफ एडमिनिस्ट्रेटिव आफीसर, दिल्ली

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार २१ आश्विन सम्वत् २००८ [अङ्क २४

विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और जब तक हमारे संविधान में इसकी गारण्टी नहीं कर दी जायगी, हम तब तक चैन नहीं लेंगे।

विजयादशमी का सन्देश

भारत के महान राष्ट्र पुरुष भगवान राम की लंका के अत्याचारी व निरंकुश शासक रावण पर विजय की स्मृति के रूप में विजयादशमी अनन्त काल से भारत के कोने कोने में मनाई जा रही है। विश्व इतिहास में राजनैतिक तथा साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा से प्रेरित हो कर शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित करने वाले दिग्विजयी सम्राटों की कभी भी कमी नहीं रही, किन्तु राम की रावण पर विजय को एक राष्ट्रीय विजय पर्व के रूप में सर्वत्र मनाये जाने का कारण यही है कि राम की लंका पर विजय सांस्कृतिक विजय थी। भगवान् राम का जीवन हमारे राष्ट्रीय जीवन के साथ एक रूप हो गया है, तथा उनके जीवन कार्यों में हमारे राष्ट्र की शुद्ध, निर्मल तथा निर्विकार आत्मा प्रकट हुई है। विश्वबन्धुत्व के आदर्श को विशुद्ध अन्तःकरण से कार्य में परिणत करने की भारतीय परम्परा अत्यन्त पुरातन है तथा हमारे महापुरुष विश्वबन्धुत्व का मूर्तिमान स्वरूप होते थे। इसी नाते भगवान् राम की विजय भारत की सांस्कृतिक विजय मान कर उस महान पुरुष की महान विजय की स्मृति में मनाये जाने वाला दिन राष्ट्र का पावन पुनीत पर्व बन गया है।

राष्ट्रीय पर्व के रूप में विजयादशमी का महत्व हमारे वैयक्तिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन में सार्वत्रिक तथा सर्वकालिक है। विजयादशमी का पावन सन्देश युग युगान्तर तक हमारे राष्ट्रीय जीवन को चिर चैतन्य तथा अमरत्व प्रदान करता रहेगा। आज के विक्षुब्ध, संघर्षमय राजनैतिक युग में भी भारतीय परम्परा के अनुरूप विजयादशमी का हमारे लिये सन्देश यही है कि हम मनसा वाचा कर्मणा 'रामराज्य' का महान आदर्श अपने सम्मुख रख कर लोकतन्त्र की आड़ में पनपने वाली तानाशाही प्रवृत्तियों को निरुत्साहित कर सच्चे लोकतन्त्र की स्थापना करें। रावण पर राम की विजय वस्तुतः लोकतन्त्र की एकतन्त्रवाद (तानाशाही) पर न्याय की अन्याय पर तथा दैवीशक्ति की आसुरी शक्ति पर विजय थी। भारतीय विवेक बुद्धि ने राम को लोकतन्त्र के महान जनहितकारी के प्रतीक के रूप में माना है दूसरी ओर रावण को उस निरंकुश तानाशाह के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया है जो अपनी शक्ति के मद में अन्धा हो कर सशस्त्र बल से लोकतन्त्रात्मक प्रवृत्तियों को कुचल कर आगे बढ़ना चाहता है। आदर्श लोकतन्त्रात्मक राज्य को 'रामराज्य' की तथा अन्य व्यक्तियों की इच्छाओं तथा महत्वाकांक्षाओं का बलात दमन कर आगे बढ़ने वाले व्यक्ति को 'रावण' की संज्ञा प्रदान करने की परिपाटी आज भी चली आती है। अशिक्षित तथा ग्रामीण जनता ने भी इस महान सत्य को हृदयस्थ कर लिया है।

रावण भी राम की भांति ही एक पराक्रमी तथा प्रतापी शासक था। इससे आज कोई इनकार नहीं कर सकता, किन्तु फिर भी उसकी प्रजा, उसके गृहजन, परिजन एक एक करके उसके मार्ग से हट गये। इसका एक मात्र कारण यही है कि अपनी तानाशाही प्रवृत्तियों के कारण रावण एक कुशल परिशासक होते हुए भी स्वयं अपनी प्रजा का ही समर्थन प्राप्त नहीं कर सका, जब कि राम को एक विशाल सेना सहज में ही प्राप्त हो गई।

यह तथ्य आज एक ऐतिहासिक सत्य के रूप में सर्वस्वीकृत हो गया है कि भारत का लोकतन्त्र पश्चिम के लोकतन्त्र से कहीं अधिक पुरातन, सुव्यवस्थित तथा बहु समर्थन प्राप्त तथा रामराज्य में लोकतन्त्र अपने उच्चतम तथा आदर्शतम रूप में विकसित हुआ था। भगवान राम एक सम्राट होते हुए भी वास्तविक अर्थों में लोकतन्त्रवादी शासक थे क्योंकि उनको सच्चे अर्थों में प्रजा का समर्थन प्राप्त था तथा अपनी मन्त्रिपरिषद् तथा सलाहकार समिति से बिना सम्मति लिये कोई भी महत्वपूर्ण कार्य नहीं कर डालते थे। राज्याभिषेक के समय गुरु वशिष्ठ के तथा समस्त प्रजा के सामने राम की निम्न प्रतिज्ञा उनको सच्चा लोकतन्त्रात्मक शासक सिद्ध करती है।

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।

जनता के समर्थन से बनाये गये शासकों द्वारा सञ्चालित शासन ही सच्चा लोकतन्त्रात्मक शासन है, विजयादशमी का आज हमारे लिये यही सन्देश है कि हम भारत में सच्चे लोकतन्त्र की स्थापना कर उसके बाह्य रूप मात्र की ही नहीं उसकी आत्मा तथा उज्वल परम्परा की भी रक्षा करें। क्या आज का हमारा शासकवर्ग तथा प्रजा विजयादशमी के इस पुनीत संदेश को हृदयंगम करेगी।

—:o:—

डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी का भाषण

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल से त्याग पत्र देने के पश्चात् डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी भारतीय संसद् में सरकारी नीति के कटु आलोचक तथा प्रभावशाली वक्ता के रूप में हमारे सामने आये हैं। आपने सरकार की राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय तथा विशेषरूप से मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति से क्षुब्ध होकर त्यागपत्र दिया था। उसके कुछ समय पश्चात ही आपने देश के विभिन्न भागों का दौरा कर समस्त देश की वस्तुस्थिति का सूक्ष्म निरीक्षण किया तथा एक राजनैतिक दल की स्थापना के रूप में स्वतन्त्र मार्ग अपनाया है। ब्रिटेन की तरह भारतीय संसद् में विरोधी दल के नेता के रूप में किसी भी व्यक्ति की कोई वैधानिक स्थिति नहीं है। किन्तु फिर भी मन्त्रिमण्डल के सदस्य होने के नाते उन पर जो सरकारी अनुशासन का बंधन होता, उससे मुक्त होने के कारण आपके विचार संसद के विरोधी सदस्यों की भावनाओं के द्योतक कहे जायें तो अत्युक्ति न होगी। आपने अभी हाल में हुई अपनी सार्वजनिक सभा में, देहली जिला बोर्ड के आम निर्वाचनों में हुई अव्यवस्था का तीव्र विरोध करते हुए एक ऐसे सत्य पर प्रकाश डाला है जो गम्भीरता से विचारणीय है। लोकतन्त्र का पालन करने वाले प्रत्येक देश में विरोधी दलों के नेताओं को चुनाव के दिनों में रेडियो द्वारा प्रचार करने का अवसर उसी प्रकार दिया जाता है जिस प्रकार कि सत्तारूढ़ दल के नेताओं को। किन्तु हमारे देश में, जो कि लोकतन्त्र के मार्ग पर निरंतर बढ़ता हुआ कहा जाता है। स्थिति सर्वथा भिन्न है। नेहरू जी समद में कांग्रेस दल के नेता होने के कारण देश के प्रधान मन्त्री हैं। देश की विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए यदि उनका कोई भाषण रेडियो से प्रसारित होता है तो इसमें किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति को आपत्ति नहीं हो सकती। किन्तु जब वे एक दल के नेता के रूप में किसी दल विशेष के पक्ष का समर्थन कर अन्य दलों का विरोध करते हैं अथवा उन्हें कुचलने की धमकी देते हैं, तब रेडियो द्वारा उनके भाषण के प्रसार की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया सम्भवतः जनता के मस्तिष्क में यही होती है कि पदारूढ़ दल के प्रचार साधनों की तुलना अन्य दल नहीं कर सकते। चाहे वे कितने ही सगठित तथा शक्तिशाली क्यों न हों। साथ ही जनता के हृदय में लोकतन्त्र के प्रति उपहास की भावना सीधा कर सकती है। लोकतन्त्र के प्रति उपहास तथा उपेक्षा की भावना वस्तुतः भारत को अवनति की ओर ले जायेगी। अतः अभी से इस बात की आवश्यकता है कि रेडियो का उपयोग अनुचित रूप से कोई दल विशेष सत्तारूढ़ होने के कारण न कर सके तथा विरोधी दलों के नेताओं को भी रेडियो द्वारा अपने विचार व्यक्त करने के समान अधिकार दिये जावें।

—×—

जिला बोर्ड के चुनावों में धांधली

स्वाधीन भारत में वयस्क मताधिकार के आधार पर सर्वप्रथम चुनाव दिल्ली जिला बोर्ड के हुए जिनका निर्णय हाल ही में घोषित किया गया है। यहां हमारा प्रयोजन किसी की जीत या हार से नहीं है। हम तो केवल भारत सरकार का ध्यान उस विशाल प्रदर्शन की ओर खींचना चाहते हैं, जो गत ३ अक्तूबर को राजधानी की प्रमुख सड़कों पर भारतीय जन संघ के तत्वावधान में निकला था। सहस्राधिक ग्रामीण हाथों में काले झण्डे लिए हुए जिला बोर्ड के चुनावों को फिर से कराये जाने की मांग कर रहे थे। उनका कहना है कि जिला बोर्ड के चुनाव निर्णय में धांधली की गई है, मतपात्रों की सीलें तोड़ी गई हैं और हारती हुई कांग्रेस को जिता दिया गया है। यह एक गम्भीर बात है। सरकार को चुनाव तो कम से कम पूर्णतः निष्पक्ष कराने चाहिये अन्यथा इसके परिणाम भयंकर हो सकते हैं।

एक नवोनदृष्टि कोण:—

राम ने सीताका परित्याग नहीं किया

[श्री गंगाप्रसाद शास्त्री]

राम द्वारा सीता परित्याग के प्रसंग को लेकर इधर कुछ समय से सीता के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुये कुछ व्यक्तियों ने भगवान राम पर कुछ आक्षेप किये हैं। किन्तु वस्तुस्थिति यह है और वाल्मीकि रामायण के कुछ श्लोक इसके स्पष्ट प्रमाण हैं कि राम ने सीता का परित्याग नहीं किया। बल्कि सीता ने वनगमन स्वेच्छा से ही किया, राम ने सीता का परित्याग नहीं किया था।

वा॰रा॰ के उत्तरकाण्ड में लिखा है कि जब सीता को गर्भ स्थिति हो गई तो उसने एक दिन रामचन्द्र जी से कहा—

तपोवनानि पुण्यानि द्रष्टुमिच्छामि राघव।
गंगातीरोपविष्टानामृषीणामुग्रतेजसाम्॥
फल मूलाशिनाम् देव पादमूलेषु वर्तितुम्।
एष मे परम कामो यन्मूल फल भोजनाम्॥
(वा॰ उ॰ अ॰ ४२।३३, ३४)

हे राघव! मैं गंगातीर पर रहने वाले उग्र तेजस्वी ऋषियों के पवित्र तपोवनों के दर्शन करना चाहती हूँ। आज कल मेरी यही इच्छा हो रही है कि मैं कन्द मूल भक्षण करने वाले ऋषियों के चरण कमलों में उपस्थित होऊं। इस इस समय तो मेरी यही तीव्र इच्छा है कि मैं कन्द मूल फल भोजन करने वाले ऋषियों के आश्रम में निवास करूं।

अब आप बताइये कि भगवान बुद्ध के वैराग्य से सीता जी के वैराग्य में क्या अन्तर है। सच तो है कि पुरुष की अपेक्षा स्त्री में न्यूनता ही क्या है।

सीता परित्याग कपोल कल्पित

सीता परित्याग का कोई प्रश्न ही शेष नहीं रह जाता है। प्राचीन काल में आजकल की आर्य जाति न थी। जिस रावण को राक्षस बताया जाता है, वह भी सीता को कामेच्छावश अपहरण करके नहीं ले गया। जिससे राम सीता को कैकयी द्वारा वनवास हुआ, उस समय सीता की आयु अठारह वर्ष की थी। यदि रावण कामुक होता तो वह वनवास के प्रथम वर्ष में ही उसका अपहरण करने का यत्न करता। ऐसा न करके जब सीता की आयु ३२ वर्ष की हुई। तब शूर्पणखा के नाक कान काटने पर उसने सीता का अपहरण किया। और सीता को लंका में ले जाकर अशोक वाटिका में स्त्रियों के पहरे में रखा। इन सब घटनाओं से स्पष्ट है कि रावण विदेशी था, और भारत में राज्य स्थापित करना चाहता था। ऋषि मुनि विदेशी रावण का विरोध कर रहे थे। राम को इसका नेता बनाया गया।

सीता हरण का राजनैतिक कारण

रावण ने देखा कि सुबाहु, मारीच, ताडका, खरदूषण और शूर्पणखा आदि अपने अनेक सेनापति राम द्वारा मारे गये या पराजित हो चुके हैं। मैं समुद्र पार से इतनी सेना ला नहीं सकता। इसके लिये सीता को ही लंका में ले चलना चाहिये। जब राम लंका में आवेगा तो मार लिया जा सकेगा। यदि नहीं आया और अपनी धर्मपत्नी को छोड़ बैठा तो कायर समझा जावेगा। और आर्य जनता इसका साथ छोड़ बैठेगी इस तरह मेरी भारत विजय की कामना पूर्ण हो सकेगी। सीता अपहरण का यही राजनीतिक कारण था। इसके अन्तस्थल में कामलोलुपता बिलकुल नहीं है। युद्ध विजयार्थ एक स्त्री को गोट बनाना ही रावण का राक्षसपन था। इसी नारी अपमान के कारण आर्य जाति ने रावण को क्षमा नहीं किया। लंका में रावण का सीता से अपनी कामवासना की पूर्ति की प्रार्थना करना या बलात्कार करने से उसका सिर फटने का श्राप होना आदि प्रतिनायक के सम्बन्ध में कल्पना कर ही ली जाती है। राम स्वयं रावण के के इस अभिप्राय को जानते थे। तभी तो अत्यन्त कठिन परिस्थितियों के बीच भी सीता के लिये लंका में पहुँचे। उस समय लंका की सारी प्रजा सुग्रीव आदि के समक्ष सीता को ग्रहण किया। सीता के साथ राम का राज्याभिषेक हुआ। बहुत कुछ समय के बाद गर्भ रहा। कई मास का गर्भ हो जाने तक किसी ने सीता की निन्दा नहीं की। परन्तु सीता के हृदय वैराग्य उदय के अनन्तर ही सीता की निन्दा की चर्चा सारी अयोध्या की प्रजा कहां से करने लगी। तुलसीकृत रामायण के प्रसिद्ध लव कुश काण्ड में रामायण के अनुसार ऐसी कल्पना करती है। राम जैसे राजा की प्रजा इतनी अयोग्य न थी, जो इस अनुचित विचार को स्थान देती। और वह भी इतनी देर के अनन्तर यदि सचमुच ही राम का उद्देश्य सीता परित्याग होता तो राम राजसूय यज्ञ के समय सीता की स्वर्ण प्रतिमा न बनवाकर दूसरा विवाह कर लेते। स्वतन्त्रता तथा गाम्भीर्य के साथ विचार करने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि सीता उच्च कोटि की रानी होने से वैराग्य के कारण बुद्ध की भांति स्वयं वन को गई थी। इस प्रकार जब सीता परित्याग सम्भव ही नहीं है तो उस पर राम-द्वेष वश टीका टिप्पणी करना तथा राम को व्यर्थ दोष लगाना युक्तियुक्त नहीं है।

देश-वार्ता

देश के विभिन्न भागों में दुर्भिक्ष की सम्भावना

देश के कई क्षेत्रों में अकाल की सभावना

आजकल देश के कई प्रमुख प्रमुख क्षेत्रों में दुर्भिक्ष की सी स्थितियां स्पष्ट दिखाई दे रही हैं। सम्पूर्ण महाराष्ट्र प्रदेश में पानी का अकाल पड रहा है और वहां पर रुई व मूंगफली की फसलें अच्छी न होने का डर दिखाई देता है। कस्बे में चवन्नी भर ही फसलें होंगी, ऐसा विचारा गया है। मवेशियों को चारा भी कम पड रहा है। बेरोजगारी बढ़ रही है।

आसाम में बाढ़ के कारण रोग और मृत्यु काफी सस्ती हो गई है। धान की पूरी फसलें की फसलें ही जलमग्न हो चुकी हैं।

जयपुर डिवीजन में भी आजकल वर्षा की कमी के कारण अकाल की सी स्थिति उत्पन्न हो गई है। नाज तेज होता जा रहा है। यहां तक कि बाजरा रुपये का २ सेर भी नहीं मिल पा रहा है। उदयपुर, जोधपुर और बीकानेर के साम्राज्य के सामान्य नागरिक तो अनाज और घास की कमी के कारण दूसरे प्रान्तों में भागे करते हैं।

हिसार में भी अन्न अकाल का अनुभव कदाचित नागरिकों को करना पड़े। कारण, यहां वर्षा हुई ही नहीं है और पिछले दो वर्षों में भी कई गांवों में कुछ भी फसल नहीं हुई है।

वर्तमान खाद्य मन्त्री श्री के० एम० मुन्शी ने ससद में, अनाज अभाव ग्रस्त क्षेत्रों में 'अविलम्ब और पर्याप्त कार्यवाही' कर रहे हैं, ऐसा बताया। उन्होंने यह आश्वासन दिया कि पश्चिम तथा उत्तरी भारत में अनावृष्टि तथा अल्पवृष्टि से उत्पन्न हुई स्थिति का सामना करने के लिए वे दृढ़ प्रयत्न हैं। और जिन क्षेत्रों में ऐसी सभावनाएं हैं वहां वहां के मुख्य मन्त्रियों और खाद्य मन्त्रियों के वे निरन्तर सम्पर्क में हैं। स्थितियों का विशेष पर्यवेक्षण हो रहा है और केन्द्रीय सरकार भी ऐहतियातन कार्रवाई कर चुकी है। एक विशेष अधिकारी स्थिति का अध्ययन कर रहा है। और वे (स्वय श्री मुन्शी) स्वय श्री किदवई राव के साथ राज्यों का दौरा करने की सोच रहे हैं।

चुनावों के लिए विभिन्न दलों की सरगर्मियां

चुनाव चर्चा जो आज जनता और राजनैतिक संस्थाओं का प्रमुख विषय बना हुआ है, इसमें विजय प्राप्त करने के लिये एक सयुक्त मोर्चा बनाने के [illegible], किसान मजदूर प्रजापार्टी और समाजवादियों में एक समझौता हो जाने की सभावना है।

इन लोगों में इस उच्च स्तर पर समझौता होगा कि पहले तो यह दल (मिला जुला मोर्चा) हिंसा में विश्वास रखने वाले और सम्प्रदायिक प्रतिगामियों का उन्मूलन करें तब और यह व्यवस्था की जावे कि तीनों दलों के नामजद उम्मीदवारों में कोई भी सघर्ष न हो। समझौते के अनुसार यदि किसान मजदूर प्रजादल का उम्मीदवार कांग्रेस को स्वीकार हो तो वहां कांग्रेस चुनाव न लड़ेगी और विपरीत स्थिति में किसान मजदूर प्रजापार्टी भी ऐसा ही करेगी।

हाल ही में राजस्थान किसान सभा के एक प्रमुख नेता कांग्रेस को आगामी चुनावों में भारी हार देने और पदच्युत करने के लिए एक सयुक्त मोर्चा बनाने के विषय में वे भारतीय जनसघ और समाजवादी आदि दलों से समझौता करने के लिए प्रयत्नशील हैं।

आर्य महासम्मेलन मेरठ में

मैदान नौचन्दी का मला म रूहम आर्य सार्वदेशिक सम्मेलन दिनाङ्क २० अक्टूबर से १ नवम्बर तक होने जा रहा जिसके सभापति प० विनायक राव विद्यालंकार होंगे २८ अक्टूबर को नगर कीर्तन व सभापति का जलूस निकलेगा और २९ ३० के दो दिन सार्वजनिक सभा के मुख्य कार्यक्रम के लिए नियत हैं। शेष दिनों में अन्य सम्मेलन होंगे। इस से पूर्व २० से २६ अक्टूबर तक एक चतुर्वेद यज्ञ भी होने जा रहा है। इच्छुक पत्रकारों को स्वागतसमिति से स्वीकृति ले लेनी चाहिए।

संसद में पत्र विधेयक की कड़ी आलोचना

ससद में

विधि मन्त्री डा० भीमराव अम्बेडकर ने ससद म एक विधेयक १९५०—५१ में जन प्रतिनिधित्व अधिनियमों में और सशोधन करने के विषय में पेश किया जिसके अनुसार यदि कोई मतदान पेटी नष्ट कर दी जाय या उसमें कुछ गड़बड़ की गई हो तो उस मतदान केन्द्र में फिर से ही चुनाव होंगे तथा चाहे केवल एक मतदान स्थान की पेटी में गड़बड़ हुई हो किन्तु नए चुनाव सारे मतदान केन्द्र में करने होंगे। इस सशोधन विधेयक में कबायली क्षेत्रों के प्रतिनिधित्व की भी व्यवस्था की गई है।

ससद में समाचारपत्र (आपत्तिजनक सामग्री) विधेयक के प्रवर समिति द्वारा दिए गए रूप पर विचार प्रारम्भ कर दिया है। गृहमन्त्री और इस बिल के सचालक श्री राजगोपालाचार्य ने आलोचकों को सुझाया कि अब इस विधेयक के खड-खड पर विचार आरम्भ हो क्योंकि प्रवर समिति के सुपुर्द करने से पूर्व सदन मे इस पर काफी बहस हो चुकी है। व विधेयक को उन्होंने कहा कि काफी उदार बना दिया गया है।

इस कार्यविधि मे कुछ लोगों ने आपत्ति भी उठाई। और श्री देशबन्धु गुप्त का यह प्रस्ताव कि बिल पर जनमत जानने के लिए उसे प्रचारित किया जाय अस्वीकृत हो गया। श्री नजरुद्दीन का भी प्रस्ताव अस्वीकृत ही हुआ जिसमें उन्होंने बिल को पुन प्रवर समिति को देने और उसम से जमानत और जब्ती सम्बन्धी खडों का निकाल दिया जावे तथा अपराधियों के लिए भारतीय दड विधान तथा ज० ता फौजदारी के अनुसार कानूनी कार्यवाही की व्यवस्था करे, के विषय में प्रकाश डाला था।

इसके पश्चात् प्रवर समिति की रिपोर्ट पर विचार हुआ। जिसमें बहस का श्रीगणेश करते हुए श्री नजरुद्दीन ने यह आपत्ति की कि विधेयक का मसविदा बड़ी जल्दी में तैयार किया है और प्रवर समिति ने उस पर बिना विशेषज्ञों के परामर्श की मदद के विचार किया। विधेयक पर उनकी आपत्ति यह थी कि विधेयक पत्रों के विरुद्ध भेद भाव की नीति बताता है। और कई खड समाचारपत्रों की स्वतन्त्रता का गला घोंटते हैं।

प्रो० रगा ने भी विधेयक की आलोचना में कहा कि विधेयक पर प्रवर समिति ने उसमें बिना कोई खास परिवर्तन किए हुए ही अपनी मुहर लगा दी है। और यदि यह बिल पास हो गया तो उससे देश और समाचारपत्रों को बड़ी ही हानि पहुँचेगी। प्रो० रगा ने यह शिकायतें भी कीं कि गृह मन्त्री ने समिति के सम्मुख विधेयक की आवश्यकता के बारे में पूर्ण तथ्य नहीं रखे।

श्री बी० शिवाराव ने एक श्रमजीवी पत्रकार के रूप में गृहमन्त्री से बिल को वापस ले लेने और सम्पादकों तथा पत्रकारों की मित्रता प्राप्त करने के लिए कहा।

इसके पश्चात् अन्तिम आलोचक श्री रामनाथ गोयनका ने श्री राजगोपालाचार्य से अपना कोई व्यक्तिगत मतभेद न बताते हुए यह कहा कि ऐसी विश्व म आज कोई भी सरकार नहीं जहां ऐसा कानून हो। हमारी सरकार को हो क्या गया है और क्या वह पुन १८८१ की स्थिति को वापस बुलाना चाह रही है?

—

भारतीय जन-संघ की एक सार्वजनिक सभा में प्रो० विश्वनाथन भाषण दे रहे हैं

विजयादशमी का राष्ट्रीय पर्व

● श्री शिवनाथ दुबे 'साहित्यरत्न'

भाद्र के समाप्त होने पर आश्विन का आगमन होता है। उच्च घोष करने वाले घन क्रमश विदा होने लगते हैं। आकाश निरभ्र होने लगता है और उस समय जबकि आश्विन शुक्ल का अर्द्धपक्ष समाप्त होने पर आता है, तो लगता है कि प्रकृति सद्य स्नाता की भांति पवित्र रूप लावण्य सम्पन्न होकर सामने आयी है। आकाश पूर्णतया स्वच्छ हो जाता है। पीयूषवर्षी चन्द्र अपनी सुधामयी शीतल किरणें पृथ्वी पर बिखेरने लगता है। तारिकायें खिल उठती हैं। पृथ्वी पर सर्वत्र सोने सरीखे पीले पीले धान्य झूमते दिखते हैं। मन्द समीर बहता है। मेदिनी पुलकित हो जाती है और जन जन का मन आनन्द विभोर होने लगता है।

इसी समय आती है विजया दशमी प्रकृति के मोहक रूप के साथ इसका आगमन स्वर्ण संयोग की भांति होता है। आर्यावर्त अपने में नई स्फूर्ति लाता है, और नवीन शक्ति को सञ्चरित होते पाता है। तेज सम्पन्न क्षत्रिय जाति अपने में वीरत्व दर्शन करती है। वह सजग होकर धर्म की रक्षा एवं अधर्म विनाश के लिये कटिबद्ध होती है। अन्याय को मिटा देने के लिये वह कृतसंकल्प हो जाती है और ब्रह्मवर्चस्व की सहायता लेकर भूमण्डल पर परम पवित्र सनातन धर्म की स्थापना के लिए प्रस्तुत होती है।

यह विजया दशमी आर्यावर्त का अत्यन्त पुरातन और परम पुनीत पर्व है। इसे यदि यों कहें कि आर्यों ने पृथ्वी पर अपने चरण रख तब से ही वे इस महिमामयी विजयोन्मादिनी विजयादशमी को सोत्साह मनाते आ रहे हैं तो अयुक्ति नहीं होगी। इस प्रकार वे प्रतिवर्ष प्रसुप्त प्राणोंमे नवजीवन फूंकते चले । वे सदा ही इस तिथि को अपने शस्त्रों का पूजन और वीरता वृद्धि के उपकरणों के साथ धर्म अभिवृद्धि के प्रयत्न म जुटते थे।

नारी शक्ति का प्रतीक

विजयादशमी नवरात्रि के बाद आती है। इसके पूर्व नौ दिनों तक महिष विमर्दिनी श्री दुर्गा की अर्चना होती है। यह अर्चना अत्यन्त प्राचीन समय स चली आ रही ह। भगवती दुर्गा ने पापात्मा महिषासुर का सहार करके जगत को आश्वस्त किया था। पाप का प्रक्षालन करके पुण्य का स्थापन किया था। अधर्म का मिटाकर धर्म की श्रीवृद्धि का की थी। महान् विपत्ति के रूप म उदित महिषासुर क रक्त का उन्होंने पान कर लिया था। भारतीय नारियां धर्म संस्थापन और वीरता म महा भयानक असुरों से भी आगे हैं यह उन्होंने स्वय सिद्ध कर दिया था। शुम्भ के दूत से उन्होंने दृढ़ता के साथ निर्भीक वाणी कहदी —

'यो मा जयति संग्रामे यो दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥

'जो मुझे सग्राम म जीत लेगा, जो मेरे अभिमान को चूर्ण कर दगा, तथा ससार में जो मेरे समान बलवान् होगा, वही मेरा स्वामी होगा।

इस प्रकार भगवतीने नारी में अद्वितीय शक्ति है, जगत को बता दिया और तभी से नवरात्रि में उनकी अर्चना होती आ रही है तथा आश्विन शुक्ल दशमी को श्री काली की सवारी निकलती है। इस प्रकार दशमी का उत्सव अत्यन्त प्राचीन काल से मनाया जाता रहा है आर्यावर्त के स्त्री पुरुष इससे धर्म की प्रेरणा लेते आ रहे हैं।

ऐतिहासिक महत्व

किन्तु इधर दो ऐसी ऐतिहासिक घटनायें घटीं जिनसे यह और नये रूप में नूतन उत्साह से मनायी जाने लगी। पहली घटना तो उस समय की है जब पाडव द्यूत में हारकर वनवास के लिये निकले थे। उस समय अज्ञातवास करने के लिये विराट के यहा जाते समय अर्जुन ने अपने अस्त्रों को शमी वृक्षपर रखदिया तथा एक वर्ष बाद उत्तर के साथ गोरक्षार्थ युद्ध करने के लिये इसी तिथि को उस पर से अस्त्र उतारा और विजय प्राप्त की। शमी ने अर्जुन के अस्त्रो की एक वर्ष तक देवताओं की भांति रक्षा की थी। पुन दूसरी घटना तब की हे जब दशरथ नन्दन श्रीराम चन्द्र ने अपनी प्रियतमा सीता देवी के उद्धारार्थ लकाधिपति रावण पर आक्रमण किया। भगवान् श्रीराम विजयादशमी के दिन ही उपस्थित हुए थे और उन्होंने विजय प्राप्त की थी। इस कारण इस तिथि का महत्व और अधिक होगया।

विजयादशमी को दशहरा भी कहते हैं। "ज्योतिर्निबन्ध" नामक ग्रन्थ में आया है कि आश्विन शुक्ल दशमी को तारा उदय होने के समय "विजय" नामक काल होता है। वह सब कार्य की सिद्धि को देने वाला होता है।

"आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यां तारकोदये।
स कालो विजयो ज्ञेय सर्वकार्यार्थ सिद्धये॥

आश्विन शुक्ल दशमी पूर्वविद्धा निषिद्ध समझी जाती है। परविद्धा शुद्ध है, परन्तु श्रवणयुक्त सूर्योदयव्यापिनी तिथि सर्वश्रेष्ठ समझी जाती है।

विजयात्रा का पुनीत पर्व

इस तिथि को शत्रु पर आक्रमण करने से विजय की प्राप्ति होती है। महाराष्ट्रों द्वारा अन्तिम पेशवाओं तक इस तिथि को कभी उत्तर की ओर और कभी दक्षिण की ओर प्राय आक्रमण हुआ ही करता था। निजाम पर भी कई आक्रमण इसी तिथि को हुए थे और उसने विवश होकर सन्धि की थी।

शत्रु न होने पर भी राजाओं और क्षत्रियों के लिये आवश्यक है कि वे सीमोल्लंघन की प्रथा पूरी कर लिया करें। इससे उन्हें अपने पूर्वजों के गौरव की स्मृति एवं नूतन शक्ति की प्राप्ति होगी। हेमाद्रि में लिखा भी है कि युद्ध का कोई प्रसग उपस्थित न होने पर भी राजा को अपनी सीमा का उल्लंघन परम पावन कर्तव्य समझ कर करना चाहिये।

महाराष्ट्र के निवासी आज भी इस दिन अपने नगर से बाहर जाते हैं और सीमोल्लंघिनी क्रिया को पूरी करते हैं। वे सीमा के बाहर पूर्वमुख खड़े होकर शमी वृक्ष के मूल में जल चढ़ाते हैं और विधिपूर्वक उसकी पूजा करके प्रार्थना करते हैं।

"शमी, शमय मे पाप,
शमी लोहित कण्टक।
धारिण्यर्जुन बाणानां,
रामस्य प्रियवादिनी॥
करिष्यमाणयात्रायां,
यथाकाल सुख मम।
तत्र निर्विघ्नकर्त्री त्व,
भव श्रीरामपूजिते॥

श्री राम ने लंका पर चढ़ाई के लिये प्रस्थान किया तो शमीवृक्ष ने "आपकी विजय होगी" यह प्रिय वाणी कही।

इसके बाद पूजा स्थलों की मिट्टी, तण्डुल, एक सुपारी और शमी पत्र लेकर कार्यसिद्धि की कामना से अपने घर आते हैं। यह प्रथा अत्यन्त उत्तम है। इसके पालन से प्रत्येक रीति से लाभ ही होता है।

भारतव्यापी त्यौहार

विजयादशमी भारत के प्रत्येक भागों में मनायी जाती है। यह प्रधानतया क्षत्रियो का त्यौहार है। इस कारण इसकी विशेष शोभा स्वतन्त्र रियासतों मे देखने में आती थी। स्वर्ण झूलों से सुशोभित गयन्द निकलते थे, अश्वों की पंक्ति अलग झूमती थी और इसी दिन उनके समस्त अस्त्र पुन चमकीले किये जाते थे। राजपूत इसे अब भी इसी उत्साह से मनाते हैं। भारत के समस्त प्रान्तों में एक मास पूर्व ही रामलीला होती है। उत्तरी भारत में तो प्राय सभी नगरों और कस्बों में भगवान् श्रीराम के जीवन का इस मास में अभिनय किया जाता है। विजयादशमी के दिन श्रीराम रावण पर विजय प्राप्त करते हैं और लंकाधिपति का वध होता है।

सांस्कृतिक पर्व

विजयादशमी हमारा जातीय त्यौहार और सांस्कृतिक पर्व है। इसी दिन श्रीराम ने रावण पर विजय प्राप्त करके यह सिद्ध कर दिया था कि भारतवासी स्त्री का अपमान नहीं सह सकते। एक सीता को चुराने वाले रावण की सोने की लंका जलाकर राख कर दी गयी। वह अपने परिवार के साथ नष्ट [illegible]

(शेष पृष्ठ २२ पर)

महाकाली

ज्योतिष शास्त्र का सार

★ श्री सर्वव्यापक दयाल पांडे

शब्द शास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं च कल्पः करौ। या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका पाद पद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः ॥

उपरोक्त श्लोक का अर्थ है कि वेद पुरुष का शब्द शास्त्र मुख है। ज्योतिष शास्त्र नेत्र हैं, निरुक्त शास्त्र कान है, कल्प शास्त्र हाथ हैं, शिक्षा शास्त्र नासिका है तथा छन्द शास्त्र पाद हैं, इससे ज्ञात होता है कि हमारे पूर्व आचार्य महर्षि भास्कराचार्य जी ने ज्योतिष शास्त्र को कितना अधिक महत्व दिया था कि वेद भगवान् की आंख की उपमा दे डाली है। अर्थात् जिस प्रकार हमारे सब अंगों में चक्षु ही सर्वश्रेष्ठ है, उसी प्रकार वेदांगों में ज्योतिष ही सर्वश्रेष्ठ है। क्योंकि जब हम इस ओर अधिक ध्यान देंगे तो प्रतीत होगा कि इस शास्त्र के ज्ञान के बिना हम कोई भी यज्ञादि कार्य उचित समय पर नहीं कर सकते और समय का ज्ञान हमें ज्योतिष शास्त्र के द्वारा ही होता है। भारतीय तथा पाश्चात्य देशवासी और उस सभ्यता में लिप्त बड़े-बड़े विद्वान इस सत्य से मुख नहीं मोड़ सकते कि अमुक मास, पक्ष, दिन तथा समय सूर्य ग्रहण अथवा चन्द्र ग्रहण होगा, जो कि उसी प्रकार होता भी है और यह ज्योतिष-शास्त्र की देन है। इसी कारण भारतवासियों का तो कहना ही क्या अन्य देशवासी भी भारत के ऋणी हैं।

पहिले पहल कुछ विद्वानों ने इस शास्त्र को अन्य देशों की ही देन मान कर रखा था, परन्तु अब तो यह बहुमत से सिद्ध हो चुका है कि यह शास्त्र उतना ही पुराना है, जितनी पुरानी कि भारत की सभ्यता। इस बात के अनेक प्रमाण विद्यमान हैं कि ज्योतिष-शास्त्र ने भारत में ही जन्म लिया तथा यहीं पर यह पूर्णता को प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् इस शास्त्र को अरब, यूनान, सीरिया आदि देशवासियों ने अपनाया, जिसकी पुष्टि निम्नांकित उदाहरणों से होती है।

एलबरूनी, 'जो कि समस्त संसार का मान्य महापुरुष था' का कहना है कि ज्योतिष शास्त्र में भारतवासी सभी जातियों से बढ़ कर हैं। क्योंकि अन्य सभी देशों में हजार के आगे की संख्या के लिए कोई क्रमबद्ध शब्द नहीं हैं उदाहरणार्थ अंग्रेजी भाषा में हजार के पश्चात् मिलियन और इसके पश्चात् बिलियन आता है बीच वाली संख्याओं के लिये कोई शब्द नहीं, जब कि भारत में क्रमबद्ध १८ अंकों की संख्याओं के लिए भिन्न २ नाम हैं। अरब देश में गणित विद्या को हिन्दसा कहा जाता है। इससे प्रतीत होता है कि इस शास्त्र को हिन्दुस्थान से लेते समय अन्य शब्दों का प्रयोग न करते हुए हिन्दसा शब्द का ही प्रयोग किया जिसका कि अर्थ है हिन्द जैसा. इसके लिए श्री मैथिलीशरण जी ने अपनी भारत भारती में बड़े ही सुन्दर ढंग से वर्णन किया है जो कि निम्न प्रकार से है।

> डर कर कठोर कलंक से,
> जा सत्य के आतंक से।
> कहते अरब वाले अभी तक,
> हिन्दसा ही अंक से ॥

एक प्रसिद्ध अंग्रेज ज्योतिषी कीरो ने लिखा है कि मैंने भारत भ्रमण करते समय ऐसे २ खण्डहर देखे जो किसी भी देश की सभ्यता से सहस्रों वर्ष पुराने हैं और इन खण्डहरों के प्रति प्राचीन शिल्पकारी के ज्ञाताओं का भी यही मत है कि इन खण्डहरों में ज्योतिष-शास्त्र सम्बन्धी ऐसे २ चिन्ह मिले हैं जो कि उस समय की उच्च गणित विद्या के प्रतीक हैं।

इतना तो सभी विद्वान् मानते हैं कि सूर्य, चन्द्र आदि कोई ग्रह अथवा सितारे तो अवश्य हैं, और इस बात को मानने में भी किसी को कोई आपत्ति नहीं कि इन्हीं सितारों की चाल पर हम दिन, रात, पक्ष मास, वर्ष आदि का विभाजन करते हैं। इन्हीं सात ग्रहों अथवा सितारों को शास्त्र में सप्त आदित्यों के नाम से पुकारा गया है तथा इन्हीं के आधार पर वारादि का नामकरण हुआ है जिन्हें मानने में किसी को कोई आपत्ति नहीं, परन्तु जब हम यह कहते हैं कि ज्योतिष शास्त्र से समय आदि का ही ज्ञान नहीं होता बल्कि इससे हमारे जीवन में होने वाली प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष घटनाओं तथा उनके होने के समय का ज्ञान भी सहज ही में हो जाता है तो बहुधा यह अनुभव किया गया है कि अधिकांश व्यक्ति इससे सहमत नहीं होते और कुछ तो इस फलित ज्योतिष को एक ढोंग ही मानते हैं। इसका मुख्य कारण तो यह है कि इस शास्त्र की सत्यता ठीक ठीक समय पर आधारित है, जिसका कि ज्ञान होना अति आवश्यक है और वह होता नहीं, बहुधा यही बताया जाता है कि अमुक कार्य लगभग बारह बजे हुआ था बत लाइए क्या फल होगा भला वह बात किस प्रकार ठीक मानी जा सकती है क्योंकि ज्योतिष शास्त्र तो एक एक मिनट अथवा सेकिण्ड पर आधारित है फिर लगभग १२ बजे वाली बात किस प्रकार ठीक हो सकती है। और यदि किसी गांव का विषय हुआ तब तो फिर कहना ही क्या फिर तो सिवाय इसके और कुछ बतलाना बड़ा ही कठिन है कि समय लगभग आधी रात के होगा या शाम का भोजन करके उठे थे उस समय अमुक कार्य हुआ था। बताइये इस प्रकार के समय से आप ठीक २ फलित किस प्रकार चाह सकते हैं। इन्ही सब कारणों से ज्योतिष को लोग एक ढोंग कहते हैं। कुछ अग्रज विद्वानों का कहना है कि गणित ज्योतिष फलित रूपी मूढ़ मां का विद्वान बेटा है। हो सकता है कि उन देशों में फलित मूढ़ मां के सदृश्य हो। और वास्तव में कुछ है भी ऐसा ही कि उन देशों को फलित का यथार्थ ज्ञान अभी तक नहीं हो सका परन्तु भारत में ऐसे अनेक विद्वान हो चुके हैं जो फलित शास्त्र की तह तक पहुँच चुके हैं और उनका फलित कभी झूठा नहीं हुआ, और दूसरे हमारे पूर्व आचार्यों ने सूर्य का चन्द्रमा को बार २ आकाश में भ्रमण और उसके प्रभाव से ऋतु परिवर्तन तथा रोगों को फैलते तथा नष्ट होते देखा तो उन्हें फलित ज्ञान हो गया। अब उन्हें इस बात की चिन्ता हुई कि इन ग्रहों की चाल का पता लगाया जाय ताकि ठीक २ समय का ज्ञान भी हो सके। उन महापुरुषों ने इन ग्रहो की चाल व गति का ठीक २ पता लगा लिया इतना ही नहीं किया बल्कि इन ग्रहों की पृथ्वी से दूरी इनका भार और परिधि आदि सभी वस्तुओं का पता लगाया सूर्य अथवा चन्द्रमा के अलावा उन्होने अन्य ग्रह भी खोज निकाले जिनका ऋतुओं तथा रोगों पर विशेष प्रभाव होता है। उदाहरणार्थ यह तो आज सभी विद्वान मानते हैं कि ऋतु परिवर्तन सूर्य के पृथ्वी से दूर अथवा पास रहने के कारण होता है अर्थात् जब सूर्य पृथ्वी के पास होता है तो गर्मी अधिक पड़ती है और ग्रीष्म ऋतु होती है परन्तु जब सूर्य पृथ्वी से दूर होता है तो गर्मी कम पड़ती है तथा शीत ऋतु होती है, तथा जो देश भूमध्य रेखा के निकट होते हैं, जिन पर सूर्य की किरणे सीधी पड़ती हैं उनका ताप-मान अन्य देशों की अपेक्षा अधिक होता है और उस तापमान का वहा के निवासियों के जीवन पर एक गहरा प्रभाव पड़ता है यहां तक कि उनका रंगरूप काला-कुरूप हो जाता है। यह जो आज के प्रत्येक इतिहासकार ने लिखा है कि किसी देश का इतिहास पढ़ने से पहिले उस देश का भूगोल पढ़ लेना अति आवश्यक है क्योंकि जो देश गरम होगा उसके निवासी अधिक परिश्रम नहीं कर सकेंगे और ठंडे देश के निवासी गर्म देश के निवासियों की अपेक्षा अधिक परिश्रमी तथा उन्नतिशील होंगे। इन सब बातों के अलावा कई रोग तो ऐसे हैं जिनका इन ग्रहों से सीधा सम्बन्ध है। जैसे आधा शीशी का दर्द सूर्य उदय से सूर्यास्त तक रहता है, उन्माद के रोगी को पूर्ण चन्द्रमा की चांदनी बहुत ही हानिकर होती है उसका रोग चांदनी में बहुत ही बढ़ जाता है। उपरोक्त सभी बातों के कहने का तात्पर्य यह है कि पहिले ग्रहों का हमारे ऊपर प्रभाव हुआ अर्थात् पहिले फलित का जन्म हुआ फिर गणित का इसलिए यह कहना सर्वदा अनुचित है कि फलित रूपी मूढ़ मा का गणित एक चतुर पुत्र है।

कहानी

सेतु भंजन

★ श्री वचनेश त्रिपाठी

राज्य-कार्यों से निवृत्त होने के उपरान्त वे सरयू-तट की ओर चल पड़े; मन्त्रियों ने देखा कि आज उनके भव्य ललाट पर कुछ चिन्ता-रेखायें स्पष्ट हो उठी हैं और तब वे भी उनके साथ ही चल पड़े।

"आप लोग भी चलेंगे, आइये— इन दिनों साकेत की भूमि—वन और सरयू की धारा मुझे न जाने क्यों अधिक मनोहारिणी लग रही है, अधिक आकर्षक"' चलते-चलते वे बोले किंचित् स्मित के साथ।

'साकेतपुरी तो सदा से ही आपको प्रिय रही है, किन्तु जब अपने मन में कोई नवीनता रहती है तो अन्य वस्तुओं के प्रति भी मन के भावों में उसका प्रभाव प्रत्यक्ष हो उठता है"' वृद्ध मंत्री की यह जिज्ञासा कि इस समय उन्हें कौन सी चिन्ता ने घेर रखा है— उसके भारी गम्भीर स्वर में मूर्त हो उठी।

'ठीक कहते हैं आप'— इस संक्षिप्त उत्तर से मन्त्रियों को तनिक भी समाधान न प्राप्त हुआ।

'कई दिनों से हम लोग देखते हैं कि [illegible] बिना किसी को साथ लिए आप [illegible]ी कहीं चल देते हैं और उस समय [illegible] अनुभव होता कि जैसे कहीं हमें ऐसा [illegible] घटना घटित हो रही हो। कोई विशेष [illegible] लोगों को नहीं देखने [illegible] जिसे आप [illegible] दिना चाहते।'

[illegible] वे कुछ इसके उत्तर में, बोले [illegible] उनके मुख की गम्भीरता अधिक [illegible] किन्तु लगा [illegible] भीभूत हो उठना चाहती [illegible] नहीं चाहते। है, यद्यपि [illegible] ट निकट आ गया था और सरयू [illegible] की हरीतिमा सामने हिलोरें उसके [illegible] थीं।

'बात ऐसी है कि बिना अन्तिम निश्चय किये मैं उसे आप लोगों से बताना नहीं चाहता था अभी, तथापि आप चिन्तित न हों मेरी ओर से। इसलिए अब बता देना ही उचित समझता हूँ"' एक स्थान पर सब के साथ बैठते हुए वे बोले।

'वैदेही की स्मृति अभी तक दिन में कई बार हरी हो ही उठती थी और उन क्षणों में लगता था कि इस भरे-पूरे संसार में, सुखी-समृद्ध साकेत में और शान्ति-समता के बीच पोषित-सवर्धित हो रहे देश मे राम एकाकी है, समष्टि से विलग हो मेरा 'अह' मुझे जैसे प्रबोध दे रहा हो कि 'तू सभी से भिन्न अस्तित्व वाला राम इस धरती पर दुखी है—सत्य है', मैं इस प्रबोधन की अवमानता करता रहता था सदैव यह कह कर कि राम का अस्तित्व इस जग-जग से भिन्न क्यों होने लगा— केवल इस कारण कि औरों के सुखी जीवन से वह दूर है। वह दुखी हो सकता है, किसी क्षण और उसका हृदय किसी गहरे संताप का भी अनुभव कर सकता है पर इस से क्या वह अन्य सब से पृथक् हो रहेगा?" बोलते बोलते वे कुछ रुके; अन्तर का विषाद धीरे-धीरे उनकी सौम्य मुखाकृति पर व्याप्त होता जा रहा था।

मन्त्रिगण मौन थे सिर लटकाये हुए, मानों उन्हें ज्ञात था कि आगे वे क्या कहने वाले हैं।

'जो हो, मैं इस प्रथकता का अस्तित्व ही नहीं मानता भले ही मेरे मन की अस्थिरता मेरे सस्कारों से संघर्ष करती रहे। हां तो, वैदेही का दुखद अन्त अभी हुआ ही था कि भैया लक्ष्मण ने भी मुझे सदा प्रिय लगने वाले अपने स्नेह पूरित नेत्र बन्द कर लिए और तब मेरा विद्रोही मन मेरी प्रतारणा करता हुआ बोला— राम, तू देश-बान्धवों के बीच में चाहे जितना अपने को समरस करने का प्रयत्न करे, पर इतने बड़े संसार में निश्चित ही तू एकाकी है और उसके साथ ही मानव के दुख-संताप से भी तेरी मुक्ति नहीं। वैदेही गयी। लक्ष्मण भैया भी आज इस संसार में नहीं और अब सोचता हूँ कि मुझे भी क्या करना है अधिक दिन जीवित रह कर। देश आज निरापद है, सुखी है, समृद्ध भी, उसकी धरती पर आज वास्तविक अर्थों में मानव कहलाने योग्य प्राणी का वास है— जिनकी सन्तानें युगों-युगों तक मानवता की थाती संरक्षित रख सकेंगी, सोचते सोचते लगता है कि सत्य ही मेरे अपने जीवन का उद्देश्य अब भविष्य या वर्तमान क्षणों में कुछ नहीं रहा तभी तो किसी समय यदि वैदेही को स्मरण कर अश्रुपात करता हूँ तो कभी लक्ष्मण भाई के वियोग को असह्य जान अनुभव होता है कि जैसे धरती, आकाश; सूर्य चन्द्र, तारक, अखिल सृष्टि बिना उस एक भाई के शून्यवत है ·· ·· ।'

वायु के झकोरे सरयू की लहरों से खेल रहे थे और उस समय वे और ऊंची हो उठती थीं, उन्होंने एक क्षण रुककर सरयू की उस सदैव गतिमान रत्न हीरक राशि जैसी बून्दों को उछालती चलती धारा को देखा फिर बोले'—

'जब तक इस सरयू की भांति जीवन में गति रहे तब तक तो लगता है कि हां हम जीवित हैं और इस जीवन का क्या उद्देश्य है तथा उद्देश्य सिद्धि के साधन क्षणों में विघ्न विपदाओं के बीच में आनन्दानुभूति होती है किन्तु गतिहीनता अथवा जड़ता जीवित मानव का लक्षण नहीं, इसकी संगति मनुष्य की श्वास लेने तक की क्रिया को कष्टसाध्य बना डालती है। इन दिनों मेरी दशा भी बहुत कुछ इसी प्रकार की हो गई है और मुझे लगता है कि मेरा अन्त भी निकट ही है। अस्तु—सोचता हूँ एक बार चलते चलाते लंका हो आऊं। देखूं विभीषण जी की कैसी क्या व्यवस्था चल रही है। उनसे मुझे एकबार यह भी कहना है कि अब लंकावासी मेरे ही द्वारा बांधे गये सेतु से कहीं किसी समय कावेरी-तट पर न आ उतरें। इधर कई दिनों से हनुमान, सुग्रीव, अंगद, जाम्बवान् तथा नल आदि सुहृदों का भी बार-बार स्मरण हो आता है। सोचता हूं आगे फिर हो न हो, एक बार उन सब से भी भेंट कर लूं।'

उनकी बातों ने मंत्रियों के मुखों पर विषाद और शोक का जैसा अन्धकार सा बिखेरा। 'कब तक जायेंगे आप?'— प्रश्नकर्ता के स्वर में किसी निराश्रित की निराशा मूर्त हो उठी। 'शीघ्र ही, और हां एक बात और कहनी है। राज्यकार्य संचालन हेतु यदि कुश की ओर आप लोगों की रुचि हो, यदि वह इस योग्य दिखे तो उससे कार्य लीजिये। मैं सोचता हूँ राज्य-कार्य की चिन्ता करने योग्य उसकी सामर्थ्य हो गई है फिर भी आप लोग भली भांति सोच विचार कर ही इसके लिए निर्णय करें।' इसके बाद वे शान्त हो रहे और सरयू की निर्मल सघन जलराशि पर उनकी दृष्टि स्थिर हो रही मानों वे उधर देखकर भी कुछ नहीं देख रहे हैं। लगता था कि कुछ खीजती हुई सी उनकी दृष्टि किसी अज्ञात लोक में भटक रही है।

× × ×

गो-सम्पत्ति अतुलनीय है इसलिए समृद्ध किष्किन्धापुरी में धन-धान्य का अभाव नहीं रहता कभी। राघव की संगति ने सुग्रीव में सदा निर्वैद उत्पन्न कर दिया है इसलिये उनकी हृदयविपन्नी परोपकारिता तथा प्रजारञ्जन के भावों से सदैव स्फुरित रहती है। बालि की भांति प्रजा उनको भोग्य सामग्री नहीं— मां की मूर्ति का प्रतिरूप है जिनकी सेवा करते करते मरण प्राप्ति में भी 'श्रेयः— आत्यन्तिक सुख अनुभव करने की उनकी धारणा है।

किष्किन्धापुरी की उर्वरा भूमि में बसा मानवों की वानर जाति का कृषिजन्य समाज दैनन्दिन आत्म-सम्पदा और संस्कृति के बीच को संवर्धित कर रहा था। स्वभाव से ही यह समाज संचलनशील था। उद्योगशीलता इसका विशेष गुण था। अकर्मण्य रहकर घर में पड़े रहना निन्द्य समझा जाता था। वानरों से किसी का त्रास पीड़न तथा संकट-ग्रस्त अवस्था नहीं देखी जाती थी। उनके चाहे सर्वस्व का नाश हो जाय पर किसी संत्रस्त तथा पीड़ित जन की सहायता करना वे अपना प्रमुख कर्तव्य समझते थे।

बालि से उन्हें अत्यधिक घृणा थी किन्तु उसने ऐसा षड्यन्त्र रच रखा था कि जिसकी शक्ति के सम्मुख अक्सर पराजित हो गया था तथा स्वयं बालि उनके सर्वप्रिय सिद्धान्तों की हत्या कर अपना स्वेच्छाचारी शासन उन पर लादे हुए था इसी समय साकेत के वनवासी राघव आये और इस वैषम्य का अन्त कर दिया। और तब वे सुखी-उल्लसित हो उनकी जय जयकार कर उठे। लंकेश का नाम उन्होंने भी सुन रखा था; यह भी सुना था कि उसके आदमी जहां तहां उत्पात मचा रहे हैं किन्तु जब स्वयं राघव ने उनके द्वार तक पैदल आकर लंकेश द्वारा देश पर आने वाली आपत्ति की सूचना दी तथा उसके अमानवीय अत्याचारों का सजीव चित्र उनके सम्मुख खींचा तो वे संघर्षशील वीरात्मा लंकेश का शीश उतारने के लिए आतुर हो उठे।

"वैदेही हमारी माता है—भगिनी है, उसे वापस लाये बिना हम घर नहीं लौटेंगे तथा यह राम—रावण युद्ध नहीं हमारा सबका संघर्ष है, अस्तु हम शपथ खाते हुए राघवेन्द्र को विश्वास दिलाते हैं कि यह युद्ध जीते बिना हम अपनी माता, भगिनी और पत्नी को मुंह नहीं दिखावेंगे.........उत्तेजित हो वे वीर मानव गरज उठे थे और इस प्रकार भविष्य में वर्षों तक उन्हें राघव की दुर्लभ संगति सहज ही प्राप्त हो रही थी।

और आज उनके वही सर्वप्रिय राघव फिर इधर आरहे हैं इस समाचार ने समस्त किष्किन्धा पुरी में हर्ष-गंगा प्रवाहित कर दी।

उनके गृह द्वारों पर तोरण-पताकायें और मङ्गल कलश सजाये जाने लगे। उनकी स्त्रियां तार्ष्य परिधान (रेशमी वस्त्र) पहने कौतुक भाव से बार-बार इधर उधर देखतीं अपने गृहों को सज्जित करने में संलग्न हैं, भाग-दौड़ के कारण किसी २ का उत्तरीय वस्त्र शिरोभाग से किंचित स्खलित हो गया है जिस से उसके 'ओपश' (केशराशि) में छिपटी पुष्प-मालिका स्पष्ट दिखायी दे रही है।

किष्किन्धापुर वासी केवल दो ही वस्तुओं के परिधान पहनते हैं या जो

(शेष पृष्ठ १० पर)

साहित्यरत्न परीक्षोपयोगी लेख—

साहित्यरत्न परीक्षोपयोगी लेख-माला के प्रस्तुत लेख में विद्वान् लेखक ने स्व० प्रेमचन्द के जीवन तथा उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देकर केवल 'कर्मभूमि' के आधार पर उनकी उपन्यास कला का मूल्यांकन किया है। —संपादक

युगनिर्माता कलाकार—स्व. श्री प्रेमचन्द

श्री जानकीवल्लभ

स्व० श्री प्रेमचन्द

'क्यों भाई ! पुरानी पुस्तकें खरीदोगे ?' कबाड़ी की दुकान पर खड़े एक युवक ने पूछा। निर्धनता और बेकारी का मारा हुआ वह युवक अपनी प्रिय पुस्तकों से जुदा होने जा रहा था। भाग्यवश एक छोटे स्कूल के मुख्याध्यापक उधर आ निकले। युवक की गम्भीर मुखाकृति पर अध्ययन शीलता के चिह्न स्पष्ट दिखाई दे रहे थे जिसका प्रभाव अध्यापक महोदय पर पड़े बिना न रहा। युवक के सम्बन्ध मे आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्होंने प्रश्नो की झड़ी लगा दी। अन्त म बोले—'१८) प्रतिमास वेतन पर हमारे स्कूल मे एक अध्यापक की आवश्यकता है। यदि चाहो तो तुम्ह नियुक्त किया जा सकता है।' युवक ने स्वीकार कर लिया।

जीवन-परिचय

किसे ज्ञात था कि १८) रु० प्रतिमास की नौकरी करने वाला यह युवक किसी दिन हिन्दी साहित्य का एक युगनिर्माता कलाकार और उपन्यास-सम्राट बनेगा। प्रेमचन्द के पिता डाकखाने में नौकरी करते थे। १५ वर्ष की अल्पायु में ही प्रेमचद का विवाह कर वे ससार से चल बसे। तब प्रेमचद नवीं श्रेणी म पढ़ते थे। खर्च की तंगी होने पर भी किसी न किसी प्रकार उन्होंने मैट्रिक पास किया। इन्टर में गणित के कारण कई बार फेल हुए और कालिज छोड़ दिया। ५ रु० प्रतिमास की एक ट्यूशन पढ़ाते रहे। पत्नी, विमाता और दो सौतेले भाइयों के परिवार में निर्धनता नग्न नृत्य करने लगी।

अध्ययन का शौक प्रेमचन्द को बचपन से ही था। आरम्भिक शिक्षा उर्दू में होने के कारण उर्दू लेखकों के तो लगभग सभी उपन्यास प्रेमचन्द ने पढ़ डाले थे। परन्तु अर्थाभाव के कारण उन्हे अपने पास की पुस्तकें भी एक दिन कबाड़ी की दुकान पर जाकर बेचनी पड़ीं। जब उन्ह स्कूल में नौकरी मिली उस समय उनकी आयु १९ वर्ष की थी। २८ वर्ष में वे शिक्षा विभाग के डिप्टी इन्सपैक्टर हो गए। इस अवधि में उन्होंने बी० ए० भी कर लिया था। परन्तु कलाकार की प्रतिभा अधिक समय गुलामी के बंधन में न बंध सकी। गांधीजी के आंदोलन से प्रभावित हो उन्होंने नौकरी को लात मार दी और साहित्य-सेवा का व्रत धारण कर लिया।

रचनाएं

यद्यपि प्रेमचद उपन्यास सम्राट् के ही रूप में विख्यात हैं, तथापि गद्य साहित्य का कोई भी अग उन्होंने अछूता नहीं छोड़ा। उर्दू और हिन्दी में कुल मिलाकर एक दर्जन उपन्यासों के अतिरिक्त तीन सौ के लगभग कहानियों, तीन नाटकों और विदेशी लेखकों के अनुवादों की गणना भी उनकी साहित्यिक सेवाओं के मूल्यांकन के लिए आवश्यक है। 'कलम तलवार और त्याग' तथा 'कुछ विचार' मे प्रेमचद के भाषण और निबंध संग्रहीत हैं। 'कुत्ते की कहानी', 'दुर्गा दास', 'मनमोदक और 'राम चर्चा' आदि कुछ बालोपयोगी साहित्य भी प्रेमचद की देन है। साप्ताहिक 'जागरण' और मासिक 'हंस' की सम्पादकीय टिप्पणियों में उनकी लेखनी का चमत्कार पर्याप्त मात्रा में मिलता है।

प्रेमचद के सम्पूर्ण उपन्यासों को अध्ययन की सुविधा के लिए दो वर्गों मे बांटा जा सकता है। पहला वर्ग राजनैतिक उपन्यासों का है जिसके अंतर्गत प्रेमाश्रम (सन् १९२२), रंगभूमि (सन् १९२५) कर्मभूमि (सन् १९३२) और गोदान (सन् १९३६) आते हैं। दूसरा वर्ग सामाजिक उपन्यासों का है जिसके अंतर्गत प्रेमा, वरदान प्रतिज्ञा (तीनों सन् १९०६ की रचनाएं हैं) सेवा सदन (सन् १९१६) निर्मला सन् (१९२३) और गबन (सन् १९३०) को रखा जा सकता है। सम्पूर्ण उपन्यासों में केवल एक ऐसा है जिसे उक्त दोनों वर्गों में नहीं रखा जा सकता वह है कायाकल्प (सन् १९२८) कायाकल्प में लेखक ने अपने कथानक में आध्यात्मिकता का पुट मिला दिया है। अत इसका क्षेत्र बाकी सब उपन्यासों से सर्वथा भिन्न है। मंगलसूत्र प्रेमचन्द का अंतिम अपूर्ण उपन्यास है।

प्रस्तुत लेख साहित्यरत्न के परीक्षार्थियों के लिए लिखा गया हैं, अत यहां हम केवल 'कर्मभूमि' के आधार पर प्रेमचन्द की कला का मूल्यांकन करेंगे।

कर्मभूमि

'कर्मभूमि' से पूर्व के सब उपन्यासों में प्रेमचन्द ने गार्हस्थ्य जीवन का स्वरूप व्यक्त करने का प्रयत्न किया है। उनमें स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द आदि के उपदेशों द्वारा जीवन में नवसंस्कार निर्माण करने की भावना निहित है। परन्तु धीरे-धीरे युग ने करवट बदली। हिन्दू गृहस्थ के सम्मिलित कुटुम्ब पर परिस्थिति ने चोट आरम्भ करदी। नौकरियों का प्रचार बढ़ने लगा। नारी की स्वतन्त्रता ने सम्मिलित कुटुम्बों की भावना को भारी आघात पहुँचाया। जो समाज नैना को जलूस का नेतृत्व करते हुए नहीं देख सकता था उसी की ललना सुखदा घर की चार दिवारी को पार कर समाज का नेतृत्व करने के लिए कर्मभूमि में प्रवेश करती है।

उपन्यास की पृष्ठभूमि

'कर्मभूमि' में सन् १९३० और उससे पूर्व की देश की अवस्था का चित्र उपस्थित किया गया है। गांधी जी द्वारा संचालित सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा तत्कालीन राजनैतिक परिस्थिति का जो परिचय हमें कर्मभूमि म मिलता है वह डा० पट्टाभिसीतारामय्या द्वारा लिखित कांग्रेस के इतिहास म नहीं मिल सकता। किसी लेखक न कहा भी है — 'इतिहास में तिथि और नामों के अतिरिक्त सब कुछ झूठ होता है —उपन्यास में तिथि और नामों के अतिरिक्त सब कुछ सत्य होता है।

जिस समय प्रेमचन्दजी ने लेखनी उठाई उस समय देश के साहित्यकारों की आत्मा सोई हुई थी। हिन्दी का उपन्यास साहित्य तोता मैना के किस्सों से चलकर बैताल-पचीसी तक आ पाया था और चन्द्रकान्ता संतति के समान मायाविनियों के चंगुल में फंस गया था। भारतेन्दु के बाद गद्य क्षेत्र में नवजीवन का संचार करने वाले लेखक प्रेमचन्द ही थे।

'कर्मभूमि' मे यू० पी० के जन जीवन का संपादन है। उपन्यास की क्रीड़ास्थली बनारस और उसके आसपास के गांव हैं। उत्तर प्रदेश में उस समय आंदोलन जोर पकड़ चुका था। मध्य वर्गीय समाज में दरारें पड़ चुकी थी। श्री उपेन्द्रनाथ अश्क ने गिरती दिवारें उपन्यास म इस परिस्थिति का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है। महान् क्रांतिकारी लेनिन ने एक स्थान पर कहा है— 'जब मध्यवर्ग के आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रो म दरारें पड़ जाती है उस समय वह निम्न वर्ग के साथ मिल जाता है और इन दोनों के मिलन से क्रांति का सूत्रपात होता है।

महात्मा गांधी के पूर्ववर्ती धार्मिक प्रणेताओ के कारण समाज की आस्था धर्म पर दृढ़ हो गई थी। परन्तु उसके आडंबर के प्रति विद्रोह निर्माण होगया था। कर्मभूमि म हम कलाकार प्रेमचन्द धर्म की वास्तविक आत्मा के पुनरुत्थान के लिए प्रेरित करते हैं। महन्त आशागिर के द्वारा उन्होंने धर्म के बाह्याडंबर का घोर विरोध किया है।

कथावस्तु

प्रेमचन्द की रचनाओ म कथावस्तु बिल्कुल स्पष्ट होती है। श्री अज्ञेय के 'शेखर' के समान उनकी कथावस्तु में उलझन नहीं है। इसका एक विशेष कारण है। आज का युवक जीवन की भावनाओं के थपेड़े खाने के कारण अपने मार्ग को स्पष्ट रूप से निर्धारित करने में असमर्थ है। सारा देश ही आज आदर्श-हीन हो गया है। उसके सामने अंधेरा ही अंधेरा है। 'शेखर' इस परिस्थिति को देख कर चकित है। उसे अपने जीवन पर किसी वस्तु की धूमिल छाया मात्र दिखा देती है। वह एक छायावादी युवक है। साधन होते हुवे भी उसके सामने कोई आदर्श नहीं। वह अपने जीवन का मूल्यांकन करने मे असमर्थ है।

गांधी जी के अछूतोद्धार ने अछूतों मे नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रवृत्ति निर्माण कर दी थी। वैष्णवों की कट्टरता और उनके अत्याचारों का प्रेमचन्द की लेखनी ने नग्न-स्वरूप अंकित किया है। प्रसाद के उपन्यास तितली' के समान प्रेमचन्द ने भी समाज के इस वीभत्स स्वरूप का चित्रण निस्संकोच हो कर किया है।

अफसरों की दुनिया का खाका खींचने में प्रेमचन्द बड़े सिद्धहस्त थे। वे स्वयं भी मुंशी रह चुके थे। सलीम, मि० गजनवी, मि० घोष तथा गवर्नर का बड़ा यथार्थ वर्णन किया गया है। मुन्नी के साथ होने वाली घटना अंग्रेज सैनिकों और अधिकारियो के भ्रष्टाचार और कामातुरता की द्योतक है। परन्तु प्रेमचन्द की कला का विषय बन कर मुन्नी अत्याचारों की आग में पक कर भी समाज और संसार के प्रति कड़वी न होकर कर्मभूमि पर उतर आई।

(शेष पृष्ठ १८ पर)

बुन्देलखण्ड में नवरात्र

★ श्री कृष्णकुमार रावत

राष्ट्र के सामाजिक जीवन में त्योहारों का बड़ा हाथ रहता है । वास्तव में जीवित राष्ट्र वही कहे जाते हैं, जिनके उत्सव सोल्लास तथा उदात्त विचारों की परिपूर्णता लेकर मनाये जाते हैं । प्रत्येक राष्ट्र के अपने उत्सव अनादिकाल से चले हुए जनसंस्कृति के प्रतीक हुआ करते हैं । इस दृष्टि से उत्सवों का महत्व बढ़ जाता है । उत्सव सर्वत्र एक ही तरीके से नहीं मनाये जाते, प्रत्येक जनपद में उसके मनाने के ढंगों में विभिन्नता पाई जाती है । यही बात नवरात्र के विषय में भी कही जा सकती है । नवरात्र का उत्सव हम अत्यन्त प्राचीन काल से मनाते चले आ रहे हैं । बुन्देलखण्ड में यह उत्सव समस्त उत्सवों में महत्वपूर्ण है । प्रस्तुत लेख में यह बतलाने की चेष्टा की गई है कि यहां स्त्री तथा पुरुष दोनों नवरात्र को किस ढंग से मनाते हैं ।

पुरुषों द्वारा जवारों के रूप में

पुरुषों द्वारा यह त्योहार जवारों के रूप में मनाया जाता है, तथा उनके नाम के गेहूँ अथवा जौ बोये जाते हैं । अमावस्या या प्रतिपदा के दिन लोग ढोल, रमतूला, मजीरा आदि बजाते हुए घर घर जाते हैं, तथा महामाई के पूजन के लिए आखौती मांगते हैं । फिर एक मकान को साफ करके लीपा-पोता जाता है, जिसमें सात घट या खप्पर स्थापित किये जाते हैं । खप्परों में खेत की मिट्टी, खाद या सूखे कण्डे की धूल डालते हैं । वहां पूरे नौ दिन तक दीपक की अखण्ड ज्योति जलती रहती है, तथा माई के गीत गाये जाते हैं । जौ बोने वाला आदमी नवरात्र में वहीं रहता है, तथा उपवास रखे हुये प्रतिदिन प्रात साय देवी की पूजा करता है । उस हाथ में चूरा, गले में लगोरिया, सिर पर लुंगी लपेटे रहना तथा केवल अधोवस्त्र धारण किये रहना पड़ता है । स्त्रियों को दिवाले में जाने की मनाही होती है । देवी की पूजा के लिए नियुक्त पुजारी रोज देवालय को कपड़े से झाड़ता है झाड़ू का प्रयोग कतई नहीं करता । पचमी को देवी की छोटी आरती तथा अष्टमी को बड़ी आरती उतरती है । आठवें दिन होम किया जाता है । नव [illegible] सुन्दर [illegible] गाजे बाजे [illegible] पीले अंकुरों से लहराते हुए घटों का सिर पर रखकर घर से बाहर निकलती है तथा देवी के भजन गाती हुई तालाब पर जाती हैं । पुरुष भी गाते बजाते हुए उनके साथ जाते हैं । कोई कोई स्त्री देवी का नाट्य करके नृत्य करती हुई चलती है । देवी के भक्त या गुनियां लोग अपने गालों में त्रिशूल (जो प्राय १० हाथ लम्बा रहता है) छेदकर आगे-आगे चलते हैं । तालाब या नदी में पहुँचकर पौधे उखाड़ कर रख लिये जाते हैं, तथा खप्पर जल में सिरा दिये जाते हैं । फिर लोग उन पौधों को भेंट-स्वरूप आपस में एक दूसरे को देते हैं । इस प्रकार इस उत्सव को समाप्त किया जाता है ।

आश्विन मास में बोये गेहुँओं से रबी की फसल का अनुमान लगाया जाता है । लोग एक पौधा उखाड़कर उसकी जड़ें गिनते हैं, तथा जितनी जड़ें मिलती हैं, उतनी ही गुनी उपज का अन्दाज लगाया जाता है । यदि जवारों के पौधों पर सुर्ख धूल सी दृष्टिगोचर होती है, तो कहा जाता है कि इस साल गेरुआ का रोग लग जायगा ।

स्त्रियों का प्रमुख उत्सव

नवरात्र में प्रथम दिन लड़कियां गाती बजाती हुई खदान से मिट्टी लाती हैं, तथा उससे किसी चबूतरे पर चन्दा, सूरज एव विभिन्न देवी देवताओं की प्रतिमायें बनाती हैं । बाद में उन्हें गोबर से लीपती तथा रुई से पोतती हैं । चौक आटे से नहीं किरकिरा से पूरा जाता है, जिसे 'काव-डालना' कहते हैं । फिर गोबर से चिनटी पकड़ कर वे गाती हैं—

चिनटी-चिनटी कूर दे,
बापे भैया राजी दे,
राजी ऊपर घोड़ा दे,
घोड़ा ने मारी लात,
जा परी गुजरात,
गुजरात के बानियां,
बम्मन-बम्मन जात के,
जनेऊ पेरे तांत के,
टींका देवे रोरी को,
हाड़ चबावें घोड़ी को,
बैठी हों गड़गड़ जेहों,
बाधी को कौर न देहों,
ताते खों लपलप लेहों,
माई को कहो न करहो,
बाबुल को कहो न करहों,

कौन सखी मोरी सुरजा बेटी,
नेहा तो अन्हइयो बेटी मो डिना,
दमय खो करिये सिंगार ।

अष्टमी को मिट्टी से गनगौर की मूर्ति बनाई जाती है । समस्त लड़कियां एकत्रित होकर गहूं तथा चना की घुघरीं बनाती हैं । फिर लगातार दस दिन तक गुड़, घी तथा घुघरी से गन-

[शेष पृष्ठ १६ पर]

विजयावाहन

★ ईशदत्त पाण्डेय 'भीष्म' शास्त्री, साहित्यरत्न ★

[१]

कड़क-कड़क के कृपाण कर में करके,
ले करके शोणित-खप्पर दौड़ती आ माँ !
मुख मोड़ती आ मानियों का अभिमानियों का,
खलबलियों का बल-बल तोड़ती आ माँ !
जोड़ती आ अवनी औ अंबर का छोर छोर,
क्रांति का रंगीला आग-राग छोड़ती आ माँ !
फोड़ती आ कपट-कटाह क्रूरों क्रोधियों का,
जगमग जागृति की ज्योति जोड़ती आ माँ !

[२]

त्रास न तुझे है पाकशासन के शासक की,
जब मृगशासन पै आसन जमाती तू !
धमक-धमक के धराधर अघोर होते,
तमक तमक ज्यों तमाम तन जाती तू !
दल-दल होता तब तब दिग्गजों का दल,
जब-जब कुंतल-कलाप लहराती तू !
कोर करती है जिस ओर कपालिका की,
हहर-हहर हाहाकार है मचाती तू !

[३]

दीन हैं दरिद्र हैं दुखी हैं दुन्दुदुर्गमध्य,
बन्य हा ! विदेशियों के बीच में बसे हैं माँ !
दंभ-द्वेष-दावानल में हैं दिनरात दग्ध,
दलबन्दियों के दलदल में फसे हैं माँ
डूबे पापपंक में कलंक से कृतघ्न हुए—
तेरी कृपाकोर को कलेजे से कसे हैं माँ
मंगलमयी ! तुम्हारे सुतों का अमंगल क्या,
फिर से जिला दे, काल सर्प से डसे हैं माँ

[४]

सूख उठा भक्ति-नद तेरा अंब ! शक्तिभरा,
फिर अनुरक्ति का सरस भर जल दे।
उबल उठा है फिर खलदल भूतल में,
चण्डि ! आज आ कर सदल बल दल दे ॥
मचल उठा है फिर दल महिषासुर का,
कालि ! रिक्त रक्तपात्र निज, आज भर ले।
जय देवी ! जय दे, कि हम जाग-जाग उठें,
बल देवि ! आज निज अविचल बल दे ॥

[५]

भीषण भुजगा का वलय करमें हो कसा
एक हाथ पात्र, दूजे हाथ खड्गवाली आ।
खड्गमुद्रा अंकित करस्थ पकपकति-सी,
मेद-मज्जा-मोद-मत्त मुंडमाल वाली आ !
शंकरी आ, जग की क्षयकरी भयकरी आ,
करती कठोर अट्टहास मतवाली आ।
आ री, देवरंजिनी प्रभंजिनी अदेवन की,
'भीष्म' सर्वमंगले ! मनोज्ञे ! महाकाली आ !!

—:★:—

अम्बे !

★ श्री कपिलदेवनारायणसिंह 'सुहृद' ★

उठ, तमक तान अम्बे ! त्रिशूल !

जीवन की यह जड़ता कराल,
यह जगत वासना में बेहाल।
पापों की ज्वाला बीच भीष्म,
झुलसा सा यह शुचिता-प्रवाल ॥
अघ-कीट काटते विश्व मूल।
उठ, तमक तान अम्बे ! त्रिशूल ॥

व्रा-व्रतियों मे त्याग नहीं,
प्रणयी में टुक अनुराग नहीं।
शूरों में लज्जा का न लेश,
यतियों में अल्प विराग नहीं ॥
सब का है आडम्बर समूल।
उठ, तमक तान अम्बे ! त्रिशूल ॥

तू जननि आज उठ बेगि जाग,
दे लगा सृष्टि में एक आग।
जल जाय पाप, वासना, काम.
जागे कण-कण में प्रेम-राग ॥
दे पाप-हृदय में तीव्र शूल।
उठ, तमक तान अम्बे ! त्रिशूल !!

—:★:—

विजयादशमी के अवसर पर मैसूर में विजययात्रा का एक दृश्य।

भारत का मह...

विज...

[श्री सुरेश...

विजयादशमी का अत्यन्त पावन पर्व भारत की महान विजय परम्परा का द्योतक है। विजय की यह अलौकिक परम्परा किसी युग विशेष की उपज नहीं है, बल्कि वह एक अविच्छिन्न परम्परा है जो आर्यवैदिक काल से ही भारत के राष्ट्रीय जीवन में एक नवीन उत्साह तथा आत्म सम्मान की चेतना जाग्रत करती आई है। देवासुर संग्राम की प्राचीन कथायें तथा समस्त विश्व पर भारत की राजनैतिक तथा सांस्कृतिक विजय की महान गौरव गाथायें इस सत्य की साक्षी हैं कि अनेकानेक आपदाओं तथा पाशविक वृत्तियों के वीभत्स ताण्डव नृत्य के बीच भी भारत ने अपनी विजय परम्परा की दीप वर्तिका को आलोकित तथा प्रज्वलित रखा है। जहां संसार के किसी भी कोने में आसुरी वृत्तियों का जब जब गर्जन सुनाई पड़ा कि भारत का पौरुष इन आसुरी वृत्तियों का दमन कर, सद्वृत्तियों की स्थापना करने के लिए दुर्दम्य साहस तथा कटिबद्ध हो हुंकार उठा। भारत की सनातन विजय का अर्थ किसी साम्राज्य लिप्सा से प्रेरित होकर सशस्त्र-शक्ति से किसी जाति अथवा राष्ट्र को अधिकार कर लेना नहीं है। भारतीय विजय का आदर्श शरीर पर विजय नहीं मन और हृदय पर विजय है। इसी नाते भारत की विजय का अर्थ है, सद्वृत्तियों की आसुरी वृत्तियों पर विजय, धर्म की अधर्म पर विजय इसी महान् विजय का प्रतीक है विजयादशमी का हमारा यह महान पर्व।

भगवान राम की स्मृति में निर्मित पंचवटी का प्राचीन मन्दिर

शक्ति पूजा का प्रतीक

इस पर्व की धार्मिक तथा तात्विक गहराई में जाने से यह स्पष्ट हो जाता है कि विजयादशमी का त्योहार शक्ति पूजा का प्रतीक है। शास्त्रों में शक्ति शब्द के प्रसंगानुसार अलग अलग अर्थ किये गये हैं और तदनुसार ही भारत में शक्ति पूजा के विभिन्न रूप तथा आराधना और उपासना की विशिष्ट पद्धतियां प्रचलित होती रही हैं। तान्त्रिक लोग इसी को पराशक्ति कहते हैं और इसी को अद्वैतवादी ब्रह्म मानते हैं। वेद शास्त्र, पुराण उपनिषद् आदि में भी शक्ति शब्द के प्रयोग देवी, पराशक्ति ईश्वरी मूल प्रकृति के नाम से किये गये हैं। भारत के कोने कोने में प्रचलित प्रत्येक अनुष्ठान आचार, विधि तथा

महिषासुर मर्दिनी सिंह वाहिनी दुर्गा

...न विजय पर्व
...यादशमी

निराकार साधना का आधार शक्ति पूजा ही है। राम, कृष्ण, दुर्गा, सरस्वती, विष्णु आदि की उपासना उसी परम शक्ति तत्व की उपासना के ही विविध रूप हैं। भारतीय शास्त्रों में इसी परमशक्ति तत्व का कभी माता रूप में तथा कभी पिता के रूप में स्मरण किया गया है। समस्त सृष्टि की उत्पत्ति इसके विविध रूप, इसके क्रियाकलाप तथा रहस्यात्मकता इसी परमशक्ति तत्व में निहित है। सृजन, पालन, विनाश तथा उत्पत्ति सभी में वह चिरंतन तथा अक्षय सत्ता विद्यमान है। उस शक्ति के सृजनकारी रूप को माता लक्ष्मी तथा दुर्गा के पावननामों से स्मरण किया जाता है तथा दुष्टों का संहार कर संसार की पाशविक प्रवृत्तियों का विनाश करने की शक्ति होने के कारण इसी शक्ति संहारक रूप को दुर्गा, चण्डी, काली आदि नामों की संज्ञा प्रदान की गई है।

दुर्गा का विकराल रूप

माँ दुर्गा भवानी की राष्ट्रनायक छत्रपति शिवाजी को भेंट

पूर्णतया वैज्ञानिक दृष्टिकोण

एक ही शक्ति-तत्व की विविध रूपों में मान्यता की धारणा अमानवीय तथा अलौकिक नहीं है तथा शत-प्रतिशत वैज्ञानिक तथा मानव बुद्धि ग्राह्य है। केवल उसके प्रति दृष्टिकोण में कहीं २ परिमार्जन की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों ने भी मुक्तकंठ से चराचर विश्व में व्याप्त व्यापक शक्ति को स्वीकार किया है और प्रत्येक नये वैज्ञानिक आविष्कार तथा खोज का उद्गम स्थल इसी को माना है।

राष्ट्रीय जीवन में

राष्ट्रीय जीवन में इसी शक्ति का प्रकट रूप राष्ट्र की वैभवावस्था उसका शौर्य तथा संसार की कठिनतम परिस्थितियों में भी अपने राष्ट्र को सर्वप्रकार से शक्ति सम्पन्न करने के संकल्प के रूप में प्रकट होता है।

महापुरुषों से सम्बन्ध

विजय का यह महान् पर्व सम्भवतः के उषाकाल से ही विविध रूपों से मनाया जाता रहा है किन्तु महापुरुषों की अक्षय तथा अक्षुण्ण परम्परा ने इसी उत्सव को राष्ट्रीय रूप देने में तथा अपने

(शेष पृष्ठ २१ पर)

रावण की इस प्रकार की प्रतिमायें स्थान-स्थान पर जलाई जाती हैं

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सफलता का रहस्य

[श्री बी॰ एल॰ सर्राफ]

विजयादशमी के के पावन विजय पर्व पर रा॰ स्व॰ संघ की स्थापना भी हुई थी। आज से लगभग २७ वर्ष पूर्व राष्ट्रीय एकता व चरित्र निर्माण के जिस पुनीत ध्येय को ले कर संघ की स्थापना हुई थी तथा इतने अल्प काल में ही उसने जो महत्वपूर्ण प्रगति की है उसके रहस्य को विद्वान लेखक ने प्रस्तुत लेख में प्रकट किया है।

सन १९२५ में इस पुरातन राष्ट्र के दूरदर्शी मिषग् द्वारा द्वितीया के चन्द्र के समान अवर्धमान एक रेखा मात्र जो नागपुर में खींची गई थी उसने आज कई लाख तपस्वी देश के सामने प्रस्तुत किए, जिन्हें देख स्वाभाविक ऐसा विश्वास होता है कि देश का भविष्य आपत्तियों से परे हो जाने को उस रेखा ने आज प्रबल स्रोतस्विनी का रूप धारण कर लिया है। किसीभी समाज या राष्ट्र के जीवित रहने के लिये यह आवश्यक होता है कि उसके उस समाज में कुछ ऐसे विशेष गुण हों जो कदाचित हों तथा जिनके बल पर राष्ट्र किसी भी आपत्ति को चुनौती दे सके। जब तक किसी भी राष्ट्र के बहुजन समाज को यह सिद्धता प्राप्त नहीं होती तब तक उस राष्ट्र को सब दृष्टि से सबल तथा सम्पन्न राष्ट्र नहीं कहा जा सकता।

व्यक्ति का विकास समाज के लिये

संघ में प्रवेश करने बाद स्वयं सेवक का शारीरिक एवं मानसिक विकास केवल उसके हित के लिए नहीं अपितु वास्तव में समाज के हित के लिए होता है, और इसलिए जैसे अखाड़ों में खेलने वालों में प्रतिस्पर्धा रहती है वैसी संघ के स्वयं सेवकों में नहीं होसकती चाहे वे उत्तर प्रदेश के हों चाहे मद्रास या बम्बई प्रान्त के। प्रति दिन जो कार्य क्रम होते हैं उनके द्वारा वहीं सगच्छध्वं, संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् का उद् घोष सुनाई देता है। इतनी सामूहिक शक्ति प्राप्त होने पर भी उसका दुरु पयोग अब तक नहीं हुआ, यद्यपि कल ही संघ के थोड़े बहुत नहीं एक लाख से भी अधिक व्यक्तियों को परीक्षा शिला पर खड़ा कर दिया गया था।

आर्थिक विनियोग के प्रति सजग

संपति का विनियोग और सदुप-योग कैसा होना चाहिए यह संघ के समान शायद ही अन्य कोई संस्था समझ पायी हो। जहां सार्वजनिक हित के कार्य में शारीरिक श्रम के द्वारा स्वयं सेवक योग देते हैं वहां उस काम को संपादित करने के लिए पैसा भी देते हैं और आवश्यकता आने पर अपना संचित पैसा स्वतः खर्च करके जहां पुकार होती है वहां उपस्थित हो जाते हैं। इतना ही नहीं यदि राष्ट्र हित के लिए भिक्षावृत्ति धारण करने का अव सर आवे तो उसे भी वे सम्मानित करने के प्रयास में पीछे नहीं रहते। उत्पीड़ित समाज के लिए जो कुछ उन्होंने किया वह तो हमारे सामने अभी भी है।

प्रान्तीयता का घातक विष

प्रान्तों में जो भाषा विविधता के कारण विद्वेष है उसे दूर करने लिए सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता अन्य प्रांतीय भाषाओं की जानकारी प्राप्त कर उन लोगों के हृदय में बैठने का प्रयास कर रहे हैं। उस कार्य में फिर चाहे कितना भी समय लगे। जातियों की विषमता मिटाने को तो वाम रोज ही संघस्थान पर हर जाति के लोग हृदय से हृदय

राष्ट्रीयस्वय सेवक संघ के संस्थापक डाक्टर हेडगेवार

मिला कर निष्कपट भाव से माता की पूजा के लिए सन्नद्ध होते हैं। राष्ट्र भाषा को गौरवान्वित सिंहासन पर बैठाने के प्रयास में केवल जिव्हा का योगदान ही नहीं, किन्तु सैकड़ों की संख्या में साहि त्यिक शब्दों की कमी की पूर्ति भी संघ ने की है। संघ की संस्कृत आज्ञाएं तथा गटाधिकारी, अभिकर्ता प्रातराश, कार्य वाह, शिक्षण शिविर, स्फूर्ति योग, बाला चरण व्यवहार अनुशासन आदि आदि कितने ही शब्दों को संघ ने सजीवता प्रदान कर शब्दकोश में वृद्धि करने का यश सफलतापूर्वक अर्जित किया है। उत्तर से दक्षिण तक सभी स्थानों में क्रियात्मक ढंग से राष्ट्र भाषा का प्रयोग संघ पिछले पचीस वर्षों से कर रहा है और भारतीयों में राष्ट्र भारती हिन्दी के प्रति प्रेम तथा सम्मान प्राप्त कराने में इस संस्था ने कुछ उठा नहीं रखा है। उत्कृष्ट साहित्य का सृजन भी कुछ समय से हमारे सामने आने लगा है।

संघ का अनुशासन तो देश प्रसिद्ध है। किसी संस्था ने अपनी सभाओं का चाहे वे विशेष हों अथवा सार्वजनिक कभी भी इतना सबल संचालन नहीं किया कि जो निकट भविष्य में जीवन का अंग बन सके। किन्तु आज तो व्यवहार में कटु विरोधियों के मुख से भी संघ का अनुशासन, व्यवस्थित रूप से कार्यक्रम करने की प्रणाली तथा समय पालन की क्रियात्मक शिक्षा की प्रशंसा सुनने को मिलती है। व्याख्यानों में ताली बजा कर संघ के स्वयंसेवक वक्ताओं को सस्ता साधुवाद नहीं देना जानते और न ही कथित शब्दों के प्रति अपने दायित्व को इतना साधारण समझते हैं।

स्वार्थ पर आधारित नेतागीरी

कुछ काल से प्रचलित नेतागिरी के भी संघ विरुद्ध है और इसीलिये वह अपने हजारों स्वयंसेवकों द्वारा किये जाने वाले हृदय को गद्गद् करने वाले भारी प्रदर्शनों को पत्रों में बड़े बड़े नाम देकर प्रचारित करना नहीं चाहता क्योंकि संघ के कार्यकर्ता जानते हैं कि नाम की लालसा के पीछे क्रिया का अभाव प्रायः रहता ही है। इसलिये यदि काम के द्वारा ही कोई किसी कार्य को जानना चाहता है तो संघ को जाने। इस भावना से प्रेरित होकर गुप्त संस्था का कलुषित कुप्रचार सहन करते हुए भी संघ ने कभी अपनी महानता का शंखनाद नहीं किया और न कभी थोड़े प्रचार से व्यापक यश की आकांक्षा की। पत्रों द्वारा वाद विवाद तथा खंडन मंडन में भी उसका विश्वास नहीं क्योंकि इस प्रवाद का कहीं तो अन्त करना ही पड़ता है और बीच के काल में वाग्युद्ध द्वारा विषमता ही निर्माण होती है।

पारिवारिक दृष्टिकोण

संघ का स्वयंसेवक जिस कुटुम्ब में पग रखता है उस कुटुम्ब के घटक की हैसियत से वह उस कुटुम्ब में घुल मिल जाता है। उसका रहन सहन, खान पान, सेवा सुश्रूषा सभी कुटुम्ब की भावना से प्रेरित हुआ करती हैं वह उस उच्च पारि-वारिक आदर्श को चिरंतन करने में योग देता है जो भारतीयता की प्रमुख देन है। भोजन के सम्बन्ध में तो आज की भोजन की कमी का प्रश्न जब समाज के सामने नहीं था तब संघ ने अपनी पत्तल में कुछ न छोड़ने का क्रियात्मक प्रयत्न किया था तथा प्रति दिन के कार्यक्रमों के बाद अस्पृश्यता का कलंक मिटाने में वर्षों पूर्व से बिना किसी प्रचार के संलग्न था। वैसे तो प्रतिदिन संघ के प्रांगण में जाति-वाद को सक्रिय रूप से भूलकर दिन में कम से कम एक बार अवश्य ही सभी स्वयं सेवक एकत्रित आया करते हैं। हजारों व्यक्तियों के एक साथ मूक भोजन में सामूहिक संयम का आश्चर्य चकित करने वाला प्रदर्शन भी कई बन्धुओं ने देखा ही होगा।

(शेष पृष्ठ २१ पर)

स्वेटर बुनने की कला

शरद काल में अपने शरीर को शीत से बचाने के लिये गर्म वस्त्रों की अत्यन्त आवश्यकता होती है। शरीर के प्रत्येक भाग को गर्म रखने के लिए भिन्न-भिन्न आकार के वस्त्र तैयार किए जाते हैं जैसे पैरों के लिए मौजे, छाती के लिए स्वेटर, गले के लिए मफलर इत्यादि। इन सब में से छाती को गर्म रखना अति आवश्यक है, क्योंकि छाती को थोड़ी सी सर्दी लगजाने से भी कई प्रकार के रोग होने की संभावना होती है।

कइयों का विचार है कि स्वेटर आदि पहनने की प्रथा विदेशों से हमारे देश मे आई है। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। हमारे साहित्य में कई ऐसे उल्लेख मिलते हैं, जिनसे मालूम होता है, कि पहाडी इलाकों पर भेड़ बकरियां बहुत होती थीं उन के बालों से अनादि-काल से ऊन के वस्त्र बनाने की प्रथा भारत में चली आती है। और हमें अनुसन्धान शास्त्रियों ने भी बतलाया है कि वैदिक काल मे हमारे प्राचीन आर्य ऊन से बने हुए वस्त्रों से परिचित थे, हां यह बात मानी जाती है, कि पहले ऊन नाना प्रकार के फैशनेबिल नमूने तैयार नहीं किए जाते थे जितने कि आधुनिक समय में इस के विविध प्रकार के फैशन नित्य प्रति-दिन निकलते हैं।

अब यहां स्वेटर बुनने की विधि पर कुछ प्रकाश डाला जाता है। स्वेटर बुनने से पहले इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ऊन ऐसी हो जिसके ऊपर थोड़ी थोड़ी लूयें हों ऐसी ऊन से बना हुआ स्वेटर कई बार धोने पर भी बहुत अच्छा रहता है, ऊन जुड़ती नहीं परन्तु जो ऊन बहुत मुलायम होगी वह दो तीन बार धोने पर ही जुड़ जायेगी। स्वेटर टाट की भांति प्रतीत होने लग जावेगा।

स्वेटर बुनने के लिए ११ न० की सिलाइयें ठीक रहती हैं। स्वस्थ नवयुवक के लिए १२० फंदे का स्वेटर आरम्भ करना चाहिए। नीचे बौडर ३ इंच डालना चाहिए। बौर्डर का नमूना पहली सिलाई में २ फंदे सीधे, २ फंदे उल्टे, ऐसे सारी सिलाई।

दूसरी सिलाई के आरम्भ में सीधा-सीधा फंदे उल्टे, २ सीधे फिर सारी सिलाई में २ सीधे और २ उल्टे ही डालते हैं, सिर्फ इस सिलाई के आरम्भ में ही फंदा सीधा डालना है।

ती० सिलाई फिर पहली की भांति डालनी है।

चौ० सिलाई दू० सिलाई की भांति डालो। इसी प्रकार सारा बौर्डर बुनो। बौर्डर के बाद सारा स्वैटर बुनने के लिये यहां लिखा गया है।

दू० ती० चौ० पां० सिलाइयें इसी प्रकार डालो।

छटी सिलाई के आरम्भ के २ सीधे फंदों को पीछे ले जाओ फिर दो दो उल्टे और दो दो सीधे फंदे डालो। यह सिलाई इसी प्रकार डालनी है।

इस प्रकार पांच सिलाइयें पहले की तरह डालने के बाद फिर छटी सिलाई आरम्भ के २ सीधे फंदे छोड़ देने हैं, उस के आगे के २ सीधे फंदों के बाद ले जाना है। इस प्रकार यह तैयार होगा।

कंधों तक स्वैटर की स० १६ से १८ इंचा के मध्य तक हो इस के बाद कधों के फंदे घट देने चाहिए। पहले आठ फंदे सिलाई के आरम्भ और अन्त में फिर आठ आठ फंदे दोनों ओर से क्रमशः दो या तीन सिलाइयों के बाद एक एक करके कम करते जाना चाहिये। इस प्रकार से कंधों को ८ से १० इंच तक बुनो। इसकी गोलाई बहुत अच्छी होगी। कंधा नीचे नहीं ढिलकेगा। दूसरी ओर भी कधों तक ऐसे ही बुन लेनी चाहिए। फिर गले और कंधे के फंदे घटाने चाहिए।

कधों तक जब बुना जावे तो सब फंदों को दो सिलाइयों मे बांट लेना चाहिए। फिर कंधों के फंदे तो पहली तरह ही कम करो और गले की ओर से भी क्रमशः कम करते जाओ। इस प्रकार स्वैटर तैयार हो जावेगा फिर कंधों की ओर गले की पट्टी साथ ही बुन लेनी चाहिये।

—

भोजन में हलवे का स्थान

[श्रीमती विजयश्री बी० ए० आनर्स]

हम जानते ही हैं कि हमारे प्रति दिन के भोजन के लिये सदैव पांच मूल पदार्थों का, संमिश्रण होता है—प्रोटीन, चिकनाई, स्टार्च, लवण और जल। हम इन तत्वों को अपने यहां नित्य प्रति सेवन करते हैं। हमारे भोजन में कई पदार्थ ऐसे हैं जो रस से पूर्ण और पुष्टिदायक होते हैं जैसे हलवा खीर इत्यादि। इस लिये इस के बनाने की विधि पर यहां कुछ प्रकाश डाला जाता हैं।

हलवा बहुत स्वादिष्ट और पुष्टिकर होता है। इस मे जहां तक हो सके शुद्ध घी का प्रयोग करना चाहिये। हलवा सूजी, मैदा और आटे का बनाया जाता है। परन्तु सब से उत्तम हलवा सूजी का ही होता है, आटे का मध्यम और मैदे का निकृष्ट होता है।

हलवा जितना ही मोटे दाने का बनेगा उतना ही स्वादिष्ट और रसपूर्ण होगा।

इसके बनाने की विधि यह है कि एक सेर सूजी मे ३ पाव या एक सेर के लगभग ही घी डाला जाता है। चीनी इस में प्रायः सूजी के बराबर दुगुनी और डेढ़गुनी डाली जाती है। ठीक इसमें डेढ़गुनी ही रहती है। जो बहुत चीनी खाते हैं उनको तो दुगुनी चीनी का हलवा ही पसन्द होता है, कम खाने वाले को बराबर चीनी का हलवा अच्छा होता है। यह तो अपनी अपनी इच्छा पर ही निर्भर होता है।

हलवा बनाने से पहले इसका सब सामान पाचिका को अपने पास माप कर रख लेना चाहिये। बादाम पिस्ता आदि भी बारीक २ काट कर रख ले। हलवे चीनी की सदैव चाशनी बना लेना चाहिये। चाशनी बनाने की विधि—सूजी से तिगुना पानी ले कर गर्म रख दो फिर उस में चीनी डाल दो। जब पानी मे चीनी अच्छी प्रकार घुल जाये तो उसको नीचे उतार लो। इस चाशनी मे कोई तार आदि नहीं निकालनी होती। यदि रंगदार हलुआ बनाना हो तो चाशनी मे थोड़ा खाने वाला पीला रंग डाल दो।

इसके अनन्तर घी कड़ाई में डाल कर गर्म करो फिर बादाम आदि घी में भून लो। तब सूजी भी घी मे डाल कर थोड़ी सी आंच पर रख कर भूने जब उसमें सुगन्धि आने लगे तो वह तैयार की हुई चाशनी इस में डाल दो। चाशनी डालते समय ध्यान रखना चाहिये कि कहीं गर्म-गर्म छींटे हाथ पर न पड़ें। चाशनी डालने के बाद जोंचे के साथ लगातार हिलाते रहो ताकि कोई गिल्ट आदि न पड़ें। जब हलवा गाढ़ा हो जावें तो नीचे उतार लो उसके ऊपर पिस्ता किशमिश डालना चाहो तो डाल लो। यह हलवा खाने मे बहुत ही स्वादिष्ट होता है। आटे इत्यादि के हलवा बनाने की भी यही विधि है।

—★—

वह देश, जहां औरत नहीं

"दक्षिणी पूर्वीय यूरोप के एक कोने से एजियन समुद्र के पास यूनान से लगभग एक सौ किलोमिटर दूर एक छोटा सा देश है, जिसकी जमीन पर, एक सहस्त्र वर्ष हुए, नारी नहीं चली! आपको उस देश में गृह-लक्ष्मियों, नवयुवतियों अथवा लड़कियों के दर्शन नहीं होंगे। गांवों की गलियों में अथवा वहां के कुंजों में कभी भी नारी के हास्य का प्रतिध्वनि नहीं होती। शायद आप यह सोच रहे होंगे कि मैं किसी सूने जंगल का वर्णन कर रहा हूं, जहां कोई भी नहीं बसता; लेकिन आप विश्वास कीजिये उस देश की आबादी पांच हजार है। ये सबके सब पुरुष हैं,—एक भी औरत नहीं! यहां तक कि पशुओं में भी मादा नहीं होता, आपको गाय मिलगी पर बैल नहीं। अतः इस देश को मैं 'पुरुषों का देश' कहना अधिक उपयुक्त समझता हूं। हां, पक्षी-समाज इसका अपवाद है, जिसमें विभिन्न-यौन वाले पाये जाते हैं।"—ये शब्द श्री गिराल्ड कुश ने 'वाइल्ड वर्ल्ड' में इस विचित्र देश के अपने संस्मरण में लिखे हैं।

इस विचित्र देश का नाम एथोस है, जिसकी एक सरकार है और खुद की पुलिस। सीमांत पुलिस का यह कार्य है कि वह मुसलमानों भेड़ियों और नारियों का प्रवेश रोके। निवासी पादरी लोग हैं और वे मध्ययुगीन कट्टर धर्मानुयायी हैं, जो आधुनिक जीवन और संस्कृति के कभी भी सम्पर्क मे नहीं आए।

श्री कुश ने लिखा है कि वे [नारी को घृणा करने वाले] पादरी कभी भी स्नान नहीं करते। उनका सारा समय प्रार्थना मे जाता है। उनके कथनानुसार उस देश का जीवन बहुत ही अस्वाभाविक एवं अमानवीय है। उनके शब्दों में 'एथोस एक जीवित मुर्दा' देश है। एक हजार वर्ष से उस समाज का कायम रहना उन व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है, जो जीवन के सही अर्थ को नहीं समझते।

••

बुन्देलखण्ड में नवरात्र

[पृष्ठ १० का शेष]

गौर की पूजा की जाती है। सब लड़कियां सुखरी का एक कौर मुंह में देकर कहती हैं—

मोरी गौर मोरी गौर
गई भइया की पौर
उनकी बहुने मारी लाठी
मोरी गौर भू की मांकी।
हाप्पू—हाप्पू।
जेवेन दो जेवेन दो
हम तो और परस दें
हाप्पू—हाप्पू।

फिर वे क्रम से गौर के जेवर का वर्णन गीतों में करती हैं। नवमीं को नारियल तथा अठवाई से देवी का पूजन किया जाता है।

प्रत्येक लड़की को नवरात्र में अपनी समस्त सहेलियों के साथ गाना गाते हुए रास्ते में लीपते तथा किरकिरा का चौक पूरते हुए स्नान करने के लिए जाना पड़ता है और उसी चौक के ऊपर से वापस आना पड़ता है।

दसवीं को लड़कियां गाती बजाती हुई कुम्हार,के यहां जाती हैं तथा वहां से कच्ची मिट्टी का एक घेला लाती हैं। उस पर एक ढक्कन रहता है। घड़ा में १० छोटे छोटे छेद किये जाते हैं तथा उसके अन्दर मीठे तेल से जलता हुआ एक दीपक रखा जाता है। इसे झिरिया कहते हैं। उसे सिर पर रख कर लड़कियां पड़ोस में घर घर जातीं नृत्य करतीं तथा मंगल गीत गाती हैं। एक दो गीतों का आप भी आनन्द ले लीजिए—

पूछत-पूछत आये हैं
नारे सुआ नवा की पोर।
ऊंची अटरियां रगों भरीं
सूरज साम दुआर।
निकरा दुलैया रानी बाहरीं
बिटिया खड़ीं दुआर।
हम कैसें निकरें बिन्ना बाहरें
उछयों मड़ले नदलाल।
लाल जो पारो भौजी पालने
बिटियों देओ तमोल।
× × ×

उठौ सूरजमल भार भये नारे सुअटा।
मालिन ठाढ़ी दरबार ॥सुअटा॥
कौन नगर की मालिनी नारे सुअटा।
कौन बरन के फूल ॥सुअटा॥
गढ नरवर की मालिनी नारे सुअटा।
चम्पा चमेली के फूल ॥सुअटा॥

लोग उन्हें अनाज और पैसा देते हैं। उन्हें ले कर वे सब मिल कर आशीर्वाद देती हैं

दूधन पूतन घर भरे
नातों भरे चटसार। नारे सुअटा।
धन सपत ऐसे बड़े

जैसे बड़े नभ वेल। नारे सुअटा।

गनगौर की मूर्ति बना कर लीप पोत कर तथा रंग बिरंगे बेल-बूटों एवं फूलों से सुशोभित भांति भांति के चौक पूरकर कन्यायें तन्मयता से कहीं-कहीं गाती हैं—

हेमांचल जू की कुंवरें लड़ायते
नारे सुअटा।
सो गौरावाई नेरा तेरा मैयो बेटी बौ दिना।
नारे सुअटा॥

ठगाई न हो बारे बड़ा
हम घर हो खिपना-पुतना
सास न हो दे दे गरिया
ननद न हो चढ़े अटरिया
जी के फूल तिल्ली के दाने
चन्दा उगे बड़े भुनसारे।

नौरता का खेल

यह खेल बुन्देलखण्ड में 'नौरता' के नाम से विख्यात है जिसे प्रमुखत कुमारी कन्यायें ही खेलती हैं। शादी हो जाने पर नौरता खेलने वाली लड़की को नौरता उजेना पड़ता है। इसके लिए वह शादी होने पर प्रथम वर्ष की नौदुर्गों या नवरात्रा में विशेष रूप से घर बुलाई जाती है। पकवान बना कर पूजन कराता है जिसे अन्न वस्त्र तथा चांदी सोने के घड़ा सूरज भेंट किये जाते हैं। यहां की स्त्रियों में ऐसा विश्वास है कि जो लड़की नौरता को नहीं उजती वह मरकर भूत बनती है तथा भगवान उसे नहीं तारते। झिरिया के अन्दर जलने वाले दीपक का तेल सभी थोड़ा थोड़ा ले कर अपने घरों में हिफाजत से रखते हैं। ऐसा कहा जाता है कि यह तेल सेहुआ नामक रोग को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिये रामबाण का काम करता है।

इस खेल का महत्व

मनोरंजन की दृष्टि से 'नौरता' खेल बुन्देलखण्ड की लड़कियों के जीवन में विशेष महत्व रखता है। इसके पीछे क्या भावना थी यह कहना कठिन है। कहा जाता है कि किसी समय एक सुअटा नाम का राक्षस था जो लड़कियों को बहुत सताया करता था। वह उन्हें किसी भी तरह की हानि न पहुंचावे इसलिये कन्यायें एकत्रित हो कर उसकी स्तुति करती हैं। हमें तो इस खेल का सम्बन्ध नरकासुर की कहानी से जान पड़ता है। वह भी लड़कियों को खूब त्रस्त किया करता था। उसके कारागार में सैकड़ों कन्यायें थीं। सत्यभामा ने भगवान् कृष्ण की सहायता से उसका वध करके सबकी स्त्रियों की रक्षा की थी। सम्भव है उसके वध के पूर्व लड़कियां उसकी प्रशंसा या गुणगान करके उससे त्राण पाने का प्रयत्न करती हों और तभी से प्रतिवर्ष यह प्रथा चली आ रही है। नरकासुर का वध सत्यभामा ने भगवान् श्रीकृष्ण की सहायता से ठीक दीपावली के दिन किया था। इस दृष्टि से नवरात्र में उसके अत्याचारों से बचने के लिए उसकी स्तुति करना ठीक प्रतीत होता है। या हम यह भी कह सकते हैं कि वर्षा के उपरान्त अपने परिवार की समग्र व्याधियों के नष्ट होने के उपलक्ष में ही लड़कियां यह पूजा करने लगी हैं। कुछ भी हो यह खेल यह उत्सव और यह पूजा हमारी तत्कालीन संस्कृति पर अच्छा प्रकाश डालती है।

★

सेतु भंजन

[पृष्ठ ८ का शेष]

ऊर्ण (ऊन) के या फिर ताम्र्व वस्त्रों के। अयोध्या में वे देख आये थे कि वहां लोग विशेष २ अवसरों पर ताम्र्व वस्त्रों से बुने कौसुम्भ (केसरिया) परिधान धारण करते हैं तब से वे भी उसके प्रेमी हो गये थे।

"राघव के शुभागमन पर हम कौसुम्भ ताम्र्व वस्त्र ही पहनेंगे" बहुतों का निश्चय था।

पशुओं तथा सिन्धुनद के प्रदेश उनके यहां से दूर थे फिर भी शति ऋतु में उपयोगी गान्धार का अपेक्षित सुन्दर सुपुष्ट ऊर्ण [ऊन] उन्हें प्राप्त हो जाता था। वानरों की माताएँ स्वयं अपने हाथों ऊर्ण—वस्त्र बुनकर अपने पुत्र पुत्रियों को जब पहनातीं तो उनके हर्ष आनन्दातिरेक की सीमा न रहती।

'क्यों रे गवाक्ष, किसी ने ऐसे ही तो नहीं कह दिया?' वृद्ध जाम्बवान् ने अपनी धुंधली आंखों में शंका की रेख जमा कर पूछा।

'नहीं काका अंगद जी ने स्वयं अपनी आंखों से देखा है पुष्पक का प्रकाश। यहां से कुछ दो ही योजन तो है वह अरण्यगामी जहां की एक ऊंची चोटी पर से उन्हें वह दिखायी पड़ा' सुषेण ने उत्साह से कहा।

'अच्छा अंगद ने स्वयं देखा है तब तो अवश्य पुष्पक ही होगा। वह उसे पहचानता है' इतना कह कर वे लम्बे डग भरते सुग्रीव के प्रासाद की ओर चल दिये। इस समय उनके वृद्ध हृदय में भी तरुणों जैसी स्फूर्ति आ भरी थी।

'कुन्दु भाई, क्या यह सत्य है कि राघव अपनी पुरी से आ रहे हैं?' तार ने जो एक बड़ी 'पर्षद्' (पाठशाला) का संचालक था—राह चलते पूछा।

'तू पर्षद् कैसे चलाता है तार भैया, अरे इसमें भी आश्चर्य की बात है कोई? कितने वर्ष व्यतीत होने आये और अब कहीं आज वे आ रहे हैं, जो हमें अपना समझे वह क्या इतने वर्षों हमें इस प्रकार भुलाये रख सकता है। हूँ—तू आंखें क्या फाड़ता है। भाई—राघव आयें तो देख मैं कैसी उन्हें सुनाता हूँ......' कुन्दु के थोड़े फासले पर आ रहे नील ने बड़े विश्वास से कहा।

राघव के आने का समाचार सुनकर जाम्बवान्, अंगद, कुमुद, तारा, कुन्दु, गवाक्ष, सुषेण तथा नल आदि उनके सभी सुहृद-स्नेही सुग्रीव के यहां एकत्र हो गये थे, केवल हनुमान जी का अभी तक कहीं पता न था, वे कई दिन हुए कहीं दूर के ग्रामों की ओर गए थे। उन्हें बुलाने आदमी भेजे जा चुके थे। वे अब वृद्ध हो चले थे तथा अपने इस अंतिम दिनों में यथाशक्ति चल फिर कर ग्रामों में सद्भावना तथा सदाचार की शिक्षा देते रहते थे। उनकी काया अभी भी पर्याप्त पुष्ट थी तथा श्वेतश्मश्रु समन्वित मुख पर ब्रह्मवर्चस् दीप्तमान था।

जो लोग उन्हें खोजने भेजे गये थे। उन्होंने कई स्थानों पर भटकने के बाद एक ग्राम में देखा कि एक स्थान पर शताधिक ऋक्ष और वानर जातीय स्त्री-पुरुष एकत्र हैं तथा श्वेत केशों के ऊपर हिरण्यमय उष्णीष (शिप्रा) पहने वृद्ध हनुमान जी अंगुलिनिर्देश करते हुए कुछ कह रहे हैं। राम-रावण युद्ध का वह महासेनानी शांति के दिनों में लोगों को प्रबोध दे रहा था—

'यह सत्य है कि संग्रह का अन्त विनाश है, उत्थान का अन्त पतन है, संयोग का अन्त वियोग और जीवन का अन्त मरण है। जिस प्रकार सुदृढ़ स्तम्भों वाला भवन सुदीर्घ कालोपरान्त जीर्ण होकर ढह जाता है, उसी प्रकार मनुष्य भी जरा-जीर्ण होकर मृत्यु को प्राप्त हो नष्ट हो जाता है। जैसे समुद्र में प्रवहमान दो काष्ठ-खण्ड एक दूसरे से मिल कर फिर विलग हो जाते हैं उसी प्रकार मनुष्यों में भी एक दूसरे के साथ संयोग वियोग होता रहता है, स्त्री पुत्र कलत्र और पशु ये सभी कुछ काल के लिए एकत्र होते हैं और फिर अन्यत्र चले जाते किन्तु आत्मवादी दर्शन का कहना है कि अब तक जियो—सविता की भांति प्रकाशमान होकर जियो...।'

'सविता की भांति?' एक ने बीच में धीरे से कहा जिज्ञासु भाव से।

—'हां—सविता की भांति; हाथ पर हाथ रख कर बैठने वाले व्यक्ति का भाग्य बैठा रहता है; उठने वाले का भाग्य उठता है, तन्द्राग्रस्त मनुष्य का भाग्य सदैव तन्द्रावस्था में रहता है, किन्तु संचरणशील का भाग्य भी गतिशील हो उठता है। इन्हीं अर्थों में शयन की दशा कलि है, निद्रा का परित्याग द्वापर है, उत्थान त्रेता है और संचरण कृतयुग है। निद्रापर्यंत संचरण तक की चारों अवस्थायें ही 'चतुर्युग' की प्रतीक रूप हैं। वैदिक सूत्रानुसार पर्यटन से 'मधु' तथा संचरण से संचरण से 'स्वादु उदुम्बर' की प्राप्ति का यही तात्पर्य है और इस तत्व का निदर्शन सतत संचरणकारी सविता के दर्शन मात्र से ही हो जाता है।'

सहसा उनकी दृष्टि नवागन्तुकों पर पड़ी।

'कैसे?'

'राघवेन्द्र आ रहे हैं.....'

'कौन मेरे प्रभु.......आज ही?'

'संभवतः आज ही आ जांय, अंगद जी को कुछ घड़ी पूर्व पुष्पक की किंचित झलक दिखाई दी है।'

और सबको यथायोग्य नमस्कार—आशीर्वाद कह कर चल पड़े थे। मार्ग में पूछते जाते थे—नगर सजाया गया है न? द्वारों पर तोरण पताकायें तथा मंगल कलश आदि का स्थापन तो कर दिया है न? महाभाग सुग्रीव उनके स्वागत का सम्यक् आयोजन तो कर रहे हैं न?

उनके पगों में आज अकल्पित गति आ भरी थी—जिसका अनुसरण करना कठिन सिद्ध हो रहा था लोगों के लिए।

'सन्ध्या तक वे सब ग्रामीणजन भी आ जायेंगे अपने पशु आदि का उचित प्रबन्ध कर' वे कहते जा रहे थे।

× × ×

'केवल आज की रात्रि ही व्यतीत कर सकूंगा यहां' अत्यन्त विनम्र स्वर से मन्द स्मित करते हुए कह रहे थे वे। असंख्य आबाल वृद्ध-वनिता तथा युवा घेरे बैठे थे उन्हें—अपने राघव को।

'आते देर नहीं और जाने का भी कार्यक्रम निश्चित हो गया आपका?' वृद्ध जाम्बवान् के स्वर में संचित उपालम्भ आ भरा।

'हां, दर्शनमात्र करने थे आप लोगों की इस पुरी के और कल प्रभात में ही विभीषणजी से भी भेंट करनी है......', सभी ऋक्ष-वानर जातीय स्त्री-पुरुष सोच रहे थे भाव विगलित हो कि कैसे बोलते हैं ये? ऐसा स्वर उन्हें और भी कहीं सुन मिला है कभी! सौजन्यता-शीलता और विनय के आगार हैं उनके राघव, वे देख रहे थे और यही अनुभव भी कर रहे थे।

'भैय्या लक्ष्मण और माता जानकी तो सकुशल हैं?' बहुत देर बाद हनुमान जी का मुंह खुला खुला।

'लक्ष्मण भाई और तुम्हारी माता ....' कण्ठावरोध हो आया हो, उन्हें जैसे। 'मुझे समाचार भेजना उचित न प्रतीत हुआ—सोचा आप लोग भी दुःखी होंगे और सभी साकेत दौड़े आयेंगे......।' आंसू पोंछते हुए बोले उनके राघव।

समस्त जन समूह शोकार्त हो सिर धुनने लगा। वृद्ध हनुमानजी, सुग्रीव तथा जाम्बवान् आदि शिशुवत् रो रहे थे। वानर तथा ऋक्ष स्त्रियां भी 'जानकी' का नाम ले-ले कर करुण विलाप कर रही थीं।

अंगद और नल 'भैय्या लक्ष्मण' की पुकार लगा कर चीत्कार कर रहे थे, जैसे उन सबका सर्वस्व नष्ट हो गया हो।

और राघव सोच रहे थे कि साकेत और इस किष्किन्धापुरी में तनिक भी तो अन्तर नहीं अनुभव होता। ठीक इसी प्रकार तो वे साकेतवासी भी रो पड़ते हैं जानकी और लक्ष्मण का प्रसंग आ जाने पर।

× × ×

दूसरे दिन—

नगरकोट के उच्च परकोटे पर खड़े विभीषणजी आकाश की ओर टकटकी लगाये बार-बार हर्षोत्फुल्ल मुद्रा में कह रहे थे—

'हां—हां, मुझे तनिक भी संदेह नहीं निश्चित ही यह पुष्पक है, धन्य भाग्य राघवेन्द्र को हम अभागों का स्मरण तो आया।'

अन्य लंकावासी भी हाथों को माथे पर उठाये आकाश की ओर बहुत ऊंचाई पर दृष्टि टिकाये थे और अनेक जन दूसरों के कंधे पकड़-पकड़ कर दिखा रहे थे कि—'तुम्हें नहीं दिखा अभी—वह देखो उस वृक्ष की सीध में ऊपर देखो ....वह ......वह देखो झलका, दूर है अभी।'

पुष्पक विमान के अति उच्च आकाश में झिलमिलाते प्रकाश ने प्रत्येक दर्शक के हृदय को आलोकित कर दिया हो मानों इस प्रकार वे हर्षित हो रहे थे।

लंका की समस्त सैन्य विमान के पृथ्वी पर उतरते ही राघवेन्द्र के स्वागतार्थ सैनिक प्रयाण करेगी। तदर्थ सभी सैनिक अपने-अपने अस्त्र शस्त्र सजाने लग गये। उनके शीर्षों पर लौह शिप्रा (शिरस्त्राण) और शरीर पर दुर्भेद्य द्रापि (कवच) दीप्तिमान हो उठे। प्रत्येक सैनिक के पृष्ठभाग में बाणों से भरा निषंग झूलने लगा। सहस्रों सैनिक अपने स्कन्ध से प्रत्यञ्चामण्डित धन्वा लटकाये, दाहिने हाथ में सृक (भाला) लिए तथा पैरों में वाराह-चाम के सुदृढ़ पदत्राण पहने

[शेष पृष्ठ २० पर]

युग-निर्माता कलाकार स्व० श्री प्रेमचन्द

[पृष्ठ २ का शेष]

प्रेमचन्द के सामने आज़ादी और सामाजिक विकास का स्पष्ट आदर्श था। वे कला को जीवन के लिए समझते थे। जीवन को कला के लिए नहीं। इस कारण उनके सभी उपन्यासों की कथा-वस्तु बिल्कुल स्पष्ट है।

देश की आर्थिक समस्या को कर्मभूमि के रचयिता ने दो दृष्टिकोणों से देखा है। पहला गांवों में लगानबन्दी और दूसरा शहरों में म्युनिसिपल बोर्ड के रुपए का सदुपयोग। उपन्यासकार ने ज़ोरदार शब्दों में मांग की है कि म्यु० बोर्ड के रुपए का उपयोग गरीबों के लिए हो। श्रीमानों से धन लिया जाय और उसे निर्धनों के हित में व्यय किया जाय। इक्के तांगे वाले, नाई, धोबी और इस वर्ग से सम्बन्धित अन्य नागरिकों के प्रति नगरपालिका अथवा ज़िला बोर्ड का ध्यान बिल्कुल नहीं जाता। भगवती चरण वर्मा ने निम्न पंक्तियों में इस वर्ग का कितना मार्मिक वर्णन किया है:—

"भूखी छाती पर फोड़ों से
बने हुए हैं कुछ कच्चे घर।"

निर्धनों के नारकीय जीवन का इससे अधिक वीभत्स चित्र और क्या हो सकता है? कर्मभूमि में विभिन्न समस्याओं की मंदाकिनी परिवार से आरम्भ होकर ब्रिटिश शासन के सुरक्षित दुर्ग पर जा पहुंचती है। राष्ट्रीय आन्दोलन का वह भूकम्प जिस समय जनता को ही नहीं, हाकिमों को भी प्रभावित करने लगता है, उसी वक्त सफलता के दर्शन होने लगते हैं।

पात्र व चरित्र चित्रण

कर्मभूमि के पात्रों को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं। निर्धन और धनवान। दो तीन रेखाएं खींच कर ही पात्र की तस्वीर खींचने में प्रेमचन्द पारंगत हैं। कुशल लेखक का लक्षण भी यही है।

प्रेमचन्द को जनता के सभी वर्गों का सम्पर्क प्राप्त हुआ था। उनकी विलक्षण दृष्टि ने उनके अन्तराल में बैठकर वास्तविकता को देखा था। यही कारण है कि प्रेमचन्द के उपन्यासों में हजारों प्रकार के लोगों का चित्र मिलता है।

अनमेल विवाह का कुपरिणाम प्रेमचन्द स्वयं भुगत चुके थे। आप बीती के आधार पर जगबीती लिखने वाले कलाकारों में प्रेमचन्द भी एक थे। कर्मभूमि में अनमेल विवाह के सजीव उदाहरण अमरकान्त और सुखदा हैं। अमरकान्त में आरम्भ से ही सामाजिक चेतना वास करती है। सुखदा में विलास क्रीड़ा कर रहा है।

अमरकान्त मध्यवर्ग का एक विराग युवक है। उसके अन्दर कमज़ोरियां हैं। विकट परिस्थिति निर्माण होने पर वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है। परन्तु सुखदा एक चमत्कृत पात्र है। वह भारत की आधुनिक नारी के समान किसी का सहारा लिए बिना ही खड़ी होना चाहती है। इन दोनों पात्रों का विभेद कर्मभूमि में उतरने के बाद मिट गया। दोनों एक दूसरे को पहिचान सके।

प्रेमचन्द के सभी पात्रों का चरित्र-चित्रण कथोपकथन पर आधारित है। आधुनिक लेखकों के समान मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पर नहीं। उनके पात्रों में भारतीय गृहस्थ जीवन की मार्मिक झांकी मिलती है। यही कारण है कि प्रेमचन्द स्त्रियों में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। उनके पात्रो में मनोवैज्ञानिक नहीं, मानवीयता है।

प्रेमचन्द के उपन्यासों के चरित्र वर्ग अथवा जाति के प्रतिनिधि हैं। उनमें अपने वर्ग की विशेषताओं पर प्रकाश डालने की असाधारण प्रवृत्ति है। अतः उपन्यास जगत में आजकल व्यक्ति-चित्रण की जो नई प्रणाली चल रही है, उसका प्रेमचन्द में सर्वथा अभाव है।

शैली

प्रेमचन्द की भाषा व शैली सम-सुलभ है। "ज़बान गोया मिश्री घुली हो" के वे प्रबल समर्थक थे। उनकी भाषा में खड़ी बोली, अवधी उर्दू और बनारस के इलाके की पुट है। शब्दों को यथास्थान प्रयुक्त करने की कला में प्रेमचन्द पारंगत थे। यही कारण है कि उनकी भाषा चटपटी हुई है। उसमें ओज है; जीवन है। हास्य और व्यंग्य की झलक ने उसमें चार चांद लगा दिए हैं बात कहने का उनका ढंग बिल्कुल सीधा है। अतः वाक्य छोटे हैं।

जीवन दर्शन

हिन्दी साहित्य के वर्तमान मध्ययुग में प्रेमचन्द को अनायास ही युगनिर्माता कलाकार के पद पर बिठाया जा सकता है। उनकी रचनाओं में युग की सभी समस्यायें प्रतिध्वनित हुई हैं। साहित्य निर्माण के लक्ष्य को उन्होंने भली भांति समझा था।

प्रेमचन्द की रचनाओं में हमें आदर्श और यथार्थ के योग्य समन्वय के दर्शन होते हैं। गांधी जी की अहिंसा का चित्रण करते समय भी उन्होंने हिंसा के यथार्थ पहलू की उपेक्षा नहीं की। कर्मभूमि में अहिंसा के साथ ही गीता के कर्मयोग का प्रतिपादन किया गया है। प्रेमचन्द हृदयपरिवर्तन के गांधीवादी सिद्धांत को मानते थे। उनका यह विश्वास था कि मानव में सात्विक और तामसिक दोनों प्रवृत्तियों का निवास है। है। परिस्थितियों के प्रभाव से मानव की सात्विकता दब जाती है। परन्तु अंततः ऐसा समय आता है जब उसका हृदय परिवर्तित हो कर एक बार पुनः सात्विकता से सराबोर हो उठता है।

सलीम, समरकान्त, सुखदा, अमरकान्त, काले़खां, मुन्नी आदि सभी के जीवन में परिवर्तन का उपर्युक्त सिद्धांत लागू होता है।

प्रेमचन्द सुधार चाहते हैं। प्रश्न उठता है पहले व्यक्ति का सुधार हो या परिस्थिति का? प्रेमचन्द व्यक्ति के सुधार द्वारा परिस्थिति को सुधारना चाहते हैं। उनके इस सुधारवादी आंदोलन का अस्त्र सत्याग्रह है। कभी २ भूख हड़ताल का सहारा भी लिया गया है।

सुधारवादी दृष्टिकोण के कारण प्रेमचन्द की रचनाओं में जन जाग्रति तो है, परन्तु जब जाग्रत समाज क्रांति का आलिंगन करने लगता है, तब लेखक समझौते पर आ उतरता है। इस कारण उनकी रचनाओं के जीवन दर्शन में अस्वाभाविकता आ गई है। अहिंसा का प्रभाव सर्वोपरि बताने के लिए उन्होंने परिस्थिति के परिवर्तन की ओर उपेक्षा की दृष्टि से देखा है। क्रांति से वे सदा दूर रहे हैं। गांधीवाद को इस अलगाव ने प्रेमचन्द को विश्व साहित्य के महान् कलाकारों में खड़ा होने से रोक लिया है। उनकी रचनाओं का यह दोष कर्मभूमि में भी दीखता है। अतः बाकी सब बातों के होते हुए भी प्रस्तुत उपन्यास अपने जीवन दर्शन में छोटा सिद्ध होता है।

—•—

जैसे को तैसा

[श्रीमकला कोठीवाल]

प्रतापगढ़ में एक राजा था। उसके एक लड़की थी। राजकुमारी का नाम कान्ता था। राजकुमारी बहुत ही सुन्दर एवं सरल स्वभाव की था और सदैव प्रसन्न चित्त रहती थी। उसकी माता उसे बहुत चाहती थी, तथा वह भी उसे अत्यन्त प्रेम करती थी। माता पिता उस देख कर फूले न समाते थे।

दुर्दैव से यह न देखा गया और रानी की मृत्यु हो गई। माता की मृत्यु से कान्ता बहुत दुखी रहने लगी। प्रजा ने राजा से शादी के लिए प्रस्ताव किया, लेकिन राजा ने मना कर दिया। मन्त्रियों के बहुत अनुनय विनय करने पर राजा ने अपनी शादी प्रतापगढ़ की राजकुमारी कामिनी के साथ कर ली। कामिनी जितनी सुन्दर थी, मन की उतनी ही कटु और कर्कशा थी।

वह कांता को देख कर जला करती थी। उससे खूब काम करवाती और बात-बात पर मारती थी। लेकिन अपनी लड़की शोभा को बहुत प्यार करती थी। शोभा के खाने के लिए मेवा और फल देती थी, लेकिन कांता के लिए चने की रोटी देती थी। अब राजा भी कांता को उतना प्यार नहीं करते थे।

इतने दुख सहने पर भी कांता सदैव प्रसन्न रहती थी। परन्तु प्रतिदिन के कष्ट सहने पर दुबली होती जाती थी। इससे कांता की मा को बहुत दुख हुआ। और एक दिन उसने कांता को स्वप्न दिया कि मैं अमुक स्थान पर गाय हो गई हूं तुम मेरा दूध प्रतिदिन पी आया करो।

दूसरे दिन से कांता रोज गाय का दूध पी आती थी। इस तरह बहुत दिन बीतते गये। कांता पहले की तरह मोटी हो गई। यह देख कर कांता की सौतेली मा को बड़ी जलन हुई और इस चिन्ता में रहने लगी कि कांता सवेरे को कहां जाती है। एक दिन उसने शोभा को सिखा कांता के साथ भेज दिया। कांता के मना करने पर भी शोभा उसके साथ गई। जब कांता दूध पी चुकी तो शोभा ने जिद की कि मैं भी दूध पियूंगी। जैसे ही शोभा दूध पीने बैठी। गाय ने जोर से लात मारी। शोभा रोती हुई मा के पास गई और सारा वर्णन कह सुनाया। रानी गुस्से में भर गई और जब राजा आये तो झूठे २ लगा कर गाय को मरवा डाला।

एक बात और थी कि जितनी कांता सुन्दर थी, उतनी ही शोभा काली और कानी थी। प्रजा कांता को बहुत चाहती थी और जो उसे देख लेता था, वही उसे प्यार करने लगता था। इससे रानी बहुत जलती थी।

जब कान्ता बड़ी हो गई तो राजा को उसकी शादी की चिन्ता हुई, उसने मुलतान के राजकुमार के साथ कान्ता की शादी करदी। कान्ता की सुसराल से बहुत सा सामान आया, जिससे रानी जल भुन गई और इसमें षड़यन्त्र रचकर कान्ता के स्थान पर शोभा को विदा कर दिया और कान्ता को जादू की कीलें गाड़ कर चिड़िया बनाकर उड़ा दिया। वह उड़ते उड़ते मुलतान जा पहुँची और राजकुमार के महल पर बैठकर कहती —

कान्ता रानी काली-कानी।
कानी टिको चिपर सानी ॥'

एक दिन अवसर पाकर राजकुमार ने उसे पकड़ लिया और पिंजरे में बन्द कर दिया। एक दिन राजकुमार शिकार को गया था उस चिड़िया को देखकर शोभा पहचान गई और गुस्से में आकर धूप में डाल दिया।

पहेली

१ आजा सहेली शब्द ले,
गज हस्ता को अन्त।
ये सौदा तुम भेज दो,
श्याम सौने कन्त ॥

२ हरी हरी चरवी
खुरकुरे काटे।
बताओ तो बताओ
नहीं तो नाक काटे ॥

३ नारी से नर भयो,
गली गली बेचत फिरे,
कोई ले कोई ले ॥

—उत्तर आगामी अंक में

———

रेडियो पर बच्चों का प्रोग्राम आज कुछ अच्छा नहीं है। क्यों ठीक है न?

जब राजकुमार लौटकर आया तो चिड़िया को बाहर धूप में पड़ा पाया। राजकुमार को बहुत दुख हुआ। और वह उसे सहलाने लगा। उसके हाथ में कीलें चुभीं। उसने उन्हें निकाला। कीलों के निकलते ही चिड़िया कन्या रूप में परिवर्तित हो गई राजकुमार विजय उस देखकर डर गया। और डरते-डरते उसने पूछा, 'तुम कौन हो। राजकुमारी कांता ने सब वर्णन कह सुनाया। सब बातों को सुनने पर राजकुमार विजयसिंह के क्रोध का ठिकाना न रहा और उसने शोभा के टुकड़े करवा २ कर और और में बन्द करवा कर उसके मा के घर भेज दिया।

रानी कामिनि खुशी खुशी फल का बोरा समझकर खोलने लगी। जब बोरा खोलकर देखा तो उनके पैरों तले की धरती खिसक गई। अपनी एक मात्र संतान की यह दशा देखकर वह रोने लगीं। किसी ने कहा है —

'जैसे को तैसा।'

इधर राजकुमार विजयसिंह और कान्ता सुखपूर्वक रहने लगे।

जरा हंसिए!

बहरा लड़का—अपने मित्र से 'यार तू मुझको अपनी पुस्तक नहीं देता है।

मित्र—मेरी मरजी।

बहरा लड़का—(अचम्भे से) तेरी कौन मर गई? अगर मय्या मर गई तो उसके तीन दिन करके दे देना। १२ दिन करके दे देना।

—रामेश्वरलाल वर्मा

× × ×

एक दिन हरी और राजेन्द्र स्कूल को जा रहे थे। रास्ते में राजेन्द्र ने हरी से पूछा कि तुम्हारी घड़ी में क्या बजा है इस पर हरि ने उत्तर दिया पौने दस। राजेन्द्र ने कहा तुम्हारी घड़ी नहीं घोड़ी है। इस पर हरी ने कहा, अगर यह घोड़ी होती तो मैं इस पर बैठकर स्कूल नहीं आता, इसको हाथ में क्यों बांधता।

—श्रीकृष्ण आयसवाल अलमोड़ा

× × ×

एक बार एक सज्जन इंगलैंड को हवाई जहाज पर जा रहे थे। जब इंगलैंड पहुँचे तो उन्हें कुछ सर्दी लगी।

सज्जन—पाइलट! हवाई जहाज के आगे के पंखे को रोक दो।

× × ×

मास्टर साहब—(लड़कों से) मह स्थल का कोई उदाहरण दो।

एक लड़का—जैसे आपकी खोपड़ी।

मास्टर—(लड़कों से) कोई ऐसे जानवर का नाम बताओ, जिसके दांत न हों।

लड़का—जी, मेरी दादी।

—भगवान चन्द्रलाल

हमारे नये सदस्य

४८ लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी काशी
४९ मदनलाल नारायी, जयपुर
५० रामभज मनोचा
५१ भगवानदास पी० वेद (बाबा) रुमार
५२ प्रेमनारायण कपूर
५३ विश्वनाथ रेड, जोधपुर
५४ राधेश्याम मोदी, देहली
५५ महेन्द्रकुमार खिलाल जयपुर
५६ सुशील कुमार स्वामी, नई देहली
५७ शैलबाला स्वामी देहली
५८ वद प्रकाश मित्तल
५९ रानकमार स्वामी
६० मक्खनराज सरकेठ, कानपुर

सेतुभंजन

[पृष्ठ १७ का शेष]

इधर से उधर दौड़ धूप करते दृष्टि-गोचर होने लगे ।

अद्भुत आभा-आभासित पुष्पक विमान लंकापुरी के प्रतिपल निकट आता जा रहा था ।

× × ★

दिन जाते देर नहीं लगती और संयोग के क्षण तो और भी छोटे सिद्ध होते हैं । राघवेन्द्र को आये आज एक पूरा सप्ताह हो गया था किन्तु लंकावासी उन्हें विदा करने को तैयार न थे । इसके अतिरिक्त स्वयं राघवेन्द्र को भी अभी ३-४ दिन और ठहरना अनिवार्य लग रहा था । अपने ही हाथों बांधा गया रामेश्वरम् सेतु अब उनके लिए एक जटिल समस्या बन गया था ।

अपने साथ आये हनुमानजी, जाम्बवान, सुग्रीव, अंगद, सुषेण, नल, गवाक्ष तार, कुमुद तथा कुन्दु आदि के बीच बैठे वे इस समय एक इसी समस्या का निदान सोच रहे थे । सहसा उन्होने विभीषण जी से पूछा:—

'आपको विश्वास है न, कि लंका का कोई भी अधिवासी कभी द्वेषवश रामेश्वरम्-सेतु के द्वारा ब्रह्मावर्त्त की धरती पर नहीं आ उतरेगा ?'

'नहीं रघुनन्दन, मैं कभी भी ऐसा विश्वास नहीं करता; मनुष्य के मन की स्थिति पता नहीं किस क्षण कैसी हो जाय और यदि उस समय उस पुण्यभूमि को किंचित् भी हानि पहुँची तो मैं मृत्यु-पर्यन्त भी प्रायश्चित न कर सकूंगा...'

सरल हृदय विभीषण जी ने अपने भाव स्पष्टतया व्यक्त करने में संकोच नहीं किया ।'

'इसके अतिरिक्त...' विभीषण जी कहते गये ।

'भविष्य में अनेक ब्रह्मावर्तवासी कौतुकवश तथा श्रद्धा के कारण इस सेतु-मार्ग से इधर रामेश्वरम् आदि की यात्रा के लिए आयेंगे और तब सम्भव है कि कभी कुछ लंकावासी उन्हें देखकर अपने पुराने द्रोह का प्रतिकार करना चाहें यद्यपि अब वे ऐसा नहीं सोचते कि ब्रह्मावर्त ने उनके साथ कोई अनौचित्य बरता है तथापि शंका तो शंका ही है...'

'तब तो एक ही मार्ग मुझे दीखता है कि इस सेतु को खण्डित कर दिया जाय जिससे सेतुमार्ग से आना जाना ही असम्भव हो जाय; क्यों आपका इस सम्बन्ध में क्या मत है ?' विभीषण जी की ओर देखते हुए वे बोले ।

'रघुनन्दन' विभीषण जी के विनम्र स्वर में कुछ विचित्र ही भाव मुखरित हो उठे—

'आप मुझसे पूछते हैं किन्तु मैं क्या आपसे अन्यथा सोचूंगा; मैं तो यही चाहता हूँ कि मेरे जीवनकाल में अथवा निकट भविष्य में किसी लंकावासी की दोषी चेतना यदि ब्रह्मावर्त को कोई हानि पहुँचाने की चेष्टा करेगी तो उसके लिए सेतु जैसा सुगम मार्ग न रह जाय...'

'अच्छा तब फिर ऐसा ही किया जाय'—कहते हुए वे लंकापुरी के नागरिकों की कुशल-क्षेम जानने के लिए विभीषण जी को साथ ले चल पड़े ।

× ★ ×

लंका में आये आज राघवेन्द्र को ११ वां दिन था । उन्होंने विभीषण जी को समझा-बुझाकर निश्चित कर लिया था कि आज वे साकेत के लिए प्रस्थान कर देंगे । लंकावासियों ने आनन्दाश्रु बहाते हुए उनका स्वागत किया था; उनके हृदय का सत्य उनकी आंखों में आ समाया था, मानो वे कह रहे हों कि—'रघुनन्दन, हम तुम्हें कहां तक सराहें; हमारे शरीर-मन-प्राण तुम्हारे उपकारों से बोझिल हैं; तुमने हमें नया जीवन दिया, हमारे पापी प्राणों में नया प्रकाश, सत्य और मानवता की नयी ज्योति जगायी क्योंकि पौलस्त्य के पापों ने हमारे जीवन में भी कालुष्य ला भरा था...।' उनके भावत मुखों पर दृष्टिपात कर राघव को भी विश्वास हो गया कि वे अब ब्रह्मावर्त और ब्रह्मावर्त के मानव तथा उसकी सभ्यता-संस्कृति के द्वेषी नहीं रह गये हैं । और उपकृतमना लंकावासी पूरे १० दिनों तक राघव की संगति पाकर अपने को धन्य मान रहे थे; उनकी प्रसन्नता का वर्णन नहीं हो सकता । राघव के साथ आये हनुमान जी, जाम्बवान्, सुग्रीव, अंगद, नल, सुषेण, कुन्दु, कुमुद, गवाक्ष तथा तार जैसे अपने पूर्व परिचितों के सौहार्द—सिन्धु में डूबे लंका के अनेक युवा, वृद्ध इन दिनों देह-गेह की सुधि भूले हुए थे । वे उनसे साकेत और किष्किन्धापुरी के विषय में सैकड़ों प्रश्न करते और फिर भी जैसे उन्हें संतोष न होता । लक्ष्मण भैय्या और जानकी माता के विषय में वार्ता छिड़ने पर उनकी सबकी पलकें भीग जातीं और एक बार दोबारा उनके दर्शन न कर पाने के दुख से वे देर तक रोते रहते ।

हां तो—आज राघवेन्द्र की विदाई का दिन था इसलिए लंकावासियों के प्रसन्न मुखों पर वेदना तथा विषाद की रेखायें गहरी हो उठीं । राघव उनसे वेदना तथा विषाद की रेखाएं गहरी हो उठीं । राघव उनसे विलग हो आज दूर चले जायेंगे । यह सोचते हुए उनकी आंखें छलछला आती थीं । राघवेन्द्र पिछले १० दिनों से नित्य उन सबके एक एक के घर जाते थे, उनके यहां देर तक बैठते थे, उनके बच्चों को दुलराते थे, और ऐसा लगता था कि मानों वे अब सबके बीच से अब कभी नहीं जायेंगे—

परन्तु आज उनके प्रस्थान के समाचार ने समस्त लंकानगरी में वियोग जनित दुःख के बादल ला घेरे ।

"उदास न हो विभीषण, संयोग वियोग तो समय—सिन्धु की लहरें मात्र हैं और इन सबके बीच से ही मनुष्य को अपना मार्ग तय करना ही पड़ता है फिर तुम कहां तक किसी के लिए रोते बैठोगे.........इधर मेरी ओर देखो......"

इस विदाई की कठिन बेला में विभीषण जी अपना संयम खो बैठे थे और मुंह फिराए निरन्तर रोये जा रहे थे ।

"प्रतीक्षा के बहुत वर्षों बाद तुम्हें फिर एक बार फिर से पाया था रघुनन्दन, और विगत दस दिनों में कभी एक क्षण भी न सोचा कि तुम कभी फिर इस प्रकार चले जाओगे"......एकान्त कक्ष में भक्त अपने भगवान की अश्रु अर्चना कर रहा था ।

"रोओ नहीं विभीषण" इस बार लगा कि जैसे उनकी धीर-गम्भीर वाणी भी कांप रही है; उन्होंने अपने हाथों से विभीषण जी के नेत्र पोंछ दिये और बोले—

"जाता हूँ भाई, अब कदाचित् इस जीवन में फिर कभी तुमसे भेंट न हो सके, अन्तु एक बात कहे जाता हूँ—यह राज्यमद्य पुरुष के मन में सतत अपनी मदिरा का मद भरने की चेष्टा करती रहती है, तुम इससे बचे रहना विभीषण, जिससे तुम राजा के रूप में अपने साथ इस धरती पर बसने वाले मानव की सेवा कर सको और प्रयत्न कर सको कि लंकावासी ब्रह्मावर्त की भूमि पर पलने वाले प्राणी को अपना मान सकें तथा अपनी संतान के संस्कारों में दुरावन विष के बीज न बोवें...'

लंका से राघव ने विदा ली और पुष्पक साकेत की दिशा में चल पड़ा । विभीषण जी ने बहुत कहा कि वे अपने साथ साकेत लिए चलें तथा कुछ दिनों तक उन्हें भी यह अवसर दें कि वे उनके निकट रह सकें किन्तु राघवेन्द्र न माने; "लंका में तुम्हारा दो दिन भी न रहना कल्याणकर न होगा" कहकर उन्होंने उनका मुंह बंद कर दिया था ।

उनके साथ आये हनुमान जी, जाम्बवान, सुग्रीव आदि दसों लोग अत्यधिक प्रसन्न थे क्योंकि उनकी बात राघव ने मानकर कह दिया था कि—"आप लोग चाहें तो कुछ दिन साकेत रह सकते हैं"

किन्तु राघवेन्द्र के लंका से चलते समय सेतु का दस योजन [८० मील] विस्तृत मध्यभाग पूर्णतया खण्डित हो चुका था । अब इस मार्ग से आना जाना न तो लंकावासियों के लिए सम्भव रह गया था और न ब्रह्मावर्त के ही लोगों के लिए ।

[पृष्ठ १३ का शेष]

मानसिक और शारीरिक शक्तियां

बुद्धि और शक्ति का अपने जीवन में समीकरण प्राप्त किए हुये राष्ट्रीय चारित्र्य निर्माण की ओर सक्रियता से निरंतर आगे बढ़ने वाले लाखों लोग आज के राष्ट्रीय चरित्र की पुकार के लिये न केवल उत्तर हैं, अपितु आगे बढ़ कर सारे राष्ट्र में प्रखर ओजस्विता एवं चारित्र्य पुनर्जागृति करने के लिए दृढ़ व्रती हैं; जिनके सम्मुख राष्ट्रीय चरित्र की पुकार अरण्य रोदन नहीं किन्तु आचरेय प्रत्यक्ष सत्य है। विशाल भारतीय संस्कृति के सभी सद्गुणों को अपने शरीर में धारण किए हुए तथा उसके सभी उपयोगी भागों को मूर्त करने वाले लोगों को भले कोई प्रतिगामी कहे पर वे केवल भारत की महानता का कथन कर सतुष्ट होने वाले नहीं। इस सांस्कृतिक महानता को भारत के स्वर्णिम अतीत के पथ पर अपने जीवन में उतारने वाले हैं जो आज के युग के वैशिष्ट्य को भी साथ में लिये हुए हैं। केवल इस सर्वोत्कृष्ट तत्व के प्रति ही संघ विश्वासी कहे जा सकते हैं जो तत्व अंतरराष्ट्रीयता अलंकृत करने की पात्रता सिद्ध किये हुए है।

आगे आने वाला युग इसकी नैतिक जड़ को राष्ट्र के सर्वांगीण जीवन में व्याप्त देखेगा। राष्ट्र के सम्मान पग को भीखों आगे ले जाने वाले निस्वार्थ देवदूत के रूप में पावेगा। सब कुछ न्योछावर करके भी माता के उत्कर्ष ध्वज को उत्तेजित करने वाले समर धुरन्धर के रूप में अविरत खड़ा पावेगा। समय कितना भी लगे या संघ यह दावा भले न करे किन्तु भारतीयता का केवल प्रतीक भारतीय इच्छा का और आवश्यकताओं का केवल एक पूरक कदाचित् संघ ही होगा!

(पृष्ठ १३ का शेष)

जीवनकार्यों द्वारा इसके महत्व को बढ़ाने में निरन्तर योग दिया है। रामकृष्ण, विक्रमादित्य, शिवाजी आदि हमारी विजय परम्परा को आगे बढ़ाने वाले महापुरुष हैं। राम को विशेष रूप से इस पर्व के साथ जोड़ने का कारण यही है कि राम की रावण पर विजय के रूप में हमने समस्त राष्ट्र की समस्त साधु शक्तियों की अत्याचारी तथा निरंकुश रावण तथा कुवृत्तियों पर विजय के रूप में समझा। इसके अलौकिक परिणाम में हमने अपनी राष्ट्रीय आत्मा का चैतन्य स्पन्दन सुना। यही विजयादशमी का सनातन रूप है और इसी की परम्परा अक्षुण्ण बनी रहे, इसी ओर प्रयत्न की आवश्यकता भी है।

—★—

(पृष्ठ ८ का शेष)

दिया गया। वह श्रीराम की रावण पर विजय अन्याय और अनीति पर न्याय और नीति तथा अधर्म पर धर्म की विजय थी। श्रीराम ने रावण वध के द्वारा आर्यावर्त में न्याय, नीति और धर्म की स्थापना की। ब्राह्मणत्व और क्षत्रियत्व को तेजस्विता दी। इस प्रकार उन्होंने वर्णाश्रम धर्म की वृद्धि की।

जग-प्रसिद्ध बम्बई का सैंकड़ों वर्षों का पुराना

मशहूर अंजन (रजिस्टर्ड)

आंख शरीर का एक प्रमुख अंग है, जिसके बिना मनुष्य की जिन्दगी ही बेकार है। इसलिए "आंख ही जीवन है" का विचार छोड़कर लोग लापरवाही से आंख को खराब कर लेते और बाद में उम्र भर पछताते हैं। आंख की साधारण बीमारी भी, लापरवाही से, ठीक इलाज न करने से जीवन को अन्धा बना देती है। आंख का इलाज समय और सतर्कता से होना चाहिये। हमारे कारखाने का नैन जीवन अञ्जन काफी वर्षों से आंख की ज्योति बढ़ाने तथा आंखों की ज्योति स्थिर रखने एवं आंखों की सभी बीमारियों को दूर करने के लिए प्रसिद्ध है और लोगों की सेवा कर रहा है, इससे आंखों में कैसा भी धुन्ध, गुबार, जाला, माला फूला, पड़वाल, मोतिया-बिन्द, नाखूना, लाल रहना, आंखों से पानी बहना (ढलका), रतौंधी, दिनौंधी, एक चीज की दो चीज दिखाई देना, रोहे पड़ जाना, कम नजर आना या वर्षों से चश्मा लगाने की आदत ही क्यों न पड़ गयी हो, इत्यादि आंखों की तमाम बीमारियां बिना आपरेशन दूर होती हैं। आंखों को आजीवन सतेज रखता है, डाक्टर, वैद्य भी नैनजीवन अञ्जन द्वारा आंख के रोगियों का इलाज करते हैं तथा अन्य लोगों को इसके इस्तेमाल की राय देते हैं। एक बार अवश्य अनुभव करें! हजारों प्रशंसा-पत्र प्राप्त हैं। कीमत प्रति शीशी १।) ३ शीशी लेने पर डाक खर्च माफ। हर जगह एजेण्टों की आवश्यकता है।

नोट—हमारे अञ्जन की प्रसिद्धि, प्रचार तथा लोकप्रियता को देखकर कुछ लोग जनता को भ्रम में डालने के लिए "नैन-जीवन अञ्जन" से मिलता-जुलता नाम रख रहे हैं, जिनसे सावधान रहना चाहिए।

पताः—कारखाना नैन जीवन अंजन, १८७; सैण्डहर्स्ट रोड, बम्बई ४

स्वप्नदोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर
दाम ३।) डाक खर्च पृथक।
हिमालय केमीकल फार्मेसी हरिद्वार।

आपके व्यापार का सर्वश्रेष्ठ साधन

"वीर अर्जुन" साप्ताहिक तथा दैनिक में
अपना विज्ञापन देकर लाभ उठाइये।

संघ वस्तु भण्डार की पुस्तकें

जीवन चरित्र परम पूज्य डा० हेडगेवारजी	मू०	१)
,, ,, गुरूजी	मू०	१)
हमारी राष्ट्रीयता ले० श्री गुरूजी	मू०	१।)
प्रतिबन्ध के पश्चात् राजधानी में परम पूज्य गुरूजी	मू०	॥=)
गुरूजी - पटेल - नेहरू पत्र-व्यवहार	मू०	।)

डाक व्यय अलग

पुस्तक विक्रेताओं को उचित कटौती

सङ्घ वस्तु भण्डार झण्डेवाला मन्दिर नई देहली १

हमारे जीवनदायक प्रकाशन

"रक्षा बन्धन-बन्धन की रक्षा"

[लेखक — श्री हरिहर लहरी]

इस पुस्तक में लेखक ने अपनी ओजस्वी भाषा में इस महान् पर्व का ऐतिहासिक विवेचन तथा आज की परिस्थिति में इसका महत्व दिखाने का सफल प्रयास किया है। मूल्य ।)

अनन्त पथ पर

[लेखक — श्री वासुदेव आंठले एम० ए०]

यह एक सामाजिक उपन्यास है। मनोरञ्जक, भावपूर्ण और प्रवाहयुक्त होने के साथ-साथ सरल भाषा में लिखा गया है—अवश्य पढ़ें।

मूल्य २।) ★ डाक व्यय ।=)

हिन्दी सीखने वाले विद्यार्थियों के प्रति असीम अनुराग, निर्भयता, त्याग, परस्पर सहयोग तथा राष्ट्रप्रेम निर्माण करने वाली प्रारम्भिक पुस्तकें:—

हिन्दी वर्णबोध भाग १ — मूल्य ०—२—६
हिन्दी वर्णबोध भाग २ — मूल्य ०—४—०

छत्रपति सम्भाजी

एक महान आदर्श जीवन जिसका अंग-प्रत्यंग लाल-लाल लोहे की गरम सलाखों के द्वारा नोचा गया। मूल्य केवल १० आने

सुगम नागरी शीघ्रलिपि

(गुप्त-प्रणाली)

(Hindi Short Hand)

लेखक — श्री महेशचन्द्र गुप्त, प्रभाकर मूल्य ३)

भारत पुस्तक भण्डार १६, फैज बाजार, दिल्ली।

हिन्दी शार्टहैण्ड का नया आविष्कार

सुगम प्रणाली ★ मौलिक अन्वेषण

[श्री महेशचन्द्र गुप्त द्वारा रचित]

अब तक हिन्दी-शीघ्र-लिपि विषय विद्यार्थियों के लिए बहुत कठिन था। रचयिता ने अब इस विषय को अति सरल कर दिया है। शीघ्र-लिपि सीखकर विद्यार्थी २००) रु० मासिक सरलता से कमा सकता है। पिट्मैन शार्टहैण्ड के आधार पर रचित मूल्य केवल ३) रु०। पुस्तक के लिये—

भारत पुस्तक भण्डार, दरयागञ्ज, देहली को लिखें

कुञ्जी तथा वाक्यांश कोष के लिए प्रतीक्षा करें।

[रचयिता ने विद्यार्थियों की सुविधा के लिए शीघ्र-लिपि वर्ग अपने निवास स्थान ६७ मिन्टो रोड, नई देहली पर आरम्भ किया है। इच्छुक विद्यार्थी आविष्कर्ता से प्रातःकाल ७ बजे से ९ बजे तक मिलें या पत्र-व्यवहार करें।]

रजि० नं० डी० पी० ४६१

दीपावलि के शुभ पर्व पर

भारत के सांस्कृतिक प्रहरी ★ एकात्मता के ज्वलन्त प्रतीक

राष्ट्रभाषा के प्रमुख पत्र

❀ वीर अर्जुन ❀

का

दीपावलि विशेषांक

प्रकाशित कर रहे हैं

राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक आर्थिक व औद्योगिक समस्याओं पर साधिकार लेख व समाज को उचित मार्गदर्शन

★ ओजस्वी कवितायें, रोचक कहानियां व शिक्षाप्रद लेख

★ मनाभिराम बहुरंगे चित्र तथा हास्यरस व भाव भरे व्यंगचित्र

के अतिरिक्त

मुखपृष्ठ आर्ट पेपर पर तिरंगा कलात्मक अति भव्य चित्र

पृष्ठ संख्या १०० (२०×३०/४) मूल्य १) रजि० डाक से १।)

अपने लिये प्रति अभी से सुरक्षित करें। २० अक्टूबर तक वार्षिक शुल्क भेजने वालों को यह अङ्क विना मूल्य के दिया जायेगा।

	वार्षिक	अर्द्ध वार्षिक
दैनिक वीर अर्जुन	*३५)*	*१८)*
साप्ताहिक ,,	*१२)*	*६।।)*

विज्ञापन के लिये अद्वितीय माध्यम

सूचना — **विज्ञापन दरों की जानकारी के लिये पत्र-व्यवहार करें।**

विज्ञापन व्यवस्थापक —

वीर अर्जुन श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा, मुद्रक व प्रकाशक ने श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिए अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, देहली में छपवाकर प्रकाशित किया।

भूमध्यसागर की राजनीति

फ्रांस का परिचय

[श्री केशवदेव वर्मा]

[४]

स्पेन के उत्तरपूर्व में यूरोप महाद्वीप का प्रमुख देश फ्रांस है। स्पेन तथा फ्रांस की सीमा पर पाइरेनीज पर्वतमाला की दीवार है। फ्रांस के भी दो ओर समुद्र है। एक ओर अन्धमहासागर है जिसका एक भाग ही जो इंगलिश चैनल कहलाता है फ्रांस तथा शेष यूरोप को ब्रिटेन से पृथक करता है। ब्रिटेन का निकटतम पड़ौसी फ्रांस है। इतना ही नहीं फ्रांस के एक प्रदेश ब्रिटेनी से निकल बहुत समय पूर्व लोगों ने इंगलैंड विजय किया था और वहां स्थायी रूप से बस गए। इसी कारण इंगलैंड का नाम ब्रिटेन पड़ा। ब्रिटेन तथा फ्रांस की मुख्य भूमि के निकटतम स्थलों के मध्य लगभग २४ मील इंगलिश चैनल का सागर है।

दूसरी ओर स्पेन का दक्षिणी तट भूमध्य सागर से मिला हुआ है। इसके ठीक सामने भूमध्यसागर के दूसरी ओर उत्तरी अफ्रीका में फ्रांस द्वारा अधिकृत विशाल प्रदेश हैं। वे हैं — ट्यूनिशिया अलजीरिया तथा मोरक्को। इनके विषय में हम बाद में लिखेंगे। सागर तथा पाइरेनीज सीमा को छोड़ कर फ्रांस की शेष उत्तरी तथा पूर्वी सीमा क्रमशः बेल्जियम, स्वीटजरलैंड, जर्मनी तथा इटली से मिलती है। इनमें बेल्जियम, तथा स्विटजरलैण्ड तो छोटे राज्य हैं किन्तु जर्मनी तथा इटली से सम्बन्ध सदा ही महत्वपूर्ण रहे हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में प्रिंस आफ बिस्मार्क द्वारा मध्य यूरोप के कितने ही राज्यों को परस्पर गूंथकर एक प्रबल सगठित जर्मन देश खड़ा कर देने के पश्चात् फ्रांस तथा जर्मनी में भारी प्रतिद्वन्द्विता सदा रही है। और दोनों महायुद्धों में फ्रांस तथा जर्मनी एक दूसरे के विरुद्ध लड़े हैं।

फ्रांस एक गणराज्य है। यह फ्रांस के इतिहास में चौथा गणराज्य है। इंगलैण्ड के ही समान फ्रांस में भी एक राजा का शासन था। किन्तु फ्रांसीसी जनता उनके अत्याचार तथा कुप्रबन्ध से इतनी क्षुब्ध हो उठी कि फ्रांस में विश्वविख्यात जनक्रांति हुई। वह सर्व-प्रथम गणराज्य की स्थापना थी। किन्तु नेपोलियन के उदय ने उसे हड़प लिया। इस चौथे गणराज्य की राष्ट्रीय संविधान परिषद् का चुनाव २१ अक्टूबर १९४५ को हुआ। इस परिषद् ने १९ अप्रेल १९४६ को ३०९ के विरुद्ध ३०९ मतों से संविधान स्वीकार किया। किन्तु यह संविधान जनमत के द्वारा ठुकरा दिया गया। फ्रांसीसी जनता में से ९,२८४,८२० पक्ष में तथा १०,५८८,२७८ विपक्ष में मत आये और ८५११,६३५ लोगों ने कोई मत नहीं दिया।

ऐसी स्थिति में २ जून १९४६ को दूसरी संविधान परिषद् चुनी गई और उसने २९ सितम्बर १९४६ को दूसरा संविधान स्वीकार किया जिसके पक्ष में ४४० तथा विपक्ष मे १०६ मत आये। यही संविधान फ्रांसीसी जनता की स्वीकृति के लिए १३ अक्टूबर १९४६ को उपस्थित किया और ९,२९७,४७० पक्ष मे ८,१६५,४५९ विपक्ष में मत प्राप्त हुए ८५१९६३५ मतदाता अनुपस्थित रहे। इस प्रकार यह स्वीकार कर लिया गया और २४ दिसम्बर १९४६ से यह संविधान लागू है।

इस संविधान के अनुसार फ्रांस की संसद् के दो भाग हैं, एक राष्ट्रीय परिषद् और दूसरा गणराज्य की सभा। कोई भी व्यक्ति दोनों का सदस्य नहीं हो सकता। राष्ट्रीय परिषद् द्वारा स्वीकृत बिल पर गणराज्य की सभा विचार करती है किन्तु अन्तिम निर्णायक स्वीकृति राष्ट्रीय परिषद् के ही हाथ मे है। गणराज्य का प्रधान का चुनाव पार्लियामेण्ट के द्वारा होता है और उसका कार्यकाल ७ वर्ष है। यह केवल एक बार और चुना जा सकता है। इस प्रकार एक व्यक्ति अधिक से अधिक १४ वर्ष तक प्रधान रह सकता है। १६ जनवरी १९४७ को इसी प्रकार प्रधान का चुनाव करने के लिये दोनों भवन एकत्रित हुए थे। उसमें श्री विन्सेण्ट औरियल (समाजवादी) को ८८३ में से ४५२ मत प्राप्त हुए। इस प्रकार आधे से अधिक मत प्राप्त करने के कारण वे ७ वर्ष की अवधि के लिए प्रधान चुन लिए गए।

गणराज्य का प्रधान ही मंत्रिमण्डल के प्रधान अथवा प्रधानमन्त्री की नियुक्ति करता है। मन्त्रिमण्डल के कार्य क्रम और नीति को जनमत तथा राष्ट्रीय परिषद् के बहुमत का समर्थन प्राप्त होना चाहिए, तभी अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति हो सकती है। सभी मन्त्री सामूहिक रूप से अपनी साधारण नीति के लिए और व्यक्तिगत रूप से अपने कार्यों के लिये राष्ट्रीय परिषद् के प्रति उत्तरदायी होते हैं (गणराज्य की सभा के प्रति नहीं)। यदि १८ मास में दो बार मंत्रिमंडल का संकट उपस्थित हो तो परिषद् के प्रधान से परामर्श कर मन्त्रिमण्डल राष्ट्रीय परिषद् को भंग करने का निश्चय भी कर सकता है। ऐसी दशा मे परिषद् का प्रधान सभा का प्रधान नियुक्त हो जाता है जब तक कि नयी परिषद् नहीं आती। मन्त्रिगण दोनों भवनों में जा सकते हैं। संविधान मे कोई भी परिवर्तन राष्ट्रीय परिषद् के ⅔ बहुमत अथवा दोनों भवनों के बहुमत से ही हो सकता है। यदि यह बहुमत प्राप्त न हो सके तो उस पर जनमत लिया जाना आवश्यक है।

फ्रांस का समुद्रतट १७६० मील लम्बा है जिसमें १३०४ मील अन्ध महासागर का तट है और ४८३ मील भूमध्यसागर का। उसका शेष भू सीमा रेखा १६६५ मील लम्बी है जिसमे १२४६ मील की सीमा बेल्जियम, जर्मनी स्विटजरलैण्ड तथा इटली की सीमा से मिलती है और शेष ४१९ मील स्पेन से पूर्वी सीमा का सबसे बड़ा भाग जर्मनी से मिला हुआ है और यहीं रूहर का वह विवाद-ग्रस्त जिला है जिस पर फ्रांस का जर्मनी से सदा द्वेष व झगड़ा रहा है। पहिले महायुद्ध में जर्मनी के परास्त हो जाने के पश्चात यह जिला फ्रांस के शासन मे आगया था। द्वितीय महायुद्ध के कारणों में यह भी एक कारण था। जर्मनी की बढ़ती हुई सैनिक शक्ति का विचार कर फ्रांसीसी सरकार ने फ्रांस जर्मन सीमा पर एक सुदृढ़ दुर्ग निर्माण कराया था जो सारी ही सीमा पर फैला हुआ था। इसको 'मेजिनाट लाइन' कहते थे। इसके निर्माण में दस वर्ष लगे थे और यह संसार की सुदृढ़तम रक्षापंक्ति कही जाती थी। इसके सामने ही जर्मनी ने भी इसी प्रकार का दुर्ग निर्माण किया था। उसमें तीन वर्ष लगे थे। उसे 'सीगफ्राइड लाइन' कहा जाता था।

यह सत्य है कि द्वितीय महायुद्ध में जर्मन सेनायें तथा बमवर्षक दल 'मेजिनाट लाइन' को नहीं तोड़ सका। किन्तु उन्होंने बेल्जियम विजय कर उस ओर से फ्रांस पर धावा बोल दिया, और इस प्रकार 'मेजिनाट लाइन' को व्यर्थ कर दिया। फ्रांस की सेनायें जर्मनी की यान्त्रिक सेनाओं के आगे ठहर न सकी और फ्रांस का पतन हो गया। मेजिनाट लाइन तोड़ दी गई। आज जर्मनी स्वयं परास्त है और उसके एक भाग पर फ्रांसीसी सेना का अधिकार है। किन्तु रूस के भय से आयोजित पश्चिमी यूरोप सुरक्षा योजना के जनक अमेरिका, ब्रिटेन तथा फ्रांस यह अनुभव कर रहे हैं कि रूस के विरुद्ध जर्मनों की सैन्यशक्ति का खड़ा होना अत्यन्त आवश्यक है। इसी लिए जिस प्रकार जापान से संधि हुई उसी प्रकार शीघ्र जर्मनी से भी स्थायी संधि कर लेने की चर्चा जोरों पर है और जर्मन युवकों को सैनिक शिक्षा दी

(शेष पृष्ठ १८ पर)

पहाड़ियों की

[श्री हरिश्चन्द्र गुप्त

'मसूरी' को जानने वाले व्यक्तियों की सख्या कुछ कम नहीं है। कोई मसूरी को पहाड़ी, कोई प्राकृतिक सौन्दर्य की साम्राज्ञी कोई पूंजीपतियों के सैर-सपाटे की जगह और कोई स्वास्थ्य दायिनी के रूप में जानता अवश्य है। और वस्तुत मसूरी है भी एक देखने की चीज़। लगभग समुद्रतल से सात सहस्र फीट से अधिक ऊंचाई पर बसी हुई मसूरी ग्रीष्म ऋतु म भारत के कोने कोने से लोगों का अपनी ओर बलात् आकर्षित कर लेता है।

यात्रा की सुविधा

मसूरी म पहुचने के लिए य त्रा की अनेक सुविधाए हैं। दिल्ली से मसूरी केवल ९ घण्टों में ही मोटर द्वारा जाया जा सकता है। और रेल द्वारा मुरादाबाद, लुक्सर, हरिद्वार और देहरादून उतरकर एक बस द्वारा राजपुर और मसूरी या फिर सीध देहरादून स ही बस द्वारा मसूरी म प्रवेश किया जा सकता है। राजपुर से पैदल चढ़ाई का मार्ग है जिसके बीच छोटे छोटे कस्बे झड़ी पानी और बार्लोगंज पड़ते हैं जहां पर खाने पीने की सारी वस्तुए सुगमता से उपलब्ध हो जाती हैं। बार्लोगंज से आधे मील के लगभग ऊपर और चढ़ने पर ही मसूरी की पहाड़ी और उस पर बसे सैकड़ों बगले दिखाई देने लगते हैं। एक विहगम दृष्टि डालने पर ऐसा भास होने लगता है कि कहीं ये बगले नीचे पहाड़ी की घाटी में तो नहीं गिर पड़ेंगे। पर ऐसा होता नहीं। मसूरी की सीमा में प्रवेश करते ही वायु के शीतल झकोरे आ आकर और रह रह कर आपको छेड़ेंगे आप उनके इस परिहास से खीझकर इधर-उधर शरीर को मोड़ेंगे पर, वे चचल वायु की लहरें आपके परिधान को भेदकर आपके गात का आलिंगन करेंगी। और बेबस हो आप उनकी इस शरारत पर बिहस उठेंगे। रोम रोम आपका प्रफुल्लित हो उठेगा और अपने आप में आप एक नूतन उत्साह बढ़ा हुआ पाएंगे।

वह और यह मसूरी

एक समय था जब अंग्रेज़ों को १८१५ में मसूरी नेपाल से सधि में मिली थी। लगभग २०० वर्ष के बाद हिमालय की स्वास्थ्यप्रद हवा देखकर अंग्रेज़ों ने मसूरी को अपना उपनिवेश बनाने का विचार किया। और पूर्णतया अंग्रेज़ों को ही वहा पर बसाने की चेष्टा की गई। किंतु वह सिद्ध नहीं हुई। पत्थरों में रहने वाले हिमालयवासी इस अर्थ में अंग्रेज़ों के लिए पत्थरों की सुदृढ़ चट्टानें ही सिद्ध हुए। आजकल की मसूरी में दिखाई देने वाले सुदृढ़ मकान उसी काल के उपनिवेश बनाने के उन्माद स्वरूप हैं। उन्नीसवीं सदी के अन्त तक यहा पर योरोपियन लोगों का पूर्ण प्रभुत्व था। लगभग १४ १५ हजार व्यक्तियों में जो मसूरी में निवास करते थे उनमें से ३ हजार से ऊपर विदेशी थे। वह समय वह था जब कि अंग्रेज़ के बच्चे तक के प्रति बड़े बड़े भारतीयों के हृदय में सम्मान था और छोटे छोटे अंग्रेज़ों को बड़े-बड़े हिन्दुस्तानी झुककर सलाम करते थे।

इस समय में हठात् ही प्रथम विश्व युद्ध से एक परिवर्तन हुआ और मसूरी की सड़कों से सुनाई देने वाली अंग्रेज़ी और पाश्चात्य सगीत की स्वर-लहरियां आरोह से अवरोह की ओर मुड़ गईं और बगले सूने हो गए।

हिमाच्छादित मसूरी को सूर्य किरणें अपने सर्

द्वितीय महायुद्ध के समय एक बार मसूरी की किस्मत ने और ज़ोर मारा और टिमटिमाती दीपक की लौ कुछ तेज पड़ जाने से फिर एक बार फक् से जल उठी। और जल तो उठी किंतु बुझने से पहिले जिस प्रकार माग्य-दीप एकदम ज़ोर मारकर जल उठता है और फिर शांत। ठीक उसी प्रकार से मसूरी का भाग्य-दीप जलकर फिर मन्द हो गया। अब इस विधवा-मसूरी की बात कोई नहीं पूछता। पूछने वाले चले गए और जिस प्रकार गया परदेशी-प्रीतम फिर नहीं लौटता, उसी प्रकार अंग्रेज़ अपनी मसूरी को हिन्दुस्तानियों के हाथ में दे गए। जब वे थे तब इस नव वधू को वह भलीभांति सजाते थे, इसकी कद्र करते थे और इस पर जीवन की बाज़ी तक लगा देते थे। पर, अब जब शृंगार करने वाले ही नहीं रहे तब कैसा शृंगार और कैसी उमग !! वैधव्य का दुःख भोगने वाली मसूरी में अब आजकल और सीज़न में अधिक से अधिक १० हजार यात्री ही पहुंच पाते हैं और वह भी गर्मियों के समाप्त होते ही उसे छोड़कर निज स्थानों को लौट जाते हैं।

हिमपात के समय मसूरी के पर्वतीय प्रदेश में बरफ की प्राकृतिक सीढ़ियां सी बन जाती हैं

दर्शनीय स्थान आदि

मसूरी में कुलड़ी और लण्ढौर नाम

से इन्द्र धनुषी मालाएं पहिना देती हैं

रानी : मसूरी

साहित्यालङ्कार]

दो मुख्य बाजार हैं जहां कई होटल, ओं, ऊनी वस्त्रों की दूकानें, फलों के ार सेठों के बंगले और मनोरंजन के न आदि स्थित हैं। मुख्यतः मसूरी सवाई होटल और मजेस्टिक होटल नाम दो प्रमुख निवास एवं भोजन योग्य न हैं। मसूरी में निम्न स्थान ाजब क्लब तिलक लाइब्रेरी, गिर घर, आर्यसमाज मन्दिर, गुरुद्वारा, ल पीक, कम्पनी बाग, हैकमैंस ल्र, घटाघर, माध्यमिक कन्या विद्या ा, कालेज और अनेक शानदार गर्व सिर ऊंचा किए बंगले और कोठियां दि भी दर्शनीय स्थान हैं।

सायंकाल के समय मसूरी में इन्द्रधनुष ्रतिक नहीं तो नवयौवनाओं की रंग गी साड़ियों, स्कर्टों और फरांटे के र उड़ते हुए उत्तरीयों के मिलते हुए ्ग से एक काल्पनिक रूप में बनाकर ा जा सकता है।

हर प्रकार बूढ़ी-स्त्री, जवान, बालि ें और मिस, बूढ़े, बुड्ढे, युवक और । बच्चे सभी आप उनके प्रिय परि-

धानों में सुशोभित देखेंगे। आज की मसूरी में पिछले समय सा पैसा लोगों के पास नहीं दिखाई देता। गरीबी, बेकारी और अशिक्षा के शिकार पहाड़ी— सच्चे, शान्त हृदय, निष्कपट भाव वाले

और मेहनती इधर-उधर घूमते टोकरियों में बच्चों को ले जाते रिक्शा या डंडी खींचते-उठाते और चाय या बैंट की सिगरेट पीते आपकी दृष्टि से अवश्य टकराएंगे। मसूरी के मजदूरों का कहना है कि जब से देहरादून से मसूरी तक के लिए बसें पक्की सड़कों पर दौड़ने लगीं हैं तब से लगभग ६—७ हजार मजदूर कार्य न मिलने के कारण नीचे (मैदानों में) चले गए हैं और कुछ नौकरियां कर कर के अपने जीवन को घुला २ कर समाप्त किए दे रहे हैं।

प्राकृतिक छटा

आजकल मसूरी में केवल कुछ लोगों को छोड़कर वहां के स्थायीनिवासी ही रह गए हैं। कारण, बरसात और ठंड की अधिकता से गर्म प्रकृति में पलने वाले सैलानी लोग शीतल समीर और ठंड को सहन नहीं कर सकते।

'सीज़न' में देहरादून से पश्चिम की ओर क्षितिज की ओर सायंकाल के समय देखने पर बड़ा ही। नयनाभिराम दृश्य देखने को मिलता है। मसूरी की विद्युत प्रकाश की माला से आकाश का एक भाग इस प्रकार सजा हुआ दिखता है जिस प्रकार किसी दुशाले के चारों स्वर्ण खचित कोनों में से एक कोना।

मसूरी के आस पास कई सुन्दर २ जल प्रपात हैं जिनमें केम्पटी और मोसी फाल अति ही आकर्षक हैं यहां पर वन-विहार का पूरा २ आनन्द उठाया जाता है। मसूरी से कुछ नीचे राजपुर के पास लगभग तीन मील के एक सहस्त्रधारा नामक जल प्रपात है जहां पर जल असंख्य धाराओं में से झरता हुआ दिखाई देता है। वहीं पर एक गंधक का छोटा सा सोता भी है। जिसमें कहते हैं नहाने से शारीरिक व्याधियां दूर हो जाती हैं। सीज़न भर रहने के लिए मसूरी में अच्छा स्थान ३००—४००) रुपये तक उपलब्ध होता है।

वैसे यह अति ही गर्व के साथ कहा जा सकता है कि मसूरी एक अत्याकर्षक रमणीय पर्वतीय प्रदेश और 'पहाड़ियों की रानी' उपाधि प्राप्त हिमालयस्थित, स्वास्थ्यप्रद जलवायु वाली सुन्दर नगरी है। गरीब मजदूर, अपाहिजों के लिए मसूरी एक नर्क है और राजा महाराजाओं, सैलानियों और धनवानों के लिए स्वर्ग है, स्वर्ग !!!

—०—

वर्षाकाल के समय मसूरी की हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियां अत्यन्त मोहक प्रतीत होती हैं

कण्टक-पथ

★ श्री 'वीर' भारद्वाज ★

कण्टकों का पथ पथिक क्या चल सकेगा तू निरन्तर ?

वीर पृथ्वीराज का प्रतिशोध पूरा हो चुका क्या ?
और सांगा का कठिन वह क्रोध पूरा हो चुका क्या ?
आज दाहर-देश तेरा शत्रु पद से है कलंकित,
पंचनद-चित्तौड़ वह स्वाधीन तेरा हो चुका क्या ?
पूछता राणा अमर क्या दे सकेगा आज उत्तर ? कण्टकों का....

व्यर्थ क्या बंदा गुरु के लाड़ले बलिदान देते ?
वह हकीकत वह भगतसिंह वीर अगणित प्राण देते ?
देशहित उठती जवानी जो चढ़ा देते मचल कर,
नाम तक अपना मिटा कर मातृ भू को मान देते ?
पूछता इतिहास क्या तू दे सकेगा आज उत्तर ? कण्टकों का...

ध्येय अब भी दूर है अरु पांव शिथिलित हो चुके क्या ?
जागरण का पर्व है अरु नेत्र निमिलित हो चुके क्या ?
राष्ट्र प्रेमी उस हृदय के शान्त स्पन्दन हो चुके क्या ?
दुखित पीड़ित हिन्दु जन के क्लान्त क्रन्दन हो चुके क्या ?
पूछता बंगाल, वह काश्मीर, क्या है आज उत्तर ? कण्टकों का...

वीर गुरु चाणक्य का प्रण आज पूरा हो चुका क्या ?
वीर गुरु गोविन्द का रण आज पूरा हो चुका क्या ?
वीर केशव की अरे क्या हो चुकी पूरी तपस्या ?
और प्यारे देश की क्या हल हुई है वह समस्या ?
आज जो यह प्रश्न क्या है युवक तेरा आज उत्तर ? कण्टकों का...

आज उत्तर है यही यह पांव बढ़ते ही चलेंगे,
कण्टकों से पत्थरों से यह निरन्तर ही लड़ेंगे।
नाम का स्वातंत्र्य क्या, यह युद्ध तब तक व्याप्त होगा,
विगत वैभव राष्ट्र का वह जब तलक ना प्राप्त होगा।
आज पावन प्रेरणा से मैं चलूंगा ही निरन्तर ॥

आज उर में है यही बस मैं बढ़ूंगा ही निरंतर,
राष्ट्र का यह युद्ध तब तक मैं लड़ूंगा ही निरन्तर।
कण्टकों का पथ भले हो मैं चलूंगा ही निरन्तर,
पूछ मत तू आज मुझ से मैं बढ़ूंगा और कब तक ॥

—★—

एक इच्छा

एक इच्छा है अमर होना नहीं,
सम्पदा धन-धान्य भी छूना नहीं।
प्यार भी प्रभु का मिले या ना मिले,
किन्तु भारतवर्ष को खोना नहीं ॥

—"सूर्य" साहित्यालङ्कार

—★—

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार २८ आश्विन सम्वत् २००८ [अङ्क २५

विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
और जब तक हमारे संविधान में इसकी गारण्टी नहीं कर दी जायगी,
हम तब तक चैन नहीं लेंगे।

मूल समस्या ?

भारत सरकार के खाद्य मन्त्री श्री मुन्शी के बार-बार आश्वासन दिये जाने पर भी देश के कुछ भागों की जनता सम्भावित भावी अकाल की आशंका से भयभीत तथा किंकर्तव्यविमूढ़ सी प्रतीत होती है पिछले दिनों बिहार तथा मद्रास में काफी अन्नाभाव तथा परिणामस्वरूप दुर्भिक्ष की चर्चा थी। किन्तु जनता के सक्रिय सहयोग तथा रा० स्वयंसेवक संघ के संगठित प्रयत्नों के कारण भारत पर जो यह संकट मंडरा रहा था वह टल गया और अभावग्रस्त प्रदेशों की जनता आश्वस्त हो गई। किन्तु कुछ दिनों पश्चात ही राजस्थान से पुनः अन्नाभाव के समाचार आने लगे हैं तथा सर्वत्र व्यापक दुर्भिक्ष की चर्चा है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जनता तथा सरकार के सक्रिय सहयोग तथा ईमानदारी से किए गए प्रयत्नों से देश के किसी भी भाग से यह संकट टल सकता है, किन्तु इस बार समस्या के हल में कुछ वैज्ञानिक तथा व्यवहारिक कठिनाइयां हैं। यह तो सर्वविदित ही है कि चुनाव समीप होने के कारण आज देश के प्रत्येक दल तथा प्रत्येक जन-नेता का ध्यान चुनाव आन्दोलनों की ओर ही विशेष रूप से आकृष्ट है। तिस पर विडम्बना यह है कि आज के शासक वर्ग का ध्यान भी इस समय देश की अन्न, वस्त्र सम्बन्धी महत्वपूर्ण समस्याओं की ओर न होकर कुछ राजनैतिक स्वार्थों की ओर विशेष रूप से है। यही कारण है कि प्रधान मन्त्री से लेकर सरकार के छोटे छोटे पदाधिकारी तक सभी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं से प्रेरित होकर दल विशेषों को चुनाव संघर्ष में विजयी बनाने के लिए जी जान से लगे हुए हैं। देश की वास्तविक समस्या की ओर या तो उनका ध्यान नहीं है, अथवा वे जानबूझ कर उस समस्या से आंखें मूंद कर देश का ध्यान कुछ उन कल्पित समस्याओं की ओर खींच रहे हैं, जिनका वस्तुतः कोई अस्तित्व नहीं है और उन कल्पित समस्याओं के अनवरत प्रचार से उनकी उद्देश्य सिद्धि हो सकती है।

आचार्य कृपालानी ने पत्र प्रतिनिधि सम्मेलन में पूछे गये प्रश्न के उत्तर में स्पष्ट रूप से कहा है कि आज देश की समस्या अन्न वस्त्र की है। साम्प्रदायिक नहीं। उन्होंने कहा कि साम्प्रदायिकता की समस्या तो महात्मा गांधी की मृत्यु के तत्काल बाद ही समाप्त हो चुकी थी। आज प्रधानमंत्री पं० नेहरू तथा उनके साथियों ने काल्पनिक साम्प्रदायिकता के विरुद्ध जिहाद बोल दिया है तथा उनके व्यापक प्रचार की सब ओर यह मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक ही है कि सम्बन्धित सरकारी अधिकारियों को अन्नाभाव की समस्या का भान ही न हो और धीरे धीरे अन्न समस्या विकराल रूप धारण करती रहे। भारत के वर्तमान राजनैतिक दलों में इस समय कोई भी ऐसा दल नहीं है। जिसके उद्देश्य तथा कार्यक्रम पं० नेहरू तथा उनके सहयोगियों के उस प्रचार के अनुरूप हों जैसा कि वे प्रायः कहते हैं। भारत के किसी भी राजनैतिक दल का उद्देश्य आज अल्पसंख्यक मुसलिमों को भारत छोड़ने के लिये बाध्य करना नहीं है जब कि पं० नेहरू ने चुनाव वार कुछ दलों पर उक्त निराधार आरोप लगाये हैं।

पाकिस्तान की प्रारम्भ से ही भारत के विरुद्ध व्यापक रूप से व्यापक प्रचार करने की नीति रही है तथा उसने समय समय पर भारतीय नेताओं के भाषणों द्वारा दी गई स्वीकारोक्ति का अपनी कुटिल भावनाओं के अनुसार अर्थ लगाया है। निस्सन्देह भारत में इस प्रकार के प्रचारों से किसी दल विशेष को राजनैतिक सफलता भले ही मिल जाय किन्तु अन्ततोगत्वा इससे देश को अपार हानि की सम्भावना है। चुनाव समीप होने वश चुनाव आन्दोलनों की अनिवार्यता सर्वस्वीकृत होने पर भी आज इस बात की आवश्यकता है कि चुनाव आन्दोलन के साथ हमारा ध्यान कहीं वास्तविक समस्या की ओर से न हट जावे। ऐसी विकट परिस्थिति में कर्तव्यविमुखता राष्ट्र के प्रति एक भीषण द्रोह होगा, जिसके परिणाम किसी प्रकार भी अच्छे नहीं कहे जा सकते।

दिल्ली म्यूनिसपल चुनाव

दिल्ली जिला बोर्ड के निर्वाचन में हुई अनियमितताओं के फलस्वरूप निष्पक्ष चुनाव के प्रति जनता के हृदय में एक अविश्वास तथा आतंक की भावना घर कर गई है। लोकतन्त्रीय शासन में जनता की उक्त धारणा लोकतन्त्र के लिये एक बहुत बड़ा अभिशाप है जो व्यक्ति किसी प्रकार भी सरकार के विभिन्न विभागों से सम्बद्ध हैं प्राय कहते पाये जाते हैं कि उनका कर्तव्य तो कांग्रेस सरकार को सहयोग देने में ही है। कुछ व्यक्ति जो स्वतन्त्र रूप से अपना व्यवसाय करते हैं, वे भी प्रायः यही कहते हैं कि जन मत चाहे किसी भी पक्ष में हो, विजय तो पदारूढ़ दल की ही होगी, स्थान २ पर सुनाई पड़ने वाले इस प्रकार के विचार एकदम ही निराधार नहीं कहे जा सकते। सरकारी प्रभाव द्वारा मतदाताओं को प्रलोभित तथा आतंकित करने के दिल्ली क्षेत्र से ही विभिन्न समाचार मिले हैं। दिल्ली के कुछ क्षेत्रों में रहने वाले निर्धन तथा आश्रयहीन व्यक्तियों को उनके टूटे फूटे अस्थायी झोंपड़े उखाड़ डालने की धमकियां सरकारी अधिकारियों द्वारा दी गई हैं। इस प्रकार के समाचारों की सत्यासत्यता यद्यपि प्रमाणित नहीं की जा सकती। किन्तु इस प्रकार के समाचारों की समग्र रूप से जो सूक्ष्म प्रतिक्रिया होती है। उससे वस्तुस्थिति का अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है। मतदाताओं को मतदान की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करने पर ही निष्पक्ष चुनाव हो सकते हैं, अन्यथा नहीं।

अशोक मेहता के आरोप

बम्बई के गृहमन्त्री श्री मोरारजी देसाई द्वारा श्री अशोक मेहता पर लगाये गये 'निम्न कोटि का गन्दा प्रचार करने के आरोप का उत्तर देते हुए श्री अशोक मेहता ने कुछ ऐसे तथ्यों पर प्रकाश डाला है, जो यदि सत्य हैं तो निस्सन्देह किसी भी लोकतन्त्रीय शासन के लिये अवांछनीय हैं। श्री अशोक मेहता का गृहमन्त्री पर मुख्य आरोप यह है कि उन्होंने कांग्रेस के कोषाध्यक्ष होने के नाते बम्बई के मिल मालिकों से कांग्रेस के चुनाव प्रचार के लिये दबाव पूर्वक धनराशि प्राप्त करने की चेष्टा की है। यही नहीं बल्कि उन्हें एक निश्चित रकम बतलाकर उसकी अदायगी के लिये बाध्य किया है। श्री देसाई श्री मेहता के उक्त आरोपों का अब तक कोई उत्तर नहीं दे पाये हैं, इससे उक्त घटना को लेकर देश में विभिन्न अटकलबाजियां लगाई जा रही हैं। यदि श्री देसाई उक्त आरोपों को असत्य समझते हैं तो जनता के भ्रम का यथाशीघ्र निराकरण करने का प्रयत्न करें।

विशेष सूचना

इस अंक के पश्चात् "दीपावली-विशेषाङ्क" प्रकाशित हो रहा है इसलिए २१ अक्टूबर का साधारण अंक प्रकाशित नहीं होगा। कृपया पाठक और एजेंट नोट कर लें।

दिल्ली जिला बोर्ड के चुनाव म हुई धांधलेबाजियों के विरोध में आयोजित एक विशाल जलूस

अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच

ईरान के तेल का प्रश्न सुरक्षा परिषद में

मिश्र-ब्रिटेन गतिरोध

मिश्र के प्रधानमंत्री श्री नहसपाशा के ब्रिटेन के साथ हुई सन् १९३६ की सन्धि तथा १८९९ के सूडान सम्बन्धी समझौते को भंग कर दिये जाने की घोषणा से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे तृतीय महायुद्ध की आशंका का एक और कारण बन गया है तथा फलस्वरूप ब्रिटेन तथा मिश्र में काफी तनातनी बढ़ गई है। यों तो पहिले से ही मध्यपूर्व की विविध समस्याओं ने बहुत समय पूर्व ही एक विकट ज्वालामुखी का रूप धारण कर लिया था, किन्तु मिश्र की इस नई घोषणा ने परिस्थिति को और भी अधिक विषम बना दिया है। इस नई घोषणा के फलस्वरूप स्वेज नहर क्षेत्रमें ब्रिटिश सैनिकों को जो विशेष अधिकार प्राप्त थे वे समाप्त हो जायेंगे तथा शाह फारूक को मिश्र तथा सूडान का शाह घोषित कर दिया गया है। प्रकट रूप से ब्रिटेन पर नहसपाशा की उक्त घोषणा का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है, क्योंकि ब्रिटेन के प्रधानमंत्री हर्बर्ट

मिश्र-ब्रिटेन के बीच तनातनी प्रारम्भ

मौरिसन ने उक्त घोषणा के तत्काल बाद ही सरकारी घोषणा कर दी कि ब्रिटिश सरकार मिश्र द्वारा सन् १९३६ की सन्धि की एक पक्षीय समाप्ति को स्वीकार नहीं करती तथा ब्रिटेन उसे सन्धि के अन्तर्गत अपने पूर्ण अधिकार बनाये हुये है। श्री मौरीसन ने यह भी कहा कि सूडान का प्रश्न वहां की जनता स्वय ही हल करेगी। मिश्र की जनता में इस प्रश्न को लेकर पर्याप्त रोष है। स्थान २ पर ब्रिटिश विरोधी प्रदर्शन किये जा रहे हैं। सुरक्षा के तौर पर ब्रिटिश दूतावास की ओर आने वाली सड़कों पर कड़ा पहरा तैनात कर दिया गया है। प्रदर्शनकारियों ने ब्रिटिश दूतावास में घुसने की भरपूर कोशिश की किन्तु पुलिस ने लाठियों द्वारा भीड़ का तितर बितर कर दिया। सूडान सरकार ने भी घोषणा करदी है, कि वह देश का शासन सुव्यवस्था पूर्वक सचालित करती रहेगी तथा सूडान को पूर्ण स्वायत्त शासन प्राप्त करने में सहयोग देगी।

तेल समस्या

ब्रिटेन तथा ईरान के बीच तेल के प्रश्न को लेकर हुई निरन्तर सन्धि वार्तालाप का कोई अपेक्षित फल न निकलने के कारण उक्त प्रश्न सुरक्षा परिषद के समक्ष प्रस्तुत कर दिया गया है। ब्रिटेन ने अपने ऊपर लगाये गये ईरान की आर्थिक नाकेबन्दी के आरोप का खण्डन किया है। गत ८ अक्तूबर का डा० मुसद्दिक सुरक्षा परिषद में अपने पक्ष का समर्थन करने की दृष्टि से न्यूयार्क पहुँच गये। डा० मुसद्दिक ने सुरक्षा परिषद में न्यायपूर्ण निर्णय की आशा से कहा कि भूतपूर्व आंग्ल ईरानी तेल कम्पनी के हिस्सेदार एक गरीब देश की राष्ट्रीय सम्पत्ति की लूट जारी रखने में सुरक्षा परिषद का लाभ उठाने में समर्थ नहीं हो सकेंगे। कुछ क्षेत्रों में यह भी चर्चा है कि ब्रिटेन डा० मुसद्दिक को अधिक समय तक ईरान के प्रधान मंत्री के रूप में नहीं देखना चाहती है। क्योंकि इससे उसके हितों पर चोट पहुँचने की सम्भावना है। आशा की जाती है कि सुरक्षा परिषद में अमेरिका, फ्रांस, नीदरलैंड ईक्वेडर, ब्राजील, ब्रिटेन के पक्ष में मत देंगे जबकि राष्ट्रवादी चीन तथा युगोस्लेविया तटस्थ रहकर बहस में भाग ही नहीं लेंगे।

एशियायी सम्मेलन

बर्मी प्रधानमंत्री श्री थाकिन नू ने इण्डोनेशिया के प्रधानमंत्री को नई दिल्ली म बर्मा भारत और इण्डोनेशिया के प्रधान मन्त्रियों के एक सम्मेलन में भाग लेने के लिये निमन्त्रित किया है इण्डोनेशिया के प्रधानमंत्री ने निमन्त्रण को स्वीकार नहीं किया है।

मणिलाल गांधी का उपवास

दक्षिणी अफ्रीका सरकार की जातीय पृथक्करण नीति के विरुद्ध श्री मणिलाल गांधी का उपवास पूर्ववत जारी है आप ने गोरों के लिये सुरक्षित स्थान पर यात्रा करने का कोई विरोध नहीं किया गया। केवल पुलिस ने आपका नाम नोट कर लिया।

विभिन्न राजनैतिक दलों क्रमशः कांग्रेस समाजवादी, फारवर्ड ब्लाक, प्रजापार्टी, कम्यूनिस्ट क्रांतिकारी समाजवादी दल, हबक लोक दल तथा भारतीय जनसंघ के ये चुनाव चिन्ह हैं।

सं-वार्ता
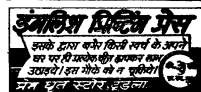
श्री मिश्र द्वारा नये राजनैतिक दल का निर्माण
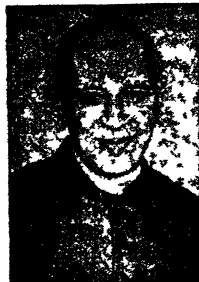
सच्चर-भार्गव में पुनः गठबन्धन

मुस्लिम लीग भी चुनाव लड़ेगी

प० नेहरू ने जालन्धर से कांग्रेस के पक्ष में चुनाव आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया है।

प० नेहरू के भाषण की आलोचना

पंडित नेहरू के २ अक्तूबर के मोरी गेट में दिए गए भाषण की प्रतिक्रिया के स्वरूप में उनकी व्यक्तिगत और भाषण में प्रयुक्त शब्दों की तीव्र आलोचना देश भर में हो रही है। पंडित नेहरू ने अपने भाषण में साम्प्रदायिक संस्थाओं के विरुद्ध युद्ध घोषणा की, व उन्हें कुचल देने की धमकी दी।

प० नेहरू के भाषण देने के पर चिंतित हो राष्ट्रपति ने उन्हें संयम से कार्य लेने की सलाह दी और उन्हें यह बताया कि उनका इस प्रकार भाषण देना राष्ट्र के प्रधान मन्त्री होने के नाते अशोभनीय और उनकी मर्यादा और प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है। डा० खरे ने प्रधान मन्त्री की इस धमकी से न डरते हुए यह चुनौती दी कि वे (नेहरूजी) ऐसी सभी संस्थाओं पर पाबन्दी लगा दें और उनके सदस्यों को जेल में डाल दें। डा० खरे ने उल्टे प० नेहरू और कांग्रेस को ही साम्प्रदायिक बताया। प० मौलिचन्द्र शर्मा ने सहारनपुर से पंडित नेहरू को चुनौती दी कि वे भारतीय जनसंघ को फिरकापरस्त साबित करें। प० मौलिचन्द्र ने कांग्रेस को सम्भवतः सबसे बड़ी फिरकापरस्त सिद्ध कर दिया। अन्य गण्यमान व्यक्तियों और नेताओं के अतिरिक्त डा० मुकर्जी ने भी प० नेहरू के इस भाषण की निन्दा की और कहा कि दूसरों को साम्प्रदायिक कहते हुए पंडित नेहरू को यह सोच लेना चाहिये कि देश के विभाजन सभी कष्ट और विपत्तियों का कारण उनकी और कांग्रेस की साम्प्रदायिकता के आगे घुटने टेकने की नीति का ही फल है।

श्री अछरूरामजी का त्यागपत्र

भूतपूर्व कस्टोडियन जनरल श्री अछरूराम ने अपने त्यागपत्र देने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कहा, सरकारी मन्त्रियों के ही निष्क्रान्त सम्पत्ति कानून के प्रति उपेक्षात्मक दृष्टिकोण और उनके अनीचत व मौखाआओं से प्रभावित हो न्याय और कानून के विरुद्ध किए जाने वाले कार्यों के कारण ही वे त्यागपत्र देने के लिए बाध्य किए गए थे।

श्री किदवई पुनः कांग्रेस में

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन से मतभेद के कारण भूतपूर्व संवहन मन्त्री श्री रफीअहमद किदवई ने मंत्रिमंडल और कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया था। अब श्री टंडन की राजनैतिक हत्या कर देने के पश्चात् कांग्रेस के सर्वेसर्वा श्री नेहरू हो गए हैं तो श्री किदवई साहब पुनः चोला बदलकर कांग्रेस में आ टपके हैं। उनके आने से प० नेहरू के लोग भी प्रसन्न नहीं दिखाई देते। शायद कांग्रेस अधिवेशन के बाद अब उनकी मन्त्रि-मंडल में पूछ होगी ?

रेलवे के दो नए जोन की योजना

मद्रास में रेलवे के राज्य मन्त्री श्री सन्तानम् ने केन्द्रीय सरकार के पश्चिमी और केन्द्रीय दो नए रेलवे जोन बनाने के विचार के बारे में कहा यदि केन्द्रीय सरकार द्वारा दोनों जोनों को स्वीकार कर लिया तो वे नवम्बर तक बन पाएंगे। इनमें बी० बी० सी० आइ सौराष्ट्र, जयपुर और राजस्थान रेलवे पश्चिमी, और जी० आई० पी० निजाम स्टेट रेलवे, तथा ग्वालियर व धौलपुर की दो छोटी लाइन की रेलवे केन्द्रीय जोन में शामिल होंगी।

श्री भीमसेन सच्चर

श्री गोपीचन्द्र भार्गव

संकट के समय बिछुड़े हुए साथी पुन मिल गये

श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र ने भारतीय लोक-कांग्रेस के नाम से एक नये राजनैतिक दल के निर्माण की घोषणा की है।

प्रेस विधेयक स्वीकृत

संसद में बड़ी लम्बी बहस और आलोचनाओं के उपरान्त भी प्रेस विधेयक केवल—बिल की आयु दो वर्ष तक सीमाबद्ध करने के संशोधन सहित स्वीकृत हो गया।

प्रेस बिल के संचालक श्री राजाजी ने यह आशा प्रकट की कि दो वर्ष की अवधि तक तो प्रेस एक स्थायी शक्ति सम्पन्न अनुशासन परिषद् निर्माण कर लेगा और इसके अलावा इसी बीच प्रेस कमीशन भी अपना कार्य शुरू कर देगा।

श्री राजाजी ने अपना संयुक्त उद्देश्य समाचार पत्रों के धरातल को आसमान पर पहुंचाने का—ऊंचा करने का बताया है।

काश्मीर संविधान सभा के चुनावों का बहिष्कार

नई दिल्ली में जम्मू प्रजा परिषद् के अध्यक्ष श्री प्रेमनाथ डोगरा ने पत्रकारों के बीच यह रहस्यभेद किया कि सरकार का शेख अब्दुल्ला सरकार के आगामी चुनाव में पक्षपात पूर्ण रवैया होगा और इसलिए प्रजा परिषद् इन चुनावों का बहिष्कार कर रही है। चुनावों का बहिष्कार करने के श्री प्रेमनाथजी डोगरा ने स्पष्ट रूप से ये कारण बताये जिनके बूते पर यह कार्य किया गया है—

(१) श्री आयंगर (रियासती मन्त्री) द्वारा उनके सारी अनियमितताओं को

[शेष पृष्ठ २२ पर]

भारत सरकार के कस्टोडियन जनरल श्री अछरूराम ने कांग्रेस सरकार की नीति से क्षुब्ध होकर त्यागपत्र दे दिया है। प्रस्तुत चित्र उनके सम्मान में आयोजित एक प्रीति भोज का है।

कला के मूलतत्व

श्री कुमारस्वामी एम.ए.

कला का मूल्य है मनुष्यत्व। मनुष्यत्व की सिद्धि तर्क का प्रसंग नहीं है—तर्क में इतना तात्त्विक सामर्थ्य नहीं है। जिज्ञासा की सांत्वना तक ही उसका अधिकार है। जीवन की गहराई में विद्रोह की जो अनन्त तरंगें क्षण प्रति क्षण उठा करती हैं, तर्क उन्हें संतुष्ट करने में असमर्थ है—वहां तक उसका प्रवेश ही नहीं है। मनुष्यत्व की सिद्धि का मूलबिन्दु व्यक्ति की अनुभूति है। अनुभूति के बिन्दु-बिन्दु से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व की रेखायें बनती हैं। व्यक्तित्व ही जीवन का मापदंड है। मनुष्यत्व के विभिन्न स्तरों की सूचना व्यक्तित्व का बेरोमीटर ही देता है। व्यक्तित्व ही मनुष्य की अपनी मौलिकता है, जो उसे अपने पड़ोसी से अलग अस्तित्व देती है—भिन्नता और असाम्य का द्योतक भी यही है। यही कारण है कि एक व्यक्ति के कार्य-कलाप दूसरों से इतने भिन्न होते हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की कर्मचेष्टा में उसके व्यक्तित्व की छाप रहती है। वाणी के प्रत्येक शब्द में कर्म की प्रत्येक प्रेरणा में और अंतःकरण के प्रत्येक आन्दोलन में व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रतिबिंब रहता है। किन्तु अनंत व्यक्तित्व के ये अनत अग्नि-स्फुलिंग एक ही अंगारे के अंग हैं। यह अंगारा है मनुष्यत्व, जो इन सब अग्नि-स्फुलिंगों की मूलगत प्रेरणा है। अनेक में एक और वैषम्य में साम्य को यही कला है—कला व्यक्तित्व की इन बिखरी हुई कड़ियों को जोड़ती है, अनैक्य में ऐक्य का साक्षात्कार करती है यही उसका प्रयोजन है, यही उसकी सिद्धि है।

जीवन का संघर्ष

मनुष्यत्व की साधना का क्षेत्र जीवन का संघर्ष है। कर्मक्षेत्र के संघर्ष को स्वीकार करने में ही उसकी उपलब्धि निश्चित है। जीवन से कायरतापूर्ण पलायन से उसे उपार्जित नहीं किया जा सकता। मनुष्यत्व की साधना के लिये जीवन के सम्पर्क की अपेक्षा है। हिमालय की निर्जन गुफाओं में अथवा जीवन के एकान्त में मनुष्यत्व की साधना असम्भव है। यही कारण है कि कलाकार जीवन से भयभीत नहीं हो सकता—वह संघर्ष के सामने पराजय स्वीकार नहीं करता। अमिय-गरल रूपी जीवन के घूंटों को वह निर्भय होकर पी जाता है। क्योंकि वह जीवन की उपेक्षा नहीं करता, कर्मक्षेत्र के सत्य की अवहेलना नहीं करता। अपने साथी मानव से वह सहानुभूति रखता है, उसका तिरस्कार नहीं करता। उसके सुखदुख की छाया उसके अंतकरण का स्पर्श करती है।...उसकी प्रेरणाओं पर उसका असर होता है। वह अपने आस-पास के कोलाहल को अपने अंतःकरण से परे नहीं रख सकता। कर्म के रंगमंच का चाहे वह पात्र न हो किन्तु पात्रों के साथ उसकी प्रगाढ सहानुभूति है—अभिनय के प्रति उसमें परिपूर्ण रसमग्नता है कारण, वह स्वयं एक जाग्रत मनुष्य है। उसकी चेतना प्रबुद्ध है। वह जीवन के मार्ग का अन्वेषक है। कला इस अन्वेषण की प्रणाली है। मनुष्यत्व को मूर्त रूप देने का साधन है। कलाकार और शेष जगत के बीच में कला ही एकमात्र सम्पर्क-सेतु है। अपने से बाह्य जगत का सम्बंध कला के प्रश्रय पर ही निर्भर है। यही कलाकार की निर्लिप्ति और आसक्ति का रहस्य है। निखिल जीवन के साथ उसकी आसक्ति है, अनुरक्ति, है; किन्तु उसकी प्रेरणा का स्रोत अनुभूति मात्र मोह नहीं क्योंकि मोह में चैतन्य नहीं, जड़ता है।

समन्य और साधना

मनुष्यत्व की साधना का आधार है प्रेम, जीवन के प्रति श्रद्धा। प्रेम और श्रद्धा में विच्छेद एवं विग्रह का भाव नहीं—वहां विक्षेप और वर्गीकरण नहीं होता। सहानुभूति और समन्वय ही इस धारा के दो किनारे हैं। जिनसे मर्यादित होकर जीवन की मंदाकिनी बहती है। भारतीय दर्शन में इसे ही ऐक्यम् अथवा अद्वैत कहा है, जहां कर्म एवं ज्ञान अन्योन्याश्रित हो जाते हैं कला का अद्वैत भावना क्षेत्र का ऐक्य है जिसकी प्रेरणा है सौन्दर्य। सौन्दर्य का भाव चराचर व्यापी है, अनंत है और प्राकृतिक है। कलाकार अपनी कला में इस सौन्दर्य को ही मूर्त करता है अनत सौन्दर्य को वह अपने दृष्टिबिंदु में बंदी बना लेता है। अपने क्षण भंगुर अवलम्बन के भीतर वह शाश्वत और सनातन सौन्दर्य की आत्मा का साक्षात्कार करता है। अपने आसपास फैले नश्वर जगत के क्षणिक आकर्षण को वह अपने प्राणों का अमरत्व दे कर अनश्वर बना देता है। यही मृत्यु से अमरत्व की ओर प्रगति है। कला की यही सिद्धि है। यहीं कलाकर की कला में इतनी सामर्थ्य होती है कि वह हमारे भीतर प्रसुप्त सौंदर्य को जाग्रत करती है और शेष संसार के साथ जो हमारा सम्बन्ध विच्छिन्न हो गया है उसे वह फिर जोड़ देती है। कलाकार और कला के उद्देश्य की यही चरितार्थता है क्योंकि कला जीवन के विस्तार को संकीर्ण नहीं करती, उसे निर्बन्ध और विस्तीर्ण करती है। देश-काल की क्षुद्र सीमाओं में आबद्ध जीवन यदि कला की प्रकाश-रेखाएं छू कर सीमातीत नहीं बना तो कला के साथ कलाकार के जीवन की भी पूर्ति नहीं हो पाई है—यह निर्विवाद सत्य है। कला चैतन्य की प्रेरणा है। चैतन्य सीमा से निर्बन्ध है यही कारण है कि कला जीवन को सीमित न करके अनन्त करती है; नये वैभव, नई समृद्धि और नये सौन्दर्य से उसे परिपूर्ण कर देती है।

उपनिषदों में बताया है कि आनन्द से सृष्टि की उत्पत्ति हुई, आनन्द में ही उसकी गति अनुमानित है और आनन्द में ही उसका पर्यवसान हो जाता है। कला की सृष्टि की भी यही शर्त है—आनन्द से ही उसका उद्भव है और आनन्द में ही उसकी सिद्धि है। सृजन के समस्त प्रयत्नों की यही प्रेरणा और साध्य रहता है। यह आनन्द जैसा कि आज के जड़वादी विचारक समझते हैं, भौतिक जीवन की आवश्यकताओं की तुष्टि नहीं करता—कला ने कभी भौतिक सुविधायें नहीं जुटाईं। कला का आनन्द हमारे भाव जगत के दैन्य का ही निराकरण करता है। केवल हमारे अंतःकरण की तृषा को ही उससे सान्त्वना मिलती है—बाह्य जीवन के अभावों की पूर्ति का वह साधन नहीं है। कला हमारे जीवन की कुरूपताओं और कार्कश्य को काट-छांट कर बराबर बना देती है। हमारी भावनाओं में जो पाशविकता और अमानुषिकता के विकार लिपट आया करते हैं, कला उनका परिमार्जन करने की क्षमता रखती है। हमारी आत्मा के तिमिराच्छन्न गह्वरों में प्रवेश करके वह हमारे समस्त अंतर्जगत को देदीप्यमान बना देती है।

मानव जीवन के रहस्य

आज के भौतिक विज्ञान ने यह साबित कर दिया है कि मनुष्य अनंत रहस्यों का आगार है, उसकी शक्तियां अनंत हैं। हमारे भीतर का वह अनंत आत्माभिव्यक्ति के लिए छटपटाता है—आत्म प्रकाश के लिए व्याकुल रहता है। क्योंकि प्रकाश में ही आनन्द है, पूर्णता है। निराकार की सबसे पहली प्रेरणा आकार ग्रहण करने की होती है—कला का सृजन इसी प्रेरणा से होता है। कलाकार हमारी निराकार भावनाओं को आकार देती है—कला के ये आकार फिर द्रष्टा या श्रोताओं के मन में निराकार भावनायें पैदा करते हैं। आकार और निराकार का यह परस्पर आदान-प्रदान है। कलाकार दोनों का माध्यम है। विभिन्नगामी अभिव्यक्ति उसका प्रबल है। जलों से बने बादल के भीतर हमारे भावों के अतिरिक्त और क्या है? रंगों की अनेक रेखाओं से अंकित चित्र में हमारे निराकार भाव का साकार ही तो है। साकार और निराकार की टूटी शृंखला यहीं जुड़ती है—कलाकार दोनों को अपनी अनुभूति के स्पर्श से जोड़ देता है। दो जगत एक दूसरे के पर्याय बन जाते हैं। भारतीय दृष्टिकोण से यही समन्वय की चेष्टा है। निराकार और साकार का सारा वैषम्य और विरोध तिरोहित हो जाता है तथा परिणाम में एक ऐसा भाव शेष रह जाता है, जिसका पर्यवसान आनन्द में ही होता है। इस प्रकार संक्षेप में कला साकार एवं निराकार के सामंजस्य का प्रयत्न है, हमारे अंतर्जगत और बहिर्जगत का सेतु है।

स्रष्टा मनुष्य

मनुष्य स्वभाव से स्रष्टा है। उसकी प्रत्येक प्रवृत्ति के मूल में सृष्टि के रहस्योद्घाटन का प्रयत्न रहता है। पैदा होते ही मनुष्य अपने आस-पास के चराचर जगत को जिज्ञासा के रूप में ग्रहण करने लगता है—सृष्टि के प्रति मनुष्य की यह प्रश्नवाचक जिज्ञासा अनन्तकालीन है। वस्तुतः जीव एवं जगत के अन्योन्याश्रय सम्बन्ध का मूलाधार यह तृषाकुल जिज्ञासा ही है। जिज्ञासा ही मनुष्य को कर्मक्षेत्र में ढकेलती है। हमारी समस्त कर्मचेष्टा का आवेग जिज्ञासा से ही प्रसूत होता है। हमारे धर्मशास्त्र, दर्शन कला, साहित्य-सृजन एवं वैज्ञानिक आविष्कार सब इस जिज्ञासा की अनन्तकालीन तृषा के ही परिणाम हैं। ये सब प्रवृत्तियां अपने वैयक्तिक रूप में जुदी-जुदी अवश्य हैं किन्तु सब की मूलगत प्रेरणा एक ही है—प्रवाह विभिन्न है, किन्तु सबका पर्यवसान एक ही लक्ष्यबिंदु होता है। जीवन की सम्पूर्णता को भरने में ही सबकी सिद्धि है। कला की अनुभूति में जो रसाप्लुता है उसकी समता योगियों के ब्रह्मानन्द से ही की गई है। जीवन के प्रश्नों का उत्तर कला में जिस प्रकार व्यक्त होता है दर्शन और विज्ञान उस परिधि तक पहुंच नहीं सकते। कलाकार की अनुभूति का एक क्षीण स्पर्श ही हृदय में जीवन की वह स्फूर्ति उंडेल देता है जिसकी प्रेरणा से जीर्ण शिराओं में नया प्राण हिलोरें लेने लगता है और व्यक्ति के दृढ़ संकल्प से टकरा कर जीवन के संताप छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। सृष्टि की अनन्त पहेली निरावरण हो कर अपनी यथार्थता में मूर्त हो उठती है और दैनिक जीवन के भौतिक प्रभावों से संतप्त व्यक्ति तल्लीनता का वरदान पा कर ऐसे शांति-शृंग पर खड़ा हो जाता है जहां से संकीर्णता से मुक्त जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्म अभिव्यक्ति को वह हृद-

(शेष पृष्ठ २१ पर)

साहित्यरत्न परीक्षोपयोगी लेख

— श्री माणिकचन्द्र जैन, एम० ए०

प्रसाद

......र कवि प्रसाद और साहित्यकार प्रेमचन्द दोनों के दृष्टिकोण जीवन की ओर सतुलित और सधे हुए हैं। प्रेमचन्द ने कविता को जीवन की व्याख्या माना है। उन्होंने ऐसी एक भी पंक्ति नहीं लिखी जिसका कोई सामाजिक उद्देश्य न हो। उनकी कहानियां अग्र व्यापी होते हुए भी अपने आप में सर्वांगतः पूर्ण हैं। प्रसाद जी की अपनी नई दिशा है—उनमें कवित्व है, भावात्मकता है, कल्पना वैपुण्य है। सामाजिक दोनों हैं, पर 'कंकाल' और 'गोदान' का समाज में उतना ही अन्तर है जितना प्रसाद और प्रेमचन्द में। कंकाल और तितली में समाज के अभिशापों का जितना सजीव चित्र प्रसाद जी अपनी सधी तूलिका से आंक सके हैं—प्रेमचन्द जी में उतनी ही गरिमा महिमा है। यदि प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य के शेक्सपीयर हैं तो प्रसाद उसके मिल्टन। प्रतिभा-वैचित्र्य दोनों में स्पष्ट हैं। दोनों अपने युग के निर्माता हैं, प्रवर्तक हैं। क्रांति-जनक हैं।

वास्तविक प्रसाद अपनी आत्मा को रोक नहीं सका। उसकी आत्मा की प्रखर आभा आध्यात्मिकता के रूप में उन्मुक्त होकर विभोरित हो बिखरी है। उसने अधिकार किया है यथार्थ से, आदर्श से। प्रसाद जी के उपन्यासों में कथानक—औचित्य दोष अवश्य होता है, किन्तु कौतूहल तत्व के सहज निर्वाह से, भाषा और शैली की स्वाभाविक चहल-पहल से, उनके कवि की भावात्मक अभिव्यक्तियों से— वे प्रभावक रहे और अप्राप्य भी।

समस्या और समाधान

प्रसाद ने 'कंकाल' भी लिखा है और "तितली' भी। समस्याएं भी प्रस्तुत की हैं और उनके सुन्दरतम हल भी। 'तितली' में अन्तर्द्वन्द्व घटनाक्रम के अनुसार है जब कि कंकाल के चरित्र विकास की पृष्ठभूमि पर अन्तर्द्वन्द्व के स्वाभाविक चित्रण हैं। बुद्धिवादी और मनोवैज्ञानिक प्रसाद अपने कवि के सतुलन में पासंग जैसे ही रहे हैं। प्रसादजी के तीन उपन्यास हैं— 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' और तीनों में कवि की समाज के प्रति निष्पक्ष आलोच्य बुद्धि के दर्शन अपने प्राञ्जलतम रूप में प्राप्य हैं। उपन्यासकार प्रेमचन्द जीवन के विचारक थे। उपन्यास-क्षेत्र में उन्होंने एक नवीन युगान्तर उपस्थित किया।

भारती के अमर पुजारी 'प्रसादजी'

उनके उपन्यासों की पृष्ठभूमि कल्पना के वैभव से रंगीन न होकर जीवन की उपयोगिता और यथार्थवादिता के रेखाचित्रों से अलंकृत हुई हैं। 'कायाकल्प' में समाज के अस्थिपंजर का कायाकल्प, निर्मला में समाज की कुरीतियों के प्रति विद्रोह नारी के विविध रूपों का मनोवैज्ञानिक चित्र 'गोदान' में ग्राम्य और शहरी जीवन का तुलनात्मक दृष्टिकोण और प्रभाव और 'रंगभूमि', 'प्रेमाश्रम', 'सेवासदन' सभी में सुधारवादी यथार्थवादी और आदर्शवादी प्रेमचन्द के दर्शन होते हैं।

प्रेमचन्द स्वयं में एक आन्दोलन हैं क्रांति हैं। कहीं कहीं उनका क्रान्ति विधायक रूप सर्वसाधारण की अनुभूतियों को साथ लेकर इतना निखरा है कि उसकी चकाचौंध में मानव हृदय के अन्तर्भाव स्वतः झलक उठे हैं। उनका प्रत्येक उपन्यास मानव की मूल प्रवृत्तियों पर स्थित ढाई या तीन घन्टों में समाप्त हो जाने वाला छायाचित्र है। उसमें उतनी ही चपलता है, प्रामाणिकता है, सहज ज्ञान की शक्ति है।

उनके उपन्यासों का क्षेत्र राष्ट्रीय न हो कर कहीं-कहीं अन्तर्राष्ट्रीय भी हुआ है। उनके नैतिक निर्णय, हिन्दी कहानी और उपन्यास अपने जीवन में नये मोड़ और परिवर्तन के पश्चात् ही अपने आधुनिक रूप में आ सके हैं। प्रसाद का जीवन साहित्यिक तपस्वी का जीवन है। उनकी साधना में कविता नाटक, कहानी, उपन्यास और निबन्ध अपने सम्पूर्ण वैभव और अभिव्यक्ति सुस्पष्ट प्रयोग द्वारा परिष्कृत हुए हैं। अपने परवर्ती साहित्यकारों के लिए उन्होंने कण्टकाकीर्ण पथ को सुगम और सुदृढ़ बना दिया। प्रसाद कवि भी हैं और गद्य साहित्यकार भी। उनका कविकाया की भांति उपन्यास, कहानी, नाटक और निबन्ध सब के क्षितिज पर स्पष्ट दिखाई देता है। वे पहले कवि हैं फिर कुछ और।

प्रेमचन्द और प्रसाद दोनों का तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन इसी दिशा की ओर इंगित है कि उनकी रचनाएं युग के लिए प्रतिक्रियात्मक प्रयोग हैं। घटना प्रधान कहानी और उपन्यासों के धरातल से सरक कर अब का उपन्यासकार जीवन के प्रति यथार्थ और वास्तविक दृष्टिकोण रखने लगा था। एक ने देखा समाज का रक्तहीन 'कंकाल' कितना जीर्णशीर्ण है। उनके शरीर पर मांस के सड़े गले लोथड़ों के अतिरिक्त शायद ही और कुछ अब शेष रह पाया था। साहित्यकार यह सब कैसे सहन करता? उसकी श्वासों से ही तो युग अपनी श्वासों में सजीवन शक्ति का व्यापारी है।

उसकी वाणी में एक लहर आई जो तूफान का रूप धारण कर गई। 'कंकाल' में प्रसाद ने आदर्शों को सहेजा है, यथार्थ को संजोया है।

प्रसाद की 'कामायनी' यदि हिन्दी साहित्य का भावी इतिहास है तो प्रेमचन्द की कहानियां सचमुच शाश्वत हैं, अमर साहित्य है क्योंकि उसमें देश की शाश्वत अमर जनता के प्राण बोलते हैं। प्रसाद समर्थ लेखक हैं, प्रेमचन्द समर्थ लेखक भी हैं और सैनिक लेखक भी।

आने वाले अनेक युगों तक प्रसाद कविता साहित्य के लिये एक आदर्श स्तम्भ का कार्य करते रहेंगे और प्रेमचन्द जीवन को नवीनता का संचार करने में सतत अग्रणी।

दुनिया मुझे भूल न जाये
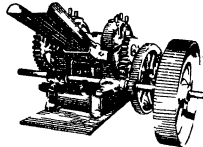
[श्री चिरञ्जीलाल पाराशर]

संसार में आ कर आत्मा जब मानव देह धारण करती है, तब कुछ काल पश्चात् ही वह "आशा" और 'आकांक्षा' को अपना केन्द्र-बिन्दु मान कर अपने जीवन के विभिन्न कार्य व्यापार प्रारम्भ कर देती है।

आकांक्षा में ही उसकी ज्ञान-प्राप्ति की उत्कंठा, विज्ञान के आविष्कारों की लगन, शुभकार्यों अथवा दुष्कार्यों द्वारा अपनी कीर्ति अक्षुण्य रखने की लालसा उसके हृदय में लगी रहती है।

बाल्यावस्था से ही

शिशु अवस्था में ही मनुष्य आकाश की ओर देख कर या चन्द्रमा अथवा सूर्य की ओर देख कर अपने किसी स्नेही से प्रश्न करता है कि यह क्या है ? भले ही उसके स्नेही के स्नेही को भी उसका ज्ञान न हो। यहीं से उसकी ज्ञान प्राप्त करने की आशा का आरम्भ होता है और फिर वह शनैः शनैः व्यवहारिक वस्तुओं, प्राकृतिक वस्तुओं आदि का ज्ञान घर पर ही प्राप्त कर लेता है।

पाठ्य-शिक्षा के उपरान्त जब मनुष्य संसार में आता है, तब वह अपनी आकांक्षा के साथ 'आशा' का भी सम्मिश्रण करता है। पहले उसके हृदय में आकांक्षा उत्पन्न होती है, उसकी पूर्ति के लिये आशा का संचार होता है अतः उसकी वास्तविक संसारिक यात्रा में आशा और आकांक्षा मिल कर ही चलती हैं।

तोपों के मुंह में भी

एक सेना नायक युद्ध जीतने की आकांक्षा करता है, तब वह केवल आशा को ही युद्ध जीतने का आधार बना कर तोपों और टैंकों के गोलों की बरसात में आकर भी अपनी सेना का संचालन करता है।

दूसरे किसी अन्य व्यक्ति के हृदय में ईश्वर के साक्षात्कार की आकांक्षा बलवती है और आशा ही आशा के बल पर वह भयंकर खूंखार जानवरों और दरिन्दों की उपेक्षा करता हुआ बीहड़ जंगलों में अपनी आकांक्षा की पूर्ति के लिए चला जाता है।

ऐसे कोई वैज्ञानिक किसी नये अनुसंधान की आकांक्षा ले कर आशा के बल पर ही अपनी और पैत्रिक संपत्ति तक को स्वाहा करके भी बरसों व्यतीत कर देते हैं।

नेता ही सही

किसी भी नेता को ले लीजिये। वह भी केवल 'नेता' बनने की आकांक्षा में ही सब कुछ दांव पर लगा देता है।

कहने का तात्पर्य यह कि मनुष्य जब वास्तविक संसार में प्रवेश करता है, तभी उसके हृदय में उन्नति करने की आकांक्षाओं का उदय होता है और आशा को 'प्रतीक' मान कर ही वह ऐसे कार्य करता है जिससे संसार में उसका नाम 'अमर' रहे।

नाम अमर रहे

मनुष्य पहिले मौत से डरता है, उससे बचने का यथाशक्ति प्रयत्न करता है और जब उसे यह निश्चय हो ही जाता है कि जीवन का अन्त सन्निकट आता आ रहा है तब वह संसार में अपने नाम को अक्षुण्य रखने का प्रयत्न करता है यदि उसके उत्तराधिकारी (बच्चे) हैं तब उसकी आशा का केन्द्र वही उन दिनों होते हैं और उसे सन्तोष होता है कि उसकी मृत्यु के बाद उसका नाम चलावेंगे। यदि नहीं हैं तो अधिकांश में वह दूसरों से ले कर अपनी इस आकांक्षा की पूर्ति करता है। और यदि उसे किसी कारणवश इसमें सफलता नहीं मिलती तो वह उन कार्यों का आश्रय लेता है, जो कार्य उसके नाम को सदियों तक प्रकाश में रख सकें, क्योंकि ९के घर किये रहती है कि 'दुनिया मुझे भूल न जाये !'

यह तो रही उस श्रेणी के लोगों की बात, जो मन्दिर, मस्जिद, गिर्जे, मकबरे, मीनारें, सराय, धर्मशालाएं, कुएं और ताल तलैये आदि बनवा कर अपने अस्तित्व का भान संसार को कराये रखना चाहते हैं।

साहित्यकार व विचारक

दूसरी श्रेणी में लेखकों, कवियों, मुनियों, ऋषियों आदि का स्थान है। रामायण, महाभारत, वेद, उपनिषद् आदि साहित्य तथा प्राचीन ऋषियों द्वारा विभिन्न सम्प्रदायों और धर्मों का चलाया जाना इसी बात की पुष्टि करता है कि उनकी इच्छा अपना नाम युगों तक संसार में रखने की थी। कहीं-कहीं उनके साहित्य और उपदेशों से भी उनकी इस इच्छा का आभास मिलता है।

विश्व विजेता

एक अन्य श्रेणी में आक्रमणकारी और योद्धा लोग आते हैं। संसार-विजय की नेपोलियन, सिकन्दर और हिटलर की कामनाओं में भी यही तथ्य था और भारतीय चक्रवर्ती बनने की धुन वाले सम्राटों के हृदय में भी यही बात थी।

पहले विश्व-विजय के लिये अपनी शक्ति के प्रदर्शनार्थ एक अश्व छोड़ा जाता था और उसे रोकने वाले पर सीधा आक्रमण कर दिया जाता था। अब क्योंकि नई सभ्यता का युग है, इसलिये आक्रमण भी सभ्यतापूर्वक ही बहाना खोज कर किया जाता है। हां, बीच की कुछ सदियों में धींगा-मुश्ती भी होती रही है।

अंग्रेजों का नया आविष्कार

इन सबसे सस्ता नाम कमाने का नया ढंग अंग्रेजों ने अपनाया। शहरों के अधिकतर बड़े हस्पताल अथवा सड़कों के नाम अधिकतर उन्होंने अपने या अपनी पत्नी के नाम पर ही रखे। जितने बड़े-बड़े बाग-बगीचे थे, उन पर अपने पूर्वजों के स्तूप खड़े कर दिये, जो आज भी खड़े हैं।

उनके जाने पर इस नुस्खे का अमल भारतीयों ने और तेजी से आरम्भ कर दिया। मंत्रियों से लेकर म्युनिसिपैलिटियों के सदस्यों तक को देख लीजिये, पार्कों, मैदानों, मुहल्लों, नगरों, उपनगरों और गलियों तथा ३०-४० गज तक की सड़कों पर भी इन्हीं लोगों के नाम की तख्ती लगी मिलेगी।

अंध आचरण द्वारा नाम अमर रखने के बजाय, बाह्य आडम्बर द्वारा ही आज का मानव अपने स्वार्थ की सिद्धि अधिक रखना चाहता है। और उस सिद्धि में उसकी यही नयी भावना निहित है कि 'दुनिया मुझे भूल न जाये।'

—卐—

नव-जागरण !

★★★★★★श्री राजेन

प्रथम किरण—चेतन कलकल !

हरित दूर्वा के छोरों में जाग उठो जीवन-रुनझुन !
नाच उठी फिर रे यह धरती पुलक-भरी नवला-सी मलमल,
उज्ज्वल फूलों के अधरों में झुन-झुन बहता अकलिम यौवन !
जाग उठी चेतन मानवता महाभोर की प्रथम मलय;
एक व्याप्त परिवार धरणि का चकित महासौर में हंस !
यह विकास की महा प्रेरणा—कांप रहे तम पुंज प्रलय;
मिटे आह ! पिघले निज में ही वह प्रकाश बहता रलमल !
जाति-वर्ण से मुक्त मनुजता—केवल चिर-मानव सुन्दर;
जीर्ण-गलित केंचुल चिरवासी त्याग हंसी मुक्ता मनहर !
महा चेतना में हर-हर जग खोज रहा अगणित नव-कण;
मानव है मानव चिर-स्रष्टा, डूब गया कल्पित ईश्वर !
देवों की कल्पित हस्ती का बीत गया अब तो युग-क्रम;
मानव ही चिर-शक्तिमान यह ! पहुँचेगा उड़ता ग्रह-ग्रह !
विजय करेगा मरण, सृजन के सब रहस्य कर लेगा वश;
मानव की भावी मानवता का अपार आश्चर्य ! सफल !
कांपी वह साम्राज्यी लिप्सा, थका-मिटा शोषक तम-बल;
जाग उठा जन-शक्ति-स्रोत वह महाप्लावन, उमगी सुन्दर !
मचल उठा मेरा कण-कण भी, मचल उठा विह्वल यौवन;
इन नर्तित प्रकाश-अणुओं में भर-भर आते रस के कण !
निर्विकार आवेश-प्रलय सृजन-मूल उत्प्रेरक नव;
मेरे पुलक-पुलक रोओं में नाच उठे छवि-कण झुन-झुन !

प्रथम किरण—चेतन कलकल !

रोम-रोम धरती के उर में जाग उठी वह किरण नवल !

❋ 'नारी जीवन' विषयक विविध दृष्टिकोण ❋

[श्री गजानन्द मुक्तिबोध]

मुझे अंग्रेजी कवि शेली की जीवनी याद आ रही है। इसी के सिलसिले में हेरियट और शेली के पारस्परिक सम्बन्ध पर भी मैं रुक रहा हूँ। शुरू में शेली और हेरियट का प्रेम-सम्बन्ध था, बाद में विवाहित होकर दोनों माता-पिता हो गये। और इसके बाद दोनों एक दूसरे से विरक्त हो दो भिन्न मार्गों पर चल दिये। थोड़े समय बाद हेरियट मर गयी।

शेली ने हेरियट पर कुछ अत्यन्त सुन्दर कविताएँ लिखी हैं। ऐसी हेरियट क्यों शेली को सन्तुष्ट न कर सकी? इसका उत्तर अधिक मनोवैज्ञानिक है। स्त्री नहीं, परन्तु स्त्री का रूप और उस रूप के पोषक हृदय के कोमल भावों के प्रति कवि—क्या कालिदास और क्या शेली—अत्यन्त आग्रहशील रहे हैं। और इस रूप और भाव को कवियों ने अपने अनुसार अपनी कल्पना के रंगीन लोक में सीमित कर, अपने आकाश में उसे विशाल और भव्य आदर्श-रूप देकर स्त्री नाम के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ा है। ज़रा ध्यान से देखने पर मालूम होगा कि कलाकार का यह स्वात्म भाव है। इस दृष्टिकोण में स्त्री के स्वतन्त्र व्यक्तित्व के प्रति कवि ने कोई सहानुभूति नहीं दिखाई है। या यों कह लीजिए कि 'स्त्री' शब्द के मानी वह आदर्श लोक है, जो हमारे व्यक्तित्व के स्वात्मिक मनोभावों को सन्तुष्ट करता है। इसी अर्थ में कलाकारों ने अधिकांश में 'स्त्री' को ग्रहण किया है। इसी स्वात्म भाव के ज़बर्दस्त विस्तार के कारण स्त्री के स्वतन्त्र व्यक्तित्व के प्रति ध्यान नहीं गया है।

यह ज़रूर है कि स्त्री का रूप व्यक्ति-निरपेक्ष होता है। नामी स्त्री के रूप से आकर्षित होते समय मनुष्य को उसके आन्तरिक स्वभाव-लोक के प्रति सहानुभूति तो क्या परिचय भी नहीं होता। मेरा यह ख्याल है कि हेरियट और शेली दोनों के एक दूसरे के व्यक्तित्व के प्रति अनभिज्ञ या अभिज्ञ होने पर असहिष्णुता (जिसके मूल में स्वार्थ-भाव है) आ जाने से उनका 'रोमांस' उस हद तक नहीं पहुँचा, जहाँ वह अपनी सम्पूर्णता में अन्तःस्नेह को अधिक व्यापक और मानवीय कर देता, जहाँ अपने व्यक्तित्व की संकुचित सीमाओं को अधिकाधिक फैला देता।

हमारी भारतीय सभ्यता ने स्नेह के चरम रूप को भक्ति माना है। और यह भक्ति स्वात्मभाव का अत्यन्त व्यापक रूप है, जहाँ स्वात्मभाव के संकुचित रूप का आग्रह नहीं रहता। यानी वहाँ आत्म-समर्पण को लेकर हमें आगे चलना पड़ता है, और इसीलिए वहाँ एक दूसरे के स्वतन्त्र व्यक्तित्व के प्रति आस्था रहती है। 'निज' का व्यर्थ आग्रह नहीं होता। व्यक्तित्व की स्वतन्त्रता किसी भी सम्मानित मूल्य पर प्राप्त करना ज़रूरी है।

हो सकता है, शेली-हेरियट-कांड में मूलतः हेरियट का ही दोष हो और शेली का न हो, या शेली का ही दोष हो और हेरियट का न हो। उसे ऐतिहासिक सम्बन्ध से अलग कर उदाहरण के तौर पर देखें तो साहित्य में ऐसे उदाहरण बहुत मिलेंगे। वैसे तो व्यक्तित्व का दर्शन पुराने ज़माने में बहुत कम लोगों ने किया है। भारतीय साहित्य में भवभूति और कालिदास ने मनोविश्लेषण भले ही किया हो, किन्तु उनके साहित्य का उद्देश्य व्यक्तित्व-दर्शन के द्वारा जीवन-दर्शन से कहीं अधिक रसोद्रेक था, यह स्पष्ट है। यूरोप में केवल दांते और शेक्सपियर (पुराने समय में) ऐसे थे, जिन्होंने नारी के व्यक्तित्व को स्पर्श किया था। इनमें से दांते ने उसको (बिएट्रिस को) आध्यात्मिक अर्थ दिया और शेक्सपियर ने स्त्रियों के अलग-अलग व्यक्तित्व का चित्रण किया। कार्डीलिया और ओफीलिया, डेस्डिमोना और पोर्शिया स्त्रियों के व्यक्तित्व के अलग अलग नमूने हैं। दांते कवि था। शेक्सपीयर था नाटककार। कविता से अधिक नाटक में और नाटक से अधिक उपन्यास में स्त्री व्यक्तित्व का प्रकाश होता गया। उपन्यास युग के साथ-साथ नारी के प्रति ध्यान आकर्षित होता गया।

कवियों के विषय में पहले ही कह चुका हूँ। दूसरे हैं चिन्तक कलाकार। इनमें मैं शरद और हार्डी को शामिल करता हूँ। हार्डी के चरित्र साधारणतया अत्यन्त स्वात्मक (Subjective) होते हैं, या यह कह देना अधिक शुद्ध होगा कि उन व्यक्तित्वों का अन्तर्दर्शन स्वात्मक दृष्टि से ही कराया गया है। और वह अन्तर्दर्शन उनके व्यक्तित्व के सम्पूर्ण रूप का न होकर किसी एक विशेष व्यक्तित्व स्थिति का होता है। शरद की नारियाँ भी इसी तरह की होती हैं। वे साधारणतया भारतीय संस्कृति के आदर्श की प्रतीक हैं। नारी के चरित्र को, या यों कह लीजिये कि, व्यक्तित्व को 'चारों ओर' से नहीं देखा गया है। एक विशेष दृष्टिकोण होने के कारण नारी की आत्मज्वाला ही विशेष रीति से सामने आयी है। लेकिन इस आत्मज्वाला से नारी का सम्पूर्ण व्यक्तित्व-दर्शन तो नहीं हो पाता। और जब तक व्यक्तित्व-दर्शन नहीं होता तब तक स्त्रियों की वास्तविक समस्याओं पर प्रकाश पड़ना भी असम्भव हो जाता है।

तीसरे हैं मनोवैज्ञानिक कलाकार। उनमें मुख्यतया निःस्व दृष्टि प्रधान रहती है। तभी वे भिन्न-भिन्न व्यक्तित्वों का सांगोपांग अध्ययन कर सकते हैं और इस तह वे एकांगी और एकान्तिक नहीं होते। सच्चे मूल्यांकन के लिए हमें किसी भी व्यक्तित्व को उसके खुले और मूल-स्वरूप में देखना चाहिये। उस पर अपना आग्रह करना परात्मक (Objective) कलाकार के लिए विघ्न पूर्ण है। सत्य के नग्नदर्शन के लिये भी अपना आग्रह छोड़ना पड़ता है। रोम्या रोलां ने अपने 'स्व' को परात्मक (Objective) करने का प्रयत्न किया जिससे कि उनके हृदय के दर्पण में लोगों का प्रतिबिम्ब अपनी सम्पूर्ण स्वच्छता के साथ उतर सके। रोम्या रोलां के 'जीन क्रिस्तोफ' में नारियों के बहुत सुन्दर चित्र खींच गये हैं, जिआ की माँ, अन्त्वानेत, रोजा, एडा, लुइसा इत्यादि के। इन सब चरित्रों में सूक्ष्म व्यक्तित्व दर्शन प्रधान है। और व्यक्तित्व को चारों ओर से देखा गया है। जहाँ तक व्यक्तित्व-दर्शन का सम्बन्ध है वहाँ तक रोम्यारोलां ही ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने अपने को अपने चरित्रों से बिल्कुल अलग रखा है, या यह कहिये कि अपने को परात्मक कर लिया है। उन्होंने बिल्कुल निःस्व दृष्टिकोण से मानवीय चरित्रों का अभ्यास किया है। परन्तु स्त्री-समस्याओं पर वे विशेष प्रकाश नहीं डाल सके, क्योंकि स्त्री को छोड़कर स्त्री-समस्याओं को खोजते फिरना उनका क्षेत्र नहीं है।

यह बात स्पष्ट है कि विश्व का साहित्य पुरुषों द्वारा ही अधिक लिखा हुआ होने के कारण पुरुष-चित्रण जितना सुन्दर, विशद और सूक्ष्म हुआ है, उतना स्त्री-चित्रण नहीं। सामाजिक परिस्थितियों से कह लीजिये या अन्य किसी कारण से, स्त्री ने कलाक्षेत्र में पुरुष से अधिक काम नहीं किया। फलतः पुरुषों का साहित्य और उनके विचार का ही प्राधान्य रहा।

पुरुषों द्वारा रचित साहित्य और विचारों का स्त्री की स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ता है, इस पर विचार होना चाहिये।

स्त्री के पक्ष में होते हुए भी हमें यह कहना पड़ेगा कि मुख्यतः पुरुष-विचारों के अनुसार स्त्रियों के दो ही रूप पुराने

[शेष पृष्ठ २० पर]

विश्व राजनीति का केन्द्र—मध्यपूर्व

[पृष्ठ १० का शेष]

राजनैतिक भूल की। उसने विदेशियों को व्यापार इत्यादि में अनेक छूटे दीं। विदेशियों ने अपने डाकखाने भी खोल लिये थे। १८८१ में टर्की के ऋण को नियन्त्रण करने के लिए एक कमेटी बनाई गई। उस कमेटी में ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी इटली व टर्की थे। १९१४ मे टर्की का राष्ट्रीय ऋण २०० लाख पौंड था। इस ऋण पर राज्य की कुल आय का प्रायः ⅓ के बराबर ब्याज दिया जाता था। इसी ऋण के कारण देश का साम्राज्य समाप्त हो गया और मध्यपूर्व का अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बट गया।

ईरान की खाड़ी

इस प्रदेश की सुरक्षा में ईरान की खाड़ी का विशेष स्थान है। आज भी इस खाड़ी के कारण ब्रिटेन ईरान के तेल क्षेत्रों मे अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिए एक सगठित मार्ग तैयार कर रहा है। एक ब्रिटिश राजनीतिज्ञ ने प्राय. तीन दशाब्दी पूर्व ईरान की खाड़ी के सम्बन्ध में कहा था कि, 'हमें अपने प्रत्येक साधन की सीमा तक इस जल प्रदेश की रक्षा करनी होगी।'

टर्की अपने साम्राज्य की समाप्ति से प्रसन्न नहीं था। उसने उसे जीवित रखने के लिए अनेक प्रयत्न किये, परन्तु सब व्यर्थ। अरब राज्यों में विद्रोह फैला और अन्त में छोटे-छोटे कई राज्य और बन गये। टर्की के साम्राज्य समाप्त करने में ब्रिटेन इत्यादि ने भी अरबों की सहायता की। आज भी यह अरब राज्य आपसी मतभेद को नहीं भुला सके हैं। इस भू-प्रदेश के प्रमुख शासक शाह अब्दुल्ला की इसीलिए हत्या की गई कि वह अपने देश की उन्नति करने के लिए अंग्रेजों को मित्र बनाये हुए थे।

युद्ध काल में ब्रिटेन, अमेरिका, रूस व फ्रांस इत्यादि ने मिल कर इस प्रदेश मे जर्मनी के विरुद्ध एक सगठित मोर्चा कायम किया। युद्ध में जर्मनी की पराजय अवश्य हुई, परन्तु मित्र राष्ट्र भी सगठित न रह सके। अभी शान्ति-सन्धि पर किये गये हस्ताक्षरों की स्याही भी न सूखी थी कि तीसरे महायुद्ध की तैयारी की जाने लगी। आजकल की राजनीति, मिश्र की चुनौती, ब्रिटेन के मित्रों की हत्या, रूस के उत्तर से भय और देश का आर्थिक पतन ब्रिटेन व अमेरिका के सिर दर्द बन गये हैं आज आंग्ल-अमरीका गुट को कच्चे माल की अत्यन्त कमी महसूस हो रही है। इस आपत्तिकाल में ईरान भी अपना तेल ब्रिटेन को देने से इन्कार कर रहा है। ब्रिटेन की पूंजी समाप्त होने का भय इतना नहीं सता रहा है जितना कि उसे तेल न मिलने के कारण आगामी युद्ध में पराजय का भय है। आगामी युद्ध निर्णायक होगा, कौन जानता है कि यह अन्तिम युद्ध हो। ब्रिटेन ने ईरान के इस अधिकार की वैधता को सुरक्षा परिषद् में चुनौती दी है। रूस इस समय ईरान की सरकार का साथ दे रहा है। उसने इस बात की मांग का प्रतिपादन किया है कि सुरक्षा परिषद् दल के प्रश्न पर विचार नहीं कर सकती है। सुरक्षा परिषद् का निर्णय चाहे कुछ भी ईरान मानने को बाध्य न होगा। रूस को इस विचार से इतना लाभ अवश्य पहुँचा है कि उसे ईरान में कुछ छूट मिल जावेगी।

इस भू-प्रदेश का आर्थिक विकास सीमित दशा में ही हुआ है। देश मे कोई संगठित उद्योग नहीं है। कृषि पर निर्भर रहने वाली जनता की दशा तो और भी दयनीय है। केवल कुछ ही खनिज पदार्थ इस स्थान पर पाये जाते हैं। तेल ही एक ऐसा उद्योग है जिस पर कि गर्व किया जा सकता है परन्तु उसके कारण बड़ी बड़ी शक्तियां इसको अपने अन्तर्गत लाना चाहती हैं। यह निश्चित है कि यदि निकट भविष्य में मध्य पूर्व का आर्थिक उद्धार नहीं किया गया तो वहा पर साम्यवाद का प्रसार हो जावेगा। और इस दशा में आंग्ल अमरीका दल के इस भू-प्रदेश में समस्त स्वार्थ समाप्त हो जायेंगे।

बाल-बन्धुओं से

प्रिय बन्धुओ !

तुमको मालूम ही है कि वीर अर्जुन का दीपावली अंक बड़ी सजधज से निकल रहा है। सम्पादक जी से कह सुनकर उस अंक में तुम्हारे लिए तीन पृष्ठ सुरक्षित करा लिए हैं। अब उन तीनों पृष्ठों का सदुपयोग करना तुम्हारा काम है। बहुत से बन्धुओं के आग्रह पर दीपावली अंक में बाल चित्रावली प्रकाशित करने का निश्चय किया गया है। उसके लिए अपने तथा अपने छोटे भाई बहनों के सुन्दर चित्र २२ अक्टूबर तक कार्यालय में भेज देने चाहिये। चित्र भेजने के नियम इसी पृष्ठ पर छपे हैं। उनका पूर्ण पालन करना चाहियें।

और हां ! दीपावली अंक में क्या क्या होना चाहिये इस विषय में अपने २ सुझाव भी हमें जल्दी जल्दी से भेजो, जिससे कि उन पर विचार किया जा सके।

तुम्हारा —
श्याम भय्या

★

भूल भूलैया का सही हल भेजने वाले

विजय प्रकाश अग्रवाल (अल्मोड़ा) अबोध कुमार शर्मा नई देहली। सुधीर कुमार शर्मा, बरेली। विजय दयाल भटनागर, गज बासौदा। सुधीर कुमार सेवक देहरादून। ओमप्रकाश बेचैन, कमलाल। बो० आर० कक्कड़, हीरालाल, रामेश्वर लाल, सांभर। जगदीश, बरेली। रूपलाल, भीलवाड़ा। अनिरुद्ध प्रतापसिंह सागर। कु० आनन्द अवस्थी, दुगड्डा। सुरेश अग्रवाल काशीपुर। हरचरनदास, श्रीकरनपुर। विजय कपूर, इन्दौर। उमेशचन्द, रानीखेत। भुवनचन्द्र जोशी हल्द्वानी। रामकुमार 'पुष्प', मेरठ। महेशचन्द्र गड़। मनमोहनलाल, गाजियाबाद। छोटेलाल, सागर। निर्मल कुमार दमोह। उमेश देव, मुरादाबाद। देवेन्द्र प्रतापसिंह, ग्वालियर। राममोहन शर्मा। ओमप्रकाश अल्मोड़ा। सुभाषचन्द्र शर्मा, दिल्ली।

तुम्हारे पत्रों का उत्तर

(१) कमलेश कुमारी (नई दिल्ली) देखो कमलेश ! भेजी हुई रचनाओं को वापिस मंगवाने के लिये, अपना पता लिखा हुआ लिफाफा भेजना चाहिये।

(२) अनिरुद्ध प्रतापसिंह (सागर) अपने हाथ का बनाया हुआ चित्र भी भेज सकते हो। यदि अच्छा हुआ तो छप जायगा।

(३) बनारसी दास वर्मा (दिल्ली) तुम अपनी मनोरंजक रचनायें शीघ्र भेजो। और चिन्ता न करो तुम्हें इसके लिये कोई फीस नहीं देनी पड़ेगी।

(४) विजय प्रकाश (अल्मोड़ा) तुम अपनी चित्र पहेली का पूरा हल भेजो, फिर वह छप सकेगी।

(५) मदनलाल भाटाकी (जयपुर) ऐसा कोई नियम नहीं हैं। मदन ! कि हम अपने रिश्तेदारों को ही सदस्य बनाते हैं तुम्हारी सदस्य संख्या ४१ है जो ७ अक्तूबर के अंक में छपी है। छोटी छोटी बातों पर नाराज न हुआ करो। थोड़ा सबर रखा करो।

सूचना

३० सितम्बर के अंक में 'आम की रखा' नाम से जो कहानी छपी थी वह देहली के श्री शिव कुमार खन्ना की लिखी हुई थी।

बाल पहेली

[श्री प्राणनाथ आगरा]

एक पहेली प्राण ने डाली
मामे उसके चिड़िया भारी
पैर गोल और सूरत कारी
हरदम रहती है वह जारी ॥१॥

× × ×

प्रथम कटे तू तीन अक्षर का
पहला कटे बने तू पानी
अन्त कटे बन जावे तू काम
आता तू अक्षर के काम ॥२॥

× × ×

एक गंभेरी एक कारी नार
एक ही नाम धरा करतार ॥३॥

रत्नकुमार स्वामी, दिल्ली

× × ×

एक इंच की कोठरी, जिसमें नौ सौ नाथ
कल्लोल करते बोल को मेरा अंबर कौन
से नाथ ॥४॥

— अहल्या बाई, चौकी

चुटकुले

छोटा लड़का — (पिता से) पिता जी मेरी शादी कर दीजिये !

पिता —किससे शादी करोगे बेटा ?

लड़का —दादी से !

पिता —अरे पगले ऐसा नहीं कहा करते वह तो मेरी माता जी हैं।

लड़का — तो फिर क्या हुआ आपने भी तो मेरी माताजी से ही शादी की थी !

× × ×

एक बार एक सेठ ने अपने नौकर से कहा कि जाओ बादाम तोड़ लाओ। नौकर ने बादाम तोड़कर उसकी गिरि तो फेंक दी और उसके छिलके लेकर सेठजी को दे दिये ! सेठ ने गुस्से में आकर कहा बेवकूफ कहीं का गिरि ही तो खाने की चीज होती है छिलका नहीं खाते। दूसरे दिन उसने कहा जाओ खजूर लाओ ! उसने खजूर का ऊपर वाला हिस्सा फेंक दिया और गुठलियां ले आया। ! तब सेठजी ने झुंझलाकर कहा, अरे इन गुठलियों को मैं क्या करू नौकर ने उत्तर दिया आप ही ने तो कहा था कि बीच का हिस्सा खाने का होता है बाहर का नहीं।

— उषादेवी बजाज

× × ×

हमारे नये सदस्य

६१ योगेन्द्र राम (ब्यावर)
६२ राजेश्वरनाथ कौल (भागपुर)
६३ शिवकुमार खन्ना (देहली)
६४ हीरालाल अरोड़ा (देहली)
६५ कु० प्रेमलता गुप्ता (छतरपुर)
६६ कु० उर्मिला साहू (नागपुर)
६७ सदाशिवराम मोघे (सुरई)
६८ दिलीपकुमार भाटिया (कोटा)
विनोदचन्द्र दीक्षित (मथाना)
० हरिमोहन वार्ष्णेय (हाथरस)
१ धीरेन्द्रकुमार स्वामी (नई दिल्ली)
२ ल० प० पाण्डुरंगन (अवधि)
३ राजेन्द्रसिंह भंडारी (जयपुर)
४ रतनचन्द्र लोढ़ा (जयपुर)
७५ अवध बिहारी श्री वास्तव (सुरई)
७६ ओमप्रकाश (सागर लेक)

एक मित्र—इस बार यदि आप मुझे दस रुपये दे देंगे तो मैं आपका जन्म भर ऋणी रहूँगा।

दूसरा मित्र—इसलिए तो मैं नहीं देता। —इसाक मुहम्मद कुरेशी

बाल पहेलो के उत्तर—

(१) रेल (२) काजल (३) इलायची (४) मधुमक्खी का छत्ता।

खेल खेल में नानी बनाई अपने बीच सुहाने

फ्रांस का परिचय

[पृष्ठ ११ का शेष]

जा रही है। इससे आशा है कि निकट भविष्य में जर्मनी पुनः स्वतंत्र हो जायेगा। उस समय शहर के प्रदेश पर आगे पीछे पुनः विवाद खड़े होने की संभावना है। इसीलिए उस जिले को अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण में रखने का विचार है।

स्थल सेना की दृष्टि से फ्रांस दस सैनिक विभागों मे बंटा हुआ है। इनमें से नौ फ्रांस में हैं और एक अलजीरिया में इसके अतिरिक्त मोरक्कों, ट्यूनिशिया, सुदूरपूर्व; फ्रांसीसी पश्चीमी अफ्रीका, मेडागास्कर तथा जर्मनी के फ्रांस द्वारा अधिकृत भागों आदि में अलग सैनिक विभाग हैं। लेजनरमेरी नाम से फ्रांस का एक विशिष्ट सैनिक दल है, इसमें प्रवेश लेने वालों का विशेषत्व स्वयं सेनामग्री करता है।

महायुद्ध की समाप्ति के समय फ्रांस की थलसेना में ५०१००० सैनिक थे। इसके अतिरिक्त २५००० 'लेजनरमेरी' १०५००७ राजधानी सेना, १२०००० जर्मनी के अधिकृत प्रदेश में सेना, ३००००० उत्तरी अफ्रीका में, और १२०००० सैनिक सुदूरपूर्व में थे।

सन् १९१५ में फ्रांस ने अपने प्रथम ३५००० टन के युद्धपोत 'रिचल्यू' को उतारा और १९३० में दूसरे 'जीन बार्ट' को। 'रिचल्यू' को अमेरिका में पुनः फिट किया गया है। 'जीन बार्ट' १९४२ में कैसा बलांक के युद्ध में बेकार होगया था। अब वह भी ठीक होगया है। क्रूजर 'डिग्रासे' का कार्य (८००० टन) जिसका निर्माण महायुद्ध के पूर्व शुरू हुआ था, अगस्त १९४० में आर्थिक संकट के कारण रोक देना पड़ा। चार पनडुब्बियां पूरी हो गई हैं। १९४६ में फ्रांसीसी बेड़े को ८ भूतपूर्व जर्मन विध्वंसक और टारपीडो नावें प्राप्त हुईं। इनके अतिरिक्त ३ भूतपूर्व जर्मन विध्वंसक, १२ सुरंगनाशक तथा १६ अन्य प्रकार के पोत १९४७ के अन्तिम दिनों में अमेरिका द्वारा फ्रांस को सौंप दिये गए।

फ्रांसीसी बेड़े में २११६—२०२० टन तक के १० विध्वंसक भी सम्मिलित हैं जिनकी गति २५—३७ नाट है। इसके अतिरिक्त १८ टारपीडो नाव और १२४० टन के ६ भूतपूर्व अमेरिकन विध्वंसक भी इसमें हैं। १५ पनडुब्बी हैं जिनमें से ५ पहिले जर्मनी की थीं। इटली के बेड़े की शक्ति कम करने में भी फ्रांस के एक स्लूप और एक तेल का टैंकर जहाज प्राप्त हुआ है।

फ्रांस की वायुशक्ति भी अच्छी है। इसके लिए शिक्षित व्यक्ति का अभाव नहीं है। साथ ही यान निर्माण कार्य भी चालू है। नये विज्ञापन निकल रहे हैं। जर्मनों ने युद्ध के दिनों में जिन फ्रांसीसी कारखानों से काम लिया था उन्हीं का उपयोग अब फ्रांसीसी स्वयं कर रहे हैं। साथ ही ब्रिटेन व अमेरिका से यान खरीदे जा रहे हैं और युद्ध के दिनों मे फ्रांसीसी उड़ाकों द्वारा प्रयुक्त ब्रिटिश व अमेरिकन यान भी एक बड़ी संख्या में अभी यहीं हैं। भावी फ्रांसीसी वायुशक्ति एटमबम तथा जेटयानों की ओर देख रही है।

—×—

महायुद्ध के पश्चात फ्रांसीसी जल-सेना की स्थिति :—

	वर्षान्त में पूर्ण हुए		
	१९४५	१९४६	१९४७
युद्धपोत	२	२	१
वायुवाहक पोत	१	२	२
क्रूजर	६	६	६
विध्वंसक और टारपीडो नाव	२०	२८	२८
पनडुब्बी	२०	१५	१५

प्रमुख पोतों का विस्तृत वर्णन :—

कब उतारे	नाम	भार	तोपें	टारपीडो ट्यूब	हार्स पावर	गति (नाट में)
१९३९	'रिचल्यू'		युद्ध पोत			
१९४०	जीन बार्ट	३५००	८ तोपें १५ इंची ९ तोपें ६ इंची १२ तोपें ४ इंची	—	१५५०००	३० से अधिक
	क्रूजर					
१९२७	सफ्रेन	९९३८	८ तोपें ८ इंची ८ तोपें ३ इंची चार मेशिनी	६	९००००	३२
१९२६ १९२५	टौरविले ड्यूक्वेस्ने	१००००	,,	६	१२००००	३३
१९३१	ड्यू गे ट्राउन	७२४९	८ तोपें ६·१ इंची ४ चार मेशिनी ३ इंची	१२	१०००००	३४·२
१९३०	जीन डि आर्क	६४८९	,,	२	३२५००	२५
१९३३	एमाइल बर्टिन	५८८६	९ तोपें ६ इंची ४ तोपें ३·५ इंची	६	१०२०००	३४
१९३२ १९३६	ग्लोइरे मोण्टकाम जार्जेस लीग्यूस	७६००	९ तोपें ६ इंची ८ तोपें ३·५ इंची चार मेशिनी	४	८४०००	३१·२

एक मनोवैज्ञानिक लेख

मानसिक ग्रन्थियों से मुक्त रहिये

★ प्रो० रामचरण महेन्द्र एम० ए०

भावना-ग्रन्थियों का निर्माण:—

मनुष्य का मानसिक संस्थान बड़ा जटिल है। उसमें नाना प्रकार के मनोविकारों का ताना बाना निरन्तर बुना जाता रहता है हम जो विचार गुप्त मन में छिपाकर दमन कर लेते हैं, वे वास्तव में मरते नहीं। मनोविकारों में 'दुराव' अपने ढंग का आश्चर्यजनक है। इसकी विचित्रताओं पर विस्मय करना होता है। काम, क्रोध, लोभ, शोक, चिन्ता, भय, वासना, ईर्ष्या आदि विकार तो तूफान के बाद बवन्डर की भांति आते हैं तथा कुछ देर बाद शान्त हो जाते हैं। यदि ये विकार किसी न किसी रूप में निकलते रहे, तो मनुष्य को नुकसान नहीं पहुँचाते। उस समय तक, जब तक इनका प्रकाशन होता है, हानि होती है किन्तु इसके बाद इनसे कोई हानि नहीं पहुँचती। पर दुराव, एक ऐसा विकार है, जो हर बड़ी हानि पहुँचाता है।

डाक्टर फ्राइड, प्रोबोन, राइबी, प्रभृति मनोवैज्ञानिकों ने आचार्यों के मानसिक ग्रन्थियों के विषय में शोध किये हैं। इन्हें हमारी मानसिक ग्रन्थियों (Complexes) की जड़ें दूर तक मिली हैं। इन मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि "अधिकांश मानसिक रोग 'दुराव' अर्थात् अपने मनोविकार को सभ्यता के भय से छिपाने के कारण होते हैं। मानव अपने हृदय में कोई इच्छा या अभिलाषा करता है, भविष्य के लिये कोई सुन्दर कल्पना निर्माण करता है। किन्तु संकोच के कारण उसे इन अभिलाषाओं का मन में दमन (Suppression) करना पड़ता है। किसी पर प्रकट नहीं करता। उसे मन ही मन में गुप्त रूप से यह भय होता है कि यदि मैं अपनी मनोकांक्षा किसी पर प्रकट करूंगा, तो वे मेरा मजाक बनायेंगे, तिरस्कार करेंगे; दूसरे के समक्ष टीका टिप्पणी कर मेरी मान हानि करेंगे और मूर्ख ठहरायेंगे। इसी प्रकार मन की आकांक्षाएं; चिन्ताएं और वेदनाएं, पीड़ाएं उठा करती हैं, उन्हें भी वह दूसरों के सामने व्यक्त नहीं करता। वह सोचता है कि अपने मनोभाव जिस पर प्रकट करूंगा, वह मुझे डरपोक कायर कमजोर और दुःखी कहेगा।"

दुराव के भयंकर दुष्परिणाम,

काम वासना सम्बन्धित दमन (Complexes) प्रायः सबसे अधिक होता है। हमारे यहां कामवासना की चर्चा करना नैतिक तथा धार्मिक दृष्टियों से दूषित समझा जाता है। समाज में इसके लिये दृढ़ प्रतिबन्ध हैं। किसी अवैध दिशा में मन चलता है, तो उसे नियंत्रित करना पड़ता है। भारतीय स्त्रियों को इस सम्बन्ध में विशेषरूप से काम सम्बन्धी इच्छाओं का दमन करना पड़ता है। किसी पर उन भावों को व्यक्त करने से सामाजिक प्रतिष्ठा नष्ट हो जाती है।

यदि किसी से जाने या अनजाने से कोई पाप हो गया है तो वह दुराव छिपाव के कारण मन के गुप्त केन्द्रों में ही संचित रहता है और मानसिक ग्रन्थियों का निर्माण करता है।

दुराव के कारण मनुष्य के अन्तःस्थल में दो व्यक्तित्व निवास करने लगते हैं। स्टीवेन्सन नामक उपन्यास लेखक की प्रसिद्ध कहानी डा० जेकल और मि० हाइड यही मनोवैज्ञानिक तथ्य प्रकट करती है। वही व्यक्ति कभी एक प्रकार का तो कभी बिल्कुल दूसरी प्रकार का व्यवहार करता है। एक मनुष्य के अन्दर दो मनुष्य घुस जाते हैं। एक वह जो वास्तविक, दोषयुक्त पापी, अपराधी या मूर्ख ठहराये जाने के भय से भीतर ही छिपा बैठा है। दूसरा वह जो समाज में अपनी बाहरी प्रतिष्ठा बनाये बैठा है। प्रायः दोनों आचार व्यवहार में एक दूसरे के प्रतिकूल रहते हैं, फिर भी एक ही घर में रहते हैं।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक प्रो० जानकीराम शुक्ल का तो यहाँ तक कथन है कि 'जिस प्रकार भय की भावना ग्रन्थि का कारण बनती है, काम भावना की अनुभूति की भावना ग्रन्थि का कारण बनता है। इसके फल स्वरूप उसे अनेक प्रकार की आमग्लानि होती है। यदि कोई मनुष्य जिसकी नैतिक भावना निर्बल है, काम के आवेश में आकर व्यभिचार कर, बैठे तो उसका इस प्रकार का विचार भावना ग्रन्थि का कारण बन जाता है। यह ग्रन्थि अनेक प्रकार के रोगों—जैसे कोढ़, इन्फिलमा, हिस्टीरिया, बार-बार गुप्त अंग को खुजलाना वमन की प्रवृत्ति में प्रकाशित होती है। स्त्री पुरुष के प्रेम व्यवहार में विशेष प्रकार की अरुचि इसी प्रकार की भावना ग्रन्थि के कारण बन जाती है। मानसिक नपुंसकता उत्पन्न करती है, किशोर बालकों के काम वासना सम्बन्धी अनैतिक व्यवहार अनेक मानसिक व शारीरिक रोगों के कारण बनते हैं।

प्रायः मनुष्य को ज्ञात नहीं होता कि उसकी मानसिक अस्तव्यस्तता तथा रोग का क्या कारण है। मनोविज्ञान शास्त्र इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि पहले मनुष्य के मस्तिष्क के अध्ययन द्वारा उसकी दबी हुई, कुचली हुई, अतृप्त इच्छाओं की जानकारी प्राप्त करनी चाहिये। यह ग्रन्थियाँ जिस कारण को ले कर उत्पन्न होती हैं, उनसे मिलते जुलते रोगों की सृष्टि करती हैं। बचपन अपने मन की लालसा, उसके खाने का स्वाद आदि छिपाते रहते हैं। इस निरन्तर दुराव से वीर्य की नलिकाएं निःशक्त हो जाती हैं। फलस्वरूप उनके संतान नहीं होती। अनेक बार सूत ज्वाला, कर्ण रोग, पागलपन इन्हीं ग्रन्थियों के फलस्वरूप होता है, जिस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता

ग्रन्थियों से युक्त बीमार व्यक्ति का अध्ययन

प्रश्न है कि मानसिक रोगी का अध्ययन कैसे होना चाहिये। इसका एकमात्र उपाय मनःविश्लेषण है। इसके अनेक रूप हैं। १. मनुष्य की आदतों, गालियों कुवाक्य, तथा रहन-सहन के ढंग का अध्ययन, २. हिप्नोटिक निद्रा में प्रवेश द्वारा उनके गुप्तमन की अभिलाषाओं का अध्ययन, ३. उसके स्वप्नों का अध्ययन, ४. भूतकाल की स्मृतियों को सविस्तार निकाल कर उनका अध्ययन जिसे 'गोप्य प्रकाशन' कहते हैं।

चिकित्सक को चाहिये कि इन सभी मनोवैज्ञानिक रीतियों से रोगी के मन में छिपी हुई गुप्त इच्छाओं, अभिलाषाओं, कल्पनाओं, योजनाओं को, जो उसने कभी बनाई थीं, और सांसारिक जीवन में उसको जो अपमान, तिरस्कार, असफलता, निराशा, विद्रोह आदि सहने पड़े हैं, सब प्रकट हो जाय। जैसे ही ये छिपे हुए मनोभाव प्रकट होते हैं, मानसिक ग्रन्थियाँ खुल जाती हैं। रोगी का मन हलका हो जाता है। एक बार प्रकट हो जाने पर फिर तर्क द्वारा आप उसे काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि का रहस्य तथा अटिलताएं समझा सकते हैं। तर्क को उसका मन ग्रहण कर लेगा, बुद्धि भावना पर विजय प्राप्त कर लेगी और रोगी का मानसिक द्वन्द्व मिट जायगा। गोप्य प्रकाशन वार्त्तालाप से सहस्त्रों कष्ट साध्य और असाध्य शारीरिक एवं मानसिक रोगियों की व्यवस्थाओं को सफलतापूर्वक निर्मूल किया जा चुका है।

दैनिक जीवन में सावधान रहें

दैनिक जीवन में यथा सम्भव आवेश से मुक्त रहना चाहिये। आवेश से मन में उत्तेजना उत्पन्न होती है। वे उत्तेजनाएं पूर्ण नहीं हो पातीं; किसी न किसी प्रकार दब जाती हैं। कालान्तर में ऐसा व्यक्ति शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का उपभोग नहीं कर सकता।

उद्वेगों के दमन की आवश्यकता नहीं है यथासम्भव उन्हें नियमित और संतुलित करने की आवश्यकता है। आप अपनी क्रोध या आवेश की आदत को धीरे-धीरे क्रम क्रम से बदल सकते हैं। एकदम कोई काम कर बैठना ग्रन्थि उत्पन्न करेगा। यदि आप विवेक को जाग्रत रखें, तो मनोवेगों को पवित्र, सात्विक, और स्वस्थ मार्ग निकलने के लिए मिल सकते हैं।

प्रेम, सहानुभूति, करुणा, दान, आनन्द आदि सात्विक दैवी गुण हैं। जिनका मन इनसे भरा रहता है, जो दैनिक जीवन में इन दैवी सद्गुणों का प्रयोग करते हैं, इन्हीं के अनुसार पालन करते हैं, वे प्रायः मानसिक ग्रन्थियों से मुक्त रहते हैं। ऐसा व्यक्ति दुर्वासनाओं से मुक्त रहता है। भोग से वासना का शमन नहीं होता, विवेक तथा तर्क से इसका परिष्कार हो सकता है। यदि प्रेम करुणा सहानुभूति, उदारता का खूब विकास किया जायगा, तो दुर्वासनाएं स्वयं दग्ध हो जायंगी। बुरे विचारों को हटाने का मार्ग उत्तम गुणों की अभिवृद्धि करना है।

भौतिक दृष्टिकोण छोड़ कर आध्यात्मिक दृष्टि अपनाने से मनः शांति प्राप्त होती है। सांसारिक दृष्टिकोण अपनाने से मनुष्य चिन्ता, क्रोध, द्वेष, मत्सर, मोह, रोग, उद्वेग, आवेश का नारकीय प्रतिफल उपस्थित करता है और आत्मिक दृष्टिकोण को अपनाने से प्रेम, सहयोग, प्रसन्नता, साहस, अभय, सन्तोष एवं सात्विक आनन्द का उपहार प्राप्त होता है। उनमें से एक को स्वर्ग तो दूसरे को नर्क कहा जा सकता है। 'मैं आत्मा हूँ' इस भाव को व्यवहार में लाना चाहिये।

—×—

'नारी जीवन' विषयक विविध दृष्टिकोण

[१६ का शेष]

साहित्य क्षेत्र से लेकर आधुनिक साहित्य तक में आये हैं। पहला है स्त्री का मोहिनीरूप, काम का आधार और मनुष्य को पतन की ओर ले जाने वाली प्रकृति-शक्ति। दूसरा है उसका आधिभौतिक स्वरूप, जैसे दांते की 'डिव्हिना कामिडिया' में नायक को स्वर्ग ले जाने वाली, पथ की ओर अंगुलि-निर्देश करने वाली उसके बचपन की साथिन और प्रेमिका बिएट्रिस। प्रसाद जी की 'कामायनी' में मनु को स्वर्गीय पद प्राप्त कराने वाली भोली श्रद्धा भी ऐसी ही है।

एक तीसरा भी रूप हमारे सामने है जिस स्मृतिकार मनु से लेकर बर्नार्ड शॉ और चिन्तक नीत्शे तक ने ग्रहण किया। बर्नार्ड शा के लिए स्त्री है प्रकृति, इसके सिवा और इसके ऊपर कुछ भी नहीं। प्रकृति की सृजन-लीला सतत गतिमति रखने के लिये वह पुरुष के आसपास 'रिंगण' (सांख्य का शब्द है) करती है और उसको अपने मोह जाल में बद्ध कर प्रकृति के उद्देश्य को पूर्ण करती है। अतएव इस सृजन लीला जाल से ऊपर उठने के लिए, अन्ध-प्रकृति-लीला से अलग हटने के लिए नारी मुक्त होने के लिये स्त्रियों को ठुकराना आवश्यक है। किन्तु नीत्शे को बर्नार्ड शा की युक्ति से एकदम कोई सम्बन्ध नहीं है। उसके महामानवों के प्रथम योद्धा होने के कारण स्त्रियाँ उन योद्धाओं के आमोद प्रमोद की साधन हैं, और होना चाहिये।

ऊपर के सभी मतों में स्त्री के व्यक्तित्व की स्वतन्त्रता स्वीकार नहीं की गयी है, सिवा नारी के उस आधिभौतिक स्वरूप के जहां वह पुरुष से कहलाती है "Lead kindly light, thou lead me on." जिसका ज्वलन्त उदाहरण दांते की बिएट्रिस और 'प्रसाद' की श्रद्धा है। परन्तु यह बात ध्यान में में रखनी चाहिये कि इस दृष्टि में भी पुरुष की मानसिक आवश्यकताओं के अनुसार ही नारी को रूप दिया गया है। जिस तरह प्रथम में नारी मोहक मारक है, उसी तरह इसमें भी वह देवता है। पाप और पुण्य दोनों पुरुष के मन में हैं, इनको वह नारियों में प्रतिबिम्बित पाता है। अतएव दोनों बातें पुरुष के पक्ष से कही गयी हैं, न कि स्त्री के।

स्त्री जहां प्रकृतिरूपा है, वहां भी स्त्री के स्वतन्त्र व्यक्तित्व का अनस्तित्व घोषित किया गया है। इस मत को यदि लीव जाक जाउँ सुनती तो शायद वह बर्नार्ड शा के पास जाती। दूसरे मत में स्त्री पुरुषों की दासी है। वहां भी उसके स्वतन्त्र व्यक्तित्व को नहीं माना गया है।

स्त्री-व्यक्तित्व की स्वतन्त्रता के अनस्तित्ववाले 'वाद' से (जो कि कौटुम्बिक, सामाजिक परिस्थितियों से उत्पन्न हुआ है) स्त्री के स्व तत्व का स्वतन्त्र विकास कभी नहीं हो पाया। इसीलिये दास-मनोवृत्ति, समाजनीति से बहिष्कृत। उसे ऐसा स्थान दिया गया है जहां वह कौटुम्बिक प्रणाली की रक्षा के लिए ज्ञान, कर्म और भक्ति तीनों रहें, परन्तु स्त्री सिवाय भक्ति के ज्ञान और कर्म का आश्रय नहीं ले सकती। फिर भी विश्व में यत्र-तत्र स्त्रियों के स्वतन्त्र व्यक्तित्व का दर्शन होता जा रहा है—कला में, धर्म में साहित्य में, राजनीति में, समाजनीति में। यह इस बात को सिद्ध करता है कि जिस तरह पुरुष प्रकृति की सृजन-लीला से ऊपर उठ सकता है, उसी तरह स्त्री भी। जिस तरह पुरुष नित्य शुद्ध आत्मा है, उसी तरह स्त्री भी।

यदि हेरियट उतनी ही ऊंची होती जितना कि शेली, और यदि उसका स्वतन्त्र विकास होता मानी वह दास्य-प्रेम से ऊपर होती, तो शेली के जीवन में यह दुःख न आता। परन्तु इस स्वतंत्र व्यक्तित्व के स्वतंत्र विकास की पुजारिनें जब तक अपना आदर्श स्वयं नहीं खोज निकालतीं, तब तक वे दासियां ही रहेंगी।

—•—

कला के मूल तत्व

का शेष]

वपन कर सकता है। यही कला का सम्मोहन है— दिव्य दृष्टि है जो मधु अलख के दर्शन कराती है और मनोज्ञ किरणों से संकीर्णता के सघन स्तरों को हटा कर उनमें प्रकाश की नई रेखायें भरती है, एवं उस सत्य की ओर हमें ढकेलती है जिसे आत्मसात करके हम अपने से परिचित हो सकें। यह नई दृष्टि, बैर-प्रीति, सुख दुख, जीवन-मरण आदि विरुद्ध भावों को एक स्वरैक्य में इस तरह बांध देती है कि सारा चराचर जगत एक ही सत्य की हलचल ज्ञात होने लगता है। जीवन के अर्थों की सारी बिखरी कड़ियां परिपूर्ण समन्वय के एक ही सूत्र में सम्बद्ध हो जाती हैं और हमें जीवन की समग्रता के दर्शन होने लगते हैं। इस परिष्कार और समृद्धि के द्वारा ही कला मनुष्यता के स्तर को उत्तरोत्तर ऊंचा उठाती रहती है।

राष्ट्र की आकांक्षाओं का प्रतीक

कला जीवन का प्रतिबिम्बित है। प्रत्येक राष्ट्र का अन्तःकरण संस्कृति और आकांक्षायें कला के माध्यम से ही व्यक्त होती हैं। एक स्वाधीन और निर्बन्ध देश की भावनाएं स्वस्थ होती हैं, अतः उसकी कला में भी स्वास्थ्य और शक्ति का सौंदर्य उद्दीप्त रहता है। इसके विपरीत पराधीन अथवा जीवन की प्रगति में पंगु राष्ट्र की कला निर्जीव और निस्तेज होगी। कला का क्षेत्र अनन्त है। देश-काल के सीमित दायरे में बंधी कला भावना का स्वस्थ और स्वतन्त्र प्रतिबिम्ब नहीं होती। कला अन्तर्राष्ट्रीय और सार्वभौम है। विकास की प्रारम्भिक अवस्थाओं में उसकी प्रगति किसी राष्ट्र अथवा स्थान विशेष तक ही सीमित रहती है, किन्तु ज्यों-ज्यों कलाकार का दृष्टिकोण परिपक्व होता जाता है, त्यों त्यों उसके देश काल के बंधन भी टूटते जाते हैं और भावनायें उन्मुक्त होकर सार्वभौम प्रेरणाओं को आत्मसात् करने लगती हैं। यही कला भारतीय वेदान्त के सर्वात्म रूप को प्रमाणित करती है। भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार कला आत्मा की भी भांति ही अजर अमर एवं सार्वभौम होती है। कला के प्रस्फुरण का सम्बन्ध मनुष्य की आत्मा से है। प्रत्येक व्यक्ति में कला की प्रेरणा प्रसुप्त रहती है। विकासोन्मुख मनोवृत्तियों का प्रोत्साहन पाकर इस प्रसुप्त प्रेरणा स्रोत से कला का स्फुरण होता है। कालिदास ने इसी सत्य की ओर निर्देश करते हुए लिखा था—

रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्
पर्युत्सुकी भवति यत्सुखितोऽपि जन्तुः।
तच्चेतसा स्मरति नूनम बोधपूर्वम्
भावस्थिराणि जननान्तर सौहृदानि।
', अंक २।

ऋग्वेद में कवि को 'सूर्य चक्षु' कहा है। वह प्रकाश भी करता है और स्वयं प्रकाशित भी है। वह द्रष्टा और स्रष्टा दोनों है। वैदिक शब्दावली में 'कवि' का शाब्दिक अर्थ 'मुनि' है, जिसमें भविष्य द्रष्टा की सामर्थ्य होती है। द्रष्टा के साथ स्रष्टा की शक्तियों को सम्मिलित करके वैदिक वाङ्मय में कवि को देवताओं की कोटि में परिगणित कर लिया गया है। इस प्रकार मृत्यु पर अमरत्व की विजय कला की अंतिम सिद्धि है। मृत्यु के स्पर्श से वर्तमान अतीत में परिवर्तित हो जाता है, किन्तु यह अतीत देशकाल एवं स्थिति की दृष्टि से मर कर भी कला के कर्तृत्व में जीवित रहता है। कला की आत्मा अखिल विश्व की आत्मा के साथ एक रूप है और जब तक जगत की स्थिति है, यह सर्वथा अविच्छिन्न, एक रूप एवं अखण्ड रहेगी।

कला में जीवन का प्रतिबिम्ब

कला जीवन को प्रतिबिम्बित अवश्य करती है किन्तु इस रूप में नहीं जिस रूप में पानी आकाश को प्रतिबिम्बित करता है। कला अपने बिंब में अर्थ और भावनायें भरती है, उसकी अभिव्यक्ति करती है। कला वस्तुओं का यथार्थ रूप नहीं चित्रित करती—वह हमें अपने विषय के अंग प्रत्यंग से परिचित नहीं कराती। इसके विपरीत वह यह समझाती है कि उस विषय के प्रसंग में हृदय की अनुभूति क्या है? चर्म दृष्टि रेखाओं का जो आकार देखती है, हृदय उसमें भावनायें भर कर उसे सजीव बना देती है। कला जीवन को इसी रूप में प्रतिबिम्बित करती है। शरीर के बाह्य अंग प्रत्यंग का फोटोग्राफिक बिम्ब देकर वह अपने उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर लेती, किन्तु उसकी प्रेरणायें आंगिक रेखाओं में अनुभूति की रंगीनी भरती है और एक ऐसा प्रतिरूप प्रस्तुत करती है कि जिससे द्रष्टा या श्रोताओं के हृदय में भी तद्नुरूप अनुभूतियां जाग्रत हो उठें। इसलिए उपनिषदों में कवि को कविर्हि मधुहस्त्या (कवि मधुर हाथों वाला होता है) कहा है।

कला की उपयोगिता का भी रहस्य

(शेष पृष्ठ २२ पर)

राजश्री रिलीज़

चित्रलोक

"संसार"

एक सफल चित्र

इस सप्ताह राजधानी के प्रमुख सिनेमागृहों में जैमिनी कृत 'संसार' प्रदर्शित किया गया।

स्वनामधन्य इस चलचित्र का कथानक अति प्रशंसनीय है। मध्यवर्ग के एक सामान्य परिवार के जीवन पर इस चित्र का कथानक अवलम्बित है। संसार की विजय समस्याओं से संघर्ष करती हुई एक सुन्दर गृहस्थी परिवार के दो पथभ्रांत व मूढ़ सदस्य अपनी मूर्खता से वाद-विवाद का क्रीड़ास्थल बना देते हैं। निज उत्तरदायित्व को बिल्कुल भूलकर वे व्यक्तिगत सुख व सम्पन्नता को अति महत्व देते हैं।

परिणामस्वरूप आर्थिक कठिनाइयों से परिवार को मानहानि का भी सामना करना पड़ता है। विषम परिस्थिति में विपदाओं से कथित पुरुष निज परिवार का परित्याग कर संसार में उपेक्षा भाव जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ कर देता है और सहनशीलता की प्रतीक ललना धैर्यपूर्वक सब विपदाओं का सामना करके निज बालकों को साहसी बनाती हैं। नारीत्व का चरित्र वस्तुतः प्रशंसनीय है।

"शीनशिनाकी बुबला बू" में रेहाना

संसार में रहते हुए गृहस्थी व्यतीत करने में जीवन के विविध रूपों का प्रदर्शन अति प्रशंसनीय व शिक्षाप्रद है। कथानक के अतिरिक्त चित्र में संगीत व हास्यरस का स्तर उन्नत करने का भरसक प्रयत्न निर्माता ने किया है। लक्ष्मी के रूप में वनजा का अभिनय स्तुत्य है। भूमिका में स्वराज्यप्रभा, वनजा, पुष्पावती, एम० के० राधा, आगाजी डेविड इत्यादि हैं। जैमिनी की इस सामाजिक चित्र की रचना का प्रयास समाज को

'सपना' में बीनाराय

मार्गदर्शन कराने वाला है। आशा है भविष्य में भी वे इस प्रकार के आदर्श प्रदान करने वाले चित्र निर्माण करेंगे। चित्र का वितरण अधिकार राजश्री पिक्चर्स के पास है।

'जलियां वाला बाग'

विजयादशमी के शुभ दिवस पर फेमस पिक्चर्स लि० ने अमृतसर में उक्त ऐतिहासिक स्थान पर अपने चित्र 'जलियां वाला बाग' का शुभारम्भ किया। मुहूर्त का उत्सव ब्रिगेडियर श्रद्धानन्दजी स्टेशन कमान्डर अमृतसर की अध्यक्षता में हुआ।

हमलोग

जिया सरहदी कृत 'हमलोग' की सफलता देख गुडविल पिक्चर्स लि० ने इसके अधिकार देहली, यू. पी. व पंजाब के लिये प्राप्त कर लिये हैं।

'बाजो' के लेखक बलराज साहनी ने इसमें नायक का अभिनय किया है। चित्र साम्यवाद पर आधारित है और संगीत का निर्देशन श्री रोशन का है। प्रधान भूमिका में नूतन, श्याम, सज्जन, दुर्गाखोटे, कुक्कू इत्यादि हैं।

—+—

[पृष्ठ २ का शेष

बनाते हुए और न्याय की मांग रखते हुए भी, कुछ स्पष्ट आश्वासन न दिया जाना और उनके (श्री आयंगर) द्वारा स्पष्टतः आगामी चुनाव में प्रजापरिषद् को न्याय और उचित व्यवहार देने का वायदा भी न किया जाना।

(२) सरकारी पक्षपात द्वारा प्रजा-परिषद् के ६४ उम्मीदवारों के पर्चों में से ४१ को अति साधारण कारणों पर अस्वीकार कर दिया जाना, जब कि दूसरी ओर नेशनल कान्फ्रेंस के उम्मीदवारों के पर्चे अनेक अनियमितताओं के होते हुए भी स्वीकार कर लेना। और

(३) प्रजापरिषद् को साधारण चुनाव प्रचार न करने देना और गुंडों द्वारा परिषद् की सभाओं में आक्रमण आदि करा कर बाधायें डलवाना।

नया राजनैतिक दल

श्री द्वारिकाप्रसाद् मिश्र ने भारतीय लोक कांग्रेस नाम के एक अपने नए दल की स्थापना की नागपुर में घोषणा की। मध्य प्रदेश की विधान सभा के लिए यह दल चुनाव लड़ेगा।

'चुनावों' की देशव्यापी धूम

कांग्रेस का चुनाव आन्दोलन पंडित नेहरू, जो किसी भी दल का चुनाव प्रचार न करने के बारे में कह चुके थे, अब देश में कांग्रेस मन्त्रिमंडल बनाने के लोभ का संवरण न कर सकने के कारण बम्बई से प्रारम्भ कर रहे हैं। आगामी चुनावों में कांग्रेस, भारतीय जनसंघ, प्रजापार्टी, हिन्दू महासभा आजाद हिन्द फौज के सदस्य, रामराज्य परिषद्, फारवर्ड ब्लाक, समाजवादी दल और अ० भा० मुस्लिम लीग आदि हैं। चुनावों के लिए मार्गव सवार दलों में और इधर प० बंगाल के ७ वामपक्षीय दलों में भी समझौता हो गया है। अकालियों से भी कांग्रेस का गठजोड़ नहीं हो रहा। पंजाब, मध्य भारत और बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी आदि में आपसी भेदभाव और दलबन्दी के कारण अनेक नेता और उम्मीदवार अपने २ नाम वापस ले रहे हैं।

(पृष्ठ २१ का शेष)

नहीं है। 'जनता की उपयोगिता' के नाम पर उसे अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता। भौतिक अभावों की पूर्ति भी कला की जर्त नहीं हो सकती। कला का सम्बन्ध हमारे भावपक्ष से है और वही उसकी उपयोगिता का कर्मक्षेत्र है। पाश्चात्य देशों में विशेष कर कम्यूनिस्ट और फासिस्ट विचारधारा को अपनाने वाले व्यक्तियों ने अपने प्रचार से इस समस्या को काफी अस्पष्ट और जटिल बना दिया है। उनके विचार-स्रोत का उद्गम ही इस भांति से होता है कि वे व्यक्ति को लक्ष्य और सृष्टि का क्रम नहीं मानते। व्यक्ति के व्यक्तित्व में जो सृजनशील सम्भावनायें हैं उनकी वे पूरी उपेक्षा करते हैं। उनकी दृष्टि में समाज या राज्य सत्ता ही सब कुछ है। सारा सर्जन समाज या सत्ता से ही होना चाहिये। वैयक्तिक प्रेरणाओं की अवहेलना करते हुए वे सामूहिक भावनाओं को ही सर्वोपरि महत्व देते हैं। किन्तु कला का स्फुरण-स्रोत व्यक्ति ही है। अपनी अनुभूति की आवृत्ति ही कलाकार को कला-सृष्टि के लिये प्रेरित करती है। अपने हृदय की भावनाओं के प्रवाह में ही वह सबसे पहिले बहेगा—समाज की सामूहिक भावनायें उसे स्पर्श नहीं करेंगी और जब वे उसका स्पर्श भी करेंगी तो उसकी अपनी निजी अनुभूतियां बन जायेंगी।

इस विवेचन का यह अभिप्राय नहीं है कि कला सामाजिक अथवा नैतिक मान्यता में हीन हो। नैतिक मान्यता का सम्बन्ध कलाकार के अपने व्यक्तित्व से है, क्यों कि कलाकृति कलाकार के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति ही होती है। महान् व्यक्तित्व से महती कला ही प्रसूत होगी, भावुक व्यक्ति भाव प्रवण कला की ही सृष्टि तक सीमित रहेगा, अभद्र व्यक्तित्व निम्न कोटि की कलाकृतियां प्रस्तुत करेगा। संक्षेप में, नैतिकता और कला का यही सम्बन्ध है। अतः नैतिकता किसी राजनेता या प्रचारक की सनक के अनुसार कलाकार पर ऊपर से थोपी नहीं जा सकती। कलाकार के अन्तःकरण की प्रकृत अभिव्यक्ति के अनुसार उसका विकास भीतर से हो होना चाहिये। कलाकार में नैतिक महत्ता उसकी अपनी अर्जित सम्पत्ति है—अपनी कला में प्रयत्न करने पर भी वह उसे अव्यक्त नहीं रख सकता। ऊपर से ओढ़ा हुआ 'कोट' तो कृत्रिम है।

—★—

भाई बहिन के पवित्र स्नेह की झांकी—भैया-दूज

दिल्ली रविवार
१० कार्तिक सम्वत् २००८
DELHI 4th NOVEMBER

वार्षिक मूल्य	१२)
अर्धवार्षिकमूल्य	६॥)
विदेशों में	१ पौंड

साम्यवाद एक विवेचन

श्री मधुकर खेर

विश्व में इधर साम्यवादी विचार धारा का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है तथा हमारे भारतीय नेता सदैव आजकल अपने भाषणों द्वारा इस विचार धारा के प्रति सतर्क रहने की प्रेरणा देते हैं। चीन में साम्यवाद की विजय देख इस विचारधारा के समर्थक यह आशा कर रहे हैं कि भारत पर २ इसका प्रभाव पड़ कर ही रहेगा। अपने देश में बढ़ते अन्न-संकट तथा दारिद्रय के कारण ऐसे व्यक्तियों की इस आशा को बल मिल रहा है। साम्यवादी विचार धारा का विश्व के समस्त देशों पर किसी न किसी रूप में प्रभाव पड़ा है तथा हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि भारत में भी यह विचारधारा अब अपना प्रभाव दिखा रही है। आज की परिस्थिति देखते हुए यह अत्यन्त आवश्यक हो गया है कि हम भारतीय भी इस विचारधारा का विश्लेषण करें।

आधार एक ही

मार्क्सवाद पर भारतीयता की दृष्टि से विचार करते समय उचित यह होगा कि हम सर्व प्रथम देखें कि साम्यवादी विचारधारा तथा भारतीय सिद्धान्तों में समानता कहां है ? मार्क्सवाद के अनुसार व्यक्ति के वैयक्तिक हितों की अपेक्षा सामूहिक हित को अधिक महत्व दिया जाता है। यह मार्क्सवाद की एक प्रमुख विशेषता कही जाती है किन्तु यदि हम ध्यानपूर्वक विचार करें तो यह अवश्य ही स्पष्ट हो जायगा कि यह व्यवस्था भारतीय विचारधारा में आदिकाल से पाई जाती है व्यक्तिवाद समाज का सबसे बड़ा शत्रु है, इसे भारतीय विद्वानों ने मार्क्सवादी विचारधारा के प्रसारित होने के सदियों पूर्व ही समझ लिया था तथा उन्होंने आरम्भ से ही भारतीयों को व्यक्तिवाद के खोखलेपन से परे रखा। भारतीय सिद्धान्तों में व्यक्तिवाद को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी प्रकार का स्थान नहीं है। प्राचीन काल से ले कर अपने इस आधुनिक युग तक हमें ऐसे असंख्य उदाहरण मिलते हैं जो यह प्रमाणित कर सकते हैं कि भारतीयों ने सामाजिक हित के लिए पग-पग पर अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं तथा आत्मोन्नति के सिद्धान्तों तक का परित्याग किया है। हमारे इतिहास में ऐसे व्यक्ति भी हुए हैं जिन्होंने समष्टि के हित के लिए अपनी हड्डियां तक दे दीं।

विचार-विभेद कहां

मार्क्सवाद तथा भारतीय विचार धारा में सबसे बड़ी तथा प्रमुख विभिन्नता यह है कि मार्क्सवाद का दृष्टिकोण भौतिक है और भारतीय विचारधारा आध्यात्मिकता की दिव्य भावना से ओतप्रोत है। यह एक ऐसी विभिन्नता है जिसके कारण मार्क्सवाद तथा भारतीयता का परस्पर विरोध होना निश्चित ही है। मार्क्स को अपने समय में दो प्रकार के विचारक मिले थे विज्ञानवादी तथा वस्तुवादी। मार्क्स ने वस्तुवादियों से भौतिक तत्व ग्रहण किया और विज्ञानवादियों से द्वन्द्वात्मक भाव को। इन दोनों को मिला कर उन्होंने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की विचारधारा प्रसारित की। इनकी यह विचारधारा धर्म तथा आध्यात्मिकता की विरोधी है। मार्क्सवादियों के कथनानुसार 'धर्म जन समुदाय को पतन के गर्त में ले जाने वाला अफीम का नशा है। इसके विपरीत भारतीय विचारधारा में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धर्म को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हमारे महान आध्यात्मिक पथ के कारण ही भारत को प्राचीन काल में श्रेष्ठ स्थान मिला था तथा आज भी धर्म को जीवन में प्रमुख स्थान देने के कारण ही हमारी नैतिकता का स्तर बहुत ऊंचा है धर्म के नाम पर प्रचलित रूढ़ियों और अन्धविश्वासों का समर्थन अपेक्षित नहीं किन्तु धर्म में निहित नैतिकता को भारतीयों ने सदैव महत्व पूर्ण स्थान दिया है।

मार्क्सवाद रक्तपात, उलट पलट तथा संघर्ष पर विश्वास करता है। मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति के लिए भारतीय मत के अनुसार धर्म का पालन ही सर्वश्रेष्ठ साधन है। इसके विपरीत मार्क्सवाद संसार को दो भागों में विभाजित करता है और सदैव संघर्ष करने को प्रेरणा देता है। इस संघर्ष में विजयी होने के लिए मार्क्सवाद के आज के प्रमुख विचारक दार्शनिक सभी कुछ समझे जाने वाले स्टालिन ने एक अवसर पर कहा था—'हमारी सफलता का आधार ही घृणा है' इसलिए उन्होंने सदा युद्ध ही अपना उद्देश्य तथा आदर्श रखा है। जीवन में क्रांति की कभी २ आवश्यकता पड़ती है। यह हम स्वीकार करते हैं, किन्तु सदैव इन साधनों का उपयोग विश्व में शान्ति स्थापित न कर सकेगा।

संघर्ष ही नहीं कर्त्तव्यनिष्ठा भी

मार्क्सवाद अधिकारों के लिए संघर्ष करने की शिक्षा देता है, किन्तु भारतीयता कर्त्तव्यनिष्ठ बनने की प्रेरणा देती है। संघर्ष अधिकारों की प्राप्ति के लिए किया जाता है, किन्तु कर्त्तव्यनिष्ठा में अधिकारों का महत्व नहीं होता। यदि हम भारतीय इतिहास का विवेचन करें तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि भारतीयों ने सदैव कर्त्तव्य निष्ठा को ही महत्व दिया इसलिए उनमें न अधिकार की लिप्सा जाग्रत हुई, न उनके लिए व्यर्थ का रक्त पात ही हुआ।

हमारे धर्मशास्त्रों में शोषण करना अधर्म तथा पाप की कोटि में रखा गया है। भारतीयता में शोषण को नहीं किन्तु त्याग और उत्सर्ग का स्थान है। गीता में यह स्पष्ट कहा गया है, मनुष्य जो कुछ करता है तथा उससे उसे जो कुछ भी मिलता है, उस पर मनुष्य का नहीं, किन्तु जगदात्मा का अधिकार रहता है। हमारी संस्कृति में तो यहां तक स्वीकार किया गया है कि संसार में जो कुछ है मनुष्य का नहीं, किन्तु समष्टि का ही है। प्रत्येक युग में यही हमारी विचारधारा रही है।

मार्क्सवाद के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकतानुसार ग्रहण करने का अधिकार है। इसके विपरीत भारतीय विचारधारा के अनुसार मनुष्य को अपनी आवश्यकताएं कम से कम रख, समष्टि के हित में साधक होना चाहिये। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए त्याग की पृष्ठभूमि चाहिये। इसी दृष्टिकोण से भारतीय विद्वानों ने सदैव सन्तोष और त्याग का पाठ पढ़ाया है। इसके विपरीत यदि मार्क्सवाद के अनुसार चला जाये तो यही परिणाम होगा कि भोग की लिप्सा आवश्यकताओं को बढ़ाती ही जायेगी और जब तक ये आवश्यकताएं बढ़ती रहेंगी, शान्ति की प्राप्ति नहीं की जा सकती। यदि किसी की आवश्यकताओं को सीमित करने का प्रयत्न किया जावेगा तो उसका विद्रोही होना निश्चित ही है, किन्तु यदि भारतीय सिद्धांतों के अनुसार अन्तःकरण से ही त्याग की भावना लेकर चलें तो व्यक्ति की आवश्यकताएं स्वतः कम होती जायेंगी।

'जियो तथा जीने दो' 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' की भावना रही है। पिछली सदियों में भारत ने सदैव मानवता तथा विश्व शांति की भावना का समर्थन किया है किन्तु इसने अपनी राष्ट्रीयता का लोप कभी न होने दिया। आज भी जहां एक तरफ अपना देश विश्व को शान्ति के पथ पर ले जाने के लिये विश्व बन्धुत्व की भावना का समर्थन करता है वहां अपनी राष्ट्रीयता की सुरक्षा प्रगति भी सतर्क है। साम्यवादी विचारधारा के समर्थक राष्ट्रीयता को भावुकता की बातें कहते हैं। इसके विपरीत यह भी एक प्रमाणित सत्य है किसी भी वर्ग विशेष की तानाशाही किसी भी देश को शान्ति के पथ पर नहीं ले जा सकती। रूस का उदाहरण दिया

सफल साम्यवादी क्रांति के जन्मदाता लेनिन तथा रूस के वर्तमान अधिनायक श्री स्टालिन

(शेष पृष्ठ ५ पर)

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्य न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली रविवार २० कार्तिक सम्वत् २००८ [अङ्क ३७

विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
और जब तक हमारे संविधान में इसकी गारण्टी नहीं कर दी जायगी,
हम तब तक चैन नहीं लेंगे।

उम्मीदवारों का चुनाव

जैसे जैसे आम निर्वाचन समीप आते जा रहे हैं देश के विभिन्न राजनैतिक दलों का ध्यान योग्य प्रतिनिधियों का चुनाव करने तथा चुनाव की सफलता की आकांक्षा से विभिन्न राजनैतिक दलों के साथ चुनाव समझौता अथवा सिद्धान्तों की अवहेलना करके भी उचित अनुचित गठबन्धन करने की ओर विशेष रूप से आकृष्ट है। यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है कि किसी भी राजनैतिक दल को सिद्धान्तों की उपेक्षा करके किसी दल विशेष से समझौता करने की आवश्यकता संगठित शक्ति के अभाव में ही पड़ती है। इधर कुछ दिनों से देश में अकस्मात ही जिन कुछ राजनैतिक दलों का निर्माण हुआ है उनमें अधिकांशतः ऐसे हैं, जो किसी समय कांग्रेस के अन्तर्गत थे तथा जिनके नेताओं ने अपने जीवन का बहुत बड़ा भाग कांग्रेस में कार्य करके ही व्यतीत किया है। उक्त दलों द्वारा बार बार घोषित उद्देश्यों की गहराई में यदि जावें तो भी आज उनमें तथा वर्तमान दलों में कोई विशेष तात्विक तथा सैद्धान्तिक मतभेद प्रतीत नहीं होता। स्पष्ट है कि प्रकट मतभेद किन्हीं सैद्धान्तिक आधारों पर न होकर नेतृत्व की आकांक्षा से प्रेरित हो कर ही है।

देश के बहुमत के विरोध के पश्चात् भी सत्तारूढ़ दल होने के कारण कांग्रेस की संगठित शक्ति अत्यधिक आंकी जाती है। कांग्रेस के उच्चतम आदर्शों का ढोल भी पिछले कुछ दिनों में कांग्रेस मंच से अनेक बार पीटा गया। देश के प्रधानमन्त्री तथा कांग्रेस के अध्यक्ष पं० नेहरू भी एकाधिक बार इस बात की घोषणा कर चुके हैं कि कांग्रेस के टिकट पर खड़े किये जाने वाले उम्मीदवारों के चुनाव की कसौटी उनकी योग्यता, अनुभव तथा ईमानदारी होगी, कोई व्यक्तिगत तथा दलगत पक्षपात नहीं। देखने में तो यह सिद्धान्त बड़ा आकर्षक, निष्पक्षता तथा सद्भावना से ओतप्रोत प्रतीत होता है, किन्तु व्यवहारिक रूप में यह अपने चार वर्षों में किये गये कुकृत्यों के कारण स्वतः ही मृत्यु को प्राप्त कांग्रेस को पुनर्जीवित करने का प्रयास है।

अभी पिछले दिनों ही दिल्ली के म्युनिसिपल चुनावों के लिये कांग्रेस के टिकट पर जो व्यक्ति खड़े किये गये थे, उनमें से बहुत से ऐसे थे जिन्होंने अपने जीवनकाल में न कभी कांग्रेस में कार्य किया तथा न कभी कांग्रेसी सिद्धान्तों पर ही विश्वास किया। आज भी वे व्यक्ति हृदय से कांग्रेस के साथ नहीं हैं। इस प्रकार के व्यक्तियों को उनकी चारित्रिक उच्चता तथा योग्यता के आधार पर नहीं खड़ा किया, अपितु इसलिये कि आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने तथा अन्य किन्हीं कारणों से उनके जीत जाने की अधिक सम्भावना थी। वस्तुतः हुआ भी यही। विजेता व्यक्तियों की जीत के कारण कांग्रेस को अपनी विजय दुंदुभि बजाने का अवसर अवश्य मिल गया। किन्तु यह कांग्रेस की सैद्धान्तिक विजय कदापि नहीं मानी जा सकती।

इस प्रकार मुसलमानों का वोट प्राप्त करने के लिये कांग्रेस ने साम्प्रदायिकता को जो बढ़ावा दिया तथा बंगाल आदि में मुस्लिम लीगी मुसलमानों को कांग्रेस की ओर खड़े करने का निश्चय कर जो कुत्सित कार्य किया है वह सर्वविदित है। अभी हाल में ही श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ने उत्तर प्रदेश के कांग्रेस निर्वाचन बोर्ड से इसलिये त्यागपत्र दिया है कि वे यह सहन नहीं कर सके कि जिन व्यक्तियों को दल का अनुशासन भंग करने के अपराध में दण्डित किया गया था उनके साथ विशिष्ट व्यवहार कर उन्हें सन्तुष्ट करने के लिये अधिकारी व्यक्तियों तक की उपेक्षा कर दी गई थी। कांग्रेस के प्रतिनिधियों को चुनने की नीति के कारण देश में जो वातावरण निर्माण हो गया है उससे आगे के लिए देश में एक अवांछनीय परम्परा पड़ जाने की आशंका हो गई है। जनतन्त्र प्रणाली पर विश्वास कर लेने के पश्चात् देश में आगे आम चुनाव कोई नई चीज नहीं रहेगी। प्रथम निर्वाचन में ही देश में जो परम्परा स्थापित हो जावेगी, उसका प्रभाव आगे वाले चुनावों पर भी पड़ने की सम्भावना है।

व्यक्तियों के चुनाव के प्रश्न पर कांग्रेस के कर्णधारों में ही मतभेद तीव्रता से उठ रहा है तथा कहीं कहीं तो अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका है। जिसके परिणाम स्वरूप श्री राजाजी श्री मुंशी, श्री खरे आदि नेता अपने सम्मान को सुरक्षित बनाये रखने के लिये पहले ही चुनाव का अखाड़ा छोड़कर खड़े हो गये हैं—तथा बिहार के श्रीकृष्णसिंह पंजाब के गोपीचन्द भार्गव तथा उत्तर प्रदेश के श्री श्रीप्रकाश जी असन्तुष्ट होकर वापस ऐसा कर रहे हैं। चुनावों के अन्तिम परिणाम के सम्बन्ध में तो कुछ भी नहीं कहा जा सकता। किन्तु इतना अब प्रायः स्पष्ट हो गया है कि कांग्रेस का मुख्य उद्देश्य किसी प्रकार भी चुनावों में विजय प्राप्त करना मात्र रह गया है तथा सैद्धान्तिक उच्चता के बारे में वस्तुतः कोई सार नहीं रह गया है।

★

[पृष्ठ ६ का शेष]

जाता है किन्तु कौन नहीं जानता कि रूस की यह तानाशाही विध्वंसक बन विश्व शांति के लिये एक आशंका बन गई है। प्रत्यक्ष व्यवहार शीघ्रता में इस सिद्धांत की आड़ में रूस ने अपनी साम्राज्यवादी लोलुपता को कार्यान्वित करने के लिए संसार के दूसरे राष्ट्रों की राष्ट्रीयता का शोषण करने का प्रयत्न किया है।

साम्यवादी एक ऐसी काल्पनिक अवस्था का स्वप्न देखते हैं जब न सत्ता ही रहेगी और न शासन के साधन समाज के ही अधिकार में रहेंगे। इसलिए राज्यसत्ता की आवश्यकता ही नहीं रहेगी क्योंकि उसके नियन्त्रण के लिए सत्ता की आवश्यता नहीं रह जावेगी।

समाज रचना का आधार

यदि हम यह मान लें कि ऐसे समाज की स्थापना हो जाती तथा संघर्ष का कारण नहीं रहता किन्तु फिर प्रश्न उठता है कि इस समाज का आधार क्या रहेगा। राज्यसत्ता शून्य समाज में ऐसी कौन सी प्रेरणा होगी जिसके कारण मनुष्य संघर्ष करेगा? किस शिक्षा या अधिष्ठान पर ऐसा समाज आधारित होगा ये स्वाभाविक प्रश्न है। सत्य तो यह है कि मार्क्स का वाद ही द्वन्द्वात्मक है और इसीलिये वह शान्ति का विधायक नहीं हो सकता। यदि मार्क्स के परम लक्ष्य राजहीन समाज में भी द्वन्द्व से पीछा नहीं छूटता तो इस लक्ष्य से लाभ ही क्या और यदि राज्य हीन समाज में द्वन्द्व नहीं रहता तो फिर द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद भी असिद्ध हो जाता है। मार्क्स की विचारधारा के विपरीत हमें अपनी संस्कृति में ऐसी व्यवस्था का वास्तविक चित्र मिलता है।

खोखला ढांचा

साम्यवाद का ढांचा यथार्थ में ऊपर से आकर्षक तथा चमकीला होने पर भी भीतर से निरा खोखला है इसलिये उसे अभी तक सफलता नहीं मिल सकी है। भारतीयता को पानी पी पीकर कोसने वाले कथित प्रगतिवादी कुछ भी कहें किन्तु हमारी ये व्यवस्थायें मार्क्सवाद से कहीं यथार्थ तथा वास्तविक हैं। उनका आर्थिक समानता का सिद्धान्त छलावा मात्र है, उसे अभी तक कहीं सराहनीय या अनुसरणीय सफलता नहीं मिली है। इसके विपरीत समाज रचना के विषय में भारतीयों का एक ही लक्ष्य रहा है—

"सर्वेऽपि सुखिन सन्तु
सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चित् दुःखभाग भवेत्।"

इसी तरह मार्क्सवाद में असहिष्णुता भरी है किन्तु प्रजातन्त्रात्मक होने के कारण भारतीयता सहिष्णुता पर विश्वास करती है। सहिष्णुता ही जनतन्त्र की सफलता का आधार है।

इस तरह हम देखते हैं कि मार्क्सवाद की तुलना में हमारे भारतीय सिद्धांत कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं। हमारी विचारधारा में आध्यात्मिकता एवं भौतिकता का, कर्तव्य और अधिकार का तथा व्यक्ति और समाज की उपयुक्त व्यवस्था है। भारत ही नहीं किन्तु सम्पूर्ण संसार इस व्यवहारवादी सिद्धान्त को अपना कर सुख तथा शान्ति की प्राप्ति कर सकता है।

लेखकों से—

लेखकों से नम्र निवेदन है कि वह जो रचना भेजें, उसकी एक प्रति-लिपि अपने पास अवश्य रख लें। प्राप्ति के अनन्तर कार्यालय से केवल उसकी स्वीकृति की ही सूचना (बारह दिन के भीतर) भेजी जावेगी। हमारी स्वीकृति न मिलने पर रचना अस्वीकृत समझें।

भालू

लेखक—
श्री विराज

शायद ही ऐसा कोई पशु हो जिसके विषय में कुछ विचित्र किंवदन्तियां लोगों में न फैली हुई हों। मोरों, शेरों और भेड़ियों के बारे में ऐसी किंवदन्तियां ढेरों हैं। कश्मीर में पहाड़ी रास्ते पर यात्रा करते हुये पहाड़ी लोगों से भालू के विषय में विचित्र किंवदन्ती सुनी। किंवदन्ती इसलिये कहता हूँ कि सुनाने वालों ने यद्यपि बहुत रस लेते हुए सुनाया पर बात को किसी भी तरह प्रामाणिक मानने को मन नहीं होता।

पहली बात तो उन्होंने यह बताई कि जब मादा भालू शिकार प्राप्त न होने से बहुत भूखी होती है तो वह किसी रास्ते के पास बैठ कर रोने लगती है। यह रोने की आवाज बिलकुल स्त्री की आवाज से मिलती जुलती होती है। जब कोई अभागा व्यक्ति उसे किसी स्त्री की आवाज समझ कर पास पहुँचता है तो वह उस पर टूट पड़ती है और मार कर खा जाती है।

छः महीने सोता है

भालू उन प्राणियों में से है जो साल में छः महीने सोते हैं। इसे दीर्घ निद्रा या शीतनिद्रा कहा जाता है। शीतनिद्रा इसलिए कि यह प्रायः शीत ऋतु में ली जाती है। शीत ऋतु में इस प्रकार लम्बे काल के लिये सो जाना मेंढकों, कछुओं और ध्रुव प्रदेश की लोमड़ियों के स्वभाव में शामिल है। चमगीदड़ भी सर्दियों में लम्बी नींद लेते हैं परन्तु मांसभोजी पशुओं में केवल भालू ही ऐसा है जो दीर्घनिद्रा लेता है।

यह दीर्घनिद्रा अपने आप में कितनी आश्चर्यजनक वस्तु है। जब सर्दियां प्रारम्भ होने लगती हैं तब भालू अन्धाधुन्ध भोजन करते हैं, जिससे वे खूब मोटे ताजे हो जायें और फिर सर्दी आने पर वे कोई सुरक्षित स्थान ढूंढते हैं, जहां नींद आने में कोई बाधा न पड़े। यह सुरक्षित स्थान प्रायः किसी पेड़ का खोखल या कोई गुफा होती है। इस जगह जा कर वे निश्चिन्त भाव से सो जाते हैं और छः महीने बिना कुछ खाये बिना कुछ पिये सोते रहते हैं।

दीर्घनिद्रा प्रारम्भ करने से पहिले वे अपने शरीर में इतनी चर्बी जमा कर लेते हैं जो छः महीने तक बिना भोजन के भी उनके जीवन को बनाये रखने में समर्थ रहे। घूमने फिरने की अपेक्षा सुप्त अवस्था में शरीर की शक्ति वैसे ही बहुत कम व्यय होती है, अतः उनका गुजारा प्रायः उस जमा की हुई चर्बी से चल जाता है। पर ध्रुव प्रदेश का हिमभालू इस प्रकार अपने आपको पर्याप्त मोटा नहीं कर पाता, इसलिये वह सोने से पहले अपने बिल में काफी मांस इकट्ठा कर रखता है और बीच-बीच में जब कभी उसकी नींद टूटती है तो उसी मांस में से कुछ खाकर अपनी भूख मिटा लेता है। और क्योंकि इन दिनों ध्रुव प्रदेश में सब ओर बर्फ ही बर्फ होती है अतः मांस सड़ता भी नहीं है।

ध्रुव प्रदेश की मादा भालू बर्फ में छोटा-सा गड्ढा बना कर उसी में लेट रहती है और सो जाती है। सर्दियों भर उनके ऊपर बर्फ पड़ती रहती है। कई बार उसके ऊपर बर्फ की आठ-आठ दस-दस फीट ऊंची मोटी तह जम जाती है। उस समय यदि कभी वह उसमें से निकलना भी चाहती तो भी निकल नहीं सकती। परन्तु उस गहरी बर्फ में भी उस के श्वास प्रश्वास के लिये एक छेद बना रहता है। भालू के श्वास की उष्णता से बर्फ का कुछ अंश पिघलता रहता है और उसी से वह छेद बन जाता है और जब तक भालू नीचे सांस ले रहा हो वह बन्द ही नहीं होता क्योंकि सीधा अर्थ है भालू का दम घुट कर मर जाना। वसन्त में उत्तरायण सूर्य की उष्णता से बर्फ जब पिघलती है तब मादा भालू बर्फ की सेज पर से उठती है। तब उन के साथ प्रायः एक या दो नवजात शिशु भी होते हैं।

दीर्घनिद्रा से तत्काल उठे हुए भालू बहुत खतरनाक होते हैं क्योंकि उस समय वे बहुत भूखे होते हैं। उस समय आदमी, घोड़ा, खरगोश जो कुछ भी उनके हाथ लग जाय उसी को मार कर वे चट कर जाते हैं। इतना ही नहीं वसन्त के दिनों में फूलों से मधु इकट्ठा करके मधुमक्खियां जो अपने छत्ते बनाती हैं उनके पास पहुँच कर भालू उनका शहद भी चाट जाते हैं। मधुमक्खियां डंक भालू के लम्बे बालों में कोई असर नहीं कर पाते।

पेड़ पर चढ़ता है

भालू पेड़ पर चढ़ सकता है परन्तु इतने से यह कल्पना कर लेना गलत होगी कि वह पेड़ पर बन्दर की तरह या लंगूर की तरह कूदता फांदता चढ़ सकता होगा। और लोगों में प्रचलित यह धारणा भी गलत है कि भालू पेड़ पर उलटा होकर चढ़ता है। वैसे उलटा होकर चढ़ने का यह भी अर्थ हो सकता है कि वह वृक्ष की शाखा पर नीचे की ओर लटकता हुआ आगे बढ़ता हो, जैसे कि शहद के छत्ते नीचे की ओर को लटके होते हैं। परन्तु इन सब कल्पनाओं की कोई आवश्यकता नहीं है। भालू पेड़ पर सीधा ही चढ़ता है। बहुत कुछ बिल्ली या चीते की तरह। बिलकुल सीधे खड़े हुए और ऊंचे वृक्षों पर चढ़ना उसके लिये कठिन है। पर ऐसे वृक्षों पर जिनकी शाखाएं पर्याप्त होती हैं। वह सरलतापूर्वक चढ़ जाता है। वृक्षों पर चढ़ कर भालू फल और शहद खाता है। सरदियों के दिनों में पहाड़ों की तराइयों में भालू जंगली बेर खाते हैं।

पर भालू शाकाहारी होने के साथ साथ मांसाहारी भी है। आवश्यकता पड़ने पर आदमी घोड़ा या हिरन जो कुछ भी हाथ आ जाय वह उसी से अपना पेट भर लेता है। विशेषकर जिन प्रदेशों में वनस्पतियां सुलभ नहीं होतीं, वहां के भालुओं को मांस पर ही जीवित रहना होता है। इसके अतिरिक्त अनेक बार भालू उस समय भी मनुष्यों पर घातक आक्रमण करता है जब उसे खाने की कोई इच्छा नहीं होती।

शक्तिशाली जबड़े

वैसे तो शेर की तरह भालू के भी लम्बे और मजबूत नाखून होते हैं पर उनकी थाप में शेर की सी प्रचण्ड शक्ति नहीं होती। भालू की मुख्य शक्ति उसके जबड़े में है। इन जबड़ों के द्वारा वह आदमी की खोपड़ी की हड्डी को भी सरलता एवं कुचल सकता है। एक बार नागपुर के जंगलों में एक घसियारे पर भालू ने आक्रमण किया था। वह व्यक्ति बड़ी दयनीय अवस्था में अस्पताल में लाया गया था। उसके सिर की हड्डियां इस बुरी तरह कुचली हुई थीं कि सर के अन्दर का दिमाग साफ दिखाई पड़ता था। सम्भव है कि चिकित्साशास्त्र के ज्ञाता यह समझें कि ऐसी दशा में रोगी का जीवित रह सकना असम्भव है। पर फिर उसे चमत्कार समझना चाहिये कि इस दशा में वह रोगी अस्पताल में गया और यह जानते हुए भी कि रोगी बच नहीं सकेगा उस की चिकित्सा की गई और लगभग वह २४ घन्टे जीवित भी रहा। पहले ऐसा पता चला था कि भालू की थाप की मार से सिर की हड्डियां टूट गई हैं। वैसे तो यह बात विस्मयजनक थी क्योंकि आदमी के सिर की हड्डियां काफी मजबूत होती हैं और बिना डंडे या हथौड़े के आघात किये उन्हें तोड़ना कठिन काम है। बाद में मालूम हुआ कि यह भालू के जबड़ों का करतब था। २४ घन्टे के बाद उस रोगी की दशा एक दम बिगड़ गई। उसे एक प्रकार का उन्माद हो गया और उसने अपना सिर चारपाई पर पटक २ कर आत्महत्या भी ही कर ली।

मनुष्यों से मुठभेड़

मनुष्यों से भालुओं की मुठभेड़ अक्सर होती रहती है। ध्रुव प्रदेश के भालुओं के विषय में सुना जाता है कि वे बहुत खूंखार होते हैं और यदि मनुष्य का राइफल का निशाना चूक जाय तो फिर उससे बचने का और कोई उपाय नहीं होता। पर अपने देश के हिम प्रदेशीय भालुओं की मनुष्यों से हुई अनेक मुठभेड़ों के दिलचस्प वर्णन हमें सुनने को मिले हैं। अनेक बार आक्रान्त होने के बाद भी आदमी बच गये हैं और कई बार तो उन्होंने भालू को मार तक डाला है।

एक बार की घटना का मुझे पता है। जंगल में कुछ आदमी घास खोदने के लिए गये थे। घास खोदते हुए प्रायः वे लोग बिखर कर थोड़ी-थोड़ी दूर पर बैठ जाते हैं। ऐसे समय एक आदमी पर भालू ने आक्रमण किया। आदमी के पास खुरपा था। सहायता के लिए चिल्लाते हुए उस आदमी ने भी भालू पर खुरपे से प्रत्याक्रमण कर दिया। भालू के बाल लम्बे होते हैं और खाल मोटी होती है। पर यदि खुरपा तान कर जोर से मारा जाय तो बाल और खाल दोनों को पार करके खुरपा अन्दर को मार कर देता है। आघात से क्रुद्ध होकर भालू ने आदमी को बुरी तरह घायल कर दिया। पर तब तक और घास खोदने वाले भी आ पहुँचे और उस घायल व्यक्ति को देख कर वे भी भालू पर टूट पड़े। भालू को उन्होंने वहीं समाप्त कर दिया। परन्तु इस प्रकार के संकट में अपने मस्तिष्क को सचेत रख सकना साधारण बात नहीं है। सामान्यतया तो भालू को देख कर आदमी के होश हवास जाते रहते हैं। भय के मारे गले से आवाज तक नहीं निकलती। इन निश्चेष्ट प्राणी को मारते भालू को कितनी देर लग सकती है।

बाजीगरों के साथ

वस्तुतः अब हम शेरों और भालुओं को सरकसों चिड़ियाघरों और बाजीगरों

[शेष पृष्ठ ६ पर]

ध्येय और बाधाएं

श्री शिवेन्द्रकुमार शर्मा "परिवर्तन"

हलाहल पी कर भी जग में,—
शूलों से जीता आया हूँ!......

सामने सुर-बाला आईं,
सुरा के घट भर कर लाईं,
झूम-झूम करती मुस्काईं,
किन्तु वह मन को कब भाईं?
जिन्दगी के संघर्षों की—
ज्वाला में जीता आया हूँ!
हलाहल पी कर भी जग में...!

रूप ने मंजूषा खोली,
हृदय ने अभिलाषा तोली,
किन्तु मति थी मेरी भोली,
भरी कब नयनों की झोली!
कोष पा कर भी यौवन का—
हाथ ले, रीता—आया हूँ!
हलाहल पी कर भी जग में...!

क्रान्ति भड़काने भी आई,
चेतना फिर भी अपनाई,
विषमता बरछी बन छाई,
पर, न मति मेरी रुक पाई—
पथिक पथ पर ले-उर की ज्योति,
तिमिर सब जीता...आया हूँ...!

हलाहल पी कर भी जग में—
शूलों से जीता आया हूँ!!

दीन-बन्धु

अनु० श्री सुधीन्द्र

हैं जहां अधम से अधम और निर्धन से निर्धन हैं असहाय!
—— के पीछे — सब के नीचे,
हैं वहां तुम्हारे पुण्य चरण!

जब मैं प्रणाम करता झुक कर,
रह जाता वह कहीं रुक कर,
पाता न उतर इतने नीचे अपना अपमान समझ उस क्षण!
सब के पीछे — सब के नीचे,
हैं वहां तुम्हारे पुण्य चरण!

यह अहंकार मेरा उद्धत,
पाता न पहुँच हो कर अवनत,
करते तुम भूषण-हीन जहां पर दीन-दरिद्र बने विचरण!
सब के पीछे — सब के नीचे,
हैं वहां तुम्हारे पुण्य चरण!

तुम जहां संगहीनों के घर,
रहते हो प्रतिपल निशि वासर,
उस स्थल पर पल भर भी न कभी पाता है रह मेरा यह मन!
सब के पीछे — सब के नीचे,
हैं वहां तुम्हारे पुण्य चरण!

(कवीन्द्र रवीन्द्र का एक गीत)

उठ खड़ा है देश मेरा

श्री चन्द्रकान्त सरदाना 'कमल'

युगों की नींद तज कर, उठ खड़ा है देश मेरा।
अंधेरा दूर हो कर आ गया उज्ज्वल सवेरा॥
चहक उठे युगों के मौन मौरव।
हवा में भर गया आल्हाद का स्वर॥
उमंगें खिल गई सी मन चली हैं।
मनोरथ की लताएं फिर फली हैं॥
घटा यह उठ रही कैसी क्षितिज में।
दिखाती आंख क्यों यह बिजलियां हैं॥
हमें ललकारता यह कौन दानव।
दिखा दे आज अपनी शक्ति मानव॥
खड़ा है देश का नवयुवक आगे।
अरे हट राह से तू ओ अभागे॥
जो अब तक सो रहे थे आज जागे।
निराशा क्यों न यूं फिर दूर भागे॥
जिधर देखो उधर मेला लगा है।
सभी का प्रेम से मानस पगा है॥
लहर आनन्द की सब ओर छाई।
बधाई हो! बधाई हो! बधाई॥

★

चांदनी का चांद

★ श्री कमलाकर साहित्यरत्न

चांदनी में मुसकराता चांद मेरे पास!
जग रहा है रूप सोई मौन आधी रात,
स्वप्न में कँपती अधर पर कौन मीठी बात?
मुक्त बांहों में बंधे से प्राण औ' विश्वास,
चांदनी में मुस्कराता चांद मेरे पास!
नींद में डूबी दिशाएं ऊंघते तारे,
सो रहे महि के शिथिल अवयव थके हारे,
ऊंघता गिरता मदिर चुप बढ़ रहा वातास,
चांदनी में मुस्कराता चांद मेरे पास!
वो प्रतीची के अधर पर झुका चन्द्रानन,
छांह पहनी तम किशोरी का जगा यौवन,
सोचता क्या ओठ पर अंगुली धरे आकाश,
चांदनी में मुस्कराता चांद मेरे पास!

★

(पृष्ठ ५ का शेष)

के साथ देखते हैं तो उनके विषय से हमारी जो धारणा बनती है वह उससे बिलकुल भिन्न होती है जो हमें जंगल में देख कर बनती हैं। सरकसों चिड़िया-घरों व और बाजीगरों के ये जानवर तो मानों चमड़े के चलते फिरते बड़े बड़े खिलौने भर हैं, जिनसे हमारा मनोरंजन होता है। इन्हें हम देखते हैं आश्चर्य करते हैं और खुश होते हैं। परन्तु जंगल के शेर और भालू आश्चर्य का कुतूहल का या आनन्द का भाव मन में उत्पन्न नहीं करते। इन पशुओं की अपने आस पास उपस्थिति का ज्ञान या केवल सम्भावना मात्र मन में केवल एक भाव उत्पन्न करते हैं और वह है भयंकर आतंक। जंगल में जब शेर दहाड़ता है तो हम हंसते हैं पर ऐसे आदमी दुनिया में बहुत कम हैं जो जंगल में शेर की दहाड़ सुनकर हंस सकें। इसी तरह बाजीगर के भालू से कुश्ती जो जिस प्रकार का खिलवाड़ कर लेते हैं जंगल में वैसा कर सकना बड़े से बड़े पहलवान के लिये भी संभव नहीं है। बाजीगर के भालू के दुर्बल होने का कारण यह है कि ये भालू बचपन में ही पकड़ लिये जाते हैं और अपर्याप्त आहार पर पाले जाते हैं।

भालू संसार के सब भागों में पाया जाता है। यूरोप, अफ्रीका, एशिया और अमेरिका चारों भूखण्डों में इसकी विभिन्न जातियां पाई जाती हैं। अब से हजारों वर्ष पूर्व एक भालू होता था जिसे गुफाओं का भालू नाम दिया गया है। वह भालू आजकल पाये जाने वाले भालुओं की अपेक्षा बहुत बड़ा और अधिक शक्तिशाली होता था। जब हम यह विचार करते हैं कि उस समय के मनुष्यों के पास आजकल की तरह बारूदी अस्त्रशस्त्र नहीं होते थे तो हमारा आश्चर्य और भी अधिक बढ़ जाता है क्योंकि इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि वे लोग अपने अपरिष्कृत शस्त्रों से ही इस जैसों का शिकार किया करते थे।

साहित्य-रत्न परीक्षोपयोगी लेख—

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

श्री जानकीवल्लभ

हिन्दी साहित्य के उपन्यास क्षेत्र में श्री वृन्दावनलाल वर्मा का नाम उल्लेखनीय है। गहरे अनुसन्धान के परिणामस्वरूप उनके ऐतिहासिक उपन्यासों ने जहां हिन्दी भाषा का मस्तक ऊंचा किया है, वहां परतन्त्र राष्ट्र की प्रसुप्त आत्मा को जगाने में भी योग दिया है। 'झांसी की रानी—लक्ष्मी बाई' वर्मा जी की एक उत्कृष्ट रचना है। झांसी के—झांसी के ही नहीं, सम्पूर्ण भारतवर्ष के इतिहास की इस यशोगाथा को उपन्यास के कलेवर में सजाने का लेखक का प्रयत्न सराहनीय है।

रानी का व्यक्तित्व

झांसी की रानी के व्यक्तित्व के विषय में इतिहासकारों के अनेक मत हैं। कुछ इतिहासकारों का मत है कि रानी को विवश हो कर अंग्रेजों का सामना करना पड़ा। इस मत की पुष्टि करने वाले इतिहासकार अधिकतर अंग्रेज या अंग्रेजियत में रंगे हुए हिन्दुस्तानी हैं। इसके विपरीत कुछ भारतीय लेखकों ने ऐतिहासिक अनुसन्धान की भट्टी में डाल कर रानी के व्यक्तित्व को परखा है और उसे स्वतन्त्रता की साक्षात् देवी पाया है। अंग्रेज इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि भारत की इस उर्वरा मिट्टी में यदि रानी की सच्ची शौर्य गाथा कायम रही तो न मालूम कितनी झांसी की रानियां उत्पन्न हो जाएंगी और कितने अंग्रेजी साम्राज्य फूंक से उड़ा दिए जाएंगे। इस कारण अंग्रेज इतिहासकारों ने झांसी के इस रक्तिम इतिहास के अन्तराल में निहित जीवन दायिनी शक्ति को, खोये हुए राज्य और सम्पत्ति के लिए लड़ने वाली एक साधारण महिला सिद्ध किया है। रानी के उत्कट देशाभिमान को, उसके राष्ट्रीय दृष्टिकोण को, उसके गीता के कर्मवाद को और इन सब भावनाओं में सने हुए रणचण्डी के उस तेज को, इन राज्य लोलुप लेखकों ने असत्य की धूलि से ढकने का प्रयत्न किया। परन्तु समय ने पलटा खाया। देश जागृति की ओर अभिमुख हुआ। इतिहासकारों ने भी अपनी रानी को सच्चे रूप में पहिचाना।

इतिहास पर आधारित

'झांसी की रानी—लक्ष्मी बाई' की लगभग प्रत्येक घटना ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। पुस्तक की भूमिका में वर्मा जी लिखते हैं, 'मैंने निश्चय किया कि उपन्यास लिखूंगा, ऐसा जो इतिहास के रत्ती रत्ती से सम्मत हो और उसके सन्दर्भ में हो। इतिहास के कंकाल में मांस और रक्त का संचार करने के लिए मुझ को उपन्यास ही अच्छा साधन प्रतीत हुआ।' लेखक के उक्त कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी यह उपन्यास की रोचकता से परिप्लावित होते हुए भी पूर्णतया इतिहास पर आधारित है। रानी लक्ष्मी बाई सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य समर की मुख्य धुरी थी। इस कारण रानी के जीवन का वर्णन करने के साथ ही साथ लेखक को तत्कालीन परिस्थिति और भारतीय स्वातन्त्र्य समर की गतिविधि का भी यथा स्थान उल्लेख करना पड़ा है। स्वातन्त्र्य समर के साथ रानी और रानी के साथ स्वातन्त्र्य समर इतना एक-रूप हो चुका है कि एक के बिना दूसरे का अस्तित्व लंगड़ा और अधूरा रह जाएगा। इस दृष्टि से वर्मा जी की प्रस्तुत कृति भारतीय स्वातन्त्र्य समर के इतिहास लेखकों के लिए एक प्रकाश स्तम्भ का कार्य कर सकती है।

कथावस्तु

कथावस्तु का निवाह करने में लेखक को पूर्ण सफलता मिली है। सभी घटनाएं प्रासंगिक हैं और उनमें पात्रों के मनोविज्ञान का विश्लेषण किया गया है। उत्थान और पतन का चक्रों में अनुभव किए जाने वाले मानसिक संघर्ष को चित्रण करने में लेखक को पर्याप्त सफलता मिली है। उपन्यास को उठा कर आप आदि से अन्त तक पढ़ जाइए, कहीं भी कथा के प्रवाह में शिथिलता नहीं मिलेगी। कथोपकथन की पात्रानुकूलता ने तो इनमें जीवन ही डाल दिया है। 'हमारी कछू लैबे खों आय, तब पसुरिया ढोर के घर देखों, पै बैना का इन गोरन खों जानती नइयां? झांसी कौ गटकन चाउत,' झांसी की अपढ़ महिला झलकारी के इन शब्दों में कितनी तेजस्विता है। इस प्रकार के संवादों द्वारा लेखक ने झांसी की साधारण जनता के स्वातन्त्र्य प्रेम और उसका स्वाथ कट मरन की भावना का दिग्दर्शन कराया है। उपन्यास के सभी कथोपकथन परिस्थितियों तथा पात्रों के बौद्धिक विकास पर अवलम्बित हैं। वे सार्थक हैं सजीव हैं।

पात्र

पात्रों का परिचय कराते समय लेखक ने पूरा सतुलन और क्रम का आश्रय लिया है। देश काल और परिस्थिति का पूरा ध्यान रखा गया है। कथानक में कहीं भी अधिक घुमाव फिराव या पेचीदापन नहीं है। घटनाओं को सगठित करता हुआ लेखक सीधा अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता है।

प्रस्तुत उपन्यास का प्रत्येक पात्र अपने चरित्र का व्याख्याकार स्वयं है। उसके जीवन में निहित सामान्य और असामान्य गुणों पर प्रकाश डालने के लिए लेखक ने इस प्रकार की घटनाएं जुटा दी हैं जिनका सहारा लेकर प्रत्येक पात्र अपने चरित्र की छाप पाठक के हृदय पर स्वयं ही अंकित करता चला जाता है। ऐसे स्थल बहुत कम हैं जहां लेखक को पात्रों का मानसिक संघर्ष दिखाने के लिए अपनी ओर से कुछ कहना पड़े।

चरित्र-चित्रण

झांसी की रानी के चरित्र चित्रण में मानों लेखक ने अपनी लेखनी की सम्पूर्ण साधना ही पुञ्जीभूत करके जुटा डाली हो। जिस प्रकार एक अनन्य भक्त अपने आराध्यदेव की पूजा में अपना सर्वस्व लगा देता है उसी प्रकार वर्मा जी ने भी अपनी आराध्यदेवी 'लक्ष्मी' की अर्चा में अपनी कला को पूर्ण रूप से अर्पित कर दिया है। नारी सुलभ उदारता और आत्मीयता से भरे अन्तःकरण में कठोर संयम और अनुशासित कर्तव्यपरायणता के दर्शन कराने में लेखक को पूर्ण सफलता मिली है।

श्री वृन्दावनलाल वर्मा

भाषा एवं शैली

भाषा और शैली की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास अच्छा बन पड़ा है। भाषा को सुबोध और प्रसादमय बनाने के लिए मुहावरों का समुचित प्रयोग किया गया है। उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा के चमत्कार ने उपन्यास की शैली को अधिक रोचक और आकर्षक बना दिया है। वाक्य छोटे और सुघड़ हैं। उदाहरण के लिए निम्न पंक्तियों को देखिए —

'मेघ छाए हुए थे। हवा बन्द थी। पानी रिमझिम २ बरस रहे थे। सुन्दर कड़ी रात के हवादार कमरे में रानी आंखें मूंदे हुए मीराबाई का भजन सुन रही थी। सुन्दर जमुहा रही थी। सुन्दर बैठे २ सावधानी के साथ निद्रा मग्न हो गई थी। काशी सचेत थी। भजन की समाप्ति पर रानी का ध्यान टूटा। सुन्दर की जमुहाई हटी। परन्तु सुन्दर की निद्रा समाधि भंग न हुई।'

अब जरा उपमा और उत्प्रेक्षा की छटा देखिए —

'रानी के घोड़े का केवल सिर ऊपर, शेष भाग पानी और झाग में। रानी की कमर तक झाग, पानी और धार के साथ बहकर आया हुआ झाड़ झंखाड़। धार की बूंदों की झड़ी उचट २ कर आंखों में, बालों पर और सारे शरीर पर बरस रही थीं। जब कभी सिपाहियों और सहेलियों को उत्साह देना होता तो हंस २ कर शाबाशी देतीं—मानो प्रचण्ड बेतवा की मलिन अंजलि में मुक्ता बरसा दिए हों। रानी फिर हंसी। बगुलों की सफेदी से रानी के दांतों ने तुरन्त होड़ लगा दी।'

लेखक की भाषा में भाववहन की कितनी सामर्थ्य है इसका अनुमान नीचे के उद्धरण से लग सकता है —

'महल की चौखट पर बैठकर वह (रानी) रोयी। लक्ष्मीबाई रोई। वह जिसकी आंखों ने आंसुओं से कभी परिचय भी न किया था! वह जिसका वक्षस्थल वज्र का और हृदय फौलाद के

(शेष पृष्ठ ११ पर)

पाप या पुण्य ?

पार्लियामेंट का चुनाव हो रहा था। हमारे इलाके से लाला दीनदयाल और डाक्टर श्यामलाल खड़े हुए थे। दीनदयाल मेरे मित्र थे। हमने कालिज में चार वर्ष इकट्ठे गुजारे थे। अब वे रुपये के भारी व्यापारी थे और नगर के प्रसिद्ध लखपति वह बड़े मिलनसार थे। परन्तु उनका धन ब्लैक की कमाई थी। सिवाय पूंजीपति होने के उनमें पार्लियामेंट के सदस्य बनने की और कोई लियाकत न थी। इन चन्द दिनों से उन्होंने मन्दिर जाना, दान पुण्य करना तथा विभिन्न संस्थाओं को दान देना आरम्भ कर दिया था। दूसरी ओर श्यामलाल के दिल में सेवा का भाव था और पार्लियामेंट के काम का पूरा ज्ञान। उनको मैं जानता नहीं था पर उनकी सेवायें मुझ से छिपी हुई न थीं। दीनदयाल एक दिन घर आये, कहने लगे, मैं आप जैसे मित्रों के भरोसे पर खड़ा हुआ हूं, आपकी जान पहिचान बहुत है, हां आपका सेवादल बहुत अच्छा काम कर रहा है, मैंने उसके लिये पांच हजार रुपये अगले साल के खर्चे में रख लिये हैं। मैं सोचता था कि एक ओर अपने सेवादल के लिये पांच हजार रुपये और पुरानी मित्रता दूसरी ओर एक व्यक्ति की निष्काम सेवायें और योग्यता। दिल में बड़ी कशमकश थी। पांच हजार से हम लोगों की बड़ी सेवा कर सकते हैं·····तुम वोट बेचना चाहते हो? ··· ···दीनदयाल तुम्हारा मित्र है··· · तो क्या आत्मा की आवाज कोई चीज नहीं ? इस तरह के प्रश्न और उत्तर मेरे दिमाग में चक्कर लगा रहे थे। चुनाव का दिन आया। मेरा दिल धड़क रहा था, हाथों में कम्पन था और सांस में तेजी। मैंने हौसला किया और वोट श्यामलाल के डिब्बे में डाल दिया। दीनदयाल मुझ से बड़े नाराज होगये और सेवादल के कुछ अधिकारी भी। मैं कई दिन तक सोचता रहा कि सेवादल का ५००० रुपये का नुकसान करके और दीनदयाल की मित्रता की परवाह न करते हुए श्यामलाल को वोट देकर मैंने पुण्य किया या पाप ?

इसी प्रकार का प्रश्न मेरे हृदय में एक दिन और उठा—गुप्ता साहब ने कहा आप कार ले जा सकते हैं परन्तु पौने छै बजे तक वापस आना होगा, मैंने ६ बजे के शो में सीट बुक कराई हुई हैं। मैं आ जाऊंगा। यह कह कर मैं कार के अन्दर बैठ गया और चन्द मिन्टों में ही जलसे में पहुंच गया। हमारी मीटिंग ठीक पांच बजे नियत समय पर समाप्त हो गयी। वापिस आने के लिये कार में बैठा ही था कि "हाय" की आवाज आयी मैंने देखा एक आदमी दिल के दौरे के कारण दूर लेटा हुआ 'हाय हाय' कर रहा था। आपका घर कहां है? "लोधी रोड" मैं सोच में पड़ गया। पौने छै बजे वापसी का वायदा और एक आदमी इतनी मुसीबत में "अच्छा देखा जायगा" मैंने आराम से बीमार को उठाकर कार की पिछली सीट पर लिटा दिया और पूरे वेग से लोधी रोड को चल दिया। मुझे पौने छै तो लोधी रोड पर ही बज गये। घर पहुंचा तो गुप्ता साहब गुस्से से लाल हो रहे थे। मैंने क्षमा मांगी। "एक आदमी की जिन्दगी का सवाल था" "मैंने कार आपको योग आश्रम जाने को दी थी बीमार ढोने के लिये नहीं।" मैं लज्जित था क्योंकि मैंने गुनाह किया था लेकिन फिर भी एक सूक्ष्म-सी लहर उठती थी और ऐसा मालूम होता था कि वह कह रही है कि तुमने अपना मानवधर्म पूरा किया है तुम दोषी नहीं हो। मैं बड़ी देर तक सोचता रहा पराई कार से बिना आज्ञा, बीमार की सेवा करके मैंने पुण्य किया या पाप ?

—श्री आत्माराम बेदकी, नई दिल्ली

●

ठीक पौने ग्यारह बजे

मुझे याद है कि उस दिन मैं नागपुर में था। अचानक माता जी की रुग्णावस्था का तार मिला। मैं ग्रांड ट्रंक ऐक्सप्रेस से भोपाल आया। मुझे रतलाम जाना था। इसलिए भोपाल में उज्जैन के लिए गाड़ी बदली। गाड़ी में मैं कोई शाम के साढ़े सात बजे बैठा था। मुझे झपकी आ गई और मैं सो गया। स्वप्न में क्या देखता हूं कि माता जी के साथ सायंकाल को हवाखोरी पर जा रहा हूं। थोड़ी दूर जाने के पश्चात् सड़क के किनारे मुझे एक गर्भवती स्त्री मिली जिसको पीड़ा हो रही थी। मुझ से न रहा गया। मैं डाक्टर को बुलाने के लिये ज्यों ही लौटने को हुआ कि मेरी आंख खुल गई। देखता हूं, गाड़ी धड़धड़ाती चली जा रही है। मैंने घड़ी देखी, उस में पौने ११ बजे थे।

दूसरे दिन तीसरे पहर जब मैं घर पहुंचा तब ज्ञात हुआ कि गत रात्रि को ठीक पौने ग्यारह बजे ही माताजी ने अंतिम सांस छोड़ी थी।

—कृष्णस्वरूप सक्सेना, रतलाम

अपने पाठकों के विशेष आग्रह पर हमने 'मुझे याद है कि ·····' नाम से एक विशेष मनरंजक स्तम्भ प्रारम्भ किया है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की निजी जीवन से सम्बन्धित यथार्थ तथा सच्ची घटनाएं प्रकाशित की जा सकेंगी। हमारा अपने पाठकों से अनुरोध है कि वे अपने जीवन से सम्बन्धित घटनायें हमें भेजते रहें।

—सम्पादक]

नोट चूहे के बिल में

प्रातःकाल से ही सारे घर भर में हलचल सी मची हुई थी। कारण यह था कि पिताजी की जेब में से दस रुपये का एक नोट गायब हो गया था। घर के व्यक्तियों के अतिरिक्त और कोई तो आया नहीं, फिर किस पर सन्देह किया जाय। घर का एक-एक कोना खोज मारा पर नोट नहीं मिला। उन दिनों मेरे घर में मेरे दूर के रिश्ते का भाई जिसका नाम श्याम था, आया हुआ था। वह मुझसे कई वर्ष छोटा था। वह काफी समय से घर के सदस्य की भांति ही रह रहा था। इसलिए उस पर सहसा सन्देह नहीं किया जा सकता था। किन्तु फिर भी मेरे हृदय में न मालूम क्यों यह विचार आया कि सम्भवतः नोट मिठाई के लालच में मेरे उस भाई ने ही गायब कर दिया है। मैंने पिता जी से अपनी जेब ध्यान से देखने के लिए कहा कि शायद कहीं कागजों में ही नोट रह गया हो—जब उन्होंने जेब टटोली तो देखा कि कुछ कागजों में जगह-जगह छेद किये गये थे। मुझे स्थिति भांपने में देर नहीं लगी कि श्याम ने अपनी कुशाग्र बुद्धि का परिचय दिया है। मैंने घर के सारे व्यक्तियों को पास बुलाया और बड़ी गम्भीर मुद्रा में कहा कि नोट हो न हो चूहे ले गये हैं। तत्काल ही मैंने श्याम से इधर उधर खोजने के लिए कहा। थोड़ी देर तक इधर उधर हाथ मारने के बाद श्याम वह नोट ले आया और कहने लगा— देखिये चूहे के बिल में से निकाल कर लाया हूं। यह किसी चूहे की कारस्तानी है।' मैंने नोट हाथ में लिया, देखा कि वह दो स्थानों से कटा हुआ है। किन्तु नम्बर ज्यों के त्यों हैं। मैंने हंसते हुए कहा—'भाई चूहे भी कितने बुद्धिमान हैं। जानते हैं कि नम्बर कट जायेंगे तो नोट बाजार में चलेगा नहीं।' मैंने एक दृष्टि श्याम पर डाली तो देखा कि वह सर झुकाये कुछ सोच रहा है। उसकी मुख मुद्रा से सब सबको स्पष्ट हो गया कि नोट चुराने वाला चूहा कौन था। श्याम अब युवक हो गया है किन्तु फिर भी हम सब कभी कभी उसको चूहे के बिल वाली घटना का स्मरण करा देते हैं, जिसको सुन कर वह तू बहमना है।

--सुरेशचन्द्र त्रिवेदी (?)

●

जब वह मुझसे चिपट गया ?

मुझे याद है कि, मार्च का समय था। उस दिन लाजपतनगर बाजार में श्री मुंशीलाल जी 'सेवक' मुझे मिठाई खिला रहे थे, कोई हर्ष की बात थी कदाचित्। पास ही दुकान के तख्ते पर श्री रामकृष्ण गुप्त इंजीनियर (दिल्ली) बैठे हुए वार्तालाप कर रहे थे। कुछ देर बाद इंजीनियर साहब का साला विपिन (नगर के प्रसिद्ध पत्रकार 'नवभारत-टाइम्स' के संवाददाता श्री प्रसपाल वार्ष्णेय का सुपुत्र) जो मेरा मित्र है आया और बात-चीत करने लगा। उसकी बातों में बड़ा रस आ रहा था। 'सेवक' जी ने थोड़ी देर के बाद विपिन से मिठाई खाने के लिए कहा, पर विपिन ने मेरे कान में कुछ कह कर 'सेवक' जी का प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया। फिर, रामकृष्ण जी ने पीने के लिए दूध मंगाया और विपिन से भी पीने को कहा। बहुत ना नुकर के बाद विपिन ने दूध पीना प्रारम्भ किया। मजे ले-ले के वह खड़ा-खड़ा मेरी बगल में दूध पी रहा था। अभी वह आधा ही दूध पी पाया होगा कि दो कुत्ते भौं भौं करते हुए अचानक रूप से लड़ते हुए विपिन की ओर चले आए। बस इस दृश्य को देखते ही विपिन दूध के कुल्हड़ को सड़क पर पटक उछल कर मेरी कमर से इस प्रकार लटक गया कि उसके हाथ मेरी गर्दन में और टांगें पेट से चिपकी हुई थीं और बेंत की तरह वह थरथर कांप रहा था। कुत्ते ठीक मेरी टांगों के पास अचानक रूप से लड़ रहे थे विपिन डर के कारण मुझसे चिपक गया था और बड़ी जोर से स्वयं कांपते हुए मुझे भी हिलाए दे रहा था। मुझे डर था कि कहीं एक ओर बोझ के कारण और संतुलन न होने के कारण मैं बालक को लिए-लिए सड़क पर न गिर जाऊं।

इस घटना को लोग देख रहे थे स्तब्ध ! मूक !! अवाक् !!! सड़क पर चलने वाले भी रुक गए थे। एक अच्छा-खासा तमाशा बना हुआ था मैं ! पर, करता क्या ? विवश था। वैसे डर मैं भी गया था कि कहीं दोनों कुत्ते मेरे पैरों पर मेहरबानी न कर दें। पर, ऐसा हुआ नहीं। दोनों कुत्ते दो मिनट बाद ही लड़ते हुए दूसरे बाजार में चले गए। तब भी विपिन मुझसे पूर्ववत् चिपटा हुआ था। वह घटना जब मुझे याद आ जाती है तब मैं अनायास ही मुस्करा उठता हूं।

—हरिश्चन्द्र गुप्त 'सूर्य', (?)

●

घंटा भर ठहर कर नहीं आ सकता था।

वकील ने पूछा—'आपके कोई बहिन है?'

'जी है।'

'उसका नाम?'

'कुसुम।'

'कुसुम देवी?'

'जी।'

'वह यहीं है या अपनी सुसराल में है?'

सेठजी का चेहरा पीला पड़ गया और फिर लाल होगया। कितने पानी में है वह कुसुम जिसको पूछते हुये बम्बई से वकील चले आते हैं? उन्होंने वकील साहब को परीक्षक की दृष्टि से निहारा।

गङ्गानाथ ने अपने हाथों से मेज को दृढ़ता से पकड़ा। बताया—'कुसुम यही है और ये हैं कुसुम के जेठ श्री गणेशदत्तजी।'

वकील प्रसन्नता से खिल उठे। गणेशदत्तजी की ओर हाथ बढ़ाते हुए बोले—'ओ हो, आप भी मिल गये। आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुयी। आपके पिता का नाम?'

'स्वर्गीय कृष्णानन्दजी।'

'बिल्कुल ठीक! परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।'

'अच्छा गंगानाथजी तनिक कुसुम को बुला दीजिये। उसके एक बच्चा है न। तनिक उसे भी। गणेशदत्तजी आप से मिलकर तो मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुयी।

गङ्गानाथजी के घर में एक हलचल आ गयी। कुसुम ने भाभी की अच्छी-सी साड़ी पहिनाई और भाभी ने अपने हाथ से रमेश को नहलाया और इस बात का ध्यान रखा कि वह तनिक भी उपेक्षित न दिखाई दे।

सजा-धजकर मां-बेटा बैठक में पहुँचाये गये। वकील ने खाली कुरसी की ओर संकेत करके कहा—'विराजिये कुसुम देवी, और रमेश तुम इधर आओ।'

उन्होंने रमेश को अपनी बांह में समेट लिया। उसके चेहरे की ओर देखा, मुस्काये और पूछा—'तुम्हारे माथे पर यह क्या लगा है?'

गङ्गानाथ ने शीघ्रता से उत्तर दिया—'बच्चा है, दौड़ रहा था, गिर पड़ा तो चोट लग गई है।'

रमेश ने प्रतिवाद किया—'चोट कहां लगी है, मुन्नू ने मारा है।

वकील बोले—ओह, तो तुम्हारे चोट लग गयी है। लो यह खिलौना, है न रेल का इञ्जन? जाओ खेलो। तुम अच्छे लड़के हो।'

रमेश रेल का इञ्जन लेकर भाग गया। वकील ने कुसुम की ओर देखा, बोले—यह आपका पुत्र है?'

'जी।

'और यह आपके जेठ हैं।'

'जी।'

वकील सम्हल कर बैठ गये। बोले—'हां तो कुसुमदेवी, मैं तुम्हें एक शुभ समाचार सुनाने आया　।'

भाई और जेठ के हृदय एक साथ धड़क उठे। गङ्गानाथ बोले—'जिस नारी का पति उठ गया, उसके लिए संसार में कोई समाचार शुभ नहीं है वकील साहब।'

वकील ने इस टिप्पणी की ओर ध्यान नहीं दिया वह कहते रहे—'कुसुम देवी तुम्हें स्मरण होगा कि तुम्हारे एक चाचा थे! क्या नाम था उनका?'

'यमुनाप्रसाद।' कुसुम ने बताया।

'हां उनका नाम यमुना प्रसाद ही है।'

गङ्गानाथ ने कहा—'वे तो अब पन्द्रह वर्ष के थे तभी से लापता हैं। क्या कोई समाचार मिला है वकील साहब?'

'कुसुमदेवी तुम्हारे चाचा यमुनाप्रसाद फिजी में हैं। वे उस द्वीप के एक महत्वपूर्ण व्यापारी हैं। वे बहुत अच्छे मनुष्य हैं। उनका हृदय नवनीत-सा कोमल है। उन्होंने तुम्हारे वैधव्य का दुखद समाचार सुना और　।'

गणेशदत्तजी शीघ्रता से बोले—'क्या उन्होंने बहू को फिजी बुलाया है?

'नहीं वकील साहब, हम कुसुम को कहीं नहीं भेज सकते। कुसुम हमें प्राण से प्यारी है। उससे बिछुड़ना हम स्वीकार न करेंगे। क्यों गणेशदत्तजी!'

'निःसन्देह।'

वकील ने आश्वासन दिलाया कि यमुनाप्रसाद ने कुसुम को फिजी नहीं बुलाया। वे कहते रहे—'कुसुम तुम्हारे चाचा ने अपनी विशाल सम्पत्ति का एक अंश तुम्हारे नाम कर दिया है। उस अंश का मूल्य लगभग चार लाख रुपये हैं।

'चार लाख!' जेठ ने अपने नयन विस्फारे।

'चार लाख!' गङ्गानाथ कुर्सी से उछल पड़े।

कुसुम इस समाचार का पूर्ण अर्थ नहीं समझ सकी।

वकील ने स्वर को तनिक स्थिर रखते हुए कहा "हां महाशयों, चार लाख! कुसुम बहिन, मैं आपको बधाई देता हूं।

'चार लाख!'

'चार लाख!'

'पर इसके साथ एक शर्त है।'

'जी?' गंगानाथ बोले

'शर्त यह है कि कुसुम को उस सम्पत्ति या उससे होने वाली आय में से एक कौड़ी नहीं मिलेगी। हां कुसुम इस के लिए स्वतन्त्र होगी कि वह अपनी मृत्यु के पश्चात् जिसे चाहे वह जायदाद दे जाये। कुसुम बहिन तुम्हारे चाचा का वह 'विल' बाकायदा रजिस्टर करा दिया गया है, और हमारी फर्म के पास सुरक्षित है। इस विषय में जब जिस प्रकार की आवश्यकता होगी हम आप से परामर्श करते रहेंगे।'

वकील साहब विदा ले कर चले गये। कुसुम उठकर भीतर चली गयी। गङ्गानाथ और गणेशदत्त दोनों आमने-सामने बैठ एक दूसरे को घूर रहे थे। गङ्गानाथ ने कहा—'मुझे तनिक भी सन्देह नहीं कि कुसुम अपने भाई के पास ही रहना चाहेगी।'

गणेशदत्त बोले—'आपका विचार मुझे ठीक नहीं जान पड़ता। बहू अत्यन्त बुद्धिमान है। वह कभी आपके यहां रहना स्वीकार नहीं करेगी। जहां उसका घर है वह वहीं जाकर रहेगी। अच्छा यही होगा कि हम उसी से सब बातें पूछ लें, और जैसा वह कहे वैसा करें। मैं तो पहिले ही जानता था कि वह एक असाधारण नारी है।'

'बचपन से ही कुसुम बड़ी होनहार थी। अपने चाचा की तो बहुत ही प्यारी थी।'

'ऐसा चाचा एक मेरे भी होता तो! हां रमेश कितना होनहार बालक है, ऐसा सुन्दर ललाट, ऐसा चमकता मुखमंडल...।'

'नई बात यह है कि मां बेटे ने हमारे और आपके दोनों के कुलों को चार-चांद लगा दिये हैं।'

'क्यों नहीं।'

×　　+　　+

वर्ष पर वर्ष आये कुसुम और रमेश का संसार ही बदल गया। भाई के घर महरी आ गयी और जेठ जी ने भी इस विषय में प्रबन्ध कर लिया। करुणा, दया और शासन का स्थान अब आदर और प्रेम ने ले लिया। बम्बई की फर्म के एक वकील प्रति वर्ष आते और कुसुम रमेश से भेंट कर जाते। वे कुसुम के लिये कुछ वस्त्र और रमेश के लिए उपयोगी उपहार लाना कभी नहीं भूलते थे। रमेश शिक्षा ग्रहण कर रहा था। उसके मामा और ताऊ दोनों उससे अत्यन्त प्रसन्न थे। उसकी प्रत्येक बात में बुद्धिमत्ता थी। गणेशदत्त, कुसुम और रमेश से प्रसन्न रहते थे तो गङ्गानाथ परम प्रसन्न। गङ्गानाथ उनसे संतुष्ट रहते थे तो गणेशदत्त अत्यन्त सन्तुष्ट। रमेश और कुसुम का व्यवहार भी इन दोनों अभिभावकों के प्रति श्रद्धा और आदर से अनुप्राणित था। इतने अच्छे ताऊ और इतने प्रेममय मामा इस जगत में और कहीं नहीं थे।

समय बढ़ता गया। रमेश शिक्षा समाप्त कर धनोपार्जन में लगा। चाचा यमुनाप्रसाद का शरीरान्त हो चुका था। गङ्गानाथ और गणेशदत्त वृद्ध थे। कुसुम रोगिणी।

कुसुम ने अपने को पूर्णतया फर्म के वकीलों के हाथ में छोड़ दिया था। मरते समय उसने अपनी सम्पत्ति के विषय में जो कुछ लिखा वह भी उन वकीलों की सम्मति से ही।

क्रियाकर्म सम्पन्न हो जाने के पश्चात् गणेशदत्त, गङ्गानाथ और रमेश एक स्थान पर बैठे। मां अपनी सम्पत्ति किसे दे गयी है, रमेश भी यह जानना चाहता था और दोनों वृद्ध भी। वे वकील के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। पल-पल का विलम्ब असह्य हो रहा था।

वकील आ गये। आवश्यक शिष्टाचार के पश्चात् वकील ने अपने बस्ते से कुसुम का वसीयतनामा निकाला। कु-

(शेष पृष्ठ १८ पर)

अखिल भारतीय जन संघ

—डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी

डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी

अ० भा० जन संघ के अध्यक्ष

मैं भली प्रकार जानता हूँ कि इस समय हमारे सामने जो कार्य है वह कठिन है। हमारे सामने बहुत सी बाधाए हैं जिनका हमें सामना करना है और एक प्रबल विरोध का सामना करना है। ऐसे अवसर पर महान ध्येय तथा स्पष्ट उद्देश्यों के प्रति, जिनको समक्ष रख कर जन संघ देश की सेवा करना चाहता है, हमारी दृढ़ निष्ठा ही एक तत्व है जो हम को एक सूत्र में बांध रही है। मुझे विश्वास है कि यदि संगठित रूप में अदम्य साहस और उत्साह के साथ कार्य करेंगे और सत्यता से विचलित न होते हुए जनता जनार्दन की सेवा तथा अपनी मातृ भूमि के मान एव गौरव की वृद्धि के प्रमुख लक्ष्य को सदा अपने सम्मुख रखेंगे, तो निश्चय ही अन्त में विजय हमारी होगी।

मैं सर्व प्रथम यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि भारतीय जन संघ की स्थापना केवल आने वाले चुनावों को लड़ने के लिये नहीं की जा रही है। निःसन्देह चुनावों का महत्त्व है और हम जहां भी सम्भव होगा उम्मीदवार खड़े करेंगे। निर्वाचन हमको अपनी विचार-धारा को जनता तक पहुँचाने, और हमारे संगठन को अखिल भारतीय रूप देने और एक सुदृढ़ आधार पर खड़ा करने में सहायक होंगे।

चुनावों का परिणाम चाहे जो कुछ हो, हमारा संगठन उसके उपरान्त भी निरन्तर कार्यशील रहेगा और समाज के सभी वर्गों में आशा एवं सद्भावना का संदेश पहुँचायगा और यह प्रयत्न करेगा कि वह अपने सत्प्रयत्नों द्वारा सुखमय और समृद्धिशाली स्वतन्त्र भारत का पुनर्निर्माण करें।

स्वतन्त्रता के चार वर्ष

हमको राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त किये चार वर्ष हो गये और सब इस बात से सहमत हैं कि हमारी अवस्था पहले से निरन्तर गिरती जा रही है, जनता के कष्ट बढ़ते जा रहे हैं। यदि आज की अवस्था पर हम निरपेक्ष दृष्टि से विचार करें तो हमको मानना पड़ेगा कि चाहे विश्व की कुछ घटनाएं भारत की आर्थिक गिरावट के लिए आंशिक रूप से उत्तरदायी हों किन्तु उसका मुख्य कारण, शासन द्वारा देश की समस्याओं को उचित रूप से सुलझाने के प्रयत्नों का अभाव ही है। आज सम्पूर्ण देश असन्तोष और निराशा के गहरे भावों में ग्रस्त है तथा जनता का विश्वास वर्तमान सरकार द्वारा शासन को सुचारु, निष्पक्ष एव योग्य रूप से चलाने की क्षमता से डिग गया है। चोरबाजारी, नफाखोरी और भ्रष्टाचार ने हमारे समाज का घोर नैतिक पतन कर दिया है। इस राष्ट्रव्यापी असन्तोष के मूल कारणों की सच्ची मीमांसा करने और उनको जनता के सहयोग से दूर करने के स्थान पर सरकार आलोचनाओं के प्रति निरपवाद रूप से असहिष्णु रही है और प्राय उसने स्वतन्त्र जनमत की अभिव्यक्ति को दबाने का प्रयत्न किया है।

कांग्रेस

यह आश्चर्य की बात है कि चार वर्ष पूर्व जो कांग्रेस सम्पूर्ण समाज की सद्भावना ले कर चली थी आज उसने समाज के बहुमत की अन्त प्रेरणा से प्राप्त होने वाला समर्थन खो दिया है और अपने को सत्तारूढ़ बनाये रखने के लिए उसे सदिग्ध साधनों को अपनाना पड़ रहा है। कांग्रेस शासन में तानाशाही की अभिव्यक्ति का मुख्य कारण देश में सुसंगठित विरोधी दलों का अभाव ही है जो बहुसंख्यक दल के ऊपर स्वस्थ नियन्त्रण रखते हुए देश मे नई सरकार बनाने की क्षमता प्रकट कर सकें।

अखिल भारतीय जन-संघ

अत भारतीय जन संघ एक अखिल भारतीय राजनीतिक दल के रूप मे आ रहा है जो प्रमुख विरोधी दल का कार्य करेगा। इसका यह अर्थ नहीं कि यदि उसे बहुमत का विश्वास प्राप्त हुआ तो वह कहीं भी शासन की बागडोर लेने से हिचकिचाएगा, किन्तु जहां ऐसा सम्भव न होगा वह शासन सभाओं के अन्दर और बाहर विरोध करता रहेगा। विरोध का अर्थ यह कदापि नहीं कि किसी भी उत्तरदायी सरकार के सम्मुख आने वाली समस्याओं के प्रति अविवेकपूर्ण और विनाशात्मक दृष्टि रखी जाय। अत जहां हमको सरकारी व्यवस्थाओं और कानूनों की आलोचना करनी पड़ेगी हमारा उद्देश्य उनको ओर एक रचनात्मक दृष्टिकोण से विचार करना ही होगा जिससे हम जनता को जागरूक रख सकें और देश में योग्य और सुदृढ़ शासन के प्रजातन्त्रीय पद्धति के विकास में विनम्र सहयोग दे सकें।

अनेकता में एकता

हमारे संगठन का द्वार भारत के सभी नागरिकों के लिये जाति, पन्थ और सम्प्रदाय का विचार न करते हुए खुला है। जहां हम यह मानते हैं कि रीति-रिवाज, उपासना-पद्धति और भाषा के सम्बन्ध मे भारत में विभिन्नता है वहां हम यह भी अनुभव करते हैं कि अपनी मातृ भूमि के प्रति अमिट श्रद्धा और प्रेम की भावना से उत्पन्न पारस्परिक सद्भावना और बन्धुत्व के सूत्र में सम्पूर्ण समाज को आबद्ध होना चाहिये। आज सम्पूर्ण भारत विभिन्न जातियों, वर्गों एव प्रान्तीय भेद-भावों से उत्पन्न परस्पर विरोधी नारों का शिकार हो कर विभक्त है। हमारा संगठन इस अनेकता में एकता का प्रयत्न करेगा जो भारतीय संस्कृति की सदा से विशेषता रही है। भारतीय राष्ट्र की नींव को सुदृढ़ और गहरी बनाने का कार्य सरल नहीं है।

प्रो० श्री महावीर

प० मौलीचन्द्र शर्मा

अखिल भारतीय जनसंघ के महामन्त्री

अल्पसंख्यक

यद्यपि यह भयावह है कि जाति और सम्प्रदायों के आधार पर राजनीतिक अल्पसंख्यक वर्गों की कल्पना को प्रोत्साहन दिया जाय तो भी स्पष्टतया भारत के विशाल बहुसंख्यक समाज का यह कर्त्तव्य है कि वह उन सब वर्गों को जो कि राष्ट्र के प्रति सच्ची भक्ति रखते हैं आश्वासन दे कि उनको कानून के अनुसार पूर्ण संरक्षण मिलेगा तथा सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में उनके साथ समानता का व्यवहार किया जायगा। हमारा दल एक स्पष्टरूपेण यह आश्वासन देता है। हम यह भी मानते हैं कि भारतीय जनता में एम भी बहुत लोग हैं जो आज पिछड़े हुए और दलित हैं, उनको पूर्ण अवसर मिलना चाहिये जिससे वे अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति उन्नत कर सकें तथा नव भारत के निर्माण में अपने सौभाग्यशाली बन्धुओं के साथ समान रूप से सहयोग दे सकें।

धर्म-राज्य

भारत के असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण को बनाए रखने की आतुरता में कांग्रेस ने मुस्लिम सन्तुष्टिकरण की नीति को जीवित रखा है, तथा उसके कुछ नेता विशेषकर हमारे प्रधानमन्त्री हिन्दु-भावनाओं को ठेस पहुँचाने में विशेष आनन्द लेते हैं। हम समझते हैं कि सच्चा हिन्दू, सिक्ख, बौद्ध, ईसाई अथवा मुसलमान होते हुए भी प्रत्येक नागरिक राष्ट्रीय आदर्शों के प्रति श्रद्धा रखते हुए पक्का भारतीय हो सकता है। जन-संघ का दृढ़ विश्वास है कि भारत का भविष्य भारतीय संस्कृति और मर्यादा के समुचित आकलन और व्यवहार में ही है। स्वभावत भारतीय संस्कृति और मर्यादा के समुचित आकलन और व्यवहार में ही है। स्वभावत भारतीय संस्कृति और सभ्यता का विकास स्वदेशीय और विदेशीय विचारधाराओं के पारस्परिक संघर्ष और समन्वय द्वारा ही हुआ है। सहस्र वर्षों के इस महान् इतिहास में साम्राज्यों एव राजवंशों का उदय और अस्त हुआ और अनेक महापुरुषों ने समय २ पर भारतीय जीवन को गौरवान्वित किया है। भारत की सभी सच्ची सन्तानें चाहे वह हिन्दु, सिक्ख, मुसलमान ईसाई या बौद्ध कोई भी हों उन्हें यह गर्व होना चाहिये कि युगयुगान्तरों से चली आई हमारी परम्परा महान् और समर्थ है,

इसे नष्ट नहीं होने दिया जा सकता। स्वतन्त्र भारत का भविष्य भारतीय आदर्शों से सम्बद्ध हो, जो कि आधुनिक एवं वैज्ञानिक युग की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए समय २ पर संवर्धित एवं संशोधित हो सकते हैं। यह भाव हमारी राष्ट्रीय शिक्षा में प्रतिबिम्बित होना चाहिये। अत धर्म राज्य की स्थापना का उच्च आदर्श अपने सामने रखते हुये हम सम्पूर्ण समाज को एकता तथा बन्धुत्व के सूत्र में आबद्ध करने वाली भारतीय संस्कृति की सर्वोच्च परम्पराओं का ही पालन करते हैं।

आर्थिक स्थिति

आज भारत के सामने सबसे प्रमुख समस्या जनता की गिरती हुई आर्थिक स्थिति है। जन संघ अन्न-वस्त्र की प्रारम्भिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने तथा बढ़ती हुई कीमतों को रोकने के प्रयत्नों पर अधिक बल देता है। इसका सम्बन्ध उन्नत कृषि एवं व्यापक भूमि सुधार की योजनाओं से होने के कारण हमारा दल इस सम्बन्ध में प्रगतिवादी दृष्टिकोण को अपनाता है। हम समझते हैं कि यह सरल कार्य नहीं है और यह तब तक पूर्ण नहीं हो सकता, जब तक कि करोड़ों प्राथमिक उत्पादकों के उत्साह को जागृत न किया जाय। हम बड़े और छोटे सभी प्रकार के उद्योगों के विकास की सुव्यवस्थित योजना की आवश्यकता का भी अनुभव करते हैं। बढ़ती हुई बेकारी बिना इसके नहीं रोका जा सकती।

हमारा ध्येय राष्ट्र के लिए एक सुनिश्चित एवं विकेन्द्रित आर्थिक योजना का निर्माण करना है। जन साधारण के जीवन स्तर को उन्नत करने के लिए तथा बड़े उद्योगों के विकास से उत्पन्न बुराइयों के परिणाम से बचने के लिए सर्वोदय योजना की बहुत-सी बातों का भलीभांति उपयोग किया जा सकता है। हम आर्थिक शक्ति को एक छोटे से वर्ग के हाथों में अथवा कार्टेल्स में केन्द्रीकरण के विरुद्ध हैं। व्यक्तिगत सम्पत्ति के अधिकार को हम मान्य करते हैं तथा राष्ट्र के हितों के आधीन हम व्यक्तिगत साहस को भी अवसर प्रदान करते हैं।

जनहित में आवश्यक होने पर ही राष्ट्रीयकरण अथवा राज्य के नियन्त्रण का उपयोग किया जाय, किन्तु इस दिशा में पग उठाते समय नैपुण्य एवं सार्वजनिक हित का अवश्य ध्यान रखा जावेगा। जन संघ का उद्देश्य क्रम बद्ध विनियन्त्रण है।

सामाजिक एव आर्थिक शोषण को रोकना चाहिये। वितरण उचित एव समान होना चाहिये तथा एक ऐसा वातावरण उत्पन्न करना चाहिये जिसमें सब लोग मिल कर अधिक उत्पादन कर सकें। विस्थापितों को बसाने की व्यवस्था करना एक भारी समस्या है जिसके लिए अभूतपूर्व सामाजिक एव आर्थिक सामञ्जस्य स्थापित करना पड़ेगा। इसको पूर्ण शक्ति एव उत्साह के साथ सुलझाना पड़ेगा।

विदेश नीति

वैदेशिक नीति के सम्बन्ध में जन संघ का मत है कि वह अधिक यथार्थवादी होनी चाहिये। इस सम्बन्ध में प्रथम विचार यह रखा जाय कि देश के हितों की वृद्धि हो और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में शांति और सद्भावना की रक्षा हो। हम जनतन्त्र और नागरिक अधिकारों की सुरक्षा में विश्वास व्यक्त करते हैं और हम हर प्रकार के अधिनायकवाद के विरुद्ध हैं। हमें यह मान्य है कि प्रत्येक राष्ट्र को अपनी नीति एव जीवन का

श्री दीनदयाल उपाध्याय

दृष्टिकोण अपनी परम्पराओं एवं प्रकृति के अनुरूप निर्धारित करने की स्वतन्त्रता

भारतीय जन संघ की विषय समिति के कुछ सदस्य

अ. भा. जन संघ की केन्द्र

डा० बलराज मधोक (पंजाब)

श्री चिरंजीलाल मिश्र (राजस्थान)

श्री बद्रीदास दुबे (मध्यभारत)

श्री बापू [illegible] जी (अजमेर)

चाहिये। "जीओ और जीने दो" का सिद्धान्त ही भारत का विश्व को संदेश रहा है। जब तक भारत के स्वजीवन पद्धति के निर्णय के अधिकार पर कोई आघात नहीं होता, तब तक हमें कोई कारण नहीं दिखाई देता कि हम दूसरे देशों के साथ मित्रभाव क्यों न बनाए रखें। भारत के ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल में बने रहने के प्रश्न पर गम्भीरता के साथ पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। हम स्पष्ट रूप से मानते हैं कि राष्ट्र मण्डल का सदस्य बने रहने से हमें बहुत कम लाभ हुआ है। इसके विपरीत हमें भारत पाकिस्तान सम्बन्धों में अनुभव हुआ है कि बरतानिया पाकिस्तान के प्रति विशेष पक्षपात की नीति बरतता रहा है। हो सकता है कि वह हमारी सरकार के गलत प्रचार के कारण रहा हो। जन-संघ को ब्रिटेन के निवासियों से कोई शिकायत नहीं है। यदि भारत राष्ट्र मण्डल से बाहर भी आया तो भी बरतानिया और अन्य राष्ट्र मण्डलीय देशों के प्रति मित्रता के सम्बन्ध रह सकते हैं, यदि वे भी भारत के प्रति ऐसा ही भाव रखें।

पाकिस्तान

पाकिस्तान के सम्बन्ध में हमारा यह निश्चित मत है कि भारत का विभाजन स्वीकार करना एक भारी भूल थी। इस विभाजन से कोई लाभ नहीं हुआ और न किसी प्रकार की हमारी आर्थिक, राजनीतिक अथवा साम्प्रदायिक समस्या के हल करने में सहायता मिली है। अल्प संख्यकों के साथ किस प्रकार का व्यवहार पाकिस्तान में हुआ है और आज भी हो रहा है, वह सिद्ध करता है कि अल्प संख्यकों की सुरक्षा के निमित्त दिये गये आश्वासन भंग कर दिये गये हैं। अखंड भारत में हमारी श्रद्धा है।

हमारी मनोकामना है कि दोनों देशों के लोगों की इस अनुभूति के आधार पर कि भारत के संयुक्त होने से ही [illegible] साधारण का लाभ है और तभी यह देश शांति एवं स्वातन्त्र्य का दृढ़ स्तम्भ बन सकता है, यह कार्य शांतिपूर्ण मार्गों से सम्पन्न हो जाय। जब तक पाकिस्तान का अस्तित्व है हम चाहेंगे कि उसके साथ प्रतियोगी सहकारिता की नीति का प्रयोग किया जाय। कांग्रेसी सरकार द्वारा अपनाई हुई आज की तुष्टीकरण की नीति ने भारत को दुर्बल बनाया, तथा उसके मान और सम्मान को धक्का पहुँचाया है। इस तुष्टीकरण की नीति ने पाकिस्तान को सबल और मुंह जोर बना दिया है। पूर्वी बंगाल में अभी भी एक करोड़ से अधिक अल्प-

ीय कार्यकारिणी के सदस्य

श्री हनुमन्तराव (कर्नाटक)

श्री ...कुमार दुबे (बिहार)

श्री विमलचन्द्र बनर्जी (महाकौशल)

बापू साहब साहनी (विदर्भ)

...ल्पसंख्यक जन हैं तथा पश्चिमी पाकिस्तान में थोड़े से शेष हैं। सरकार उनकी सुरक्षा में असफल रही है यद्यपि इस सम्बन्ध में बार बार उसने आश्वासन दिए हैं। यह तर्क माना नहीं जा सकता कि वह दूसरे देश के नागरिक हैं। उन्होंने कभी विभाजित भारत की मांग नहीं की बल्कि उन्हें वचन और आश्वासन दिये गये जिनकी आज खुली अवहेलना की जा रही है। यह है ऐसा पाप कि जिसे कभी क्षमा नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार भारत में विस्थापितों द्वारा पाकिस्तान में छोड़ी हुई सम्पत्ति की क्षतिपूर्ति का प्रश्न पड़ा है जिसे सम्मानपूर्ण आधार पर तय करना चाहिए। अब सब विभाजनोत्तर काल की इन समस्याओं के हल को, जिसको कांग्रेस सरकार योजनापूर्वक टालती जा रही है विशेष बल देता है। हमारा इन समस्याओं की ओर देखने का दृष्टिकोण लेशमात्र भी साम्प्रदायिक नहीं है। यह प्रमुखतया राजनीतिक और आर्थिक समस्याएं हैं जिनको दोनों देशों को सीधे और सही रूप से हल करना चाहिये।

काश्मीर

काश्मीर के सम्बन्ध में जन संघ का मत है कि यह प्रश्न संयुक्त-राष्ट्र संघ से वापस ले लेना चाहिये तथा जन-संग्रह का भी कोई प्रश्न उपस्थित नहीं होता। काश्मीर भारत का अविभाज्य अंग है और अन्य रजवाड़ों के समान ही उसको भी समझना चाहिये।

निस्सन्देह यह अत्यन्त ही दुखद घटना है कि काश्मीर का एक तिहाई भाग अभी भी शत्रु के हाथ में है। भावी आक्रमण के विरुद्ध हमारी सरकार द्वारा समय-समय पर की गई घोषणाओं के उपरान्त भी वह इस भूभाग को विदेशियों के पंजों से मुक्त नहीं कर सकी है।

आक्षेपों के उत्तर

जो कुछ मैंने कहा है उससे यह स्पष्ट हो गया होगा कि हमारा दल राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों के प्रति भारत के गौरव और सम्मान के साथ यथार्थवादी दृष्टिकोण रखता है। दूसरे दलों के प्रवक्ताओं, विशेषकर कांग्रेस के अध्यक्ष पं० नेहरू ने हमारे ऊपर कटु आक्षेप किये हैं। क्योंकि वह भारत के प्रधानमंत्री भी हैं। अतः उनके उद्गारों का एक विशेष प्रभाव होता है। उनकी बार-बार की कटु आलोचना ने हमारे निश्चय को बल दिया है। हम क्लियों और गालियों के सामने हम झुकने वाले नहीं हैं। हम तो ऐसा मानते हैं कि इससे हमारा व्यापक प्रचार ही हुआ है और इसके लिये हम उनको धन्यवाद देते हैं।

प्रत्येक को अधिकार है कि दूसरे दलों के कार्यक्रमों की स्पष्टतया स्वतन्त्रता पूर्वक आलोचना करे किन्तु आलोचना में सत्य का गला घोंटना उचित नहीं। हमारे विरुद्ध मुख्य आक्षेप यह कि हमारा दकियानूसी विचारों का एक साम्प्रदायिक संगठन है। किसी भी विचारशील व्यक्ति का हमारे कार्यक्रम पर साधारण दृष्टिपात करने पर ही यह पता चल जायगा कि यह आक्षेप सर्वथा असत्य है। वास्तव में तो साम्प्रदायिकता को प्रश्रय देने का भार कांग्रेस पर और विशेषकर पं० नेहरू पर लागू होता है। अपने विगत ३० वर्षों के कारनामों पर उन्हें शान्तिपूर्वक विचार करना चाहिये। हर कदम पर जब उन्हें मुस्लिम लीग की धड़गेबाजी का सामना करना पड़ा तो उन्होंने मोर्चे से मुंह मोड़ा और अन्त में मातृ भूमि का विभाजन कर घुटने टेक दिए। हिन्दू मुस्लिम आधार पर काश्मीर विभाजन के डाक्टर अम्बेदकर के प्रस्ताव पर बहुत से लोग स्तंभित रह गये। हम उसे भी पसन्द नहीं करते। इस ढंग से कोई झगड़ा शांत नहीं होगा बल्कि पाकिस्तान को नई मांगें रखने का अवसर मिल जायगा।

यह सही है कि हममें से कुछ लोगों ने बंगाल तथा पंजाब के विभाजन का

श्री रामकिशोर शुक्ल (विन्ध्यप्रदेश)

समर्थन किया। किन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि, जब भारत का विभाजन सर पर आ गया तो हम इसके लिए विवश कर दिये गये। हमारी सदैव यह इच्छा रही कि ये प्रान्त अखण्ड भारत के अन्तर्गत रहें किन्तु जब हमें यह पता लगा कि कांग्रेस के विश्वासघात तथा उसके और मुस्लिमलीग के बीच हुए समझौते जिसे ब्रिटिश कूटनीति का समर्थन प्राप्त था के द्वारा यह सम्भव नहीं था हम लोग आतुर हो गये कि इन प्रान्तों का जितना भाग बचे उतना भारत में बचा लिया जाय अन्यथा वे पूरे के पूरे भारत के हाथ से निकल जाते। यदि भारत का विभाजन न हुआ होता तो इन महान प्रान्तों के बटवारे का जिनके निवासियों ने भारत की मुक्ति के लिए बड़े बड़े बलिदान किये हैं कोई कारण नहीं था। मुस्लिम साम्प्रदायिकता की वेदी पर निरंतर भारतीय राष्ट्रीयता की बलि चढ़ाकर तथा विभाजन के उपरान्त भी पाकिस्तान सरकार की सैनिकों तथा थोथी धमकियों के सामने सर झुका कर भी पं० नेहरू को शोभा नहीं देता कि दूसरों पर साम्प्रदायिकता का आरोप लगाये। पं० नेहरू तथा उनके मित्रों द्वारा आगामी चुनावों में मुसलमानों के मत प्राप्त करने के हेतु से अपनायी गयी मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति को छोड़ कर भारत में कहीं साम्प्रदायिकता नहीं है। सच में तो देश में प्रान्तीयता तथा विभिन्न प्रकार के वर्गों और जातियों के भेदभाव बढ़ रहे हैं। हम मिलकर इन बुराइयों को दूर करें तथा सच्चे प्रजातन्त्रीय भारत की नींव डालें। पं० नेहरू ने साम्प्रदायिकता का जो भूत खड़ा किया है वह देश का ध्यान उसकी वास्तविक समस्याओं से हटाने के लिये ही है। स्पष्ट है कि आज देश की समस्याओं का सम्बन्ध भूख से, दरिद्रता से शोषण से, कुशासन से, भ्रष्टाचार से तथा, पाकिस्तान के प्रति आत्म समर्पण से है। इन बुराइयों के लिए कांग्रेस और उसकी सरकार ही उत्तरदायी है। भारत के सबसे बड़े तानाशाह पं० नेहरू दूसरों पर फासिज्म का आरोप लगाते हैं। लोगों की आंखों में धूल झोंकने के इन प्रयत्नों पर पानी फिर जावेगा। हमारा विश्वास है कि, इस नवीन दल

अखिल भारतीय जन संघ के अधिवेशन में भाग लेने वाली कुछ प्रमुख महिलायें

भारतीय जन सघ के अधिवेशन में भाग लेने वाले कुछ प्रमुख प्रतिनिधि

श्री सतकौडीपतराय (बगाल)
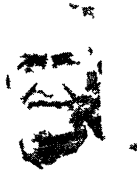
श्री कनल बहादुरी

श्री श्रीनिवास शुक्ल (विन्ध्यप्रदेश)

श्री लालसिंह सवतावत (उदयपुर)

श्री ठाकर विमयामह (राजस्थान)

श्री बिमलेन्द्रन थ कायज (बगाल)

श्री भगवानदु स रहा (अकाला)

श्री पु वा गाल भूतपूव मन्त्री मध्यप्रदेश अब आप मध्यप्रदेश जनसघ के अध्यक्ष हैं

बन्म स आशा शान्ति तथा शक्ति का एक नया युग आरम्भ होगा हमारा लक्ष्य और उद्देश्य सही है।

किन्तु हमारी सफलता इस पर निर्भर करेगी कि हम अपना संगठन कितना बनाते हैं तथा जनता का कितना विश्वास सम्पादन कर पाते हैं । इसमें समय और अथक परिश्रम लगेगा ।

आगामी आम चुनाव से हमें अभिभूत होने की आवश्यकता नहीं है। निसन्देह हम उनका हिम्मत से सामना करेंगे और जहा सम्भव होगा मतदाताओं के सम्मुख अपना दृष्टिकोण रखते हुए उनके मत प्राप्त कर उनका विश्वास भाजन बनने का यत्न करेंगे। फिर भी यदि प्रमुख विरोधी दलों म चुनाव समझौता हो गया तो कांग्रेस के पराजय की बहुत अधिक सम्भावना है । इस समझौते का मुख्य आधार लोकप्रियता तथा मतदाताओं का विश्वास होना चाहिए ।

कांग्रेस ने विपुल चुनाव कोष एकत्र किया है तथा समाज के विभिन्न वर्गों के उपर कांग्रेस का समर्थन करने के लिए सब प्रकार का दबाव डाला जा रहा है। उसके पास शासन सत्ता की शक्ति भी है और इस बात की बहुत अधिक सम्भावना है कि वह शासन यन्त्र का भी चुनाव जीतने के लिए उपयोग करने में नहीं हिचकिचायेगी। हाल के दिल्ली के चुनावों के अनुभव से हम कह सकते हैं कि हमें भय है कि भविष्य में चुनाव स्वतन्त्र और निष्पक्ष न होंगे । जिस रूप म शासन यन्त्र का कांग्रेस के पिछली अधिवेशन के लिये प्रयोग किया गया उससे भी यही पता लगता है कि कॉंग्रेस और सरकार दोनों पर्यायवाची शब्द हो गये हैं । राज्य शक्ति का इस प्रकार दुरुपयोग अस्वस्थ परम्परायें निर्माण करता है । अत सब विरोधी दलों को सँयुक्त होकर मांग करनी चाहिए कि निष्पक्ष चुनावों की आवश्यकताओं का निरपवाद रूप से पालन किया जाय ।

कार्यकर्ताओं से

हमारे कार्यकर्ता सदैव स्मरण रखें सेवा तथा त्याग के बल पर ही वे जनता का विश्वास सम्पादन कर सकते हैं । भारत के पुनरुज्जीवन एव पुनर्निर्माण का कार्य हमारी बाट जोह रहा है। मा अपने पुत्रों को पुकार रही है। वर्ग जाति तथा सम्प्रदाय के भेदों को भूल कर हम उसकी सेवा में जुट जायें । वर्तमान चाहे कितना भी अन्धकारमय क्यों न हो भविष्य उज्ज्वल तथा महान है और भारत को विश्व में बड़े कार्य करने है । हमारा संघटन जिसका प्रतीक मृत्तिका प्रदीप है, आशा तथा एकता विद्या तथा साहस की इस ज्योति को लेकर उस

भारतीय जनसघ की विषय समिति में सघ के अध्यक्ष डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी भाषण दे रहे हैं।

हास्य

गायिका के तख्त के नीचे

★ श्री चिरंजीलाल पाराशर

लता मंगेशकर मेरी कमर पर बैठकर कब तक चिल्लाई, इस का पता तो किसी पैसों की हाजी करने वाले से पूछकर बता सकता हूं, क्योंकि जिस समय श्रोतृगण वेडों ने अपना 'जिन्दा मिथेटर' आरम्भ किया था, तभी मैं तो चोपा चूहे की तरह, मंच के तख्तों के नीचे घुस गया था।

मर्दन से कुछ नाचे की ओर वाले दिल में जो उस दिन मेरे पास हो था और जिसे मैं हमेशा की तो क्या, अभी तो अभी तक दिन भी किसी गायिका को नहीं देखा—ऐसे अपशकुन उठ रहे थे कि कहाँ पूरे कते। अच्छा होता जो कुछ की तरह छोड़कर घर चले जाते या (-)आने के पैसे किसी सदाचार मन्दिर (सिनेमा) की भेंट चढ़ा जाते।

वहां जाना अपने से वाजा नहीं। 'आ बैल मुझे मार' की तरह स्वयं शिकार ही शिकारी के घर चला जाता है। जगह-जगह विद्यार्थियों और सरकारों के तो वैसे ही रिश्ते खराब हो रहे हैं। कौन जाने वहां भी गाना सुनाने के बहाने सरकार ने पकड़वाने को ही बुलवाया हो।

विद्यार्थियों और बन्दरों को आज-कल सभी सरकारें एक ही वर्ग का मानती हैं और इसलिये एक-सा ही सलूक करती हैं। पंजाब में बन्दरों को पकड़ काट-काट कर या तो लंगूरा करके अन्यत्र विदेशी के किसानों को परेशान करने के लिये छोड़ दिया जाता है, अथवा अमेरिका के मदारियों का पैसों से बन्दरों का विनिमय कर लिया जाता है। तब क्या पता किसी माल के बदले किसी विदेशी से सरकार विद्यार्थियों का भी सौदा कर रखा हो अब उन्हें इकट्ठा करने के लिए ही लता मंगेशकर का बुलवाया गया हो। इस लिए मैंने दिल की बात पर पाकिस्तानी मुसलमानों की तरह विश्वास किया और मीर जाफरपाली की तरह ही लोगों की आंखें बचा कर मंच के नीचे घुस गया।

भगवान जाने वह कब तक मेरी कमर पर बैठकर गाती रही और विद्यार्थियों पर क्या-क्या बीती। विद्यार्थी अपने घरों को लौट भी पाये या नहीं अथवा किसी माल से बदल लिये गये—मुझे आज तक पता नहीं।

मेरी आंखों ने कब अपनी ड्यूटी समाप्त कर विश्राम किया और कब मजदूरों ने फर्शों और दरियों के ढेर को मेरे पास इकट्ठा कर दिया, मुझे कुछ पता नहीं।

मेरी नींद उस समय हिरन हो गई, जब एक २६ फीट के आदमी ने मेरे एक पैर को पकड़ कर मुझे बाहर घसीट लिया।

आदमी क्या था, अच्छा खासा दैत्य था। पहिले तो मुझे ख्याल आया कि हो न हो यह अलाउद्दीन के चिराग वाला ही दैत्य है। लेकिन यह बताने पर कि वह लालकिले का असली मालिक शाहजहां है, छूटती सांस वापस आगई।

'कौन है तू?'

'इस्टूडेन्ट !'

'अबे उर्दू में बोल।'

'तालिबेइल्म !'

'इन तख्तों के नीचे कौन-सा सबक याद कर रहा था ?'

'गाना सुनने आया था, नींद आ गई।'

"तालबा और गाना ? हैरत है !"

'अब तालबा और गाना को गैरत नहीं मानते।'

'तो क्या यहां रोज गाना होता है ?'

'साल में एकाध बार तो जरूर होता है।'

'कौन कराता है यह, गाना ?'

'सरकार !'

'बादशाहत किस की है ?'

'कांग्रेस की !'

'यह कौन-सा मजहब है ?'

'मजहब से परहेज करने वालों का।

कौन बादशाह है ?'

'बादशाह के नाम को फिकर है, किन्तु दस-पांच आदमी मिल-जुलकर ही काम चला लेते हैं।'

'क्या वे सब तख्त पर बैठते हैं ?'

'नहीं अलग-अलग कुर्सियों पर।'

जिन पर पैर नीचे पड़े रहते हैं ?'

'जी वे पैरों और सर के लिए आराम की आवश्यकता नहीं समझते।'

उनकी बेगमातों का क्या इन्तजाम है ?'

कुछ की तकदीर तो अभी अभी ही जागी है, कुछ की अफसर भी सो गई है। कुछ अपने बंगलों पर किताबों की दुर्दशा करती रहती हैं।'

'तोबा-तोबा ! क्या किसी के एक-एक भी बेगम नहीं ?'

'जी कुछ को रंडुवे रहने का शौक है ?

'वह लोग इन्साफ किस दिन करते हैं ?'

कुछ दिन पहले तो रोज ही करते थे।'

'इन्साफ ठीक होता है ?'

'इन्साफ को माफ किया जाता है ?'

'खूनियों और चोरों को क्या सजा दी जाती है ?'

'कत्ल होने वालों और चोरों से लुटने वालों को मौके के गवाह पेश करने पड़ते हैं। यदि न कर सका तो चोरों की जगह उसे ही हवालात दे दी जाती है।

'तूने यह पाजामा ऊपर क्यों बांध रखा है ? इजारबन्द नहीं है क्या ?'

'यह पैंट है ऊपर ही बांधी जाती है ?'

'अच्छा पहले भी मैंने कुछ गोरे २ आदमियों को पूरे और आधे पायजामे ऊपर बांधे देखा था।'

'जी वह अब चले गये।'

'तब यह उनकी पोशाक की नकल है ?'

'जी !'

'या आलमों को बुला या !'

'कहां से ?'

'जहन्नुम से !'

'वहां का रास्ता तो आप जानते हैं या अमेरिका वाले ?'

'अबे, वह मेरे साथ आया था, जामे मस्जिद में इबादत कर रहा है।'

'अब फोन किये देता हूं।'

'कुछ भी कर उसे जल्द बुला !'

मैंने वैसे ही जामा मस्जिद का नम्बर मिलाकर हलो-हलो किया वैसे ही शाहजहां की रूह ने मेरी गर्दन पकड़ ली।

'यह जवाब का वक्त नहीं है !'

'मैं तो फोन कर रहा हूं।'

'अबे तो इस चिलम-सी में मुंह लगाकर हाय-हाय क्यों कर रहा है ?'

'उनको बुला रहा हूं।'

'अबे जाकर खुद ही कह दे कि वो फतहपुर सीकरी आने के लिए इन्तजाम करे।'

'ट्रेन तो सवेरे जायगी।'

'मैं उस सवारी में नहीं जाना चाहता जो आदमी को लेकर चल दे। दो फरिश्ते काफी हैं।'

'जो ?'

'अब तेरी शादी हुई है ?'

'जी, कानूनी तो नहीं हुई।'

'गैरकानूनी से क्या मतलब ?'

'यही प्रेम ब्याह !'

'हूं निकाह न करने वालों को औरतों का गाना सुनने का कोई हक हासिल नहीं होना चाहिये।'

'या कहूं तो बिना शादी वालों के भरोसे ही गाने वालों की महफिलें जमती हैं।'

'मैंने खुद लड़के पढ़ाये हैं। काश ! पहिले जैसे उस्ताद होते तो तुम लोगों को आवारा न बनने देते।'

'अब इन सिनेमाओं पर कुछ तो क्या छप्पर भी न पड़ते।'

'मैं आग लगवा देता अपने वक्त में इन हरामजादों को।'

'अब तो इनमें आग बुझाने का सरकारी इन्तजाम रहता है।'

'कसरत करके कितना दूध पीता है तू ?'

'कसरत करने को डाक्टर ने मना कर दिया है और दूध को जगह मंहगे की वजह से चाय पीता हूं।'

'तभी तो तेरी सूरत का नूर फितूर में तबदील हो गया है' दुखी से हो शाहजहां बोले—

'सुन, अगर आज न तुझे किसी नाच में मैंने देखा तो तेरी खैर नहीं। चल घर भाग जा और दफना दे उस तालीम को जो तुझे कब्रिस्तान ले जा रही है।'

पांच बज चुके थे। घण्टे की आवाज ने शाहजहां को चौंका दिया। एक फटाका-सा फटा, धुआं हुआ और वह नदारद हो गई।

बस, उसी दिन शाम को हलवाइयों और होटल वालों का हिसाब किये बिना मैं घर भाग आया और अब मजे से खेत का काम करता हूं। बड़ा पठानी सूट का वजन बढ़ रहा है। फिल्मी गाने का कभी नाम भी नहीं लेता।

अन्धकार को छिन्न विच्छिन्न करने का यत्न करें जिसने आज हमारे राष्ट्र को आच्छादित कर रखा है। यह यात्रा का आरम्भ मात्र है। परमात्मा हमें शक्ति तथा साहस दे कि हम सदैव सत् पथ पर चल सकें, भय हमें आक्रान्त न कर सके और आलस्य हमें छुला न सकें और हम भारत को आध्यात्मिक तथा भौतिक रूप से महान और बलवान बनाने में योग दे सकें जिससे विश्व शांति तथा समृद्धि की रक्षा का सक्षम तथा पवित्र साधन सिद्ध हो।

माया की महक

[पृष्ठ १८ का शेष]

उत्सुक नेत्र उस कागज के सबद पर चिपक गये।

गगानाथ ने कहा—'वकील साहब आप ही पढ़कर सुना दीजिये।'

वकील ने कहा—वसीयतनामा बहुत छोटा-सा है। कुसुम देवी लिखती हैं कि मैं एक अबोध नारी हूँ। मेरा संसार में जिन मनुष्यों से सम्पर्क रहा है सभी ने मेरे प्रति सद्व्यवहार किया इन व्यवहारों का आर्थिक मूल्य मैं नहीं आंक सकती। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं अपनी, सम्पत्ति में से कितना भाग किसको दूं। कानून जो कहता हो और समाज जिसे स्वीकारता हो, उसी प्रकार मेरी सम्पत्ति का बटवारा किया जाये।'

वसीयत को सुनकर सब दंग हो गये। जब आगे तो गगानाथ बोले—"गनेशदत्त जी!"

"गगानाथ जी!" गनेशदत्त जी ने उत्तर दिया।

रमेश ने कहा—"मां ने उचित ही किया है। वे किसी की बुरी भली नहीं बनी।"

वकील कुछ समय तक चुप रहे। उन्होंने कमरे की सजावट और उसमें आते हुये प्रकाश में रुचि लेकर तीनों को स्वस्थ होने का समय प्रदान किया। जब वे स्वस्थ हुये तो वकील बोले स्व० यमुनाप्रसाद जी की इच्छानुसार उनकी सम्पत्ति का वर्णन मैं इस समय आपको पढ़ कर सुनाना चाहता हूं।"

गनेशदत्त जी बोले—"रहने दीजिये, क्यों आप कष्ट उठाते हैं!"

गंगानाथ जी ने कहा—"जब कुसुम को ही अपनी सम्पत्ति का परिचय नहीं मिला तो हम उसे जान कर क्या करेंगे!"

रमेश ने कहा—"वकील महाशय!"

वकील बोले—"क्षमा कीजियेगा मुझे! स्व० यमुनाप्रसाद जी के वसीयतनामे में लिखी सब कार्यवाही मुझे अक्षरशः सम्पादित करनी है।"

उन्होंने दूसरा कागज अपने बैग में से निकाला और पढ़ने लगे—"प्रिय मित्रो, मैं रामावतार जी का पुत्र यमुनाप्रसाद हूं। मैंने अपनी प्यारी बहिन कुसुम देवी के विधवा होने का समाचार सुना। और वह इधर से उधर किस प्रकार ठुकराई जा रही है वह भी सुना। मैं उसकी सहायता करना चाहता हूं। मैंने कुछ सम्पत्ति उपार्जित की है। उसे मैं बहिन कुसुम के नाम किये देता हूं। और कुछ रुपया अलग से बैंक में जमा कराये देता हूं। इस रुपये का उपयोग मेरे वकील जिस प्रकार चाहेंगे कर सकेंगे।"

पढ़ते २ वकील रुक गये!

गनेशदत्त जी ने कहा—"सम्पत्ति का वर्णन!"

रमेश बोला—"वह भी तो बताइये, वकील साहब"

"धीरज रखिये" वकील बोले, "स्व० यमुनाप्रसाद लिखते हैं कि मित्रो; मैं एक दरिद्र व्यक्ति हूं। मैं जानता हूँ कि संसार माया के पीछे लपकता है। मैंने जिस चार लाख की सम्पत्ति की चर्चा अपने वसीयतनामे में की है उस का अस्तित्व कहीं नहीं है। वह सब कल्पित है। मैं जानता था कि कुसुम के जीवन यापन और रमेश की शिक्षा की सुविधा तभी सम्भव है जब कि उस के परिवार वाले उसके प्रति आदर और सद्भावना रखें। आदर और सद्भावना के लिये इसकी आशंका चाहिये। चार लाख की बात कहकर मैंने वह आशंका आप लोगों में उत्पन्न की। जीवन भर मृगतृष्णा में बनाये रखने के लिये मैं आप से क्षमा याचना करता हूं। पर जो आपका सहज कर्त्तव्य था उसे पालने में मैंने सहायता दी है इस लिये आप लोगों को भी मेरा आभारी होना चाहिये।"

वकील ने कागज़ मेज पर रख दिया और श्रोताओं की ओर निहारा। उन्हें लगा कि वे तीनों सकाम प्रयत्न पूर्वक सोचने में लगे हुये हैं।

देश - विदेश का घटनाचक्र

श्री चर्चिल

ब्रिटेन के नये प्रधान मन्त्री

चुनाव की धूम

विगत दस दिनों में भारत के विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों पर आगामी आम निर्वाचनों से कांग्रेस की ओर से खड़े किये जाने वाले प्रतिनिधियों के चुनाव की खूब धूम रही। विशेष हलचल का केन्द्र भारत की राजधानी ही रही। यहां केन्द्रीय निर्वाचन समिति के कार्यालय में अपने अपने प्रदेशों से कांग्रेस टिकट न मिल सकने के कारण असन्तुष्ट कांग्रेसी नेताओं का तांता सा लगा रहा। पंजाब की दलीय राजनीति बहुत लम्बे समय से निरन्तर विवाद होती आ रही थी, अतः मुख्य गतिरोध की संभावना वहीं से थी। किन्तु वहां भी पंजाब कांग्रेस के सभी गुट के प्रतिनिधियों ने निजी मतभेदों को किन्हीं विशेष प्रलोभनों के वशीभूत होकर कुछ समय के लिए भुला दिया है। इस प्रकार पंजाब के चुनाव क्षेत्रों से खड़े होने वाले कांग्रेसी उम्मीदवारों का चुनाव प्रायः समाप्त हो गया है किन्तु फिर भी असन्तुष्ट व्यक्तियों को किसी प्रकार समझा बुझाकर राजी किया जा रहा है। उत्तर-प्रदेशीय चुनाव बोर्ड ने भी आम चुनाव के लिये कांग्रेस उम्मीदवारों की नामावलि पर निर्णयात्मक रूप से विचार करना प्रारम्भ कर दिया है तथा अब वह सूची शीघ्र ही केन्द्रीय निर्वाचन-समिति के पास भेजी जा रही है। श्री टंडन के प्रान्तीय निर्वाचन समिति से त्यागपत्र देने के पश्चात् उत्तर प्रदेश में उनका विरोधी गुट अपने आप को पहले से अधिक निरापद समझ कर अपना पलड़ा भारी रखने का निरन्तर प्रयत्न कर रहा है।

इस सप्ताह चुनाव के सम्बन्ध में सर्वाधिक मनोरंजक तथा महत्वपूर्ण बात विभिन्न दलों के गठबन्धन की रही। भूतपूर्व विधि मंत्री डा० अम्बेदकर के परिगणित जाति संघ ने भी कहीं सोशलिस्ट पार्टी से तथा कहीं-कहीं किसान मजदूर प्रजा पार्टी से भी गठबन्धन करने का निर्णय कर लिया है। प्रमुख विरोधी दल भारतीय जनसंघ ने यद्यपि अभी अपने प्रतिनिधियों का चुनाव कार्य सम्पन्न नहीं किया है, तथापि इस नव-निर्मित दल की, राजनैतिक क्षेत्रों में पर्याप्त चर्चा है तथा सभी विरोधी दल जन-संघ की संगठित शक्ति का पूर्ण अनुमान करके ही चुनाव की तैयारियों में व्यस्त हैं।

हिमाचल प्रदेश की विधान सभा के लिए २५ व २७ अक्तूबर को चिनी निर्वाचन क्षेत्र में जो मतदान हुआ, उसमें बारह हजार मतदाताओं में से केवल १० प्रतिशत ने ही मत दिये। इस क्षेत्र का चुनाव परिणाम ८ नवम्बर को घोषित होगा। भारतीय जन-संघ के प्रायः सभी प्रतिनिधियों के चुनाव पत्र रद्द कर दिये जाने के कारण कांग्रेसी प्रतिनिधियों को अपनी विजय की आशा प्रतीत होती है, किन्तु फिर भी संघर्ष काफी कठिन होने की संभावना है।

नई संविधान सभा

चिरकालीन चर्चा के पश्चात् काश्मीर में संविधान सभा का निर्माण हो गया है तथा जेहलम नदी के तट पर स्थित हरमहल में इस नवनिर्मित संविधान सभा का सम्मेलन भी आरम्भ हो गया है। यह तो स्पष्ट ही है कि संविधान सभा का निर्माण एकदलीय आधार पर हुआ है अथवा प्रजातंत्रीय प्रणाली के अनुसार, क्योंकि शेख अब्दुल्ला की सरकार द्वारा चुनाव से पूर्व जो स्थिति जानबूझकर निर्माण की गई थी, उसमें किसी भी दल के लिए नेशनल कांफ्रेंस के विरोध में चुनाव लड़ना सम्भव ही नहीं था। जम्मू की प्रजापरिषद् द्वारा चुनाव का बहिष्कार कर देने के बाद तो चुनाव एक ढकोसला मात्र ही रह गया था। काश्मीर के इन चुनावों में गड़बड़ी डालने की पाकिस्तान ने भरपूर चेष्टा की, किन्तु उसके प्रयत्न विफल रहे।

बर्मा के प्रधानमन्त्री श्री थाकिन नू की पत्नी के राजधानी में स्वागत का एक दृश्य।

अन्तर्राष्ट्रीय घटना-चक्र

गत सप्ताह विश्व के कुछ भागों में दो तीन ऐसी घटनायें घटित हुई हैं।

श्री ख्वाजा नाजिमुद्दीन

पाकिस्तान के नये प्रधान-मन्त्री

जिनका प्रभाव अत्यन्त दूर व्यापी होने की सम्भावना है। ब्रिटेन के आम चुनावों में अनुदार दल का बहुमत हो जाने के कारण ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री चर्चिल पुनः प्रधानमन्त्री के पद पर आरूढ़ हो गये हैं, तथा उन्होंने ब्रिटेन से सम्बन्धित कुछ गम्भीर समस्याओं के प्रति अपना जो दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। वह ब्रिटेन की परिवर्तित वैदेशिक नीति का द्योतक है। उन्होंने मध्यपूर्व [मिश्र व ईरान] की समस्याओं के समाधान को अपने नये मंत्रिमण्डल की कार्यसूची में प्रथम स्थान देने का निश्चय किया है।

इधर पाकिस्तान में श्री लियाकत अली खां की आकस्मिक हत्या के परिणाम स्वरूप देश की राजनीति में कुछ उलट फेर तथा नेतृत्व में कुछ परिवर्तन की सम्भावना प्रकट की जा रही है। कूटनीतिक क्षेत्रों में इस बात की आम चर्चा है कि देश का प्रधान मन्त्रित्व पाकिस्तान के भूतपूर्व गवर्नर जनरल ख्वाजा नाजिमुद्दीन को सौंप दिये जाने के पश्चात् भी सत्तारूढ़ दल मुस्लिम लीग की बागडोर स्व० जिन्ना की बहिन फातिमा जिन्ना के हाथों में आजावेगी।

हिन्दी जगत की लोकप्रिय एवं सरलतम वर्ग पहेली

१५००) रु० कुसुम पहेली नं० ६ में जीतिए

१०००) रु० सर्वशुद्ध हल पर — २५०) रु० क्रमशः ३ अशुद्धियों तक २५), १५) तथा १०) रु० क्रमशः सर्वाधिक पूर्तियां भेजने वालों को।

पूर्तियां पहुचने की अन्तिम ता० २३-११-५१

१ कु	सु	२ म	■	■	३ आ	ल	४ मी
	■		■	५ ह	ल	■	ता
६ बा	द	■	■	७ आ	द	त	■
■	८ व		९ म	■	■	■	१० म
■	■	११ दी	पा	व	ली	■	रा
१२ बी	१३ सा	■	न	■	१४ क	लो	■
र	थ	■	१५ दा	न	व	■	१६
बा	■	■	■	१७ पी	ला	■	ब

संकेत बायें से दायें— (१) सरस प्रगतिशील मासिक। (३) इच्छित वस्तु प्राप्त करने के लिए कर्म करना आवश्यक है, ······होने से तो सफलता नहीं मिलती। (५) इस के बिना खेती करना असम्भव है। (६) अधिक वर्षा होने पर नदियों में·····आ जाती है। (७) ···पड़ जाने पर मनुष्य परेशान हो जाता है। (८) राजपूत अपने इसकी मर्यादा रखने के लिए अपनी प्राण तक दे देते थे। (११) हिन्दुओं का एक त्यौहार। (१४) मार. ····बातें कहने वाले व्यक्ति के प्रति हमारे विचार, अच्छे नहीं रहते हैं। (१५) असुर राक्षस। (१७) मलेरिया ज्वर दूर होने के बाद मनुष्य का·····नजर आना स्वाभाविक ही है।

ऊपर से नीचे—(१) परिवार। (२) नाममात्र शुल्क लिए। पीछे समझे दे देते हैं। (४) श्री रामचन्द्र की पत्नी। (६) "पानदान" बिगड़ गया है। (१०) मनुष्य अपने जीवन के आखरी श्वास तक इसका मोह नहीं छोड़ता है। (१२) सैनिक अफसर म····होना आवश्यक है। (१३) मेले तमाशों में यदि बच्चे का·····छूट जाय तो फिर उसे ढूंढना कठिन हो जाता है। (१६) कहते हैं श्री लियाकत अली को मारने में किसी······का हाथ था।

पहेली भरने का ढंग—इस पहेली में जितने शब्द हैं वे सब निम्न शब्दों में से लिए गये हैं। इन शब्दों के अलावा इस पहेली में कोई अन्य शब्द प्रयोग में नहीं लाया जायगा।

कुसुम, मत, मन, आलमी, आलसी, मीता, कुनबा, हल, जल, बाद, बादल, आदत, वतन, वचन, मपानदा, काया, माया, दीपावली, पीरता, वीरता, साथ, हाथ, कलो, बली, दानव, दल, कल, पीला, ढीला।

नियमावलि—प्रथम दो पूर्ति की फीस १) रु०, फिर प्रत्येक के ।।) आने जोकि मनिआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा भेजनी चाहिए। मनीआर्डर की रसीद पूर्तियों के साथ अवश्य भेजें। मनिआर्डर कूपन पर तथा लिफाफे के ऊपर अपना नाम व पता साफ २ लिखें। उत्तर स्याही से लिखकर भेजने चाहिएं। पुरस्कार की रकम में से पुरस्कार विजेताओं को 'कुसुम' मासिक का वार्षिक ग्राहक बना लिया जाता है। ३ अशुद्धि वालों को पुरस्कार कूपन के रूप में पुरस्कार दिया जायगा। पहेली के लिए वर्ग बनाना आवश्यक नहीं है, सादे कागज पर हल लिखकर भेजा जा सकता है। पूर्तियां रास्ते में गुम हो जाने का तथा डाक द्वारा नियत तारीख के बाद पहुँचने का कार्यालय जिम्मेदार न होगा। दो पूर्तियों से कम स्वीकार नहीं की जाती हैं। शुद्ध हल दैनिक अर्जुन के २८ नवम्बर के अङ्क में तथा 'कुसुम' मासिक के दिसम्बर अङ्क में छपेगा। पहेली सम्पादक का निर्णय प्रत्येक हालत में सब को मान्य होगा, इन्हीं शर्तों पर कोई भी सज्जन इस प्रतियोगिता में भाग ले सकता है।

पूर्तियां एवं मनिआर्डर भेजने का पता :—

मैनेजर — कुसुम पहेली, डिग्गी बाजार, अजमेर।

[पृष्ठ १२ का शेष]

जाओ रानी, याद रखेंगे
ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा
स्वतन्त्रता अविनाशी।
होवे चुप इतिहास
लगे सच्चाई को चाहे फांसी,
हो मदमाती विजय
मिटादे गोलों से चाहे झांसी।
तेरा स्मारक तू ही होगी,
तू खुद अमिट निशानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख,
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो,
झांसी वाली रानी थी॥

ईस्टर्न पंजाब रेलवे

सूचना

ई० पी० रेल्वे का नया समय-विभाग ६ नवम्बर १९५१ से लागू होगा न कि १ नवम्बर १९५१ से, जैसा कि पहले सूचित किया गया था।

महत्वपूर्ण विशिष्ठताएं

१. चालु की गई अतिरिक्त गाड़ियां

जिन स्टेशनों के मध्य चालू की गई :—

ट्रेन नं०	नाम	से	छूट	तक	पहुंच
२१ अप	मेल	दिल्ली	१४-३०	अमृतसर	२२-१५
२२ डाउन	,,	अमृतसर	१७-२०	दिल्ली	२२-१०

२. जहां गाड़ियां रुकने लग जायगी:—

११ डीयूके (पुराना नं० ३५) निलोखेड़ी पर।

एफ १ डाउन गिल, जस्सोवाल, के यू. पी. और हिम्मताना पर।

२ एबी पी वर्का, कायूनागल, जैन्तीपुरा और परमानन्द पर।

३. जहां गाड़ियाँ रुकनी बन्द हो जायेंगी

३४ डाउन मुरादनगर पर।

५ यूआर माइनपुर पर।

४. जिन गाड़ियों की गतियां बढ़ा दी गई

६ डी एस यू अम्बाला कैंट और दिल्ली के मध्य।

१ डी. एस यू सहारनपुर और अम्बाला कैंट के मध्य।

३३ अप दिल्ली और सहारनपुर के मध्य।

२७ अप दिल्ली और अम्बाला कैंट के मध्य।

५. पैसेंजर ट्रेनों के नामों में परिवर्तन।

३५ अप और ३६ डाउन पैसेंजर ट्रेनें जिनमें सेकिण्ड, इन्टर और थर्ड क्लास के डिब्बे होते हैं और जो दिल्ली और अम्बाला कैंट के मध्य चलती हैं उनके नम्बर ११ डी यू के और १२ डीयूके कर दिये जायेंगे और वे समस्त क्लासों के मुसाफिर ले जायेंगी।

६. जिन गाड़ियों का मेल किया गया

दिल्ली से चलने वाले ३ अप फ्रन्टियर मेल का अमृतसर पर २७ अप कश्मीर मेल के साथ पटानकोट के लिए।

कुरुक्षेत्र से छूटने वाली २ एन के का नरवाना पर १३ अप के साथ फिरोजपुर कैंट के लिए।

हिसार से छूटने वाली १ एल जे एच का लुधियाना पर २१ अप के साथ अमृतसर के लिए।

ऊंचो दुआवा से छूटने वाली ५ जे आरजे का जलंधर सिटी पर २१ अप के साथ अमृतसर के लिए।

अमृतसर से छूटने वाली—२२ डाउन का जलंधर शहर पर के—१ डाउन के साथ नाकोदर के लिए।

करनाल की तरफ से आने वाली ७८ डाउन का दिल्ली पर १ डी एस यू के साथ सहारनपुर की तरफ के लिए।

७. सीधे जाने वाले डिब्बे।

१ नवम्बर, १९५१ से सैकिन्ड इंटर और थर्ड क्लास वाली एक सीधी जाने वाली बोगी जालधर शहर के रास्ते होकर अमृतसर और फिरोजपुर कैंट के मध्य ६८ डाउन। १ जे एफ और २ जे एफ। ७७ अप के साथ चला करेगी।

८ एअर कन्डीशन्ड डिब्बों का बन्द किया जाना

१ नवम्बर, १९५१ से दिल्ली और कालका के मध्य १ अप और २ डाउन मेल ट्रेनों के साथ एअर कन्डीशन्ड डिब्बों का चलना बन्द कर दिया जायेगा।

९ ट्रेनों के समयों में परिवर्तन

ट्रेन नं०	स्टेशन से	स्टेशन तक	छूट का समय	पहुंच का समय
६३ अप	दिल्ली	अमृतसर	६-१५	२२-४०
९ एम एस	मेरठ शहर	सहारनपुर	५-५०	९-३५
१ डी एस यू	दिल्ली	अम्बाला कैंट	१४-३०	२३-००
जे. अप	अम्बाला कैंट	अम्बाला शहर	१७-२०	१७-३१
३ जे ए	जालंधर शहर	अमृतसर	७-००	९-४५
३ डी एस	दिल्ली	सहारनपुर	१९-००	०० ५०
१ एस यू	सहारनपुर	अम्बाला कैंट	५-२५	८-००
३३ अप	दिल्ली	सहारनपुर	२०-२०	००-२५
८ एन एम	मेरठ शहर	नई दिल्ली	७-१०	९-४७
६ डी एस यू	अम्बाला कैंट	दिल्ली	४-२०	१२ ३५
३४ डाउन	सहारनपुर	दिल्ली	१-३९	५-४५
६६ डाउन	अमृतसर	दिल्ली	१३-३५	९-५०
२८ अप। डाउन	पटानकोट करनाल होकर दिल्ली		१७-४१	७-४०
२ एस यू	अम्बाला कैंट	सहारनपुर	९-४७	१२ १०
के. डाउन	अम्बाला शहर	अम्बाला कैंट	१८-२२	१८ ३३
एच डाउन	अम्बाला शहर	अम्बाला कैंट	९-२०	९-३१
पी. अप	दिल्ली	बहादुरगढ	१७-३५	१८ ५५
१ बी एफ	भटिण्डा	फिरोजपुर कैंट	२२ २३	१-५
५ यू आर	अम्बाला कैंट	रोपड	१७-४५	२१-३५
आर अप	दिल्ली	सोनीपत	१९-१५	२०-५०
७ डी यू के	पानीपत	अम्बाला कैंट	५-३०	९-००
७७ अप	दिल्ली	अमृतसर	१२-५५	४-५५
(करनाल और धुरी के रास्ते होकर)				
११ डी यू के (पुराना नं० ३५ अप)	दिल्ली	अम्बाला कैंट	१७-५०	२३-१०
१२ डी यू के (पुराना नं० ३६ डाउन)	अम्बाला कैंट	दिल्ली	४-००	९-३०
८ डी यू के	अम्बाला कैंट	पानीपत	१९-२६	२३-०
१ जे एफ	जालन्धर शहर	फिरोजपुर कैंट	६-५	९-५४
१० जे एच	जालन्धर शहर	होशियारपुर	१४-५	१६-३०
७ जे एच	होशियारपुर	जालन्धर शहर	१५ ०	१६-४०
१—जे एन	नाकोदर	”	७-५५	९ २०
के-१ डाउन	जालन्धर शहर	लुधियाना	१६ १५	१९ २४
(नाकोदर होकर)				
के-१ अप	लुधियाना	जालन्धर शहर	१० ४५	१४-००
(नाकोदर होकर)				
२ ए ए	अटारी	अमृतसर	७-४३	८-४५
१ ए ए	अमृतसर	अटारी	६ ३५	७-२८
७ बी क्यू	कादियां	बटाला	८-००	८-३०
८ बी क्यू	बटाला	कादियां	९-००	९-३०
५ ए बी पी	पठानकोट	अमृतसर	१८ ३५	२१-५८
२ ए बी पी	अमृतसर	पठानकोट	३ २५	६-४५
२७ डाउन	अमृतसर	”	७-५०	१०-४०
४ पी एन (एन जी)	नगरोता	”	११-३०	१६-५५
३ पी एन (एन जी)	पटानकोट	नगरोता	४-००	९-३५
२ पी एन (एन जी)	नगरोता	पठानकोट	७ १५	१२-४५
४ बी एच	हिन्दुमलकोट	भटिण्डा	१८-४५	२१-५०
३ बी एच	भटिण्डा	हिन्दूमलकोट	१५-१०	१८-१५
२ बी एच	हिन्दूमलकोट	भटिण्डा	११ ४०	१४ ४५

१० मध्यवर्ती स्टेशनों पर गाड़ियों के समय जानने के लिए सम्बन्धित स्टेशन मास्टरों से पूछताछ करनी चाहिये।

११ ६ नवम्बर १९५१ से लागू होने वाली समय और किराये की पुस्तक शीघ्र ही सब रेल्वे बुक स्टालों पर ६ आने प्रति प्रतिलिपि के हिसाब से बिकनी प्रारम्भ हो जाएगी।

१२ हमारे समय विभाग के गुरुमुखी और हिन्दी संस्करण भी, जो प्रकाशित किये जायेंगे, ४ आने प्रति प्रतिलिपिके मूल्य पर बुक स्टालों पर मिल सकते हैं।

—चीफ एडमिनिस्ट्रेटिव आफीसर, दिल्ली।

वीर अर्जुन
दिल्ली रविवार
२७ कार्तिक सम्वत २००८

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १८] दिल्ली, रविवार २७ कार्तिक सम्वत् २००८ [अङ्क २८

विचार-प्रकाशन की स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
और जब तक हमारे संविधान में इसकी गारण्टी नहीं कर दी जायगी,
हम तब तक चैन नहीं लेंगे।

काश्मीर का भविष्य

काश्मीर में संविधान-परिषद् के एकपक्षीय निर्वाचन से बाह्य रूप से शेख अब्दुल्ला की लोकप्रियता निर्विवाद तथा असंदिग्ध प्रमाणित हो गई, यद्यपि इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि काश्मीर के इन निर्वाचनों में सभी उचित अनुचित साधनों का प्रयोग कर नैशनल कान्फ्रेंस के उम्मीदवारों के विरोध में किन्हीं भी अन्यदलीय उम्मीदवारों को खड़ा नहीं होने दिया गया। इसमें भी अब सन्देह नहीं रह गया है कि काश्मीर की संविधान सभा का प्रत्येक निर्णय शेख अब्दुल्ला का ही स्वतन्त्र निर्णय होगा। भारत के स्वतन्त्र संविधान की विद्यमानता में आ नये संविधान के निर्माण के औचित्य अथवा अनौचित्य के विस्तार में न जाते हुए भी मानव विवेक बुद्धि को यह स्वीकार करना पड़ता है कि हमने अपनी एक अदूरदर्शितापूर्ण वैधानिक भूल के कारण काश्मीर को भारत की अन्य रियासतों से सर्वथा पृथक रख कर स्वत ही स्वतन्त्र सिद्ध कर दिया है। इससे पूर्व भी शेख अब्दुल्ला अनेक बार काश्मीर को पूर्णतया स्वतन्त्र रखने की घोषणा करते रहे हैं, तथा उनके अब तक के किसी भी वक्तव्य से उनकी काश्मीर को भारत का अंग बनाने की सद्भावनापूर्ण इच्छा प्रकट नहीं हुई। काश्मीर विधानपरिषद् में दिये गये अपने प्रथम भाषण में काश्मीर के भविष्य पर प्रकाश डालते हुए आपने भारत तथा काश्मीर के बीच भावी सम्बन्धों की भी चर्चा की, तथा शासन सम्बन्धी सभी विकल्पों का विश्लेषण किया। आपने कहा कि काश्मीर पर कबाइलियों के आक्रमण के समय भारत सरकार ने काश्मीर के लोगों के स्वभाग्य निर्माण के अधिकार का आदर करते हुए अस्थायी रूप से भारत में शामिल होने के प्रवेशपत्र पर हस्ताक्षर करने के आधार पर जो सैनिक सहायता प्रदान की है उस से भारत तथा काश्मीर के बीच लोकतन्त्रात्मक आदर्शों की समानता प्रकट होती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने पाकिस्तान की सामन्तवादी प्रवृत्तियों की अपेक्षा भारत की लोकतन्त्रात्मक प्रवृत्तियों पर विश्वास करने की घोषणा की है। भारत के साथ मिलने में उन्होंने भारत काश्मीर के बीच यातायात की व्यावहारिक कठिनाइयों का भी उल्लेख किया है। आज के प्रगतिशील युग में किसी देश के दो भागों को मिलाने की यातायात सम्बन्धी कठिनाइयों को किसी भी दशा में स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि इस कठिनाई का निवारण सरलता से हो सकता है। इन सब दृष्टियों से काश्मीर भारत के साथ मिलने में कोई युक्तियुक्त व्यावहारिक कठिनाई नहीं प्रतीत होती।

काश्मीर की संविधान सभा का निर्णय काश्मीर को भारत के साथ मिलाने के पक्ष में होगा, अथवा नहीं यह तो अभी तक अनिर्णीत है। किंतु जिस प्रकार काश्मीर की जनता को अपने भविष्य का निर्णय करने का अधिकार है उसी प्रकार अब भारत को अपनी काश्मीर सम्बन्धी नीति पर पुनःविचार करना आवश्यक है। काश्मीर को भारत के साथ मिलाने पर भारत पर जो उत्तरदायित्व पड़ जाता है, उसको देखते हुये भारत को स्पष्ट रूप से अपनी नीति निर्धारित करनी पड़ेगी। विगत चार वर्ष से भारत ने काश्मीर की समस्या को अपनी निजी समस्या मानकर अपनी अन्य-अनेक की आन्तरिक समस्याओं की ओर से भी आँखें मूंदकर काश्मीर हर प्रकार की सहायता प्रदान की, जिसके फलस्वरूप इसे राष्ट्रीय कोष पर असाधारण बोझ बढ़ता जा रहा और आज भी भारत की किसी भी गम्भीरतम समस्या को काश्मीर की तुलना में गौण समझा जाता है। काश्मीर सरकार को धन जन की चिन्ताओं से मुक्त रखने का भी भारत सरकार ने बड़ा सम्पूर्ण प्रबन्ध किया है। इन सबके बदले में भारत को अब तक क्या लाभ हुआ? क्या भारत सरकार का अन्य रियासतों की तरह काश्मीर पर लेशमात्र भी नियन्त्रण है? काश्मीर के प्रधान मन्त्री के भी सभी वक्तव्यों से तात्त्विक रूप से जो मन्तव्य प्रकट होता है वह भी यही है कि काश्मीर पर भारत सरकार का वस्तुतः कोई नियन्त्रण न होते हुये भारत काश्मीर की रक्षा व्यवस्था, यातायात के मार्गों तथा वैदेशिक मामलों में पर्याप्त सहायता पहुँचाता रहे। परस्पर सहयोग के आधार पर तो भारत के सभी राष्ट्रों के साथ मैत्री सम्बन्ध हैं, फिर काश्मीर की विशेषता ही क्या रही? मैत्री सम्बन्धों के आधार पर ही कोई प्रदेश किसी देश का अविभाज्य अंग नहीं माना जा सकता, जब तक कि उस पर पूर्णतया वैधानिक नियन्त्रण न हो। काश्मीर का स्वतन्त्र विधान बन जाने के पश्चात् स्थिति पहले से और भी अधिक जटिल होगई इसलिये समय की मांग है कि उस जटिलता की गम्भीरता को सामने रखकर पूर्व परम्परा का अनुकरण न कर, स्वतन्त्र रूप से विचार किया। वर्तमान अवस्था में काश्मीर का प्रश्न किसी व्यक्ति पर ही छोड़ देना एक राष्ट्रघातक अदूरदर्शिता होगी जिसके परिणाम अत्यन्त भयंकर होंगे।

वित्तमंत्री का चुनाव भाषण

भारत सरकार के वित्तमंत्री चिन्तामन देशमुख लोक-सभा की सदस्यता के लिए कांग्रेस टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं। उन्होंने सांगली की एक सार्वजनिक सभा में देश की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में जो विचार प्रकट किये हैं, वे कांग्रेस के समर्थक न होकर कांग्रेस के निन्दक हैं। उन्होंने इस भाषण में कहा है कि अखण्ड भारत का रक्षा व्यय १२० करोड़ रुपये था वह अब २०० करोड़ रुपये हो गया, शरणार्थियों के पुनर्वास पर भी सरकार को १०० करोड़ रुपये व्यय करना पड़ा देश में अन्न, रुई और जूट की कमी हो गई। इन सभी कठिनाइयों का कारण देश विभाजन है। श्री देशमुख अपने श्रोताओं को यह विश्वास कराना चाह रहे थे कि इन आर्थिक कठिनाइयों का कारण देश का विभाजन है, कांग्रेस सरकार की कोई शासन सम्बन्धी भूल नहीं। परन्तु वह यह भूल गए कि कांग्रेस के विरोधी, कांग्रेसी नेताओं पर सबसे बड़ा आक्षेप ही यह करते हैं कि उन्होंने अदूरदर्शिता पूर्वक और देश की जनता का मत जाने बिना, न केवल देश का विभाजन स्वीकार कर लिया, अपितु अब उसे स्थिर रखना चाह रहे हैं और जो देश को पुनः अखण्ड बनाने की बात कहते हैं उनको वे साम्प्रदायिक कह कर उनका मुख बन्द कर देना चाहते हैं।

मि० चर्चिल की नई नीति

मि० चर्चिल ने किंग द्वारा जो अपनी सरकार की भावी शासन-नीति की घोषणा कराई है, उसे सुन कर भारतीय क्षेत्रों में फैली हुई आशंकाओं का निराकरण हो गया है। मि० चर्चिल ने किंग के शब्दों में अपने आपको विशुद्ध व्यावहारिक व्यक्ति ही सिद्ध करने की चेष्टा की है और उन्होंने अपनी नीति में कोई ऐसी लम्बी-चौड़ी आशाएं भी जनता को नहीं दीं, जो कि देखने में या व्यवहारिक रूप से पूरी होने में असम्भव अथवा कठिन प्रतीत होती हों। उन्होंने अपने भाषण में ऐसी कोई भी कटु बात नहीं कही, जो किसी भी देश अथवा राष्ट्र-मंडल के सिद्धान्तों के विरुद्ध होकर भयावह हो। अपनी इस नई नीति में सर्वप्रथम उन्होंने अपने देश की आर्थिक व्यवस्था को प्राण-प्रण से ठीक करने के लिए कहा है। वे मुद्रास्फीति को किसी भी मूल्य पर और किसी भी प्रकार की कड़ी से कड़ी कार्रवाई करते हुए रोकने की चेष्टा करने के लिए कटिबद्ध हैं। मि० चर्चिल की, यह आशा कि उनकी सरकार अपने पूर्ण बल से सर्वोच्च स्तर पर समझौता करके शीत युद्ध बन्द करने की क्षमता रखती है, और वे तथा उनके वैदेशिक सचिव मि० एन्थोनी ईडन दोनों का यह विश्वास करना कि पूर्ण प्रयत्न करने से संसार के दोनों दलों का मतभेद समाप्त किया जा सकता है, इन आशाओं का हम स्वागत करते हैं, बशर्ते कि यह वास्तव में कूटनीतिज्ञता-पूर्ण आशाएं न हों। चुनाव के समय मजदूर दल वालों ने मि० विन्सटन चर्चिल को युद्ध लिप्सु कहा था। अब देखना यह है कि ब्रिटेन के रक्षा सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करने के लिए लोक-सभा की गुप्त बैठक से मि० चर्चिल कौन से प्रमाण व तर्क प्रस्तुत कर उक्त कथन को झूठ सिद्ध करने के लिए निकाल कर लाते हैं?

लेखकों से—

लेखकों से नम्र निवेदन है कि वह जो रचना भेजें, उसकी एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रख लें। प्राप्ति के अनन्तर कार्यालय से केवल उनकी स्वीकृति की ही सूचना (बारह दिन के भीतर) भेजी जावेगी। हमारी स्वीकृति न मिलने पर रचना अस्वीकृत समझें।

—सम्पादक

भारत का पड़ौसी अफगानिस्तान

★ श्री नीरस योगी

आज विश्व में अशान्ति के बादल मँडरा रहे हैं। कोई भी देश आज अपने अस्तित्व को युद्ध की विभीषिका से सुरक्षित नहीं पा रहा है। अफगानिस्तान भी रूस की सीमा के समीप होने के कारण अपने भविष्य के सम्बन्ध में चिन्तित है। अफगानिस्तान पाकिस्तान की पश्चिमी सीमा पर स्थित एक महत्वपूर्ण प्रदेश है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के कारण इस प्रदेश को भारत (जिसमें पाकिस्तान भी सम्मिलित है) और रूस के मध्य का प्रदेश माना जाता है। २७०,००० वर्गमील में फैले हुए इस पठारी भू प्रदेश में प्राय ७१ लाख मनुष्य निवास करते हैं। अधिक से अधिक इस देश की लम्बाई ७०० मील है और चौड़ाई २५० मील। इस स्थान से पूर्वी-दक्षिणी सीमा पर काश्मीर चित्राल, उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त व पाकिस्तान के बिलोचिस्तान जिले तक फैली हुई इसकी विशाल व दुर्गम सीमा है। सीमा के इस ओर स्थित घाटियाँ इतिहास में अपना विशेष स्थान रखती हैं। अनेक आक्रमणकारी आये और चले गये, परन्तु आज भी यह पर्वत प्रदेश अपना मस्तक ऊंचा रखे हुए है।

कृषि

अफगानिस्तान एक पहाड़ी देश है। देश की भूमि उर्वरा है। जहां भी पानी प्राप्त हो सकता है खेती की जाती है। प्रायः २० हजार वर्गमील भूमि कृषि योग्य है। मुख्य उपज जौ, गेहूँ, चावल, वनस्पति, फल, चुकन्दर व रुई हैं। फलों का व्यापार देश की आय का मुख्य साधन है।

कच्चा माल व उद्योग धन्धे

औद्योगिक दृष्टि से अफगानिस्तान एक पिछड़ा हुआ प्रदेश है। केवल कुछ कारखाने ही १९२० ई० तक के अन्तकाल में खोले गये हैं। १९१२ में हथियार कारतूस इत्यादि बनाने के लिये एक कारखाना काबुल में खोला गया था। उत्तरी प्रान्तों में बिजली उत्पादन केन्द्र स्थापित किये जाने के पश्चात् छोटी मोटी कई कपड़ा मिल खुल चुकी हैं। चावल कूटने, ऊनी कपड़ा बनाने व बरफ बनाने के कारखाने भी खोले गये हैं। कोयला व तेल प्रचुर मात्रामें मिल जाने के कारण उन्नति की अनेकों योजनायें बनाई जा रही हैं। द्वितीय महायुद्ध के कारण अनेकों योजनाओं को मूर्तरूप नहीं दिया जा सका था। आज भी मँहगाई के कारण व उपयोगी माल के अभाव में देश की पूर्ण रूप से उन्नति नहीं हो रही है। स्थानीय उद्योगों में फलों व कालीन बनाने का उद्योग अत्यन्त विकसित है। भेड़ के चमड़े के कोट चमड़े की वस्तुऐं व तांबे के बर्तन बनाने के उद्योग अत्यन्त विकसित हैं।

जनसंख्या व धर्म

अफगानिस्तान में कभी जनगणना नहीं की गई है। देश की जनसंख्या प्राय ७२ लाख है। इस प्रकार प्रत्येक वर्गमील में केवल २७ मनुष्य निवास करते हैं। देश का काफी बड़ा भाग मरुस्थल होने के कारण निवास योग्य नहीं जलालाबाद काबुल इत्यादि शहरी क्षेत्रों में आबादी घनी है। देश की अधिकतर जनता गरीब है। गरीबी व अन्य आर्थिक कारणों से विवाह देर में होते हैं। इस प्रकार जनसंख्या में प्रतिवर्ष दो प्रतिशत से अधिक वृद्धि नहीं होती है।

राज्य का धर्म इस्लाम है। सुन्नियों की संख्या अधिक है। इसके अतिरिक्त कुछ भारतीय व जर्मन इत्यादि नागरिक भी यहां रहते हैं।

परिवार का वृद्ध घर का मुखिया होता है। स्त्रियों पर अनेक पाबन्दियां हैं। विवाह प्राय १७ से १८ वर्ष की अवस्था में किये जाते हैं। केवल कुछ पठान ही दीर्घ काल के लिये देश के बाहर जाते हैं।

विधान व सरकार

शासन की दृष्टि से देश को ७ प्रमुख व २ छोटे प्रांतों में विभक्त किया गया है। १९३१ में शरीयत व सुन्नी कानूनों के अनुसार विधान का निर्माण किया गया। इस विधान के अन्तर्गत देश का शासन १२० सदस्यों की धारा सभा द्वारा चलाया जाता है। उच्च सदन के ४२ सदस्यों की नियुक्ति शाह द्वारा की जाती है। शाह इन दोनों सदनों का अध्यक्ष होता है। मन्त्रीमण्डल में १४ मन्त्री नियुक्त किये जाते हैं। देश की आपत्ति के समय हजारों आदमियों को विभिन्न भागों से परामर्श के लिए बुलाया जाता है।

सुरक्षा व सेना

अफगानिस्तान को सदैव से ही अपनी सुरक्षा के लिए जागरूक रहना पड़ा है। स्थायी सेना की संख्या ८० हजार है। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष १५,००० नागरिकों को दो वर्ष तक शिक्षा के लिए बुलाया जाता है। अफगानिस्तान के पास आधुनिक शस्त्र भी काफी संख्या में हैं। प्राय ४ लाख सैनिकों को आपत्ति काल में पूर्ण रूप से सुसज्जित किया जा सकता है। देश में वायु सेना

(शेष पृष्ठ ११ पर)

देश-वार्ता

पंजाब-कांग्रेस की नाव मँझदार में

डा० भार्गव स्वतन्त्र रूप से चुनाव लड़ेंगे

राजस्थान मे जन-संघ का विस्तार

काश्मीर में संविधान सभा के निर्माण के बाद आप काश्मीर के वास्तविक तानाशाह बन गये

चुनाव चर्चा

उम्मीदवारी के पर्चे दाखिल करने की अन्तिम तिथि जैसे जैसे समीप आती जा रही है समस्त देश के नये व पुराने राजनैतिक दलों की तत्परता बढ़ गई है तथा राजनैतिक दाव पेच प्रारम्भ हो गये हैं। अन्तिम तिथि तक कौन सा दल किस दल के साथ आ मिलेगा तथा कौन व्यक्ति अपने चिरकालिक राजनैतिक जीवन को तिलांजलि देकर चुनाव में सफलता की आशा से किसी दूसरे दल के साथ आ मिलेगा यह संदिग्ध है। उम्मीदवारों के प्रश्न को लेकर ही पंजाब की कांग्रेस में विघटन मतभेद तथा अनेक उलझनें उत्पन्न हो गई हैं जिनका निराकरण करने में कांग्रेस के चोटी के नेता भी अब तक सफलता प्राप्त नहीं कर सके हैं। पंजाब के वर्तमान प्रधान मंत्री डा० गोपीचन्द्र भार्गव तथा उनके २५ साथियों ने कांग्रेस के टिकट को न लेकर स्वतन्त्र रूप से ही चुनाव लड़ने का पक्का निश्चय कर लिया है। ज्ञानी करतारसिंह ने भी कांग्रेस छोड़कर अकाली टिकट से ही चुनाव लड़ने का निश्चय किया है। दलित जाति लीग के नेता श्री पृथ्वीसिंह आज़ाद भी कांग्रेस के विरोध में कमर कसकर तैयार हो गये हैं। इस तरह पंजाब में कांग्रेस की नाव मझधार में पड़ी है।

इधर भारतीय जन संघ के प्रधान डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने भी पंजाब में अपना तूफानी दौरा प्रारम्भ कर दिया है। समस्त पंजाब में उनके स्वागत की शानदार तैयारियां की जा रही हैं। इसी से पंजाब में भारतीय जन-संघ की व्यापक लोकप्रियता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। राजस्थान में पं० हीरालाल शास्त्री के पुनः कांग्रेस में सम्मिलित हो जाने के पश्चात् भी कांग्रेस की आगामी चुनावों में सफलता की आशा असंदिग्ध नहीं कही जा सकती। राजस्थान में भारतीय जन-संघ की स्थापना हुए यद्यपि थोड़ा समय हुआ है तथापि संघ का राजस्थान में भविष्य उज्ज्वल तथा आशाप्रद प्रतीत होता है। राजस्थान में जन संघ को अन्य दलों का भी सहयोग मिलने की पूरी आशा है। किसान मजदूर प्रजा पार्टी की केन्द्रीय कार्यकारिणी ने आगामी आम चुनाव के लिए लोक सभा तथा राज्यों की विधान सभा के लिए अपने दल के लगभग ७२५ उम्मीदवारों के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय कर लिया है। ऐसा अनुमान है कि देश के लगभग ४२०० स्थानों के लिए यह पार्टी अपने १५०० उम्मीदवार खड़ा करेगी। डा० अम्बेदकर ने भी अपना चुनाव प्रचार प्रारम्भ कर दिया है।

दरभंगा जागीर हस्तगत

बिहार की सरकार ने भूमि सुधार अधिनियम के अन्तर्गत कल राज्य की सबसे बड़ी जागीर दरभंगा राज्य को अपने हाथ में ले लिया। जागीर की आय ५० लाख रुपये से अधिक है। रामगढ़राज और रामनगर जागीरों को भी हाथ में लेने का नोटिस जारी कर दिया गया है। रामगढ़ राज्य की आय १५ लाख रुपया वार्षिक से भी अधिक है।

श्री हरिलाल कानिया का देहान्त

भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री हरिलाल कानिया का हृदय की गति रुक जाने के कारण देहावसान हो गया। आप सर्वोच्च न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधिपति थे। आप जन्म [illegible] ११ वर्ष तक [illegible] हे

भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री हरिलाल कानिया का देहान्त हो गया

काश्मीर विधान सभा

काश्मीर में संविधान सभा का अधिवेशन प्रारम्भ हो [illegible]। काश्मीर के भविष्य का निर्णय काश्मीर की जनता ही करेगी [illegible] घोषणा से ही भारत पंगु हो गया [illegible]। किन्तु भारत के संविधान से पृथक काश्मीर के नये संविधान के निर्माण ने तो काश्मीर के प्रश्न को और [illegible] उलझन में डाल [illegible] दिया [illegible] कि काश्मीर का [illegible] स्वतन्त्र [illegible] है। संविधान सभा की प्रथम बैठक में ही काश्मीर की भावी नीति पूर्णतया [illegible] हो गई। नैशनल कान्फ्रेंस के [illegible] ने स्पष्ट रूप से घोषणा करदी कि काश्मीर न भारत का अंग होगा न पाकिस्तान का। इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया है कि काश्मीर के अधिनायक के रूप में शेख अब्दुल्ला का शासन [illegible] चलेगा। काश्मीर के पुनर्निर्माण के प्रश्न को लेकर नये काश्मीर का जो नारा जोर पकड़ रहा है वह हमारे लिए बहुत ही निराशाजनक है तथा हमारी राजनैतिक अदूरदर्शिता का द्योतक है। जम्मू प्रजा परिषद् शेख अब्दुल्ला के एकतन्त्रवाद का तीव्र विरोध कर रही है तथा साथ ही उसने यह भी निश्चय किया है कि इस प्रकार की स्थिति में उसे विवश होकर जम्मू तथा लद्दाख को पृथक करने की मांग करनी पड़ेगी।

भारतीय और ब्रिटिश क्रिकेट टीम का प्रथम टैस्ट मैच

भारतीय टीम और ब्रिटिश एम० सी० सी० क्रिकेट टीम के बीच प्रथम

[शेष पृष्ठ २२ पर]

श्रीमती [illegible] बम्बई के एक प्रजासेवी [illegible] का उद्घाटन कर रही हैं

भारतीय इतिहास में गुरु नानकदेव का स्थान

श्री महीपसिंह

गुरु नानकदेव का भारतीय इतिहास में एक ऐसे महत्व का स्थान है जिसका ज्ञान कुछ विचित्र परिस्थितियों के कारण सर्व साधारण शिक्षित वर्ग को ही नहीं वरन् इतिहासकारों के एक बड़े भाग को भी नहीं है। भारतीय राष्ट्र जीवन में सन्तों की परम्परा में गुरु नानकदेव का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं श्रेष्ठ है, यदि ऐसा कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। इस दृष्टि से हम अपने इतिहास पर दृष्टि पात करेंगे। भारत के महापुरुषों की तुलना हम दृष्टि से नहीं वरन् एक महापुरुष की अदृश्य विशेषताओं को प्रकाश में लाने की दृष्टि ही इसका उद्देश्य है। पौराणिक काल को छोड़कर चाणक्य एक ऐसे सन्त महात्मा आते हैं जिनका भारतीय इतिहास में एक विशिष्ट स्थान है। यूनानियों का आक्रमण भारत के सुस्पष्ट इतिहास पर लगभग प्रथम विदेशी प्रबल आक्रमण था। तत्कालीन भारतीय जनता का स्वातन्त्र्य प्रेम केवल इसी से आंका जा सकता है कि सीमान्त के एक छोटे से शासक पुरु ने उस विश्व विजयी यूनानी सम्राट अलेक्जेण्डर को अपने सम्मुख घुटने टेकने पर बाध्य कर दिया। कौटिल्य चाणक्य का कार्य उन परिस्थितियों में हुआ जब इस देश की रगों में स्वतन्त्रता की अग्नि मध्यम नहीं पड़ी थी, भारत का नागरिक अपने 'स्वत्व' से विस्मृत न था और चन्द्रगुप्त ऐसा एक महापराक्रमी पुरुष उनका कार्य साधक था। इनके पश्चात् जगद्गुरु शंकराचार्य हमारे सम्मुख आते हैं। अपने ही देश की मिट्टी और पानी में पनपा तथा अपने ही एक महापुरुष अन्तर्ज्योति से प्रस्फुटित बौद्ध-धर्म भारत की राष्ट्रीयता के मध्य में बाधक हुआ तो शंकराचार्य ने अपनी तर्क बुद्धि से उसका खण्डन कर उसका नाश किया। शंकराचार्य के समय बुद्ध-धर्म 'राज-धर्म' नहीं था इस कारण उन्हें इस कार्य में शासन का विरोध नहीं सहन करना पड़ा, बौद्ध आचार्यों में आगईं त्रुटियों ने भी भारतीय जनता का ध्यान उसकी ओर से हटा दिया था। बौद्धों का धर्म के आधार पर विदेश प्रेम और देश-द्रोह भी भारतीय शासकों और जनता का उनके प्रति विरोध का एक कारण था और ऐसे समय में शंकराचार्य ने उन सम्पूर्ण परिस्थितियों को मूर्तिरूप दे अपना कार्य साधन किया। चाणक्य और शंकराचार्य के पश्चात् सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान समर्थ गुरु रामदास का है। महाराष्ट्र में नव जीवन का संचार और छत्रपति शिवाजी ऐसे सुयोग्य साधन द्वारा हिन्दू पद पादशाही की स्थापना में उनका जो योग था वह किसी इतिहास प्रेमी से छिपा नहीं है। फिर भी हम उनकी परिस्थितियों पर विचार करें। समर्थ गुरु रामदास के पूर्व भी महाराष्ट्र में कभी ऐसा समय नहीं गया जब वह किसी न किसी वीर अथवा सन्त महापुरुष की प्रतिभा के पावन प्रकाश से आलोकित न रहा हो। समर्थ रामदास के सम्मुख यदि एक ओर निकट भूत के सन्त नामदेव, ज्ञानेश्वर त्रिलोचन, तुकाराम ऐसे महान सन्तों की परम्परा थी तो दूसरी ओर विजय नगर के महान हिन्दू साम्राज्य की गौरव युद्ध आभा भी दृष्टि से ओझल नहीं हुई थी। इस के अतिरिक्त महाराष्ट्र ने इस्लाम के धर्मान्ध अनुयायियों के जघन्य अत्याचार और उनकी पराधीनता के अधिक दिन भी नहीं देखे थे। १४ वीं शताब्दी में सर्व प्रथम अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण की ओर अपनी दृष्टि फेरी जबकि उसके पूर्व तीन शताब्दियों से अधिक समय में उत्तरी भारत विशेषरूप से आज हम विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा पद दलित हो चुका था।

अब हम गुरु नानकदेव के जन्म के पूर्व और समय की परिस्थितियों पर विचार करें जो उपयुक्त वर्णित सभी परिस्थितियों में सर्वाधिक गहन एवं विषम थी। Transformation of Sikhism के पृष्ठ २१ पर लिखित डा० नारंग के यह शब्द उस स्थिति का स्पष्ट निर्देशन करते हैं।

'The History does not tell us a single name of Hindu during the four and a half centuries that entervened the overthrow of Anang Pal and the birth of Guru Nanak himself. (साढ़े चार शताब्दियों के समय में इतिहास हमें एक भी हिन्दू का नाम नहीं बतलाता जो (पंजाब के अन्तिम हिन्दू राजा) अनंगपाल और गुरु नानक जन्म में हुआ हो।

गुरु नानक देव के समय की परिस्थिति को निम्न भागों में बाँटा जा सकता है।

राजनीतिक स्थिति

गुरु नानक के जन्म (सं० १४६९ ई०) के ४२० वर्ष पूर्व पंजाब के अन्तिम हिन्दू सम्राट अनंगपाल (सं० १००१ से १०२१ ई० तक) का पतन हो चुका था और मुसलमानों का राज्य हुआ था। इसके पूर्व भी अनंगपाल के पिता जयपाल के समय में मुसलमानों के आक्रमण प्रारम्भ हो चुके थे और जयपाल ने एक हार के प्रायश्चित्त स्वरूप ही अपने को चिता में भस्मसात् कर आत्म हत्या कर ली थी। इसके पश्चात् इस्लाम के अनुयाइयों का प्रभाव बढ़ता ही गया। मुहम्मद गजनवी तो केवल लुटेरा बनकर आया था किन्तु मुहम्मद गोरी ने इस देश में इस्लामी साम्राज्य की नींव भी डाल दी। दिल्ली भारत में इस्लामी राज्य का केन्द्र स्थान था और पंजाब था काबुल और दिल्ली के दो प्रबल यवन केन्द्रों के मध्य का प्रदेश।

इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि सम्पूर्ण पंजाब से हिन्दू संस्कृति के चिन्ह मिटा दिए गए। तलवार की धार पर पंजाब की बहुसंख्यक जनता इस्लाम की अनुयायी हो गई जो शेष हिन्दू बचे उनका जीवन एक निकृष्ट प्राणी का जीवन था जिन्हें न शस्त्र रखने का अधिकार था न घोड़े की सवारी करने का। राम और कृष्ण का नाम उनके लिए स्वप्नवत् होता जा रहा था। शेष भारत में तो यदा कदा स्वतन्त्रता की चिनगारी फूट निकलती थी और इस चिनगारी का एक तिनका भी शेष भारत की डूबती हुई हिन्दू जनता का सहारा बन जाता था किन्तु पंजाब को तो ५०० वर्षों तक एक तिनके का भी तो सहारा नहीं मिला वरन् उस पर अबाध्य रूप से अत्याचार होते रहे। चंगेज खान ने यदि आक्रमण किया तो पिसे केवल पंजाब के हिन्दू, हलाकू खान यदि आया तो गुलाम बनाए गए सर्वथा पंजाब के हिन्दू और यदि तैमूर ने आक्रमण किया तो उसका स्वागत भी पंजाब के असंख्य हिन्दुओं के शिरच्छेद और धर्म परिवर्तन से किया गया। ५०० वर्षों तक निरन्तर ही आक्रमण और अत्याचारों का पहाड़ और सहारा तिनके का भी नहीं, हम सहज ही उस प्रदेश की कल्पना कर सकते हैं।

ईरान इस्लाम के एक ही आक्रमण से धराशायी हो गया और आक्रमण के अनन्तर १०० वर्ष पश्चात् वहां प्राचीन ईरानी सभ्यता के नाम पर दो फूल चढ़ाने वाला भी कोई शेष नहीं बचा था। मिश्र एक ही आक्रमण में गया और पूर्णतया इस्लाम में रंग गया किन्तु पंजाब ने ५०० वर्षों तक बराबर परतन्त्रता, आक्रमण और अत्याचार सहने के पश्चात् भी अपने में ही नानक ऐसा एक महान्

गुरु नानकदेवजी

हिन्दू उत्पन्न किया जिसके उत्पन्न हुए कार्य ने न केवल हिन्दू मात्र की रक्षा ही की वरन् ८०० वर्षों के जमे हुए विदेशी राज्य, जिसकी जड़ें पाताल तक पहुँच चुकी थीं, को जड़ से उखाड़ फेंका और एक महान शक्तिशाली हिन्दू-राष्ट्र का निर्माण किया।

सामाजिक और आर्थिक स्थिति

गुरु नानक के जन्म के पूर्व पंजाब की सामाजिक स्थिति भी लुप्त प्राय हो चुकी थी। सोमनाथ के विनाश, असंख्य मन्दिरों के टूटने और तलवार के बल पर असंख्य हिन्दुओं के इस्लाम ग्रहण करने के कारण पंजाब का सामाजिक जीवन निराशा और निरुत्साह से भर गया था। जाति बन्धन, ऊंच-नीच और छुआ-छूत आदि अनेक कुरीतियों ने हिंदू का सामाजिक जीवन जर्जरित बना दिया था। एक तो इस्लाम 'राज-धर्म' था, दूसरा उसकी ओर आकर्षित होने से समानता और सम्मान का जीवन प्राप्त होता था, जजिया आदि अनेक धार्मिक करों से छुटकारा मिलता था और दलित, भोलेभाले [illegible] हिन्दू समाज की कुरीतियों को देख कर उसमें कुछ आकर्षण नहीं दिखता था—परिणामस्वरूप अधिकांश लोग इस्लाम की ओर प्रभावित होते जा रहे थे। नित्य की लूटमार और अनेक प्रकार के करों के कारण आर्थिक रूप से भी हिन्दू अपंग हो चुका था। सामाजिक और आर्थिक सब प्रकार से अत्यन्त गहन और विषम परिस्थिति में गुरु नानक देव का प्रादुर्भाव हुआ।

धार्मिक स्थिति

उस समय की धार्मिक स्थिति भी गुरु नानक के लिए एक विषम [illegible]

[शेष पृष्ठ ११ पर]

परीक्षोपयोगी लेख—

आलोचना साहित्य और आचार्य शुक्ल

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

★ श्री किशन स्नेही

आलोचना क्षेत्र में रामचन्द्र शुक्ल का स्थान निर्धारित करने से पहले आलोचना के इतिहास पर एक विहगम दृष्टि डालना अनुचित न होगा। अर्थात् अब तक किन किन आलोचकों की मुख्य आलोचनाएं हमें उपलब्ध हैं यह जानना आवश्यक है।

सूत्रपात

साहित्य के अन्य अंगों की तरह समालोचना का सूत्रपात भारतेन्दु युग में ही हुआ। प्राचीनकाल में आलोचना आज जैसी नहीं मिलती। वह सूत्र बद्ध रूप में मिलती है। जैसे—

'तुलसी गंग दुवौ भए, सुकविनु के सरदार'

इसमें तुलसी तथा गंग की कवित्व शक्ति की उत्कृष्टता प्रदर्शित की गई है। इसी प्रकार—

'सूर सूर तुलसी शशि, उडगन केशवदास'

तथा

'और कवि गढ़िया नन्ददास जड़िया'

इत्यादि यहां हम आलोचना का प्रारम्भ रूप से देखते हैं।

आधुनिक प्रगति

हिन्दी में आधुनिक समालोचना के जन्मदाता बालकृष्ण भट्ट तथा प्रेमघन जी माने जाते हैं। भट्टजी ने सर्वप्रथम श्री निवासदास कृत "संयोगिता स्वयम्वर" की सच्ची आलोचना की तथा दोषों पर भी प्रकाश डाला। आलोचना का प्रारम्भ तो भारतेन्दु-युग से ही हो गया था, पर महावीरप्रसाद द्विवेदी ने इसे बहुत उत्कर्ष पर पहुँचा दिया। अधिकतर आपकी आलोचनाएं निर्णयात्मक होती थीं। द्विवेदीजी का नाम आलोचना साहित्य में अविस्मरणीय रहेगा, उनके द्वारा पुस्तक समालोचना का आरम्भ हुआ, जो अब तक प्रचलित है। द्विवेदीजी से अधिक मूल्य रखने वाली साहित्यिक आलोचनाओं के लेखक हिंदी साहित्य में हैं, पर उन्हें इस बात का गौरव है कि उन्होंने श्रृंगारिक-काव्य धारा को रोक दिया, जिसके वे विरोधी थे। जहां हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ आलोचक रामचन्द्र शुक्ल उस विचारधारा को न रोक सके जिसके वे विरोधी थे।

तत्पश्चात् मिश्रबन्धु आलोचना क्षेत्र में आये और "हिन्दी नवरत्न" नामक एक आलोचनात्मक ग्रंथ लिखा। उसमें देव को बिहारी से श्रेष्ठ बताया। पं० पद्मसिंह शर्मा आलोचना क्षेत्र में आये तथा बिहारी पर एक आलोचनात्मक पुस्तक लिखी, जिसमें बिहारी को श्रेष्ठ सिद्ध किया। यह से तुलनात्मक आलोचनाओं का प्रारम्भ हुआ। पद्मसिंह जी की पुस्तक के उत्तर स्वरूप कृष्ण बिहारी मिश्र ने 'देव बिहारी' पुस्तक लिखी। यह पुस्तक मिश्रजी से उच्चकोटि की ठहरती है। लाला भगवानदीन ने 'बिहारी देव' नामक पुस्तक इसके प्रत्युत्तर में लिखी। इस युग को हम अधिकतर 'देव और बिहारी' का युग ही कह सकते हैं। आलोचनाओं के निश्चित मान तो थे नहीं, जिनके आधार पर आलोचनाएं की जातीं। सब व्यक्तिगत रुचि के अनुसार कवियों को छोटा बड़ा सिद्ध करने का प्रयास कर रहे थे।

आलोचना अपने पूर्ण वैभव पर शुक्लजी के हाथों से पहुँची। शुक्लजी ने कई नई बातों पर भी प्रकाश डाला। शुक्ल जी ने अपनी व्यक्तिगत धारणाओं के माध्यम से साहित्य का अनुशीलन किया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि शुक्ल जी एक महान आलोचक हैं। सूर, तुलसी, तथा जायसी पर जितनी विस्तृत आलोचनाएं इन्होंने लिखीं, अन्य किसी ने नहीं। आपकी आलोचनाओं के द्वारा ही जायसी जैसा अप्रसिद्ध कवि हिन्दी का ही नहीं, अपितु विश्व का एक बहुत बड़ा कवि माना जाने लगा। तुलसी को विश्व का सर्वश्रेष्ठ कवि प्रस्तुत करने का श्रेय आप ही को है।

डा० श्यामसुन्दर दास जी का नाम भी शुक्लजी के साथ आता है। सैद्धान्तिक आलोचना के रूप में आपकी 'साहित्यालोचन' है। हिंदी साहित्य का इतिहास, भाषा-विज्ञान आदि का भी आपने विशद विवेचन किया।

उसके पश्चात् कई नवीन आलोचक इस क्षेत्र में आये, उनको हम तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं।

१. प्राचीनतावादी—ये आलोचक जो प्राचीन भारतीय भावों में आस्था रखते हैं, किन्तु कुछ आधुनिक तत्वों का समावेश भी कर लेते हैं। जैसे गुलाबराय एम० ए०। आपने 'सिद्धान्त और अध्ययन, काव्य के रूप, साहित्यालोचन' आदि पुस्तकों में आधुनिक तथा प्राचीन सिद्धान्तों का समन्वय करने का प्रयास किया है। रामदहिन मिश्र ने काव्य दर्पण की रचना की। ऐसे लोग छायावादी काव्य के प्रबल विरोधी हैं।

२. छायावादी—दूसरे प्रकार के छायावाद के प्रशंसक तथा समर्थक हैं नन्ददुलारे वाजपेयी डा० नगेन्द्र, हजारीप्रसाद द्विवेदी, शान्तिप्रिय द्विवेदी, विश्वम्भर 'मानव', गंगाप्रसाद पाण्डेय आदि। इस युग के प्रधान कवि पन्त निराला तथा महादेवी भी एक श्रेष्ठ आलोचक हैं।

मार्क्सवादी आलोचना

३ मार्क्सवादी—जिनकी आलोचना का आधार मार्क्सवादी सिद्धान्त हैं। इसके प्रमुख आलोचक हैं डा० राम विलास शर्मा, प्रो० प्रकाशचन्द्र, शिवदान सिंह चौहान आदि।

आलोचना के इतिहास पर एक विहगम दृष्टि डालने के पश्चात् हमें शुक्ल जी का स्थान निर्धारित करने में कठिनाई नहीं प्रतीत होती। ऐसा कोई आलोचक अभी तक नहीं हुआ जो कि उनके समकक्ष ठहराया जा सके। कुछ एक आलोचकों ने शुक्ल जी पर कुछ दोषारोपण किये लेकिन वहां वे भूल करते हैं। जैसे शुक्ल जी और डा० रिचर्डस का अध्ययन करते हुए डा० नगेन्द्र ने प्रकट किया कि शुक्ल जी आउट आफ डेट हो गये हैं शिवदान सिंह चौहान का कथन अपनी तर्क शून्यता और दुराग्रह को ढकने के लिये अपने पन पा डरय नदर्शन का रूप रखा' और 'उन्होंने आई० ए० रिचर्डस जैसे मनोवैज्ञानिक समीक्षक की पुस्तकों में से एक प्रकरण से हटाये वाक्यों द्वारा भारतीय शास्त्रीय ग्रन्थों की स्थापनाओं और वर्गीकरण का पिष्टपेषण कराया था। इस प्रकार अपने मत की प्रशस्ति करके उन्होंने अभिव्यंजनावाद, स्वच्छन्दतावाद प्रभाववाद, मूर्तिविधानवाद, पराक्वस्तुवाद आदि साहित्यकला की आधुनिक प्रवृत्तियों को प्रवाद और वितंडावाद कह कर उसकी निन्दा की थी। कइयों का आरोप 'शुक्ल जी की शैली में शुष्कता और नीरसता है' उपरोक्त कथन क्या सचमुच सही है? हमारे विचार में उक्त आलोचकों का इन निर्णयों पर पहुँचने का क्या कारण था।

डा० देवराज के शब्दों में आलोचक एक रसग्राही पाठक होता है। आलोचक की हैसियत से उसकी विशेषता यह होती है कि वह (१) रसानुभूति का बौद्धिक विश्लेषण करने की क्षमता रखता है। (२) कृतियों के मूल्यांकन करने का प्रयत्न करता है।

शुक्ल जी की सबसे बड़ी शक्ति है रसग्राहकता। इतनी ठोस रसज्ञता वाले पाठक और आलोचक बहुत कम पैदा होते हैं जो कोई भी शुक्ल जी के सम्पर्क में आता है, वह उनकी इस शक्ति से चकित और अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकता। यह समझना भूल होगी कि शुक्ल जी विविध वादों का विरोध रसवाद की रक्षा या मण्डन के लिए करते हैं वे उनका खण्डन प्रायः इसीलिए करते हैं कि वे वाद उनकी रसग्राहिता के विरुद्ध पड़ते हैं। आप अपने हृदय से पूछें क्या छायावादी उड़ान तथा विरह यथार्थ हैं? क्या वर्मा जी कविता का सृजन करते समय उतना ही दुःख अनुभव करते हैं, पर ऐसी बात नहीं।

शुक्ल जी आउट आफ डेट नहीं हैं, उनमें सिद्धान्तों के निर्माण की नहीं तथ्यों के पकड़ने की क्षमता है। उदाहरणार्थ —

(१) काव्य में विभाव मुख्य समझना चाहिए। [चिन्तामणि भाग १ पृ० २]

(२) विभाव व्यंग्य नहीं हुआ करता है। [पृ० २४]

(३) उक्ति चाहे कितनी ही कल्पनामयी हो उसकी तह में कोई प्रस्तुत अर्थ अवश्य होना चाहिए। [पृ० २००]

(४) ज्ञान प्रसार के भीतर ही भाव प्रसार होता है। [पृ० २१२]

शुक्ल जी की रस ग्राहिणी वृत्ति ठोस सौन्दर्य निरीक्षण या अनुभूति पर आश्रित काव्य से ही सन्तुष्ट होती है।

एक सुप्रसिद्ध आलोचक का कथन 'शैली ही मनुष्य है' शुक्ल जी पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होता है। पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' के शब्दों में "शुक्ल जी का हृदय कवि है, मस्तिष्क आलोचक है, तथा जीवन एक अध्यापक है। हम उनके साहित्यिक और दैनिक व्यक्तित्व को निर्झर युक्त भूधर कह सकते हैं। जिसमें एक ओर मस्तिष्क की गम्भीर गुरुता है और दूसरी ओर हृदय की स्रोतस्विनी भावुकता।'

आपने जगह जगह हास्य के बड़े सुन्दर उदाहरण दिये हैं। जैसे—

'नदी किनारे धुआं उठत
मैं जानूं कछु होय।
जिसके कारण मैं जला
वही न जलता होय॥

(शेष पृष्ठ २१ पर)

अम्मा....

मैं उस समय लगभग आठ वर्ष का था!......मुझे उस समय का अपना जीवन आज भी वैसा ही भाता है जैसा उस समय था। मैं सोचता हूँ, मनुष्य का एक-एक पल उसके जीवन में बड़ा महत्व रखता है। न जाने कब क्या से क्या हो जाय!... और देखो, दूसरी श्रेणी में पढ़ते हुए ही मेरे जीवन मे कैसा फेर पड़ा—मैं उस समय उसकी कल्पना भी न कर सकता था। मिशन गर्ल्स हाई स्कूल के छोटे से विद्यार्थियों में एक मैं भी था। मेरी छोटी बहन तथा मुझसे बड़ी बहिन भी उसी स्कूल में थीं। कैसा निश्चिन्त जीवन था। हम लड़के लड़कियां जीवन के चिर साथियों के समान—एक जन्म से हंसते, खेलते कूदते रहते थे।......

उस दिन...... आज से लगभग दस वर्ष पूर्व—दोपहर का समय था। हम कमरे में बैठे अपनी अध्यापिकाजी से पढ़ रहे थे!... शायद हिसाब की घंटी थी! अचानक अध्यापिकाजी ने द्वार की ओर देखा—हमारा नौकर तेजू खड़ा था—साथ में थीं छोटी बहिन! (बड़ी बहिन उस दिन छुट्टी पर थीं) उसके मुख पर मैंने कुछ विचित्रता देखी!

कभी वह मुस्काना चाहती परन्तु न जाने कौन सी शक्ति उसे रोक रही थी। किन्तु उसे तथा नौकर को देखकर इतना तो मैं भांप गया कि मुझे घर लिवा जाने को आया है। तेजू ने अध्यापिकाजी के पास जाकर कुछ कहा। एकदम उनका मुख विषादयुक्त सा हो गया। जाने की आज्ञा होते ही मैं, तेजू तथा बहिन के साथ हो लिया।

मैं मार्ग में आ रहा था परन्तु मन एक बात पूछने को उत्तेजित रहा! कभी मैं बहिन के मुख की ओर और कभी तेजू को देखता! फिर मैंने पूछ ही तो लिया—"क्या बात है तेजू?"

"कुछ नहीं;... माताजी ठीक हो गई हैं।"

परन्तु इस उत्तर ने हलचल मचा दी। बहिन मेरे पास-पास चलने लगी—मानो उसे भी अभी ही पता लगा हो—और मुझसे कुछ कहकर अपनी शंका मिटाना चाहती हो। मेरा मन कहता—यह होना तो असम्भव है—प्रातः तो माताजी की तबियत बहुत ही सोचनीय थी। इसी कारण बड़ी बहिन ने छुट्टी ली थी! पिताजी भी दफ्तर नहीं गये थे! बड़े भैया भी सदा शुश्रूषा में व्यस्त थे!—परन्तु तेजू भी कैसे झूठ बोल सकता था! मार्ग में एक विचार मन में बार-बार उठता—मैं उसे दबाने की चेष्टा करता—परन्तु वह बहुत प्रबल था! शायद सत्य भी था।...हां, सत्य ही तो था।

घर पहुँचे! बहुत परिचित जन बाहर एकत्रित थे! परन्तु सबके मुखों पर विषाद की गहरी छाया थी! किसी ने मुझे बुलाया भी नहीं—मैं समझ गया वह सब क्या था!......

"माताजी.... आज बहुत दूर... चली गई थीं। छूत! अब न मिलेंगी!"

मुझे अन्तिम बार उनका मृत मुखमण्डल देखने को मिला। हृदय चाहता था कि चिपट जाऊं उनसे! परन्तु भय लगता था। अब वह एक शव था! मुझे उस दिन माताजी—अम्मा (हम उन्हें अम्माजी कहा करते थे)—प्यारी अम्माजी से भी भय लगा!......मैं गम पी गया—शिशु ही तो था! मुझे रोना तो आया—परन्तु एक भी आंसू न गिरा!......और उसके बाद अब तक जब भी रोता हूँ तो कोई आंसू नहीं गिरता—न जाने उसी समय भीतर ही भीतर सब आंसू सूख गये थे।......और आज भी मुझे तेजू पर क्रोध आता है—उसने मुझे मार्ग में ही ठीक क्यों न बताया!

घर में एक चित्र है जिसमें मैं पूज्य अम्मा की गोद में बैठा हूँ—कितना आनन्द है उसमें! मुझे वह चित्र देखकर गर्व होता है परन्तु दुःख होता है—अब वह स्वर्ग नहीं! अब तो वह सब स्मृति ही रह गई है!........ और अब भी मेरी अम्म माता हैं—उन्हीं के समान।

— कृष्ण नारायण

●

आखिर यह क्यों ?

लगभग एक सप्ताह की बात है। दफ्तर से लौटकर घर की ओर तेजी से भागा आ रहा था। कुछ कार्य की थकावट थी तथा कुछ घर जाने की जल्दी थी। अकस्मात सड़क के सामने से एक ओर ट्राम तथा दूसरी ओर मोटर गुजरने लगी। कई बार प्रयत्न करने पर भी लगभग पांच मिनट तक मैं सड़क पार नहीं कर सका। सहसा ही मुझे ध्यान आया कि मैं एक आलीशान होटल के नीचे खड़ा हूँ। यह होटल जो धन कुबेरों के नाच-रंग तथा आमोद-प्रमोद से सदा भरा रहता था। पास ही मैंने देखा कि सड़क के एक किनारे पर दो-तीन दुर्बलकाय भिखारी बैठे राह से गुजरने वालों की ओर परवशतापूर्ण दृष्टि से देखते हुये मूक याचना सी कर रहे थे।

इस दृश्य को देखकर मैं सड़क पार करना भूलकर विचार निमग्न हो गया। सहसा होटल से बहने वाले परनाले में चड़-चड़ का शब्द हुआ और पानी बहकर नीचे आने लगा। पानी से दुर्गन्ध निकल रही थी। अतः मैं बचकर एक ओर को खड़ा हो गया। वह दुर्गन्ध मुझे असह्य सी हो गई। परनाले में से सन्तरे तथा केलों के छिलके बहे आ रहे थे। मेरे आश्चर्य की सीमा न रही, जब मैंने देखा कि वे दो तीन भिखारी केले के उन छिलकों पर आपस में झगड़ रहे हैं और उनमें से एक छिलके में बचा हुआ एक सड़ा गूदा बड़े प्रेम से खा रहा है। मैं वह दृश्य अधिक देर तक देख नहीं सका। अश्रुपूर्ण नेत्रों के साथ सड़क पार की और चल पड़ा। अब भी कभी मेरे हृदय से यह ध्वनि निकल पड़ती है "आखिर ऐसे विषमता तथा मानवीय परवशता का कभी अन्त भी होगा।"

—वेदप्रकाश गाजियाबाद

●

कर्तव्य या मूर्खता

सितम्बर ४८ की बात है मैं मेल से लखनऊ से मुरादाबाद की ओर सफर कर रहा था। साथ बैठे हुये एक वृद्ध सिख शरणार्थी ने मुझ से बड़ी मीठी-मीठी बातें करनी शुरू कीं और बैठने को भी अपना स्थान दिया। मुझे अनायास ही उससे कुछ सहानुभूति होगई। दो तीन घन्टे की यात्रा के पश्चात किसी स्टेशन से टिकिट चैकर हमारे डिब्बे में घुसा। वृद्ध का चेहरा उसको देखकर उतरने लगा किन्तु मैंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। कई लोग बिना टिकट थे उनके साथ चैकर का झगड़ा होता रहा किसी की दाद फरियाद न सुनते हुये उसने १०० मील का दूना किराया चार्ज किया। किन्तु ज्यों ही वह हमारी सीट की ओर आया और सरदार जी से टिकट मांगा तो पता लगा कि वह भी बिना टिकट हैं। चैकर ने अपना हिसाब लगा कर १०० मील का चार्ज अर्थात् १०० मील का किराया शायद १=) और कुछ आने मांगा। वृद्ध ने अपना सूक्ष्म-सा सामान और वस्त्रादि झाड़-झाड़कर दिखाने शुरू किये कि मेरे पास बस इन दो चार रुपयों के अतिरिक्त और एक पैसा भी नहीं है। बहुत रोया और आखिर मुझसे भी न रहा गया मैंने चैकर महाशय पर अपना प्रभाव डालने और उन्हें समझाने के लिये अंग्रेजी में बोलना शुरू किया परन्तु वह कहां मानने वाला था। उस का एक ही तर्क था कि मैं गारन्टी से कह सकता हूं कि इसके पास इतने ही नहीं और भी पैसे हैं। ऐसे ही लोगों से रोज हमारा वास्ता पड़ता है।

एक बार को तो डिब्बे के सब मुसाफिरों को विश्वास होगया कि वृद्ध के पास वास्तव में पैसे नहीं हैं। सबने और मैंने विशेषकर चैकर से दया करने की प्रार्थना की। वह अपने निश्चय पर दृढ़ रहा। जेल और हथकड़ियों की धमकियों से वृद्ध ने अपनी इधर-उधर की गांठों में से कुछ और नोट निकालने शुरू किये किन्तु आखिर १२) देने के पश्चात् वृद्ध ने बिल्कुल घुटने टेक दिये कि चाहे जेल भेजो या कुछ करो अब मेरे पास कुछ नहीं है। सब कुछ देखते हुये भी अब फिर सब लोगों को विश्वास जम गया कि वृद्ध एक पाई भी नहीं दे सकता। आखिर मैंने चैकर से कहा कि आप नहीं मानते तो लीजिये शेष ३ रुपये और आने मैं देता हूँ।

उसने कहा बाबूजी आप इन लोगों को नहीं जानते व्यर्थ ही दया दिखाते हैं।

मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब स्टेशन आते आते वृद्ध ने न जाने कहां से शेष पैसे भी निकालकर चैकर के हाथ पर धर दिये। चैकर ने मेरी ओर मुस्कराते हुए कहा कहिये मैंने ठीक कहा था या!

मैं अपने दया भाव पर बहुत लज्जित हुआ किन्तु आज तक यह निश्चय नहीं कर पाया कि ऐसे अवसरों पर सहायता करना कर्तव्य है या मूर्खता?

—सूर्यनारायण सक्सेना, नई दिल्ली

—★—

कहानी

द्रव्य गुण

(विभूतिभूषण मुखोपाध्याय)

बड़े दिन के बाजार में यह वह खरीदते-खरीदते मेरी गठरी बहुत भारी हो गई। केवल इसी वजह से मैं कभी भी बाजार नहीं जाता हूँ। सब फरमाइशें पूरी करते करते नाकों दम आ जाती है।

सबसे पीछे मोदी की दूकान पर आया। वह हमारी जरूरतों तथा गैर जरूरतों का ख्याल न कर छोटी बड़ी पुड़ियाँ बना कर डलिया की खाली जगह को पूरी करने लगा। अन्त में उसने डलिया के चारों तरफ एक निगाह डाली और अच्छी तरह देखा। और फिर जोर से अपने हाथों को झाड़ कर बोल उठा—मोदी की जगह में जगह खाली है, वाह ! क्या मोदी है—चीज का खरीदना तो शैलेन बाबू जानते हैं और वह कपड़े धोने का साबुन तो निकालो।"

मैंने कहा—'अभी साबुन की कोई जरूरत नहीं है "

"हैं ? जरूरत नहीं ! बड़ा दिन और कह बैठे कपड़े धोने का साबुन नहीं चाहिये। क्या ही हंसी की बात कही।"

मुझे इसमें हंसी का कोई भी कारण नहीं समझ पड़ा, मगर फिर भी अपनी गैर जानकारी के सबब से मोदी महाराज को कहीं ज्यादा न हंसा दूं, इससे चुप रहा।

एक हाथ से भी लम्बा चौकोना साबुन बाहर निकाला गया। नौकर जो अभी खड़ा ही था अस्वस्थ पेड़ के नीचे अपनी टांगों में सिर झुकाये डलिया के बढ़ते हुए बोझ की तरफ कभी-कभी देखता असमर्थ एवं असहाय हो रहा था। साबुन रखते ही जोर से चीख उठा—"बापरे ! आप सब मेरी जान लेकर छोड़ेंगे।"

मोदी ने जल्दी से उसके हाथ में दो पैसे थमा दिए और कहा—"लो, बाबू पुराने खरीददार हैं—मुनाफा तो ले ही नहीं सका उल्टे कमर से दो पैसे 'मगर कोई बात नहीं हैं—दू बाबू का नौकर है खुश रह।

जो दूसरों के लिये प्राण दान कर रहे हैं उन्हीं की तरह बड़ी उदासीनता के साथ उसने डलिया उठा दी। नौकर दाहिने हाथ से आंखें पोंछते हुए घर की तरफ मुड़ा। मैंने कहा—"ठहर ! ज़रा, इन दोनों बोतलों को हाथ में लटका ले"

पाजी ने जल्दी से दो एक दफे लड़खड़ा कर दाहिना हाथ डलिया में लगा लिया और नाक के स्वर में बोला—"दोनों हाथ तो बंधे हुए हैं।"

क्रोध में शरीर झन-झनाने लगा, मगर नाराज़ होने से वह फिर भी लड़खड़ा सकता है, यह नहीं और भी जोर से लड़खड़ा सकता है, इसी आशंका से लिहाज़ आदतन मैंने कुछ भी नहीं कहा। निरुपाय होकर छड़ी बगल में दबाई और दोनों बोतलों को दोनों हाथों में लटका लिया। साथ ही इसके न जाने एक कैसी अस्वाभाविक भावना ने मानो दोनों बोतलों की चिकनी देह पर होकर मेरे दोनों हाथों पर हो मेरे सारे शरीर को आच्छन्न कर डाला। मानो ऐसा लगा कि यह जो हो रहा है, उचित नहीं हो रहा है। सन्ध्या के इस घोर अन्धकार में दोनों हाथों में दो बोतलें, बगल में छड़ी,—यह न जाने मुझे कैसा लगा। बाजार के तमाम आदमियों की आंखों में होकर अपनी तरफ देखा। यह क्या हो गया है ? मन, मानो खुद अपने ही प्रति दिल्लगी के ढङ्ग में कह उठा—"अरे यह कौन है ।"

मैं पसीने में तर हो रहा था। नौकर आवाज से होश में आया। सोचा अच्छा दुर्बल चित्त हूँ मैं—एक शरबत की खाली और एक फिनाइल की बोतल को रास्ते में बेपरवाह होकर ले जाने का सत्साहस भी मुझमें नहीं ? अन्धकार ? कोई भी सज्जन व्यक्ति अन्धेरे में अपने घर का काम नहीं करेगा ?

खूब स्वच्छन्द होकर दोनों बोतलों के लेबिल को सामने करके दोनों हाथों में पकड़ लीं एवं सारी जड़ता दूर कर मुंह पर एक सहज प्रसन्नता का भाव प्रस्फुटित कर लिया।

थोड़ी देर में समझ मे आया—इतनी प्रसन्नता का भाव दिखलाना सभी चीज नहीं हुआ। बाजार के नीचे ही विद्युत-आलोकित प्रशस्त चौराहा था। वहां पर पहुँचते ही तुरन्त अच्छी तरह मालूम पड़ा कि इस पापिष्ठ पृथ्वी पर ऐसे लोगों का अभाव नहीं है जो नौकर के सिर भोज का गुरु आयोजन एवं मालिक के हाथ में बोतल और उसके साथ प्रसन्नता की गहरी भावना चेहरे पर देख कर एक दम उल्टी मीमांसा कर बैठते हैं।

एक आदमी कनखियों से एक अर्थ पूर्ण दृष्टि डाल के चला गया। थोड़ा और आगे जाने पर एक लड़के ने अपने दोस्त को धक्का देकर मुझे दिखा दिया। थोड़ी दूर पर पान की दूकान के सामने कुछ आदमी खड़े होकर हो हल्ला मचा रहे थे। सबकी दृष्टि मेरी तरफ आकर्षित करके सिर हिला कर एक आदमी कहने लगा,—अजबता बड़ा दिन है यार ! बहुत खुश मिजाज हैं।'

इच्छा हुई बेवकूफ के सिर के ऊपर दोनों बोतलें पटक मारूं और प्रमाणित कर दूं कि मुझमें ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिससे उन लोगों के अर्थ में 'खुश मिजाज' होने की सम्भावना है।

किसी तरह क्रोध को दबा कर चौराहा पार किया। चेहरे पर प्रसन्न भाव बनाये रखना अब युक्ति संगत मालूम नहीं पड़ा।

हठात् परिचित आदमी से मुलाकात हो ही गयी, और एक भले के हो साथ। करुणामय बाबू, किसी बोर्ड आफिस में काम करते हैं। उम्र अधिक हो गई, मगर बड़े मिलनसार हैं। इसलिये और उनके निष्कलङ्क चरित्र के लिये सभी उन्हें चाहते हैं। बिहार में चार पीढ़ियों से रह रहे हैं।

थोड़ी दूर से दोनों हाथ उठा कर नमस्कार कर हंसी के साथ बोले—"ओ हो ! शैलेन बाबू हैं, कहिये अच्छे तो हैं ? अरे यह तो कोई बड़े भारी भोज का आयोजन दीखता है। कैसी मोदी है ! बिहार मे चार पुश्त कट गये मगर ऐसी गाली देखने को नहीं मिली। वाह ! साथ में हो लूं—क्यों शैलेन !"

करीब आने से दोनों बोतलों पर निगाह पड़ी। हंस कर जवाब देने को जा रहा था कि उनके मुंह के हठात विष्मय भाव को देख कर फिर मुंह से बोल नहीं निकला। कुण्ठित भाव से उन्होंने पूछा—"यह दोनों ?

मैंने थूक लील कर हंसी के साथ सहज भाव से बोलने की कोशिश की—"कुछ नहीं। दोनों बोतलों में,—एक में फिनाइल है, एक खाली है नारियल के तेल रखने के लिये।'

करुणा बाबू ने जैसे एक आग्रह पूर्ण अति सहजता के साथ विश्वास कर लिया। मुझे बात शेष न करने दी और बोल उठे—' हां जरूर—ये क्या बात ! राम कहो ! यह तो साफ लिखा है—'फिनाइल।' मैं अन्धा आदमी अब पढ़ सकता हूँ तब फिर अब किस सन्देह होगा ? छः ! छः !! यह बात तो सोचने का भी नहीं है ?'

जाड़े में भी मेरे माथे पर पसीने की बूंद झलक उठी थीं। बड़ी मुश्किल से कष्ट की हंसी हंसकर कहा—"कहां था चलेंगे मेरे साथ चलिये ना ? आज बड़े दिन की रात को पांच आदमी एक साथ बैठकर थोड़ा बहुत आमोद प्रमोद—

हठात् ख्याल आया, मेरी भाषा किधर जा रही है ? सम्भल कर बोला, "आज आप की तरह के आमोद प्रमोदी लोग ही तो—।"

अवस्था और भी सांघातिक होती जा रही है, यह समझ कर मैं रुका और उनके मुख की ओर टकटकी लगा कर आन्तरिकता और सौजन्य की हंसी हंसने की चेष्टा की। मुझे यह अच्छी तरह अनुभव हुआ कि उन्होंने मृत व्यक्ति की हंसी की तरह मुंह को विकृत मात्र ही कर लिया है।

फिर न जाने कैसी एक अप्रतिभ हंसी हंस कर जल्दी-जल्दी कह उठे, "अब मैं जाता हूँ, मुझे आज माफ कीजिये। आप के घर जाने मे है ही क्या। मगर बात यह है—किस तरह की ठण्ड पड़ रही है ? बिहार में चार पुश्त कट गये, मगर इस साल की तरह ठण्ड—एक दम मानो बर्फ ही कट पड़ी है ?

मैंने कहा,—"ठण्ड में ही तो बड़े दिन के खाने पीने के मजे हैं। करुणा बाबू थोड़ा बहुत गान बजाने का भी बन्दोबस्त किया है। भाग्य क्रम से आप मिल गये तो अब आप को नहीं छोड़ने का।

कल्याण बाबू की निगाह फिर एक दफे बोतलों पर पड़ी। उसके बाद पुरानी शराबी के हाथ में पड़ने से जैसे कोई भी विकल हो उठता है ठीक उसी तरह वे जल्दी से बोल उठे, "ना ना मैकेन बाबू, उम्र की बात तो यों ही कही थी। चार पुस्तों विहार की बात निकालने वाली उम्र के बीच ही कह गई और वह तो क्या…इधर कुछ एक काम है—अच्छा अब इजाजत दो।"

हठात् नमस्कार करके वह चले गये। मैं निश्चल होकर खड़ा रहा। किसी विषम समस्या में जैसे पड़ गया।

छोकरे से पूछा,—"क्यों रे! टोकरी में किसी तरह घुसा देने से इन दोनों बोतलों को नहीं ले जा सकेगा?"

उसने कहा,—"क्यों नहीं गठरी उतार दीजिए?"

कई एक लुच्चे आकर इकट्ठे हो गये। हजारों तरह का तर्क वितर्क और वादविवाद आरम्भ हुआ। एक ने कहा—"शादी है।"

दूसरे ने कहा—"कभी नहीं, बंगाली विवाह में नहीं पीते हैं।"

कह कर इशारे से बोतल को दिखला दिया।

"हरामजादो, भागो"—कह कर उन्हें खदेड़ दिया। बोतल को रखने के लिए पोटली की गांठ खोलते ही नौकर गिड़गिड़ाने लगा,—"टोकरी गिर जाने से मुझसे कुछ नहीं कहना।"

आंखें उठाकर विस्मित भाव से कहा—"टोकरी गिर जाने से तुमसे कुछ नहीं कहूँगा। ठीक है। इन्हीं दोनों बोतलों के भार से ही तेरी टोकरी गिर पड़ेगी? मुझे क्या बेवकूफ समझ लिया है?" जरा फेंकना टोकरी, हरामजादे कहीं के…। लिखना ही कुछ नहीं कहूँ……"

× × ×

अनाथ से परिचय आज का नहीं है, वह मेरा बाल-बन्धु है। उसकी बात याद आते ही बचपन का एक सुनहला दृश्य आंखों के सामने खिंच जाता है। रेल के पुल के नीचे दोनों पैरों को फैला कर, छाती झुकाकर अनाथ नाक से धुएं के लोट छोड़ रहा है। दाहिने हाथ में एक अधजली सिगरेट है। सामने हम लोग मुंह बाये सप्रसन्न विस्मय से देख रहे हैं।

आंखें अधखुली थीं। गम्भीर और अस्फुट स्वर में पूछा—हम लोगों के मैकेन हो न? माजरा क्या है राजा?"

मैंने कहा—'अनाथ हो! माजरा कुछ भी नहीं है। दो बोतलों को लड़के से ले जाने को कहता हूँ मगर वह तो हजारों बातें बना रहा है……'

दोनों आंखों को यथा सम्भव विस्फारित करके अनाथ ने कहा, 'बोतलें? दो-दो बोतलें?—कब से तुम्हें यह सुमति हुई है?'

शायद नौकर अपने मालिक का मान बचाने के लिहाज से कह उठा—'फिनाइल!' बोला?

अनाथ मेरी तरफ देखकर मुस्कराने लगा। उसके बाद नकली क्रोध में नौकर के ऊपर बिगड़ उठा—'फिनाइल नहीं तो और क्या होगा? हम नहीं जानते हैं?—अलबत्ता फिनाइल ही है, चुप रहो…!'

मेरी चाल को समझने में उसे देरी नहीं हुई। वह नौकर के सामने बात खोलने वाला लड़का नहीं था। मुझे अपने चतुर दृष्टि विक्षेप में वहीं बना कर झुक से पूछ बैठा, 'अच्छा भाई इस शरबत की बोतल में देशी शरबत है या विदेशी?'

विरक्त होकर मैंने कहा—'कैसा पागलपन कर रहे हो? देखो न कैसा विलायती शरबत ले जा रहा हूँ।' कह कर ज्योंही बोतल उठा कर दिखलाने जा ही रहा था, अनाथ ने झटककर हाथ पकड़ लिया और कहा—'मैं तेरा अविश्वास कभी कर सकता हूँ, मैकेन!—तू तो आज न जाने कैसा दिखलाई पड़ रहा है?'

कुण्ठित होकर मैंने कहा, 'अच्छा तो अब रास्ता छोड़ो, जाने दो, रास्ते में एक……'

अनाथ मेरे दाहिने हाथ को दोनों हाथों में पकड़ रोनी-सी सूरत बना शराबी के स्वरावेग की मोटी तथा पतली आवाज में कहने लगा—'रास्ता छोड़े देता हूँ, अब कभी भी बीच में नहीं पड़ूंगा…मगर तुमने आज आत्मों को जो चोट पहुँचाई है मैकेन…ओफ!'

कैसा ग्रह का फेर है, आज जाने किस का मुंह देखकर यात्रा की थी। मैंने पूछा 'कहो भाई। मैंने तुम्हारे आत्मों को क्या चोट पहुँचाई है?'

अनाथ में रोने का भाव जैसे एकाएक आया था वैसे ही हठात् अदृश्य हो गया। मेरे हाथ को छोड़कर सीधा खड़ा हो गया, एवं मेरे ऊपर सुरालस आंखों को कुछ देर निबद्ध करके गंभीर भाव में बोला—

'क्या हम लोग स्वराज्य नहीं चाहते हैं?'

उद्देश्य न समझने के कारण कह बैठा, 'चाहते तो जरूर हैं।'

'—जिस पर इतना भी 'मोरल करेज' नहीं कि अपनी चीज को रास्ते में दोनों हाथों में लटका कर छाती फुला के ले जाएं? धिक्, ! किस मुंह से…'

क्रोध को नहीं रोक सका। खास कर उसी एक आत्मीय आदमी के ऊपर मिर्च डालने की जरूरत भी थी। मैंने कहा, "दोष क्या है?—तुम लोगों के हाथ में पड़ने से चीज ने इतना सुयश नाम किया है कि थोड़ा सा अवसर होने से नशा जब भर कर ले जाने में भी पैर नहीं उठता। इतनी दूर जाने में ही न जाने कितना दुर्भोग होगया है।

दया कम्पन हुई। समझ कर जल्दी से उसकी पीठ पर हाथ रखते मैंने कहा—"हां, हां, मुझसे कहना नहीं पड़ेगा, मैं जानता नहीं हूं? अच्छा तब चलो।…छोकरे! लो उठाओ।" छोकरे के पैर बढ़ाते ही अनाथ ने हाथ उठाकर रोक दिया। मेरी तरफ ताककर कहा, 'किन्तु बहुत जल्दी कहकर ही नहीं जाऊंगा। नहीं तो 'सेक्रीफाइस' क्या हुई? मैं मोरल करेज के लिये आज सभी जरूरी काम छोड़ना चाहता हूँ।—यह जरूरी जीवन तक।"

बुद्धिमान शराबी के ऊपर क्रोध भी बहुत आता है। विरक्त होकर मैंने कहा, "लो छोड़ो, रास्ते में क्या झंझट कर रक्खा है।,

नौकर को धमका कर कहा—"बदमाश कहीं के, इधर आ खड़ा खड़ा तबसे तमाशा देख रहा है।"

अनाथ दोनों बोतलों को बगल में दबाकर रास्ते में बैठ गया। उसने कहा, 'सत्याग्रह' करता हूँ—मैं गांधी का चेला हूं—कुचल के चले जाओ।'

दोनों बोतलों को हाथों में दबाकर कहने लगा, "जान चली जावे, पर जाने नहीं दूंगा।"

काफी भीड़ लग गई थी, यहां तक कि एक चना वाला अपनी टोकरी उतार कर दो-चार पैसे पैदा करना छोड़ मेरी हालत की ओर देखने लगा। मेरे आस-पास एकत्रित जन समूह तरह-तरह की टिप्पणी, परामर्श और उत्साह की वाणी में बोल रहा था।

मैं लज्जा अपमान में सचमुच धैर्य छोड़ रहा था। अनाथ ने शायद थोड़ा बहुत उसे समझा। उसने कहा, अच्छा फैसला हो जावे। गान्धी-इरविन पैक्ट, चाहे मुझे ले जाने दो या तुम छाती फुला के ले जाओ इस तरह नौकर को नहीं दे सकोगे। मैं मोरल करेज चाहता हूं—अपना माल खुद ले जाऊंगा, उसमें है ही क्या?"

जल्दी से कह उठा—'अच्छा दे, मैं ही लिये जाता हूं।' यह कहकर दोनों बोतलें उसके हाथ से ले लीं, एवं इस सुयोग को खो बैठने के डर से जल्दी नौकर के सिर पर टोकरी उठादी और तेजी से पांव उठाने आरम्भ किये।

कानों में आवाज आई, अनाथ समवेत दर्शकों को समझा रहा था "लंगोटिया यार है—नई पकड़ी है—डरता है—"

इसके बाद कालेज के छात्रों का एक दल रास्ते में मिला। उनमें बहुत से मेरे परिचित थे। किन्तु हठात् उनका भाव परिवर्तन देखकर मालूम पड़ा शायद तब लोगों को अभी तक मेरा स्नेह परिचय नहीं मिला था।

सोचते-सोचते घर लौट आया—अच्छी अभिज्ञता इन दोनों बोतलों की छोड़ी है। सूर्यास्त के बाद ही इनका अर्थ बदल जाता है। उस समय साथ में ले कर राह चलना आसान नहीं है।

प्रसन्न मुख चलने से लोग कहेंगे—आनन्द फटा पड़ रहा है, खिन्न भाव में चलने से लोग कहेंगे, अभी अनाड़ी है; अगर सहज भाव में चलो तो कहेंगे पक्की बात है— पूरा बेपरवाह। कुछ छिपा कर ले जाने से कहेंगे, बेहया। नाराज न होने पर, कहेंगे, पियक्कड़, एकदम हजम कर गया है।

तमाम रात अच्छी तरह नींद भी नहीं आई। केवल असंलग्न स्वप्न? जैसे बोतलों के मानों हाथ पैर जम आये हैं, भांति-भांति की भंगिमाओं में वे नाच रही हैं……

× × ×

दूसरे दिन सुबह से इसकी चर्चा होने लगी। तमाम दिन यही ख्याल रहा कि सभी अन्यान्य प्रयोजनीय कामों को तिलांजलि दे सुजनता रख चरित्र संशोधन के लिए कमर कस कर जुट पड़ूं।

सुबह ही प्रतिवेशी वृद्ध प्रसन्न बाबू हाथ में लाठी लेकर ठक-ठक करते हाजिर हुए। कांपते हुए उन्होंने बात उठाई—"सुना है, कि तुम कल रात को…"

मैं बात को काट मुंह की तरफ देख उत्तर देने को जा ही रहा था कि उन्होंने अपना सिर हिलाकर जल्दी में कहा—"न, न, मुझ से यह सब कहने से नहीं होगा; मैं क्या तुम्हें जानता नहीं हूँ जो गैर आदमियों का विश्वास कर बैठूंगा? हैं हैं, मगर बात ये है, जरूरत क्या है, विलायती फिनाइल-विनाइल की, विशुद्ध गोबर-जल अब मौजूद है…"

मैंने शेष बात के प्रति संदिग्ध होकर सिर उठाया ही था कि वे मुस्करा कर कहने लगे, "हम लोग बूढ़े आदमी उस जमाने के हैं, थोड़ा बहुत पहेली में बात करने का अभ्यास है——यह तुम समझ भी जाओगे, यही कहा था बेटा, शरीर-वरीर जरा खराब होने पर न हो तो भंग की चार पत्तियां घोट लीं। देशी शुद्ध चीज है, शिवजी के भोग में जाती है… और वह सब? न, छिः छिः, बोतल-वोतल के पास तक भी नहीं फटकना। यदु डाक्टर के पास एक जरूरी काम था, सोचा, रास्ते में मैकेन से भी मुलाकात करता चलूं। अभी जाता ही तो है…"

आफिस के बड़े बाबू ने कहा; "छिः मैकेन बाबू, आज-कल कहां तो लोग छोड़ रहे हैं, आप अभी तक डटे हुए हैं।"

[शेष पृष्ठ १९ पर]

भारतीय जन-संघ का उद्देश्य, नीति और कार्यक्रम

(१)

प्रस्तावना

अनेक शताब्दियों के संघर्ष के पश्चात् भारत स्वतन्त्र हुआ है। किन्तु इस स्वतन्त्रता से जनता के जीवन में उल्लास नहीं उत्पन्न हो सका है। इस समय अनेक आन्तरिक और बाह्य कठिनाइयों से देश ग्रस्त है। पुरानी समस्याओं का हल नहीं हुआ है और नित्य नई समस्यायें खड़ी हो जाती हैं। जनता आर्थिक दुरावस्था के पाटों में पिस रही है। राजनैतिक दृष्टि से वह कुचली जा रही और सामाजिक दृष्टि से भी उसके कष्टों का ठिकाना नहीं। उपज घट रही है और दाम बढ़ रहे हैं। सार्वजनिक सेवाओं में भ्रष्टाचार और पक्षपात तथा शेष चारों ओर भी चोरबाजारी और मुनाफाखोरी का बोलबाला है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी विचार करें तो यही दिखाई देता है कि स्वामी विवेकानन्द, रामतीर्थ जैसे देश के सांस्कृतिक राजदूतों ने विदेशों में भारत के जिस यश-गौरव का प्रसार किया था वह तेजी से घट रहा है और दिनों-दिन हमारे मित्रों की भी संख्या घटती जा रही है देश भर में सर्वत्र निराशा, आत्म-विश्वास-हीनता तथा दुराचरण का वातावरण छाया हुआ है। उन्नति की ओर अग्रसर होने के प्रति उदासीनता है। यदि इस प्रकार स्थिति बिगड़ती रही तो संपूर्ण भविष्य अन्धकारमय हो जायगा।

इस दशा का उत्तरदायित्व किस पर है? राजा कालस्य कारणम् के अनुसार शासनारूढ़ दल को ही इसका कारण मानना पड़ता है। शासनारूढ़ दल के अभारतीय दृष्टिकोण तथा विभिन्न समस्याओं के प्रति अपनी अयथार्थवादी मनमानी नीति के परिणामस्वरूप ही वह उद्देश्य पूर्ति में असफल रहा है। भारत को पश्चिम की कार्बन कापी बनाने की जल्दबाजी में वह स्वदेशीय जीवन प्रणाली तथा सांस्कृतिक परम्परा के उदात्त आदर्शों को तिलांजलि दे चुका है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से उत्पन्न उत्साह का समुचित उपयोग करने में वह असमर्थ रहा है। जैसे-जैसे दिन बीतते जाते हैं उनकी पकड़ ढीली पड़ती जा रही है। अन्तर्निहित कर्म चेतना को पुनः पुनः जागृत कर राष्ट्र का नवनिर्माण करना अब उसके बूते की बात नहीं रही है।

परन्तु एक दल चाहे वह सत्तारूढ़ ही क्यों न हो, राष्ट्र के समक्ष नगण्य है। राष्ट्र की आवश्यकता पूर्ण करने के लिए ही दलों का निर्माण हुआ करता है और वे अपना काम पूर्ण करके चले जाते हैं। कांग्रेस का कार्य वस्तुतः बहुत पहिले ही समाप्त हो चुका था। अब यह भी सिद्ध हो गया है कि वह निर्माण कार्य के लिए नितान्त अयोग्य है।

यह नहीं होने दिया जा सकता कि कुछ लोगों के कारण भारत के भाग्योदय में बाधा पहुँचती रहे। इतिहास साक्षी है कि अतीतकाल में इससे भी बढ़ कर भयावह संकटों का सामना किया गया है और अन्त में विजयश्री ने भारत के चरण चूमे हैं। आज भी यदि देशवासियों की नैसर्गिक कर्मठता और शक्ति को जागृत किया जाय, उसके रक्त से उसे आदर्शवाद में फूंक मारी जाय और प्रकृति के अनुकूल भाग्य निर्माण का अवसर दिया जाय तो पुनः सब कुछ हो सकता है। इन समस्याओं को हल करने के लिए राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नये नेतृत्व की आवश्यकता है। भारतीय जन-संघ इसी को पूर्ण करने का प्रस्ताव करता है।

आधारभूत मान्यताएं

एक देश—हिमालय से कन्याकुमारी पर्यन्त समस्त भारतवर्ष, भौगोलिक सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से एक और अखण्ड रहा है। इसका विभाजन एक अदूरदर्शी कार्य था, जिससे अपूर्व जनहानि के अतिरिक्त गम्भीर आर्थिक, राजनीतिक, सुरक्षात्मक तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न खड़े हो गये हैं। संयुक्त भारत की स्थापना में ही जनता के सभी वर्गों के हित निहित हैं। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए जन-संघ सभी उपयुक्त साधनों का प्रयोग करेगा।

एक राष्ट्र—भारत एक प्राचीन राष्ट्र है। अभी जो स्वतन्त्रता मिली है, उसे हम इसके चिरकालीन इतिहास में नवीन अध्याय का आरम्भ अवश्य मान सकते हैं, किन्तु नये राष्ट्र का जन्म नहीं। स्वभावतः भारतीय राष्ट्रवाद का आधार सम्पूर्ण भारत एवं उसकी सनातन संस्कृति के प्रति अव्यभिचारी निष्ठा का भाव ही हो सकता है। अतः सब प्रकार की विघटनात्मक प्रवृत्तियों के स्थान पर जन-संघ संघटनात्मक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देगा।

एक संस्कृति—अनेकता में एकता का दर्शन ही भारतीय संस्कृति की विशेषता है। भारत जैसे विशाल देश में यह स्वाभाविक है कि विभिन्न प्रादेशिक, स्थानीय अथवा जातिगत जीवन पद्धतियों का विकास हो। भारतीय संस्कृति में इन सबका समन्वय हुआ है। यह किसी एक वाद या पन्थ विशेष से बंधी कभी नहीं रही। परन्तु ये सभी भारतीय राष्ट्र के विशाल कुटुम्ब के अंग रहे हैं और भारतीय संस्कृति के विकास में इन सबने भाग लिया है। इसकी धारा वैदिककाल से अब तक अविच्छिन्न रूप में प्रवाहित चली आती है। समय-समय पर विभिन्न जातियों, पन्थों और संस्कृतियों से सम्पर्क आने पर इसने उनको इस रूप में आत्मसात् कर लिया कि वे इसके मुख्य प्रवाह के साथ अभिन्न हो गये। यह भारतीय संस्कृति भारत के समान एक और अखण्ड है। मिली-जुली संस्कृति की चर्चा तर्क-विरुद्ध ही नहीं, प्रत्युत भयावह भी है। क्योंकि वह राष्ट्रीय एकता को क्षीण कर विघटनात्मक प्रवृत्तियों को पुष्ट करती है।

विकास पथ—विकासोन्मुख भारतीय जीवन का लक्ष्य भौतिक एवं आध्यात्मिक उत्कर्ष रहा है। एक को छोड़ कर दूसरा न तो संभव है और न हितावह। इस उद्देश्य की सिद्धि का साधन ही धर्म है (जो रिलिजन, मजहब या उपासना पद्धति से भिन्न है) अतः भारतीय जन-संघ प्रत्येक नागरिक को उपासना पद्धति की स्वतन्त्रता देते हुए भी जीवन के सभी क्षेत्रों में भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति के लिये धर्मराज्य की स्थापना करेगा।

इसके अनुसार विकास के लिए प्राचीन और अर्वाचीन तथा प्राच्य तथा पाश्चात्य सभी विचारों और पद्धतियों को उनका भारतीयकरण एवं अर्वाचीनीकरण करके ग्रहण किया जा सकता है।

उद्देश्य

जन-संघ का उद्देश्य भारत को उसकी संस्कृति और मर्यादा के आधार पर एक राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जनतन्त्र बनाना है, जिसमें व्यक्ति को समान अवसर और स्वतन्त्रता प्राप्त हो तथा जो भारत को सुसम्पन्न, शक्तिशाली एवं सुसंगठित बनाते हुए उसे प्रगतिशील, आधुनिक और जागरूक राष्ट्र बनावे, जो विश्वशान्ति के स्थापनार्थ राष्ट्र संघ में समुचित रीति से प्रभाव डाल सके।

नीति—जन-संघ का विश्वास है कि वास्तविक सत्ता का केन्द्र जन बल है। समाज में उत्साह और सहकारिता के बिना शासन का बल केवल पंगु ही नहीं, अपितु समाज को अकर्मण्य और दायित्वहीन भी बनाने वाला है। अतः जन संघ सदैव समाज के सहयोग तथा वैध एवं शान्तिपूर्ण उपायों से अपने उद्देश्य की सिद्धि करेगा।

कार्यक्रम

भारतीय जीवन के केन्द्र ग्राम रहे हैं। उनका वह महत्वपूर्ण स्थान पुनः प्राप्त कराने के लिए आवश्यक है कि वे राजनीति और अर्थव्यवस्था दोनों के केन्द्र बनें। भारतीय जन-संघ के राजनीतिक एवं आर्थिक कार्यक्रम का उद्देश्य दोनों प्रकार की सत्ता का ग्रामों में विकेन्द्रीकरण करते हुए ग्रामतन्त्र की स्थापना होगी।

आर्थिक—देश की अन्न, वस्त्र तथा निवास की समस्या सुलझाने तथा

(शेष पृष्ठ २० पर)

भारत की राज

[श्री सुरेश

नई दिल्ली के कार्य व्यस्त जन जीवन की एक झांकी।

गत पांच छः वर्षों में दिल्ली के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन मे जितने महत्वपूर्ण परिवर्तन हुये हैं उतने दिल्ली के शताब्दियों के उथल पुथल पूर्ण इतिहास में भी नहीं हुये। दिल्ली को भारत की राजधानी होने का सौभाग्य कोई नया ही प्राप्त नहीं हुआ। दिल्ली के विशाल वक्षस्थल पर क्रूर-काल के न मालूम कितने चक्र चलते रहे फिर भी दिल्ली की अपनी कुछ निजी विशेषतायें, रीति रिवाज तथा परम्परायें बनी रहीं जिन पर नित्य प्रति दिन बदलते हुए घटनाचक्रों की स्मृति के रूप में एक क्षीण रेखा मात्र ही बनी रही। होने वाला परिवर्तन एक विशाल सागर की उत्ताल तरंगों के समीप थे जिनकी गति सतत प्रवहमान होते हुये भी उनका कोई स्थाई प्रभाव नहीं पड़ता। दिल्ली के इतिहास मे घटित होने वाली प्रत्येक आह्लादकारी अथवा रोमांचकारी घटना दिल्ली के इतिहास का एक अंग मात्र बनकर रह गई उसकी सामाजिक तथा सांस्कृतिक धारा की गति न अवरुद्ध कर सकी न उसको किसी विपरीत दिशा की ओर प्रवाहित ही कर सकी।
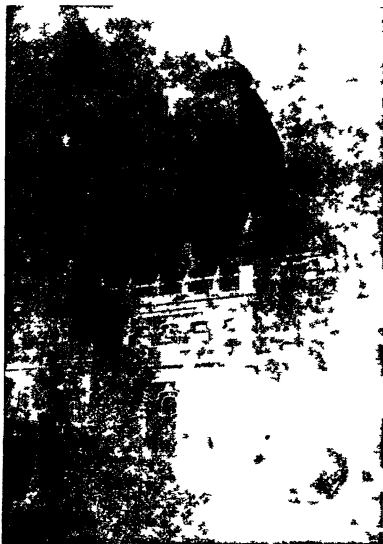
उत्थान-पतन का आवर्तन

इतिहास के उष काल से ही दिल्ली ने कभी विशाल शक्तिशाली साम्राज्यों को मध्याह्न के सूर्य की भांति उत्थान की चरम सीमा पर पहुँचते देखा तो कहीं उनको धूल धूसरित और कुण्ठित होते भी देखा। अनेक साम्राज्य स्थापित हुये तथा निमिष मात्र में ही कराल काल के चपेटे से अस्तित्वहीन तथा निःशेष हो गये।

परिवर्तन की दिशा

हमारे नित्य प्रति के जीवन में होने वाले परिवर्तनों की दिशा सदा एक सी नहीं होती। कुछ परिवर्तन किन्हीं विशेष परिस्थितियों के फलस्वरूप एक बवंडर के समान आते हैं और समस्त वायु मण्डल को शक्तिपूर्वक झकझोर कर अपना आतंक स्थापित कर जाते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ परिवर्तन ऐसे भी होते हैं जो मंद मंद बहने वाली नदी की शान्तवाहिनी लहरों के समान होते हैं। जिनका अस्तित्व प्रकट रूप से तो प्रतीत नहीं होता किन्तु सूक्ष्मान्वेषण से वे परिवर्तन भी सहज में ही जाने जा सकते हैं।

वर्तमान परिवर्तन

पिछले कुछ समय से दिल्ली के जन

केन्द्रीय संसद भवन जहाँ राष्ट्र निर्माण
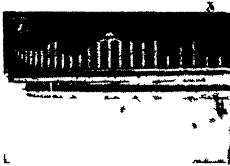
जीवन में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं उनकी दिशा में दोनों प्रकार के परिवर्तनों का कुछ न कुछ अंश है। दिल्ली के इतिहास में शान्तिपूर्वक जो कुछ परिवर्तन हुए उनकी तो स्मृतिमात्र ही शेष रह गई है तथा अब कहीं-कहीं ढूंढने पर उसकी झलकमात्र ही मिल सकती है। किन्तु पाकिस्तान बनने के दो वर्ष से अब तक जो परिवर्तन हुए हैं तथा हो रहे हैं उसके चिह्न अत्यन्त अमिट तथा स्थाई प्रतीत होते हैं। नव निर्मित परम्पराओं आचार व्यवहार तथा रीति रिवाज दिल्ली के जीवन पर इस प्रकार छा गये हैं कि आज का अत्यन्त रूढ़िवादी व्यक्ति भी परिस्थितवश प्रगति की ओर जा रहा है। दिल्ली के गतिमय जीवन को यदि प्रगति कहने में किसी को आपत्ति भी हो तो भी इस सत्य से कोई विमुख नहीं हो सकता कि दिल्ली की गति गतिशीलता ही है गतिहीनता नहीं।

राजधानी की धर्म परायण जनता के आकर्षण का केन्द्र बिड़ला मन्दिर।

यमुना स्नान भी दिल्ली के धार्मिक जीवन का एक

महत्वपूर्ण प्रश्न हल किये जाते हैं।

विभाजन के पश्चात्

यों तो केन्द्र स्थान होने के कारण सदा से ही दिल्ली के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन में विविध दिशाओं से आई हुई विभिन्न धाराएं मिलती रही हैं किन्तु विभाजन के पश्चात् अन्य प्रान्तों से व्यक्ति दिल्ली के विशाल जन समूह में इतनी अधिक संख्या में आ गये हैं कि उनकी कुल संख्या आजकल

नवनिर्मित संस्कृति में विलीन कर देना पड़ा।

रीति रिवाज

भारतीय नारी समाज के सम्बन्ध में असूर्यम्पश्या नाम से जिस प्रकार की नारी को सम्बोधित किया है वही दिल्ली के सम्बन्ध में विशेष रूप से लागू होता था। मुगल शासनकाल की बहु प्रचलित परदा प्रथा का प्रभाव भारत में सर्वाधिक देहली पर ही पड़ा। दिल्ली के बड़े-बड़े बाजारों तथा आलीशान दुकानों में अपवाद रूप से ही महिलाएं दृष्टिगोचर होती थीं। किन्तु आज स्थिति ठीक इसके विपरीत है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के व्यक्तियों के रीति रिवाज तथा परम्पराओं के सम्मिश्रण
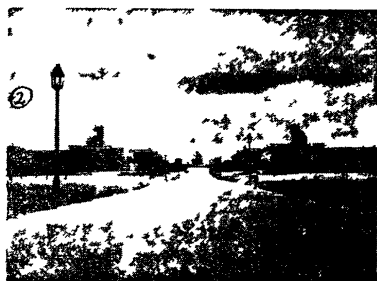
राजकीय भवन का मुख्य प्रवेश द्वार

...धानी : दिल्ली

...न्द्र]

...ली के मूल निवासियों से कई गुना ...ढ़ गई है। आने वाले व्यक्ति ...दृष्टि से तो दिल्ली के नागरिक ...न गये किन्तु अपने साथ वे ...ऐसे बद्ध मूल संस्कार लाए जो ...ली की पूर्व परम्पराओं में लीन होने ...स्थान पर अपना स्वतन्त्र अस्तित्व ...सके। नवागन्तुक मिश्रित संस्कृति ...दिल्ली पर केवल प्रभाव ही नहीं ...अपितु दिल्ली की परम्परागत ...कृति को अपना अस्तित्व दिल्ली की

से दिल्ली विविध रूपों में दिखाई देती है। सबका अपना प्रभाव तथा अस्तित्व है। इसी कारण आज दिल्ली के बाजारों में पुरुषों से कहीं अधिक संख्या में महिलाएं क्रय विक्रय करती दिखाई पड़ती हैं। अधिकांश घरों में तो घरेलू जीवन से सम्बन्धित इस महत्वपूर्ण कार्य को सम्पूर्ण रूप से महिलाओं पर ही डाल दिया गया है। दिल्ली में आने वाला कोई भी नवागन्तुक आश्चर्य

दफ्तरों से लौटते हुये सरकारी कर्मचारियों का दृश्य भी शाम के समय एक नया चहलपहलपूर्ण वातावरण निर्माण कर देता है।

चकित दृष्टि और विस्फारित नेत्रों से दिल्ली के रूपों का दर्शन कर अनुभव करता है कि दिल्ली पूर्णतया बदल चुकी है और अन्तत इस परिवर्तन का क्या रूप होगा यह संदिग्ध है।

वीर अर्जुन साप्ताहिक का मूल्य

वार्षिक	१२)
अर्ध वार्षिक	६॥)
विदेशों में	१ पौंड

...अविच्छिन्न अंग बन गया है।

राष्ट्रपति भवन का प्रसिद्ध मुगल पार्क।

द्रव्य गुण

[पृष्ठ १० का शेष]

"अति स्थिर न रह सकी महाशय" कह कर मुंह फेर कर चला आया।

मन लज्जा, राग, विरक्ति आदि की भावनाओं से इस तरह खिचड़ी बन गया कि शाम को फिर बाहर निकलने की इच्छा तक नहीं रही। कहने की जरूरत नहीं कि इससे भी कुछ अच्छा नहीं निकला। क्योंकि सुरा सुन्दरी की काल्पनिक मूर्तियों ने मेरे मन के शून्य के बीच अपनी स्थापना कर ली थी। उनके साथ मानसिक द्वन्द्व करते मेरा दिमाग शाम तक एकदम गर्म हो गया। सोचा, यह कोई काम की बात नहीं है। मैदान की तरफ जाकर सिर में थोड़ी बहुत साफ हवा लगाना जरूरी है। नहीं तो इससे पागल होने की सम्भावना है।

कुर्ता और जूता पहन कर बाहर होते ही देखता हूँ, खद्दर और गांधी टोपी पहिने कुछ लड़कों का एक मजमा दरवाजे के नीचे खड़ा है। कल के कई एक कालेज के लड़के भी उन्हीं के साथ में खड़े हैं। देखते ही सभी ने अत्यन्त विनीत भाव से सिर में हाथ लगा कर अभिवादन किया।

अत्यधिक विस्मित हो कर मैं प्रश्न करने जा ही रहा था कि एक राष्ट्रीय पताकाधारी युवक ने आगे बढ़ कर और एक अत्यधिक विनीत अभिवादन करते हुए कहा—"हम लोगों का कर्तव्य अत्यन्त कठोर है, माफ कीजियेगा, हम लोग आज आप को बाहर नहीं जाने देंगे।"

समझने में बाकी कुछ नहीं रहा। बात बहुत कुछ आगे चली गई है। यहाँ तक कि मकान के ऊपर लिख दिया गया था, पिकेटिङ्ग। यद्यपि साथ क्रोध रहा था, फिर भी शांत स्वर में कहा, "इस तरह का कठिन कर्तव्य करने में आप लोगों का उद्देश्य क्या है?"

युवक हाथ जोड़े खड़ा था। बोला, "उद्देश्य, देश माता को बन्धन मुक्त करना।"

मैंने पूछा, "उसके साथ मुझे फिनाइल बन्धन में डालने में कोई विशेष सम्बन्ध है क्या?"

उसी तरह का एक दूसरा विनीत उत्तर और मिला, "आप शिक्षित हैं। आपके साथ क्या तर्क करूंगा? मगर एक बार विचार करके देखिये वस्तु कितनी गर्हित है। अमेरिका ने इसी से स्पेशल 'ला' बना कर इसे देश निकाला दे दिया है।"

मैंने कहा, "अच्छा आप लोग क्या सचमुच सन्देह करते हैं कि मैं बाजार से बोतलों में......"

युवक लज्जित भाव में तुरन्त बोल उठा, "ना ना, सन्देह क्या हम लोग कभी...."

सिर झुका के विनय की स्मित हंसी के साथ उसने कहा—हम लोगों को अपराधी नहीं ठहराइयेगा, आपका दिमाग ठीक न रहने से आपको प्रकट कारण मालूम नहीं पड़ा है। किन्तु दिमाग ठीक नहीं है। यह स्वीकार करके हम लोगों का बहुत कुछ काम आप ने हल्का कर दिया है। इसलिए आपको धन्यवाद है।"

परम कष्ट से अपने आप को संवरण करके कहा, देखिये आप सभी भद्र संतान हैं, सहज में ही विश्वास कर सकते हैं। बात यह है, कल शाम को नौकर के सिर पर कुछ तरकारी और दूसरी दो एक चीजें एवं खुद एक फिनाइल की और एक खाली बोतल लेकर आ रहा था। ठंड की वजह से दोनों बोतलों को बगल में दबाये...." पताकाधारी युवक ने कहा, "हम लोगों से आपको इतना कष्ट उठा कर कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है। केवल अनुरोध है, इस आदत को छोड़ दीजिये।"

पताका धारी युवक दूसरों की तरफ देख कर ओठों को दबा कुछ हंसा। उस के बाद मेरी तरफ देख कर उसने कहा, आपके देने में हम लोगों का अधिकार नहीं है, क्षमा करेंगे।"

आगे खड़े युवक की तरफ ताक कर मैंने कहा, "आप लोगों का अधिकार हमारे माथे में नहीं घुसेगा। मैं जानता हूँ, मुझे जाने का अधिकार है।" यह कह कर मैंने पैर बढ़ाये।

युवक मेरी राह रोक कर खड़ा हो गया और अपने साथियों की तरफ मुड़ कर बोला—"तब तो अब हम लोगों को आत्मिक बल-प्रयोग करना पड़ेगा।"

वह अब किस आकृति में दिखाई देगा, सोच कर ठीक करने के पहिले दल के सभी युवक सीधे, रास्ते के इस सिरे से उस सिरे तक चित होकर लेट रहे। सामने जरा भी पैर रखने को जगह नहीं रही।

मुझे रुलाई आ रही थी। रास्ते में आदमी जमा हो रहे थे। मैं कुछ देर तक तो कुछ भी नहीं कह सका। इतने अत्याचार के बीच भी इतनी बुद्धि थी कि इस विषय को ले कर ज्यादा तर्क करने से तमाम मुहल्ला गुलजार हो उठेगा। बहुत कोशिश से मन को स्थिर कर के संभाल कर मैंने कहा— "अच्छा आप लोग अगर इसी में सन्तुष्ट हैं तो मैं अब बाहर नहीं जाऊंगा। आप लोग जाइये।"

युवक कुछ जवाब न देकर निश्चल भाव से सिर झुकाए खड़ा रहा। दूसरे सभी उसी अवस्था में पड़े रहे। रास्ते के उस ओर से दर्शकों की प्रशंसा की वाणी मेरे कानों में आकर धिक्कार की तरह टकराने लगी।

मैंने कहा—"आप लोग जाइये, क्यों कष्ट उठावेंगे? मैं कह रहा हूं बाहर नहीं जाऊंगा।"

"केवल बाहर के शत्रु को न जाने से ही तो कुछ नहीं होगा। घर के शत्रु को भी विदा करना पड़ेगा। हम लोग इसी से आपके अन्दर जो देवता है उन्हीं के पास धरना देकर पड़े हैं।"

मैं अब अपना क्रोध संभाल नहीं सका। आवाज को ऊंचा करके बोला—"देखिये मेरे अन्दर के देवता को खुश करने के लिये आने से केवल दानव को नाराज कर रहे हैं। आप लोग क्या करना चाहते हैं कि मैंने मकान में बोतलों में भर कर—।"

आप लोगों को किस तरह विश्वास दिलाऊं। क्या प्रमाण देने से—अच्छा बहुत ठीक इससे तो और बड़ा प्रमाण कोई हो नहीं सकता है?—" कह कर क्रोध में सिर को टेढ़ा कर मकान के अन्दर चला गया, एवं सभी जहां फिनाइल प्रभृति की बोतलें रक्खी रहती हैं, उन्हीं में से एक भरी हुई बोतल लेकर बाहर आया। उसे ऊपर पकड़ कर दल की तरफ देखकर मैंने कहा—"यह देखिये! कल जो कुछ लाया था; अगर विश्वास न हो तो कोई आकर सूंघ ले, फिनाइल है कि नहीं।"

कोई भी अपनी जगह से नहीं हटा। सभी के चेहरों पर अविश्वास की हंसी खिल रही थी।

उन्मत्त होकर मैंने कहा, "अब भी विश्वास नहीं करोगे?—यह तो बड़ी भारी ईर्ष्या है।— अच्छा महाशय, मैं स्वीकार करता हूँ, मैं अपराधी हूँ। यह फिनाइल नहीं, यह एकसा नम्बर वन है। मुझे माफ करेंगे—अब ऐसा काम नहीं करूंगा। अब आप लोग जाइये।"

—यह क्या। इसमें भी निस्तार नहीं है?—मेरी किसी भी बात का विश्वास नहीं करते? अच्छा जो, मुझे चौबीस घण्टों में किसने इतना मिथ्यावादी, चरित्रहीन कर दिया है यह आप लोग ही विचार कीजिये।

—सारी शक्ति लगाकर सामने की दीवाल में हाथ की बोतल फेंक मारी। मैंने कहा, "समझो, किसकी गन्ध है, अब तो अविश्वास नहीं रहा कि—"

× × ×

क्रोधान्ध होकर जल्दी में किसकी बोतल निकाल लाया था, यह ख्याल ही नहीं रहा। मेरी बात शेष होने के पूर्व ही मेथिलेटेड स्पिट की उग्र सुगन्ध चारों तरफ फैल गई। दल भूमि-शैय्या को छोड़कर गगन विदीर्णकारी चीत्कार कर उठा "एक बार बोलो भाई गांधीजी की जय। स्वामी शैलेन बाबू की जय।—"

उसके बाद कैप्टेन की परिचालना में मुझे एक नम्र अभिवादन करके सामरिक प्रथा में कुइक मार्च करते वे चले गये।

मैं मूढ़ की तरह शून्य में दृष्टि लगाये वहीं खड़ा रहा।

\+ × ×

जाने दो—सहृदय बन्धु-बान्धव यह सुनकर आश्वस्त होंगे कि मैंने भ्रष्ट चरित्र फिर प्राप्त कर लिया है। प्रमाणस्वरूप अट्ठाइस दिसम्बर की "अलाबाबी" पत्रिका से 'पुर में सुरा पिकेटिंग' शीर्षक समाचार से थोड़ा यहां पर लिख दिया जाता है—

"यह शोचनीय संवाद सुनकर दूसरे दिन शाम को स्थानीय कांग्रेस कमेटी ने एक स्वयंसेवक दल शैलेन बाबू के मकान पर सत्याग्रह करने को भेजा। शैलेन बाबू ने पहले तो भीषण उग्रभाव धारण किया। नौकरों से अपमान करवाया, यहां तक कि अन्त में पुलिस की सहायता लेने की भी धमकी दी। मगर अन्त में स्वयंसेवकों की अटूट सहिष्णुता और अपरिसीम सौजन्यता एवं नम्रता से क्षुब्ध होकर उन्हीं के सामने शराब की बोतलें एवं प्यालियां तथा अन्य आनुसंगिक द्रव्यों को टुकड़े-टुकड़े करके भविष्य में सुरा त्याग के लिये वे प्रतिज्ञा बद्ध हुये हैं।

हम लोग स्वयंसेवकों की सात्त्विक धैर्य्य एवं शैलेन बाबू के हृदय-बल की प्रशंसा करते हैं एवं प्रत्येक सुरा सेवी मात्र से शैलेन बाबू के महान त्याग का अनुकरण करने की प्रार्थना करते हैं।"

—×—

समालोचना के लिए हरेक पुस्तक की दो प्रतियां आनी आवश्यक हैं।

—संपादक

भारतीय समाज-शास्त्र—ले० प० धर्मदेवजी विद्यावाचस्पति। प्रकाशक—आर्य साहित्य मण्डल लि०, अजमेर। मूल्य २)।

मानव विज्ञान का अध्ययन और चिन्तन करते हुए पश्चिमी विद्वानों ने 'सोश्योलोजी' या समाज शास्त्र को बहुत प्रमुखता दी है। समस्त समाज का सगठन किस आधार पर हो यही इस शास्त्र का विषय है। भारतीय साहित्य में समाज शास्त्र नाम से कोई पृथक् शास्त्र नहीं है, इस कारण यह समझ लेना कि भारतीयों ने कभी इस सम्बन्ध में गंभीर विचार नहीं किया था भ्रम ही है। धर्म इतना व्यापक शब्द है कि उसमें नैतिकता, समाज संगठन कर्तव्य तथा आध्यात्मिक मन्तव्य और विधिविधान सभी का पूर्ण समावेश हो जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक ने वेदों स्मृतियों तथा अन्य धर्मग्रन्थों के आधार पर यही प्रदर्शित किया है कि प्राचीन समाज व्यवस्था क्या थी। उन्होंने अत्यन्त योग्यता व विद्वत्ता से यह बताया है कि भारतीय समाज सगठन का मूल आधार वर्णाश्रम धर्म था, परन्तु यह श्रम व्यवस्था भी जन्मानुसार न होकर गुणकर्मानुसार थी। अपनी इस स्थापना के लिए उन्होंने गम्भीर अध्ययन और प्रयास किया है। कोई बात निराधार नहीं लिखी। पद पद पर वे शास्त्रों के प्रमाण देते गये हैं। तीसरे, चौथे और छठे अध्याय तो उन सब विचारकों के लिए अवश्य मननीय हैं, जो भारतीय संस्कृति की चर्चा को ही प्रतिक्रमिता समझते हैं। वर्ण व्यवस्था भारत व ऋषियों के मतानुसार समाज का आदर्श संगठन है जिसमें धन या शक्ति पर नियन्त्रण रखा गया है। आज साम्यवाद समानवाद या अन्य जिन वादों की दिशा में यूरोप विचार कर रहा है उन सबसे वर्णाश्रम व्यवस्था अधिक उपयोगी और समाज की सब समस्याओं का समाधान करने में समर्थ है। लेखक का तुलनात्मक विवेचन बहुत सुन्दर हुआ है। इससे उनके गम्भीर अध्ययन का भी परिचय पाठक को मिलेगा। समाज के अन्तर्गत काल प्रवाह से आ जाने वाली बुराइयां भारतीय समाज शास्त्र नहीं है, जिन्हें देखकर हम प्राचीन की आलोचना करते हैं।

समाज संगठन में नारी का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। इस सम्बन्ध में लेखक ने एक पृथक् अध्याय लिखा है। शास्त्रीय, ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक दृष्टि से गम्भीर विद्वत्तापूर्ण विवेचन समाज शास्त्र में रुचि लेने वालों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

समाज और जीवन के उद्देश्य के सम्बन्ध में भारतीय और पाश्चात्य विचारकों के दृष्टिकोण में मौलिक अन्तर है। इसे न समझने से ही आज हमारे नेता और अंग्रेजी पढ़े लिखे भारतीय सभ्यता के नाम से चिढ़ते हैं। वर्तमान सभ्यता के साथ भारतीय सभ्यता की तुलना इस दृष्टि से बहुत उपयोगी है। लेखक यह स्वीकार करता है कि यूरोप के सामाजिक विकास के सम्बन्ध में प्रचलित धारणा, जिसने भारतीयों को अभिभूत कर रखा है ही मुख्य है। अपने पक्ष की पुष्टि के लिये लेखक ने प्राचीन और अर्वाचीन विद्वानों के प्रमाण देने में कमी नहीं की।

आज जब कि हम स्वतन्त्र होने के बाद राष्ट्र का नवनिर्माण कर रहे हैं, यह पुस्तक हमारे भ्रान्त दृष्टिकोण को ठीक करने तथा मार्ग प्रदर्शन में सहायक हो सकेगी।

—कृष्ण

पूंजीपतियों की कहानी—(कहानी संग्रह) प्रकाशक गुप्ता प्रेस, शामली (उ० प्र०) लेखक श्री चतुरसैन गुप्त, पृष्ठ संख्या १२६ मूल्य २) (जिल्द सहित)।

प्रस्तुत पुस्तक को जिसका है सर्व साधारण के पढ़ने योग्य बनाने के लिये (ग्रेट' के) बड़े टाइप में छपवाया गया है।

इस संग्रह में भाग्य को ही 'सब कुछ' बताने की चेष्टा में रत कहानियां हैं। भाग्य से कैसे-कैसे गरीब मजदूर तक अमीर करोड़पति बन जाते हैं-यही आधार है इन कहानियों का। साथ ही पुस्तक में आई हुई प्रत्येक कहानी में उपदेशात्मक भावना भी निहित है— परिश्रमशील रहने की। लेखक का अपना दृष्टिकोण है कि "मनुष्य जब इस ससार में आता है तो अपने पूर्व जन्म के पाप या पुण्य भी साथ ही लाता है। और पाप या पुण्य के कारण ही उसे देश जाति, आयु और भोग प्राप्त होते हैं " सामग्री की उपयोगिता को देखते हुए पुस्तक का मूल्य कुछ अधिक है।

सन्तति निग्रह—(प्रकाशक—आर्य साहित्य सदन देहली शाहादरा) लेखक—श्री रघुनाथप्रसाद पाठक, पृष्ठ ११२ मू० १।)

प्रस्तुत पुस्तक में सन्तति निग्रह के विषय में सांस्कृतिक स्वरूप, बच्चे, विवाह, संयम, वीर्य रक्षा, कृत्रिम उपकरणों का डाक्टरी खंडन, राग और कृत्रिम साधन, जन संख्या, भारत और जन संख्या तथा उपसंहार आदि विषयों को लेकर ग्यारह प्रकरणों में समाप्त कर दिया है।

लेखक ने इस विषय को लेकर भारतीय समाज की सेवा करने का प्रयत्न किया है। देश में बढ़ती हुई जन संख्या, अन्न सकट, वातावरण और आर्थिक समस्या को दृष्टिगत रखते हुए विषय नीरस होते हुए भी उपयोगी है। पुस्तक में बीच २ में, कदम-कदम पर प्रतिष्ठित पुरुषों, मनीषियों और विषय के विद्वानों के उद्धरण देकर पुस्तक की उपयोगिता में वृद्धि की गई है। लेखक ने प्रथम प्रकरण में ही अपने मत का स्पष्टीकरण कर दिया है। इन शब्दों के साथ—"साराश यह है कि सन्तति निरोध सास्कृतिक आधार पर होना चाहिये और उसकी आधारशिला ब्रह्मचर्य पर रखी जानी चाहिये " लेखक ने सम्पूर्ण पुस्तक की कुंजी ही पाठक के हाथ में दे दी है। पुस्तक पठनीय, प्रशंसनीय एव अनुकरणीय है। छपाई सफाई गैटअप आदि उत्तम है।

—'सूर्य' साहित्यालङ्कार

'बाल भारती' (विशेषांक), सम्पादक श्री मन्मथनाथ गुप्त, पब्लिकेशन्स डिवीजन्स, ओल्ड सेक्रेटेरियट दिल्ली मूल्य ।=)

हिन्दी में बालोपयोगी पत्रिकाओं के अभाव के पूर्तिस्वरूप पिछले चार वर्ष से 'बाल भारती' पत्रिका काफी सजधज के साथ देहली से प्रकाशित हो रही है। बच्चों के लिये मनोरंजक तथा आकर्षक सामग्री प्रदान करने वाली पत्रिकाओं की तो कमी नहीं है। किन्तु मनोरंजन के साथ साथ बालकों की ज्ञान-वृद्धि उनकी अवस्था तथा मानसिक विकास के अनुरूप हो सके, इस ओर अब तक अधिक ध्यान नहीं दिया जा सका है। बालभारती की सर्वाधिक विशेषता इस अभाव की पूर्ति ही है। उक्त पत्रिका द्वारा छोटे छोटे बालकों को देश विदेश की घटनाओं से अवगत कराने की ओर जो ध्यान दिया जा रहा है। वह वस्तुत प्रशंसनीय है, जिसका श्रेय इसके सुयोग्य सम्पादक श्री मन्मथनाथ गुप्त को विशेष रूप से है। 'बाल भारती' के विशेषांक तो और भी अधिक सुरुचिपूर्ण तथा संग्रहणीय होते हैं। प्रस्तुत विशेषांक भी सुरुचिपूर्ण तथा मनोरंजन पाठ्य सामग्री के साथ बहुरंगे चित्रों से सुसज्जित है।

—सुरेश

—+—

आधी दुनियां—

आज की नारी और चुनाव

[श्रीमती रामदेवी 'शशि']

पुरुष वर्ग द्वारा अभी भी नारी-समाज की काफी उपेक्षा की जा रही है। नारी को उसके वे मूलभूत अधिकार, जिनके बल पर वह पुरुष की अर्द्धांगिनी कहलाती थी, नहीं दिए जा रहे। पुरुष समाज द्वारा आज स्त्री-समाज के प्रति अवहेलना और हेय (दासी) भावना अधिक बल पकड़ती जा रही है। 'नारी के अधिकारों' से मेरा तात्पर्य सामाजिक-वेश्याओं जैसी आधुनिक प्रगतिशील तितलियों जैसा हो जाना नहीं है।

युग प्राचीन अधिकार

अति प्राचीन काल से अपने भारतवर्ष में एक पत्नी को ही क्या समस्त स्त्री समाज को ही पुरुषों के सम्मुख उनके साथ कन्धे से कन्धा जुटाकर सभा, उत्सव और यज्ञादि में भाग लेने के अधिकार प्राप्त थे। स्त्री के बिना कई महत्वपूर्ण कार्य भी अधूरे ही रह जाते थे। स्त्रियां पूजनीय समझी जाती थीं। उनको किसी के द्वारा बुलाने के लिए सम्मानसूचक शब्दावलि थी, आधुनिक 'अरी, ओ, ए,' आदि नहीं। स्त्रियां सर्वत्र वन्दनीय थीं। समाज में स्वतः ही स्त्री-पुरुषों को समानाधिकार मिले हुए थे। अपने मन माफिक वस्तु का चुनाव करने का भी उनको अधिकार दिया गया था। जीवन-साथी भी वे स्वयंवर (प्रथा) द्वारा ही चुन लेती थीं। कोई जोर या दबाव उन पर किसी भांति का नहीं डाला जाता था।

आधुनिक युग में

उपयुक्त बातों को देखते हुए यदि इन बातों को एक दम इस युग में जबरदस्ती थोप दिया जाय तो हिंदुस्थान का नक्शा ही पलट जाय। क्योंकि पूर्व काल में जो स्त्री जाति के प्रति आदर और सम्मान की भावना थी उसका आज प्रायः सर्वांश भी विद्यमान नहीं है। और इस आदरपूर्ण भावना का अभाव ही इस परिवर्तन को लाने में पूर्णतः समर्थ है।

अब सरकार ने डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, म्यूनिसिपल, धारासभा और संसद के चुनावों में वयस्क मताधिकार प्रणाली चालू की है। इसके द्वारा जो-जो वयस्क स्त्री-पुरुष होंगे वह सब निर्वाचन में अपना मत दे सकेंगे।

राजस्थान में पहिले स्त्रियों को मत देने का अधिकार नहीं दिया जा रहा था। इस पर नारी समाज ने एक बलशाली आन्दोलन उठाकर खड़ा कर दिया जिस पर पुरुष समाज स्त्रियों को भी वोट देने का अधिकार देने के लिये बाध्य कर दिया गया।

चीन (हिमाचल प्रदेश) में, वोट देने जाती हुईं कुछ पर्वतीय महिलायें।

मत का महत्व

भारत की माताओं, बहुओं, पुत्रियों और भगिनियों को अब अपने इस अधिकार का महत्व समझ लेना आवश्यक है। इस मत द्वारा ही आप चाहें तो गुरु गोविन्द, शिवा और प्रताप सरीखे भारत माता के अनन्य सेवकों, जयचन्द जैसे विश्वासघाती राष्ट्र-द्रोहियों और औरंगजेब जैसे कट्टर धर्मानुयायी धर्म विध्वंसकों को इस प्रजातन्त्र में शासनारूढ करा सकती हैं। अब सोचना आपको केवल यह है कि आप किस कोटि के व्यक्तियों को अपने मत का अधिकारी बनावें। स्पष्टतः यदि आप चाहें कि आप के देश को दरिन्दे अपने खूनी पंजों से नोंच डालें, मन्दिरों को विध्वंस करदें और इस देश के निवासियों—हिन्दुओं संस्कृति को तहस-नहस कर दें तो अभी आप आज के सत्तारूढ दल को मत दें। और यदि चाहें कि अपने देश में हम सुख से गौरव के साथ अपने को हिन्दू कहते हुए जीवित रह कर मानव-कल्याण के कार्य में जुट जाएं तो निःसन्देह आपको प्रथम कोटि के राष्ट्रसेवी उम्मीदवारों को ही वोट देना पड़ेगा। अब आपका यह कार्य रह जाता है कि आप किस मार्ग को चुनें! एक पूर्व की ओर जाता है तो ठीक दूसरा पश्चिम की ओर उससे बिल्कुल विपरीत, विमुख। एक में कांटों के साथ सुख, समृद्धि, धर्म और देश कल्याण है तो दूसरे में हलाहल पूर्ण सरोवर, दुःख, दैन्यता और मृत्यु है। चुन लीजिए एक मार्ग!

सच्चा अधिकारी चुनने में बाधा

आपको अपने मत का सच्चा अधिकारी चुनने में भी कई बाधाओं के पड़ जाने की भी सम्भावना है। सम्भव है आपको अन्य पथभ्रष्ट सखियां या स्त्रियां बहकाएं, नाते—रिश्तेदारी, बिरादरी या किसी अन्य बात का प्रलोभन दें—वास्ता दें। किन्तु अब रही आपके अपने दृढ़ विश्वास और एक योग्य उम्मीदवार को चुन कर उसी को वोट देने के लिए जमे रहने—स्थिर रहने की बात। और भी अन्य कई बाधाएं हैं जिनमें पुराने नाम (मात्र) वालों को ही वोट देने के लिए पति देवता या अन्य पुरुषों द्वारा अनुचित रूप से जोर डाला जाना, नेताओं की तस्वीर वोट देने की जगहों पर लटकी हुई देख कर केवल उन्हीं की पार्टी वाले व्यक्ति को वोट देने के भ्रम में रहे जाना, किसी नेता विशेष की चूंकि वह नेता है और पुराना धुरंधर है इस कारण विशेष पर अनुचित बात भी मान लेना, केवल किसी पार्टी विशेष की ही बात को पकड़ कर और दूसरी पार्टियों की सुने बिना उस पार्टी के नाम पर ही वोट देने का निश्चय कर लेना और किसी भी उम्मीदवार को किसी पार्टी विशेष के टिकिट पर खड़े होने के कारण ही वोट

[शेष पृष्ठ २३ पर]

मताधिकार पा कर बुढ़िया का हृदय भी खिल उठा।

बाल-प्रतियोगिता

प्रिय बन्धुओ !

इस अङ्क में एक प्रतियोगिता दी जा रही है तथा उस प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करने वाले सदस्यों को पुरस्कार भी दिया जायगा जिसका पूरा विवरण प्रतियोगिता के नियमों में छापा गया है। यदि तुमने इसमें उत्साह दिखाया तो इस प्रकार की प्रतियोगिता हम प्रति मास छापा करेंगे। हां! प्रतियोगिता में सदस्य ही भाग ले सकते हैं यह ध्यान रखना।

तुम्हारा
श्याम भय्या

———

पत्रों के उत्तर

१. देवीदयाल हरकावत (उदयपुर) तुम्हारा चित्र और लेख हमें नहीं मिले, शायद पता लिखने में भूल हो गई हो। देखो हमारा पता यह है—श्याम भय्या, C/o साप्ताहिक वीर अर्जुन श्रद्धानन्द बाजार देहली।

२. महावीरप्रसाद (नागौद)—तुम्हारी कविता के न छप सकने का कारण था स्थान की कमी। इस कमी को दूर करने के लिये हमने दो पृष्ठ कर दिये हैं इसलिए अब तुम्हें नाराज नहीं रहना चाहिये।

३. महेन्द्रकुमार बिलाला (जयपुर) अच्छा महेन्द्र तुम्हारी कहानी 'नटखट कृष्णा' हमें भेजदो, तभी बता सकेंगे कि वह छप सकेगी या नहीं। बिना कहानी देखे तो हम कुछ नहीं कह सकते।

४. ब्रजेन्द्रकुमारसिंह (सुरेना)—१६ वर्ष तक की आयु के सभी बालक, बालिका सदस्यता पत्र भर कर बिना किसी शुल्क के हमारे सदस्य बन सकते हैं। सदस्य बनने के लिये चित्र भेजना आवश्यक नहीं। और हां सदस्यता पत्र के साथ तुम अपनी रचनायें भी भेज सकते हो।

५ सूर्यप्रकाश (अजमेर)—क्यों सूरज! सदस्यता पत्र तो भरकर भेजा नहीं और सदस्य संख्या पूछने लगे। यह कहां से सीखा तुमने। हां महापुरुषों का 'बखान' तुम किसी का भी भेज सकते हो।

बहिनों के लिये

(कु० आनन्दी जवली)

कब तक पड़ी रहोगी बहिनों,
आओ सबको पढ़ना है॥
कब तक खड़ी रहोगी पीछे,
अब तो आगे बढ़ना है॥१॥
कब तक पैरों गहना डाले,
छुमक-छुमक कर चलना है॥
कब तक यों चोरों के ऊपर,
भार रूप हो पलना है॥२॥
कबतक जीवन में इस तन को,
निरुद्देश्य हो ढोना है॥
कबतक सोने-चांदी के वश,
नाक-कान को खोना है॥३॥
कब तक घर के कोने में छुप,
सिसक-सिसक कर रोना है॥
कब तक मानवता को भूले,
गुड्डी बनकर सोना है॥४॥
कब तक रूढ़ी अपनाओगी,
सद्मार्ग कब आना है॥
कब तक अपने आधे अंग को,
यों बेकार बनाना है॥५॥
कब फिर हम मनुजों में गिनती,
करा सकेंगे हे जगदीश॥
कब तक "आनन्दी" की विनती,
पूर्ण करेंगे हे "बद्रीश" ॥६॥

—x—

हमारे नये सदस्य

३०१. इन्दुभूषण, हापुड़। ३०२. भगवानचन्द्र साहा, अलमोड़ा। ३०३. ओमप्रकाश बैचेन, कलकत्ता। ३०४. सुधीर कुमार शर्मा, बरेली। ३०५. सुधीरकुमार सेवक देहरादून। ३०६. जगदीशचन्द्र भाटिया, मुरादाबाद। ३०७. मथुरानी भटनागर बागौदा। ३०८. विजयदयाल भटनागर, बामौदा। ३०९. सतीशचन्द्र चतुर्वेदी आगरा। ३१०. मोहनलाल शर्मा, मथुरा। ३११. बनारसीदास वर्मा, दिल्ली। ३१२. प्रकाशकुमार, नई दिल्ली। ३१३. मुकुन्दलाल जालान, गोहाटी। ३१४. प्रेमदत्त पाण्डेय, सीहोर। ३१५. रामेश्वरलाल वर्मा, सांभरलेक। ३१६. जगदीशनारायण त्रिपाठी, बरेली। ३१७. रूपलाल दत्त, भीलवाड़ा। ३१८. रमेशचन्द्र रानखेत। ३१९. विमला कुमारी बाराकुई। ३२०. श्यामबिहारी सक्सैना, बाराकुई। ३२ . राधेश्याम जोशी, सेंधवा।

हँसो हँसाओ

एक लड़का सो रहा था। उसकी मां ने उसे जगाते हुए कहा—उठ बेटा! सूरज उग आया है।

लड़का—मां! सूरज अगर आधी रात में ही उग आयेगा तो क्या मैं सोऊंगा नहीं।

(तरुण कुमार)

(२)

मां—बेटा! जा पास ले आ।

लड़का—मां 'आपास' तो बहुत बड़ा है। उसे मैं कैसे लाऊं।

(तरुण कुमार)

(३)

एक बाबू—मुझे डाक गाड़ी से जाना है। इसलिये मेरी हजामत जल्दी बना दो।

नाई ने हजामत बना दी तो बाबूजी ने शीशे में देखकर कहा—यह बाल क्यों छोड़ दिये हैं।

नाई—मेरा उस्तरा भी डाक गाड़ी की तरह जा रहा था, इसलिये छोटे २ स्टेशन छोड़ गया।

(शिवकुमार कक्कड़)

(४)

पिता ने अपने ५ साल के पुत्र से कहा—जैसा मैं कहूँ वैसा तुम बोला करो। इससे तुम्हें बोलना आ जायगा। पुत्र ऐसा ही करने लगा। एक दिन भोजन के समय पिता ने कहा—बेटा! खिचड़ी गरम है। ध्यान से खाना। पुत्र ने भी झट कहा—बेटा खिचड़ी गरम है। ध्यान से खाना।

—(भगवानसिंह खुराई)

(५)

मोहन की किताब रात को घर में खो गई। वह आकर उसे सड़क पर ढूंढने लगा। किसी ने उससे पूछा—क्या ढूंढते हो।

मोहन ने कहा—किताब।

दूसरे ने पूछा—कहां खोई है?

उसने कहा—घर में।

दूसरे ने पूछा—तब तुम यहां क्यों ढूंढते हो?

मोहन ने कहा—घर में रोशनी नहीं है।

—x—

बाल प्रतियोगिता के नियम

(नवम्बर मास)

१. तुम में कितनी बुद्धि है?-इस नाम से दस प्रश्न छापे गये हैं। उन प्रश्नों के सामने उनका उत्तर लिखना है।

२. इस प्रतियोगिता में केवल सदस्य ही भाग ले सकते हैं। जिन्होंने सदस्यतापत्र भेज दिया है पर अभी तक क्रमसंख्या नहीं मिली उन्हें दुबारा सदस्यता पत्र भेजने की आवश्यकता नहीं।

३. पूर्णाङ्क १०० हैं। सबसे अधिक अङ्क प्राप्त करने वाले दो सदस्यों को एक एक सुन्दर पुस्तक दी जायगी। शेष ५ सदस्यों के चित्र छापे जायंगे।

४. प्रश्नों का उत्तर छपे हुए फार्म पर ही २१ तारीख तक आ जाना चाहिये। अलग कागज पर भेजे हुए उत्तर स्वीकार नहीं किये जायंगे।

५. प्रतियोगिता में भाग लेने का कोई शुल्क नहीं है।

राणा के प्रति

धन्य २ हे अमर वीर,
भारत के हे शूर-वीर।
तेरी कठोर प्रतिज्ञा सुन कर,
अकबर भी था थर्राया।
तेरे दुःख को देख-देख,
पत्थर का दिल भी भर आया।
स्वतन्त्रता की रक्षा के हित,
महलों का सुख तूने ठुकराया।
छूत-अछूत का ध्यान न रख,
भीलों को था अपनाया।

—बद्रीप्रसाद सुरारका

बाल पहेली

पीले तालाब में पीले अंडे,
बताओ तो बताओ नहीं लगेंगे डंडे।

(राकेशकुमारी, मुरादाबाद)

× × ×

सावन भादों बहुत चलत है,
माघ पूस में थोरी—
अमीर खुसरो यूं कहे,
तू बूझ पहेली मोरी।

(ओमप्रकाश मुरादाबाद)

× × ×

सिर काटो तो 'मरा' कहाऊं,
अन्त कटे तो 'कम' हो जाऊं।

(बालमुकुन्द)

× × ×

मैं तीन अक्षरों का एक फूल हूँ। मेरा एक अक्षर 'कलम' में है पर 'होल्डर' में नहीं। दूसरा अक्षर 'महक्त' में है, पर 'कार्य' में नहीं। तीसरा अक्षर 'लड़के' में है, पर 'छात्र' में नहीं। बताओ मैं कौन हूँ?

(शिवशंकरलाल, गुप्ता)

नोट—उत्तर अगले अंक में।

पिछले अङ्क में प्रकाशित बाल-पहेली के उत्तर—१. नारियल, २. बादल, ३. मेंढक, ४. चश्मा।

× × ×

एक ऐतिहासिक घटना

'वीर बन्दा वैरागी'

प्रेमदत्त पाण्डेय 'पंकज'

त्राहिमाम, श्रीमान त्राहिमाम, का का घोर गर्जन करती हुई मानसिक अशांति से पीड़ित हिन्दू जनता एक सशस्त्र घुड़सवार सैन्य समूह के सामने आकर रुक गई।

"क्यों सज्जनो, आप इतने विचलित क्यों हो रहे हैं?" आश्चर्यान्वित होकर सैन्य सरदार ने प्रश्न किया।

"श्रीमान जी बचाइये अन्यथा अनर्थ हो जावेगा" जनता के मुखिया ने गिड़गिड़ाते हुए कहा—

"आखिर समस्या क्या है कुछ बताइये तो!" उत्सुकता से सरदार ने पूछा।

"महाशय जी, आज विधर्मी इस ग्राम में एक गऊ का वध करने जा रहे हैं। हमने जो विरोध किया तो हमें प्राणों का भय दिखाया, हमें यकायक आपका स्मरण हो आया, सो अब हम आपकी शरण हैं।"

"क्या कहा, गौ वध होगा!" जोश में आकर सरदार उठ खड़ा हुआ, उसका हाथ तलवार की मूठ की ओर बढ़ रहा था।

"जी हां, श्रीमान" मुखिया ने सिर हिला कर उत्तर दिया। जनता समर्थन करती हुई चिल्लाई—'शीघ्रता कीजिये।'

गौ वध और मेरे होते हुए (तलवार निकाल कर) जब तक मेरे हाथ में तलवार और युद्ध में प्राण शेष हैं, किसको मां ने दूध पिलाया है जो गौ वध कर सके। सेनापति!"

सरदार तड़पते हुए चिल्लाया 'ओ' एक भीमकाय हृष्ट पुष्ट शरीर वाला युवक आगे आकर सिर झुका कर बोला, 'तत्काल इस अनर्थ को रोको' सरदार गुर्राया।

"जो आज्ञा" कह कर सेनापति कुछ सैनिकों को लेकर जनता के साथ हो लिया। जनता आशा युक्त हृदय लेकर वापिस लौट पड़ी।

× × ×

गुरु गोविन्दसिंह के अनन्य भक्त परम साहसी आर्य वीर श्री बन्दा वैरागी एक समय कुछ सैनिकों को साथ लेकर एक ग्राम के निकट से गुजर रहे थे। रात्रि हो जाने से उन्होंने गांव के बाहर डेरा डाला। सब सैनिकों ने प्रसन्नता से भोजन निकाला और खाने लगे, सरदार भी भोजन कर रहे थे। भोजनोपरान्त वे कुछ आराम करने के हेतु लेटे ही थे कि थोड़ी दूर पर कुछ जन समुदाय इस ओर आता हुआ दिखाई दिया। सबों के हाथ उनकी तलवारों की मूठ पर चले गये क्षण भर में चमचमाती हुई तलवारें निकल आईं, पर पास आने पर जन समुदाय निःशस्त्र दृष्टिगोचर हुआ। वीरों की तलवारें प्यासी रह गईं। इसके उपरान्त उपर्युक्त घटना घटी।

× × ×

पहुँचें नभ के पास हम अब, उठे धरा से ऊंचे ... ...

थोड़े समयोपरान्त सैनिक लौट आये, पर सब के मुख की श्री जाती रही थी। यह देख वीर बन्दा ने पूछा, "क्यों वीरो क्या समाचार है।"

सब चुप।

सरदार आश्चर्य तथा आशंका से बोला— "बोलते क्यों नहीं, चुप क्यों हो?" "श्रीमान जी हमारे पहुँचने के पहले ही विधर्मी ..." आगे सेनापति न बोल सका।"

क्या कर दिया! सरदार गरजा, "गौ वध कर दिया!" यह क्या कह रहे हो सेनापति? सरदार उछल पड़ा मानो उसे सांप सूंघ गया हो!"

"जी हां सत्य है श्रीमान" सेनापति ने कहा, सरदार का मुख क्रोध से लाल हो गया, कुछ देर सरदार किंकर्तव्यविमूढ़ हो हाथ मसलता रहा। उसके पश्चात् वह गम्भीर, किन्तु जोशपूर्ण शब्दों में बोला, "जाओ खून का बदला खूनी अर्थात् सारे अत्याचारियों तथा सहयोगियों को मौत के घाट उतार दो, ग्राम में आग लगा दो!" सेनापति इतनी कठोर आज्ञा सुन कर कांप गया! पर शीघ्रतापूर्वक अपनी तलवार की प्यास बुझाने का अवसर देख प्रसन्नतापूर्वक वहां से प्रस्थान कर दिया, पीछे पीछे सरदार की सैन्य-टुकड़ी थी!

[शेष पृष्ठ २२ पर]

तुम में कितनी बुद्धि है?

पूर्णांक १०० प्राप्तांक.........

सं०	प्रश्न	उत्तर	अंक
१.	वह कौन सी वस्तु है कि जिसके पेट में रहने पर और कोई वस्तु नहीं ठहरती।		१२
२.	वह कौन सी वस्तु है जो परीक्षा के समय जरूर चाहिये।		२
३.	वह कौन सी वस्तु है जो दे कर वापस नहीं ली जाती।		२
४.	मेरी सालगिरह कई साल में एक बार आती है। बताओ वह कौन सा दिन है।		१०
५.	वह कौन सी वस्तु है जिसको जितना खींचा जाय उतनी ही छोटी होती है।		१२
६.	वह कौन सी वस्तु है जिसका आधा नाम फूल का है और आधा फल का।		१०
७.	वह कौन सी वस्तु है जो किसी की प्रतीक्षा नहीं करती।		२
८.	वह कौन सी वस्तु है जो पीसी जाती है, काटी जाती है, मेज पर रखी जाती है पर खाई नहीं जाती।		१२
९.	वह कौन सा शब्द है जिसको सभी लोग गलत पढ़ते हैं।		१०
१०.	वह कौन सा जानवर है जो अपनी आँखें कभी बन्द नहीं करता।		१०

नाम .... आयु ....

यदि अभी तक सदस्यता-पत्र नहीं भेजा हो तो ये भी भरें—

संरक्षक ....

पूरा पता ....

(पृष्ठ ११ का शेष)

आर्थिक उन्नति के लिये जन-संघ किसी वाद विशेष से बंधा हुआ नहीं है। उत्पादन में वृद्धि वितरण में समानता तथा उपभोग में संयम के द्वारा ही इस समस्या का हल हो सकता है। इस दृष्टि से जन-संघ का विश्वास है कि आज की अवस्था में राष्ट्रीयकरण और खुली छूट दोनों में से कोई भी आर्थिक समस्या को सुलझा नहीं सकती। जन-संघ की नीति सुरक्षा उद्योगों का राष्ट्रीयकरण तथा अन्यों को उत्पादक और उपभोक्ता दोनों के हितों का ध्यान रखते हुए राज्य के नियन्त्रण के आधीन व्यक्तिगत साहस का अवसर प्रदान करने की है।

औद्योगिक नीति—संघ की औद्योगिक नीति का उद्देश्य यह होगा कि थोड़े-से-थोड़े समय में सब प्रकार के उद्योगों की स्थापना और प्रसार किया जाय जिससे जनता के उपयोग में आने वाली और कल कारखानों में काम करने वाली सभी प्रकार की वस्तुओं के विषय में देश स्वावलम्बी हो जाय।

स्वदेशी—राष्ट्रीय उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिये संघ स्वदेशी वस्तुओं के व्यवहार के लिए लोकमत को पुनः जागृत करेगा। इसी उद्देश्य से नये उद्योगों की रक्षा के लिये विदेशी वस्तुओं के आयात पर कर लगाया जायगा और जिन उद्योगों को इसका पात्र समझा जायगा उन्हें शासन की ओर से धन की सहायता भी दी जायगी।

बड़े उद्योग—वे उद्योग जो देश-रक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले हों वे किसी की निजी सम्पत्ति न हो कर राष्ट्रीय सम्पत्ति होना चाहिये। इसके अतिरिक्त अन्य बड़े उद्योगों के विषय में राजकीय प्रबन्ध उपज और व्यय में बचत दोनों ही दृष्टियों से असफल सिद्ध हुआ। दूसरे पूंजी और उत्पादन पर शासन का सर्वाधिकार देश को उन्नति की ओर ले जा सकता है। अतः राष्ट्रीयकरण की व्यर्थ चर्चा छोड़ कर संघ औद्योगिकों का उत्साहवर्धन करेगा जिससे उत्पादकों और खरीदारों दोनों के हितों की रक्षा करते हुए शासन के निरीक्षण और नियन्त्रण के आधीन उद्योग धंधे उन्नति पावें। इस दृष्टि से कि, आपस में समझौता अथवा संगठन करके कुछ उद्योगपति अपने हाथों में देश की आर्थिक शक्ति को केन्द्रित न कर लें और अनुचित लाभ उठाने की प्रवृत्ति न बढ़े, आवश्यक कार्यवाही की जावेगी।

विकेन्द्रीयकरण—देश की सामूहिक समृद्धि के लिये उद्योग धन्धों को देश के भिन्न-भिन्न भागों में स्थापित किया जाय। जिससे न्यूनतम व्यय से देश में अधिकतम उपज हो। इस प्रकार उद्योगों के कुछ स्थानों पर केन्द्रित होने के कारण जो सामाजिक दोष उत्पन्न होते हैं उन से देश बच जायगा। दूसरे सब प्रदेशों में आत्मनिर्भरता बढ़ेगी और तीसरे युद्ध की दशा में देश-रक्षा की दृष्टि से भी विकेन्द्रीयकरण उचित है।

पूँजी और श्रम का परस्पर सम्बन्ध—संघ श्रमिकों के साथ न्याय और उदारता चाहता है। पूंजी और श्रम में पारस्परिक सद्भावना बढ़ाने के लिये श्रमिकों का जीवन स्तर ऊंचा करने के लिये और औद्योगिक उपज बढ़ाने के लिये संघ इस बात का उद्योग करेगा कि श्रम को उद्योग के लाभ में साझीदार बना दिया जाय। अन्तरिम काल में जब तक देश की औद्योगिक उपज इच्छित स्तर तक न पहुंच जाय, सब प्रकार की हड़ताल और कारखाना-बन्दी को निषेध कर उन उद्योगों में जिनका राष्ट्रीय महत्व है, अनुत्साहित कर दिया जायगा। श्रम और पूंजी के आपसी झगड़े औद्योगिक अधिकरणों द्वारा निर्णय कर लिये जावेंगे। इन अधिकरणों में निष्पक्ष न्यायाधीश नियुक्त किये जावेंगे और उनके ये निर्णय पूंजी और श्रम दोनों पर लागू होंगे।

(क्रमशः)

—x—

भारतीय इतिहास में गुरु नानकदेव का स्थान

[पृष्ठ ६ का शेष]

थी। जो लोग इस्लाम स्वीकार कर चुके थे, वे पंजाब के धार्मिक जीवन में एक महान् परिवर्तन लाए ही थे, किन्तु जो शेष थे वह अनेक प्रकार के मिथ्या विश्वासों, कर्म-कांडों और रूढ़ियों से ग्रस्त थे। हिन्दू समाज में उस समय एक और महान् संकट बढ़ता आ रहा था, वह था नास्तिकता का। सर्वसाधारण जनता का ईश्वर से विश्वास उठता जा रहा था। मुसलमानों के आगमन के पूर्व भारत में ईश्वर के सगुण स्वरूप की उपासना का प्राधान्य था। द्रोपदी और गज की पुकार पर नंगे पैर दौड़ कर आने वाला भगवान् उनकी लाखों करुण पुकारों पर भी नहीं आया था। अपने त्रिनेत्र से संसार को भस्म करने की शक्ति रखने वाले भगवान् शंकर का मन्दिर सोमनाथ आततायियों द्वारा पददलित किया गया। किन्तु शंकर की समाधि न टूटी। लोगों का विश्वास जमने लगा कि वह भगवान् कुछ नहीं, केवल ब्राह्मणों की कल्पना शक्ति का आविर्भाव मात्र है। एक विद्वान के कथनानुसार उस समय भारतवर्ष में १० करोड़ से अधिक नास्तिक थे।

जन्म और कार्य

ऐसी विषमतम परिस्थिति में गुरु नानक का जन्म हुआ। उन्होंने देखा कि लगातार विदेशी शासन, अत्याचार और दबाव के कारण सम्पूर्ण हिन्दू समाज राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक रूप से नष्टप्राय हो रहा है। उनका हृदय इस स्थिति को देख कर कराह उठा और उसी समय उन्होंने निश्चय किया, मैं यह सम्पूर्ण स्थिति बदल कर रहूँगा।

गुरु नानक के सम्मुख कार्य के दो साधन थे। प्रथम था—राजनीतिक विरोध और दूसरा था धार्मिक पुनर्जागरण। प्रथम साधन उस परिस्थिति के लिए पूर्णतया अनुपयुक्त था। ५०० वर्षों के अर्से मुसलमानी राज्य का विरोध करने की तत्कालीन हिन्दू समाज में शक्ति तो एक ओर रही, कल्पना भी नहीं थी।

गुरु नानकदेव ने यही उचित समझा कि सर्व प्रथम भारतीय जनता का धार्मिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से पुनर्जागरण किया जाय। यहां यह कहना भी अप्रासंगिक नहीं होगा कि बहुधा कुछ इतिहासकारों का यह मत है कि गुरु नानकदेव के कार्य की पृष्ठ भूमि में किसी प्रकार की राजनीतिक आकांक्षा नहीं थी, वह पूर्णतया एक धार्मिक आंदोलन था जिसे आगे चल कर परिस्थितियों से बाध्य हो कर राजनीतिक स्वरूप ग्रहण करना पड़ा। किन्तु यह कथन नितान्त भ्रामक है। गुरु नानकदेव के कार्य का एकमेव उद्देश्य था हिन्दू राष्ट्र का पुनर्जागरण और विदेशी सत्ता का अन्त। इसी उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त उन्होंने धार्मिक पुनर्जागरण के आधार पर अपना कार्यारम्भ किया और उनके उत्तराधिकारियों ने उसी उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त अपने आन्दोलन में एक क्रमागत परिवर्तन किया। विलियम कैसर के शब्दों में "सभी धार्मिक आन्दोलन वास्तव में राजनीतिक आन्दोलन होते हैं।"

उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन-कार्यों को कार्य-साधन की दृष्टि से ढाला। तत्कालीन मुसलमान अपने को एक हिन्दू से कहीं अधिक श्रेष्ठ समझता था। धार्मिक रूप से भी वह अपने को एक काफिर से कहीं श्रेष्ठ समझता था और राजनीतिक दृष्टि से तो एक विजयी जाति विजित से अपने को उच्च समझती ही है। सर्व प्रथम गुरु नानकदेव ने इस असमानता के प्रति अपनी आवाज उठाई उन्होंने कहा कि इस संसार में कोई ऊंचा और कोई नीचा नहीं है, सब समान हैं, सब एक ईश्वर की सन्तान हैं और उसकी दृष्टि में कोई ऊंच-नीच नहीं है। इस उपदेश से दो लाभ हुए। प्रथम तो हिन्दू समाज में आत्म विश्वास उत्पन्न हुआ कि वह विजयी जाति से निकृष्ट नहीं है। दूसरे हिन्दू समाज की असमानता के कारण हिन्दू जाति की निम्न श्रेणी की जो जातियां समानता के लोभ से इस्लाम की ओर प्रभावित हो रही थीं वह गुरु नानक की ओर प्रभावित हुईं।

दूसरा कार्य जो गुरु नानक देव ने किया था, वह था एक उपासना पद्धति का निर्माण। हिन्दू समाज में उस समय असंख्य देवी-देवताओं की उपासना होती थी, लोगों की इन में श्रद्धा नष्ट हो चुकी थी और वे इस्लाम के 'एक ईश्वर' की ओर प्रभावित हो रहे थे। गुरु नानकदेव ने भी एक ईश्वर की उपासना पर बल दिया, किन्तु उसका आधार इस्लामिक नहीं था, वह पूर्णतया भारतीय था। उन्होंने राम और कृष्ण की उपासना में निराकार ईश्वर के दर्शन किए और एकेश्वरवाद के अन्तर्गत ही राम नाम की महिमा से लोगों के हृदय गुंजा दिए। गुरु नानक का एकेश्वरवाद इस्लाम की देन नहीं थी, वरन् वह प्राचीन भारतीय मनीषियों के 'सर्वभूतेषु एक देवा' के सिद्धान्त का ही रूप था। उस समय कट्टर पन्थी ब्राह्मणों के कारण राम-नाम का द्वार सर्वसाधारण के लिए नहीं खुला था अतः हिन्दू समाज का एक बहुत बड़ा अंश [illegible] जा रहा था। गुरु नानक [illegible] के लिए खोल दिया। राम नाम के शब्दों के पुनरुत्थान से हिन्दू जनता पुनः अपने आदर्शों की ओर प्रभावित हुई।

बौद्धिक पुनर्जागरण की दृष्टि से गुरु नानकदेव ने एक अति महत्वपूर्ण कार्य किया वह था गुरुमुखी लिपि का प्रचलन। उनके समय में पंजाब में अरबी फारसी का एकाधिकार था, वही लिपि प्रचलित थी। संस्कृत कुछ विद्वानों की भाषा रह गयी थी इस दृष्टि से जनता का ध्यान विदेशी भाषा और लिपि की ओर से हटा कर उन्होंने अपने निकट के प्रदेश कच्छ जम्मू आदि में तत्प्रचलित या कश्मीर प्रदेश की अति प्राचीन शारदा लिपि का आश्रय लिया, यही आगे चल कर गुरुमुखी कहलाने लगी। इस लिपि के प्रचलन से अरबी-फारसी को स्थानच्युत करने में बड़ी सुविधा हुई और एक प्राचीन भारतीय लिपि का पुनरुद्धार हो गया। गुरु नानकदेव ने अपने उपदेश सरल पंजाबी भाषा में रचे और लोगों को विदेशी भाषाएं त्याग कर इन्हें सीखने का आग्रह किया—

'कलियुग धरम छोडेया मलेच्छ भाषा गही" कह कर उन्होंने चेतना दी कि सभी ने अपना धर्म छोड़ कर मलेच्छ भाषा ली है।

गुरु नानक देव ने तत्कालीन शासन व्यवस्था की निंदा की और कहा—

'कलकाती राजे कसाई धरम पंख करि उडरिया। कूड़ अमावस सच चंद्रमा दीसे नाही कहि चढ़िया।'

गुरु नानक देव के जन्म के पूर्व बौद्ध और जैन धर्मों द्वारा संसार की असारता और निर्वेद के भाव पर अधिक जोर दिया गया था। राजनीतिक दृष्टि से यह विचार बड़ा घातक सिद्ध हुआ। मुसलमानों के आक्रमण के समय गृहत्याग और वैराग्य का भाव भी बढ़ता जा रहा था। परलोक को सुखी बनाने के लिए लोग इस लोक की ओर से उदासीन होते जा रहे थे। गुरु नानक देव ने समय की आवश्यकता के अनुसार गृह त्याग और वैराग्य का विरोध किया। जीवन-संग्राम से भाग कर जंगल में धूनी रमाने वालों को उन्होंने कायर कहा और गृहस्थ तथा संसार में रह कर कर्म करते हुए ईश्वर प्राप्ति के मार्ग को ही उन्होंने श्रेष्ठ बतलाया। इसके कारण लोग वैराग्य से घर की ओर आकर्षित हुए और इस आकर्षण ने उन्हें उनकी राजनीतिक स्थिति पर विचार करने पर भी बाध्य कर दिया।

गुरु नानक देव ने अपने जीवन में चार बड़ी यात्राएं कीं। भारत के सभी स्थानों पर गए और समय की मांग का उपदेश दिया। मक्का, मदीना और बगदाद आदि इस्लामी केन्द्रों में जाकर उन्होंने भारतीय सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया।

गुरु नानक देव के कार्य का स्पष्ट प्रभाव उनके जीवनकाल में ही दृष्टिगत हुआ। इस्लाम की ओर आकर्षित होता हुआ हिन्दू समाज का ज्वार-भाटा अवरुद्ध हो गया। उसमें सुधार हुए, उसकी पूजा का ढंग बदल गया, उसके विचार करने की शक्ति परिवर्तित हो गई और उसमें अपने अपनेपन के सम्बन्ध में एक महान् आत्म विश्वास निर्माण हो गया। गुरु नानक ने अपने जीवनकाल में ही अपने सम्मुख यथावधि हिन्दुओं को राम-नाम की धुन में मस्त होते देखा। वेदों का जन्म स्थान और आर्यों का आदि देश जो इस्लाम की विनाश कृपा से आच्छन्न हो पतन के गर्त की ओर द्रुत गति से बढ़ रहा था, गुरु नानक रूपी सूर्य का प्रकाश पा पुनः भारतीय आदर्शों से गूंज उठा।

किन्तु गुरु नानक का कार्य केवल इतना ही नहीं था, वह तो उस महान् कार्य की भूमिका मात्र थी। उनके बाद सुयोग्य उत्तराधिकारियों में भी उन्हीं की आत्मा का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने अपने कुशल संचालन में इस महान् आन्दोलन को सफलता की चरम सीमा तक पहुँचाया। आज उस प्रदेश में पुनः विषाद के काले-बादल छा गये हैं।